हिंदी शब्दसागर

दसवाँ भाग

['स' से 'सौह्य' तक, शब्दसंख्या–२१,०००]

मूल संपादक

श्यामसुंदरदास

मूल सहायक संपादक

बालकृष्ण भट्ट रामचंद्र शुक्ल

अमीरसिंह जगन्मोहन वर्मा

भगवानदीन रामचंद्र वर्मा

संपादकमंडल

कमलापति त्रिपाठी

धीरेंद्र वर्मा हरवंशलाल शर्मा

नगेंद्र शिवनंदनलाल दर

रामधन शर्मा सुधाकर पांडेय

करुणापति त्रिपाठी (संयोजक संपादक)

सहायक संपादक

विश्वनाथ त्रिपाठी

हिंदी शब्दसागर के संशोधन संपादन का संपूर्ण तथा प्रथम एवं द्वितीय भाग के प्रकाशन का साठ प्रतिशत व्ययभार भारत सरकार के शिक्षामंत्रालय ने वहन किया।

परिवर्धित, संशोधित, नवीन संस्करण

शकाब्द १८९५ सं० २०३० वि० १९७३ ई०
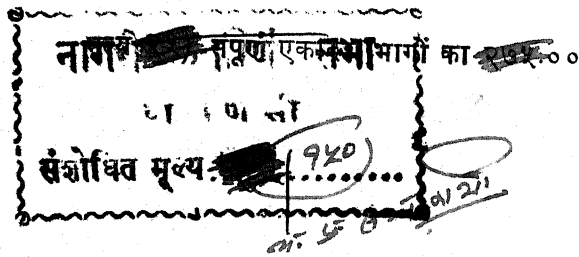
शंभुनाथ वाजपेयी
द्वारा
नागरी मुद्रण, वाराणसी
में मुद्रित

प्रकाशिका

'हिंदी शब्दसागर' अपने प्रकाशनकाल से ही कोश के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं के दिशानिर्देशक के रूप में प्रतिष्ठित है। तीन दशक तक हिंदी की मूर्धन्य प्रतिभाओं ने अपनी सतत तपस्या से इसे सन् १९२८ ई० में मूर्त रूप दिया था। तब से निरंतर यह ग्रंथ इस क्षेत्र में गंभीर कार्य करनेवाले विद्वत्समाज में प्रकाशस्तंभ के रूप में मर्यादित हो हिंदी की गौरवगरिमा का आख्यान करता रहा है। अपने प्रकाशन के कुछ समय बाद ही इसके खंड एक एक कर अनुपलब्ध होते गए और अप्राप्य ग्रंथ के रूप में इसका मूल्य लोगों को सहस्र मुद्राओं से भी अधिक देना पड़ा। ऐसी परिस्थिति में अभाव की स्थिति का लाभ उठाने की दृष्टि से अनेक कोशों का प्रकाशन हिंदी-जगत् में हुआ, पर वे सारे प्रयत्न इसकी छाया के ही बल जीवित थे। इसलिये निरंतर इसकी पुन: अवतारणा का गंभीर अनुभव हिंदी-जगत् और इसकी जननी नागरीप्रचारिणी सभा करती रही, किंतु साधन के अभाव में अपने इस कर्तव्य के प्रति सजग रहती हुई भी वह अपने इस उत्तरदायित्व का निर्वाह न कर सकने के कारण मर्मांतक पीड़ा का अनुभव कर रही थी। दिनोत्तर उसपर उत्तर-दायित्व का ऋण चक्रवृद्धि सूद की दर से इसलिये और भी बढ़ता गया कि इस कोश के निर्माण के बाद हिंदी की श्री का विकास बड़े व्यापक पैमाने पर हुआ। साथ ही, हिंदी के राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित होने पर उसकी शब्दसंपदा का कोश भी दिनोत्तर गतिपूर्वक बढ़ते जाने के कारण सभा का यह दायित्व निरंतर गहन होता गया।

सभा की हीरक जयंती के अवसर पर, २२ फाल्गुन, २०१० वि० को, उसके स्वागताध्यक्ष के रूप में डा० संपूर्णानंद जी ने राष्ट्रपति राजेंद्रप्रसाद जी एवं हिंदीजगत् का ध्यान निम्नांकित शब्दों में इस ओर आकृष्ट किया—'हिंदी के राष्ट्रभाषा घोषित हो जाने से सभा का दायित्व बहुत बढ़ गया है।...हिंदी में एक अच्छे कोश और व्याकरण की कमी खटकती है। सभा ने आज से कई वर्ष पहले जो हिंदी शब्दसागर प्रकाशित किया था उसका बृहत् संस्करण निकालने की आवश्यकता है।...आवश्यकता केवल इस बात की है कि इस काम के लिये पर्याप्त धन व्यय किया जाय और केंद्रीय तथा प्रादेशिक सरकारों का सहारा मिलता रहे।'

उसी अवसर पर सभा के विभिन्न कार्यों की प्रशंसा करते हुए राष्ट्रपति ने कहा—'वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दकोश सभा का महत्वपूर्ण प्रकाशन है। दूसरा प्रकाशन हिंदी शब्दसागर है जिसके निर्माण में सभा ने लगभग एक लाख रुपया व्यय किया है। आपने शब्दसागर का नया संस्करण निकालने का निश्चय किया है। जब से पहला संस्करण छपा, हिंदी में बहुत बातों में और हिंदी के अलावा संसार में बहुत बातों में बड़ी प्रगति हुई है। हिंदी भाषा भी इस प्रगति से अपने को वंचित नहीं रख सकती। इसलिये शब्दसागर का रूप भी ऐसा होना चाहिए जो यह प्रगति प्रतिबिंबित कर सके और वैज्ञानिक युग के विद्यार्थियों के लिये भी साधारणतः पर्याप्त हो। मैं आपके निश्चयों का स्वागत करता हूँ। भारत सरकार की ओर से शब्दसागर का नया संस्करण तैयार करने के सहायतार्थ एक लाख रुपए, जो पाँच वर्षों में बीस बीस हजार करके दिए जाएँगे, देने का निश्चय हुआ है। मैं आशा करता हूँ कि इस निश्चय से आपका काम कुछ सुगम हो जाएगा और आप इस काम में अग्रसर होंगे।'

राष्ट्रपति डा० राजेंद्रप्रसाद जी की इस घोषणा ने शब्दसागर के पुन:संपादन के लिये नवीन उत्साह तथा प्रेरणा दी। सभा द्वारा प्रेषित योजना पर केंद्रीय सरकार के शिक्षामंत्रालय ने अपने पत्र सं० एफ।४—३।५४ एच० दिनांक ११।५।५४ द्वारा एक लाख रुपए, पाँच वर्षों में, प्रति वर्ष बीस हजार रुपए करके, देने की स्वीकृति दी।

इस कार्य की गरिमा को देखते हुए एक परामर्शमंडल का गठन किया गया, इस संबंध में देश के विभिन्न क्षेत्रों के अधिकारी विद्वानों की भी राय ली गई, किंतु परामर्शमंडल के अनेक सदस्यों का योगदान सभा को प्राप्त न हो सका और जिस विस्तृत पैमाने पर सभा विद्वानों की राय के अनुसार इस कार्य का संयोजन करना चाहती थी, वह भी नहीं उपलब्ध हुआ। फिर भी, देश के अनेक निष्णात अनुभवसिद्ध विद्वानों तथा परामर्शमंडल के सदस्यों ने गंभीरतापूर्वक सभा के अनुरोध पर अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए। सभा ने उन सबको मनोयोगपूर्वक मथकर शब्दसागर के संपादन हेतु सिद्धांत स्थिर किए जिनसे भारत सरकार का शिक्षामंत्रालय भी सहमत हुआ।

उपर्युक्त एक लाख रुपए का अनुदान बीस बीस हजार रुपए प्रति वर्ष की दर से निरंतर पाँच वर्षों तक केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय देता रहा और कोश के संशोधन, संवर्धन और पुन:संपादन का कार्य लगातार होता रहा, परंतु इस अवधि में सारा कार्य निपटाया नहीं जा सका। मंत्रालय के प्रतिनिधि श्री डा० रामधन जी शर्मा ने बड़े मनोयोगपूर्वक यहाँ हुए कार्यों का निरीक्षण परीक्षण करके इसे पूरा करने के लिये आगे और ६५०००) अनुदान प्रदान करने की संस्तुति की जिसे सरकार ने कृपापूर्वक स्वीकार करके पुन: उक्त ६५०००) का अनुदान दिया। इस प्रकार संपूर्ण कोश का संशोधन संपादन दिसंबर, १९६५ में पूरा हो गया।

इस ग्रंथ के संपादन का संपूर्ण व्यय ही नहीं, इसके प्रकाशन के व्ययभार का ६० प्रतिशत बोझ भी दो खंडों तक भारत सरकार ने वहन किया है, इसीलिये यह ग्रंथ इतना सस्ता निकालना संभव हो सका है। उसके लिये शिक्षामंत्रालय के अधिकारियों का प्रशंसनीय सहयोग हमें प्राप्त है और तदर्थ हम उनके अतिशय आभारी हैं।

जिस रूप में यह ग्रंथ हिंदीजगत् के संमुख उपस्थित किया जा रहा है, उसमें यथातथ्य विकसित कोशशिल्प का यथासामर्थ्य उपयोग और

प्रयोग किया गया है, किंतु हिंदी की और हमारी सीमा है। यद्यपि हम अर्थ और व्युत्पत्ति का ऐतिहासिक क्रमविकास भी प्रस्तुत करना चाहते थे, तथापि साधन की कमी तथा हिंदी ग्रंथों के कालक्रम के प्रामाणिक निर्धारण के अभाव में वैसा कर सकना संभव नहीं हुआ। फिर भी यह कहने में हमें संकोच नहीं कि अद्यतन प्रकाशित कोशों में शब्दसागर की गरिमा आधुनिक भारतीय भाषाओं के कोशों में अतुलनीय है, और इस क्षेत्र में काम करनेवाले प्रायः सभी क्षेत्रीय भाषाओं के विद्वान् इससे आधार ग्रहण करते रहेंगे। इस अवसर पर हम हिंदीजगत् को यह भी नम्रतापूर्वक सूचित करना चाहते हैं कि सभा ने शब्दसागर के लिये एक स्थायी विभाग का संकल्प किया है जो बराबर इसके प्रवर्धन और संशोधन के लिये कोशशिल्प संबंधी अद्यतन विधि से यत्नशील रहेगा।

शब्दसागर के इस संशोधित प्रवर्धित रूप में शब्दों की संख्या मूल शब्दसागर की अपेक्षा दुगुनी से भी अधिक हो गई है। नए शब्द हिंदी साहित्य के आदिकाल, संत एवं सूफी साहित्य (पूर्व मध्यकाल), आधुनिक काल, काव्य, नाटक, आलोचना, उपन्यास आदि के ग्रंथ, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, वाणिज्य आदि और अभिनंदन एवं पुरस्कृत ग्रंथ, विज्ञान के सामान्य प्रचलित शब्द और राजस्थानी तथा डिंगल, दक्खिनी हिंदी और प्रचलित उर्दू शैली आदि से संकलित किए गए हैं। परिशिष्ट खंड में प्राविधिक एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दों की व्यवस्था की गई है।

हिंदी शब्दसागर का यह संशोधित परिवर्धित संस्करण कुल दस खंडों में पूरा होगा। इसका पहला खंड पौष, संवत् २०२२ वि० में छपकर तैयार हो गया था। इसके उद्घाटन का समारोह भारत गणतंत्र के प्रधान मंत्री स्वर्गीय माननीय श्री लालबहादुर जी शास्त्री द्वारा प्रयाग में ३ पौष, सं० २०२२ वि० (१८ दिसंबर, १९६५) को भव्य रूप से सजे हुए पंडाल में काशी, प्रयाग एवं अन्यान्य स्थानों के वरिष्ठ और सुप्रसिद्ध साहित्यसेवियों, पत्रकारों तथा गण्यमान्य नागरिकों की उपस्थिति में सपन्न हुआ। समारोह में उपस्थित महानुभावों में विशेष उल्लेख्य माननीय श्री पं० कमलापति जी त्रिपाठी, हिंदी विश्वकोश के प्रधान संपादक श्री डा० रामप्रसाद जी त्रिपाठी, पद्मभूषण कविवर श्री पं० सुमित्रानंदन जी पंत, श्रीमती महादेवी जी वर्मा आदि हैं। इस संशोधित संवर्धित संस्करण की सफल पूर्ति के उपलक्ष्य में इसके समस्त संपादकों को एक एक फाउंटेन पेन, ताम्रपत्र और ग्रंथ की एक एक प्रति माननीय श्री शास्त्री जी के करकमलों द्वारा भेंट की गई। उन्होंने अपने संक्षिप्त सारगर्भित भाषण में इस सभा की विभिन्न प्रवृत्तियों की चर्चा की और कहा : 'सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करनेवाली यह सभा अपने ढंग की अकेली संस्था है। हिंदी भाषा और साहित्य की जैसी सेवा नागरीप्रचारिणी सभा ने की है वैसी सेवा अन्य किसी संस्था ने नहीं की। भिन्न भिन्न विषयों पर जो पुस्तकें इस संस्था ने प्रकाशित की हैं वे अपने ढंग के अनूठे ग्रंथ हैं और उनसे हमारी भाषा और साहित्य का मान अत्यधिक बढ़ा है। सभा ने समय की गति को देखकर तात्कालिक उपादेयता के वे सब कार्य हाथ में लिए हैं जिनकी इस समय नितांत आवश्यकता है। इस प्रकार यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि भाषा और साहित्य के क्षेत्र में यह सभा अप्रतिम है'।

प्रस्तुत दसवें खंड में 'स' से लेकर 'सौह्य' तक के शब्दों का संचयन है। नए नए शब्द, उदाहरण, यौगिक शब्द, मुहावरे, पर्यायवाची शब्द और महत्वपूर्ण ज्ञातव्य सामग्री 'विशेष' से संवलित इस भाग की शब्दसंख्या लगभग २१,००० है। अपने मूल रूप में यह अंश कुल ३५० पृष्ठों में था जो अपने विस्तार के साथ इस परिवर्धित संशोधित संस्करण में लगभग ४९६ पृष्ठों में आ पाया है।

संपादकमंडल के प्रत्येक सदस्य ने यथासामर्थ्य निष्ठापूर्वक इसके निर्माण में योग दिया है। स्व० श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड़ नियमित रूप से नित्य सभा में पधारकर इसकी प्रगति को विशेष गंभीरतापूर्वक गति देते थे और पं० करुणापति त्रिपाठी ने इसके संपादन और संयोजन में प्रगाढ़ निष्ठा के साथ अस्वस्थ होते हुए भी घर पर, यहाँ तक कि यात्रा पर रहने पर भी, पूरा कार्य किया है। यदि ऐसा न होता तो यह कार्य संपन्न होना संभव न था। हम अपनी सीमा जानते हैं। संभव है, हम सबके प्रयत्न में त्रुटियाँ हों, पर सदा हमारा परिनिष्ठित यत्न यह रहेगा कि हम इसको और अधिक पूर्ण करते रहें क्योंकि ऐसे ग्रंथ का कार्य अस्थायी नहीं, सनातन है।

अंत में शब्दसागर के मूल संपादक तथा सभा के संस्थापक स्व० डॉ० श्यामसुंदरदास जी को अपना प्रणाम निवेदित करते हुए, यह संकल्प हम पुनः दुहराते हैं कि जबतक हिंदी रहेगी तबतक सभा रहेगी और उसका यह शब्दसागर अपने गौरव से कभी न गिरेगा। इस क्षेत्र में यह नित नूतन प्रेरणादायक रहकर हिंदी का मानवर्धन करता रहेगा और उसका प्रत्येक नया संस्करण और भी अधिक प्रभोज्वल होता रहेगा।

ना० प्र० सभा, काशी :
दीपमालिका, २०३० वि०

सुधाकर पांडेय
प्रधान मंत्री

संकेतिका

[उद्धरणों में प्रयुक्त संदर्भग्रंथों के इस विवरण में क्रमशः ग्रंथ का संकेताक्षर, ग्रंथनाम, लेखक या संपादक का नाम और प्रकाशन के विवरण दिए गए हैं]

अंधेरे०	अंधेरे की भूख, डा० रांगेय राघव, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण
अंबिकादत्त (शब्द०)	अंबिकादत्त व्यास
अकबरी०	अकबरी दरबार के हिंदी कवि, डा० सरजूप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, सं० २००७
अखबार	'आज' दैनिक, वाराणसी
अखिलेश (शब्द०)	अखिलेश कवि
अग्नि०	अग्निशस्य, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०
अजात०	अजातशत्रु, जयशंकर प्रसाद, १६वाँ सं०
अणिमा	अणिमा, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', युग मंदिर, उन्नाव
अतिमा	अतिमा, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०
अधखिला (शब्द०)	अधखिला फूल (उपन्यास), अयोध्यासिंह उपाध्याय
अनामिका	अनामिका, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', प्र० सं०
अनुराग०	अनुरागसागर, संपा० स्वामी युगलानंद बिहारी, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, प्र० सं०
अनुराग बाग (शब्द०)	अनुराग बाग
अनेक (शब्द०)	अनेकार्थ नाममाला
अनेकार्थ०	अनेकार्थमंजरी और नाममाला, संपा० बलभद्रप्रसाद मिश्र, युनिवर्सिटी आव इलाहाबाद स्टडीज, प्र० सं०
अपरा	अपरा, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग
अपलक	अपलक, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, प्र० सं०, १९५३ ई०
अभिशप्त	अभिशप्त, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४४ ई०
अमिट०	अमिट स्मृति, महावीरप्रसाद द्विवेदी, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९३० ई०
अमृतसागर (शब्द०)	अमृतसागर
अयोध्या (शब्द०)	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
अरस्तू०	अरस्तू का काव्यशास्त्र, डा० नगेंद्र, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०, २०१४ वि०
अर्चना	अर्चना, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', कलामंदिर, इलाहाबाद
अर्थ०	अर्थशास्त्र, कौटिल्य (५ खंड), संपा० आर० शाम शास्त्री, गवर्नमेंट ब्रांच प्रेस, मैसूर, प्र० सं०, १९१९ ई०
अर्ध०	अर्धकथानक, संपा० नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, प्र० सं०
अष्टांग (शब्द०)	अष्टांगयोग संहिता
अष्टांग०	अष्टांगयोग संहिता
आँधी	आँधी, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम सं०
आ० अं० रा०	आज की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, रामनारायण यादवेंदु, आर्यावर्त प्रकाशन मंदिर, पटना, १९५१ ई०
आकाश०	आकाशदीप, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम सं०
आचार्य०	आचार्य रामचंद्र शुक्ल, चंद्रशेखर शुक्ल, वाणी वितान, वाराणसी, प्र० सं०
आत्रेय अनुक्रमणिका (शब्द०)	आत्रेय अनुक्रमणिका
आदि०	आदिभारत, अर्जुन चौबे काश्यप, वाणी विहार, बनारस, प्र० सं०, १९५३ ई०
आधुनिक०	आधुनिक कविता की भाषा
आनंदघन (शब्द०)	कवि आनंदघन
आ० रा० शुक्ल	आलोचक रामचंद्र शुक्ल
आराधना	आराधना, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', साहित्यकार संसद, इलाहाबाद, प्र० सं०
आर्द्रा	आर्द्रा, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं०, १९८४ वि०
आर्य भा०, आ० भा०	आर्यकालीन भारत
आर्यो०	आर्यों का आदिदेश, संपूर्णानंद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९९७ वि०, प्र० सं०
इंद्र०	इंद्रजाल, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०
इंद्रा०	इंद्रावती, संपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०

इंशा०	इंशा, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी, संपा०, ब्रजरत्नदास, कमलमणि ग्रंथ-माला, बुलानाला, काशी, प्र० सं०
इंशाअल्ला (शब्द०)	इंशा अल्ला खाँ (रानी केतकी की कहानी)
इति०	इतिहास और आलोचना, नामवर सिंह, प्र० सं०
इतिहास	हिंदी साहित्य का इतिहास, पं० रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, नवाँ सं०
इत्यलम्	इत्यलम्, 'अज्ञेय,' प्रतीक प्रकाशन केंद्र, दिल्ली
इनशा (शब्द०)	इनशा अल्ला खाँ
इरा०	इरावती, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, चतुर्थ सं०
उत्तर०	उत्तररामचरित नाटक, अनु०पं० सत्यनारायण कविरत्न, रत्नाश्रम, आगरा, पंचम सं०
एकांत०	एकांतवासी योगी, अनु० श्रीधर पाठक, इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०, १९८६ वि०
कंकाल	कंकाल, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहा-बाद, सप्तम सं०
कंठहार	कंठहार ऋषभचरण जैन, हिंदी साहित्य मंडल बाजार सीताराम, दिल्ली, द्वि. सं०
कठ० उप० (शब्द०)	कठवल्ली उपनिषद्
कढ़ी०	कढ़ी में कोयला, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर, प्र० सं०
कबीर ग्रं०	कबीर ग्रंथावली, संपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, काशी
कबीर० बानी	कबीर साहब की बानी
कबीर बीजक	कबीर बीजक, कबीर ग्रंथ प्रकाशन समिति, बाराबंकी, २००७ वि०
कबीर बी० (शिशु०)	कबीर बीजक, संपा० हंसदास, कबीर ग्रंथ प्रकाशन समिति, बाराबंकी, २००७ वि०
कबीर मं०	कबीर मंसूर (२ भाग), वेंकटेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बंबई, सन् १९०३ ई०
कबीर० रे०	कबीर साहब की ज्ञानगुदड़ी व रेख्ते, बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद
कबीर० श०	कबीर साहब की शब्दावली (४ भाग), बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, सन् १९०८
कबीर(शब्द०)	कबीरदास
कबीर सा०	कबीर सागर (४ भा०), संपा० स्वा० श्री युगलानंद बिहारी, वेंकटेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बंबई
कबीर सा० सं०	कबीर साखी संग्रह, बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, १९११ ई०
कमलापति (शब्द०)	कवि कमलापति
करुणा०	करुणालय, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० सं०
कर्ण०	सेनापति कर्ण, लक्ष्मीनारायण मिश्र, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० सं०
कर्पूर मंजरी (शब्द०)	कर्पूरमंजरी नाटक, भारतेंदु लिखित
कविंद (शब्द०)	'कविंद' उपनाम के कवि
कविता कौ०	कविता कौमुदी (१–४ भा०), संपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मंदिर, प्रयाग, तृ० सं०
कवित्त०	कवित्तरत्नाकर, संपा० उमाशंकर शुक्ल, हिंदी परिषद्, विश्वविद्यालय, प्रयाग
कादंबरी (शब्द०)	कादंबरी ग्रंथ अनुवाद
कानन०	काननकुसुम, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, पंचम सं०
कामायना	कामायनी, जयशंकर प्रसाद, नवम सं०
काया०	कायाकल्प, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस, बनारस, ९वाँ सं०
काले०	काले कारनामे, 'निराला,' कल्याण साहित्य मंदिर, प्रयाग, २००७ वि०
काव्य कलाधर(शब्द०)	काव्य कलाधर
काव्यकलाप (शब्द०)	काव्यकलाप
काव्य०	काव्यशास्त्र
काव्य० निबंध	काव्य और कला तथा अन्य निबंध, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, चतुर्थ सं०
काव्य० प्र०	काव्य प्रभाकर 'भानु' विरचित
काव्य० य० प्र०	काव्य : यथार्थ और प्रगति, डा० रांगेय राघव, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्र० सं०, २०१२ वि०
काशीराम (शब्द०)	काशीराम कवि
काश्मीर०	काश्मीर सुषमा, श्रीधर पाठक, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०
काष्ठजिह्वा (शब्द०)	काष्ठजिह्वा स्वामी
कासीराम (शब्द०)	कासीराम कवि
किन्नर०	किन्नर देश में, राहुल सांकृत्यायन, इंडिया पब्लिशर्स, प्रयाग, प्र० सं०
किशोर (शब्द०)	किशोर कवि
कीर्ति०	कीर्तिलता, सं० बाबूराम सक्सेना, ना० प्र० सभा, वाराणसी, तृ० सं०
कुकुर०	कुकुरमुत्ता, 'निराला', युगमंदिर, उन्नाव
कुणाल	कुणाल, सोहनलाल द्विवेदी
कृषि०	कृषिशास्त्र
केशव (शब्द०)	केशवदास
केशव ग्रं०	केशव ग्रंथावली, संपा० पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० सं०
केशव० अमी०	केशवदास की अमीघूंट
केशवराम (शब्द०)	केशवराम कवि
कोई कवि (शब्द०)	अज्ञातनाम कोई कवि
कुलार्णव तंत्र(शब्द०)	कुलार्णव तंत्र
कौटिल्य अ०	कौटिल्य का अर्थशास्त्र
क्वासि	क्वासि, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, बंबई, १९५३ ई०
खानखाना (शब्द०)	अब्दुर्रहीम खानखाना
खालिक०	खालिकबारी, संपा० श्रीराम शर्मा, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०, २०२१ वि०
खिलौना	खिलौना (मासिक)

खुदाराम	खुदाराम और चंद हसीनों के खतूत, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर, आठवाँ सं०
खुसरो (शब्द०)	अमीर खुसरो
खेती की पहली पुस्तक (शब्द०)	खेती की पहली पुस्तक
खेती विधा (शब्द०)	खेती विद्या
गंग क०	गंग कवित्त (ग्रंथावली), संपा० बटेकृष्ण, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
गदाधर०	श्रीगदाधर भट्ट जी की बानी
गदाधर सिंह (शब्द०)	गदाधर सिंह
गबन	गबन, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, २६वाँ सं०
गर्ग संहिता (शब्द०)	गर्ग संहिता
गालिब०	गालिब की कविता, सं० कृष्णदेवप्रसाद गौड़, वाराणसी, प्र० सं०
गि० दा०, गि० दास गिरिधरदास (शब्द०)	गिरिधरदास (बा० गोपालचंद्र)
गिरिधर (शब्द०)	गिरिधर राय (कुंडलियावाले)
गीतिका	गीतिका, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०
गुंजन	गुंजन, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०
गुंधर (शब्द०)	गुंधर कवि
गुमान (शब्द०)	गुमान मिश्र
गुरुदास (शब्द०)	गुरुदास कवि
गुलाब (शब्द०)	कवि गुलाब
गुलाल०	गुलाल बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९१० ई०
गोकुल (शब्द०)	कवि गोकुल
गोदान	गोदान, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस, बनारस, प्र० सं०
गोपाल उपासनी (शब्द०)	गोपाल उपासनी
गोपाल० (शब्द०)	गिरिधर दास (गोपालचंद्र)
गोपालभट्ट (शब्द०)	गोपालभट्ट, वाल्मीकि रामायण के अनुवादक
गोरख०	गोरखबानी, सं० डा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग, द्वि० सं०
गोल० (शब्द०)	गोलविनोद (ग्रंथ)
ग्राम०	ग्राम साहित्य, संपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मंदिर, प्रयाग, प्र० सं०
ग्राम्या	ग्राम्या, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०
घट०	घट रामायण (२ भाग), सतगुरु तुलसी साहिब, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० सं०
घनानंद	घनानंद, संपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, प्रसाद परिषद्, वाणीवितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी
घाघ०	घाघ और भड्डरी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
घासीराम (शब्द०)	घासीराम कवि
चंद०	चंद हसीनों के खतूत, 'उग्र', हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, प्र० सं०
चंद्र०	चंद्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, नवाँ सं०
चक्र०	चक्रवाल, रामधारी सिंह 'दिनकर', उदयाचल, पटना, प्र० सं०
चरण (शब्द०)	चरणदास
चरणचंद्रिका (शब्द०)	चरणचंद्रिका
चरण० बानी	चरणदास की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०
चाँदनी०	चाँदनी रात और अजगर, उपेंद्रनाथ 'अश्क', नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग, प्र० सं०
चाणक्य नीति (शब्द०)	चाणक्य नीति
चाणक्य (शब्द०)	चाणक्य नीति दर्पण
चिंता	चिंता ; अज्ञेय, सरस्वती प्रेस, प्र० सं०, सन १९४० ई०
चिंतामणि	चिंतामणि (२ भाग), रामचंद्र शुक्ल, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग
चिंतामणि (शब्द०)	कवि चिंतामणि त्रिपाठी
चित्रा०	चित्रावली, सं० जगन्मोहन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
चुभते०	चुभते चौपदे, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध,' खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० सं०
चोखे०	चोखे चौपदे, " " "
चोटी०	चोटी की पकड़, 'निराला,' किताब महल इलाहाबाद, प्र० सं०
छंद०	छंदःप्रभाकर, भानु कवि, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०
छत्र०	छत्रप्रकाश, सं० विलियम प्राइस, एजुकेशन प्रेस, कलकत्ता, १८२९ ई०
छिताई०	छिताई वार्ता, संपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
छीत०	छीत स्वामी, संपा० ब्रजभूषण शर्मा, विद्या विभाग, अष्टछाप स्मारक समिति, कांकरोली, प्र० सं०, संवत् २०१२
जंतुप्रबंध (शब्द०)	जंतुप्रबंध ग्रंथ

जग० बानी	जगजीवन साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०९, प्र० सं०
जग० श०	जगजीवन साहब की शब्दावली
जगन्नाथ (शब्द०)	जगन्नाथप्रसाद 'भानु', काव्य प्रभाकर और छंद प्रभाकर के रचयिता
जगन्नाथ शर्मा (शब्द०)	जगन्नाथ शर्मा (लेखक)
जनमेजय०	जनमेजय का नागयज्ञ, जयशंकर 'प्रसाद' भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, पंचम सं०
जनानी०	जनानी ड्योढ़ी, अनु० यशपाल, अशोक प्रकाशन, लखनऊ
जमाना (शब्द०)	जमाना अखबार
जय० प्र०	जयशंकर प्रसाद, नंददुलारे वाजपेयी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०, १९९५ वि०
जयसिंह (शब्द०)	जयसिंह कवि
जरासंधवध (शब्द०)	जरासंधवध नाम का काव्य
जायसी ग्रं०	जायसी ग्रंथावली, संपा० रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, द्वि० सं०
जायसी ग्रं० (गुप्त)	जायसी ग्रंथावली, संपा० माताप्रसाद गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९५१ ई०
जायसी (शब्द०)	मलिक मुहम्मद जायसी, पद्मावत के रचयिता
जिप्सी	जिप्सी, इलाचंद्र जोशी, सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९५२ ई०
जुगलेश (शब्द०)	जुगलेश कवि
ज्ञानदान	ज्ञानदान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ १९४२ ई०
ज्ञानरत्न	ज्ञानरत्न, दरिया साहब, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
झरना	झरना, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ सं०
झाँसी०	झाँसी की रानी, वृंदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी, द्वि० सं०
टैगोर०	टैगोर का साहित्यदर्शन, अनु० राधेश्याम पुरोहित, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं०
ठंडा०	ठंडा लोहा, धर्मवीर भारती, साहित्य भवन लि०, प्रयाग, प्र० सं०, १९५२ ई०
ठाकुर प्र०	ठाकुरप्रसाद
ठाकुर०	ठाकुर शतक, संपा० काशीप्रसाद, भारत-जीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, संवत् १९६१
ठेठ०	ठेठ हिंदी का ठाठ, अयोध्यासिंह उपाध्याय, खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० सं०
ढोला०	ढोला मारू रा दूहा, संपा० रामसिंह, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० सं०
तितली	तितली, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ सं०
तिथितत्व (शब्द०)	तिथितत्व निर्णय
तुलसी	तुलसीदास, 'निराला', भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, चतुर्थ सं०
तुलसी ग्रं०	तुलसी ग्रंथावली, संपा० रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, काशी, तृतीय सं०
तुलसी सुधाकर (शब्द०)	तुलसी सुधाकर
तुरसी श०, तुलसी श०	तुलसी साहब (हाथरसवाले) की शब्दावली, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०९,१९११
तेग अली (शब्द०)	तेग अली, बदमाश दर्पण के रचयिता
तेग०, तेगबहादुर (शब्द०)	गुरु तेगबहादुर
तेज०	तेजविंदूपनिषद्
तोष (शब्द०)	कवि तोष
त्याग०	त्यागपत्र, जैनेंद्रकुमार, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, प्र० सं०
द० सागर	दरिया सागर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९१० ई०
दक्खिनी०	दक्खिनी का गद्य और पद्य, संपा० श्रीराम शर्मा, हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद, प्र० सं०
दयानंद (शब्द०)	स्वामी दयानंद जी
दयानिधि (शब्द०)	दयानिधि कवि
दरिया० बानी	दरिया साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, द्वि० सं०
दश०	दशरूपक, संपा० डा० भोलाशंकर व्यास, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी, प्र० सं०
दशम० (शब्द०)	भाषा दशम स्कंध, भागवत
दहकते०	दहकते अंगारे, नरोत्तमप्रसाद नागर, अभ्युदय कार्यालय, इलाहाबाद
दादू०	(श्री) दादूदयाल की बानी, संपा० महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी, ना० प्र० सभा, वाराणसी
दादूदयाल ग्रं०	दादूदयाल ग्रंथावली
दादू० (शब्द०)	दादूदयाल
दिनेश (शब्द०)	कवि दिनेश
दास (शब्द०)	कवि भिखारीदास
दिल्ली	दिल्ली, रामधारी सिंह 'दिनकर,' उदयाचल, पटना, प्र० सं०
दिव्या	दिव्या, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४५ ई०
दीन० ग्रं०	दीनदयाल गिरि ग्रंथावली, संपा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
दीनदयाल (शब्द०)	कवि दीनदयाल गिरि

दीप०	दीपशिखा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९४२ ई०
दी० ज०, दीप ज०	दीप जलेगा, उपेंद्रनाथ 'अश्क,' नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग
दुर्गाप्रसाद मिश्र (शब्द०)	दुर्गाप्रसाद मिश्र
दुर्गाप्रसाद (शब्द०)	दुर्गाप्रसाद कवि
दुर्गेशनंदिनी (शब्द०)	दुर्गेशनंदिनी, उपन्यास, मूल लेखक बंकिमचंद्र चटर्जी (अनुवाद)
दूलह (शब्द०)	कवि दूलह
देवकीनंदन (शब्द०)	देवकीनंदन खत्री
देव० ग्रं०	देव ग्रंथावली, ना० प्र० सभा, काशी, प्र०सं०
देव (शब्द०)	देव कवि
देव (शब्द०)	देव कवि (मैनपुरीवाले)
देवदत्त (शब्द०)	देवदत्त कवि
देवीप्रसाद (शब्द०)	मुंशी देवीप्रसाद
देशी०	देशी नाममाला
दैनिकी	दैनिकी, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं०, १९९९ वि०
दो सौ बावन०	दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता (दो भाग), शुद्धाद्वैत एकेडमी, काँकरोली, प्रथम सं०
द्वंद्व०	द्वंद्वगीत, रामधारी सिंह 'दिनकर,' पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० सं०
द्वि० अभि० ग्रं०	द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ, ना० प्र० सभा, वाराणसी
द्विज (शब्द०)	द्विज कवि
द्विजदेव (शब्द०)	अयोध्यानरेश महाराजा मानसिंह 'द्विजदेव'
द्विवेदी (शब्द०)	आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी
धरनी० बानी	धरनी साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९११ ई०
धरम० शब्दा०, धरम०	धरमदास की शब्दावली
धीर (शब्द०)	'धीर' कवि
धूप०	धूप और धूआँ, रामधारीसिंह 'दिनकर,' अजंता प्रेस, लि०, पटना ४
ध्रुव०	ध्रुवस्वामिनी, प्रसाद, भारती भंडार, प्रयाग
नंद० ग्रं०, नंददास ग्रं०	नंददास ग्रंथावली, संपा० ब्रजरत्नदास, ना०प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
नई०	नई पौध, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९५३
नकछेदी (शब्द०)	नकछेदी तिवारी, कवि भड़ौआ संग्रह या मदन-मंजरी के संपादक
नट०	नटनागर विनोद, संपा० कृष्णबिहारी मिश्र, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०
नदी०	नदी के द्वीप, 'अज्ञेय,' प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं०, १९५१ ई०
नया०	नया साहित्य : नए प्रश्न, नंददुलारे वाजपेयी, विद्यामंदिर, वाराणसी, २०११ वि०
नरेश (शब्द०)	'नरेश' कवि
नागयज्ञ	जनमेजय का नागयज्ञ, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सप्तम सं०
नागरी (शब्द०)	नागरीदास कवि
नागरी० उर्दू०	नागरी और उर्दू का स्वाँग अर्थात् नागरी और उर्दू का एक नाटक, पं० गौरीदत्त, देवनागरी प्रचारिणी सभा, विद्यादर्पण यंत्रालय, मेरठ, प्र० सं०
नाथ (शब्द०)	नाथ कवि
नाथसिद्ध०	नाथसिद्धों की बानियाँ, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
नानक (शब्द०)	संत नानक गुरु
नाभादास (शब्द०)	नाभादास संत
नारायणदास (शब्द०)	नारायणदास
निबंधमालादर्श (शब्द०)	निबंधमालादर्श (म० प्र० द्विवेदी), निबंधसंग्रह
निश्चलदास (शब्द०)	संत निश्चलदास जी
नील०	नीलकुसुम, रामधारीसिंह 'दिनकर', उदयाचल पटना, प्र० सं०
निहाल (शब्द०)	निहाल कवि
नूतनामृतसागर (शब्द०)	नूतनामृतसागर नाम का ग्रंथ
नूर (शब्द०)	'नूर' उपनाम के कवि
नृपशंभु (शब्द०)	शिवाजी के पुत्र महाराज शंभाजी
नेपाल०	नेपाल का इतिहास, पं० बलदेवप्रसाद, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, १९६१ वि०
पंचवटी	पंचवटी, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं०
पजनेस०	पजनेस प्रकाश, संपा० रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन यंत्रालय, काशी, प्र० सं०
पदमावत	पदमावत, सं० वासुदेवशरण अग्रवाल, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं०
पदु०, पदुमा०	पदुमावती, संपा० सूर्यकांत शास्त्री, पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर, १९३४ ई०
पद्माकर ग्रं०	पद्माकर ग्रंथावली, संपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
पद्माकर (शब्द०)	पद्माकर भट्ट
पन्नालाल (शब्द०)	पन्नालाल कवि
प० रा०, प० रासो	परमाल रासो, संपा० श्यामसुंदरदास, ना०प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
परमानंद०	परमानंदसागर
परमेश (शब्द०)	परमेश कवि

परिमल	परिमल, 'निराला', गंगा ग्रंथागार, लखनऊ, प्र० सं०
पर्दे०	पर्दे की रानी, इलाचंद्र जोशी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९९९ वि०
पलटू०	पलटू साहब की बानी (१-३ भाग), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०७ ई०
पल्लव	पल्लव, सुमित्रानंदन पंत, इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग, प्र० सं०
पाणिनि०	पाणिनिकालीन भारतवर्ष, वासुदेवशरण अग्रवाल, मोतीलाल बनारसीदास, प्र० सं०
पारिजात०	पारिजातहरण, बंगाल और बिहार रिसर्च सोसायटी, प्र० सं०
पार्वती	पार्वती, रामानंद तिवारी शास्त्री, भारतीनंदन मगलभवन, नयापुरा कोटा (राजस्थान), प्र० सं०, १९५५ ई०
पा० सा० सि०	पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धांत, लीलाधर गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९५२ ई०
पिंजरे०	पिंजरे की उड़ान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४६ ई०
पीतल०	पीतल की मूर्ति (जार्ज विलियम रेनाल्ड के ब्रान्ज स्टैच्यू का अनुवाद), पाँच भाग, वर्मन प्रेस कलकत्ता, प्र० सं०, सं० १९७४ वि०
पूर्ण (शब्द०)	पूर्ण कवि
पू० म० भा०	पूर्वमध्यकालीन भारत, वासुदेव उपाध्याय भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०, २००९ वि०
पृ० रा०	पृथ्वीराज रासो (५ खंड), संपा० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, श्यामसुंदर दास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
पृ० रा० (उ०)	पृथ्वीराज रासो (४ खंड), सं० कविराज मोहनसिंह, साहित्य संस्थान, राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपुर, प्र० सं०
पोद्दार अभि० ग्रं०	पोद्दार अभिनंदन ग्रं०, संपा० वासुदेवशरण अग्रवाल, अखिल भारतीय ब्रज साहित्यमंडल, मथुरा, सं० २०१० वि०
प्र० सा०	प्रगतिशील (वादी) साहित्य
प्रताप ग्रं०	प्रतापनारायण मिश्र ग्रंथावली, संपा० विजयशंकर मल्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
प्रताप (शब्द०)	व्यंग्यार्थ कौमुदी के रचयिता प्रताप कवि
प्रताप सिंह (शब्द०)	प्रताप सिंह
प्रबंध०	प्रबंधपद्म, 'निराला', गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ, प्र० सं०
प्रभावती	प्रभावती, 'निराला,' सरस्वती भंडार, लखनऊ, प्र० सं०
प्राण०	प्राणसंगली, संपा० संत संपूरणसिंह, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०
प्रा० भा० प०	प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास. डा० रांगेय राघव, आत्माराम ऐंड संस, दिल्ली, प्र० सं०, १९५३ ई०
प्रिय०	प्रियप्रवास, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, षष्ठ सं०
प्रिया० (शब्द०)	प्रियादास
प्रेम०	प्रेमपथिक, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० सं०
प्रेम० और गोर्की	प्रेमचंद और गोर्की, संपा० शचीरानी गुर्टू, राजकमल प्रकाशन लि०, बंबई, १९५५ ई०
प्रेमघन०	प्रेमघन सर्वस्व, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग, प्र० सं०, १९९९ वि०
प्रे० सा० (शब्द०)	प्रेमसागर, लल्लूलाल कृत
प्रेमांजलि	प्रेमांजलि, ठा० गोपालशरण सिंह, इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग, १९५३ ई०
फिसाना०	फिसाना ए आजाद (चार भाग), पं० रतननाथ सरशार', नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, चतुर्थ सं०
फूलो०	फूलो का कुर्ता, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, प्र० सं०
बंगाल०	बंगाल का काल, हरिवंश राय 'बच्चन,' भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९४६ ई०
बंदन०	बंदनवार, देवेंद्र सत्यार्थी, प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, १९४९ ई०
बद०	बदमाश दर्पण, तेगअली, भारतजीवन प्रेस, बनारस, प्र० सं०
बलबीर (शब्द०)	बलबीर कवि
बलभद्र (शब्द०)	बलभद्र कवि
बाँकी० ग्रं०, बाँकीदास ग्रं०	बाँकीदास ग्रंथावली (तीन भाग), संपा० रामनारायण दूगड़, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
बाँगेदरा	बाँगेदरा
बापू	बापू, कवितासंग्रह, सियारामशरण गुप्त, प्र० सं०
बालकृष्ण (शब्द०)	बालकृष्ण
बालमुकुंद (शब्द०)	बालमुकुंद गुप्त
बिरहा (शब्द०)	प्रचलित बिरहा गीत
बिल्ले०	बिल्लेसुर बकरिहा, निराला, युगमंदिर, उन्नाव, प्र० सं०
बिसराम (शब्द०)	बिसराम कवि
बिहारी र०	बिहारी रत्नाकर, संपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर', गंगा ग्रंथागार, लखनऊ, प्र० सं०
बिहारी (शब्द०)	कवि बिहारी

बी० रासो	बीसलदेव रासो, संपा० सत्यजीवन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
बीसल० रास	बीसलदेव रास, संपा० माताप्रसाद गुप्त, प्र० सं०
बी० श० महा०	बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य, डा० प्रतिपालसिंह, ओरिएंटल बुकडिपो, देहली, प्र० सं०
बुद्ध च०	बुद्धचरित, रामचंद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
बृहत्०	बृहत्संहिता
बृहत्संहिता (शब्द०)	बृहत्संहिता
बेनी (शब्द०)	कवि बेनी प्रवीन
बेला	बेला, 'निराला,' हिंदुस्तानी पब्लिकेशंस, इलाहाबाद, प्र० सं०
बेलि०	बेलि क्रिसन रुक्मिणी री, संपा० ठाकुर रामसिंह, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९३१ ई०
बैताल (शब्द०)	बैताल कवि
बोधा (शब्द०)	कवि बोधा
ब्रज०	ब्रजविलास, संपा० श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, तृ० सं०
ब्रज० ग्रं०	ब्रजनिधि ग्रंथावली, संपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
ब्रज चरित्र०	ब्रज चरित्र वर्णन
ब्रजमाधुरी०	ब्रजमाधुरी सार, संपा० वियोगी हरि, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग, तृ० सं०
ब्रह्म (शब्द०)	ब्रह्म कवि (बीरबल)
भक्तमाल (प्रि०)	भक्तमाल, टीका० प्रियादास, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, १९५३ वि०
भक्तमाल (श्री०)	भक्तमाल, श्रीभक्तिसुधाबिंदु स्वाद, टीका० सीतारामशरण, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, द्वि० सं०, १९८३ वि०
भक्ति०	भक्तिसागरादि, स्वामी चरणदास, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, संवत् १९६० वि०
भक्ति प०	भक्ति पदार्थ वर्णन, स्वामी चरणदास, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, संवत् १९६०
भगवतरसिक (शब्द०)	भगवत रसिक
भजन (शब्द०)	भजन
भट्ट (शब्द०)	बालकृष्ण भट्ट
भस्मावृत०	भस्मावृत चिनगारी, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४६ ई०
भा० इ० रू०	भारतीय इतिहास की रूपरेखा, जयचंद्र विद्यालंकार, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९३३ वि०
भा० प्रा० लि०	भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, इतिहास कार्यालय, राजमेवाड़, प्र० सं०, १९५१ वि०

भारत०	भारतभारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी, नवम सं०
भा० भू०, भारत० नि०	भारत भूमि और उसके निवासी, जयचंद्र विद्यालंकार, रत्नाश्रम, आगरा, द्वि० सं०, १९८७ वि०
भारतीय०	भारतीय राज्य और शासनविधान
भारतेंदु ग्रं०	भारतेंदु ग्रंथावली (४ भाग), संपा० ब्रजरत्नदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
भा० सैन्य०	भारत का सैन्य इतिहास, सर जदुनाथ सरकार, अनु० सुशील त्रिवेदी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, प्र० सं०
भा० शिक्षा	भारतीय शिक्षा, राजेंद्रप्रसाद, आत्माराम ऐंड संस, दिल्ली, १९५३ ई०
भाषा शि०	भाषाशिक्षण, पं० सीताराम चतुर्वेदी
भिखारी ग्रं०	भिखारीदास ग्रंथावली (दो भाग), संपा० प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, काशी
भीखा श०	भीखा शब्दावली, प्र० सं०
भुवनेश (शब्द०)	भुवनेश कवि
भूधर (शब्द०)	भूधर कवि
भूपति (शब्द०)	भूपति कवि
भूमि०	भूमि की अनुभूति (कवितासंग्रह)
भूषण ग्रं०	भूषण ग्रंथावली, संपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, साहित्य सेवक कार्यालय, काशी, प्र० सं०
भूषण (शब्द०)	कवि भूषण त्रिपाठी
भोज० भा० सा०	भोजपुरी भाषा और साहित्य, डा० उदयनारायण तिवारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र०सं०
मतपरीक्षा (शब्द०)	मतपरीक्षा (पुस्तक)
मति० ग्रं०	मतिराम ग्रंथावली, संपा० कृष्णबिहारी मिश्र, गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ, द्वि० सं०
मतिराम (शब्द०)	कवि मतिराम त्रिपाठी
मधु०	मधुकलश, हरिवंशराय 'बच्चन,' सुषमा निकुंज, इलाहाबाद, द्वि० सं०, १९३९ ई०
मधुज्वाल	मधुज्वाल, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, इलाहाबाद, द्वि० सं०, १९३९ ई०
मधु मा०	मधुमालती वार्ता, संपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
मधुशाला	मधुशाला, हरिवंश राय 'बच्चन,' सुषमा निकुंज, इलाहाबाद, प्र० सं०
मधुसूदन (शब्द०)	मधुसूदनदास कवि
मनविरक्त०	मनविरक्तकरन गुटका सार (चरणदास)
मनु०	मनुस्मृति
मन्नालाल (शब्द०)	कवि मन्नालाल
मलूक० बानी	मलूकदास की बानी, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग

मलूक० (शब्द०)	मलूकदास
महा०	महाराणा का महत्व, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, चतुर्थ सं०
महावीरप्रसाद (शब्द०)	पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी
महाभारत (शब्द०)	महाभारत
महाराणा प्रताप (शब्द०)	महाराणा प्रताप, पुस्तक
माधव०	माधवनिदान, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, चतुर्थ सं०
माधवानल०	माधवानल कामकंदला, बोधा कवि, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, प्र० सं०, १८९१ ई०
मान०	मानसरोवर, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद
मानव	मानव, कवितासंकलन, भगवतीचरण वर्मा
मानव०	मानवसमाज, राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० सं०
मानस	रामचरितमानस, संपा० शंभुनारायण चौबे, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
मा० स०, मा० स० रू०	मानवसमाज या मानव समाज की रूपरेखा
मिट्टी०	मिट्टी और फूल, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९९९ वि०
मिलन०	मिलनयामिनी, हरिवंश राय 'बच्चन,' भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र० सं०, १९५० ई०
मिश्रबंधु (शब्द०)	'मिश्रबंधु' नाम से ख्यात
मीर हसन (शब्द०)	मीर हसन
मीरा (शब्द०)	भक्त मीरा बाई
मुंशी अभि० ग्रं०	मुंशी अभिनंदन ग्रंथ, संपा० डा० विश्वनाथप्रसाद, हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय, आगरा
मुकुंदलाल (शब्द०)	मुकुंदलाल कवि
मुबारक (शब्द०)	कवि मुबारक अली
मुरारिदान (शब्द०)	कवि मुरारिदान
मृग०	मृगनयनी, वृंदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी
मैला०	मैला आँचल, फणीश्वरनाथ 'रेणु,' समता प्रकाशन, पटना–४, प्र० सं०
मोहन०	मोहनविनोद, सं० कृष्णबिहारी मिश्र, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, प्र० सं०
यमुना (शब्द०)	यमुनाशंकर
यशो०	यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं०
यामा	यामा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, प्रयाग, प्र० सं०
युग०	युगवाणी, सुमित्रानंदन पंत, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०
युगपथ	युगपथ „ „ „
युगलेश (शब्द०)	कवि युगलेश
युगांत	युगांत, सुमित्रानंदन पंत, इंद्र प्रिंटिंग प्रेस, अल्मोड़ा, प्र० सं०
योग०	योगवाशिष्ठ (वैराग्य मुमुक्षु प्रकरण), गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर छापाखाना, कल्याण, बंबई, सं० १९६७ वि०
रंगभूमि	रंगभूमि, प्रेमचंद, गंगा ग्रंथागार, लखनऊ, प्र० सं०, १९८१ वि०
रघु० रू०	रघुनाथ रूपक गीतांरो, संपा० महताबचंद्र खारेड़, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
रघु० दा०, रघुनाथदास (शब्द०)	रघुनाथदास
रघुनाथ (शब्द०)	रघुनाथ
रघुनाथ बंदीजन (को०)	रघुनाथ बंदीजन
रघुराज, रघुराज सिंह (शब्द०)	रीवाँनरेश महाराज रघुराजसिंह, सं० १८८०-१९३६ वि०
रजत०	रजतशिखर, सुमित्रानंदन पंत, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, २००८ वि०
रजिया०	रजिया की बेटी, (अनु०) नरोत्तम नागर, साहित्य प्रकाशन, माली बाड़ा, दिल्ली, प्र० सं०
रज्जब०	रज्जब जी की बानी, ज्ञानसागर प्रेस, बंबई, १९७५ वि०
रतन०	रतनहजारा, संपा० श्री जगन्नाथप्रसाद श्रीवास्तव, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, १९८२ ई०
रति०	रतिनाथ की चाची, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० सं०, १९५३ ई०
रत्न० (शब्द०)	रत्नसार
रत्नपरीक्षा (शब्द०)	रत्नपरीक्षा
रत्नाकर	रत्नाकर [दो भाग], ना० प्र० सभा, काशी, चतुर्थ, द्वि० और प्रथम सं० १९८०
रत्नावली (शब्द०)	रत्नावली नाटिका
रश्मि०	रश्मिबंध, सुमित्रानंदन पंत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
रस०	रसमीमांसा, संपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० सं०
रस क०	रसकलश, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध,' हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, तृतीय सं०
रसखान०	रसखान और घनानंद, संपा० अमीरसिंह, ना० प्र० सभा, द्वि० सं०
रसखान (शब्द०)	सैयद इब्राहीम रसखान
रस र०, रसरतन	रसरतन, संपा० पुहकर कवि कृत, शिवप्रसाद सिंह, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
रसनिधि (शब्द०)	राजा पृथ्वीसिंह 'रसनिधि'
रसिया (शब्द०)	रसिया कवि ? रसिया गीत ?
रहिमन (शब्द०)	रहीम कवि

संक्षेप	स्रोत
रहीम (शब्द०)	अब्दुर्रहीम खानखाना
रहीम०	रहीम रत्नावली
रा० कृ० वर्मा (शब्द०)	रामकृष्ण वर्मा
राज० इति०	राजपूताने का इतिहास, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, अजमेर, १९९७ वि०, प्र० सं०
राज०	राजतरंगिणी
रा० रू०	राजरूपक, संपा० पं० रामकर्ण, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
रा० वि०	राजविलास, संपा० मोतीलाल मेनारिया, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
राजनीतिक०	राजनीतिक विचारधाराएँ
राज्यश्री	राज्यश्री, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सातवाँ सं०
राम०	रामचरितमानस, संपा० विजयानंद त्रिपाठी, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० १९७३ वि०
राम, रामकवि (शब्द०)	राम कवि
रामकृष्ण (शब्द०)	रामकृष्ण
राम० चं०	संक्षिप्त रामचंद्रिका, संपा० लाला भगवानदीन, ना० प्र० सभा, वाराणसी, षष्ठ सं०
राम० धर्म०	रामस्नेह धर्मप्रकाश, संपा० मालचंद्र जी शर्मा, चौकसराम जी (सिंहथल), बड़ा रामद्वारा, बीकानेर ।
राम० धर्म० सं०	रामस्नेह धर्मसंग्रह, संपा० मालचंद्र जी शर्मा, चौकसराम जी (सिंहथल), बड़ा रामद्वारा, बीकानेर ।
रामरसिका०	रामरसिकावली (भक्तमाल)
रामसहाय (शब्द०)	रामसहाय कवि कृत सतसई
रामानंद०	रामानंद की हिंदी रचनाएँ, संपा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, ना० प्र० सभा, प्र० सं०
रामाश्व०	रामाश्वमेध, मन्नालाल द्विज, त्रिपुरा भैरवी, वाराणसी, १९३९ वि०
रिखिनाथ (शब्द०)	कवि रिखिनाथ
रेणुका	रेणुका, रामधारी सिंह 'दिनकर,' पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० सं०
रै० बानी	रैदास बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
लक्ष्मणसिंह (शब्द०)	राजा लक्ष्मणसिंह
लल्लू, लल्लूलाल (शब्द०)	लल्लूलाल
लवकुश चरित्र (शब्द०)	लवकुश चरित्र
लहर	लहर, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पंचम सं०
लाल (शब्द०)	लाल कवि (छत्रप्रकाशवाले)
वर्ण०, वर्णरत्नाकर	वर्णरत्नाकर
वल्लभ पु० (शब्द०)	वल्लभपुष्टिमार्ग, ग्रंथ
वाल्मीकीय० (शब्द०)	वाल्मीकीय रामायण
विद्यापति	विद्यापति, संपा० खगेंद्रनाथ मित्र, यूनाइटेड प्रेस, लि०, पटना
विनय०	विनयपत्रिका, टीका० पं० रामेश्वर भट्ट, इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग, तृ० सं०
विशाख	विशाख, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० सं०
विश्राम (शब्द०)	विश्रामसागर
विश्वनाथसिंह (शब्द०)	रीवाँ नरेश महाराज विश्वनाथसिंह जी (सं० १८४६-१९११ वि०)
विश्वप्रिया	विश्वप्रिया, 'अज्ञेय' स० ही० वात्स्यायन
विश्वास (शब्द०)	विश्वास ?
वीणा	वीणा, सुमित्रानंदन पंत, इंडियन प्रेस, लि० प्रयाग, द्वि० सं०
वेणी (शब्द०)	वेणी (या बेनी) कवि
वेनिस (शब्द०)	वेनिस का बाँका
वैशाली०, वै० न०	वैशाली की नगरवधू, चतुरसेन शास्त्री, गौतम बुकडिपो, दिल्ली, प्र० सं०
वो दुनिया	वो दुनिया, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४१ ई०
व्यंग्यार्थ०	व्यंग्यार्थ कौमुदी प्रताप कवि कृत, बाबू रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, संवत् १९५७
व्यंग्यार्थ (शब्द०)	व्यंग्यार्थ कौमुदी
व्यास (शब्द०)	अंबिकादत्त व्यास
ब्रज (शब्द०)	ब्रज विलास
शं० दि० (शब्द०)	शंकरदिग्विजय
शंकर (शब्द०)	शंकर कवि
शंकर०	शंकरसर्वस्व, संपा० हरिशंकर शर्मा, गयाप्रसाद ऐंड संस, आगरा, प्र० सं०
शंभु (शब्द०)	शंभु कवि
शकुं०	शकुंतला, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी
शकुंतला	शकुंतला नाटक, अनु० राजा लक्ष्मणसिंह, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग, चतु० सं०
शब्द चंद्रिका (शब्द०)	शब्दचंद्रिका (संस्कृत)
शब्द रत्नावली (शब्द०)	शब्दरत्नावली
शब्दावली (शब्द०)	शब्दावली ग्रंथ
शाहजहाँनामा (शब्द०)	शाहजहाँनामा
शार्ङ्गधर सं०	शार्ङ्गधर संहिता, टी० सीताराम शास्त्री, मुंबई वैभव मुद्रणालय, संवत् १९७१
शिखर०	शिखर वंशोत्पत्ति, संपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०, १९८४
शिरमौर (शब्द०)	कवि शिरमौर
शिवप्रसाद (शब्द०)	राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद

शिवराम (शब्द०)	शिवराम कवि
शिवशंभु (शब्द०)	शिवशंभु का चिट्ठा
शुक्ल० अभि० ग्रं०	शुक्ल अभिनंदन ग्रंथ, मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य संमेलन
शृं० सत० (शब्द०)	शृंगार सतसई
शृंगारसुधाकर(शब्द०)	शृंगार सुधाकर
शेखर (शब्द०)	शेखर कवि
शेर०	शेर ओ सुखन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र.सं.
शैली	शैली, पं० करुणापति त्रिपाठी, प्र० सं०
श्यामबिहारी (शब्द०)	श्यामबिहारी मिश्र ('मिश्रबंधु')
श्यामा०	श्यामास्वप्न, संपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
श्रद्धानंद (शब्द०)	स्वामी श्रद्धानंद
श्रद्धाराम (शब्द०)	श्रद्धाराम फुल्लौरी
श्रीकृष्णसंदेश (शब्द०)	श्रीकृष्णसंदेश
श्रीधर (शब्द०)	श्रीधर कवि
श्रीधर पाठक (शब्द०)	श्रीधर पाठक
श्रीनिवास ग्रं०	श्रीनिवास ग्रंथावली, संपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
श्रीपति (शब्द०)	श्रीपति कवि
संतति०	चंद्रकांता संतति, देवकीनंदन खत्री, वाराणसी
संचिता	संचिता (कवितासंग्रह)
संत तुरसी०	संत तुरसीदास की शब्दावली, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।
सं० दरिया, संत० दरिया	संत कवि दरिया, सं० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० सं०
सं० दा० (शब्द०)	संगीत दामोदर
सं० शा० (शब्द०)	संगीत शाकुंतल
संत र०	संत रविदास और उनका काव्य, स्वामी रामानंद शास्त्री, भारतीय रविदास सेवासंघ, हरिद्वार, प्र० सं०
संतवाणी०, संत०सार०	संतवाणी सार संग्रह (२ भाग), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
संन्यासी	संन्यासी, इलाचंद्र जोशी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०
संपूर्णा० अभि० ग्रं०	संपूर्णानंद अभिनंदन ग्रंथ, संपा० आचार्य नरेंद्रदेव, ना० प्र० सभा, वाराणसी
स० दर्शन	समीक्षादर्शन, रामलाल सिंह, इंडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०
सत्य०	कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग, द्वि० सं०

सत्यार्थप्रकाश (शब्द०)	सत्यार्थप्रकाश, स्वामी दयानंद
सबल (शब्द०)	सबलसिंह चौहान (महाभारत)
सभा० वि० (शब्द०)	सभाविलास
सरस्वती (शब्द०)	सरस्वती मासिक पत्रिका
सर्पाघातचिकित्सा(शब्द०)	सर्पाघात चिकित्सा
स० शास्त्र	समीक्षाशास्त्र, पं० सीताराम चतुर्वेदी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, प्र० सं०
स० सप्तक	सतसई सप्तक, संपा० श्यामसुंदरदास, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० सं०
सरलाबाई (शब्द०)	सरलाबाई, कवयित्री
सहजो०	सहजो बाई की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १६०८ वि०
साकेत	साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० सं०
सागरिका	सागरिका, ठा० गोपालशरण सिंह, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०
सात सतक	हस्तलेख, छत्रपति संभा जी, उपनाम शंभु, नृपशंभु कवि
साम०	सामधेनी, रामधारी सिंह 'दिनकर,' उदयाचल, पटना, द्वि० सं०
सा० दर्पण	साहित्यदर्पण, संपा० शालिग्राम शास्त्री, श्री मृत्युंजय औषधालय, लखनऊ, प्र० सं०
सा० द०	साहित्य दर्शन
सा० लहरी	साहित्यलहरी, संपा० रामलोचनशरण बिहारी, पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, पटना
सा० समीक्षा	साहित्य समीक्षा, कालिदास कपूर, इंडियन प्रेस, प्रयाग
साहित्य०	साहित्यालोचन, श्री श्यामसुंदर दास, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद
सिद्धांतसंग्रह (शब्द०)	सिद्धांतसंग्रह
सीतल (शब्द०)	कवि सीतल
सीताराम (शब्द०)	सीताराम कवि
सुंदर०	सुंदरदास ग्रंथावली (दो भाग), संपा० हरिनारायण शर्मा, राजस्थान रिसर्च सोसायटी, कलकत्ता
सुंदरीसिंदूर (शब्द०)	सुंदरी सिंदूर, कवितासंग्रह
सुकवि (शब्द०)	सुकवि उपनाम के कवि
सुखदा	सुखदा, जैनेंद्रकुमार, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं०
सुखदेव (शब्द०)	कवि सुखदेव
सुधाकर (शब्द०)	महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी
सुजान०	सुजानचरित (सूदनकृत), संपा० राधाकृष्ण, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, प्र० सं०

सुधानिधि	कवि तोष और सुधानिधि, सं० सुरेंद्र माथुर, ना० प्र० स० काशी, प्र० सं०
सुनीता	सुनीता, जैनेंद्रकुमार, साहित्यमंडल, बाजार सीताराम, दिल्ली, प्र० सं०
सुंदर (शब्द०)	सुंदर कवि, सुंदरदास जी
सूत०	सूत की माला, पंत और बच्चन, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०
सूदन (शब्द०)	सूदन कवि (सुजानचरित के रचयिता, भरतपुरवाले)
सूर०	सूरसागर (दो भाग), ना० प्र० सभा, द्वितीय सं०
सूर० (शब्द०)	सूरदास
सूर० (राधा०)	सूरसागर, संपा० राधाकृष्णदास, वेंकटेश्वर प्रेस, प्र० सं०
सेवक (शब्द०)	'सेवक' कवि
सेवक श्याम (शब्द०)	सेवक श्याम कवि
सेवासदन	सेवासदन, प्रेमचंद, हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, द्वि० सं०
सैर कु०	सैर कुहसार, पं० रतननाथ 'सरशार', नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, च० सं०, १९३४ ई०
सौ अजान० (शब्द०)	सौ अजान और एक सुजान, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
स्कंद०	स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०
स्वर्ण०	स्वर्णकिरण, सुमित्रानंदन पंत, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०
स्वाधीनता (शब्द०)	स्वाधीनता
स्वामी रा०, स्वामी रामकृष्ण (शब्द०)	स्वामी रामकृष्ण
स्वामी हरिदास (शब्द०)	स्वामी हरिदास
हंस०	हंसमाला, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० सं०
हंसराज (शब्द०)	हंसराज
हकायके०	हकायके हिंदी, ले० मीर अब्दुल वाहिद, प्र० संपा० 'रुद्र' काशिकेय, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
हनुमन्नाटक (शब्द०)	हनुमन्नाटक
हनुमान (शब्द०), हनुमान कवि (शब्द०)	हनुमान कवि
हम्मीर०	हम्मीरहठ, संपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर,' इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग
ह० रासो०	हम्मीर रासो, संपा० डा० श्यामसुंदरदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
हरिजन (शब्द०)	कवि हरिजन
हरिदास (शब्द०)	स्वामी हरिदास
हरिश्चंद्र (शब्द०)	भारतेंदु हरिश्चंद्र
हरिसेवक (शब्द०)	हरिसेवक कवि
हरी घास०	हरी घास पर क्षण भर, अज्ञेय, प्रगति प्रकाशन, नई दिल्ली, १९४९ ई०
हर्ष०	हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन, वासुदेवशरण अग्रवाल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० सं०, १९५३ ई०
हालाहल	हालाहल, हरिवंशराय बच्चन, भारती भंडार, प्रयाग, १९४६ ई०
हिंदी आ०	हिंदी आलोचना
हिं० क० का०	हिंदी कवि और काव्य, गणेशप्रसाद द्विवेदी हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० सं०
हिंदी का०	हिंदी काव्य की अंतश्चेतना
हिं० का० प्र०	हिंदी काव्य पर आंग्ल प्रभाव, रवींद्रसहाय वर्मा, पद्मजा प्रकाशन, कानपुर, प्र० सं०
हिंदी काव्य०	हिंदी काव्य में प्रकृतिचित्रण
हिं० ना०	हिंदी के नाटक
हिंदी प्रदीप (शब्द०)	हिंदी प्रदीप
हिंदी प्रेमगाथा०	हिंदी प्रेमगाथा काव्यसंग्रह, गणेशप्रसाद द्विवेदी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, १९३९ ई०
हिंदी प्रेमा०	हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य, डा० कमल कुलश्रेष्ठ, चौधरी मानसिंह प्रकाशन, कचहरी रोड
हिं० प्र० चि०	हिंदी काव्य में प्रकृतिचित्रण, किरणकुमारी गुप्त, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग
हिं० सा० भू०	हिंदी साहित्य की भूमिका, हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, तृ० सं०, १९४८
हिंदु० सभ्यता	हिंदुस्तान की पुरानी सभ्यता, बेनीप्रसाद, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० सं०
हित हरिवंश (शब्द०)	वैष्णव संत हित हरिवंश दास
हिम कि०	हिमकिरीटिनी, माखनलाल चतुर्वेदी, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, तृ० सं०
हिम त०	हिमतरंगिणी, माखनलाल चतुर्वेदी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० सं०
हिम्मत०	हिम्मतबहादुर विरुदावली, लाला भगवानदीन, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० सं०
हिल्लोल	हिल्लोल, शिवमंगल सिंह 'सुमन', सरस्वती प्रेस, बनारस, द्वि० सं०
हुमायूं०	हुमायूँनामा, अनु० ब्रजरत्नदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, द्वि० सं०
हृदय०	हृदयतरंग, सत्यनारायण कविरत्न
हृदयराम (शब्द०)	कवि हृदयराम

[व्याकरण, व्युत्पत्ति आदि के संकेताक्षरों का विवरण]

अं०	अंग्रेजी
अ०	अरबी
अक० रूप	अकर्मक रूप
अनु०	अनुकरण शब्द
अनुध्व०	अनुध्वन्यात्मक
अनु० मू०	अनुकरणार्थमूलक
अनुर०	अनुरणनात्मक रूप
अप०	अपभ्रंश
अर्ध मा०	अर्धमागधी
अल्पा०	अल्पार्थक
अव०	अवधी
अव्य०	अव्यय
इता०	इतालवी
इब०	इबरानी
उ०	उदाहरण
उच्चा०	उच्चारण सुविधार्थ
उड़ि०	उड़िया
उप०	उपसर्ग
उभय०	उभयलिंग
एकव०	एकवचन
कनाड़ी	कन्नड़ भाषा
कहावत	कहावत
काव्यशास्त्र	काव्यशास्त्र
[को०], (को०)	अन्य कोश
*	संभाव्य व्युत्पत्ति
?	अनिश्चित व्युत्पत्ति
कोंक०	कोंकणी
क्रि०	क्रिया
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक
क्व०	क्वचित्
गीत	लोकगीत
गुज०	गुजराती
चो०	चीनी भाषा
छं०	छंद
जापा०	जापानी
जावा०	जावा द्वीप की भाषा
जी०, जीवन	जीवनचरित
ज्या०	ज्यामिति
ज्यो०	ज्योतिष
डिं	डिंगल
त०	तमिल
तर्क०	तर्कशास्त्र
ति०	तिब्बती भाषा
तु०	तुर्की
तुल०	तुलनीय
दू०	दूहा या दूहला
दे०	देखिए
देश०	देशज
देशी	देशी शब्द
धर्म०	धर्मशास्त्र
नाम०	नामधातु
ना० धा०	नामधातुज क्रिया
नामिक धातु	नामिक धातु
ने०	नेपाली
न्याय०	न्याय या तर्कशास्त्र
पं०	पंजाबी
परि०	परिशिष्ट
पा०	पाली
पुं०	पुंलिंग
पुर्त०	पुर्तगाली
पु० हिं०	पुरानी हिंदी
पू० हिं०	पूर्वी हिंदी
पृ०	पृष्ठ
प्र०	प्रकाशकीय या प्रस्तावना
प्रत्य०	प्रत्यय
प्रा०	प्राकृत
प्रे०	प्रेरणार्थक रूप
फ०	फरांसीसी भाषा
फकीर०	फकीरों की बोली
फा०	फारसी
बँग०	बँगला भाषा
बरमी०	बरमी भाषा
बहुव०	बहुवचन
बुं० खं०	बुंदेलखंड की बोली
बुंदेल०	,, ,,
बोल०	बोलचाल
भाव०	भाववाचक संज्ञा
भू०	भूमिका
भू० कृ०	भूत कृदंत
मरा०	मराठी
मल०	मलयाली या मलयालम भाषा
मला०	मलाया की भाषा
मि०	मिलाइए
मुसल०	मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त
मुहा०	मुहावरा

यू०	यूनानी	संयो० क्रि०	संयोजक क्रिया
यौ०	यौगिक	स०	सकर्मक
राज०	राजस्थानी	सक० रूप	सकर्मक रूप
लश०	लशकरी	सधु०	सधुक्कड़ी भाषा
ला०	लाक्षणिक	सर्व०	सर्वनाम
लै०	लैटिन	सिंहली	सिंहली भाषा
व० कृ०	वर्तमान कृदंत	स्पे०	स्पेनी भाषा
वर्ण वि०	वर्णविपर्यय	स्त्रि०	स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त
वि०	विशेषण	स्त्री०	स्त्रीलिंग
वि० द्वि० मू०	विषमद्विरुक्तिमूलक	हिं०	हिंदी
वै०	वैदिक	(पु)	काव्यप्रयोग, पुरानी हिंदी
व्या०	व्याकरण	>	व्युत्पन्न
व्यंग्य	व्यंग्यार्थ में प्रयुक्त	†	प्रांतीय प्रयोग
(शब्द०)	शब्दसागर प्र० सं०	‡	ग्राम्य प्रयोग
सं०	संस्कृत	√	धातुचिह्न
संयो०	संयोजक अव्यय		

हिंदी शब्दसागर

स

स—हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन। यह ऊष्म वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान दंत है, इसलिये यह दंती 'स' कहा जाता है।

सं[1]—अव्य० [सं० सम्] १. एक अव्यय जिसका व्यवहार शोभा, समानता, संगति, उत्कृष्टता, निरंतरता, औचित्य आदि सूचित करने के लिये शब्द के आरंभ में होता है। जैसे,—संभोग, संयोग, संताप, संतुष्ट आदि। कभी कभी इसे जोड़ने पर भी मूल शब्द का अर्थ ज्यों का त्यों बना रहता है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। २. से।

सं(पु)[2]—प्रत्य० [हिं०] करण कारक और अपादान कारक का चिह्न। से। उ०—तैं एते सं तनु गुण हरयौ। न्याइ बियोगु विधाता करयौ।—छिताई०, पृ० ९३।

संक(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्का] दे० 'शंका'। उ०—(क) जलधि पार मानस अगम रावण पालित लंक। सोच विकल कपि भालु सबु दुहु दिस संकट संक।—तुलसी (शब्द०)। (ख) श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं। नेकु न संक सकुच मन माहीं। मानस, ३।२४।

संकट[1]—वि० [सं० सम+कृत, सङ्कट, प्रा० संकट] १. एकत्र किया हुआ। २. घनीभूत। ३. तंग। क्षीण। ४. दुर्गम। दुर्लंघ्य। ५. भयानक। कष्टप्रद। दुःखदायी। ६. संकीर्ण। सँकरा। तंग। ७. पूर्ण। भरा हुआ (को०)।

संकट[2]—संज्ञा पुं० १. विपत्ति। आफत। मुसीबत। उ०—लालन गे जब तें तब तें बिरहानल जालन ते मन डाढ़े। पालत हे ब्रजगायन ग्वाल हुतो जब आवत संकट गाढ़े।—दीनदयाल (शब्द०)। २. दुःख। कष्ट। तकलीफ। ३. भीड़। समूह। ४. सँकरी राह। ५. वह तंग पहाड़ी रास्ता जो दो बड़े और ऊँचे पहाड़ों के बीच से होकर गया हो। जैसे, गिरिसंकट।

यौ०—संकटचतुर्थी = दे० 'संकटचौथ'। संकटनाशन = विपत्तियों का नाश करनेवाला। संकटमुख = तंग या सँकरे मुँह का। संकटमोचन = (१) काशी में गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा स्थापित हनुमानजी की एक प्रसिद्ध मूर्ति। (२) संकट से मुक्त करनेवाला। संकटनाशन।

संकट[3]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बत्तख।

संकट चौथ—संज्ञा स्त्री० [हिं० संकट+चौथ] माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी।

विशेष—इस दिन संकट दूर करनेवाले गणेश देवता के उद्देश्य से व्रत आदि रखा जाता है। कुछ लोग श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को भी संकट चौथ कहते हैं।

संकटस्थ—वि० [सं० सङ्कटस्थ] १. संकट में पड़ा हुआ। विपद्ग्रस्त। २. दुःखी।

संकटा—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कटा] १. एक प्रसिद्ध देवी मूर्ति जो वाराणसी में है और संकट या विपत्ति का निवारण करनेवाली मानी जाती है। २. ज्योतिष के अनुसार आठ योगिनियों में से एक योगिनी।

विशेष—बाकी सात योगिनियाँ ये हैं—मंगला, पिंगला, धन्या, भ्रमरी, भद्रिका, उल्का और सिद्धि।

संकटाक्ष[1]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कटाक्ष] धौ का पेड़। धव।

संकटापन्न—वि० [सं० सङ्कटापन्न] संकट या विपति में पड़ा हुआ। उ०—छुरे की धार के समान दुर्गम और संकटापन्न है। —संत० दरिया, पृ० ५९।

संकटी—वि० [सं० सङ्कटिन्] विपद्ग्रस्त। दुखी। संकटापन्न (को०)।

संकटोत्तीर्ण—वि० [सं० सङ्कटोत्तीर्ण] जो संकट को पार कर गया हो (को०)।

संकत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सङ्केत] दे० 'संकेत'।

संकथन—संज्ञा पुं० [सं० संकथन, सङ्कथन] १. वार्ता। बातचीत। २. वर्णन। व्याख्या (को०)।

संकथा—संज्ञा स्त्री० [सं० संकथा, सङ्कथा] १. वार्ता। बातचीत। २. व्याख्या। प्रतिपत्ति (को०)।

संकथित—वि० [सं० संकथित, सङ्कथित] कहा हुआ। वर्णित। व्याख्यात (को०)।

संकना(पु)†—क्रि० अ० [सं० शङ्कन] १. शंका करना। संदेह करना। २. डरना। भयभीत होना। उ०—पाँइ परे पलिका पै परी जिय संकति सौतिन होति न सौंहीं।—देव (शब्द०)।

संकनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० शाकिनी] दे० 'शाकिनी'। उ०—डंकनी संकनी घेरि मारी।—रामानंद०, पृ० ४।

संकर[1]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कर] १. वह धूल जो झाड़ू देने के कारण उड़ती है। २. आग के जलने का शब्द। ३. दो पदार्थों का परस्पर मिश्रण। दो चीजों का आपस में मिलना। ४. न्याय के अनुसार किसी एक स्थान या पदार्थ में अत्यंताभाव और समानाधिकरण का एक ही में होना। जैसे,—मन में मूर्त्तत्व

तो है, पर भूतत्व नहीं है; और आकाश में भूतत्व है, पर मूर्त्तत्व नहीं है। परंतु पृथ्वी में भूतत्व भी है और मूर्त्तत्व भी है। ५. वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से हुई हो। दोगला। ६. मल। विष्ठा (को०)। ७. काव्यशास्त्र के अनुसार एक वाक्य में दो या अधिक अलंकारों का मिश्रण (को०)। ८. ऐसी वस्तु जो किसी वस्तु से छू जाने पर दूषित हो जाय (को०)। ९. भिन्न जाति या वर्ण का मिश्रण। दो भिन्न वर्णों का एक में (विवाहादि द्वारा) मिलना (को०)।

यौ०—वर्णसंकर = दोगला।

संकर[२]—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कर, प्रा० संकर] दे० 'शंकर'। शिव। उ०—करेहु सदा संकर पद पूजा। नारि धरम पतिदेव न दूजा।—मानस, १।१०२।

संकर(पु)[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खल, प्रा० संकल] दे० 'संकल[१]'। उ०—संकर सिंघ कि छुट्टि, छुट्टि इंद्रह कि गरुअ गज।—पृ० रा०, ५।५६।

संकरक—वि० [सं० सङ्करक] मिश्रण करनेवाला।

संकरकारक—वि० [सं० सङ्करकारक] मिश्रण या घालमेल करनेवाला।

संकरकारी—वि० [सं० सङ्करकारिन्] १. किसी अन्य वर्ण की स्त्री से अवैध संबंध रखनेवाला। २. दे० 'संकरकारक' [को०]।

संकरघरनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कर+गृहणी] शंकर की पत्नी, पार्वती।

संकरज—वि० [सं० सङ्करज] जो दो विभिन्न वर्णों के संयोग से उत्पन्न हो। मिश्र जाति से उत्पन्न [को०]।

संकरजात—वि० [सं० सङ्करजात] दे० 'संकरज' [को०]।

संकरजाति, संकरजातीय—वि० [सं० सङ्करजाति, सङ्करजातीय] दे० 'संकरज' [को०]।

संकरता—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्करता] १. संकर होने का भाव या धर्म। २. सांकर्य। मिलावट। घालमेल।

संकरषन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० संङकर्षण] १. शेषनाग। संकर्षण। उ०—संकरषन फुंकरै काल हुंकरै उतल्लै।—हम्मीर०, पृ० १३। २. बलराम।

संकरा—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कर] एक राग। दे० 'शंकरा'।

संकराश्व—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कराश्व] खच्चर।

संकरित—वि० [सं० सङ्करित] जिसमें मिलावट हो। मिला हुआ।

संकरिया—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कर+हिं० इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का हाथी जो कमरिया और मिरगी के बीच की श्रेणी का होता है। इसका मूल्य कमरिया से कम होता है।

संकरी[१]—संज्ञा पुं० [सं० सङकरिन्] १. वह जो भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से उत्पन्न हो। संकर। दोगला। २. मिला हुआ। मिश्रित। ३. अवैध संबंध रखनेवाला (को०)।

संकरी[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्करी] दे० 'शंकरी'।

संकरीकरण—संज्ञा पुं० [सं० सङ्करीकरण] १. नौ प्रकार के पापों में से एक प्रकार का पाप जो गधे, घोड़े, ऊँट, मृग, हाथी, बकरी, भेड़, मीन, साँप या भैंसे का बध करने से होता है। इसके प्रायश्चित्त के लिये कृच्छ्र या अतिकृच्छ्र व्रत करने का विधान है। २. दो पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया। ३. वर्णसंकरता करना। दो विभिन्न वर्णों या जातियों में संबंध करना।

संकर्ष—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कर्ष] अपनी ओर खींचना। नजदीक लाना। समीप लाना [को०]।

संकर्षण—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कर्षण] १. खींचने की क्रिया। २. हल से जोतने की क्रिया। ३. कृष्ण के भाई बलराम का एक नाम। ४. एकादश रुद्रों में से एक रुद्र का नाम। ५. वैष्णवों का एक संप्रदाय जिसके प्रवर्तक निंबार्काचर्य थे। ६. आकर्षण (को०)। ७. छोटा करना (को०)। ८. शेषनाग (को०)। ९. गर्व : घमंड। अहंकार। (को०)।

संकर्षण विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की विद्या जिससे किसी स्त्री के गर्भ को दूसरी स्त्री में स्थापित किया जाता था। (देवकी के सातवें गर्भ को इसी विद्या द्वारा रोहिणी में स्थापित किया गया था। इसी से बलराम का एक नाम संकर्षण है)।

संकर्षी—वि० [सं० सङ्कर्षिन्] १. खींच लेनेवाला। पास में कर लेनेवाला। २. छोटा करनेवाला। संकुचित करने या सिकोड़ लेनेवाला [को०]।

संकल†[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला, प्रा० संकल] १. दरवाजे में लगाने की सिकड़ी या जंजीर। २. पशुओं को बाँधने का सिक्कड़। ३. सोने या चाँदी की जंजीर जो गले में पहनी जाती है। जंजीर। ४. शृंखला। बंधन। उ०—संकल ही ते सब लहै माया इहि संसार। ते क्यूँ छूटै बापुड़े बाँधे सिरजनहार।—कबीर ग्रं०, पृ० ३४।

संकल[२]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कल] १. बहुत सी चीजों को एक स्थान पर एकत्र करना। संकलन। एकत्रीकरण। २. योग। मिलाना। ३. गणित की एक क्रिया जिसे जोड़ कहते हैं। योग। दे० 'संकलन'। ४. राशि। ढेर (को०)।

संकलन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कलन] [स्त्री० संकलना] [वि० संकलित] १. एकत्र करने की क्रिया। संग्रह करना। २. संग्रह। ढेर। ३. गणित की योग नाम की क्रिया। जोड़। ४. अनेक ग्रंथों से अच्छे अच्छे विषय चुनने की क्रिया। ५. वह ग्रंथ जिसमें ऐसे चुने हुए विषय हों। ६. संपर्क। संबंध। ७. योग (को०)। ८. टक्कर। धक्का। मुठभेड़ (को०)। ९. योजन। मिलाना। लपेटना (को०)।

संकलना—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कलना] दे० 'संकलन' [को०]।

संकलप—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कल्प] दे० 'संकल्प'। उ०—जाइ उपाय रचहु नृप एहू। संवत भरि संकलप करेहू।—मानस, १।१६८।

संकलपना(पु)†[१]—क्रि० सं० [सं० सङ्कल्प+हिं० ना (प्रत्य०) अथवा संकल्पना] १. किसी बात का दृढ़ निश्चय करना। उ०—जैसो पति तेरे लिये मैं संकलप्यो आप। तैसो तैं पायो सुता अपने पुन्न प्रताप।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)। २. किसी धार्मिक कार्य के निमित्त कुछ दान देना। संकल्प करना।

संकलपना[२]—क्रि० अ० विचार करना। इच्छा करना। इरादा करना।

संकला[१]—संज्ञा पुं० [सं० शाक्] शक द्वीप।

संकला[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला, प्रा० संकला] दे० 'संकल'। उ०—मनों संकला हेम ते सिंघ छुट्टं।—पृ० रा०, २।५०३।

संकला[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कला] एकत्रीकरण। जोड़ना। मिलाना [को०]।

संकलित[१]—वि० [सं० सङ्कलित] १. चुना हुआ। संगृहीत। २. जोड़ लगाया हुआ। योजित। ३ इकट्ठा किया हुआ। एकत्र किया हुआ। ४. गृहीत। पुनः प्राप्त किया या पकड़ा हुआ (को०)।

संकलित[२]—संज्ञा पुं० जोड़। योग [को०]।

संकलुष—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कलुष] कालुष्य। अशुद्धता [को०]।

संकल्प—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कल्प] १. कार्य करने की वह इच्छा जो मन में उत्पन्न हो। विचार। इरादा। २. दान, पुण्य या और कोई देवकार्य आरंभ करने से पहले एक निश्चित मंत्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ़ निश्चय या विचार प्रकट करना। ३. वह मंत्र जिसका उच्चारण करके इस प्रकार का निश्चय या विचार प्रकट किया जाता है।

विशेष—इस मंत्र में प्रायः संवत्, मास, तिथि, वार, स्थान, दाता या कर्ता का नाम, उपलक्ष और दान या कृत्य आदि का उल्लेख होता है।

४. दृढ़ निश्चय। पक्का विचार। जैसे,—मैंने तो अब यह संकल्प कर लिया है कि कभी उसके साथ कोई व्यवहार न रखूँगा। ५. उद्देश्य। लक्ष्य (को०)। ६. विमर्श। ऊहा। कल्पना (को०)। ७. मन। हृदय (को०)। ८. पति के साथ सती होने की आकांक्षा (को०)।

यौ०—संकल्पज। संकल्पजन्मा। संकल्पजूति = संकल्प या कामना द्वारा प्रेरित। संकल्पप्रभव। संकल्पभव। सकल्पमूल = विचार या दृढ़ इच्छाशक्ति जिसके मूल में हो। संकल्पयोनि। संकल्परूप = इच्छा के अनुरूप। संकल्पसंपत्ति = कामना की पूर्ति। संकल्पसंभव = (१) संकल्प या विचार से उत्पन्न। (२) कामदेव। संकल्पसिद्ध = विचार मात्र से पूर्ण होनेवाला। संकल्पसिद्धि = उद्देश्य की वह सिद्धि जो संकल्प द्वारा पूर्ण हो।

संकल्पक—वि० [सं० सङ्कल्पक] विचार करनेवाला। इच्छा करनेवाला। संकल्प करनेवाला [को०]।

संकल्पज[१]—वि० [सं० सङ्कल्पज] इच्छा, विचार या संकल्प से उत्पन्न होनेवाला [को०]।

संकल्पज[२]—संज्ञा पुं० १. इच्छा। काम। २. कामदेव [को०]।

संकल्पजन्मा—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कल्पजन्मन्] दे० 'संकल्पज'।

संकल्पन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कल्पन] उद्देश्य। अभिलाषा। इच्छा [को०]।

संकल्पना[१]—क्रि० स०, क्रि० अ० [सं० संकल्प + हिं० ना (प्रत्य०)] दे० 'संकलपना'। उ०—संकलि सिय रामहिं समर्पी सील सुख सोभामई।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५८।

संकल्पना[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कल्पना] १. संकल्प करने की क्रिया। २. वासना। इच्छा। अभिलाषा।

संकल्पनीय—वि० [सं०] १. कामना करने योग्य। जिसकी कामना या चाह की जाय। २. प्रतिज्ञा करने योग्य। जिसके लिये निश्चय किया जाय [को०]।

संकल्पप्रभव—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव [को०]।

संकल्पभव—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

संकल्पयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव। मदन। २. आकांक्षा। इच्छा। कामना [को०]।

संकल्पा—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कल्पा] दक्ष की एक कन्या जो धर्म की भार्या थी।

संकल्पात्मक—वि० [सं० सङ्कल्पात्मक] जिसमें संकल्प या दृढ़ इच्छाशक्ति निहित हो। जिसका निश्चय किया गया हो [को०]।

संकल्पित—वि० [सं० सङ्कल्पित] १. कल्पित। जिसकी कल्पना की गई हो। २. जिसका दृढ़ निश्चय किया गया हो। जिसके लिये प्रतिज्ञात हो। ३. इच्छित। विचारित। लक्षित [को०]।

संकष्ट—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कष्ट] दुःख। कष्ट। दे० 'संकट'। उ०—भक्त संकष्ट अवलोकि पितुवाक्य कृत गमन किय गहन वैदेहिभर्ता।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४८८।

संकसुक—वि० [सं० सङ्कसुक] १. जो स्थिर न हो। चंचल। २. संदिग्ध। संदेहास्पद। अनिश्चित। ३. बुरा। बदमाश। ४. कमजोर। बलहीन [को०]।

संका—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्का] दे० 'शंका'। उ०—देखि प्रताप न कपि मन संका। जिमि अहिगन महँ गरुड़ असंका।—मानस, ५।२०।

संकार[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. कूड़ा करकट या धूल जो झाड़ू देने से उड़े। २. आग के जलने का शब्द।

यौ०—संकारकूट = कूड़े कचरे की राशि।

संकार[२]†—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्केत, या हिं० सनकार ?] इशारा। संकेत।

संकारना†—क्रि० स० [हिं० संकार + ना (प्रत्य०), या हिं० सनकारना] संकेत करना। इशारा करना।

संकारी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कारी] वह कन्या जिसका कौमार्य सद्यः भंग हुआ हो [को०]।

संकारी[२]—वि० [सं० सङ्कारिन्] १. संकीर्ण। मिश्रित। संकर। २. मिश्रित या संकर जाति से उत्पन्न [को०]।

संकाश[१]—अव्य० [सं० सङ्काश] १. समान। सदृश। मिलता जुलता। (समासांत में)। उ०—तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरं।—मानस, ७।१०८। २. समीप में। निकट या पास में (को०)।

संकाश[२]—अव्य० समीप। निकट। पास।

संकाश[३]—संज्ञा पुं० १. उपस्थिति। मौजूदगी। २. पड़ोस। प्रतिवेश। संकास [को०]।

संकाश[४]—संज्ञा पुं० [सं० सम् + काश् (= चमकना)] प्रकाश। चमक। दीप्ति।

संकास⑤—अव्य० [सं० सङ्काश] दे० 'संकाश'। उ०—(क) देव-रिक्ष मर्कट विकट सुभट उद्भट समर सैल संकास रिपु त्रासकारी। बद्ध पाथोधि सुर निकर मोचन सकुल दलन दस-सीस भुज बीस भारी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) स्वर्न सैल संकास कोटि रवि तरुन तेज घन।—तुलसी (शब्द०)।

संकित⑤—वि० [सं० शङ्कित] दे० 'शंकित'। उ०—(क) साहिब महेस सदा संकित रमेस मोहि, महातप साहस विरंचि लीन्हे मोल हैं।—तुलसी ग्रं०, पृ० १७६। (ख) तेवरों को देख उन्हें संकित सराहिए।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २०१।

संकिल—संज्ञा पुं० [सं० साङ्किल] लुकारी। जलती हुई लकड़ी या मशाल [को०]।

संकिस्त†—वि० [सं० सङ्कृष्ट या सङ्कष्ट = संकट (= सँकरा)] जो अधिक चौड़ा न हो। सँकरा। तंग।

संकीरन‡—वि० [सं० सङ्कीर्ण] दे० 'संकीर्ण'।

संकीर्ण[१]—वि० [सं० सङ्कीर्ण] १. जो अधिक चौड़ा या विस्तृत न हो। संकुचित। तंग। सँकरा। २. मिश्रित। मिला हुआ। ३. क्षुद्र। छोटा। ४. नीच। तुच्छ। ५. वर्णसंकर। ६. बिखरा हुआ। छिटकाया हुआ (को०)। ७. मदमत्त (हाथी) (को०)। ८. अव्यवस्थित। क्रमहीन। अस्पष्ट (को०)।

यौ०—संकीर्णजाति = (१) वर्ण की संकरता से उत्पन्न व्यक्ति। (२) दोगली नस्ल का। जैसे, खच्चर। संकीर्णयुद्ध = वह युद्ध जिसमें अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग किया जाय। संकीर्णयोनि = दे० संकीर्णजाति।'

संकीर्ण[२]—संज्ञा पुं० १. वह राग या रागिनी जो दो अन्य रागों या रागिनियों को मिलाकर बने।

विशेष—इसके १६ भेद कहे गए हैं—चैत, मंगलक, नगनिका, चर्च्चा, अतिनाठ, उन्नवी, दोहा, बहुला, गुरुबला, गीता, गोवि, हेम्ना, कोपी, कारिका, त्रिपदिका, और अधा।

२. संकट। विपत्ति। ३. अंतर्जातीय संबंध से उत्पन्न या संकर जाति का व्यक्ति (को०)। ४. मतवाला हाथी (को०)।

संकीर्ण[३]—संज्ञा पुं० साहित्य में एक प्रकार का गद्य जिसमें कुछ वृत्तिगंधि और कुछ अवृत्तिगंधि का मेल होता है।

संकीर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कीर्णता] १. संकीर्ण होने का भाव। २. तंगी। सँकरापन। ३. नीचता। ४. क्षुद्रता। ओछापन।

संकीर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कीर्णा] पहेली का एक भेद [को०]।

संकीर्तन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कीर्तन] [स्त्री० संकीर्तना] [वि० संकीर्तित] १. भली भाँति किसी की कीर्ति का वर्णन करना। प्रशंसा करना। २. किसी देवता की सम्यक् रूप से की हुई वंदना या भजन नाम आदि जपना। ३. किसी देवता की स्तुति। स्तवन (को०)।

संकीर्तित—वि० [सं० सङ्कीर्तित] १. जिसका संकीर्तन किया गया हो। स्तुत। प्रशंसित [को०]।

संकील—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कील] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम।

संकुंचित—वि० [सं० सङ्कुञ्चित] झुका हुआ। वक्र। टेढ़ा [को०]।

संकु[१]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कु] विवर। सूराख। छिद्र [को०]।

संकु⑤[२]—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कु] १. कोई नोकदार वस्तु। २. भाला। बरछा।

संकुचन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कुचन] १. संकुचित होने की क्रिया। सिकुड़ना। २. बालकों का एक प्रकार का रोग जिसकी गणना बालग्रह में होती है। ३. लज्जित होने की क्रिया [को०]।

संकुचित—वि० [सं० सङ्कुचित] १. संकोचयुक्त। लज्जित। जैसे, संकुचित दृष्टि। २. सिकुड़ा हुआ। सिमटा हुआ। ३. तंग। सँकरा। संकीर्ण। ४. उदार का उलटा। अनुदार। क्षुद्र। ५. मुँदा हुआ। बंद (को०)। ६. नम्र। नत। झुका हुआ (को०)।

संकुट—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कट] दे० 'संकट'। उ०—(क) संकुट संसा नरक न नैनहु, ताकौं कबहूँ काल न खाइ। कंपन काई भै भ्रम भागै, सब विधि ऐसी एक लगाइ।—दादू०, पृ० ६६२।

संकुटि†—संज्ञा पुं० [सं० शाक्त, हिं० शाकत, साकट] मांसभक्षी शाक्त। उ०—स्वादैं हि संकुटि परचौ देखत ही नर अंधो रे। मूरखि मूठी छाड़ि दे होइ रह्यो निरबंधो रे।—दादू०, पृ० ५८६।

संकुपित—वि० [सं० सङ्कुपित] क्रुद्ध। नाराज। उत्तेजित [को०]।

संकुल[१]—वि० [सं० सङ्कुल] १. संकुलित। संकीर्ण। घना। २. भरा हुआ। परिपूर्ण। ३. अव्यवस्थित (को०)। ४. विकृत (को०)। ५. असंगत (को०)। ६. उग्र। प्रबल। प्रचंड (को०)। ७. घबड़ाया हुआ (को०)।

संकुल[२]—संज्ञा पुं० १. युद्ध। समर। लड़ाई। २. समूह। झुंड। ३. भीड़। ४. जनता। ५. परस्पर विरोधी वाक्य। ६. ऐसे वाक्य जिनमें परस्पर किसी प्रकार की संगति न हो। असंगत वाक्य। ७. नाश (को०)।

संकुलता—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कुलता] १. संकुलित होने का भाव। परिपूर्णता। २. गड़बड़ी। असंगति। अव्यवस्थिति। ३. घनता। घनापन। ४. जटिलता [को०]।

संकुलित—वि० [सं० सङ्कुलित] १. जो संकुल या पूरा हो। भरा हुआ। २. एकत्र। ३. घना। ४. अव्यवस्थित। घबराया हुआ (को०)। ५. बँधा हुआ। उ०—शिरसि संकुलित कलकूट पिंगला जटा, पटल शत कोटि विद्युच्छटाभम्।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४६०।

संकुश—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कुश] एक प्रकार की मछली जिसे शंकु भी कहते हैं।

संकूजित—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कूजित] १. चकवा पक्षी की आवाज। २. पक्षियों का कूजन [को०]।

संकृति[१]—वि० [सं० सङ्कृति] १. इकट्ठा करनेवाला। २. ठीक करनेवाला। ३. तैयार करनेवाला [को०]।

संकृति[२]—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद [को०]।

संकृति[३]—संज्ञा पुं० एक साम [को०]।

संक्रुत्त—वि० [सं०] टुकड़े टुकड़े काटा हुआ। काटकर टुकड़े टुकड़े किया हुआ [को०]।

संक्रुष्ट—वि० [सं०] १. खींचकर पास लाया हुआ। खींचा हुआ। २. एक साथ किया हुआ [को०]।

संकेत—संज्ञा पुं० [सं०] १. अपना भाव प्रकट करने के लिये किया हुआ कायिक परिचालन या चेष्टा। इशारा। इंगित। २ प्रेमी प्रेमिका के मिलने का पूर्वनिर्दिष्ट स्थान। वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलना निश्चित करें। सहेट। ३. कामशास्त्र संबंधी इंगित। शृंगार चेष्टा। ४. प्रेमी और प्रेमिका द्वारा किया गया निश्चय (को०)। ५. परंपरा। करार। ठहराव (को०)। ६. व्यवस्था। विधान। शर्त (को०)। ७. चिह्न। निशान। ८. पते की बातें। उ०—सरुष जानको जानि कपि कहे सकल संकेत। दीन्हि मुदिका लीन्हि सिय प्रीति प्रतीति समेत।—तुलसी (शब्द०)। ९. न्याय, व्याकरण आदि में एक वृत्ति। यह शब्द या पद इस प्रकार का अर्थबोधन करे यह संकेत या इच्छा (को०)।

यौ० —संकेतकेतन, संकेतगृह, संकेतनिकेत, संकेतनिकेतन, संकेतभूमि, संकेतस्थल, संकेतस्थान = प्रेमी प्रेमिका का मिलन स्थान। सहेट।

संकेतक—संज्ञा पुं० [सं०] १. निर्धारण। सहमति। निश्चय। २. संकेतस्थल। ३. मिलन का निश्चय करनेवाली नायिका या नायक [को०]।

संकेतग्रह, संकेतग्रहण—संज्ञा पुं० [सं० सङ्केतग्रह, सङ्केतग्रहण] शब्दार्थ ग्रहण करने की क्रिया। शब्द की अर्थ बोध कराने की शक्ति का आधारभूत धर्म। संकेत या अभिप्राय का ग्रहण। उ०—शब्द की अर्थबोधन शक्ति, शब्द और अर्थ का संबंध अथवा संकेतग्रहण भाषाज्ञान के लिये आवश्यक है।—भाषा शि०, पृ० १८।

विशेष —वक्ता द्वारा कहे गए शब्द सुनने पर श्रोता जिस क्रिया से वक्ता के शब्द का ठीक ठीक अभिप्राय आत्मगत करता है उसे संकेतग्रह या संकेतग्रहण कहते हैं।

संकेतन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्केतन] १. आपसी निश्चय। २. सहेट। मिलने का स्थान [को०]।

संकेतवाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्वपक्ष के व्यक्ति का परिचायक विशिष्ट शब्द [को०]।

संकेतित—वि० [सं० सङ्केतित] १. निश्चित किया हुआ। ठहराया हुआ। २. आहूत। निमंत्रित। ३. इशारा किया हुआ। इंगित [को०]।

यौ०—संकेतितार्थ = वह अर्थ जो संकेतित या इंगित हो।

संकोच—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कोच] १. सिकुड़ने की क्रिया। खिचाव। तनाव। जैसे, अंगसंकोच, गात्रसंकोच। २. लज्जा। शर्म। ३. भय। ४. आगा पीछा। पसोपेश। हिचकिचाहट। ५. कमी। ६. एक प्रकार की मछली। ७. केसर। कुमकुम। ८. एक अलंकार जिसमें 'विकास अलंकार' से विरुद्ध वर्णन होता है या किसी वस्तु का अतिशय संकोच वर्णन किया जाता है। ९. बहुत सी बातों को थोड़े में कहना। १०. बंद होना। मुँदना। जैसे, कमलसंकोच, नेत्रसंकोच (को०)। ११. शुष्क होना। सूखना। उ०—जलसकोच विकल भइ मीना।—मानस, ४। २०। १२. बंधन। बंध (को०)। झुकना। नम्र होना (को०)।

यौ०—संकोचकारी = (१) नम्र होनेवाला। (२) लज्जालु। शरमीला। संकोचपत्रक। संकोचपिशुन। संकोचरेखा = सिकुड़न की रेखा। झुर्री।

संकोचक—वि० [सं० सङ्कोचक] जो संकुचित करे। संकोचन करनेवाला [को०]।

संकोचन[1]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कोचन] १. सिकुड़ने की क्रिया। २. एक पर्वत का नाम (को०)।

संकोचन[2] —वि० १. लज्जा करनेवाला। २. सिकुड़नेवाला [को०]।

संकोचनी —संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कोचनी] लजालू नाम की लता।

संकोचपत्रक —संज्ञा पुं० [सं० सङ्कोचपत्रक] वृक्षों का एक प्रकार का रोग जिसमें उनके पत्तों के ऊपर कुछ दाने से निकल आते हैं और पत्ते सिकुड़ जाते हैं।

संकोचपिशुन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कोचपिशुन] कुंकुम। केसर।

संकोचित[1]—वि० [सं० सङकोचित] १. संकोचयुक्त। जिसमें संकोच हो। २. जो विकसित या प्रफुल्लित न हो। अप्रफुल्लित। ३. लज्जित। शरमिंदा।

संकोचित[2]—संज्ञा पुं० तलवार के बत्तीस हाथों में से एक हाथ। तलवार चलाने का एक ढंग या प्रकार।

संकोची—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कोचिन्] १. संकोच करनेवाला। २. सिकुड़नेवाला। ३. जिसे संकोच या लज्जा हो। शर्म करनेवाला।

संकोपना(पु)—क्रि० अ० [सं० सम् + कोप + हिं० ना० (प्रत्य०)] क्रोध करना। क्रुद्ध होना। गुस्सा करना।

संक्रंद—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रन्द] १. युद्ध। लड़ाई। २. कोलाहल। शोरगुल। ३. रोना। आक्रंदन। बिलपना। ४. सोमरस को निकालने या निचोड़ने का साधन। अभिषवण [को०]।

संक्रंदन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रन्दन] १. शक्र। इंद्र। सुरपति। उ०—संक्रंदन कृपाल सुरत्राता। वज्री भुक्ति मुक्ति के दाता।—गिरिधर (शब्द०)। २. पुराणानुसार भौत्य मनु के पुत्र का नाम। ३. लड़ाई। युद्ध। संग्राम (को०)। ४. दे० 'क्रंदन'।

यौ०—संक्रंदननंदन, संक्रदनपुत्र = (१) बालि नामक बानर। (२) अर्जुन। पार्थ।

संक्रम—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रम] १. कष्ट या कठिनतापूर्वक बढ़ने की क्रिया। संप्रवेश। २. पुल आदि बनाकर किसी स्थान में प्रवेश करना। ३. पुल। सेतु। ४. प्राप्ति। ५. संक्रमण। संक्रांति। ६. साथ गमन करना। साथ जाना (को०)। ७. गमन। गति (को०)। ८. भ्रमण। संचलन (को०)। ९. दुर्गम रास्ता। तंग राह (को०)। १०. उल्कापात। तारा टूटना (को०)। ११. विभिन्न राशियों में आकाशीय पिंड वा ग्रहों के संचरण की कक्षा या मार्ग (को०)। १२. सोपान। सीढ़ी (को०)। १३. किसी लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन या मार्ग (को०)।

विशेष—यह बाजारों में सफेद, पीले, लाल, काले आदि कई रंगों का मिलता है और प्रायः औषधों में काम आता है। कुछ लोग कृत्रिम रूप से भी संखिया बनाते हैं। यह बहुत विकट विष होता है और प्रायः हत्या आदि के लिये काम में आता है। वैद्यक के अनुसार यह वीर्य तथा बलवर्धक, कांति-जनक, लोहभेदक, दाहजनक, वमनकारक, रेचक, त्रिदोषघ्न तथा सब प्रकार के दोषों का नाश करनेवाला माना जाता है। वैद्यक के अतिरिक्त हिकमत और डाक्टरी में भी इसका व्यवहार होता है और उनमें भी इसे बहुत बलवर्द्धक माना गया है।

पर्या०—आखुपाषाण। शंखविष। शृंगिक। गौरीपाषाण। सोमल। संबुल। संमुलखार।

संखोली(५)—संज्ञा स्त्री० [हिं० संख + ओली (प्रत्य०)] छोटा शंख। उ०—दीनी एक संखोली हाथ। पूजा की सामग्री साथ। —अर्ध०, पृ० २१।

संख्य[१]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ख्य] युद्ध। समर। लड़ाई।

संख्य[२]—वि० दे० 'संख्येय' [को०]।

संख्यक—वि० [सं० सङ्ख्यक] जिसमें संख्या हो। संख्यावाला (समासांत में प्रयुक्त) जैसे, बहुसंख्यक।

संख्यता—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ख्यता] संख्या का भाव या गुण। संख्यत्व।

संख्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'संख्यता'।

संख्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ख्या] १. वस्तुओं का वह परिमाण जो गिनकर जाना जाय। एक, दो, तीन, चार, आदि की गिनती। तादाद। शुमार। २. गणित में वह अंक जो किसी वस्तु का, गिनती में, परिमाण बतलाते। अदद। ३. वैद्यक में संप्राप्ति के पाँच भेदों में से एक भेद। अन्य चार भेद विकल्प, प्राधान्य, बल और काल हैं। ४. बुद्धि। ५. विचार। ६. रीति। पद्धति। ढंग (को०)। ७. योग। जोड़ (को०)। ८. नाम। आख्या। सज्ञा (को०)। ९. समाचार पत्रों पर दिया गया क्रमांक (को०)। १०. किसी सामयिक पत्र आदि की विशिष्ट संख्यावाली प्रति (को०)। ११. रेखागणित में कोणमान (को०)। १२. संग्राम। युद्ध (को०)।

यौ०—संख्यापद = अंक। संख्यापरित्यक्त = असंख्य। संख्यातीत। संख्यामंगलग्रंथि = बरसगाँठ समारोह। संख्यालिपि। संख्यावाचक = (१) संख्यासूचक। संख्या बतानेवाला। (२) अंक। संख्याविधान = गणना करना। संख्याशब्द = अंक। संख्याविधान संख्यासमापन = शिव। संख्यासूचक = संख्यावाचक।

संख्याक—वि० [सं० सङ्ख्याक] संख्यावाला। संख्यक। जैसे, शतसंख्याक।

संख्यात[१]—वि० [सं० सङ्ख्यात] १. परिगणित। गिना हुआ। २. गिनती मिलाया हुआ। विचारित (को०)।

संख्यात[२]—संज्ञा पुं० १. संख्या। २. राशि। समूह [को०]।

संख्याता[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ख्याता] एक प्रकार की पहेली [को०]।

संख्याता[२]—वि० [सं० सङ्ख्यातृ] परीक्षक। जाँच पड़ताल करनेवाला। गणक। जैसे, गो संख्याता [को०]।

संख्यातिग—वि० [सं० सङ्ख्यातिग] दे० 'संख्यातीत' [को०]।

संख्यातीत—वि० [सं० सङ्ख्यातीत] जिसकी गिनती न की जा सके। जो गणना से परे हो। अनगिनत [को०]।

संख्यान—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ख्यान] १. संख्या। गिनती। २. गिनने की क्रिया। शुमार। ३. ध्यान। ४. प्रकाश। ५. माप (को०)।

संख्यालिपि—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ख्यालिपि] एक प्रकार की लेखन-प्रणाली जिसमें वर्णों के स्थान पर संख्यासूचक चिह्न या अंक लिखे जाते हैं।

संख्यावान्[१]—वि० [सं० सङ्ख्यावत्] १. संख्यावाला। गिना हुआ। २. हेतु या तर्क से युक्त [को०]।

संख्यावान्[२]—संज्ञा पुं० विद्वान् व्यक्ति [को०]।

संख्येय वि० [सं० सङ्ख्येय] १. जिसकी गणना की जा सके। गिना जाने के योग्य। गण्य। २. विचारणीय (को०)।

संग[१]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग] १. मिलने की क्रिया। मिलन। २. संसर्ग। सहवास। सोहबत। जैसे,—बुरे आदमियों के संग में अच्छे आदमी भी बिगड़ जाते हैं।

क्रि० प्र०—करना।—छोड़ना।—टूटना।—रखना।

मुहा०—संग सोना = सहवास करना। समागम करना। उ०—संग सोई तो फिर लाज क्या (कहा०)। (किसी के) संग = साथ होलेना। पीछे लगना। (किसी को) संग लगना लेना = अपने साथ लेना या ले चलना। जैसे,—जब चलने लगना, तब हमें भी संग ले लेना।

३. विषयों के प्रति होनेवाला अनुराग। विषयवासना। ४. वासना। आसक्ति। ५. वह स्थान जहाँ दो नदियाँ मिलती हों। नदियों का संगम। ६. मैत्री। संपर्क। साथ (को०)। ७. योग। संगम (को०)। ८. मुठभेड़। लड़ाई (को०)। ९. बाधा (को०)।

यौ०—संगकर = आसक्त करनेवाला। संगत्याग = विराग। संगरहित, संगवर्जित = अनासक्त। आसक्तिरहित। संग-विच्युति = विषयों से विराग।

संग[२]—क्रि० वि० साथ। हमराह। सहित। जैसे,—(क) उनके संग चार आदमी आए हैं। (ख) मरने पर क्या कोई हमारे संग जायगा? (ग) हम भी तुम्हारे संग चलेंगे।

संग[३]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] पत्थर। पाषाण। जैसे,—संगमूसा, संगमरमर, संग असवद।

यौ०—संग अंदाज = (१) ढेला फेंकने का यंत्र। गोफन। ढेलवास। (२) पत्थर फेंकनेवाला व्यक्ति। (३) किले की दीवारों में बने हुए छेद जिनसे शत्रु पर गोली, तीर, पत्थर आदि फेंकते हैं। संग आसिया = चक्की का पाट। संगखारा। संगखार = शुतुरमुर्ग। संगचीनी = एक तरह का पत्थर। संगजराहत। संगतराज = बाट। बटखरा। संगदिल। संगपुश्त। संगफर्श = पत्थर का फर्श। संगबसरी। संगबार = पत्थर फेंकनेवाला।

संगबारान = ढेलों की वर्षा। संग मरमर = दे० 'संगमर्मर'। संगमुरदार = मुरदासंख। संगयशब। संगसार। संग सुर्ख = एक प्रकार का लाल रंग का पत्थर। संग सुलेमानी।

संग[४]—वि० पत्थर की तरह कठोर। बहुत कड़ा।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग प्रायः यौगिक शब्द बनाने में उनके आरंभ में होता है। जैसे,—संगदिल = पाषाण हृदय। कठोर हृदय।

संग अंगूर—संज्ञा पुं० [संग? हिं० अंगूर] एक प्रकार की वनस्पति।

विशेष—यह हिमालय पर पाई जाती है और ओषधि के काम में आती है। इसे अंगूरशेफा, गिरी बूटी या पेवराज भी कहते हैं।

संग असवद—संज्ञा पुं० [फ़ा० संग + अ० असवद] काले रंग का एक बहुत प्रसिद्ध पत्थर।

विशेष—यह काबा की दीवार में लगा हुआ है और इसको हज करने के लिये जानेवाले मुसलमान बहुत पवित्र समझते तथा चूमते हैं। मुसलमानों का यह विश्वास है कि यह पत्थर स्वर्ग से लाया गया है; और इसे चूमने से पापों का नष्ट होना माना जाता है।

संगकूपी—संज्ञा स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की वनस्पति जो ओषधि के काम में आती है।

संगखारा—संज्ञा पुं० [फ़ा० संग + खार] एक प्रकार का पत्थर जो कुछ नीलापन लिए भूरे रंग का और बहुत कड़ा होता है। चकमक पत्थर।

संगजराहत—संज्ञा पुं० [फा० संग + अ० जराहत] एक प्रकार का सफेद चिकना पत्थर जो घाव भरने के लिये बहुत उपयोगी होता है।

विशेष—इसे पीसकर बारीक चूर्ण बनाते हैं जिसे 'गच' कहते हैं और जो साँचा बनाने के काम में भी आता है। इसका गुण यह है कि पानी के साथ मिलने पर यह फूलता है और सूखने पर कड़ा हो जाता है। इसलिये इससे मूर्तियाँ आदि भी बनाते हैं। इसे कुलगार, कारसी, सफेद सुरमा या सिल-खड़ी भी कहते हैं।

संगट(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कट] दे० 'संकट'। उ०—संगट तैं हरि लेह उबारी। निसदिन सिवरौं नाँव तुमारी।—रामानंद०, पृ० १९।

संगठन—संज्ञा पुं० [सं० संघटन, सङ्घटन या सम् + हिं० गठना] १. बिखरी हुई शक्तियों, लोगों या अंगों आदि को इस प्रकार मिलाकर एक करना कि उनमें नवीन जीवन या बल आ जाय। किसी विशिष्ट उद्देश्य या कार्यसिद्धि के लिये बिखरे हुए अवयवों को मिलाकर एक और व्यवस्थित करना। एक में मिलाने और उपयोगी बनाने के लिये की हुई व्यवस्था।

विशेष—वास्तव में यह शब्द शुद्ध संस्कृत नहीं है, गलत गढ़ा हुआ है; पर आजकल यह बहुत प्रचलित हो रहा है। कुछ लोग इससे, संस्कृत व्याकरण के नियमों के अनुसार 'संगठित', 'संगठनात्मक' आदि शब्द भी बनाते हैं, जो अशुद्ध हैं। कुछ लोगों ने इसके स्थान पर 'संघटन' शब्द का व्यवहार करना आरंभ किया है, जो शुद्ध संस्कृत है।

२. वह संस्था या संघ आदि जो इस प्रकार की व्यवस्था से तैयार हो।

संगठित—वि० [संघटित हिं० संगठन] जो भलीभाँति व्यवस्था करके एक में मिलाया हुआ हो। जो व्यवस्थित रूप में और काम करने के योग्य मिलाकर बनाया गया हो।

संगणक—संज्ञा पुं० [सं० सं + गणक] उच्च कोटि की सूक्ष्मतम एवं जटिल-तम गणना करनेवाला आधुनिक यंत्र विशेष। (अं० कंप्यूटर)।

संगणिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गणिका] अप्रतिरूप कथा। सुंदर वार्ता।

संगत[१]—वि० [सं० सङ्गत] १. मिला या जुड़ा हुआ। संयुक्त। २. एकत्र किया हुआ। एक में मिलाया हुआ। ३. शादी-शुदा। विवाहित। ४. मैथुन संबंध में संसक्त। संभोग में लगा हुआ। ५. समुचित। युक्तियुक्त। उपयुक्त। ठीक। ६. कुंचित। सिकुड़ा हुआ [को०]।

यौ०—संगतगात्र = संकुचित शरीरवाला।

संगत[२]—संज्ञा पुं० १. मिलन। २. साथ। साहचर्य। ३. मित्रता। दोस्ती। अंतरंगता। ४. सामंजस्यपूर्ण या उपयुक्त वाणी। युक्तियुक्त टिप्पणी (को०)।

संगत[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गति] १. संग रहने या होने का भाव। साथ रहना। सोहबत। संगति। २. संग रहनेवाला। साथी। ३. वेश्याओं या भाँड़ों आदि के साथ रहकर सारंगी, तबला, मँजीरा आदि बजाने का काम।

क्रि० प्र०—बजाना।—में रहना।

मुहा०—संगत करना = गानेवाले के साथ साथ ठीक तरह से तबला, सारंगी, सितार आदि का बजाना।

४. वह जो इस प्रकार किसी गाने या नाचनेवाले के साथ रहकर साज बजाता हो। ५. वह मठ जहाँ उदासी या निर्मले आदि साधु रहते हैं। ६. संबंध। संसर्ग। ७. प्रसंग। मैथुन। ८. दे० 'संगति'।

संगतसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गतसन्धि] १. कामंदक नीति के अनुसार अच्छे के साथ संधि जो अच्छे और बुरे दिनों में एक सी बनी रहती है। कांचन संधि। २. मित्रता के अनंतर होने-वाली संधि या सुलह (को०)।

संगतरा—संज्ञा पुं० [पुर्त० > फा०] एक प्रकार की बड़ी और मीठी नारंगी। संतरा।

संगतराश—संज्ञा पुं० [फा०] पत्थर काटने या गढ़नेवाला मजदूर। पत्थरकट। २. एक औजार जो पत्थर काटने के काम में आता है।

संगतार्थ[१]—वि० [सं०] ठीक ठीक अर्थ देनेवाला। उपयुक्त अर्थ का बोधक [को०]।

संगतार्थ[२]—संज्ञा पुं० वह अर्थ जो ठीक या संगत हो [को०]।

संगति—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गति] १. मिलने की क्रिया। मेल। मिलाप। २. संग साथ। सोहबत। संगत। ३. प्रसंग। मैथुन। ४. संबंध। ताल्लुक। ५. ज्ञान। ६. किसी विषय का ज्ञान प्राप्त करने के लिये बार बार प्रश्न करने की क्रिया। ७. युक्ति। ८. पहले लिखी या कही हुई बात के साथ बाद में लिखी या कही हुई बात का मेल। आगे पीछे कहे जानेवाले वाक्यों आदि का मिलान।

क्रि० प्र०—बैठना।—मिलना।—लगना।—लगाना।

९. दे० 'संगत'। १०. योग्यता। उपयुक्तता (को०)। ११. दैवयोग। संयोग (को०)। १२. संघ (को०)। १३. अधिकरण के पाँच अवयवों में से एक (को०)।

संगतिया—संज्ञा पुं० [हिं० संगत + इया (प्रत्य०)] १. वह जो किसी गाने या नाचनेवाले के साथ रहकर सारंगी, तबला या और साज बजाता हो। साजिंदा। २. दे० 'संगाती'।

संगती—संज्ञा पुं० [हिं० संगत + ई (प्रत्य०)] १. वह जो साथ में रहता हो। संग रहनेवाला। २. दे० 'संगतिया'।

संगथ—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गथ] संग्राम। युद्ध।

संगथा—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गथा] नदियों का संगम [को०]।

संगदिल—वि० [फ़ा०] जिसका हृदय पत्थर की तरह कठोर हो। कठोरहृदय। निर्दय। दयाहीन।

संगदिली—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] संगदिल होने का भाव। कठोर हृदयता। निर्दयता।

संगपुश्त—संज्ञा पुं० [फ़ा०] पत्थर की तरह कड़ी पीठवाला, कच्छप। कछुआ। कमठ।

संगबसरी—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार की मिट्टी जिसमें लोहे का अंश अधिक होता है और जो इसी कारण दवा के काम में आती है। यह फारस में होती है और वहीं से आती है।

संगम—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गम] १. दो वस्तुओं के मिलने की क्रिया। मिलाप। संमेलन। संयोग। समागम। मेल। उ०—आपुहिं ते उठि जौ चलै तिय पिय के संकेत। निसिदिन तिमिर प्रकास कछु गनै न संगम हेत।—देव (शब्द०)। २. दो नदियों के मिलने का स्थान। जैसे,—गंगा यमुना का संगम प्रयाग में होता है। उ०—ज्योति जगै यमुना सी लगै जग लाल विलोचन पाप विपोहै। सूर सुता शुभ संगम तुंग तरंग तरंगिणि गंग सी सोहै।—केशव (शब्द०)। ३. साथ। संग। सोहबत। उ०—पद्मावत सों कह्यो विहंगम। कंत लुभाय रहैं जेहि संगम।—जायसी (शब्द०)। ४. स्त्री और पुरुष का संयोग। मैथुन। प्रसंग।

यौ०—संगम साध्वस = संभोग काल की घबराहट।

५. ज्योतिष में ग्रहों का योग। कई ग्रहों आदि का एक स्थान पर मिलना या एकत्र होना। ६. उपयुक्त होने का भाव (को०)। ७. लड़ाई। समर (को०)। ८. संपर्क। स्पर्श (को०)।

संगमक—वि० [सं० सङ्गमक] मार्गदर्शक [को०]।

संगमन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गमन] १. संयोग। मेल। संगम। २. यमराज का एक नाम (को०)।

संगमर—संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

संगमर्मर—संज्ञा पुं० [फ़ा० संग + अ० मर्मर] एक प्रकार का बहुत चिकना, मुलायम और सफेद प्रसिद्ध पत्थर जो बहुत कीमती होता है।

विशेष—यह पत्थर मूर्ति, मंदिर तथा महल इत्यादि बनाने में काम आता है। आगरे का ताजमहल इसी पत्थर का बना है। भारत में यह जयपुर में अधिक पाया जाता है। इसके अतिरिक्त अजमेर, किशनगढ़ और जोधपुर में भी इसकी कुछ खाने हैं।

संगमित—वि० [सं० सङ्गमित] मिलाया हुआ। संयुक्त या इकट्ठा किया हुआ [को०]।

संगमूसा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का काला, चिकना, कीमती पत्थर जो मूर्ति आदि बनाने के काम आता है।

संगयशब—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का कीमती पत्थर जिसका रंग कुछ हरापन लिए हुए होता है। इसे धो या घिसकर पीने से दिल का धड़कना कम हो जाता हैं। इसकी तावीज भी लोग पहनते हैं। हौल दिली।

संगर[१]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गर] १. युद्ध। समर। संग्राम। २. आपद्। विपत्ति। ३. अंगीकार। स्वीकार। ४. प्रतिज्ञा। ५. प्रश्न। सवाल। ६. नियम। ७. विष। जहर। ८. शमी वृक्ष का फल। ९. निगल जाना (को०)। १०. ज्ञान (को०)।

यौ०—संगरक्षम = युद्ध योग्य। युद्ध करने में समर्थ या शक्त। संगरभूमि = लड़ाई का मैदान। युद्धभूमि। संगरस्थ = युद्धभूमि में स्थित। युद्धलिप्त।

संगर[२]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह धुस या दीवार जो ऐसे स्थान में बनाई जाती है, जहाँ सेना ठहरती है। रक्षा करने के लिये सेना के चारों ओर बनाई हुई खाई, धुस या दीवार। २. मोरचा।

संगरण—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गरण] किसी के पीछे चलना। पीछा करना।

संगराम (पु)—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राम] दे० 'संग्राम'।

संगरासिख—संज्ञा पुं० [हिं० या फ़ा० हिं० का मिश्रण] ताँबे की मैल जो खिजाब बनाने के काम में आती है।

संगरेजा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े। कंकड़। बजरी।

संगल—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का रेशम जो अमृतसर से आता है।

विशेष—यह दो तरह का होता है—बरदवानी और बशीरी। यह बारीक और मजबूत होता है; इसलिये गोटा, किनारी आदि बनाने के काम में बहुत आता है।

संगव—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गव] वह समय जब चरवाहा बछड़ों को दूध पिलाकर और गौओं को दुहकर चराने के लिये ले जाता है। प्रातःकाल के बाद तीन मुहूर्त का समय।

संगविनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गविनी] वह बाड़ा या खरका जहाँ गाएँ दुहने के लिये एकत्र की जाती हैं [को०]।

संगसार[1]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] प्राचीन काल का एक प्रकार का प्राणदंड।

विशेष—यह दंडविधान प्रायः अरब, फारस आदि देशों में प्रचलित था। इस दंड में अपराधी भूमि में आधा गाड़ दिया जाता था और लोग पत्थर मार मारकर उसकी हत्या कर डालते थे।

संगसार[2]—वि० नष्ट। चौपट। ध्वस्त।

संगसाल—संज्ञा पुं० [फ़ा०] अफगानिस्तान की उत्तरी सीमा पर एक पहाड़ी में कटी हुई पत्थर की बहुत बड़ी मूर्ति का नाम।

विशेष—अफगानिस्तान की उत्तरीय सीमा पर तुर्किस्तान के मार्ग में समुद्र से आठ हजार फुट की ऊँचाई पर हिंदुकुश की घाटी में बहुत सी पुरानी इमारतों के चिह्न हैं। वहीं पहाड़ में बनी हुई दो बड़ी मूर्तियाँ भी हैं जिनमें से एक १८० और दूसरी ११७ फुट ऊँची है। वहाँवाले इन्हें संगसाल और शाहयम्मा कहते हैं।

संगसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सँड़सी] दे० 'सँड़सी'।

संगसुरमा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] काले रंग की वह उपधातु जिसे पीसकर आँखों में लगाने का सुरमा बनाया जाता है। विशेष दे० 'सुरमा'।

संग सुलेमानी—संज्ञा पुं० [फ़ा० संग+अ० सुलेमानी] एक प्रकार के रंगीन पत्थर के नग जिनकी मालाएँ आदि बनाकर मुसलमान फकीर पहना करते हैं।

संगाती—संज्ञा पुं० [हिं० संग+आती (प्रत्य०)] १. वह जो संग रहता हो। साथी। संगी। २. दोस्त। मित्र।

संगाम(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राम] दे० 'संग्राम'। उ०—राउत्ता पुत्ता चलए बहुत्ता अतरे पटरे सोहंता। संगाम सुहव्वा जनि गंधव्वा रूजें परमत मोहंता।—कीर्ति०, पृ० ४८।

संगायन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गायन] बहुतों का एक साथ गाना या स्तवन करना।

संगाव—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गाव] वार्तालाप। बातचीत [को०]।

संगिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० संगी का स्त्री० रूप] १. साथ रहनेवाली स्त्री। सहचरी। २. पत्नी। भार्या। जोरू।

संगी[1]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गिन्, हिं० संग+ई (प्रत्य०)] १. वह जो सदा संग रहता हो। साथी। २. मित्र। बंधु।

संगी[2]—वि० १. संयुक्त। मिला हुआ। २. अनुरक्त। आसक्त। ३. कामुक। ४. अविच्छिन्न। संतत। ५. वांछा करनेवाला। स्पृही [को०]।

संगी[3]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा जो विवाह आदि में वर का पाजामा तथा स्त्रियों के लहँगे इत्यादि के बनाने के काम में आता है।

संगी[4]—वि० [फ़ा० संग (=पत्थर)] पत्थर का। संगीन। जैसे,—संगी मकान।

संगीत[1]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गीत] १. नृत्य, गीत और वाद्य का समाहार। वह कार्य जिसमें नाचना, गाना और बजाना तीनों हों।

विशेष—संगीत का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन है; और भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न प्रकार से मनोरंजन के लिये गाना बजाना हुआ करता है। संभवतः भारतवर्ष में ही सबसे पहले संगीत की ओर लोगों का ध्यान गया था। वैदिक काल में ही यहाँ के लोग मंत्रों का गान करते और उसके साथ साथ हस्तक्षेप आदि करते और बाजा बजाते थे। धीरे धीरे इस कला ने इतनी उन्नति की कि 'सामवेद' की रचना हुई। इस प्रकार मानो सामवेद भारतीय संगीत का सबसे प्राचीन और पूर्वरूप है। पीछे संगीत का बड़ा प्रचार हुआ। सुर, नर सभी इससे प्रेम करने लगे। रामायण और महाभारत के समय में इस देश में इसका बड़ा आदर था। नाचने, गाने और बजाने का अभ्यास सभी सभ्य लोग करते थे। संगीत शास्त्र के प्रथम आचार्य 'भरत' माने जाते हैं। इनके पश्चात् काश्यप, मतंग, पार्ष्टि, नारद, हनुमत् आदि ने संगीत शास्त्र की आलोचना की। कहते हैं कि प्राचीन यूनान, अरब और फारसवालों ने भारतवासियों से ही संगीत शास्त्र की शिक्षा ग्रहण की थी।

कुछ लोगों का मत है कि स्वर, ताल, नृत्य, भाव, कोक और हस्त इन सातों के समाहार को संगीत कहते हैं; पर अधिकांश लोग गान, वाद्य और नृत्य को ही संगीत मानते हैं; और यदि वास्तविक दृष्टि से देखा जाय तो शेष चारों का भी समावेश इन्हीं तीनों में हो जाता है। इनमें से गीत और वाद्य को 'श्राव्य संगीत' तथा नृत्य को संगीत कहते हैं। संगीत के और भी दो भेद किए गए हैं—मार्ग और देशी। कहते हैं कि किसी समय महादेव के सामने भरत ने अपनी संगीतविद्या का परिचय दिया था। उस संगीत के पथप्रदर्शक ब्रह्मा थे और वह संगीत मुक्तिदाता था। वही संगीत 'मार्ग' कहलाता था। इसके अतिरिक्त भिन्न भिन्न देशों में लोग अपने अपने ढंग पर जो गाते बजाते और नाचते हैं, उसे देशी कहते हैं। कुछ लोग केवल गाने और बजाने को ही और कुछ लोग केवल गाने को ही, भ्रम से, संगीत कहते हैं।

२. सामूहिक गान। सहगान। एक साथ मिलकर गाया हुआ गान (को०)। ३. कई वाद्यों वा एक स्वर ताल में बजना।

संगीत[2]—वि० जो साथ मिलकर गाया गया हो [को०]।

संगीतक—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गीतक] १. विभिन्न स्वरों या वाद्यों का पारस्परिक मेल। २. गीत, नृत्य और वाद्य द्वारा सामूहिक मनोरंजन [को०]।

संगीतज्ञ—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गीतज्ञ] वह जो संगीतविद्या का ज्ञाता हो।

संगीतविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गीत+विद्या] दे० 'संगीत शास्त्र'। विशेष दे० 'संगीत'[१]।

संगीतवेश्म—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गीतवेश्मन्] दे० 'संगीतशाला' [को०]।

संगीतशाला—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गीतशाला] वह भवन जहाँ संगीत होता हो [को०]।

संगीतशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें गाने, बजाने, नाचने और हाव भाव आदि दिखलाने की कला का विवेचन हो।

संगीति—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गीति] १. वार्तालाप। बातचीत। २. दे० 'संगीत'। ३. बौद्धों की धर्मसभा (को०)। ४. आर्या गीति का एक भेद (को०)।

संगीन[१]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का अस्त्र जो लोहे का बना हुआ तिफला और नुकीला होता है। यह बंदूक के सिरे पर लगाया जाता है। इससे शत्रु को भोंककर मारते हैं।

संगीन[२]—वि० १. पत्थर का बना हुआ। जैसे,—संगीन इमारत। २. गफ। मोटा। जैसे,—संगीन कपड़ा। ३. टिकऊ। पायदार। मजबूत। जैसे,—कलाबत्तू का काम संगीन होता है। ४. विकट। असाधारण। जैसे,—संगीन जुर्म। संगीन मामला। ५. पेचीदा। ६. कठोर। जैसे,—संगीन दिल।

यौ०—संगीन जुर्म = विकट अपराध। असाधारण अपराध। संगीनदिल = कठोर हृदयवाला। बेरहम। संगीनदिली = बेरहमी।

संगीनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० संगीन] १. असाधारणता। २. कठोरता। कड़ापन। मजबूती।

संगीर्ण—वि० [सं० सङ्गीर्ण] १. समर्थित। स्वीकृत। २. जिसका वादा किया हुआ हो। प्रतिज्ञात [को०]।

संगुप्त[१]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गुप्त] एक बुद्ध का नाम।

संगुप्त[२]—वि० १. जो छिपाकर रखा गया हो। छिपाया हुआ। २. भलीभाँति संवर्धित या सुरक्षित [को०]।

संगुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गुप्ति] १. गोपनता। छिपाव। दुराव। २. त्राण। रक्षण। सुरक्षा [को०]।

संगूढ़[१]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गूढ] १. रेखा या लकीर आदि खींचकर निशान की हुई राशि या ढेर।

विशेष—प्रायः लोग अन्न या और किसी प्रकार की राशि लगाकर उसे रेखाओं से घेर या अंकित कर देते हैं, जिसमें यदि कोई उस राशि में से कुछ चुरावे, तो पता लग जाय। इसी प्रकार अंकित की हुई राशि को संगूढ़ कहते हैं।

संगूढ़[२]—वि० १. पूर्णतः गुप्त या छिपाया हुआ। २. संकुचित। संक्षिप्त। ३. मिला हुआ। संयुक्त। ४. एकत्रित। राशीकृत [को०]।

संगृभित—वि० [सं० सङ्गृभित] एकाग्र किया हुआ। समाहित किया हुआ [को०]।

संगृहीत—वि० [सं० सङ्गृहीत] संग्रह किया हुआ। एकत्र किया हुआ। जमा किया हुआ। संकलित। २. ग्रस्त। जकड़ा हुआ (को०)। ३. निग्रहीत या संयत किया हुआ। शासित (को०)। ४. आगत। प्राप्त। स्वीकृत (को०)। ५. संकोचित या संक्षिप्त किया हुआ (को०)।

यौ०—संगृहीतराष्ट्र = जिसने राज्यशासन सुव्यवस्थित कर लिया हो। सुशासित राज्यवाला (राजा)।

संगृहीता—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गृहीतृ] वह जो संग्रह करता हो। एकत्र करनेवाला। जमा करनेवाला।

संगृहीति—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्गृहीति] नियंत्रण। वशीभूत करना। निगृहीत करना [को०]।

संगृहीतृ—वि० [सं० सङ्गृहीतृ] १. जो पकड़ या काबू में रखे अथवा शासित करे। २. अश्वशिक्षक। सारथी [को०]।

संगोतरा—संज्ञा पुं० [हिं० संगतरा] एक प्रकार की नारंगी। संगतरा। संतरा।

संगोपन[१]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्गोपन] छिपाने की क्रिया। पोशीदा रखना। छिपाना।

संगोपन[२]—वि० गुप्त रखने या छिपानेवाला [को०]।

संगोपनीय—वि० [सं० सङ्गोपनीय] छिपाने के योग्य। पोशीदा रखने के लायक।

संग्रंथन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रन्थन] एक साथ बाँधना या एक में बाँधना।

संग्रथन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रथन] १. एकत्र बाँधना। २. व्यवस्थित करना या मरम्मत करना [को०]।

संग्रथित—वि० [सं० सङ्ग्रथित] एक साथ नत्थी किया हुआ, पिरोया हुआ या बँधा हुआ [को०]।

संग्रसन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रसन] १. बहुत अधिक भोजन करना। २. दबोच लेना। दबा देना (को०)।

संग्रह—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रह] १. एकत्र करने की क्रिया। जमा करना। संकलन। संचय। २. वह ग्रंथ जिसमें अनेक विषयों की बातें एकत्र की गई हों। ३. भोजन, पान, औषध इत्यादि खाने की क्रिया। ४. मंत्र बल से अपने फेंके हुए अस्त्र को अपने पास लौटाने की क्रिया। ५. सोम याग। ६. सूची। फेहरिस्त। ७. निग्रह। संयम। ८. रक्षा। हिफाजत। ९. कब्ज। कोष्ठबद्धता। १०. शिव का एक नाम। ११. पाणिग्रहण। विवाह। १२. जमघट। जमाव। १३. सभा। गोष्ठी। १४. मैथुन। स्त्री प्रसंग। १५. ग्रहण करने की क्रिया। १६. स्वीकार। मंजूरी। उ०—तेहि ते कछु गुन दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने।—मानस, १। १७. चंगुल। पकड़ (को०)। १८. जोड़। राशि। समष्टि (को०)। १९. भंडारगृह (को०)। २०. बड़प्पन (को०)। २१. वेग (को०)। २२. हवाला। उल्लेख (को०)। २३. प्रयत्न। चेष्टा (को०)। २४. संयोजन (को०)। २६. वह जो संरक्षक हो (को०)। २७. कल्याण। मंगल (को०)।

यौ०—संग्रहकार=संग्रह करनेवाला। संग्रहग्रहणी। संग्रह-वस्तु=संग्रह के योग्य वस्तु। संग्रह श्लोक=पूर्वकथित प्रसंग को संक्षिप्त रूप में बतानेवाला श्लोक।

संग्रहग्रहणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ग्रहग्रहणी] दे० 'संग्रहणी'।

संग्रहण—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रहण] १. स्त्री को हर ले जाने की क्रिया। २. ग्रहण। ३. प्राप्ति। ४. नगों को जड़ने की क्रिया। ५. मैथुन। सहवास। ६. व्यभिचार। ७. स्त्री के स्तन, कपोल, केश, जंघा आदि वर्ज्य स्थानों का स्पर्श।

विशेष—स्मृतियों में इस अपराध के लिये कठोर दंड लिखा गया है।

८. सहारा देना। प्रोत्साहन। बढ़ावा (को०)। ६ संकलन। संचय करना (को०)। १०. नियंत्रण। वशीभूत या अपनी ओर करना (को०)। ११ आशा करना (को०)। १२. उल्लेख करना (को०)। १२. मिलावट। मिश्रण (को०)।

संग्रहणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ग्रहणी] १. एक प्रकार का रोग जिसमें भोजन किया हुआ पदार्थ पचता नहीं, बराबर पाखाने के रास्ते निकल जाता है। ग्रहणी।

विशेष—इसमें पेट में पीड़ा होती है और दस्त दुर्गंधयुक्त, कभी पतला कभी गाढ़ा होता है। शरीर दुर्बल और निस्तेज हो जाता है। यह रोग चार प्रकार का होता है—वातज, कफज, पित्तज और सन्निपातज। रात की अपेक्षा दिन के समय यह रोग अधिक कष्ट देता है। यह रोग प्रायः अधिक दिनों तक रहता और कठिनता से अच्छा होता है।

संग्रहणीय—वि० [सं० सङ्ग्रहणीय] १. संग्रह योग्य। २. ग्रहण करने या लेने योग्य। ३. सेवन करने योग्य (रोग शांति के लिये दवा आदि)। ४. नियंत्रणीय [को०]।

संग्रहनाⓅ—क्रि० स० [सं० सङ्ग्रहण] १. संग्रह करना। संचय करना। जमा करना। उ०—संग्रहै सनेह बस अधम असाध को। गिद्ध सेवरी को कहो करिहै सराध को।—तुलसी (शब्द०)। २. ग्रहण करना। पकड़ना। उ०—धायौ सु धरह बिन सीसधार। संग्रह्यौ बाँह बामें कटार।—पृ०, रा०, ६१।२२८७।

संग्रहालय—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रहालय] वह स्थान जहाँ विशिष्ट प्रकार की अलभ्य प्राचीन वस्तुओं का संग्रह किया जाय। अजायबघर।

संग्रही—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रहिन्] १. संग्रह करनेवाला। जो एकत्र या जमा करता हो। उ०—नहिं जाचक नहिं संग्रही सीस नाइ नहिं लेइ। ऐसे मानी माँगनेहिं को वारिद बिनु देइ।—तुलसी ग्रं०, पृ० १२७। २. महसूल या लगान आदि उगाहनेवाला कर्मचारी। कर एकत्र करनेवाला।

संग्रहीता—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रहीतृ] १. वह जो संग्रह करता हो। जमा करनेवाला। एकत्र करनेवाला। २. स्वीकार या ग्रहण करनेवाला (को०)। ३. घोड़े आदि का नियमन करनेवाला। सारथी (को०)।

संग्राम—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राम] युद्ध। लड़ाई। समर।

यौ०—संग्राम अंगनⓅ=दे० 'संग्रामांगण'। उ०—संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु सोभा लही।—मानस, ६।१०२। संग्रामकर्म=लड़ाई। संग्रामतुला= युद्ध की कसौटी (हार जीत के रूप में)। संग्रामतूर्य=लड़ाई या युद्ध का बिगुल। रणतूर्य। संग्रामपटह। संग्राममूर्धा=युद्धभूमि में अगला मोर्चा। संग्राममृत्यु=युद्धभूमि में मरना। वीरगति।

संग्रामजित्[१]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रामजित्] सुभद्रा के उदर से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

संग्रामजित्[२]—वि० युद्ध में विजयी [को०]।

संग्रामपटह—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रामपटह] रण में बजनेवाला एक प्रकार का बाजा। रणभेरी। रण डिमडिम।

संग्रामभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्ग्राम भूमि] वह स्थान जहाँ संग्राम होता हो। लड़ाई का मैदान। युद्ध क्षेत्र। उ०—संग्रामभूमि-बिराज रघुपति अतुलबल कोसल धनी।—मानस, ६।७०।

संग्रामांगण—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्रामाङ्गण] युद्धभूमि [को०]।

संग्रामार्थी—वि० [सं० सङ्ग्रामार्थिन्] लड़ाई चाहनेवाला। युद्धेप्सु [को०]।

संग्रामी—वि० [सं० सङ्ग्रामिन्] युद्ध करनेवाला। संग्रामलिप्त [को०]।

संग्राह—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राह] १. ढाल का दस्ता या मूठ। २ पकड़ना। बलपूर्वक पकड़ना। बलात् पकड़ना। ३. हाथ की बँधी हुई मुट्ठी। मुष्टिबंध। मुक्का। ४. मुट्ठी बाँधना। मुक्का बाँधना (को०)। ५. घोड़े के उत्प्लवन का एक प्रकार। घोड़े का हिनहिनाते हुए अगले पैरों से कूदना (को०)।

संग्राहक—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राहक] १. वह जो संग्रह करता हो। एकत्र या जमा करनेवाला। संग्रहकारी। संकलन करनेवाला (को०)। २. रथ का सारथी (को०)। ३. कब्ज करनेवाला (को०)। ४. वह जो अपनी ओर खीचता या आकृष्ट करता हो (को०)।

संग्राहित—वि० [सं० सङ्ग्राहित] संग्रह किया हुआ। जो ग्रहीत या ग्रस्त हो।

संग्राही—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग्राहिन्] १. वह पदार्थ जो कफादि दोष, धातु, मल तथा तरल पदार्थों को खींचता हो। २. वह पदार्थ जो मल के पेट से निकलने में बाधक होता है। कब्जियत करनेवाली चीज। ३. कुटज वृक्ष। ४. दे० 'संग्राहक' (को०)।

संग्राह्य—वि० [सं० सङ्ग्राह्य] १. संग्रह करने योग्य। जो संग्रह या एकत्र करने योग्य हो। २. जमा करने लायक। ३. ग्रहण या स्वीकरण योग्य (को०)। ४. किसी कार्य में लगाने, या रखने योग्य। ५. जिसे समझा जा सके। जिसे हृदयंगम किया जा सके। (शब्द आदि)। ६, जिसका अवरोध किया जा सके। रोकने योग्य (रक्तभाव आदि)।

संघ—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घ] १. समूह। समुदाय। दल। गण। २. मनुष्यों का वह समुदाय जो किसी विशेष उद्देश्य से एकत्र

हुआ हो। समिति। सभा। समाज। ३. प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य जिसमें शासनाधिकार प्रजा द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में होता था। ४. इसी संस्था के ढंग पर बना हुआ बौद्ध श्रमणों आदि का धार्मिक समाज।

विशेष—इसकी स्थापना महात्मा बुद्ध ने की थी। पीछे से यह बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों में से एक रत्न माना जाता था। शेष दो त्रिरत्न बुद्ध और धर्म थे।

५. साधुओं आदि के रहने का मठ। संगत। ६. अंतरगता। घनिष्ठ संपर्क (को०)।

संघक—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घक] दल। झुंड। समूह। समुदाय [को०]।

संघगुप्त—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घगुप्त] वाग्भट के पिता का नाम।

संघचारी—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घचारिन्] १. जो अधिकांश लोगों का साथ दे। बहुमत, बहुपक्ष का अनुसरण करनेवाला। बहुमत के अनुसार आचरण करनेवाला। २. वे जो झुंड या समुदाय में चलते हों। जैसे,—वृक, मृग, हाथी इत्यादि। ३. मछली।

संघजीवी—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घजीवी] १. वह जो समूह के साथ रहता हो। दल या वर्ग के रूप में रहनेवाला। २. मजदूर। कुली [को०]।

संघट[1]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घटन] १. सघटन। मिलन। सयोग। उ०—यह संघट तब होइ जब पुन्य पराकृत भूरि।—मानस, ११२०२। २. परस्पर संघर्ष। युद्ध। लड़ाई। झगड़ा। ३. समूह। उ०—सुभट मर्कट भालु कटक संघट सजत नमत पद रावणानुज निवाजा।—तुलसी (शब्द०)। ४. राशि। ढेर।

संघट[2]—वि० [सं० सङ्घट] [वि० स्त्री० संघटा] ढेरी लगाया हुआ। राशीकृत [को०]।

संघटन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घटन] [स्त्री० संघटना] १. मेल। संयोग। २. संघर्ष। संघर्षण। ३. साहित्य में नायक नायिका का संयोग। मिलाप। ४. उपकरणों के द्वारा किसी पदार्थ का निर्माण। रचना। ५. बनावट। दे० 'संगठन'।

संघटना—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घटना] १. दे० संघटन'। २. स्वरों या शब्दों का संयोजन [को०]।

संघटबिधाई—वि० [हिं० संघट+विधान] समूहबद्ध करनेवाला। जो समूह या दलबद्ध करे। उ०—जयति सौमित्रि रघुनंदनानंद कर रिच्छ कपि कटक संघटबिधाई।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४३७।

संघटित—वि० [सं० सङ्घटित] १. एक जगह किया हुआ। एकत्रित। मिला या जुड़ा हुआ (को०)। २. (वाद्य आदि) जो बजाया हुआ हो। अभिघातित। वादित (को०)। ३. टकराया हुआ। संघट्टित। उ०—सुर विमान हिमभानु भानु संघटित परस्पर।—तुलसी ग्रं०, पृ० १५७।

संघट्ट—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घट्ट] १. रचना। बनावट। गठन। २. संघर्ष। ३. मुठभेड़। स्पर्धा (को०)। ४. आघात। चोट। ५. संघर्षण। रगड़ (को०)। ६. आलिंगन (को०)। ७. मिलन। संयोग (को०)।

संघट्ट चक्र—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घट्टचक्र] फलित ज्योतिष में युद्धफल विचारने का नक्षत्रों का एक चक्र।

विशेष—इस चक्र के द्वारा यह जाना जाता है कि युद्ध में जीत होगी या हार। यदि युद्धार्थ प्रस्थान करनेवाले का जन्मनक्षत्र इस चक्र में शुभ होता है, तो वह युद्ध में विजय लाभ करता है; और यदि अशुभ होता है, तो पराजय। स्वरोदय में इस चक्र का विवरण इस प्रकार दिया है—एक त्रिकोण चक्र बनाकर इस चक्र में टेढ़ी रेखाएँ खींचकर उसमें अश्विनी आदि २७ नक्षत्र अंकित करने चाहिए। नौ नक्षत्रों का एक साथ वेध होता है। वेध क्रम इस प्रकार होता है। अश्विनी का रेवती के साथ, चित्रा नक्षत्र का श्लेषा और मूल के साथ, और ज्येष्ठा का मूल के साथ वेध होता है। यदि राजा का जन्म नक्षत्र इस चक्रवेध में न हो, या सौम्य ग्रह सहित वेध हो, तो उस समय युद्ध नहीं होगा। यदि क्रूर नक्षत्र के साथ वेध हो, तो उस समय भीषण युद्ध होगा। सौम्य, स्वामी, मित्रामित्र आदि ग्रहगणों से युक्त तथा अतिचार प्रभृति गति द्वारा भी शुभाशुभ का निर्णय होता है।

संघट्टन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घट्टन] [स्त्री० संघट्टना] १. बनावट। रचना। गठन। २. मिलन। संयोग। ३. घटना। ४. दे० 'संघटन'।

संघट्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लता। वल्ली। बेल।

संघट्टित—वि० [सं० सङ्घट्टित] १. एकत्र किया हुआ। २. गठित। निर्मित। बना हुआ। रचित। ३. चलाया हुआ। चालित। ४. घर्षित। रगड़ा हुआ। ५. (आटा आदि) जो साना या गूँधा हुआ हो (को०)।

संघट्टितपाणि—संज्ञा पुं० [सं० संघट्टितपाणी] वर और वधू के आपस में जुड़े हुए हाथ [को०]।

संघट्टी—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घट्टिन्] वह जो साथ लगा रहे। अनुगामी। माननेवाला। जैसे, कृष्णसंघट्टी, रामसंघट्टी [को०]।

संघतल—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घतल] अंजलि [को०]।

संघती†—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घ, हिं० संग, सँघाती, सँगाती] साथी। सहचर। उ०—तुम्ह अस हित संघती पियारी। जियत जीउ नहि करौं निनारी।—जायसी (शब्द०)।

संघपति—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घपति] वह जो किसी संघ या समूह का प्रधान हो। दलपति। नायक।

संघपुरुष—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घपुरुष] बौद्ध संघ का परिचारक संघ का सेवक [को०]।

संघपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घपुष्पी] धातकी। धव। धौ।

संघभेद—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घभेद] बौद्ध संघ में मतभेद पैदा करना जो पाँच प्रकार के अक्षम्य अपराधों में एक माना गया है [को०]।

संघभेदक—वि० [सं० सङ्घभेदक] संघ में फूट पैदा करनेवाला [को०]।

संघरना(पु)—क्रि० स० [सं० संहार+हिं० ना (प्रत्य०)] १. संहार करना। नाश करना। २. मार डालना। उ०—गरगज चूर चूर होइ परहीं। हस्ति घोर मानुष संघरहीं।—जायसी (शब्द०)।

संघर्ष—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घर्ष] १. एक चीज का दूसरी चीज के साथ रगड़ खाना। संघर्षण। रगड़। घिस्सा। २. दो विरोधी व्यक्तियों या दलों आदि में स्वार्थ के विरोध के कारण होनेवाली प्रतियोगिता या स्पर्धा। ३. वह अहंकारसूचक वाक्य जो अपने प्रतिपक्षी के सामने अपना बड़प्पन जतलाने के लिये कहा जाय। ४. किसी चीज को घोटने या रगड़ने की क्रिया। रगड़ना। घिसना। ५. असूया। ईर्ष्या। डाह (को०)। ६. कामोद्दीपन। कामोत्तेजना (को०)। ७. शत्रुता। वैर भाव (को०)। ८. धीरे धीरे चलना। टहलना। ९. शर्त लगाना। बाजी लगाना।

संघर्षण—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घर्षण] १. दे० 'संघर्ष'। २. अभ्यंजन। अनुलेपन। उबटन (को०)।

संघर्षजनन—वि० [सं० सङ्घर्षजनन] संघर्ष पैदा करनेवाला। जिससे संघर्ष हो।

संघर्षशाली—वि० [सं० सङ्घर्षशालिन्] १. द्वेष करनेवाला। द्वेष्टा। २. होड़ करनेवाला [को०]।

संघर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घर्षा] तरल या गीली लाह [को०]।

संघर्षी—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घर्षिन्] १. वह जो किसी प्रकार का संघर्ष करता हो। २. वह जो किसी के साथ प्रतियोगिता करता हो। प्रतिस्पर्धा करनेवाला। ३. रगड़ने या घिसनेवाला।

संघवृत्त—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घवृत्त] कौटिलीय अर्थशास्त्र के अनुसार श्रेणी, समूह, संघ की आचारविधि या व्यवहार [को०]।

संघवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घवृत्ति] साथ कार्य करने के निमित्त एकत्र होने या संमिलित होने की क्रिया। सहयोग।

संघस—संज्ञा पुं० [सं० सम् (उप०)+√घस् (=खाना)] भोजन की वस्तु। आहार [को०]।

संघाट—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घाट] १. दल, समूह या संघ आदि में रहनेवाला। वह जो दल बाँधकर रहता हो। २. लकड़ी आदि को जोड़ना या मिलाना। जोड़ने का काम। बढ़ईगिरी (को०)।

संघाटि—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घाटि] दे० 'संघाटी' [को०]।

संघाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घाटिका] १. स्त्रियों का प्राचीन काल का एक प्रकार का पहनावा। २. वह स्त्री जो प्रेमी प्रेमिका को मिलावे। दूती। कुट्टिनी। कुटनी। ३. युग्म। जोड़ा। ४. सिंघाड़ा। ५. कुंभी। ६. गंध। महक। वास (को०)। ७. घ्राणेंद्रिय। नाक (को०)।

संघाटी—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घाटी] बौद्ध भिक्षुओं के पहनने का एक प्रकार का वस्त्र।

संघाणक—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घाणक] श्लेष्मा। कफ जो नाक से निकलता है।

संघात[1]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घात] १. जमाव। समूह। समष्टि। २. आघात। चोट। ३. हत्या। बध। ४. इक्कीस नरकों में से एक नरक का नाम। ५. कफ। ६. नाटक में एक प्रकार की गति। ७. शरीर। उ०—सो लोचन गोचर सुखदाता। देखत चरण तमहुँ संघाता।—स्वामी रामकृष्ण (शब्द०)। ८. निवासस्थान। उ०—हो मुखराते सत्य के बाता। जहाँ सत्य तहँ धर्म संघाता।—जायसी (शब्द०)। ९. युद्ध। संघर्ष (को०)। १०. यात्रियों का दल। कारवाँ (को०)। ११. अस्थि। हड्डी (को०)। १२. कठोर अंश (को०)। १३. ओघ। गति। प्रवाह (को०)। १४. (व्या०) समास (को०)। १५. घनीभूत करना। ठोस बनाना (को०)। १६. संमिश्रणों का निर्माण (को०)।

संघात[2]—वि० सघन। निविड़। घना।

यौ०—संघातकठिन=(१) एक साथ मिलने पर कठिन हो जानेवाला। (२) जो जम जाने से कठोर हो जाय।

संघातक—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घातक] १. घात करनेवाला। प्राण लेनेवाला। २. वह जो बरबाद करता हो। नष्ट करनेवाला। ३. एक प्रकार का नाटकीय अभिनय (को०)।

संघातचारी—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घातचारिन्] वह जो अपने वर्ग के और प्राणियों या लोगों के साथ मिलकर, या उनका संघ बनाकर रहता हो।

संघातज—वि० [सं० सङ्घातज] त्रिदोष से उत्पन्न। सान्निपातिक। संनिपातवाला [को०]।

संघातपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घातपत्रिका] १. शतपुष्पा। सोआ। २. सौंफ। मिश्रेया।

संघातन—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घातन] मारना। वध करना। नाश करना [को०]।

संघातबलप्रवृत्त—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घातबल प्रवृत्त] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का आधिभौतिक और आगंतुक रोग।

संघातमृत्यु—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घातमृत्यु] सामूहिक मृत्यु। बहुतों की एक साथ मौत होना [को०]।

संघातशिला—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घातशिला] १. पत्थर जैसा कड़ा पिंड। २. ठोस या बहुत कड़ा पत्थर [को०]।

संघातिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्घातिका] अरणि की लकड़ी। अरणिकाष्ठ जिससे आग पैदा की जाती है [को०]।

संघाती[1]—संज्ञा पुं० [सं० संघ, हिं० संग+आती (प्रत्य०)] १. साथी। सहचर। २. मित्र।

संघाती[2]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घातिन्] संघातक। प्राणनाशक।

संघात्य—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घात्य] दे० 'संघातक'।

संघाधिप—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घाधिप] संघ का स्वामी या प्रधान भिक्षु (जैन)।

संघार(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० संहार] दे० 'संहार'।

संघारना(पु)—क्रि० स० [सं० संहार] १. संहार करना। नाश करना। २. मार डालना। हत्या करना। उ०—तहँ निषाद इक

क्रौंच संघारचौ। किय बिलाप ताकी तिय मारचौ।—पद्माकर (शब्द०)।

संघाराम—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घाराम] बौद्ध भिक्षुओं तथा श्रमणों आदि के रहने का मठ। विहार।

संघावशेष—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घावशेष] बौद्ध मत के अनुसार एक प्रकार का पाप।

संघुषित[१]—वि० [सं०] १. ध्वनित। २. घोषणा किया हुआ। घोषित [को०]।

संघुषित[२]—संज्ञा पुं० आवाज। ध्वनि। शोरगुल। हल्ला [को०]।

संघुष्ट[१]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घुष्ट] आवाज। ध्वनि [को०]।

संघुष्ट[२]—वि० १. जो घोषित किया गया हो। २. ध्वनित। ३. जिसे बेचने के लिये उपस्थित या घोषित किया गया हो [को०]।

संघृष्ट—वि० [सं० सङ्घृष्ट] घिसा हुआ। रगड़ा हुआ [को०]।

संघेला†—संज्ञा पुं० [सं० सङ्ग+एला (प्रत्य०)] १. साथी। सहचर। संगी। २. मित्र। दोस्त।

संघोष—संज्ञा पुं० [सं० सङ्घोष] १. जोर का शब्द। २. गोप ग्राम। घोष। आभीर पल्ली।

संच(पु)†[१]—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चय] १. संग्रह करने की क्रिया। संचय। एकत्रीकरण। २. रक्षा। देखभाल। उ०—जननि जनक ते अधिक गाधि सुत करिहैं संच तिहारो। कौशिक शासन सकल शीश धरि सिगरो काज सिधारो।—रघुराज (शब्द०)। ३. शांति। कुशल।

संच[२]—संज्ञा पुं० [सं० सञ्च] १. लिखने की स्याही। मसी। २. ग्रंथ आदि लिखने के निमित्त पत्रों का संचयन (को०)।

संच(पु)[३]—संज्ञा पुं० [सं० सत्य, प्रा० सच्च, संच] सत्य। सच। उ०—संच तेता करि मान्यौ।—पृ० रा०, २६।१३।

संचक[१]—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चय, हिं० संच+क (प्रत्य०)] दे० 'संचकर'।

संचक[२]—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चक] साँचा जिसमें कोई वस्तु ढाली जाती है [को०]।

संचकर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चय+कर] १. संचय करनेवाला। २. कृपण। कंजूस।

संचकित—वि० [सं० सम्+चकित, सञ्चकित] [वि० स्त्री० संचकिता] १. आश्चर्यग्रस्त। २. भौचक। भयभीत। ३. बुरी तरह डरा हुआ [को०]।

संचक्ष—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चक्षस्] ऋषि। आचार्य। पुरोहित [को०]।

संचत्—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चत्] १. वंचक। ठग। प्रतारक। २. ठगी। वंचना [को०]।

संचना(पु)†—क्रि० स० [सं० सञ्चयन] १. एकत्र करना। संग्रह करना। संचय करना। उ०—निरधन के धन अहैं स्याम अरु स्यामा दोऊ। सुकवि तिनहिं हम गह्यो और को संचहु कोऊ।—अंबिकादत्त (शब्द०)। २. रक्षा करना। देखभाल करना।

संचय—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चय] १. राशि। समूह। ढेर। २. एकत्र या संग्रह करने की क्रिया। एकत्रीकरण। संकलन। जमा करना। ३. अधिकता। ज्यादती। बहुतायत। ४. ग्रंथि। कांड। जोड़। संधि (को०)।

संचयन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चयन] १. संचय करने की क्रिया। एकत्र या संग्रह करने की क्रिया। जमा करना। २. जले हुए मुर्दे की अस्थियाँ बटोरना। अस्थिसंचय [को०]।

संचयिक—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चयिक] वह जो संचय करता हो। एकत्र करनेवाला। जमा करनेवाला।

संचयिता—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चयितृ] दे० 'संचयिक'।

संचयी—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चयिन्] १. संचय करनेवाला। जमा करनेवाला। २. कृपण। कंजूस। ३. धनवान्। धनी (को०)।

संचर[१]—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चर] १. गमन। चलना। २. सेतु। पुल। ३. जल के निकलने का मार्ग। ४. मार्ग। पथ। रास्ता। ५. स्थान। जगह। ६. देह। शरीर। ७. साथी। सहायक। ८. ग्रहों का एक से दूसरी राशि में संक्रमण (को०)। ९. पतला रास्ता। सँकरा मार्ग (को०)। १०. प्रवेशद्वार (को०)। ११. वध। मार डालना (को०)। १२. विकास (को०)।

संचर[२]—वि० इतस्ततः घूमने या चलनेवाला [को०]।

संचरण—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चरण] १. संचार करने की क्रिया। चलना। गमन। २. प्रसारण। फैलाना। ३. गतिशील करना। प्रयोग में लाना (को०)। ४. काँपना।

संचरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रथ्या। वीथी। राह [को०]।

संचरना(पु)†—क्रि० अ० [सं० सञ्चरण] १. घूमना। फिरना। चलना। उ०—पवन न पावैं संचरैं भँवर न तहाँ बईठ।—पदमावत, पृ० १६२। २. फैलना। प्रसारित होना। उ०—सरद चाँदनी संचरत चहुँ दिसि आनि। विधुहि जोरि कर बिनवति कुल गुरु जानि।—तुलसी (शब्द०)। ३. चल निकलना। व्यवहृत होना। प्रचलित होना।

संचरिष्णु—वि० [सं० सञ्चरिष्णु] संचरण वा गमन के लिये व्यवस्थित [को०]।

संचर्वण—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चर्वण] चबाना। चर्वण करना [को०]।

संचल[१]—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चल] सौवर्च्चल लवण। साँचर नमक।

संचल[२]—वि० कंपित। हिलता हुआ। भ्रमित [को०]।

संचलन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चलन] १. हिलना डोलना। २. चलना फिरना। ३. काँपना।

संचलनाड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चलनाडी] धमनी। रग। नस।

संचा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० साँचा] दे० 'साँचा'। उ०—कुच सिरिफल संचा पूरि। कुंदि बइसाओल कनक कटोरि।—विद्यापति, पृ० २६९।

संचान—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चान] श्येन नामक पक्षी। बाज। शिकरा।

संचाय्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ।

संचार—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चार] १. गमन। चलना। २. फैलने या विस्तृत होने की क्रिया। ३. कष्ट। विपत्ति। ४. मार्ग प्रदर्शन। नेतृत्व। रास्ता दिखलाने की क्रिया। ५. चलाने की क्रिया। संचालन। ६. साँप की मणि। ७. देश। ८. ग्रहों या नक्षत्रों का एक राशि से दूसरी राशि में जाना।

विशेष—ज्योतिष के अनुसार संचार समय में चंद्र जिस रूप का होता है, उसी प्रकार का फल भी होता है। यदि चंद्र शुद्ध होता है, तो साथ में जिस ग्रह का शुभ भाव होता है, उस ग्रह के शुभ फल की वृद्धि होती है। यदि संचार काल में इंदु शुद्ध नहीं होता, तो शुभ भाववाले शुभ ग्रह के शुभ फल में न्यूनता होती है। यदि कोई अशुभ ग्रह शुद्ध चंद्र के साथ होता है, तो अशुभ फल की कमी होती है। फलित ज्योतिष में संचार के संबंध में इसी प्रकार की और भी बहुत सी बातें दी हुई हैं।

९. उत्तेजन। बढ़ावा देना। १०. कष्टमय यात्रा (को०)। ११. मार्ग। पथ। राह (को०)। १२. दूत। गुप्तचर। संदेशवाहक (को०)। १३. दर्शन एवं श्रवण द्वारा दूसरे का मोहन करना। १४. रतिमंदिर की अवधि।

यौ०—संचारजीवी = खानाबदोश। संचारपथ = घूमने टहलने की जगह। संचारव्याधि = संक्रामक रोग।

संचारक—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सञ्चारक] १. संचार करनेवाला। फैलानेवाला। २. वक्ता। ३. चलानेवाला। ४. दलपति। नायक। नेता। ४. स्कंद का एक अनुचर (को०)।

संचारण—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चारण] १. पास लाना या करना। २. मिलाना। एक में करना। ३. (संदेशा) कहना [को०]।

संचारणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चारिणी] बौद्धों की एक देवी [को०]।

संचारना (पु)—क्रि० स० [सं० सञ्चारण] १. संचार का सकर्मक रूप। किसी वस्तु का संचार करना। २. प्रचार करना। व्यवहार में प्रयुक्त करना। फैलाना। उत्पन्न करना। जन्म देना। उ०—नूर मुहम्मद देखि तौ भा हुलास मन सोइ। पुनि इबलिस संचारेउ डरत रहे सब कोइ।—जायसी (शब्द०)।

संचारयिता—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चारयितृ] नायक। नेता [को०]।

संचारिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चारिका] १. संदेशवाहिका। दूती। २. कुट्टनी। कुटनी। ३. नाक। नासिका। ४. युग्म। जोड़ा। ५. गंध। महक (को०)। ६. वह दासी जो रुपये पैसे की व्यवस्था करती हो (को०)।

संचारिणी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चारिणी] १. हंसपदी नाम की लता। २. लाल लजालू।

संचारिणी[२]—वि० स्त्री० १. हिलती या काँपती हुई। २. भटकती हुई या घूमती हुई। ३. परिवर्तनशील। अस्थिर। ४. प्रभाव डालनेवाली। ५. आनुवंशिक रूप से संक्रमण करनेवाली या संस्पर्श द्वारा उत्पन्न होनेवाली बीमारी। ६. प्रवृत्त करनेवाली [को०]।

संचारित[१]—वि० [सं० सञ्चारित] १. जिसका संचार किया गया हो। चलाया या फैलाया हुआ। २. उकसाया हुआ। बढ़ाया हुआ (को०)। ३. (व्याधि या रोग) जो संक्रमित किया जाय (को०)।

संचारित[२]—संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जो अपने स्वामी की आकांक्षाओं को कार्यान्वित करता हो [को०]।

संचारी[१]—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चारिन्] १. धूप नामक गंध द्रव्य। २. धूप का उठा हुआ धूम्र (को०)। ३. वायु। हवा। ३. साहित्य में वे भाव जो रस के उपयोगी होकर जल की तरंगों की भाँति उनमें संचरण करते हैं।

विशेष—ऐसे भाव मुख्य भाव की पुष्टि करते हैं और समय समय पर मुख्य भाव का रूप धारण कर लेते हैं। स्थायी भावों की भाँति ये रससिद्धि तक स्थिर नहीं रहते, बल्कि अत्यंत चंचलतापूर्वक सब रसों में संचरित होते रहते हैं। इन्हीं को व्यभिचारी भाव भी कहते हैं। साहित्य में नीचे लिखे ३३ संचारी भाव गिनाए गए हैं—निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, श्रम, मद, धृति, आलस्य, विषाद, मति, चिंता, मोह, स्वप्न, विबोध, स्मृति, आमर्ष, गर्व, उत्सुकता, अवहित्था, दीनता, हर्ष, व्रीड़ा, उग्रता, निंदा, व्याधि, मरण, अपस्मार, आवेग, त्रास, उन्माद, जड़ता, चपलता और वितर्क।

४. अस्थिरता। चंचलता। क्षणस्थायित्व। ५. संगीत शास्त्र के अनुसार किसी गीत के चार चरणों में से तीसरा चरण। ६. आगंतुक।

संचारी[२]—वि० [वि० स्त्री० सञ्चारिणी] १. संचरण करनेवाला। गतिशील। अस्थिर। २. संक्रामक। जैसे, रोग (को०)। ३. चढ़ने उतरनेवाला। जैसे, स्वर (को०)। ४. दुर्गम (को०)। ५ वंशपरंपरागत। आनुवंशिक (को०)। ६. क्षणस्थायी (को०)। ७. संलग्न। लगा हुआ (को०)। ८. प्रवेश करनेवाला (को०)। ९. घूमनेवाला। भ्रमण करनेवाला (को०)।

संचाल—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चलन] १. कंपन। काँपना। २. चलन। चलना।

संचालक—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चालक] १. वह जो संचालन करता हो। चलाने या गति देनेवाला। परिचालक। २. वह जो किसी प्रकार के उद्योग या संस्था आदि के ठीक से चलते रहने का प्रबंध करता हो (को०)।

संचालन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चालन] १ चलाने की क्रिया। परिचालन। २. काम जारी रखना या चलाना। प्रतिपादन। ३. नियंत्रण। ४. देखरेख।

संचाली—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चाली] गुंजा। घुँघची।

संचिंतन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चिन्तन] चिंतन करना। विचारना [को०]।

संचिंतित—वि० [सं० सञ्चिन्तित] १. सम्यक् विचारित। सुविचारित। २. निश्चित किया हुआ। व्यवस्थित। ३. आकांक्षित। इच्छित [को०]।

संचित—वि० [सं० सञ्चित] १. संचय किया हुआ। २. ढेर लगाया हुआ। ३. गिना हुआ। गणना किया हुआ (को०)। ४. भरा

हुआ। सुसंपन्न। युक्त (को०)। ५. बाधित। अवरुद्ध (को०)। ६. घना। सघन (को०)।

यौ०—संचितकर्म = पूर्वजन्म के वे एकत्रित कर्म जो वर्तमान जीवन में प्रारब्ध के रूप में प्राप्त होते हैं और जिनका फल भोगना पड़ता है। संचितकोष, संचितनिधि = (१) जमापूँजी। (२) वेतनभोगी कर्मचारियों के वेतन से हर महीने कटकर जमा होनेवाली वह निश्चित रकम जो उन्हें नौकरी से अलग होने पर मिल जाती है। वेतन देनेवाला संस्थान भी कर्मचारियों की उस जमा रकम में अपनी ओर से उतनी ही रकम मिलाता है। प्राविडेंट फंड (अं०)।

संचिता—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चिता] एक प्रकार की वनस्पति।

संचिति—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चिति] १. एक पर एक रखना। तही लगना। २. संग्रह। संचय (को०)। ३. शतपथ ब्राह्मण के नवम खंड की आख्या (को०)।

संचित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चित्रा] मूषाकर्णी। मूसाकानी।

संचु—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चु] टीका। व्याख्या [को०]।

संचूर्णन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चूर्णन] अच्छी तरह चूर करना, टुकड़े टुकड़े करना या पीसना [को०]।

संचूर्णित—वि० [सं० सञ्चूर्णित] पिसा हुआ। टुकड़े टुकड़े किया हुआ। चूर्ण किया हुआ [को०]।

संचेय—वि० [सं० सञ्चेय] इकट्ठा करने योग्य। संग्रहणीय [को०]।

संचोदक—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चोदक] १. ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

संचोदन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चोदन] प्रेरित करना। बढ़ावा देना या उत्तेजित करना [को०]।

संचोदना—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्चोदना] १. वह वस्तु जो प्रेरणा वा उत्तेजना प्रदान करती हो। २. उत्तेजना। प्रेरणा [को०]।

संचोदित—वि० [सं० सञ्चोदित] उत्तेजित। आदिष्ट। प्रेरित [को०]।

संछन्न—वि० [सं० सम् + छन्न] १. पूर्णतः ढँका हुआ। आवृत। वस्त्राच्छादित। २. छिपा हुआ। छन्न। गुप्त। अज्ञात [को०]।

संछर्द्दन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्छर्दन] ग्रहण में एक प्रकार का मोक्ष।

विशेष—राहु यदि ग्राह्यमंडल में पूर्व भाग से ग्रसना आरंभ करके फिर पूर्व दिशा को ही चला आवे, तो उसको संछर्द्दन मोक्ष कहते हैं। फलित ज्योतिष के अनुसार इससे संसार का मंगल और धान्य की वृद्धि होती है।

संछादन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्छादन] आच्छादित करना। छिपाना। ढँकना [को०]।

संछादनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्छादनी] १. वह जो संछादन करे। २. त्वचा। खाल [को०]।

संछिदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्छिदा] विध्वंस। नाश [को०]।

संछिन्न—वि० [सं० सञ्छिन्न] टुकड़े टुकड़े किया हुआ। छिन्न। काटा हुआ [को०]।

संछेत्ता—संज्ञा पुं० [सं० सञ्छेत्तृ] वह जो संशय आदि को दूर करता या मिटाता हो [को०]।

संछेत्तव्य—वि० [सं० सञ्छेत्तव्य] जो छेदन के योग्य हो। भेद्य [को०]।

संछेद—संज्ञा पुं० [सं० सञ्छेद] १. काटना। अलग करना। २. हटाना। दूर करना [को०]।

संछेद्य—संज्ञा पुं० [सं० सञ्छेद्य] १. छेदने के योग्य। २. दो नदियों का साथ बहना अथवा संगम [को०]।

संज[१]—संज्ञा पुं० [सं० सञ्ज] १. शिव का एक नाम। २. ब्रह्मा का एक नाम।

संज[२]—वि० [फ़ा०] तौलनेवाला। बया [को०]।

संज[३]—संज्ञा पुं० झाँझ या मजीरा नामक वाद्य [को०]।

संजन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जन] १. बाँधने की क्रिया। २. बंधन। ३. बिखरे हुए अंगों आदि को मिलाकर एक करना। संघट्टन।

संजनन[१]—वि० [सं० सञ्जनन] उत्पादक। उत्पन्न करनेवाला [को०]।

संजनन[२]—संज्ञा पुं० १. निर्माण। उत्पात। २. बढ़ाव। विकास [को०]।

संजनित—वि० [सं० सञ्जनित] उत्पन्न किया हुआ। निर्मित। रचित [को०]।

संजनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैदिक काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे वध या हत्या की जाती थी।

संजम(पु)—संज्ञा पुं० [सं० संयम] दे० 'संयम'। उ०—राम करहु सब संजम आजू। जौं विधि कुसल निबाहइ काजू।—मानस, २।१०।

संजमना(पु)—क्रि० स० [सं० संयमन] एकत्र करना। बटोरना। संयमित करना। व्यवस्थित करना। उ०—पलटि पट संजमत केसनि मृदुल अंग अँगौछि।—घनानंद, पृ० ३०१।

संजमनी—संज्ञा स्त्री० [सं० संयमनी] यमराज की नगरी। (डिं०)।

संजमनीपति—संज्ञा पुं० [सं० संयमनीपति] यमराज। यमदेव। (डिं०)।

संजमी—संज्ञा पुं० [सं० संयमिन्] १. नियम से रहनेवाला। संयमी। २. व्रती। ३. जितेंद्रिय।

संजय—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जय] १. धृतराष्ट्र का मंत्री जो महाभारत के युद्ध के समय धृतराष्ट्र को उस युद्ध का विवरण सुनाता था।

विशेष—कहते हैं कि इसे दिव्य दृष्टि प्राप्त थी; अतः यह हस्तिनापुर में बैठा हुआ कुरुक्षेत्र में सारी घटनाएँ देखता था और उनका वर्णन अंधे धृतराष्ट्र को सुनाता था।

२. सुपार्श्व का पुत्र। ३. राजन्य के पुत्र का नाम। ४. ब्रह्मा। ५. शिव। ६. विजय। जीत (को०)। ७. एक प्रकार का सैनिक व्यूह (को०)।

संजर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक शिकारी पक्षी। २. बादशाह। उ०—यक तौ सरपंजर कियौ अतन तनै सर सूल। दूजे यह सिसिरौ भयौ खंजर संजर तूल।—स० सप्तक, पृ० २४९।

संजल्प—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जल्प] १. वार्तालाप। बातचीत। २. बकवाद। ऊटपटाँग वार्ता। ३. हल्ला गुल्ला [को०]।

संजवन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जवन] १. चार अट्टालिकाओं की वह विशिष्ट चतुष्कोण स्थिति जिससे उनके बीच में आँगन बन जाय। २. मार्गदर्शक चिह्न (को०)।

संजा[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्जा] बकरी।

संजा[२]—संज्ञा पुं० [फ़ा० संजह्] बाट। तौलने का बटखरा [को०]।

संजात[१]—वि० [सं० सञ्जात] १. उत्पन्न। २. प्राप्त। ३. व्यतीत। बीता हुआ (को०)।

यौ०—संजातकोप = कुपित। क्रुद्ध। संजातकौतुक = विस्मित। चकित। संजातनिर्वेद = विरक्त। उदासीन। संजातविश्रंभ = आश्वस्त। संतुष्ट। संजातवेपथु = काँपनेवाला। काँपता हुआ। कंपित।

संजात[२]—संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक जाति का नाम।

संजाफ[१]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० संजफ़ या संजाफ़] १. झालर। किनारा। कोर। २. चौड़ी और आड़ी गोट जो प्रायः रजाइयों और लिहाफों आदि के किनारे किनारे लगाई जाती है। गोट। मगजी।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

संजाफ[२]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का घोड़ा जिसका रंग या तो आधा लाल, आधा सफेद होता है या आधा लाल, आधा हरा।

संजाफी[१]—वि० [हिं० संजाफ + ई (प्रत्य०)] जिसमें संजाफ लगी हो। किनारेदार। झालरदार।

यौ०—संजाफी गंजा = खल्वाट व्यक्ति जिसकी खोपड़ी के किनारे पर बाल हों।

संजाफी[२]—संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसका रंग संजाफी हो। आधा लाल आधा हरा घोड़ा।

संजाब[१]—संज्ञा पुं० [फ़ा० संजाफ़] १. एक प्रकार का घोड़ा। दे० 'संजाफ'। उ०—पचकल्यान संजाब बखानी। महि सायर सब चुन चुन आनी।—जायसी (शब्द०)। २. एक प्रकार का चमड़ा।

संजाब[२]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] चूहे के आकार का एक जंतु जो प्रायः तुर्किस्तान में होता है।

विशेष—इस जंतु का मांस वक्षस्थल की पीड़ा, कास और व्रण के लिये उपकारक माना जाता है। इसकी खाल पर बहुत मुलायम रोएँ होते हैं, और उससे पोस्तीन बनाते हैं।

संजावन—संज्ञा पुं० [सं०] जमाने के लिये गरम दूध में जामन डालना [को०]।

संजिदा—वि० [फ़ा० संजिदह्] तौलनेवाला। बयाई करनेवाला [को०]।

संजिहानि—वि० [सं० सञ्जिहानि] (शय्या) त्याग करनेवाला। (विस्तर) छोड़नेवाला [को०]।

संजी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तराजू पर तौलना। वजन करना।

संजीदगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. विचार या व्यवहार आदि की गंभीरता। २. सहिष्णुता। शिष्टता। ३. संजीदा होना (को०)।

संजीदा—वि० [फ़ा० संजीदह्] १. जिसके व्यवहार या विचारों में गंभीरता हो। गंभीर। शांत। २. समझदार। बुद्धिमान्। ३. सहिष्णु (को०)। ४. संतुलित। तौला हुआ (को०)।

संजीव[१]—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जीव] १. मरे हुए को फिर से जिलाना। पुनः जीवन देना। २. वह जो मरे हुए को जिलावे। फिर से जीवन दान करनेवाला। ३. बौद्धों के अनुसार एक नरक का नाम।

यौ०—संजीवकरण = फिर से जीवित करना। पुनर्जीवन देना। संजीवकरणी।

संजीव[२]—वि० जीवित। प्राणवान् [को०]।

संजीवक—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जीवक] वह जो मरे हुए को जीवनदान देता हो। मुर्दे को जिलानेवाला।

संजीवकरणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्जीवकरणी] १. एक प्रकार की विद्या जिसके प्रभाव से मृत मनुष्य जीवित हो जाता है। (महाभारत में लिखा है कि शुक्राचार्य यह विद्या जानते थे)। २. एक प्रकार की कल्पित ओषधि जिसके सेवन से मृत व्यक्ति का जीवित होना माना जाता है।

संजीवन[१]—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जीवन] [वि० संजीवित] १. भलीभाँति जीवन व्यतीत करने की क्रिया। २. जीवन दान करना। पुनः जिलाना। ३. मनु के अनुसार इक्कीस नरकों में से एक नरक का नाम। ४. दे० 'संजवन' (को०)।

संजीवन[२]—वि० जिलानेवाला। जीवन देनेवाला [को०]।

संजीवनी[१]—वि० स्त्री० [सं० सञ्जीवनी] जीवनप्रदायिनी। जीवनदायिनी। जीवन देनेवाली।

संजीवनी[२]—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की कल्पित ओषधि। कहते हैं कि इसके सेवन से मरा हुआ मनुष्य जी उठता है। २. वैद्यक के अनुसार एक औषध का नाम।

विशेष—इसके लिये पहले बायबिडंग, सोंठ, पिप्पली, हड़ का छिलका, आँवला, बहेड़ा, बच, गिलोय, भिलावाँ, संशोधित सिंगी मोहरा इन सबके चूर्ण को एक दिन गोमूत्र में खरल करके एक रत्ती की गोलियाँ बनाते हैं। कहते हैं कि इसकी एक गोली अदरक के रस के साथ खिलाने से अजीर्ण, दो गोलियाँ खिलाने से विसूचिका, तीन गोलियाँ खिलाने से सर्पविष और चार गोलियाँ खिलाने से सन्निपात नष्ट होता है।

३. अन्न। खाद्य वस्तु (को०)। ४. कालिदास के महाकाव्य कुमारसंभव पर मल्लिनाथ सूरि की टीका का नाम।

संजीवनी विद्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्जीवनी विद्या] एक प्रकार की कल्पित विद्या।

विशेष—कहते है कि इस विद्या के द्वारा मरे हुए व्यक्ति को जिलाया जा सकता है। महाभारत में लिखा है कि दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य यह विद्या जानते थे; और इसी के द्वारा वे उन दैत्यों को फिर से जिला देते थे जो देवताओं के साथ युद्ध करने में मारे जाते थे। देवताओं के कहने से बृहस्पति के पुत्र कच यह विद्या सीखने के लिये शुक्राचार्य के पास जाकर रहने लगे;

और अनेक कठिनाइयाँ सहने के उपरांत अंत में उनसे यह विद्या सीखकर आए ।

संजीवित—वि० [सं० सञ्जीवित] फिर से जिलाया हुआ [को०] ।

संजीवी—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जीविन्] वह जो मृतकों को जीवनदान देता हो । मुरदों को जिलानेवाला ।

संजुक्त(पु)—वि० [सं० संयुक्त] दे० 'संयुक्त' । उ०—जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति नमामहे ।—मानस, ७।१३ ।

संजुग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० संयुग] संग्राम । युद्ध । लड़ाई । उ०—जोतेहु जे भट संजुग माहो । सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं । —मानस, ६।८६ ।

संजुत(पु)—वि० [सं० संयुत] संयुक्त । मिश्रित । मिला हुआ । उ०—(क) उहईं कीन्हेंउ पिंड उरेहा । भइ संजुत आदम कै देहा । —जायसी (शब्द०) । (ख) श्रुति संमत हरिभक्ति पथ संजुत बिरति बिवेक ।—मानस, ७।१०० ।

संजुता—संज्ञा स्त्री० [सं० संयुक्ता] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में स, ज, ज, ग, होते है । इसे 'संयुत' या 'संयुता' भी कहते हैं ।

संजोग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० संयोग] अवसर । मौका । संयोग ।

संजोगिता—संज्ञा स्त्री० [हिं०] जयचंद की कन्या का नाम जिसका पृथ्वीराज चौहान ने हरण किया था ।

संजोगिनी (पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० संयोगिनी] वह स्त्री जो अपने पति या प्रेमी के पास अथवा साथ हो । संयोगिनी । वह स्त्री जो वियोगिनी न हो ।

संजोगी[1]—संज्ञा पुं० [सं० संयोगिन्] १. वह जो संयुक्त या मिला हुआ हो । २. वह जो भार्या सहित हो । प्रिया के सहित व्यक्ति । दे० संयोगी' । ३. दो जुड़े हुए पिंजड़े जो बहुधा तीतर पालनेवाले रखते हैं ।

संजोगी[2]—वि० दे० 'संयोगी' ।

संज्ञ[1]—संज्ञा पुं० [सं० सञ्ज्ञ] १. वह जो सब बातें अच्छी तरह जानता हो । वह जो सब विषयों का अच्छा जानकार हो । २. पीतकाष्ठ । झाऊँ ।

संज्ञ[2]—वि० १. संज्ञा का । नाम का । नामवाला । नामक । २. होश में आया हुआ । चेतनायुक्त । ३. जिसके दोनों घुटने परस्पर टकराते हों । ४. पूर्णतः जानकार । पूरी तौर से जाननेवाला [को०] ।

संज्ञक—वि० [सं० सञ्ज्ञक] १. संज्ञावाला । जिसकी संज्ञा हो । २. विनाशक (को०) ।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्रायः यौगिक बनाने में शब्द के अंत में होता है ।

संज्ञपन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्ज्ञपन] १. मार डालने की क्रिया । हत्या । बलि देना । २. कोई बात लोगों पर प्रकट करने की क्रिया । विज्ञापन । ३. प्रतारणा । धोखाधड़ी (को०) ।

संज्ञपित—वि० [सं० सञ्ज्ञपित] १. बलि चढ़ा हुआ । जिसकी बलि कर दी गई हो । २. संसूचित । जो ज्ञापित किया गया हो [को०] ।

संज्ञप्त—वि० [सं० सञ्ज्ञप्त] दे० संज्ञपित' [को०] ।

संज्ञप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्ज्ञप्ति] दे० 'संज्ञापन' ।

संज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्ज्ञा] १. चेतना । होश । २. बुद्धि । अक्ल । ३. ज्ञान । ४. किसी पदार्थ आदि का बोधक शब्द । नाम । आख्या । ५. व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी यथार्थ या कल्पित वस्तु का बोध होता है । जैसे,—मकान, नदी, घोड़ा, राम, कृष्ण, खेल, नाटक आदि । ६. हाथ, आँख या सिर आदि हिलाकर कोई भाव प्रकट करना । संकेत । इशारा । ७. गायत्री । ८. सूर्य की पत्नी का नाम जो विश्वकर्मा की कन्या थी । मार्कंडेय पुराण के अनुसार यम और यमुना का जन्म इसी के गर्भ से हुआ था । विशेष दे० 'छाया'—७। ९. पदचिह्न (को०) । १०. आज्ञा । आदेश (को०) ।

यौ०—संज्ञाकरण = (१) नामकरण । नाम धरना । (२) चेतना लाना । होश में लाना । संज्ञापुत्र = यम । संज्ञापुत्री । संज्ञाविपर्यय = होश गायब होना । संज्ञासुत । संज्ञाहीन ।

संज्ञाकरणरस—संज्ञा पुं० [सं० सञ्ज्ञाकरणरस] वैद्यक के अनुसार चेतना लानेवाली एक औषध का नाम ।

विशेष—इस औषध में शुद्ध सिंगीमुहरा, सेंधा नमक, काली मिर्च रुद्राक्ष, कटाली, कायफल, महुआ और समुद्र फल आदि पड़ते हैं । इनकी मात्रा बराबर होती है । कहते हैं कि इसके सेवन से मनुष्य का संनिपात रोग दूर हो जाता है ।

संज्ञात—वि० [सं० सञ्ज्ञात] ठीक ढंग से जाना या समझा हुआ । सुज्ञात [को०] ।

यौ०—संज्ञातरूप = जिसका आकार प्रकार या रूपरेखा सर्वविदित हो ।

संज्ञान—संज्ञा पुं० [सं० सञ्ज्ञान] १. संकेत । इशारा । २. सम्यग् अनुभूति । ३. ज्ञान । समझ । बोध (को०) ।

संज्ञापन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्ज्ञापन] १. दूसरों पर कोई बात प्रकट करना । विज्ञापन । २. कथन । ३. शिक्षित करना । बतलाना । सिखाना (को०) । ४. मारना । वध (को०) ।

संज्ञापुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्ज्ञापुत्री] यमुना का एक नाम । उ०—संज्ञापुत्री स्फुरच्छाया चंद्रावलि चंद्रलेख्या । तापकारनी नयनी चंद्र कांतिका स्मृता ।—गिरधर दास (शब्द०) ।

संज्ञासुत—संज्ञा पुं० [सं० सञ्ज्ञासुत] शनि का एक नाम ।

संज्ञासूत्र—संज्ञा पुं० [सं० सञ्ज्ञासूत्र] व्याकरण के अनुसार वे सूत्र जो संज्ञा का विधान करते हैं ।

संज्ञावान्—वि० [सं० सञ्ज्ञावत्] १. नामवाला । २. सचेत । होश में आया हुआ । चेतनायुक्त [को०] ।

संज्ञाहीन—वि० [सं० सञ्ज्ञाहीन] जिसे संज्ञा या चेतना न हो । चेतनारहित । बेहोश । बेसुध ।

संज्ञिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्ज्ञिका] अभिधान। आख्या [को०]।

संज्ञित—वि० [सं० सञ्ज्ञित] १. विज्ञप्त। सूचित। २. संज्ञायुक्त। नामक। नामधारी।

संज्ञी[1]—वि० [सं० सञ्ज्ञिन्] १. नाम धारण करनेवाला। २. ज्ञानवान्। जानकारी रखनेवाला। सज्ञान। ३. जिसका नाम रखा जाय [को०]।

संज्ञी[2]—संज्ञा पुं० वह जिसमें संज्ञा हो। चेतन। (जैन)।

संज्ञु—वि० [सं० सञ्ज्ञ] जिसके घुटने आपस में टकराते हों। दे० 'संज्ञ[2]' [को०]।

संज्वर—संज्ञा पुं० [सं० सञ्ज्वर] [वि० संज्वरी] १ बहुत तीव्र ज्वर। बहुत तेज बुखार। २. किसी प्रकार का बहुत अधिक ताप। बहुत तेज गर्मी। ३. क्रोध आदि का बहुत अधिक आवेग।

संज्वरी—वि० [सं० सञ्ज्वरिन्] ज्वर या तापयुक्त [को०]।

संज्वलन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्ज्वलन] इंधन। ईंधन [को०]।

संझला‡—वि० [सं० सन्ध्या, प्रा० संझा + ल (प्रत्य०)] संध्या संबंधी। संध्या का।

संझवाती[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्या + हिं० वाती] १. संध्या के समय जलाया जानेवाला दीपक। शाम का चिराग। उ०—चंद देख चकई मिलान सर फूले ऐसे, विपरीत काल है सुदेह कहियत है। बातीं संझवाती घनसार नीर चंदन सो बारि लीजियत न अनल चहियत है।—हृदयराम (शब्द०)। २. वह गीत जो संध्या समय गाया जाता है। प्रायः यह विवाह के अवसर पर होता है।

संझवाती[2]—वि० संध्या संबंधी। संध्या का।

संझा†—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्या, प्रा० संझा] सूर्यास्त का समय। संध्या। शाम। उ०—संग के सकल अंग अचल उछाह भंग ओज बिन सूझत सरोज बन संझा सी।—देव (शब्द०)।

संड[1]—संज्ञा पुं० [सं० सण्ड] षंढ। हीजड़ा। नपुंसक [को०]।

संड[2]—संज्ञा पुं० [सं० शण्ड] साँड़।

यौ०—संडमुसंड।

संडमुसंड—वि० [सं० शण्ड, हिं० संड + मुसंड (अनु०)] हट्टा कट्टा। मोटा ताजा। बहुत मोटा।

संडा[1]—वि० [सं० शण्ड] मोटा ताजा। हृष्ट पुष्ट।

संडा[2]—संज्ञा पुं० मोटा और बलवान् मनुष्य।

यौ०—संडा मुसंडा = दे० 'संडमुसंड'।

संड़ाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँड़] मशक की तरह बना हुआ भैंस आदि का वह हवा भरा हुआ चमड़ा जिसे नदी आदि पार करने के लिये नाव के स्थान पर काम में लाते हैं।

संडास—संज्ञा पुं० [सं० सम् + न्यास (= त्याग, विसर्जन)] १. कूएँ की तरह का एक प्रकार का गहरा पाखाना। शौचकूप।

विशेष—यह जमीन के नीचे खोदा हुआ एक प्रकार का गहरा गड्ढा होता है जिसका ऊपरी भाग ढँका रहता है। केवल एक छिद्र बना रहता है जिसपर बैठकर मल त्याग करते हैं। मल उसी में जमा होता जाता है। अधिक दुर्गंध होने पर उसमें खारी, नमक आदि कुछ ऐसी चीजें छोड़ते हैं जिनमें मल गलकर मिट्टी हो जाता है। इसका प्रचार अधिकतर ऐसे नगरों में है, जिनमें नल नहीं होता और नित्य मल बाहर फेंकने में कठिनता होती है पर जबसे नल का प्रचार हुआ, तबसे इस प्रकार के पाखाने बंद होने लगे हैं।

२. संडास से मिलता जुलता वह पाखाना जिसका आकार ऊँचे खड़े नल का सा होता है और जिसका नीचे का भाग पृथ्वी तल पर होता है। इसमें नीचे मकान से बाहर की ओर एक खिड़की रहती है जिसमें से मेहतर आकर मल उठा ले जाता है।

संडासी (पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सम् + दंशिका, हिं० सँड़सी] दे० 'सँड़सी'। उ०—एक बार ए दोऊ कथा। संडासी लोहार की जथा।—अर्ध०, पृ० ४।

संडिश—संज्ञा पुं० [सं० सण्डिश] सँड़सा। सँड़सी [को०]।

संडीन—संज्ञा पुं० [सं० सण्डीन] पक्षियों की एक तरह की सुंदर गति या उड़ान [को०]।

संढिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सण्ढिका] कुटनी। साँड़िनी [को०]।

संत[1]—संज्ञा पुं० [सं० सन्त] संहतल। अंजलि। अँजुरी [को०]।

संत (पु)†[2]—वि० [सं० शान्त] दे० 'शांत'। उ०—राए बधिअउँ संत हुअ रोस, लज्जाइअ निञ मनहि मन।—कीर्ति०, पृ० १८।

संत[3]—संज्ञा पुं० [सं० सत् शब्द के कर्ताकारक का बहुवचन] १. साधु, संन्यासी, विरक्त या त्यागी पुरुष। महात्मा। उ०—या जग जीवन को है यहै फल जो छल छाँडि भजै रघुराई। शोधि के संत महंतनहूँ पदमाकर बात यहै ठहराई।—पदमाकर (शब्द०)। २. हरिभक्त। ईश्वर का भक्त। धार्मिक पुरुष। ३. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में २१ मात्राएँ होती हैं। ४. साधुओं की परिभाषा में वह संप्रदायमुक्त साधु या संत जो विवाह करके गृहस्थ बन गया हो।

संतक्षण—संज्ञा पुं० [सं० सन्तक्षण] चुभने या लगनेवाली बात। व्यंग्य [को०]।

संतत[1]—अव्य० [सं० सन्तत] सदा। निरंतर। बराबर। लगातार। उ०—संतत मोपर कृपा करेहू। सेवक जानि तजेहु जनि नेहू। मानस, ३।६।

संतत[2]—वि० १. विस्तृत। फैलाया हुआ। २. हमेशा रहनेवाला। ३. बहुत। अधिक। ४. अविकल। अटूट [को०]।

संतत (पु)†[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्तति] दे० 'संतति'।

संतत ज्वर—संज्ञा पुं० [सं० सन्तत ज्वर] वह ज्वर जो आठों पहर रहे। सदा बना रहनेवाला ज्वर।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यदि ऐसा ज्वर वायु की प्रबलता के कारण होता है तो लगातार सात दिनों तक, यदि पित्त की प्रबलता के कारण हो तो दस दिनों तक रहता है। इसकी गणना विषम ज्वर में की जाती है।

संतत द्रुम -वि० [सं० सन्ततद्रुम] घने वृक्षोंवाला (जंगल)। (वन) जो सघन वृक्षयुक्त हो [को०]।

संततवर्षी—वि० [सं० संततवर्षिन्] अविरल या अटूट वृष्टि करनेवाला [को०]।

संतति—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्तति] १. बच्चे। संतान। औलाद। २. प्रजा। रिआया। ३. गोत्र। ४. विस्तार। प्रसार। फैलाव। ५. समूह। दल। झुंड। ६. किसी बात का लगातार होते रहना। अविच्छिन्नता। ७. मार्कंडेय पुराण के अनुसार ऋतु की पत्नी का नाम जो दक्ष की कन्या थी। ८. अनुभूति (को०)।

संततिक—संज्ञा पुं० [सं० सन्ततिक] संतान। औलाद [को०]।

संततिनिग्रह—संज्ञा पुं० [सं० सन्तति निग्रह] दे० 'संततिनिरोध'।

संततिनिरोध—संज्ञा पुं० [सं० सन्ततिनिरोध] जनसंख्या की वृद्धि रोकने के लिये प्रजनन रोकना। प्राकृतिक अथवा कृत्रिम उपायों से गर्भाधान न होने देना।

संततिपथ—संज्ञा पुं० [सं० सन्ततिपथ] योनि, जिसके मार्ग से संतान उत्पन्न होती है। स्त्री की जननेंद्रिय। भग।

संततिहोम—संज्ञा पुं० [सं० सन्तति होम] वैदिक काल का एक प्रकार का यज्ञ जो संतान की कामना से किया जाता था।

संततीⓤ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्तति] दे० 'संतति'। उ०—सो वा कायस्थ के और कोऊ संतती नाहीं —दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १९४।

संततेयु—संज्ञा पुं० [सं० सन्ततेयु] भागवत के अनुसार रौद्राश्व के एक पुत्र का नाम।

संतनु—संज्ञा पुं० [सं० सन्तनु] पुराणानुसार राधा के साथ रहनेवाले एक बालक का नाम।

संतपन[1]—संज्ञा पुं० [सं० सन्तपन] १. अच्छी तरह तपने की क्रिया। २. बहुत अधिक संताप या दुःख देना।

संतपन[2]—संज्ञा पुं० [हिं० संत+पन (प्रत्य०)] संत का भाव। संतई। साधुता।

संतपना†—संज्ञा पुं० [हिं० संत+पना (प्रत्य०)] दे० 'संतपन[2]'।

संतप्त[1]—वि० [सं० सम्+तप्त, सन्तप्त] १. बहुत अधिक तपा हुआ। अत्यंत तप्त। २. जला हुआ। दग्ध। ३. जिसे बहुत अधिक संताप हो। दुःखी। पीड़ित। ४. विमनस्। मलीन मन। ५. बहुत थका हुआ। श्रांत। ६. शुष्क। मुरझाया हुआ (को०)। ७. ताप की अधिकता से द्रवीभूत या पिघला हुआ।

यौ०—संतप्तचामीकर = तपाया हुआ या ताप की अधिकता से द्रवीभूत स्वर्ण। संतप्तवक्षा = जिसे साँस लेने में हृदयपीड़ा होती हो। संतप्तहृदय = मानसिक पीड़ा से युक्त।

संतप्त[2]—संज्ञा पुं० कष्ट। दुःख। शोक [को०]।

संतप्तायस्—संज्ञा पुं० [सं० सन्तप्तायस्] तप्त लौह। तपने के कारण लाल रंग का लोहा [को०]।

संतमक—संज्ञा पुं० [सं० सन्तमक] श्वासकष्ट [को०]।

संतमस्—संज्ञा पुं० [सं० सन्तमस्] १. अंधकार। तम। अँधेरा। २. मोह।

संतरण[1]—संज्ञा पुं० [सं० सन्तरण] अच्छी तरह से तरने या पार होने की क्रिया।

संतरण[2]—वि० १. तारनेवाला। पार करनेवाला। तारक। २. नष्ट करनेवाला। नाशक।

संतरा—संज्ञा पुं० [पुर्त्त० संगतरा] एक प्रकार का बड़ा और मीठा नीबू। बड़ी नारंगी। दे० 'संगतरा'।

संतरी—संज्ञा पुं० [अं० सेंटरी] १. किसी स्थान पर पहरा देनेवाला सिपाही। पहरेदार। उ०—जब पहरा तिनके ह्वै गयौ। द्वितीय संतरी आवत भयो।—रघुराज (शब्द०)। २. द्वार पर खड़ा होकर पहरा देनेवाला। द्वारपाल। दौवारिक।

संतर्जन—संज्ञा पुं० [सं० सन्तर्जन] १. डाँट डपट करना। भर्त्सना करना। डराना धमकाना। २. कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

संतर्जना—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्तर्जना] संतर्जन की क्रिया। धमकी [को०]।

संतर्द्दन—संज्ञा पुं० [सं० सन्तर्द्दन] भागवत के अनुसार राजा धृष्टकेतु के एक पुत्र का नाम।

संतर्पक—वि० [सं० सन्तर्पक] संतुष्ट या प्रसन्न करनेवाला। तृप्त करनेवाला।

संतर्पण—संज्ञा पुं० [सं० सन्तर्पण] १. जो भली भाँति तृप्त करता हो। वह जो प्रसन्नता एवं संतोषदायक हो। २. अच्छी तरह तृप्त करना। प्रसन्न एवं संतुष्ट करना। ३. वह पदार्थ जो शक्ति एवं ओज का वर्धन करता हो। शक्तिवर्धक पदार्थ। ४. एक प्रकार का चूर्ण जिसमें दाख, अनार, खजूर, केला, शक्कर, लाजा (लाई) का चूर्ण, मधु और घृत पड़ता है।

संतर्पित—वि० [सं० सन्तर्पित] संतुष्ट एवं तृप्त किया हुआ [को०]।

संतस्थान—संज्ञा पुं० [सं० सन्तस्थान] संतों के रहने का स्थान। साधुओं का निवास स्थान। मठ।

संतान—संज्ञा पुं० [सं० सन्तान] १. बालबच्चे। लड़के बाले। संतति। औलाद। २. कल्पवृक्ष। देवतरु। ३. वंश। कुल। ४. विस्तार। फैलाव। ५. वह प्रवाह जो अविच्छिन्न रूप से चलता हो। धारा। ६. प्रबंध। इंतजाम। ७. महाभारत के अनुसार प्राचीनकाल के एक प्रकार के अस्त्र का नाम। ८. विचारों का अविच्छिन्न क्रम। विचारधारा। ९. रग। स्नायु नस (को०)।

यौ०—संतानकर्म = संतति उत्पादन। संतानकर्ता = संतान पैदा करनेवाला। संतानगणपति। संतानगोपाल। संताननिग्रह = दे० 'संततिनिरोध'। संतानवर्धन = (१) वंश बढ़ाना। (२) संतान को बढ़ानेवाला। संतानसंधि।

संतानक[1]—वि० [सं० सन्तानक] १. जो दूर तक व्याप्त हो। फैला हुआ। विस्तृत। २. संतान करनेवाला। विस्तार करनेवाला। ३. प्रबंधक। इंतजाम या व्यवस्था करनेवाला (को०)।

संतानक[2]—संज्ञा पुं० १. कल्पवृक्ष। देवतरु। २. पुराणानुसार एक लोक जो ब्रह्मलोक से परे कहा गया है।

संतान गणपति—संज्ञा पुं० [सं० सन्तान गणपति] पुराणानुसार एक प्रकार के गणपति का नाम।

संतान गोपाल—संज्ञा पुं० [सं० सन्तान गोपाल] संतति देनेवाले कृष्ण। वासुदेव कृष्ण जिनकी पूजा संतानप्राप्ति के लिये की जाती है [को०]।

संतानसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्तानसन्धि] कामंदकीय नीति के अनुसार वह संधि जो अपना लड़का या लड़की देकर की जाय। (कामंदक)।

संतानिक—वि० [सं० सन्तानिक] [वि० स्त्री० संतानिका] कल्पवृक्ष के पुष्पों से निर्मित। जैसे, हार, माला आदि [को०]।

संतानिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्तानिका] १. क्षीर सागर। २. चाकू का फल। ३. फेन। ४. साढ़ी। मलाई। ५. मर्कटजाल। सुश्रुत के अनुसार व्रणबंधन में प्रयुक्त एक द्रव्य। ६. पाकराजशेखर में वर्णित एक प्रकार का मिष्ठान्न (को०)। ७. स्कंद की एक मातृका (को०)।

संतानिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्तानिनी] मलाई। साढ़ी [को०]।

संतानी—संज्ञा पुं० [सं० सन्तानिन्] अविच्छिन्न विचारप्रवाह का विषय या वस्तु [को०]।

संताप—संज्ञा पुं० [सं० सन्ताप] अग्नि या धूप आदि का ताप। जलन। आँच। २. दुःख। कष्ट। व्यथा। ग्लानि। ३. मानसिक कष्ट। मनोव्यथा। पछतावा। ४. ज्वर। ५. शत्रु। दुश्मन। ६. दाह नाम का रोग। विशेष दे० 'दाह'-४। ७. आवेश। रोष (को०)।

यौ०—संतापकर, संतापकारक, संतापकारी = संताप देनेवाला। कष्टदायक। संतापहर, संतापहारक, संतापहारी = व्यथा या ताप का शमन करनेवाला।

संतापन[1]—संज्ञा पुं० [सं० सन्तापन] १. संताप देने की क्रिया। जलाना। २. बहुत अधिक कष्ट या दुःख देना। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक बाण का नाम। ४. पुराणानुसार एक प्रकार का अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रु को संताप होना माना जाता है। ५. आवेश। उत्तेजन। रोष (को०)। ६. शिव का एक अनुचर (को०)। ७. एक बालग्रह (को०)।

संतापन[2]—वि० १. ताप पहुँचानेवाला। जलानेवाला। २. दुःख देनेवाला। कष्ट पहुँचानेवाला।

संतापना(पु)†—क्रि० स० [सं० सन्तापन] संताप देना। दुःख देना। कष्ट पहुँचाना। सताना। उ०—जाको काम क्रोध नित व्यापै। अरु पुनि लोभ सदा संतापै। ताहि असाधु कहत कवि सोई। साधु भेष धरि साधु न होई।—सूर (शब्द०)।

संतापवत्—संज्ञा पुं० [सं० सन्तापवत्] संताप या कष्ट से युक्त। जिसे संताप हो [को०]।

संतापित—वि० [सं० सन्तापित] १. जिसे बहुत संताप पहुँचाया गया हो। पीड़ित। संतप्त। २. तपाया हुआ। जलाया हुआ (को०)।

संतापी—संज्ञा पुं० [सं० सन्तापिन्] वह जो संतप्त करता हो। संताप देनेवाला। दुःखदायी।

संताप्य—वि० [सं० सन्ताप्य] १. जलाने के योग्य। २. कष्ट या दुःख देने के योग्य। तकलीफ देने के लायक।

संतार—संज्ञा पुं० [सं० सन्तार] १. पार करना। पार जाना। २. नदी आदि का वह छिछला स्थान जहाँ से हलकर नदी पार की जा सके। घाट। तीर्थ [को०]।

संतावना(पु)—सं० क्रि० [हिं० संतापना] दे० 'संतापना'। उ०—जिव दे जिव संतावते पलटू उनकी टेक।—पलटू०, भा० १, पृ० १८।

यौ०—संतार नौ = वह नौका जिससे नदी आदि पार की जाय। घटहा।

संति—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ति] १. दान। भेंट। अँकोर। २. अवसान। अंत। समाप्ति।

संती[1]—अव्य० [सं० सन्ति ? प्रा० संतिअ, संतिग < सं० सत्क ?] बदले में। एवज में। स्थान में। उ०—उसने उसकी पसलियों में से एक पसली निकाली और उसकी संती मास भर दिया।—दयानंद (शब्द०)।

संती(पु)†[2]—अव्य० [प्रा० सुन्तो] से। द्वारा। उ०—सो न डोल देखा गजपती। राजा सत्त दत्त दुहूँ संती।—जायसी (शब्द०)।

संतुलन—संज्ञा पुं० [सं० सन्तुलन] १. तौल। वजन। २. आपेक्षिक भार बराबर होना। ठीक अनुपात होना। वजन ठीक कायम रहना। ३. तौलने की क्रिया।

संतुलित वि० [सं० सन्तुजित] १. ठीक ढंग से तौला हुआ। २. समान अनुपात का। पूर्ण नियंत्रित। जैसे,—संतुलित व्यवहार। ३. संयत। सुस्थिर। जैसे,—संतुलित व्यक्ति।

संतुषित—संज्ञा पुं० [सं० सन्तुषित] ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

संतुष्ट—वि० [सं० सन्तुष्ट] १. जिसका संतोष हो गया हो। जिसकी तृप्ति हो गई हो। तृप्त। २. जो मान गया हो। जो राजी हो गया हो। जैसे,—इन्हें किसी तरह समझा बुझाकर संतुष्ट कर लो; फिर सब काम हो जायगा। ३. प्रसन्न। खुश (को०)।

संतुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्तुष्टि] संतुष्ट होने का भाव। २. इच्छा की पूर्ति। तृप्ति। २. प्रसन्नता [को०]।

संतृण—वि० [सं० सम् + तृण] १. परस्पर बँधा हुआ या संलग्न। जुड़ा हुआ। २. आच्छादित। ढँका हुआ [को०]।

संतृप्त—वि० [सं० सम् + तृप्त] पूर्ण रूप से तृप्त या अघाया हुआ।

संतृप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम् + तृप्ति] पूर्ण संतुष्ट होने का भाव। संतुष्टि।

संतोख(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सन्तोष] दे० 'संतोष'।

संतोखी†—वि० [सं० सन्तोषिन्] दे० 'संतोषी'।

संतोष—संज्ञा पुं० [सं० सन्तोष] १. मन की वह वृत्ति या अवस्था जिसमें मनुष्य अपनी वर्तमान दशा में ही पूर्ण सुख का अनुभव करता है; न तो किसी बात की कामना करता है और न किसी बात की शिकायत। हर हालत में प्रसन्न रहना। संतुष्टि। सब्र। कनायत। उ०—गोधन, गजधन, बाजिधन और रतन धन खान। जब आवत संतोष धन सब धन धूरि समान। तुलसी (शब्द०)।

विशेष—हमारे यहाँ पातंजल दर्शन के अनुसार 'संतोष' योग का एक अंग और उसके नियम के अंतर्गत है। इसकी उत्पत्ति सात्विक वृत्ति से मानी गई है; और कहा गया है कि इसके पैदा हो जाने पर मनुष्य को अनंत और अखंड सुख मिलता है। पुराणानुसार धर्मानुष्ठान से सदा प्रसन्न रहना और दुःख में भी आतुर न होना संतोष कहलाता है।

क्रि० प्र०—करना।—मानना।—रखना।—होना।

२. मन की वह अवस्था जो किसी कामना या आवश्यकता की भलीभाँति पूर्ति होने पर होती है। तृप्ति। शांति। इतमीनान। जैसे,—पहले मेरा संतोष करा दीजिए, तब मैं आपके साथ चलूँगा। ३. प्रसन्नता। सुख। हर्ष। आनंद। जैसे,—हमें यह जानकर बहुत संतोष हुआ कि अब आप किसी से वैमनस्य न करेंगे। ४. अंगूठा और तर्जनी (को०)।

संतोषक—वि० [सं० सन्तोषक] संतोष देनेवाला। संतोषदायक [को०]।

संतोषण—संज्ञा पुं० [सं० सन्तोषण] संतुष्ट या प्रसन्न करने का भाव। दे० 'संतोष'।

संतोषणीय—वि० [सं० सन्तोषणीय] १. संतोष करने योग्य। २. संतोष कराने योग्य।

संतोषनि†—वि० स्त्री० [सं० सन्तोषिन्] जो संतोष करती हो। संतोष करनेवाली। उ०—गरीबिनी है। अच्छा बोलती बतलाती है और संतोषनि भी है।—त्याग०, पृ० ६०।

संतोषना[१]—क्रि० स० [सं० सन्तोष + हिं० ना (प्रत्य०)] संतोष दिलाना। संतुष्ट करना। तबीयत भरना। उ०—मेघनाद ब्रह्मा वर पायो। आहुति अगिनि जिवाइ संतोषी निकस्यो रथ बहु रतन बनायो। आयुध धरे समेत कवच सजि गरजि चढ्यो रणभूमिहि आयो। मनो मेघनायक ऋतु पावस बाण वृष्टि करि सैन खपायो।—सूर० (शब्द०)।

संतोषना[२]—क्रि० अ० संतुष्ट होना। प्रसन्न होना।

संतोषित[१]—वि० [सं० सम्तोषित] प्रसन्न किया हुआ। इतमीनान कराया हुआ। संतोष कराया हुआ।

संतोषित[२]—वि० [सं० संतोष, सं० सन्तुष्ट] जिसका संतोष हो गया हो। संतुष्ट। उ०—नामदेव कह इतनहिं लैहौं। इतने महँ संतोषित ह्वैहौं।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—यह रूप अशुद्ध है; शुद्ध रूप संतुष्ट है। पर 'संतोषित' शब्द का भी प्रयोग कहीं कहीं हिंदी कविता में पाया जाता है।

संतोषी—संज्ञा पुं० [सं० सन्तोषिन्] १. वह जो सदा संतोष रखता हो। जिसे बहुत लालसा न हो। २. सब्र करनेवाला। संतुष्ट रहनेवाला।

संतोष्य—वि० [सं० सन्तोष्य] संतोष करने के योग्य।

संत्य—संज्ञा पुं० [सं० सन्त्य] अग्निदेव का एक नाम जो सब प्रकार के फल देनेवाले माने जाते हैं।

संत्यक्त—वि० [सं० सम्त्यक्त] १. पूर्णतः परित्यक्त या छोड़ा हुआ। त्यक्त। २. वंचित या रहित किया हुआ [को०]।

संत्यजन—संज्ञा पुं० [सं० सन्त्यजन] त्याग करना। छोड़ना [को०]।

संत्याग—संज्ञा पुं० [सं० सन्त्याग] छोड़ देना। त्यागना [को०]।

संत्याज्य—वि० [सं० सन्त्याज्य] परित्याग करने योग्य। छोड़ देने लायक [को०]।

संत्रस्त—वि० [सं० संत्रस्त] अत्यंत भयभीत। डर से कंपित [को०]।

यौ०—संत्रस्तगोचर = जिसे देखकर डर लगे।

संत्राण—संज्ञा पुं० [सं० संत्राण] रक्षा। उद्धार [को०]।

संत्रास—संज्ञा पुं० [सं० सन्त्रास] भय। डर। त्रास [को०]।

संत्रासन—संज्ञा पुं० [सं० सन्त्रासन] [वि० संत्रासित] भयभीत या आतंकित करना [को०]।

संत्रासित—वि० [सं० सन्त्रासित] त्रस्त किया हुआ। भयभीत किया हुआ [को०]।

संत्री—संज्ञा पुं० [अं० सेन्ट्री, हिं० संतरी] दे० 'संतरी'।

संत्वरा—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्त्वरा] शीघ्रता। तत्परता। हड़बड़ी। जल्दबाजी [को०]।

संथा—संज्ञा पुं० [सं० संहिता या संस्था] १. चटसार। पाठशाला। २. एक बार में पढ़ाया हुआ अंश। पाठ। सबक। उ०—किसने कहा कि हम लोग धर्म के भंडेरिये हैं? हम लोग गाते बजाते नहीं थे, संथा घोखते थे।—दुर्गाप्रसाद मिश्र (शब्द०)।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

संथान (पु)—संज्ञा पुं० [सं० संस्थान] दे० 'संस्थान'। उ०—आसोंजै गानिग राव परबा बेहानं। सोवन गिरि संथान साथ सामंत सिवानै।—पृ० रा०, १२।५४।

संथाल—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. बिहार का एक परगना। २. वहाँ की एक आदिवासी जाति और उसका मनुष्य।

संथाली[१]—वि० [हिं० संथाल + ई० (प्रत्य०)] संथाल जाति, देश या भाषा से संबद्ध। संथाल का।

संथाली[२]—संज्ञा स्त्री० १. संथाल जाति की स्त्री। १. संथालों की भाषा।

संदंश—संज्ञा पुं० [सं० सन्दंश] १. सँड़सी नाम का लोहे का औजार। २. न्याय या तर्क के अनुसार अपने प्रतिपक्षी को दोनों ओर से उसी प्रकार जकड़ या बाँध देना जिस प्रकार सँड़सी से कोई बरतन पकड़ते हैं। ३. सुश्रुत के अनुसार सँड़सी के आकार का, प्राचीन काल का एक प्रकार का औजार जिसकी सहायता से शरीर में गड़ा हुआ काँटा आदि निकालते थे।

बंकमुख । ४. स्वर वा व्यंजन आदि के उच्चारण के लिये जोर से दाँतों का संवरण, संपीडन या भीचना (को०) । ५. नरक-विशेष का नाम (को०) । ६. पुस्तक का कोई परिच्छेद (को०) । ७. गाँव का किनारा या पार्श्व (को०) । ८. शरीर के उन अंगों का नाम जिनसे कोई वस्तु पकड़ने का काम लेते हैं (को०) ।

संदंशक—संज्ञा पुं० [सं० सन्दंशक] १. सँड़सी । २. चिमटा [को०] ।

संदंशिका—संज्ञा पुं० [सं० सन्दंशिका] १. सँड़सी । २. चिमटी । ३. कैंची । ४. (चोंच से) काटना, नोचना या पकड़ना (को०) ।

संदंशित—वि० [सं० सन्दंशित] जो कवच धारण किए हो । कवच-युक्त ।

संद[१]—संज्ञा पुं० [सं० सन्धि] दरार । छेद । बिल ।

संद[२]—संज्ञा पुं० [सं० (उप०) सम् + √दश्, दंश् (=दबाना) अथवा सन्दान (=एक साथ बाँधना ?)] दबाव । उ०—बोलि लिए यशुमति यदुनंदहि । पीत झगलिया की छबि छाजति बिज्जुलता सोहति मनौ कंदहि । वाजापति अग्रज अंवाते अरजथान सुत माला गंदहि । मनो सुरग्रह ते सुरिरपु कन्या सौतै आवति ठुरि संदहि ।—सूर (शब्द०) ।

संद(पु)[३]—संज्ञा पुं० [सं० सनन्दन] एक ऋषि । सनंदन ऋषि ।

संदर्प—संज्ञा पुं० [सं० सन्दर्प] घमंड । गरूर [को०] ।

संदर्भ—संज्ञा पुं० [सं० सन्दर्भ] १. रचना । बनावट । २. साहित्यिक रचना या ग्रंथ । प्रबंध । निबंध । लेख । ३. वह ग्रंथ जिसमें किसी और ग्रंथ के गूढ़ वाक्यों आदि का अर्थ या स्पष्टीकरण आदि हो । ४. कोई छोटी पुस्तक । ५. वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार की बातों का संग्रह हो । ६. विस्तार । फैलाव । ७. एक साथ क्रमबद्ध करना नत्थी करना । गूँथना (को०) । ८. प्रसंग । संबंध । जैसे—इस बात का संदर्भ क्या है ? इस संदर्भ में हमें कुछ नहीं कहना है । ९. संगीत । निरंतरता (को०) । १०. बुनना (को०) ।

यौ०—संदर्भविरुद्ध = असंबद्ध । प्रसंगरहित । संदर्भशुद्ध = जिसका संदर्भ या संबंध ठीक हो । सदर्भशुद्धि = काव्यनिर्माण में पूर्वापर क्रम से संबंध निर्वाह की शुद्धता ।

संदर्श—संज्ञा पुं० [सं० सन्दर्श] झलक । दृश्य [को०] ।

संदर्शन—संज्ञा पुं० [सं० सन्दर्शन] १. अच्छी तरह देखने की क्रिया । अवलोकन । २. घूरना । अपलक देखना । टकटकी लगाकर देखना (को०) । ३. दृष्टि । निगाह । नजर (को०) । ४. परीक्षा । इम्तहान । जाँच । पर्यवेक्षण । ५. ज्ञान । ६. आकृति । सूरत । शक्ल । ७. रामायण के अनुसार एक द्वीप का नाम । ८. व्यवहार (को०) । ९. दिखाना । प्रदर्शित करना (को०) ।

यौ०—संदर्शनद्वीप = एक द्वीप का नाम । संदर्शनपथ = दृष्टिपथ । आँख ।

संदर्शयिता—वि० [सं० सन्दर्शयितृ] दिखाने या व्यक्त करने-वाला [को०] ।

संदर्शित—वि० [सं० सन्दर्शित] दिखाया हुआ । व्यक्त किया हुआ ।

संदल—संज्ञा पुं० [फ़ा०] श्रीखंड । चंदन । विशेष दे० 'चंदन' ।

संदलित—वि० [सं० सन्दलित] विद्ध । निर्भिन्न । छिद्रित, कुचला या दला हुआ । दलित [को०] ।

संदली[१]—वि० [फ़ा० संदल] संदल के रंग का । हलका पीला (रंग) । २. संदल का । चंदन का । जैसे,—संदली कलमदान ।

संदली[२]—संज्ञा स्त्री० १. तिपाई । कुर्सी । चौघड़िया । २. संदल की बनी हुई वस्तु [को०] ।

संदली[३]—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का हलका पीला रंग ।

विशेष—यह रंग कपड़े को चंदन के बुरादे के साथ उबालने से आता है । इससे कपड़े में सुगंधि भी आ जाती है । आजकल कई तरह की बुकनियों से भी यह रंग तैयार किया जाता है ।

२. एक प्रकार का हाथी जिसे दाँत नहीं होते । ३. घोड़े की एक जाति ।

संदष्ट[१]—वि० [सं० सन्दष्ट] १. आपस में मिलाकर दबाया हुआ । २. जिसे दाँतों से काटा गया हो । ३. चर्वित । चबाया हुआ [को०] ।

संदष्ट[२]—संज्ञा पुं० उच्चारण संबंधी एक प्रकार का विशेष दोष जो दाँतों को दबाकर बोलने से होता है [को०] ।

संदाता—वि० [सं० सन्दात] बाँधनेवाला [को०] ।

संदान[१]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार की निहाई जिसका एक कोना नुकीला और दूसरा चौड़ा होता है । अहरन । घन ।

संदान[२]—संज्ञा पुं० [सं० सन्दान] १. बंधन । रस्सी । २. बाँधने की सिकड़ी आदि । ३. बाँधने की क्रिया । ४. हाथी का गंडस्थल जहाँ से उसका मद बहता है । ५. हाथी के पैरका वह भाग जिसमें साँकल बाँधी जाती है (को०) । ६. काटना । विभक्त करना (को०) ।

संदानक—संज्ञा पुं० [सं० सन्दानक] कबूतर का घोंसला [को०] ।

संदानिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्दानिका] १. दुर्गंध खैर । विट खदिर । बबुरी । २. एक प्रकार की मिठाई (को०) ।

संदानित—वि० [सं० सन्दानित] १. बाँधा हुआ । बद्ध । २. पाशवद्ध । निगडित [को०] ।

संदानितक—संज्ञा पुं० [सं० सन्दानितक] एक वाक्य में निबद्ध तीन श्लोकों या पद्यों का नाम ।

संदानिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्दानिनी] गौओं के रहने का स्थान । गोशाला ।

संदाय—संज्ञा पुं० [सं० सन्दाय] प्रग्रह । पगहा । वल्गा [को०] ।

संदाव—संज्ञा पुं० [सं० सन्दाव] भागने की क्रिया । पलायन ।

संदास—संज्ञा पुं० [देश०] सफेद डामर धूप । मरहम । कहरुबा ।

विशेष—इसका वृक्ष प्रायः पच्छिमी घाट में पाया जाता है । यह सदा हरा रहता है ।

संदाह—संज्ञा पुं० [सं० सन्दाह] १. वैद्यक के अनुसार मुख, तालु और होठों की जलन । २. जलना (को०) ।

संदिपु—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] मेल। संधि। उ०—रूप सँवर संदि सों बहु आपुयो अनयास। पाइ पूरण रूप को रमि भूमि केशवदास।—केशव (शब्द०)।

संदिग्ध[1]—वि० [सं० सन्दिग्ध] १. जिसमें किसी प्रकार का संदेह हो। संदेहपूर्ण। संशयजनक। मुश्तवह। २. सना हुआ। ढका हुआ। ३. भ्रांत। विह्वल। ४. सशंक (को०)। ५. अव्यवस्थित। अस्पष्ट। जैसे,—वाक्य। ६. खतरनाक। असुरक्षित (को०)। ७. विष से भरा हुआ। विषाक्त (को०)।

संदिग्ध[2]—संज्ञा पुं० १. उत्तराभास। मिथ्या उत्तर का एक लक्षण। २. एक प्रकार का व्यंग्य जिसमें यह नहीं प्रकट होता कि वाचक या व्यंजक में व्यंग्य है। ३. वह जिसपर किसी अपराध का संदेह किया जाय। जैसे,—राजनीतिक संदिग्ध। ४. संशय। अनिश्चय (को०)। ५. अनुलेपन। लेपन (को०)।

संदिग्धता—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्दिग्धता] दे० संदिग्धत्व' [को०]।

संदिग्धत्व—संज्ञा पुं० [सं० सन्दिग्धत्व] १. संदिग्ध होने का भाव या धर्म। संदिग्धता। २. अलंकार शास्त्रानुसार एक प्रकार का दोष जो उस समय माना जाता है जब कि किसी उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट नहीं होता। अर्थ के संबंध में कुछ संदेह बना रहता है।

संदिग्धनिश्चय—वि० [सं० सन्दिग्ध निश्चय] किसी बात या कार्य पर दृढ़ न हो सकनेवाला [को०]।

संदिग्धफल—वि० [सं० सन्दिग्धफल] १. विषाक्त वाण रखनेवाला। २. जिसकी नोक विषबुझी हो। जैसे,—तीर, गाँसी [को०]।

संदिग्दधबुद्धि—वि० [सं० सन्दिग्धबुद्धि] संदेही। शकी [को०]।

संदिग्धमति—वि० [सं० सन्दिग्धमति] दे० 'संदिग्धबुद्धि' [को०]।

संदिग्धार्थ[2]—वि० [सं० सन्दिग्धार्थ] संदिग्ध अर्थवाला। जिसका मतलब संदेहास्पद हो [को०]।

संदिग्धार्थ[1]—संज्ञा पुं० वह विषय जिसपर मतैक्य न हो। २. वह अर्थ जो संदेहास्पद हो [को०]।

संदिग्धीकृत—वि० [सं० सन्दिग्धीकृत] जिसे संदिग्ध किया गया हो जिसे संशय युक्त या संदेहास्पद किया गया हो।

संदित—वि० [सं० सन्दित] बाँधा हुआ। ग्रस्त। निगडित [को०]।

संदिष्ट[1]—वि० [सं० सन्दिष्ट] १. कथित। कहा हुआ। बताया हुआ। २. संकेतित। इंगित (को०)। ३. वादा किया हुआ। प्रतिज्ञात (को०)। ४. निर्दिष्ट (को०)।

संदिष्ट[2]—संज्ञा पुं० १. वार्ता। बातचीत। २. समाचार। खबर। ३. संदेशवाहक। चर (को०)।

संदिष्टार्थ—संज्ञा पुं० [सं० सन्दिष्टार्थ] वह जो एक का समाचार दूसरे तक पहुँचाता हो। सँदेसा ले जानेवाला दूत। कासिद।

संदिहान—वि० [सं० सन्दिहान] संदिग्ध। संशयपूर्ण [को०]।

संदी—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्दी] शय्या। पलंग। खाट।

संदीपक—वि० [सं० सन्दीपक] उद्दीपन करनेवाला। उद्दीपक।

संदीपन[1]—संज्ञा पुं० [सं० सन्दीपन] १. उद्दीप्त करने की क्रिया। उद्दीपन। प्रज्वलित करना। २. कृष्ण के गुरु का नाम। विशेष दे० 'सांदीपनि'। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक बाण का नाम।

संदीपन[2]—वि० १. उद्दीपन करनेवाला। उत्तेजन करनेवाला। २. सुलगानेवाला। प्रज्वलित करनेवाला (को०)।

संदीपनी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्दीपनी] संगीत में पंचम स्वर की चार श्रुतियों में से तीसरी श्रुति।

संदीपनी[2]—वि० संदीपन करनेवाली। उद्दीप्त करनेवाली।

संदीपित—वि० [सं० सन्दीप्त] १. जिसका संदीपन किया गया हो। संदीप्त। उद्दीप्त। २. जलाया हुआ। प्रज्वलित।

संदीप्त—वि० [सं० सन्दीप्त] १. प्रज्वलित। २. उद्दीप्त। ३. उत्तेजित। उकसाया हुआ [को०]।

संदीप्य[1]—संज्ञा पुं० [सं० सन्दीप्य] मयूरशिखा नामक वृक्ष।

संदीप्य[2]—वि० संदीपन करने के योग्य। संदीपनीय।

संदुष्ट—वि० [सं०] १. कलुषित किया हुआ। खराब। २. नीच। दुष्ट। ३. विकृत। कुरूप [को०]।

संदूक—संज्ञा पुं० [अ० संदूक] [अल्पा० संदूकचा, संदूकची] लकड़ी, लोहे, चमड़े आदि का बना हुआ चौकोर पिटारा जिसमें प्रायः कपड़े, गहने आदि चीजें रखते हैं। पेटी। बकस।

संदूकचा—संज्ञा पुं० [अ० संदूक + चह् (प्रत्य०)] छोटा संदूक। छोटा बकस। छोटी पेटी।

संदूकची—संज्ञा स्त्री० [अ० संदूक + ची (प्रत्य०)] छोटी पेटी या संदूक।

संदूकड़ी—संज्ञा स्त्री० [अ० संदूक + ड़ी (प्रत्य०)] छोटा संदूक। छोटा बकस।

संदूकिया†—संज्ञा स्त्री० [अ० संदूक + हिं० इया (प्रत्य०)] संदूक। बकस। पेटी।

संदूकी—वि० [अ० संदूक] संदूक सा। बकसनुमा। संदूक के आकार का। जैसे, संदूकी कब्र।

संदूख—संज्ञा पुं० [हिं० संदूक] दे० 'संदूक'।

संदूरपु—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूर] दे० 'सिंदूर'। उ०—नवल सिंगार बनाहत कीन्हा। सीस पसारहिं संदुर दीन्हा।—जायसी (शब्द०)।

संदूषण—संज्ञा पुं० [सं० सन्दूषण] संदुष्ट करना। कलुषित या खराब करना [को०]।

संदूषित—वि० [सं० सन्दूषित] १. दूषित किया हुआ। २. (रोग) जो असाध्य हो गया हो। जिसकी हालत और भी खराब हो उठी हो (मर्ज)। ३. जिसकी निंदा की गई हो।

संदृब्ध—वि० [सं० सन्दृब्ध] परस्पर गुँथा हुआ [को०]।

संदृश्य—वि० [सं० सन्दृश्य] १. किसी के अनुरूप या समान देख पड़नेवाला। २. दे० 'संदृष्ट'।

संदृष्ट—वि० [सं० सन्दृष्ट] १. पूर्ण रूप से अवलोकित। भली भाँति देखा हुआ। २. निर्दिष्ट (को०)।

संदेग्धा—वि० [सं० सन्देग्धृ] शक्की स्वभाव का। संदेहालु।

संदेव—संज्ञा पुं० [सं० सन्देव] हरिवंश के अनुसार देवक से एक पुत्र का नाम।

संदेवा—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्देवा] वसुदेव की स्त्री और देवक की कन्या का नाम। इनका दूसरा नाम श्रीदेवा या सुदेवा भी है।

संदेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. समाचार। हाल। खबर। संवाद। २. एक प्रकार की बँगला मिठाई जो छेने और चीनी के योग से बनती है। ३. वाचिक कथन। सँदेसा। ४. दे० 'संदंश'। ५. आज्ञा। आदेश (को०)।

यौ०—संदेशपद = समाचार के शब्द। संदेशवाक् = समाचार। हाल। संदेशवाहक, संदेशहारक, संदेशहारी = संदेश ले जानेवाला।

संदेशहर—संज्ञा पुं० [सं० सन्देशहर] संदेसा या समाचार ले जानेवाला। वार्तावाह। दूत। कासिद।

संदेशा—संज्ञा पुं० [सं० सन्देश] दे० 'संदेश'।

संदेशी—संज्ञा पुं० [सं० सन्देशिन्] संदेश लानेवाला। समाचार वाहक। बसीठ। दूत।

संदेस—संज्ञा पुं० [सं० सन्देश] दे० 'संदेश'।

संदेसड़ा पु—संज्ञा पुं० [हिं० संदेस + राज० ड़ा (प्रत्य०)] संदेश। हालचाल। समाचार। कथन। उ०—अवसर जे नहिं आविया, वेला जे न पहुत्त। सज्जण तिण संदेसड़इ, करिजइ राज बहुत्त। —ढोला०, दू० १७६।

संदेसरा पु—संज्ञा पुं० [हिं० संदेस + रा (प्रत्य०)] दे० 'संदेशड़ा'।

संदेसी†—संज्ञा पुं० [सं० सन्देशिन्] संदेशी। बसीठ। दूत।

संदेह—संज्ञा पुं० [सं० सन्देह] १. वह ज्ञान जो किसी पदार्थ की वास्तविकता के विषय में स्थिर न हो। किसी विषय में ठीक या निश्चित न होनेवाला मत या विश्वास। मन की वह अवस्था जिसमें यह निश्चय नहीं होता कि यह चीज ऐसी ही है या और किसी प्रकार की। अनिश्चयात्मक ज्ञान। संशय। शंका। शक। उ०—तब खगपति विरंचि पहिं गएऊ। निज संदेह सुनावत भएऊ।—मानस, ७।६०।

क्रि० प्र०—करना।—डालना।—मिटना।—मिटाना।—होना।

यौ०—संदेहगंध = संदेह का आभास या झलक। संदेहच्छेदन = शक दूर करना। संदेह न रहना। संदेहदायी = शंका उत्पन्न करनेवाला। शक धरानेवाला। संदेहदोला = दुबधा की स्थिति। अनिश्चय की अवस्था। संदेहनाश = संशय मिटना। संदेहपद = संशय की जगह। संदेह का स्थान। संदेहभंजन = शक या शंका दूर करना।

२. एक प्रकार का अर्थालंकार।

विशेष—यह उस समय माना जाता है जब किसी चीज को देखकर संदेह बना रहता है, कुछ निश्चय नहीं होता। 'भ्रांति' में और 'संदेह' में यह अंतर है कि भ्रांति में तो भ्रमवश किसी एक वस्तु का निश्चय हो भी जाता है, पर इसमें कुछ भी निश्चय नहीं होता। कविता में इस अलंकार के सूचक प्रायः धौं, किधौं, आदि संदेहवाचक शब्द आते हैं। जैसे,—(क) की तुम हरिदासन महँ कोई। मोरे हृदय प्रीति अति होई। की तुम राम दीन अनुरागी। आए मोहिं करन बड़भागी। —तुलसी (शब्द०)। (ख) सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है। कुछ आचार्यों ने इसके निश्चयगर्भ, निश्चयांत और शुद्ध ये तीन भेद माने हैं।

३. जोखिम। खतरा। डर (को०)। ४. शरीर के भौतिक उपकरणों का उपचयन (को०)।

संदेहात्मक—वि० [सं० सन्देहात्मक] संदिग्ध (को०)।

संदेहास्पद—वि० [सं० सन्देहास्पद] संदेह का स्थान। संदिग्ध।

संदेही—वि० [सं० सन्देहिन्] १. संदेहवाला। शक्की। २. अनिश्चयात्मक (को०)।

संदोल—संज्ञा पुं० [सं० सन्दोल] कान में पहनने का कर्णफूल नाम का गहना।

संदोह—संज्ञा पुं० [सं० सन्दोह] १. समूह। झुंड। उ०—जयति निर्भरानंद संदोह कपि केसरी सुवन भुवनैक भर्ता।—तुलसी (शब्द०)। २. दूध दुहना (को०)। ३. गायों आदि के झुंड का सारा दूध (को०)।

संद्रव—संज्ञा पुं० [सं० सन्द्रव] १. गूँथने की क्रिया। गुंथन। २. पलायन। भागना (को०)।

संद्राव—संज्ञा पुं० [सं०] १. युद्ध क्षेत्र से भागने की क्रिया। पलायन। २. चाल। गति (को०)। ३. दौड़ने का स्थान (को०)।

संध पु[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] दे० 'संधि'।

संध[२]—वि० [सं० सन्ध] १. रखनेवाला। धारण करनेवाला। २. मिला हुआ। युक्त (को०)।

संध[३]—संज्ञा पुं० योग। लगाव। संबंध (को०)।

संधना पु—क्रि० अ० [सं० सन्धि] संयुक्त होना। मिलना। उ०—पक्ष द्व संधि संध्या संधो है मनो।—केशव (शब्द०)।

संधा—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धा] १. स्थिति। २. प्रतिज्ञा। करार। ३. संधान। संधि। मिलन। ४. सध्या काल। साँझ।

यौ०—संधा भाषा = अस्पष्ट भाषा जो साफ न व्यक्त हो। संधाभाष्य, संधावचन = अस्पष्ट कथन। घुमाफिरा कर कही हुई उलझन भरी उक्ति।

५. अनुसंधान। तलाश। ६. सोमा। हद (को०)। ७. घनिष्ट या प्रगाढ़ सबंध (को०)। ८. स्थिरता। स्थैर्य (को०)। ९. शराब चुवाना। मद्यसंधान (को०)।

संधातव्य—वि० [सं० सन्धातव्य] १. एक में मिलाने या युक्त करने के योग्य। २. जिससे संधान या संधि की जाय (को०)।

संधाता—संज्ञा पुं० [सं० सन्धातृ] १. शिव। २. विष्णु।

संधान--संज्ञा पुं० [सं० सन्धान] १. धनुष पर बाण चढ़ाने की क्रिया। लक्ष्य करने का व्यापार। निशाना लगाना। २. शराब बनाने का काम। ३. मदिरा। शराब। ४. संघट्टन। योजन। मिलाना। मिश्रण (ओषधि या अन्य पदार्थों का)। ५. अन्वेषण। खोज। ६. मुरदे को जिलाने की क्रिया। पुनर्जीवन। संजीवन। ७. एक मिश्रित धातु। काँसा। कांस्य। ८. संधि। जोड़। ९. अच्छे स्वाद की चीज। १०: काँजी। ११. मैत्री। मेल। दोस्ती (को०)। १२. अवधान (को०)। १३. निदेशन (को०)। १५. सँभालना। सहारा देना (को०)। १६. अँचार आदि बनाना (को०)। १७. रक्तस्राव का अवरोध करनेवाली औषधियों के द्वारा चमड़े की सिकुड़न (को०)। १८. सौराष्ट्र या काठियावाड़ का एक नाम।

यौ०—संधानकर्ता=संधान करनेवाला। संधानताल=संगीत में एक ताल। संधानभांड=अचार आदि बनाने का पात्र। संधानभाव= दे० 'संधानताल'।

संधानना--क्रि० स० [सं० सन्धान+ना (प्रत्य०)] १. धनुष चढ़ाना। धनुष पर बाण चढ़ाकर लक्ष करना। निशाना लगाना। २. बाण छोड़ना। तीर चलाना। ३. किसी अस्त्र को प्रयोग करने के लिये ठीक करना।

संधाना—संज्ञा पुं० [सं० सन्धानिका] अचार। खटाई। उ०--पुनि संधाने आए बसाँधे। दूह दही के मुरंडा बाँधे।--जायसी ग्रं०, पृ० १२४।

संधानिका--संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धानिका] प्राचीन काल का एक प्रकार का आम का अचार।

संधानित--वि० [सं० सन्धानित] १. मिलाया हुआ। साथ साथ नत्थी किया हुआ। २. बाँधा हुआ। कसा हुआ। ३. जिसका संधान किया गया हो [को०]।

संधानिनी--संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धानिनी] गौओं के रहने का स्थान। गोशाला।

संधानी[1]--संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धानी] एक में मिलने या मिश्रित होने की क्रिया। मिलन। २. प्राप्ति। ३. बंधन। ४. अन्वेषण। तलाश। ५. पालन। ६. काँजी। ७. अचार। खटाई। ८. वह स्थान जहाँ ढलाई की जाती है। ९. वह स्थान जहाँ मदिरा बनाई जाती है। १०. दे० 'संधान'। ११. मदिरा बनाना। शराब चुआना (को०)।

संधानी[2]--वि० [सं० सन्धानिन्] १. निशाना लगाने में प्रवीण। २. मदिरा तैयार करनेवाला। ३. एक साथ मिलाने या मुक्त करनेवाला [को०]।

संधापगमन--संज्ञा पुं० [सं० सन्धापगमन] कामंदकीय नीति के अनुसार समीपवर्ती शत्रु से संधि कर दूसरे शत्रु पर चढ़ाई करना।

संधारण--संज्ञा पुं० [सं० सन्धारण] [स्त्री० संधारणा] [वि० संधारणीय] १. रोक रखना। धारण करना। २. बरदाश्त करना। सहन करना। ३. अस्वीकार करना (प्रार्थना आदि)। ४. अनुसरण करना। अनुवर्तन करना [को०]।

संधारणीय--वि० [सं० सन्धारणीय] धारण करने योग्य [को०]।

संधार्य--वि० [सं० सन्धार्य] १. धारण या वहन करने लायक। २. अस्वीकृति के योग्य। ३. (नौकर) रखने योग्य [को०]।

संधालिका--संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धालिका] एक प्रकार का भोजन [को०]।

संधि--संज्ञा [सं०] १. दो चीजों का एक में मिलना। मेल। संयोग। २. वह स्थान जहाँ दो चीजें एक में मिलती हों। मिलने की जगह। जोड़। ३. राजाओं या राज्यों आदि में होनेवाली वह प्रतिज्ञा जिसके अनुसार युद्ध बंद किया जाता है, मित्रता या व्यापार संबंध स्थापित किया जाता है, अथवा इसी प्रकार का और कोई काम होता है।

विशेष--पहले केवल दो योद्धा राज्यों में ही संधि हुआ करती थी; पर अब बिना युद्ध के ही मित्रता का बंधन दृढ़ करने, पारस्परिक व्यवसाय वाणिज्य में सहायता देने और सुगमता उत्पन्न करने अथवा किसी दूसरे राज्य में राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति अथवा रक्षा के लिये भी संधि हुआ करती है। आजकल साधारणतः राज प्रतिनिधि एक स्थान पर मिलकर संधि का मसौदा तैयार करते हैं; और तब वह मसौदा अपने अपने राज्य के प्रधान शासक अथवा राजा आदि के पास स्वीकृति के लिये भेजते हैं; और जब प्रधान शासक अथवा राजा उसपर स्वीकृति की छाप लगा देता है, तब वह संधि पूरी समझी जाती है और उसके अनुसार कार्य होता है। जिस पत्र पर संधि की शर्तें लिखी जाती हैं, उसे 'संधिपत्र' कहते हैं। मनु भगवान् ने संधि को राजा के छह् गुणों में से एक गुण बतलाया है, (शेष पाँच गुण ये हैं--विग्रह, यान, आसन, द्वैध और आश्रय)। हमारे यहाँ प्राचीन काल में किसी शत्रु राज्य पर आक्रमण करने के लिये भी दो राजा परस्पर मिलकर संधि किया करते थे। हितोपदेश में संधि सोलह प्रकार की कही गई है—कपाल, उपहार, संतान, संगत, उपन्यास, प्रतीकार, संयोग, पुरुषांतर, अदृष्टतर, आदिष्ट, आत्मादिष्ट, उपग्रह, परिक्रय, ततोच्छिन, परभूषण और स्कंधोपनेय। जब संधि करनेवालों में से कोई पक्ष उस संधि की शर्तों को तोड़ता या उनके विरुद्ध काम करता है, तो उसे संधि का भंग होना कहते हैं।

४. सुलह। मित्रता। मैत्री। ५. शरीर में कोई वह स्थान जहाँ दो या अधिक हड्डियाँ आपस में मिलती हों। जोड़। गाँठ। जैसे,--कुहनी, घुटना, पोर आदि।

विशेष--वैद्यक के अनुसार ये संधियाँ दो प्रकार की हैं। चेष्टावान् और निश्चल। सुश्रुत के अनुसार सारे शरीर में सब मिलाकर २१० संधियाँ हैं।

६. व्याकरण में वह विकार जो दो अक्षरों के पास पास आने के कारण उनके मेल से होता है।

विशेष—संधि हिंदी में नहीं होती, संस्कृत के जो सामासिक शब्द आते हैं, उन्हीं के निरूपण के लिये हिंदी में संधि की आवश्यकता होती है। संस्कृत में संधि तीन प्रकार की होती है—(१) स्वर संधि (जैसे,—राम + अवतार = रामावतार); (२) व्यंजन संधि (जैसे,—जगत् + नाथ = जगन्नाथ); और (३) विसर्ग संधि (जैसे,—निः + अंतर = निरंतर)।

७. नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होनेवाला संबंध। ये संधियाँ पाँच प्रकार की कही गई हैं—मुख संधि, प्रतिमुख संधि, गर्भ संधि, अवमर्श या विमर्श संधि और निर्वहण संधि। ८. चोरी आदि करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। ९. एक युग की समाप्ति और दूसरे युग के आरंभ के बीच का समय। युगसंधि। १०. किसी एक अवस्था के अंत और दूसरी अवस्था के आरंभ के बीच का समय। बयःसंधि। जैसे,—शैशव और बाल्य अवस्था की संधि। ११. स्त्री की जननेंद्रिय। भग। १२. संघट्टन। १३. दो चीजों के बीच की खाली जगह। अवकाश। १४. भेद। १५. साधन। १६ वस्त्र आदि की तह। पर्त (को०)। १७. उपयुक्त अवसर (को०)। १८. संकट का समय (को०)। १९. मद्य संधान। मद्य निष्कर्ष (को०)। २०. वह भूमि आदि जो मंदिर के लिये धर्मार्थ दी गई हो (को०)। २१. प्रबंध करना (को०)। २२. संध्या। गोधूली। साँझ (को०)। २३. दो स्तरों या पर्तों के बीच की विभाजन रेखा (को०)। २४. लंब और आधार का मिलन-स्थल। वह स्थान जहाँ लंब आधार से मिलता है (को०)। २५. दो त्रिभुजों की उभयनिष्ठ भुजा (को०)।

संधिक—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार सन्निपात रोग का एक भेद।

विशेष—इस रोग में शरीर की संधियों में वायु के कारण अधिक पीड़ा होती है और कफ, संताप, शक्तिहीनता, निद्रानाश आदि उपद्रव होते हैं। इसका वेग एक सप्ताह तक रहता है।

संधिकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिकर्म] संधि करना। सुलह करना।

विशेष—संधि के मुख्य दो भेद हैं—चालसंधि और स्थावरसंधि। चालसंधि वह है जिसे दोनों पक्ष शपथ करके करते हैं; और स्थावर संधि वह है जो कुछ दे लेकर की जाती है। कौटिल्य में चालसंधि को बहुत ही स्थायी कहा है, क्योंकि शपथ खाकर की हुई संधि राजा लोग कभी नहीं तोड़ते थे। कामंदक ने १६ प्रकार की संधियाँ कही हैं।

संधिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिका] मद्य आदि चुवाना [को०]।

संधिकाल—संज्ञा पुं० [सं०] संधि का समय। दो के मिलने का क्षण। दो तिथियों, मुहूर्तों आदि के योग का काल। जैसे,—दिन और रात का संधिकाल।

संधिकाष्ठ—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिकाष्ठ] प्रासादशिखर के नीचे लगाई जानेवाली लकड़ी [को०]।

संधिकुशल—वि० [सं० सन्धिकुशल] जो संधि करने में प्रवीण हो।

संधिकुसुमा—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिकुसुमा] त्रिसंधि नामक फूलदार पौधा।

संधिग—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिग] एक प्रकार का ज्वर। विशेष दे० 'संधिक'।

संधिगुप्त—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिगुप्त] वह स्थान जहाँ शत्रु की आनेवाली सेना पर छापा मारने के लिये सैनिक लोग छिपकर बैठते हैं।

संधिगृह—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिगृह] मधुमक्खी का छत्ता [को०]।

संधिग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिग्रन्थि] शरीरावयवों के जोड़ पर की ग्रंथि या गाँठ [को०]।

संधिचोर, संधिचौर—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिचोर, सन्धिचौर] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। सेंधिया चोर।

संधिच्छेद—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिच्छेद] १. वह (पक्ष) जो संधि के नियमों का भंग करता हो। अहदनामे की शर्तें तोड़नेवाला। २. सेंध लगानेवाला (को०)।

संधिच्छेदक—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिच्छेदक] १. संधि तोड़नेवाला। २. संधिचोर। सेंधियाचोर।

संधिच्छेदन—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिच्छेदन] दे० 'संधिच्छेद [को०]।

संधिज[१]—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिज] १. (चुआकर तैयार किया हुआ) मद्य, आसव आदि। २. वह फोड़ा जो शरीर की किसी संधि या गाँठ पर हो।

संधिज[२]—वि० १ संधि द्वारा उत्पन्न। संधान द्वारा निर्मित (मद्य आदि)। २ ग्रंथि या गाँठ पर होनेवाला। जैसे,—संधिज व्रण। ३. व्याकरण में दो शब्दों की संधि से बना हुआ। जैसे,—संधिज शब्द [को०]।

संधिजीवक—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिजीवक] वह जो स्त्रियों को पुरुषों से मिलाकर जीविका चलता हो। कुटना। टाल।

संधित[१]—वि० [सं० सन्धित] १. जिसमें संधि हो। संधियुक्त। २. एक में मिलाया हुआ (को०)। ३. बद्ध। बँधा हुआ (को०)। ४. संधान किया हुआ। स्थिर किया हुआ। रखा हुआ। जैसे,—धनुष पर तीर (को०)। ५. अचार डाला हुआ (को०)। ६. जिसने संधि किया हो या जिससे संधि हुई हो (को०)।

संधित[२]—संज्ञा पुं० १. आसव। अर्क। २. अचार (को०)। ३. अलग हुए बालों को एक में बाँधना (को०)।

संधितस्कर—संज्ञा पुं० [सं० सन्धितस्कर] दे० 'संधिचोर' [को०]।

संधितटी—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धितटी] संधि का स्थान। दो वस्तुओं के मिलने का स्थान। उ०—सोभा सुमेरु की संधितटी किधौं मान मवास गढ़ास की घाटी।—घनानंद, पृ० ३३।

संधिदूषण—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिदूषण] संधि या शर्त तोड़ना [को०]।

संधिनाल—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिनाल] नख या खुर [को०]।

संधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिनी] १. गाभिन गौ। २. वह गौ जो गाभिन होने पर भी दूध दे। ३. वह गौ जो बिना बछड़े के दूध दे। ४. वह गौ जो बेसमय या दिन रात में एक समय दूध दे।

संधिपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिपूजा] शारदीय नवरात्र में अष्टमी और नवमी के संधिकाल में दुर्गा की अर्चना।

संधिप्रच्छादन—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिप्रच्छादन] संगीत में स्वर साधन की एक प्रणाली जो इस प्रकार होती है। आरोही—सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नि, ध नि सा। अवरोही—सा नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा।

संधिप्रबंधन—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिप्रबन्धन] दे० 'संधिबंधन'।

संधिबंध—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिबन्ध] १. भुइँ चंपा। २. स्नायु। नस (को०)। ३. दराज या संधि को जोड़नेवाली वस्तु। चूना या सीमेंट (को०)।

संधिबंधन—संज्ञा पुं० [सं० संधिबन्धन] शिरा। नाड़ी। नस।

संधिभंग—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिभङ्ग] १. वैद्यक के अनुसार हाथ या पैर आदि के किसी जोड़ का टूटना। २. संधि की शर्तों की अवहेलना करना (को०)।

संधिभग्न—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिभग्न] एक प्रकार का रोग जिसमें अंग की संधियों में अत्यंत पीड़ा होती है।

संधिमुक्त—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिमुक्त] दे० 'संधिभंग'।

संधिमुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिमुक्ति] जोड़ खुल जाना (को०)।

संधिमोक्ष—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिमोक्ष] पुरानी संधि तोड़ना। संधिभंग। विशेष दे० 'समाधि मोक्ष'।

संधिरंध्रका—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिरन्ध्रका] सुरंग। सेंध।

संधिराग—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिराग] १. सिंदूर। सेंदुर। २. साँझ या सबेरे की लाली (को०)।

संधिला—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिला] १. सुरंग। सेंध। दरार। २. गर्त। गड्ढा। ३. नदी। ४. मदिरा। शराब। ५. एकसाथ अनेक वाद्यों के बजने से उठनेवाली जोर की आवाज (को०)।

संधिविग्रह—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविग्रह] राजशासन की परराष्ट्र संबंधी दो नीतियाँ शांति और युद्ध। मैत्री और लड़ाई या शत्रुता।

संधिविग्रहक—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविग्रहक] दे० 'संधिविग्रहिक'।

संधिविग्रहाधिकार—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविग्रहधिकार] विदेश विभाग या परराष्ट्र संबंधी मंत्रालय (को०)।

संधिविग्रहिक—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविग्रहिक] परराष्ट्रों के साथ युद्ध या संधि का निर्णय करनेवाला मंत्री या अधिकारी।

संधिविग्रही—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविग्रहिन्] दे० 'संधिविग्रहिक'।

संधिविचक्षण—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविचक्षण] वह व्यक्ति जो संधि करने में चतुर हो (को०)।

संधिविच्छेद—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविच्छेद] १. समझौता तोड़ना या टूटना। २. व्याकरण में संधिगत शब्दों को अलग अलग करना (को०)।

संधिविद्—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविद्] संधि की वार्ता करनेवाला (को०)।

संधिविद्ध—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविद्ध] एक प्रकार का रोग जिसमें हाथ पैर के जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है।

संधिविपर्यय—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिविपर्यय] मैत्री और शत्रुता। शांति और युद्ध (को०)।

संधिवेला—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धिवेला] १. संध्या का समय। सायंकाल। शाम। २. कोई भी संधिकाल। वह काल जिसमें दो कालविभागों का मेल हो (को०)।

संधिशूल—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिशूल] एक रोग। दे० 'आमवात' (को०)।

संधिसंभव—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिसम्भव] संयुक्त स्वर या संधि से बना वर्ण। जैसे, आ = अ + अ; ए = अ + ई; क्ष = क् + ष्; ज्ञ = ज् + ञ आदि।

संधिसितासित—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिसितासित] आँखों का एक प्रकार का रोग।

संधिस्थल—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिस्थल] १. वह स्थल जहाँ राष्ट्रों में संधि हो। २. किन्हीं दो के मिलने का स्थान। ३. सेंध लगाने का स्थान।

संधिहारक—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिहारक] वह चोर जो सेंध लगाकर चोरी करता हो। सेंधिया चोर।

संधी—संज्ञा पुं० [सं० सन्धिन्] संधि का काम देखनेवाला मंत्री। सुलह समझौता करनेवाला मंत्री। परराष्ट्र मंत्री (को०)।

संधुक्षण[1]—संज्ञा पुं० [सं० सन्धुक्षण] [वि० संधुक्षित] १. जलाना। प्रदीप्त करना। २. उकसाना। उत्तेजित करना (को०)।

संधुक्षण[2]—वि० उद्दीपक। उत्तेजक (को०)।

संधुक्षित—वि० [सं० सन्धुक्षित] प्रज्वलित या उद्दीप्त किया हुआ (को०)।

संधेय—वि० [सं० सन्धेय] १. जो संधि करने के योग्य हो। जिसके साथ संधि की जा सके। २. जिसे शांत किया जा सके। शांत करने या मनाने योग्य (को०)। ३. लक्ष्य साधने के योग्य (को०)। ४. जो पुनः जोड़ा या मिलाया जा सके। फिर से मिलने, जुड़ने या एक होने योग्य (को०)।

संध्यंग—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्यङ्ग] नाटक में मुखादि संधियों के अंग, उपांग (को०)।

संध्य—वि० [सं० सन्ध्य] १. संधि संबंधी। संधि का। २. संधि पर आद्धृत (को०)। ३. जिसकी संधि होनेवाली हो (को०)। ४. विचारयुक्त। सोचता हुआ (को०)।

संध्यर्क्ष—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्यर्क्ष] वह नक्षत्र जिसमें दो राशियाँ हों। दो राशियों के बीच का नक्षत्र। जैसे,—कृतिका नक्षत्र, जिसके पहले पाद में मेष राशि और तीनों पादों में वृष राशि है।

संध्यांश, संध्यांशक—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्यांश, सन्ध्यांशक] युगांत काल। दो युगों का संधिकाल। वह काल जिसमें एक युग की समाप्ति और दूसरे का आरंभ हो (को०)।

संध्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्या] १. दिन और रात दोनों के मिलने का समय। संधिकाल।

विशेष—दिन और रात के मिलने के दो समय हैं—प्रातःकाल और सायंकाल। शास्त्रों में कहा है कि रात का अंतिम एक

दंड और दिन का पहला एक दंड ये दोनों मिलाकर प्रातः संध्याकाल होते हैं; और दिन का अंतिम एक दंड और रात का पहला एक दंड ये दोनों मिलकर सायं संध्याकाल होते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ लोग ठीक दोपहर के समय एक और संध्या मानते हैं, जिसे मध्याह्न संध्या कहते हैं।

२. दिन का अंतिम भाग। सूर्यास्त के लगभग का समय। शाम। सायंकाल। ३. आर्यों की एक विशिष्ट उपासना।

विशेष—यह उपासना प्रतिदिन प्रातःकाल, मध्याह्न और संध्या के समय होती है। इसमें स्नान और आचमन करके कुछ विशिष्ट मंत्रों का पाठ, अंगन्यास, और गायत्री का जप किया जाता है। द्विजातियों के लिये यह उपासना अवश्य कर्तव्य कही गई है।

४. दूसरे युग की संधि का समय। दो युगों के मिलने का समय। युगसंधि। ५. एक प्राचीन नदी का नाम। ६. सीमा। हृद। ७. संधान। ८. एक प्रकार का फूल। ६. प्रतिज्ञा। वादा (को०)। १०. चिंतन। मनन (को०)। ११. योग। मेल (को०)। १२. ब्रह्मा की पत्नी (को०)। १३. दिन का कोई भी प्रभाग, जैसे पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न (को०)। १४. काल या सूर्य की स्त्री (को०)।

यौ०—संध्याकार्य, संध्यावंदन = दे० 'संध्योपासन'। संध्याकाल = (१) गोधूलि। झुटपुटा। (२) शाम। सायंकाल। संध्याकालिक = शाम से संबंधित। संध्यापयोद = सायंकालीन वर्षा के बादल। शाम की बदली। संध्यापुष्पी। संध्याबल। संध्याबलि संध्यामंगल = साँझ के धार्मिक कृत्य।

संध्याचल—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्याचल] अस्ताचल [को०]।

संध्यानाटी—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्यानाटिन्] शिव। महादेव।

संध्यापुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्यापुष्पी] १. जातीफल। जायफल। २. एक प्रकार की जूही या चमेली [को०]।

संध्याबधू—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्याबधू] रात्रि। रात। निशि।

संध्याबल—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्याबल] निशाचर। राक्षस। निश्चर।

संध्याबलि—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्याबलि] १. शिव के मंदिर में बनी हुई नंदी की प्रतिमा। २. सायंकालीन बलिप्रदान आदि पूजा [को०]।

संध्याराग—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्यामकल्याण नाम का एक राग जिसका वर्ण संगीत शास्त्र के अनुसार काला माना गया है। २. सिंदूर। सेंदुर।

संध्याराम—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्याराम] ब्रह्मा।

संध्यासन—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्यासन] कामंदक नीति के अनुसार आपस में लड़कर शत्रुओं का कमजोर होकर बैठ जाना।

संध्योपासन—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्योपासन] सुबह, शाम और मध्याह्न के समय की जानेवाली उपासना। विशेष दे० 'संध्या'—३।

संध्वान—वि० [सं० सन्ध्वान] सन् सन् की आवाज या ध्वनि उत्पन्न करनेवाला [को०]।

संनिक्षेप्ता—संज्ञा पुं० [सं० सम् + निक्षेप्तृ] कौटिल्य के अनुसार श्रेणी या संघ के धन को रखनेवाला। खजानची।

संन्यसन—संज्ञा पुं० [सं० सन्न्यसन] दे० 'संन्यसन'।

संन्यस्त—वि० [सं० सन्न्यस्त] दे० 'संन्यस्त'।

संन्यास—संज्ञा पुं० [सं० सन्न्यास] १. भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम। वानप्रस्थ आश्रम के पश्चात् का आश्रम।

विशेष—प्राचीन भारतीय आर्यों ने जीवन के चार विभाग किए थे, जो आश्रम कहलाते हैं। (दे० 'आश्रम') इनमें से अंतिम आश्रम संन्यास कहलाता है। पचीस वर्ष तक वानप्रस्थ आश्रम में रहने के उपरांत ७५वें वर्ष के अंत में इस आश्रम में प्रवेश करने का विधान है। इस आश्रम में काम्य और नित्य आदि सब कर्म किए तो जाते हैं, पर बिलकुल निष्काम भाव से किए जाते हैं; किसी प्रकार के फल की आशा रखकर नहीं किए जाते। विशेष दे० 'संन्यासी'।

२. भावप्रकाश के अनुसार मूर्च्छा रोग का एक भेद।

विशेष—यह बहुत ही भयानक कहा गया है। यह रोग प्रायः निर्बल मनुष्यों को हुआ करता है और इसमें रोगी के मर जाने की भी आशंका रहती है। साधारण मूर्छा से इसमें यह अंतर है कि मूर्च्छा में तो रोगी थोड़ी देर में आप से आप होश में आ जाता है, पर इसमें बिना औषध और चिकित्सा के होश नहीं होता।

३. जटामासी। (अन्य अर्थों के लिये दे० 'सन्यास' शब्द)।

संन्यासी—संज्ञा पुं० [सं० सन्न्यासिन्] वह जो संन्यास आश्रम में हो। संन्यास आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करनेवाला।

विशेष—संन्यासिबों के लिये शास्त्रों में अनेक प्रकार के विधान हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं—संन्यासी को सब प्रकार की तृष्णाओं का परित्याग करके घर बार छोड़कर जंगल में रहना चाहिए; सदा एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करना चाहिए; कहीं एक जगह जमकर न रहना चाहिए; गैरिक कौपीन पहनना चाहिए; दंड और कमंडलु अपने पास रखना चाहिए; सिर मुड़ाए रहना चाहिए; शिखा और सूत्र का परित्याग कर देना चाहिए; भिक्षा के द्वारा जीवन निर्वाह करना चाहिए; एकांत स्थान में निवास करना चाहिए; सब पदार्थों और सब कार्यों में समदर्शी होना चाहिए; और सदुपदेश आदि के द्वारा लोगों का कल्याण करना चाहिए। आजकल संन्यासियों के गिरि, पुरी, भारती आदि अनेक भेद पाए जाते हैं। एक प्रकार के कौल या वाममार्गी संन्यासी भी होते हैं जो मद्य मांस आदि का भी सेवन करते हैं। इनके अतिरिक्त नागे, दंगली, अघोरी, आकाशमुखी, मौनी आदि भी संन्यासियों के ही अंतर्गत माने जाते हैं।

२. वह जो छोड़ देता है या जमा करता है (को०)। ३. वह जो पृथक् या अलग कर देता है (को०)। ४. भोजन का त्याग करनेवाला। त्यक्ताहार व्यक्ति (को०)।

संप—संज्ञा पुं० [सं० सम्प] छोड़ना। त्यागना। अलग करना (को०)।

संपक्व—वि० [सं० सम्पक्व] १. अच्छी तरह पकाया हुआ। २. पका हुआ (फल)। ३. बूढ़ा। मरने के करीब पहुँचा हुआ (को०)।

संपत्—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पत्] दे० 'संपद्'।

संपति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पत्ति] दे० 'संपत्ति'। उ०—(क) संपति सब रघुपति कै आही।—मानस, २।१८६। (ख) जगत विदित बूँदी नगर सुख संपति को धाम।—मतिराम (शब्द०)। (ग) तहाँ कियो भगवंत बिन संपति शोभा साज।—केशव (शब्द०)।

संपत्कुमार—संज्ञा पुं० [सं० सम्पत्कुमार] विष्णु का एक रूप।

संपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पत्ति] १. ऐश्वर्य। वैभव। २. धन। दौलत। जायदाद। मिलकियत। ३. सफलता। पूर्णता। सिद्धि। ४. प्राप्ति। लाभ। ५. अधिकता। बहुतायत। ६. सौभाग्य। अच्छे दिन (को०)। ७. एक जड़ी। वृद्धि (को०)।

संपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पत्नी] वह स्त्री जो अपने पति के साथ हो (को०)।

संपत्नीय—संज्ञा पुं० [सं० सम्पत्नीय] पितरों को जल देने का एक भेद।

संपत्प्रदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पत्प्रदा] १. सौभाग्य देनेवाली एक भैरवी का नाम। २. एक बौद्ध देवी (को०)।

संपद्—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पद्] १. सिद्धि। पूर्णता। २. ऐश्वर्य। वैभव। गौरव। ३. सौभाग्य। अच्छे दिन। भले दिन। सुख की स्थिति।

यौ०—संपद्वर। संपद्वसु। संपद् बिपद् = सुख दुःख।

४. प्राप्ति। लाभ। फायदा। ५. अधिकता। पूर्णता। बहुतायत। ६. मोतियों का हार। ७. वृद्धि नाम की ओषधि। ८. धन। दौलत। ९. कोश। खजाना (को०)। १०. सद्गुणों की वृद्धि (को०)। ११. सजावट। अलंकरण (को०)। १२. ठीक ढंग। सही ढग (को०)। १३. सौंदर्य। शोभा। कांति (को०)।

संपद[1]—वि० [सं० सम्पद] संपन्न। पूर्ण (को०)।

संपद[2]—संज्ञा पुं० पैरों को एक समान या एक साथ करके खड़ा होना।

संपदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पद्] धन दौलत। ऐश्वर्य। वैभव।

सपदी—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पदिन्] अशोक के एक पौत्र का नाम।

संपद्दूर—संज्ञा पुं० [सं० सम्पद्दूर] भूभृत्। राजा (को०)।

संपद्वसु—संज्ञा पुं० [सं० सम्पद्वसु] सूर्य की सात प्रमुख रश्मियों में से एक का नाम जिससे भौम ग्रह को ताप की प्राप्ति होती है (को०)।

संपन्न[1]—वि० [सं० सम्पन्न] १. पूरा किया हुआ। पूर्ण। सिद्ध। साधित। मुकम्मल। २. सहित। युक्त। भरा पूरा। उ०—ससिसंपन्न सोह महि कैसी।—तुलसी (शब्द०)। ३. जिसे कुछ कमी न हो। धन धान्य से पूर्ण। खुशहाल। ४. धनी। दौलतमंद। ५. ठीक। उचित। सही (को०)। ६. पूर्ण विकसित। परिपक्व (को०)। ७. प्राप्त। हासिल (को०)। ८. घटित। जो हुआ हो (को०)। ९. भाग्यशाली (को०)।

संपन्न[2]—संज्ञा पुं० १. सुस्वादु भोजन। व्यंजन। २. शिव (को०)। ३. धन दौलत (को०)।

संपन्नक—वि० [सं० सम्पन्नक] दे० 'संपन्न' (को०)।

संपन्नक्रम—संज्ञा पुं० [सं० सम्पन्नक्रम] एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)।

संपन्नक्षीरा—वि० [सं० सम्पन्नक्षीरा] अधिक दूध देनेवाली जो अधिक दूध देती हो। दुधारू (को०)।

संपन्नतम—वि० [सं० सम्पन्नतम] जो पूरी तौर से ठीक हो अथवा पूरा हो चुका हो (को०)।

संपन्नतर—वि० [सं० सम्पन्नतर] अत्यंत स्वादिष्ट (को०)।

संपन्नता—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पन्नता] भरा पूरा या संपन्न होने का भाव। युक्तता (को०)।

संपराय—संज्ञा पुं० [सं० सम्पराय] १. मृत्यु। मौत। २. अनादि काल से स्थिति। ३. युद्ध। लड़ाई। झगड़ा। ४. आपत्ति। दुर्दिन। ५. भविष्य।

संपरायक, संपरायिक—संज्ञा पुं० [सं० सम्परायक, सम्परायिक] युद्ध। संग्राम। लड़ाई (को०)।

संपरिग्रह—संज्ञा पुं० [सं० सम्परिग्रह] १. सौजन्यपूर्ण स्वीकार। दयालुता के साथ स्वीकार करना। २. धन दौलत। वैभव। संपत्ति (को०)।

संपरेत—वि० [सं० सम्परेत] १. जो मरनेवाला हो। आसन्न मृत्यु। २. मृत। मरा हुआ (को०)।

संपर्क—संज्ञा पुं० [सं० सम्पर्क] [वि० संपृक्त] १. मिश्रण। मिलावट। २. मेल। मिलाप। संयोग। ३. लगाव। संसर्ग। वास्ता। ४. स्पर्श। सटना। ५. योग। जोड़। (गणित)। ६. संभोग। मैथुन (को०)।

संपर्की—वि० [सं० सम्पर्किन्] संपर्क युक्त। संसर्ग विशिष्ट।

संपर्कीय—वि० [सं० सम्पर्कीय] संपर्क विशिष्ट। संपर्की (को०)।

संपवन—संज्ञा पुं० [सं० सम्पवन] शुद्ध करना। पवित्रीकरण (को०)।

संपा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पा] विद्युत्। बिजली। उ०—संपा घन बीच ऐसी चंपा बन बीच फूली, डारि सी कुँवरि कुभिलाति फूली डार गहें। भिखारी० ग्रं०, भा० १, पृ० १६८। २. साथ साथ पान करना या पीना (को०)।

संपा[2]—संज्ञा स्त्री० [देशी] कांची। मेखला। करधनी (को०)।

संपाक[1]—संज्ञा पुं० [सं० सम्पाक] १. अच्छी तरह पकना। परिपाक होना। २. आरग्वध वृक्ष। अमलतास। ३. वह जो ठीक ढंग से तर्क करे। ठीक तर्क करनेवाला।

संपाक[2]—वि० लंपट। २. धूर्त। ३. अल्प। कम। ४. तर्कक। तर्क में प्रवीण। तर्क करनेवाला (को०)।

संपाचन—संज्ञा पुं० [सं० सम्पाचन] १. अच्छी तरह पकाना। २. पकाकर मुलायम करना। ३. सुश्रुत के अनुसार सेंककर फोड़े आदि को मुलायम करना (को०)।

संपाट—संज्ञा पुं० [सं० सम्पाट] १. किसी त्रिभुज की बढ़ी हुई भुजा पर लंब का गिरना। २. तकला। तकुआ।

संपाठ—संज्ञा पुं० [सं० सम्पाठ] वह पाठ जो सिलसिलेवार हो [को०]।

संपाठ्य—वि० [सं० सम्पाठ्य] एक साथ पढ़ने योग्य। लगातार पढ़ने योग्य [को०]।

संपात—संज्ञा पुं० [सं० सम्पात] १. एक साथ गिरना या पड़ना। २. संसर्ग। मेल। मिलान। ३. संगम, समागम। ४. संगम स्थान। मिलने की जगह। ५. कुदान। उड़ान। टूट पड़ना। झपट। ७. युद्ध का एक भेद। ८. प्रवेश। पहुँच। पैठ। ९. घटित होना। होना। १०. द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई वस्तु। तलछट। ११. अवशिष्ट अंश। व्यवहार से बचा हुआ भाग। १२. अधःपतन। उतरना (को०)। १३. अस्त्रशस्त्रों का प्रहार होना। बाण आदि का चलना (को०)। १४. भेजना। प्रेषित करना। जैसे, दूतसंपात (को०)। १५. चलना। गमन। गतिशील होना (को०)। १६. हटाना। दूर करना (को०)। १७. गरुड़ के पुत्र का नाम (को०)।

यौ०—संपातपाटव = झपटने या कूदने में पटुता।

संपाति—संज्ञा पुं० [सं० सम्पाति] १. एक गीध जो गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था। २. माली नाम राक्षस का उसकी वसुदा नामक भार्या से उत्पन्न चार पुत्रों में से एक पुत्र, यह विभीषण का मंत्री था। ३ राम की सेना का एक बंदर।

संपातिक—संज्ञा पुं० [सं० सम्पातिक] दे० 'संपाति' [को०]।

संपाती¹—वि० [सं० सम्पातिन्] [वि० स्त्री० संपातिनी] १. एक साथ कूदने या झपटनेवाला। २. एक साथ उड़नेवाला (को०)। ३. उड़ने में स्पर्धा करनेवाला (को०)।

संपाती²—संज्ञा पुं० [सं० सम्पाति] १. जटायु का भाई। उ०—गिरि कंदरा सुनी संपाती।—मानस, ४।२७। २. दे० 'संपाति'।

संपाद—संज्ञा पुं० [सं० सम्पाद] १. समाप्ति। पूर्ति। निष्पन्नता। सिद्धि। २. प्राप्ति। अधिग्रहण [को०]।

संपादक—संज्ञा पुं० [सं० सम्पादक] १. संपन्न करनेवाला। कोई काम पूरा करनेवाला। काम का अंजाम देनेवाला। २. प्रस्तुत करनेवाला। तैयार करनेवाला। ३. प्रदान करनेवाला। लाभ करनेवाला। ४ किसी समाचारपत्र या पुस्तक को क्रम से लगाकर निकालनेवाला। एडिटर। ५. उत्पादक। उत्पन्न करने वाला (को०)।

संपादकत्व—संज्ञा पुं० [सं० सम्पादकत्व] संपादन करने का भाव या अवस्था।

संपादकीय¹—वि० [सं० सम्पादकीय] संपादक संबंधी। संपादक का।

संपादकीय²—संज्ञा पुं० वह लेख या टिप्पणी जो संपादक द्वारा लिखा गया हो। अग्रलेख। (अं० एडिटोरियल)।

संपादन—संज्ञा पुं० [सं० सम्पादन] [वि० संपादनीय, संपादी, संपाद्य] १. किसी काम को पूरा करना। अंजाम देना। २. प्रस्तुत करना। प्रदान करना। ३. ठीक करना। तैयार करना। ४. किसी पुस्तक या संवादपत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना। ५. उत्पन्न करना (को०)।

संपादना(पु)—क्रि० स० [सं० सम्पादन] संपादित करना। प्रस्तुत करना। संपादन करना।

संपादयिता—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सम्पादयितृ] [स्त्री० संपादयित्री] १. संपादन करनेवाला। २. पूरा करने या प्रस्तुत करनेवाला। ३. ठीक करनेवाला। ४. उत्पादन करनेवाला। उत्पन्न करनेवाला (को०)

संपादित—वि० [सं० सम्पादित] १. पूर्ण किया हुआ। अंजाम दिया हुआ। २. तैयार। प्रस्तुत। ३. क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ। (पत्र, पुस्तक आदि)।

संपादी—वि० [सं० सम्पादिन्] [वि० स्त्री० संपादिनी] १. संपादन करनेवाला। २. प्रस्तुत करनेवाला। ३. जो सपादन कर सकता हो। उपयुक्त (को०)।

संपिंडित—वि० [सं० सम्पिण्डित] १. एक साथ किया हुआ। ढेर लगाया हुआ। २. सिकुड़ा हुआ। संकुचित [को०]।

संपित—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बाँस जिसका टोकरा बनता है। यह खसिया की पहाड़ियों में होता है।

संपिधान—संज्ञा पुं० [सं० सम्पिधान] आच्छादन। ढकना। पिधान। ढक्कन [को०]।

संपिष्ट—वि० [सं० सम्पिष्ट] चूर किया हुआ। अच्छी तरह पीसा हुआ [को०]।

संपीड़—संज्ञा पुं० [सं० सम्पीड] १. पीड़ा देना। २. दलना, दबाना या निचोड़ना। ३. विक्षोभण। मथना। ४. भेजना। निर्दशन [को०]।

संपीड़न—संज्ञा पुं० [सं० सम्पीडन] १. खूब दबाना या निचोड़ना। खूब मलना। खूब पीड़ा देना। ३. अतिशय पीड़ा। दंड। ४. शब्दोच्चारण का एक दोष। ५. भेजना। प्रेषण (को०)। ६. क्षुब्ध करना (को०)।

संपीड़ा—संज्ञा पुं० [सं० सम्पीडा] अत्यधिक व्यथा या कष्ट [को०]।

संपीड़ित—वि० [सं० सम्पीडित] १ जो पकड़ लिया गया हो। ग्रस्त। २. दबाया हुआ। ३. निचोड़ा हुआ [को०]।

संपीति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पीति] मिलाकर पीना। साथ साथ पान करना [को०]।

संपुंज—संज्ञा पुं० [सं० सम्पुञ्ज] राशि। ढेर [को०]।

संपुट¹—संज्ञा पुं० [सं० सम्पुट] १. पात्र के आकार की वस्तु। कटोरे या दोने की तरह चीज जिसमें कुछ भरने के लिये खाली जगह हो। २. खप्पर। ठीकरा। कपाल। ३. दोना। ४. ढक्कनदार पिटारी या डिबिया। डिब्बा। मंजूषा। ५. अँजली। ६. फूल के दलों का ऐसा समूह जिसके बीच खाली जगह हो। कोश। ७. कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटा हुआ वह बरतन जिसके भीतर कोई रस या ओषधि फूँकते हैं। ८. कटसरैया का फूल। कुरबक। ९. हिसाब में बाकी या उधार। १०. एक तरह का रतिबंध (को०)। ११. गोलार्ध (को०)। १२. घुँघरू (को०)।

संपुट(पु)[२]—वि० ढका हुआ। मुँदा हुआ। बंद। आवृत। जैसे, संपुट पाठ।

संपुटक—संज्ञा पुं० [सं० सम्पुटक] १. गोल डब्बा या पिटारी। आवरण। आच्छादन। ढक्कन। ३. एक प्रकार का रतिबंध [को०]।

संपुटका, संपुटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पुटका, सम्पुटिका] १. मंजूषा। पिटारी। २. संग्रह। निधि। ३. एक प्रकार का कंबल। ऊर्णायु। ४. आच्छादन। ढक्कन [को०]।

संपुटी—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पुट] छोटी कटोरी या तश्तरी जिसमें पूजन के लिये घिसा हुआ चंदन, अक्षत आदि रखते हैं।

संपुटीकरण—संज्ञा पुं० [सं० सम्पुटीकरण] संपुट करना। आवृत करना। ढकना [को०]।

संपुष्ट—वि० [सं० सम्पुष्ट] १. पूर्णतः पुष्ट। भरा पूरा। २. पूरी तरह समर्थित।

संपुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पुष्टि] १. पूर्ण समृद्धता। २. संपुष्ट या समर्थन करना।

संपूजक—वि० [सं० सम्पूजक] संमान करनेवाला। आदर देनेवाला [को०]।

संपूजन[१]—वि० [सं० सम्पूजन] [वि० स्त्री० संपूजनी] श्लाघ्य। वंद्य। प्रशस्तियुक्त [को०]।

संपूजन[२]—संज्ञा पुं० १. समादृत करना। पूजित करना। प्रशंसन। वंदन। २. उपस्थित होना। संमुख होना।

संपूजनीय—वि० [सं० सम्पूजनीय] दे० 'संपूज्य'।

संपूजा—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पूजा] संमान। स्तुति। प्रशंसा। वंदना।

संपूजित—वि० [सं० सम्पूजित] जिसका भव्य रूप से आदर हुआ हो।

संपूज्य—वि० [सं० सम्पूज्य] पूजनीय। मान्य। आदरणीय [को०]।

संपूयन—संज्ञा पुं० [सं० सम्पूयन] पूर्णतः शुद्ध करना। पवित्र करना [को०]।

संपूरक—वि० [सं० सम्पूरक] पूरी तरह भरनेवाला। तृप्त या तुष्ट करनेवाला [को०]।

संपूरण[१]—संज्ञा पुं० [सं० सम्पूरण] पुष्टिकर भोजन से उदर पूरी तरह भरना [को०]।

संपूरण(पु)[२]—वि० [सं० संपूर्ण, सम्पूर्ण] दे० 'संपूर्ण'।

संपूरन(पु)[१]—वि० [सं० संपूर्ण, सम्पूर्ण] दे० 'संपूर्ण'।

संपूर्ण[१]—वि० [सं० सम्पूर्ण] १. खूब भरा हुआ। पूरी तौर से भरा हुआ। २. सब। बिलकुल। समस्त। पूरा। ३. समाप्त। खत्म। संपन्न। ४. पूर्ण रूप से युक्त। ५. अत्यधिक। अतिशय।

यौ०—संपूर्णकाम = (१) जिसकी सभी कामनाएँ पूर्ण हो चुकी हों। (२) आकांक्षाओं से युक्त। संपूर्णकालीन = जो उचित या पूरे समय पर हो। समय की पूर्णता या ठीक समय पर होनेवाला। पूरे समय का। संपूर्णपुच्छ = पूँछ फैलानेवाला—मयूर। मोर। संपूर्ण फलभाग् = पूर्ण फल प्राप्त करनेवाला। संपूर्णमूर्च्छा। संपूर्णलक्षण = संख्या या लक्षणों में पूर्ण। सपूर्णविद्य = जो विद्याओं से पूर्ण हो। प्राप्तविद्य। संपूर्णस्पृह् = जिसकी आकांक्षा पूरी हो गई हो।

संपूर्ण[२]—संज्ञा पुं० १. वह राग जिसमें सातो स्वर लगते हों। २. आकाश भूत।

संपूर्णतः—क्रि० वि० [सं० सम्पूर्णतस्] पूरी तरह से। पूर्ण रूप से।

संपूर्णतया—क्रि० वि० [सं० सम्पूर्णतया] पूरी तरह से। भली भाँति। अच्छी तरह।

संपूर्णतर—वि० [सं० सम्पूर्णतर] पूर्णतः भरा हुआ। भलीभाँति भरा हुआ। अधिक भरा हुआ।

संपूर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पूर्णता] १. संपूर्ण होने का भाव। पूरापन। २. समाप्ति।

संपूर्णत्व—संज्ञा पुं० [सं० सम्पूर्णत्व] दे० 'संपूर्णता' [को०]।

संपूर्णमूर्च्छा—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पूर्णमूर्च्छा] युद्ध करने की एक कला या रीति [को०]।

संपूर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पूर्णा] एकादशीविशेष।

संपूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्णतः भर जाना। पूर्ण हो जाना [को०]।

संपृक्त—वि० [सं० सम्पृक्त] १. संसर्ग में आया हुआ। छूआ हुआ। २. मिला हुआ। मिश्रित। ३. मेल में आया हुआ। ४. संयुक्त। संबद्ध [को०]। ५. पूर्ण। भरा हुआ (को०)। ६. खचित। जटित (को०)।

संपृष्ट—वि० [सं० सम्पृष्ट] जिससे पूछताछ की गई हो। जो पूछा गया हो [को०]।

संपेष—संज्ञा पुं० [सं० सम्पेष] दे० 'संपेषण'।

संपेषण—संज्ञा पुं० [सं० सम्पेषण] पीसना। पीसने की क्रिया। चूर्ण करना [को०]।

संपै(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पत्ति] वैभव। बढ़ती।

संपोषण—संज्ञा पुं० [सं० सम्पोषण] १. संवर्धन। पालन पोषण। २. समर्थन।

संपोषित—वि० [सं० सम्पोषित] १. संवर्धित। पालित पोषित। २. जिसकी पुष्टि की गई हो। समर्थित [को०]।

संपोष्य—वि० [सं० सम्पोष्य] १. संपोषण या पालन के योग्य। २. समर्थन करने योग्य [को०]।

संप्रकल्पित—वि० [सं० सम्प्रकल्पित] १. प्रतिष्ठित। व्यवस्थित। २. स्थापित। जिसकी प्रकल्पना की गई हो [को०]।

संप्रकाश—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रकाश] १. देदीप्यमान उदय। तेजयुक्त आविर्भाव। २. विशद या निर्मल रूपाकृति [को०]।

संप्रकाशक—वि० [सं० सम्प्रकाशक] व्यक्त करनेवाला। प्रकाशित करनेवाला [को०]।

संप्रकाशन—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रकाशन] व्यक्त या प्रकाशित करना। समक्ष करना। सामने लाना [को०]।

संप्रकाशित—वि० [सं० सम्प्रकाशित] अभिव्यक्त। प्रकाशित [को०]।

संप्रकाश्य—वि० [सं० सम्प्रकाश्य] जो संप्रकाशन के योग्य हो अथवा जिसका संप्रकाशन किया जाय [को०]।

संप्रकीर्ण—वि० [सं० सम्प्रकीर्ण] जो एक में मिला हो। मिश्रित [को०]।

संप्रकीर्तित—वि० [सं० सम्प्रकीर्तित] १. अभिहित। उक्त। कथित। २. वर्णित [को०]।

संप्रक्षाल—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रक्षाल] १. पूर्ण विधि से स्नान करनेवाला। २. एक प्रकार के यति या साधु। ३. प्रजापति के पैर धोए हुए जल से उत्पन्न एक ऋषि।

संप्रक्षालन—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रक्षालन] १. अच्छी तरह धोना। खूब धोना। २. पूर्ण स्नान। ३. जलप्रलय। जलप्लावन।

संप्रक्षालनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रक्षालनी] एक प्रकार की जीविका या वृत्ति। (बौद्ध)।

संप्रक्षुभित—वि० [सं० सम्प्रक्षुभित] जो विशेष रूप से उत्तेजित या क्षुब्ध हो [को०]।

यौ०—संप्रक्षुभितमानस = जिसका मन क्षुब्ध हो। व्याकुल।

संप्रगर्जित—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रगर्जित] जोरों की चिल्लाहट। जोर से चिल्लाने की आवाज [को०]।

संप्रचोदित—वि० [सं० सम्प्रचोदित] १. प्रेरित। उत्साहित। आगे किया हुआ। २. आकांक्षित। इच्छित। अभीष्ट [को०]।

संप्रजात—वि० [सं० सम्प्रजात] उत्पन्न। उद्भूत। आविर्भूत। प्रकट। जात [को०]।

संप्रजाता—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रजाता] वह (गाय) जिसने बछड़ा जनन किया हो [को०]।

संप्रज्ञात[1]—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रज्ञात] योग में समाधि के दो प्रधान भेदों में से एक। वह समाधि जिसमें आत्मा विषयों के बोध से सर्वथा निवृत्त न होने के कारण अपने स्वरूप के बोध तक न पहुँची हो।

विशेष—ध्यान या समाधि की पूर्व दशा में चार प्रकार की समापत्तियाँ कहीं गई हैं जिनमें शब्द, अर्थ, विषय आदि में से किसी न किसी का बोध अवश्य बना रहता है। इन चारों में से किसी समापत्ति के रहने से समाधि संप्रज्ञात कहलाती है। संप्रज्ञात समाधि या समापत्ति के चार भेद हैं—सवितर्क, निर्वितर्क, सविचार और निर्विचार।

संप्रज्ञात[2]—वि० अच्छी तरह विवेचित, ज्ञात या बोधयुक्त [को०]।

यौ०—संप्रज्ञात योगी = वह योगी जिसका विषयबोध बना हुआ हो। संप्रज्ञात समाधि = दे० 'संप्रज्ञात[1]'।

संप्रज्वलित—वि० [सं० सम्प्रज्वलित] १. जलता हुआ। जिसमें से खूब लौ निकल रही हो। २. द्योतित। प्रकाशित। दीप्त [को०]।

संप्रणर्दित—वि० [सं० सम्प्रणर्दित] चिल्लाया हुआ। शोर किया हुआ। नर्दित [को०]।

संप्रणाद—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रणाद] [वि० संप्रणादित] आवाज। शोर गुल [को०]।

संप्रणादित—वि० [सं० सम्प्रणादित] जो ध्वनित किया हुआ हो [को०]।

संप्रणीत—वि० [सं० सम्प्रणीत] १. एक साथ किया हुआ या उपस्थापित। २. विरचित। रचित। निबद्ध। जैसे, कविता, रचना आदि [को०]।

संप्रणेता—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रणेतृ] १. नायक (सेना आदि का)। २. विचारपति। शासक। ३. प्रणेता। विधान करनेवाला (दंड, सजा आदि का)। ४. वह जो धारण, पालन या भरण करता हो [को०]।

संप्रतर्दन—वि० [सं० सम्प्रतर्दन] चुभनेवाला। भेदन या विदारण करनेवाला।

संप्रतापन—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रतापन] १. प्रतप्त करना। तपाना। जलाना। २. कष्ट देना। पीडन। उत्पीड़न। ३. मनु द्वारा उक्त एक नरक का नाम [को०]।

संप्रति[1]—अव्य० [सं० सम्प्रति] १. इस समय। अभी। आजकल। २. मुकाबले में। ३. ठीक तौर से। ठीक ढंग से। ४. उपयुक्त समय पर। ठीक समय पर।

संप्रति[2]—संज्ञा पुं० १. पूर्व अवसर्पिणी के २४ वें अर्हत् का नाम। (जैन)। २. अशोक का पोता। कुनाल का एक पुत्र।

संप्रतिनंदित—वि० [सं० सम्प्रतिनन्दित] पूर्णतः सत्कृत [को०]।

संप्रतिपत्ति—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रतिपत्ति] १. पहुँच। गुजर। २. प्राप्ति। लाभ। ३. सम्यक् बोध। ठीक ठीक समझ में आना। ४. समझ। बुद्धि। ५. मतैक्य। एकमत होना। एक राय होना। ६. स्वीकृति। मंजूरी। ७. अभियुक्त का न्यायालय में सत्य बात स्वीकार करना। (स्मृति)। ८. संपादन। सिद्धि। कार्य की पूर्णता। ९. प्रत्युत्पन्नमतित्व (को०)। १०. सहयोग (को०)। ११. हमला। आक्रमण (को०)। १२. मौजूदगी। उपस्थिति (को०)।

संप्रतिपन्न—वि० [सं०] १. पहुँचा हुआ। गया हुआ। उपस्थित। २. स्वीकृत। मंजूर। ३. उपस्थित बुद्धि का। तेज समझनेवाला। ४. संपन्न। पूर्ण किया हुआ (को०)।

संप्रतिपादन—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रतिपादन] १. प्राप्त कराना। २. देना [को०]।

संप्रतिप्राण—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रतिप्राण] शरीरस्थ प्राणवायु [को०]।

संप्रतिभास—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रतिभास] वह उपलब्धि या अनुभव जो संमिलन की ओर अभिमुख करता हो [को०]।

संप्रतिमुक्त—वि० [सं० सम्प्रतिमुक्त] पूर्ण बद्ध। अच्छी तरह से कसा या बाँधा हुआ [को०]।

संप्रतिरोधक—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रतिरोधक] पूर्णतः अवरोध, रोक या बंधन। २. विघ्न। बाधा [को०]।

संप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रतिष्ठा] [वि० संप्रतिष्ठित] १. सुरक्षण। २. सातत्य। नैरंतर्य (शुरू होने या अंत का उलटा)। ३. उच्च पद या श्रेणी [को०]।

संप्रतिष्ठित—वि० [सं० सम्प्रतिष्ठित] १. दृढ़तापूर्वक स्थित। अच्छी तरह जमा हुआ। सुस्थिर। २. जो संप्रतिष्ठा से युक्त हो। ३. अस्तित्व युक्त। सत्तात्मक [को०]।

संप्रतीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रतीक्षा] अपेक्षा। आशा [को०]।

संप्रतीत—वि० [सं० सम्प्रतीत] १. प्रत्यावर्तित। वापस आया हुआ। २. पूरी तरह विश्वस्त। पूर्ण विश्वासवाला। ३. पूर्णतः विश्लेषित या निर्णीत। कृतनिश्चय। ४. पूर्ण ज्ञात। जिसे सब जानते हों। समान्य। ५. विनम्र। विनययुक्त [को०]।

संप्रतीति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रतीति] १. पूर्ण विश्वास या प्रतीति। पूर्ण निर्णय या ज्ञान। ३. ख्याति। प्रसिद्धि। ४. विनय [को०]।

संप्रत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रत्ति] पूर्ण रूप से दे देना। पूरी तरह दे देना [को०]।

यौ०—संप्रत्तिकर्म = पूर्णतः प्रदान करने की क्रिया।

संप्रत्यय—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रत्यय] १. स्वीकृति। मंजूरी। मानने की क्रिया या भाव। २. दृढ़ विश्वास। पूरा यकीन। ३. ठीक ठीक समझ। सम्यक् बोध। ४. भावना। विचार।

संप्रत्यागत—वि० [सं० सम्प्रत्यागत] वापस। लौटा हुआ [को०]।

संप्रथित—वि० [सं० सम्प्रथित] जो लोगों में पूर्णतः ज्ञात वा प्रसिद्ध हो [को०]।

संप्रद—वि० [सं० सम्प्रद] उदार। दानशील।

संप्रदत्त—वि० [सं० सम्प्रदत्त] १. हस्तांतरित किया हुआ। जिसे पूर्ण रूप से प्रदान कर किया गया हो। २. विवाह में दिया हुआ [को०]।

संप्रदा‡—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदाय] दे० 'संप्रदाय'।

संप्रदातन—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदातन] इक्कीस नरकों में से एक।

संप्रदाता—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदातृ] देने अथवा हस्तांतरित करनेवाला व्यक्ति [को०]।

संप्रदान—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदान] १. दान देने की क्रिया या भाव। २. दीक्षा। मंत्रोपदेश। शिष्य को मंत्र देना। ३. उपहार। भेंट। नजर। ४. विवाह में देना (को०)। ५. हस्तांतरित करना या पूरी तौर से दे देना (को०)। ६. वह जो दान को ग्रहण करे। आदाता (को०)। ७. व्याकरण में एक कारक जिसमें शब्द देना क्रिया का लक्ष्य होता है।

विशेष—हिंदी में इस कारक के चिह्न 'को' और 'के लिये' है। जैसे,—राम को दो। उसके लिये लाया।

संप्रदानीय—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदानीय] १. वह जो प्रदान करने के लिये हो। २. भेंट। उपहार। दान [को०]।

संप्रदाय—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदाय] [वि० साम्प्रदायिक] १. देनेवाला। दाता। २. गुरुपरंपरागत उपदेश। गुरुमंत्र। ३. कोई विशेषधर्म संबंधी मत। ४. किसी मत के अनुयायियों की मंडली। फिरका। ५. मार्ग। पथ। ६. परिपाटी। रीति। चाल। ७. भेंट। दान (को०)।

संप्रदायी—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदायिन्] [स्त्री० संप्रदायिनी] १. देनेवाला। २. करनेवाला। सिद्ध करनेवाला। ३. किसी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। मत का माननेवाला। मतावलंबी।

संप्रदिष्ट—वि० [सं० सम्प्रदिष्ट] १. पूर्णतः ज्ञात। जाना हुआ। २. पूर्ण रूप से निर्दिष्ट। प्रदर्शित [को०]।

संप्रधान—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रधान] विचार। निर्णय। निश्चय [को०]।

संप्रधारण—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रधारण] १. विचार विवेचना। २. किसी वस्तु के औचित्य अनौचित्य के विषय में निश्चय करना। निर्णय [को०]।

संप्रपद—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रपद] १. पादाग्र पर खड़ा होना। पादाग्र स्थिति। २. पर्यटन। भ्रमण [को०]।

संप्रपन्न—वि० [सं० सम्प्रपन्न] १. पहुँचा हुआ। २. पैठा हुआ। प्रविष्ट। ३. संयुक्त। युक्त [को०]।

संप्रभग्न—वि० [सं० सम्प्रभग्न] तितर बितर। बिखरा हुआ। जैसे, संप्रभग्न सेना [को०]।

संप्रभव—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रभव] उदय। प्रादुर्भाव [को०]।

संप्रभिन्न—वि० [सं० सम्प्रभिन्न] १ विदीर्ण। फटा हुआ। मदस्रावी (हाथी)। मतवाला [को०]।

संप्रमत्त—वि० [सं० सम्प्रमत्त] १ मदमत्त। मस्त (हाथी)। २. अत्यधिक लापरवाह [को०]।

संप्रमापण—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमापण] बध। हत्या [को०]।

संप्रमार्ग—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमार्ग] शुद्धि। शोधन। मार्जन [को०]।

संप्रमुखित—वि० [सं०] जो प्रमुख हो।

संप्रमुग्ध—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमुग्ध] अस्तव्यस्तता। विशृंखलता [को०]।

संप्रमोद—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमोद] हर्षातिरेक। अत्यंत आनंद।

संप्रमोह—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमोह] पूर्ण विमूढ़ता। विमुग्धता [को०]।

संप्रयाण—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमापण] गमन। प्रयाण [को०]।

संप्रमोष—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रमोष] हानि। नाश [को०]।

संप्रयुक्त—वि० [सं० सम्प्रयुक्त] १. जोड़ा हुआ। एक साथ किया हुआ। २. जोता हुआ। नधा हुआ। ३. संबद्ध। मिला हुआ। ४. भिड़ा हुआ। ५. व्यवहार में लाया हुआ। बर्ता हुआ। ६. मैथुनरत। संभोगलग्न (को०)। ७. प्रेरित। प्रोत्साहित (को०)। ८. युक्त। संलग्न (को०)। ९. अवलंबित। निर्भर (को०)। १०. संपर्कित। संपर्क में आगत (को०)।

संप्रयुक्तक—वि० [सं० सम्प्रयुक्तक] सहयोगी [को०]।

संप्रयुद्ध—वि० [सं० सम्प्रयुद्ध] युद्धरत। युद्धयमान [को०]।

संप्रयोग—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रयोग] १. जोड़ने की क्रिया या भाव। समागम। एक साथ करना। २. मेल। मिलाप। संयोग। ३. रति। रमण। ४. धनादि का विनियोग। ५. नक्षत्र में चंद्रमा का योग। ६. इंद्रजाल। ७. वशीकरण प्रभृति कार्य। ८. व्यवहार। प्रयोग (को०)। ९. सहयोग (को०)। १०. क्रमबद्ध विधान। क्रमिक व्यवस्था (को०)। ११. पारस्परिक सबंध (को०)।

संप्रयोगी¹—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रयोगिन्] [स्त्री० संप्रयोगिनी] १. कामुक। लंपट। २. इंद्रजालिक। इंद्रजाल दिखानेवाला। ३. जोड़ने-

वाला। सयोजक (को०)। ४. गुदाभंजन करानेवाला। चुल्ली। गांडू (को०)।

संप्रयोगी[२]--वि० १. आपस में जोड़नेवाला। २. अत्यधिक कामवासना-युक्त। कामुक। लंपट (को०)।

संप्रयोजन--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रयोजन] [वि० संप्रयोजनीय, संप्रयोज्य, संप्रयोजित, संप्रयुक्त, संप्रयोक्तव्य] अच्छी तरह जोड़ना या मिलाना।

संप्रयोजित--वि० [सं० सम्प्रयोजित] १. जोड़ा या मिलाया हुआ। २. प्रयुक्त या प्रयोग में आया हुआ। ३. जो प्रस्तुत किया गया हो। ४. उचित। उपयुक्त (को०)।

संप्रवदन--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रवदन] १. बातचीत। वार्तालाप। कथोपकथन (को०)।

संप्रवर्तक--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रवर्तक] [वि० संप्रवर्ती] १. चलानेवाला। आगे बढ़ानेवाला। २. जारी करनेवाला। चालू करनेवाला। ३. वह जो निर्माण करता हो। निर्माता (को०)।

संप्रवर्त्तन--[संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रवर्तन] [वि० संप्रवर्तिनी, संप्रवृत्त] १. चलाना। गति देना। २. घुमाना। ३. जारी करना। आरंभ करना।

संप्रवर्ती--वि० [सं० सम्प्रवर्ती] व्यवस्थित करनेवाला (को०)।

संप्रवाह--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रवाह] १. अटूट धारा। २. लगातार क्रम या सिलसिला (को०)।

संप्रवृत्त--वि० [सं० सम्प्रवृत्त] १. आगे गया हुआ। बढ़ा हुआ। अग्रसर। २. उपस्थित। मौजूद। प्रस्तुत। ३. जारी किया हुआ। आरंभ किया हुआ। ४. संलग्न। आसक्त (को०)। ५. बीता हुआ। व्यतीत। गत (को०)। ६. पार्श्वस्थित। समीपस्थित (को०)।

संप्रवृत्ति--संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रवृत्ति] १. आसक्ति। २. अनुकरण करने की इच्छा। ३. उपस्थिति। मौजूदगी। ४. संघटन। मेल।

संप्रविष्ट--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रवृष्ट] खूब पानी बरसना।

संप्रशांत--वि० [सं० सम्प्रशान्त] १. मरा हुआ। मृत। २. अलक्षित। लुप्त (को०)।

संप्रश्न--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रश्न] १. आश्रय। २. पूरी जाँच पड़ताल। ३. पूछताछ (को०)।

संप्रश्रय--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रश्रय] शिष्टता। विनम्रता (को०)।

संप्रश्रित--वि० [सं० सम्प्रश्रित] शिष्ट। नम्र। विनयी (को०)।

संप्रसक्ति--संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रसक्ति] दे० 'संप्रसाद'।

संप्रसाद--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रसाद] १. प्रसन्न करना। तुष्टीकरण। २. अनुग्रह। कृपा। ३. शांति। सौम्यता। ४. विश्वास। भरोसा। ५. आत्मा। ६. सुषुप्त अवस्था की पूर्ण शांति। निद्रा में मानसिक विश्रांति (को०)।

संप्रसादन--वि० [सं० सम्सप्रादन] प्रसन्न या शांत करनेवाला।

संप्रसाधन--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रसाधन] १. अंगराग, आभूषण आदि शृंगार का प्रसाधन। २. पूर्ण करना। पूरा करना (को०)।

संप्रसारण--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रसारण] १. फैलाना। विस्तार करना। २. संस्कृत व्याकरण में य्, व्, र्, ल् का इ, उ, ऋ और लृ में परिवर्तन।

संप्रसिद्ध--वि० [सं० सम्प्रसिद्ध] १. भली भाँति पकाया हुआ। २. अतीव ख्यात या प्रसिद्ध (को०)।

संप्रसिद्धि--संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रसिद्धि] १. सफलता। कृतकार्य होना। २. सौभाग्य (को०)।

संप्रस्थान--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रस्थान] कूच करना। आगे बढ़ना (को०)।

संप्रहर्षण[१]--वि० [सं० सम्प्रहर्षण] कामोत्तेजक (को०)।

संप्रहर्षण[२]--संज्ञा पुं० प्रोत्साहन। प्रेरणा। उत्तेजना (को०)।

संप्रहार--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रहार] १. परस्पर चोट करना। २. मुठभेड़। संग्राम। ३. गमन। गति (को०)।

संप्रहास--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रहास] हँसी उड़ाना। चिढ़ाना (को०)।

संप्रहित--वि० [सं० सम्प्रहित] फेंका हुआ। धकेला हुआ। २. भेजा हुआ (को०)

संप्राप्त--वि० [सं० सम्प्राप्त] १. पहुँचा हुआ। उपस्थित। २. पाया हुआ। ३. उत्पन्न (को०)। ४. प्रस्तुत (को०)। ५. घटित। जो हुआ हो।

यौ०--संप्राप्तयौवन = जवान। संप्राप्तविद्य = पंडित।

संप्राप्ति--संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्राप्ति] १. प्राप्ति। लाभ। २. पहुँचना। उपस्थिति। ३. घटित होना। होना। ४. रोग का सन्निकृष्ट कारण। यह पाँच प्रकार का होता है--(१) संख्या, (२) विकल्प, (३) प्राधान्य, (४) बल और (५) काल।

संप्रिय--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रिय] परितोष। तृप्ति (को०)।

संप्रीणन--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रीणन] परितुष्ट करना। प्रसन्न करना। प्रसादन (को०)।

संप्रीणित--वि० [सं० सम्प्रीणित] जो पूरी तरह संतुष्ट या प्रसन्न किया गया हो (को०)।

संप्रीत--वि० [सं० सम्प्रीत] संतुष्ट। प्रसन्न (को०)।

यौ०--संप्रीतमानस = जिसका मन संतुष्ट हो। प्रसन्नमन।

संप्रीति--संज्ञा [सं० सम्प्रीति] १. अनुराग। स्नेह। २. सद्भावना। मित्रतापूर्ण सद्भाव। ३. हर्ष। उल्लास आनंद। ४. पूर्णतः परितृप्ति (को०)।

संप्रीतिमत्--वि० [सं० सम्प्रीतिमत्] संतुष्ट। प्रसन्न। हर्षित।

संप्रेक्षक--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रेक्षक] दर्शक। देखनेवाला।

संप्रेक्षण--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रेक्षण] [वि० संप्रेक्षित, संप्रेक्ष्य] १. अच्छी तरह देखना। २. खूब देखभाल करना। जाँच करना। गवेषणा करना। निरीक्षण करना।

संप्रेष--संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रेष] दे० 'संप्रैष'।

संप्रेषण—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रेषण] [वि० संप्रेषित, संप्रेष्य] १. अच्छी तरह भेजना। प्रेषण करना। २. छुड़ाना। बरखास्त करना। काम से हटाना।

संप्रेषणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रेषणी] मृतक का एक कृत्य जो द्वादशाह को होता है।

संप्रेषित—वि० [सं० सम्प्रेषित] १. भेजा हुआ। जिसका प्रेषण किया गया हो। २. आहूत (को०)।

संप्रैष—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रैष] १. यज्ञादि में ऋत्विजों को लगाना। नियुक्ति। २. आमंत्रण। आह्वान। ३. प्रेषण। भेजना (को०)। ४. हटना (को०)।

संप्रोक्त—वि० [सं० सम्प्रोक्त] १. कथित। कहा हुआ। बताया हुआ। जिसे घोषित किया गया हो। २. जिसे पुकारा गया हो। संबोधित (को०)।

संप्रोक्षण—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रोक्षण] [वि० संप्रोक्षित, संप्रोक्ष्य] १. खूब पानी छिड़कना। अभिषेचन। सिंचन। २. खूब पानी छिड़क कर (मंदिर आदि) साफ करना। धोना।

संप्रोक्षणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्रोक्षणी] अभिषेचन या संप्रोक्षण के निमित्त उपकल्पित जल (को०)।

संप्लव—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्लव] [वि० संप्लुत] १. जल से तराबोर होना। जल की बाढ़। बहिया। २. भारी समूह। घनी राशि। ३. हलचल। शोरगुल। हल्ला। ४. जलप्लावन। जलप्रलय (को०)। ५. महोर्मि। कल्लोल। लहर (को०)। ६. अंत। समाप्ति (को०)। ७. वर्षा। वृष्टि (को०)। ८. व्यतिक्रम। क्रम से न होना (को०)। ९. उच्छेद। विध्वंस (को०)।

संप्लुत—वि० [सं० सम्प्लुत] जल में तराबोर। डूबा हुआ।

संप्लुति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्प्लुति] पीछे से हाथी पर कूदना (को०)।

संफल—संज्ञा पुं० [सं० सम्फल] १. वह जो फल या बीज से युक्त हो। २. दे० 'संफाल' (को०)।

संफाल—संज्ञा पुं० [सं० सम्फाल] मेष। भेड़।

संफुल्ल—वि० [सं० सम्फुल्ल] जो पूर्णतः विकसित हो। भली भाँति खिला हुआ (को०)।

संफेट—संज्ञा पुं० [सं० सम्फेट] १. क्रोध से परस्पर भिड़ना। भिड़ंत। लड़ाई। २. झगड़ा। कहासुनी। तकरार। ३. नाट्य में विमर्श संधि के तेरह भेदों में से एक का नाम। ४. नाट्य में आरभटी का एक भेद।

विशेष—नाट्यशास्त्र में विमर्श के तेरह भेदों में से एक संफेट भी है। रोष भरे भाषण को संफेट कहा गया है। जैसे,—राजसभा में शकुंतला और दुष्यंत की कहा सुनी, वेणी सहार में दुर्योधन और भीम की रोषपूर्ण कहासुनी जो धृतराष्ट्र की राजसभा में हुई थी। आरभटी के चार भेदों में से भी एक संफेट है जिसमें दो पात्र परस्पर भिड़ते और एक दूसरे को दबाने का प्रयत्न करते हैं। जैसे,—मालती माधव नाटक में माधव और अघोरघंट की मुठभेड़।

संबंध[१]—संज्ञा पुं० [सं० सबन्ध सम्बन्ध] १. एक साथ बँधना, जुड़ना या मिलना। २. लगाव। संपर्क। वास्ता।

विशेष—दर्शन में सबंध तीन प्रकार के कहे गए हैं—समवाय, संयोग और स्वरूप।

३. एक कुल में होने के कारण अथवा विवाह, दत्तक आदि संस्कारों के कारण परस्पर लगाव। नाता। रिश्ता। ४. गहरी मित्रता। बहुत मेलजोल। ५. संयोग। मेल। ६. विवाह। सगाई। ७. ग्रंथ। पोथी। ८. एक प्रकार की ईति या उपद्रव। ९. किसी सिद्धांत का हवाला। १०. व्याकरण में एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का संबंध या लगाव सूचित होता है। जैसे,—राम का घोड़ा।

विशेष—बहुत से वैयाकरण 'सबंध' को शुद्ध कारक नहीं मानते। हिंदी में सबंध के चिह्न 'का', 'की' 'के' हैं।

११. योग्यता। औचित्य (को०)। ११. समृद्धि। सफलता (को०)। १२. नातेदारी। रिश्तेदारी (को०)।

संबंध[२]—वि० १. समर्थ। योग्य। २. उचित। उपयुक्त। ठीक (को०)।

संबंधक[१]—संज्ञा पुं० [सं० सम्बन्धक] १. मेल जोल। लगाव। मैत्री। २. जन्म या विवाहजन्य संबंध। ३. मित्र। सखा। ४. वह जिससे रिश्ता या संबंध हो। संबंधी। ५. एक प्रकार की शांति-संधि। मैत्री संधि (को०)।

संबधक[२]—वि० १. संबद्ध। विषयक। २. उपयुक्त। योग्य। ठीक (को०)।

संबधयिता—वि० [सं० सम्बन्धयितृ] संबंध करने या जोड़नेवाला (को०)।

संबधवर्जित—संज्ञा पुं० [सं० सम्बन्धवर्जित] १. संसक्ति या अन्वय का अभाव। २. वह जो किसी से लगाव या संबंध न रखता हो। ३. एक प्रकार का रचनागत दोष (को०)।

संबंधातिशयोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्बन्धातिशयोक्ति] अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें असंबंध में संबंध दिखाया जाता है। विशेष—दे० 'अतिशयोक्ति'।

संबधिभिन्न—वि० [सं० सम्बन्धिभिन्न] संबंधियों में विभक्त। जो रिश्तों में बँटा हुआ हो (को०)।

संबधिशब्द—संज्ञा पुं० [सं० सम्बन्धिशब्द] वह शब्द जो दो व्यक्तियों या वस्तुओं में संबध का द्योतन करे। संबंध सूचित करनेवाला शब्द (को०)।

संबंधी[१]—वि० [सं० सम्बन्धिन्] [वि० स्त्री० संबंधिनी] १. संबंध रखनेवाला। लगाव रखनेवाला। २. विषयक। सिलसिले या प्रसंग का। ३. सद्गुण संपन्न (को०)। ४. जिसके साथ विवाहादि संबंध हो (को०)।

संबंधी[२]—संज्ञा पुं० १. रिश्तेदार। २. जिसके पुत्र या पुत्री से अपनी पुत्री या पुत्र का विवाह हुआ हो। समधी। ३. वह जिसका संबंध या लगाव हो (को०)।

संबंधु—संज्ञा पुं० [सं० सम्बन्धु] १. आत्मीय। भाई बिरादर। २. नातेदार। रिश्तेदार।

संब—संज्ञा पुं० [सं० सम्ब] १. खेत की दुहरी जुताई। दे० 'शंब'। २. जल। पानी (को०)।

संबत्—संज्ञा पुं० [सं० सम्वत्] दे० 'संवत्'।

संबतⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सम्वत्] दे० 'संवत्'। उ०—संबत सोरह सै एकतीसा। करौं कथा हरिपद धरि सीसा।—मानस, १।३४।

संबद्ध—वि० [सं० सम्बद्ध] १. बँधा हुआ। जुड़ा हुआ। लगा हुआ। २. संबंधयुक्त। मिला हुआ। ३. बंद। ४. संयुक्त। सहित। ५. अनुरक्त (को०)। ६. विषयक (को०)।

संबद्धदर्प—वि० [सं० सम्बद्धदर्प] अभिमानी। घमंडी। दर्पयुक्त [को०]।

संबर—संज्ञा पुं० [सं० सम्बर] १. निग्रह। निरोध। प्रतिबंध। रोक। २. सेतु। बाँध। पुल (को०)। ३. दे० 'शंबर'।

यौ०—संबररिपु = मनसिज। कामदेव।

संबरण—संज्ञा पुं० [सं० संवरण] रोकना। दे० 'संवरण'।

संबल—संज्ञा पुं० [सं० सम्बल] १. शाल्मली। सेमल का वृक्ष। २. रास्ते का भोजन। सफर खर्च। ३. गेहूँ की फसल का एक रोग जो पूरब की हवा अधिक चलने से होता है। ४. सेतु। बाँध (को०)। ५. संखिया। आखु पाषाण। सोमलक्षार। शेष अर्थ के लिये दे० 'शंवर' और 'शंबल'।

संबादⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सम्वाद] दे० 'सँवाद'। उ०—सो संबाद उदार जेहि बिधि भा आगे कहब।—मानस, १।१२०।

संबाध[1]—संज्ञा पुं० [सं० सम्बाध] १. बाधा। अड़चन। कठिनता। २. भीड़। संघर्ष। ३. भग। योनि। ४. कष्ट। पीड़ा। दबाव। पीडन। ५. नरक का पथ। ६. डर। भय (को०)। ७. सँकरा रास्ता। तंग राह (को०)।

संबाध[2]—वि० १. संकीर्ण। तंग। २. जनपूर्ण। भीड़ से भरा हुआ। ३. भरा। पूर्ण। संकुल।

संबाधक—संज्ञा पुं० [सं० सम्बाधक] १. दबानेवाला। सतानेवाला। २. बाधा पहुँचानेवाला। ३. भीड़ करनेवाला (को०)।

संबाधन—संज्ञा पुं० [सं० सम्बाधन] १. दबाव। रेलपेल। २. रोकना। बाधा देना। ३. अवरोध। रोक। फाटक। ४. योनि। भग। ५. शूलाग्र। ६. द्वारपाल।

संबाधना—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्बाधना] रगड़ने या घिसने की क्रिया। घर्षण [को०]।

संबी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बी] फली।

संबुक—संज्ञा पुं० [सं० शम्बुक, शम्बूक] १. दे० 'शंबुक', 'शंबूक'। उ०—संबुक भेक सेवार समाना। इहाँ न विषय कथा रस नाना।—मानस, १।३८। २. दे० 'शंबूक'।

संबुद्ध[1]—वि० [सं० सम्बुद्ध] १. जाग्रत। ज्ञानप्राप्त। सचेत। २. ज्ञानी। ज्ञानवान्। ३. पूर्ण रूप से जाना हुआ। ज्ञात।

संबुद्ध[2]—संज्ञा पुं० १. बुद्ध। २. जिन।

संबुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्बुद्धि] १. पूर्ण ज्ञान। सम्यक् बोध। २. बुद्धिमानी। होशियारी। ३. दूर से पुकार। आह्वान। ४. पदवी। उपाधि (को०)। ५. (व्याकरण में) संबोधन कारक तथा उसकी विभक्ति का चिह्न (को०)। ६. पूर्ण चेतना (को०)।

संबुल—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुंबुल] १. एक सुगंधित बनौषधि। बालछड़। उ०—नकली नदियों के किनारों पर पत्थर के नकली टीले बने हुए थे, जिनपर छोटे छोटे पानी के हौज तथा चारो ओर संबुल के घने जंगल लगे हुए थे।—पीतल०, भा० २, पृ० ३७। २. गेहूँ अथवा जौ की बाल। ३. केश। अलक। जुल्फ।

संबुल खताई—संज्ञा पुं० [फ़ा०] तुर्किस्तान का एक पौधा जो औषध के काम में आता है और जिसकी पत्तियों की नसें मिठाई में पड़ती हैं।

संबेसर—संज्ञा पुं० [सं० सम् + हिं० बसेरा] निद्रा। नींद। (डिं०)।

संबोध—संज्ञा पुं० [सं० सम्बोध] १. सम्यक् ज्ञान। पूरा बोध। २. पूर्ण तत्वबोध। पूरी जानकारी। ३. धीरज। सांत्वना। ढारस। ४. समझाना। व्याख्यान करना। सूचित करना (को०)। ५. प्रेषण। क्षेपण (को०)। ६. हानि। विनाश (को०)।

संबोधन—संज्ञा पुं० [सं० सम्बोधन] [वि० संबोधित, संबोध्य] १. जगाना। नींद से उठाना। २. पुकारना। आह्वान करना। ३. व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या बुलाने के लिये प्रयोग सूचित होता है। जैसे,—हे राम! ४. जताना। ज्ञान कराना। विदित कराना। ५. नाटक में आकाशभाषित। ६. समझाना बुझाना। समाधान करना। ७. संबोधन में प्रयुक्त किया जानेवाला शब्द (को०)। ८. जानकारी करना। समझना (को०)।

संबोधनाⓟ—क्रि० स० [सं० सम्बोधन] समझाना। प्रबोध देना। सांत्वना देना। उ०—(क) बाजी सत दीने बगसि संबोधे सत भ्रात।—पृ० रा०, ५।३१। (ख) ज्यों ज्यों ऐसी बातन मँदोदरी संबोधै त्यों त्यों, देव दुःख पावे कहें कैसे समुझाइए। याकी बात माने सिय लैके जाइ मिले यह औरन बिसारि याकौ सौगुन बढ़ाइए।—हृदयराम (शब्द०)।

संबोधि—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्बोधि] (बौद्ध दर्शन में) पूर्ण ज्ञान [को०]।

संबोधित—वि० [सं० सम्बोधित] १. जिसे चेताया गया हो। बोध कराया हुआ। २. जिसका ध्यान आकृष्ट किया गया हो। आहूत। पुकारा हुआ [को०]।

संबोध्य—संज्ञा पुं० [सं० सम्बोध्य] १. वह जिसको संबोधन किया जाय। २. जिसे समझाया या जताया जाय।

संबोसा—संज्ञा पुं० [फ़ा० संबोसह् ?] एक पकवान जो सिंघाड़े के आकार का होता है। दे० 'समोसा'।

संबौधिया—संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

संबृंहण—संज्ञा पुं० [सं० सम्बृंहण] १. अच्छी प्रकार से पुष्ट या तेजस्-युक्त करना। २. वह जो पुष्टिकारक हो। शक्तिप्रद [को०]।

संभक्त—वि० [सं० सम्भक्त] १. विभक्त। जो बाँट दिया गया हो। २. शामिल होनेवाला। भाग लेनेवाला। ३. अंतःकरण से किसी का हो जानेवाला। भक्त। ४. उपभोग करनेवाला [को०]।

संभक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भक्ति] १. प्रदान करने का भाव। दे डालना। २. विभाग या हिस्सा लेना। ३. श्रद्धा या संमान करना। पूजा [को०]।

संभक्ष—संज्ञा पुं० [सं० सम्भक्ष] १. एक साथ भोजन करना। २. वह जो भक्षण करता हो। ३. भक्षण। भोजन। खाना [को०]।

संभग्न[1]--वि० [सं० सम्भग्न] १. बहुत टूटा हुआ। बिलकुल खंडित। २. हारा हुआ। ३. विफल।

संभग्न[2]--संज्ञा पुं० शिव का एक नाम।

संभर--संज्ञा पुं० [सं० सम्भर] १. भरण करनेवाला। पोषण करनेवाला। २. साँभर झील। ३. शाकंभरी प्रदेश।

संभरण--संज्ञा पुं० [सं० सम्भरण] [वि० संभरणीय, संभृत] १. पालन पोषण। २. एकत्र करना। संचय। जुटाना। ३. योजना। विधान। ४. तैयारी। सामान। ५. एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी में लगती थी।

संभरणी--संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भरणी] सोमरस रखने का एक यज्ञपात्र।

संभरना(पु)--क्रि० स० [सं० √सम्भालय् (=सुनना)] १. सँभारना। ग्रहण करना। श्रवण करना। उ०--संभरिय बत्त संभरि नरेस, आभासि भ्रित्त अप्पां असेस।--पृ० रा०, १।६१९। २. सँभालना।

संभरना(पु)--क्रि० अ० दे० 'सँभलना'।

संभरवै(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सम्भर+पति, प्रा० वइ] शाकंभरी प्रदेश का राजा, पृथ्वीराज।

संभरि, संभरी--संज्ञा पुं० [सं० सम्भर] १. शाकंभरी प्रदेश। २. पृथ्वीराज चौहान।

यौ०--संभरिधनी =पृथ्वीराज। उ०--चल्यो ब्याहि संभरिधनी।--पृ० रा०, १४।१२८। संभरिवै = दे० 'संभर वै'। संभरी राव =सोमेश्वर। उ०--संभरी राव संभारि छल।--पृ० रा०, १।६५६।

संभरेस(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सम्भर+ईश] पृथ्वीराज। संभर का राजा।

संभल--संज्ञा पुं० [सं० सम्भल] १. कन्यार्थी पुरुष। किसी लड़की से विवाह की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति। २. चेटक। दलाल। ३. एक स्थान जहाँ विष्णु का दसवाँ कल्कि अवतार होनेवाला है। इसे कुछ लोग मुरादाबाद जिले का 'संभल' नाम का कसबा बतलाते हैं।

संभली--संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भली] कुटनी। दूती। शंभली।

संभव--संज्ञा पुं० [सं० सम्भव] १. उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। जैसे,--कुमारसंभव। २. एक साथ होना। मेल। संयोग। समागम। ३. सहवास। प्रसंग। ४. अँटना। आ सकना। समाई। ५. हेतु। कारण। ६. होना। घटित होना। ७. हो सकने के योग्य होना। मुमकिन होना। जैसे,--उसका सुधरना संभव नहीं। ८. परिमाण का एक होना। एक ही बात होना। जैसे,--एक रुपया कहें या सोलह आने। (दर्शन)। ९. उपयुक्तता। समीचीनता। मुनासिबत। १०. वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हत् (जैन)। ११. एक लोक का नाम। (बौद्ध)। १२. नाश। ध्वंस। १३. युक्ति। उपाय। १४. उत्पादन। पालन पोषण (को०)। १५. जान पहचान। परिचय (को०)। १६. धन। दौलत। संपत्ति (को०)। १७. विद्या (को०)। १८. अस्तित्व। उपस्थिति (को०)।

संभवतः--अव्य० [सं० सम्भवतस्] हो सकता है। मुमकिन है। गालिबन्।

संभवन--संज्ञा पुं० [सं० सम्भवन] [वि० संभवनीय, संभव्य, संभूत] १. उत्पन्न होना। पैदा होना। २ हो सकना। मुमकिन होना। ३. धारण। पालन। पोषण। ४. होना। घटित होना।

संभवना(पु)[1]--क्रि० स० [सं० सम्भव+हिं० ना (प्रत्य०)] उत्पन्न करना। पैदा करना।

संभवना(पु)[2]--क्रि० अ० १. उत्पन्न होना। पैदा होना। २. संभव होना। हो सकना। उ०--धर्म स्थापन हेतु पुनि धारयो नर अवतार। ताको पुत्र कलत्र सों नहि संभवत पियार।--सूर (शब्द०)।

संभवनाथ--संज्ञा पुं० [सं० सम्भवनाथ] वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे तीर्थंकर (जैन)।

संभवनीय--वि० [सं० सम्भवनीय] जो हो सकता हो। मुमकिन।

संभविष्णु--संज्ञा पुं० [सं० सम्भविष्णु] उत्पादक। स्रष्टा। निर्माणकर्ता। निर्माता (को०)।

संभवी--वि० [सं० सम्भविन्] १. हो सकनेवाला। मुमकिन। २. होनेवाला। जैसे, स्वतःसंभवी।

संभव्य[1]--संज्ञा पुं० [सं० सम्भव्य] कपित्थ। कैथ।

संभव्य[2]--वि० जो हो सकता हो। संभवनीय। मुमकिन।

संभार--संज्ञा पुं० [सं० सम्भार] १. संचय। एकत्र करना। इकट्ठा करना। २. तैयारी। सामान। साज। सामग्री। रसद वगैरह। ३. धन। संपत्ति। वित्त। ४. पूर्णता। ५. समूह। दल। राशि। ढेर। ६. पालन। पोषण। ७. अधिकता। अतिशयता। प्राचुर्य (को०)।

संभारना(पु)--क्रि० स० [हिं० सँभालना] १. स्मरण करना। याद करना। उ०--संभारि श्रीरघुबीर धीर प्रचारि कपि रावन हन्यो।--मानस, ६।९४।२०। २. दे० 'सँभालना'।

संभाराधिप--संज्ञा पुं० [सं० सम्भाराधिप] शुक्रनीति के अनुसार राजकीय पदार्थों का अध्यक्ष। तोशाखाने का अफसर।

संभारी--वि० [सं० सम्भारिन्] [वि० स्त्री० संभारिणी] भरा हुआ। पूर्ण।

संभार्य--वि० [सं० सम्भार्य] १. आश्रय देने योग्य। सहारा देने योग्य। २. जिसे उपयोग करने लायक बनाया जा सके। ३. जिसके हिस्सों को बटोर कर एक साथ संघटित रखा जा सके (को०)।

संभावन--संज्ञा पुं० [सं० सम्भावन] [वि० संभावनीय, संभावित, संभावितव्य, संभाव्य] १. कल्पना। भावना। अनुमान। २. जुटाना एकत्र करना। योग करना। ३. उपस्थित करना। संपादन। ४. आदर। सम्मान। पूजा। ५. पूज्यबुद्धि। प्रतिष्ठा का भाव। ६. योग्यता। पात्रता। अधिकार। काबिलीयत। ७. ख्याति। प्रसिद्धि। नाम। ८. स्वीकरण। स्वीकार। ९. संदेह (को०)। १०. एक अलंकार। दे० 'संभावना'--७। ११. प्रेम। लगाव। संबंध (को०)। १२. दे० 'संभावना'।

संभावना—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भावना] १. कल्पना । भावना । अनुमान । फर्ज । २. पूजा । आदर । सत्कार । ३. किसी बात के हो सकने का भाव । हो सकना । मुमकिन होना । ४. योग्यता । पात्रता । काबिलीयत । ५. ख्याति । प्रसिद्धि । नामवरी । ६. प्रतिष्ठा । मान । इज्जत । ७. एक अलंकार जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी बात का होना निर्भर कहा जाता है । उ०—(क) एहि बिधि उपजै लच्छि जब होइ सोय समतूल । (ख) सहस जीभ जौ होय, तौ बरनै जस आप को । ८. संदेह (को०) । ९. प्रेम (को०) । १०. प्राप्ति । उपलब्धि (को०) ।

संभावनीय—वि० [सं० सम्भावनीय] १. जो हो सकता हो । मुमकिन । २. कल्पना के योग्य । ध्यान में आने लायक । ३. भाग लेने लायक । जिसमें भाग लिया जा सके । ४. आदर के योग्य । सत्कार के योग्य ।

संभावयितव्य—वि० [सं० सम्भावयितव्य] दे० 'संभावितव्य' ।

संभावित[१]—वि० [सं० सम्भावित] १. कल्पित । विचारा हुआ । मन में माना हुआ । २. जुटाया हुआ । उपस्थित किया हुआ । ३. पूजित । आदृत । ४. विख्यात । प्रसिद्ध । ५. योग्य । उपयुक्त । काबिल । ६. संभव । मुमकिन । ७. उत्पादित । गृहीत । प्राप्त (को०) । ८. तुष्ट (को०) । ९. जिसका आदर होनेवाला हो । १०. अपेक्षित । आकांक्षित । समर्थित ।

संभावित[२]—संज्ञा पुं० अनुमान । ऊहा । कल्पना [को०] ।

संभावितव्य—वि० [सं० सम्भावितव्य] १. कल्पना या अनुमान के योग्य । २. सत्कार के योग्य । ३. जिसका सत्कार होनेवाला हो । ४. संभव । मुमकिन ।

संभाव्य[१]—वि० [सं० सम्भाव्य] १. जो हो सकता हो । मुमकिन । २. प्रशंसनीय । श्लाघ्य । ३. पूजा या सत्कार के योग्य; अथवा जिसका सत्कार होनेवाला हो । ४. कल्पना या अनुमान के योग्य । ध्यान में आने लायक ।

संभाव्य[२]—संज्ञा पुं० १. मनु के एक पुत्र का नाम । २. उपयुक्तता । काबिलियत । योग्यता । पात्रता [को०] ।

संभाष—संज्ञा पुं० [सं० सम्भाष] १. कथन । संभाषण । बातचीत । २. वादा । करार । ३. नमस्कार । प्रणाम (को०) । ४. पहरादेनेवाले आपसी पहचान के लिये जिस गुप्त शब्द का संकेत रूप में व्यवहार करते हैं वह शब्द (को०) । ५. काम संबंध । अवैधानिक मैथुन संबंध (को०) ।

संभाषण—संज्ञा पुं० [सं० सम्भाषण] [वि० संभाषणीय, संभाषित, संभाष्य] १. कथोपकथन । बातचीत । २. संभोग । मैथुन (को०) । ३. पहरुओं का संकेत शब्द (को०) । ४. करार । वादा (को०) । ५. अभिवादन (को०) ।

संभाषणीय—वि० [सं० सम्भाषणीय] जो बातचीत करने योग्य हो । जिससे भाषण करना उचित हो ।

संभाषा—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भाषा] दे० 'संभाष', 'संभाषण' [को०] ।

संभाषित[१]—वि० [सं० सम्भाषित] १. अच्छी तरह कहा हुआ । २. जिससे बातचीत हुई हो ।

संभाषित[२]—संज्ञा पुं० बातचीत । वार्तालाप [को०] ।

संभाषी—वि० [सं० सम्भाषिन्] [वि० स्त्री० संभाषिणी] कहनेवाला । बोलनेवाला । बातचीत करनेवाला ।

संभाष्य—वि० [सं० सम्भाष्य] भाषण करने योग्य । जिससे बातचीत करना उचित हो ।

संभिन्न[१]—वि० [सं० सम्भिन्न] १. भली भाँति अलग । २. पूर्ण भग्न । बिलकुल टूटा हुआ । ३. संक्षोभित । चालित । ४. गठा हुआ । ठोस । ५. प्रस्फुटित । खिला हुआ । ६. संपर्क में आया हुआ (को०) । ७. युक्त । मिला हुआ (को०) । ८. अविश्वस्त । अविश्वास्य (को०) । ९. संकुचित । सिकुड़ा या सिकोड़ा हुआ (को०) । १०. छोड़ा हुआ । त्यक्त । परित्यक्त (को०) ।

यौ०—संभिन्न प्रलाप । संभिन्नप्रलापिक = व्यर्थ प्रलाप करनेवाला । संभिन्नबुद्धि = जिसकी बुद्धि नष्ट हो गई हो । संभिन्नमर्याद = जिसने मर्यादा का उल्लंघन किया हो । सभिन्नवृत्त = सदाचाररहित । दुराचारी । संभिन्नसर्वांग = जिसने अपने सभी अंगों को संकुचित किया हो या कस लिया हो ।

संभिन्न[२]—संज्ञा पुं० शिव [को०] ।

संभिन्नप्रलाप—संज्ञा पुं० [सं० सम्भिन्न प्रलाप] व्यर्थ की बातचीत जो बौद्धशास्त्रों में एक पाप कहा गया है ।

संभीत—वि० [सं० सम्भीत] बेहद डरा हुआ । अत्यधिक भयभीत [को०] ।

संभु[१]—संज्ञा पुं० [सं० शम्भु, प्रा० संभु] शिव । महादेव । दे० 'शंभु' । उ०—जनम कोटि लगि रगरि हमारी । बरौं संभु नतु रहौं कुआरी ।—मानस, १।८१ ।

यौ०—संभुगन(पु) = शिव के गण । उ०—सिवहिं संभुगन करहिं सिंगारा ।—मानस, १।९२ । संभुसुक्रसंभूत सुत = शिव के औरस पुत्र, स्कंद ।

संभु[२]—वि० [सं० सम्भु] उत्पन्न । निर्मित । जात [को०] ।

संभु[३]—संज्ञा पुं० १. जनयिता । जनक । पिता । २. एक छंद [को०] ।

संभुक्त—वि० [सं० सम्भुक्त] १. भोगा हुआ । भुक्त । २. खाया हुआ । ३. प्रयोग में लाया हुआ । प्रयुक्त । व्यवहृत । ४. पार किया हुआ । जिसका अतिक्रम किया गया हो । अतिक्रांत [को०] ।

संभुग्न—वि० [सं० सम्भुग्न] पूर्णतः झुका हुआ । बल खाया हुआ [को०] ।

संभूत—वि० [सं० सम्भूत] १. एक साथ उत्पन्न या आगत । किसी के साथ जात, रचित या निर्मित । २. उत्पन्न । उद्भूत । जात । पैदा । ३. युक्त । सहित । ४. कुछ से कुछ हो गया हुआ । ५. उपयुक्त । योग्य । ६. तुल्य । बराबर । सदृश । समान (को०) ।

संभूति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भूति] १. उत्पत्ति । उद्भव । २. बढ़ती । विभूति । बरकत । ३. योग की विभूति । करामात । ४. क्षमता । शक्ति । ५. उपयुक्तता । योग्यता । ६. दक्ष प्रजापति

की एक कन्या जो मरीचि की पत्नी थी। ७. ज्ञान। विद्या (को०)। ८. संयोग। योग (को०)।

संभूय—अव्य० [सं० सम्भूय] एक में। एक साथ। साथ में। मिलकर। साझे में।

संभूयकारी—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूयकारिन्] स्मृति के अनुसार संघ में मिलकर व्यापार करनेवाला व्यक्ति। वह जो किसी कंपनी का हिस्सेदार हो।

विशेष—बृहस्पति (स्मृति) के अनुसार यदि संघ को दैवी कारण से या राजा के कारण हानि पहुँचे तो उसके भागी सब हिस्सेदार हैं; पर यदि किसी हिस्सेदार की भूल या गलती से हानि पहुँचे तो उसका जिम्मेदार अकेला वही है।

संभूयक्रय—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूयक्रय] कौटिल्य के अनुसार थोक माल बेचना या खरीदना।

संभूयगमन—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूयगमन] १. कामंदक नीति के अनुसार पूरी चढ़ाई जिसमें सामंत और मौल (तअल्लुकेदार) सब अपने दलबल के साथ हों। २. एक साथ जाना। समूह या दल के साथ जाना।

संभूययान—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूययान] दे० 'संभूयगमन [को०]।

संभूयसमुत्थान—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूयसमुत्थान] १. मिलकर किया हुआ व्यापार। साझे का कारबार। २. वह विवाद या मुकदमा जो साझेदारों में हो।

संभूयसमुत्थापन—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूयसमुत्थापन] कंपनी खोलना। साझे का कारबार करना। सहकारी समिति द्वारा व्यापार करना।

संभूयासन—संज्ञा पुं० [सं० सम्भूयासन] कामंदक नीति के अनुसार शत्रु से मेल करके और उसे उदासीन समझकर चुपचाप बैठ जाना।

संभृत[१]—वि० [सं० सम्भृत] १. एकत्र। इकट्ठा। जमा किया हुआ। बटोरा हुआ। २. पूर्ण। भरा हुआ। लदा हुआ। ३. युक्त। सहित। ४. पाला पोसा हुआ। ५. समादृत। संमानित। जिसकी इज्जत की गई हो। ६. प्रस्तुत। तैयार। ७. निर्मित। बना हुआ। ८. प्राप्त। लब्ध। अवाप्त (को०)। ९. ले जाया गया हुआ। वहन किया हुआ (को०)। १०. उत्पादित। पैदा किया हुआ (को०)। ११. शोभा से भरा हुआ। १२. उच्च। जैसे, स्वर (को०)।

यौ०—संभृतबल = जिसने सेना इकट्ठी कर ली हो। सेना इकट्ठा करनेवाला। संभृतश्री = अत्यंत सुंदर। संभृतश्रुत = विद्वान्। कृतविद्य। विज्ञ। संभृतसभार = कार्य के लिये प्रस्तुत। तैयार। संभृतस्नेह = प्रेमयुक्त। प्रेमपूर्ण।

संभृत[२]—संज्ञा पुं० उच्च स्वर। चीख।

संभृतांग—वि० [सं० सम्भृताङ्ग] १. पोषित शरीरवाला। पुष्ट अंगोंवाला। २. जिसका शरीर आवृत या ढका हो [को०]।

संभृतार्थ—वि० [सं० सम्भृतार्थ] अधिक धनं एकत्रित कर लेनेवाला।

संभृताश्व—वि० [सं० सम्भृताश्व] जिसके पास पुष्ट और दमदार अश्व हों [को०]।

संभृतौषध—वि० [सं० सम्भृतौषध] जिसके पास अनेक औषधियों का संचय हो [को०]।

संभृति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भृति] १. एकत्र करने की क्रिया या भाव। २. सामान। सामग्री। ३. समूह। भीड़। जमावड़ा। ४. राशि। ढेर। ५. अधिकता। बहुतायत। ६. सम्यक् भरण पोषण। खूब पालना पोसना।

संभृष्ट—वि० [सं० सम्भृष्ट] १. खूब भुना या तला हुआ। २. कुरकुरा। करारा। ३. सुखाया हुआ (को०)। ४. क्षीण। दुर्बल। दुबला पतला (को०)।

संभेद—संज्ञा पुं० [सं० सम्भेद]। १. खूब छिदना या भिदना। २. शिथिल होना। ढीला होकर खिसकना। ३. वियोग। जुदाई। अलग होना। ४. मिले हुए शत्रुओं में परस्पर विरोध उत्पन्न करना। भेदनीति। ५. किस्म। प्रकार। ६. भिड़ना। जुटना। मिलना। ७. नदियों का संगम या नदी समुद्र का संगम। ८. तोड़ना। टुकड़े टुकड़े करना (को०)। ९. एकीभवन। मिलाप। मिश्रण (को०)। १०. विकसित होना। खिलना (को०)। ११. सारूप्य। साम्य। एकरूपता (को०)। १२. मुष्टिबंध। मुट्ठी बाँधना (को०)।

संभेदन—संज्ञा पुं० [सं० सम्भेदन] [वि० संभेदनीय, संभेद्य, संभिन्न] १. खूब छेदना या आर पार घुसना। धँसना। विदीर्णन। २. जुटाना। मिलाना। भिड़ाना। ३. तोड़ना। टुकड़े टुकड़े करना (को०)।

संभेद्य—वि० [सं० सम्भेद्य] १. भेदने या छेदने योग्य। ३. जो संपर्क में लाने योग्य हो। मिलाने योग्य [को०]।

संभोक्ता—संज्ञा पुं० [सं० सम्भोक्तृ] १. खानेवाला। भक्षक। २. उपभोग करने या भोगनेवाला [को०]।

संभोग—संज्ञा पुं० [सं० सम्भोग] १. किसी वस्तु का भली भाँति उपयोग। सुखपूर्वक व्यवहार। २. सुरत। रति क्रीड़ा। मैथुन। ३. शृंगार रस के तीन भेदों में से एक। संयोग शृंगार। मिलाप की दशा। ४. हाथी के कुंभ या मस्तक का एक भाग। ५. स्थायित्व। सातत्य (को०)। ६. आनंद। विनोद (को०)। ७. अधिकृति। प्रयोग। व्यवहार (को०)।

यौ०—संभोगकाय = बुद्ध के तीन शरीर में से एक। भोग शरीर। संभोगक्षम = उपभोग लायक। संभोगयक्षिणी = एक योगिनी जिसे वीणा भी कहते हैं। संभोगवत् (वान्) = आनंदयुक्त। हर्षयुक्त। मौजमस्ती की जिंदगी बितानेवाला। संभोगवेश्म = रखेल का घर।

संभोगी[१]—वि० [सं० सम्भोगिन्] [वि० स्त्री० संभोगिनी] १. संभोग करनेवाला। २. व्यवहार का आनंद लेनेवाला। ३. कामुक (को०)।

संभोगी[२]—संज्ञा पुं० लंपट पुरुष। कामी व्यक्ति [को०]।

संभोग्य—वि० [सं० सम्भोग्य] १. जिसका व्यवहार होनेवाला हो। जो काम में लाया जानेवाला हो। २. उपभोग करने योग्य। व्यवहार योग्य। बर्तने लायक।

संभोज—संज्ञा पुं० [सं० सम्भोज] भोजन। खाना।

संभोजक—संज्ञा पुं० [सं० सम्भोजक] १. भोजन करनेवाला। भक्षक।

खानेवाला। स्वाद लेनेवाला। २. भोजन परसनेवाला। रसोइया।

संभोजन—संज्ञा पुं० [सं० सम्भोजन] [वि० संभोजनीय, संभोज्य, संभुक्त] १. सामूहिक भोज। दावत। २. खाने की वस्तु। खाना।

संभोजनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भोजनी] १. एक साथ मिलकर या सामूहिक रूप से भोजन करना। २. भोज के अंत में दी जानेवाली दक्षिणा [को०]।

संभोजनीय—वि० [सं० सम्भोजनीय] १. जो खाया जानेवाला हो। जिसे खिलाया जाय। २. खाने योग्य। भक्षणीय।

संभोज्य—वि० [सं० सम्भोज्य] १. जो खाया जानेवाला हो। खिलाने योग्य। २. खाने योग्य। भक्षणीय।

संभ्रम[१]—संज्ञा पुं० [सं० सम्भ्रम] १. घूमना। चक्कर। फेरा। २. उतावली। हड़बड़ी। आतुरता। ३. घबराहट। व्याकुलता। चकपकाहट। ४. हलचल। धूम। ५ सहम। सिटपिटाना। ६. उत्कंठा। गहरी चाह। शौक। हौसला। उत्साह। उमंग। ७. पूज्य भाव। आदर। मान। गौरव। ८. भूल। चूक। गलती। ९. श्री। शोभा। छवि। सौंदर्य। १०. शिव के एक प्रकार के गण। ११. मोह। भ्रम। भ्रांति (को०)। १२. अबोधता। नादानी। गँवारपन (को०)।

संभ्रम[२]—वि० १. क्षुब्ध। २. इधर उधर घूमता हुआ। जैसे नेत्र [को०]।

यौ०—संभ्रमज्वलित = उतावली के कारण क्षुब्ध। संभ्रमभृत् = व्याकुल उद्विग्न। घबराया हुआ।

संभ्रम[३]—क्रि० वि० आतुरता के साथ। उतावली में। उ०—(क) सुनि सिसुरुदन परम प्रिय बानी। संभ्रम चलि आईं सब रानी।—मानस, १।१९३। (ख) सहित सभा संभ्रम उठेउ रबिकुल कमल दिनेसु।—मानस, २।२७३।

संभ्रांत—वि० [सं० सम्भ्रान्त] १. घुमाया हुआ। चक्कर दिया हुआ। २. घबराया हुआ। उद्विग्न। चकपकाया हुआ। स्फूर्तियुक्त। तेजस्वी। ४. संमानित। प्रतिष्ठित। ५. उत्तेजित (को०)।

यौ०—संभ्रांतजन = (१) वह जिसके साथी उद्विग्न हों। (२) आदरणीय व्यक्ति। संभ्रांतमना = व्याकुल। उद्विग्नहृदय।

संभ्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भ्रान्ति] १. घबराहट। उद्वेग। आतुरता। हड़बड़ी। ३. चकपकाहट।

संभ्राजना(पु)—क्रि० अ० [सं० सम्भ्राज्] पूर्णतः सुशोभित होना। उ०—राम संभ्राज सेषा सहित सर्वदा, तुलसि मानस रामपुर बिहारी।—तुलसी (शब्द०)।

संमत—वि० [सं० सम्मत] दे० 'सम्मत'।

संमान—संज्ञा पुं० [सं० सम्मान] दे० 'सम्मान'।

संमित[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्मित] दे० 'सम्मित'।

संमित[२]—वि० दे० 'सम्मित'।

संमेलन—संज्ञा पुं० [सं० सम्मेलन] दे० 'सम्मेलन'।

संयंता—संज्ञा पुं० [सं० संयन्तृ] १. संयम करनेवाला। रोकनेवाला। निग्रही। २. शासक। अधिकारी। नेता।

संयंत्रित—वि० [सं० सन्यन्त्रित] १. बँधा हुआ। जकड़ा हुआ। बद्ध। २. बंद। ३. रोका हुआ। दबाया हुआ।

संय—संज्ञा पुं० [सं०] कंकाल। पंजर।

संयत्[१]—वि० [सं०] १. संबद्ध। लगा हुआ। २. अखंडित। लगातार।

संयत्[२]—संज्ञा पुं० १. नियत स्थान। बदी हुई जगह जहाँ मिला जाय। २. वादा। करार। ३. झगड़ा। लड़ाई। संघर्ष। ४. एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम आती थी।

संयत[१]—वि० [सं०] १. बद्ध। बँधा हुआ। जकड़ा हुआ। २. पकड़ में रखा हुआ। दबाव में रखा हुआ। ३. रोका हुआ। दमन किया हुआ। काबू में लाया हुआ। वशीभूत। ४. बंद किया हुआ। कैद। ५. क्रमबद्ध। व्यवस्थित। नियमबद्ध। कायदे का पाबंद। ६. उद्यत। तैयार। सन्नद्ध। ७. जिसने इंद्रियों और मन को वश में किया हो। चित्तवृत्ति का निरोध करनेवाला। निग्रही। ८. हद के भीतर रखा हुआ। उचित सीमा के भीतर रोका हुआ। जैसे,—संयत आहार।

यौ०—संयतचेता = संयत चित्तवाला। संयत प्राण। संयतमना = संयत चित्तवाला। संयतमुख = दे० 'संयतवाक्'। संयतमैथुन = जो मैथुन का त्याग कर चुका हो। संयतवस्त्र = चुस्त कपड़े पहिननेवाला। संयतवाक् = कम बोलनेवाला।

संयत[२]—संज्ञा पुं० १. शिव का एक नाम। २. योगी।

संयतप्राण—वि० [सं०] जिसने प्राणवायु या श्वास को वश में किया हो। प्राणायाम करनेवाला।

संयतांजलि—वि० [सं० संयताञ्जलि] बद्धांजलि।

संयताक्ष—वि० [सं०] जिसकी आँखें खुली न हों। बंद या मुँदी आँखवाला [को०]।

संयतात्मा—वि० [सं० संयतात्मन्] जिसने मन को वश में किया हो। चित्तवृत्ति का निरोध करनेवाला।

संयताहार—वि० [सं०] भोजन में संयम रखनेवाला। अल्पाहारी [को०]।

संयति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वश में रखना। निरोध। रोक।

संयतेंद्रिय—वि० [सं० संयतेन्द्रिय] जिसने इंद्रियों को वश में कर रखा हो [को०]।

संयतोपस्कर—वि० [सं०] व्यवस्थित घरवाला। जिसके घर की साजसज्जा व्यवस्थित हो [को०]।

संयत्त—वि० [सं०] १. तत्पर। तैयार। उद्यत। २. अवहित। सावधान। सतर्क [को०]।

संयत्ता—वि० [सं० संयत्तृ] संयमन करनेवाला। नियंता [को०]।

संयत्वर—वि० [सं०] १. मौन। चुप। २. पशुसमूह [को०]।

संयद्वसु[१]—वि० [सं०] बहुत धनवाला। धनवान।

संयद्वसु[२]—संज्ञा पुं० सूर्य की सात किरणों में से एक।

संयद्वाम—वि० [सं०] १. अभिमत। सुखकर। २. प्रिय को एकत्र करने अथवा मिलानेवाला [को०]।

संयम—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संयमी, संयमित, संयत] १. रोक। दाब। वश में रखने की क्रिया या भाव। २. इंद्रियनिग्रह। मन और

इंद्रियों को वश में रखने की क्रिया। चित्तवृत्ति का निरोध। ३. हानिकारक या बुरी वस्तुओं से बचने की क्रिया। परहेज। जैसे,—संयम से रहो तो जल्दी अच्छे हो जाओगे। ४. बाँधना। बंधन। जैसे,—केश संयम। ५. बंद करना। मुँदना। ६. योग में ध्यान, धारणा और समाधि या उनका साधन। ७. प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। ८. धूम्राक्ष के एक पुत्र का नाम। ९. प्रलय। १०. धार्मिक व्रत, अनुष्ठान आदि (को०)। ११. तपश्चरण। तपस्या (को०)। १२. मनुष्यता। मानवता। आदमियत (को०)। १३. व्रत, अनुष्ठान आदि करने के पूर्व किया जानेवाला धार्मिक कृत्य (को०)। १३. विनाश (को०)।

संयमक—वि० [सं०] १. नियंता। नियंत्रण करनेवाला। २. संयम करनेवाला। वृत्तियों का निरोध करनेवाला। संयमी [को०]।

संयमन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोक। २. दमन। दबाव। निग्रह। ३. आत्मनिग्रह। मन को वश में रखना। ४. बंद रखना। कैद रखना। ५. बंधन में बाँधना। जकड़ना। कसना। ६. खींचना। तानना (लगाम आदि)। ७. यमपुर। ८. वह प्रांगण जो चारो ओर चार मकान होने से बन जाय (को०)। २. वह जो संयमन करता हो (को०)।

संयमन[2]—वि० नियंता। नियामक [को०]।

संयमनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमराज की नगरी। यमपुरी जो मेरु पर्वत पर मानी गई है। उ०—इतनी बात के सुनते ही अर्जुन धनुष बाण ले वहाँ से उठा और चला चला संयमनी पुरी में धर्मराज के पास गया।—लल्लू (शब्द०)।

संयमित[1]—वि० [सं०] १. रोक में रखा हुआ। काबू में लाया हुआ। २. दमन किया हुआ। ३. बँधा हुआ। कसा हुआ। ४. पकड़ में लाया हुआ। कसकर पकड़ा हुआ। ५. जो मन को रोके हो। इंद्रियनिग्रही। ६. बंदी। कैदी (को०)। ७. धार्मिक प्रवृत्तिवाला (को०)। ८. एकत्रित (को०)।

संयमित—संज्ञा पुं० स्वरों का नियंत्रण [को०]।

संयमिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'संयमनी' [को०]।

संयमी[1]—वि० [सं० संयमिन्] १. रोक या दबाव में रखनेवाला। काबू में रखनेवाला। २. मन और इंद्रियों को वश में रखनेवाला। आत्मनिग्रही। योगी। ३. जो बँधा हुआ या बंधन में हो। बद्ध (को०)। ४. बुरी या हानिकारक वस्तुओं से बचनेवाला। परहेजगार।

संयमी[2]—संज्ञा पुं० १. शासक। राजा। २. यति। ऋषि (को०)।

संयम्य—वि० [सं०] जो संयमन करने लायक हो। नियंत्रण या दमन करने के योग्य [को०]।

संयात—वि० [सं०] १. एक साथ गया हुआ। साथ साथ लगा हुआ। २. आगत। पहुँचा हुआ। प्राप्त। दाखिल।

संयाति—संज्ञा पुं० [सं०] १. नहुष के एक पुत्र का नाम। २. बहुगव या प्रचिन्वान् के पुत्र का नाम।

संयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साथ साथ जाना। सहयात्रा। २. समुद्री यात्रा [को०]।

संयान—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संयात, संयायी] १. सहगमन। साथ जाना। २. यात्रा। सफर।

यौ०—उत्तम संयान = मुरदे को ले चलना।

३. प्रस्थान। रवानगी। ४. गाड़ी। शकट। ५. घोड़ों को नियंत्रण में रखना (को०)। ६. आकार। आकृति। साँचा (को०)।

संयाम—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'संयम' [को०]।

संयाव—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पकवान या मिठाई। पिराक। गोझिया।

संयुक्—वि० [सं० संयुज्] १. संबद्ध। जड़ा हुआ। २. गुणवान् [को०]।

संयुक्त—वि० [सं०] १. जुड़ा हुआ। लगा हुआ। २. मिला हुआ। जैसे,—संयुक्त अक्षर। ३. संबद्ध। लगाव रखता हुआ। ४. सहित। साथ। ५. पूर्ण। लिए हुए। समन्वित। ७. संबंधी (को०)। ८. विवाहित (को०)। ९. संमिलित रूप से करनेवाला। १०. जड़ा हुआ (को०)।

यौ०—संयुक्त कुटुंब, संयुक्त परिवार = वह कुटुंब जिसमें परिवार के सभी लोग साथ मिलकर रहते हैं।

संयुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भगवतवल्ली। आवर्तकी लता। २. एक छंद का नाम। ३. जयचंद की कन्या।

संयुग—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेल। मिलाप। संयोग। समागम। २. भिड़ना। भिड़ंत। ३. युद्ध। लड़ाई। उ०—रोप्यो रन रावन, बोलाए बीर बानइत जानत जे रीति सब संयुग समाज की। चली चतुरंग चमू, चपरि हने निसान, सेना सराहन जोग रातिचरराज की।—तुलसी (शब्द०)।

संयुगगोष्पद—संज्ञा पुं० [सं०] मामूली झगड़ा। सामान्य बात पर कलह [को०]।

संयुगमूर्द्धा—संज्ञा पुं० [सं० संयुगमूर्द्धन्] युद्ध का अग्रिम मोरचा [को०]।

संयुज्—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'संयुक्'।

संयुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मेल। मिलान। जोड़ [को०]।

संयुत[1]—वि० [सं०] १. जुड़ा हुआ। मिला हुआ। बँधा हुआ। २. संबद्ध। एक साथ लगा हुआ। ३. सहित। साथ। ४. समन्वित।

संयुत[2]—संज्ञा पुं० एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है।

संयुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. (गणित में) दो या दो से अधिक संख्याओं का योगफल। २. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दो नक्षत्रों का योग [को०]।

संयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. दो वस्तुओं का एक में या एक साथ होना। मेल। मिलान। मिलावट। मिश्रण। २. समागम। मिलाप।

विशेष—यह श्रृंगार रस के दो भेदों में से एक है। इसी को संभोग श्रृंगार भी कहते हैं।

३. लगाव। संबंध। ४. सहवास। स्त्री पुरुष का प्रसंग। ५. विवाह संबंध। ६. दो राजाओं की किसी बात के लिये संधि। ७. किसी विषय पर भिन्न व्यक्तियों का एकमत होना।

मतैक्य। 'भेद' का उलटा। ८. दो या अधिक व्यंजनों का मेल। ९. जोड़। योग। मीजान। १०. दो या कई बातों का इकट्ठा होना। इत्तफाक। जैसे—(क) जब जैसा संयोग होता है, तब वैसा होता है। (ख) यह तो एक संयोग को बात है। ११. न्याय के २४ गुणों में से एक (को०)। १२. संचय। समान या पूरक वस्तुओं का समुदाय (को०)। १३. शिव (को०)। १४. भौतिक संपर्क (को०)।

मुहा०—संयोग से = बिना पहले से निश्चित हुए। इत्तफाक से। दैववशात्। जैसे,—यदि संयोग से वे आ जाते, तो झगड़ा हो जाता।

संयोगपृथक्त्व—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय के अनुसार ऐसा पृथक्त्व या अलगाव जो नित्य न हो।

संयोगमंत्र संज्ञा पुं० [सं० संयोगमन्त्र] विवाह के समय पढ़ा जानेवाला वेदमंत्र।

संयोगविरुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] वे पदार्थ जो परस्पर मिलकर खाने योग्य नहीं रहते; और यदि खाए जायँ तो रोग उत्पन्न करते हैं। जैसे,—बराबर मात्रा में घी और मधु, मछली और दूध।

संयोग शृंगार—संज्ञा पुं० [सं० संयोग शृङ्गार] शृंगार रस का एक भेद जिसमें नायक नायिका के मिलन आदि का वर्णन होता है (को०)।

संयोग संधि—संज्ञा स्त्री० [सं० संयोगसन्धि] कामंदकीय नीति शास्त्र के अनुसार वह संधि जो किसी उद्देश्य से चढ़ाई करने के उपरांत उसके संबंध में कुछ तै हो जाने पर की जाय। (कामंदक)।

संयोगित—वि० [सं०] संयोगयुक्त। संयोजित (को०)।

संयोगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो अपने पति के साथ हो। वह स्त्री जो प्रिय से वियुक्ता न हो (को०)।

संयोगी—संज्ञा पुं० [सं० संयोगिन्] [स्त्री० संयोगिनी]। १. मेल का। मिला हुआ। २. संयोग करनेवाला। मिलनेवाला। ३. वह पुरुष जो अपनी प्रिया के साथ हो। ४. ब्याहा हुआ। विवाहित।

संयोजक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलानेवाला। २. व्याकरण में वह शब्द जो शब्दों या वाक्यों के बीच केवल जोड़ने के लिये आता है। ३. किसी सभा, समिति या किसी प्रकार के कार्य की योजना करनेवाला (को०)। ४. घटित या निर्मित करनेवाला (को०)।

संयोजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संयोगी, संयोजनीय, संयोज्य, संयोजित] १. जोड़ने या मिलाने की क्रिया। २. सहवास। स्त्री पुरुष का प्रसंग। ३. संसार के बंधन में रखनेवाला। भवबंधन का कारण (बौद्ध)। ४. आयोजन। व्यवस्था। प्रबंध। इंतजाम।

संयोजना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आयोजन। व्यवस्था। इंतजाम। तैयारी। २. मेल। मिलान। ३. सहवास। स्त्री पुरुष का प्रसंग। ४. भवबंधन का कारण। जन्म मरण के चक्र में बद्ध रखनेवाली बातें (बौद्ध)।

विशेष—कामराग, रूपराग, अरूपराग, परिघ, मानस, दृष्टि, शीलव्रतपरभार्ष, विचिकित्सा, औद्धत्य और अविद्या इन सबकी गणना संयोजना में होती है।

संयोजनीय—वि० [सं०] जिसका संयोजन किया जा सके। संयोजन करने के योग्य।

संयोजित—वि० [सं०] मिलाया हुआ। जोड़ा हुआ।

संयोज्य—वि० [सं०] १. संयोजन के योग्य। मिलाने योग्य। २. जो मिलाया या जोड़ा जानेवाला हो।

संयोध—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। संग्राम (को०)।

संयोधकंटक—संज्ञा पुं० [सं० संयोगकण्टक] १. युद्ध का काँटा। २. एक यक्ष का नाम।

संरजन[१]—वि० [सं० संरञ्जन] १. प्रसन्न करने या रंजन करनेवाला। आनंद देनेवाला (को०)।

संरंजन[२]—संज्ञा पुं० मन को प्रसन्न करना। रंजन करना (को०)।

संरभ—संज्ञा पुं० [सं० संरम्भ] १. ग्रहण करना। पकड़ना। २. आतुरता। आवेग। क्षोभ। उद्विग्नता। ३. खलबली। बेकली। ४. उत्कंठा। लालसा। शौक। उत्साह। ५. क्रोध। कोप। ६. शोक। ७. ऐंठ। ठसक। गर्व। ८. फोड़े या घाव का सूजना या लाल होना (सुश्रुत)। ९. घनत्व। अधिकता। अतिरेक। बहुतायत। १०. आरंभ। शुरू। ११. एक अस्त्र का नाम। १२. गर्हा। जुगुप्सा। घृणा (को०)। १३. आक्रमण की प्रचंडता (को०)।

यौ०—संरंभताम्र = जो क्रोध या क्षोभ से लाल हो। संरंभदृक् = क्रोध से जिसकी आँखें लाल हो गई हों। संरंभपरुष = जो क्रोध के कारण कठोर या परुष हो। संरंभरस = अत्यंत क्रुद्ध। क्रोधपूर्ण। संरंभरूक्ष = क्रोध के कारण अत्यंत कठोर। संरंभवेग = क्रोध का आवेश। क्रोधावेश।

संरंभी—वि० [सं० संरम्भिन्] १. क्रुद्ध। कोपाविष्ट। २. उत्तेजित। विक्षुब्ध। ३. घमंडी। अहंकारी। ४. उद्योगी। व्यवसायी (को०)।

संरक्त—वि० [सं०] १. अनुरक्त। आसक्त। प्रेममग्न। २. सुंदर। मनोहर। ३. कुपित। क्रोध से लाल। ४. रंगीन। लाल (को०)। ५. आवेश से भरा हुआ (को०)।

संरक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] देखभाल। रक्षण। (को०)।

संरक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संरक्षिका] १. रक्षा करनेवाला। रक्षक। २. देखरेख और पालन पोषण करनेवाला। ३. सहायक। ४. आश्रय देनेवाला।

संरक्षकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] संरक्षक होने का भाव। देखरेख करना (को०)।

संरक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संरक्षी, संरक्षित, संरक्ष्य, संरक्षणीय] १. हानि या नाश आदि से बचाने का काम। हिफाजत। २. देखरेख। निगरानी। जैसे,—बालक उनके संरक्षण में है। ३. अधिकार। कब्जा। ४. रोक। प्रतिबंध। ५. रख छोड़ना।

संरक्षणीय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० संरक्षणीया] १. रक्षा करने योग्य। हिफाजत के लायक। २. रख छोड़ने लायक।

संरक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'संरक्ष'।

संरक्षित—वि० [सं०] [वि० स्त्री० संरक्षिता]। १. भलीभाँति रक्षित। हिफाजत से रखा हुआ। २. अच्छी तरह बचाया हुआ।

संरक्षितव्य—वि० [सं०] १. जिसका संरक्षण करना हो। २. जिसका संरक्षण उचित हो।

संरक्षिती—वि० [सं० संरक्षितिन्] रक्षा करनेवाला। जिसने रक्षण किया है [को०]।

संरक्षी—वि० [सं० संरक्षिन्] [वि० स्त्री० संरक्षिणी] १. संरक्षण करनेवाला। २. देखभाल करनेवाला।

संरक्ष्य—वि० [सं०] १. जिसका संरक्षण करना हो। २. जिसका संरक्षण उचित हो।

संरब्ध—वि० [सं०] १. खूब मिला हुआ। खूब जुड़ा हुआ। आश्लिष्ट। २. जो एक दूसरे को खूब पकड़े हुए हो। ३. हाथ में हाथ मिलाए हुए। ४. क्षुब्ध। उद्विग्न। ५. जोश में आया हुआ। उत्तेजित। ६. क्रोध से भरा हुआ। कोपपूर्ण। जैसे,—संरब्ध वचन। ७. क्रुद्ध। नाराज। ८. सूजा हुआ। फूला हुआ। ९. बढ़ा हुआ। वर्धित (को०)।

संराग—संज्ञा पुं० [सं०] १. लाली। २. राग। प्रेम। प्यार। ३. उग्रता। क्रोध [को०]।

संराद्ध—वि० [सं०] १. संपन्न। पूरा किया हुआ। २. लब्ध। प्राप्त [को०]।

संराद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कार्य की पूर्णता। सफलता। २. प्राप्ति [को०]।

संराधक—संज्ञा पुं० [सं०] ध्यान करनेवाला। आराधना करनेवाला। पूजा करनेवाला।

संराधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संराधनीय, संराधित, संराध्य] १. तुष्टीकरण। प्रसन्न करना। २. पूजा करना। पूजा द्वारा प्रसन्न या तुष्ट करना। ३. ध्यान। ४. जय जयकार।

संराधनीय—वि० [सं०] पूजा के योग्य।

संराधित—वि० [सं०] जिसे पूजा आदि के द्वारा प्रसन्न किया गया हो [को०]।

संराध्य—वि० [पुं०] १. जो ध्यान के द्वारा प्राप्य हो। २. तुष्ट या प्रसन्न करने योग्य। ३. जिसे अनुकूल किया जा सके [को०]।

संराव, संरावण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संरावी] १. कोलाहल। शोर। २. हलचल। धूम।

संरावी—वि० [सं० संराविन्] कोलाहल करनेवाला [को०]।

संरिहाण—संज्ञा पुं० [सं०] प्रेमपूर्वक चाटने की क्रिया। जैसे, गौ का बछड़े को चाटना [को०]।

संरुग्ण—वि० [सं०] छिन्न भिन्न। खंडित। चूर चूर।

संरुजन—संज्ञा पुं० [सं०] दर्द। पीड़ा। व्यथा [को०]।

संरुद्ध—वि० [सं०] १. अच्छी तरह रोका हुआ। २. घेरा हुआ। ३. अच्छी तरह बंद। ४. आच्छादित। ढँका हुआ। ५. ठसाठस भरा हुआ। ६. मना किया हुआ। वर्जित। ७. रुका हुआ (को०)। ८. अवरुद्ध। घिरा हुआ (को०)।

यौ०—संरुद्धचेष्ट = जिसकी चेष्टा या क्रिया रोक दी गई हो। रुद्ध चेष्टावाला। संरुद्ध प्रजनन = जिसकी प्रजनन शक्ति रोक दी गई हो।

संरुषित—वि० [सं०] चिढ़ा हुआ। कोपयुक्त। क्रुद्ध [को०]।

संरूढ—वि० [सं०] १. अच्छी तरह चढ़ा हुआ। २. खूब जमा हुआ। अच्छी तरह लगा हुआ। जिसने खूब जड़ पकड़ी हो। ३. अंकुरित। जमा हुआ। ४. अंगूर फेंकता हुआ। पूजता हुआ। सूखता या अच्छा होता हुआ (घाव)। ५. प्रकट। आविर्भूत। निकल पड़ा हुआ। ६. धृष्ट। प्रगल्भ। ७. प्रौढ़। दृढ़। ८. गहराई तक घुसा हुआ। जैसे, वाण (को०)।

संरोचन—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण में वर्णित एक पर्वत का नाम।

संरोदन—संज्ञा पुं० [सं०] खूब जोर से रोना [को०]।

संरोध—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोक। छेंक। रुकावट। २. गढ़ आदि को चारों ओर से घेरना। घेरा। ३. परिमिति। हदबंदी। ४. बंद करने या मूँदने की क्रिया। ५. अड़चन। बाधा। प्रतिबंध। ६. हिंसा। नाश। ७. क्षेप। फेंकना। ८. बंधन। शृंखला (को०)। ९. क्षति। हानि (को)। १०. कैद। बंधन (को०)।

संरोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संरोधनीय, संरोध्य, संरुद्ध] १. रोकना। छेंकना। रुकावट डालना। २. घेरना। ३. हद बाँधना। ४. बंद करना। मूँदना। ५. बाधा डालना। कार्य में हानि पहुँचाना। ६. बंदी करना। कैद करना।

संरोधनीय—वि० [सं०] रोकने, छेंकने या घेरने योग्य।

संरोध्य—वि० [सं०] १. जो रोका, छेंका या घेरा जानेवाला हो। २. जिसे रोकना या घेरना उचित हो। ३. जो बंधन में डालने योग्य हो (को०)।

संरोपण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संरोपणीय, संरोपित, संरोप्य] १. पेड़ पौधा लगाना। जमाना। बैठाना। २. घाव सुखाना। घाव अच्छा करना। ३. घाव पूजना। फोड़ा भरना।

संरोपित—वि० [सं०] जमाया, रोपा या लगाया हुआ।

संरोप्य—वि० [सं०] १. जो जमाया या लगाया जानेवाला हो। २. जिसे जमाना या लगाना उचित हो।

संरोषित—वि० [सं०] १. ऊपर लगाया हुआ। छोपा हुआ। लेप किया हुआ। (सुश्रुत)।

संरोह—संज्ञा पुं० [सं०] १. जमना। ऊपर छाना या बैठना। २. घाव पर पपड़ी जमना। घाव सूखना। अंगूर फेंकना। ३. अंकुरित होना। जमना। ४. प्रकट होना। आविर्भूत होना।

संरोहण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संरोहणीय, संरोही] १. जमना। ऊपर छाना। २. घाव पर पपड़ी जमना। घाव सूखना। ३. (पेड़ पौधा) जमाना। लगाना।

संलंघन—संज्ञा पुं० [सं० संलङ्घन] बीत जाना। व्यतीत होना [को०]।

संलंघित—वि० [सं० संलङ्घित] बीता हुआ। अतीत। गत [को०]।

संलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संलक्षणीय, संलक्षित, संलक्ष्य] १. रूप निश्चित करना। विशेष लक्षणों द्वारा भेद स्पष्ट करना। २. लखना। पहचानना। तमीज करना। ताड़ना।

संलक्षित—वि० [सं०] १. लखा हुआ। पहचाना हुआ। ताड़ा हुआ। २. रूप निश्चित किया हुआ। लक्षणों से जाना हुआ।

संलक्ष्य—वि० [सं०] १. जो लखा जाय। जो पहचाना जाय। जो देखने में आ सके। २. जो लक्षणों से जाना जा सके। जो लक्षणों द्वारा लक्षित हो सके।

संलक्ष्यक्रम व्यंग्य—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य शास्त्र के अनुसार व्यंग्य के दो भेदों में से एक। वह व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ से व्यंगार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित हो।

विशेष—इसके द्वारा वस्तु और अलंकार की व्यंजना होती है। जैसे, 'पेड़ का पत्ता नहीं हिलता' इसका व्यंग्यार्थ हुआ कि 'हवा नहीं चलती'। इसमें वाच्यार्थ के उपरांत व्यंग्यार्थ की प्राप्ति लक्षित होती है। इसके विपरीत जहाँ रसव्यंजना या भाव-व्यंजना में क्रम लक्षित नहीं होता, उसे असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य कहते हैं।

संलग्न—वि० [सं०] १. बिल्कुल लगा हुआ। सटा हुआ। मिला हुआ। २. भिड़ा हुआ। लड़ाई में गुथा हुआ। ३. संबद्ध। जुड़ा हुआ। ४. निमग्न। संलीन (को०)।

संलपन—संज्ञा पुं० [सं०] इधर उधर की बात चीत। प्रलाप। गपशप।

संलप्तक—संज्ञा पुं० [सं०] शिष्ट व्यक्ति। वह व्यक्ति जिससे बात चीत की जा सके [को०]।

संलब्ध—वि० [सं०] प्राप्त। पाया हुआ। गृहीत [को०]।

संलय—संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षियों का उतरना या नीचे बैठना। २. लीन होने की क्रिया। घुल जाना। ३. प्रलय। ४. निद्रा। नींद। लेटना। ५. घोंसला (को०)।

संलयन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संलीन] १. पक्षियों का नीचे उतरना या बैठना। २. लय को प्राप्त होना। लीन होना। ३. नष्ट होना। व्यक्त न रहना। ४. दे० 'संलय'।

संलाप—संज्ञा पुं० [सं०] १. परस्पर वार्तालाप। आपस की बातचीत। प्रेमपूर्ण वार्तालाप या कथोपकथन (को०)। ३. गुप्त बातचीत। गोपनीय वार्ता (को०)। ४. स्वयं कुछ कहना। प्रिय या प्रिया के गुणों का प्रलपन (को०)। ५. नाटक में एक प्रकार का संवाद जिसमें क्षोभ या आवेग नहीं होता, पर धीरता होती है।

संलापक—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाटक में एक प्रकार का संवाद। संलाप। २. एक प्रकार का उपरूपक या छोटा अभिनय।

संलापित—वि० [सं०] जिससे वार्तालाप किया गया गया हो। जिससे कहा गया हो [को०]।

संलापी—वि० [सं० संलापिन्] बातचीत या गपशप करनेवाला [को०]।

संलालित—वि० [सं०] जिसका भलीभाँति लालन किया गया हो [को०]।

संलिप्त—वि० [सं०] १. लीन। भली भाँति लिप्त। २. खूब लगा हुआ।

संलीढ—वि० [सं० संलीढ] १. अच्छी तरह चाटा हुआ। जिसे खूब चखा गया हो। २. जिसका भोग किया गया हो [को०]।

संलीन—वि० [सं०] १. खूब लीन। अच्छी तरह लगा हुआ। २. आच्छादित। ढका हुआ। छिपा हुआ। ३. संकुचित। सिकुड़ा हुआ। ४. जो घुलकर एकरूप हो। विलीन। गर्क (को०)।

यौ०—संलीन कर्ण = जिसके कान नमित या लटके हों। संलीन मानस = खिन्नमन। उदास।

संलुलित—वि० [सं०] १. जो ठीक दशा में न हो। क्षुब्ध। अस्त-व्यस्त। २. संपर्क या संसर्गप्राप्त [को०]।

संलेख—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण संयम। (बौद्ध)।

संलेप—संज्ञा पुं० [सं०] कर्दम। कीचड़ [को०]।

संलोडन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संलोड़ित] १. (जल आदि को) खूब हिलाना या चलाना। क्षुब्ध करना। मथना। २. खूब हिलाना डुलाना। झकझोरना। ३. उलट पुलट करना। उथल पुथल करना। गड़बड़ करना।

संवत्[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्ष। संवत्सर। साल। २. वर्ष विशेष जो किसी संख्या द्वारा सूचित किया जाता है। चली आती हुई वर्ष गणना का कोई वर्ष। सन्। जैसे,—यह कौन संवत् है? ३. महाराज विक्रमादित्य के काल से चली हुई मानी जानेवाली वर्षगणना। ४. संग्राम। युद्ध (को०)।

संवत्[2]—संज्ञा स्त्री० भूमिविशेष। वह भूमि जो मिट्टी खनने के लिये प्रशस्त एवं पाषाण आदि से रहित हो [को०]।

संवत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० संवत्] दे० 'संवत्'। उ०—चंद्र नाग वसु पंच गिनि संवत माधव मास।—छिताई० (परिचय), पृ० ५।

संवत्सर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्ष। साल। २. पाँच पाँच वर्ष के युगों का प्रथम वर्ष।

विशेष—प्रभवादि साठ संवत्सर १२ युगों में विभक्त हैं जिसमें से प्रत्येक युग पाँच वर्ष का होता है। प्रत्येक युग के प्रथम वर्ष का नाम संवत्सर है। इसका देवता अग्नि कहा गया है।

३. शिव का एक नाम। ४. विक्रम संवत् (को०)।

यौ०—संवत्सरकर। संवत्सरनिरोध = एक वर्ष की कैद। बरस भर का कारावास। संवत्सरफल = साल का शुभाशुभ फल। संवत्सरभुक्ति = सूर्य का एक वर्ष का मार्ग। संवत्सरभृत = जो एक वर्ष के लिये रखा हो। संवत्सरभ्रमि = वर्ष भर में परिक्रमा पूरी करनेवाला, जैसे सूर्य। संवत्सरमुखी = ज्येष्ठ मास के शुक्लपक्ष की दशमी। संवत्सररय = एक वर्ष का पथ। वर्ष भर की राह।

संवत्सरकर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

संवत्सरीय—वि० [सं०] संवत्सर से संबद्ध। वार्षिक। साल वाला। साल का [को०]।

संवदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. परस्पर कथन। बातचीत। २. संवाद। सँदेशा। पैगाम। ३. विचार। आलोचन। ४. जाँच। ५. जादू या मंत्र के द्वारा वश में करना (को०)। ६. यंत्र। तावीज (को०)।

संवदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वश में करने की क्रिया। वशीकरण।

२. मंत्र, ओषधि आदि से किसी को वश में करने की क्रिया। दे० 'संवदन'।

संवनन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० १. 'संवदन'। २. यंत्र मंत्र आदि के द्वारा स्त्रियों को फँसाना। ३. प्राप्ति। उपलब्धि (को०)। ४. अनुराग। आसक्ति। प्रीति (को०)।

संवनना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'संवदना'।

संवपन—संज्ञा पुं० [सं०] बीज वपन करने की क्रिया। खेत में बीज छीटना या बोना (को०)।

संवर—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोक। परिहार। दूर करना। जैसे,—कालसंवर। २. इंद्रियनिग्रह। मन को दबाना या वश में करना। ३. बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का व्रत। ४. बाँध। बंद। ५. पुल। सेतु। ६. चुनना। पसंद करना। ७. कन्या का वर चुनना। ८. आच्छादन। आवरण (को०)। ९. बोध। समझ (को०)। १०. आड़ या ओट करना। संकोचन (को०)। ११. एक प्रकार का हिरन (को०)। १२. एक राक्षस का नाम दे० 'शंबर' (को०)। १३. छिपाव। दुराव। गोपन (को०)। १४. पानी। जल (को०)। १५. एक प्रकार की मछली (को०)। १६. अपने को दृश्यमान संसार से दूर करना। (जैन)।

संवरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवरणीय, संवृत्त] १. हटाना। दूर रखना। रोकना। २. बंद करना। ढाँकना। ३. आच्छादित करना। छोपना। ४. छिपाना। गोपन करना। ५. छिपाव। दुराव। ६. ढक्कन या परदा। ७. घेरा। जिसके भीतर सब लोग न जा सकें। बाँध। बंद। ९. सेतु। पुल। १०. किसी चित्तवृत्ति को दबाने या रोकने की क्रिया। निग्रह। जैसे,—क्रोध संवरण करना। ११. गुदा के चमड़े की तीन परतों में से एक। १२. कुरु के पिता का नाम। १३. लेने के लिये पसंद करना। चुनना। १४. कन्या का विवाह के लिये वर या पति चुनना। १५. गुप्तभेद। रहस्य (को०)। १६. कपट। व्याज। छद्म (को०)।

संवरणीय—वि० [सं०] १. निवारण करने योग्य। रोकने लायक। २. संगोपनीय। ३. विवाह के योग्य। वरने योग्य।

संवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवर्ग्य] १. अपनी ओर समेटना। अपने लिये बटोरना। २. भक्षण। भोजन। चट कर जाना। ३. खपत। लग जाना। ४. एक वस्तु का दूसरी में समा जाना या लीन हो जाना। जैसे, जीव का ब्रह्म में लीन होना।

यौ०—संवर्गविद्या = विलय, तल्लीनता अथवा रूपांतर प्राप्ति का ज्ञान।

५. गुणनफल। ६. अग्नि का एक नाम (को०)। ७. बलात् ले लेना। अपहरण करना (को०)।

संवर्गण—संज्ञा पुं० [सं०] अपना लेना। आकर्षित करना। जैसे,—मित्र संवर्गण (को०)।

संवर्ग्य—वि० [सं०] संवर्ग करने योग्य। गुणित करने योग्य (को०)।

संवर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवर्जनीय, संवर्जित, संवृक्त] १. छीनना। खसोटना। ले लेना। हरण करना। २. खा जाना। उड़ा जाना।

संवर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. जुटना। भिड़ना। (शत्रु से)। २. लपेटने की क्रिया भाव। लपेट। ३. फेरा। घुमाव। चक्कर। ४. प्रलय। कल्पांत। ५. एक कल्प का नाम। ६. लपेटी या बटोरी हुई वस्तु। ७. पिंडी। गोला। ८. बट्टी। टिकिया। ९. घना समूह। घनी राशि। १०. प्रलयकाल के सात मेघों में से एक। ११. इंद्र का अनुचर एक मेघ जिससे बहुत जल बरसता है।

विशेष—मेघों के द्रोण, आवर्त्त, पुष्कलावर्त आदि कई नाम कहे गए हैं। जिस प्रकार आवर्त बिना जल का माना गया है, उसी प्रकार संवर्त अत्यंत अधिक जलवाला कहा गया है।

१२. मेघ। बादल। १३. संवत्सर। वर्ष। १४. एक दिव्यास्त्र। १५. एक केतु का नाम। १६. निश्चित समय पर होनेवाला प्रलय। खंड प्रलय (को०)। १७. संकोच। आकुंचन (को०)। १८. ग्रहों का एक योग। १९. विभीतक। बहेड़ा।

संवर्तक[१]—वि० [सं०] १. लपेटनेवाला। २. लय या नाश करनेवाला।

संवर्तक[२]—संज्ञा पुं० १. कृष्ण के भाई बलराम। २. बलराम का अस्त्र। लांगल। हल। ३. बड़वानल। ४. विभीतक वृक्ष। बहेड़ा। ७. प्रलय नामक मेघ। ८. प्रलय मेघ की अग्नि। ९. एक नाग। १०. एक ऋषि।

संवर्तकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] प्रलय का एक भेद। (बौद्ध)।

संवर्तकी—संज्ञा पुं० [सं० संवर्त्तकिन्] कृष्ण के भाई बलराम।

संवर्तकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] एक केतु का नाम।

विशेष—यह संध्या समय पश्चिम दिशा में उदय होता है और आकाश के तृतीयांश तक फैला रहता है। इसकी चोटी धूमिल रंग लिए ताम्र वर्ण की होती है। इसके उदय का फल राजाओं का नाश कहा गया है।

संवर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवर्तनीय, संवर्त्तित, संवृत्त] १. लपेटना। २. फेरा या चक्कर देना। ३. किसी ओर फिरना। प्रवृत्त होना या करना। ४. पहुँचना। प्राप्त होना। ५. हल नामक अस्त्र। ६. हरिवंश के अनुसार एक दिव्यास्त्र (को०)।

संवर्तनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सृष्टि का लय। प्रलय।

संवर्तनीय—वि० [सं०] लपेटने योग्य। फेरने योग्य।

संवर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'संवर्त्तिका'।

संवर्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लपेटी हुई वस्तु। २. बत्ती। दीप की शिखा। ३. कमल की बँधी पत्ती। ४. कोई बँधा हुआ पत्ता। ५. बलराम का अस्त्र, हल। लांगल। ६. वह पत्ती जो पराग केशर के पास हो (को०)।

संवर्तित—वि० [सं०] १. लपेटा हुआ। २. फेरा या घुमाया हुआ।

संवर्द्धक संवर्धक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संवर्द्धिका] १. बढ़ानेवाला। वर्धन करनेवाला। २. अतिथियों का स्वागत सत्कार करनेवाला (को०)।

संवर्द्धन, संवर्धन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवर्द्धनीय, संवर्धित, संवृद्ध] १. वृद्धि को प्राप्त होना। बढ़ना। २. पालना। पोसना। ३. बढ़ाना। उन्नत करना। ४. (बाल आदि) बढ़ाने का साधन (को०)।

संवर्द्धन, संवर्धन²—वि० संवर्द्धक। बढ़ानेवाला [को०]।

संवर्द्धनीय, संवर्धनीय—वि० [सं०] १. बढ़ने या बढ़ाने योग्य। २. पालने पोसने योग्य।

संवर्द्धित, संवर्धित—वि० [सं०] १. बढ़ा हुआ। २. बढ़ाया हुआ। ३. पाला पोसा हुआ।

संवर्मित—वि० [सं०] वर्म से युक्त। जिरहबक्तर पहने हुए [को०]।

संवल—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० 'संबल'। २. आधार। सहारा।

संवलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवलनीय, संवलित] १. भिड़ना। जुटना (शत्रु से)। २. मेल। मिलान। संयोग। ३. मिलावट। मिश्रण।

संवलित—वि० [सं०] १. भिड़ा हुआ। जुटा हुआ (शत्रु से)। २. मिला हुआ। ३. युक्त। सहित। ४. घिरा हुआ। ५. त्रुटित। टूटा हुआ (को०)। ६. आर्द्र या तर किया हुआ (को०)। ७. मिश्रण युक्त। मिश्रित (को०)। ८. संबद्ध।

संवल्गन—संज्ञा पुं० [सं०] उछलना। उल्लसित होना [को०]।

संवल्गित¹—वि० [सं०] अभिद्रवित। बरबाद [को०]।

संवल्गित²—संज्ञा पुं० ध्वनि [को०]।

संवसति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुतों की एक साथ रहने की स्थिति। एक साथ वास करना [को०]।

संवसथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. बस्ती। गाँव या कस्बा। २. निवास। वसति। घर (को०)।

संवसन—संज्ञा पुं० [सं०] निवास स्थान। गृह [को०]।

संवस्त्रण—संज्ञा पुं० [सं०] एक समान वस्त्र धारण करना [को०]।

संवह—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो वहन करता हो। वहन करनेवाला। ले जानेवाला। २. एक वायु जो आकाश के सात मार्गों में से तीसरे मार्ग में रहती है। ३. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

संवहन—संज्ञा पुं० [सं०] १. वहन करना। ले जाना। ढोना। २. दिखाना। प्रदर्शित करना। व्यक्त करना। ३. अगुआई या नेतृत्व करना (को०)।

संवाच्य—संज्ञा पुं० [सं०] ६४ कलाओं में से एक का नाम। बातचीत करने या कथा कहने का ढंग।

संवाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिंघाड़ा। शृंगाटक।

संवाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. बातचीत। कथोपकथन। खबर। हाल। समाचार। वृत्तांत। ३. प्रसंगकथा। चर्चा। ४. नियति। नियुक्ति। ५. मामला। मुकदमा। व्यवहार ६. सहमति। एक राय। ७. स्वीकार। रजामंदी। ८. बहस। मुबाहसा। ९. सादृश्य। एकरूपता। जैसे, रूप संवाद (को०)। १०. समागम। भेंट। मिलन (को०)।

संवादक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] १. भाषण करनेवाला। बातचीत करनेवाला। २. सहमत होनेवाला। एक राय होनेवाला। ३. स्वीकार करनेवाला। माननेवाला। राजी होनेवाला। ४. बजानेवाला।

संवाददाता—संज्ञा पुं० [सं० संवाददातृ] संवाद देनेवाला। समाचार भेजनेवाला। समाचार पत्रों में स्थानीय समाचार भेजनेवाला वह व्यक्ति जो उस कार्य के लिये नियुक्त किया गया हो। (अं० लोकल रिपोर्टर)।

संवादन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवादनीय, संवादित, संवादी, संवाद्य] १. भाषण। बातचीत करना। २. सहमत करना। एकमत होना। ३. राजी होना। मानना। ४. बजाना।

संवादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कीट। कीड़ा। २. पिपीलिका। च्यूँटी।

संवादित—वि० [सं०] १. बोलने में प्रवृत्त किया हुआ। बातचीत में लगाया हुआ। २. राजी किया हुआ। मनाया हुआ। ३. बजाया हुआ। वादित।

संवादिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सादृश्य। तुल्यता। समानता। २. एक मेल का होना।

संवादी¹—वि० [सं० संवादिन्] [वि० स्त्री० संवादिनी] १. संवाद करनेवाला। बातचीत करनेवाला। २. सहमत होनेवाला। राजी होनेवाला। ३. अनुकूल होनेवाला। तुल्य। समान। ४. बजानेवाला।

संवादी²—संज्ञा पुं० संगीत में वह स्वर जो वादी के साथ सब स्वरों के साथ मिलता और सहायक होता है। जैसे,—पंचम से षडज तक जाने में बीच के तीन स्वर संवादी होंगे।

संवार—संज्ञा पुं० [सं०] १. आच्छादन। ढाँकना। छिपाना। २. शब्दों के उच्चारण में कंठ का आकुंचन या दबाव। ३. उच्चारण के बाह्य प्रयत्नों में से एक जिसमें कंठ का आकुंचन होता है। 'विवार' का उलटा। ४. बाधा। रोध। विघ्न। अड़चन। ५. अपचय। क्षय। ह्रास। घटती (को०)। ६. रक्षण। संरक्षण (को०)। ७. उपकल्पन। व्यवस्थापन (को०)।

संवारण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवारणीय, संवारित, संवार्य] १. हटाना। दूर करना। निवारण करना। २. रोकना। न आने देना। ३. निषेध करना। मना करना। ४. छिपाना। आवृत करना। ढाँकना।

संवारणीय—वि० [सं०] १. हटाने या दूर करने योग्य। २. रोकने योग्य। ३. छिपाने या ढाँकने योग्य।

संवारित—वि० [सं०] १. रोका हुआ। हटाया हुआ। २. मना किया हुआ। ३. ढाँका हुआ।

संवार्य—वि० [सं०] १. हटाने योग्य। दूर करने योग्य। २. मना करने योग्य। रोकने योग्य। ३. ढाँकने या छिपाने योग्य।

संवावदूक—वि० [सं०] १. ठीक ठीक कह देनेवाला। ज्यों का त्यों बताने या अभिव्यक्त करनेवाला। २. जो अतिशय तुल्यता का व्यंजक हो [को०]।

संवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. साथ बसना या रहना। २. परस्पर संबंध। ३. सहवास। प्रसंग। मैथुन। ४. वह खुला हुआ स्थान जहाँ लोग विनोद या मन बहलाव के निमित्त एकत्र हों। ५. सभा। समाज। ६. मकान। घर। रहने का स्थान। वसति। ७. सार्वजनिक स्थान। ८. घरेलू व्यवहार (को०)।

संवासित--वि० [सं०] सुगंधित किया हुआ। बासा हुआ। सुवासित। २. जो पूतिगंध से युक्त हो। दुर्गंधयुक्त। जैसे, श्वास [को०]।

संवासी--वि० [सं० संवासिन्] १. एक साथ निवास करनेवाला। एक जगह रहनेवाला। २. स्थानविशेष का रहनेवाला। ३. परिधान-युक्त। जो वस्त्र धारण किए हो [को०]।

संवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १. ले जाना। ढोना। २. पैर दबाना। ३. खुला उपवन जहाँ लोग एकत्र हों। ४. बाजार। मंडी। ५. पीड़न। सताना। जुल्म। ६. दे० 'मर्दनीक' (को०)। ८. सात वायुओं में से एक (को०)।

संवाहक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संवाहिका] १. ले जानेवाला। २. ढोनेवाला। ३. बदन मलनेवाला। मर्दनीक। पैर दबानेवाला। पाँव पलोटनेवाला। ४. गति देनेवाला। चलानेवाला। संचालक (को०)।

संवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा स्त्री० संवाहना] [वि० संवाहनीय, संवाहित, संवाही, संवाह्य] १. उठाकर ले चलना। ढोना। २. ले जाना। पहुँचाना। ३. चलाना। परिचालन। ४. शरीर की मालिश। हाथ पैर दबाना या मलना। ५. जिसकी मालिश की गई हो। ६. (मेघों का) जाना। गमन (को०)।

संवाहित—वि० [सं०] १. ले गया हुआ। वाहित। २. पहुँचाया हुआ। ढोया हुआ। ३. चलाया हुआ। परिचालित। ४. जिसका शरीर मर्दन हुआ हो। जिसके हाथ पाँव दबाए गए हों।

संवाही—वि० [सं० संवाहिन्] [वि० स्त्री० संवाहिनी] १. ले जानेवाला। पहुँचानेवाला। २. ढोनेवाला। ३. चलानेवाला। ४. अंग मर्दन करनेवाला। हाथ पैर दबानेवाला।

संवाह्य—वि० [सं०] १. वहन करने योग्य। २. मलने योग्य। दबाने योग्य। ३. व्यक्त करने या दिखाने योग्य (को०)।

संविक्त—वि० [सं०] जिसको चुनकर अलग किया गया हो।

संविग्न—वि० [सं०] १. क्षुब्ध। उद्विग्न। घबराया हुआ। २. भीत। आतुर। डरा हुआ। ३. इतस्ततः आवागमन करता हुआ (को०)।

यौ०—संविग्नमानस, संविग्नहृदय = किंकर्तव्य विमूढ़। हतबुद्धि।

संविघ्नित—वि० [सं०] विघ्नयुक्त। अंतराययुक्त। जिसमें विघ्न डाला गया हो [को०]।

संविज्ञ—वि० [सं०] अच्छी तरह जानकार।

संविज्ञात—वि० [सं०] १. जिसे सभी जानते हों। सर्वज्ञात। सर्वविदित। २. जो सभी को मान्य या विधेय हो [को०]।

संविज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १. सम्यक् बोध। पूर्ण ज्ञान। २. सहमति। एक मत। ३. स्वीकृति। मंजूरी।

यौ०—संविज्ञान भूत = जिसे सभी जानते हों। जो सबको ज्ञात हो गया हो।

संवित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] चेतना। दे० संविद्'।

संवितिकाफल—संज्ञा पुं० [सं०] सेब। सेवीफल।

संवित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०[१. प्रतिप्रत्ति। २. अविवाद। ऐक्यमत। एक राय। ३. चेतना। संज्ञा। ४. अनुभव। ५. बुद्धि। ६. प्रति स्मरण (को०)।

संवित्पत्र—संज्ञा पुं० [सं०] शुक्रनीति के अनुसार वह पत्र जिसमें दो ग्रामों या प्रदेशों के बीच किसी बात के लिये मेल की प्रतिज्ञा या शर्तें लिखी हों।

संविद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चेतना। चैतन्य। ज्ञान शक्ति। ३. बोध। ज्ञान। समझ। ३. बुद्धि। महत्त्व। (सांख्य)। ४. संवेदन। अनुभूति। ५. योग की एक भूमि जिसकी प्राप्ति प्राणायाम से होती है। ६. समझौता। करार। वादा। ७. मिलने का स्थान जो पहले से ठहराया गया हो। ८. युक्ति। उपाय। तदबीर। ९. वृत्तांत। हाल। संवाद। १०. बँधी हुई परंपरा। रीति। प्रथा। ११. नाम। १२. तोषण। तुष्टि। १३. भाँग। १४. युद्ध। लड़ाई। १५. युद्ध की ललकार। १६. संकेत। इशारा। निशान। १७. प्राप्ति। लाभ। १८. संपत्ति। जायदाद। १९. वार्तालाप। संलाप (को०)। २०. विचारों की एकता। मतैक्य (को०)। २१. मैत्री। दोस्ती (को०)। २२. योजना (को०)। २३. स्वीकृति। सहमति (को०)। २४. संकेत शब्द। परिचायक शब्द (को०)।

संविद[1]—वि० [सं०] चेतन। चेतनायुक्त।

संविद[2]—संज्ञा पुं० वादा। समझौता। इकरार।

संविदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समझौता। वादा। इकरार। २. भाँग का पौधा [को०]।

संविदात—वि० [सं०] १. जाननेवाला। प्रतिभाशाली। २. अनुरूप। सामंजस्यपूर्ण [को०]।

संविदामंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० संविदामञ्जरी] गाँजा।

संविदित[1]—वि० [सं०] १. पूर्णतया ज्ञात। जाना बूझा। सुविदित। २. ढूँढ़ा हुआ। खोजा हुआ। ३. तै पाया हुआ। सबकी राय से ठहराया हुआ। ४. वादा किया हुआ। जिसका करार हुआ हो। ५. समझाया बुझाया हुआ। उपदिष्ट। ६. ख्यात। प्रसिद्ध (को०)। ७. स्वीकृत। माना हुआ (को०)।

संविदित[2]—संज्ञा पुं० वादा। करार। प्रतिज्ञा [को०]।

संविद्वाद—संज्ञा पुं० [सं०] यूरोपीय दर्शन का एक सिद्धांत जिसमें वेदांत के समान चैतन्य के अतिरिक्त और किसी वस्तु की पारमार्थिक सत्ता नहीं स्वीकार की गई है। चैतन्यवाद।

संविद्व्यतिक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] समझौते या करार का पालन न होना [को०]।

संविध्—संज्ञा स्त्री० [सं०] योजना। रूपरेखा। क्रम व्यवस्थापन [को०]।

संविधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रहन सहन। आचार व्यवहार। २. योजना। खाका। रूपरेखा (को०)। ३. व्यवस्था। आयोजन। प्रबंध। डौल।

संविधातव्य—वि० [सं०] जो आयोजन, संपादन एवं निर्माण के योग्य हो।

संविधाता—संज्ञा पुं० [सं० संविधातृ] प्रबंधक । व्यवस्थापक । स्रष्टा । निर्माता [को०] ।

संविधान—संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यवस्था । आयोजन । प्रबंध । २. विधि । रीति । दस्तूर । ३. रचना । सजना । ४. विचित्रता । अनूठापन । ५. कथा में घटनाओं का क्रम व्यवस्थापन (को०) । ६. किसी राष्ट्र का वह वैधानिक ढाँचा जिससे वह संचालित होता है । राष्ट्रविधान । वह विधान या सिद्धांतों का समूह जिसके आधार पर किसी राष्ट्र, राज्य या संस्था का संघटन और संचालन होता है । (अं० कॉंस्टिट्यूशन) ।

यौ०—संविधानज्ञ, संविधान शास्त्री = संविधान को जाननेवाला । संविधान का विशेषज्ञ । संविधान सभा = संविधान का निर्माण करनेवाली सभा या समिति ।

संविधानक—संज्ञा पुं० [सं०] १. विचित्र क्रिया या व्यापार । अलौकिक घटना । २. (कथावस्तु में) घटनाओं का क्रम । किसी नाटक की पूरी कथावस्तु (को०) ।

संविधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विधान । रीति । दस्तूर । २. व्यवस्था । प्रबंध । डौल ।

संविधेय—वि० [सं०] १. जिसका डौल या प्रबंध करना हो । २. जिसे करना हो । करणीय । ३. जिसका प्रबंध उचित हो ।

संविभक्त—वि० [सं०] १. अच्छी तरह बँटा या बाँटा हुआ । अच्छी तरह अलग किया हुआ । २. जिसके सब अंग ठीक हिसाब से हों । सुडौल । ३. प्रदत्त । दिया हुआ ।

संविभक्ता—वि० [सं० संविभक्तृ] जो हिस्सा बँटाता हो । अन्य लोगों के साथ हिस्सा बँटानेवाला [को०] ।

संविभजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संविभजनीय] १. बाँट या हिस्सा लेना । बँटाई । २. साझा । हिस्सा ।

संविभजनीय—वि० [सं०] जो लोगों में विभक्त करने योग्य हो [को०] ।

संविभाग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संविभागी] १. पूर्णतया भाग करना । हिस्सा करना । बाँट । बँटाई । २. प्रदान । ३. भाग । अंश । हिस्सा (को०) ।

संविभागी—संज्ञा पुं० [सं० संविभागिन्] १. साझीदार । २. भाग या हिस्सा प्राप्त करनेवाला । भाग लेनेवाला [को०] ।

संविभाव्य—वि० [सं०] समझने योग्य [को०] ।

संविमर्द—संज्ञा पुं० [सं०] वह युद्ध जिसमें अत्यधिक रक्तपात हो । भीषण संग्राम [को०] ।

संविषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतीस । अतिविषा ।

संविष्ट—वि० [सं०] १. आगत । प्राप्त । पहुँचा हुआ । २. विश्राम करता हुआ । लेटा हुआ । सोया हुआ । ३. निविष्ट । बैठा हुआ । ४. वस्त्र से आच्छादित । वस्त्र से आवृत (को०) ।

संविहित—वि० [सं०] सम्यक् व्यवस्थित अथवा कृत । जिसका देखभाल या प्रबंध किया गया हो [को०] ।

संवीक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवीक्षणीय, संवीक्षित, संवीक्ष्य] १. इधर उधर देखने की क्रिया । अवलोकन । २. अन्वेषण । खोज । तलाश ।

संवीत[1]—वि० [सं०] १. आवृत । ढका हुआ । २. छिपा या छिपाया हुआ । ३. कवच धारण किए हुए । कवचयुक्त । ४. पहने हुए । ५. रुद्ध । रुका हुआ । ६. न दिखाई देता हुआ । नजर से गायब । अदृश्य । लुप्त । ७. अनदेखा किया हुआ । जिसे देखकर भी टाल गए हों । ८. अभिभूत (को०) । ९. वस्त्राच्छादित (को०) । १०. परिवेष्टित । घिरा हुआ (को०) ।

संवीत[2]—संज्ञा पुं० १. पहनावा । वस्त्र । आच्छादन । २. सफेद कटभी । ३. यज्ञोपवीत (को०) ।

संवीती—वि० [सं० संवीतिन्] जो यज्ञोपवीत पहने हो ।

संवृक्त—वि० [सं०] १. छीना हुआ । हरण किया हुआ । २. नष्ट या उड़ाया हुआ । खरचा खाया हुआ ।

संवृत—वि० [सं०] १. आच्छादित । ढका हुआ । बंद किया हुआ । २. घिरा हुआ । ३. लपेटा हुआ । ४. युक्त । सहित । पूर्ण । ५. रक्षित । ६. दबाया हुआ । दमन किया हुआ । ७. जो किनारे या अलग हो गया हो । ८. रुँधा हुआ (गला) । ९. धीमा किया हुआ । १०. प्रच्छन्न । गोप्य । गुप्त (को०) । ११. बलपूर्वक छीना हुआ (को०) । १२. अस्पष्ट । जो स्पष्ट न हो (को०) । १३. जो अलग कर दिया गया हो या रखा हो (को०) ।

संवृत[2]—संज्ञा पुं० १. वरुण देवता । २. गुप्त स्थान । ३. एक प्रकार का जलवेतस् । एक प्रकार का बेंत । ४. उच्चारण का एक ढंग (को०) ।

संवृतकोष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोष्ठबद्धता । कब्जियत । २. वह जिसे कब्ज की बीमारी हो (को०) ।

संवृतमंत्र—संज्ञा पुं० [सं० संवृतमन्त्र] १. वह व्यक्ति जो अपनी योजना गुप्त रखता हो । २. गुप्त मंत्रणा । भेद की बातचीत ।

संवृतसंवार्य—वि० [सं०] गोप्य बात को प्रकट न करनेवाला [को०] ।

संवृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ढकने या छिपाने की क्रिया । गुप्त रखने की क्रिया । २. गुप्त प्रयोजन । अभिसंधि (को०) । ३. बाधा (को०) । ४. दंभ । ढोंग । छद्म (को०) ।

संवृत्त[1]—वि० [सं०] १. पहुँचा हुआ । समागत । प्राप्त । २. घटित । जो हुआ हो । ३. जो पूरा हुआ हो । (कामना, इच्छा आदि) । ४. उत्पन्न । पैदा । ५. उपस्थित । मौजूद । ६. संचित । राशीकृत (को०) । ७. व्यतीत । गत (को०) । ८. आवृत । ढका हुआ (को०) । ९. युक्त या सज्जित (को०) ।

संवृत्त[2]—संज्ञा पुं० १. वरुण देवता । २. एक नाग का नाम ।

संवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निष्पत्ति । सिद्धि । २. एक देवी का नाम । ३. होना । घटना (को०) । ४. आवरण । संवृति । आच्छादन (को०) ।

संवृद्ध—वि० [सं०] १. पूर्ण अभिवृद्ध या बढ़ा हुआ । २. उन्नत । जो ऊँचा और बड़ा हो गया हो । ३. विकसित होता हुआ । जो उन्नत हो रहा हो (को०) ।

संवृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बढ़ने की क्रिया या भाव। बढ़ती। अधिकता। २. धन आदि की अधिकता। अभ्युदय। समृद्धि। ३. शक्ति। ताकत (को०)।

संवेग—संज्ञा पुं० [सं०] १. पूर्ण वेग या तेजी। तीव्रता। २. आवेग। घबराहट। उद्विग्नता। खलबली। ३. भय। सहम। ४. जोर। अतिरेक। ५. चंडता। उग्रता (को०)। ६. तीव्र पीड़ा (को०)।

संवेजन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवेजनीय, संवेजित, संविग्न] १. उद्विग्न करना। घबरा देना। खलबली डालना। २. सहमाना। डराना। ३. भड़काना। उत्तेजित करना।

यौ०—रोमसंवेजन = रोंगटे खड़े होना। पुलक होना। नेत्रसंवेजन = जर्राह का पिचकारी लगाना।

संवेजनीय—वि० [सं०] जो संवेजन करने योग्य हो। जिसे संवेजित किया जाय (को०)।

संवेजित—वि० [सं०] दे० 'संविग्न' (को०)।

संवेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुख दुःख आदि का जान पड़ना। अनुभव। वेदना। ज्ञान। बोध।

संवेदन—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संवेदना] [वि० संवेदनीय, संवेदित, संवेद्य] १. अनुभव करना। सुख दुःख आदि की प्रतीति करना। क्लेश, आनंद, शीत, ताप आदि को मन में मालूम करना। २. जताना। प्रकट करना। बोध कराना। ३. बोध। ज्ञान (को०)। ४. नकछिकनी नाम की घास। ५. देना। आत्मसमर्पण करना।

संवेदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनुभूति। वेदना। दे० 'संवेदन'।

संवेदनीय—वि० [सं०] १. अनुभव योग्य। प्रतीति योग्य। २. जताने लायक। बोध कराने योग्य।

संवेदित—वि० [सं०] १. अनुभव किया हुआ। प्रतीत किया हुआ। २. जताया हुआ। बोध कराया हुआ। बताया हुआ।

संवेद्य[1]—वि० [सं०] १. अनुभव करने योग्य। प्रतीत करने योग्य। मन में मालूम करने लायक। २. दूसरे को अनुभव कराने योग्य। जताने योग्य। बताने लायक। ३. समझने योग्य।

यौ०—स्वसंवेद्य = अपने ही अनुभव करने योग्य। जो दूसरे को बताया न जा सके, आप ही आप मालूम किया जा सके।

संवेद्य[2]—संज्ञा पुं० १. दो नदियों का संगम। २. एक तीर्थ (को०)।

संवेल्लित—वि० [सं०] संवर्धित (को०)।

संवेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. पास जाना। पहुँचना। २. प्रवेश। घुसना। ३. बैठना। आसन जमाना। ४. लेटना। सोना। पड़ रहना। ५. काम शास्त्रानुसार एक प्रकार का रतिबंध। ६. काष्ठासन। पीढ़ा। पाटा। ७. अग्नि देवता, जो रति के अधिष्ठाता माने गए हैं। ८. शयन कक्ष। शयनागार (को०)। ९. सपना। स्वप्न (को०)।

यौ०—संवेशपति = निद्रा, आराम अथवा रति के अधिष्ठाता देवता अग्नि।

संवेशक—संज्ञा पुं० [सं०] १. जमा करने या ठीक ठिकाने से रखनेवाला। सामान आदि को तरतीब देनेवाला। २. शयन करने, सोने में सहायता देनेवाला (को०)।

संवेशन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवेषणीय, संवेशनीय, संवेशित, संवेश्य] १. बैठना। २. लेटना। पड़ रहना। सोना। ३. घुसना। प्रवेश करना। ४. रति। रमण। समागम। ५. शय्या या बैठने का आसन (को०)।

संवेशनीय—वि० [सं०] जो संवेशन करने लायक हो। जो संवेशन के योग्य हो।

संवेशी—वि० [सं० संवेशिन्] लेटनेवाला। शयन करनेवाला (को०)।

संवेश्य—वि० [सं०] १. लेटने योग्य। २. घुसने योग्य।

संवेष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] लपेटने का कपड़ा इत्यादि। बेठन। आच्छादन।

संवेष्टन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संवेष्टित, संवेष्टनीय] १. लपेटना। ढाँकना। बंद करना। २. घेरना। ३. अच्छादन। वेष्टन। बेठन (को०)।

संवैधानिक—वि० [सं० सम् + वैधानिक] विधान के अनुसार। संविधान संबंधी। कानूनी।

संव्यवहरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. भली भाँति व्यवहार करना। २. अच्छा कारोबार करना। व्यापार आदि में उन्नति करना (को०)।

संव्यवहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह का व्यवहार। अच्छा सलूक। एक दूसरे के प्रति उत्तम आचरण। २. मामला। प्रसंग। ३. संसर्ग। लगाव। ४. पूरा सेवन। व्यवहार। उपयोग। इस्तेमाल। ५. लेन देन करनेवाला। व्यवसायी। ६. वाणिज्य। व्यापार। ७. प्रचलित शब्द। आमफहम, लफ्ज।

संव्याध—संज्ञा पुं० [सं०] द्वंद्व युद्ध। लड़ाई (को०)।

संव्यान—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तरीय वस्त्र। चादर। दुपट्टा। २. वस्त्र। कपड़ा। आच्छादन।

संव्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १. आच्छादन। वस्त्र। २. ओढ़ना।

संव्रात—संज्ञा पुं० [सं०] झुंड। गिरोह।

संशंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] तारीफ। स्तुति (को०)।

संशप्त—वि० [सं०] १. जो शापग्रस्त हो। २. जिसने किसी के साथ प्रतिज्ञा की या शपथ खाई हो। वाग्बद्ध।

संशप्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह योद्धा जिसने बिना सफल हुए लड़ाई आदि से न हटने की शपथ खाई हो। २. वह जिसने यह शपथ खाई हो कि बिना मरे न लौटेंगे। ३. कुरुक्षेत्र के युद्ध में एक दल जिसने अर्जुन के वध की प्रतिज्ञा की थी, पर स्वयं मारा गया था। ४. चुना हुआ योद्धा (को०)। ५. युद्ध में सहयोग देनेवाला वीर योद्धा।

संशब्द—संज्ञा पुं० [सं०] १. ललकार। २. निर्वचन। कथन। ३. स्तुति। प्रशंसा। ४. हवाला। उल्लेख। उद्धरण (को०)।

संशब्दन—संज्ञा पुं० [सं०] १. ध्वनि या शब्द करना। २. प्रशंसा करना। ३. ललकारना या पुकारना। ४. उल्लेख करना। हवाला देना (को०)।

संशम—संज्ञा पुं० [सं०] १. पूर्ण तुष्टि। कामना की पूर्ण निवृत्ति।

संशमन—संज्ञा पुं० [सं०] १. शांत करना। निवृत्त करना। २. नष्ट करना। न रहने देना। ३. वह औषध जो दोषों को बिना घटाए बढ़ाए शोधन करे। ४. स्थिर करना।

संशमनवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वे ओषधियाँ जो संशमन करें। जैसे,—देवदारु, कुट, हल्दी आदि।

संशय—संज्ञा पुं० [सं०] १. लेट रहना। पड़ रहना। २. दो या कई बातों में से किसी एक का भी मन में न बैठना। अनिश्चयात्मक ज्ञान। अनिश्चय। संदेह। शक। शुबहा। दुबधा।

विशेष—यह न्याय के सोलह पदार्थों में से एक है।

३. आशंका। खतरा। डर। जैसे,—प्राण का संशय में पड़ना। ४. संदेह नामक काव्यालंकार। ५. संभावना (को०)। ६. विवाद का विषय (को०)।

यौ०—संशयकर = कठिनाई में डालनेवाला। खतरे से भरा हुआ। विपत्तिकर। संशयगत = जो विपत्ति या खतरे में पड़ गया हो। संशयच्छेद = संशय का विनाश। संदेह नाश। संशयच्छेदी = संशय दूर करनेवाला। संदेह का निराकरण करनेवाला। संशयसम। संशयस्थ।

संशयसम—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय दर्शन में २४ जातियों अर्थात् खंडन की असंगत युक्तियों में से एक। वादी के दृष्टांत को लेकर उसमें साध्य और असाध्य दोनों धर्मों का आरोप करके वादी के साध्य विषय को संदिग्ध सिद्ध करने का प्रयत्न।

विशेष—वादी कहता है—'शब्द अनित्य है, उत्पत्ति धर्मवाला होने से, घड़े के समान'। इसपर यदि प्रतिवादी कहे-'शब्द नित्य और अनित्य दोनों हुआ, मूर्त होने के कारण, घट और घटत्व के समान' तो उसका यह असंगत उत्तर 'संशयशम' होगा।

संशयस्थ—वि० [सं०] १. जो संदेह में पड़ा हो। २. जो खतरे में पड़ा हो (को०)।

संशयाक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] १. संशय का दूर होना। २. एक प्रकार का काव्यालंकार।

संशयात्मक—वि० [सं०] जिसमें संदेह हो। संदिग्ध। शुबहे का। अनिश्चित।

संशयात्मा—संज्ञा पुं० [सं० संशयात्मन्] जिसका मन किसी बात पर विश्वास न करे। विश्वासहीन। संदेहवादी।

संशयान—वि० [सं०] संदेह करनेवाला। संशयालु (को०)।

संशयापन्न—संज्ञा पुं० [सं०] संशययुक्त। अनिश्चित।

संशयालु—वि० [सं०] १. विश्वास न करनेवाला। २. बात बात में संदेह करनेवाला। शक्की।

संशयावह—वि० [सं०] १. संशययुक्त। संदेहास्पद। २. खतरनाक।

संशयित—वि० [सं०] १. संशययुक्त। दुबधा में पड़ा हुआ। २. संदिग्ध। अनिश्चित। ३. आपत्तिग्रस्त। खतरे में पड़ा हुआ (को०)।

संशयिता—संज्ञा पुं० [सं० संशयितृ] संशयकर्ता। संशय करनेवाला।

संशयी—वि० [सं० संशयिन्] १. संशय करनेवाला। संदेह करनेवाला। २. शक्की।

संशयोच्छेदी—वि० [सं० संशयोच्छेदिन्] संदेह को दूर करनेवाला। संदेहनाशक।

संशयोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उपमा अलंकार जिसमें कई वस्तुओं के साथ समानता संशय के रूप में कही जाती है।

संशयोपेत—वि० [सं०] संशययुक्त। संदिग्ध। अनिश्चित।

संशर—संज्ञा पुं० [सं०] तोड़ना। विशीर्ण करना। चूर्ण करना (को०)।

संशरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. दलित करना। चूर्ण करना। २. भंग करना। तोड़ना। ३. युद्ध का आरंभ। दे० 'संसरण'। ४. शरण में जाना। पनाह लेना।

संशारुक—वि० [सं०] १. तोड़नेवाला। भंग करनेवाला। २. दलन या मर्दन करनेवाला।

संशासन—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा शासन। उत्तम राज्यप्रबंध। २. आदेश। मंत्र। अनुशासन।

संशासित—वि० [सं०] १. सुशासित। अच्छे ढंग से शासित। २. आदिष्ट। अनुशासित। निर्देश प्राप्त (को०)।

संशित—वि० [सं०] १. सान पर चढ़ाया हुआ। तेज किया हुआ। चोखा या तीखा किया हुआ। टेया हुआ। तीक्ष्ण। तेज। २. उद्यत। उतारू। तत्पर। आमादा। ३. दक्ष। निपुण। पटु। ४. नोकदार। नुकीला। अनीदार। ५. सर्वथा पूरा किया हुआ। निष्पन्न (को०)। ६. निर्णीत। सुनिश्चित (को०)। ७. अपने संकल्प को दृढ़तापूर्वक निभानेवाला (को०)। ८. कर्कश। कटु। अप्रिय। कठोर। जैसे,—संशित वचन।

यौ०—संशितवचन = (१) अप्रिय कथन। (२) कटुवक्ता। संशितवाक् = कटुभाषी। संशितव्रत।

संशितव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो नियम व्रत के पालन में पक्का हो। कठोरता से नियम या व्रत आदि का पालन करनेवाला।

संशितात्मा—वि० [सं० संशितात्मन्] १. दृढ़ मनवाला। २. अनुशासित मनवाला (को०)।

संशिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संशय। संदेह। शक। २. खूब टेना या तेज करना। खूब सान पर चढ़ाना।

संशिष्ट—वि० [सं०] बचा हुआ। बाकी रहा हुआ।

संशोत—वि० [सं०] १. जो ठंढा हुआ हो। २. ठंढ से जमा हुआ।

संशीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] संदेह। संशय। अनिश्चय (को०)।

संशीलन—संज्ञा पुं० [सं०] १. नित्य अभ्यास। नियमित अभ्यास। २. नित्य संपर्क या साहचर्य।

संशुद्ध—वि० [सं०] १. यथेष्ट शुद्ध। विशुद्ध। २. साफ किया हुआ। स्वच्छ या शुद्ध किया हुआ। चुकाया हुआ। चुकता किया हुआ। बेबाक (ऋण)। ४. जाँचा हुआ। परीक्षित। ५. अपराध या दंड आदि से मुक्त किया हुआ। ६. जो प्रायश्चित्त आदि विधानों द्वारा दोषरहित हो। जैसे, —संशुद्ध पातक।

यौ०—संशुद्धकिल्विष = निष्पाप। पापमुक्त। संशुद्धपातक = प्रायश्चित्त द्वारा पापमुक्त।

संशुद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूरी सफाई। पूरी पवित्रता। २. शरीर की सफाई। ३. शुद्ध करना। स्वच्छ या विमल करना (को०)। ४. संशोधन। सुधार (को०)। ५. (ऋण का) भुगतान या परिशोध (को०)।

संशुष्क—वि० [सं०] १. बिल्कुल सूखा हुआ। खुश्क। २. नीरस। ३. जो सहृदय न हो। अरसिक। ४. कुम्हलाया हुआ (को०)।

संशून—वि० [सं०] अत्यंत शोथयुक्त या फूला हुआ [को०]।

संश्रृंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० संश्रृङ्गी] एक प्रकार की गौ। वह गाय जिसके श्रृंग आमने सामने घूमे हों [को०]।

संशोधक—संज्ञा पुं० [सं०] १. शोधन करनेवाला। सुधारनेवाला। दुरुस्त या ठीक करनेवाला। २. संस्कार करनेवाला। बुरी से अच्छी दशा में लानेवाला। ३. अदा करनेवाला। चुकानेवाला।

संशोधन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संशोधनीय, संशोधित, संशुद्ध, संशोध्य] १. शुद्ध करना। साफ करना। स्वच्छ करना। २. दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। संस्कार करना। त्रुटि या दोष दूर करना। कसर या ऐब निकालना। ३. चुकता करना। अदा करना। बेबाक करना। (ऋण आदि)।

संशोधन[२]—वि० [सं०] १. जिससे शुद्ध किया जाय। सुधारने, शुद्ध करने, संस्कार करने का साधन। सुधारनेवाला। २. विकारों (वात, पित्तादि) को दूर करनेवाला [को०]।

संशोधनीय—वि० [सं०] १. साफ करने योग्य। २. सुधारने या ठीक करने योग्य। ३. कर्ज आदि जो चुकता किया जाय। बेबाक करने योग्य (को०)।

संशोधित—वि० [सं०] १. खूब शुद्ध किया हुआ। २. सुधारा हुआ। ठीक किया हुआ। दुरुस्त किया हुआ। ३. बेबाक किया हुआ। चुकाया हुआ (को०)।

संशोधी—वि० [सं० संशोधिन्] [वि० स्त्री० संशोधिनी] १. सुधारनेवाला। दुरुस्त करनेवाला। ३. चुकानेवाला। जैसे,—ऋणसंशोधी (को०)।

संशोध्य—वि० [सं०] १. साफ करने योग्य। २. सुधारने या ठीक करने योग्य। ३. जिसका सुधार करना हो। ४. जिसे साफ करना हो। ४. जिसे चुकाना या बेबाक करना हो (को०)।

संशोभित—वि० [सं०] सजा हुआ। शोभित। अलंकृत [को०]।

संशोष—संज्ञा पुं० [सं०] १. शोषण। सोखना। जज्ब करना। २. शुष्क करना। सुखाना [को०]।

संशोषण[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संशोषणीय, संशोषित, संशोष्य] १. बिल्कुल सोखना। जज्ब करना। २. सुखाना।

संशोषण[२]—वि० सुखाने या सोखनेवाला [को०]।

संशोषणीय—वि० [सं०] संशोषण योग्य। सोखने योग्य।

संशोषित—वि० [सं०] सोखा या सुखाया हुआ।

संशोषी—वि० [सं० संशोषिन्] १. सोखने या जज्ब करनेवाला। २. सुखा देनेवाला। जैसे, बुखार, सुखंडी आदि रोग [को०]।

संशोष्य—वि० [सं०] सोखने योग्य। जिसे सोखना या सुखाना हो।

संश्चत्—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्रजाल। बाजीगरी। माया। जादू। २. छल। छद्म। धोखा। दाँवपेच। ३. ऐंद्रजालिक। जादूगर। मायिक [को०]।

संश्यान—संज्ञा पुं० [सं०] १. (शीत से) ठिठुरा हुआ। सिकुड़ा हुआ। २. जमा हुआ। ३. लिपटा या लपेटा हुआ (को०)। ४. अवसन्न (को०)।

संश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १. संयोग। मेल। संबंध। समागम। लगाव। संपर्क। ३. आश्रय। शरण। पनाह। ४. सहारा। अवलंब। ५. राजाओं का परस्पर रक्षा के लिये मेल। अभिसंधि।

विशेष—स्मृतियों में यह राजा के छह गुणों में कहा गया है और दो प्रकार का माना गया है—(१) शत्रु से पीड़ित हो कर दूसरे राजा की सहायता लेना; और (२) शत्रु से पहुँचनेवाली हानि की आशंका से किसी दूसरे बलवान् राजा का आश्रय लेना।

६. पनाह की जगह। शरण स्थान। ७. रहने या ठहरने की जगह। घर। ८. विश्राम की जगह। विश्रामस्थान (को०)। ९. उद्देश्य। लक्ष्य। मतलब। १०. किसी वस्तु का अंग। हिस्सा।

संश्रयण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संश्रयणीय, संश्रयी, संश्रित] १. सहारा लेना। अवलंब पकड़ना। २. शरण लेना। पनाह लेना। ३. आसक्ति (को०)।

संश्रयणीय—वि० [सं०] १. सहारा लेने योग्य। २. शरण लेने योग्य।

संश्रयी[१]—वि० [सं० संश्रयिन्] [वि० स्त्री० संश्रयिणी] १. सहारा लेनेवाला। २. शरण लेनेवाला।

संश्रयी[२]—संज्ञा पुं० भृत्य। नौकर।

संश्रव[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुनना। कान देना। २. अंगीकार। स्वीकार। मानना। रजामंदी। ३ वादा। प्रतिज्ञा। करार।

संश्रव[२]—वि० जो सुना जा सके। सुनाई पड़नेवाला।

संश्रव[३]—संज्ञा पुं० [सं० संश्रवस्] ख्याति। प्रसिद्धि। गौरव [को०]।

संश्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संश्रवणीय, संश्रुत] १. सुनना। खूब कान देना। २. अंगीकार करना। स्वीकार करना। ३. वादा करना। करार करना। ४. श्रवण का क्षेत्र। जहाँ तक कान सुन सके वह क्षेत्र या दूरी (को०)। ५. कान। श्रवण (को०)।

संश्रांत—वि० [सं० संश्रान्त] बिल्कुल थका हुआ। शिथिल। पसमाँदा।

संश्राव—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संश्रावणीय, संश्रावित, संश्राव्य] १. कान देना। सुनना। २. अंगीकार। स्वीकार।

संश्रावक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुननेवाला। श्रोता। २. चेला। शिष्य।

संश्रावयिता—वि० [सं० संश्रावयितृ] घोषित करनेवाला। सुनानेवाला [को०]।

संश्रावित—वि० [सं०] १. सुनाया हुआ। २. जोर जोर से पढ़कर सुनाया हुआ।

संश्राव्य—वि० [सं०] १. सुनाने योग्य। २. सुनाई पड़नेवाला।

संश्रित[1]—वि० [सं०] १. जुड़ा या मिला हुआ। संयुक्त। २. लगा हुआ। टिका वा ठहरा हुआ। ४. आलिंगित। संश्लिष्ट। गले या छाती से लगाया हुआ। ५. भागकर शरण में गया हुआ। जिसने जाकर पनाह ली हो। ६. जिसने आश्रय ग्रहण किया हो। जो निर्वाह के लिये किसी के पास गया हो। ७. जिसने सेवा स्वीकार की हो। ८. जो किसी बात के लिये दूसरे पर निर्भर हो। आसरे या भरोसे पर रहनेवाला। पराधीन। ९. आसक्त। परायण (को०)। १०. न्यस्त। निहित (को०)। ११. उपयुक्त। उचित (को०)। १२. अंगीकृत। गृहीत। स्वीकृत (को०)। १३. संबंधी। विषयक (को०)।

संश्रित[2]—संज्ञा पुं० सेवक। भृत्य। परावलंबी व्यक्ति।

संश्रुत—संज्ञा पुं० [सं०] १. खूब सुना हुआ। २. खूब पढ़कर सुनाया हुआ। ३. स्वीकृत। माना हुआ। मंजूर। ४. प्रतिज्ञात। वादा किया हुआ (को०)।

संश्लिष्ट[1]—वि० [सं०] १. खूब मिला हुआ। जड़ा हुआ। सटा हुआ। २. एक साथ किया हुआ। ३. संमिलित। मिश्रित। ४. एक में मिलाया हुआ। गड्डबड्ड। अस्पष्ट। अनिश्चित। ५. आलिंगित। परिरंभित। भेंटा हुआ। ६. सज्जित। युक्त। सहित (को०)।

यौ०—संश्लिष्ट कर्म = वे काम जिनमें अच्छाई बुराई का पता न चल सके। संश्लिष्टकर्मा = अविवेकी। भले बुरे की पहचान न करनेवाला।

संश्लिष्ट[2]—संज्ञा पुं० १. राशि। ढेर। समूह। २. एक प्रकार का चँदोवा या मंडप। (वास्तु)।

संश्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेल। मिलाप। संयोग। २. मिलान। सटाव। ३. आलिंगन। परिरंभण। भेंटना। ४. चर्म रज्जु। वरत्रा। बंधन। पाश (को०)। ५. जोड़। संधि (को०)।

संश्लेषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संश्लेषणीय, संश्लेषित, संश्लिष्ट] १. एक में मिलाना। जुटाना। सटाना। २. लगाना। अटकाना। टाँगना। ३. संबद्ध करना (को०)। ४. बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु।

संश्लेषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'संश्लेषण'।

संश्लेषित—वि० [सं०] १. मिलाया हुआ। जोड़ा हुआ। सटाया हुआ। २. लगाया हुआ। अटकाया हुआ। ३. आलिंगन किया हुआ।

संश्लेषी—वि० [सं० संश्लेषिन्] [वि० स्त्री० संश्लेषिणी] १. मिलानेवाला। जोड़नेवाला। २. आलिंगन करनेवाला। भेंटनेवाला।

संश्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'संश्चत्' [को०]।

संसंग—संज्ञा पुं० [सं० संसङ्ग] संयोग। लगाव। संबंध [को०]।

संसंगी—वि० [सं० संसङ्गिन्] १. साथ लगनेवाला। २. संसर्ग या संपर्क में आनेवाला [को०]।

संस(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० संशय] संशय। आशंका। उ०—करुणा करी छाँड़ि पगु दीनो जानी सुख मन संस। सूरदास प्रभु असुर निकंदन दुष्टन के उर गंस।—सूर (शब्द०)।

संस†[2]—संज्ञा पुं० [देश० या सं० शस्य, प्रा० सस्स (= पैदावार, फसल)] उन्नति। बढ़ती। वृद्धि [को०]।

संसइ(पु)†[1]—संज्ञा पुं० [सं० संशय] दे० 'संशय'।

संसइ†[2]—वि० [सं० संशयिन्, प्रा० संसइ] संशययुक्त। शंका करनेवाला।

संसउ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० संशय] दे० 'संशय'। उ०—अजहूँ कछु संसउ मन मोरे। करहु कृपा बिनवौं कर जोरे।—मानस, १।१०९।

संसकिरत†—संज्ञा स्त्री० [सं० संस्कृत] संस्कृत भाषा। उ०—भाषा तो संतन ने कहिया, संसकिरत ऋषिन की बानी है।—कबीर रे०, पृ० ४६।

संसक्त—वि० [सं०] १. लगा हुआ। सटा हुआ। मिला हुआ। २. भिड़ा हुआ (शत्रु से)। ३. संबद्ध। जुड़ा हुआ। ४. प्रवृत्त। लगा हुआ। मशगूल। लिप्त। लीन। ५. आसक्त। लुभाया हुआ। लुब्ध। प्रेम में फँसा हुआ। ६. विषय वासना में लीन। ७. युक्त। सहित। पूर्ण। ८. सघन। घना। ९. अव्यवस्थित। मिश्रित (को०)। १०. समीपवर्ती। निकटवर्ती (को०)। ११. अनवरत। लगातार। निरंतर (को०)। १२. अस्पष्ट (वाणी) (को०)।

यौ०—संसक्तचेता, संसक्तमना = जिसका मन किसी में आसक्त या लीन हो। संसक्तयुग = जुए में नँधा हुआ।

संसक्त सामंत—संज्ञा पुं० [सं० संसक्त सामन्त] पराशर स्मृति के अनुसार वह सामंत जिसकी थोड़ी बहुत जमीन चारों ओर हो और कहीं पूरे गाँव भी हों।

संसक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लगाव। मिलान। २. जोड़। बंध। ३. संबंध। ४. आसक्ति। लगन। ५. लीनता। ६. प्रवृत्ति।

संसगर†—वि० [सं० शस्य (= अन्न, फसल) + आगार] १. उपजाऊ। जिसमें पैदावार अधिक हो। २. लाभदायक। फायदेमंद। बरकतवाला।

संसज्जमान वि० [सं०] १. साथ लगनेवाला। अनुषंगी। २. स्खलित। अस्पष्ट (स्वर)। जो शोक के कारण स्पष्ट न हो (वाणी)। ३. जो तैयार हो [को०]।

संसत्, संसद्[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. समाज। सभा। मंडली। २. राजसभा। दरबार। ३. धर्मसभा। न्याय सभा। न्यायालय।

अदालत। ४. चौबीस दिनों का एक यज्ञ। ५. समूह। राशि (को०)। ६. किसी देश की चुने हुए जन प्रतिनिधियों की सर्वोच्च सभा (अं० पार्लमेंट)। विशेष दे० 'पार्लमेंट'।

संसत्, संसद्[२]—वि० १. साथ साथ बैठनेवाला। २. यज्ञ में बैठने या भाग लेनेवाला (को०)।

संसद—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक यज्ञ जो २४ दिन का होता था। २. दे० 'पार्लमेंट'।

संसदन—संज्ञा पुं० [सं०] विषाद। खेद। खिन्नता (को०)।

संसनाना—क्रि० अ० [अनुध्व०] दे० 'सनसनाना'।

संसय—संज्ञा पुं० [सं० संशय] दे० 'संशय'। उ०—अस निज हृदय विचारि तजु संसय भजु रामपद।—मानस, १।११५।

संसरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संसरणीय, संसरित, संसृत] १. चलना। सरकना। गमन करना। २. सेना की अबाध यात्रा। ३. एक जन्म से दूसरे जन्म में जाने की परंपरा। भवचक्र। ४. संसार। जगत्। ५. राजपथ। सड़क। रास्ता। ६. नगर के तोरण के पास यात्रियों के लिये विश्राम स्थान। शहर के फाटक के पास मुसाफिरों के ठहरने का स्थान। धर्मशाला। सराय। ७. युद्ध का आरंभ। लड़ाई का छिड़ना। ८ वह मार्ग जिससे होकर बहुत दिनों से लोग या पशु आते जाते हों।

विशेष—बृहस्पति ने लिखा है कि ऐसे मार्ग पर चलने से कोई (जमीदार भी) किसी को नहीं रोक सकता।

संसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. संबंध। लगाव। संपर्क। २. मेल। मिलाप। संयोग। ३. सहवास। समागम। संग। साथ। ४. स्त्री पुरुष का सहवास। मैथुन। ५. घालमेल। घपला। अस्तव्यस्तता। ६. वात, पित्तादि में से दो का एक साथ प्रकोप। (सुश्रुत)। ७. जायदाद का एक में होना। इजमाल शराकत। साझेदारी। ८. वह विंदु जहाँ एक रेखा दूसरी को काटती हो। (शुल्वसूत्र)। ९. रब्त जब्त। परिचय। घनिष्टता। १०. समवाय (को०)। ११. अवधि (को०)। १२. स्थायित्व। स्थिरता। सातत्य (को०)।

संसर्गज—वि० [सं०] जो संसर्ग या लगाव से उत्पन्न हो (को०)।

संसर्गदोष—संज्ञा पुं० [सं०] वह बुराई जो किसी के साथ रहने से आवे। संगत का दोष।

संसर्गविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लोगों से मिलने जुलने का हुनर। व्यवहारकुशलता। २. सामाजिक विज्ञान। समाज विज्ञान (को०)।

संसर्गाभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १. संसर्ग का अभाव। संबंध का न होना। २. न्याय में अभाव का एक भेद। किसी वस्तु के संबंध में दूसरी वस्तु का अभाव। जैसे,—घर में घड़ा नहीं है। विशेष दे० 'अभाव'।

संसर्गी[१]—वि० [सं० संसर्गिन्] [वि० स्त्री० संसर्गिणी] १. संसर्ग या लगाव रखनेवाला। २. संसर्ग प्राप्त। संयुक्त। युक्त (को०)। ३. परिचित। रब्त जब्तवाला। हेली मेली (को०)।

संसर्गी[२]—संज्ञा पुं० १. मित्र। सहचर। २. वह जो पैतृक संपत्ति का विभाग हो जाने पर भी अपने भाइयों या कुटुंबियों आदि के साथ रहता हो।

संसर्गी[३]—संज्ञा स्त्री० शुद्धि। सफाई।

संसर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संसर्जनीय, संसर्जित, संसर्ज्य] १. संयोग होना। मिलना। २. जुड़ना। संबद्ध होना। ३. अपनी ओर मिलाना। राजी करना। ४. हटाना। दूर करना। त्याग करना। छोड़ना। ५. शुद्धता। स्वच्छता। सफाई (को०)।

संसर्जनीय—वि० [सं०] जो संसर्जन के योग्य हो।

संसर्जित—वि० [सं०] जिसका संसर्जन किया गया हो।

संसर्ज्य—वि० [सं०] जो संसर्जन के योग्य हो।

संसर्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. रेंगना। सरकना। २. खिसकना। धीरे धीरे चलना। ३. वह अधिक मास जो क्षय मासवाले वर्ष में होता है।

संसर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संसर्पणीय, संसर्पित, संसर्पी] १. रेंगना। सरकना। २. खिसकना। धीरे धीरे चलना। ३. चढ़ना। ४. सहसा आक्रमण। अचानक हमला।

संसर्पणीय—वि० [सं०] जो रेंगने, खिसकने, चढ़ने या एकाएक आक्रमण के योग्य हो।

संसर्पित—वि० [सं०] १. जिसने संसर्पण किया हो। २. जिसपर संसर्पण किया जाय।

संसर्पी—वि० [सं० संसर्पिन्] [वि० स्त्री० संसर्पिणी] १. रेंगनेवाला। सरकनेवाला। २. खिसकने या धीरे धीरे चलनेवाला। ३. फैलनेवाला। संचार करनेवाला। ४. पानी के ऊपर तैरनेवाला। उतरानेवाला (सुश्रुत)।

संसह—वि० [सं०] बराबरी वाला। जो समान हो (को०)।

संसा(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० संशय] दे० 'संशय'। उ०—सत जोजन पर पटक्यो कंसा। भो अप्रान सम वाही संसा।—गोपाल (शब्द०)।

संसा[२]—संज्ञा पुं० [सं० श्वास, हिं० साँस, साँसा] श्वास। प्राणवायु। उ०—कबीर संसा जीव में, कोई न कहै समुझाइ। नाना वाणी बोलता सो कित गया विलाइ।—कबीर ग्रं०, पृ० ३१।

संसा[३]—संज्ञा पुं० [हिं० सँड़सा] दे० 'सँड़सा'। उ०—संसा खूटा सुख भया मिल्या पियारा कंत।—कबीर ग्रं०, पृ० १५।

संसाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. जमावड़ा। गोष्ठी। २. सभा। समाज। मंडली।

संसादन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संसादनीय, संसादित, संसाद्य] १. जुटाना। एकत्र करना। २. तरतीब से लगाना। क्रमबद्ध करना।

संसादनीय—वि० [सं०] संसादन करने योग्य। जिसका संसादन किया जाय।

संसादित—वि० [सं०] १. एकत्र किया हुआ। जुटाया हुआ। २. तरतीब दिया हुआ। लगाया हुआ। सजाया हुआ।

संसाधक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पूर्णतया साधन करनेवाला। संपन्न करनेवाला। अंजाम देनेवाला। २. जीतनेवाला। वश में करनेवाला।

संसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संसाधनीय, संसाधित, संसाध्य] १. अच्छी तरह करना। पूरा करना। अंजाम देना। २. तैयारी। आयोजन। ३. जीतना। दमन करना। वश में करना।

संसाधनीय—वि० [सं०] १. साधन के योग्य। पूरा करने योग्य। २. जीतने योग्य। वश में लाने योग्य।

संसाध्य—वि० [सं०] १. पूरा करने योग्य। २. जीतने योग्य। दमन करने योग्य। ३. जिसे करना हो। करने योग्य। ४. जिसे जीतना या वश में करना हो।

संसार—संज्ञा पुं० [सं०] १. लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाते रहना। २. बार बार जन्म लेने की परंपरा। आवागमन। भवचक्र। जगत्। दुनिया। विश्व। सृष्टि। ४. इहलोक। मर्त्यलोक। ५. मायाजाल। माया का प्रपंच। जीवन का जंजाल। ६. गृहस्थी। ७. दुर्गंध खदिर। विट् खदिर। ८. मार्ग। पथ (को०)।

यौ०—संसारगमन = जन्म मरण का चक्कर। संसारगुरु। संसारचक्र। संसारतिलक। संसारपथ। संसारपदवी। संसारबंधन = जागतिक जीवन का पाश या मोह। संसार भावन। संसार मार्ग। संसारमोक्ष = संसार से छुटकारा। संसारमोक्षण = संसारयात्रा। संसारवर्जित = सांसारिकता से मुक्त। संसारवर्त्म = संसार का मार्ग। संसारसंग = सांसारिकता। संसारसुख = संसार का आनंद। भौतिक सुख।

संसारगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १. संसार को उपदेश देनेवाला। जगद्गुरु। २. कामदेव। स्मर।

संसारचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. जन्म पर जन्म लेने की परंपरा। नाना योनियों में भ्रमण। २. माया का जाल। दुनिया का चक्कर। प्रपंच। ३. जगत् की दशा का उलट फेर।

संसारण—संज्ञा पुं० [सं०] चलाना। सरकाना। गति देना।

संसारतिलक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का उत्तम चावल। उ०—कोरहन, बड़हन, जड़हन, मिला। औ संसारतिलक खँडबिला।—जायसी (शब्द०)।

संसारपथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. सांसारिक प्रपंच। सांसारिक जीवन। २. संसार में आने का मार्ग। स्त्रियों की जननेंद्रिय।

संसारपदवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] संसारपथ। संसारमार्ग [को०]।

संसारभावन—संज्ञा पुं० [सं०] संसार को दुःखमय जानना।

विशेष—यह ज्ञान चार प्रकार का है—नरकगति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति और देवगति।

संसारमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्रियों की जननेंद्रिय। २. सांसारिक जीवन (को०)।

संसारमोक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो भवबंधन से मुक्त करे। २. संसार से छुटकारा [को०]।

संसारयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संसार में रहना। जीवन बिताना। २. जिंदगी। जीवन [को०]।

संसारसारथि—संज्ञा पुं० [सं०] १. संसारपथ को पार करानेवाला। २. शिव का एक नाम।

संसारसरणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'संसारमार्ग' [को०]।

संसारी[1]—वि० [सं० संसारिन्] [वि० स्त्री० संसारिणी] १. संसार संबंधी। लौकिक। जैसे,—संसारी बातें। २. संसार में रहनेवाला। संसार की माया में फँसा हुआ। दुनिया के जंजाल से घिरा हुआ। जैसे,—संसारी जीवों के कल्याण के लिये यह कथा है। ३. लोकव्यवहार में कुशल। दुनियादार। ४. बार बार जन्म लेनेवाला। भवचक्र में बँधा हुआ। जैसे,—संसारी आत्मा। ५. संसरण करनेवाला। दूर तक जाने या व्याप्त होनेवाला (को०)।

संसारी[2]—संज्ञा पुं० १. प्राणी। जीव। २. जीवात्मा [को०]।

संसि (पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शस्य] दे० 'शस्य'। उ०—जिन संसिन को सींच तुम, करी सुहरी बहारि।—दीन० ग्रं०, पृ० २०१।

संसिक्त—वि० [सं०] खूब सींचा हुआ। जिसपर खूब पानी छिड़का गया हो। आर्द्र। तर।

संसिद्ध—वि० [सं०] १. पूर्णतया संपन्न। अच्छी तरह किया हुआ। २. प्राप्त। लब्ध। ३. अच्छी तरह सीझा या पका हुआ। (भोजन)। ४. जो नीरोग हो गया हो। चंगा। स्वस्थ। ५. तैयार। उद्यत। प्रस्तुत। ६. किसी बात में पक्का। कुशल। निपुण। ७. जिसका योग सिद्ध हो गया हो। मुक्त। ८. कृतसंकल्प (को०)। ९. तोषयुक्त। संतुष्ट (को०)।

संसिद्धार्थ—वि० [सं०] जिसका उद्देश्य या अभिप्राय सिद्ध हो गया हो [को०]।

संसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सम्यक् पूर्ति। किसी कार्य का अच्छी तरह पूरा होना। २. कृतकार्यता। सफलता। कामयाबी। ३. स्वस्थता। ४. पक्वता। सीझना। ५. पूर्णता। ६. मुक्ति। मोक्ष। ७. परिणाम। आखिरी नतीजा। ८. पक्की बात। निश्चित बात। न टलनेवाला वचन। ९. निसर्ग। प्रकृति। १०. स्वभाव। आदत। ११. मदमस्त स्त्री। मदोग्रा।

संसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सँड़सी] दे० 'सँड़सी'।

संसीमित—वि० [सं० सम् + सीमित] पूर्णतः संकुचित। जो सीमा के भीतर ही हो। उ०—ये राज्य अपने क्षेत्र में ही संसीमित रहते थे।—भा० सैन्य०, पृ० ५।

संसुखित—वि० [सं०] पूर्णतः तुष्ट। पूर्ण आनंदित [को०]।

संसुप्त—वि० [सं०] खूब सोया हुआ।

संसूचक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संसूचिका] १. प्रकट करनेवाला। २. जतानेवाला। ३. भेद खोलनेवाला। ४. समझाने बुझानेवाला। कहने सुननेवाला। ५. डाँटने डपटनेवाला।

संसूचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संसूचनीय, संसूचित, संसूच्य] १. अच्छी तरह प्रकट करना। जाहिर करना। २. बात खोलना।

भेद खोलना । ३. कहना सुनना । ४. डाँटना डपटना । भला बुरा कहना । भर्त्सना करना । फटकारना । ५. जताना । इंगित करना । संकेतित करना ।

संसूचित—वि० [सं०] १. प्रकट किया हुआ । जाहिर किया हुआ । २. डाँटा डपटा हुआ । जिसे कुछ कहा सुना गया हो । ३. जो सूचित किया गया हो । जताया हुआ ।

संसूची—वि० [सं० संसूचिन्] [वि० स्त्री० संसूचिनी] १. प्रकट करनेवाला । २. जतानेवाला । ३. भला बुरा कहनेवाला । फटकारनेवाला । दे० 'संसूचक' ।

संसूच्य—वि० [सं०] १. प्रकट करने योग्य । २. जताने लायक । ३. जिसे जताना या प्रकट करना हो । ४. भला बुरा कहने योग्य । जिसे भला बुरा कहना हो; या जिसके लिये भला बुरा कहना हो ।

संसृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जन्म पर जन्म लेने की परंपरा । आवागमन । भवचक्र । २. संसार । जगत् । उ०—देव पाय संताप घन छोर संसृति दीन भ्रमत जग जोनि नहिं कोपि त्राता । —तुलसी (शब्द०) । ३. अनवरतता । सातत्य । नैरंतर्य । प्रवाह (को०) । ४. गति । दशा । अवस्था (को०) ।

संसृष्ट[1]—वि० [सं०] १. एक साथ उत्पन्न या आविर्भूत । २. एक में मिला जुला । संश्लिष्ट । मिश्रित । ३. संबद्ध । परस्पर लगा हुआ । ४. अंतर्भूत । अंतर्गत । शामिल । ५. जो जायदाद का बँटवारा हो जाने पर भी संमिलित हो गया हो (भाई आदि) । ६. हिला मिला हुआ । बहुत मेल किए हुए । बहुत परिचित । ७. संपन्न किया हुआ । अंजाम दिया हुआ । ८. किया हुआ । बनाया हुआ । रचित । निर्मित । ९. वमनादि द्वारा शुद्ध किया हुआ । कोठा साफ किया हुआ । १०. जुटाया हुआ । इकट्ठा किया हुआ । संगृहीत । ११. स्वच्छ वस्त्रादि से युक्त (को०) । १२. मिला जुला । विभिन्न प्रकार का (को०) । १३. प्रभावित । अभिभूत । आक्रांत । जैसे, रोगसंसृष्ट ।

यौ०—संसृष्टकर्मा = भले बुरे हर प्रकार के कर्मोंवाला । जिसके कर्म भले और बुरे दोनों हों । संसृष्टभाव = आत्मीयता । निकट संपर्क । संसृष्टमैथुन । संसृष्टरूप = (१) मिले जुले रूप या आकृतिवाला । (२) घालमेल वाला । मिलावटी । संसृष्टहोम ।

संसृष्ट[2]—संज्ञा पुं० १. घनिष्ठता । हेलमेल । निकट का संबंध । २. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।

संसृष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] 'संसृष्टत्व' [को०] ।

संसृष्टत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. संसृष्ट होने का भाव । २. स्मृति के अनुसार जायदाद का बँटवारा हो जाने के पीछे फिर एक में होना या रहना ।

संसृष्टमैथुन—वि० [सं०] [वि० स्त्री० संसृष्टमैथुन] १. जो मैथुनरत हो । २. जो संभोग कर चुका हो । जो मैथुन कार्य संपन्न कर चुका हो [को०] ।

संसृष्टहोम—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि और सूर्य की एक ही में मिली हुई आहुति ।

संसृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक साथ उत्पत्ति या आविर्भाव । २. एक में मेल या मिलावट । मिश्रण । ३. परस्पर संबंध । लगाव । ४. हेलमेल । घनिष्ठता । मेल मुआफिकत । ५. बनाने की क्रिया या भाव । संयोजन । रचना । ६. एकत्र करना । इकट्ठा करना । जुटाना । ७. संग्रह । समूह । राशि । ८. दो या अधिक काव्यालंकारों का ऐसा मेल जिसमें सब परस्पर निरपेक्ष हों; अर्थात् एक दूसरे के आश्रित, अंतर्भूत आदि न हों । ९. सहभागिता । साझेदारी (को०) । १०. एक ही परिवार में मिल जुलकर रहना । दे० 'संसृष्टत्व'—२ ।

संसृष्टी—संज्ञा पुं० [सं० संसृष्टिन्] १. बँटवारे के बाद फिर से एक में हो जानेवाले संबंधी । २. साझीदार । भागीदार [को०] ।

संसेक—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी तरह पानी आदि का छिड़काव या सिंचाई ।

संसेचन—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी तरह तर करना, सींचना या छिड़काव करना [को०] ।

संसेवन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संसेवित, संसेवनीय, संसेव्य] १. पूर्णतया सेवन । हाजिरी में रहना । नौकरी बजाना । २. खूब इस्तेमाल करना । व्यवहार करना । उपयोग में लाना । बरतना । ३. लगाव में रहना । संपर्क रखना (को०) ।

संसेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. व्यवहार की क्रिया या भाव । २. पूजा । अर्चना । ३. हाजिरी । सेवा । ४. प्रवृत्ति । झुकाव [को०] ।

संसेवित—वि० [सं०] १. भलीभाँति उपयोग में लाया हुआ । २. अच्छी तरह सेवा किया हुआ [को०] ।

संसेविता—वि० [सं० संसेवितृ] व्यवहार में लानेवाला । उपयोग में लानेवाला [को०] ।

संसेवी—वि० [सं० संसेविन्] १. व्यवहार करनेवाला । उपयोग करनेवाला । २. सेवा टहल करनेवाला [को०] ।

संसेव्य—वि० [सं०] १. सेवा या पूजा करने योग्य । सेव्य । २. व्यवहार्य [को०] ।

संसौ—संज्ञा पुं० [हिं० साँस] श्वास । प्राणवायु [को०] ।

संस्करण—संज्ञा पुं० [सं०] १. ठीक करना । दुरुस्त करना । सजाना । २. शुद्ध करना । सुधार करना । ३. परिष्कृत करना । सुंदर या अच्छे रूप में लाना । ४. द्विजातियों के लिये विहित संस्कार करना । ५. पुस्तकों की एक बार की छपाई । आवृत्ति (आधुनिक) । ६. शवदाह करना (को०) ।

संस्कर्तव्य—वि० [सं०] १. व्यवस्थित या तैयार करने योग्य । २. परिष्कार करने योग्य [को०] ।

संस्कर्ता—संज्ञा पुं० [सं०] १. संस्कार करनेवाला । २. शुद्ध करनेवाला । शोधक (को०) । ३. भोजन पकानेवाला । पाचक (को०) । ४. वह जो छाप या मुद्रा डालता हो (को०) ।

संस्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १. ठीक करना । दुरुस्ती । सुधार । २. दोष या त्रुटि का निकाला जाना । शुद्धि । ३. सजाना । अच्छे

या सुंदर रूप में लाना। ४. धो माँजकर साफ करना। परिष्कार। ५. बदन की सफाई। शौच। ६. मनोवृत्ति या स्वभाव का शोधन। मानसिक शिक्षा। मन में अच्छी बातों का जमाना। ७. शिक्षा, उपदेश, संगत, आदि का मन पर पड़ा हुआ प्रभाव। दिल पर जमा हुआ असर। जैसे,--जैसा लड़कपन का संस्कार होता है, वैसा ही मनुष्य का चरित्र होता है। ८ पूर्व जन्म की वासना। पिछले जन्म की बातों का असर जो आत्मा के साथ लगा रहता है (यह वैशेषिक के २४ गुणों में से एक है)। जैसे,--बिना पूर्व जन्म के संस्कार के विद्या नहीं आती। ९. पवित्र करना। धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना। १०. वे कृत्य जो जन्म से लेकर मरणकाल तक द्विजातियों के संबंध में आवश्यक होते हैं। वर्णधर्मानुसार किसी व्यक्ति के संबंध में होनेवाला विधान, रीति या रस्म।

विशेष--द्विजातियों के लिये षोडश या द्वादश संस्कार कहे गए हैं। मनु के अनुसार उनके नाम ये हैं--गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, उपनयन, केशांत, समावर्तन और विवाह इनमें कर्णवेध, विद्यारंभ, वेदारंभ और अंत्येष्टि कर्म की गणना करने से इनकी संख्या १६ हो जाती है।

११. मृतक की क्रिया। १२. इंद्रियों के विषयों के ग्रहण से उत्पन्न मन पर जमा हुआ प्रभाव। १२. मन द्वारा कल्पित या आरोपित विषय। भ्रांतिजन्य प्रतीति। प्रत्यय। (जैसी जगत् की, जो वास्तविक नहीं है।)।

विशेष--पंच स्कंधों में चौथा स्कंध 'संस्कार' है जो भवबंधन का कारण कहा गया है।

१३. साफ करने या माँजने का झाँवाँ, पत्थर आदि। झवाँ। १४. चमकाना (को०)। १५. व्याकरण की दृष्टि से शब्दों की विशुद्धि (को०)। १६. खाना बनाना। भोग्य पदार्थ तैयार करना (को०)। १७. छाप। प्रभाव (को०)। १८. उपनयन संस्कार। यज्ञोपवीत कर्म (को०)। १९. धार्मिक कृत्य या अनुष्ठान। २०. स्मरण शक्ति (को०)। २१. साथ साथ रखना (को०)। २२. पशुओं, पौधों आदि का पालन और रक्षण (को०)।

यौ०--संस्कारकर्ता=संस्कार करानेवाला। संस्कारज=संस्कार से उत्पन्न होनेवाला। संस्कारनाम=जो नाम संस्कार के समय दिया गया हो। संस्कारपूत=(१) शिक्षा के कारण परिष्कृत। (२) संस्कार द्वारा जो पवित्र किया गया हो। संस्कारभूषण। संस्काररहित=संस्कारहीन। संस्कारवर्जित। संस्कार-विशिष्ट=पाक द्वारा परिष्कृत। जो पाक क्रिया के कारण उत्तम बना हो। संस्कारसंपन्न। संस्कारहीन।

संस्कारक--संज्ञा पुं० [सं०] १. संस्कार करनेवाला। शुद्ध करनेवाला। ३. मन पर छाप डालनेवाला (को०)। वह जो तैयार करता हो (को०)। ५. वह जो सुधार करता हो। सुधारक (को०)। ६. वह जिसे पकाया जाय या पकाने योग्य हो (को०)।

संस्कारता--संज्ञा स्त्री० [सं०] संस्कार होने का भाव, क्रिया या स्थिति (को०)।

संस्कारत्व--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'संस्कारता'।

संस्कारभूषण--संज्ञा पुं० [सं०] कथन या भाषण, जो शुद्धता, सत्यता एवम् यथार्थता से शोभित या युक्त हो (को०)।

संस्कारवत्व--संज्ञा पुं० [सं०] संस्कारयुक्त होने का भाव (को०)।

संस्कारवर्जित--वि० [सं०] वह व्यक्ति जिसका संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

संस्कारवान्--वि० [सं० संस्कारवत्] १. जिसका संस्कार या परिष्कार किया गया हो। संस्कार से युक्त। संस्कारवाला। २. सुंदर गुणों से विभूषित (को०)।

संस्कारसंपन्न--वि० [सं० संस्कारसम्पन्न] संस्कार युक्त। सुशिक्षित।

संस्कारहीन--वि० [सं०] जिसका संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

संस्कारी[१]--वि० [सं० संस्कारिन्] जिसका संस्कार हुआ हो। अच्छे संस्कारवाला।

संस्कारी[२]--संज्ञा पुं० सोलह मात्राओं का एक छंद।

संस्कार्य--वि०--[सं०] १. संस्कार करने योग्य। २. जिसकी सफाई या सुधार करना हो। ३. प्रभाव डालने योग्य। जिसपर प्रभाव डाला जाय (को०)।

संस्कृत[१]--वि० [सं०] १. संस्कार किया हुआ। शुद्ध किया हुआ। २. परिमार्जित। परिष्कृत। ३. धो माँजकर साफ किया हुआ। निखारा हुआ। ४. पकाया हुआ। सिझाया हुआ। ५. सुधारा हुआ। ठीक किया हुआ। दुरुस्त किया हुआ। ६. अच्छे रूप में लाया हुआ। सँवारा हुआ। सजाया हुआ। आरास्ता। ७. जिसका उपनयन आदि संस्कार हुआ हो। ८. श्रेष्ठ। सर्वोत्तम (को०)। ९. अभिमंत्रित। पुनीत किया हुआ।

संस्कृत[२]--संज्ञा स्त्री० भारतीय आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा। पुराने आर्यों की लिखने पढ़ने की उच्च भाषा। देववाणी।

विशेष--विद्वानों की राय है कि वेदों (संहिताओं) की भाषा अत्यंत प्राचीन है। यह सुदूर अतीत में कभी बोलचाल की आर्यों की भाषा थी। जब उस भाषा में परिवर्तन होने लगा और धीरे धीरे उसके समझनेवाले कम होने लगे, तब संहिताओं का संकलन हुआ। बाद में यास्क ने निघंटु आदि बनाकर उस मंत्र-भाग की भाषा को विद्वानों में सुरक्षित रखा। पीछे जो आर्य-भाषा प्रचलित होती गई, उसपर क्रमशः द्रविड़ आदि आर्येतर भारतीय भाषाओं का प्रभाव पड़ता गया। अतः इस प्रचलित या लौकिक आर्यभाषा को शुद्ध, व्यवस्थित और सुरक्षित रखने का इंद्र, शाकल्य शाकटायन, पाणिनि आदि वैयाकरणों ने प्रयत्न किया। पाणिनि आदि वैयाकरणों ने दूर दूर तक फैले हुए यथासंभव सब प्रयोगों और रूपों को ध्यान में रखते हुए एक व्यापक आर्यभाषा का व्याकरणनिर्माण किया। यही 'भाषा' या लौकिक संस्कृत कहलाई जो रूप स्थिर हो जाने के कारण साहित्य की सर्वमान्य भाषा हुई और अबतक चली आ रही है। लोगों की बोलचाल की भाषा में अंतर पड़ता रहा, पर यह संस्कृत ज्यों की त्यों रही

और विद्वानों तथा शिष्यों की परंपरा द्वारा अपने शुद्ध रूप में व्यवहृत तथा प्रयुक्त होती चली आ रही है। आज भी उसमें साहित्य रचा जा रहा है और पत्र-पत्रिकाएँ आदि निकलती हैं बोलचाल की भाषाएँ पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राकृतिक कहलाईं और यह संस्कार की हुई प्राचीन भाषा संस्कृत या अमरभाषा कहलाई।

संस्कृत[३]—संज्ञा पुं० १. व्याकरण के नियमों द्वारा व्युत्पन्न शब्द। २. द्विजाति का वह व्यक्ति जिसका संस्कार हो गया हो। ३. विद्वान् पुरुष। ४. धार्मिक परंपरा। ५. बलि। आहुति [को०]।

संस्कृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुद्धि। सफाई। २. संस्कार। सुधार। परिष्कार। ३. सजावट। आराइश। ४. रहन सहन आदि की रूढ़ि। भीतर बाहर से संस्कार की गई—सभ्यता। शाइस्तगी। ५. पूर्ण करना। पूरा करना (को०)। ६. निर्णय। निश्चयन (को०)। ७. उद्योग। चेष्टा (को०)। ८. २४ वर्ण के वृत्तों की संज्ञा। ९. अंग्रेजी 'कल्चर' शब्द के अनुवाद रूप में प्रयुक्त शब्द।

संस्क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संस्कार। संस्कृति। २. शुद्ध करना। मंत्र आदि से पवित्र करना (को०)। ३. अंत्येष्टि (को०)। ४. तैयार करना (को०)।

संस्खलन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्खलित] १. च्युत होना। गिरना। २. भूल करना। चूकना।

संस्खलित[१]—वि० [सं०] १. च्युत। गिरा हुआ। २. भूला हुआ। चूका हुआ।

संस्खलित[२]—संज्ञा पुं० भूल चूक।

संस्तंभ—संज्ञा पुं० [सं० संस्तम्भ] १. गति का सहसा रोध। एकबारगी रुकावट। २. चेष्टा का अभाव। निश्चेष्टता। ठक हो जाना। हाथ पैर रुक जाना। ३. शरीर की गति का मारा जाना। लकवा। ४. दृढ़ता। धीरता। ५. हठ। टेक। जिद। ६. आधार। टेक। सहारा।

संस्तंभन—संज्ञा पुं० [सं० संस्तम्भन] [वि० संस्तंभित, संस्तब्ध] १. गति का सहसा रुकना या रोकना। एकबारगी ठहर जाना। २. निश्चेष्ट करना या होना। ठक कर देना या हो जाना। ३. बंद करना। ४. सहारा देना। टेकना। ५. रोकनेवाली वस्तु। ६. संकुचित करना। समेट लेना (को०)।

संस्तंभनीय—वि० [सं० संस्तम्भनीय] १. दृढ़ करने योग्य। २. रोके जाने योग्य। ३. सहारा देने योग्य (को०)।

संस्तंभित—वि० [सं० संस्तम्भित] १. जिसे सहारा दिया गया हो। २. स्तब्ध। निश्चेष्ट। ३. लकवा रोग से ग्रस्त [को०]।

संस्तंभी—[सं० संस्तम्भिन्] संस्तंभ करने या रोकनेवाला। निवारण करनेवाला [को०]।

संस्तब्ध—वि० [सं०] १. एकबारगी रुका या ठहरा हुआ। २. निश्चेष्ट। ठक। भौचक्का। ३. सहारा दिया हुआ। जिसे टेक या सहारा दिया हो।

संस्तर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. तह। पर्त। पहल। २. घास फूस से बनाया हुआ आच्छादन। ३. घास फूस फैलाकर बनाया हुआ बिस्तर। तृण शय्या। ४. विस्तर। शय्या। ५. बिखेरना। विकीर्णन (को०)। ६. विकीर्ण पुष्पराशि। फैलाए हुए फूलों का समूह। ७. यज्ञ या यज्ञ आदि का आयोजन (को०)। ८. विधि, व्यवस्था या आचारादि का प्रचार (को०)।

संस्तर[२]—वि० छितराया हुआ। विकीर्ण किया हुआ।

संस्तरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. बिछाना। फैलाना। पसारना। २. छितराना। बिखेरना। ३. तह चढ़ाना। परत फैलाना। ४. बिस्तर। शय्या।

संस्तव—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रशंसा। स्तुति। तारीफ। २. जिक्र। कथन। उल्लेख। ३. परिचय। जान पहचान। मेल जोल।

संस्तवन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्तवनीय, संस्तुत] १. स्तुति करना। प्रशंसा करना। २. यश गाना। कीर्ति बखानना।

संस्तव प्रीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] संस्तव अर्थात् परिचय के कारण होनेवाली प्रीति [को०]।

संस्तवस्थिर—वि० [सं०] परिचय वा घनिष्टता से दृढ़ [को०]।

संस्तवान[१]—वि० [सं०] १. यश गान करनेवाला। स्तुति करनेवाला। २. वाग्मी। वाग्पटु [को०]।

संस्तवान[२]—संज्ञा पुं० १. प्रसन्नता। आनंद। २. गायक। गानेवाला। ३. उद्गाता [को०]।

संस्तार—संज्ञा पुं० [सं०] तह। पहल। २. बिस्तर। शय्या। ३. एक यज्ञ का नाम। ४. वितति। विस्तार। वृद्धि (को०)।

संस्तारक—संज्ञा पुं० [सं०] विस्तर। शय्या [को०]।

संस्तार पंक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० संस्तार पङ्क्ति] एक वर्णवृत्ति जिसमें १२+८+८+१२ के योग के ४० वर्ण होते हैं [को०]।

संताव—संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ में स्तुति करनेवाले ब्राह्मणों की अवस्थान भूमि। २. स्तुति। प्रशंसा। ३. परिचय। जान पहचान। ४. संमिलित स्तवन या स्तुति (को०)।

संस्तीर्ण—वि० [सं०] फैलाया हुआ। पसारा हुआ। बिछाया हुआ। २. बिखेरा हुआ। फैलाया हुआ। छितराया हुआ।

संस्तुत—वि० [सं०] १. जिसकी खूब स्तुति या प्रशंसा की गई हो। २. परिचित। ज्ञात। ३. एक साथ गिना हुआ। गिनती में शामिल किया हुआ। ४. समान। तुल्य। सामंजस्य युक्त। ५. अभीष्ट। इच्छित (को०)। ६. जिसकी एक साथ या संमिलित होकर स्तुति की गई हो (को०)।

संस्तुतक—वि० [सं०] भद्र। शिष्ट। सभ्य [को०]।

संस्तुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सम्यक् स्तुति। खूब प्रशंसा। गहरी तारीफ। २. भावाभिव्यंजन की एक आलंकारिक पद्धति या शैली (को०)।

संस्तूप—संज्ञा पुं० [सं०] घूर। कूड़े कचरे का ढेर [को०]।

संस्तृत—वि० [सं०] फैलाया या बिछाया हुआ। आच्छादित [को०]।

संस्त्यान[१]—वि० [सं०] दृढ़। जमा हुआ।

संस्त्यान[२]—संज्ञा स्त्री० वह जो स्थिर या दृढ़ हो। जैसे,—गर्भस्थ भ्रूण या गर्भ [को०]।

संस्त्याय—संज्ञा पुं० [सं०] १. संचय। राशि। ढेर। २. सन्निधि। सामीप्य। घनिष्टता। ३. प्रसार। विस्तार (को०)। ४. घर। आवास (को०)। ५. मित्रों का वार्तालाप [को०]।

संस्थ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. निज देशवासी। स्वदेशवासी। अपने देश का। २. निवासी (को०)। ३. चर। दूत।

संस्थ[2]—वि० १. टिकाऊ। ठहरनेवाला। २. पालतू। घरेलू। ३. स्थिर। अचल। २. विद्यमान। मौजूद। ५. मृत। नष्ट। ६. पूर्ण। अंत को प्राप्त। ७. व्यक्त [को०]।

संस्था—संज्ञा पुं० [सं०] १. ठहरने की क्रिया या भाव। ठहराव। स्थिति। २. व्यवस्था। बँधा नियम। विधि। मर्यादा। रूढ़ि। ३. प्रकट होने की क्रिया या भाव। अभिव्यक्ति। प्रकाश। ४. रूप। आकार। आकृति। ५. गुण। सिफत। ६. ठिकाने लगाना। ७. समाप्ति। अंत। खातमा। ८. जीवन का अंत। मृत्यु। ९. नाश। १०. प्रलय। ११. यज्ञ का मुख्य अंग। १२. बध। हिंसा। १३. गुप्तचरों या भेदियों का वर्ग।

विशेष—इसके अंतर्गत पाँच प्रकार के दूत कहे गए हैं—वणिक् भिक्षु, छात्र, लिंगी (संप्रदायी) और कृषक।

१४. व्यवसाय। पेशा। १५. जत्था। गरोह। १६. समाज। मंडल। सभा। समिति। १७. राजाज्ञा। फरमान। १८. सादृश्य। समानता। १९. विराम। यति (को०)। २०. शव के आग से जलने की आवाज या शव क्रिया (को०)। २१. सोमयज्ञ का एक प्रकार (को०)।

यौ०—संस्थाकृत = स्थिरीकृत। निर्धारित। ठहराया हुआ। संस्थाजय = यज्ञांत में किया जानेवाला जप।

संस्थागार—संज्ञा पुं० [सं०] वह भवन या कक्ष जहाँ सभा आदि की जाय [को०]।

संस्थाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. व्यापार का निरीक्षक। व्यापाराध्यक्ष।

विशेष—कौटिल्य के अनुसार इसका मुख्य काम गिरवी रखे जानेवाले माल का तथा पुरानी चीजों का विक्रय करवाना था। तौल माप का निरीक्षण भी यही करता था। चंद्रगुप्त के समय से तुला द्वारा तौलने में यदि दो तोले का फरक पड़ जाता तो बनिए पर छह पण जुर्माना किया जाता था। क्रय विक्रय संबंधी राजनियमों को जो लोग तोड़ते थे, उनको भी दंड यही देता था। भिन्न भिन्न पदार्थों पर कितनी चुंगी लगे कौन कौन सा माल बिना चुंगी दिए शहर में जाय, इन संपूर्ण बातों का प्रबंध भी यही करता था। पदार्थों की कीमतें भी यही नियत करता था। सरकारी पदार्थों का विक्रय भी यही करवाता था और उनके विक्रय के लिये नौकर भी रखता था, इत्यादि।

२. किसी समाज, समिति या संस्था का प्रधान व्यक्ति।

संस्थान[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. ठहरने की क्रिया या भाव। ठहराव। स्थिति। २. खड़ा रहना। डटा रहना। जमा रहना। ३. सन्निवेश। बैठाना। स्थापन। विन्यास। ४. अस्तित्व। जीवन। ५. सम्यक् पालन। पूरा अनुसरण। पूरी पैरवी। ६. ठहरने या रहने की जगह। डेरा। घर। ७. बस्ती। जनपद। ८. सार्वजनिक स्थान। सर्वसाधारण के इकट्ठे होने की जगह। ९. रूप। आकृति। शकल। १०. कांति। सौंदर्य। ११. प्रकृति। स्वभाव। १२. रोग का लक्षण। १३. अवस्था। दशा। हालत। १४. मूल तत्वों की समष्टि। योग। जोड़। १५. ठिकाने लगाना। समाप्ति। अंत। खातमा। १६. नाश। मृत्यु। १७. रचना। बनावट। निर्माण। १८. पड़ोस। सामीप्य। निकटता। १९. चौमुहानी। चौरास्ता। चौराहा। २०. आयोजन। प्रबंध। व्यवस्था। डौल। २१. ढाँचा। चौखटा। २२. साँचा। ढाँचा। डौल। खाका। २३. राशि। समूह। संचय। ढेर(को०)। २४. उद्योग, व्यापार, साहित्य आदि के विभिन्न अंगों की उन्नति के लिये स्थापित मंडल या संस्था। २५. भाग। हिस्सा। खंड (को०)। २६. चिह्न। निशान। विशेषक चिह्न (को०)।

संस्थान[2]—वि० १. स्थावर। २. सदृश। समान [को०]।

संस्थापक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संस्थापिका] १. खड़ा करनेवाला। स्थापित करनेवाला। २. उठानेवाला। (भवन आदि)। ३. कोई नई बात चलानेवाला। जारी करनेवाला। प्रवर्त्तक। ४. कोई सभा, समाज या सर्वसाधारण के उपयोगी कार्य खोलनेवाला। ५. चित्र, खिलौनें आदि बनानेवाला। ६. रूप या आकार देनेवाला।

संस्थापन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्थापनीय, संस्थापित, संस्थाप्य] १. खड़ा करना। उठाना। निर्मित करना। (भवन आदि)। २. स्थित करना। जमाना। बैठाना। ३. कोई नई बात चलाना। नया काम जारी करना। नया काम खोलना। ४. रूप या आकार देना। ६. एक साथ करना। एकत्र करना। संचयन करना (को०)। ७. निर्णीत करना। निश्चित करना (को०)। ८. नियंत्रित करना। प्रतिबंधित करना (को०)। ९. नियम। विधि (को०)।

संस्थापना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रोकना। नियंत्रण। प्रतिबंध। २. शांत या स्थिर करने के उपाय। ३. दे० 'संथापना' [को०]।

संस्थापनीय—वि० [सं०] संस्थापन के योग्य।

संस्थापित—वि० [सं०] १. उठाया हुआ। खड़ा किया हुआ। निर्मित। २. जमाया हुआ। बैठाया हुआ। स्थित किया हुआ। प्रतिष्ठित। ३. जारी किया हुआ। चलाया हुआ। ४. संचित। बटोरा हुआ। ५. ढेर लगाया हुआ। ६. नियंत्रित। प्रतिबंधित। रोका हुआ (को०)।

संस्थाप्य—वि० [सं०] १. संस्थापन के योग्य। २. जिसका संस्थापन करना हो। ३. पूर्ण या समाप्त करने योग्य। जैसे, यज्ञ आदि (को०)। ४. शांतिदायक वस्तिप्रयोग द्वारा चिकित्सा करने लायक (को०)।

संस्थित[1]—वि० [सं०] १. खड़ा। उठाया हुआ। २. ठहरा हुआ। टिका हुआ। ३. बैठा हुआ। जमा हुआ। दृढ़ता से अड़ा हुआ। ४. रूप में लाया हुआ। निर्मित। ५. ठिकाने लगाया हुआ। ६.

समाप्त। खतम। ७. मृत। मरा हुआ। ८. ढेर लगाया हुआ। बटोरा हुआ। ९. मिलता जुलता। समान (को०)। १०. अंदर रखा हुआ। अंतर्वर्ती (को०)। ११. लगा हुआ। आसन्न (को०)। १२. प्रस्थान किया हुआ (को०)। १३. (भोजन आदि) अधिक समय से पड़ा हुआ (को०)। १४. आधृत। आधारित (को०)। १५. टिकाऊ (को०)। १६. भावी (को०)। १७. दक्ष। कुशल (को०)।

संस्थित[२]—संज्ञा पुं० १. आचरण। २. आकृति [को०]।

संस्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खड़े होने की क्रिया या भाव। २. ठहराव। जमाव। ३. बैठने की क्रिया या भाव। ४. एक अवस्था में रहने का भाव। ज्यों का त्यों रहने का भाव। ५. दृढ़ता। धीरता। ६. अस्तित्व। हस्ती। ७. रूप। आकृति। सूरत। ८. व्यवस्था। तरतीब। ९. गुण। सिफत। १०. प्रकृति। स्वभाव। ११. समाप्ति। खातमा (विशेषतः यज्ञादि के लिये)। १२. मृत्यु। मरण। १३. कोष्ठबद्धता। कब्जियत। १४. राशि। ढेर। अटाला। १५. सामीप्य। आसन्नता (को०)। १६. निवास स्थान। आवासस्थल (को०)। १७. रोक। प्रतिबंध (को०)। १८. अवधि। कालावधि (को०)। १९. प्रलय (को०)।

संस्पर्द्धा, संस्पर्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी के बराबर होने की प्रबल इच्छा। बराबरी की चाह। २. ईर्ष्या। डाह।

संस्पर्द्धी, संस्पर्धी—वि० [सं० संस्पर्द्धिन्, संस्पर्धिन्] [स्त्री० संस्पर्द्धिनी] १. बराबरी की इच्छा करनेवाला। २. ईर्ष्यालु।

संस्पर्श—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह छू जाने का भाव। एक के अंग का दूसरे से लगना।

विशेष—धर्मशास्त्रों में कुछ लोगों का संस्पर्श होने पर द्विजातियों के लिये प्रयश्चित्त का विधान है। यह संस्पर्शदोष शरीर के छू जाने, आलाप, निश्वन, सहभोजन तथा एक शय्या पर बैठने या सोने से कहा गया है।

२. घनिष्ठ संबंध। गहरा लगाव। ३. मिलाप। मेल। ४. मिलावट। मिश्रण। ५. इंद्रियों का विषय ग्रहण। ६. थोड़ा सा आविर्भाव। कुछ प्रभाव।

संस्पर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्पर्शनीय, संस्पृष्ट] १. छूना। अंग से अंग लगना। २. मिलना। सटना। ३. मिश्रण।

संस्पर्शा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जनी नामक गंध द्रव्य।

संस्पर्शी[१]—वि० [सं० संस्पर्शिन्] संपर्क में आनेवाला। स्पर्श करनेवाला। छूनेवाला।

संस्पर्शी[२]—संज्ञा पुं० जनी नामक गंध युक्त पौधा [को०]।

संस्पृष्ट—वि० [सं०] १. छूआ हुआ। २. सटा हुआ। लगा हुआ। मिला हुआ। ३. जुड़ा हुआ। परस्पर संबद्ध। ४. पास ही पड़ता हुआ। जो निकट ही हो। ५. लेश मात्र प्रभावित। जिसपर बहुत कम असर पड़ा हो। ६. प्राप्त (को०)।

संस्पृष्टमैथुना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लड़की जिसे बरगलाया गया हो या जिसे मैथुन का परिचय मिल गया हो। भ्रष्ट।

विशेष—ऐसी लड़की को विवाह के अयोग्य माना गया है।

संस्फाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. भेड़। मेष। २. मेघ। बादल (को०)।

संस्फुट—वि० [सं०] १. खूब फूटा या खुल पड़ा हुआ। २. खूब खिला हुआ। विकसित। ३. सुस्पष्ट।

संस्फेट—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

संस्फोट—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संस्फोटि] युद्ध। लड़ाई।

संस्मरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्मरणीय, संस्मृत] १. पूर्ण स्मरण। खूब याद। २. अच्छी तरह सुमिरना या नाम लेना। ३. संस्कारजन्य ज्ञान। ४. किसी व्यक्ति या विषय आदि की स्मृति को आधार बनाकर उसके संबंध में लिखा हुआ वह लेख जिससे उसकी विशिष्टताओं का आकलन हो सके।

संस्मरणी—वि० [सं०] १. पूर्ण स्मरण करने योग्य। २. नाम जपने योग्य। ३. महत्व का। न भूलनेवाला। जिसकी याद बराबर बनी रहे। ४. जिसका स्मरण मात्र रह गया हो। अतीत।

संस्मारक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संस्मारिका] १. वह जो स्मरण कराता हो। स्मरण करानेवाला। याद दिलानेवाला। २. वह निर्माण या वस्तु जो व्यक्ति, स्थिति या कार्यविशेष की स्मृति बनाया गया हो। स्मारक।

संस्मारक[२]—वि० स्मरण करानेवाला।

संस्मरण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संस्मारित] १. स्मरण कराना। याद दिलाना। २. गिनती करना। गिनना (चौपायों के विषय में)।

संस्मारित—वि० [सं०] १. याद दिलाया हुआ। स्मरण कराया हुआ। २. ध्यान में लाया हुआ। याद किया हुआ।

संस्मृत—वि० [सं०] १. स्मरण किया हुआ। याद किया हुआ। २. अभिहित। कथित (को०)। ३. आज्ञप्त। आदिष्ट (को०)।

संस्मृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्ण स्मृति। पूरी याद।

संस्यूत—वि० [सं०] १. अभेद्य रूप से अच्छी तरह एक में मिला हुआ। २. सिला हुआ। नत्थी किया हुआ। ३. अनुस्यूत। ओतप्रोत [को०]।

संस्रव—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संस्रवा] १. एक साथ बहना। २. पूरा बहाव, प्रवाह या धारा। ३. बहती हुई वस्तु। ४. बहता हुआ जल। ५. एक प्रकार का पिंडदान। ६. किसी वस्तु का नोचा हुआ अंश। उखड़ा हुआ चिप्पड़। ७. चूना। गिरना। झरना। रसना।

संस्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहना। प्रवाहित होना। २. चूना। झरना। गिरना।

यौ०—गर्भसंस्रवण = गर्भपात। गर्भस्राव।

संस्रष्टा—संज्ञा पुं० [सं० संस्रष्टृ] [स्त्री० संस्रष्ट्री] १. आयोजन करनेवाला। २. मिलाने जुलानेवाला। मिश्रण करनेवाला। ३. रचनेवाला। बनानेवाला। निर्माता। ४. भाग लेनेवाला। सहयोग देनेवाला (को०)। ५. भिड़नेवाला। लड़ाई में जुटनेवाला।

संस्राव—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. बहाव। प्रवाह। २. मवाद का इकट्ठा होना। (सुश्रुत)। ३. किसी द्रव पदार्थ के नीचे जमा हुआ पदार्थ। तलछट। ४. एक प्रकार का पिंडदान। संस्रव (को॰)।

संस्रावण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ संस्राव्य] १. बहाना। प्रवाहित करना। २. बहना। प्रवाहित होना। ३. झरना। चूना टपकना।

संस्रावित—वि॰ [सं॰] १. बहाया हुआ। २. बहा हुआ। ३. झरा हुआ। ४. टपका हुआ।

संस्राव्य—वि॰ [सं॰] १. बहाने या टपकाने योग्य। २. जिसे बहाना या टपकाना हो।

संस्वार—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक साथ स्वर निकालना। समवेत रूपेण शब्द करना [को॰]।

संस्वेद—संज्ञा पुं॰ [सं॰] स्वेद। पसीना।

संस्वेदज—वि॰ [सं॰] पसीने से उत्पन्न (कृमि आदि)।

संस्वेदी—वि॰ [सं॰ संस्वेदिन्] जिसके शरीर से स्वेद या पसीना बह रहा है।

संहंता—संज्ञा पुं॰ [सं॰ संहन्तृ] [स्त्री॰ संहंत्री] १. वध करनेवाला। मारनेवाला। २. संहत करनेवाला। संबद्ध करनेवाला।

संहत[१]—वि॰ [सं॰] १. खूब मिला। जुटा या सटा हुआ। बिल्कुल लगा हुआ। पूर्ण संबद्ध। २. एक हुआ। एक में मिला हुआ। ३. संयुक्त। सहित। ४. जो मिलकर ठोस हो गया हो। मिलकर खूब बैठा हुआ। कड़ा। सख्त। ५. जो विरल या झीना न हो। गठा हुआ। घना। ६. दृढ़ांग। मजबूत। दृढ़। ७. एकत्र। इकट्ठा। ८. मिश्रित। मिला हुआ। ९. एक मत (को॰)। १०. अवरुद्ध। बंद (को॰)। ११. चोट खाया हुआ। आहत। घायल।

यौ॰—संहतकुलीन। संहतजानु। संहततल = अंजुलिवद्ध (हाथ)। जिसकी दोनों अँजुरिया मिली हुई हों। संहतपत्रिका। संहतबल = सुगठित सैन्य। संगठित सेना। संहतभ्रू = जिसकी भौंह परस्पर मिली हों। एक में मिली हुई भौंहोंवाला। कुंचित भ्रू वाला। संहतमूर्ति = जिसकी शरीराकृति हृष्ट पुष्ट हो। दृढ़ शरीरवाला। संहतस्तनी = पुष्ट और घने या अविरल स्तनोंवाली। संहतहस्त = हाथ से हाथ मिलाए हुए।

संहत[२]—संज्ञा पुं॰ नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा।

संहतकुलीन—वि॰ [सं॰] सम्मिलित परिवार का अथवा ऐसे कुटुंब का जो निकटतम संबंधी हो।

संहतजानु, संहतजानुक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. वह जिसने घुटने मिलाए हुए हों। वह जिसने दोनों घुटने सटाए हों। २. बैठने की एक मुद्रा। ३. वह जिसके घुटने चलने में परस्पर टकराते हों। लग्नजानुक (को॰)।

संहतता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. घना संपर्क, संश्लेष, लगाव या मेल। २. निविड़ता। संपृक्तता। परस्पर संपृक्त होना। सांद्रता। ३. ऐक्य। सहमति। एकता। ४. सौमनस्य। अविरोधिता [को॰]।

संहतत्व—संज्ञा पुं॰ [सं॰] संहत होने की क्रिया, स्थिति या भाव। संहतता [को॰]।

संहतपत्रिका—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सोआ। शतपुष्पा।

संहतल—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. अंजलि। अँजुरी। २. दोहत्थल। दोहत्थड़ [को॰]।

संहतांग—वि॰ [सं॰ संहताङ्ग] १. दृढ़ांग। हृष्ट पुष्ट। मजबूत। २. परस्पर संपृक्त या मिला हुआ (को॰)।

संहतांजलि—वि॰ [सं॰ संहताञ्जलि] जो हाथ जोड़े हो। कर बद्ध।

संहताख्य—वि॰ [सं॰] पवमान नामक अग्नि।

संहति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] मिलाव। मेल। २. जुटाव। बटोर। इकट्ठा होने का भाव। ३. राशि। ढेर। अटाला। ४. समूह। झुंड। ५. परस्पर मिलकर ठोस होने का भाव। निविड़ संयोग। गठन। ठोसपन। घनत्व। ६. संधि। जोड़। ७. शरीर। देह। जिस्म (को॰)। ८. शक्ति। ताकत। बल (को॰)। ९. संयुक्त यत्न। सामूहिक चेष्टा (को॰)। १०. परमाणु का परस्पर मेल।

संहतिशाली—वि॰ [सं॰ संहतिशालिन्] घन। ठोस। दृढ़ [को॰]।

संहतिपुष्पिका—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सोआ। शतपुष्पा।

संहनन[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. संहत करना। एक में मिलाना। जोड़ना। २. खूब मिलाकर घना या ठोस करना। ३. बध। मार डालना। ४. संयोग। मेल। मिलावट। ५. कड़ाई। ६. पुष्टता। मजबूती। बलिष्ठता। ७. मेल। मुआफिकत। सामंजस्य। अनुकूलता। ८. शरीर। देह। ९. कवच। बक्तर। वर्म। १४. शरीर का मर्दन। मालिश।

संहनन[२]—वि॰ १. हंता। हनन करनेवाला। विनाशक। २. ठोस। दृढ़। ३. मजबूत या दृढ़ करनेवाला। ४. एक दूसरे से टकरानेवाला [को॰]।

संहननीय—वि॰ [सं॰] १. दृढ़। मजबूत। मिला हुआ। २. जो संहनन के योग्य हो [को॰]।

संहरण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. एक साथ करना। बटोरना। एकत्र करना। संग्रह करना। २. एक साथ बाँधना। गूँथना (केशों का)। ३. जबरदस्ती ले लेना। छीनना। ४. लौटा लेना। जैसे, अभिमंत्रित अस्त्र या माया आदि। समेटना। संकुचित करना (को॰)। ५. अवरोध करना। रोकना। ६. संहार करना। नाश करना। ध्वंस करना। ७. प्रलय।

संहरनाⓅ[१]—क्रि॰ अ॰ [सं॰ संहार] नष्ट होना। संहार होना।

संहरनाⓅ[२]—क्रि॰ स॰ [सं॰ संहारण] संहार करना। ध्वंस करना। उ॰—सुरनायक सो संहरी परम पापिनी बाम।—केशव (शब्द॰)।

संहर्तव्य—वि॰ [सं॰] १. संहरण के योग्य या जिसका संहरण किया जाय। २. एकत्र करने योग्य। ३. पहले जैसा करने योग्य। वापस करने लायक [को॰]।

संहर्त्ता—वि० संज्ञा पुं० [सं० संहर्तृ] [स्त्री० संहर्त्री] १. इकट्ठा करनेवाला। बटोरने या समेटनेवाला। एकत्र करनेवाला। २. नाश करनेवाला। ३. बध करनेवाला। मारनेवाला।

संहर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. उमंग से रोओं का खड़ा होना। पुलक। उमंग। २. भय से रोंगटे खड़े होना। ३. चढ़ा ऊपरी। एक दूसरे से बढ़ने की चाह। स्पर्द्धा। लाग डाँट। होड़। ४. ईर्ष्या। डाह। ५. वायु। हवा (को०)। ६. प्रसन्नता। आनंद। हर्ष (को०)। ७. काम का वेग। कामोत्तेजना (को०)। ८. संघर्ष। रगड़। ९. मर्दन। शरीर की मालिश।

संहर्षण[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संहर्षित, संहृष्ट] १. पुलकित होना। २. स्पर्द्धा। लाग डाँट। चढ़ा ऊपरी।

संहर्षण[२]—वि० [वि० स्त्री० संहर्षिणी] पुलकित करनेवाला। आनंद से प्रफुल्लित करनेवाला।

संहर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पित्तपापड़ा। पर्पटक। शाहतरा।

संहर्षित—वि० [सं०] पुलकित। रोमांचित।

संहर्षी—वि० [सं० संहर्षिन्] [वि० स्त्री० संहर्षिणी] १. पुलकित होनेवाला। २. पुलकित करनेवाला। ३. स्पर्द्धा या ईर्ष्या करनेवाला।

संहवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. चार मकानों का चौकोर समूह। २. साथ मिलकर हवन करना। ३. उचित या ठीक ढंग से यज्ञादि करना। यथोचित रीति या सरणि से यज्ञ करना (को०)।

संहात—संज्ञा पुं० [सं०] १. संघात। समूह। जमावड़ा। वि० दे० 'संघात'। २. एक नरक का नाम। ३. शिव के एक गण का नाम।

संहात्य—संज्ञा पुं० [सं०] समझौते की शर्तों का परित्याग। संधि की शर्तों को न मानना या भंग करना (को०)।

संहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ करना। इकट्ठा करना। समेटना। २. संग्रह। संचय। ३. संकोच। आकुंचन। सिकुड़ना। ४. समेटकर बाँधना। गूँथना (केशों का)। जैसे, वेणी-संहार। ५. छोड़े हुए बाण को फिर वापस लेना। ६. खुलासा। सार। संक्षेप कथन। ७. नाश। ध्वंस। ८. समाप्ति। अंत। खातमा। जैसे,—रूपक के किसी अंक या रूपक का। काव्य-संहार। ९. कल्पांत। प्रलय। १०. एक नरक का नाम। ११. कौशल। निपुणता। १२. व्यर्थ करने की क्रिया। निवारण। परिहार। रोक। जैसे,—किसी अस्त्र का संहार। १३. उच्चारण संबंधी एक दोष (को०)। १४. झुंड। समूह (को०)। १५. अभ्यास। निरंतर प्रवृत्ति (को०)। १६. भीतर की ओर करना। अंदर करना। सिकोड़ना। जैसे,—हाथी द्वारा अपनी सूँड़ (को०)। १७. संहारक। संहर्ता (को०)। १८. एक असुर (को०)।

संहारक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संहारिका] १. संहार करनेवाला। संहर्ता। नाशक। २. संकोचन करनेवाला। संक्षिप्तकर्ता (को०)। ३. संग्रहकर्ता। एकत्र करनेवाला।

संहारकारी—वि० [सं० संहारकारिन्] [वि० स्त्री० संहारकारिणी] संहार या नाश करनेवाला।

संहारकाल—संज्ञा पुं० [सं०] विश्व के नाश का समय। प्रलयकाल। उ०—बैठा बलिष्ट खर को मकराक्ष आयो। संहार काल जनु काल कराल धायो।—केशव (शब्द०)।

संहारनापु—क्रि० स० [सं० संहरण] १. मार डालना। उ०—ओहि धनुष रावन संहारा। ओहि धनुष कंसासुर मारा।—जायसी (शब्द०)। २. नाश करना। ध्वंस करना।

संहार भैरव—संज्ञा पुं० [सं०] भैरव के आठ रूपों या मूर्तियों में से एक। कालभैरव।

संहार मुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] तांत्रिक पूजन में अंगों की एक प्रकार की स्थिति, जिसे विसर्जन मुद्रा भी कहते हैं।

संहारिक—वि० [सं०] सब कुछ संहार करनेवाला।

संहारी—वि० [सं० संहारिन्] नाश करनेवाला। विनाश करनेवाला। संहार करनेवाला (को०)।

संहार्य—वि० [सं०] १. समेटने या बटोरने योग्य। संग्रह करने योग्य। इकट्ठा करने लायक। २. एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर करने योग्य। हटाने लायक। ले जाने लायक। ३. जिसे ले जाना हो। ४. रोकने योग्य। निवारण या परिहार के योग्य। ५. जिसे रोकना हो। जिसका निवारण या परिहार करना हो। ६. फुसलाने या बहकाने योग्य। ७ जिसका किसी पर हक या अधिकार हो (को०)।

संहित—वि० [सं०] १. एक साथ किया हुआ। एकत्र किया हुआ। बटोरा हुआ। समेटा हुआ। २. संमिलित। मिलाया हुआ। ३. जुड़ा हुआ। लगा हुआ। संबद्ध। ४. संयुक्त। सहित। अन्वित। पूर्ण। ५. मेल में आया हुआ। हेल मेलवाला। मेली। ६. क्रम या परंपरागत संबंध या लगाव रखनेवाला। ७. रखा हुआ। संधान के लिये जो धनुष पर रखा गया हो (को०)। ८. अनुकूल (को०)। ९. रचित। निर्मित (को०)।

संहित पुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सोआ नाम का साग। २. धनिया।

संहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मेल। मिलावट। संयोग। २. पाणिनि व्याकरण का एक पारिभाषिक शब्द जिसके अनुसार दो वर्णों का परस्पर अत्यंत (परम) संनिकर्ष होता है। संधि। ३. ऋग्वेदादि चारों वेदों के मंत्रों का संकलन और उनके पदों को विशेष रीति का (जिसमें व्याकरणानुसारी संधि की गई हो) पाठ। वह ग्रंथ जिसमें पदपाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो। कोई ग्रंथ जिसका पाठ प्राचीन काल से गृहीत चला आता हो। जैसे,—मनु, अत्रि आदि की धर्मसंहिताएँ या स्मृतियाँ।

विशेष—स्मृति या धर्मशास्त्र संबंधी १९ संहिताएँ कही जाती हैं जिनमें मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत, कात्यायन, बृहस्पति, नारद, पराशर, व्यास, दक्ष, गौतम आदि प्रसिद्ध हैं। रामायण को भी कभी कभी संहिता कह देते हैं। वेदव्यास कृत एक 'पुराण संहिता' का भी उल्लेख मिलता है (दे० 'पुराण')। इसके अतिरिक्त और विषयों के ग्रंथ भी संहिता कहे जाते हैं। जैसे,—भृगुसंहिता (फलित ज्योतिष); गर्गसंहिता (कृष्ण की कथा) आदि।

४. संकलन । संग्रह । संचय (को०) । ५. नियमानुसार विशिष्ट रूप से क्रमबद्ध गद्य पद्य आदि का संग्रह (को०) । ६. संसार का भरणपोषण करनेवाली परम शक्ति (को०) । ७. वेदों का मंत्र भाग । मुख्य वेद । विशेष दे० 'वेद' ।

यौ०—संहिताकार = संहिता का रचयिता । संहितापाठ = वेद के मंत्रों का सुव्यवस्थित क्रम ।

संहिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक साथ रखना । लगाव या संपर्क-स्थापन [को०] ।

संहूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शोर । हल्ला । २. एक साथ पुकारना । एक साथ चिल्लाना [को०] ।

संहृत—वि० [सं०] एकत्र किया हुआ । समेटा हुआ । २. संगृहीत । जुटाया हुआ । ३. नष्ट । ध्वस्त । ४. समाप्त । खत्म । ५. निवारित । रोका हुआ । ६. जिसे संक्षिप्त किया गया हो । संकुचित (को०) । ७. अपहृत (को०) ।

संहृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बटोरने या समेटने की क्रिया । २. संग्रह । जुटाव । ३. नाश । ध्वंस । ४. प्रलय । ५. अंत । समाप्ति । ६. रोक । परिहार । ७. संक्षेप । खुलासा । ८. ग्रहण । धारण (को०) । ६. हरण । छीनना । लूट खसोट ।

संहृषित—वि [सं०] १. पुलकित । रोमांचित । संहर्षित । २. भय के कारण जड़ या निश्चेष्ट [को०] ।

संहृष्ट—वि० [सं०] १. अंचित । खड़ा (रोम) । २. जिसके रोएँ उमंग से खड़े हों । पुलकित । प्रफुल्ल । ३. जिसके रोंगटे डर से खड़े हों । डरा हुआ । भीत । ४. प्रतिस्पर्धा के कारण दीप्त (को०) । ५. प्रज्वलित । जलता हुआ । प्रदीप्त (अग्नि) ।

यौ०—संहृष्टमना = प्रसन्नमना । हर्षित हृदय । संहृष्टरोमांग, संहृष्टरोमा = प्रसन्नता के कारण जिसके शरीर के रोएँ खड़े हों । संहृष्टवत् = प्रसन्नता या उल्लासपूर्वक । संहृष्टवदन = जिसका चेहरा प्रसन्नता से खिल या दमक रहा हो ।

संहृष्टी—वि० [सं० संहृष्टिन्] उत्तेजित । उत्थित । खड़ा । जैसे—पुरुष की जननेंद्रिय [को०] ।

संह्राद—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊँचा स्वर । चीख । २. एक असुर जो हिरण्यकशिपु का पुत्र था । ३. शोर । कोलाहल ।

संह्रादन—संज्ञा पुं० [सं०] चिल्लाना । कोलाहल करना । शोर मचाना । चीखना ।

संह्रीण—वि० [सं०] १. पूर्णतया लज्जित या शर्मिंदा । २. संकोचशील । सलज्ज [को०] ।

संह्लाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. आनंद विशेष । २. दे० 'संह्राद' [को०] ।

संह्लादी—वि [सं० संह्लादिन्] प्रसन्नता से भरा हुआ । प्रफुल्ल । हर्षित । आनंदयुक्त [को०] ।

सँइतना†—क्रि० स० [सं० सञ्चय] १. लीपना । पोतना । चौका लगाना । २. संचय करना । ३. सुरक्षित रखना । ठिकाने से रखना । सहेजकर रखना । ४. यह देखना कि जितना और जैसा चाहिए, उतना और वैसा है या नहीं । सहेजना ।

सँउपनाⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० समर्पण, प्रा० समप्पण, हि० सौंपना] दे० 'सौंपना' ।

सँकरा†¹—वि० [सं० सङ्कीर्ण] [वि० स्त्री० सँकरी] जो अधिक चौड़ा या विस्तृत न हो । पतला और तंग । जैसे,—सँकरा रास्ता ।

सँकरा²—संज्ञा पुं० कष्ट । दुःख । विपत्ति ।

मुहा०—सँकरे में पड़ना = दुःख में पड़ना । कष्ट में पड़ना ।

सँकराⓅ†³—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] शृंखला । साँकल । सीकड़ । जंजीर । उ०—घुँघरवार अलकैं विष भरे । सँकरे प्रेम चहुँ गये परे ।—जायसी (शब्द०) ।

सँकरा⁴—संज्ञा पुं० [सं० शङ्कराभरण] एक राग । दे० 'शंकराभरण' ।

सँकराना¹—क्रि० स० [हि० सँकरा + आना (प्रत्य०)] १. संकुचित करना । तंग करना । २. बंद करना ।

सँकराना†²—क्रि० अ० संकुचित या संकीर्ण होना । जैसे,—यह रास्ता आगे चलकर सँकरा गया है ।

सँकलपनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० सङ्कल्प] संकल्प करना । त्याग करना । छोड़ देना । उ०—सुख सँकलपि दुख साँबर लीन्हेउँ ।—पदमावत, पृ० १३७ ।

सँकानाⓅ†—क्रि० अ० [सं० शङ्क] शंकित होना । भीत होना । डरना । उ०—मुँह मिठास दृग चीकने, भौंहैं सरल सुभाय । तऊ खरे आदर खरौ, छिन छिन हियौ सँकाय ।—बिहारी (शब्द०) ।

सँकाराⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सकाल] प्रातःकाल । उषःकाल । उ०—वहै पुकारहिं साँझ सँकारा ।—पदमावत, पृ० १०८ ।

सँकुचना—क्रि० अ० [हि० सकुचना] संकुचित होना । दे० 'सकुचना' ।

सँकुचाना—क्रि० अ० [हि० सकुचाना] दे० 'सकुचाना' ।

सँकेत†—वि० [हि०] १. दे० 'सँकरा' । २. दे० 'संकेत'¹ ।

सँकेतना¹—क्रि० स० [सं० सङ्कीर्ण] संकट में डालना । कष्ट में डालना । आपत्ति में डालना । उ०—भएउ चेत, चेतन चित चेता । नैन झरोखे जीव सँकेता ।—जायसी (शब्द०) ।

संकेतनाⓅ†²—क्रि० अ० संकीर्ण होना । संकुचित होना । मुँदना । उ०—कवल सँकेता कुमुदिनि फूली । चकई बिछुरि अचक मन भूली ।—पदमावत, पृ० ५४२ ।

सँकेलना†—क्रि० स० [सं० सँङ्कृष्ट] खींचकर एकत्र करना । समेटना । उ०—मानहु तिमिर अरुनमय रासी । बिरची बिधि सँकेलि सुखमा सी ।—मानस, २।२३६ । (ख) आएउ इहाँ समाज सँकेली ।—मानस, २।२६७ ।

सँकोच—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कोच] दे० 'संकोच' । उ०—नीच कीच बिच मगन जस मीनहिं सलिल सँकोच ।—मानस, २।२५१ ।

सँकोचना¹—क्रि० स० [सं० सङ्कोच] संकुचित करना । संकोच करना । उ०—नींद न परति राति प्रेम पनु एक भाँति सोचत सँकोचत बिरंचि हरि हर कै ।—तुलसी (शब्द०) ।

सँकोचना²—क्रि० अ० संकुचित होना ।

सँकोची—वि० [सं० सङ्कोचिन्] दे० 'संकोची'। उ०—चुपहि रहे रघुनाथ सँकोची।—मानस, २।२६६।

सँगरा—संज्ञा पुं० [फ़ा० संग ?] १. कूओं के तख्ते पर बना हुआ वह छेद जिसमें पानी खींचने का पंप बैठाया हुआ होता है। २. मोटे बाँस का वह छोटा टुकड़ा जिसकी सहायता से पेशराज लोग पत्थर उठाते हैं। सेंगरा।

सँघराना‡—क्रि० स० [हिं० संग ?] दुखी या उदासीन गौ को, उसका दूध दूहने के लिये, परचाना और फुसलाना।

विशेष—जब बच्चा देने के उपरांत गौ उस बच्चे को नहीं चाटती या दूध नहीं पिलाती, तब उस बच्चे के शरीर पर शीरा आदि लगा देते हैं जिसकी मिठास के कारण वह उसे चाटने और दूध पिलाने लगती है। इसी प्रकार जब बच्चा मर जाता है और गौ दूध नहीं देती, तब कुछ लोग उसके बछड़े की खाल में भूसा भरकर उसे गौ के सामने खड़ा कर देते हैं, जिसे देखकर वह दूध दूहने देती है। गौ के साथ इसी प्रकार की क्रियाएँ करने को 'सँघराना' कहते हैं।

सँघात—संज्ञा पुं० [हिं० संग] साथ। संग। उ०—धुआ उठै मुख साँस सँघाता।—पदमावत, पृ०।

सँघाती†—संज्ञा पुं० [हिं० संग, तुल० सं० सङ्घात] साथी। मित्र। सहचर।

यौ०—संग सँघाती = संगी साथी।

संघेरना‡—क्रि० स० [हिं० सँघेरा या संग+घेरना] रस्सी से दो गौओं में से एक का दाहिना और दूसरी का बायाँ पैर एक में, इसलिये बाँधना कि जिसमें वे चरने के समय जंगल में बहुत दूर न निकल जायँ।

सँघेरा‡—संज्ञा पुं० [हिं० संग+घेरना] वह रस्सी जिससे दो गौओं का एक पैर इसलिये एक साथ बाँध दिया जाता है जिसमें वे जंगल में चरती चरती बहुत दूर न निकल जायँ।

सँचरनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० सञ्चरण] घूमना। फिरना। चलना। उ०—ठाँवहिं ठाँव बीन्ह सब बाँटी। रहा न बीच जो सँचरै चाँटी।—जायसी (शब्द०)।

संचारनाⓅ—क्रि० स० [हिं० संचार+ना(प्रत्य०)] उत्पन्न करना। जन्म देना। उ०—नूर मुहम्मद देखि तौ भा हुलास मन सोइ पुनि इबलीस सँचारेउ डरत रहै सब कोइ।—जायसी (शब्द०)।

सँजुत—वि० [सं० संयुत] संयुक्त। मिश्रित। उ०—भई सँजुत आदम कै देहा।—जायसी (शब्द०)।

सँजूत—वि० [सं० संयुक्त] सावधान। तैयार। सन्नद्ध। उ०—तेहि रे पंथ हम चाहहिं गवना। होहु सँजूत बहुरि नहिं अवना।—जायसी ग्रं०, पृ० ६२।

सँजोइⓅ—क्रि० वि० [सं० संयोग] साथ में। संग में। उ०—घरी तीसरी दूसरे पहर गहर जनि होइ। भामिनि भोजन करन को अँचवति सखी सँजोइ।—देव (शब्द०)।

सँजोइलⓅ—वि० [सं० सज्जित, हिं० सँजोना अथवा सं० संयोजित] १. अच्छी तरह सजाया हुआ। सुसज्जित। उ०—सूर सँजोइल साजि सुबाजि, सुसेल धरे बगमेल चले हैं। भारी भुजा भरी, भारी सरीर, बली बिजयी सब भाँति भले हैं।—तुलसी २. एक स्थान (शब्द०)। पर जमा किया हुआ। एकत्र। ३. संघटित। एकत्रित। उ०—होंहु सँजोइल रोकहु घाटा।—मानस, २।१९०।

सँजोऊⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० सँजोना] १. तैयारी। उपक्रम। उ०—अबहीं बेगिहि करौ सँजोऊ। तस मारहु हत्या नहिं होऊ।—जायसी (शब्द०)। २. साज सामान। सामग्री। उ०—बेगहु भाइहु सजहुँ सँजोऊ। सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ।—मानस, २।१९१। ३. संयोग। उ०—ओहि आगे थिर रहा न कोऊ। दहुँ का कहँ अस जुरै सँजोऊ।—जायसी (शब्द०)।

सँजोग—संज्ञा पुं० [सं० संयोग] दे० 'संयोग'। उ०—वर सँजोग मोहि मेरवहु कलस जात हौं मानि। जा दिन इच्छा पूजै बेगि चढाऊँ आनि।—जायसी। (शब्द०)। (ख) जौ बिधिबस अस बनै सँजोगू। तौ कृतकृत्य होइ सब लोगू।—मानस, २।२२२।

सँजोना†—क्रि० स० [सं० सज्जा अथवा सं० संयोजना] १. सज्जित करना। अलंकृत करना। सजाना। उ०—(क) कुल हमरे में होइ, यातें पाछें कौन जो। बिधिवत कन्या सँजोइ, नित्त हमें तर्पित करे।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)। (ख) हे प्रियंवदा, तू जा पैरों पर पड़कर जैसे बने इसे मना ला तबतक मैं अर्घ, जल सँजोती हूँ।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)। २. एकत्र करना। संचित करना। ३. पूरा करना। ४. सँभालना।

सँजोवन†—संज्ञा पुं० [हिं० सँजोना] सज्जित करने की क्रिया। सजाने का व्यापार।

सँजोवनाⓅ—क्रि० स० [हिं० सँजोना] दे० 'सँजोना'। उ०—अस कहि भेंट सँजोवन लागे।—मानस २।

सँजोवलⓅ†—वि० [हिं० सँजोना] १. सुसज्जित। २. सेना सहित। उ०—होहि सँजोवल कुँवर जो भोगी। सब दर छेंकि धरहिं, अब योगी—जायसी (शब्द०)। ३. सावधान। होशियार।

सँजोवा†—संज्ञा पुं० [हिं० सँजोना+वा (हिं० प्रत्यय)] १. सजावट। शृंगार। २. जमाव। जमघट।

सँजोह†—संज्ञा पुं० [सं० संयोग] लकड़ी का वह चौखटा जो जुलाहे कपड़ा बुनते समय छत से लटका देते हैं और जिसमें राछ या कंघी लगी होती है। ढरकी फेंकते समय इसे आगे बढ़ा देते हैं और उसके पश्चात् इसे खींचकर बाने को कसते हैं। इसे हत्था भी कहते हैं।

सँझला‡—वि० [सं० सन्ध्या, प्रा० संझा+हिं० ला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सँझली] १. संध्या संबंधी। संध्या का। उ०—पड़ोना दिन भरि चिल्लान औ सँझली जून मरिगा।—सरस्वती (शब्द०)। २. मँझले से छोटा और छोटे से बड़ा। मँझले और छोटे के बीच का (को०)।

सँझवती†—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्यावर्तिका] दे० 'सँझवाती'।

सँझवाती†—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्या+वती] संध्या के समय जलाया जानेवाला दीपक। शाम का चिराग। उ०—चंद देख चकई मिलान सर फूले ऐसे, विपरीतकाल है सुदेह कहियत है। वाती

सँझवाती घनसार नीर चंदन सो बारि लीजियत न अनल चहियतु है।—हृदयराम (शब्द०)। २. वह गीत जो संध्या समय गाया जाता है। प्रायः यह विवाह के अवसर पर होता है।

सँझवाती[2]—वि० संध्या संबंधी। संध्या का।

सँझिया, सँझैया—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्या] वह भोजन जो संध्या के समय किया जाता है। रात्रि का भोजन।

सँझोखा—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्या] दे० 'सँझोखे'।

सँझोखेⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्या] संध्या का समय। शाम का वक्त। उ०—गोप अथाइनि ते उठे गोरज छाई गैल। चलि बलि अलि अभिसारिके भली सँझोखे सैल।—बिहारी (शब्द०)।

सँझौती‡—संज्ञा स्त्री०, वि० [हिं० संझा+औती (प्रत्य०) दे० 'सँझवाती'।

सँटिया—संज्ञा स्त्री० [देश०] बाँस की लंबी पतली छड़ी। साँटी। पतला बेंत या छड़ी। उ०—सँटिया लिए हाथ नँदरानी थरथरात रिस गात।—सूर०, १०।३४१।

सँठ[1]—संज्ञा पुं० [सं० शान्त] शांति। निस्तब्धता। खामोशी।

मुहा०—सँठ मारना=चुपकी साधना। चुप रहना। कुछ न बोलना। न बोलना।

सँठ[2]—संज्ञा पुं० [सं० शठ] १. शठ। धूर्त। २. नीच। वाहियात।

सँड़सा—संज्ञा पुं० [सं० सन्दंश] [स्त्री० अल्पा० सँड़सी] लोहे का एक औजार जो दो छड़ों से बनता है। गहुआ। जंबूरा।

विशेष—इसके एक सिरे पर थोड़ा सा छोड़कर दोनों छड़ों को आपस में कील से जड़ देते हैं। प्रायः इसे लोहार गरम लोहा आदि पकड़ने के लिये रखते हैं।

सँड़सी—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्दंश] पतले छड़ों का एक प्रकार का सँड़सा। जंबूरी।

विशेष—इसके दोनों छड़ों का अगला भाग अर्ध वृत्ताकार मुड़ा हुआ होता है। इससे पकड़कर प्रायः चूल्हे पर से गरम बटुली आदि गोल मुँहवाले बरतन उतारते हैं।

सँडाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँड] दे० 'संडाई'।

सँड़ासⓅ†[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सँड़ासी'।

सँड़ास‡[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं०] सँड़ी हुई वस्तु की गंध। सँड़ाँध।

सँड़ासी†—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्दंशिका] दे० 'सँड़सी'। उ०—खिन खिन जीव सँड़ासिन्ह आँका। आवहिं डाँव छुवावहिं बाँका।—पदमावत, पृ० ७०३।

सँतरँजⓅ—संज्ञा पुं० [अ० शतरंज; तुल० सं० चतुरङ्ग] दे० 'शतरंज'। उ०—मया सूर परसन भा राजा। साहि खेल सँतरँज कर साधा।—पदमावत, पृ० ६१२।

सँदेसⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० सन्देश] दे० 'सँदेसा'। उ०—पितु सँदेस सुनि कृपानिधाना।—मानस, २।९७।

सँदेसड़ाⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० संदेस+ड़ा (प्रत्य०)] दे० 'सँदेसा'। उ०—पिउ सौं कहेहुँ सँदेसड़ा, हे भौंरा! हे काग।—जायसी ग्रं०, पृ० १५४।

सँदेसराⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० संदेस+रा (प्रत्य०)] दे० 'सँदेसा'। उ०—जब लगि कह न सँदेसरा ना ओहि भूख न प्यास।—पदमावत, पृ० ३६५।

सँदेसा—संज्ञा पुं० [सं० सन्देश] किसी के द्वारा जबानी कहलाया हुआ समाचार आदि। खबर। हालचाल।

क्रि० प्र०—आना।—जाना।—पाना।—भेजना।—मिलना।

सँदेसी†—संज्ञा पुं० [हिं० संदेसा+ई (प्रत्य०)] वह जो सँदेसा ले जाता हो। संदेशवाहक। बसीठ।—उ०—राजा जाइ तहाँ बहि लागा। जहाँ न कोइ सँदेसी कागा।—जायसी (शब्द०)।

सँदेहिलⓅ—वि० [सं० संदेह+हिं०, इल (प्रत्य०)] संदेहास्पद। संदेहयुक्त। उ०—नाम धर्‌यो संदिग्ध पद सब्द संदेहिल जासु।—भिखारी० ग्रं०, भा० २, पृ० २२२।

सँपुटीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्पुट] कटोरी। प्याली।

सँपूरन—वि० [सं० सम्पूर्ण] १. पूर्ण। उ०—अष्टम मास सँपूरन होई।—सूर०, ३।१३। २. सफल। सिद्ध। ३. समाप्त (को०)।

सँपेरा—संज्ञा पुं० [हिं० साँप+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० सँपेरिन] साँप पालनेवाला आदमी। मदारी। साँप का तमाशा दिखलानेवाला।

सँपोला—संज्ञा पुं० [हिं० साँप+ओला (अल्पा० प्रत्य०)] साँप का बच्चा।

मुहा०—सँपोला पालना=ऐसे व्यक्ति को प्रश्रय देना जो आगे चलकर उसी पर वार करे। नितराम् अविश्वसनीय व्यक्ति को प्रश्रय देना।

सँपोलिया—संज्ञा पुं० [हिं० साँप+वाला] १. साँप पकड़नेवाला। सँपेरा।† २. दे० 'सँपोली'—२।

सँपोली—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँप+ओली (प्रत्य०)] १. वह पिटारी जिसमें सँपेरे साँप रखते हैं। २. बाँस के पोर पर से सूखकर अलग हो जानेवाली सूप के आकार की खोल। सुपेली।

सँभरनाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० सँभलना] दे० 'सँभलना'।

सँभलना—क्रि० अ० [हिं० सँभालना] १. किसी बोझ आदि का ऊपर लदा रह सकना। पकड़ में रहना। थामा जा सकना। जैसे,—यह बोझ तुमसे नहीं सँभलेगा। २. किसी सहारे पर रुका रह सकना। आधार पर ठहरा रहना। जैसे,—इस खंभे पर यह पत्थर नहीं सँभलेगा। ३. होशियार होना। सचेत होना। सावधान होना। जैसे,—इन ठगों के बीच सँभल कर रहना। ४. चोट या हानि से बचाव करना। गिरने पड़ने से रुकना। जैसे,—वह गिरते गिरते सँभल गया। ५. बुरी दशा को फिर सुधार लेना। जैसे,—इस रोजगार में इतना घाटा उठाओगे कि सँभलना कठिन होगा। ६. कार्य का भार उठाया जाना। निर्वाह संभव होना। जैसे,—हमसे इतना खर्च नहीं सँभलेगा। ७. स्वस्थता प्राप्त करना। आरोग्य लाभ करना। चंगा होना। जैसे,—बीमारी तो बहुत कड़ी पाई, पर अब सँभल रहे हैं।

सँभला†—संज्ञा पुं० [हिं० सँभलना] एक बार बिगड़कर फिर सुधरी हुई फसल।

सँभारⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० सँभालना, सं० सम्भार] १. देखरेख। खबरदारी। निगरानी। २. पालन पोषण। उ०—करिय सँभार कोसलराइ।—तुलसी (शब्द०)।

यौ०—सार सँभार=पालन पोषण और निरीक्षण का भार। उ०—सब कर सार सँभार गोसाईं।—तुलसी (शब्द०)। ३. वश में रखने का भाव। रोक। निरोध। उ०—रे नृप बालक कालबस बोलत तोहि न सँभार।—तुलसी (शब्द०)। ४. तन बदन की सुधि। होश हवास। ५. तैयारी (को०)।

सँभारनाⓟ†—क्रि० स० [सं० सम्भार] १. दे० 'सँभालना'। २. याद करना। स्मरण करना। मन में इकट्ठा करके लाना। उ०—बंदि पितर सब सुकृत सँभारे। जो कुछ पुन्य प्रभाव हमारे। तौ सिव धनुष मृनाल की नाईं। तोरहिं राम, गनेस गोसाईं।—तुलसी (शब्द०)।

सँभाल—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भार] १. रक्षा। हिफाजत। २. पोषण का भार। देखरेख। निगरानी। ४. प्रबंध। इंतजाम। जैसे,—घर की सँभाल वही करता है। ५. तन बदन की सुध। होश हवास। चेत। आपा। जैसे,—वह इतना विकल हुआ कि शरीर की सँभाल न रही।

सँभालना—क्रि० स० [सं० सम्भार] १. भार को ऊपर ठहराना। बोझ ऊपर रखे रहना। भार ऊपर ले सकना। जैसे,—इतना भारी बोझ कैसे सँभालोगे। २. रोक या पकड़ में रखना। इस प्रकार थामे रहना कि छूटने या भागने न पावे। रोके रहना। काबू में रखना। जैसे,—सँभालो, नहीं तो छूटकर भाग जायगा। ३. किसी वस्तु को अपनी जगह से हटने, गिरने पड़ने, खिसकने आदि से रोकना। यथास्थान रखना। च्युत न होने देना। थामना। जैसे—टोपी सँभालना, धोती सँभालना। ४. गिरने पड़ने से रोकने के लिये सहारा देना। गिरने से बचाना। जैसे,—मैंने सँभाल लिया, नहीं तो वह गिर पड़ता। ५. रक्षा करना। हिफाजत करना। नष्ट होने या खो जाने से बचाना। जैसे,—इस पुस्तक को बहुत सँभालकर रखना। ६. बुरी दशा को प्राप्त होने से बचाना। बिगड़ी दशा में सहायता करना। खराबी से बचाना। उद्धार करना। जैसे,—उसने बड़े बुरे दिनों में सँभाला है। ७. पालन पोषण करना। परवरिश करना। ८. देखरेख करना। निगरानी करना। ९. प्रबंध करना। इंतजाम करना। व्यवस्था करना। जैसे,—घर सँभालना। १०. निर्वाह करना किसी कार्य का भार अपने ऊपर लेना। चलाना। जैसे,—उसका खर्च हम नहीं सँभाल सकते। ११. दशा बिगड़ने से बचाना। रोग, व्याधि, आपत्ति इत्यादि की रोक करना। जैसे,—बीमारी बढ़ जाने पर सँभालना कठिन हो जाता है। १२. कोई वस्तु ठीक ठीक है, इसका इतमीनान कर लेना। सहेजना। जैसे—देखो १०० हैं, इन्हें सँभालो। १३. स्मरण करना। याद करना। दे० 'सँभारना'। १४. किसी मनोवेग को रोकना। जोश थामना। जैसे,—उसकी कड़ी बातें सुनकर मैं अपने को सँभाल न सका।

संयो० क्रि०—देना।—लेना।

सँभाला—संज्ञा पुं० [हिं० सँभालना] जीवन की ज्योति का बुझने के पूर्व टिमटिमा उठना। मरने के पहले कुछ चेतनता सी आ जाना। चैतन्य बाई होना। जैसे,—कल सँभाला लिया था, आज मर गया।

क्रि० प्र०—लेना।

सँभालू—संज्ञा पुं० [हिं० सिंधुवार] श्वेत सिंधुवार वृक्ष। मेवड़ी।

सँयोनाⓟ—क्रि० स० [हिं० सँजोना अथवा सं० संयोजन] दे० 'सँजोना'।

सँवरⓟ†—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मरण] १. याद। स्मरण। स्मृति। २. खबर। हाल चाल।

सँवरना[१]—क्रि० अ० [सं० सम् √वृ > संवरण (= व्यवस्थित करना)] १. बनाना। दुरुस्त होना। २. सजना। अलंकृत होना।

सँवरनाⓟ[२]—क्रि० स० [सं० स्मरण, हिं० सुमिरना] याद करना। उ०—सँवरौं आदि एक करतारू।—जायसी (शब्द०)।

सँवरा‡—वि० [हिं० साँवला] दे० 'साँवला'।

सँवरिया—वि० [हिं० साँवला + इया (प्रत्य०)] दे० 'साँवला'। उ०—बिरिख सँवरिया दहिने बोला।—जायसी (शब्द०)।

सँवाँ†[१]—संज्ञा पुं० [सं० श्यामाक] साँवाँ नाम का अन्न।

सँवाँ†[२]—वि० [सं० समान] समान। सदृश। तुल्य।

सँवाग†—संज्ञा पुं० [हिं० स्वाँग] रूप बदलना। भेष बदलना। उ०—भीख लेहिं जोगिनि फिर माँगू। केतन पाइय किए सँवागू।—पदमावत, पृ० ६०५।

सँवारⓟ†[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० संवाद या स्मरण] हाल। समाचार। उ०—पुनि रे सँवार कहेसि अरु दूजी। जो बलि दीन्ह देवतन्ह दूजी।—जायसी (शब्द०)।

सँवार[२]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सँवारना] १. सँवारने की क्रिया या भाव। २. एक प्रकार का शाप या गाली।

विशेष—कभी कभी लोग यह न कहकर कि 'तुम पर खुदा की मार या फटकार' प्रायः 'तुम पर खुदा की सँवार' कह दिया करते हैं।

सँवारना—क्रि० स० [सं० सम्वर्णन या संवरण] १. सजाना। अलंकृत करना। उ०—कंठ कठुला नीलमनि अंभोज माल सँवारि।—सूर०, १०।१६६। २. दुरुस्त करना। ठीक करना। उ०—सो देही नित देखि के चोंच सँवारै काग।—कविता कौ०, भा०, १, पृ० १९७। ३. क्रम से रखना। ठीक ठीक लगाना। ४. कार्य सुचारु रूप से संपन्न करना। काम ठीक करना।

मुहा०—बिगड़ी सँवारना = बिगड़ी बात बनाना।

सँहरनाⓟ—क्रि० अ० [सं० संहार] नष्ट होना। उ०—हैहय मारे नृपजन सँहरे। सो जस लै किन जुग जुग जीजै।—केशव (शब्द०)।

सँहारनाⓟ—क्रि० स० [सं० संहरण] दे० 'संहारना'। उ०—उहाँ तो खड्ग नरंदइ मारों। इहाँ तो बिरह तुम्हार सँहारों।—जायसी (शब्द०)।

स[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर। २. शिव। महादेव। ३. साँप। ४. पक्षी। चिड़िया। ५. वायु। हवा। ६. जीवात्मा। ७. चंद्रमा। ८. भृगु। ९. दीप्ति। कांति। चमक। १०. ज्ञान। ११. चिंता। १२. गाड़ी का रास्ता। सड़क। १३. संगीत में षड्ज स्वर

का सूचक अक्षर। जैसे,—रे, ग, म, ध, नि, स। १४. छंदशास्त्र में 'सगण' शब्द का सूचक अक्षर या संक्षिप्त रूप। दे० 'सगण'। १५. घेरा। बाड़ (को०)।

स²—उप० एक उपसर्ग जिसका प्रयोग शब्दों के आरंभ में, कुछ विशिष्ट अर्थ उत्पन्न करने के लिये होता है। जैसे,—(क) बहुव्रीहि समास में 'सह' के अर्थ में। जैसे, -सजीव = सह + जीव। सपरिवार = सह + परिवार। (ख) 'स्व' या 'एक ही' के अर्थ में। जैसे,—सगोत्र। (ग) 'सु' के स्थान में। जैसे, —सपूत।

सआदत—संज्ञा स्त्री० [अ० सआदत] १. भलाई। कल्याण। २. प्रताप। इकबाल। ३. बरकत। शुभ होने का भाव [को०]।

यौ०—सआदतमंद = (१) सौभाग्यशील। (२) आज्ञापालक। सआदतमंदी = सआदतमंद होने का भाव।

सइपु¹—अव्य० [सं० सह] से। साथ।

सइपु²—अव्य० [प्रा० सुंतो] एक विभक्ति जो करण और अपादान कारक का चिह्न है।

सइअन†—संज्ञा पुं० [सं० शोभाञ्जन, हिं० सहिजन] दे० 'सहिजन'।

सइन†—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] नाड़ी का व्रण। नासूर।

सइनापु—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेना] दे० 'सेना'।

सइयोपु†—संज्ञा स्त्री० [सं० सखी, प्रा० सहीयो] सखी। सहेली।

सइल‡¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्य] लकड़ी की वह खूँटी या गुल्ली जो गाड़ी के कँधावर में लगाई जाती है। इसके लगने से बैल की गरदन दो सैलों के बीच रहरी में ठहरी रहती है और वह इधर उधर नहीं हो सकता। कभी कभी यह लोहे की भी होती है। समदूल। सैला। घुल्ला।

सइलपु²—संज्ञा पुं० [सं० शैल] दे० 'शैल'। उ०—मत्तभट मुकुट दसकंध साहस सइल सृंग बिद्दरनि जनु बज्र टाँकी।—तुलसी ग्रं०, पृ० १६३।

सइवर‡—संज्ञा पुं० [सं० शैवल] सेवार। शैवाल।

सई¹—संज्ञा स्त्री० [अ० सही] मल्लाहों की परिभाषा में नाव खींचने की गून को कड़ा करना।

सई²—संज्ञा पुं० [अ०] पराक्रम। प्रयत्न। कोलिश।

यौ०—सई सिफारिश = दौड़धूप या कोशिश पैरवी।

सईपु³—संज्ञा स्त्री० [सं० श्री] वृद्धि। बरकत। उ०—खग मृग सबर निसाचर सब की पूँजी बिनु बाढ़ी सई।—तुलसी (शब्द०)।

सई‡⁴—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक नदी का नाम जो शाहजहाँपुर से निकल कर जौनपुर में गोमती से मिलती है। उ०—सई तीर बसि चले बिहाने। शृंगबेरपुर सब निअराने।—मानस, २।१८६।

सई†⁵—संज्ञा स्त्री० [सं० सखी, प्रा० सही] दे० 'सखी'।

सईकंटा—संज्ञा पुं० [सं० शतकण्टक या सकण्टक] एक प्रकार पेड़।

सईद—वि० [अ०] १. तेजस्वी। २. भाग्यशाली। खुशनसीब। ३. कल्याणकारी। मांगलिक। शुभ [को०]।

सईल—संज्ञा स्त्री० [सं० शैल, प्रा० सइल] दे० 'सइल'।

सईस—संज्ञा पुं० [अ० साइस] दे० 'साईस'।

सउँपु—अव्य० [हिं० सों] दे० 'सों'।

सउख‡—संज्ञा पुं० [अ० शौक] दे० 'शौक'।

सउजा†—संज्ञा पुं० [सं० शावक या देशी] आखेट करने योग्य जंतु। शिकार। साउज।

सउत†—संज्ञा स्त्री० [सं० सपत्नी] दे० 'सौत'।

सउतिया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सउत + इया (प्रत्य०)] दे० 'सौत'।

सउतेला†—वि० [हिं० सौत + एला (प्रत्य०) तेला] दे० 'सौतेला'।

सऊर—संज्ञा पुं० [अ० शुऊर] दे० 'शऊर'।

सकंकूर—संज्ञा पुं० [रूमी सकन्कूर, अ० सक़न्कूर] गोह की तरह का एक जंतु।

विशेष—इसका रंग लाल या पीला होता है। इसका मांस खारा और फीका होता है, पर बहुत बलवर्धक माना जाता है। इसे रेत की मछली या रेगमाही भी कहते हैं।

सकटक¹—संज्ञा पुं० [सं० सकण्टक] १. करंज वृक्ष। कंजा। पूति करंज। दुर्गंधकरंज। २. सिवार। शैवाल। सेवार।

सकंटक²—वि० १. कंटकयुक्त। काँटों से भरा हुआ। कँटीला। २. खतरनाक। कष्टदायी [को०]।

सकंपन—वि० [सं० सकम्पन] १. जो कंपन के साथ हो। २. कंपनयुक्त। काँपता हुआ [को०]।

सक†¹—संज्ञा पुं० [सं० शक] दे० 'शक'।

सक²—संज्ञा स्त्री० [हिं० शक्ति, सकत] दे० 'शक्ति', 'सकत'।

सकपु³—संज्ञा पुं० [अ० शक] संदेह। शंका शक।

सकपु⁴—संज्ञा पुं० [सं० शाका] साका। धाक।

मुहा०—सक बाँधना = (१) धाक बाँधना। (२) मर्यादा स्थापित करना।

यौ०—सकबंधी = धाक बाँधने या मर्यादा स्थापित करनेवाला। उ०—हौं सो रतनसेन सकबंधी। राहु बेधि जीता सैरंधी।—जायसी (शब्द०)।

सकट¹—संज्ञा पुं० [सं० शकट] शकट। गाड़ी। छकड़ा। सग्गड़। उ०—कोटि भार सकटनि महँ भरि कै। भए पठावत आनँद करि कै।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सकट²—संज्ञा पुं० [सं०] शाखोट वृक्ष। सिहोर।

सकट³—वि० अधम। जघन्य। नीच। बुरा [को०]।

सकटान्न—संज्ञा पुं० [सं०] जिसे किसी प्रकार का अशौच हो, उसका अन्न। अशौचान्न। अशुद्ध अन्न।

विशेष—शास्त्रों में इस प्रकार का अन्न खाने का निषेध है; और कहा गया है कि जो ऐसा अन्न खाता है, उसे भी अशौच हो जाता है।

सकटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शकटी] १. गाड़ी। २. छोटा सग्गड़। (डिं०)।

सकड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खली] दे० 'सिकड़ी', 'सिकरी'।

सकत†¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १. बल। शक्ति। सामर्थ्य। ताकत। २. वैभव। संपत्ति।

सकत(पु)[२]--क्रि० वि० [सं० शक्ति] जहाँ तक हो सके। भरसक। उ०—का तोहिं जीव मरावौं सकत आन के दोस। जो नहिं बुझै समुदजल सो बुझाइ कित ओस।—जायसी (शब्द०)।

सकता[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १. शक्ति। ताकत। २. सामर्थ्य। उ०—मिट्टी के बासन को इतनी सकता कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है जो बना हो सो अपने बनानेवाले को क्या सराहे।—इंशाअल्लाह खाँ (शब्द०)।

सकता[२]—संज्ञा पुं० [अ० सकतह्] १. एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमें रोगी बेहोश हो जाता है। बेहोशी की बीमारी। २. विराम। यति।

मुहा०—सकता पड़ना = छंद में यतिभंग दोष होना। सकते का आलम = विस्मय से मुग्ध होने की स्थिति। स्तब्ध या ठक होना। सकते की हालत = भय आश्चर्य आदि से स्तब्ध या निःसंज्ञ होने की स्थिति। बेहोशी की सी स्थिति। उ०—और हँसी का एक ऐसा ठहाका सुन पड़ा कि जिससे सबके सब··· सकते की हालत में हो गए, मानो सबके होश हवास गायब हो गए हों, केवल शरीर वहाँ बैठा हो।—पीतल०, भा० २, पृ० ६५।

सकती[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १. शक्ति। बल। ताकत। २. शक्ति नामक अस्त्र। ३. दे० 'शक्ति'—८-१३। उ०—स्यो सकती दोउ मुष जीवंत।—रामानंद; पृ० १२।

सकती(पु)†[२]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सख़्ती] कड़ाई। जोर जबरदस्ती। उ०—कवि किंचित् औसर जो अकती सकती नहीं हाँ पर कीजिए जू। हम तो अपनो बर पूजती हैं सपने नहिं पीपर पूजिए जू।—कविता कौ०, भा० १, पृ० ४०३।

सकन—संज्ञा पुं० [देश०] लता कस्तूरी। मुश्कदाना।

सकना—क्रि० अ० [सं० शक् या शक्य] कोई काम करने में समर्थ होना। करने योग्य होना। जैसे,—खा सकना, चल सकना, कह सकना।

विशेष—इस क्रिया का व्यवहार सदा किसी दूसरी क्रिया के साथ संयोज्य क्रिया के रूप में ही होता है, अलग नहीं होता। परंतु बंगाल में कुछ लोग भूल से, या बँगला के प्रभाववश, कभी कभी अकेले भी इस क्रिया का व्यवहार कर बैठते हैं। जैसे,—हमसे नहीं सकेगा।

सकपक—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. हिचक। २. चकपकाहट [को०]।

सकपकाना—क्रि० अ० [अनु० सकपक] १. चकपकाना। आश्चर्ययुक्त होना। २. हिचकना। आगापीछा करना। ३. लज्जित होना। शरमाना। ४. प्रेम, लज्जा या शंका के कारण उदभूत एक प्रकार की चेष्टा। उ०—प्रथम समागम में एहो कवि रघुनाथ कहा कहौं रावरो सो एतनी सकाई है। मिलिबे की चरचा सुनत ही सकपकाई स्वेद भरे तन परे मुखिया पियराई है।—रघुनाथ (शब्द०)। ५. हिलना। डोलना। लहराना। उ०—सकपकाहिं विष भरे पसारे। लहरि भरे लहकति अति कारे।—जायसी (शब्द०)।

सकर(पु)—वि० [सं०] १. हस्तयुक्त। २. किरणयुक्त। ३. जिसके ऊपर कर लगा हो। ४. सूँड़वाला (हाथी) [को०]।

सकर[२]—संज्ञा पुं० [अ० सक़र] दोजख। नरक [को०]।

सकर[३]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शकर तुल० सं० शर्करा प्रा० सक्करा, अप० सक्कर 'जइ सक्कर सय खंड थियं'—पुरानी हिंदी] शर्करा। चीनी। खाँड।

सकरकंद—संज्ञा पुं० [फ़ा० शकरकंद] दे० 'शकरकंद'।

सकरकंदी—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'शकरकंद'।

सकरकन—संज्ञा पुं० [हिं शकरकंद] दे० 'शकरकंद'।

सकरखंडो†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शकर+हिं० खंड+ई (प्रत्य०) तुल० सं० शर्कराखण्ड] लाल और बिना साफ की हुई चीनी। खाँड़। शक्कर।

सकरणक—वि० [सं०] जो शरीर के किसी अवयव द्वारा संवहन किया गया [को०]।

सकरना—क्रि० अ० [सं० स्वीकरण] १. सकारा जाना। स्वीकृत या अंगीकृत होना। मंजूर होना। जैसे,—हुंडी सकरना, दाम सकरना। २. कबूला जाना। माना जाना।

संयो० क्रि०—जाना।

सकरपाला—संज्ञा पुं० [फ़ा० शकरपारा] १. शकरपारा नाम की मिठाई। वि० दे० 'शकरपाला'। २. एक प्रकार का काबुली नीबू। ३. कपड़े पर की एक प्रकार की सिलाई जो शकरपारे की आकृति की होती है। दे० 'शकरपारा'।

सकरा—वि० [सं० सङ्कीर्ण, हिं० सँकरा] दे० 'सँकरा'।

सकरिया—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शकर+हिं० इया] लाल शकरकंद। रतालू।

सकरुंड—संज्ञा पुं० [गुज०] सकुरुंड या साकुंड नाम का वृक्ष।

विशेष—इस वृक्ष की पत्तियों आदि का व्यवहार औषधि के रूप में होता है। वैद्यक के अनुसार यह कषाय, रुचिकर, दीपन और वातनाशक माना जाता है।

सकरुण—वि० [सं०] १. जिसे करुणा हो। दयाशील। २. करुणा से भरा हुआ। करुणायुक्त। करुणार्द्र।

सकरुन(पु)—वि० [सं० सकरुण] १. सकरुण। दयाशील। २. करुणा से भरा हुआ। करुणार्द्र। उ०—सकरुन बचन सुनत भगवाना।—मानस, ६।६९।

सकर्ण[१]—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुनता या सुन सकता हो।

सकर्ण[२]—वि० [वि० स्त्री० सकर्णा, सकर्णी] १. कानवाला। जिसे कान हों।

सकर्णक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सकर्णप्रावृत—वि० [सं०] जो कर्ण तक ढँका हुआ हो [को०]।

सकर्तृक—वि० [सं०] १. कर्ता से युक्त। २. जिसके पास साधन हो। उपकरणवाला [को०]।

सकर्मक—वि० [सं०] १. काम वाला। जिसके पास कार्य हो। २. कर्म कारक से युक्त। जैसे, सकर्मक क्रिया।

सकर्मक क्रिया—स्त्री० [सं०] व्याकरण में दो प्रकार की क्रियाओं में से एक। वह क्रिया जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त हो। जैसे,—'खाना'। खाने का कार्य उस वस्तु पर समाप्त होता

है, जो खाई जाती है; इसलिये यह सकर्मक क्रिया हुई। इसी प्रकार देना, लेना, मारना, उठाना आदि सकर्मक क्रियाएँ हैं।

सकर्मा—वि० [सं० सकर्मन्] १. साथ साथ अथवा एक प्रकार का काम करनेवाला। २. दे० 'सकर्मक' [को०]।

सकल[1]—वि० [सं०] १. सब। सर्व। समस्त। कुल। २. कलाओं से युक्त (को०)। ३. मंद और मधुर स्वरवाला (को०)। ४. जगत् से प्रभावित। ५. व्याज देनेवाला (को०)।

यौ०—सकलकामदुघ, सकलकामप्रद = सभी कामनाएँ पूर्ण करनेवाला। उ०—सकल कामप्रद तीरथराऊ।—मानस, २।२०३। सकलवर्ण = जो क और ल वर्णों से युक्त हो। कलह।

सकल[2]—संज्ञा पुं० १. रोहित तृण। गंध तृण। रोहिस घास। २. निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति। ३. समग्र वस्तु। प्रत्येक वस्तु। हर एक चीज (को०)। ४. दर्शनशास्त्र के अनुसार तीन प्रकार के जीवों में से एक प्रकार के जीव। पशु।

विशेष—जीव तीन प्रकार के माने गए हैं—विज्ञानाकल, प्रलयाकल, और सकल। सकल जीव मल, माया और कर्म से युक्त होता है। इसके भी दो भेद कहे गए हैं—पक्व कलुष और अपक्व कलुष।

सकल[3]—संज्ञा स्त्री० [अ० शक्ल] दे० 'शकल[2]'।

सकलकल—वि० [सं०] संपूर्ण, सोलहों कलाओं से युक्त (चंद्रमा)।

सकलखोरा—संज्ञा पुं० [हिं० शकरखोरा] एक पक्षी। दे० 'शकरखोरा'।

सकलजननी—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रकृति।

सकलदारⓅ—वि० [अ० शक्ल + फ़ा० दार (प्रत्य०)] शक्लवाला। सूरतवाला। खूबसूरत। उ०—सकलदार मैं नहीं, नीच फिर जाति हमारी।—पलटू०, पृ ६।

सकलप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सबको प्रिय हो। सबको अच्छा लगानेवाला। २. चना। चणक।

सकललक्षरण—संज्ञा पुं० [सं०] शाल निर्यास। धूना। राल।

सकलसिद्धि—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसे सब सिद्धियाँ प्राप्त हों। २. समग्र सिद्धियाँ। सभी विषयों में सफलता।

सकलसिद्धिदा—संज्ञा पुं० [सं०] तांत्रिकों के अनुसार एक भैरवी का नाम।

सकलात—संज्ञा पुं० [सं० सकाल (= ऋतु या अवसर के उपयुक्त)?] १. ओढ़ने की रजाई। दुलाई। उ०—(क) लग्यो शीत गात सुनो बात प्रभु काँपि उठे दई सकलात आनि प्रीति हिये भोई है। (ख) शीत लगत सकलात विदित पुरुषोत्तम दीनी। शौच गए हरि संग कृत्य सेवक की कीनी।—भक्तमाल (शब्द०)। २. उपहार। भेंट। सौगात। उ०—सौ गाड़ी सकलात सलौनी। पातसाह कौ जात पठौनी।—लाल कवि (शब्द०)।

सकलाधार—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सकली—संज्ञा स्त्री० [डिं०] मत्स्य। मछली।

सकलेंदु—संज्ञा पुं० [सं० सकलेन्दु] पूर्णिमा का चंद्रमा।

यौ०—सकलेंदुमुख = जिसका मुख पूर्णिमा के चाँद जैसा हो।

सकलेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

सकल्प[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सकल्प[2]—वि० वेद के एक अंग कल्प से युक्त। वेद के उस अंग से युक्त जिसमें यज्ञादि का विधान किया गया है [को०]।

सकवा†—संज्ञा पुं० [हिं० साखू] शाल। अश्वकर्ण।

सकषाय—वि० [सं०] १. जो कषाय रस से युक्त हो। कसैला। २. जागतिक वासनाओं काम, क्रोध आदि से युक्त [को०]।

सकस‡—संज्ञा पुं० [अ० शख्स] दे० 'शख्स'।

सकसकाना†—क्रि० अ० [अनु०] बहुत डरना। डर के कारण काँपना। उ०—सकसकात तनु भीजि पसीना उलटि उलटि तन जोरि जँभाई।—सूर (शब्द०)।

सकसना†—क्रि० अ० [हिं० स + कसना] इतना कस उठना कि जरा सा भी स्थान स्थाली न रहे। २. डरना। भयभीत होना।

सकसानाⓅ†[1]—क्रि० अ० [अनु०] डर मानना। भयभीत होना। उ०—दस्तेबाज बारन के द्वार ठाढ़े रस्ते पर छिति के अधीस दस्तबस्त सकसात हैं।—नकछेदी (शब्द०)।

सकसाना†[2]—क्रि० स० इतना अधिक भर देना कि जगह खाली न रह जाय। अड़साना। ठूसना।

सका†—संज्ञा पुं० [अ० सक़्क़ा] १. पानी भरनेवाला, भिश्ती। २. वह जो घूम घूमकर लोगों को पानी पिलाता हो; विशेषतः मशक से (मुसलमानोंको) पानी पिलानेवाला।

सकाकुल—संज्ञा पुं० [?] १. एक प्रकार का कंद जिसे अंबर कंद कहते हैं। २. एक प्रकार का शतावर। ३. शकाकुल मिस्री। सुधामूली।

सकाकुल मिसरी—संज्ञा स्त्री० [?] दे० 'सकाकुल मिस्री।

सकाकुल मिस्री—संज्ञा स्त्री० [?] १. सुधामूली। २. अंबरकंद।

सकाकोल—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनु के अनुसार एक नरक का नाम। २. नरक भूमि। यमपुरी जहाँ काकोल नाम का नरक है।

सकानाⓅ†[1]—क्रि० अ० [सं० शङ्कन] १. शंका करना। संदेह करना। डरना। उ०—(क) जोरि कटक पुनि राजा घर कहँ कीन पयान। दिवसहिं भानु अलोप भा बासुक इंद्र सकान।—जायसी (शब्द०)। (ख) देखि सैन ब्रज लोग सकात। यह आयो कीन्हें कछु घात।—सूर (शब्द०)। २. भय के कारण संकोच करना। हिचकना। ३. दुःखी होना। रंज होना।

सकाना†[2]—क्रि० स० 'सकना' का प्रेरणार्थक रूप। उ०—जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई। कोटि भाँति कोउ करै उपाई।—मानस, ७।११६।

विशेष—इसका क्वचित् हास्य प्रयोग भी प्राप्त होता है।

सकाम—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह व्यक्ति जिसे कोई कामना या इच्छा हो। २. वह व्यक्ति जिसकी कामना पूर्ण हुई हो। लब्धकाम। ३. कामवासना युक्त व्यक्ति। मैथुन की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति। कामी। ४. वह व्यक्ति जो कोई कार्य भविष्य में फल मिलने की इच्छा से करे। जो निःस्वार्थ होकर कोई कार्य न करे, वल्कि स्वार्थ के विचार से करे। ५. प्रेम करनेवाला। प्रेमी।

सकाम निर्जरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैनियों के अनुसार चित्त की वह वृत्ति जिसमें बहुत अधिक क्षति होने पर भी शत्रु या पीड़ा देनेवालों को परम शांतिपूर्वक क्षमा कर दिया जाता है। यह वृत्ति उपशांत चित्तवाले साधुओं में होती है।

सकामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो मैथुन की इच्छा रखती हो। कामपीड़िता। कामवती।

सकामारि—संज्ञा पुं० [सं०] कामियों वा विषयी जीव के शत्रु, शिव [को०]।

सकामी—संज्ञा पुं० [सं० सकामिन्] १. वह जिसे किसी प्रकार की कामना हो। कामनायुक्त। वासनायुक्त। २. कामी। विषयी।

सकार†[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. 'स' अक्षर। २. 'स' वर्ण की सी ध्वनि। जैसे,—उसके मुँह से सकार भी न निकला। ३. सगण (।।ऽ)।

सकार[2]—वि० उत्साही। सक्रिय। फुर्तीला [को०]।

सकारथ†—वि० [सं० सु+कार्यार्थ] १. सार्थक। उपयोग में आने लायक। २. सफल। अकारथ का उलटा।

सकारना—क्रि० अ० [सं० स्वीकरण] १. स्वीकार करना। मंजूर करना। २. महाजनों का हुंडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले हुंडी देखकर उसपर हस्ताक्षर करना।

विशेष—जो लोग किसी महाजन को हुंडी पर रुपए देते हैं, वे मिती पूरी होने से एक दिन पहले अपनी हुंडी उस महाजन के पास उसे दिखलाने और उससे हस्ताक्षर कराने के लिये ले जाते हैं। इससे महाजन को दूसरे दिन के दातव्य धन की सूचना भी मिल जाती है और रुपये पानेवाले को यह निश्चय भी हो जाता है कि कल मुझे रुपए मिल जायँगे।

सकारा[1]—संज्ञा पुं० [सं० स्वीकरण] १. महाजनी में वह धन जो हुंडी सकारने और उसका समय फिर से बढ़ाने के लिये लिया जाता है। २. सुबह का समय।

सकारा[2]—संज्ञा पुं० [बं० सकाल] सुबह। प्रभात।

सकारे, सकारैं†—क्रि० वि० [सं० सकाल] १. प्रातःकाल। सबेरे। तड़के। उ०—अवधेश के द्वारे सकारे गई, सुत गोद कै भूपति लै निकसे। अवलोकिहौं सोच विमोचन को ठगि सी रही, जे न ठगे धिक से।—तुलसी (शब्द०)।

यौ०—साँझ सकारे=सायंकाल और प्रातःकाल। सुबह शाम। उ०—गए मयूर तमचूर जो हारे। उन्हहिं पुकारे साँझ सकारे।—जायसी (शब्द०)।

२. नियत समय पर। ठीक वक्त पर। (क्व०)।

सकारौं†—क्रि० वि० [हिं० सकारे] दे० 'सकारे'।

सकार्थ†—वि० [हिं० सकारथ] दे० 'सकारथ'। उ०—नानक गुर मुखि छूटी अै जन्मु सकार्थ होय।—प्राण०, पृ० २१५।

सकाल[1]—वि० [सं०] समयोचित [को०]।

सकाल[2]—अव्य १. तड़के। सबेरे। २. ठीक समय पर [को०]।

सकाल[3]—संज्ञा पुं० [बं०] प्रभात। सुबह। भोर।

यौ०—सकाल विकाल=(१) सुबह शाम। (२) हर समय। हर काल।

सकालत—संज्ञा स्त्री० [अ० सक़ालत] १. सकील या गरिष्ठ होने का भाव। २. गुरुता। भारीपन।

सकाश[1]—वि० [सं०] दृश्यमान। पास। निकट। समीप।

सकाश[2]—संज्ञा पुं० १. सामीप्य। निकटता। २. पड़ोस। प्रतिवेश। ३. उपस्थिति [को०]।

सकाश[3]—अव्य० पास। निकट। समीप।

सकिलना†[1]—क्रि० अ० [हिं० फिसलना या अनु०] १. फिसलना। सरकना। २. सिमटना। सिकुड़ना। उ०—उखरत बार सकिल गई नासा। भयो तहाँ ते रुधिर प्रकासा।—रघुराज (शब्द०)। ३. हो सकना। पूरा होना। जैसे,—तुमसे यह काम नहीं सकिल सकता। ४. एकत्र होना। बटुरना। पुंजीभूत होना। उ०—मेघा महिगत सो जल पावन। सकिलि श्रवनमग चलेऊ सुहावन।—मानस, १।३६।

सकिलाना‡—क्रि० स० [हिं० सकिलना का सक० रूप] १. फिसलाना। सरकाना। २. सिमटना। समेटना। ३. पूरा करना। निष्पन्न करना। ४. एकत्र करना। बटोरना।

सकीन—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जंतु।

सकीबकी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सक(=शक्ति)+बक(=बकने की क्रिया)] १. शक्ति। सामर्थ्य। २. बड़ बड़ करने की बात। बढ़ बढ़कर बोलना। उ०—सकीबकी सब गइल हिराई। प्रभु बिन तो कहँ कौन छोड़ाई।—गुलाल०, पृ० २४।

सकीर्न(पु)—वि० [सं० सङ्कीर्ण] दे० 'संकीर्ण'। उ०—थल सकीर्न ईकार लघु, दीर्घ दोस है नाँहि।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ५३३।

सकील[1]—वि० [अ० सक़ील] १. जो जल्दी हजम न हो। गरिष्ठ। गुरुपाक। २. भारी। वजनी। ३. जो कठिन हो। क्लिष्ट (शब्द०)।

सकील[2]—संज्ञा पुं० [सं०] संभोग कार्य में कमजोर पड़ने के कारण अपनी पत्नी को स्वयं संभोग करने के पहले किसी और व्यक्ति से संयुक्त करानेवाला पुरुष [को०]।

सकुंत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शकुन्त, प्रा० सकुन] दे० 'शकुंत' (पक्षी)।—अनेकार्थ०, पृ० १०१।

सकुक्षि—वि० [सं०] एक ही पेट से पैदा होनेवाला। सहोदर [को०]।

सकुच(पु)†—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० सङ्कोच] संकोच। लाज। शर्म। उ०—(क) सुनु मैया तेरी सौं करौं याकी टेव लरन की, सकुच बेंचि सी खाई।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सकुच सुरत आरंभ ही, बिछुरी लाज लजाय। ढरकि ढार ढुरि ढिग भई, ढीठ ढिठाई आय।—बिहारी (शब्द०)। (ग) हम सों उन सों कौन सगाई। हम अहीर अबला ब्रजवासी वै जदुपति जदुराई। कहा भयो जु भए नँदनंदन अब इह पदवी पाई। सकुच न आवत घोष बसत की तजि ब्रज गए पराई।—सूर (शब्द०)।

सकुचना—क्रि० अ० [सं० सङ्कोच, हिं० सकुच+ना (प्रत्य०)] १. संकोच करना। लज्जा करना। शरमाना। उ०—(क)

सकुची, डरी, मुरी मन बारी। गहु न बाँह रे जोगि भिखारी। —जायसी (शब्द०)। (ख) सुनि पग धुनि चितई इतै, न्हाति दिए ही पीठि। चकी, झुकी, सकुची, डरी, हँसी लजीली दीठ।—बिहारी (शब्द०)। २. (फूलों का) संपुटित होना। होना। संकुचित होना। उ०—गिरिधरदास कहै सकुची कुमोदिनी यों देखि पर पुरुष लजात जैसे खंडिता।—गिरधर (शब्द०)।

सकुचाई⑤—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कोच, हिं० सकुच+आई (प्रत्य०)] संकुचित होने का भाव। २. संकोच। शर्म। लज्जा। हया।

सकुचाना¹—क्रि० अ० [सं० सङ्कोच, हिं० सकुच+आना (प्रत्य०)] संकुचित होना। लजाना। संकोच करना। जैसे,—वह आपके पास आने में सकुचाता है। उ०—(क) एहि विधि भरत फिरत बन माहीं। नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं।—मानस, २।३११। (ख) राम की तो ऐसी बात कंज पात गात जाके सामने मरीच ताहि देख सकुचाइ है। —हृदयराम (शब्द०)।

सकुचाना⑤²—क्रि० स० [हिं० सकुचाना का प्रे० रूप] किसी को संकोच करने में प्रवृत्त करना। लज्जित करना।

सकुचाना⑤³—क्रि० स० [सं० सङ्कुञ्चन] सिकोड़ना। उ०—श्रवण शरण ध्वनि सुनत लियो प्रभु तनु सकुचाई।—सूर (शब्द०)।

सकुचावना⑤†—क्रि० स० [हिं० सकुचाना का प्रे० रूप] लज्जित करना। संकुचित करना। उ०—निज करनी सकुचेहिं कत, सकुचावत इहिं चाल। मोहूँ से नित बिमुख त्यों सनमुख रहि गोपाल।—बिहारी (शब्द०)।

सकुचावनी⑤—वि० स्त्री० [हिं० सकुचना] विनिंदित करनेवाली। लजानेवाली। संकुचित करनेवाली। उ०—खाँड की खजावनी सी, कंद की कुढ़ावनी सी, सिता की सतावनी सी सुधा सकुचावनी।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ३०५।

सकुची—संज्ञा स्त्री० [सं० सकुलमत्स्य] एक प्रकार की मछली जो साधारण मछलियों से भिन्न और प्रायः कछुए के आकार की होती है।

विशेष—इसके छोटे छोटे चार पैर होते हैं और एक लंबी पूँछ होती है। इसी पूँछ से यह शत्रु को मारती है। जहाँपर इसकी चोट लगती है, वहाँ घाव हो जाता है और चमड़ा सड़ने लगता है। कहते हैं कि यह मछली ताड़ के वृक्ष पर चढ़ जाती है। पानी में और जमीन पर दोनों जगह यह रह सकती है।

सकुचीला—वि० [हिं० सकुच+ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सकुचीली] जिसे अधिक संकोच हो। संकोच करनेवाला। शरमीला।

सकुचीली—संज्ञा स्त्री० [हिं० सकुचीला] लाजवंती। लज्जावती लता।

सकुचौंहा⑤—वि० [सं० सङ्कोच, हिं० सकुच+औहाँ (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सकुचौंहीं] संकोच करनेवाला। लजीला। शरमीला। उ०—गह्यो अबोलो बोलि प्यौ आपुहिं पठै बसीठि। दीठि चुराई दुहुन की लखि सकुचौंही दीठि।—बिहारी (शब्द०)।

सकुड़ना—क्रि० अ० [हिं० सिकुड़ना] दे० 'सिकुड़ना'।

सकुन⑤¹—संज्ञा पुं० [सं० शकुन्त] पक्षी। चिड़िया।

यौ०—सकुनाधम।

सकुन²—संज्ञा पुं० [सं० शकुन] दे० 'शकुन' (सगुन)।

सकुनाधम⑤—संज्ञा पुं० [सं० शकुन, प्रा०, सकुन+अधम] वह पक्षी जो पक्षियों में अत्यंत निम्नकोटि का माना जाय। काग। कौआ। उ०—सकुनाधम सब भाँति अपावन। प्रभु मोहि कीन्ह बिदित जगपावन।—मानस, ७।१२३।

सकुनी⑤†¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शकुन्त] पखेरू। चिड़िया। पक्षी।

सकुनी²—संज्ञा पुं० [सं० शकुनि] दुर्योधन का मामा। विशेष दे० 'शकुनि'। उ०—भीषम, द्रोन, करन अस्थामा सकुनी सहित काहु न सरी।—सूर०, १।२४६।

सकुपना⑤—क्रि० अ० [हिं० सकोपना] दे० 'सकोपना'।

सकुरुंड—संज्ञा पुं० [सं० सकुरुण्ड ?, गुज०] साकुरुंड वृक्ष।

सकुल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा कुल। उत्तम कुल। ऊँचा खानदान। २. सकुची मछली। सकुल मत्स्य। ३. नेवला (को०)। ४. संबंधी। रिश्तेदार।

सकुल²—वि० १. उत्तम कुलवाला। कुलीन। २. एक ही परिवार का। ३. सपरिवार। परिवार के साथ। उ०—सकुल सदल प्रभु रावन मारयो।—मानस, ६।११५।

सकुलज—वि० [सं०] एक ही कुल में उत्पन्न।

सकुला—संज्ञा पुं० [सं० स+कुल] बौद्ध भिक्षुओं का नेता या सरदार।

सकुलादनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गरेठी। महाराष्ट्री लता। २. कुटकी।

सकुली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सकुची'।

सकुल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो एक ही कुल का हो। सगोत्र। २. वह जो एक ही गोत्र का किंतु तीन पीढ़ी के ऊपर चौथी, पाँचवीं, छठी, सातवीं, आठवीं या नवीं पीढ़ी का हो। ३. दूरवर्ती संबंधी (को०)।

सकूतरा—संज्ञा पुं० [देश०] एक द्वीप का नाम।

विशेष—यह टापू अरब सागर में अफ्रीका के पूर्वी तट के समीप है। यहाँ मोती और प्रवाल अधिक मिलते हैं।

सकूनत—संज्ञा स्त्री० [अ० सकूनत] [वि० सकूनती] रहने का स्थान। निवास स्थान। पता। जैसे,—अदालत में गवाहों की वल्दियत और सकूनत भी लिखी जाती है।

सकृत्¹—अव्य० [सं०] १. एक बार। एक मरतबा। २. सदा। ३. साथ। सह। ४. एक समय। किसी समय (को०)। ५. तुरंत। तत्काल (को०)।

सकृत्²—संज्ञा पुं० १. पशुओं का मल। विष्ठा। गुह। २. कौआ। काक।

सकृत्प्रज—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके एक ही बच्चा हो। २. काक। कौआ। ३. सिंह। मृगेंद्र (को०)।

सकृत्प्रजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बंध्यारोग। बाँझपन। २. शेरनी। सिंहनी।

सकृत्प्रसूता, सकृत्प्रसूतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक ही संतान पैदा करनेवाली स्त्री। २. एक ही बार की व्याई हुई गाय [को०]।

सकृत्फल—संज्ञा पुं० [सं०] वह चीज जो केवल एक ही बार फलती हो।

सकृत्फला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह जो एक बार फले। २. कदली। केला।

सकृत्सू—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसने अभी अभी बालक प्रसव किया हो। सद्यः प्रसूता स्त्री।

सकृत्स्नायी—वि० [सं० सकृतस्नायिन्] एक बार नहानेवाला [को०]।

सकृदागामी मार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का धार्मिक मार्ग जिसमें जीव केवल एक बार जन्म लेकर मोक्ष प्राप्त करता है।

सकृदाच्छिन्न—वि० [सं०] जो एक ही वार में काटकर अलग कर दिया गया हो [को०]।

सकृदाहुत—वि० [सं०] एक ही बार में चुकाया जानेवाला सूद [को०]।

सकृद्गति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ही गति, मार्ग या संभावना [को०]।

सकृद्गर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] खच्चर। अश्वतर।

सकृद्गर्भा—संज्ञा स्त्री० [सं०] केवल एक बार गर्भ धारण करनेवाली स्त्री [को०]।

सकृद्ग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम। २. इस देश का निवासी।

सकृद्वीर—संज्ञा पुं० [सं०] एकबीर या अकलबीर नामक वृक्ष।

सकृन्नंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सकृन्नन्दा] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी का नाम।

सकृपण—वि० [सं०] दीन। दुखिया [को०]।

सकेतⓤ†[1]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्केत] १. संकेत। इशारा। २. प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट स्थान।

सकेत[2]—वि० [सं० सङ्कीर्ण] तंग। संकुचित। संकीर्ण।

सकेत[3]—संज्ञा पुं० विपत्ति। दुःख। कष्ट। उ०—खिनहि उठै, खिन बाड़ै अस हिय कँवल सकेत। हीरामनहिं बुलावहिं, सखी! गहन जिउ लेत।—जायसी (शब्द०)।

सकेत[4]—संज्ञा पुं० [सं०] एक आदित्य का नाम [को०]।

सकेतनाⓤ†—क्रि० अ० [हिं० संकेत] संकुचित होना। सिकुड़ना। उ०—कँवल सकेता कुमुदिनि फूली। चकवा बिछुरा चकई भूली।—जायसी (शब्द०)।

सकेती†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सकेत] विपत्ति। कष्ट। आपत्ति।

सकेतु—वि० [सं०] १. पताका या ध्वजा से युक्त। २. केतु ग्रह के साथ। केतु ग्रह से युक्त [को०]।

सकेरनाⓤ—क्रि० स० [हिं० सकेलना] दे० 'सकेलना'। उ०—पीठि दिएँ सब दीठि परैं निमुहें, जग ईठिनि कौन सकेरै।—घनानंद, पृ० १३१।

सकेलंग—संज्ञा पुं० [अं० सक्लिग] एक प्रकार का वृक्ष जो बहुत ऊँचा होता है।

विशेष—इसकी लकड़ी नरम और सफेद होती है जो इमारत और संदूक आदि बनाने के काम में आती है। यह अधिकतर हिमालय के पूर्वी भाग में पाया जाता है।

सकेलना†—क्रि० स० [सं० सकल अथवा सङ्कलन] एकत्र करना। इकट्ठा करना। जमा करना। उ०—(क) अब हम जाना हो हरि बाजी को खेल। डंक बजाय देखाय तमाशा बहुरि सो लेत सकेल।—कबीर (शब्द०)। (ख) कहुँ हरि कथा कहूँ हरि पूजा कहुँ संतन को डेरो। जो बनिता सुत यूथ सकेलै ह्वैगे रथनि पनेरो।—सूर (शब्द०)।

सकेला[1]—संज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] एक प्रकार की तलवार जो कड़े और नरम लोहे के मेल से बनाई जाती है।

सकेला[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का लोहा।

सकेला†[3]—वि० [सं० सकल] संगी साथी से युक्त। साथी या मित्र से युक्त। अकेला का विलोम।

सकेश—वि० [सं०] १. बालदार। रोएँदार। झबरीला। २. (भोजन) जिसमें बाल या केश पड़ गया हो [को०]।

सकैतव[1]—वि० [सं०] कैतवयुक्त। कपटी। धोखा देनेवाला [को०]।

सकैतव[2]—संज्ञा पुं० वंचक या धूर्त व्यक्ति [को०]।

सकोचⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कोच] दे० 'संकोच'।

सकोचनाⓤ—क्रि० स० [सं० सङ्कोच, हिं० सकोच+ना (प्रत्य०)] संकुचित करना। उ०—सोच पोच मोचि कै सकोच भीम वेष को।—केशव (शब्द०)।

सकोड़ना—क्रि० स० [हिं० सिकोड़ना] दे० 'सिकोड़ना'।

सकोतरⓤ—वि० [सं० स+कातर] १. कातरता से युक्त। भयभीत। डरता हुआ। शंकित। २. जिसका चित्त कोटर या घोसले की ओर हो। उ०—चकचक्कि विचक्कहि थानवरं। उडि पंष सकोतर चित्त धरं।—पृ० रा०, १३।१२३।

सकोतरा—संज्ञा पुं० [हिं० चकोतरा] दे० 'चकोतरा'।

सकोप—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सकोपा] क्रोधयुक्त। कोपाविष्ट। उ०—बारंबार सकोप मुनि करै निरूपन ज्ञान।—मानस, ७।१११।

सकोपनाⓤ†—क्रि० स० [सं० सकोप+हिं० ना (प्रत्य०)] कोप करना। क्रोध करना। गुस्सा करना। उ०—पुनि पुनि सुनि विपरीत सकोपा। और प्रकार कीन्ह व्यक्षेपा।—शंकर दिग्विजय (शब्द०)।

सकोपितⓤ—वि० [सं० सकोप] कुपित। क्रुद्ध। नाराज।

सकोरना†—क्रि० स० [हिं०] दे० 'सिकोड़ना'।

सकोरा—संज्ञा पुं० [हिं० कसोरा] [स्त्री० सकोरी] मिट्टी की एक प्रकार की छोटी कटोरी। कसोरा।

सक्करी—संज्ञा स्त्री० [सं० शर्करी] एक प्रकार का छंद। विशेष दे० 'शर्करी'।

सक्कस—वि० [फ़ा०] जो किसी से न दबे। जोरदार। कठिन। सरकश। उ०—जानि पन सक्कस तरक्कि उठयो तक्कस करक्कि उठयो कोदंड फरक्कि उठयो भुजदंड।—भिखारी० ग्रं०, भा० २, पृ० ३३।

सक्का—संज्ञा पुं० [अ० सक्का] १. भिश्ती। माशकी। उ०—उछरि भड़क्का से परत पुनि छक्का से सड़क्का से भजत नेकु चाबुक खड़क्का से। सक्का से सवारै देत जीवन समर सदा जदुराज बाजी पर प्रान से उचक्का से।—गोपालचंद (शब्द०)। २. वह जो मशक में पानी भरकर लोगों को पिलाता फिरता हो। ३. एक प्रकार का पक्षी (को०)।

सक्त[1]—वि० [सं०] १. दे० 'आसक्त'। २. मिला हुआ। सटा हुआ। संलग्न। ३. प्रवृत्त। लगा हुआ। लीन। ४. जड़ा हुआ। खचित। जटित (को०)। ५. संबद्ध। संबंध या लगाववाला (को०)। ६. बाधित (को०)। ७. सावधान (को०)।

यौ० —सक्तचक्र। सक्तद्विष = दे० 'सक्तवैर'। सक्तमूत्र। सक्तसामंत।

सक्त(पु)[2]—वि० [सं० शक्त] समर्थ। दे० 'शक्त'।

सक्तचक्र —संज्ञा पुं० [सं०] वह राष्ट्र जो चारों ओर शक्तिशाली राष्ट्रों से घिरा हो।

सक्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] आसक्ति। तल्लीनता [को०]।

सक्तत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सक्तता' [को०]।

सक्तमूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] चरक के अनुसार वह व्यक्ति जो थोड़ा थोड़ा करके पेशाब करे।

सक्तवैर—वि० [सं०] दुश्मनी करनेवाला। शत्रुता में लगा हुआ [को०]।

सक्तव्य—वि० [सं०] जो पीसने योग्य हो (अन्न)। सत्तू बनाने योग्य।

सक्तसामंत—संज्ञा पुं० [सं० सक्त सामन्त] ग्रामसमूह का जमींदार जो उसका सामंत होता था।

विशेष—पराशर स्मृति में कहा है कि किसी ग्राम के पास का जो ताल्लुकेदार होता था, वही उस ग्राम का सक्तसामंत होता था। सीमा संबंधी झगड़ों में सबसे पहले इसी की गवाही ली जाती थी।

सक्ति[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] एक अस्त्र। दे० 'शक्ति'। उ०—(क) खंग कर चर्मवर वर्मधर, रुचिर कटि तून, सर सक्ति सारंगधारी।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४८५। (ख) सो ब्रह्मदत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही।—मानस, ६।८२।

सक्ति[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लगना। लिपटना। (लता आदि का)। २. आसक्ति। लगाव। संबंध। ३. मेल। संगम [को०]।

सक्तिवान(पु)—वि० [सं० शक्तिमत्, शक्तिमान्] दे० 'शक्तिमान्'। उ०—जो कहौ सक्तिवान अस कौन। तुमकों दंड धरि सकै जौन।—नंद० ग्रं०, पृ० ३१२।

सक्तु—संज्ञा पुं० [सं०] भुने हुए अनाज (यव) को पीसकर तैयार किया हुआ आटा। सत्तू।

यौ०—सक्तुकार। सक्तुकारक। सक्तुधानी। सक्तुपिंडी। सक्तुहोम।

सक्तुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्तू। २. एक प्रकार का विष जिसकी गाँठ में सत्तू के समान चूरा भरा रहता है।

सक्तुकार, सक्तुकारक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सत्तू बनाता और बेचता हो।

सक्तुधानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्तू रखने का बर्तन [को०]।

सक्तुपिंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० सक्तुपिण्डी] सत्तू की बनी हुई पिंड़िया या सत्तू का बना हुआ लड्डू।

सक्तुफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] शमी वृक्ष। सफेद कीकर।

सक्तुफली—संज्ञा स्त्री० [सं०] शमी वृक्ष। सफेद कीकर।

सक्तुल—वि० [सं०] सत्तू से युक्त। जिसमें सक्तु मिला हो [को०]।

सक्तुहोम—संज्ञा पुं० [सं०] सत्तू का पिंडदान [को०]।

सक्थि—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का मर्म (स्थान) जो शरीर के ग्यारह मर्म स्थानों में माना गया है। २. जंघा। जाँघ (को०)। ३. जंघे की हड्डी (को०)। ४. गाड़ी का आगे का लट्ठा। जिसके बीच में अश्व वा बैल रहता है। दे० 'बम[3]' (को०)।

सक्थी—संज्ञा पुं० [सं० सक्थिन्] १. हड्डी। अस्थि। हाड़। २. उरु। जंघा। जाँघ। ३. छकड़े या बैलगाड़ी का एक अंग या अंश। दे० 'बम'[3]।

सक्र(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शक्र] देवताओं का राजा, इंद्र। विशेष दे० 'शक्र'। उ०—बहुरि सक्र सम बिनवौं तेहीं।—मानस, १।१४।

यौ०—सक्रजीत = मेघनाद। सक्रधनु। सक्रसरोवर।

सक्रघण—संज्ञा पुं० [सं० सक्रघन] इंद्र का अस्त्र, वज्र। (डिं०)।

सक्रतु—वि० [सं०] समान कर्म या प्रज्ञावाला। जो एकमत हो।

सक्रधनु—संज्ञा पुं० [सं० शक्रधनु] इंद्रधनुष।

सक्रपति—संज्ञा पुं० [सं० शक्रपति] विष्णु। (डिं०)।

सक्रसन—संज्ञा पुं० [सं० शक्रसन] कुटज वृक्ष।

सक्रसरोवर—संज्ञा पुं० [सं० शक्रसरोवर] इंद्रकुंड नामक स्थान जो ब्रज में है।

सक्रारि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शक्रारि] इंद्र का शत्रु। मेघनाद। उ०—कुंभकरन सम बंधु मम सुत प्रसिद्ध सक्रारि।—मानस, ६।२७।

सक्रिय—वि० [सं०] १. जो क्रिया से युक्त हो। काम करनेवाला २. डोलने या भ्रमण करनेवाला। ३. क्रियाशील। स्फूर्तिशील। फुर्तीला (को०)।

यौ०—सक्रिय आंदोलन = देश से ब्रिटिश शासन हटाने का आंदोलन जिसके पिकेटिंग, बहिष्कार आदि कई अंग थे। सक्रिय सहयोग = वह सहयोग जो मात्र मौखिक न हो। सक्रिय सेवा = युद्ध क्षेत्र या मोर्चे पर की हुई विशिष्ट सेवा या काम।

सक्ष—वि० [सं०] १. अतिक्रमण करने योग्य। २. हारा हुआ। पराजित।

सक्षण—वि [सं०] १. हारा हुआ। पराभूत। २. प्राप्तावसर। लब्धावकाश। सावकाश (को०)। ३. निर्व्यापार। कार्यरहित (को०)। ४. विजेता। विजयी (को०)।

सक्षणि—वि० [सं०] सेवा करने के योग्य। सेव्य।

सक्षत—वि० [सं०] क्षतयुक्त। अक्षत का उलटा। व्रणयुक्त। चुटैल।

सक्षम—वि [सं०] १. जिसमें क्षमता हो। क्षमताशाली। २. काम करने के योग्य। कार्य में समर्थ। ३. जो क्षमाशील हो। क्षमा से युक्त (को०)।

सक्षार—वि० [सं०] खारी। क्षारयुक्त। नमकीन [को०]।

सख—संज्ञा पुं० [सं० सखि शब्द का कर्ताकारक एकवचन] १. सखा। मित्र। साथी। (समासांत में) जैसे,—वसंतसख, सचिवसख। २. एक प्रकार का वृक्ष।

सखत†—वि० [अ० सख़्त] दे० 'सख्त'।

सखती† —संज्ञा स्त्री० [अ० सख़्त+ई] दे० 'सख्ती'।

सखत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सखा होने का भाव। सखापन। मित्रता। दोस्ती।

सखर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस का नाम।

सखर†[२]—वि० [हिं० सखरा] १. दे० 'सखरा'। २. खरा। चोखा। कटु। ३. 'खर' राक्षस से युक्त। जहाँ 'खर' की चर्चा हुई हो। उ०—सखरसुकोमल मंजु, दोषरहित दूषणसहित। —मानस,१।१४।

सखरच†—वि० [फ़ा० शाहख़र्च] दिल खोलकर व्यय करनेवाला। खर्च करने में जो कंजूस न हो।

सखरज†—वि० [हिं० सखरच] दे० 'सखरच'।

सखरन†—संज्ञा पुं० [हिं० शिखरन] दे० 'शिखरन'।

सखरस—संज्ञा पुं० [सं० सख ?+हिं० रस] मक्खन। नैनू।

सखरा[१] —संज्ञा पुं० [सं० सक्षार] १. खारा। क्षारयुक्त। २. निखरा का उलटा। दे० 'सखरी'।

सखरा[२]—संज्ञा पुं० [हिं० निखरी] वह भोजन जो घी में न पकाया गया हो। कच्ची रसोई। दे० 'सखरी'।

सखरी[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० निखरा या निखरी का उल्टा] कच्ची रसोई। कच्चा भोजन। जैसे,—दाल, भात, रोटी आदि जो हिंदू लोग चौके के बाहर या किसी अन्य आदमी के हाथ की नहीं खाते औरजिसमें छूत मानते हैं। विशेष दे० 'निखरी'।

सखरी[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखर] छोटा पहाड़। पहाड़ी (डिं०)।

सखस†—संज्ञा पुं० [फ़ा० शख़्स] दे० 'शख्स'।

सखसावन—संज्ञा पुं० [फ़ा० शख़्स+हिं० आवन, अथवा सं० सुख+शयन या सुखासन] १. पालकी। पीनस। २. आरामकुरसी। ३. पलंग।

सखा[१]—संज्ञा पुं० [सं० सखि] १. वह जो सदा साथ रहता हो। साथी। संगी। २. मित्र। दोस्त। ३. सहयोगी। सहचर। ४. एक वृक्ष (को०)। ५. साहित्य में वह व्यक्ति जो नायक का सहचर हो और जो सुख दुःख में उसके समान सुख दुःख को प्राप्त हो।

विशेष—सखा चार प्रकार के होते हैं—पीठमर्द, बिट, चेट और विदूषक।

६. पत्नी की बहन का पति। साढ़ू (को०)।

यौ०—सखाभाव = मित्रता। सखाविग्रह = आपसी तकरार। मित्रों की लड़ाई।

सखा[२]—संज्ञा स्त्री० [अ० सख़ा] दे० 'सखावत' (को०)।

सखावत—संज्ञा स्त्री० [अ० सख़ावत] १. सखी या दाता होने का भाव। दानशीलता। २. उदारता। फैयाजी।

सखिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सखी होने का भाव। २. बंधुता। मैत्री। दोस्ती।

सखित्व—संज्ञा पुं० [सं०] बंधुता। मित्रता। दोस्ती।

सखिपूर्व[१]—संज्ञा पुं० [सं०] बंधुता। मित्रता।

सखिपूर्व[२]—जिससे पहले मित्रता रही हो [को०]।

सखिल—वि० [सं०] मित्रता से युक्त। मैत्रीपूर्ण। दोस्ती से भरा हुआ [को०]।

सखी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहेली। सहचरी। संगिनी। २. साहित्य ग्रंथों के अनुसार वह स्त्री जो नायिका के साथ रहती हो और जिससे वह अपनी कोई बात न छिपावे।

विशेष—सखी का चार प्रकार का कार्य होता है—मंडन, शिक्षा, उपालंभ और परिहास।

३. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ और अंत में एक मगण या एक यगण होता है। इसकी रचना में आदि से अंत तक दो दो कलें होती हैं—२+२+२+२+२+२ और कभी कभी २+३+३+२+२+२ भी होता है और विराम ८ और ६ पर होता है। विरामभेद के अनुसार कवियों ने इसके दो भेद किए हैं—(१) विजात और (२) मनोरम।

यौ०—सखी भाव। सखी संप्रदाय।

सखी[२]—वि० [अ० सख़ी] दाता। दानी। दानशील। जैसे,—सखी से सूम भला जे तुरत दे जबाब। (कहावत)।

सखीभाव—संज्ञा पुं० [सं०] वैष्णवों के अनुसार भक्ति का एक प्रकार जिसमें भक्त अपने आपको इष्टदेवता श्री कृष्ण आदि की पत्नी या सखी मानकर उपासना करता है।

सखीसंप्रदाय—संज्ञा पुं० [सं० सखी सम्प्रदाय] वैष्णवों का एक संप्रदाय।

विशेष—इस संप्रदाय में भगवत्प्राप्ति के लिये गोपीभाव को एकमात्र उन्नत साधन माना गया है। इसके प्रवर्तक स्वामी हरिदासजी हैं। यह संप्रदाय निंबार्क मत की ही एक अवांतर शाखा है।

सखुआ—संज्ञा पुं० [सं० शाल] शालवृक्ष। साखू। विशेष—दे० 'शाल'।

सखुन—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुख़न] १. बातचीत। वार्तालाप। २. कविता। काव्य। उ०—जुल्म है गर न दो सखुन की दाद। कहर है गर न करो मुझको प्यार।—कविता कौ, भा० ४, पृ० ४६०। ३. कौल। वचन। जैसे,—मर्दों का सखुन एक होता है।

मुहा०—सखुन देना = वचन हारना। वादा करना। सखुन डालना = (१) कोई बात कहना। कुछ चाहना या माँगना। उ०—सखुन उन्हीं पर डाले जो हँस हँस रखें मान।—(शब्द०)। (२) प्रश्न करना। पूछना। सवाल करना।

४. कथन। उक्ति।

सखुनचीन—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुख़नचीं] चुगुलखोर। चवाई। इधर उधर बात लगानेवाला।

सखुनचीनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुखनचीनी] सखुनचीन का भाव। चुगलखोरी। चवाव।

सखुनतकिया—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुखनतकिया] वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों की जबान पर ऐसा चढ़ जाता है कि बातचीत करने में प्राय: मुँह से निकला करता है। तकियाकलाम।

विशेष—बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो बातचीत करने में बार बार 'जो है सो', 'क्या नाम', 'समझ लीजिए कि' आदि कहा करते हैं। ऐसे ही शब्दों या वाक्यांशों को सखुनतकिया कहते हैं।

सखुनदाँ—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुख़नदाँ] १. वह जो सखुन या काव्य अच्छी तरह समझता हो। काव्य का रसिक। २. वह जो बातचीत का मर्म अच्छी तरह समझता है।

सखुनदानी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुख़नदानी] १. बातचीत की समझदारी। २. काव्यमर्मज्ञता। काव्यरसिकता।

सखुनपरवर—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुखनपरवर] १. वह जो अपनी कही हुई बात का सदा पालन करता हो। जबान या बात का धनी। २. वह जो अपनी कही हुई अनुचित या गलत बात का भी बराबर समर्थन करता हो। हठी। जिद्दी।

सखुनफहम—वि० [फा० सुखनफ़ह्म] काव्यमर्मज्ञ। सहृदय। उ०—हम सखुनफहम हैं गालिब के तरफदार नहीं।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ४५४।

सखुनवर—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुख़नवर] कवि। शायर। उ०—देख इस तरह से कहते है सखुनवर सेहरा।—कविता कौ० भा० ४, पृ० ४५५।

सखुनशनास—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुख़नशनास] १. वह जो सखुन या काव्य भलीभाँति समझता हो। काव्य का मर्मज्ञ। २. वह जो बातचीत का मर्म बहुत अच्छी तरह समझता हो।

सखुनसंज—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुख़नसंज] १. वह जो बात समझता हो। २. वह जो काव्य समझता हो।

सखुनसंजी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुखनसंजी] सखुनसंज का भाव।

सखुनसाज—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुख़नसाज] १. वह जो सखुन कहता हो। काव्य रचना करनेवाला। कवि। शायर। २. वह जो सदा झूठी बातें गढ़ता हो। अपने मन से झूठी बातें बनाकर कहनेवाला।

सखुनसाजी—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुख़नसाज़ी] १. सखुनसाज का भाव या काम। २. कवि होने का भाव या काम। ३. झूठी बातें गढ़ने का गुण या भाव।

सखोल—संज्ञा पुं० [सं०] राजतरंगिणी के अनुसार एक प्राचीन नगर का नाम।

सख्त—वि० [अ० सख़्त] १. कठोर। कड़ा। जो मुलायम न हो। २. मजबूत। दृढ़। ३. अत्यंत। बहुत ज्यादा। जैसे,—जान सख्त मुश्किल में आ पड़ी है। ४. तीव्र। तेज। प्रचंड। ५. निर्दय। बेरहम। ६. बहुत बड़ा। विशाल (को०)।

यौ०—सख्तकमान = (१) योद्धा। पहलवान। (२) ताकतवर। (३) धनुर्धर। सख्तकलाम = कटुभाषी। सख्तकलामी = कटु या दुर्वचन कहना। सख्तगीर = कड़ी सजा देनेवाला। सख्तगीरी = सख्तगीर का काम। सख्तजबान = कटुभाषी। सख्तजाँ = (१) कठिन परिश्रमी। (२) निलर्ज्जता का जीवन बितानेवाला। (३) सख्तमीर। सख्तजानी = बेहया जीवन। सख्तदिल = निर्दय या बेरहम। सख्तदिली = कठोरहृदयता। सख्तबाजू = अत्यंत परिश्रमी। सख्तमिजाज = कड़े मिजाजवाला। सख्तमीर = जिसके प्राण कठिनता से निकलें। सख्तमुश्किल = (१) भारी कठिनाई। गहरी बाधा। (२) अत्यंत कठिन। सख्तलगाम = मुँहजोर घोड़ा।

सख्ती—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सख़्ती] १. सख्त होने का भाव। कठोरता। कड़ाई। २. बेहयाई। निर्लज्जता। ३. कठिनाई। ४. निर्दयता। ५. तेजी। तीखापन। ६. दृढ़ता। ७. तंगी (को०)।

यौ०—सख्तीकश = कठिनाइयाँ झेलनेवाला।

मुहा०—सख्ती उठाना = (१) जुल्म सहना। (२) कठिनाइयाँ झेलना। सख्ती से पेश आना = कठोरता का व्यवहार करना।

सख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सखा का भाव। सखत्व। सखापन। २. मित्रता। दोस्ती। ३. वैष्णव मतानुसार ईश्वर के प्रति वह भाव जिसमें ईश्वरावतारको भक्त अपना सखा मानता है। जैसे,—महात्मा सूरदास का श्रीकृष्ण के प्रति सख्य भाव था। ४. दोस्त। मित्र (को०)। ५. समानता। बराबरी (को०)।

यौ०—सख्यभंग, सख्यविसर्जन = मित्रता टूटना, मैत्रीभंग। दोस्ती खत्म होना।

सख्यता—संज्ञा स्त्री० [सं० सख्यत + ता (प्रत्य०)] दे० 'सख्य'।

सगंध[1]—वि० [सं० सगन्ध] १. जिसमें गंध हो। गंधयुक्त। महकदार। २. जिसे अभिमान हो। अभिमानी। ३. संबद्ध। संबंधी। संबंधित (को०)।

सगंध[2]—संज्ञा पुं० जातिबंधु। ज्ञातिसंबंधी।

सगंधा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सगन्धा] एक प्रकार का चावल। सुगंधशालि। बासमती चावल।

सगंधा[2]—वि० दे० 'सगा'।

सगंधी[1]—वि० पुं० [सं० सगन्धिन्] जिसमें गंध हो। महकदार।

सगंधी[2]—वि० दे० 'सगा'।

सग[1]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] कुक्कुर। कुत्ता। श्वान।

यौ०—सगजाँ = (१) लालची। लोभी। (२) बेरहम। सगजादा = कुत्ते की औलाद (गाली)। सगबच्चा। पिल्ला। सगबान = कुत्ते की देखरेख करनेवाला। सगबानी = कुत्ते की देखरेख। सगसार = कुत्ते की तरह अपवित्र और निकृष्ट।

सग(पु)[2]—वि० [सं० स्वक् अथवा 'सगर्भ' (वर्णलोप)] सगा। (समस्त पदों में प्रयुक्त) जैसे, सगपन।

सग[3]—संज्ञा पुं० [सं० शाक, हिं० साग] शाक। साग। (समस्त पदों में प्रयुक्त) जैसे, सगपहिता।

सगजुबान—संज्ञा पुं० [फा०] वह घोड़ा जिसकी जीभ कुत्ते के समान लंबी और पतली हो। ऐसा घोड़ा प्राय: ऐबी समझा जाता है।

सगड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० शकटी, शकटिका, हिं० सग्गड़] छोटा सग्गड़।

सगण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. छंद:शास्त्र में एक गण जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होते हैं। इस गण का प्रयोग छंद के आदि में अशुभ है। इसका रूप ।।ऽ है। २. शिव का एक नाम।

सगण[3]—वि० १. जो गणों से युक्त हो। साथियों या दल से युक्त। सदल बल। २. सेना से युक्त। ससैन्य [को०]।

सगत†—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १. शिव की भार्या, पार्वती। (डिं०)। २. शक्ति। ताकत। बल। सामर्थ्य।

सगतिक—वि० [सं०] १. उपसर्ग से युक्त (को०)। ⓟ २. जिसकी कहीं गति हो। अगतिक का विलोम।

सगती†—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] १. पार्वती।(डिं०)। २. एक अस्त्र। शक्ति। ३. ताकत। बल।

सगदा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मादक द्रव्य जो अनाज से बनाया जाता है।

सगन[1]—संज्ञा पुं० [सं० सगण] १. छंद शास्त्र का एक गण। दे० 'सगण[1]'।

सगन†[2]—संज्ञा पुं० [सं० शकुन, हिं० सगुन] दे० 'शकुन'। जैसे, सगनौती।

सगनौती—संज्ञा स्त्री० [हिं० शकुनौती] दे० 'शकुनौती'।

सगपन—संज्ञा पुं० [हिं० सगापन] दे० 'सगापन'।

सगपहता, सगपहिता‡—संज्ञा पुं० [सं० शाक प्रहित] दे० 'सगपहती'।

सगपहतो, सगपहिती‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० साग + पहिती] एक प्रकार की दाल जो साग मिलाकर बनाई जाती है।

विशेष—प्रायः लोग सगपहिती बनाने के लिये उड़द की दाल में चना, पालक या बथुए का साग मिलाते हैं। कभी कभी अरहर की दाल भी मिलाकर बनाई जाती है।

सगपिस्ताँ—संज्ञा पुं० [फ़ा०] लिसोड़ा। बहुवार।

सगपु—संज्ञा पुं० [सं०] अमरवल्ली।

सगबग[1]—वि० [अनु०] १. सराबोर। लथपथ। उ०—(क) बरसावत बहु सुमन को सौरभ मद धारि। सगबग बिंदु मरंद सों, ब्रज की चलत बयारि।—अंबिकादत्त (शब्द०)। (ख) पिय चूम्यो मुँह चूमि होत रोमांचन सगबग।—व्यास (शब्द०)। २. द्रवित। उ०—मुरली नलिका सों अमी नाथ रहे बगराय। सगबग होत पषान जिहिं सूखे तरु हरिराय।—(शब्द०)। ३. परिपूर्ण। उ०—कित तूठ्यो रतिराज साज सब सजि सुख पागे। किहि सुहाग सगबगे भाग काके पुनि जागे।—(शब्द०)। ४. शंकित। डरा हुआ। भीत।

सगबग—क्रि० वि० तेजी से। जल्दी से। चटपट। उ०—उतरि पलँग ते न दियो है धरा पै पग तेऊ सगबग निसि दिन चली जाती हैं।—भूषण (शब्द०)।

सगबगनाⓟ—क्रि० अ० [अनु० सगबग + हिं० ना (प्रत्य०)] १. लथपथ या सराबोर होना। उ०—तन पुलकित किहि हेतु कपोलन परि गई पीरी। रोम सेद सगबगे चाल ह्वै भई अधीरी।—अंबिकादत्त (शब्द०)। २. दे० 'सगबगाना'।

सगबगाना—क्रि० अ० [अनु० सगबग] १. लथपथ होना। किसी वस्तु से भींगना या सराबोर होना। २. सकपकाना। शंकित होना। भयभीत होना। ३. हिलना डुलना।

सगभत्ता†—संज्ञा पुं० [हिं० साग + भात] एक प्रकार का भात जो साग मिलाकर बनाया जाता है। इसमें पकाते समय चावल में साग मिला देते हैं।

सगर[1]—संज्ञा पुं० [हिं० तगर] तगर का फूल और उसका पौधा।

सगर[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १. अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो बहुत धर्मात्मा तथा प्रजारंजक थे।

विशेष—इनका विवाह विदर्भराजकन्या केशिनी से हुआ था। इनकी दूसरी स्त्री का नाम सुमति था। इन स्त्रियों सहित सगर ने हिमालय पर कठोर तपस्या की। इससे संतुष्ट होकर महर्षि भृगु ने आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी पहली स्त्री से तुम्हारा वंश चलानेवाला पुत्र होगा, और दूसरी स्त्री से ६० हजार पुत्र होंगे। सगर की पहली स्त्री से असमंजस नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जो बड़ा उद्धत था। उसे सगर ने अपने राज्य से निकाल दिया। इसके पुत्र का नाम अंशुमान था। सगर की दूसरी स्त्री से साठ हजार पुत्र हुए। एक बार सगर ने अश्वमेध यज्ञ करना चाहा। अश्वमेध का घोड़ा इंद्र ने चुरा लिया और उसे पाताल में जा छिपाया। सगर के पुत्र उसे ढूँढ़ते ढूँढ़ते पाताल में जा पहुँचे। वहाँ महर्षि कपिल के समीप अश्व को बँधा पाकर उन्होंने उनका अपमान किया। मुनि ने क्रुद्ध होकर उन्हें शाप देकर भस्म कर डाला। अपने पुत्रों के न आने पर सगर ने अंशुमान को उन्हें ढूँढ़ने के लिये भेजा। अंशुमान ने पाताल में पहुँच कर मुनि को प्रसन्न किया और वहाँसे घोड़ा लेकर अयोध्या पहुँचा। अश्वमेध यज्ञ समाप्त करके सगर ने तीस सहस्र वर्ष राज्य किया। राजा भगीरथ इन्हीं के वंश के थे।

सगर[3]—वि० विष मिला हुआ। विषाक्त [को०]।

सगर[4]—संज्ञा पुं० [सं० सागर] सागर। तालाब।

सगरा†[1]—वि० [सं० सकल] [वि० स्त्री० सगरी] सब। तमाम। पूरा समग्र। सकल। कुल।

सगरा†[2]—संज्ञा पुं० [सं० सागर] १. तालाब। २. झील।

सगरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नगरी का नाम।

सगर्भ[1]—वि० [सं०] १. एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा। (भाई, बहन आदि)। २. रहस्य युक्त। तात्पर्य युक्त। जिसमें भीतर कुछ हो। उ०—नारद बचन सगर्भ सहेतू। सुंदर सब गुननिधि वृषकेतू।—मानस, १।७२। ३. जिसके पत्ते खुले न हों (को०)। ४. अनुरूप। समान (को०)।

सगर्भ[2]—संज्ञा पुं० सगा भाई [को०]।

सगर्भा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जिसे गर्भ हो। गर्भवती स्त्री। २. सहोदरा। सगी बहन।

सगर्भ्य—वि० [सं०] एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा (भाई, बहन आदि)।

सगलⓟ**†**—वि० [हिं० सकल] दे० 'सकल'।

सगलगी‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० सगा + लगना] १. किसी से बहुत सगापन दिखाने की क्रिया। बहुत आपसदारी दिखलाना।

क्रि० प्र०—करना। दिखाना।

२. खुशामद। चापलूसी। व्यर्थ की प्रशंसा।

सगला‡—वि० [सं० सकल] [वि० स्त्री० सगली] सब। समस्त। कुल।

सगवती—संज्ञा स्त्री० [देश०] खाने का मांस। गोश्त। कलिया। सगौती।

सगवा—संज्ञा पुं० [देश०] सहिंजन। शोभांजन। मुनगा।

सगवारा†—संज्ञा पुं० [सं० स्वक्, हिं० सगा] गाँव के आसपास की और उससे संबंध रखती हुई भूमि।

सगा—वि० [सं० स्वक्] [वि० स्त्री० सगी] १. एक माता से उत्पन्न। सहोदर। जैसे,—सगा भाई। २. जो संबंध में अपने ही कुल का हो। बहुत ही निकट के संबंध का। जैसे,— सगा चाचा, सगा भतीजा, सगा मामा।

सगाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सगा + आई (प्रत्य०)] १. यह निश्चय कि अमुक कन्या के साथ अमुक वर का विवाह होगा। विवाह संबंधी निश्चय। मँगनी। २. स्त्री पुरुष का वह संबंध जो छोटी जातियों में विवाह ही के तुल्य माना जाता है। प्रायः ऐसा संबंध विधवा स्त्री या पतिपरित्यक्ता स्त्री के साथ होता है। उ०—बल कह्यो जो तुम मन ऐसी आइ। तौ तुम क्यों कीन्हीं न सगाइ।—सूर (शब्द०)। ३. संबंध। नाता। रिश्ता। उ०—(क) घोष ग्वाल पशुपाल अधम कुल ईश एक को कौन सगाई। सूर श्याम ब्रजवास बिसारे बाबा नंद यशोदा माई।—सूर (शब्द०)। (ख) मातु पिता प्रिय लोग सबै सनमानि सुभाय सनेह सगाई। संग सुभामिनि भाइ भलो दिन द्वै जनु औध हुते पहुनाई।—तुलसी (शब्द०)।

सगाना—संज्ञा पुं० [फ़ा०] ममोला। खंजन पक्षी।

सगापन—संज्ञा पुं० [हिं० सगा + पन] सगा होने का भाव। संबंध की आत्मीयता।

सगाबी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सग + आबी] १. एक प्रकार का नेवला। २. ऊदबिलाव नामक जंतु जो पानी में रहता है।

सगारत—संज्ञा स्त्री० [हिं० सगा + आरत (प्रत्य०)] सगा होने का भाव। संबंध की आत्मीयता। सगापन।

सगीर—वि० [अ० सग़ीर] जो बड़ा न हो। छोटा।

यौ०—सगीरसिन = अल्पवयस्क। सगीरसिनी = बालपन। सगीरोकबीर = छोटे बड़े सभी लोग।

सगीरा¹—संज्ञा पुं० [अ० सग़ीरह्] क्षुद्र पाप।

सगीरा²—वि० स्त्री० कमसिन। अल्पवयस्का। कम उम्र की [को०]।

सगुण¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. परमात्मा का वह रूप जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त है। साकार ब्रह्म। २. वह संप्रदाय जिसमें ईश्वर का सगुण रूप मानकर अवतारों की पूजा होती है।

विशेष—मध्यकाल से उत्तरीय भारत में भक्तिमार्ग के दो भिन्न संप्रदाय हो गए थे। एक ईश्वर के निर्गुण, निराकार रूप का ध्यान करता हुआ मोक्ष की प्राप्ति की आशा रखता था और दूसरा ईश्वर का सगुण रूप राम, कृष्ण आदि अवतारों में मानकर उनकी पूजा कर मोक्ष की इच्छा रखता था। पहले मत के कबीर, नानक आदि मुख्य प्रचारक थे और दूसरे के तुलसी, सूर आदि।

सगुण²—वि० १. गुणों से युक्त। सद्गुणों से युक्त। २. भौतिक। सांसारिक। ३. प्रत्यंचा से युक्त (धनष)। ४. साहित्य या रचना में मान्य गुणों से युक्त [को०]।

सगुणता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सगुण होने का भाव। सगुणत्व।

सगुणी—वि० [सं० सगुणिन्] १. दे० 'सगुण'। २. सद्गुणों से विभूषित (को०)।

सगुणोपासक—वि० [सं०] ईश्वर के सगुण रूप की उपासना करनेवाला।

सगुणोपासना—संज्ञा स्त्री० [सं०] ईश्वर को सगुण मानकर उसके अवतारों की अर्चा या उपासना।

सगुन¹—संज्ञा पुं० [सं० शकुन] दे० 'शकुन'। उ०—आगे सगुन सगुनियै ताका।—जायसी (शब्द०)।

मुहा०—सगुन विचारना = किसी शकुन के आधार पर शुभाशुभ का निर्णय करना। उ०—सगुन विचारि धरी मन धीरा।—मानस, ६।९९।

सगुन²—संज्ञा पुं० [हिं० सगुण] दे० 'सगुण'। उ०—अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा।—मानस, १।२२।

सगुनाना—क्रि० स० [सं० शकुन + हिं० आना (प्रत्य०)]। १. शकुन बतलाना। उ०—आजु कोउ नीकी बात सुनावै। कै मधुवन ते नंद लाडिले कै व दूत कोउ आवै। भौंरा इक चहुँ दिसि ते उड़ि, उड़ि कान लागि कछु गावै। उत्तम भाषा ऊँचे चढ़ि चाढ़ै अंग अंग सगुनावै। सूरदास कोऊ ब्रज ऐसो जो ब्रजनाथ मिलावै।—सूर (शब्द०)। २. शकुन निकालना या देखना। सगुन बिचारना।

सगुनिया—संज्ञा पुं० [सं० शकुन, हिं० सगुन + इया (प्रत्य०)] वह मनुष्य जो लोगों को सकुन बतलाता हो। शकुन बिचारने और बतलानेवाला। उ०—आगे सगुन सगुनियै ताका। दहिने माछ रूप के हाँका।—जायसी (शब्द०)।

सगुनो—वि० [सं० सगुणी] सगुणोपासक। 'निगुनी' का विलोम। जो निर्गुण रूप का उपासक न हो।

सगुनोपासकⓅ—वि० [सं० सगुणोपासक] ईश्वर के सगुण रूप की आराधना करनेवाला। उ०—सगुनोपासक मोक्ष न लेहीं।—मानस, ६।१११।

सगुनौती—संज्ञा स्त्री० [सं० शकुन, हिं० सगुन + औती (प्रत्य०)] प्रचलित विश्वास के अनुसार वह क्रिया जिससे भावी शुभाशुभ का निर्णय किया जाता है। शकुन विचारने की क्रिया। उ०—बैठी जननि करति सगुनौती। लछमन राम मिलैं अब मोकों दोउ अमोलक मोती। इतनी कहत सुकाग उहाँ ते हरी डाल उड़ि बैठ्यो। अंचल गाँठ दई दुख भाज्यो सुख जो आनि उर पैठ्यो।—सूर (शब्द०)।

सगुराⓅ—[सं० सगुरु] जिसने गुरु से दीक्षा प्राप्त कर ली हो। निगुरा का उलटा।

सगृह—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी स्त्री वर्तमान हो। घर गृहस्थीवाला। सपत्नीक।

सगोत†—वि० [सं० सगोत्र] एक ही गोत्र या कुल का।

सगोती¹—संज्ञा पुं० [सं० सगोत्रिन्] १. एक गोत्र के लोग। सगोत्र। २. आपसदारी के या रिश्ते नाते के लोग। भाई बंधु।

सगोती²—वि० समान या एक कुल या गोत्र का।

सगोत्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक गोत्र के लोग। सजातीय। २. कुल। जाति। ३. एक ही कुल का श्राद्ध, पिंड, तर्पण करनेवाला व्यक्ति (को०)। ४. दूर का संबंधी (को०)।

सगोत्र²—वि० एक ही कुल में उत्पन्न। बंधु [को०]।

सगोत्री—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सगोत्र+ई] दे० 'सगोत्र'; 'सगोती'।

सगोनोमर—संज्ञा पुं० [हिं० सागौन] सागौन। शाल वृक्ष।

सगोष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहचर्य। मैत्री [को०]।

सगौती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सगवती] खाने का मांस। गोश्त। कलिया।

सग्गड़—संज्ञा पुं० [सं० शकट] सामान ढोने की गाड़ी या बोझ ढोने का ठेला।

सग्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहभोजन। एकत्र भोजन।

सग्धिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सग्धि'।

सग्म—संज्ञा पुं० [सं०] यजमान।

सग्रह—वि० [सं०] १. ग्रहण लगा हुआ। ग्रस्त (चंद्रमा)। २. ग्राहों से परिपूर्ण। जैसे—सग्रह नदी। ३. जिसपर कोई ग्रह लगा हो [को०]।

सघन—वि० [सं०] १. घना। गझिन। अविरल। गुंजान। जैसे,—सघन जंगल। उ०—सघन कुंज छाया सुखद शीतल मंद समीर।—बिहारी (शब्द०)। २. घन के साथ। बादलों से युक्त। मेघपूरित (को०)। ३. ठोस। ठस।

सघनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सघन होने का भाव। निविड़ता। अविरलता। गुंजानी।

सघलीⓅ†—वि० स्त्री० [हिं० सगरी] समग्र। सब। सारी। सगरी।

सचंद्रक—वि० [सं० सचन्द्रक] [वि० स्त्री० सचंद्रिका] जिसपर चंद्रमा के समान आकृतियाँ हों [को०]।

सच¹—वि० [सं० सत्य, प्रा० सत्त, अप० सच्च] जो यथार्थ हो। सत्य। वास्तविक। ठीक। दे० 'सत्य'।

सच²—वि० [सं० √सच्] १. जो आदर संमान करे। पूजक। अर्चक। २. लगा हुआ। संबद्ध [को०]।

सचकित—वि० [सं०] १. भौंचक्का। जिसे विस्मय हुआ हो। २. डर के मारे काँपता हुआ [को०]।

सचक्र—वि० [सं०] १. पहियों या गड़ारी से युक्त। २. चक्करदार। घेरा या वलय से युक्त। मंडलाकार। ३. चक्र नामक आयुध से युक्त। ४. सेना से युक्त। जिसके पास सेना हो [को०]।

सचक्री—संज्ञा पुं० [सं० सचक्रिन्] वह जो रथ चलाता हो। सारथी।

सचन—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेवा करने की क्रिया या भाव। सेवन। २. संमान। आदर (को०)। ३. सहयोगी। सहायक (को०)।

सचनाⓅ†¹—क्रि० स० [सं० सञ्चयन] १. संचय करना। एकत्र करना। जमा करना। बटोरना। उ०—दान करन है दुइ जग तरा। रावन सचा अगिन महँ जरा।—जायसी (शब्द०)। २. सज्जित करना। सजाना। ३. संपादित करना। पूरा करना। उ०—बहु कुंड शोनित सों भरे पितु तर्पणादि किया सची।—केशव (शब्द०)।

सचनाⓅ²—क्रि० अ०, क्रि० स० १. दे० 'सजना'। उ०—जो कछु सकल लोक की शोभा लै द्वारिका सची री।—सूर (शब्द०)। २. प्रसन्न होना। अनुकूल होना।

सचनावत्—संज्ञा पुं० [सं०] परमेश्वर, जिसका भजन सब लोग करते हैं।

सचमुच—अव्य० [हिं० सच+मुच (अनु०)] १. यथार्थतः। ठीक ठीक। वास्तव में। वस्तुतः। २. अवश्य। निश्चय। निस्संदेह।

सचर¹—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत झिंटी। सफेद कटसरैया।

सचर²—वि० [सं० स+√चर् (=गति)] सचल। जो चलता रहे। गतिशील। जंगम।

यौ०—सचराचर।

सचरनाⓅ—क्रि० अ० [सं० सञ्चरण] १. किसी बात का विख्यात होना। संचरित होना। फैलना। २. किसी वस्तु या प्रथा का अधिक व्यवहार में आना। बहुत प्रचलित या प्रसिद्ध होना। ३. संचार करना। प्रवेश करना। उ०—कुटिल अलक भ्रुव चारु नैन मिलि सचरे श्रवण समीप सुमीति। वक्र बिलोकनि भेद भेदिआ जोइ कहत सोइ करत प्रतीति।—सूर (शब्द०)।

सचराचर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. संसार की सब चर और अचर वस्तुएँ। स्थावर और जंगम सभी वस्तुएँ। २. जगत्। विश्व। संसार (को०)।

सचराचर²—वि० जिसमें सचल और अचल सभी आ जायँ। जंगम और स्थावर युक्त [को०]।

सचल¹—संज्ञा पुं० [सं०] वह वस्तु जिसमें गति की सामर्थ्य हो। सचर। चर। जंगम।

सचल²—वि० चलायमान। चर। चलनेवाला।

सचल लवण—संज्ञा पुं० [सं०] सौवर्चल लवण। साँचर नमक।

सचलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सचल होने का भाव। जंगम होने का भाव। संचरणशीलता [को०]।

सचा—संज्ञा पुं० [सं० सचा (=निकट)] दे० 'सखा'।

सचाई—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्य, प्रा० सच्च+हिं० आई (प्रत्य०)] १. सच्चा होने का भाव। सत्यता। सच्चापन। ईमानदारी। २. वास्तविकता। यथार्थता।

सचान—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चान (=श्येन)] श्येनपक्षी। बाज। उ०—गएउ सहमि नहि कछु कहि आवा। जनु सचान बन झपटेउ लावा।—मानस, २।२९।

सचारनाⓅ†—क्रि० स० [सं० सञ्चारण] सचरना का सकर्मक रूप। संचारित करना। फैलाना।

सचारु—वि० [सं०] जो बहुत सुंदर हो। चारुतायुक्त।

सचावट†—संज्ञा स्त्री० [हिं सच + आवट (प्रत्य०)] सच्चापन । सचाई । सत्यता ।

सचिंक—वि० [सं० सचिह्न] चेतनायुक्त ।

सचिंत—वि० [सं० सचिन्त] [वि० स्त्री० सचिंता] जिसे चिंता हो । फिक्रमंद ।

सचि[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सखा । दोस्त । मित्र । २. मैत्री । दोस्ती । घनिष्ठता [को०] ।

सचि[2]—संज्ञा स्त्री० इंद्र की पत्नी । शची [को०] ।

सचिक्कण—वि० [सं०] अत्यंत चिकना । बहुत अधिक चिकना । जैसे—सचिक्कण केश ।

सचिक्कनⓅ—वि० [सं० सचिक्कण] अत्यंत चिकना । अत्यंत स्निग्ध । उ०—सहज सचिक्कन स्याम रुचि, सुचि सुगंध सुकुमार । गनत न मन पथ अपथ लखि बिथुरे सुथरे बार ।—बिहारी (शब्द०) ।

सचित्—वि० [सं०] चित् से युक्त । जिसे ज्ञान या चेतना हो ।

सचित्क—संज्ञा पुं० [सं०] चिंतन । विचारना । मनन [को०] ।

सचित्त[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका ध्यान एक ही ओर लगा हो ।

सचित्त[2]—वि० १. समान चित्तवाला । २. सावधान । सचेत । ३. प्रज्ञायुक्त । बुद्धिमान् । ४. जिसका चित्त किसी एक तरफ लगा हो [को०] ।

सचित्र—वि० [सं०] १. चित्रों से शोभित । चित्रों से सजा हुआ या अलंकृत । २. जिसमें चित्र हो । चित्रों से युक्त । ३. शबलित । रंगबिरगा । चित्रित [को०] ।

सचिल्लक—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्लिन्नचक्षु । २. जिसकी दृष्टि खराब हो ।

सचिव—संज्ञा पुं० [सं०] १. मित्र । दोस्त । सखा । २. मंत्री । वजीर । (अं० सेक्रेटरी) । ३. सहायक । मददगार । ४. काला धतूरा या काले धतूरे का वृक्ष । ५. किसी संघटन या संस्था के संचालन का उत्तरदायित्व वहन करनेवाला व्यक्ति ।

सचिवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सचिव होने का भाव या धर्म ।

सचिवत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सचिवता' [को०] ।

सचिवामय—संज्ञा पुं० [सं०] १. पांडु रोग । पीलिया । २. विसर्प रोग ।

सचिवालय—संज्ञा पुं० [सं० सचिव + आलय] वह स्थान या भवन जहाँ किसी राज्य के विभिन्न विभागीय मंत्रियों तथा सर्वोच्च अधिकारियों के कार्यालय हों (अं० सेक्रेटरियट) ।

सची—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्र की स्त्री का नाम । इंद्राणी । दे० 'शची' । २. अगर । अगरु ।

यौ०—सचीनंदन = सचीसुत ।

सचीसुत—संज्ञा पुं० [सं०] १. शची का पुत्र, जयंत । २. श्रीचैतन्यदेव ।

सचुⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० √सच्] १. सुख । आनंद । उ०—(क) मुक्तामाल बाल बग पंगति करत कुलाहल कूल । सारस हंस मध्य शुक सैना, वैजयंति सम तूल । पुरइनि कपिश निचोल विविध रँग बिहँसत सचु उपजावै । सूर श्याम आनंद कंद की शोभा कहत न आवै ।—सूर (शब्द०) । (ख) अँखियन ऐसी धरनि धरी । नंदनँदन देखे सचु पावै या सों रहति डरी ।—सूर (शब्द०) । २. प्रसन्नता । खुशी ।

सचेत—वि० [सं० सचेतन] १. चेतनायुक्त । दे० 'सचेतन' । २. सज्ञान । समझदार । ३. सजग । सावधान । होशियार । जैसे,—जब वह आया करे, तब तुम सचेत रहा करो ।

सचेतक—संज्ञा पुं० [सं० सचेत + क] संसद् वा विधान सभा का वह अधिकारी जो सदस्यों को आवश्यक सूचना देने, अनुशासन का पालन कराने, मतदान के निमित्त बुलाने आदि की व्यवस्था करता है । (अं० ह्विप) ।

सचेतन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह प्राणी जिसे चेतना हो । विवेकयुक्त प्राणी । २. वह वस्तु जो जड़ न हो । चेतन ।

सचेतन[2]—वि० १. चैतन्य । चेतनायुक्त । २. सावधान । होशियार । ३. समझदार । चतुर ।

सचेता—वि० [सं० सचेतस्] १. एक मत होनेवाला । एक राय होनेवाला । सहमत । २. बुद्धि या समझ रखनेवाला । ३. सचेत । भावनायुक्त । भावुक [को०] ।

सचेती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सचेत + ई (प्रत्य०)] १. सचेत होने का भाव । २. सावधानी । होशियारी ।

सचेल—वि० [सं०] वस्त्रयुक्त । जो कपड़ा पहने हुए हो । परिधानयुक्त । वस्त्राच्छादित [को०] ।

यौ०—सचेलस्नान = वस्त्र पहने हुए स्नान करना ।

सचेष्ट[1]—वि० [सं०] १. जिसमें चेष्टा हो । २. जो चेष्टा करे ।

सचेष्ट[2]—संज्ञा पुं० [सं०] आम्रवृक्ष । आम का पेड़ ।

सचैयत‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० सच्च + ऐयत (प्रत्य०)] सचावट । सच्चाई । सत्यता । सच्चापन ।

सचोर—संज्ञा पुं० [देश०] गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति ।

सच्चरित[1]—वि० [सं०] जिसका चरित अच्छा हो । सच्चरित्र । उ०—सब सुखी सब सच्चरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे ।—मानस, ७।२८ ।

सच्चरित[2]—संज्ञा पुं० १. सत्पुरुषों का चरित्र या वृत्त । २. सत् आचरण । सदाचरण [को०] ।

सच्चरित्र—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सच्चरित' ।

सच्चर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम आचरण । अच्छी चाल चलन ।

सच्चा—वि० [सं० सत्य, प्रा० सत्त, अप० सच्च] [वि० स्त्री० सच्ची] १. सच बोलनेवाला । जो कभी झूठ न बोलता हो । सत्यवादी । ईमानदार । २. जिसमें झूठ न हो । यथार्थ । ठीक । वास्तविक । जैसे,—सच्चा मामला । ३. असली । विशुद्ध । जैसे,—सच्चा सोना । सच्चा घी । ४. बिलकुल ठीक और पूरा । जितना या जैसा चाहिए, उतना या वैसा । जैसे,—(क) तुमने भी उसपर खूब सच्चा हाथ मारा । (ख) यह तसवीर बहुत सच्ची जड़ी गई है ।

सच्चाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सच्चा+आई (प्रत्य०)] सच्चा होने का भाव। सच्चापन। सत्यता।

सच्चापन—संज्ञा पुं० [हिं० सच्चा+पन (प्रत्य०)] सत्य होने का भाव। सत्यता। सचाई।

सच्चार—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो संपत्ति की रक्षा करता है। २. कुशल दूत। चतुर गुप्तचर (को०)।

सच्चारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हलदी। हरिद्रा।

सच्चाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सच्चा+हट (प्रत्य०)] सच्चा होने का भाव। सच्चापन। सत्यता।

सच्चिकन(पु)—वि० [सं० सचिक्कण] दे० 'सचिक्कण', 'सचिक्कन'।

सच्चित्—संज्ञा पुं० [सं०] सत् और चित् दोनों से युक्त, ब्रह्म।

सच्चिदानंद—संज्ञा पुं० [सं० सच्चिदानन्द] (सत्, चित् और आनंद से युक्त होने के कारण) परमात्मा का एक नाम। ईश्वर। परमेश्वर।

सच्चिन्मय—वि० [सं०] सत् और चित् अर्थात् चैतन्य से युक्त। सत् और चैतन्य का स्वरूप।

सच्छंद[1]—वि० [सं० सच्छन्द] [वि० स्त्री० सच्छंदा] समान अथवा एक ही तरह के छंदोंवाला [को०]।

सच्छंद(पु)[2]—वि० [सं० स्वच्छन्द] दे० 'स्वच्छंद'।

सच्छत(पु)—वि० [सं० स+क्षत] जिसे क्षत लगा हो। घायल। जख्मी। उ०—जिनको जग अच्छत सीस धरै। तिनको जग सच्छत कौन करै।—केशव (शब्द०)।

सच्छाक—संज्ञा पुं० [सं० सत्+शाक] अदरक का पत्ता। आदी का पत्ता [को०]।

सच्छाय—वि० [सं०] १. समान या एक रंग का। २. भासमान्। भास्वर। जो चमकनेवाला हो। ३. छायादार। छायायुक्त। जिसमें छाया हो। जैसे,—सच्छाय वृक्ष [को०]।

सच्छास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ जो सिद्धांतों का अच्छे ढंग से प्रतिपादन करे [को०]।

सच्छिद्र—वि० [सं०] १. दोषयुक्त। जिसमें ऐब हो। २. छिद्रयुक्त। छेदवाला [को०]।

सच्छी(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० साक्षी] गवाह या दर्शक। दे० 'साक्षी'।

सच्छी[2]—संज्ञा स्त्री० गवाही। दे० 'साक्षी'।

सच्छील[1]—वि० [सं०] शीलयुक्त। उदात्त गुणोंवाला [को०]।

सच्छील[2]—संज्ञा पुं० अच्छा या भला आचरण [को०]।

सच्छलोक—वि० [सं० सत्+श्लोक] जिसकी सुंदर कीर्ति हो। अच्छे नाम या ख्यातिवाला [को०]।

सच्युति[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] दल बल सहित चलना।

सच्युति[2]—वि० १. रेतस् स्खलन युक्त। २. स्खलन युक्त [को०]।

सछंद(पु)—वि० [सं० स+छन्द] १. जो छंद युक्त हो। २. स्वैराचारी। ३. चालवाला। चालबाज। ४. समूह या परिकर से युक्त।

सजंबाल—वि० [सं० सजम्बाल] कीचड़ से युक्त। पंकिल [को०]।

सज[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जा, हिं० सजावट] १. सजने की क्रिया या भाव।

यौ०—सजधज।

२. रूप। बनाव। डौल। शकल। ३. शोभा। सौंदर्य। सजावट। शृंगार।

सज[2]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत लंबा वृक्ष। असीन का पेड़।

विशेष—इस वृक्ष के पत्ते शिशिर ऋतु में झड़ जाते हैं। यह हिमालय, बंगाल और दक्षिण भारत में अधिकता से पाया जाता है। इसके हीर की लकड़ी बहुत कड़ी और मजबूत होती है। इसकी लकड़ी का रंग स्याही लिए भूरा होता है और यह जहाज, नाव आदि बनाने में काम आती है। इसे कहीं कहीं असीन भी कहते हैं। यह बहुत लंबा वृक्ष होता है।

सजग—वि० [हिं० जागना जागरूकता से युक्त)] सावधान। सचेत। सतर्क। होशियार। उ०—(क) तब आपुइ बस होइहै जिमि बनिया कर भूत। तदपि सजग रहिए सदा रिपु सम जानि कपूत।—(शब्द०)। (ख) जौ राजा अस सजग न होई। काकर राज कहाँ कर होई।—जायसी (शब्द०)।

सजड़ा†—संज्ञा पुं० [हिं० सहिजन] दे० 'सहिजन' (वृक्ष)।

सजदार—वि० [हिं० सज+फ़ा० दार (प्रत्य०)] जिसकी आकृति अच्छी हो। सुंदर।

सजधज—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज+धज अनु०] बनाव सिंगार। सजावट। जैसे,—उनकी बारात बहुत सजधज से निकली थी।

सजन[1]—संज्ञा पुं० [सं० सत्+जन (=सज्जन)] [स्त्री० सजनी] १. भला आदमी। सज्जन। शरीफ। २. पति। भर्ता। उ०—बहुत नारि सुभाग सुंदरि और घोष कुमारि। सजन प्रीतम नाउँ लै लै देहिं परस्पर गारि।—सूर (शब्द०)। ३. प्रियतम। आशना। यार।

सजन[2]—वि० [सं०] जनयुक्त। जनसहित। जहाँ लोग रहते हों। जिसमें लोग हों।

सजन[3]—संज्ञा पुं० १. एक ही परिवार या कुल के आदमी। सबंधी जन। २. जनसमाज। लोग बाग [को०]।

सजनपद—वि० [सं०] समान या एक जनपद का [को०]।

सजना[1]—क्रि० अ० [सं० सज्जा] १. भूषण, वस्त्र आदि से अपने को सज्जित करना। अलंकृत करना। शृंगार करना। उ०—तीज परब सौतिन सजे, भूषन बसन सरीर। सबै मरगजे मुँह करी, वहै मरगजे चीर।—बिहारी (शब्द०)। २. शोभा देना। शोभित होना। भला जान पड़ना। जैसे,—यह गुलदस्ता भी यहाँ खूब सजता है। ३. शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना। रण के लिये तैयार होना। उ०—हमहीं चलिहैं ऋषि संग अबै। सजि सैन चलै चतुरंग सबै।—केशव (शब्द०)।

सजना[2]—क्रि० स० १. वस्तुओं को उचित स्थान में रखना जिसमें वे सुंदर जान पड़ें। व्यवस्थित करना। सजाना। सुसज्जित

करना। साजना। जैसे,—मकान सजना, थाली सजना। २. किसी वस्तु को धारण करना।

सजना[३]—संज्ञा पुं० [हिं० सहिजन] दे० 'सहिजन'।

सजना पु[४]—संज्ञा पुं० [सं० सज्जन, हिं० सुजन] पति। प्रियतम।

सजनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साजन] सखी। सहेली। मित्र स्त्री।

सजनीय—वि० [सं०] प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।

सजनु—वि० [सं०] सहजात। एक साथ उत्पन्न या निर्मित (को०)।

सजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] जो नातेदार या रिश्तेदार संबंधी हो (को०)।

सजप—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो तूष्णीम् या मौन भाव से जप में रत हो। २. एक प्रकार के संन्यासी (को०)।

सजबज—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज + बज (अनु०)] दे० 'सजधज'।

सजल[१]—वि० [सं०] १. जल से युक्त या पूर्ण। जिसमें पानी हो। २. अश्रुपूर्ण (नेत्र)। आँसुओं से पूर्ण (आँख)। उ०—लोचन सजल मकरंद भरे अरविंद खुली खुले बूँदपति मधुप किशोर की।—काव्यकलाधर (शब्द०)।

यौ०—सजलनयन, सजलनेत्र = आँसूभरी आँखोंवाला।

सजल पु[२]—वि० [सं० स + ज्वाल] १. स्नेहयुक्त। ज्वालायुक्त। जलता हुआ। २. दीप्त। प्रकाशित। उ०—अर नीगुल दोवउ सजल, छाजइ पुणग न माइ।—ढोला०, दू० ५०६।

सजला[१]—वि० [हिं० मँझला का अनु०] [हिं० सजली] चार सहोदरों में से तीसरा। मँझले से छोटा पर सबसे छोटे से बड़ा।

सजला[२]—वि० स्त्री [सं०] जल से भरी हुई। जलयुक्त।

सजवना पु†—संज्ञा पुं० [हिं० सजना] सजने की क्रिया या भाव। तैयारी। उ०—बहुतन्ह अस गढ़ कीन्ह सजवना। अंत भई लंका जस रवना।—जायसी (शब्द०)।

सजवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज (ना) + वाई (प्रत्य०)] १. सजवाने की क्रिया। २. सुसज्जित करवाने का भाव। ३. सजाने की मजदूरी। जैसे,—इस टोपी की सजवाई दो रुपए लगे हैं।

सजवाना—क्रि० स० [हिं० सजाना का प्रे० रूप] किसी के द्वारा किसी वस्तु को सुसज्जित कराना। सुसज्जित करवाना। जैसे,—आज कल महाराज अपनी कोठी सजवा रहे हैं।

सजा[१]—संज्ञा पुं० [अ० सजा'] तुक। अंत्यानुप्रास। अनुप्रास (को०)।

सजा[२]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सज़ा] १. अपराध आदि के कारण होनेवाला दंड। २. प्रत्यपकार। बुराई का बदला (को०)। ३. अर्थदंड (को०)। ४. कारागार का दंड। जेल में रखने का दंड।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—पाना।—भुगतना।—मिलना।—होना।

यौ०—सजायाफ्ता। सजायाब।

सजाइ पु†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सज़ा] सजा। दंड। उ०—पर्वतसहित धोइ ब्रज डारौं देउ समुद्र बहाइ। मेरी बलि औरहि लै अरपत इनको करै सजाइ।—सूर०, १०।८२२।

सजाई[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सजाना + आई (प्रत्य०)] १. सजाने की क्रिया। सजाने का काम। २. सजाने का भाव। ३. सजाने की मजदूरी।

सजाई पु[२]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सज़ा] दे० 'सजा'। उ०—जौं असत्य कछु कहब बनाई। तौ बिधि देइहि हमहि सजाई।—मानस, २।१९।

सजागर—वि० [सं०] १. जागता हुआ। २. सजग। होशियार।

सजात[१]—वि० [सं०] १. सहजात। साथ साथ उत्पन्न। २. बंधु बांधव से युक्त (को०)।

यौ०—सजातकाम = परिजनों पर शासन करने की इच्छावाला।

सजात[२]—संज्ञा पुं० भाई (को०)।

सजाति[१]—वि० [सं०] एक जाति का। समान जाति का। जैसे,—(क) वे तो हमारे सजाति हो हैं। (ख) ये दोनों वृक्ष सजाति हैं। २. समान। तुल्य (को०)।

सजाति[२]—संज्ञा पुं० १. वह बालक जो एक ही जाति के माता पिता से उत्पन्न हो (को०)।

सजातीय[१]—वि० [सं०] १. एक जाति या गोत्र का। २. समान। तुल्य (को०)।

सजातीय[२]—संज्ञा पुं० दे० 'सजाति[२]'।

सजात्य[१]—वि० [सं०] दे० 'सजातीय'।

सजात्य[२]—संज्ञा पुं० बंधुत्व। भाईचारा (को०)।

सजान पु—संज्ञा पुं० [सं० सज्ञान] १. जानकार। जाननेवाला। २. चतुर। होशियार।

सजाना—क्रि० स० [सं० सज्जा] १. वस्तुओं को यथास्थान रखना। यथाक्रम रखना। तरतीब लगाना। २. अलंकृत करना। सँवारना। शृंगार करना।

सजानि—वि० [सं०] पत्नी के सहित। सपत्नीक (को०)।

सजाय[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह जो अपनी स्त्री के सहित वर्तमान हो।

सजाय† पु[२]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सजा] दे० 'सजा'। उ०—पैहहि सजाय नतु कहत बजाय तोहि, बावरी न होहि बानि जानि कपिनाह की। आन हनुमान को दोहाई बलवान को, सपथ महाबीर की, जो रहै पीर बाँह को।—तुलसी (शब्द०)।

सजायाफ्ता—संज्ञा पुं० [फ़ा० सज़ायाफ़्तह्] वह जिसने दंड विधान के अनुसार दंड पाया हो। वह जो सजा भोग चुका हो। वह जो कैदखाने हो आया हो।

सजायाब—वि० [फ़ा० सजायाब] १. जो दंड पाने के योग्य हो। दंडनीय। २. जो कानून के अनुसार सजा भोग चुका हो। जिसे कारागार का दंड मिल चुका हो।

सजार, सजारु—संज्ञा पुं० [सं० शल्यक] साहिल। शल्यक। साही।

सजाल—वि० [सं०] अयालदार। केसरयुक्त (को०)।

सजाव[१]—संज्ञा पुं० [सं० सद्य, प्रा० सज्ज + हिं० आव (प्रत्य०)] एक प्रकार का दही। मलाईदार मोठा दही।

विशेष—इसे बनाने के लिये दूध को पहले खूब उबाल कर गाढ़ा करते हैं और तब उसमें जामन छोड़ते हैं, इस प्रकार जमा हुआ दही बहुत उत्तम होता है; उसकी साढ़ी या मलाई बहुत मोटी और

चिकनी होती है। प्रायः 'दही' शब्द के साथ ही इस शब्द का प्रयोग मिलता है और विशेष अर्थ देता है। जैसे,—भावभरी कोऊ लिए रुचिर सजाव दही कोऊ मही मंजु दाबि दलकति पाँसुरी। —रत्नाकर, भा० १, पृ० १५१।

सजाव[२]—संज्ञा स्त्री० दे० 'सजावट'।

सजावट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सजाना+आवट (प्रत्य०)] १. सज्जित होने का भाव या धर्म। जैसे,—उनके मकान की सजावट भी देखने ही योग्य है। २. शोभा। ३. तैयारी।

सजावनपु†—संज्ञा पुं० [हिं० सजाना] १. सजाने की क्रिया। अलंकृतकरण। मंडन। २. तैयार करने की क्रिया। सुसज्जित करना। उ०—अब तो नाथ विलंब न कीजै। सैन सजावन शासन दीजै।—रघुराज (शब्द०)।

सजावल—संज्ञा पुं० [तु० सज़ावुल] १. सरकारी कर उगाहनेवाला कर्मचारी। तहसीलदार। २. राजकर्मचारी। ३. सिपाही। जमादार।

सजावली—संज्ञा स्त्री० [तु० सज़ावुल+ई (प्रत्य०)] १. सजावल का काम। २. सजावल का पद या ओहदा।

सजावार—वि० [फ़ा० सज़ावार] १. जो दंड का भागी हो। जो सजा पाने के योग्य हो। २. योग्य। सत्पात्र (को०)।

सजिना—संज्ञा पुं० [हिं० सहिजन] दे० 'सहिजन'।

सजीउपु†—वि० [सं० सजीव] दे० 'सजीव'।

सजीदा—वि० [फ़ा० सजीदह्] लायक। पात्र। योग्य (को०)।

सजीया—संज्ञा पुं० [अ०] आदत। स्वभाव। प्रकृति (को०)।

सजीला—वि० [हिं० सजना+ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सजीली] १. सजधज के साथ रहनेवाला। छैला। छबीला। जैसे,—वह बहुत अच्छा और सजीला जवान है। २. सुंदर। सुडौल। मनोहर।

सजीव[१]—वि० [सं०] १. जीवयुक्त। जिसमें प्राण हों। उ०—हस्ति सिंघली बाँधे बारा। जनु सजीव सब ठाढ़ पहारा।—जायसी (शब्द०)। २. फुरतीला। तेज। ३. ज्यायुक्त। प्रत्यंचायुक्त (को०)। ४. ओजयुक्त। ओजस्वी। जैसे,—उनकी कविता बड़ी सजीव है।

सजीव[२]—संज्ञा पुं० प्राणी। जीवधारी।

सजीवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सजीव होने का भाव। सजीवपन।

सजीवन—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जीवन] संजीवनी नामक बूटी। विशेष दे० 'संजीवनी'।

सजीवनबूटी—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्जीवनी+हिं० बूटी] रुदंती। रुद्रवंती। विशेष दे० 'संजीवनी'।

संजीवनमूर, सजीवनमूलपु—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जीवनी] संजीवनी बूटी। विशेष दे० 'संजीवनी'।

सजीवनी मंत्र—संज्ञा पुं० [सं० सञ्जीवन+मन्त्र] १. पुराणादि में उक्त वह मंत्र जिसके संबंध में लोगों का विश्वास है कि मरे हुए मनष्य या प्राणी को जिलाने की शक्ति रखता है। २. वह मंत्र जिससे किसी कार्य में सुभीता हो। उपकारी मंत्रणा।

सजीह्—संज्ञा पुं० [फा०] स्वभाव।

सजु[१]—वि० [सं० सजुष्] १. जो प्रिय हो। प्यारा। २. परस्पर संबद्ध। एक साथ रहनेवाला (को०)।

सजु[२]—संज्ञा पुं० मित्र। दोस्त। साथी (को०)।

सजुगपु†—वि० [हिं० सजग] सजग। सचेत। होशियार। उ०—लोभी चोर दूत ठग छोरा रहहिं यह पाँव। जो यह हाट सजुग भा गँढ़ ताकर पै बाँच।—जायसी (शब्द०)।

सजुता—संज्ञा स्त्री० [सं० संयुता] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है। (स ज ज ग) विशेष दे० 'संयुत'।

सजूरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सजुष् (=प्रिय) ?] एक प्रकार की मिठाई। उ०—(क) कमल नैन हरि करौ बियारी। लुचुई लपसी सद्य जलेबी सोइ जेवहु जो लगै पियारी। घेवर मालपुवा मोतिलाडू सधर सजूरी सरस सवारी।—सूर०, १०।२२७। (ख) माधुरि अति सरस सजूरी। सद परसि धरी घृत पूरी।—सूर (शब्द०)।

सजोना†—क्रि० स० [हिं० सजाना] १. सज्जित करना। शृंगार करना। २. सामान करना। सरंजाम करना।

सजोयलपु—वि० [हिं० सजोना] दे० 'सँजोइल'।

सजोष—वि० [सं०] (वे) जिनमें समान प्रीति हो। मेल से कोई काम करनेवाले।

सजोषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत दिनों से चली आई हुई समान प्रीति। २. साथ साथ आनंद लेना। संमिलित रूपेण आनंद मनाना या लेना (को०)।

सज्जपु[१]—संज्ञा पुं० [हिं० साज] दे० 'साज'।

सज्ज[२]—वि० [सं०] १. सज्जित। सजा हुआ। तैयार किया हुआ। २. परिधानयुक्त। कपड़े धारण किए हुए। ३. सँवारा हुआ। भूषित। अलंकृत। ४. शस्त्र आदि से सुसज्जित। सुरक्षित, दृढ़ या परिखा आदि से घेरा हुआ। ६. प्रत्यंचायुक्त (को०)।

सज्जक—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जा। सजावट।

सज्जकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सज्जकर्मन्] १. सज्जित करना या होना। २. धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाना (को०)।

सज्जण[१]—संज्ञा पुं० [सं० सज्ज] फौज की तैयारी। (डिं०)।

सज्जण[२]—संज्ञा पुं० [सं० सज्जन] प्रिय। प्रियतम। दे० 'सज्जन'। उ०—चाल सखी तिण मंदिरइँ सज्जण रहियउ जेंण। कोइक मीठउ बोलड़इ लागो होसी तेंण।—ढोला०, दू० ३५६।

सज्जता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सज्जा का भाव। सजावट।

सज्जन—संज्ञा पुं० [सं० सत्+जन] १. भला आदमी। सत्पुरुष। शरीफ। २. अच्छे कुल का मनुष्य। ३. प्रिय मनुष्य। प्रियतम। ४. चौकीदार। संतरी। ५. घाट। ६. बाँधना या लटकाना (को०)। ७. तैयारी करना (को०)। ८. शस्त्रादि से सज्जित होना (को०)। ९. सजाने की क्रिया या भाव। सज्जा।

सज्जनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सज्जन होने का भाव। सत्पुरुषता। भलमनसाहत। भलमनसी। सौजन्य। साधुता।

सज्जनताईपु— संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जन + हिं० ताई (प्रत्य०)] दे० 'सज्जनता'।

सज्जना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह हाथी जिसपर नायक या सवार चढ़ता हो। २. अलंकृत करना। भूषित करना (को०)। ३. अलंकरण। प्रसाधन। भूषण। सजावट (को०)। ४. सवारी के पहले हाथी को सज्जित करना (को०)।

सज्जा१—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २ वेशभूषा। ३. युद्ध का उपकरण। सैनिक साजसामान। शस्त्र, कवच आदि (को०)।

सज्जा२—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या, प्रा० सज्जा, सेज्जा] १. चारपाई। शय्या। २. चारपाई, तोशक, चादर आदि वे सामान जो किसी के मरने पर उसके उद्देश्य से महापात्र को दिए जाते हैं। विशेष दे० 'शय्यादान'।

सज्जा३—वि० [सं० सव्य] दाहिना। (पश्चिम)।

सज्जाद—वि० [अ०] आराधक। उपासना करनेवाला (को०)।

सज्जादगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] गद्दीनशीनी (को०)।

सज्जादा—संज्ञा पुं० [अ० सज्जादह्] १. बिछाने का वह कपड़ा जिसपर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। मुसल्ला। जानमाज। २. आसन। ३. फकीरों या पीरों आदि की गद्दी।

सज्जादानशीन—संज्ञा पुं० [अ० सज्जादह् + फ़ा० नशीन] १. वह जो गद्दी या तकिया लगाकर बैठता हो। २. मुसलमान पीर या बड़ा फकीर।

सज्जित—वि० [सं०] १ जिसकी खूब सजावट हुई हो। अलंकृत। आरास्ता। २. आवश्यक वस्तुओं से युक्त। तैयार। जैसे,— युद्ध के निमित्त सज्जित सैन्य। ३. परिधानयुक्त। वस्त्र आदि धारण किए हुए (को०)। ४. शस्त्रों से सजा हुआ। ५. बद्ध। संबद्ध। लगा हुआ (को०)।

सज्जी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्जि, सर्जिका] एक प्रकार का प्रसिद्ध क्षार जो सफेदी लिए हुए भूरे रंग का होता है।

विशेष—सज्जी दो प्रकार की होती है। एक वह जो मालावार की ओर बनाई जाती है। इसमें बड़ी बड़ी खाइयाँ खोदकर उनमें वृक्षों की शाखाएँ और पत्ते आदि भरकर आग लगा देते हैं। जब वे जलकर जम जाते हैं, तब उनकी राख को खारी कहते हैं। इसी खारी से भूमि में सज्जी बनाते हैं। दूसरे प्रकार की सज्जी खार (क्षार) वाली जमीन में होती है। खार के कारण भूमि फूल जाती है और उसी फूली हुई मिट्टी को सज्जी कहते हैं। वैद्यक के अनुसार सज्जी गरम, तीक्ष्ण और वायुगोला, शूल, बात, कफ, कृमिरोग आदि को शांत करनेवाली मानी जाती है।

सज्जीखार—संज्ञा पुं० [सं० सर्जिका क्षार] दे० 'सज्जी'।

सज्जीबूटी—संज्ञा स्त्री० [सं० सञ्जीवनी] क्षुप जाति की एक वनस्पति जो प्रति वर्ष उत्पन्न होती है।

विशेष—यह ६ से १८ इंच तक ऊँची होती है। इसकी शाखाएँ कोमल और पत्ते बहुत छोटे और तिकोने होते हैं। पुष्प छोटे और एक से तीन तक साथ लगते हैं। बीजकोष १।४ इंच तक के घेरे में गोलाकार होता है। इसका रंग प्रायः चमकीला गुलाबी होता है। इसमें बहुत ही छोटे छोटे बीज होते हैं। प्रायः इसी के डंठलों और पत्तियों से सज्जीखार तैयार होता है। यह क्षुप तीन प्रकार का पाया जाता है।

सज्जुई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज + ई (प्रत्य०)] दे० 'सजाव'।

सज्जुता—संज्ञा स्त्री० [सं० संयुता] संयुता नामक छद। वि० दे० 'संयुता'।

सज्जुष्ट—वि० [सं०] आनंददायक। सुखकारी। सज्जनों को प्रियकर।

सज्जे†१—[सं० सर्व] सब। बिलकुल। संपूर्ण।

सज्जे†२—अव्य० तमाम। सर्वतः। संपूर्णतः।

सज्ञान१—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवाला मनुष्य। १. बुद्धिमान या चतुर पुरुष। सयाना। ३. उस अवस्था को पहुँचा हुआ पुरुष जिसमें वह विवेकयुक्त हो जाता है। प्रौढ़। बालिग।

सज्ञान२—वि० १. ज्ञानयुक्त। २. चतुर। बुद्धिमान्। ३. सचेत। सावधान। होशियार।

सज्य—वि० [सं०] ज्या अर्थात् प्रत्यंचा से युक्त। (धनुष) जिसपर प्रत्यंचा चढ़ी हो (को०)।

सज्या†—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] दे० 'शय्या'।

सज्योत्स्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योत्स्नायुक्त रात। चाँदनी रात।

सझ—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जा] १. सजावट। २. तैयारी। (डिं०)।

सझर—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जा] सेना को सज्जित करने की क्रिया। फौज तैयार करना (डिं०)।

सझनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पक्षी जिसकी पीठ काली, छाती सफेद और चोंच लंबी होती है।

सझिदार†—संज्ञा पुं० [हिं० साझीदार] [स्त्री० सझिदारिन्, हिस्सेदार। साझीदार। शरीक।

सझिदारी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सझिदार + ई (प्रत्य०)] साझेदार होने का भाव। साझा। शिरकत। साझेदारी।

सझिया†—संज्ञा पुं० [हिं० साझा] १. भागीदार। हिस्सेदार। २. साझा। हिस्सा। भाग।

सट—संज्ञा पुं० [सं०] १. जटा। २. वह व्यक्ति जो ब्राह्मण पिता और भटिजातीय माता से उत्पन्न हो (को०)।

सटई†—संज्ञा स्त्री० [देश०] अनाज रखने का एक प्रकार का पात्र।

सटक—संज्ञा स्त्री० [अनु० सट से] १. सटकने की क्रिया। धीरे से चंपत होने या खिसकने का व्यापार। २. तंबाकू पीने का लंबा लचीला नैचा जो भीतर छल्लेदार तार देकर बनाया जाता है।

विशेष—यह रबर की नली की भाँति लचीला और लपेटने योग्य होता है। अधिक लंबे बाँस की निगाली रखने में अड़चन होती है, अतः लोग सटक का व्यवहार करते हैं।

३. पतली लचनेवाली छड़ी। उ०—बिलक चिकनई चटक सौं लफति सटक लौं आय। नारि सलौनो साँवरो नागिन लौं डसि जाय।—बिहारी (शब्द०)।

सटकना[१]—क्रि० अ० [अनु० सट से] धीरे से खिसक जाना। रफू-चक्कर होना। चल देना। चंपत होना। उ०—असुर यह बात तकि गयो रण ते सटकि बिपति ज्वर दियो तब शिव पठाई।—सूर (शब्द०)।

सटकना[२]—क्रि० स० बालों में से अनाज निकालने के लिये उसे कूटने की क्रिया। डाँठ कूटना या पीटना।

सटकाना—क्रि० स० [अनु० सट से] १. किसी को छड़ी, कोड़े आदि से मारना जिसमें 'सट' शब्द हो। जैसे,—दो कोड़े सटकाऊँगा, ठीक हो जाओगे। २. सड़ सड़ या सट सट शब्द करते हुए हुक्का पीना। जैसे,—क्या बैठे सटका रहे हो।

सटकार—संज्ञा स्त्री० [अनु० सट] १. सटकाने की क्रिया या भाव। २. फटकारने या झटकारने की क्रिया। ३. गौ आदि को हाँकने की क्रिया। हटकार। उ०—सारथी पाय रुख दए सटकार हय द्वारकापुरी जब निकट आई।—सूर (शब्द०)।

सटकारना—क्रि० स० [अनु० सट से] १. पतली लचीली छड़ी या कोड़े आदि से किसी को सट से मारना। सट सट मारना। २. झटकारना। फटकारना।

सटकारा—वि० [अनु०] चिकना और लंबा। (केश, बाल)। उ०—छुटे छुटावत जगत तैं सटकारे सुकुमार। मन बाँधत बेनी बँधे नील छबीले बार।—स० सप्तक, पृ० १०५।

सटकारी—संज्ञा स्त्री० [सं० अनु०] लचनेवाली पतली छड़ी। साँटी।

सटक्का—संज्ञा पुं० [अनु० सट से] १. दे० 'सटका'। २. दौड़। झपट। जैसे,—एक सटक्के में तो तुम पर पहुँच जायँगे।

मुहा०—सटक्का मारना = एक साँस से दौड़कर या बहुत जल्दी जल्दी जाना।

सटना—क्रि० अ० [सं० स + √स्था] १. दो चीजों का इस प्रकार एक में मिलना जिसमें दोनों के एक पार्श्व एक दूसरे से लग जायँ। जैसे,—दीवार से अलमारी सटना। २. चिपकना। जैसे,—दफ्ती पर कागज सटना। ३. संभोग होना। (बाजारू)। ४. लाठी या डंडे आदि से मार पीट होना। लाठी सोटा चलना। मार पीट होना। (बदमाश)। ५. साथ होना। मिलना।

संयो० क्रि०—जाना।

सटपट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. सिपपिटाने की क्रिया। चकपकाहट। उ०—अरी खरी सटपट परी, बिधु आगे मग हेरि। संग लगे मधुपन लई भागत गली अँधेरि।—बिहारी (शब्द०)। २. शील। संकोच। ३ संकट। दुविधा। असमंजस।

क्रि० प्र०—में पड़ना।—में डालना।

सटपटाना[१]—क्रि० अ० [अनु०] १. सटपट की ध्वनि होना। २. दे० 'सिटपिटाना'। उ०—छुटै न लाज न लालचौ प्यौ लखि नैहर गेह। सटपटात लोचन खरे, भरे सकोच सनेह।—बिहारी (शब्द०)। ३. दब जाना। मंद या मौन होना। ४. चकपकाना।

सटपटाना[२]—क्रि० स० सटपट शब्द उत्पन्न करना।

सटर पटर[१]—वि०, क्रि० वि० [अनुध्व०] १. छोटा मोटा। तुच्छ। हलका। जैसे,—सटर पटर काम करने से न चलेगा। २. बहुत साधारण। बिलकुल मामूली।

सटर पटर[२]—संज्ञा स्त्री० १. उलझन का काम। बखेड़े का काम। २. व्यर्थ या तुच्छ काम। जैसे,—इसी सटर पटर में दिन बीत जाता है।

क्रि० प्र०—करना।—लगाना।

सट सट—क्रि० वि० [अनु०] १. सट शब्द के साथ। सटासट। २ शीघ्र। बहुत जल्दी। तुरंत। जैसे,—वह सब काम सट सट निपटा डालता है।

सटांक—संज्ञा पुं० [सं० सटाङ्क] सिंह। शेर।

सटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चूड़ा। शिखा। २. जटा। ३. घोड़े या शेर के कंधे पर के बाल। अयाल। केशर। ४. शूकर का बाल (को०)। ५. केशपाश। वेणी। जूड़ा (को०)। ६. द्युति। दीप्ति। चमक (लाक्ष०)। ७. बाहुल्य। बहुलता। बहु-संख्या (को०)।

सटाक—संज्ञा पुं० [अनु०] सट शब्द। 'सट' की आवाज।

सटाका[१]—संज्ञा पुं० [अनु०] १. दे० 'सटाकी'। २. दे० 'सटाक'।

सटाका[२]—क्रि० वि० सट से। तुरंत। झटपट।

सटाकी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमड़े की वह रस्सी या पट्टी जो पैना के सिरे पर बाँधी जाती है।

विशेष—पैना बाँस का एक पतला छोटा डंडा होता है जिससे हल जोतनेवाला या गाड़ी हाँकनेवाला बैल हाँकता है। इस पैना को कोड़े का आकार देने के लिये इसमें चमड़े की पतली पतली पट्टियाँ बाँधते हैं। इन्हीं पट्टियों को सटाकी कहते हैं। सटाकी और डंडा दोनों मिलकर 'पैना' होता है।

सटान—संज्ञा स्त्री० [हिं० सटना + आन (प्रत्य०)] १. सटने की क्रिया या भाव। मिलान। २. दो वस्तुओं के सटने या मिलने का स्थान। जोड़।

सटाना—क्रि० स० [सं० स + √स्था] १. दो चीजों को एक में संयुक्त करना। दो चीजों के पार्श्वों को आपस में मिलाना। मिलाना। जोड़ना। ३. लाठी, डंडे आदि से लड़ाई करना। मारपीट करना। (बदमाश)। ४. स्त्री और पुरुष का संयोग कराना। संभोग कराना। (बाजारू)।

सटाय—वि० [देश०] १. (दलालों की परिभाषा में) कम। न्यून। २. हलका। घटिया। खराब।

सटाल[१]—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह। केसरी। शेर बबर।

सटाल[२]—जिसकी गर्दन पर अयाल हो। २. पूर्ण। युक्त (को०)।

सटालु—संज्ञा पुं० [सं०] अपक्व फल। वह फल जो पका न हो (को०)।

सटि—संज्ञा स्त्री० [सं०] कचूर। शटी।

सटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बन आदी। जंगली कचूर।

सटियल—वि० [सं० स्रस्त] जो रद्दी किस्म का हो। घटिया दरजे का।

सटिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] १. सोने या चाँदी की एक प्रकार की चूड़ी। २. चाँदी की एक प्रकार की कलम जिससे स्त्रियाँ माँग में सिंदूर देती हैं। ३. दे० 'साटी'। ४. अभिसंधि। गुप्त वार्ता या षडयंत्र करना।

सटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बनग्रादी। जंगली कचूर।

सटीक[1]—वि० [सं०] जिसमें मूल के साथ टीका भी हो। टीका सहित। व्याख्या सहित। जैसे,—सटीक रामायण।

सटीक[2]—वि० [हिं० ठीक या सं० सटीक] बिलकुल ठीक। जैसा चाहिए ठीक वैसा ही। जैसे,—यह तसवीर बन तो रही है, सटीक उतर जाय, तो बात है।

संयो० क्रि०—पड़ना।—बैठना।

सटैला—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

सटोरिया—संज्ञा पुं० [हिं० सट्टा] सट्टेबाज। सट्टा खेलनेवाला।

सट्ट[1]—संज्ञा पुं० [सं०] दरवाजे की चौखटे में दोनों ग्रोर की लकड़ियाँ। बाजू।

सट्ट[2]—संज्ञा पुं० [हिं० सट्टा] दे० 'सट्टा'।

सट्टक—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राकृत भाषा में प्रणीत छोटा रूपक। एक उपरूपक। जैसे,—राजशेखर कृत कर्पूर मंजरी है। २. जीरा मिला हुग्रा मट्ठा।

सट्टा[1]—संज्ञा पुं० [देश०] १. वह इकरारनामा जो काश्तकारों में खेत के साझे ग्रादि के संबंध में होता है। बटाई। २. वह इकरारनामा जो दो पक्षों में कोई निश्चित काम करने या कुछ शर्तें पूरी करने के लिये होता है। इकरारनामा। जैसे,—बाजेवालों को पेशगी रुपया दे दिया, पर उनसे सट्टा नहीं लिखाया।

सट्टा[2]—संज्ञा पुं० [हिं० हाट या सट्टी] १. वह स्थान जहाँ लोग वस्तुएँ खरीदने बेचने के लिये एकत्र होते हैं। हाट। बाजार। २. बाजार की तेजी मंदी के ग्रनुमान के ग्राधार पर ग्रधिक लाभ को दृष्टि से की हुई खरीदफरोख्त जो एक प्रकार का द्यूत माना जाता है। दे० 'सट्टेबाज'।

यौ०—सट्टा बाजार = वह बाजार जहाँ सट्टे का काम होता है। सट्टेबाज।

सट्टा[3]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का पक्षी। २. बाजा।

सट्टा बट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० सटना + ग्रनु० बट्टा] १. मेल मिलाप। हेल मेल। २. सिद्धि के लिये की हुई धूर्ततापूर्ण युक्ति। चालबाजी।

मुहा०—सट्टा बट्टा लड़ाना = ग्रपना कार्य सिद्ध करने के लिये किसी प्रकार की युक्ति करना।

सट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाट या हट्टी] वह बाजार जिसमें एक ही मेल की बहुत सी चीजें लोग दूर दूर से लाकर बेचते हों। हाट। जैसे,—तरकारी की सट्टी; पान की सट्टी।

मुहा०—सट्टी मचाना = ऐसा शोर करना जैसा सट्टी में होता है। बहुत से लोगों का मिलकर जोर जोर से बोलना। जैसे,—पंडितजी के दरजे में तो लड़कों ने सट्टी मचा रखी है। सट्टी लगाना = बहुत सी चीजें इधर उधर फैला देना। जैसे,—तुमने यहाँ किताबों की सट्टी लगा रखी है।

सट्टेबाज—संज्ञा पुं० [हिं० सट्टा + फ़ा० बाज़ (प्रत्य०)] वह ग्रादमी जो ग्रधिक लाभ की दृष्टि से बाजार में क्रय विक्रय करे। सट्टा खेलनेवाला।

विशेष—यह व्यापारियों का एक प्रकार का जुग्रा है। कभी कभी लाभ के स्थान पर व्यापारी इसमें ग्रपना सर्वस्व गँवा देता है।

सट्टेबाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सट्टेबाज + ई (प्रत्य०)] सट्टेबाज का काम। सट्टा खेलने का काम।

सट्वा—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का पक्षी। २. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

सठ[1]—संज्ञा पुं० [सं० षष्टि, प्रा० सट्ठि, दे० हिं० साठ] साठ की संख्या। दे० 'साठ[2]'।

सठ[2]—संज्ञा पुं० [सं० शठ] दे० 'शठ'।

सठई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सठ + ई (प्रत्य०)] शठ होने का भाव। सठता।

सठता—संज्ञा स्त्री० [सं० शठ, हिं० सठ + ता (प्रत्य०)] १. शठ होने का भाव। शठ का धर्म। शठता। २. मूर्खता। बेवकूफी। उ०—जानी राम न कहि सके भरत लखन सिय प्रीति। सो सुनि समुझि तुलसी कहत हठ सठता की रीति।—तुलसी (शब्द०)।

सठि—संज्ञा स्त्री० [सं०] कचूर [को०]।

सठियाना—क्रि० ग्र० [हिं० साठ + इयाना (प्रत्य०)] १. साठ वर्ष की ग्रवस्था को प्राप्त होना। साठ बरस का होना। २. वृद्धावस्था के कारण बुद्धि तथा विवेकशक्ति का कम हो जाना।

विशेष—इस ग्रर्थ में इस शब्द का प्रयोग व्यक्ति ग्रौर बुद्धि दोनों के लिये होता है। जैसे,—(क) उनकी बात छोड दो; वे तो सठिया गए हैं। (ख) तुम्हारी तो ग्रक्ल सठिया गई है।

संयो० क्रि०—जाना।

सठुरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीठी या साँठी] गेहूँ या जौ ग्रादि के डंठलों का वह गँठीला ग्रंश जिसका भूसा नहीं होता ग्रौर जो ग्रोसाकर ग्रलग कर दिया जाता है। गठुरी। कूँटा। कूँटी।

सठेरा—संज्ञा पुं० [हिं० साँठा] सन का वह डंठल जो सन निकल जाने पर बच रहता है। संठा। सरई। सलई।

सठोरा—संज्ञा पुं० [हिं० सोंठ + ग्रोरा (प्रत्य०)] दे० 'सोंठौरा'।

सठ्ठो—संज्ञा पुं० [डिं०] ऊँट। क्रमेलक।

सड़[1]—संज्ञा पुं०, स्त्री० [ग्रनु०] दे० 'सड़ाक'।

सड़†[2]—संज्ञा पुं० [सं० सप्त] सात। सात की संख्या। समस्त शब्दों में पूर्व पद के रूप में प्रयुक्त। जैसे, सड़सठ।

सड़क—संज्ञा स्त्री० [ग्र० शरक] १. ग्राने जाने का चौड़ा रास्ता। राजमार्ग। राजपथ। २. रास्ता। मार्ग।

सड़क्का—संज्ञा पुं० [हिं० सटक्का] दे० 'सटक्का'।

सड़न—संज्ञा स्त्री० [हिं० सड़ना] सड़ने की क्रिया या भाव। गलन।

सड़ना—क्रि० ग्र० [सं० सरण] १. किसी पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसके संयोजक तत्व या ग्रंग बिलकुल ग्रलग ग्रलग हो जायँ, उसमें से दुर्गंध ग्राने लगे ग्रौर वह काम के योग्य न रह जाय। जैसे,—उँगली सड़ना, फल सड़ना। २. किसी पदार्थ में खमीर उठना या ग्राना।

संयो० क्रि०—जाना।

३. दुर्दशा में पड़ा रहना। बहुत बुरी हालत में रहना। जैसे—रियासतों में लोग बरसों तक जेलखाने में यों ही सड़ते हैं।

सड़सठ[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सड़ (सात का रूप) + साठ] साठ ग्रौर सात की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६७।

सड़सठ[२]—वि० जो गिनती में साठ से सात अधिक हो।

सड़सठवाँ—वि० [हिं० सड़सठ + वाँ (प्रत्य०)] गिनती में सड़सठ के स्थान पर पड़नेवाला।

सड़सी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सँड़सी] दे० 'सँड़सी'।

सड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० सड़ना] वह औषध जो गौओं को बच्चा होने के समय पिलाते हैं। प्रायः यह औषध सड़ाकर बनाते हैं, इसी से इसे सड़ा कहते हैं।

सड़ाइँद—संज्ञा स्त्री० [हिं० सड़ना + गंध] दे० 'सड़ायँध'।

सड़ाक—संज्ञा पुं०, स्त्री० [अनु० 'सड़' से] १. कोड़े आदि की फटकार की आवाज जो प्रायः सड़ के समान होती है। २. शीघ्रता। जल्दी। जैसे,—सड़ाक से चले जाओ और चले आओ।

सड़ान—संज्ञा स्त्री० [हिं० सड़ना] सड़ने का व्यापार या क्रिया। सड़ना।

सड़ाना—क्रि० स० [हिं० सड़ना का सक० रूप] १. सड़ना का सकर्मक रूप। किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना। किसी पदार्थ में ऐसा विकार उत्पन्न करना कि उसके अवयव गलने लगें और उसमें से दुर्गंध आने लगे। जैसे,—(क) सब आम तुमने रखे रखे सड़ा डाले। (ख) महुए को सड़ाकर शराब बनाई जाती है। २. किसी वस्तु को बुरी दशा में रखना अथवा उसका उपयोग न करना, न करने देना।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।

सड़ायँध—संज्ञा स्त्री० [हिं० सड़ना + गंध] सड़ी हुई चीज की गंध।

सड़ाव—संज्ञा पुं० [हिं० सड़ना + आव (प्रत्य०)] सड़ने की क्रिया या भाव। सड़ना।

सड़ासड़—अव्य० [अनु० 'सड़' से] सड़ शब्द के साथ। जिसमें सड़सड़ शब्द हो। जैसे,—चोर पर सड़ासड़ कोड़े पड़ने लगे।

सड़ियल—वि० [हिं० सड़ना + इयल (प्रत्य०)] १. सड़ा हुआ। गला हुआ। २. निकम्मा। रद्दी। खराब। ३. नीच। तुच्छ। जैसे,—सड़ियल आदमी, सड़ियल एक्का, सड़ियल तसवीर।

सढ़—संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

सण—संज्ञा पुं० [सं० शण] दे० 'सन'।

सणगार(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गार] शृंगार। सजावट। (डिं०)।

सणतूल—संज्ञा पुं० [सं०] सन का रेशा। शणतंतु।

सणसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शणसूत्र'।

सणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाय के श्वास की गंध (को०)।

सतंद्र—वि० [सं० सतन्द्र] तंद्रायुक्त। क्लांत। थका हुआ (को०)।

सत्[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्म। २. वह जो वस्तुतः विद्यमान हो। अस्तित्व। सत्ता (को०)। ३. सचाई। वास्तविकता (को०)। ४. भद्र पुरुष। सद्गुणी व्यक्ति (को०)। ५. जल (वेद)। ६. कारण (को०)।

सत्[२]—वि० १. सत्य। २. साधु। सज्जन। ३. धीर। ४. नित्य। स्थायी। ५. विद्वान्। पंडित। ६. मान्य। पूज्य। ७. प्रशस्त। ८. शुद्ध। पवित्र। ९. श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। भला। १०. वर्तमान। विद्यमान (को०)। ११. ठीक। उचित (को०)। १२. मनोहर। सुंदर (को०)। १३. दृढ़। स्थिर (को०)।

सत[१]—वि० [हिं०] दे० 'सत्'।

सत[२]—संज्ञा पुं० [सं० सत्] सत्यतापूर्ण धर्म।

मुहा०—सत पर चढ़ना = पति के मृत शरीर के साथ सती होना। सत पर रहना = पतिव्रता रहना। सती रहना।

सत[३]—वि० [सं० शत] दे० 'शत'।

सत[४]—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्व] १. किसी पदार्थ का मूल तत्व। सार भाग। जैसे,—मुलेठी का सत। २. जीवनी शक्ति। ताकत। जैसे,—चार दिन के बुखार में शरीर का सारा सत निकल गया।

सत[५]—वि० [सं० सप्त] १. 'सात' (संख्या) का संक्षिप्त रूप जिसका व्यवहार यौगिक शब्द बनाने में होता है। जैसे,—सतमंजिला।

सतकार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सत्कार] दे० 'सत्कार'।

सतकारना(पु)—क्रि० स० [सं० सत्कार + हिं० ना (प्रत्य०)] सत्कार करना। आदर करना। सम्मान करना। इज्जत करना। उ०—(क) गुरु को जेठो बंधु बिचारयो। करि प्रणाम अतिशय सतकारयो। (ख) राजा कियो ताहि परनामा। सादर सतकारयो मति धामा।—रघुराज (शब्द०)।

सतकोन—वि० [हिं० सात + कोना] जिसमें सात कोने हों। सात कोनों वाला।

सतगँठिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सात + गाँठ] एक प्रकार की वनस्पति जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

सतगुरु—संज्ञा पुं० [हिं० सत (= सच्चा) + गुरु या सं० सद्गुरु] १. अच्छा गुरु। २. परमात्मा। परमेश्वर।

सतजीत—संज्ञा पुं० [सं० सत्यजित्] दे० 'सत्यजित्'।

सतजुग—संज्ञा पुं० [सं० सत्ययुग] दे० 'सत्ययुग'।

सतत—अव्य० [सं०] निरंतर। सदा। सर्वदा। हमेशा। बराबर।

सततक—वि० [सं०] (ज्वर) जो दिन भर में दो बार चढ़ता हो (को०)।

सततग—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सदा चलता रहता हो। २. पवन। वायु। हवा।

सततगति—संज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा।

सततज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वह ज्वर जो दिन में दो बार आवे; या कभी दिन में एक बार और फिर रात को भी एक बार आवे। द्विकालिक विषम ज्वर।

सततदुर्गत—वि० [सं०] निरंतर बुरी अवस्थावाला। जो सदा कष्ट में रहे (को०)।

सततधृति—वि० [सं०] निरंतर धैर्यशील रहनेवाला। जो सर्वदा दृढ़ संकल्प युक्त हो (को०)।

सततपरिग्रह—अ० [सं०] निरंतर (को०)।

सततयायी—वि० [सं० सततयायिन्] १. निरंतर गतिशील। २. निरंतर क्षयालु या क्षयशील (को०)।

सततयुक्त—वि० [सं०] सदा तत्पर। सतत अनुरक्त या परायण (को०)।

सतत समिताभियुक्त--संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

सतत स्पंदन--वि० [सं० सततस्पन्दन] नित्य स्पंदनशील।

सतताभियोग--संज्ञा पुं० [सं०] किसी न किसी कार्य में सदैव लगा रहना [को०]।

सतति--वि० स्त्री० [सं०] जो सदा चला करे या विच्छिन्न न हो।

सतत्व--संज्ञा पुं० [सं०] स्वभाव। प्रकृति।

सतदंत--संज्ञा पुं० [हिं० सात+दाँत] [वि० सतदंता] वह पशु जिसके सात दाँत हो गए हों।

विशेष--प्रायः पशुओं को पूरे दाँत निकल आने के पूर्व उनके दाँतों की संख्या के अनुसार पुकारते हैं। जैसे, दुदंता, चौदंता, सतदंता आदि शब्द क्रमशः दो, चार और सात दाँतोंवाले बछड़े के लिये प्रयुक्त होते हैं।

सतदल(पु)--संज्ञा पुं० [सं० शतदल] १. कमल। २. सौ दलों या पँखुड़ियोंवाला कमल।

सतध्रत--संज्ञा पुं० [सं० शतधृत] ब्रह्मा। (डिं०)।

यौ०--सतध्रत सुत=नारदमुनि।

सतन--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लाल चंदन जिसकी गंध भूमि या मिट्टी के समान होती है [को०]।

सतनजा--संज्ञा पुं० [हिं० सात+अनाज] सात भिन्न प्रकार के अन्नों का मेल। वह मिश्रण जिसमें सात भिन्न भिन्न प्रकार के अनाज हों।

सतनी१--संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तपर्ण] १. सप्तपर्ण वृक्ष। सतिवन। छतिवन। २. एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष।

विशेष--इस वृक्ष की छाल का रंग कालापन लिए होता है। और लकड़ी संदूक आदि बनाने के काम में आती है। यह बंगाल, दक्षिण भारत और हिमालय में अधिकता से पाया जाता है।

सतनु--वि० [सं०] जिसे तन हो। शरीरवाला।

सतपतिया१--संज्ञा स्त्री० [हिं० सतपुतिया] दे० 'सतपुतिया'।

सतपतिया२--संज्ञा स्त्री० [हिं० सात+पति] १. वह स्त्री जिसने सात पति किए हों। २. पुंश्चली। छिनाल।

सतपदी--संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तपदी] दे० 'सप्तपदी'।

सतपरबा--संज्ञा पुं० [सं० शतपर्वा] १. शतपर्वा। बाँस। २. ऊख। गन्ना।

सतपात--संज्ञा पुं० [सं० शतपत्र, प्रा० सतपत्त] शतपत्र। कमल।

सतपुतिया--संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तपुत्रिका] एक प्रकार की तोरई जो प्रायः सब प्रांतों में होती है।

विशेष--इसके बोने का समय वर्षा ऋतु है। इसकी लता भूमि पर फैलती है या मँढ़े पर चढ़ाई जाती है। इसके फल साधारण तोरई से कुछ छोटे होते हैं और पाँच, सात या कभी कभी इससे भी अधिक संख्या में एक साथ गुच्छों में लगते हैं।

सतपुरिया--संज्ञा स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की जंगली मधुमक्खी।

सतफेरा(पु)--संज्ञा पुं० [हिं० सात+फेरा] विवाह के समय होनेवाला सप्तपदी नामक कर्म। विशेष दे० 'सप्तपदी'। उ०--फिरहि दोउ सतफेर गुने के। सातहि फेर गाँठ सो एके।--जायसी (शब्द०)।

सतबरवा--संज्ञा पुं० [सं० शतपर्व (=बाँस)] एक प्रकार का वृक्ष जो नैपाल में होता और जिससे नैपाली कागज बनाया जाता है।

सतभइया--संज्ञा स्त्री० [हिं० सात+भाई] एक प्रकार की मैना (पक्षी) जिसे पेंगिया मैना भी कहते हैं।

विशेष--इसकी लंबाई प्रायः एक बालिश्त होती है। इसका रंग पीलापन लिए भूरा होता है। इसके पैर और पंजे पीले होते हैं। ऋतुभेदानुसार यह रंग बदलती है। यह झुंड में रहती है और छोटे, घने वृक्षों या झाड़ियों में घोंसला बनाती है। यह एक बार में प्रायः तीन अंडे देती है। यह बहुत शोर करती है। कहते हैं कि कोयल प्रायः अपने अंडे इसी के घोसले में रखती है।

सतभाव(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सद्भाव] १. सद्भाव। अच्छा भाव। २. सरलता। सीधापन। ३. सच्चापन। सचाई।

सतभौरी--संज्ञा स्त्री० [सं० सप्त भ्रमण] हिंदुओं में विवाह के समय की एक रीति। इसमें वर और वधू को अग्नि की सात बार प्रदक्षिणा करनी पड़ती है। इसे 'भौंरी पड़ना' भी कहते हैं।

सतमख--संज्ञा पुं० [सं० शतमख] जिसने १०० यज्ञ किए हों। शतक्रतु। इंद्र (डिं०)।

सतमसा--संज्ञा स्त्री० [सं०] मार्कंडेय पुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

सतमस्क--वि० [सं०] अंधकारयुक्त। तमसाच्छन्न [को०]।

सतमासा--संज्ञा पुं० [हिं० सात+मास] १. सात मास पर उत्पन्न शिशु। वह बच्चा जो गर्भ से सातवें महीने उत्पन्न हुआ हो। (ऐसा बच्चा प्रायः बहुत रोगी और दुबला होता है और जल्दी जीता नहीं)। २. वह रसम जो शिशु के गर्भ में आने पर सातवें महीने की जाती है।

सतमूली--संज्ञा स्त्री० [सं० शतमूली] सतावर। शतावरी।

सतयुग--संज्ञा पुं० [सं० सत्ययुग] दे० 'सत्ययुग'।

सतरंग--वि० [हिं० सतरंगा] दे० 'सतरंगा'।

सतरंगा१--वि० [हिं० सात+रंग] जिसमें सात रंग हो। सात रंगों वाला। जैसे--सतरंगा साफा; सतरंगी साड़ी।

सतरंगा२--संज्ञा पुं० इंद्रधनुष जिसमें सात रंग होते हैं।

सतरंज--संज्ञा स्त्री० [अ० शतरंज या सं० चतुरङ्ग] दे० 'शतरंज'। उ०--सतरंज को सो राज काठ को सब समाज महाराज बाजी रची प्रथमन हति।--तुलसी (शब्द०)।

सतरंजी--संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शतरंजी] दे० 'शतरंजी'।

सतर१--संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लकीर। रेखा।

क्रि० प्र०--खींचना।

२. पंक्ति। अवली। कतार।

सतर²—वि० १. टेढ़ा। वक्र। उ०—रमन कह्यौ हँसि रमनि सो रति बिपरीत बिलास। चितई करि लोचन सतर सगरब सलज सहास।—बिहारी (शब्द०)। २. कुपित। क्रुद्ध। उ०—(क) कान्हहु पर सतर भौहें महरि मनहि बिचारु।—तुलसी ग्रं० पृ० ४३५। (ख) सुनहु श्याम तुमहूँ सरि नाहीं ऐसे गए बिलाइ। हम सों सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाइ।—सूर (शब्द०)।

सतर³—संज्ञा स्त्री०, पुं० [अ०] १. मनुष्य का वह अंग जो ढका रखा जाता है और जिसके न ढके रहने पर उसे लज्जा आती है। गुह्य इंद्रिय।

मुहा०—बेसतर करना = (१) नंगा करना। विवस्त्र करना। (२) बेइज्जत करना।

२. ओट। आड़। परदा। ३. छिपाना। गोपन करना।

यौ०—सतरपोश = जिससे तन ढाँका जाय। सतरपोशी = शरीर ढाँकना। तन ढाँकना।

सतरकी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सत्रह] वह क्रिया जो किसी की मृत्यु के पश्चात् सत्रहवें दिन की जाती है। सत्रहीं।

सतरह†—वि० संज्ञा पुं० [हिं० सत्तरह] दे० 'सत्तरह'।

सतराना—क्रि० अ० [हिं० सतर या सं० संतर्जन] १. क्रोध करना। कोप करना। उ०—हम ही पर सतरात कन्हाई।—सूर (शब्द०)। २. कुढ़ना। चिढ़ना। बिगड़ना। उ०—(क) जु ज्यौं उझकि झाँपति बदन, झुकति बिहँसि सतराइ। तु त्यौं गुलाल मुठी झुठी झझकावतु पिय जाइ।—बिहारी (शब्द०)। (ख) चंद दुति मंद भई, फंद में फँसी हौं आय, द्वंद नंद ठानैगी रे, जोरे जुग पानि दै। सासु सतरैहै, जेठ पतिनी रिसैहै, बंक बचन सुनैहै, छाँड़ि गर की भुजानि दै।—देव (शब्द०)।

क्रि० प्र०—जाना। उ०—लेहु अब लेहु, तब कोऊ न सिखायो मान्यो, कोई सतराइ जाइ जाहि जाहि रोकिए।—तुलसी (शब्द०)।

सतराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सतराना + हट (प्रत्य०)] कोप। गुस्सा। नाराजगी।

सतरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पदंष्ट्रा] सर्पदंष्ट्रा नामक ओषधि।

सतरौहाँ†—वि० हिं० सतराना + औंहा (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सतरौहीं] १. कुपित। क्रोधयुक्त। २. कोपसूचक। रिसाया हुआ सा। उ०—सकुचि न रहिए स्याम सुनि ये सतरौहैं बैन। देत रचौहैं चित कहे नेह नचौहैं नैन।—बिहारी (शब्द०)।

सतर्क—वि० [सं०] १. तर्कयुक्त। युक्ति से पुष्ट। दलील के साथ। २. जो विवेकशील हो (को०)। ३. सावधान। होशियार। सचेत। खबरदार।

सतर्कता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सतर्क होने का भाव। सावधानी। होशियारी।

सतर्पना ⓟ—क्रि० स० [सं० सन्तर्पण] भली भाँति तृप्त करना। संतुष्ट करना।

सतर्ष—वि० [सं०] तृषित। प्यासा।

सतल—वि० [सं०] १. तल या आधारयुक्त। २. पेंदेवाला। जिसमें पेंदा हो (को०)।

सतलज—संज्ञा स्त्री० [सं० शतद्रु] पंजाब की नदियों में से एक। शतद्रु नदी।

सतलड़ा—वि० [हिं० सात + लड़] [वि० स्त्री सतलड़ी] जिसमें सात लड़ हों। जैसे,—सतलड़ा हार।

सतलड़ी, सतलरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सात + लड़ी] गले में पहनने की सात लड़ियों की माला या हार।

सतवंती—वि० स्त्री० [हिं० सत्य + वंती (प्रत्य०)] सतवाली। सती। पतिव्रता।

सतवर्ग—संज्ञा पुं० [फ़ा० सदवर्ग] दे० 'सदवर्ग'।

सतसंग—संज्ञा पुं० [सं० सत्सङ्ग] दे० 'सत्संग'। उ०—बिनु सतसंग बिवेक न होई।—मानस, १।३।

सतसंगति—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्सङ्गति] दे० 'सत्संग'। उ०—सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई।—मानस, १।३।

सतसंगी—वि० [सं० सत्सङ्गिन्] दे० 'सत्संगी'।

सतसइया ⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तशतिका] दे० 'सतसई'। उ०—सतसइया के दोहरे ज्यों नावक के तीर। देखने में छोटे लगें घाव करें गंभीर।

सतसई—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तशती, प्रा० सत्तसई] १. वह ग्रंथ जिसमें सात सौ पद्य हों। सात सौ पद्यों का समूह या संग्रह। सप्तशती।

विशेष—हिंदी साहित्य में 'सतसई' शब्द से प्रायः सात सौ दोहे ही समझे जाते हैं। जैसे,—बिहारी की सतसई।

सतसठ ⓟ†—वि० [सं० सप्तषष्ठि, हिं० सड़सठ] दे० 'सड़सठ'।

सतसल—संज्ञा पुं० [देश०] शीशम का पेड़।

सतह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी वस्तु का ऊपरी भाग। बाहर या ऊपर का फैलाव। तल। जैसे,—मेज की सतह; समुंदर की सतह।

मुहा०—सतह चौरस या बराबर करना = समतल करना। उभार और गहराई अथवा खुरदुरापन निकालना।

२. रेखागणित के अनुसार वह विस्तार जिसमें लंबाई और चौड़ाई हो, पर मोटाई न हो। ३. जमीन की फर्श या छत।

सतहत्तर¹—वि० [सं० सप्तसप्तति, पा० सत्तसत्तति, प्रा० सत्तहत्तरि] सत्तर और सात। जो गिनती में तीन कम अस्सी हो।

सतहत्तर²—संज्ञा पुं० सत्तर से सात अधिक की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—७७।

सतहत्तरवाँ—वि० [हिं० सतहत्तर + वाँ (प्रत्य०)] जिसका स्थान सतहत्तर पर हो। जो क्रम में सतहत्तर के स्थान पर पड़ता हो।

सतांग ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० शताङ्ग] रथ। यान। उ०—कोउ तुरंग चढ़ि कोउ मतंग चढ़ि कोउ सतांग चढ़ि आए। अति उछाह नरनाह भरे सब संपति बिपुल लुटाए।—रघुराज (शब्द०)।

सतानंद—संज्ञा पुं० [सं० सतानन्द] गौतम ऋषि के पुत्र जो राजा जनक के पुरोहित थे। उ०—सतानंद तब आएसु दीन्हा। सीता गमन समीपहिं कीन्हा।—मानस, १।२६३।

सताना—क्रि० स० [सं० संतापन, प्रा० संतावन] १. संताप देना। कष्ट पहुँचाना। दुःख देना। पीड़ित करना। उ०—(क) कह्यौ सुरन्ह तुम ऋषिहि सतायौ। तातें कर रहि गयो उचायो। —सूर (शब्द०)। (ख) गई कालिंदी बिरह सताई। चलि पराग अरइल बिच आई।—जायसी (शब्द०)। २. तंग करना। हैरान करना। ३. किसी के पीछे पड़ना।

सतार—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार ग्यारहवें स्वर्ग का नाम।

सतारुक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कुष्ठ या कोढ़ जिसमें शरीर पर लाल और काली फुंसियाँ निकलती है।

सतारू—संज्ञा पुं० [सं० सतारुक] दे० 'सतारुक'।

सतालू—संज्ञा पुं० [सं० सप्तालुक; मि० फ़ा० शफ़्तालू] एक पेड़ जिसके गोल फल खाए जाते हैं। शफ़्तालू। आड़ू।

विशेष—यह पेड़ मझोले कद का होता है और भारत के ठंढे प्रदेशों में पाया जाता है। इसके पत्ते लंबे, नुकीले और कुछ श्यामता लिए गहरे रंग के होते है। पतझड़ के पीछे नए पत्ते निकलने के पहले इसमें लाल रंग के फूल लगते हैं। फल गूलर की तरह गोल और पकने पर हरे और लाल रंग के होते हैं जिनके ऊपर बहुत महीन सफेद रोइँयाँ होती हैं। ये फल खाने में बड़े मीठे होते हैं। इसके बीज कड़े छिलके के और बादाम की तरह के होते हैं। इसकी लकड़ी मजबूत और ललाई लिए होती है तथा उसमें से एक प्रकार की हलकी सुगंध भी निकलती है।

सतावनाⓅ—क्रि० स० [प्रा० संतावण, हिं० सताना] दे० 'सताना'।

सतावर—संज्ञा स्त्री० [सं० शतावरी] एक झाड़दार बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम में आते हैं। शतमूली। नारायणी।

विशेष—यह बेल भारत के प्रायः सभी प्रांतों में होती है। इसकी टहनियों पर छोटे छोटे महीन काँटे होते हैं। पत्तियाँ सोए की पत्तियों की सी होती हैं और उनमें एक प्रकार की क्षारयुक्त गंध होती है। फूल इसके सफेद होते हैं और गुच्छे में लगते हैं। फल जंगली बेर के समान होते हैं और पकने पर लाल रंग के हो जाते हैं। प्रत्येक फल में एक या दो बीज होते हैं। इसकी जड़ बहुत पुष्टिकारक और वीर्यवर्धक मानी जाती है। स्त्रियों का दूध बढ़ाने के लिये भी यह दी जाती है। वैद्यक में इसका गुण शीतल, मधुर, अग्निदीपक, बल कारक और वीर्यवर्द्धक माना गया है। ग्रहणी और अतिसार में भी इसका क्वाथ देते हैं।

सतासी[१]—वि० [सं० सप्तशीति, प्रा० सत्तासी] अस्सी और सात। जो गिनती में अस्सी से सात अधिक हो।

सतासी[२]—संज्ञा पुं० सात ऊपर अस्सी की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—८७।

सतासीवाँ—वि० [सं० सप्ताशितितम, हिं० सतासी + वाँ (प्रत्य०)] जिसका स्थान अस्सी से सात अधिक की संख्या पर हो। जो क्रम में सतासी पर पड़ता हो।

सतिⓅ[१]—संज्ञा पुं० [सं० सत्य, प्रा० सत्ति] दे० 'सत्य' या 'सत'।

सति[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उपहार। भेंट। दान। २. अंत। नाश (को०)।

सतिभाउⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सत्यभाव या सद्भाव] दे० 'सद्भाव'। उ०—(क) दानिसिरोमनि कृपानिधि नाथ कहौं सतिभाउ।—मानस, १।१४९। (ख) कहति परस्पर वचन जसोमति लखि नहि सकति कपट सतिभाऊ।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४३४।

सतिवन—संज्ञा पुं० [सं० सप्तपर्ण, प्रा० सत्तवन्न] एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसकी छाल आदि दवा के काम में आती है। सप्तपर्णी। छतिवन।

विशेष—इसका पेड़ ४०-५० हाथ ऊँचा होता है और भारत के प्रायः सभी स्थानों में पाया जाता है। भारतवर्ष के बाहर आस्ट्रेलिया और अमेरिका के कुछ स्थानों में भी यह मिलता है। यह बहुत जल्दी बढ़ता है। पत्ते सेमर के पत्तों के समान और एक सींके में सात सात लगते हैं। इसकी लकड़ी मुलायम और सफेद होती और सजावट के सामान बनाने के काम आती। फूल हरापन लिए सफेद होता है। फूलों के झड़ जाने पर हाथ भर के लगभग लंबी पतली रोईंदार फलियाँ लगती हैं। यह वसंत ऋतु में फूलता और वैशाख-जेठ में फलता है। फूलों में एक प्रकार की मदायन गंध होती है; इसी से कवियों ने कहीं कहीं इस गंध की उपमा गजमद से दी है। आयुर्वेद के अनुसार इसकी छाल त्रिदोष-नाशक, अग्निदीपक, ज्वरघ्न और बलदायक होती है। ज्वर दूर करने में इसकी छाल का काढ़ा कुनैन के समान ही होता है। ज्वर के पीछे की कमजोरी भी इससे दूर होती है।

सती[१]—वि० स्त्री० [सं०] अपने पति को छोड़ और किसी पुरुष का ध्यान मन में न लानेवाली। साध्वी। पतिव्रता।

सती[२]—संज्ञा स्त्री० १. दक्ष प्रजापति की कन्या जो भव या शिव को ब्याही गई थी। २. पतिव्रता स्त्री। ३. वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले। सहगामिनी स्त्री।

मुहा०—सती होना = (१) मरे हुए पति के शरीर के साथ चिता में जल मरना। सहगमन करना। (१) किसी के पीछे मर मिटना।

४. मादा। मादापशु। ५. गंधयुक्त मृत्तिका। सोंधी मिट्टी। ६. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है। ७. विश्वामित्र की स्त्री का नाम। ८. अंगिरा की स्त्री का नाम। ९. संन्यासिनी (को०)। १०. दुर्गा या पार्वती का एक नाम (को०)।

सतीⓅ[३]—संज्ञा पुं० [हिं० सत (= सत्य) + ई (प्रत्य०)] सत्यान्वेषी। सत्य का अनुगमन करनेवाला। उ०—

सतोक—संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी (को०)।

सतीचौरा—संज्ञा पुं० [सं० सती + हिं० चौरा] वह वेदी या छोटा चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर उसके स्मारक में बनाया जाता है।

सतीत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सती होने का भाव। पातिव्रत्य।

मुहा०—सतीत्व बिगाड़ना या नष्ट करना = किसी स्त्री से बलात्कार करना।

सतीत्वहरण—संज्ञा पुं० [सं०] परस्त्री के साथ बलात्कार। सतीत्व बिगाड़ना।

सतीदोषोन्माद—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों का वह उन्माद रोग जिसका प्रकोप किसी सतीचौरे को अपवित्र आदि करने के कारण माना जाता है।

सतीन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का मटर। २. अपराजिता। ३. बाँस (को०)। ४. जल। पानी (को०)।

सतीन[२]—वि० यथार्थ। वास्तविक [को०]।

सतीनक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मटर [को०]।

सतीपन—संज्ञा पुं० [सं० सती + हिं० पन (प्रत्य०)] सती रहने का भाव। पातिव्रत्य। सतीत्व।

सतीपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] साध्वी स्त्री का पुत्र।

सती प्रथा—संज्ञा स्त्री० [सं० सती + प्रथा] पति के मरण के उपरांत पत्नी का उसके साथ सहगमन या जल जाना।

विशेष—अंगरेजी शासन काल में लार्ड विलियम बेंटिंक ने कानून बनाकर इस प्रथा को बंद कर दिया। इस प्रथा के विरुद्ध आंदोलन के मुख्य प्रेरक राजा राम मोहन राय कहे जाते हैं।

सतीर्थ[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ही आचार्य से पढ़नेवाला। सहपाठी। ब्रह्मचारी। २. शिव का एक नाम (को०)।

सतीर्थ[२]—वि० तीर्थवाला। तीर्थयुक्त [को०]।

सतीर्थ्य—संज्ञा पुं० [सं०] सहपाठी। ब्रह्मचारी।

सतील—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस। वंश। तृणराज। २. अपराजिता। ३. वायु। ४. एक प्रकार का मटर (को०)।

सतीलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मटर [को०]।

सतीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपराजिता। विष्णुक्रांता। कोयल लता।

सतीव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] पतिव्रत [को०]।

सतीव्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पतिव्रता स्त्री [को०]।

सतुआ†—संज्ञा पुं० [सं० सक्तुक, सत्तुआ] भ्रष्ट यवादि चूर्ण। भुने हुए जौ और चने का चूर्ण जो पानी डालकर खाया जाता है। सत्तू।

सतुआन†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सतुआ] दे० 'सतुआ संक्रांति'।

सतुआ संक्रांति—संज्ञा स्त्री० [हिं० सतुआ + संक्रांति] मेष की संक्रांति जो प्रायः वैशाख में पड़ती है। इस दिन लोग जल से भरा घड़ा, पंखा और सत्तू दान करते और खाते हैं।

सतुआसोंठ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सतुआ + सोंठ] सोंठ की एक जाति।

सतुष—वि० [सं०] जिसमें तुष अर्थात् छिलका हो। (अन्न) जो भूसी से युक्त हो [को०]।

सतून—संज्ञा पुं० [फ़ा०; मि० सं० स्थूण] स्तंभ। खंभा।

सतूना—संज्ञा पुं० [फ़ा० सतून (= खंभा)] बाज की एक झपट जिसमें वह पहले शिकार के ठीक ऊपर उड़ जाता है, और फिर एकबारगी नीचे की ओर उसपर टूट पड़ता है। उ०—काग आपनी चतुरई तब तक लेहु चलाइ। जब लगि सिर पर देइ नहिं लगर सतूना आइ।—रसनिधि (शब्द०)।

सतृट्—वि० [सं० सतृष्] दे० 'सतृष'।

सतृष—वि० [सं०] १. तृष्णा से युक्त। प्यासवाला। प्यासा। २. चाहनेवाला। इच्छुक।

सतृष्ण—वि० [सं०] दे० 'सतृष'।

सतेज—वि० [सं० सतेजस्] दे० 'सतेजा'।

सतेजा—वि० [सं० सतेजस्] तेजयुक्त। जिसमें तेज हो। दीप्तिमान्। प्रभायुक्त [को०]।

सतेर—संज्ञा पुं० [सं०] भूसी। भुस। तुष।

सतेरक—संज्ञा पुं० [सं०] ऋतु। मौसिम।

सतेरो—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मधुमक्खी।

सतेस—संज्ञा स्त्री० [सं० स + तरस् (= वेग)] शीघ्रता। फुर्ती। तेजी।

सतोखना ‡—क्रि० स० [सं० सन्तोषण] १. संतुष्ट करना। प्रसन्न करना। २. संतोष दिलाना। समझाना। ढारस देना।

सतोगुण—संज्ञा पुं० [सं० सत्वगुण] दे० 'सत्वगुण'।

सतोगुणी—संज्ञा पुं० [हिं० सतोगुण + ई (प्रत्य०)] सत्वगुणवाला। उत्तम प्रकृति का। सात्विक।

सतोद—वि० [सं०] करकने या शल्य की तरह चुभनेवाली वेदना से युक्त [को०]।

सतोदर—संज्ञा पुं० [सं० शतोदर] दे० 'शतोदर'।

सतौला†—संज्ञा पुं० [हिं० सात + औला (प्रत्य०)] प्रसूता स्त्री का वह विधिपूर्वक स्नान जो प्रसव के सातवें दिन होता है।

सतौसर—संज्ञा पुं० [सं० सप्तसृक्] सात लड़ी का हार। सतलड़ा हार।

सत्कथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम कथा या मनोरंजक वार्ता। अच्छी बात चीत [को०]।

सत्कदंब—संज्ञा पुं० [सं० सत्कदम्ब] एक प्रकार का कदंब।

सत्करण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सत्करणीय; सत्कृत] १. सत्कार करना। आदर करना। २. मृतक की अंतिम क्रिया करना। क्रिया कर्म करना।

सत्करणीय—वि० [सं०] सत्कार करने योग्य। आदरणीय। पूज्य।

सत्कर्त्तव्य—वि० [सं०] १. सत्कार के योग्य। २. जिसका सत्कार करना हो।

सत्कर्त्ता[१]—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सत्कर्तृ] [स्त्री० सत्कर्त्री] १. अच्छा काम करनेवाला। सत्कर्म करनेवाला। २. हित करनेवाला। ३. आदर सत्कार करनेवाला।

सत्कर्त्ता[२]—संज्ञा पुं० विष्णु का एक नाम [को०]।

सत्कर्म—संज्ञा पुं० [सं० सत्कर्मन्] [वि० सत्कर्मी] १. अच्छा कर्म। अच्छा काम। २. धर्म या उपकार का काम। पुण्य। ३. अच्छा संस्कार। ४. सत्कार। ५ अभिवादन (को०)। ६. शुद्धि। प्रायश्चित्त। संस्कार (को०)। ६. अंत्येष्टि कर्म (को०)।

सत्कला—संज्ञा पुं० [सं०] उत्कृष्ट या ललित कला [को०]।

सत्कवि—संज्ञा पुं० [सं०] सुकवि। श्रेष्ठ या उत्कृष्ट कोटि का कवि [को०]।

सत्कांचनार—संज्ञा पुं० [सं० सत्काञ्चनार] रक्त कांचन वृक्ष। लाल कचनार [को०]।

सत्कांड—संज्ञा पुं० [सं० सत्काण्ड] १. चील। २. बाज। श्येन [को०]।

सत्काय दृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्ध मतानुसार मृत्यु के उपरांत आत्मा, लिंग, शरीर आदि के बने रहने का मिथ्या सिद्धांत।

सत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १. आए हुए के प्रति अच्छा व्यवहार। आदर। संमान। खातिरदारी। २. आतिथ्य। मेहमानदारी। ३. पर्व। उत्सव। ४. देखभाल। ख्याल (को०)। ५. दावत। भोज (को०)।

सत्कार्य[1]—वि० [सं०] १. सत्कार करने योग्य। २. जिसका सत्कार करना हो। ३. जिस (मृतक) का क्रिया कर्म करना हो।

सत्कार्य[2]—संज्ञा पुं० १. उत्तम कार्य। अच्छा काम। २. कारण में कार्य की स्थिति या सत्ता का होना (को०)।

सत्कार्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] सांख्य का यह दार्शनिक सिद्धांत कि बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती, अर्थात् इस जगत् की उत्पत्ति शून्य से नहीं हो सकती, किसी मूल सत्ता से है। किसी कारण में कार्य की सत्ता का सिद्धांत। यह सिद्धांत बौद्धों के शून्यवाद का विरोधी है।

सत्किष्कु—संज्ञा पुं० [सं०] लंबाई की एक प्राचीन नाप जो सवा गज के लगभग होती थी।

सत्कीर्त्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम कीर्ति। यश। नेकनामी।

सत्कुल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम कुल। अच्छा या बड़ा खानदान।

सत्कुल[2]—वि० अच्छे कुल का। खानदानी।

सत्कुलीन—वि० [सं०] सत्कुल में उत्पन्न। जो अच्छे कुल का हो। खानदानी (को०)।

सत्कृत—वि० [सं०] १. अच्छी तरह किया हुआ। २. जिसका आदर सत्कार किया गया हो। आदृत। ३. अलंकृत। सजाया हुआ। बनाया हुआ।

सत्कृत[2]—संज्ञा पुं० १. सत्कार। संमान। आदर। २. सत्कर्म। अच्छा काम। पुण्य। ३. शिव (को०)। ४. आतिथ्य (को०)।

सत्कृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आदर सत्कार। २. सद्गुण। सदाचार। ३. पुण्य। अच्छा कर्म (को०)।

सत्क्रिय—वि० [सं०] सत् कार्य करनेवाला (को०)।

सत्क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्कर्म। पुण्य। धर्म का काम। २. सत्कार। आदर। अच्छा व्यवहार। खातिरदारी। ३. आयोजन। तैयारी। सजावट। ४. शिष्टाचार। अभिवादन (को०)। ५. शुद्धि संस्कार (को०)। ६. मृतक संस्कार। अंत्येष्टि क्रिया (को०)।

सत्त[1]—संज्ञा पुं० [सं० सत्व, प्रा० सत्त] १. किसी पदार्थ का सार भाग। असली जुज। रस। जैसे,—गेहूँ का सत्त, मुलेठी का सत्त। २. तत्व। काम की वस्तु। जैसे,—अब तो उसमें कुछ भी सत्त बाकी नहीं रह गया।

सत्त†[2]—संज्ञा पुं० [सं० सत्य, प्रा० सत्त] १. सत्य। सच बात। २. सतीत्व। पातिव्रत्य।

सत्तम—वि० [सं०] १. अत्यंत सुंदर। सर्वोत्तम। २. सर्वश्रेष्ठ। सर्वजनपूज्य (को०)।

सत्तर[1]—वि० [सं० सप्तति, प्रा० सत्तरि] साठ और दस। जो गिनती में साठ से दस अधिक हो।

सत्तर[2]—संज्ञा पुं० साठ से दस अधिक की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—७०।

सत्तरवाँ†—वि० [हिं० सत्तर + वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० सत्तरवीं] जो क्रम में सत्तर के स्थान पर हो।

सत्तरह[1]—वि० [सं० सप्तदश, प्रा० सत्तरह] दस और सात। जो गिनती में दस से सात अधिक हो।

सत्तरह[2]—संज्ञा पुं० १. दस से सात की अधिक संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है–१७। २. पाँसे के खेल में एक दाँव जिसमें दो छक्के और एक पंजा तीनों एक साथ पड़ते हैं।

सत्तरहवाँ—वि० [हिं० सत्तरह + वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० सत्तरहवीं] जो क्रम में सत्तरह के स्थान पर पड़े।

सत्तलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] आस्तरण। दरी। बिछौना। कालीन। गलीचा (को०)।

सत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। होना। भाव। २. शक्ति। दम। ३. वास्तविकता। यथार्थता (को०)। ४. जाति का एक भेद (को०)। ५. उत्तमता। श्रेष्ठता (को०)। ६. अधिकार। प्रभुत्व। हुकूमत। (मराठी से गृहीत)।

मुहा०—सत्ता चलाना = अधिकार जताना। हुकूमत करना। उ०—जो लोग असभ्य हैं, जंगली हैं उनपर सत्ता चलाने (हुकूमत करने) में अनिबंध शासन अच्छा होता है।—महावीर—प्रसाद द्विवेदी (शब्द०)।

सत्ता[2]—संज्ञा पुं० [सं० सप्तक, या हिं० सात] ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों।

सत्ताइस, सत्ताईस[1]—वि० [सं० सप्तविंशति, प्रा० सत्ताईसा] सात और बीस। जो गिनती में बीस से सात अधिक हो।

सत्ताइस, सत्ताईस[2]—संज्ञा पुं० बीस से सात अधिक की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—२७।

सत्ताइसवाँ—वि० [हिं० सताइस + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम में सत्ताइस के स्थान पर पड़ता हो।

सत्ताधारी—संज्ञा पुं० [सं० सत्ताधारिन्] अधिकारी। अफसर हाकिम।

सत्तानबे[1]—वि० [सं० सप्तनवति, प्रा० सत्तानवइ] नब्बे और सात। जो गिनती में सौ से तीन कम हो।

सत्तानबे[2]—संज्ञा पुं० सौ से तीन कम की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—९७।

सत्तानबेवाँ—वि० [हिं० सत्तानबे + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम में सत्तानबे के स्थान पर पड़ता हो।

सत्तार—संज्ञा पुं० [अ०] १. परदा डालनेवाला। दोष ढाँकनेवाला। २. ईश्वर (को०)।

सत्तावन[1]—वि० [सं० सप्तपञ्चाशत, प्रा० सत्तावन्ना] पचास और सात। जो गिनती में तीन कम साठ हो।

सत्तावन[2]—संज्ञा पुं० तीन कम साठ की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—५७।

सत्तावनवाँ—वि० [हिं० सत्तावन + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम में सत्तावन के स्थान पर पड़ा हो।

सत्ताशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] पाश्चात्य दर्शन की वह शाखा जिसमें मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो।

सत्तासामान्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] अनेक रूपों के भीतर एक सामान्य द्रव्य का अस्तित्व। जैसे,—कुंडल, कंकण आदि अनेक गहनों में, 'सोना' नामक द्रव्य सामान्य रूप से पाया जाता है।

विशेष—इस तथ्य का उपयोग वेदांती या दार्शनिक अनेक नाम-रूपात्मक जगत् की तह में किसी एक अनिर्वचनीय और अव्यक्त सत्ता का प्रतिपादन करने में करते हैं।

सत्तासी[१]—वि० [सं० सप्ताशीति, प्रा० सत्तासी] अस्सी और सात। जो तीन कम नब्बे हो।

सत्तासी[२]—संज्ञा पुं० तीन कम नब्बे की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है,—८७।

सत्तासीवाँ—वि० [हिं० सत्तासी + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम में तीन कम नब्बे के स्थान पर हो।

सत्ति[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] शक्ति। सामर्थ्य।

सत्ति[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बैठने की क्रिया। उपवेशन। २. प्रारंभ। शुरुआत [को०]।

सत्तू—संज्ञा पुं० [सं० सक्तुक, प्रा० सत्तुअ] भुने हुए जौ और चने या और किसी अन्न का चूर्ण या आटा जो पानी में घोलकर खाया जाता है।

मुहा०—सत्तू बाँधकर पीछे पड़ना = (१) पूरी तैयारी के साथ किसी को तंग करने में लगना। सब काम धंधा छोड़कर किसी के विरुद्ध प्रयत्न करना। (२) पूर्ण तैयारी के साथ किसी काम में लगना। सब काम धंधा छोड़कर प्रवृत्त होना।

सत्पति—संज्ञा पुं० [सं०] १. भले लोगों या वीरों का स्वामी। २. इंद्र। देवराज। शक्र [को०]।

सत्पत्र—संज्ञा पुं० [सं०] कमल का नवीन पत्ता [को०]।

सत्पथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम मार्ग। २. सदाचार। अच्छी चाल। ३. उत्तम संप्रदाय या सिद्धांत। अच्छा पंथ।

सत्पथीन—वि० [सं०] सत्पथ या सुमार्ग पर चलनेवाला [को०]।

सत्परिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] सत् या योग्य व्यक्ति से दान ग्रहण करना [को०]।

सत्पशु—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के बलि योग्य अच्छा पशु। वह पशु जो देव बलि देने के योग्य हो।

सत्पात्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति। २. श्रेष्ठ और सदाचारी व्यक्ति। योग्य मनुष्य। ३. कन्या देने के योग्य उत्तम पुरुष। अच्छा वर।

सत्पात्रवर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] योग्य व्यक्ति के प्रति उदारता का व्यवहार [को०]।

सत्पात्रवर्षी—वि० [सं० सत्पात्रवर्षिन्] पात्रता का विचार करके दान आदि देनेवाला [को०]।

सत्पुत्र[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. योग्य पुत्र। २. वह पुत्र जो पितरों का विधिपूर्वक तर्पण आदि करे [को०]।

सत्पुत्र[२]—वि० [सं०] पुत्रवाला [को०]।

सत्पुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] भला आदमी। सदाचारी पुरुष।

सत्पुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा पुष्प। उत्तम पुष्प। २. पूर्ण विकसित फूल [को०]।

सत्प्रतिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] योग्य पात्र से दान ग्रहण करना [को०]।

सत्प्रतिपक्ष[१]—वि० [सं०] जिसका उचित खंडन हो सके। जिसके विपक्ष में बहुत कुछ कहा जा सके।

सत्प्रतिपक्ष[२]—संज्ञा पुं० [सं०] हेत्वाभास के पाँच प्रकारों में से एक (यत्र साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं स प्रतिपक्षः) वह हेतु जिसके विपक्ष में अन्य समकक्ष हेतु हो। जैसे शब्द नित्य है क्योंकि वह श्रव्य है, शब्द अनित्य है क्योंकि वह उत्पन्न है। यहाँ शब्द की नित्यता के हेतु 'श्रव्य' के समकक्ष उसकी अनित्यता का हेतु 'उत्पत्ति' है।

सत्प्रमुदिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य दर्शन के अनुसार आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि [को०]।

सत्फल—संज्ञा पुं० [सं०] दाड़िम। अनार।

सत्यंकार—संज्ञा पुं० [सं० सत्यङ्कार] १. वचन को सत्य करना। २. वादा पूरा करना। २. वादा पूरा करने की जमानत के तौर पर कुछ पेशगी देना।

सत्यंभरा—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्यम्भरा] एक नदी का नाम [को०]।

सत्य[१]—वि० [सं०] १. जो बात जैसी है, उसके संबंध में वैसा ही (कथन)। यथार्थ। ठीक। वास्तविक। सही। यथातथ्य। जैसे,—सत्य बात, सत्य वचन। २. असल। ३. ईमानदार। निष्कपट। विश्वस्त (को०)। ४. सद्गुणी। सच्चरित्र। ५. जो झूठा न हो। सच्चा (को०)।

सत्य[२]—क्रि० वि० सचमुच। ठीक ठीक।

सत्य[३]—संज्ञा पुं० १. वास्तविक बात। ठीक बात। यथार्थ तत्व। जैसे,—सत्य को कोई छिपा नहीं सकता।

विशेष—बौद्ध धर्म में चार आर्य सत्य कहे गए हैं—दुःख सत्य (संसार दुःख रूप है यह सत्य बात), दुःखसमुदय (दुःख के कारण), दुःखनिरोध (दुःख रोका जाता है) और मार्ग (निर्वाण का मार्ग)। बौद्ध दार्शनिक दो प्रकार का सत्य मानते हैं—संवृत्ति सत्य (जो बहुमत से माना गया हो) और परमार्थ सत्य (जो स्वतः सत्य हो)।

२. उचित पक्ष। न्याय पक्ष। धर्म की बात। ईमान की बात। जैसे,—हम सत्य पर दृढ़ रहेंगे। ३. पारमार्थिक सत्ता। वह वस्तु जो सदा ज्यों की त्यों रहे, जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो (वेदांत)। जैसे,—ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या है। ४. ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा अवस्थान करते हैं। ५. नवें कल्प का नाम। ६. अश्वत्थ वृक्ष। पीपल का पेड़। ७. विष्णु का एक नाम। ८. रामचंद्र का एक नाम। ९. नांदीमुख श्राद्ध के अधिष्ठाता

देवता। १०. विश्वेदेवा में से एक। ११. शपथ। कसम। १२. प्रतिज्ञा। कौल। १३. चार युगों में से पहला युग। कृतयुग। १४. एक दिव्यास्त्र। १५. ईमानदारी। निष्कपटता (को०)। १६. भद्रता। सद्गुण। शुचिता (को०)। १७. जल। पानी (को०)। १८. विशुद्धता। खरापन (को०)। १९. एक ऋषि। २०. सात व्याहृतियों में से एक (को०)। २१. ब्रह्म (को०)। २२. मोक्ष (को०)।

यौ०—सत्यकृत् = उचित कार्य को करनेवाला। सत्यग्रंथि = जिसकी ग्रंथि सत्य हो। सच्ची और ठीक गाँठ बाँधनेवाला। सत्यघ्न = सत्य की हत्या करनेवाला। शपथ या प्रतिज्ञा भंग करनेवाला। सत्यनिष्ठ = सचाई पर दृढ़ रहनेवाला। सत्यमेव = अत्रिमुनि के एक पुत्र का नाम। सत्यपाल = एक ऋषि। सत्यपूत = सत्य द्वारा शुद्ध। सत्यप्रतिश्रुत = बात का धनी। सत्यप्रतिष्ठान = जिसकी नींव सत्य पर आद्धृत हो। सत्यबंध = जो सत्य से बँधा हुआ हो। सत्यवादी। सत्यभारत = महाभारतकार व्यासदेव का एक नाम। सत्यभेदी = वादा तोड़नेवाला। सत्ययौवन। सत्यरत = (१) सत्यवादी। (२) व्यास। सत्यरथ = विदर्भ के एक राजा। सत्यरूप = (१) वास्तविक स्वरूप वाला। (२) विश्वास योग्य। सत्यवाहन = जो सत्य का वहन करनेवाला हो। सत्यविक्रम = सच्चा वीर। सत्यवृत्त = अच्छे आचरणवाला। सत्यवृत्ति = सदाचार। सत्यशपथ = (१) जिसकी प्रतिज्ञा पूरी होकर रहे। (२) जिसका शाप झूठा न हो। सत्यसंरक्षण = सत्य की रक्षा करना। वचन का पालन। सत्यसार = जो पूर्णतः सत्य हो। सत्यस्वप्न = जिसका सपना सच्चा हो।

सत्यक—वि० [सं०] दे० 'सत्य'।

सत्यक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुबंध या सौदे का पुष्टिकरण। २. कृष्ण का एक पुत्र जिसकी माता का नाम भद्रा था। यह केकयराज की कन्या थी। ३. मनु रैवतक का एक पुत्र (को०)।

सत्यकाम—वि० [सं०] सत्य का प्रेमी।

सत्यकीर्ति—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक अस्त्र जो मंत्रबल से चलाया जाता था। २. संधान के पूर्व अस्त्र को अभिमंत्रित करने का एक मंत्र (को०)।

सत्यकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक बुद्ध का नाम। २. केकय देश के एक राजा का नाम। ३. अक्रूर के पुत्र का नाम।

सत्यक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] वादा। प्रतिज्ञा। शपथ। (बौद्ध)।

सत्यजित्—संज्ञा पुं० [सं०] १. वासुदेव का एक भतीजा। २. एक दानव। ३. एक यक्ष। ४. तीसरे मन्वंतर के इंद्र का नाम।

सत्यज्ञ—वि० [सं०] जिसे सत्य की जानकारी हो।

सत्यतपा—संज्ञा पुं० [सं० सत्यतपस्] वाराहपुराण में वर्णित एक ऋषि का नाम जो पहले व्याध थे।

सत्यतः—अव्य० [सं० सत्यतस्] ठीक ठीक। वास्तव में। सचमुच।

सत्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्य होने का भाव। वास्तविकता। सचाई। २. नित्यता।

सत्यदर्शी[1]—वि० [सं० सत्यदर्शिन्] सत्य का पारखी। सत्य को पहचान लेनेवाला। सत्य और असत्य का विवेक करनेवाला (को०)।

सत्यदर्शी[2]—संज्ञा पुं० तेरहवें मन्वंतर के एक ऋषि का नाम (को०)।

सत्यदृक्—वि० [सं० सत्यदृश्] दे० 'सत्यदर्शी'।

सत्यधन वि० [सं०] जिसका सर्वस्व सत्य हो। जिसे सत्य सबसे प्रिय हो।

सत्यधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. तेरहवें मनु के एक पुत्र का नाम। २. सत्य रूपी धर्म। शाश्वत सत्य। धर्म (को०)।

यौ०—सत्यधर्म पथ = सत्यरूपी धर्म का मार्ग। शाश्वत सत्य का मार्ग। सत्यधर्म परायण = सत्यरूपी धर्म को माननेवाला। सत्य को माननेवाला। सत्य का पालन करनेवाला।

सत्यधृति—वि० [सं०] अत्यंत सत्यवादी। पूर्णतः सत्यवक्ता (को०)।

सत्यनारायण—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु भगवान् का एक नाम जिसके संबंध में एक कथा रची गई है। इस कथा का प्रचार आजकल बहुत है।

विशेष—ऐसा पता लगता है कि अकबर के समय बंग देश में अकबर के नए मत 'दीन इलाही' के प्रचार के लिये पहले पहल यह कथा किसी पंडित से लिखाई गई थी और उसका रूप कुछ दूसरा ही था। जैसे, नारद और विष्णु का संवाद उसमें न था, और 'दंडी' के स्थान पर शाह या पीर नाम था। पीछे पंडितों ने उस कथा में आवश्यक परिवर्तन करके पौराणिक हिंदूधर्म के अनुकूल कर लिया और वह उसी परिवर्तित रूप में प्रचलित हुई। बंग भाषा में भी सत्यपीर की कथा के नाम से यह कथा पाई गई है।

सत्यपर, सत्यपरायण—वि० [सं०] सत्य में प्रवृत्त। ईमानदार।

सत्यपारमिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्ध धर्मानुसार सत्य की प्राप्ति अथवा सिद्धि (को०)।

सत्यपुर—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णुलोक। २. सत्यरूपी नारायण का लोक (को०)।

सत्यपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर। परमात्मा।

सत्यपूत—वि० [सं०] सत्य द्वारा परिष्कृत या पवित्र (को०)।

सत्यप्रतिज्ञ—वि० [सं०] प्रतिज्ञा को सत्य करनेवाला। वचन का सच्चा।

सत्यफल—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्व। श्रीफल। बेल।

सत्यभामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक जो सत्राजित की कन्या थी। इन्हीं के लिये कृष्ण पारिजात लाने गए थे और इंद्र से लड़े थे।

सत्यमान—संज्ञा पुं० [सं०] ठीक नापजोख या नापतौल (को०)।

सत्यमूल—वि० [सं०] जिसका मूल सत्य हो। सत्य पर आद्धृत। उ०—सत्यमूल सब सुकृत सुहाए। बेद पुरान बिदित मुनि गाए।—मानस, २।२८।

सत्यमेधा—संज्ञा पुं० [सं० सत्यमेधस्] विष्णु (को०)।

सत्ययुग—संज्ञा पुं० [सं०] पौराणिक काल गणना के अनुसार चार युगों में से पहला युग। कृतयुग।

विशेष—यह युग सबसे उत्तम माना जाता है। इस युग में पुण्य और सत्यता की अधिकता रहती है। यह १७,२८,००,० वर्ष का कहा गया है। इसका आरंभ वैशाख शुक्ल तृतीया रविवार से माना गया है।

सत्ययुगाद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ल तृतीया जिस दिन से सत्ययुग का आरंभ माना गया है।

सत्ययुगी—वि० [सं० सत्ययुग + हिं० ई (प्रत्य०)] १. सत्ययुग का। सत्ययुग संबंधी। २. बहुत प्राचीन। ३. बहुत सीधा और सज्जन। सच्चरित्र। धर्मात्मा। कलियुगी का उलटा।

सत्ययौवन—संज्ञा पुं० [सं०] एक देव योनि। विद्याधर [को०]।

सत्यरथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] त्रिशंकु की पत्नी का नाम [को०]।

सत्यलोक—संज्ञा पुं० [सं०] ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं। उ०—सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान।—मानस, १।१३८।

सत्यवक्ता—वि० [सं० सत्यवक्तृ] सत्य बोलनेवाला। सत्यवादी।

सत्यवचन—संज्ञा पुं० [सं०] सच कहना। यथार्थ कथन। २. प्रतिज्ञा। कौल। वादा।

सत्यवचा[1]—संज्ञा पुं० [सं० सत्यवचस्] १. ऋषि। संत। २. भविष्य-द्रष्टा सिद्ध पुरुष। ३. सचाई [को०]।

सत्यवचा[2]—वि० सच बोलनेवाला [को०]।

सत्यवती[1]—वि० स्त्री० [सं०] सच बोलनेवाली। २. सत्य या धर्म का पालन करनेवाली।

सत्यवती[2]—संज्ञा स्त्री० १. मत्स्यगंधा नामक धीवरकन्या जिसके गर्भ से कुमारी अवस्था में ही पराशर के संयोग से कृष्ण द्वैपायन या व्यास की उत्पत्ति हुई थी। २. शमी वृक्ष। ३. गाधि की पुत्री और ऋचीक की पत्नी जिसके कौशिकी नदी हो जाने की कथा प्रसिद्ध है। ४. नारद की पत्नी का नाम (को०)।

सत्यवती सुत—संज्ञा पुं० [सं०] सत्यवती के पुत्र वेदव्यास।

सत्यवदन—संज्ञा पुं० [सं०] सच बोलना [को०]।

सत्यवद्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसकी बात या प्रतिज्ञा आदि सच्ची हो। २. सच्ची बात। सचाई (को०)।

सत्यवसु—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वेदेवा में से एक।

सत्यवाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] सत्यवादिता। सत्य बोलना [को०]।

सत्यवाच्—संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्य वचन। २. वादा। करार। प्रतिज्ञा। ३. एक प्रकार का मंत्रास्त्र। ४. काक। कौआ। ५. कश्यप मुनि का एक पुत्र (को०)। ६. सावर्णि मनु का एक पुत्र (को०)। ७. वह जो सत्य बोलता हो।

सत्यवाचक—वि० [सं०] सत्यवक्ता। सत्यवादी।

सत्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सत्यवादी] १. सत्य बोलना। सच कहना। २. धर्म पर दृढ़ रहना। ईमान पर रहना।

सत्यवादिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दाक्षायिणी का एक नाम। २. बोधि द्रुम की एक देवी। ३. वह स्त्री जो सत्य बोलती हो। सच बोलनेवाली स्त्री।

सत्यवादी—वि० [सं० सत्यवादिन्] [वि० स्त्री० सत्यवादिनी] १. सत्य कहनेवाला। सच बोलनेवाला। २. प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। वचन को पूरा करनेवाला। ३. धर्म पर दृढ़ रहनेवाला। धर्म कभी न छोड़नेवाला। जैसे,—राजा हरिश्चंद्र बड़े सत्यवादी थे। ४. निष्कपट (को०)।

सत्यवान्[1]—वि० [सं० सत्यवत्] [वि० स्त्री० सत्यवती] १. सच बोलनेवाला। २. प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला।

सत्यवान्[2]—संज्ञा पुं० शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र का नाम जिसकी पत्नी सावित्री के पातिव्रत्य के अलौकिक प्रभाव की कथा पुराणों में प्रसिद्ध है।

विशेष—इनके पिता अंधे हो गए थे और गद्दी से उतार दिए गए थे। वे उदास होकर पुत्र और पत्नी सहित वन में रहते थे। मद्र देश के राजा घूमते घूमते उस वन में आए और उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह सत्यवान् के साथ कर दिया। पर सत्यवान् अल्पायु थे, इससे वे शीघ्र मर गए। सावित्री ने पातिव्रत्य के बल से अपने पति को जिला दिया।

२. चाक्षुष मनु का एक पुत्र। ३, अस्त्र संचालन में प्रयुक्त एक मंत्र। अस्त्र मंत्र (को०)।

सत्यव्यवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्य की व्यवस्था, निरूपण या निश्चय [को०]।

सत्यव्रत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या नियम। २. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ३. त्रेतायुग में सूर्यवंश के पचीसवें राजा जो त्रय्यारुण के पुत्र थे। आगे चलकर इन्हीं का नाम त्रिशंकु पड़ा (को०)। ४. महादेव (को०)।

सत्यव्रत[2]—वि० १. जिसने सत्य बोलने की प्रतिज्ञा की हो। सत्य का नियम पालन करनेवाला। २. ईमानदार। सच्चा (को०)।

सत्यशील—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सत्यशीला] सत्य का पालन करनेवाला। सच्चा।

सत्यश्रवसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] उषा का एक रूप [को०]।

सत्यश्रावण—संज्ञा पुं० [सं०] शपथ ग्रहण [को०]।

सत्यसंकल्प—वि० [सं० सत्यसङ्कल्प] जो विचारे हुए कार्य को पूरा करे। दृढ़संकल्प। उ०—राम सत्यसंकल्प प्रभु सभा काल बस तोरि।—मानस, ६।४१।

सत्यसंकाश—वि० [सं० सत्यसङ्काश] सत्य जैसा। सत्य के समान। सत्यवत् [को०]।

सत्यसंगर[1]—वि० [सं० सत्यसङ्गर] दे० 'सत्यव्रत' या 'सत्य-संकल्प' [को०]।

सत्यसंगर[2]—संज्ञा पुं० कुबेर का एक नाम [को०]।

सत्यसंध[1]—वि० [सं० सत्यसन्ध]। [स्त्री० सत्यसंधा] सत्यप्रतिज्ञ। वचन को पूरा करनेवाला। उ०—सत्यसंध दृढ़व्रत रघुराई।—तुलसी (शब्द०)।

सत्यसंध[2]—संज्ञा पुं० १. रामचंद्र का एक नाम। २. भरत का एक नाम। ३. जनमेजय का एक नाम। ४. स्कंद का एक अनुचर। ५. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

सत्यसंध(पु)[3]—वि० [सं० सत्य+सन्धान] जिसका निशाना अचूक हो। जिसका लक्ष्य न चूके। उ०—सत्यसंध प्रभु बध करि येही। आनहु चर्म कहति वैदेही।—मानस, ३।२१।

सत्यसंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्यसन्धा] द्रौपदी का एक नाम।

सत्यसंभव—संज्ञा पुं० [सं० सत्यसम्भव] वचन। वादा। प्रतिज्ञा [को०]।

सत्यसंहित—वि० [सं०] वचन का पक्का। जिसका कथन सत्य हो [को०]।

सत्यसाक्षी—संज्ञा पुं० [सं० सत्यसाक्षिन्] प्रत्यक्षदर्शी या विश्वस्त गवाह [को०]।

सत्यांग—वि० [सं० सत्याङ्ग] जिसके सभी अंग सत्य के बने हों [को०]।

सत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सच्चाई। सत्यता। २. दुर्गा का एक नाम। ३. सीता का एक नाम। ४. व्यास की माता सत्यवती। ५. द्रौपदी का एक नाम (को०)। ६. कृष्ण की पत्नी सत्यभामा (को०)। ७. विष्णु की माता (को०)।

सत्याकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पेशगी रकम। अग्रिम धन। २. (इकरारनामा या मसौदे में) दर निर्धारण [को०]।

सत्याग्नि—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि।

सत्याग्रह—संज्ञा पुं० [सं० सत्य+आग्रह] [वि० सत्याग्रही] सत्य के लिये आग्रह या हठ। सत्य या न्याय पक्ष पर प्रतिज्ञापूर्वक अड़ना और उसकी सिद्धि के उद्योग में मार्ग में आनेवाली कठिनाइयों और कष्टों को धीरतापूर्वक सहना और किसी प्रकार का उपद्रव या बल प्रयोग न करना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सत्याग्रही—वि० [सं० सत्याग्रहिन्] सत्य या न्याय के लिये आग्रह करनेवाला। सत्याग्रह का सहारा लेनेवाला।

सत्यात्मक—वि० [सं०] वह जिसका तत्त्व सत्य हो।

सत्यात्मज—संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्या या सत्यभामा का पुत्र। २. सत्य का पुत्र [को०]।

सत्यात्मा—वि० [सं० सत्यात्मन्] १. सत्यपरायण। सत्याचरण करनेवाला। २. सत्यवादी [को०]।

सत्यानंद—संज्ञा पुं० [सं० सत्यानन्द] वास्तविक आनंद [को०]।

सत्यानास—संज्ञा पुं० [सं० सत्ता+नाश] सर्वनाश। मटियामेट। ध्वंस। बरबादी।

सत्यानासी[1]—वि० [हिं० सत्यानास+ई (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सत्यानासिन] १. सत्यानास करनेवाला। चौपट करनेवाला। २. अभागा। बदकिस्मत।

सत्यानासी[2]—संज्ञा स्त्री० एक कँटीला पौधा जो प्रायः खँडहरों और उजाड़ स्थानों पर जमता है। घमोई। भड़भाँड़। स्वर्णक्षीरी। पीतपुष्पा।

विशेष—इसके बीच में गोभी के पौधे की तरह एक कांड ऊपर को गया होता है और चारों ओर नीलापन लिए हरे कटावदार पत्ते निकलते हैं जिनपर चारो ओर विषैले काँटे होते हैं। इस पौधे को काटने या दबाने से एक प्रकार का पीला दूध या रस निकलता है। इसका फूल पीला, कटोरे के आकार का और देखने में सुंदर पर गंधहीन होता है। फूल झड़ जाने पर गुच्छों में फल या बीजकोश लगते हैं जिनमें राई के से काले काले बीज भरे रहते हैं। इन बीजों से एक प्रकार का बहुत तीक्ष्ण तेल निकलता है जो खुजली पर लगाया जाता है। वैद्यक में सत्यानासी कड़वी, दस्तावर, शीतल तथा कृमि रोग, खुजली और विष को दूर करनेवाली मानी गई है।

सत्यानुरक्त—वि० [सं०] सत्य का प्रेमी। सचाई का भक्त [को०]।

सत्यानृत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सच और झूठ का मेल। सच और झूठ। २. वाणिज्य। व्यापार। दूकानदारी। ३. वह जो देखने में सत्य हो किंतु वास्तव में झूठ हो।

सत्यापन—संज्ञा पुं० [सं०] १. असनियत की जाँच। सत्य होने का निश्चय। २. सत्य का पालन अथवा सत्य कथन (को०)। ३. सौदे के दर का निर्धारण या निश्चयन (को०)।

सत्यापना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी सौदे या इकरार का पूरा होना। २. दे० 'सत्यापन' (को०)।

सत्याभिधान—वि० [सं०] सच बोलनेवाला [को०]।

सत्याभिसंध—वि० [सं० सत्याभिसन्ध] वादे का पक्का। जो अपना वचन पूरा करे [को०]।

सत्यालापी—वि० [सं० सत्यालापिन्] दे० 'सत्याभिधान' [को०]।

सत्याश्रम—संज्ञा पुं० [सं०] संसारत्याग। संन्यास [को०]।

सत्याषाढ़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्याषाढी] कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।

सत्येतर—संज्ञा पुं० [सं०] जो सत्य से पृथक् या भिन्न हो। जो सत्य न हो। असत्य [को०]।

सत्योत्कर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. सचाई में श्रेष्ठता या प्रमुखता। २. सच्ची श्रेष्ठता [को०]।

सत्योत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्य बात का स्वीकार। २. अपराध आदि का स्वीकार। इकबाल। (स्मृति)।

सत्योद्य—वि० [सं०] सच बोलनेवाला। सच्चा [को०]।

सत्योपपावन—संज्ञा पुं० [सं०] शरदंडा नदी के पश्चिम तट पर स्थित एक पवित्र फलप्रद वृक्ष। (पुराण)।

सत्रंग—संज्ञा पुं० [सं० सत्रङ्ग] एक प्रकार का पौधा।

सत्र—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्र] १. यज्ञ, हवन, दान आदि। २. एक सोमयाग जो १३ या १०० दिनों में पूरा होता था। ३. परिवेषण। गोपन। ४. वह स्थान जहाँ मनुष्य छिप सकता हो। ५. कोठरी। घर। मकान। ६. धोखा। भ्रांति। ७. धन। ८. तालाब। ९. जंगल। १०. वह स्थान जहाँ असहायों को भोजन

बाँटा जाता है। छेत्र। सदावर्त। जैसे,—अन्न सत्र। ११. विकट स्थान या समय।

विशेष—कौटिल्य ने लिखा है कि रेगिस्तान, संकटमय स्थान, दलदल, पहाड़, नदी, घाटी, ऊँची नीची भूमि, नाव, गौ, शकट, व्यूह, धुंध तथा रात ये सब सत्र कहे जाते हैं।

१२. उदारता। वदान्यता (को०)। १३. सद्‌गुण (को०)। १४. दो बड़े अवकाशों के बीच किसी संस्था का लगातार चलनेवाला कार्यकाल (को०)। १५. घमंड। अभिमान (को०)। १६. छद्म वेश (को०)।

यौ०—सत्रगृह = यज्ञ करने या आश्रय लेने का स्थान। सत्रपरिवेषण = यज्ञ में भोजनदान। सत्रफल = सोमयाग का फल। सत्रफलद = यज्ञ या सत्र का फल देनेवाला। सत्रयाग = सोमयज्ञ। सत्रवसति, सत्रशाला = दे० 'सत्रगृह'। सत्रसद्म = दे० 'सत्रागार'।

सत्रप—वि० [सं०] लाज संकोचवाला। विनयशील। लजालू (को०)।

सत्रह¹—संज्ञा पुं० [हिं० सत्तरह] १. सत्तरह की संख्या। २. पासे के खेल में एक दाँव जिसमें दो छक्के और एक पंजा साथ पड़ते हैं। उ०—ढारि पासा साधु संगति फेरि रसना सारि। दाँव अब के परचो पूरो कुमति पिछली हारि। राखि सत्रह सुनि अठारह चोर पाँचो मारि।—सूर (शब्द०)।

सत्रह²—वि० दे० 'सत्तरह'।

सत्रहीं—संज्ञा पुं० [हिं० सत्तरह] मृत्यु के सत्रहवें दिन होनेवाला कृत्य।

सत्रा—अव्य० [सं० सत्त्रा] सहित। साथ (को०)।

सत्रागार—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्रागार] सत्रशाला। यज्ञशाला (को०)।

सत्राजित—संज्ञा [सं०] एक यादव जिसकी कन्या सत्यभामा श्रीकृष्ण को ब्याही थी।

विशेष—इसने सूर्य की तपस्या करके दिव्य स्यमंतक मणि प्राप्त की थी। उसके खो जाने पर इसने श्रीकृष्ण को चोरी लगाई। जब श्रीकृष्ण ने वह मणि ढूँढ़कर ला दी, तब सत्राजित बहुत लज्जित हुआ और उसने श्रीकृष्ण को अपनी कन्या सत्यभामा ब्याह दी।

सत्राजिती—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्राजित की कन्या सत्यभामा का एक नाम।

सत्रापश्रय—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्रापश्रय] आश्रय या पनाह का स्थान। आश्रय का स्थान (को०)।

सत्रायण—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्रायण] यज्ञादि का वह सिलसिला जो अनवरत चलता रहे (को०)।

सत्राहा—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्राहन्] इंद्र (को०)।

सत्रि—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्रि] १. बहुत यज्ञ करनेवाला। २. हाथी। ३. मेघ। बादल।

सत्री—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्रिन्] १. यज्ञ करनेवाला। २. किसी दूसरे राजा के राज्य में अपने राजा या राज्य की ओर से रहनेवाला राजदूत। एलची। ३. यज्ञ का निरीक्षण करनेवाला पुरोहित। ब्रह्मा (को०)। ४. शिष्य। छात्र (को०)।

सत्रु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शत्रु] दे० 'शत्रु'। उ०—सत्रु न काहू करि गनै मित्र गनै नहिं काहि। तुलसी यह मत संत के बोलै समता माहि।—तुलसी ग्रं०, पृ० १०।

सत्रुघन, सत्रुहन(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० शत्रुघ्न] दे० 'शत्रुघ्न'। उ०—(क) सुनि सत्रुघन मातु कुटिलाई।—मानस, २।१६३। (ख) जाके सुमिरत ते रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा।—मानस, १।१९७। (सत्रुसमन, सत्रुसाल, सत्रुसूदन, सत्रुहा आदि भी इनके नाम प्राप्त होते हैं)।

सत्व—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्व] १. सत्ता। होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। २. सार। तत्व। मूल वस्तु। असलियत। ३. अंतःप्रकृति। खासियत। विशेषता। ४. चित्त की प्रवृत्ति। ५. आत्मतत्व। चैतन्य। चित्तत्व। ६. प्राण। जीव तत्व। ७. सांख्य के अनुसार प्रकृति के तीन गुणों में से एक जो सब में उत्तम है और जिसके लक्षण ज्ञान, शांति, शुद्धता आदि हैं।

विशेष—इस गुण के कारण अच्छे कर्म में प्रवृत्ति, विवेक आदि का होना माना गया है।

८. प्राणी। जीवधारी। ९. गर्भ। हमल। १०. भूत। प्रेत। ११. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। १२. दृढ़ता। धीरता। साहस। शक्ति। दम। १३. मूल तत्व। जैसे—पृथ्वी, वायु, अग्नि आदि (को०)। १४. भद्रता। सद्‌गुण। श्रेष्ठता (को०)। १५. वास्तविकता। सचाई (को०)। १६. बुद्धिमत्ता। अच्छी समझ (को०)। १७. स्वाभाविक गुण या लक्षण (को०)। १८. संज्ञा। नाम (को०)। १९. लिंग शरीर (को०)।

यौ०—सत्वकर्ता = जीवों की सृष्टि करनेवाला। सत्वपति = प्राणियों का स्वामी। सत्वलोक = प्राणिलोक। सत्वसंपन्न = (१) धीरजवाला। (२) जिसमें सत्वगुण हो।

सत्वक—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वक] मृत मनुष्य की जीवात्मा। प्रेत।

सत्वगुण—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वगुण] अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण। साधु और विवेकशील प्रकृति। विशेष दे० 'सत्व'।

सत्वगुणी—वि० [सं० सत्त्वगुणिन्] साधु और विवेकी। उत्तम प्रकृति का।

सत्वतनु—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वतनु] विष्णु का एक नाम (को०)।

सत्वधातु—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वधातु] पशुश्रेणी। पशुमंडल (को०)।

सत्वधाम—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वधाम] विष्णु का एक नाम।

सत्वप्रधान—वि० [सं० सत्त्वप्रधान] जिसकी प्रकृति में सत्वगुण की अधिकता या प्रधानता हो।

सत्वभारत—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वभारत] व्यास एक नाम।

सत्वमेजय—वि० [सं० सत्त्वमेजय] पशुओं, प्राणधारियों, जीवों को कँपानेवाला (को०)।

सत्वयोग—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वयोग] १. गरिमा। माहात्म्य। गौरव। २. सजीवता (को०)।

सत्वर¹—अव्य० [सं०] शीघ्र। जल्द। तुरंत। झटपट।

सत्वर²—वि० तेज। फुर्तीला। गतिशील (को०)।

सत्वलक्षण—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वलक्षण] गर्भद्योतक चिह्न या लक्षण [को०]।

सत्वलक्षणा—वि० स्त्री० [सं० सत्त्वलक्षणा] जिसमें गर्भ के लक्षण हों। गर्भवती। हामिला।

सत्ववती[१]—वि० [सं० सत्त्ववती] १. गर्भवती। २. सत्वगुणवाली।

सत्ववती[२]—संज्ञा स्त्री० एक तांत्रिक देवी। (बौद्ध)।

सत्ववान्—वि० [सं० सत्त्ववत्] [स्त्री० सत्त्ववती] १. प्राणयुक्त। २. दृढ़तायुक्त। दृढ़। ३. धीर। साहसी।

सत्वविप्लव—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वविप्लव] चेतना का अभाव। अचेतनता [को०]।

सत्वविहित—वि० [सं० सत्त्वविहित] १. प्राकृतिक। २. सत्वगुणयुक्त। पुण्यात्मा। धार्मिक [को०]।

सत्वशाली—वि० [सं० सत्त्वशालिन्] [वि० स्त्री० सत्त्वशालिनी] दृढ़तायुक्त। साहसी। धीर। दमवाला।

सत्वशील—वि० [सं० सत्त्वशील] सात्विक प्रकृति का। अच्छी प्रकृति का। सदाचारी। धर्मात्मा।

सत्वसंपन्न—वि० [सं० सत्त्वसम्पन्न] १. सतोगुण से युक्त। २. धीरतायुक्त। शांतचित्त।

सत्वसंप्लव—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वसम्प्लव] १. बल या सामर्थ्य की हानि। २. प्रलय। विश्व का नाश।

सत्वसार—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वसार] १. शक्ति का मूल या सार। २. अत्यत शक्तिशाली पुरुष [को०]।

सत्वस्थ[१]—वि० [सं० सत्त्वस्थ] अपनी प्रकृति में स्थित। २. दृढ़। अविचलित। धीर। ३. सशक्त। ४. प्राणयुक्त। ५. सत्त्वगुण से युक्त (को०)। ६. उत्तम। श्रेष्ठ (को०)।

सत्वस्थ[२]—संज्ञा पुं० योगी [को०]।

सत्वात्मा[१]—वि० [सं० सत्त्वात्मन्] जिसमें सत्व गुण हो [को०]।

सत्वात्मा[२]—संज्ञा पुं० लिंग शरीर [को०]।

सत्वाधिक—वि० [सं० सत्त्वाधिक] १. भला। जिसका स्वभाव अच्छा हो। २. हिम्मती। साहसवाला [को०]।

सत्वोद्रेक—संज्ञा पुं० [सं० सत्त्वोद्रेक] १. उत्तम प्रकृति की अधिकता या उमंग। २. साहस। उमंग। उत्साह।

सत्संग—संज्ञा पुं० [सं० सत्सङ्ग] साधुओं या सज्जनों के साथ उठना बैठना। अच्छा साथ। भली संगत। अच्छी सोहबत।

सत्संगति—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्सङ्गति] दे० 'सत्संग'। उ०—सत्संगति महिमा नहिं गोई।—तुलसी (शब्द०)।

सत्संगी—वि० [सं० सत्सङ्गिन्] [वि० स्त्री० सत्संगिनी] १. सत्संग करनेवाला। अच्छी सोहबत में रहनेवाला। २. मेल जोल रखनेवाला। लोगों के साथ बातचीत आदि का व्यवहार रखनेवाला। जैसे,—वे बड़े सत्संगी आदमी हैं।

सत्संसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] भलेमानुसों का संग। सत्संग [को०]।

सत्सन्निधान—संज्ञा पुं० [सं०] सत्संग [को०]।

सत्समागम—संज्ञा पुं० [सं०] भले आदमियों का संसर्ग।

सत्सहाय[१]—वि० [सं०] जिसके मित्र या सहायक सत्पुरुष हों।

सत्सहाय[२]—संज्ञा पुं० सन्मित्र। अच्छा दोस्त [को०]।

सत्सार[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. चित्रकार। चितेरा। २. कवि। ३. एक प्रकार का पौधा।

सत्सार[२]—वि० जिसका रस अच्छा हो। अच्छे रसवाला [को०]।

सथर पु—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थल] पृथ्वी। भूमि।

सथरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० साथरी] दे० 'साथरी'।

सथिया—संज्ञा पुं० [सं० स्वस्तिक, प्रा० सत्थिअ] १. एक प्रकार का मंगलसूचक या सिद्धिदायक चिह्न जो कलश, दीवार आदि पर बनाते हैं और जो समकोण पर काटती हुई दो रेखाओं के रूप में होता है—卐। स्वस्तिक चिह्न। उ.—द्वार बुहारत अष्ट सिद्धि। कौरेन सथिया चीतत नवनिधि।—सूर (शब्द०)। २. देवता आदि के पदतल का एक चिह्न। ३. फोड़े आदि की चीरफाड़ करनेवाला। जर्राह।

सथूत्कार[१]—वि० [सं०] (व्यक्ति) बोलते समय जिसके मुख से थूक के छींटे उड़ें [को०]।

सथूत्कार[२]—संज्ञा पुं० बातचीत करते समय मुँह से थूक के छींटे निकलना [को०]।

सदंजन—संज्ञा पुं० [सं० सदञ्जन] पीतल से निकलनेवाला एक प्रकार का अंजन।

सदंभ—वि० [सं० सदम्भ] १. दंभयुक्त। घमंडी। गर्वीला। २. सत् अर्थात् स्वच्छ जल से युक्त [को०]।

सदंश—संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्कट। केकड़ा। २. वह जिसका दंश तीक्ष्ण हो [को०]।

सदंशक—संज्ञा पुं० [सं०] केकड़ा।

सदंशवदन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बगला [को०]।

सद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोष्ठी। सभा। जमावड़ा [को०]।

सद[१]—अव्य० [सं० सद्यः] तत्क्षण। तुरंत। तत्काल।

सद[२]—वि० १. ताजा। उ०—सद माखन सातौ दही धरचो रहै मन मंद। खाइ न बिन गोपाल को दुखित जसोदा नंद।—पृ० रा०, २।५५७। २. नया। नवीन। हाल का।

सद[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्त्व] प्रकृति। आदत। टेव। उ०—सदन सदन के फिरन की सद न छुटै हरि राय। रुचै तितै बिहरत फिरौ, कत बिहरत उर आय।—बिहारी (शब्द०)।

सद[४]—संज्ञा पुं० [सं० सदस्] १. सभा। समिति। मंडली। २. एक छोटा मंडप जो यज्ञशाला में प्राचीन वंश के पूर्व बनाया जाता था।

सद[५]—संज्ञा पुं० [अ० सदा (=आवाज)] गड़रियों का एक प्रकार का गीत। (पंजाब)।

सद[६]—वि० [फ़ा०] शत। सौ [को०]।

यौ०—सदआफरी=सौ सौ साधुवाद। सदचाक। सदचिराग। सदया। सदबर्ग। सदशुक्र=(भगवान् को) सौ सौ धन्यवाद।

सद[२]—संज्ञा पुं० [सं०] १. पेड़ का फल। २. एक एकाह यज्ञ [को०]।

सदई(पु)—अव्य० [सं० सदैव] सदैव। सदा। उ०—उथपे थपन उजार बसावन गई बहोर बिरद सदई है।—तुलसी (शब्द०)।

सदक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] भूसीसहित अनाज।

सदक[२]—संज्ञा पुं० [अ० सिद्क़] दे० 'सिदिक'।

सदका—संज्ञा पुं० [अ० सद्क़ह्] १. वह वस्तु जो ईश्वर के नाम पर दी जाय। दान। २ वह वस्तु जो किसी के सिर पर से उतार कर रास्ते में रखी जाय। उतारन। उतारा।

क्रि० प्र०—उतारना।—करना।

यौ०—सदके का कौआ=कुरूप और काला कलूटा आदमी। सदके की गुड़िया=अत्यंत भद्दी और कुरूप औरत।

३. निछावर। बलि।

मुहा०—सदके जाऊँ=बलि जाऊँ। (मुसल०)।

सदक्ष—वि० [सं०] जिसमें अच्छे बुरे का ज्ञान हो। विवेकवाला। [को०]।

सदक्षिण—वि० [सं०] जिसे दक्षिणा या भेंट मिली हो। दक्षिणावाला [को०]।

सदचाक—वि० [फ़ा०] जो बहुत जगह से फटा हो। टुकड़े टुकड़े। तार तार [को०]।

सदचिराग—संज्ञा पुं० [फ़ा० सदचिराग़] दीपाधार जो लकड़ी या प्रस्तर निर्मित हो और जिसपर बहुत दीप जलाए जा सकें।

सदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. रहने का स्थान। घर। मकान। २. विराम। थिराना। स्थिरता। ३. शैथिल्य। थकावट। ४. एक प्रसिद्ध कसाई का नाम जो बड़ा भगवद्भक्त हो गया है। ५. जल (को०)। ६. यज्ञभवन या यज्ञस्थल (को०)। ७. यमालय। यम का आवास (को०)। ८. म्लान होना। क्षीण होना (को०)।

सदना†—क्रि० अ० [सं० सदन (=थिराना)] १. छेद में से रसना। चूना। २. नाव के छेदों में से पानी आना।

सदनि—संज्ञा पुं० [सं०] पानी। जल [को०]।

सदनुग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] सत्पुरुषों पर अनुग्रह। भलेमानुसों पर कृपा करना [को०]।

सदपा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] गोजर। कनखजूरा [को०]।

सदफ—संज्ञा स्त्री० [अ० सदफ़] सीप। शुक्ति [को०]।

यौ०—सदफे सादिक=सच्ची सीपी। वह सीपी जिसमें मोती हो।

सदबर्ग—संज्ञा पुं० [फ़ा०] हजारा गेंदा।

सदमा—संज्ञा पुं० [अ० सद्मह्] १. आघात। धक्का। चोट। २. मानसिक आघात। रंज। दुःख।

क्रि० प्र०—पहुँचना।—लगना।—उठाना।

३. पछतावा। पश्चात्ताप (को०)। ४. पीड़ा। दर्द (को०)। ५. बड़ी हानि। भारी नुकसान।

क्रि० प्र०—उठाना। पहुँचना।

सदय—वि० [सं०] दयायुक्त। दयालु।

सदर[१]—वि० [अ० सद्र] १. खास। प्रधान। मुख्य। जैसे,—सदर अमीन। सदर दरवाजा। सदर मुकाम। २. वक्षस्थल। छाती (को०)।

सदर[२]—संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ कोई बड़ी कचहरी हो या बड़ा हाकिम रहता हो। केंद्रस्थल।

सदर[३]—वि० [सं०] भययुक्त। डरा हुआ।

सदर[४]—संज्ञा पुं० [देश०] सज नाम का वृक्ष। विशेष दे० 'सज'। (बुंदेल०)।

सदर आला—संज्ञा पुं० [अ० सद्र आला] अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे हो। छोटा जज।

सदर दरवाजा—संज्ञा पुं० [अ० सद्र+फ़ा० दरवाजा] खास दरवाजा। सामने का द्वार। फाटक।

सदरनशीन—संज्ञा पुं० [अ० सद्र+फ़ा० नशीन] किसी सभा का सभापति। मीर मजलिस।

सदर बाजार—संज्ञा पुं० [अ० सद्र+फ़ा० बाज़ार] १. बड़ा बाजार। खास बाजार। २. छावनी का बाजार।

सदर बोर्ड—संज्ञा पुं० [अ० सद्र+अं० बोर्ड] माल की सबसे बड़ी अदालत।

सदरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती या बंडी जो और कपड़ों के ऊपर पहनी जाती है। सीनाबंद।

विशेष—इसका चलन अरब में बहुत अधिक है। मुसलमानी मत के साथ इसका प्रचार अफगानिस्तान, तुर्किस्तान और हिंदुस्तान में भी हुआ।

सदर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. असल बात। मुख्य विषय। साध्य विषय। २. धनाढ्य पुरुष।

सदर्थना(पु)—क्रि० स० [सं० सदर्थ या समर्थन] समर्थन करना। पुष्टि करना। तसदीक करना।

सदर्प—क्रि० वि० [सं०] १. दर्पयुक्त। घमंडी। २. दर्पपूर्वक। घमंड के साथ [को०]।

सदश—वि० [सं०] जिसमें पाड़ या किनारा हो। किनारेदार। हाशियेदार।

सदस्—संज्ञा पुं० [सं०] १. रहने का स्थान। मकान। घर। २. सभा। समाज। मंडली। ३. यज्ञशाला में एक छोटा मंडप जो प्राचीन वंश के पूर्व बनाया जाता था। ४. आकाश। व्योम (को०)।

सदसत्[१]—वि० [सं० सत्+असत्] १. सच और झूठ। २. अस्तित्व और अनस्तित्व। ३. भला बुरा। अच्छा और खराब।

सदसत्[२]—संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के होने और न होने का भाव। २. सच्ची और झूठी बात (को०)। २. अच्छाई बुराई।

सदसद्विवेक—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छे और बुरे की पहचान। भले बुरे का ज्ञान।

सदसि[१]—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सदस्'।

सदसि[२]—क्रि० वि० सदस् में । सभा या गोष्ठी में ।

सदस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ करनेवाला । याजक । २. किसी सभा या समाज में संमिलित व्यक्ति । सभासद । मेंबर ।

सदस्यता—संज्ञा स्त्री० [सं० सदस्य+ता (प्रत्य०)] सदस्य होने का भाव [को०] ।

यौ०—सदस्यताशुल्क = सदस्य बनने का चंदा ।

सदहा[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ करनेवाला । याजक । सभासद । किसी सभा या समाज में संमिलित व्यक्ति । मेंबर ।

सदहा[२]—वि० [फ़ा०] सैकड़ों ।

सदहा†[३]—संज्ञा पुं० [देश०] अनाज लादने की बड़ी बैलगाड़ी ।

सदा[१]—अव्य० [सं०] १. नित्य । हमेशा । सर्वदा । २. निरंतर ।

यौ०—सदाकांता = एक नदी । सदाकालवह = सर्वदा गतिशील । सदा प्रवहमान । सदातोया = (१) वह नदी जिसमें निरंतर जल बना रहे । (२) सदानीरा । करतोया नदी । (३) एलापर्णी । सदापरिभूत = एक बोधिसत्व का नाम । सदापर्ण = जिसमें हमेशा पत्ते बने रहें । सदाभ्रम = नित्य भ्रमणशील ।

सदा[२]—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गूँज । प्रतिध्वनि । २. ध्वनि । आवाज । शब्द । ३. पुकार ।

मुहा०—सदा देना या लगाना = फकीर का भीख पाने के लिये पुकारना ।

यौ०—सदाए गैब = आकाशवाणी । सदाए हक = सत्य की आवाज । इन्साफ की बात ।

सदाकत—संज्ञा स्त्री० [अ० सदाक़त] सच्चाई । सत्यता । खरापन ।

यौ०—सदाकतपसंद, सदाकतपरस्त = जिसे सच्चाई पसंद हो । सत्यता पर दृढ़ रहनेवाला । सचाई या सत्यता पर दृढ़ ।

सदाकारी—वि० [सं० सदाकारिन्] जिसका आकार सत् अर्थात् भला हो [को०] ।

सदाकुसुम—संज्ञा पुं० [सं०] धव । धातकी ।

सदागति—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु । पवन । २. वात । (आयुर्वेद) । ३. सूर्य । ४. विभु । ब्रह्म । ५. चरम सुख । निर्वाण । मोक्ष (को०) । ५. वह जो सर्वदा गतिशील रहता हो ।

सदागतिशत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] एरंड । अंडी का पेड़ ।

सदागम—संज्ञा पुं० [सं०] १. सज्जन का आगमन । २. सत् शास्त्र । अच्छा सिद्धांत ।

सदाचरण—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा चाल चलन । सात्विक व्यवहार ।

सदाचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा आचरण । सात्विक व्यवहार । सद्वृत्ति । २. शिष्ट व्यवहार । भलमनसाहत । ३. रीति । रवाज ।

सदाचारी—संज्ञा पुं० [सं० सदाचारिन्] [स्त्री० सदाचारिणी] १. अच्छे आचरणवाला पुरुष । अच्छे चाल चलन का आदमी । सद्वृत्तिशील । २. धर्मात्मा । पुण्यात्मा ।

सदातन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु ।

सदातन[२]—वि० सार्वकालिक । सदा या अनवरत रहनेवाला [को०] ।

सदात्मा—वि० [सं० सदात्मन्] सत् स्वभाव का । नेक । भला [को०] ।

सदादान[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह हाथी जिसे सदा मद बहता हो । २. ऐरावत । ३ गणेश । ४. सदा दान देने की प्रकृति । दानशीलता । ५. गंधद्वीप (को०) ।

सदादान[२]—वि० सर्वदा दान देनेवाला [को०] ।

सदानंद—संज्ञा पुं० [सं० सदानन्द] १. वह जो सदा आनंद में रहे । २. शिव । ३. परमेश्वर । ४. विष्णु । ५. सदा आनंद की स्थिति । सर्वदा रहनेवाला आनंद । ६. वह जो सदा आनंदप्रद हो । सदा आनंद देनेवाला ।

सदानन—वि० [सं०] सुंदर मुखाकृतिवाला [को०] ।

सदानर्त्त[१]—वि० [सं०] जो बराबर नाचता हो ।

सदानर्त[२]—संज्ञा पुं० ममोला । खंजन ।

सदानीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. करतोया नदी । २. सर्वदा प्रवाहित होनेवाली नदी (को०) ।

सदानोपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एलानी । एलापर्णी ।

सदाप[१]—वि० [सं०] सत् अर्थात् स्वच्छ पानीवाला [को०] ।

सदाप(पु)[२]—वि० [सं० सदर्प, प्रा० सदप्प > सदाप] सदर्प । गर्वयुक्त ।

सदापुर—संज्ञा पुं० [सं०] केवटी मोथा । कैवर्त्त मुस्तक ।

सदापुष्प[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. नारिकेल । नारियल । २. आक । सफेद मदार । ३. कुंद का फूल ।

सदापुष्प[२]—वि० सदा पुष्पयुक्त । हमेशा फूलनेवाला [को०] ।

सदापुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आक । २. लाल आक । ३. कपास । ४. मल्लिका । एक प्रकार की चमेली ।

सदाप्रसून[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोहितक वृक्ष । २. आक । मदार । ३. कुंद का पौधा ।

सदाप्रसून[२]—वि० सदा पुष्प युक्त । हमेशा पुष्पित [को०] ।

सदाफर†—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सदाफल] दे० 'सदाफल' । उ०—फरे सदाफर अउर जँभीरी ।—जायसी (शब्द०) ।

सदाफल[१]—वि० [सं०] जो सब दिन फले । सदा फलता रहनेवाला ।

सदाफल[२]—संज्ञा पुं० १. गूलर । ऊमर । २. श्रीफल । बेल । ३. नारियल । ४. कटहल । ५. एक प्रकार का नीबू ।

सदाफला, सदाफली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जपा पुष्प । गुड़हर । देवीफूल । २. एक प्रकार का बैंगन ।

सदाबरत†—संज्ञा पुं० [हिं० सदावर्त] दे० 'सदाबर्त' ।

सदाबर्त—संज्ञा पुं० [सं० सदाव्रत] १. नित्य भूखों और दीनों को भोजन बाँटने की क्रिया या नियम । रोज की खैरात ।

क्रि० प्र०—चलना ।—बँटना ।

२. वह अन्न या भोजन जो नियम से नित्य गरीबों को बाँटा जाय । खैरात ।

क्रि० प्र०—बँटना ।—बाँटना ।

३. नित्य होनेवाला दान ।

सदाबर्ती—संज्ञा पुं० [हिं० सदाबर्त] १. सदावर्त बाँटनेवाला। भूखों को नित्य अन्न बाँटनेवाला। २. बड़ा दानी। बहुत उदार।

सदाबहार[१]—वि० [हिं० सदा + फ़ा० बहार (= बसंत ऋतु, फूल पत्ती का समय)] १. जो सदा फूले। २. जो सदा हरा रहे। जिसका पतझड़ न हो। जिसमें बराबर नए पत्ते निकलते और पुराने झड़ते रहें।

विशेष—वृक्ष दो प्रकार के होते हैं। एक तो पतझड़वाले, अर्थात् जिनकी सब पत्तियाँ शिशिर ऋतु में झड़ जाती और बसंत में सब पत्तियाँ नई निकलती हैं। दूसरे सदाबहार अर्थात् वे जिनके पत्ते झड़ने की नियत ऋतु नहीं होती और जिनमें सदा हरी पत्तियाँ रहती हैं।

सदाबहार[२]—संज्ञा पुं० एक प्रकार के फूल का नाम।

सदाभद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गँभारी का पेड़।

सदाभव—वि० [सं०] हमेशा होनेवाला। निरंतर। अनवरत [को०]।

सदाभव्य—वि० [सं०] जो सर्वदा विद्यमान या सावधान हो [को०]।

सदाभ्रम—वि० [सं०] सर्वदा भ्रमणशील [को०]।

सदामंडलपत्रक—संज्ञा पुं० [सं० सदामण्डलपत्रक] सफेद गदहपूरना। श्वेत पुनर्नवा।

सदामत्त[१]—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के यक्ष।

सदामत्त[२]—वि० १. जिसके गंडस्थल से सदा मदस्राव होता हो (हाथी)। २. सर्वदा मस्त रहनेवाला [को०]।

सदामद[१]—वि० [सं०] १. हमेशा नशे में रहनेवाला। नित्यमत्त। २. हमेशा, मद बहानेवाला (हाथी)। ३. खुशी के मारे जो मतवाला हो गया हो। ४. घमंड से चूर रहनेवाला [को०]।

सदामद[२]—संज्ञा पुं० गणेश।

सदामर्ष—वि० [सं०] जो शांत या धीर न हो। उच्छृंखल। अमर्षयुक्त।

सदामांसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मांसरोहिणी।

सदामुदित—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सर्वदा मुदित रहता हो। २. एक प्रकार की सिद्धि [को०]।

सदायोगी[१]—संज्ञा पुं० [सं० सदायोगिन्] विष्णु।

सदायोगी[२]—वि० सर्वदा योगाभ्यास करनेवाला। जो हमेशा योगाभ्यास करता हो [को०]।

सदार—वि० [सं०] सस्त्रीक। दारायुक्त।

सदारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] सभापतित्व। अध्यक्षता। सदर का पद। उ०—मुहम्मद कुतुब कूँ सदारत दिखाया।—दक्खिनी०, पृ० ७४।

सदारुह—संज्ञा पुं० [सं०] बेल। बिल्व वृक्ष।

सदावरदायक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

सदावर्त, सदावर्ती—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सदाबर्त', 'सदाबर्ती'।

सदाशय—वि० [सं०] जिसका भाव उदार और श्रेष्ठ हो। उच्च विचार का। अच्छी नीयत का। सज्जन। भलामानस।

सदाशयता—संज्ञा स्त्री० [सं० सदाशय + ता (प्रत्य०)] भलमनसाहत। सज्जनता। उ०—जाति जीवन हो निरामय, वह सदाशयता प्रखर दो।—अपरा, पृ० १९२।

सदाशिव—संज्ञा पुं० [सं०] १. सदा कल्याणकारी। सदा कृपालु। २. सदा शुभ और मंगल। ३. महादेव का एक नाम।

सदाश्रित—वि० [सं०] जो सर्वदा दूसरे के आश्रय में रहता हो। परावलंबी [को०]।

सदासुहागिन[१]—वि० स्त्री० [हिं० सदा + सुहागिन] जो सदा सौभाग्यवती रहे। जो कभी पतिहीन न हो।

सदासुहागिन[२]—संज्ञा स्त्री० १. वेश्या। रंडी। (विनोद)। २. सिंदूरपुष्पी का पौधा। ३. एक प्रकार की छोटी चिड़िया। ४. एक प्रकार के मुसलमान फकीर जो स्त्रियों के वेश में घूमते हैं।

सदिच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं० सद् + इच्छा] सद् विचार। अच्छी इच्छा। उ०—इसलिये उनकी सारी सदिच्छा सपना बनकर ही रह जाती है।—इति० आलो०, पृ० ५५।

सदिया—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सादह् (= कोरा)] लाल पक्षी का एक भेद जिसका शरीर भूरे रंग का होता है। बिना चित्ती की मुनियाँ।

सदियाना†—संज्ञा पुं० [फ़ा० शादियानह्] दे० 'शादियाना'। उ०—लागे मंगल होन लगे बाजन सदियाना।—पलटू०, पृ० ८२।

सदी[१]—संज्ञा स्त्री० [अ०; फ़ा०] १. सौ वर्षों का समूह। शताब्दी। २. किसी विशेष सौ वर्ष के बीच का काल। जैसे,—१६वीं सदी। ३. सैकड़ा। जैसे,—५) फी सदी सूद।

सदी[२]—संज्ञा स्त्री० [अ० सद्इ] स्तन। पयोधर। कुच [को०]।

सदीव(पु)—अव्य० [सं० सदैव] दे० 'सदैव'। उ०—मच्छाँरं जल जीव जिम, सबजी तराँ सदीव। अदताराँ धन जीव इम, जस दाताराँ जीव।—बाँकी ग्रं०, भा० ३, पृ० ५०।

सदुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत् उक्ति। अच्छी लगनेवाली बात। भले शब्द [को०]।

सदुद्य—वि० [सं०] सत्य बोलनेवाला [को०]।

सदुपदेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा उपदेश। उत्तम शिक्षा। २. अच्छी सलाह।

सदुपयोग—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु का सत्कार्य में उपयोग। सत्कार्य में लगाना। अच्छे कार्य में प्रयुक्त करना।

सदुर्दिन—संज्ञा पुं० [सं०] मेघाच्छन्न या बादलों से घिरा हुआ दिन [को०]।

सदूर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शार्दूल] शार्दूल। सिंह। उ०—बिरह हस्ति तन सालै घाय करै चित चूर। बेगि आइ पिउ बाजहु गाजहु होइ सदूर।—जायसी (शब्द०)।

सदृक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की मिठाई। (सुश्रुत)।

सदृक्ष—वि० [सं०] दे० 'सदृश'।

सदृश—वि० [सं०] १. जो देखने में एक ही सा हो। एक रूप रंग का। समान। अनुरूप। २. तुल्य। बराबर। ३. उपयुक्त। मुनासिब। योग्य।

यौ०—सदृशक्षम = समान क्षमतावाला । सदृशविनिमय = तुल्य वस्तुओं के ज्ञान में भ्रम । समान वस्तु की पहिचान करने में भ्रम होना । सदृशवृत्ति = समान वृत्ति का । समान आचरण, व्यवहार या जीविकावाला । सदृशस्त्री = समान जाति की पत्नीवाला । सदृशस्पंदन = लगातार या किसी निश्चित समय पर होनेवाला स्पंदन ।

सदृशता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनुरूपता । समानता । तुल्यता ।

सदेविक—वि० [सं०] देवी के साथ । पत्नी के साथ । महिषी के साथ [को०] ।

सदेश[1]—वि० [सं०] १. किसी एक ही देश या स्थान का । २. पड़ोसी । प्रतिवेशी । ३. देशवाला । देशयुक्त । जिसके पास देश हो ।

सदेश[2]—संज्ञा पुं० प्रतिवेश । पड़ोस ।

सदेह—क्रि० वि० [सं०] १. इसी शरीर से । बिना शरीर त्याग किए । जैसे,—त्रिशंकु सदेह स्वर्ग जाना चाहते थे । २. मूर्तिमान । सशरीर । उ०—सब शृंगार सदेह मनो रति मन्मथ मोहै ।—केशव (शब्द०) ।

सदैकरस—वि० [सं०] १. जो सदा एक रस हो । २. सर्वदा । एक आकांक्षा या इच्छायुक्त ।

सदैव—अव्य० [सं०] सदा ही । सर्वदा । हमेशा ।

सदोगत—वि० [सं० सदस् + गत] जो सभा या समिति में उपस्थित हो [को०] ।

सदोगृह—संज्ञा पुं० [सं० सदस् + गृह] सभाभवन । सभाकक्ष । सभागृह [को०] ।

सदोष—वि० [सं०] १. दोषयुक्त । जिसमें ऐब हो । २. अपराधी । दोषी । ३. जिसपर आपत्ति या एतराज किया जा सके (को०) । ४. रात्रि से संबद्ध । रात्रियुक्त ।

सदोषक—वि० [सं०] दोषयुक्त । जिसमें ऐब हो [को०] ।

सद्गति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्तम गति । अच्छी अवस्था । भली हालत । २. मरण के उपरांत उत्तम लोक की प्राप्ति । ३. अच्छी चाल चलन ।

सद्गव—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम कोटि का साँड़ [को०] ।

सद्गुण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा गुण । अच्छी सिफत । सज्जनता । उ०—जिमि सद्गुण सज्जन पहँ आवा ।—तुलसी (शब्द०) ।

सद्गुण[2]—वि० सत् गुणों से युक्त । सज्जनता युक्त [को०] ।

सद्गुणी—संज्ञा पुं० [सं० सद्गुणिन्] अच्छे गुणवाला ।

सद्गुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा गुरु । उत्तम शिक्षक या आचार्य । २. वह धर्मशिक्षक या मंत्रदाता जिसके उपदेश से संसार के बंधनों से छुटकारा और ईश्वर की प्राप्ति हो ।

सद्ग्रंथ—संज्ञा पुं० [सं० सत् + ग्रन्थ] अच्छा ग्रंथ । सन्मार्ग बतानेवाला पुस्तक या ग्रंथ । उ०—जिमि पाषंड विवाद ते लुप्त होहिं सद्ग्रंथ ।—तुलसी (शब्द०) ।

सद्द(पु)†[1]—संज्ञा पुं० [सं० शब्द, प्रा० सद्द] १. शब्द । ध्वनि ।

सद्द[2]—अव्य० [सं० सद्य] तुरंत । फौरन । तत्काल ।

सद्दी†—संज्ञा स्त्री० [हिं०] सादा । सुफेद । (पतंगसाजी)

सद्धन—संज्ञा पुं० [सं०] सत्कार्य द्वारा उपार्जित द्रव्य । अच्छी कमाई का धन [को०] ।

सद्धर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम धर्म (बौद्ध या जैन धर्म के लिये प्रयुक्त) । २. अच्छा नियम या न्याय [को०] ।

सद्धी—वि० [सं० सत् + धी] सद्बुद्धि युक्त । बुद्धिमान् [को०] ।

सद्ब्राह्मण—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम कोटि का या सात्विक ब्राह्मण । कुलीन ब्राह्मण [को०] ।

सद्भाग्य—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी किस्मत । उत्तम भाग्य [को०] ।

सद्भाव—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा भाव । प्रेम और हित का भाव । शुभचिंतना की वृत्ति । २. मेलजोल । मैत्री । ३. निष्कपट भाव । सच्चा भाव । अच्छी नीयत । ४. होने का भाव । अस्तित्व । हस्ती । ५. वस्तुस्थिति । वास्तविकता (को०) । ६. भद्रता । साधुता (को०) । ७. प्राप्ति (को०) ।

सद्भावश्री—संज्ञा पुं० [सं०] १. सद्भाव की श्री, शोभा या गौरव । २. एक देवी का नाम (को०) ।

सद्भूत—वि० [सं०] १. जो अस्तित्व या सत्तायुक्त हो । असद्भूत का विपरीतार्थक । २. जो वस्तुतः सत्य या सत् हो ।

सद्भृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] भला नौकर । उत्तम सेवक ।

सद्म—संज्ञा पुं० [सं० सद्मन्] १. घर । मकान । रहने का स्थान । २. बैठनेवाला । ३. दर्शक । ४. संग्राम । युद्ध । ५. पृथ्वी और आकाश । ६. रुकने या ठहरने की जगह (को०) । ७. देवस्थान । मंदिर । देवालय (को०) । ८. वेदी (को०) । ९. जल (को०) । १०. पीठ । आसन (को०) ।

सद्मा—वि० [सं० सद्मन्] १. बैठनेवाला । २. निवास करने या रहनेवाला [को०] ।

सद्मिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सद्म] १. हवेली । बड़ा मकान । २. प्रासाद । महल ।

सद्य[1]—अव्य० [सं०] १. आज ही । २. इसी समय । अभी । ३. तुरंत । शीघ्र । झट । तत्काल । ४. कुछ ही समय पूर्व (को०) ।

सद्य[2]—संज्ञा पुं० शिव का एक नाम । सद्योजात ।

सद्यः—अव्य० [सं० सद्यस्] दे० 'सद्य' ।

यौ०—सद्यःकृत = तुरंत किया हुआ । सद्यःकृत्त = जो तत्काल काटा गया हो । सद्यःकृत्तोत्त = जो अभी काता और बुना गया हो । सद्यःक्रीत = (१) एक एकाह यज्ञ । (२) जो तुरंत खरीदा गया हो । सद्यःपर्युषित = जो एक दिन पूर्व का हो । बासी । सद्यःपाती = शीघ्र गिरनेवाला । सद्यःप्रक्षालक = वह जो तुरंत काम में लाने के हेतु अन्न आदि को साफ करे । सद्यःप्रज्ञाकर = तुरंत प्रज्ञा या बुद्धि देनेवाला । शीघ्र ज्ञान देनेवाला । सद्यःप्राणकर = तुरंत शक्ति प्रदान करनेवाला । सद्यः प्राणहर = शीघ्र प्राण या शक्ति का नाश करनेवाला । सद्यःफल = शीघ्र फलदायक । सद्यःशक्तिकर = तुरंत शक्ति देनेवाला । सद्यःशुद्धि = दे० 'सद्यःशौच' । सद्यःशोथ = तुरंत

शोथ या सूजन करनेवाला। सद्यःशौच = तुरंत की हुई शुद्धि या शुचिता। सद्यःश्राद्धी = जिसने अभी अभी श्राद्ध कर्म किया हो। सद्यःस्नात = जिसने अभी अभी स्नान किया हो। सद्यःस्नेहन = शीघ्रस्नेह युक्त या स्निग्ध करना।

सद्यःपाक[1]—वि० [सं०] जिसका फल तुरंत मिले। जिसके परिणाम में विलंब न हो।

सद्यापाक[2]—संज्ञा पुं० रात के चौथे पहर का स्वप्न (जो लोगों के विश्वास के अनुसार ठीक घटा करता है)।

सद्यःप्रसूत—वि० [सं०] तुरंत का उत्पन्न।

सद्यःप्रसूता—वि० स्त्री० [सं०] जिसे अभी बच्चा हुआ हो।

सद्यःशोथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपिकच्छु। केवाँच।

विशेष—केवाँच छू जाने से तुरंत खुजली और सूजन होती है।

सद्यश्छिन्न—वि० [सं०] जो तुरंत काटा गया हो। अभी अभी काटकर छिन्न किया हुआ।

सद्यस्क, सद्यस्तन—वि० [सं०] १. नवीन। ताजा। टटका। २. उसी समय का [को०]।

सद्युक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छी युक्ति या तरकीब। भला तरीका। भली युक्ति [को०]।

सद्योजात[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सद्योजाता] तुरंत का उत्पन्न।

सद्योजात[2]—संज्ञा पुं० १. शिव का एक स्वरूप या मूर्ति। २. तुरंत का उत्पन्न बछड़ा।

सद्योबल—वि० [सं०] शीघ्र शक्ति देनेवाला।

यौ०—सद्योबलकर = दे० 'सद्योबल'।

सद्योभावी[1]—वि० [सं० सद्योभाविन्] तुरंत का उत्पन्न। सद्योजात।

सद्योभावी[2]—संज्ञा पुं० तुरंत का उत्पन्न बछड़ा [को०]।

सद्योमन्यु—वि० [सं०] जिससे तुरंत क्रोध उत्पन्न हो। शीघ्र क्रोध पैदा करनेवाला [को०]।

सद्योऽमृत—वि० [सं० सद्यस् + अमृत] तुरंत अमृत के समान फलदायक।

सद्योमृत—वि० [सं०] तत्काल का मरा हुआ [को०]।

सद्योव्रण—संज्ञा पुं० [सं०] वह घाव जो तुरत लगा हो। अभी अभी लगी चोट। ताजा घाव [को०]।

सद्योहत—वि० [सं०] जो तुरंत या अभी अभी मारा गया हो।

सद्र—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सदर'।

सद्रव्य—वि० [सं० सद्द्रव्य] १. स्वर्णाभ। स्वर्णिम। सुनहला। २. द्रव्ययुक्त। धनयुक्त।

सद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेष। मेढ़ा। २. पहाड़। ३. हाथी [को०]।

सद्रु—वि० [सं०] १. आराम करने या बैठनेवाला। २. गमनोद्यत। जानेवाला [को०]।

सद्वंद्व—वि० [सं० सद्वन्द्व] संघर्षप्रिय। झगड़ा करनेवाला [को०]।

सद्वंश—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम जाति का बाँस। २. अच्छा कुल या खानदान [को०]।

यौ०—सद्वंशजात = सत्कुलोत्पन्न। खानदानी।

सद्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुलस्त्य की कन्या और अग्नि की स्त्री।

सद्वत्सल—वि० [सं०] सत्पुरुषों के प्रति कृपालु या अनुग्रहयुक्त [को०]।

सद्वसथ—संज्ञा पुं० [सं०] गाँव। ग्राम [को०]।

सद्वस्तु—संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्तु या कथानक जो सत् एवम् रोचक हो। २. सत्कार्य। अच्छा काम। ३. सत् पदार्थ या वस्तु [को०]।

सद्वाजी—संज्ञा पुं० [सं० सद्वाजिन्] शुभ लक्षणोंवाला अश्व जो सवारी के लिये उत्तम हो [को०]।

सद्वादिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सद्वादित्व' [को०]।

सद्वादित्व—संज्ञा पुं० [सं०] सद्वादी होने का भाव।

सद्वादी—वि० [सं० सद्वादिन्] [वि० स्त्री० सद्वादिनी] सच बोलनेवाला। सत्यवादी [को०]।

सद्वार्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुसमाचार। शुभ सूचना। अच्छी खबर। २. वार्तालाप जो शोभन हो। अच्छी बात। भली बात [को०]।

सद्विगर्हित—वि० [सं०] जो सज्जनों द्वारा विगर्हित हो। सत्पुरुषों द्वारा निंदित [को०]।

सद्विद्य—वि० [सं०] पूर्ण शिक्षाप्राप्त। जिसने अच्छी और पूरी शिक्षा प्राप्त की हो [को०]।

सद्वृत्त[1]—वि० [सं०] १. सदाचारी। शिष्ट। २. सुंदर वर्तुलाकार। सुंदर घेरेदार। जिसका घेरा सुंदर और वर्तुल हो। जैसे,—स्तनमंडल का।

सद्वृत्त[2]—संज्ञा पुं० १. शोभन आचार। सदाचार। २. दोषरहित वृत्त या वर्तुल आकार।

सद्वृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छा चालचलन। उत्तम व्यवहार।

सधन[1]—वि० [सं०] १ धनयुक्त। २. धनी। धनवान् [को०]।

सधन[2]—संज्ञा पुं० वह धन जो सामान्य या संमिलित हो।

सधना—क्रि० अ० [हिं० साधना] १. सिद्ध होना। पूरा होना। सरना। काम होना। जैसे,—काम सधना। २. काम चलना। मतलब निकलना। ३. अभ्यस्त होना। हाथ बैठना। मँजना। मश्क होना। जैसे,—अभी हाथ सधा नहीं है, इसी से देर लगती है। ४. प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल होना। गौं पर चढ़ना। जैसे,—बिना कुछ रुपया दिए वह आदमी नहीं सधेगा। ५. लक्ष्य ठीक होना। निशाना ठीक होना। ६. घोड़े आदि का शिक्षित होना। निकलना। ७. सँभलना। ८. समाप्त होना। खत्म होना। खर्च होना। ९. ठीक नपना। नापा जाना। जैसे,—अँगरखा सधना।

सधर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० अधर का अनु०] ऊपर का ओठ। ओष्ठ।

सधर्म, सधर्मक—वि० [सं०] १. समान गुण, धर्म, स्वभाव या क्रियावाला। एक ही प्रकार का। २. तुल्य। समान। ३. समान संप्रदाय या जाति का (को०)। ४. समान कर्तव्योंवाला (को०)।

यौ०—सधर्मचारिणी = पत्नी। भार्या।

सधर्मा—वि० [सं० सधर्मन्] समानधर्मा। समान गुण एवं धर्मवाला। दे० 'सधर्म' [को०]।

सधर्मिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सधर्मचारिणी। पत्नी। भार्या [को०]।

सधर्मी—वि० [सं० सधर्मिन्] [स्त्री० सधर्मिणी] समानधर्मा। दे० 'सधर्मा' [को०]।

सधवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। जो विधवा न हो। सुहागिन। सौभाग्यवती।

सधाना—क्रि० स० [हिं० सधना का प्रेर० रूप] साधने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को साधने में प्रवृत्त करना।

सधावर—संज्ञा पुं० [हिं० सधवा या सं० सप्त, प्रा० सद्ध? अथवा देशज] वह उपहार जो गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातवें महीने दिया जाता है।

सधि¹—संज्ञा पुं० [सं०] पावक। अग्नि [को०]।

सधि²—संज्ञा पुं० [सं० सधिस्] साँड़। वृषभ [को०]।

सधी—वि० [सं०] धी अर्थात् बुद्धियुक्त। बुद्धिमान् [को०]।

सधूम—वि० [सं०] धूँए से आच्छादित। धूमयुक्त [को०]।

सधूमक—वि० [सं०] १. धूम्रयुक्त। २. धूँए जैसा [को०]।

सधूमवर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा।

सधूम्र—वि० [सं०] १. धुँधला। २. धूँए से आच्छादित। ३. धूम्र वर्ण का। काला। श्यामवर्ण का [को०]।

यौ०—सधूम्रवर्णा = अग्नि की एक जिह्वा। सधूमवर्णा।

सधोर†—संज्ञा पुं० [हिं० सधावर] दे० 'सधावर'।

सधौर†—संज्ञा पुं० [हिं० सधावर] दे० 'सधावर'।

सध्रीच—संज्ञा पुं० [सं० सध्र्यञ्च] [स्त्री० सध्रीची (= पत्नी। सखी)] पति। सखा। स्वामी [को०]।

सध्रीची—संज्ञा स्त्री० [सं० सध्रीचीन (= समान उद्देश्यवाला)] सखी (डिं०)।

सध्रीचीन—वि० [सं०] [स्त्री० सध्रीचीना] १. साथ साथ रहनेवाला। साथी। २. समान उद्देश्यवाला [को०]।

सध्वंस—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'कण्व'; 'काण्व'।

सनंका†—संज्ञा पुं० [अनु० सन् सन्] सन्नाटा। स्तब्धता। नीरवता।

सनंद—संज्ञा पुं० [सं० सनन्द] दे० 'सनंदन'।

सनंदन—संज्ञा पुं० [सं० सनन्दन] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक मानसपुत्र।

विशेष—ये कपिल के भी पूर्व सांख्य मत के प्रवर्तक कहे गए हैं।

यौ०—सनक सनंदन।

सन्—संज्ञा पुं० [अ०] १. वर्ष। साल। संवत्सर। २. कोई विशेष वर्ष। संवत्। जैसे,—सन् इसवी, सन् हिजरी।

सन¹—संज्ञा पुं० [सं० शण] बोया जानेवाला एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशे से मजबूत रस्सियाँ आदि बनती हैं।

विशेष—यह तीन साढ़े तीन हाथ ऊँचा होता है और इसका कांड सीधी छड़ी की तरह दूर तक ऊपर जाता है। फूल पीले रंग के होते हैं। कुआरी फसल के साथ यह खेतों में बोया जाता है और भादों कुआर में तैयार होता है। रेशेदार छिलका अलग करने के लिये इसके डंठल पानी में डालकर सड़ाए जाते हैं।

सन²†—प्रत्य० [सं० सुन्तो या सङ्ग] अवधी में करणकारक का चिह्न। से। साथ।

सन³—संज्ञा स्त्री० [अनु०] वेग से निकल जाने का शब्द। जैसे,—तीर सन से निकल गया।

सन⁴—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक मानसपुत्र। २. हाथी का कान फड़फड़ाना (को०)। ३. समर्पण। भेंट (को०)। ४. भोजन। आहार (को०)। ५ लाभ। प्राप्ति (को०)। ६. घंटापाटलि वृक्ष।

सन⁵—वि० [अनु० सुन] १. सन्नाटे में आया हुआ। स्तब्ध। ठक। २. मौन। चुप।

मुहा०—जी सन होना = चित्त स्तब्ध होना। घबरा जाना।

सनई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सन] छोटी जाति का सन।

सनक¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्क (= खटका)] १. किसी बात की धुन। मन की झोंक। वेग के साथ मन की प्रवृत्ति।

मुहा०—सनक चढ़ना या सवार होना = धुन होना।

२. उन्माद की सी वृत्ति। खब्त। जुनून।

मुहा०—सनक आना = पागल होना। खब्ती होना। सनक जाना = पागल होना। सनकना। सनक लेना = पागलों का सा काम करना।

सनक²—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

विशेष—ये परम ज्ञानी और विष्णु के सभासद माने गए हैं। शेष के नाम हैं—सन, सनत्कुमार और सनंदन।

सनकना¹—क्रि० अ० [हिं० सनक + ना (प्रत्य०)] पागल हो जाना। पगलाना। झक्की हो जाना।

सनकना²—क्रि० अ० [अनु० सनसन] वेग से हवा में जाना या फेंका जाना। जैसे,—तीर सनकना, गोले सनकना।

सनकाना—क्रि० स० [हिं० सनकना का प्रेर०] किसी को सनकने में प्रवृत्त करना।

सनकारना†—क्रि० स० [हिं० सैन + करना] १. संकेत करना। इशारा करना। २. इशारे से बुलाना। ३. किसी काम के लिये इशारा करना। उ०—तुलसी सभीतपाल सुमिरे कृपालु राम समय सुकरुना सराहि सनकार दी।—तुलसी (शब्द०)।

संयो० क्रि०—देना।

सनकियाना¹—क्रि० स० [सं० सङ्केतन, हिं० सन] इशारा करना। संकेत करना।

सनकियाना²—क्रि० अ० [हिं० सनक] दे० 'सनकना'।

सनकियाना³—क्रि० स० दे० 'सनकाना'।

सनकुरंगी—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बड़ा पेड़।

विशेष—इसके हीर की लकड़ी बहुत मजबूत और स्याही लिए लाल होती है। इसकी कुर्सियाँ आदि बनती हैं। यह वृक्ष तिनेवली और ट्रावनकोर में अधिक पाया जाता है।

सनट्टा—संज्ञा पुं० [देश०] विलायती मेंहदी नाम का पौधा जो बागों में बाढ़ के रूप में लगाया जाता है। विशेष दे० 'विलायती मेंहदी'।

सनत्—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

सनत्कुमार—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक। वैधात्र।

विशेष—ये सबसे पहले प्रजापति कहे गए हैं।

२. बारह सार्वभौमों या चक्रवर्तियों में से एक। (जैन)। ३. जैनों के अनुसार तीसरे स्वर्ग का नाम। ४. वह संत जिसकी अवस्था हमेशा एक सी रहे। सर्वदा बाल्य या युवावस्था में रहनेवाला तपस्वी (को०)।

सनत्सुजात—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में से एक मानसपुत्र।

सनत्ता—संज्ञा पुं० [हिं० सन] वह वृक्ष जिसपर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। जैसे,—शहतूत, बेर।

सनद—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तकियागाह। आश्रय। सहारा। २. भरोसा करने की वस्तु। ३. प्रमाण। सबूत। दलील। ४ प्रमाणपत्र। सर्टिफिकेट। ५. आदर्श। नमूना। (को०)। ६. उदाहरण। मिसाल (को०)।

सनदयाफ्ता—वि० [अ० सनद + फ़ा० याफ़्तह्] १. जिसे किसी बात की सनद मिली हो। प्रमाणपत्र प्राप्त। २. किसी परीक्षा में उत्तीर्ण।

सनदी[१]—वि० [अ० सनद] प्रमाणयुक्त। प्रामाणिक।

सनदी(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० हालचाल। वृत्तांत। समाचार।

सनना—क्रि० अ० [सं० सन्धम् (= पिघल कर मिलना)] १. जल के योग से किसी चूर्ण के कणों का एक में मिलना या लगना। गीला होकर लेई के रूप में मिलना। जैसे,—आटा सनना। २. गीली वस्तु के साथ मिलना। आप्लावित होना। ओतप्रोत होना। जैसे,—कपड़ा कीचड़ में सन गया। ३. लिप्त होना। पगना। एक में मिलना। लीन होना। उ०—बोलत बैन सनेह सने।—सूर (शब्द०)।

संयो० क्रि०—जाना।

सननी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सनना] पानी में भिगाया हुआ भूसा या सूखा चारा जो चौपायों को दिया जाता है। सानी।

सनमंध(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सम्बन्ध] दे० 'संबंध'। उ०—मात पिता जोर्‌यौ सनमंधा। कै कछु आपुहि कीयौ धंधा।—सुंदर ग्रं०, भा० १, पृ० ३२३।

सनम—संज्ञा पुं० [अ०] १. बुत। प्रतिमा। मूर्ति (को०)। २. प्रिय। प्रियतम। प्यारा।

यौ०—सनमकदा, सनमखाना = बुतखाना। मंदिर। सनमपरस्त = बुतपरस्त। मूर्तिपूजक। सनमपरस्ती = बुतपरस्ती। मूर्तिपूजा।

सनमान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सम्मान] दे० 'सम्मान'। उ०—केहि करनी जन जानि कै सनमान किया रे। केहि अघ अवगुन आपनो करि डारि दिया रे।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४७१।

सनमानना(पु)—क्रि० स० [सं० सम्मान + हिं० ना (प्रत्य०)] खातिर करना। आदर करना। सत्कार करना। उ०—नृप मुनि आगे आइ पूजि सनमानेउ।—तुलसी (शब्द०)।

सनमुख(पु)—अव्य० [सं० सम्मुख] दे० 'सम्मुख'। उ०—सनमुख आएउ दधि अरु मीना। कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना।—मानस, १।३०३।

सनय—वि० [सं०] १. प्राचीन। पुराना। २. नीतियुक्त (को०)।

सनसन—संज्ञा पुं० [अनु०] दे० 'सनसनाहट'।

सनसनाना—क्रि० अ० [अनु० सन सन] १. हवा में झोंके से निकलने या जाने का शब्द होना। २. खौलते हुए पानी का शब्द होना। ३. हवा बहने का शब्द होना।

सनसनाहट—संज्ञा पुं० [हिं० सनसनाना] १. हवा बहने का शब्द। २. हवा में किसी वस्तु के वेग से निकलने का शब्द। ३. खौलते हुए पानी का शब्द। ४. सनसनी।

सनसनी—संज्ञा स्त्री० [अनु० सन सन] १. संवेदन सूत्रों में एक प्रकार का स्पंदन। झनझनाहट। झुनझुनी। जैसे,—दवा पीते ही शरीर में सनसनी सी मालूम हुई। २. अत्यंत भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता। ठक रह जाने का भाव। ३. उद्वेग। घबराहट। खलबली। क्षोभ।

क्रि० प्र०—फैलाना।

४. दे० 'सनसनाहट'। ५. सन्नाटा। नीरवता।

सनसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] शण सूत्र। सन की डोरी या रस्सी (को०)।

सनहकी—संज्ञा स्त्री० [अ० सनहक] मिट्टी का एक बरतन जो बहुधा मुसलमान काम में लाते हैं।

सनहाना—संज्ञा पुं० [देश०] वह नाँद या बड़ा बरतन जिसमें भरे हुए खटाई मिले जल में धोने के पूर्व बरतन फूलने के लिये डाले जाते हैं।

सना[१]—अव्य० [सं०] हमेशा। सर्वदा। नित्य (को०)।

सना[२]—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. स्तुति। स्तवन। वंदना। २. तारीफ। प्रशंसा। श्लाघा (को०)।

सना[३]—संज्ञा पुं० [अ० सनह्] वत्सर। वर्ष। सन् (को०)।

सना[४]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दे० 'सनाय'।

सनाढ्य—संज्ञा पुं० [सं० सन (= दक्षिणा) + आढ्य (= संपन्न)] ब्राह्मणों की एक शाखा जो गौड़ों के अंतर्गत कही जाती है।

सनात्—अव्य० [सं०] सर्वदा। हमेशा (को०)।

सनातन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल। अत्यंत पुराना समय। अनादि काल। जैसे,—यह बात सनातन से चली आती है। २. प्राचीन परंपरा। बहुत दिनों से चला आता हुआ क्रम। ३. ब्रह्मा। ४. विष्णु। ५. शिव (को०)। ६. वह जिसे सब श्राद्धों

में भोजन कराना कर्तव्य हो। ७. ब्रह्मा के एक मानसपुत्र। ८. एक प्राचीन ऋषि (को०)।

सनातन[२]—वि० १. अत्यंत प्राचीन। बहुत पुराना। जिसके आदि का पता न हो। अनादि काल का। २. जो बहुत दिनों से चला आता हो। परंपरागत। जैसे,—सनातन रीति, सनातन धर्म। ३. नित्य। सदा रहनेवाला। शाश्वत। ४. दृढ़। निश्चल। अचल (को०)।

सनातनतम—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम (को०)।

सनातनधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन धर्म। २. परंपरागत धर्म। ३. वर्तमान हिंदू धर्म का वह स्वरूप जो परंपरा से चला आता हुआ माना जाता है और जिसमें पुराण, तंत्र, बहुदेवोपासना, प्रतिमापूजन, तीर्थ माहात्म्य आदि सब समान रूप से माननीय हैं। साधारण जनता के बीच प्रचलित हिंदू धर्म।

सनातनपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु भगवान्। उ०—पुरुष सनातन की बधू क्यों न चंचला होय।—रहीम (शब्द०)।

सनातनी[१]—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सनातन + ई (प्रत्य०)] १. जो बहुत दिनों से चला आता हो। जिसकी परंपरा बहुत पुरानी हो। २. सनातन धर्म का अनुयायी।

सनातनी[२]—स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. दुर्गा। ३. पार्वती। ४. सरस्वती (को०)।

सनाथ—वि० [सं०] [स्त्री० सनाथा] १. जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो। जिसके ऊपर कोई मददगार या सरपरस्त हो। उ०—हौं सनाथ ह्वै हौं सही जौ लघुतहि न भितैहौ।—तुलसी (शब्द०)। २. प्रभु या पतियुक्त। ३. कब्जा किया हुआ। अधिकृत (को०)। ४. संपन्न। सहित। युक्त (को०)। ५. जो जनाकीर्ण हो। जैसे, सभा आदि (को०)। ६. कृतार्थ। कृतकृत्य। उ०—प्राइ रामपद नावहिं माथा। निरखि वदनु सब होहि सनाथा।—मानस, ४।२२। ७. सफल।

मुहा०—सनाथ करना = शरण में लेना। आश्रय देना। सहायक होना।

सनाथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। पतियुक्ता स्त्री। सधवा स्त्री। सपतिका नारी (को०)।

सनाभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहोदर या सगा भाई। २. नजदीकी रिश्तेदार। सगा संबंधी (को०)।

सनाभि[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहोदर भाई। २. सन्निकट संबंधी जो सात पीढ़ी के अंदर हो (को०)। ३. संबंधी। रिश्तेदार (को०)। ४. एक ही पूर्वज से उत्पन्न पुरुष। सपिंड पुरुष।

सनाभि[२]—वि० १. समान केंद्र से संपृक्त या जुड़ा हुआ। जैसे,—रथचक्र का आरा। २. नाभियुक्त। ३. सदृश। तुल्य। समान। ४. सगा या सहोदर। ५. एक पूर्वज से उत्पन्न। सपिंड (को०)।

सनाभ्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही कुल का पुरुष। सात पीढ़ियों के भीतर एक ही वंश का मनुष्य। सपिंड व्यक्ति।

सनाम, सनामक—वि० [सं०] एक ही या समान नाम का (को०)।

सनामा—वि० [सं० सनामन्] [वि० स्त्री० सनाम्नी] दे० 'सनाम', 'सनामक' (को०)।

सनाय—संज्ञा स्त्री० [अ० सना] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती हैं। स्वर्णपत्री। सोनामुखी।

विशेष—इस पौधे की अधिकतर जातियाँ अरब, मिस्र, यूनान, इटली आदि पश्चिम के देशों में होती हैं। केवल एक जाति का पौधा भारतवर्ष के सिंध, पंजाब, मदरास आदि प्रांतों में थोड़ा बहुत होता है। इसकी पत्तियाँ इमली की तरह एक सींके के दोनों ओर लगती हैं। एक सींके में ५ से ८ जोड़े तक पत्तियाँ लगती हैं जो देखने में पीलापन लिए हरे रंग की होती हैं। इसमें चिपटी लंबी फलियाँ लगती हैं जो सिरे पर गोल होती हैं। इसकी पत्तियों का जुलाब हकीम और वैद्य दोनों साधारणतः दिया करते हैं। इसकी फलियों में भी रेचन गुण होता है, पर पत्तियों से कम। वैद्यक में सनाय रेचक तथा मंदाग्नि, विषम ज्वर, अजीर्ण, प्लीहा, यकृत्, पांडु रोग आदि को दूर करनेवाली कही गई है।

सनाल—वि० [सं०] नाल या डंठल से युक्त। जैसे,—सनाल कमल। उ०—सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला।—मानस, १।२६४।

सनाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो स्त्रियों की दलाली करती हो। कुटनी। दूती (को०)।

सनासन—संज्ञा पुं० [हिं० सनसन] दे० 'सनसन'।

सनाह पु—संज्ञा पुं० [सं० सन्नाह] कवच। बकतर। उ०—उठि उठि पहिरि सनाह अभागे। जहँ तहँ गाल बजावन लागे।—तुलसी (शब्द०)।

सनि पु[१]—संज्ञा पुं० [सं० शनि] दे० 'शनि'।

सनि[२]—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं०] १. दान। भेंट। २. अर्चन। पूजन ४. विनय। निवेदन। ५. दिशा (को०)।

यौ०—सनिकाम = कुछ पाने के लिये इच्छुक। सनिबन्ध = भिक्षा या याचना से प्राप्त।

सनिकार—वि० [सं०] निकारयुक्त। अपमानित। तिरस्कृत। अपमानजनक (को०)।

सनिग्रह—वि० [सं०] दस्ता या मूठ से युक्त (को०)।

सनित[१]—वि० [हिं० सनना] मिश्रित। सना या साना हुआ। मिला हुआ (को०)।

सनित[२]—वि० [सं०] १. अंगीकृत। स्वीकृत। २. जो प्राप्त हो। पाया हुआ। लब्ध (को०)।

सनिद्र—वि० [सं०] सुप्त। निद्राभिभूत (को०)।

सनियम—वि० [सं०] १. नियम, धर्मानुष्ठान से युक्त। नियमवाला। २. नियमित। नियमपूर्वक (को०)।

सनिया†—संज्ञा पुं० [सं० शण] रेशमी धोती या वस्त्र।

सनिर्घृण—वि० [सं०] जिसमें दया न हो। निष्ठुर (को०)।

सनिर्विशेष—वि० [सं०] निरपेक्ष। उदासीन (को०)।

सनिर्वेद—वि० [सं०] अन्यमनस्क। निर्वेदयुक्त। खिन्न (को०)।

सनिष्ठिव, सनिष्ठीव, सनिष्ठेव[१]—वि० [सं०] जिसमें थूक मिला हो।

सनिष्ठिव, सनिष्ठीव, सनिष्ठेव[२]--संज्ञा पुं० वह शब्द या कथन जिसके उच्चारण में मुँह से थूक के छींटें उड़ते हों।

सनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आदरयुक्त प्रार्थना या निवेदन। २. दिशा। ३. गौरी का एक नाम (को०)। ४. हाथी का कान फटफटाना। ५. कांति। दीप्ति।

सनीचर--संज्ञा पुं० [सं० शनैश्चर] दे० 'शनैश्चर'।

सनीचरी--संज्ञा पुं० [हिं० सनीचर+ई (प्रत्य०)] शनि की दशा, जिसमें दुःख, व्याधि आदि की अधिकता होती है।

मुहा०--मीन की सनीचरी = मीन राशि पर शनि की स्थिति की दशा जिसका फल राजा और प्रजा दोनों का नाश माना जाता है। उ०--एक तौ कराल कलिकाल सूल मूल ता में कोढ़ में की खाज सी सनीचरी है मीन की।--तुलसी (शब्द०)।

सनीड़[१]--अव्य० [सं० सनीड] १. पड़ोस में। बगल में। २. समीप। निकट।

सनीड[२]--संज्ञा पुं० नैकट्य। प्रतिवेशिता। समीपता [को०]।

सनीड़[३]--वि० १. पड़ोसी। बगल का। २. पास का। समीप का। ३. एक ही नीड़ में रहनेवाला (को०)।

सनील--वि० [सं०] दे० 'सनीड़'।

सनेमि--वि० [सं०] १. पूर्ण। पूरा। २. नेमियुक्त। परिधियुक्त। जिसमें मंडल हो [को०]।

सनेस, सनेसा†--संज्ञा पुं० [सं० सन्देश] दे० 'संदेश'।

सनेह(पु)--संज्ञा पुं० [सं० स्नेह] दे० 'स्नेह'।

सनेहिया(पु)--संज्ञा पुं० [हिं० सनेह+इया (प्रत्य०)] दे० 'सनेही'।

सनेही[१]--वि० [सं० स्नेही, स्नेहिन्] स्नेह या प्रेम करनेवाला। प्रेमी।

सनेही[२]--संज्ञा पुं० चाहनेवाला। प्रियतम। प्यारा।

सनै सनै(पु)--अव्य० [सं० शनैः शनैः] दे० 'शनैः शनैः'।

सनोबर--संज्ञा पुं० [अ०] चीड़ का पेड़।

सन्न[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. चिरौंजी का पेड़। पियाल वृक्ष। २. परिमाण में स्वल्पता। कमी। अल्पता (को०)। ३. नाश। ध्वंस। विनाश (को०)।

सन्न[२]--वि० [सं० शून्य, हिं० सुन्न] १, संज्ञाशून्य। संवेदनारहित। बिना चेतना का सा। स्तब्ध। जड़। जैसे,--यह भीषण संवाद सुनते ही वह सन्न रह गया। २. भौचक। ठक। स्तंभित। ३. एकबारगी खामोश। सहसा मौन। एकदम चुप। ४. डर से चुप। भय से नीरव। जैसे,--उसके डाँटते ही वह सन्न हो गया।

क्रि० प्र०--करना।--होना।

मुहा०--सन्न मारना = सन्नाटा खींचना। एकबारगी चुप हो जाना।

सन्न[3]--वि० [सं०] १. जो सिकुड़ गया हो। संकुचित। २. समाप्त। नष्ट। मृत। ३. दुर्बल। क्षीण। ४. सुस्त। विषण्ण। विषादयुक्त। ६. जिसमें कोई हरकत न हो। गतिहीन। मंद। ७. झुका हुआ। अवनत। म्लान। ८. निकटस्थ। समीपवर्ती। सटा हुआ। ९. बैठा हुआ। आसीन। १०. गत। प्रस्थित। ११. धीमा। मंद। जैसे,--स्वर [को०]।

यौ०--सन्नकंठ = गद्गद कंठवाला। रुँधे गलेवाला। सन्नजिह्व = जो चुप हो। मौन। सन्नधी = उत्साहरहित। विषण्ण। सन्नभाव = त्यक्ताश। म्लान। उद्विग्न। सन्नमुसल = कार्य में अप्रयुक्त या रखा हुआ मूसल। सन्नवाक्, सन्नवाच् = मंद स्वर में बोलनेवाला। जो धीमी आवाज में बोलता हो। सन्नशरीर = श्लथदेह। थका हुआ। सन्नहर्ष = आनंदरहित। उत्साहहीन। विषण्ण।

सन्नक[१]--वि० [सं०] जो लंबा न हो। नाटा। बौना [को०]।

सन्नक[२]--संज्ञा पुं० [सं०] पियाल वृक्ष। चिरौंजी का पेड़।

सन्नकद्रु, सन्नकद्रुम--संज्ञा पुं० [सं०] चिरौंजी का पेड़ [को०]।

सन्नत[१]--वि० [सं०] १. झुका हुआ। २. नीचे गया हुआ। ३. खिन्न। उदास [को०]।

यौ०--सन्नतभ्रू = जिसकी भौंहें झुकी हों। टेढ़ी भौहोंवाला।

सन्नत[२]--संज्ञा पुं० राम की सेना का एक बंदर।

सन्नतर--वि० [सं०] अत्यंत धीमा। अत्यत मंद या मंद्र। जैसे,--स्वर [को०]।

सन्नति--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. झुकाव। २. नम्रता। विनय। ३. किसी ओर प्रवृत्ति। मन का झुकाव। ४. कृपादृष्टि। मेहरबानी। ५. दक्ष की पुत्री और क्रतु की स्त्री का नाम। ६. ध्वनि। आवाज। ७. एक प्रकार का यज्ञ (को०)।

सन्नद्ध--वि० [सं०] १. बँधा हुआ। कसा या जकड़ा हुआ। २. कवच आदि बाँधकर तैयार। ३. तैयार। आमादा। उद्यत। ४. लगा हुआ। जुड़ा हुआ। मिला हुआ। ५. पास का। समीप का। ६. हिंसक। घातक (को०)। ७. फूटने या खिलने की ओर अभिमुख। विकासोन्मुख (को०)। ८. आनंदयुक्त। मोहक (को०)। ९. युक्त। संपन्न (को०)।

यौ०--सन्नद्धकवच = जिसने कवच या झिरहबख्तर धारण किया हो। कवची। सन्नद्धयोध = पूर्णतः सज्जित या तैयार योद्धाओं से युक्त।

सन्नय--संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। संख्या। परिमाण। तादाद। २. पिछला हिस्सा। पिछला अंश। ३. सेना का पिछला भाग [को०]।

सन्नयन--संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ करना। समीप लाना। २. संबद्ध करने की क्रिया [को०]।

सन्नहन--संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ अच्छी तरह बाँधना। नद्धना। पिरोना। २. तैयार होना। तत्पर होना। सन्नद्ध होना। ३. रस्सी। जेंवर। ४. युद्धोपकरण, लड़ाई के हथियार आदि से युक्त होना। ५. उद्योग या प्रयत्न करना। ६. कसान। कसाव या खिंचाव। ७. तैयारी [को०]।

सन्नाटा[१]--संज्ञा पुं० [सं० शून्य, हिं० सुन्न+आटा (प्रत्य०)] १. चारों ओर किसी प्रकार का शब्द न सुनाई पड़ने की अवस्था।

निःशब्दता। नीरवता। निस्तब्धता। जैसे,—मेला उठ जाने पर वहाँ सन्नाटा हो गया।

क्रि॰ प्र॰—करना।—छाना।—फैलाना।—होना।

२. किसी प्राणी के न होने का भाव। निर्जनता। निरालापन। एकांतता। जैसे,—वहाँ सन्नाटे में पुकारने से भी कोई न सुनेगा। ३. अत्यंत भय या आश्चर्य के कारण उत्पन्न मौन और निश्चेष्टता। ठक रह जाने का भाव। स्तब्धता।

मुहा॰—सन्नाटे में आना = ठक रह जाना। स्तंभित हो जाना। कुछ कहते सुनते न बनना।

४. सहसा मौन। एकदम खामोशी। चुप्पी।

मुहा॰—सन्नाटा खींचना या मारना = एकबारगी चुप हो जाना। एकदम मौन हो जाना।

५. चहल पहल का अभाव। विनोद या मनोरंजन का न होना। उदासी।

मुहा॰—सन्नाटा बीतना = उदासी में समय काटना।

६. काम धंधे से गुलजार न रहना। जैसे,—अब तो कारखाने में सन्नाटा रहता है।

सन्नाटा[२]—वि॰ १. जहाँ किसी प्रकार का शब्द आदि न सुनाई पड़ता हो। नीरव। स्तब्ध। २. निर्जन। निराला। जैसे,—सन्नाटा मैदान।

सन्नाटा[३]—संज्ञा पुं॰ [अनु॰ सनसन] १. हवा के जोर से चलने की आवाज। वायु के बहने का शब्द। जैसे—आज तो बड़े सन्नाटे की हवा है।

मुहा॰—सन्नाटे का = सन सन शब्द के साथ बहता हुआ।

२. हवा चीरते हुए तेजी से निकल जाने का शब्द। वेग से वायु में गमन करने का शब्द।

मुहा॰—सन्नाटे के साथ या सन्नाटे से = वेग से। झोंके से। बड़ी तेजी से। जैसे,—तीर सन्नाटे से निकल गया।

सन्नादन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] राम की सेना का एक यूथप बंदर।

सन्नाम—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सन्नामन्] सत् नाम। अच्छा नाम। सुनाम [को॰]।

सन्नाह—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. कवच। बकतर। उ॰—पिंधउ दिढ़ सन्नाह वाह उप्परि पक्खर दइ।—इतिहास, पृ॰ २८। २. उद्योग। प्रयत्न। ३. स्वयं को शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करना (को॰)। ४. युद्ध जैसी सज्जा (को॰)। ५. सामग्री। सामान। उपकरण (को॰)।

सन्नाह्य—संज्ञा पुं॰ [सं॰] युद्ध के योग्य एक विशेष प्रकार का हाथी।

सन्नि—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] खिन्नता। विषण्णता। निराशा [को॰]।

सन्निकट—अव्य॰ [सं॰] समीप। पास। निकट।

सन्निकर्ष—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ सन्निकृष्ट] १. संबंध। लगाव। २. नाता। रिश्ता। ३. सामीप्य। समीपता। ४. इंद्रियों का विषयों के साथ संबंध (न्याय)।

विशेष—यही ज्ञान का कारण है और लौकिक तथा अलौकिक दो प्रकार का कहा गया है।

४. पात्र। आधार। आश्रय। ५. निकट खींचना। समीप लाना (को॰)। ६. नूतन विषय या विचार (को॰)।

सन्निकर्षण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] दे॰ सन्निकर्ष [को॰]।

सन्निकाश वि॰ [सं॰] उसी रूप रंग का। सदृश। समान।

सन्निकीर्ण—वि॰ [सं॰] पूरी तौर से। छितराया हुआ। पूर्णतः फैला हुआ [को॰]।

सन्निकृष्ट[१]—वि॰ [सं॰] १. समीपवाला। नजदीक का। २. जो पास खिंच आया हो। समीप खींचा हुआ [को॰]।

सन्निकृष्ट[२]—संज्ञा पुं॰ पड़ोस।

सन्निचय—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. बटोरना। एकत्र करना। ढेर करना। २. भंडार। राशि [को॰]।

सन्निचित—वि॰ [सं॰] १. राशीभूत। एकत्रित। २. अवरुद्ध। अवष्टंभित। रुका हुआ। जैसे,—सन्निचित मल। (सुश्रुत)।

सन्नितल—संज्ञा पुं॰ [सं॰] संगीत में एक प्रकार का ताल [को॰]।

सन्निध—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. सामीप्य। २. आमने सामने की स्थिति।

सन्निधाता—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सन्निधातृ] १. आकर्षण करने या पास लानेवाला। २. जो एकत्र या जमा करता हो। ३. वह जो अपनी निगरानी में रखे। पास रखनेवाला। ४. न्यायपीठ के समक्ष लोगों को सविवरण उपस्थित करनेवाला अधिकारी। ५. वह जो चोरी का माल रखता हो [को॰]।

सन्निधान—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. आमने सामने की स्थिति। २. निकटता। समीपता। ३. रखना। धरना। ४ स्थापित करना। ५. किसी वस्तु के रखने का स्थान। ६. वह स्थान जहाँ धन एकत्र किया जाय। निधि। ७. दृष्टिगोचरता (को॰)। ८. ग्रहण करना। भार लेना (को॰)। ९. संमिश्रण (को॰)। १०. इंद्रियों का विषय (को॰)।

सन्निधि—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. समीपता। निकटता। २. आमने सामने की स्थिति। ३. पड़ोस। दे॰ 'सन्निधान'।

सन्निपात—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. एक साथ गिरना या पड़ना। २. जुटना। भिड़ना। टकराना। ३. संयोग। मेल। मिश्रण। ४. इकट्ठा होना। एक साथ जुटना। ५. कफ, वात और पित्त तीनों का एक साथ बिगड़ना। त्रिदोष। सरसाम।

विशेष—यह वास्तव में कोई अलग रोग नहीं है, बल्कि एक विशेष अवस्था है जो ज्वर या और किसी व्याधि के बिगड़ने पर होती है। यह कई प्रकार का होता है। सबसे साधारण रूप वह है जिसमें रोगी का चित्त भ्रांत हो जाता है, वह अंड-बंड बकने लगता है तथा उछलता कूदता है। आयुर्वेद में १३ प्रकार के सन्निपात कहे गए हैं—संधिग, अंतक, रुग्दाह, चित्त-भ्रम, शीतांग, तंद्रिक, कंठकुब्ज, कर्णक, भग्ननेत्र, रक्तष्ठीव, प्रलाप, जिह्वक, और अभिन्यास।

६. एक साथ कई बातों का घटना या ठीक उतरना। ७. समाहार। समूह। ८. आना। पहुँचना (को॰)। ९. संगीत में एक प्रकार का ताल (को॰)। १०. मैथुन। संभोग (को॰)। ११. युद्ध। लड़ाई (को॰)। १२. ग्रहों का विशेष योग (को॰)।

सन्निपातक--संज्ञा पुं० [सं०] त्रिदोष विशेष। दे० 'सन्निपात'-५ [को०]।

सन्निपातित--वि० [सं०] १. च्युत। निःसृत। २. समवेत। इकट्ठा। एकत्र [को०]।

सन्निपाती--वि० [सं० सन्निपातिन्] सामवायिक [को०]।

सन्निबंध--संज्ञा पुं० [सं० सन्निबन्ध] १. एक में बाँधना। जकड़ना। २. लगाव। संबंध। ३. प्रभाव। तासीर। ४. फल। परिणाम।

सन्निबद्ध--वि० [सं०] १. एक में बँधा हुआ। जकड़ा हुआ। २. लगा हुआ। अड़ा हुआ। फँसा हुआ। ३. सहारे पर टिका हुआ। आश्रित। ४. व्यवस्थित (को०)।

सन्निबर्हण--संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिरोध। प्रतिबंध [को०]।

सन्निभ--वि० [सं०] सदृश। समान। मिलता जुलता।

सन्निभृत--वि० [सं०] १. अच्छी तरह छिपाया हुआ। गुप्त। २. समझ बूझकर बोलनेवाला। ३. चतुर। शिष्ट (को०)।

सन्निमग्न--वि० [सं०] १. खूब डूबा हुआ। २. सोया हुआ।

सन्निमित्त--संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा सगुन। २. जिसका कारण सत् या अच्छा हो। ३. भले लोगों का हित [को०]।

सन्नियंता--वि० [सं० सन्नियन्तृ] शासन करनेवाला। नियामक। व्यवस्थापक [को०]।

सन्नियोग--संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा योग। संयोग। संबंध। २. नियुक्ति। ३. लगाव। ४. फरमान। आज्ञा। आदेश [को०]।

सन्निरुद्ध--वि० [सं०] १. रोका हुआ। ठहराया हुआ। अड़ाया हुआ। २. दबाया हुआ। दमन किया हुआ। ३. एक साथ रखा या बटोरा हुआ। जैसे,--ठसाठस भरा हुआ। कसा हुआ।

सन्निरोध--संज्ञा पुं० [सं०] १. रोक। रुकावट। बाधा। २. दमन। निवारण। ३. निग्रह। बंधन। कारागृह (को०)। ४. तंगी। संकोच। ५. तंग रास्ता। सँकरी गली।

सन्निवाय--संज्ञा पुं० [सं०] संहति। संघात [को०]।

सन्निवास--संज्ञा पुं० [सं०] १. भले लोगों के साथ रहना। साथ रहना। २. निवास। बसति। नीड [को०]।

सन्निविष्ट--वि० [सं०] १. एक साथ बैठा या मिला हुआ। २. जमा हुआ। धरा हुआ। ३. स्थापित। प्रतिष्ठित। ४. लगा हुआ। जड़ा हुआ। ५. अँटा हुआ। आया हुआ। ६. समाया हुआ। लीन। ७. पास का। समीप का। लगा हुआ। ८. जिसने शिविर या पड़ाव डाला हो (को०)।

सन्निवृत्त--वि० [सं०] १. जो लौट आया हो। प्रत्यावर्तित। २. ठहरा या रुका हुआ। ३. जो अलग हट गया हो। पराङ्मुख [को०]।

सन्निवृत्ति--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लौट आना। पलटना। प्रत्यावर्तन। २. ठहरना। रुकना। ३. अलग हटना। दूर होना। ४. रोकने की क्रिया [को०]।

सन्निवेश--संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ बैठना। २. जमना। स्थित होना। बैठना। ३. रखना। धरना। ठहरना। ४. लगाना। जड़ना। बैठाना। ५. अँटना। भीतर आना। समाना। ६. स्थिति। आधार। रखने की जगह। ७. आसन। बैठकी। ८. रहने की जगह। निवास। घर। ९. पुर या ग्राम के लोगों के एकत्र होने का स्थान। अथाई। चौपाल। १०. एकत्र होना। जुटना। ११. समूह। समाज। १२. योजना। व्यवस्था। १३. रचना। १४. गढ़न। गठन। बनावट। आकृति। १५. स्तंभ, मूर्ति आदि की स्थापना। १६. गहरी पैठ। १७. उत्कट भक्ति (को०)। १८. संचय। समुच्चय (को०)। १९. डेरा डालना। शिविर स्थापित करना।

सन्निवेशन--संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सन्निवेशित, सन्निवेशी, सन्निवेश्य, सन्निविष्ट] १. एक साथ बैठना। २. बैठना। जमना। ३. रखना। धरना। ४. बैठाना। लगाना। जड़ना। ५. टिकाना। ठहराना। अड़ाना। ६. स्थापित करना। जैसे,--प्रतिमा या स्तंभ का सन्निवेशन। ७. वास। निवास। ८. विधान। व्यवस्था।

सन्निवेशित--वि० [सं०] १. बैठाया हुआ। जमाया हुआ। २. ठहराया हुआ। रखा हुआ। ३. स्थापित। प्रतिष्ठित। ४. अँटाया हुआ। भीतर डाला हुआ। ५. सौंपा हुआ (को०)।

सन्निसर्ग--संज्ञा पुं० [सं०] सत् स्वभाव। विनयशीलता। उदारता [को०]।

सन्निहित[1]--वि० [सं०] १. एक साथ या पास रखा हुआ। २. समीपस्थ। निकटस्थ। ३. रखा हुआ। धरा हुआ। ४. ठहराया हुआ। टिकाया हुआ। अड़ाया हुआ। ५. जो कुछ करने पर हो। उद्यत। तैयार। ६. उपस्थित। विद्यमान (को०)।

सन्निहित[2]--संज्ञा पुं० १. सामीप्य। २. एक प्रकार की अग्नि [को०]।

सन्निहितापाय--वि० जिसका विनाश निकट ही हो। क्षणभंगुर [को०]।

सन्नी--संज्ञा स्त्री० [हिं० सन] सन की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा।

विशेष--वह पौधा प्रायः सारे भारत और बरमा में पाया जाता है। इसके डंठलों से भी एक प्रकार का मजबूत रेशा निकलता है; पर लोग उसका व्यवहार कम करते हैं। यह देखने में बहुत सुंदर होता है; अतः कहीं कहीं लोग इसे बागों में शोभा के लिये भी लगाते हैं।

सन्नोदन--संज्ञा पुं० [सं०] १. पशु आदि को चलाना। हाँकना। २. प्रेरित करना। उभारना। उसकाना।

सन्मंगल--संज्ञा पुं० [सं० सन्मङ्गल] भला काम [को०]।

सन्मणि--संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम कोटि का रत्न [को०]।

सन्मति--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सम्मति' [को०]।

सन्मातुर--संज्ञा पुं० [सं०] वह जो साध्वी स्त्री का पुत्र हो। सती स्त्री का पुत्र [को०]।

सन्मात्र[1]--वि० [सं०] जिसका अस्तित्व मात्र स्वीकार्य हो [को०]।

सन्मात्र[2]--संज्ञा पुं० [सं०] आत्मा का एक नाम [को०]।

सन्मान--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सम्मान'।

सन्मानना पु--क्रि० स० [हिं० सनमानना] दे० 'सनमानना'।

सन्मार्ग--संज्ञा पुं० [सं०] सत् मार्ग। अच्छा मार्ग।

यौ०—सन्मार्गगामी = सुमार्ग पर चलनेवाला। सन्मार्गयोधी = धर्म या नियम के अनुसार लड़नेवाला योद्धा। सन्मार्गस्थ = सत्यमार्ग पर स्थित। सन्मार्गगामी।

सन्मार्गालोकन—संज्ञा पुं० [सं०] सत्पथ पर चलना। सुमार्ग पर चलना।

सन्मार्गी—वि० [सं० सन्मार्गिन्] सुपथ पर चलनेवाला। सत् पथ पर गमन करनेवाला।

सन्मुख—अव्य० [सं० सम्मुख] दे० 'सम्मुख'।

सन्यासन—संज्ञा पुं० [सं० संन्यसन, सन्यसन] [वि० संन्यस्त] १. फेंकना। छोड़ना। अलग करना। हटाना। दूर करना। २. सांसारिक विषयों का त्याग। दुनिया का जंजाल छोड़ना। ३. रखना। धरना। ४. बैठाना। जमाना। स्थापित करना। ५. खड़ा करना। ६. जमा करना (को०)। ७. सौंपना (को०)।

सन्यस्त—वि० [सं० संन्यस्त, सन्न्यस्त] १. फेंका हुआ। अलग किया हुआ। २. रखा हुआ। धरा हुआ। ३. बैठाया हुआ। जमाया हुआ। ४. सौंपा हुआ (को०)।

सन्यास—संज्ञा पुं० [सं० संन्यास, सन्न्यास] १. छोड़ना। दूर करना। त्याग। २. सांसारिक प्रपंचों के त्याग की वृत्ति। दुनिया के जंजाल से अलग होने की अवस्था। वैराग्य। ३. चतुर्थ आश्रम। यति धर्म।

विशेष—यह प्राचीन भारतीय आर्यों या हिंदुओं के जीवन की चार अवस्थाओं में से अंतिम है जो पुत्र आदि के सयाने हो जाने पर ग्रहण की जाती थी। इसमें मनुष्य गृहस्थी छोड़कर जंगल या एकांत स्थान में ब्रह्मचिंतन या परलोकसाधन में प्रवृत्त रहते थे और भिक्षा द्वारा निर्वाह करते थे। इसमें किसी आचार्य से दीक्षा लेकर सिर मुँड़ाते और दंड ग्रहण करते थे। संन्यास दो प्रकार का कहा गया है—एक सक्रम अर्थात् जो ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य और वानप्रस्थ आश्रम के उपरांत ग्रहण किया जाय; दूसरा अक्रम जो बीच में ही वैराग्य उत्पन्न होनेपर धारण किया जाय। बहुत दिनों तक 'संन्यास' कलिवर्ज्य माना जाता था; पर शंकराचार्य ने बौद्ध भिक्षुओं और जैन यतियों को अपने अपने धर्म का प्रचार बढ़ाते देख कलिकाल में फिर संन्यास चलाया और गिरि, पुरी, भारती आदि दस प्रकार के संन्यासियों की प्रतिष्ठा की जो दशनामी कहे जाते हैं।

क्रि० प्र०—ग्रहण करना।—लेना।

४. सहसा शरीर का त्याग। एकबारगी मरण। ५. एकदम थक जाना। चरम शैथिल्य। ६. धरोहर। थाती। ७. वादा। इकरार। ८. बाजी। होड़। खेल में शर्त लगाना। ९. जटामासी।

सन्यासी—संज्ञा पुं० [सं० संन्यासिन्, सन्न्यासिन्] [स्त्री० संन्यासिनी, संन्यासिन] १. वह पुरुष जिसने संन्यास धारण किया हो। चतुर्थ आश्रमी। २. विरागी। त्यागी। यति। ३. वह जो त्याग देता है (को०)। ४. भोजन का त्याग करनेवाला (को०)।

सपंक(पु)—वि० [सं० स + पङ्क] १. कीचड़ से भरा हुआ। २. मुसीबत से भरा हुआ। उ०—मन मानि अतंका करि सत संका सिंधु सपंका तरितरिगे।—पद्माकर ग्रं०, पृ० १९।

सपई—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँप] १. एक प्रकार का लंबा कीड़ा जो मनुष्यों और पशुओं की आँतों में उत्पन्न होता है। पेट का केचुवा। २. बेला नामक फूल।

सपक्ष[1]—संज्ञा पुं० [सं०] अनुकूल पक्ष। मुवाफिक राय।

सपक्ष[2]—वि० १. जो अपने पक्ष में हो। तरफदार। २. समर्थक। पोषक। ३. पक्षयुक्त। डैनों वाला (को०)। ४. पक्षवाला। दलवाला (को०)। ४. पंखदार (बाण)। उ०—चले बान सपक्ष जनु उरगा।—मानस, ६।९३। ५. सदृश। समान (को०)। ६. एक जाति, वर्ग या श्रेणी का। ७. जिसमें साध्य या अनुमान का पक्ष हो (को०)।

सपक्ष[3]—संज्ञा पुं० १. तरफदार। मित्र। सहायक। २. न्याय में वह बात या दृष्टांत जिसमें साध्य अवश्य हो। जैसे,—जहाँ धूआँ होता है, वहाँ आग रहती है। जैसे,—रसोईंघर का दृष्टांत सपक्ष है। ३. सजातीय। रिश्तेदार (को०)।

सपक्षक—वि० [सं०] पक्षयुक्त। पंखोंवाला (को०)।

सपक्षी—वि० [सं० सपक्ष] दे० 'सपक्ष'।

सपच्छ(पु)—वि० [सं० सपक्ष, प्रा० सपच्छ] दे० 'सपक्ष'।

सपटा†—संज्ञा पुं० [देश०] १. सफेद कचनार। २. एक प्रकार का टाट। ३. मूँज की बनी एक प्रकार की पेटारी।

सपट्टी—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्वार के चौखट की दोनों खड़ी लकड़ियाँ। बाजू।

सपड़ना‡—क्रि० अ० [हिं० सपरना] दे० 'सपरना'।

सपड़ाना‡—क्रि० स० [हिं० सपराना] दे० 'सपराना'।

सपत(पु)—अव्य० [सं० सपदि] दे० 'सपदि'।

सपताक—वि० [सं०] पताका सहित। झंडेवाला (को०)।

सपत्न[1]—संज्ञा पुं० [सं०] अरि। वैरी। विरोधी। शत्रु।

यौ०—सपत्नजित्। सपत्नदूषण, सपत्नबलनाशन = शत्रु का संहार करनेवाला। सपत्नवृद्धि = बैरियों की वृद्धि। सपत्नश्री = वैरी की विजय। सपत्नसूदन = शत्रुहंता। शत्रुसूदन।

सपत्न[2]—वि० शत्रुता रखनेवाला। दुश्मन। वैरी। शत्रु (को०)।

सपत्नजित्—संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रु को जीतनेवाला। २. सुदत्ता के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सपत्नता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैर। शत्रुता।

सपत्नारि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ठोस बाँस जिसके डंडे या छड़ियाँ बनती हैं।

सपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ही पति की दूसरी स्त्री। जो अपने पति की दूसरी स्त्री हो। सौत। सौतिन।

सपत्नीक—वि० [सं०] स्त्री के सहित। जोरू के साथ। जैसे,—आप सपत्नीक तीर्थ करने जायँगे।

सपत्र—वि० [सं०] पत्तों या पंखों के सहित (को०)।

सपत्राकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐसा बाण मारना कि उसके पख तक भीतर घुस जायँ। २. बहुत पीड़ित करना [को०]।

सपत्राकृत—वि० [सं०] १. जिसे ऐसा तीर लगा हो कि उसके पंख तक भीतर घुस गए हो। २. आहत। घायल [को०]।

सपत्राकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अत्यंत कष्ट या पीड़ा। दारुण व्यथा [को०]।

सपथ—संज्ञा पुं० [सं० शपथ] दे० 'शपथ'। उ०—भामिनि राम सपथ सत मोही।—मानस, २।२६।

सपदि—अव्य० [सं०] उसी समय। तुरंत। शीघ्र। जल्द। उ०—(क) सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई।—मानस, ६।८४। (ख) सठ स्वपक्ष तब हृदय बिसाला। सपदि होहि पक्षी चंडाला।—मानस, ७।११२।

सपन†—संज्ञा पुं० [हिं० सपना] दे० 'सपना'। उ०—सुनि सिय सपन भरे जल लोचन। भए सोचबस सोचविमोचन।—मानस, २।२२५।

सपना[१]—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न] १. वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पड़े। नींद में अनुभव होनेवाली बात। २ निद्रा की दशा में दृश्य देखना।

मुहा०—सपना होना = देखने को भी न मिलना। दुर्लभ हो जाना।

सपनाⓅ[२]—क्रि० अ० [सं० सर्पण, प्रा० सप्पण] चलना। गतिशील होना। उ०—लय षग्ग रमक्किय प्रेत दिसं, बर बीर सु मंडिय चित्त रसं। अविलंघ करी सकरं वितनं, रिपु थान सपंत सु भै न मनं।—पृ० रा०, १।५३०।

सपरदा, सपरदाई—संज्ञा पुं० [सं० सम्प्रदायी] गानेवाली तवायफ के साथ (तबला, सारंगी आदि) बजानेवाला। भँड़वा। समाजी। साजिंदा।

सपरना—क्रि० अ० [सं० सम्पादन, प्रा० संपाडन] १. किसी काम का पूरा होना। समाप्त होना। निबटना। २. काम का किया जा सकना। हो सकना। जैसे,—यह काम हमसे नहीं सपरेगा।

मुहा०—सपर जाना = मर जाना।

३. तैयारी करना। तैयार होना।

सपरब—वि० [सं० सपर्व] गाँठयुक्त। पोरदार। उ०—बेनु हरित मनिमय सब कीने। सरल सपरब परहिं नहिं चीने।—मानस, १।२८०।

सपरसⓅ—वि० [हिं० स (=सह) + परस (=स्पर्श)] छूत से युक्त। स्पृश्य। स्पर्श करने योग्य। 'अपरस' का विलोम। उ०—अपरस ठौर तहाँ सपरस जाइ कैसे, बासना न धोवै तौं लौं तन के पखारें कहा।—घनानंद, पृ० १९८।

सपराना—क्रि० स० [हिं० सपरना] १. काम पूरा करना। निबटाना। खतम करना। २. पूरा कर सकना। कर सकना। ३.† नहलाना। स्नान कराना।

सपरिकर—वि० [सं०] १. अनुचर वर्ग के साथ। २. ठाठ बाट के साथ। जुलूस के साथ।

सपरिक्रम—वि० [सं०] दे० 'सपरिकर' [को०]।

सपरिच्छद—वि० [सं०] १. अनुचर वर्ग के साथ। २. तैयारी के साथ। ठाठ बाट के साथ। जुलूस के साथ।

सपरिजन—वि० [सं०] दे० 'सपरिकर'। उ०—बहुरि सपरिजन भरत कहु रिषि अस आयेसु दीन्ह।—मानस, २।२१३।

सपरिबृंहण—वि० [सं०] परिशिष्ट से युक्त (वेद)।

सपरिवार—वि० [सं०] कुटुंबियों या आत्मीयों के सहित [को०]।

सपरिवाह—वि० [सं०] १. जो पूरा भरा हो। लबरेज। २. सतह से ऊपर बहता हुआ [को०]।

सपरिव्यय—वि० [सं०] विविध प्रकार की सामग्री, मसाले आदि के योग से तैयार किया गया। जैसे,—खाद्य पदार्थ [को०]।

सपरिहार—वि० [सं०] १. परिहार या अपवाद युक्त। २. शालीनता या भीरुता से युक्त [को०]।

सपर्ण—वि० [सं०] पत्रयुक्त। पत्तियोंवाला [को०]।

सपर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूजा। आराधना। उपासना। २ सत्कार। सेवा टहल (को०)।

सपशु—वि० [सं०] १. पशुयुक्त। जानवरों के सहित। २. जो पशुबलि से संबंधित हो [को०]।

सपाट—वि० [सं० स + पट्ट, हिं० पाटा (=पीढ़ा)] १. बराबर। हमवार। समतल। २. जिसकी सतह पर कोई उभरी या जमी हुई वस्तु न हो। चिकना।

सपाटा—संज्ञा पुं० [सं० सर्पण (=सरकना)] १. चलने, दौड़ने या उड़ने का वेग। झोंक। तेजी। जैसे,—सपाटे के साथ दौड़ना। २. तीव्र गति। दौड़। झपट। झपटा।

क्रि० प्र०—भरना।—मारना।—लगाना।

यौ०—सैर सपाटा = घूमना फिरना।

सपाद—वि० [सं०] १. चरण सहित। २. चतुर्थांश युक्त। ३. चतुर्थांश और अधिक के साथ। जिसमें एक का चौथाई और मिला हो। जैसे, सवा दो, सवा तीन, सवा चार।

यौ०—सपादपीठ = पादपीठ के साथ। पादपीठिका से युक्त। पैर रखने की छोटी चौकी से युक्त। सपादमत्स्य = एक प्रकार का मत्स्य। सपादलक्ष = सवा लाख। एक लाख पचीस हजार।

सपादुक—वि० [सं०] जो पादुका, खड़ाऊँ या चट्टी पहने हो [को०]।

सपाल—वि० [सं०] १. पशुपालक से रक्षित या युक्त। जिसके साथ पशुपालक हो। २. राजा से युक्त [को०]।

सपिंड—संज्ञा पुं० [सं० सपिण्ड] एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितरों को पिंडदान करता हो। एक ही खानदान का।

विशेष—छह पीढ़ी ऊपर और छह पीढ़ी नीचे तक के लोग सपिंड की गणना में आते हैं। इनके अतिरिक्त माता, नाना और पड़नाना आदि, कन्या, कन्या का पुत्र और पौत्र आदि तथा पिता माता के भाई बहिन आदि बहुत से आते हैं।

सपिंडन--संज्ञा पुं० [सं० सपिण्डन] दे० 'सपिंडीकरण' [को०]।

सपिंडी--संज्ञा स्त्री० [सं० सपिण्डी] मृतक के निमित्त वह कर्म जिसमें वह और पितरों या परिवार के मृत प्राणियों के साथ पिंडदान द्वारा मिलाया जाता है।

सपिंडीकरण--संज्ञा पुं० [सं० सपिण्डीकरण] १. समान पितरों के संमान में किया जानेवाला विशेष श्राद्ध का अनुष्ठान। यह श्राद्ध पहिले मृतक की मृत्यु तिथि के एक वर्ष बाद किया जाता था किंतु आजकल १२वें दिन ही किया जाने लगा है। २. किसी व्यक्ति को सपिंड का अधिकार देना [को०]।

सपीड--वि० [सं०] पीड़ा या वेदनायुक्त [को०]।

सपीतक--संज्ञा पुं० [सं०] घीया तुरई। नेनुवा।

सपीति--संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुतों के एक साथ बैठकर पीने या खाने की क्रिया। सहपान या सहभोज [को०]।

सपीतिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] लंबी घीया या कद्दू।

सपुर(पु)--वि० [सं०] पुरवासियों के साथ। उ०--देखि सपुर परिवार जनक हिय हारेउ।--तुलसी ग्रं०, पृ० ५३।

सपुलक--वि० [सं०] पुलक या हर्ष के साथ।

सपूत--संज्ञा पुं० [सं० सत्पुत्र, प्रा० सपुत्त, सउत्त] वह पुत्र जो अपने कर्त्तव्य का पालन करे। अच्छा पुत्र। उ०--सूर सुजान सपूत सुलच्छन गनियत गुन गरुआई।--तुलसी (शब्द०)।

सपूती--संज्ञा स्त्री० [हिं० सपूत+ई (प्रत्य०)] १. सपूत होने का भाव। लायकी। २. योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता।

सपेत, सपेद(पु)†--वि० [फ़ा० सफ़ैद, मि० सं० श्वेत] सफेद। श्वेत। धवल।

सपेती(पु)†--संज्ञा स्त्री० [हिं० सफेदी] दे० 'सफेदी'।

सपेरा--संज्ञा पुं० [हिं० सँपेरा] दे० 'सँपेरा'।

सपेला--संज्ञा पुं० [हिं० साँप+ऐला (प्रत्य०)] साँप का छोटा बच्चा। उ०--जिमि कोउ करै गरुड़ सौं खेला। डरपावै गहि स्वल्प सपेला।--मानस, ३।५०।

सपोत--वि० [सं०] जिसके पास नाव हो। पोत युक्त [को०]।

सपोला--संज्ञा पुं० [हिं० साँप+ओला (प्रत्य०)] साँप का छोटा बच्चा।

सपौष्णमैत्र--वि० [सं०] रेवती सौर अनुराधा नक्षत्र से युक्त [को०]।

सप्त--वि० [सं०] गिनती में सात।

यौ०--सप्तकोण = सात कोणों वाला। सप्तगंग = एक स्थानविशेष जहाँ गंगा सात धाराओं में बहती है। सप्तगोदावरी = एक नदी। सप्तज्वाल = सप्तार्चि। अग्नि। सप्ततंति, सप्ततंत्र = सात तारों से युक्त। सप्तदीधिति = अग्नि। सप्त द्वारावकीर्ण = सात द्वारों--पाँच इंद्रियाँ, मन और बुद्धि से युक्त। सप्तधातुक = सात धातुओं वाला। सप्तदिन, सप्तदिवस = सप्ताह। सप्तपद = सात पदों का। सप्तपुरुष = जो सात पोरसा लंबा हो। सप्तबोध्यंग कुसुमाढ्य = एक बुद्ध का नाम। सप्तभूमिक, सप्तभूमिमय, सप्तभौम = सात मंजिलों वाला। सप्तमरीचि = सात मरीचि या किरणों वाला। सप्तार्चि। अग्नि। सप्तमहाभाग = विष्णु। सप्तमास्य = सतवाँसा। सप्त यम = सात स्वरों वाला। सप्तरात्र = सात रात्रि का काल। सप्ताह। सप्तरात्रक = जो सात रात तक चले। साप्ताह्निक। सप्तवर्ग = सात का समाहार। सप्तवर्ष = सात वर्ष का। सप्तविदारु = एक वृक्ष का नाम। सप्तविध = सात प्रकार का। सप्तसमाधिपरिष्कारक:, सप्तसमाधिपरिष्कारदायक = बुद्ध का एक नाम।

सप्तऋषि--संज्ञा पुं० [सं० सप्तर्षि] दे० 'सप्तर्षि'।

सप्तक[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १. सात वस्तुओं का समूह। २. संगीत में सात स्वरों का समूह।

सप्तक[2]--वि० [वि० स्त्री० सप्तका, सप्तकी] १. सात से युक्त। २. जो छह् के बाद हो। सात। ३. सप्तम। सातवाँ [को०]।

सप्तकी--संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों का कमरबंद।

सप्तकृत्--संज्ञा पुं० [सं०] विश्वेदेवा में से एक।

सप्तगुण--वि० [सं०] सात बार और। सतगुना।

सप्तग्रही--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक ही राशि में सात ग्रहों का योग या एकत्र होना।

सप्तचत्वारिंश--वि० [सं०] सैंतालीसवाँ।

सप्तचत्वारिंशत्--वि० [सं०] सैंतालीस।

सप्तच्छद--संज्ञा पुं० [सं०] सप्तपर्ण वृक्ष। छतिवन।

सप्तजिह्व[1]--संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि, जिसकी सात जिह्वाएँ मानी गई हैं।

सप्तजिह्व[2]--वि० सात जिह्वावाला। जिसे सात जीभ हों [को०]।

सप्तति--वि० [सं०] सत्तर।

सप्ततितम--वि० [सं०] सत्तरवाँ।

सप्तत्रिंश--वि० [सं०] सैंतीसवाँ।

सप्तत्रिंशत्--वि० [सं०] सैंतीस।

सप्तदश[1]--वि० [सं०] सत्तरहवाँ।

सप्तदश[2]--वि० [सं० सप्तदशन्] सत्तरह।

सप्तदशक--वि० [सं०] सत्रह से युक्त। जिसमें सत्रह हों [को०]।

सप्तदशम--वि० [सं०] सत्तरहवाँ।

सप्तद्वीप--संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग।

विशेष--सात द्वीप ये हैं--जंबू द्वीप, कुश द्वीप, प्लक्ष द्वीप, शाल्मलि द्वीप, क्रौंच द्वीप, शाक द्वीप और पुष्कर द्वीप।

२. पृथ्वी, जो सात द्वीपों से युक्त है।

सप्तधा--वि० [सं०] १. सात भागों में। २. सात गुना [को०]।

सप्तधातु[1]--संज्ञा पुं० [सं०] आयुर्वेद के अनुसार शरीर के सात संयोजक द्रव्य अर्थात् रक्त, पित्त, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र।

सप्तधातु[2]--वि० सात धातुओं से बना हुआ। जैसे,--शरीर।

सप्तधातु[२]—संज्ञा पुं० चंद्रमा के घोड़ों में से एक का नाम।

सप्तधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] जौ, धान, उरद आदि सात अन्नों का मेल जो पूजा में काम आता है।

सप्तनली—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहेलियों का चिड़िया फँसाने का एक उपकरण। कंपा [को०]।

सप्तनवति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्तानबे की संख्या—९७।

सप्तनाड़िका—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तनाडिका] सिंघाड़ा।

सप्तनाड़ी चक्र—संज्ञा पुं० [सं० सप्तनाडीचक्र] फलित ज्योतिष में सात टेढ़ी रेखाओं का एक चक्र जिसमें सब नक्षत्रों के नाम भरे रहते हैं और जिसके द्वारा वर्षा का आगम बताया जाता है।

सप्तनामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आदित्यभक्ता। हुलहुल नाम का पौधा।

सप्तपंचाश—वि० [सं० सप्तपञ्चाश] सत्तावनवाँ।

सप्तपंचाशत्—वि० [सं० सप्तपञ्चाशत्] सत्तावन।

सप्तपत्र[१]—वि० [सं०] १. जिसमें सात पत्ते या दल हों। २. जिसके वाहन सात घोड़े हों।

सप्तपत्र[२]—संज्ञा पुं० १. मोतिया। मोगरा बेला। २. सप्तपर्ण वृक्ष। छतिवन। ३. सूर्य।

सप्तपदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू अग्नि के चारों ओर सात परिक्रमाएँ करते हैं और जिससे विवाह पक्का हो जाता है। भाँवर। भँवरी। २. किसी बात को अग्नि की साक्षी देकर पक्का करना।

सप्तपदी पूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विवाह के अवसर पर होनेवाला एक पूजन।

विशेष—इसमें एक लोढ़ा वर और वधू के आगे रखकर वर को उसे पूजने को कहा जाता है, पर वह उसे पैर से हटा देता है।

सप्तपराक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का तप।

सप्तपर्ण[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. छतिवन का पेड़। २. एक प्रकार की मिठाई।

सप्तपर्ण[२]—वि० जिसमें सात दल या पत्ते हों [को०]।

सप्तपर्णक—संज्ञा पुं० [सं०] छतिवन वृक्ष [को०]।

सप्तपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लज्जालु। लज्जावंती लता। २. एक मिठाई। ३. छतिवन का फूल (को०)।

सप्तपलाश—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सप्तपर्ण'।

सप्तपाताल—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी के नीचे के सात लोक जिनके नाम ये हैं—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।

सप्तपुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] तुरई की तरह की सतपुतिया नाम की तरकारी।

सप्तपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्षदायक कहे गए हैं।

विशेष—अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका ये सात पवित्र पुरियाँ हैं।

सप्तप्रकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] राज्य के सात अंग जो ये हैं—राजा, मंत्री, सामंत, देश, कोश, गढ़ और सेना।

सप्तबाह्य—संज्ञा पुं० [सं०] वाह्लीक देश। बलख।

सप्तभंगिनय—संज्ञा पुं० [सं० सप्तभङ्गिनय] दे० 'सप्तभंगी'–१।

सप्तभंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सप्तभङ्गी] १. जैन न्याय या तर्क के सात अवयव जिन पर स्याद्वाद की प्रतिष्ठा है।

विशेष—ये सातो अवयव या सूत्र स्यात् शब्द से आरंभ होते हैं। यथा—स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्तिच नास्ति, स्यादवक्तव्य, स्यादस्तिचावक्तव्य, स्यान्नास्तिचावक्तव्य, स्यादस्तिचनास्तिचावक्तव्य।

२. सप्तभंगी को माननेवाला। स्याद्वाद का अनुयायी जैन।

यौ०—सप्तभंगीनय = दे० 'सप्तभंगिनय'।

सप्तभद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिरिस। शिरीष वृक्ष। २. नेवारी। नवमल्लिका। ३. गुंजा। चिरभटी।

सप्तभुवन—संज्ञा पुं० [सं०] ऊपर के सात लोक। विशेष दे० 'लोक'।

सप्तभूम[१]—संज्ञा पुं० [सं०] मकान के सात खंड या मरातिब।

सप्तभूम[२]—वि० सात खंडों का। सतमंजिला।

सप्तभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रसातल। २. दे० 'सप्तभूम'।

सप्तमंत्र—संज्ञा पुं० [सं० सप्तमन्त्र] अग्नि। सप्तार्चि [को०]।

सप्तम—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सात माताएँ या शक्तियाँ जिनका पूजन विवाह आदि शुभ अवसरों के पहले होता है।

विशेष—इनके नाम ये हैं—ब्राह्मी या ब्राह्मणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐंद्री या इंद्राणी और चामुंडा।

सप्तमी[१]—वि० स्त्री० [सं०] सातवाँ।

सप्तमी[२]—संज्ञा स्त्री० १. किसी पक्ष की सातवीं तिथि। २. किसी पक्ष का सातवाँ दिन। ३. अधिकरण कारक की विभक्ति का नाम (व्याकरण)।

सप्तमुष्टिक—संज्ञा पुं० [सं०] ज्वर की एक औषधि जो कई द्रव्यों के योग से बनती है।

सप्तमृत्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शांति पूजन में काम आनेवाली सात स्थानों की मिट्टी।

विशेष—राजद्वार की, गजशाला की तथा इसी प्रकार और स्थानों की मिट्टी मँगाई जाती है।

सप्तरक्त—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर के सात अवयव जिनका रंग लाल होता है। यथा—हथेली, तलवा, जीभ, आँख या पलक का निचला भाग, तालू और ओठ।

सप्तराव—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

सप्तराशिक—संज्ञा पुं० [सं०] गणित की एक क्रिया जिसमें सात राशियाँ होती हैं।

सप्तरुचि—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सात रोचि या किरणों से युक्त हो। २. अग्नि का एक नाम।

सप्तर्षि—संज्ञा पुं० [सं०] १. सात ऋषियों का समूह या मंडल।

विशेष—शतपथ ब्राह्मण के अनुसार सात ऋषियों के नाम ये हैं—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि। महाभारत के अनुसार—मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ।

२. उत्तर दिशा में स्थित सात तारों का समूह जो ध्रुव के चारो ओर फिरता दिखाई पड़ता है।

सप्तर्षिज—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

सप्तला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सातला। २. नवमल्लिका। चमेली। ३. रीठा। ४. गुंजा। घुँघची। चिरमिटी।

सप्तलोक—संज्ञा पुं० [सं०] सात लोक जिनके नाम हैं—भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपालोक और सत्यलोक।

यौ०—सप्तलोकमय = विष्णु।

सप्तवरूथ—वि० [सं०] जिसको सात आदमी रक्षा करते हों। (रथ) जो सात रक्षकों से युक्त हो (को०)।

सप्तवादी—संज्ञा पुं० [सं० सप्तवादिन्] सप्तभंगी न्याय या स्याद्वाद का अनुयायी। जैन।

सप्तविंश—वि० [सं०] सत्ताईसवाँ।

सप्तविंशति[१]—वि० [सं०] सत्ताइस।

सप्तविंशति[२]—संज्ञा स्त्री० सत्ताइस की संख्या या अंक।

सप्तविंशतिम—वि० [सं०] सत्ताइसवाँ।

सप्तशत—वि० [सं०] सात सौ।

सप्तशती[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सात सौ का समूह। २. सात सौ पद्यों का समूह। सतसई। जैसे,—दुर्गा सप्तशती, आर्या सप्तशती।

सप्तशती[२]—संज्ञा पुं० बंगाल में ब्राह्मणों की एक जाति।

सप्तशलाक—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष में सात शलाकाओं का वह चक्र जिससे विवाह के शुभाशुभ का ज्ञान करते हैं।

सप्तशिवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागवल्ली।

सप्तशीर्ष[१]—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

सप्तशीर्ष[२]—वि० जिसके सात सिर या चोटियाँ हों (को०)।

सप्तषष्ठ—वि० [सं०] सड़सठवाँ।

सप्तषष्ठि—वि० [सं०] सड़सठ।

सप्तसप्तत—वि० [सं०] सतहत्तरवाँ।

सप्तसप्तति—वि० [सं०] सतहत्तर।

सप्तसप्ति[१]—वि० [सं०] जिसके रथ में सात घोड़े हों।

सप्तसप्ति[२]—संज्ञा पुं० सूर्य।

सप्तसमुद्रांत—वि० [सं० सप्तसमुद्रान्त] जो सात समुद्रों तक विस्तीर्ण हो।

सप्तसागर—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक शिवलिंग। २. लवण, इक्षु, दधि, क्षीर, मधु, मदिरा और घृत के सात समुद्र।

सप्तसागर दान—संज्ञा पुं० [सं०] एक दान जिसमें सात पात्रों में घी, दूध, मधु, दही आदि रखकर ब्राह्मण को देते हैं।

सप्तसागरक—संज्ञा पुं० [सं०] एक दान। सप्तसागर दान (को०)।

सप्तसागरमेखला—वि० [सं०] जिसकी मेखला सात समुद्र हो। सप्तसमुद्रांत विस्तीर्ण। उ०—भूमि सप्तसागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला।—मानस, ७।२२।

सप्तसिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] तांबूल। पान।

सप्तसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके सात बच्चे हों (को०)।

सप्तस्पर्द्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रामायण में वर्णित एक नदी का नाम।

सप्तस्वर—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत के सात स्वर—स, ऋ, ग, म, प, ध, नि।

सप्तांग[१]—वि० [सं० सप्ताङ्ग] सात अंगों से युक्त। सात अंगोंवाला।

सप्तांग[२]—संज्ञा पुं० दे० 'सप्तप्रकृति' (को०)।

सप्तांशु—संज्ञा पुं० [सं०] जो सात किरणों से युक्त हो—अग्नि। सप्तार्चि।

सप्तांशुपुंगव—संज्ञा पुं० [सं० सप्तांशुपुङ्गव] शनिग्रह।

सप्तात्मा—संज्ञा पुं० [सं० सप्तात्मन्] ब्रह्म (को०)।

सप्तावरन पु—संज्ञा पुं० [सं० सप्तावरण] जल, पवन, अग्नि, आकाश, अहंकार, महत्तत्व और प्रकृति नामक आत्मा के सात आवरण। उ०—सप्तावरन भेद करि जहाँ लगे गति मोरि।—मानस, ७।७९।

सप्तार्चि[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। सप्तांशु। २. शनि। ३. चित्रक वृक्ष। चीता।

सप्तार्चि[२]—वि० १. जो देखने में सुंदर न हो। कुरूप। बेडौल। भद्दा। २. सात जिह्वा या अर्चिष् से युक्त (को०)।

सप्तार्णव—संज्ञा पुं० [सं०] १. सातों समुद्र। २. वह जो सात समुद्रों से आवेष्टित हो।

सप्तालु—संज्ञा पुं० [सं०] सतालू। शफतालू।

सप्ताशीति—वि० [सं०] सत्तासी।

सप्ताश्र—संज्ञा पुं० [सं०] सात भुजाओं वाला क्षेत्र (को०)।

सप्ताश्व—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य (जिनके रथ में सात घोड़े हैं)।

यौ०—सप्ताश्ववाहन = सूर्य।

सप्तास्र—वि० [सं०] जिसके सात कोण या भुजाएँ हों (को०)।

सप्ताह—संज्ञा पुं० [सं०] १. सात दिनों का काल। हफ्ता। २. कोई यज्ञ या पुण्य कर्म जो सात दिनों में समाप्त हो। ३. भागवत की कथा जो सात ही दिनों में सब पढ़ी या सुनी जाय। (इसका बहुत शुभ फल माना जाता है)।

क्रि० प्र०—बाँचना।—सुनना।

सप्ताह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सातला नामक पौधा जो दवा आदि के काम आता है। सप्तला (को०)।

सप्पन—संज्ञा पुं० [देश०] वक्कम का पेड़।

सप्रज—वि० [सं०] प्रजायुक्त। बाल बच्चोंवाला (को०)।

सप्रज्ञ—वि॰—[सं॰] प्रज्ञा या बुद्धिवाला [को॰]।

सप्रणय—वि॰ [सं॰] प्रणययुक्त। स्नेहयुक्त। स्नेही। मित्रता-पूर्ण [को॰]।

सप्रतिभ—वि॰ [सं॰] दूरदर्शी। प्रतिभावान्। विवेकी।

सप्रतिभय—वि॰ [सं॰] जिसका कोई अनुमान न हो। सहसा आ पड़नेवाला। खतरनाक [को॰]।

सप्रतीवाय—वि॰ [सं॰] मिश्रणयुक्त [को॰]।

सप्रतीश—वि॰ [सं॰] आदरणीय। संभ्रांत [को॰]।

सप्रत्यय—वि॰ [सं॰] १. विश्वास रखनेवाला। विश्वासयुक्त। २. निश्चित। विश्वस्त [को॰]।

सप्रपंच—वि॰ [सं॰ सप्रपञ्च] अनेक प्रकार के इधर उधर के प्रपंचों से युक्त।

सप्रभ—वि॰ [सं॰] १. चमकदार। कांतियुक्त। २. समान कांति या आभावाला [को॰]।

सप्रमाण—वि॰ [सं॰] १. प्रमाण सहित। सबूत के साथ। २. प्रामाणिक। ठीक।

सप्रमाद—वि॰ [सं॰] अनवधानता युक्त। असावधान।

सप्रयास—क्रि॰ वि॰ [सं॰ स+प्रयास] चेष्टापूर्वक। कोशिश के साथ। उ॰—प्राकृतिक दान वे, सप्रयास या अनायास आते हैं सब, सब में है श्रेष्ठ, धन्य मानव।—अनामिका, पृ॰ २३।

सप्रवाद—वि॰ [सं॰] प्रवादयुक्त। जिसका प्रवाद हो।

सप्रश्रय—वि॰ [सं॰] सविनय। अत्यंत आदरपूर्वक। अत्यंत विनय के साथ [को॰]।

सप्रसव—वि॰ [सं॰] एक ही मूल से संबद्ध [को॰]।

सप्रसवा—वि॰ [सं॰] १. गर्भवाली। सगर्भा। गर्भिणी। २. जिसे बच्चे हों। सवत्सा [को॰]।

सप्लाई—संज्ञा स्त्री॰ [अं॰] (व्यवहार या उपयोग के लिये कोई वस्तु) उपस्थित करना। पहुँचाना। मुहैया करना। जैसे,—वे ७ नं॰ घुड़सवार पलटन के घोड़ों के लिये घास दाना सप्लाई किया करते हैं।

क्रि॰ प्र॰—करना।—होना।

२. प्राप्ति। पहुँच। पूर्ति। रसद। दानापानी।

यौ॰—सप्लाई अफसर=पूर्ति विभाग का अधिकारी। सप्लाई आफिस, सप्लाई डिपार्टमेंट, सप्लाई विभाग=पूर्ति या सप्लाई करने का महकमा। पूर्ति कार्यालय।

सप्लायर—संज्ञा पुं॰ [अं॰] वह जो किसी को चीजें पहुँचाने का काम करता है। कोई वस्तु या माल पहुँचाने या मुहैया करनेवाला।

सप्लीमेंट—संज्ञा पुं॰ [अं॰] १. वह पत्र जो किसी समाचारपत्र में अधिक विषय देने के लिये अतिरिक्त रूप से लगाया जाय। अतिरिक्त पत्र। क्रोड़ पत्र। २. किसी वस्तु का अतिरिक्त अंश।

सफ¹—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शफ] दे॰ 'शफ'।

सफ²—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ सफ़] १. पंक्ति। कतार।

क्रि॰ प्र॰—बाँधना।

२. लंबी चटाई। सीतल पाटी। ३. बिछावन। फर्श। बिस्तर। ४. रेखा। लकीर। ५. नमाज पढनेवालों की कतार (को॰)।

यौ॰—सफदर=युद्ध में सैन्यपंक्ति को विदीर्ण करनेवाला। रणशूर। योद्धा। सफबंदी=कतार में करना। पंक्तिबद्ध करना। सफबस्ता=पंक्तिबद्ध। सफशिकन=कतार तोड़नेवाला। पंक्ति को छिन्नभिन्न करनेवाला। वीर।

सफगोल—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ इसबगोल] दे॰ 'इसबगोल'।

सफतालू—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सप्तालु, फ़ा॰ शफ़्तालू] एक पेड़ जिसके गोल फल खाए जाते हैं। सतालू। आड़ू।

विशेष—यह हिंदुस्तान में ठंढी जगहों में होता है। पेड़ मझोले आकार का और लकड़ी लाल मजबूत और सुगंधित होती है। पत्ते लंबे नोकदार तथा कालापन लिए गहरे हरे रंग के होते हैं। पतझड़ के पीछे पत्तियाँ निकलने के पहले ही इसमें फूल लग जाते हैं जो गुलाबी रंग के होते हैं। फल पकने पर कुछ लाल और कुछ हरे रंग के होते हैं और उनके ऊपर महीन महीन रोइयाँ सी होती हैं। बीजों में बादाम की तरह का कड़ा छिलका होता है।

सफन¹—वि॰ [हिं॰ स+अ॰ फ़न] गुण या हुनरवाला। होशियार। उ॰—हाल हजूर बातून बासीन है सफन सर्वंग है यार मेरा।—संत दरिया, पृ॰ ७२।

सफन²—संज्ञा पुं॰ [अ॰ सफ़न] १. मछली या मगर का खुरदरा चमड़ा। २. बसूला।

सफर—संज्ञा पुं॰ [अ॰ सफ़र] १. प्रस्थान। यात्रा। रास्ते में चलना। २. हिजरी सन् का दूसरा मास (को॰)। ३. रास्ते में चलने का समय या दशा। जैसे,—सफर में बहुत सामान नहीं रखना चाहिए।

क्रि॰ प्र॰—करना।—होना।

यौ॰—सफरखर्च=मार्ग व्यय। सफर जल=दे॰ 'बिही'। सफरनामा=यात्रा विवरण। भ्रमण वृत्तांत।

सफर²—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक प्रकार की छोटी चमकीली मछली। सफरी [को॰]।

सफरदाई—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ सपरदाई] दे॰ 'सपरदाई'।

सफरमैना—संज्ञा [अं॰ सैपर माइनर] सेना के वे सिपाही जो सुरंग लगाने तथा खाईं आदि खोदने को आगे चलते हैं।

सफरा—संज्ञा पुं॰ [अ॰ सफ़रा] पित्त।

सफरी¹—संज्ञा पुं॰ [अ॰ सफ़री] सफर में का। सफर में काम आनेवाला। यात्रा के समय का। जैसे,—सफरी बिस्तर।

सफरी²—संज्ञा पुं॰ १. राह खर्च। रास्ते का सामान। २. यात्री। पर्यटक (को॰)। ३. अमरूद। उ॰—श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी। सफरी चिरुआ अरु नय बानी।—सूर (शब्द॰)।

सफरी³—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] एक प्रकार की मछली। सौरी मछली।

सफरोल—संज्ञा पुं० [अ० कैम्फर आयल] कपूर के लाल तेल से तैयार होनेवाली एक दवा या मसाला।

सफल—वि० [सं०] [स्त्री० सफला] १. जिसमें फल लगा हो। फल से जिसका कुछ परिणाम हो। जो व्यर्थ न जाय। सार्थक। युक्त। २. जैसे,—तुम्हारा परिश्रम सफल हो गया। ३. पूरा होना। जैसे,—मनोरथ सफल होना। ४. कृतकार्य। कामयाब। जिसका प्रयोजन सिद्ध हुआ हो।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

५. अंडकोश युक्त। जो बधिया न हो।

सफलक वि० [सं०] जिसके पास फलक या ढाल हो।

सफलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफल होने का भाव। कामयाबी। सिद्धि। २. पूर्णता। ३. सार्थक होना। सार्थकता।

सफला संज्ञा स्त्री० [सं०] पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी जो विशेष रूप से व्रत का दिन है।

सफलित—वि० [सं० सफल] सार्थक। सफलीभूत।

सफलीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफल करना। २. सिद्ध करना। पूर्ण ...

सफलीभूत—वि० [सं०] जो सफल हुआ हो। जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।

सफलोदय—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सफलोदर्क—वि० [सं०] जिसमें सफलता की झलक दिखाई दे [को०]।

सफहा—संज्ञा पुं० [अ० सफ़हह्] १. रुख। तल। सतह। २. वरक। पृष्ठ। पन्ना।

सफा—वि० [अ० सफ़ा] १. साफ। स्वच्छ। निर्मल। २. पाक। पवित्र। उ०—कोई सफा न देखा दिल का।—काष्ठजिह्वा (शब्द०)। ३. जो खुरदुरा न हो। चिकना। बराबर।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सफा—संज्ञा स्त्री० १. स्वच्छता। निर्मलता। २. चमक दमक [को०]।

सफाइन—संज्ञा पुं० [अ० सफ़ाइन, सफीना (=नौका) का बहुवचन] नौकाएँ [को०]।

सफाई—संज्ञा स्त्री० [अ० सफ़ा+ई(प्रत्य०)] १. सफा होने का भाव। स्वच्छता। निर्मलता। २. मैल, कूड़ा, करकट आदि हटाने की क्रिया। जैसे,—मकान की सफाई। ३. अर्थ या अभिप्राय प्रकट होने का गुण। ४. स्पष्टता। चित्त से दुर्भाव आदि का निकलना। मन में मैल न रहना। जैसे,—सामने बातचीत कर लो; दिलों की सफाई हो जाय। ५. कपट या कुटिलता का अभाव। दुराव का न होना। जैसे,—आज उन्होंने बड़ी सफाई से बात की। ६. दोषारोप का हटना। इलजाम का दूर होना। निर्दोषिता। जैसे,—उसने अपनी सफाई के लिये बहुत कुछ कहा। ७. ऋण का परिशोध। कर्ज या हिसाब का चुकता होना। बेबाकी। ८. मामले का निबटारा। निर्णय। ९. खात्मा। समाप्ति (को०)। १०. ऊबड़खाबड़ न रहना। खुरदुरापन का अभाव (को०)। ११. बरबादी। विनाश। तबाही। १२. चिकनापन। स्निग्धता (को०)।

मुहा०—सफाई कर देना = (१) साफ, बेबाक या स्वच्छ कर देना। (२) समाप्त या खत्म कर देना। (३) बरबाद कर देना। सफाई देना = निर्दोषिता प्रमाणित करना। कसूरवार न होने का सबूत देना।

सफाचट—वि० [हिं० सफा+चट] १. एकदम स्वच्छ। बिलकुल साफ। २. जिसपर कुछ जमा या लगा न रह गया हो। जो बिल्कुल चिकना हो। जैसे,—मैदान सफाचट होना। ३. जो जमा या लगा न रहने दिया जाय। जो निकाल, उखाड़ या दूर कर दिया जाय। जैसे,—बाल सफाचट होना। ४. ज़रा सा भी शेष न रहने देना (भोजन आदि)।

सफाया—संज्ञा पुं० [हिं०] १. खत्म होने की स्थिति। समाप्ति। २. विनाश।

क्रि० प्र०—करना। होना।

सफाहत—संज्ञा स्त्री० [अ० सफ़ाहत] कमीनापन। नीचता [को०]।

सफी—वि० [अ० सफ़ी] १. साफ। स्वच्छ। धवल। २. पवित्रात्मा। शुद्ध भावना से युक्त। ३. मित्र। सखा। दोस्त [को०]।

सफीना संज्ञा पुं० [अ० सफ़ीनह्, अं० सब पेना] १. बही। किताब। नोटबुक। २. अदालती परवाना। इत्तलानामा। समन। ३. छोटी कश्ती। नाव। नौका (को०)।

सफीर¹—संज्ञा स्त्री० [अ० सफ़ीर] १. चिड़ियों की आवाज। २. वह सीटी जो पक्षियों को बुलाने के लिये दी जाती है। ३. सीटी।

सफीर²—संज्ञा पुं० एलची। राजदूत।

सफील¹—संज्ञा स्त्री० [अ० फ़सील] पक्की चहारदीवारी। शहरपनाह। परकोटा।

सफील² —संज्ञा स्त्री० [अ० सफ़ील] दे० 'सफीर'।

सफूफ—संज्ञा पुं० [अ० सफ़ूफ़] चूर्ण। बुकनी। फंकी।

सफेद—वि० [फ़ा० सुफ़ेद, मि० सं० श्वेत] १. जो चूने के रंग का हो। जिसपर कोई रंग न हो। धौला। श्वेत। चिट्टा। जैसे,—सफेद घोड़ा। २. जिसपर कुछ लिखा या चिह्न न हो। कोरा। सादा। जैसे,—सफेद कागज।

यौ०—सफेद दाग = श्वेतकुष्ठ। सफेदरेश = बूढ़ा, जिसकी दाढ़ी पक गई हो।

मुहा०—किसी का रंग सफेद पड़ जाना = विवर्णता होना। भय आदि से चेहरे का फीका पड़ जाना। स्याह सफेद = भला बुरा। इष्ट अनिष्ट। जैसे,—स्याह सफेद सब उसी के हाथ है।

सफेदधावी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सफेद+धावी] एक प्रकार का बड़ा पेड़। चकड़ी।

विशेष—यह वृक्ष हिमालय पर पाया जाता है। इसकी लकड़ी की कंघियाँ बनाई जाती हैं। इसके फूलों में सुगंध होती है। इसके पत्ते खाद के काम में आते हैं।

सफेदपलका—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुफ़ेद+हिं० पलक] वह कबूतर जिसके पर कुछ सफेद और कुछ काले हों।

सफेदपोश—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुफ़ेदपोश] १. साफ कपड़े पहननेवाला। २. शिक्षित और कुलीन। भलामानस। शिष्ट। ३. अमीर न होते हुए भी भले व्यक्ति की तरह रहनेवाला। ४. वह जो केवल सफेद कपड़े पहन कर शिष्टता का प्रदर्शन करता हो और जो वस्तुत: शिक्षित और भला आदमी न हो।

सफेदा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुफ़ेदा] १. जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा लोहे, लकड़ी आदि पर रँगाई के काम में आता है। २. सफेद चमड़ा जो जूते आदि बनाने के काम में आता है। ३. आम का एक भेद जो लखनऊ के आसपास होता है। ४. खरबूजे का एक भेद। ५. पंजाब और काश्मीर में होनेवाला एक बहुत ऊँचा पेड़।

विशेष—यह वृक्ष खंभे की तरह एकदम सीधा ऊपर जानेवाला पेड़ है जिसकी छाल का रंग सफेद होता है। इसकी लकड़ी सजावट के सामान बनाने के काम में आती है।

सफेदार—संज्ञा पुं० [देश०] सीसम का पेड़।

सफेदी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुफ़ैदी] १. सफेद होने का भाव। श्वेतता। धवलता।

मुहा०—सफेदी आना = बाल सफेद होना। बुढ़ापा आना।

२. दीवार आदि पर सफेद रंग या चूने की पोताई। चूनाकारी।

क्रि० प्र०—करना।—फेरना।

३. सूर्य निकलने के पहले का उज्ज्वल प्रकाश जो पूर्व दिशा में दिखाई पड़ता है।

मुहा०—(सुबह की) सफेदी फैलना = प्रभात होना। सूर्य का प्रकाश विकीर्ण होना।

सफेन—वि० [सं०] झागदार। फेन युक्त। फेनिल।

सफेनपुंज—संज्ञा पुं० [सं० सफेनपुञ्ज] वह जो घने फेन से भरा हुआ या आच्छादित हो। जैसे, समुद्र [को०]।

सफ्क—संज्ञा पुं० [अ० सफ़्क] हिंसन। रक्तपात। हिंसा [को०]।

सफ्तालू—संज्ञा पुं० [हिं० सफतालू] दे० 'सफतालू'।

सफ्फाक—वि० [अ० सफ़्फ़ाक] १. निष्ठुर। बेरहम। २. हिंसक। ३. अत्याचारी [को०]।

सफ्फाकी—संज्ञा स्त्री० [अ० सफ़्फ़ाकी] । ३ निष्ठुरता। क्रूरता। बेरहमी। २. अत्याचार। जुल्म। ३. हिंसा। रक्तपात [को०]।

सबंध—वि० [सं० सबन्ध] जिसके लिये बंध या प्रतिभू, जमानत आदि दी गई हो [को०]।

सबंधक—वि० [सं० सबन्धक] दे० 'सबंध'।

सबंधु[१]—वि० [सं० सबन्धु] १. मित्रयुक्त। समित्र। २. एक ही कुल या वंश का। ३. सन्निकट संबंधी। नजदीकी रिश्तेदार [को०]।

सबंधु[२]—संज्ञा पुं० नातेदार। रिश्तेदार। सबंधी [को०]।

सब[१]—वि० [सं० सर्व, प्रा० सब्ब] १. जितने हों, वे कुल। समस्त। जैसे,—(क) इतना सुनते ही सब लोग वहाँ से चल गए। **(ख) सब किताबें आलमारी में रख दो।**

मुहा०—सब मिलाकर = जितना हो, उतना सब। कुल।

२. पूरा। सारा। समस्त।

सब[२]—वि० [अं०] छोटा। गौण। अप्रधान।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग प्राय: यौगिक शब्दों के आरंभ में होता है। जैसे,—सबइंसपेक्टर, सबजज, सबओवरसियर, सब आफिस।

सबक—संज्ञा पुं० [फ़ा० सबक़] १. उतना अंश जितना एक बार में पढ़ाया जाय। पाठ।

क्रि० प्र०—देना।—पढ़ना। —पढ़ाना।—लेना।

२. शिक्षा। नसीहत। ३. अनुभव। तजुर्बा।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

सबकत—संज्ञा स्त्री० [अ० सबक़त] किसी विषय में औरों की अपेक्षा आगे बढ़ जाना। विशेषता प्राप्त करना।

क्रि० प्र०—करना।—ले जाना।

सबच्छी(पु)—वि० [सं० सवत्सा] बछड़ेवाली। बछड़े से युक्त। बछड़े के साथ। उ०—दीधो सोनो सोलहो, दीधी सुरह सबच्छी गाई।—बी० रासो, पृ० २५।

सबछ(पु) वि० [सं० सवत्स, सबच्छ] बछड़ेवाली। बछड़ासहित। उ०—द्वै लख धेनु सबछ बहु दूधी। प्रथम प्रसूता सुंदर सूधी।—नंद० ग्रं०, पृ० २३४।

सबज—वि० [फ़ा० सब्ज़] दे० 'सब्ज'।

सबजज—संज्ञा पुं० [अं०] छोटा जज। सदराला। सिविल जज।

सबडिवीजन—संज्ञा पुं० [अं० सबडिवीजन] किसी जिले का वह छोटा भूभाग जिसके अंतर्गत बहुत से गाँव और कसबे हों। परगना। जैसे, चाँदपुर सब डिवीजन।

विशेष—कई सब डिवीजनों का एक जिला होता है अर्थात् हर जिला कई सब डिवीजनों में बँटा हुआ होता है।

सबडिवीजनल—वि० [अं० सबडिवीजनल] सबडिवीजन का। उस भूभाग का जिसके अंतर्गत बहुत से गाँव और कसबे हों। सबडिवीजन संबंधी। जैसे,—सबडिवीजनल अफसर।

सबद(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शब्द] १. शब्द। आवाज। उ०—हुता जो सुन्नम सुन्न, नाँव ठाँव ना सुर सबद। तहाँ पाप नहिं पुन्न, महमद आपुहि आपु महँ।—जायसी (शब्द०)। २. [स्त्री० सबदी] किसी महात्मा की वाणी या भजन आदि। जैसे,—कबीरजी के सबद, दादूदयाल के सबद।

सबनमी(पु)—वि० [फ़ा० शबनम] जो शबनम की तरह एकदम श्वेत और महीन हो। उ०—धवल अटारी लखि खरी नवल बधू हरि दंग। सादी सारी सबनमी लसत गुलाबी रंग।—स० सप्तक, पृ० २३४।

सबब—संज्ञा पुं० [अ०] १. कारण। वजह। मूल कारण। हेतु। जैसे,—उनके नाराज होने का तो मुझे कोई सबब नहीं मालूम। २. द्वार। साधन। जैसे,—बिना किसी सबब के वहाँ पहुँचना **कठिन है। ३. दलील। तर्क।**

सबमरीन—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार की नाव जो जल के अंदर चलती है और युद्ध के समय शत्रु के जहाजों को नष्ट करने के काम में आती है। गोताखोर जहाज। पनडुब्बी।

विशेष—यह घंटों जल के अंदर रह सकती है और ऊपर से दिखाई नहीं देती। हवा, पानी लेने के लिये इसे ऊपर आना पड़ता है। यह 'टारपीडो' नामक भयंकर शस्त्र साथ लिए रहती है और घात लगते ही शत्रु के जहाज पर टारपीडो चलाती है। यदि टारपीडो ठिकाने पर लगा तो जहाज में बड़ा सा छेद हो जाता है।

सबर(पु)[1]—वि० [सं० सबल] ताकतवर। बली। सबल।

सबर[2]—संज्ञा पुं० [अ० सब्र] दे० 'सब्र'।

सबरा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सब] सब। कुल। तमाम।

सबरी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शबरी] दे० 'शबरी'।

सबरी[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी = (कुदाल,)] सेंध मारने में चोरों द्वारा प्रयुक्त लगभग हाथ भर लंबा एक औजार।

सबल[1]—वि० [सं०] १. जिसमें बहुत बल हो। बलवान्। बलशाली। ताकतवर। जैसे,—जो सबल होगा वह निर्बलों पर शासन करेगा। २. जिसके साथ सेना हो। फौजवाला।

सबल[2]—संज्ञा पुं० वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम [को०]।

सबल[3]—संज्ञा पुं० [अ०] १. अन्न की बाल। अनाज की बाल। २. एक नेत्र रोग। मोतियाबिंद [को०]।

सबलि[1]—वि० [सं०] १. जिसपर राजकर लगता हो। २. बलिकर्म से संबद्ध [को०]।

सबलि[2]—संज्ञा पुं० (बलि चढ़ाने के लिये उपयुक्त) संध्या वेला। गोधूलि [को०]।

सबसिडियरी जेल—संज्ञा स्त्री० [अं०] हवालात।

सबा—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह हवा जो प्रभात और प्रातः काल के समय पूर्व की ओर से चलती है। उ०—बराबरी का तेरी गुल ने जब खयाल किया। सबा ने मार थपेड़ा मुँह उसका लाल किया। —कविता कौ०, भा० ४, पृ० ६७।

यौ०—सबाखराम, सबादम = वह घोड़ा जो बहुत तेज भागता हो।

सबात—संज्ञा स्त्री० [अ०] स्थायी या दृढ़ होने का भाव। स्थायित्व। दृढ़ता [को०]।

सबाध—वि० [सं०] कष्ट पहुँचानेवाला। हानिकारक। पीड़क [को०]।

सबार[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सबेरा] दे० 'सबेरा'।

सबार[2]—क्रि० वि० जल्दी। शीघ्र। उ०—होइ भगीरथ करु तहँ फेरा। जाहि सबार मरन कै बेरा।—जायसी (शब्द०)।

सबारै—संज्ञा पुं०, क्रि० वि० [हिं० सबेर] दे० 'सबार'।

सबार्डिनेट जज—संज्ञा पुं० [अं०] दीवानी अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे हो। छोटा जज। सदराला। सिविल जज।

सबाष्प—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सबाष्पा] १. जिसकी आँखों में आँसू हों। २. जिसमें से भाप निकल रही हो [को०]।

सबाष्पक—वि० [सं०] १. अश्रुयुक्त (नेत्र)। २. जिसमें से भाप निकल रही हो [को०]।

सबिंदु[1]—वि० [सं० सबिन्दु] बुँदकीदार। बिंदुसहित। बिंदु से युक्त [को०]।

सबिंदु[2]—संज्ञा पुं० एक पर्वत का नाम [को०]।

सबी(पु)—संज्ञा स्त्री० [अ० शबीह] चित्र। तसबीर। उ०—लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर। भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर।—बिहारी र०, दो० ३४७।

सबीज—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सबीजा] १. बीजाक्षर से युक्त। उ०—लोग वियोग विषम विष दागे। मंत्र सबीज सुनत जनु जागे।—मानस, २।१८४। २. जिसमें बीआ हो। जैसे, सबीज फल (को०)। ३. कीटाणुयुक्त (को०)।

सबील—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रास्ता। मार्ग। सड़क। २. उपाय। तरकीब। यत्न। जैसे,—वहाँ पहुँचने की कोई सबील निकालनी चाहिए। ३. वह स्थान जहाँपर पथिकों आदि को धर्मार्थ जल या शरबत पिलाया जाता है। पौसरा।

क्रि० प्र०—पिलाना।—रखना।—लगाना।

सबीह[1]—वि० [अ०] १. खूब गोरा। अत्यंत गौर वर्ण का।

सबीह[2]—संज्ञा पुं० [अ० शबीह] दे० 'शबीह'।

सबीह(पु)[3] वि० [सं० सभीः, प्रा० सबीह] भययुक्त। भयालु। भयान्वित।

सबू—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुबू] मिट्टी का घड़ा। मटका। गगरी।

यौ०—सबूसाज = कुंभकार। कुम्हार।

सबूत—संज्ञा पुं० [अ० सुबूत] दे० 'सुबूत'।

सबूर—वि० [अ०] माफ करनेवाला। क्षमाशील। २. धैर्ययुक्त। धीरज या सब्र करनेवाला [को०]।

सबूरा—संज्ञा पुं० [अ० सब्र] काठ या चमड़े आदि का बना हुआ एक प्रकार का लंबा लिंगाकार खंड जिससे विधवा या पतिहीना स्त्रियाँ अपनी कामवासना तृप्त करती हैं। काष्ट या चर्मनिर्मित लिंग। (मुसल० स्त्रि०)।

सबूस—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] भूसी। तुष। चोकर [को०]।

सबूह, सबूही—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सबेरे पी जानेवाली मदिरा। तड़के पी जानेवाली शराब [को०]।

सबेरा—संज्ञा पुं० [सं० सु + हिं० बेरा] सुंदर समय। प्रातःकाल। सूर्योदय का समय।

सब्ज[1]—वि० [फ़ा० सब्ज] १. कच्चा और ताजा (फल, फूल आदि)।

मुहा०—सब्ज बाग दिखलाना = अपना काम निकालने या फँसाने के लिये बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना।

२. हरा। हरित। (रंग)। ३. शुभ। उत्तम। जैसे,—सब्जबख्त = भाग्यशाली।

यौ०—सब्जपरी = (१) इंदर सभा की नायिका। (२) ताजापन या मस्ती देनेवाली, मदिरा। शराब (लाक्ष०)। सब्जपा = दे०

'सब्जकदम'। सब्जपुल = आसमान। सब्जपोश = हरी पोशाक पहने हुए। सब्जफोड़ा = एक प्रकार का कबूतर। सब्जबख्त। सब्जमुखी = कबूतर की एक जाति। सब्जरंग = (१) हरे रंग का। (२) सलोना। साँवला। सब्जरंगी = सलोनापन। सब्जवार = मुर्गी की एक जाति।

सब्जकदम—वि० [फ़ा० सब्ज़ + अ० क़दम] जिसके कहीं पहुँचते ही कोई अशुभ घटना हो। जिसके चरण अशुभ हों।

विशेष—इस शब्द में 'सब्ज' का प्रयोग व्यंग्य रूप से होता है।

सब्जा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सब्ज़ह्] १. हरी घास और वनस्पति आदि। हरियाली।

क्रि० प्र०—लहलहाना।

२. भंग। भाँग। विजया। ३. पन्ना नामक रत्न। ४. स्त्रियों का कान में पहनने का एक प्रकार का गहना। ५. घोड़े का एक रंग जिसमें सफ़ेदी के साथ कुछ कालापन भी मिला होता है। ६. वह घोड़ा जो इस रंग का हो। ७. एक जाति का आम। ८. खरबूजे की एक जाति।

सब्जी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सब्ज़ी] १. हरी घास और वनस्पति आदि। हरियाली। २. हरी तरकारी। ३. खाने के लिये तैयार की हुई तरकारी। ४. भंग। भाँग। विजया।

यौ०—सब्जीखोर = शाकाहारी। सब्जीफरोश = हरी तरकारी बेचनेवाला। सब्जीमंडी = वह जगह जहाँ सब्जी और ताजे फल बिकते हों।

सब्जेक्ट—संज्ञा पुं० [अं०] १. प्रजा। रैयत। जैसे,—ब्रिटिश सब्जेक्ट। २. विषय। मजमून।

सब्जेक्ट कमिटी संज्ञा स्त्री० [अं०] दे० 'विषय निर्वाचनी समिति'।

सब्त—संज्ञा पुं० [अ०] १. शनिवार। २. लेख [को०]।

सब्बाक—संज्ञा पुं० [अ०] सुनार। स्वर्णकार [को०]।

सब्र—संज्ञा पुं० [अ०] संतोष। धैर्य।

क्रि० प्र०—आना।—करना।—रखना।

मुहा०—सब्र करना = (१) धीरज धरना। ठहरना। रुकना। (२) जल्दबाजी या उतावली न करना। सब्र देना = धैर्य बँधाना। ढाँढ़स देना। सब्र की सिल छाती पर रखना = सबकुछ चुपचाप सह लेना। (किसी का) सब्र पड़ना = किसी के धैर्यपूर्वक सहन किए हुए कष्ट का प्रतिफल होना। जैसे,—तुमने उस गरीब का मकान ले लिया; तुमपर उसका सब्र पड़ा है जिससे तुम्हारा लड़का मर गया। सब्र कर बैठना या लेना = कोई हानि या अनिष्ट होने पर चुपचाप उसे सह लेना। सब्र समेटना = किसी का शाप लेना। ऐसा काम करना जिसमें किसी का शाप पड़े।

सब्रह्म, सब्रह्मक—वि० [सं०] १. ब्रह्मा से युक्त। ब्रह्मा के साथ। २. ब्रह्मलोक सहित [को०]।

सब्रह्मचर्य—संज्ञा पुं० [सं०] (एक ही गुरु से) साथ साथ पढ़ना। सहाध्ययन [को०]।

सब्रह्मचारी—संज्ञा पुं० [सं० सब्रह्मचारिन्] १ वे ब्रह्मचारी जिन्होंने एक साथ एक गुरु से एक प्रकार की शिक्षा प्राप्त की हो। २ एक समान दुःख से ग्रस्त व्यक्ति। ३. एक सदृश या एक जैसा आदमी। ४. वेदादि की एक ही शाखा का अध्ययन करनेवाले छात्र। ५. साथी। मित्र [को०]।

सभंग—वि० [सं० सभङ्ग] जिसमें टुकड़े या खंड हों [को०]।

यौ०—सभंगश्लेष = श्लेष अलंकार का एक प्रकार, जिसमें शब्द को खंड करके दूसरा अर्थ निकाला जाता है। दे० 'श्लेष'।

सभक्ष—वि० [सं०] साथ खानेवाला। सहभोजी [को०]।

सभय—वि० [सं०] १. भययुक्त। उ०—सचिव सभय सिख देइ न कोई।—मानस, १। २. डर उत्पन्न करनेवाला। भयकारक खतरनाक (को०)।

सभर्तृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा। सुहागिन।

सभस्मा—वि० [सं० सभस्मन्] जिसने भस्म लगाया हो। भस्म युक्त।

यौ०—सभास्माद्विज = शैव या पाशुपत मतावलंबी।

सभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्थान जहाँ बहुत से लोग मिलकर बैठे हों। परिषद्। गोष्ठी। समिति। मजलिस। जैसे,—विद्वानों की सभा में बैठा करो। २. वह स्थान जहाँ किसी एक विषय पर विचार करने के लिये बहुत से लोग एकत्र हों। ३. वह संस्था या समूह जो किसी विषय पर विचार करने अथवा कोई काम सिद्ध करने के लिये संघटित हुआ हो। ४. सामाजिक। सभासद। ५. जूआ। द्यूत। ६. घर। मकान। ७. समूह। झुंड। ८. प्राचीन वैदिक काल की एक संस्था जिसमें कुछ लोग एकत्र होकर सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर विचार करते थे। ९. न्यायपीठ। न्यायालय (को०)। १०. अतिथिशाला। धर्मशाला। पथिकालय (को०)। ११. भोजनालय (को०)।

यौ०—सभागत = जो सभा या न्यायपीठ में उपस्थित हो। सभाचातुरी, सभा- चातुर्य = सभा समाज में व्यवहार करने की पटुता। सभानायक = दे० 'सभापति'। सभापूजा = नाटक की प्रस्तावना में दर्शकों के प्रति संमान व्यक्त करना। सभाप्रवेशन = न्यायपीठ के समक्ष जाना। सभामंडन = सभागृह या सभाकक्ष को सजाना। सभामंडप = सभागृह। सभा का कक्ष। सभायोग्य = समाज या गोष्ठी के उपयुक्त। सभावशकर = सभा, समाज या गोष्ठी को प्रभावित या वशीभूत करनेवाला।

सभाकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सभा करता हो। सभा करनेवाला। २. वह जो सभाकक्ष बनाता हो। सभागृह का बनानेवाला (को०)।

सभाग—वि० [सं०] १. हिस्सेदार। जिसका भाग या हिस्सा हो। २. सार्वजनीन। सर्वजनसुलभ। सामान्य। ३. सभा में जानेवाला [को०]।

सभागाⓅ—वि० [सं० स + भाग्य] [वि० स्त्री० सभागी] १ भाग्यवान्। खुशकिस्मत। तकदीरवर। उ०—ओहि छुइ पवन बिरिछ जेहि

लागा। सोइ मलयगिरि भएउ सभागा।—जायसी (शब्द०)। २. सुंदर। रूपवान्। उ०—आए गुपुत होइ देखन लागी। वह मूरति कस सतो सभागी।—जायसी (शब्द०)।

सभागृह—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ किसी सभा या समिति का अधिवेशन होता हो। बहुत से लोगों के एक साथ बैठने का स्थान। मजलिस की जगह।

सभाचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. सभा, गोष्ठी या समाज का रीति-रिवाज। समाज का आचार। २. धर्मसभा की पद्धति या नियम कायदा [को०]।

सभाजन—संज्ञा पुं० [सं०] अपने मित्रों, संबंधियों आदि के आने पर उनसे गले मिलना, उनका कुशल मंगल पूछना और स्वागत या शिष्टाचार करना। २. सेवा (को०)। ३. विनम्रता। शिष्टता (को०)।

सभाजित—वि० [सं०] १. आदृत। संमानित। प्रसन्न। तुष्ट। २. प्रशंसित। जिसकी प्रशस्ति की गई हो [को०]।

सभाज्य—वि० [सं०] आदरणीय। संमान करने योग्य [को०]।

सभानर—संज्ञा पुं० [सं०] १. हरिवंश के अनुसार कक्ष के एक पुत्र का नाम। २. भागवत के अनुसार अणु के एक पुत्र का नाम।

सभापति—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सभा का प्रधान या नेता बनकर उसका कार्य चलाता हो। सभा का मुखिया। मीर मजलिस। २. वह जो जुए का अड्डा चलाता हो। द्यूतगृह का संचालक [को०]।

सभापरिषद—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुत से लोगों का एकत्र होकर साहित्य या राजनीति आदि से संबंध रखनेवाले किसी विषय पर विचार करना। २. वह स्थान जहाँ इस प्रकार के कार्य के लिये लोग एकत्र होते हैं। सभागृह। सभाभवन।

सभापर्व—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के एक पर्व का नाम।

सभापाल—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सार्वजनिक भवन अथवा सभाभवन का रक्षक हो [को०]।

सभारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भारयुक्तता। २. अधिकता। आधिक्य। पूर्णता। १. अभ्युदय। वृद्धि [को०]।

सभार्य, सभार्यक—वि० [सं०] भार्या के साथ। भार्यानुगत। सपत्नीक।

सभावन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सभावी—संज्ञा पुं० [सं० सभाविन्] वह जो द्यूतगृह का प्रधान हो। जूएखाने का मालिक।

सभासद—संज्ञा पुं० [सं० सभासद्] १. वह जो किसी सभा में संमिलित हो और उसमें उपस्थित होनेवाले विषयों पर संमति देने का अधिकार रखता हो। सदस्य। सामाजिक। पार्षद। २. वह जो किसी सभा या जलसे का सहायक हो (को०)। ३. दे० 'असेसर' (को०)।

सभासाह—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने वादविवाद या शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त की हो [को०]।

सभास्तार—संज्ञा पुं० [सं०] सभासद्। सदस्य।

सभिक, सभीक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो लोगों को जूआ खेलाता हो। जूएखाने का मालिक।

सभीत(पु)—वि० [सं० सभीति] दे० 'सभीति'। उ०—सचिव सभीत सकै नहि पूछी।—मानस, २।३२।

सभीति—वि० [सं०] भयग्रस्त। डरवाला। भययुक्त।

सभेय—संज्ञा पुं० [सं०] सभा का सदस्य। सभासद। सभ्य।

सभोचित—संज्ञा पुं० [सं०] पंडित। विद्वान्।

सभ्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. जो किसी सभा में संमिलित हो और उसके विचारणीय विषयों पर अपनी संमति दे सकता हो। सभासद। सदस्य। वह जिसका व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन श्रेष्ठ हो। वह जिसका आचार व्यवहार और रहन सहन उत्तम हो। कुलीन व्यक्ति। वह जिसमें तहजीब हो। भला आदमी। ३. न्यायाधीश को सलाह देनेवाला जनप्रतिनिधि। दे० 'असेसर'। ४. द्यूतगृह का संचालक। ५. द्यूतगृह के संचालक का सेवक (को०)। ६. पाँच पवित्र अग्नियों में से एक (को०)।

सभ्य[2]—वि० १. सभा से सबंध रखनेवाला। २. सभा समाज के योग्य। ३. संस्कृत। परिष्कृत। शिष्ट। ४. सुशील। विनम्र। ५ विश्वस्त। ईमानदार [को०]।

सभ्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सभ्य होने का भाव। सदस्यता। २. व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की वह अवस्था जिसमें लोगों का आचार व्यवहार बहुत सुधरकर अच्छा हो चुका हो। सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था। ३. भलमनसाहत। शराफत। जैसे,—जरा सभ्यता का व्यवहार करना सीखो। ५. किसी भी काल या युग का सामाजिक जीवन या व्यवहार। संस्कृति। (अं० कल्चर)। जैसे—मोहनजोदड़ो सभ्यता, द्रविड़ सभ्यता।

सभ्येतर—वि० [सं०] सभ्य से इतर या भिन्न। जो सभ्य न हो। असभ्य। गँवार। जंगली [को०]।

सभ्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सभ्यता' [को०]।

समंक[1]—वि० [सं० समङ्क] एक समान प्रतीक या चिह्नों को धारण करनेवाला। समान चिह्नवाला [को०]।

समंक[2]—संज्ञा पुं० १. हुक या अंकुश। २. पीड़ा। कचट। दर्द। (लाक्ष०)। ३. खेती को नष्ट करनेवाला पशु [को०]।

समंग[1]—वि० [सं० समङ्ग] जिसके सभी अंग या अवयव पूर्ण हों। सर्वांगयुक्त।

समंग[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार की क्रीड़ा [को०]।

समंगल—वि० [सं० समङ्गल] मंगलयुक्त। शुभ। मंगलमय [को०]।

समंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० समङ्गा] १. मजीठ। २. लाजवंती। लजाधुर। ३. वाराहक्रांता। गेंठी। ४. बाला।

समंगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० समङ्गिनी] बौद्धों की, बोधिवृक्ष की एक देवी।

समंचन—संज्ञा पुं० [सं० समञ्चन] १. आकर्षण। झुकाना। नवाना। २. आकुंचन [को०]।

समंजन¹—वि० [सं० समञ्जन] एक साथ मिलनेवाला। संयुक्त करनेवाला [को०]।

समंजन²—संज्ञा पुं० लेपन। विलेपन। अभ्यंजन [को०]।

समंजस¹—वि० [सं० समञ्जस] १. उचित। ठीक। वाजिब। २. जिसे किसी बात का अभ्यास हो। अभ्यस्त। ३. सही। सच। यथार्थ (को०)। ४. स्पष्ट। बोधगम्य (को०)। ५. स्वस्थ (को०)। ६. अच्छा। नेक (को०)।

समंजस²—संज्ञा पुं० १. पात्रता। औचित्य। योग्यता। २. यथार्थता। ३. सत्यकथन। सचाई। सत्यता। ४. समानता। ५. उपयुक्त या ठीक प्रमाण [को०]।

समंठ—संज्ञा पुं० [सं० समण्ठ] वे फल जिनकी तरकारी बनती हो। तरकारी के काम आनेवाले फल। जैसे,—पपीता, ककड़ी आदि। २ गंडीर। पोय (को०)।

समंत¹—संज्ञा पुं० [सं० समन्त] सीमा। प्रांत। किनारा। सिरा।

समंत²—वि० १. समस्त। सब। कुल। २. हर दिशा में मौजूद। विश्वव्यापी (को०)।

समंतकुसुम—संज्ञा पुं० [सं० समन्तकुसुम] ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

समंतगंध—संज्ञा पुं० [सं० समन्तगन्ध] बौद्धों के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

समंतदर्शी¹—वि० [सं० समन्तदर्शिन्] जिसे सब कुछ दिखाई देता हो। सर्वदर्शी।

समंतदर्शी²—संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का एक नाम।

समंतदुग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं० समन्तदुग्धा] स्नुही। थूहर।

समंतनेत्र—संज्ञा पुं० [सं० समन्तनेत्र] एक बोधिसत्व का नाम।

समंतपंचक—संज्ञा पुं० [सं० समन्तपञ्चक] कुरुक्षेत्र का एक नाम।

विशेष—कहते हैं कि एक बार परशुराम ने समस्त क्षत्रियों को मारकर उनके लहू से यहाँ पाँच तालाब बनाए थे। और उन्हीं में उन्होंने लहू से अपने पिता का तर्पण किया था। तभी से इस स्थान का नाम समंतपंचक पड़ा।

समंतपर्यायी—वि० [सं० समन्तपर्यायी] सबका अंतर्भाव करनेवाला। सबको अपने में समेटनेवाला [को०]।

समंतप्रभ—संज्ञा पुं० [सं० समन्तप्रभ] एक बोधिसत्व का नाम।

समंतप्रभास—संज्ञा पुं० [सं० समन्तप्रभास] गौतम बुद्ध का एक नाम।

समंतप्रसादिक—संज्ञा पुं० [सं० समन्तप्रसादिक] एक बोधिसत्व का नाम।

समंतप्रासादिक—वि० [सं० समन्तप्रासादिक] जो सर्वत्र सहायता करने में समर्थ या सक्षम हो [को०]।

समंतभद्र—संज्ञा पुं० [सं० समन्तभद्र] गौतम बुद्ध का एक नाम।

समंतभद्रक—संज्ञा पुं० [सं० समन्तभद्रक] एक प्रकार का लंबा कंबल [को०]।

समंतभुज—संज्ञा पुं० [सं० समन्तभुज्] अग्नि।

समंतर—संज्ञा पुं० [सं० समन्तर] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम। २. इस देश का निवासी।

समंतरश्मि—संज्ञा पुं० [सं० समन्तरश्मि] एक बोधिसत्व का नाम।

समंतालोक—संज्ञा पुं० [सं० समन्तालोक] ध्यान करने का एक प्रकार।

समंतावलोकित—संज्ञा पुं० [सं० समन्तावलोकित] एक बोधिसत्व का नाम।

समंत्र—वि० [सं० समन्त्र] मन्त्रयुक्त। मंत्रों से युक्त। [को०]।

समंत्रक—वि० [सं०] १. दे० 'समंत्र'। २. इंद्रजाल का ज्ञाता [को०]।

समंत्रिक—वि० [सं० समन्त्रिक] सचिव अमात्यादि से युक्त [को०]।

समंद—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह बादामी रंग का घोड़ा जिसकी अयाल, दुम और पुट्ठे काले हों। उ०—नील समंद चाल जग जाने। हाँसल भौंर गियाह बखाने। —जायसी (शब्द०)। २. घोड़ा। अश्व।

समंदर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक कीड़ा जिसकी उत्पत्ति अग्नि से मानी जाती। २. समुद्र [को०]।

सम्—अव्य० [सं०] दे० 'सं'।

सम¹—वि० [सं०] १. समान। तुल्य। बराबर। २. सब। कुल। समस्त। पूरा। तमाम। ३. जिसका तल ऊबड़ खाबड़ न हो। चौरस। ४. (संख्या) जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे। जूस। ५. एक ही। वही। अभिन्न (को०)। ६. निष्पक्ष। तटस्थ। उदासीन। ७. ईमानदार। खरा (को०)। ८. भला। सद्गुणसंपन्न (को०)। ९. सामान्य। मामूली (को०)। १०. उपयुक्त। यथार्थ। ठीक (को०)। ११. मध्यवर्ती। बीच का। १२. सीधा (को०)। १३. जो न बहुत अच्छा और न बहुत बुरा हो। मध्यम श्रेणी का (को०)।

यौ०—समचक्रवाल = वृत्त। समचतुरश्र, समचतुर्भुज, समचतुष्कोण = जिसके चारो कोण समान हों। समतीर्थक = जिसमें ऊपर तक जल भरा हो। लबालब पानी भरा हुआ। समतुला = समान मूल्य। समतुलित = जिसका भार समान हो। समतोलन = संतुलन। तराजू के दोने पलड़े बराबर रखना। समान तौलना। समभाग। समभूमि।

सम²—संज्ञा पुं० १. वह राशि जो सम संख्या पर पड़े। दूसरी, चौथी, छठी आदि राशियाँ। वृष, कर्कट, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन ये छह् राशियाँ।

यौ०—समक्षेत्र = नक्षत्रों की एक विशेष स्थिति।

२. गणित में वह सीधी रेखा जो उस अंक के ऊपर दी जाती है जिसका वर्गमूल निकालना होता है। ३. संगीत में वह स्थान जहाँ गाने बजानेवालों का सिर या हाथ आपसे आप हिल जाता है।

विशेष—यह स्थान ताल के अनुसार निश्चित होता है। जैसे, तिताले में दूसरे ताल पर और चौताल में पहले ताल पर सम होता है। वाद्यों का आरंभ और गीतों तथा वाद्यों का अंत

इसी सम पर होता है। परंतु गाने बजाने के बीच बीच में भी सम बराबर आता रहता है।

४. साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग या संबंध का, कारण के साथ कार्य की सारूप्यता का, तथा अनिष्टबाधा के बिना ही प्रयत्नसिद्धि का वर्णन होता है। यह विषमालंकार का बिलकुल उलटा है। उ०—(क) जस दूलह तस बनी बराता। कौतुक विविध होहिं मगु जाता। (ख) चिरजीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गँभीर। को कहिए वृषभानुजा वे हलधर के बीर। ५. समतल भूमि। चौरस मैदान (को०)। ६. याम्योत्तर रेखा अर्थात् दिक्चक्र, आकाश-वृत्त को विभाजित करनेवाली रेखा का मध्य बिंदु (को०)। ७. समान वृत्ति। समभाव। समचित्तता (को०)। ८. तुल्यता। सादृश्य। समानता (को०)। ९. तृणाग्नि (को०)। १०. धर्म के एक पुत्र का नाम (को०)। ११. धृतराष्ट्र का एक पुत्र (को०)। ११. उत्तम स्थिति। अच्छी दशा (को०)।

सम³—संज्ञा पुं० [अ०] विष। जहर। सम्म। उ०—सम खायँगे पर तेरी वसम हम न खायँगे।

सम(पु)⁴—संज्ञा पुं० [सं० शम] दे० 'शम'। उ०—तापस सम दम दया निधाना। परम रय पथ परम सुजाना।—मानस, १।४४।

समकक्ष—वि० [सं०] बराबरी का। समान। तुल्य। जैसे,—दर्शन शास्त्र में वे तुम्हारे समकक्ष हैं।

समकक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बराबरी। तुल्यता (को०)।

समकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कन्या जो विवाह के योग्य हो गई हो। ब्याहने लायक लड़की।

समकर—वि० [सं०] १. मकर आदि समुद्री जंतुओं से युक्त। २. उचित रूप में महसूल लगानेवाला (को०)।

समकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव का एक नाम। २. गौतम बुद्ध का एक नाम। ३. ज्यामिति में किसी चतुर्भुज के आमने सामनेवाले कोणों के ऊपर की रेखाएँ।

समकर्मा—वि० [सं० समकर्मन्] समान पेशेवाला।

समकाल—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही काल या समय। समान क्षण (को०)।

समकालीन—वि० [सं०] जो (दो या कई) एक ही समय में हों। एक ही समय में होनेवाले। जैसे,—तुलसीदासजी जहाँगीर के समकालीन थे।

समकृत—संज्ञा पुं० [सं०] कफ। श्लेष्मा।

समकोटिक—वि० [सं०] सुडौल। (रत्न) समान पहल या कोणवाला (हीरा) (को०)।

समकोण—वि० [सं०] (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके आमने सामने के दो कोण समान हों।

समकोल—संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

समकोश—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम।

समक्न—वि० [सं०] १. जानेवाला। गंता। २. एक साथ जानेवाला। एक काल में गमन करनेवाला। ३. नम्र। झुका हुआ (को०)।

समक्रम—वि० [सं०] जिसका पादविक्षेप समान दूरी पर पड़े। चलने में जिसके कदम समान दूरी पर पड़ें (को०)।

समक्रिय—वि० [सं०] समान क्रियाएँ या कार्य करनेवाला (को०)।

समक्वाथ—संज्ञा पुं० [सं०] वह क्वाथ या काढ़ा जिसका पानी आदि जलकर आठवाँ भाग रह जाय।

समक्ष¹—अव्य० [सं०] आँखों के सामने। सामने। जैसे,—अब वह कभी आपके समक्ष न आवेगा।

समक्ष²—वि० जो आँखों के सामने हो रहा है। प्रत्यक्ष (को०)।

समक्षता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दृश्यता। प्रत्यक्षता। गोचरता (को०)।

समखात—संज्ञा पुं० [सं०] घन के रूप में की गई खुदाई। वह खुदाई जिसकी लंबाई, चौड़ाई और गहराई समान हो (को०)।

समगंधक—संज्ञा पुं० [सं० समगन्धक] नकली धूप।

समक्षदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] १. आँखों देखा प्रमाण या सबूत। २. आखों देखना। प्रत्यक्ष दर्शन (को०)।

समगंधिक—संज्ञा पुं० [सं० समगन्धिक] १. वह जिसमें समान गंध हो। २. उशीर। खस।

समग—संज्ञा पुं० [अ० समग़] गोंद (को०)।

समगति—संज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा (को०)।

समग्ग(पु)—वि० [सं० समग्र] दे० 'समग्र'।

समग्र—वि० [सं०] १. समस्त। कुल। पूरा। सब। जैसे,—उसे समग्र लघुकौमुदी कंठ है। २. जिसके पास सब कुछ हो। सर्वसंपन्न (को०)।

यौ०—समग्रभक्षणशील=जो सब कुछ भक्षण करे या खा जाय। समग्रशक्ति=सभी शक्तियों से युक्त। समग्रसंपत्=जो सभी प्रकार के सुख या संपत्तियों से युक्त हो।

समग्रणी—वि० [सं०] लोगों में अग्रणी, श्रेष्ठ (को०)।

समग्रेंदु—संज्ञा पुं० [सं० समग्रेन्दु] चंद्रमा का पूर्ण मंडल। पूर्णचंद्र (को०)।

समचतुर्भुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह चतुर्भुज जिसके चारो भुज समान हों।

समचर—वि० [सं०] समान आचरण करनेवाला। एक सा व्यवहार करनेवाला। उ०—नाम निठुर समचर सिखी सलिल सनेह न दूर। ससि सरोग दिनकर बड़े पयद प्रेमपथ कूर।—तुलसी (शब्द०)।

समचार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० समाचार ?] दे० 'समाचार', खबर। उ०—(क) नाहर नरिंद जे दूत आइ। समचार सबै कहि ते सुनाइ।—पृ० रा०, ७।५५। (ख) सखी कहै मैं पठए चारा। आजि काल्हि ऐहैं समचारा।—नंद० ग्रं०, पृ० १३४।

समचित्त—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसके चित्त की अवस्था सब जगह समान रहती हो। वह जिसका चित्त कहीं दुःखी या क्षुब्ध न होता हो। वह जो उदासीन या तटस्थ रहे। समचेता। २. वह जो धैर्ययुक्त हो। धैर्यशाली (को०)। ३. वह जिसकी प्रज्ञा एक ही विषय पर केंद्रित हो (को०)।

समचेता—संज्ञा पुं० [सं० समचेतस्] वह जिसके चित्त की वृत्ति सब जगह समान रहती हो। दे० 'समचित्त'।

समच्छेद, समच्छेदन—वि० [सं०] वह भिन्न जिनके हर या हल समान हों (को०)।

समज—संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. पशुओं का झुंड। ३. मूर्खों का झुंड। मूर्खमंडल (को०)। ४. इंद्र (को०)।

समजाति, समजातीय—वि० [सं०] जो समान जाति का हो। समान वर्ग का (को०)।

समज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कीर्त्ति। यश।

समज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सभा। गोष्ठी। वह स्थान जहाँ लोग मिलें जुलें। २. ख्याति। प्रसिद्धि। मशहूरियत (को०)।

समझ—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्ञान] १. समझने की शक्ति। बुद्धि। अक्ल। जैसे,—तुम्हारी समझ की बलिहारी।

मुहा०—समझ पर पत्थर पड़ना = बुद्धि नष्ट होना। अक्ल का मारा जाना। जैसे,—उसकी समझ पर तो पत्थर पड़ गए हैं, वह हिताहितज्ञानशून्य हो गया है।

२. खयाल। जैसे,—(क) मेरी समझ में उसने ऐसा कोई काम नहीं किया कि जिसके लिये उसकी निंदा की जाय। (ख) मेरी समझ में उन्होंने तुमको जो उत्तर दिया, वह बहुत ठीक था।

समझदार—वि० [हिं० समझ + फ़ा० दार] बुद्धिमान। अक्लमंद।

समझना—क्रि० अ० [सं० सम्यक् ज्ञान] १. किसी बात को अच्छी तरह जान लेना। अच्छी तरह मन में बैठाना। भली भाँति हृदयंगम करना। अच्छी तरह ध्यान में लाना। ज्ञान प्राप्त करना। बोध होना। बूझना। जैसे,—मैंने जो कुछ कहा, वह तुम समझ गए होगे। २. ख्याल में आना। ध्यान में आना। विचार में आना। जैसे,—(क) मैं समझता हूँ कि अब तुम्हारी समझ में यह बात आ गई होगी। (ख) तुम समझे न हो तो फिर समझ लो।

संयो० क्रि०—जाना।—पड़ना।—रखना।—लेना।

मुहा०—समझ बूझकर = अच्छी तरह जानकर। ज्ञानपूर्वक। जैसे,—तुमने बहुत समझ बूझकर यह काम किया है। समझ रखना = अच्छी तरह जान रखना। भली भाँति हृदयंगम करना। जैसे,—तुम समझ रखो कि अपने किए का फल तुम्हें अवश्य भोगना पड़ेगा। समझ लेना = (१) बदला लेना। प्रतिशोध लेना। जैसे,—कल तुम चौक में आना; तुमसे समझ लेंगे। (२) समझौता करना। निपटारा। जैसे,—आप रुपए दे दीजिए; हम दोनों आपस में समझ लेंगे।

समझाना—क्रि० स० [हिं० समझना का सक०] कोई बात अच्छी तरह किसी के मन में बैठाना। हृदयंगम कराना। ज्ञान प्राप्त कराना। ध्यान में जमाना। बोध कराना।

यौ०—समझाना बुझाना।

समझाव, समझावा—संज्ञा [हिं० √समझ + आव (प्रत्य०)] राजीनामा। समझौता।

यौ०—समझाव बुझाव = समझाना बुझाना।

समझौता—संज्ञा पुं० [हिं० समझाना] आपस का वह निपटारा जिसमें दोनों पक्षों को कुछ न कुछ दबना या स्वार्थत्याग करना पड़े। राजीनामा।

क्रि० प्र०—करना।—कराना।—होना।

समतट—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र के एक ही किनारे पर के देश। २. एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो आधुनिक बगाल के पूर्व में था।

समतल—वि० [सं०] जिसका तल सम हो, ऊबड़ खाबड़ न हो। जिसकी सतह बराबर हो। हमवार। जैसे,—इस पहाड़ के ऊपर बहुत दूर तक समतल भूमि चली गई है।

समता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सम या समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता। जैसे,—इस तरह के कामों में कोई आपकी समता नहीं कर सकता। २. तटस्थता। निष्पक्षता। औदासीन्य (को०)। ३. उदारता। औदार्य (को०)। ४. अभिन्नता। एकता। ऐक्य (को०)। ५. धीरता। धैर्यशलिता। धीरत्व (को०)। ६. पूर्णत्व। पूर्णता (को०)। ७. साधारण होने का भाव। साधारण्य (को०)।

समताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० समता + हिं० ई (प्रत्य०)] दे० 'समता'।

समतिक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] अतिक्रमण। उपेक्षण। उल्लंघन (को०)।

समतिक्रांत¹—वि० [सं० समतिक्रान्त] १. उल्लंघित। उपेक्षित। २. जो बीत गया हो। व्यतीत। बीता या गुजरा हुआ। ३. जिसने अपना वचन या वादा पूरा किया हो। जिसने प्रतिज्ञा के अनुसार चलकर उसे पूर्ण किया हो (को०)।

समतिक्रांत²—संज्ञा पुं० १. लंघन। अतिक्रमण। २. त्रुटि। दोष (को०)।

समतीत—वि० [सं०] बीता हुआ। अतीत। गत। व्यतीत (को०)।

समतूल(पु)—वि० [सं० सम + तुल्य] समान। सदृश। तुल्य। उ०—एहि बिधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुखमूल। तदपि समीत सकोच कवि कहहिं सीय समतूल।—मानस, १।२४७।

समत्रय—संज्ञा पुं० [सं०] हर्रे, नागरमोथा और गुड़ इन तीनों के समान भागों का समूह।

समत्रिभुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज समान हों।

समत्थ(पु)—वि० [सं० समर्थ; प्रा० समत्थ] दे० 'समर्थ'। उ०—दूत रामराय को सपूत पूत वाय को, समत्थ हाथ पाय को सहाय असहाय को।—तुलसी ग्रं०, पृ० २४४।

समत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सम या समान होने का भाव। समता। तुल्यता। बराबरी।

समत्विट्—वि० [सं० समत्विष्] चारों ओर जिसका प्रकाश एक सा हो। समान रूप से दीप्तिमान् (को०)।

समथ, समथ्थ(पु)—[सं० समर्थ, प्रा० समथ्थ] उ०—जहँ जहँ राजन काज हुअ तहँ तहँ होइ समथ्थ।—पृ० रा०, ५।१०२।

समदंत—वि० [सं० समदन्त] जिसके दाँत समान या एक से हों (को०)।

समद—वि० [सं०] १. गर्व से उद्धत। २. नशे में मत्त या मतवाला। ३. प्रसन्न। हर्षित। ४. प्रेमोन्मत्त। प्रेम के नशे में चूर (को०)।

समदन¹—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

समदन(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० समादान] भेंट। उपहार। नजर। उ०—आपन देस खा, सब औ चँदेरी लेहु। समुद जो समदन कीन्ह तोहि ते पायौ नग देहु।—जायसी (शब्द०)।

समदना(पु)[१]—क्रि० अ० [सं० समादान] प्रेमपूर्वक मिलना। भेंटना। उ०—समदि लोग पुनि चढ़ी बिवाना। जेहि दिन डरी सो आइ तुलाना।—जायसी (शब्द०)।

समदना(पु)[२]—क्रि० स० १. भेंट करना। उपहार देना। नजर करना। २. विवाह करना। उ०—दुहिता समदौ सुख पाय अबै।—केशव (शब्द०)। ३. आदर सत्कार करना। उ०—सब बिधि सबहि समदि नरनाहू। रहा हृदय भरि पूरि उछाहू।—मानस, १।३५४।

समदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सब मनुष्यों, स्थानों और पदार्थों को समान दृष्टि से देखता हो। सबको एक सा देखनेवाला। समदर्शी। २. समान रूप या आकृति का। एक रूप (को०)।

समदर्शी—संज्ञा पुं० [सं० समदर्शिन्] वह जो सब मनुष्यों, स्थानों और पदार्थों आदि को समान दृष्टि से देखता हो। जो देखने में किसी प्रकार का भेदभाव न रखता हो। सब को एक सा देखनेवाला।

समदाना(पु)—क्रि० स० [हिं० समाधान] १. सौंपना। रखना। जिम्मे करना। २. समाधान करना।

समदुःख—वि० [सं०] १. दूसरे के दुःख कष्ट को स्वयं अनुभूत करनेवाला। समवेदना प्रकट करनेवाला। २. समदुःखभाक्। समदुःखी। सहभोगी (को०)।

यौ०—समदुःखसुख = (१) दुःख और सुख का साथी। (२) जिसमें दुःख और सुख समान रूप से हो।

समदृश्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समदर्शी'।

समदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह दृष्टि जो सब अवस्थाओं में और सब पदार्थों को देखने के समय समान रहे। समदर्शी की दृष्टि। २. दे० 'समदर्शी'।

समदेश—संज्ञा पुं० [सं०] चौरस मैदान। समतल क्षेत्र (को०)।

समद्युति—वि० [सं०] समान कांतिवाला (को०)।

समद्वादशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह क्षेत्र आदि जिसके बारह समान भुज हों। बारह बराबर भुजाओं वाला क्षेत्र।

समद्विद्विभुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह चतुर्भुज जिसका प्रत्येक भुज अपने सामनेवाले भुज के समान हो। वह चतुर्भुज जिसके आमने सामने के भुज बराबर हों।

समद्विभुज—वि० [सं०] वह क्षेत्र जिसकी दोनों भुजाएँ बराबर हों।

समधर्मा—वि० [सं० समधर्मन्] समान धर्म, प्रकृति या स्वभाव का (को०)।

समधिक—वि० [सं०] अधिक। अतिशय। ज्यादा। बहुत।

समधिगत—वि० [सं०] पास पहुँचा हुआ। निकट आया हुआ। प्राप्त (को०)।

समधिगम—संज्ञा पुं० [सं०] पूरी तरह समझना या अनुभव करना (को०)।

समधिगमन—संज्ञा पुं० [सं०] आगे बढ़ जाना। पार कर लेना। जीत जाना (को०)।

समधियान†—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'समधियाना'।

समधियाना—संज्ञा पुं० [हिं० समधी + इयाना (प्रत्य०)] वह घर जहाँ अपनी कन्या या पुत्र का विवाह हुआ हो। समधी का घर।

समधी—संज्ञा पुं० [सं० सम्बन्धी] [स्त्री० समधिन] पुत्र या पुत्री का ससुर। वह जिसकी कन्या से अपने पुत्र का अथवा जिसके पुत्र से अपनी पुत्री का विवाह हुआ हो। उ० सकल भाँति सम साज समाजू। सम समधी देखे हम आजू।—मानस, १।३२०।

समधीत—वि० [सं०] अच्छी तरह पढ़ा हुआ। जिसने सम्यक् रूप से अध्ययन किया हो। खूब पढ़ा हुआ (को०)।

समधुर—वि० [सं०] मिठास से युक्त। मिष्ट। मीठा (को०)।

समधुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्राक्षा। अंगूर (को०)।

समधौरा†—संज्ञा पुं० [हिं० समधी + औरा (प्रत्य०)] विवाह की एक रीति जिसमें दोनों समधी परस्पर मिलते हैं।

समध्वग—वि० [सं०] सहयात्री। जो एक साथ यात्रा करे (को०)।

समनंतर—वि० [सं० समनन्तर] ठीक बगलवाला। बिलकुल सटा हुआ। बराबरी का।

समन(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० शमन] १. दे० 'शमन'। २. यम। उ०—मातु मृत्यु पितु समन समाना।—मानस, ३।२।

समन[२]—वि० दे० 'शमन'। उ०—(क) समन अमित उतपात सब भरत चरित जप जाग।—मानस, १।४१। (ख) समन पाप संताप सोक के।—मानस, १।३२।

समन[३]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] चमेली का पुष्प (को०)।

यौ०—समनअंदाम, समनपैकर = चमेली के फूल की तरह सुकुमार शरीरवाला। समनइजार, समनखद = चमेली के फूल जैसे कपोलवाला। समनजार = चमेली का बाग। समनबू = चमेली की गंधवाला। समनरू = चमेली के फूल जैसा कांतिमान। समनसाक = वह सुंदरी जिसकी पिंडलियाँ चमेली जैसी सफेद हों।

समन[४]—संज्ञा पुं० [अ०] कीमत। दाम। मूल्य (को०)।

समन[५]—संज्ञा पुं० [अं० समन्स] न्यायालय द्वारा प्रतिवादी या गवाहों को इजलास के संमुख नियत तिथि पर उपस्थित रहने के लिये भेजी गई लिखित सूचना या बुलावा। दे० 'सम्मन'। जैसे,—समन बगरज इनफिसाल मुकदमा।

समनगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बिजली। विद्युत्। २. सूर्य की किरण।

समनीक—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

यौ०—समनीक मूर्धा = युद्ध का अग्रिम मोर्चा।

समनुकीर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत प्रशस्ति करना। खूब प्रशंसा करना [को०]।

समनुज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इजाजत। अनुमति। २. पूर्ण सहमति या स्वीकृति [को०]।

समनुज्ञात—वि० [सं०] १. जो (जाने के लिये) आज्ञप्त हो। आज्ञा-प्राप्त। २. अधिकार प्राप्त। ३. अनुगृहीत। पूरी तरह सहमत। पूर्णतः स्वीकृत।

समनुज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समनुज्ञा'।

समनुवर्ती—वि० [सं० समनुवर्तिन्] [वि० स्त्री० समनुवर्तिनी] आज्ञाकारी। अनुगत [को०]।

समनुव्रत—वि० [सं०] पूरी तरह अनुगत। पूर्णतः आज्ञापालन करनेवाला [को०]।

समन्मथ—वि० [सं०] कामयुक्त। कामपीड़ित [को०]।

समन्यु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

समन्यु[2]—वि० १. क्रोध से भरा हुआ। कोपयुक्त। २. दुःखपूर्ण। वेदनामय [को०]।

समन्वय—संज्ञा पुं० [सं०] १. नियमित परंपरा या क्रमबद्धता। २. मिलन। मिलाप। संयोग। संसर्ग। संश्लेष। ३. कार्य कारण का प्रवाह या निर्वाह होना। ४. विरोध का अभाव। विरोध का न होना।

समन्वयन—संज्ञा पुं० [सं०] समन्वय करने की क्रिया या भाव। मेल बैठाना। क्रमबद्ध रूप में करना।

समन्वित—वि० [सं०] १. मिला हुआ। संयुक्त। २. जिसमें कोई रुकावट न हो। ३. अनुगत (को०)। ४. सहित। युक्त। भरा हुआ (को०)। ५. प्रभावित। ग्रस्त (को०)।

समपद—संज्ञा पुं० [सं०] १. धनुष चलानेवालों का एक प्रकार का खड़े होने का ढंग जिसमें वे अपने दोनों पैर बराबर रखते हैं। २. कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रतिबंध या आसन।

समपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० 'समपद'। २. नृत्य में पादन्यास की एक गति (को०)। ३. वह छंद या कविता जिसके चारो चरण समान या बराबर हों।

समप्पन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० समर्पण, प्रा० समप्पण] दे० 'समर्पण'।

समप्रभ—वि० [सं०] समान प्रभावाला। तुल्य कांतिवाला [को०]।

समबुद्धि—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसकी बुद्धि सुख और दुःख, हानि और लाभ सबमें समान रहती हो। २. वह जो निष्पक्ष या तटस्थ हो (को०)।

समभाग[1]—संज्ञा पुं० [सं०] समान भाग। बराबर हिस्सा।

समभाग[2]—वि० समान भाग या अंश पानेवाला। बराबर के हिस्से का हकदार [को०]।

समभाव[1]—संज्ञा पुं० [सं०] तुल्यता। समता। समत्व।

समभाव[2]—वि० समान प्रकृति या भाववाला [को०]।

समभिद्रुत—वि० [सं०] १. ग्रस्त। बाधित। २. झपटनेवाला। किसी की ओर वेग से टूट पड़नेवाला [को०]।

समभिधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाम। आख्या।

समभिप्लुत—वि० [सं०] १. जलप्लावित। २. उपसृष्ट। ग्रस्त। अभिभूत। आक्रांत। ३. किसी वस्तु से सना या लिपटा हुआ [को०]।

समभिव्याहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. साथ साथ उल्लेख या वर्णन करना। २. सामीप्य। साथ। संगति। सहयोग। ३. ऐसे शब्द का सामीप्य, सन्निधि या संगति जिसके द्वारा किसी शब्द का अर्थ निर्धारित या सुस्पष्ट हो सके [को०]।

समभिसरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाने की चेष्टा या यत्न करना। प्राप्तिकाम होना। २. किसी ओर बढ़ना। पहुँचना [को०]।

समभिहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. साथ करना। एकत्रीकरण। एक साथ ग्रहण। २. बार बार होने का भाव। आवृत्ति। ३. अधिकता। ज्यादती। बहुतायत।

समभूमि—संज्ञा पुं० [सं०] समतल भूमि। चौरस या हमवार जमीन [को०]।

समभ्यर्चन—संज्ञा पुं० [सं०] पूजन। समादरण [को०]।

समभ्याश—संज्ञा पुं० [सं०] सान्निध्य। सामीप्य। नैकट्य [को०]।

समभ्यास—संज्ञा पुं० [सं०] नियमित रूप से करना। अभ्यसन [को०]।

समभ्याहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. समीप करना। निकट लाना। २. सामीप्य। निकटता।

सममंडल—संज्ञा पुं० [सं०] ज्यौतिष में प्रधान लंब रेखा [को०]।

सममति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'समबुद्धि'।

सममय—वि० [सं०] समान मूल का। जिसका एक ही मूल हो।

सममात्र—वि० [सं०] १. समान परिमाण या नाप का। २. समान मात्राओं का। सममात्रिक [को०]।

सममिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] समान परिमाण।

समय—संज्ञा पुं० [सं०] १. वक्त। काल। जैसे,—समय परिवर्तनशील है।

मुहा० —समय पर = ठीक वक्त पर।

२. अवसर। मौका। उ०—का बरषा सब कृषी सुखाने। समय चुकें पुनि का पछिताने।—मानस १।२६१। ३. अवकाश। फुरसत। जैसे,—तुम्हें इस काम के लिये थोड़ा समय निकालना चाहिए।

क्रि० प्र०—निकालना।

४. अंतिम काल। जैसे,—उनका समय आ गया था; उन्हें बचाने का सब प्रयत्न व्यर्थ गया। ५. शपथ। प्रतिज्ञा। ६. आकार। ७. सिद्धांत। ८. संविद। ९. निर्देश। १०. भाषा। ११. संकेत। १२. व्यवहार। १३. संपद। १४. कर्तव्य पालन। १५. व्याख्यान। प्रचार। घोषणा। १६. उपदेश। १७. दुःख का अवसान। १८. नियम। १९. धर्म। २०. संन्यासियों, वैदिकों, व्यापारियों आदि के संघों में प्रचलित नियम। (स्मृति)।

२१. योग्य काल। उपयुक्त काल या ऋतु (को०)। २२. रूढ़ि। प्रथा (को०)। २३. लोकप्रचलन (को०)। २४. कविसमय। २५. नियुक्ति। स्थिरीकरण (को०)। २६. आपत्काल। संकटकाल (को०)। २७. सीमा। हद (को०)। २८. सफलता। समृद्धि (को०)।

यौ० —समयकाम। समयकार।

समयकाम—वि० [सं०] प्रतिज्ञा या ठहराव चाहनेवाला [को०]।

समयकार—संज्ञा पुं० [सं०] १. समय, नियम या सिद्धांत निश्चित करनेवाला। २. संकेत। इशारा [को०]।

समयक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिल्पियों या व्यापारियों का परस्पर व्यवहार के लिये नियम स्थिर करना। (बृहस्पति)। २. समय या काल निश्चित करना। करार करना (को०)। ३. परीक्षा (दिव्य) की तैयारी। ४. निश्चित कर्म में लगना (को०)।

समयच्युति—संज्ञा स्त्री० [सं०] समय चूकना। मौका या अवसर खो देना [को०]।

समयज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो समय का ज्ञान रखता हो। २. विष्णु का एक नाम।

समयधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिज्ञा या इकरार संबंधी कर्तव्य [को०]।

समयपरिरक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिज्ञा, समझौता, संधि या इकरार को मानना [को०]।

समयबंधन—संज्ञा पुं० [सं० समयबन्धन] १. वह जो प्रतिज्ञाबद्ध हो। २ प्रतिज्ञा का बंधन।

समयभेद—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिज्ञा भंग करना। करार या वादा तोड़ना [को०]।

समयविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष विद्या [को०]।

समयवेला—संज्ञा स्त्री० [सं०] समय की सीमा, परिमाण या अवधि [को०]।

समयव्यभिचार—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिज्ञा, करार, समझौता या वादे को न मानना [को०]।

समयव्यभिचारी—वि० [सं० समयव्यभिचारिन्] प्रतिज्ञा, इकरार या वचन भंग करनेवाला [को०]।

समयाचार—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म।

समयाध्युषित—संज्ञा पुं० [सं०] वह समय जब कि न सूर्य ही दिखाई देता हो और न नक्षत्र ही दृष्टिगोचर होते हों। संध्या का समय।

समयानंद—संज्ञा पुं० [सं० समयानन्द] तांत्रिकों के एक भैरव का नाम जिनका पूजन कालीपूजा के समय होता है।

समयानुकूल—वि० [सं०] जो अवसर या काल के उपयुक्त हो।

समयानुवर्ती—वि० [सं० समयानुवर्तिन्] समय के अनुसार चलनेवाला। प्रचलित रीति का अनुगमन करनेवाला [को०]।

समयोचित—वि० [सं०] जो समय के अनुकूल हो [को०]।

समरंजित—वि० [सं० समरञ्जित] जिसका वर्ण या रंग एक समान हो [को०]।

समर(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० स्मर] काम के देवता। कामदेव।

समर[२]—संज्ञा पुं० [अ०] १. अच्छे कामों का सुफल। सत्कर्म का फल। २. सुंदर फल। अच्छा फल, मेवा आदि (को०)।

समर[३]—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। संग्राम। लड़ाई। उ०—सूर समर करनी करहि कहि न जनावहिं आप।—मानस, १।२७४।

यौ०—समरकर्म = लड़ाई का काम। समरक्षिति। समरभू = युद्धभूमि। समरविजयी। समरव्यसनी = युद्धप्रिय। समरशूर = योद्धा।

समरकंद—संज्ञा पुं० [अ० समरक़न्द] तुर्किस्तान का एक प्रसिद्ध नगर जो तैमूर की राजधानी था। अब यह उजबेक (सोवियत संघ) प्रजातंत्र का एक प्रांत है।

समरक्षिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] युद्धक्षेत्र। लड़ाई का मैदान।

समरज्जु—संज्ञा स्त्री० [सं०] बीजगणित में वह रेखा जिससे दूरी या गहराई जानी जाती है।

समरत—संज्ञा पुं० [सं०] कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रतिबंध या आसन।

समरत्थ—वि० [सं० समर्थ] दे० 'समर्थ' (क) लोकन की रचना रुचिर रचिबे को समरत्थ।—केशव (शब्द०)। (ख) तुलसी या जग आइ कै कौन भयो समरत्थ।—तुलसी (शब्द०)।

समरथ(पु)—वि० [सं० समर्थ] दे० 'समर्थ'। उ०—(क) सब बिधि समरथ राजै राजा दशरथ भगीरथ पथगामी गंगा कैसो जल है।—केशव (शब्द०)। (ख) समरथ कै नहिं दोस गुसाईं।—तुलसी (शब्द०)।

समरना[†]—क्रि० स० [सं० स्मरण] स्मरण करना।

समरपोत—संज्ञा पुं० [सं०] लड़ाई का जहाज। सैनिक जहाज।

समरभ—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समरत' [को०]।

समरभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] युद्ध क्षेत्र। लड़ाई का मैदान। उ०—सरबस खाई भोग करि नाना। समरभूमि भा दुर्लभ प्राना।—तुलसी (शब्द०)।

समरमर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

समरमूर्द्धा—संज्ञा पुं० [सं० समरमूर्द्धन्] लड़नेवाली सेना का अगला भाग।

समरवसुधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लड़ाई का मैदान। युद्धक्षेत्र।

समरविजयी—संज्ञा [सं० समरविजयिन्] युद्ध क्षेत्र में जीतनेवाला। युद्ध जीतनेवाला [को०]।

समरशायी—संज्ञा पुं० [सं० समरशायिन्] वह जो युद्ध में मारा गया हो। वीरगति को प्राप्त।

समरस—वि० [सं०] [भाव० समरसता] १. समान रस या भाव से युक्त। उ०—समरस है जो कि जहाँ है।—कामायनी, पृ० २८८। २. समान रस या स्वादवाला। ३. जो एक समान हो। जिसके भाव या विचारों में परिवर्तन न हो [को०]।

समरसता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समरस होने का भाव। समान रस या भावों से युक्त होना। उ०—नित्य समरसता का अधिकार उमड़ता कारण जलधि अपार।—कामायनी, पृ० ५४।२. एक समान होना। भावों या विचारों में परिवर्तन न होना। उ०—(क) समरसता है संबंध बनी अधिकार और अधिकारी की।—कामायनी, पृ० १६२। (ख) सबकी समरसता का प्रचार।—कामायनी, पृ० २४४।

समरांगण—संज्ञा पुं० [सं० समराङ्गण] लड़ाई का मैदान। युद्धक्षेत्र। संग्रामांगण।

समरा—संज्ञा पुं० [अ०] १. बदला। २. नतीजा। परिणाम। फल [को०]।

समराख्य—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में एक प्रकार का ताल (कौ०)।

समरागम—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध आरंभ होना (कौ०)।

समराना†—क्रि० स० [हिं० सँवारना]। सजाना। सँवारना। पहनाना।

समरांजिर—संज्ञा पुं० [सं०] समरांगण। युद्धभूमि (कौ०)।

समरु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्मर] कामदेव। उ०—मकराकृति गोपाल कैं सोहत कुंडल कान। धरचौ मनो हियधर समरु ड्यौढ़ी लसत निसान।—बिहारी र०, दो १०३।

समरोचित—वि० [सं०] युद्ध में प्रयुक्त करने लायक। युद्धोपयुक्त (कौ०)।

समरोद्देश—संज्ञा पुं० [सं०] लड़ाई का मैदान। युद्धक्षेत्र।

समरोद्यत—वि० [सं०] युद्ध के लिये उद्यत या प्रस्तुत (कौ०)।

समर्घ—वि० [सं०] कम दाम का। सस्ता। महर्घ या महँगा का उलटा।

समर्चक—वि० [सं०] उपासना करनेवाला। अर्चना करनेवाला। अर्चक। पूजक (कौ०)।

समर्चन—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० समर्चना] अच्छी तरह अर्चन या पूजन करना।

समर्चना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'समर्चन'।

समर्ण—वि० [सं०] १. कष्टग्रस्त। पीड़ित। २. प्रार्थित। याचित (कौ०)।

समर्थ[1]—वि० [सं०] १. जिसमें कोई काम करने का सामर्थ्य हो। कोई काम करने की योग्यता या ताकत रखनेवाला। उपयुक्त। योग्य। जैसे,—आप सब कुछ करने में समर्थ हैं। २. लंबा चौड़ा। प्रशस्त। ३. जो अभिलषित हो। अभीष्ट। ४. युक्ति के अनुकुल। ठीक। ५. बलवान्। शक्त (कौ०)। ६. योग्य या उपयुक्त बनाया हुआ (कौ०)। ७ समान अर्थवाला। समानार्थी (कौ०)। ८. सार्थक (कौ०)। ९. अत्यंत बलशाली (कौ०)। १०. पास पास विद्यमान (कौ०)। ११. अर्थतः या अर्थ द्वारा संबद्ध (कौ०)।

समर्थ[2]—संज्ञा पुं० १. हित। भलाई। २. व्याकरण में सार्थक शब्द (कौ०)। ३. सार्थक वाक्य में मिलाकर रखे हुए शब्दों की संसक्ति (कौ०)। ४. योग्यता (कौ०)। ५ बोधगम्यता (कौ०)।

समर्थक[1]—वि० [सं०] जो समर्थन करता हो। समर्थन करनेवाला। २. सक्षम। योग्य (कौ०)।

समर्थक[2]—संज्ञा पुं० चंदन की लकड़ी।

समर्थता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समर्थन होने का भाव या धर्म। सामर्थ्य। शक्ति। ताकत। ३. अर्थ आदि की समानता।

समर्थत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समर्थता' (कौ०)।

समर्थन—संज्ञा पुं० [सं०] १. यह निश्चय करना कि अमुक बात उचित है या अनुचित। वाजिब और गैरवाजिब का फैसला करना। २. यह कहना कि अमुक बात ठीक है। किसी विषय में सहमत होना। किसी के मत का पोषण करना। जैसे,—मैं आपके इस कथन का समर्थन करता हूँ। ३. विवेचन। मीमांसा। ४. निषेध। वर्जन। मनाही। ५. संभावना। ६. उत्साह। ७. सामर्थ्य। शक्ति। ताकत। ८. विवाद की समाप्ति या अंत करना। ९. आपत्ति (कौ०)। १०. योग्यता (कौ०)। ११ व्यवसाय (कौ०)। १२. किसी हानि या अपराध की क्षतिपूर्ति करना (कौ०)।

समर्थना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी ऐसे काम के लिये प्रयत्न करना जो असंभव हो। न होने योग्य काम के लिये प्रयत्न। २. दे० 'समर्थन'। ३. अनुरोध। आमंत्रण (कौ०)।

समर्थनीय—वि० [सं०] १. समर्थन करने के योग्य। जिसका समर्थन किया जा सके। २. जो निश्चित या प्रमाणित करने योग्य हो (कौ०)।

समर्थित—वि० [सं०] १. जिसका समर्थन किया गया हो। समर्थन किया हुआ। २. जिसकी विवेचना हो चुकी हो। जिसपर अच्छी तरह विचार हो चुका हो। ३. जो निश्चित हो चुका हो। स्थिर किया हुआ। ४. प्रमाणित (कौ०)। ५. जो हो सकता हो। जो संभव हो। संभावित।

समर्थ्य—वि० [सं०] जिसका समर्थन किया जा सके। समर्थन करने योग्य।

समर्द्धक, समर्धक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वरदान देनेवाले, देवता आदि। २. वह जो उन्नत या समृद्ध करनेवाला हो (कौ०)।

समर्पक—वि० [सं०] जो समर्पण करता हो। समर्पण करनेवाला।

समर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी को कोई चीज आदरपूर्वक भेंट करना। प्रतिष्ठापूर्वक देना। जैसे,—वे यह पुस्तक किसी राजा या रईस को समर्पण करना चाहते हैं। २. दान देना। जैसे—आत्मसमर्पण करना। ३. स्थापित करना। स्थापना। ४. नाटक में पात्रों द्वारा पारस्परिक भर्त्सना (कौ०)।

समर्पना(पु) क्रि० स० [सं० समर्पण] देना। समर्पण करना। भेंट करना। अर्पित करना।

समर्पयिता—वि० [सं० समर्पयितृ] भेंट करने या प्रदान करनेवाला। समर्पक (कौ०)।

समर्पित—वि० [सं०] १. जो समर्पण किया गया हो। समर्पण किया हुआ। २. जिसकी स्थापना की गई हो। स्थापित। ३. पूर्ण या भरा हुआ (कौ०)। ४. निक्षिप्त (कौ०)।

समर्प्य—वि० [सं०] जो समर्पण किया जा सके। जो समर्पण करने के योग्य हो।

समर्याद[1]—वि० [सं०] १. निकट। पास। करीब। २. जिसकी चाल चलन अच्छी हो। अच्छे चरित्रवाला। ३. जो सीमा या मर्यादा में हो। ४. संमानपूर्ण। शिष्ट (कौ०)।

समर्याद[2]—संज्ञा पुं० सीमित। परिमित। २. नैकट्य। सामीप्य (कौ०)।

समर्याद[3]—अव्य० निश्चित रूप से (कौ०)।

समर्हण—संज्ञा पुं० [सं०] १. आदर। संमान। २. भेंट। उपहार (कौ०)।

समलंकृत—वि० [सं० समलङ्कृत] भलीभाँति अलंकृत। अच्छी तरह सज्जित। सुसज्जित (कौ०)।

समलंब—संज्ञा पुं० [सं० समलम्ब] विषम चतुर्भुज। रेखागणित में वह चतुर्भुज जिसकी भुजाएँ समानांतर न हों (को०)।

समल¹—संज्ञा पुं० [सं०] मल। विष्ठा। पुरीष। गू।

समल²—वि० १. मलीन। मैला। गंदा। २. अशुचि। अशुद्ध (को०)। ३. पापात्मा। पापी (को०)।

समलेपनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजगीरों का एक उपकरण जिससे वे सतह बराबर करते हैं (को०)।

समलोष्ठकांचन—वि० [सं० समलोष्ठकाञ्चन] जिसकी दृष्टि लोहे और सोने को समान देखती हो (को०)।

समलोष्ठाश्मकांचन—वि० [सं० समलोष्ठाश्मकाञ्चन] जिसकी दृष्टि में लोहा, पत्थर और सोना समान हों।

समवकार—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक के दस भेदों में से एक का नाम। एक प्रकार का नाटक।

विशेष—इसकी कथावस्तु का आधार किसी प्रसिद्ध देवता या असुर आदि के जीवन की कोई घटना होती है। साहित्य दर्पण के अनुसार यह वीर रस प्रधान होता है और इसमें प्रायः देवताओं और असुरों के युद्ध का वर्णन होता है। इसमें तीन अंक होते हैं और विमर्ष संधि के अतिरिक्त शेष चारों संधियाँ रहती हैं। इसमें विंदु या प्रवेशक नहीं होता।

समवच्छन्न—वि० [सं०] पूर्णतः ढका हुआ। आवृत (को०)।

समवतार—संज्ञा पुं० [सं०] १. उतरने की जगह। उतार। २. तीर्थ। घाट (को०)। ३. उतरने की क्रिया। अवतरण।

समवत्त—वि० [सं०] जिसे काटकर टुकड़े टुकड़े कर दिया गया हो। छिन्न भिन्न (को०)।

समवधान—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ होना। एकत्र होना। जुटना। २. पूरा मन लगाना या ध्यान देना। ३. तैयारी करना (को०)।

समवन—संज्ञा पुं० [सं०] सम्यक् रक्षण (को०)।

समवयस्क—वि० [सं०] तुल्य या समान उम्र का। समान अवस्था का। हम उम्र।

समवर्ण—वि० [सं०] १. एक ही वर्ण या जाति का। २. एक या समान रंगवाला।

समवर्णोपधान—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार बढ़िया और कीमती माल में घटिया माल मिलाना।

विशेष—चंद्रगुप्त के समय में धान्य, घी, क्षार, नमक, औषध आदि में इस प्रकार की मिलावट करने पर १२ पण जुरमाना होता था।

समवर्ती¹—संज्ञा पुं० [सं० समवर्त्तिन्] यम का एक नाम।

समवर्ती²—वि० १. जो समान रूप से स्थित हो। २. समान व्यवहार करनेवाला। पक्षपात रहित। ३. जो पास में स्थित हो। ४. समान दूरी पर स्थित (को०)।

समवलंब—संज्ञा पुं० [सं० समवलम्ब] वह चतुर्भुज जिसकी दोनों लंबी रेखाएँ समान हों।

समवबोधन—संज्ञा पुं० [सं०] सम्यक् बोध। पूर्ण ज्ञान (को०)।

समवस्थान—वि० [सं०] नष्ट। बर्बाद (को०)।

समवसरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का धार्मिक उपदेश होता हो। सभा। २. उद्देश्य। लक्ष्य (को०)। ३. अवतरण या उतरने का स्थान (को०)। ४. उतरना। अवतरण। जैसे,—स्वर्ग से देवताओं का (को०)।

समवस्कंद—संज्ञा पुं० [सं० समवस्कन्द] किले का प्राकार।

समवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. न डिगनेवाली अवस्था। समान रहनेवाली स्थिति। २. अवस्था। दशा। स्थिति (को०)।

समवस्थित—वि० [सं०] १. दृढ़। २. एक स्थान पर स्थिर या रुका हुआ। ३. अच्छी तरह प्रस्तुत। उद्यत। ४. जो किसी स्थान या अवस्था में स्थित हो (को०)।

समवहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. ढेर। राशि। २. अधिकता। प्रचुरता। ३. मिलावट। घालमेल। ४. परिमाण (को०)।

समवाप्त—वि० [सं०] जो प्राप्त हो। उपलब्ध (को०)।

समवाप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राप्ति। उपलब्धि (को०)।

समवाय—संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २. न्यायशास्त्र के अनुसार तीन प्रकार के संबंधों में से एक प्रकार का संबंध। न्याय शास्त्रानुसार नित्य संबंध। वह संबंध जो अवयवी के साथ अवयव का, गुणी के साथ गुण का अथवा जाति के साथ व्यक्ति का होता है।

विशेष—इस प्रकार का संबंध एक प्रकार का धर्म या गुण माना गया है। ऐसा संबंध नष्ट नहीं होता; इसी से इसको नित्य संबंध भी कहते हैं। विशेष दे० 'संबंध'।

३. संमिश्रण। संयोग। समष्टि (को०)। ४. संख्या। समुच्चय। राशि (को०)। ५. घनिष्ट संबंध या लगाव। संसक्ति (को०)।

यौ०—समवाय संबंध = नित्य संबंध।

समवायता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'समवायता'।

समवायत्व—संज्ञा पुं० [सं०] समवाय का भाव या धर्म। समवायता।

समवायन—संज्ञा पुं० [सं०] संपर्क होना। एकत्र होना। एक साथ आ मिलना (को०)।

समवायिक—वि० [सं०] जिसके साथ नित्य संबंध हो। समवाय संबंधवाला (को०)।

समवायिकारण—संज्ञा पुं० [सं०] वैशेषिक के अनुसार वह कारण या हेतु जो पृथक् न हो सके। संश्लिष्ट हेतु। उपादान कारण (को०)।

समवायिपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] आत्मा (को०)।

समवायी¹—वि० [सं० समवायिन्] जिसमें समवाय या नित्य संबंध हो। २. अभेद्य या घनिष्ट रूप से संबद्ध (को०)। ३. राशिमय। बहुसंख्यक (को०)।

समवायी²—संज्ञा पुं० १. भागीदार। २. अंग। अवयव (को०)।

समविभाग—संज्ञा पुं० [सं०] १. बराबर हिस्सा। २. जायदाद, संपत्ति आदि का समान रूप से बँटवारा।

समविषम—वि० [सं०] १. नतोन्नत। ऊबड़खाबड़। जैसे,—भूमि। २. संतुलित असंतुलित। उचित अनुचित। जैसे,—आहार-बिहार।

समवीर्य—वि० [सं०] समान शक्ति का। तुल्यबल।

समवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह छंद जिसके चारों चरण समान हों। २. वह वृत्त, घेरा या गोलाई जो समान हो।

समवृत्ति[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] मनःस्थैर्य। धीरता।

समवृत्ति[2]—वि० समान वृत्तिवाला। धीर। स्थिर।

समवेक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] निरीक्षण।

समवेक्षित—वि० [सं०] ठीक तरह से देखा परखा हुआ। सुविचारित [को०]।

समवेत[1]—वि० [सं०] १. एक में मिला या इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। २. जमा किया हुआ। संचित। ३. किसी के साथ एक श्रेणी में आया हुआ। ४. जो किसी के साथ नित्य संबंध द्वारा संबद्ध हो। नित्य संबंध से बँधा हुआ।

समवेत[2]—संज्ञा पुं० १. संबंध। लगाव। ताल्लुक। २. दे० 'संभूयकारी'—२।

समव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] वह सेना जिसमें २२५ सवार, ६७८ सिपाही तथा इतने ही घोड़े और रथ आदि के पादगोप हों।

समशंकु—संज्ञा पुं० [सं० समशङ्कु] वह समय जब कि सूर्य ठीक सिर पर आते हों। ठीक दोपहर का समय। मध्याह्न।

समशशी—संज्ञा पुं० [सं० समशशिन्] समान कोण या शृंगवाला चंद्रमा।

समशीतोष्ण—वि० [सं०] जहाँ न तो बहुत गर्मी हो और न शीत। मात दिल [को०]।

समशीतोष्ण कटिबंध—संज्ञा पुं० [सं० समशीतोष्ण कटिबन्ध] पृथ्वी के वे भाग जो उष्ण कटिबंध के उत्तर में कर्क रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण में मकर रेखा से दक्षिण वृत्त तक पड़ते हैं।

विशेष—पृथ्वी के इन भूभागों में न तो बहुत अधिक सरदी पड़ती है और न बहुत अधिक गरमी; दोनों प्रायः समान भाव में रहती हैं।

समश्रुति—वि० [सं०] जिसकी श्रुति या विराम समान हो। संगीत में में समान श्रुतियुक्त [को०]।

समश्रेणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] समान श्रेणि या पंक्ति। वह पंक्ति या रेखा जो सीधी हो [को०]।

समष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सब का समूह। कुल एक साथ। व्यष्टि का उलटा या विलोम। जैसे,—आप सब लोगों की अलग अलग बात जानें दें; समष्टि का विचार करें। २. संयुक्त अधिकार। समान अधिकार। सत्ता जो समवेत या संयुक्त हो। ३. सामूहिक होने का भाव। संपूर्णता।

समष्ठिल—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोकुआ नाम का कँटीला पौधा जो प्रायः पश्चिम में नदियों के किनारे होता है।

विशेष—वैद्यक में इसे कटु, उष्ण, रुचिर, दीपन और कफ तथा वात का नाशक माना है।

२. गंडीर या गिडनी नाम का साग।

समष्ठिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समष्ठिल। कोकुआ। २. जमीकंद। सूरन। ३. गिडनी या गंडीर नाम का साग।

समष्ठीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'समष्ठिला'।

समसंख्यात—वि० [सं० समसङ्ख्यात] जिसकी संख्या समान या बराबर हो।

समसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० समसन्धि] १. कौटिल्य के अनुसार वह संधि जिसमें संधि करनेवाला राजा या राष्ट्र अपनी पूरी शक्ति के साथ सहायता करने को तैयार हो। २. समानता के स्तर पर होनेवाली संधि या समझौता (को०)।

समसंस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] योग के अनुसार आसन का एक प्रकार [को०]।

समसन—संज्ञा पुं० [सं०] १. इकट्ठा करने का काम। जोड़ना। मिलाना संघटित करना। २. छोटा या संक्षिप्त करना। ३. व्याकरण के अनुसार समास करना। समास के रूप में ले आना [को०]।

समसमयवर्ती—वि० [सं० समसमयवर्तिन्] जो एक साथ हो। साथ साथ या युगपत् होनेवाला।

समसरि(पु)[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० समस्तर या सदृश, हिं० सरि ?] बराबरी। तुल्यता। समानता। उ०—दुहन देहु कछु दिन अरु मोकौं तब करिहौ मो समसरि आई।—सूर०, १०।६६८।

समसरि(पु)[2]—वि० बराबर। समान। उ०—सहस सकट भरि कमल चलाए। अपनी समसरि और गोप जे तिनकौ साथ पठाए। —सूर०, १०।५८३।

समसान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्मशान] श्मसान [को०]।

समसामयिक—वि० [सं०] एक ही समय में होनेवाला। समकालिक (अं० कंटेंपोररी)।

समसूत्र, समसूत्रस्थ—वि० [सं०] एक ही व्यास में अवस्थित [को०]।

समसिद्धांत—वि० [सं० समसिद्धान्त] जिसका लक्ष्य एक हो। समान सिद्धांत को लेकर चलनेवाला।

समसुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्पांत में होनेवाली विश्व की निद्रा। प्रलय [को०]।

समसेर—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शमशेर] तलवार। कृपाण।

समस्त—वि० [सं०] १. सब। कुल। समग्र। जैसे,—(क) उन्हें समस्त रामायण कंठ है। (ख) इस समय समस्त देश में एक नए प्रकार की जाग्रति हो रही है। २. एक में मिलाया हुआ। संयुक्त। ३. जो समास द्वारा मिलाया गया हो। समासयुक्त। ४. जो थोड़े में किया गया हो। जो संक्षेप में हो। संक्षिप्त। ५. जो समग्र में व्याप्त हो (को०)। ६. संमिश्रित (को०)।

समस्तधाता—संज्ञा पुं० [सं० समस्तधातृ] वह जो सबका धारणपोषण करनेवाला हो। विष्णु।

समस्थ—वि० [सं०] १. बराबर। समान। २. समतल। ३. अनुरूप। ४. जो फलने फूलने की या समृद्ध स्थिति में हो [को०]।

समस्थल - संज्ञा पुं० [सं०] समतल भूमि [को०]।

समस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा और यमुना के बीच का देश। गंगा यमुना का दोआबा। अंतर्वेद।

समस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] योग की एक विशेष मुद्रा जिसमें दोनों पैर सटा लिए जाते हैं।

समस्य—वि० [सं०] १. जो समास करने योग्य हो। छोटा या संक्षिप्त करने लायक। २. (श्लोक आदि) जिसके पद या चरण पूर्ण करने योग्य हों। पूरणीय [को०]।

समस्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संघटन। २. मिलाने की क्रिया। मिश्रण। ३. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिये तैयार करके दूसरों को दिया जाता है और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है।

क्रि० प्र०—देना।—पूर्ति करना।

४. कठिन अवसर या प्रसंग। कठिनाई। जैसे,—इस समय तो उनके सामने कन्या के विवाह की एक बड़ी समस्या उपस्थित है।

समस्यापूर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी समस्या के आधार पर कोई छंद या श्लोक आदि बनाना।

समह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ख्याति। प्रसिद्धि [को०]।

समांघ्रिक—वि० [सं० समाङ्घ्रिक] अपने पैरों पर सम भाव से खड़ा रहनेवाला [को०]।

समांजन—संज्ञा पुं० [सं० समाञ्जन] सुश्रुत के अनुसार आँखों में लगाने का एक प्रकार का अंजन जो कई ओषधियों के योग से बनता है।

समांत—संज्ञा पुं० [सं० समान्त] १. प्रतिवेशी। वह जो पड़ोसी हो। २. साल का अंत या समाप्ति [को०]।

समांतक—संज्ञा पुं० [सं० समान्तक] कामदेव।

समांतर—वि० [सं० समान्तर] समानांतर। समान अंतरवाला [को०]।

समांश—संज्ञा पुं० [सं०] सम या बराबर का हिस्सा।

समांशक—वि० [सं०] बराबर का हिस्सेदार। समान भाग का हकदार [को०]।

समांशिक—वि० [सं०] दे० 'समांशक'।

समांशी—वि० [सं० समांशिन्] बराबरी का। समान अंशवाला [को०]।

समांस—वि० [सं०] १. जिसमें मांस हो। मांसयुक्त। २. पुष्ट। भरा हुआ। मांसल [को०]।

समांसमीना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गौ जो हर साल बछड़ा ब्याती हो [को०]।

समाँ[१]—संज्ञा पुं० [सं० समय] समय। वक्त।

मुहा०—समाँ बँधना = (संगीत आदि कार्यों का) इतनी उत्तमता से होना कि सब लोग स्तब्ध हो जायँ। समाँ बाँधना = (संगीत आदि में) रंग जमाना या श्रोताओं पर प्रभाव डालना।

२. मौसिम। ऋतु। ३. बहार। आनंद। ४. चमक दमक। सजधज।

समाँ[२]—संज्ञा पुं० [अ०] नजारा। दृश्य [को०]।

समा[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वर्ष। साल।

समा[२]—संज्ञा पुं० [सं० समय] दे० 'समाँ'।

समा[३]—संज्ञा पुं० [अ०] अंबर। आकाश। गगन [को०]।

समाअ—संज्ञा पुं० [अ० समाअ] १. संगीत के स्वरों की तन्मयता में झूमना। २. संगीत श्रवण। गान सुनना [को०]।

समाअत—संज्ञा स्त्री० [अ० समाअत] १. श्रवण करना। सुनना। कान देना। २. सुनने की शक्ति। ३. मुकदमें की सुनवाई या विचार [को०]।

समाई[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० समाना (= अँटना)] १. सामर्थ्य। शक्ति। बूता। समर्थता। २. समाने की क्रिया या भाव।

समाई[२]—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सुनी हुई वार्ता। श्रुति पर आधारित बात। २. सामान्य लोगों द्वारा बोलने में सुना गया वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति व्याकरण के नियमों से सिद्ध न हो [को०]।

समाउ(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० समाना] १. दे० 'समाई'[१]। २. निर्वाह। समाव। अटने की जगह। गुंजाइश।

समाकरण—संज्ञा पुं० [सं०] आहूत करना। बुलाना [को०]।

समाकर्णितक—संज्ञा पुं० [सं०] वह आह्वान, संकेत या इशारा जो अपनी ओर ध्यान आकर्षित करे।

समाकर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समाकर्षण' [को०]।

समाकर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समाकृष्ट] अपनी ओर खींचना या आकृष्ट करना [को०]।

समाकर्षिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत दूर तक फैलनेवाली गंध [को०]।

समाकर्षी[१]—वि० [सं० समाकर्षिन्] [स्त्री० समाकर्षिणी] १. खींचनेवाला। जो अपनी ओर आकृष्ट करे। २. दूर तक सुगंध फैलानेवाला या प्रसार करनेवाला। जैसे,—समाकर्षी पुष्प या समाकर्षी गंध [को०]।

समाकर्षी[२]—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसरणशील सुगंध। दूर तक फैलनेवाली सुगंध [को०]।

समाकार—वि० [सं०] एक समान आकारवाला [को०]।

समाकुंचन—संज्ञा पुं० [सं० समाकुञ्चन] सिकोड़ना। सीमित करना।

समाकुंचित—वि० [सं० समाकुञ्चित] १. सीमित। २. समाप्त किया हुआ। जैसे,—समाकुंचित वक्तव्य या भाषण [को०]।

समाकुल—वि० [सं०] १. जिसकी अक्ल ठिकाने न हो। बहुत अधिक घबराया हुआ। २. भरा हुआ। पूर्ण। आकीर्ण। भीड़भाड़ से युक्त (को०)।

समाकृष्ट—वि० [सं०] १. पास खींचा हुआ। निकट लाया हुआ। २. पूर्णतः आकृष्ट। खींचा हुआ [को०]।

समाक्रमण—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुचलना। रौंदना। २. कदम रखना डग भरना। ३. आक्रमण। धावा। हमला। चढ़ाई [को०]।

समाक्रांत—वि० [सं० समाक्रान्त] १. कुचला हुआ। रौंदा हुआ। २. जिसपर आक्रमण हुआ हो। आक्रांत। ३. पालन किया हुआ हो। आक्रांत पूरा किया हुआ [को०]।

समाक्षिक—वि० [सं०] मधु या शहद से युक्त। शहद के साथ [को०]।

समाख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ख्याति। यश। कीर्ति। २. उपाधि। संज्ञा। नाम। ३. विश्लेषण। स्पष्टीकरण। व्याख्या [को०]।

समाख्यात—वि० [सं०] १. जो प्रसिद्ध या ख्यात हो। २. अच्छी तरह जिसका वर्णन या विवेचन किया गया हो। ३. जिसे गिन लिया गया हो। ४. अभिहित। घोषित (को०)।

समाख्यान—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाम लेना। उल्लेख करना। २. विवरण। व्याख्या। ३. आख्या। नाम [को०]।

समागत[1]—वि० [सं०] १. जिसका आगमन हुआ हो। आगत। आया हुआ। जैसे,—उन्होंने समस्त समागत सज्जनों की यथेष्ट अभ्यर्थना की। २. प्रत्यावर्तित। वापस आया हुआ (को०)। ३. जो संयुक्त स्थिति में हो (को०)। ४. मिला हुआ। संमिलित (को०)।

समागत[2]—संज्ञा पुं० गोष्ठी। समिति। समूह। दल [को०]।

समागता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रहेलिका का एक भेद (को०)।

विशेष—इसमें पहेली का अर्थ शब्दों की संधि में छिपा होता है।

समागति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संयोग। मिलन। एकत्र होना। २. पहुँचना। उपगमन। ३. समान दशा या गति [को०]।

समागम—संज्ञा पुं० [सं०] १. आगमन। आना। जैसे,—इस बार यहाँ बहुत से विद्वानों का समागम होगा। २. मिलना। मिलन। भेंट। जैसे,—इसी बहाने आज सब लोगों का समागम हो गया। ३. स्त्री के साथ संभोग करना। मैथुन। ४. (ग्रहों का) योग। ५. संघ। समूह (को०)।

यौ०—समागम क्षण = समागम काल। समागम प्रार्थना = समागम की इच्छा। समागम मनोरथ = मिलन की इच्छा।

समागमकारी—वि० [सं० समागमकारिन्] जो मिलाने या समागम कराने में सहायक हो [को०]।

समागमन—संज्ञा पुं० [सं०] १. समागम की क्रिया या भाव। मिलने की स्थिति। २. आगमन। आना। ३. संभोग। मैथुन [को०]।

समागमी—वि० [सं० समागमिन्] १. मिलने या समागम करनेवाला। २. आसन्न या उपस्थित भविष्य [को०]।

समागलित—वि० [सं०] जो गिरा हुआ हो। च्युत। पतित [को०]।

समागाढ़—वि० [सं० समागाढ] प्रगाढ़। सुदृढ़।

समाघात—संज्ञा पुं० [सं०] १. युद्ध। लड़ाई। २. जान से मार डालना। हत्या। बध [को०]।

समाघ्राण—संज्ञा पुं० [सं०] सूँघने की क्रिया। खूब अच्छी तरह से सूँघना [को०]।

समाघ्रात—वि० [सं०] खूब सूँघा हुआ। जिसे अच्छी तरह सूँघा गया हो। अनाघ्रात का उलटा [को०]।

समाचक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १. ठीक ढंग से कहना। अच्छी तरह कहना। २. विवृत करना या विवरण उपस्थित करना [को०]।

समाचयन—संज्ञा पुं० [सं०] संग्रहण। चयन की क्रिया [को०]।

समाचरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. सम्यक् आचरण। २. पूर्ण करना। पूरा करना। ३. सेवन करना। व्यवहार में लाना। अमल करना।

समाचरित—वि० [सं०] जिसका अच्छी तरह व्यवहार या सेवन किया गया हो। सम्यक् रूप से आचरित [को०]।

समाचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. संवाद। खबर। हाल। जैसे,—क्या नया समाचार है। उ०—समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ।—मानस, २।५७।

यौ०—समाचारपत्र। समाचार प्रसारण = रेडियो या समाचारपत्रों द्वारा खबर फैलाना। खबर प्रसारित करना। समाचार बुलेटिन = खबर की छोटी विवरणिका, सूचना या इश्तहार।

२. शिष्टाचार। अच्छा व्यवहार (को०)। ३. रीति। प्रथा (को०)। ४. गति। आगे बढ़ना (को०)। ५. आचरण। व्यवहार (को०)।

समाचारपत्र—संज्ञा पुं० [सं० समाचार + पत्र] वह पत्र जिसमें सब देशों के अनेक प्रकार के समाचार रहते हों। खबर का कागज। अखबार।

समाचीर्ण—वि० [सं०] १. जिसे पूरा कर लिया गया हो। २. व्यवहार में लाया हुआ [को०]।

समाचेष्टित[1]—वि० [सं०] १. जिसके लिये प्रयत्न किया जा चुका हो। २. जो व्यवहार में लाया गया हो [को०]।

समाचेष्टित[2]—संज्ञा पुं० १. व्यवहार। आचरण। चरित्र। २. अंगसंचालन का ढंग। भंगिमा [को०]।

समाज—संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। संघ। गरोह। दल। २. सभा। ३. हाथी। ४. एक ही स्थान पर रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करनेवाले वे लोग जो मिलकर अपना एक अलग समूह बनाते हैं। समुदाय। जैसे,—शिक्षित समाज, ब्राह्मण समाज। ५. वह संस्था जो बहुत से लोगों ने एक साथ मिलकर किसी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिये स्थापित की हो। सभा। जैसे,—संगीत समाज, साहित्य समाज। ६. प्राचुर्य। समुच्चय। संग्रह (को०)। ७. एक प्रकार का ग्रहयोग। ८. मिलना। एकत्र होना (को०)।

समाजत—संज्ञा स्त्री० [अ०] खुशामद। अनुनय। विनय [को०]।

समाजवाद—संज्ञा पुं० [सं० समाज + वाद] एक राजनीतिक सिद्धांत।

विशेष—यह शब्द अंग्रेजी 'सोशलिज्म' का हिंदी रूप है। इस सिद्धांत के अनुसार उत्पादन और उसके समान वितरण पर पूरे समाज का अधिकार स्वीकार किया जाता है।

समाजवादी—वि० [सं० समाज + वादिन्] समाजवाद के सिद्धांत का अनुगमन करनेवाला।

समाजशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं० समाज + शास्त्र] वह शास्त्र जो मानव समाज का उसे सामाजिक प्राणी मानकर अध्ययन-विवेचन करता है।

समाजशास्त्री—वि० [सं० समाज + शास्त्रिन्] समाजशास्त्र का पंडित।

समाज सन्निवेशन—संज्ञा पुं० [सं०] समाज या जनसमूह के बैठने के उपयुक्त स्थान।

समाजसेवक—वि० [सं० समाज+सेवक] समाज की सेवा करनेवाला।

समाजसेवा—संज्ञा स्त्री० [सं० समाज+सेवा] वह सेवा जो सामाजिक हित की दृष्टि से की जाय।

समाजसेवी—संज्ञा पुं० [सं० समाजसेविन्] दे० 'समाजसेवक'।

समाजिक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सामाजिक' (को०)।

समाजी—संज्ञा पुं० [हिं० समाज+ई(प्रत्य०)] १. वह व्यक्ति जो वेश्याओं के यहाँ तबला, सारंगी आदि बजाता है। सपरदाई। २. किसी समाज का अनुयायी (विशेषत: आर्यसमाज का)। जैसे—आर्यसमाजी। ३. वह व्यक्ति जो सामाजिक हो।

समाज्ञप्त—वि० [सं०] जिसे आदेश दिया गया हो (को०)।

समाज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यश। कीर्ति। बड़ाई। २. आख्या। संज्ञा। नाम (को०)।

समाज्ञात—वि० [सं०] १. भली भाँति जाना हुआ। पूर्णत: ज्ञात। २. मान्य। माना हुआ।

समातत—वि० [सं०] १. जिसका सिलसिला टूटा न हो। लगातार क्रमवाला। २. जिसे फैला दिया गया हो। पूर्णत: विस्तारित। ३. आकृष्ट। खींचा या ताना हुआ। जैसे—धनुष (को०)।

समाता—संज्ञा स्त्री० [सं० समातृ] १. वह जो माता के समान हो। २. माता की विपत्नी। विमाता। सौतेली माँ।

समातीत—वि० [सं०] एक वर्ष से अधिक आयु का। जो एक वर्ष पूरा कर चुका हो (को०)।

समातृक—वि० [सं०] मातासहित। माता के साथ। मातृयुक्त (को०)।

समादत्त—वि० [सं०] प्राप्त। गृहीत। जिसे ले लिया गया हो (को०)।

समादर—संज्ञा पुं० [सं०] आदर। संमान। खातिर।

समादरणीय—वि० [सं०] समादार करने के योग्य। आदर सत्कार करने के लायक।

समादान¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. बौद्धों का सौगताह्निक नामक नित्य कर्म। २. ग्रहण किए हुए व्रतों या आचारों की उपेक्षा (जैन)। ३. पूर्णत: स्वीकार या ग्रहण (को०)। ४. उचित दान स्वीकार करना। उपयुक्त उपहार लेना (को०)। ५. निश्चय। संकल्प (को०)। ६. प्रारंभ। आरंभ (को०)।

समादान²—संज्ञा पुं० [फ़ा० शमादान] दे० 'शमादान'।

समादापक—वि० [सं०] उत्तेजक। विक्षोभक (को०)।

समादापन—संज्ञा पुं० [सं०] उकसावा। बढ़ावा। उत्तेजन (को०)।

समादिष्ट—वि० [सं०] आदिष्ट। आज्ञप्त। निर्दिष्ट (को०)।

समादृत—वि० [सं०] जिसका अच्छी तरह आदर हुआ हो। संमानित।

समादेय—वि० [सं०] १. आदर या प्रतिष्ठा करने योग्य। २. स्वागत या अभ्यर्थना करने योग्य। ३. ग्रहण या स्वीकरण योग्य (को०)।

समादेश—संज्ञा पुं० [सं०] आज्ञा। आदेश। हुकुम।

यौ०—समादेश याचिका = (राजाज्ञा प्राप्त करने के लिये) प्रार्थना पत्र (अं० रिट अप्लिकेशन)।

समाधा—संज्ञा पुं० [सं०] १. निराकरण। निपटारा। २. विरोध करना। ३. सिद्धांत। ४. दे० 'समाधान'।

समाधान—संज्ञा पुं० [सं०, [वि० समाधानीय] १. चित्त को सब ओर से हटाकर ब्रह्म की ओर लगाना। मन को एकाग्र करके ब्रह्म में लगाना। समाधि। प्रणिधान। २. किसी के शंका या प्रश्न करने पर दिया जानेवाला वह उत्तर जिससे जिज्ञासु या प्रश्नकर्ता का संतोष हो जाय। किसी के मन का संदेह दूर करनेवाली बात। ३. इस प्रकार कोई बात कहकर किसी को संतुष्ट करने की क्रिया। ४. किसी प्रकार का विरोध दूर करना। ५. निष्पत्ति। निराकरण। ६. नियम। ७. तपस्या। ८. अनुसंधान। अन्वेषण। ९. ध्यान। १०. मत की पुष्टि। सहमति। समर्थन। ११. मिलाना। मेल बैठाना। साथ रखना (को०)। १२. उत्सुकता। औत्सुक्य (को०)। १३. मन की स्थिरता। मन:स्थैर्य (को०)। १४. नाटक की मुखसंधि के उपक्षेप, परिकर आदि १२ अंगों में से एक अंग। बीज को ऐसे रूप में पुन: प्रदर्शित करना जिससे नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रतीत हो।

समाधानना(पु)—क्रि० स० [सं० समाधान+हिं० ना (प्रत्य०)] समाधान करना। संतोष देना। सांत्वना प्रदान करना।

समाधि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समर्थन। २. नियम। ३. ग्रहण करना। अंगीकार। ४. ध्यान। ५. आरोप। ६. प्रतिज्ञा। ७. प्रतिशोध। बदला। ८. विवाद का अंत करना। झगड़ा मिटाना। ९. कोई असंभव या असाध्य कार्य करने के लिये उद्योग करना। कठिनाइयों में धैर्य के साथ उद्योग करना। १०. चुप रहना। मौन। ११. निद्रा। नींद। १२. योग। १३. योग का चरम फल, जो योग के आठ अंगों में से अंतिम अंग है और जिसकी प्राप्ति सबके अंत में होती है।

विशेष—इस अवस्था में मनुष्य सब प्रकार के क्लेशों से मुक्त हो जाता है, चित्त की सब वृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं, बाह्य जगत् से उसका कोई संबंध नहीं रहता, उसे अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं और अंत में कैवल्य की प्राप्ति होती है। योग दर्शन में इस समाधि के चार भेद बतलाए हैं—संप्रज्ञात समाधि, सवितर्क समाधि, सविचार समाधि और सानंद समाधि। समाधि की अवस्था में लोग प्राय: पद्मासन लगाकर और आँखें बंद करके बैठते हैं, उनके शरीर में किसी प्रकार की गति नहीं होती; और ब्रह्म में उनका अवस्थान हो जाता है। विशेष दे० 'योग' ३६ और ३८।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

१४. किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव जमीन में गाड़ना।

क्रि० प्र०—देना।

१५. वह स्थान जहाँ इस प्रकार शव या अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हों। छतरी। १६. काव्य का एक गुण जिसके द्वारा दो घटनाओं का दैवसंयोग से एक ही समय में होना प्रकट होता है और जिसमें एक ही क्रिया का दोनों कर्त्ताओं के साथ अन्वय

होता है। १७. एक प्रकार का अर्थालंकार जो उस समय माना जाता है जब किसी आकस्मिक कारण से कोई कार्य बहुत ही सुगमतापूर्वक हो जाता है। उ०—(क) हरि प्रेरित तेहि अवसर चले पवन उनचास। (ख) मीत गमन अवरोध हित सोचत कछू उपाय। तब ही आकस्मात तें उठो घटा घहराय। १८. साथ मिलाना या करना (को०)। १९. गरदन का जोड़ या उसकी एक विशेष अवस्था (को०)। २०. दुर्भिक्ष के समय अनाज बचाकर रखना। अन्न संचय (को०)। २१. तपस्या (को०)। २२. पूर्ति। संपन्नता (को०)। २३. प्रतिदान (को०)। २४. सहारा। आश्रय (को०)। २५. इंद्रियनिरोध (को०)। २६. सत्तरहवाँ कल्प (को०)।

यौ०—समाधिनिष्ठ = समाधिस्थ। समाधिभंग = समाधि टूटना। समाधिभृत् = समाधि में लीन। समाधिभेद = (१) समाधि के चार भेद। (२) समाधि भंग होना।

समाधि[२] -संज्ञा स्त्री० [सं० समाधित या समाधान] दे० 'समाधान'। (क्व०)। उ०—व्याधि भूत जनित उपाधि काहू खल की समाधि कीजै तुलसी को जानि जन फुर कै।—तुलसी (शब्द०)।

समाधिक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ योगियों आदि के मृत शरीर गाड़े जाते हैं। २. साधारण मुरदे गाड़ने की जगह। कब्रिस्तान।

समाधिगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

समाधित—वि० [सं०] १. जिसने समाधि लगाई हो। समाधि अवस्था को प्राप्त। २. तुष्ट या प्रसन्न किया हुआ (को०)।

समाधित्व—संज्ञा पुं० [सं०] समाधि का भाव या धर्म।

समाधिदशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दशा जब योगी समाधि में स्थित होता है और परमात्मा में प्रेमबद्ध होकर निमग्न और तन्मय होता है तथा अपने आप को भूलकर चारों ओर ब्रह्म ही ब्रह्म देखता है।

समाधिमत्—वि० [सं०] दे० 'समाधी' (को०)।

समाधिमोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] पुरानी संधि तोड़ना। समझौता तोडना। संधिभंग। (कौटि०)।

विशेष—चाणक्य ने इसके अनेक नियम दिए हैं। संधि के समय किसी पक्ष को दूसरे पक्ष से जो वस्तुएँ मिली हों, उन्हें किस प्रकार लौटाना चाहिए, किस प्रकार सूचना देनी चाहिए आदि बातों का उसने पूर्ण वर्णन किया है।

समाधियोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. समाधियुक्त होना। २. ध्यान या विचार का प्रभाव या गुणवत्ता (को०)।

समाधिविग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] ध्यान की प्रतिमूर्ति (को०)।

समाधिशिला—संज्ञा स्त्री० [सं० समाधि + शिला] किसी की समाधि पर लगाई जानेवाली वह शिला जिसपर समाधिस्थ व्यक्ति का नाम, जन्म और मृत्युतिथि अंकित हो।

समाधिसमानता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार ध्यान का एक भेद।

समाधिस्थ—वि० [सं०] जो समाधि में स्थित हो। जो समाधि लगाए हुए हो।

समाधिस्थल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समाधिक्षेत्र'।

समाधी—वि० [सं० समाधिन्] १. समाधिस्थ। जो समाधि में हो। २. धर्मनिष्ठ। धार्मिक। उपासक (को०)।

समाधूत—वि० [सं०] जिसे दूर या तितर बितर कर दिया गया हो। भगाया हुआ (को०)।

समाधेय—वि० [सं०] १. समाधान करने के योग्य। जिसका समाधान हो सके। २. निर्देश योग्य। जिसे निर्देश किया जा सके (को०)। ३. अंगीकार योग्य। स्वीकरणीय (को०)। ४. जो क्रमयुक्त या व्यवस्थित किया जा सके (को०)।

समाध्मात—वि० [सं०] १ फूला हुआ। जैसे,—समाध्मात उदर। २. गर्वयुक्त। फूला हुआ। ३. फुलाया हुआ। जिसमें हवा भर दी गई हो (को०)।

समान[१]—वि० [सं०] जो रूप, गुण, मान, मूल्य, महत्व आदि में एक से हों। जिनमें परस्पर कोई अंतर न हो। सम। बराबर। सदृश। तुल्य। एकरूप। जैसे,—वे दोनों समान विद्वान् हैं; उनमें कोई अंतर नहीं है।

मुहा०—एक समान = एक सा। एक जैसा।

यौ०—समान वर्ण = ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण एक ही स्थान से होता हो। जैसे,—क, ख, ग, घ समान वर्ण हैं।

२. सामान्य। साधारण (को०)। ३. मध्यवर्ती। उभयनिष्ठ। बीच का (को०)। ४. क्रोधी। कोपाविष्ट। क्रोधयुक्त (को०)। ५. सज्जन। भला (को०)। ६. समादरणीय। समादृत। संमानित (को०)। ७. साकल्य। समग्रता। समास। जैसे, संख्या का (को०)।

समान[२]—संज्ञा पुं० १. सत्। २. शरीर के अंतर्गत पाँच वायुओं में से एक वायु जिसका स्थान नाभि माना गया है। ३. मित्र। साथी (को०)। ४. व्याकरण के अनुसार एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले वर्ण (को०)।

समानकरण—वि० [सं०] (स्वर) जिनका करण या उच्चारण स्थान एक हो (को०)।

समानकर्तृक—वि० [सं०] एककर्तृक। (वाक्य आदि) जिनका कर्ता एक ही हो (को०)।

समानकर्म—संज्ञा पुं० [सं० समानकर्मन्] १. वे जो एक ही तरह का काम करते हों। एक ही तरह का व्यवसाय या कार्य करनेवाले। हमपेशा। २. समान काम। एक ही काम (को०)। ३. वे वाक्य जिनके कर्म कारक समान या एक ही हों।

समानकर्मक—वि० [सं०] १. व्याकरण में एक ही कर्मवाला। २. समान कर्म करनेवाला (को०)।

समानकाल, समानकालीन—संज्ञा पुं० [सं०] वे जो एक ही समय में उत्पन्न हुए या अवस्थित रहे हों। समकालीन।

समानक्षेत्र—वि० [सं०] समान क्षेत्रवाला। आपस में एक दूसरे को संतुलित करनेवाला (को०)।

समानगति--वि० [सं०] एकमत, एक राय होनेवाले [को०]।

समानगोत्र--संज्ञा पुं० [सं०] वे जो एक ही गोत्र में उत्पन्न हुए हों। सगोत्र।

समानग्रामीय--वि० [सं०] एक ही गाँव में निवास करनेवाले [को०]।

समानजन्मा--संज्ञा पुं० [सं० समानजन्मन्] १. वे जो प्रायः एक साथ ही, अथवा एक ही समय में उत्पन्न हुए हों। जो अवस्था या उम्र में बराबर हों। समवयस्क। २. वे जिनका उत्पत्ति-स्थान एक हो [को०]।

समानतंत्र--संज्ञा पुं० [सं० समानतन्त्र] १. वे जो एक ही काम करते हों। समान कर्म। हमपेशा। २. वे जो वेद की किसी एक ही शाखा का अध्ययन करते हों और उसी के अनुसार यज्ञ आदि कर्म करते हों।

समानता--संज्ञा स्त्री० [सं०] समान होने का भाव। तुल्यता। बराबरी। जैसे,--इन दोनों में बहुत कुछ समानता देखने में आती है।

समानतेजा--वि० [सं० समानतेजस्] समान दीप्ति या कीर्तिवाले। जिनकी कांति या कीर्ति समान हो [को०]।

समानतोऽर्थापद--संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार एक ही साथ चारों ओर अर्थ सिद्धि।

समानत्व--संज्ञा पुं० [सं०] समान होने का भाव। समानता। तुल्यता। बराबरी।

समानदुःख--वि० [सं०] समान कष्ट या या दुःखवाला। समान वेदना-युक्त। समवेदना व्यक्त करनेवाला [को०]।

समदेवत, समदैवत्य--वि० [सं०] जो एक ही या समान देवता संबंधी हो [को०]।

समानधर्मा--वि० [सं०] समान गुण, धर्म, प्रकृतिवाला। तुल्य गुण-वाला [को०]।

समाननामा--संज्ञा पुं० [सं० समाननामन्] वे जिनके नाम एक ही हों। एक ही नामवाले। नामरासी।

समानयन--संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह अथवा आदरपूर्वक ले आने की क्रिया। २. एक साथ करना। एकत्र करना। संग्रह करना (को०)।

समाननिधन--वि० [सं०] जिनका निधन या परिणाम एक सा हो [को०]।

समानप्रतिपत्ति--वि० [सं०] समान मेधावाला। विवेकशील [को०]।

समानप्रेमा--वि० [सं० समानप्रेमन्] जिसका प्रेम सदा एक समान हो [को०]।

समानमान--वि० [सं०] तुल्य सम्मान प्राप्त करनेवाला। जो किसी के समान सम्मान का भागी हो [को०]।

समानयम--संज्ञा पुं० [सं०] एक ही या समान ऊँचाई का स्वर। समान तार स्वर (संगीत)।

समानयोगित्व--संज्ञा पुं० [सं०] वह जो समान स्तर या योग का हो [को०]।

समानयोनि--संज्ञा पुं० [सं०] वे जो एक ही योनि या स्थान से उत्पन्न हुए हों।

समानरुचि--वि० [सं०] जिनकी रुचि एक समान हो [को०]।

समानरूप--वि० [सं०] जिनका रूप, रंग समान हो [को०]।

समानर्ष, समानर्षि--संज्ञा पुं० [सं०] वे जो एक ही ऋषि के गोत्र या वंश में उत्पन्न हुए हों।

समानवयस्क--वि० [सं०] दे० 'समानवया'।

समानवया--वि० [सं० समानवयस्] तुल्य वय का समान उम्रवाला। हमउम्र [को०]।

समानवर्चस--वि० [सं० समानवर्चस्] समान कांतिवाला। जिनकी कांति एक सदृश हो [को०]।

समानवर्ण--वि० [सं०] १. दे० 'समान रूप'। २. समान वर्णवाला। समानाक्षर युक्त [को०]।

समानवसन, समानवस्त्र--वि० [सं०] जिनका पहनावा एक सा हो। समान वस्त्र, परिधानवाले [को०]।

समानविद्य--वि० [सं०] किसी के समान ज्ञानवाला। समान विद्या से युक्त। समकक्ष (विद्वान्)।

समानशब्दत्व--संज्ञा पुं० [सं०] एक समान शब्दों द्वारा भाव या विचारों को अभिव्यक्त करने की स्थिति [को०]।

समानशब्दा--संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रहेलिका का एक भेद [को०]।

समानशील--वि० [सं०] जिनका शील स्वभाव समान या एक सा हो [को०]।

समानसंख्य--वि० [सं० समानसङ्ख्य] जिसकी संख्याएँ समान हों। समान संख्यावाला [को०]।

समानसलिल--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समानोदक' [को०]।

समानस्थान--संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ दिन और रात दोनों बराबर होते हैं।

समानांतर--वि० [सं० समानान्तर] १. जो हमेशा एक समान अंतर पर रहे। जैसे,--समानांतर रेखा। २. साथ साथ चलने या काम करनेवाला। जैसे,--समानांतर सरकार। ३. समकक्ष। तुल्य। बराबर (को०)।

समाना[1]--क्रि० अ० [सं० समाविष्ट] अंदर आना। भरना। अटना। जैसे,--यह समाचार सुनते ही सबके हृदय में आनंद समा गया। उ०--तासु तेज प्रभु बदन समाना। सुर मुनि सबहि अचंभौ माना।--मानस, ६।७०।

समाना[2]--क्रि० स० किसी के अंदर रखना। भरना। अटाना। जैसे--ये सब चीजें इसी बक्स के अंदर समा दो।

समानाधिकरण[1]--संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये आता है। जैसे,--लोगों से लड़ते फिरना, यही आपका काम है। इसमें 'यही' शब्द 'लड़ते फिरना' का समानाधिकरण है। २. समान स्थान या परिस्थिति (को०)। ३. एक ही कारक-विभक्ति से युक्त होना (को०)। ४. समान आधार। समान वर्ग या श्रेणी।

समानाधिकरण[२]—वि० १. समान आधारवाला। २. एक ही श्रेणी या वर्ग का। ३. एक ही कारक विभक्ति से युक्त [को०]।

समानाधिकार—संज्ञा पुं० [सं०] समानता का अधिकार। बराबरी का दरजा [को०]।

समानाभिहार—संज्ञा पुं० [सं०] समान या एक ही प्रकार की वस्तुओं का संमिश्रण [को०]।

समानार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो। पर्याय। २. वे जिनका प्रयोजन या उद्देश्य समान हो।

समानार्थक—वि० [सं०] दे० 'समानार्थ' [को०]।

समानिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की वर्णवृत्ति जिसमें रगण, जगण और एक गुरु होता है। समानी। उ०—देखि देखि कै सभा। विप्र मोहियो प्रभा। राजमंडली लसै। देव लोक को हँसै।—केशव (शब्द०)।

समानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण वृत्त। दे० 'समानिका'।

समानोदक—संज्ञा पुं० [सं०] जिनकी ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वज एक हों। इन्हें साथ साथ तर्पण करने का अधिकार होता है।

समानोदर्य—संज्ञा पुं० [सं० समानोदर्य्य] वे जिनका जन्म एक ही माता के गर्भ से हुआ हो। सहोदर भाई। सगा भाई।

समानोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद।

विशेष—इसमें संधिविच्छेद से एक ही उपमा दूसरी उपमा का भी काम दे जाती है। जैसे,—'सालकानन' में दो उपमाएँ छिपी हैं—(क) सालक+आनन अर्थात् अलकावली से युक्त आनन और (ख) साल+कानन अर्थात् वह जंगल जिसमें साल के ही वृक्ष हों।

समाप—संज्ञा पुं० [सं०] इष्ट देवता की सपर्या या पूजा [को०]।

समापक—संज्ञा पुं० [सं०] समाप्त करनेवाला। खतम करनेवाला। पूरा करनेवाला।

समापतित—वि० [सं०] सामने आया हुआ। जो घटित हो [को०]।

समापत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक ही समय में और एक ही स्थान पर उपस्थित होना। मिलना। २. संयोग। मौका। अवसर (को०)। ३. पूर्ति। समाप्ति (को०)। ४. मूल रूप का ग्रहण या प्राप्ति (को०)।

यौ०—समापत्तिदृष्ट=संयोग से दिखाई पड़नेवाला।

समापन—संज्ञा पुं० [सं०] १. समाप्त करने की क्रिया। खतम करना। पूरा करना। २. मार डालना। हत्या करना। वध। ३. सूक्ष्म चिंतन। गूढ़ चिंतन (को०)। ४. खंड। अध्याय। विभाग (को०)। ५. अवाप्ति। उपलब्धि। अभिग्रहण (को०)। ६. समाधान।

समापना—संज्ञा स्त्री० [सं०] संपन्न होने का भाव। निष्पत्ति। परिणति। सिद्धि। संपन्नता [को०]।

समापनीय—वि० [सं०] १. समाप्त करने योग्य। खतम करने के लायक। २. मार डालने योग्य। वध्य।

समापन्न[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. मार डालना। हत्या करना। बध। २. मरण। मृत्यु। ३. अंत। समाप्ति। पूर्ति (को०)।

समापन्न[२]—वि० १. खतम किया हुआ। समाप्त किया हुआ। २. बध किया हुआ। मारा हुआ। निहत (को०)। ३. आगत। पहुँचा हुआ (को०)। ४. घटित। गुजरा हुआ (को०)। ५. निष्णात। प्रवीण। कुशल (को०)। मिला हुआ। प्राप्त। ६. युक्त। अन्वित। उपेत (को०)। ७. आर्त। दुःखित। अभिभूत (को०)। ८. क्लिष्ट। कठिन।

समापादन—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण करना। रूप या आकार देना। संपादित करना [को०]।

समापादनीय—वि० [सं०] पूरा करने योग्य। आकारित करने योग्य। रूप देने योग्य [को०]।

समापाद्य—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण के अनुसार विसर्ग का 'स' और 'ष' में परिवर्तन।

समापिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण में दो प्रकार की क्रियाओं में से एक प्रकार की क्रिया जिससे किसी कार्य का समाप्त हो जाना सूचित होता है। जैसे,—वह परसों यहाँ से चला गया। इस वाक्य में 'चला गया' समापिका क्रिया है।

समापित—वि० [सं०] समाप्त किया हुआ। खतम या पूरा किया हुआ।

समापी—संज्ञा पुं० [सं० समापिन्] वह जो समाप्त करता हो। खतम करनेवाला।

समापूर्ण—वि० [सं०] पूरा पूरा भरा हुआ। सम्यक् आपूरित। लबरेज [को०]।

समाप्त—वि० [सं०] १. जिसका अंत हो गया हो। जो खतम या पूरा हो। जैसे,—(क) जब आप अपनी सब बातें समाप्त कर लीजिएगा, तब मैं भी कुछ कहूँगा। (ख) आपका यह ग्रंथ कबतक समाप्त होगा। २. निपुण। कुशल। चतुर (को०)। ३. परिपूर्ण (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—समाप्तप्राय=जो लगभग समाप्त या पूर्ण हो। समाप्तभूयिष्ठ=जो प्रायः पूरा हो गया हो। समाप्तशिक्ष=जिसने शिक्षा पूर्ण कर ली हो।

समाप्तलंभ—संज्ञा पुं० [सं० समाप्तलम्भ] बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।

समाप्ताल—संज्ञा पुं० [सं०] पति। स्वामी। मालिक। खाविंद।

समाप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी कार्य या बात आदि का अंत होना। उस अवस्था को पहुँचना जब कि उस संबंध में और कुछ भी करने को बाकी न रहे। खतम या पूरा होना। २. प्राप्त होने या मिलने का भाव। प्राप्ति। ३. निष्पन्नता। पूर्णता (को०)। ४. अंतर या मतभेद दूर करना (को०)। ५. शरीर आदि का विभिन्न तत्वों में विघटन। मृत्यु (को०)।

समाप्तिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो समाप्त करता हो। खतम या पूरा करनेवाला। २. वह जो वेदों का अध्ययन समाप्त कर चुका हो।

समाप्तिक[2]—वि० समाप्ति का। अंत का। २. जिसने काम पूरा कर दिया हो (को०)।

समाप्य—वि० [सं०] समाप्त करने के योग्य। खतम या पूरा करने के लायक।

समाप्यायित—वि० [सं०] जो अच्छी तरह तृप्त, पोषित, संतुष्ट किया गया हो (को०)।

समाप्लव, समाप्लाव—संज्ञा पुं० [सं०] स्नान करने की क्रिया। नहाना। गोता लगाना।

समाप्लुत—वि० [सं०] १. जो गोता लगा चुका हो। नहाया हुआ। २. बाढ़ग्रस्त। बाढ़ में डूबा हुआ। ३. भरा हुआ। पूर्ण (को०)।

समाभाषण—संज्ञा पुं० [सं०] बातचीत। वार्तालाप (को०)।

समाम्नात—वि० [सं०] १. जिसे बार बार कहा गया हो। दोहराया हुआ। २. परंपरागत। परंपरा से प्राप्त (को०)।

समाम्नाता—संज्ञा पुं० [सं० समाम्नातृ] १. वह जो बारबार कहता हो। दुहरानेवाला। २. वह जो मूल पाठ का संग्रह या संपादन करता हो (को०)।

समाम्नान—संज्ञा पुं० [सं०] १. आवृत्ति करना। दुहराना। २. गणना। ३. परंपराप्राप्त पाठ या वर्णन (को०)।

समाम्नाय—संज्ञा पुं० [सं०] १. शास्त्र। २. समूह। समष्टि। जैसे,—अक्षर समाम्नाय। ३. परंपरा। अनुश्रुति (को०)। ४. पढ़ना। पाठ करना। गान करना (को०)। ५. शिव (को०)। ६. संहार। प्रलय (को०)। ७. पवित्र ग्रंथ (को०)। ८. (शब्दों या वचनों का) परंपरागत संग्रह। जैसे, पशु समाम्नाय (को०)।

समाम्नायिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे शास्त्रों का अच्छा ज्ञान हो। शास्त्रवेत्ता।

समाम्नायिक[2]—वि० शास्त्र संबंधी। शास्त्र का।

समाय—संज्ञा पुं० [सं०] १. पहुँचना। आना। २. यों ही देखने के लिये आना (को०)।

समायत—वि० [सं०] जिसे फैला दिया गया हो। पूरा पूरा लंबा। विस्तृत (को०)।

समायत्त—वि० [सं०] जो किसी के सहारे टिका हो। पूर्णतः अधीन या वशीभूत (को०)।

समायस्त—वि० [सं०] दुःखी। खिन्न। पीड़ित। विषादग्रस्त (को०)।

समायात—वि० [सं०] १. लौटा हुआ। प्रत्यावर्तित। २. साथ साथ या समीप आया हुआ (को०)।

समायी—वि० [सं० समायिन्] १. समकाल में घटनेवाला। एक ही समय में होनेवाला। २. एक के बाद दूसरा तत्काल होने या घटनेवाला (को०)।

समायुक्त—वि० [सं०] १. साथ जोड़ा हुआ। संघटित। संयुक्त। २. तैयार किया हुआ। निर्मित। ३. कृतसंकल्प। संलग्न। ४. युक्त। सज्जित। सहित। ५. जिसे कोई कार्यभार सौंपा गया हो। नियुक्त किया हुआ (को०)।

समायुत—वि० [सं०] १. संयुक्त। साथ मिलाया हुआ। २. संग्रहीत। एकत्रित किया हुआ। ३. सहित। युक्त। अन्वित (को०)।

समायोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. संयोग। २. बहुत से लोगों का एक साथ एकत्र होना। ३. तैयारी (को०)। ४. (धनुष पर) बाण संधान करना (को०)। ५. कारण। प्रयोजन। उद्देश्य (को०)। ६. राशि। ढेर (को०)।

समारंभ—संज्ञा पुं० [सं० समारम्भ] १. अच्छी तरह आरंभ होना। २. समारोह (क्व०)। ३. दे० 'समालंभ'। अंगलेप। ४. उद्योग। साहसिक कार्य (को०)। ५. उद्योग का उत्साह। साहसपूर्ण कार्य करने का उत्साह या भावना (को०)।

समारंभण—संज्ञा पुं० [सं० समारम्भण] १. गले लगाना। आलिंगन। २. अंगलेपन। समालंभन (को०)।

समारब्ध—वि० [सं०] १. शुरू किया हुआ। २. जो हो चुका हो। घटित। ३. जिसने आरंभ किया हो। आरंभक (को०)।

समारभ्य—वि० [सं०] समारंभ करने योग्य।

समाराधन—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह आराधना या उपासना करना। २. सेवा। टहल (को०)। ३. संतुष्टि या प्रसादन का साधन (को०)।

समारूढ़—वि० [सं० समारूढ] १. किसी पर चढ़ने या आरूढ़ होनेवाला। २. चढ़ा हुआ। आरूढ़। सवार। ३. जिसने स्वीकार कर लिया हो। राजी। ४. बढ़ा हुआ। वर्धित। ५. (घाव) जो भरा हुआ हो (को०)।

समारोप—संज्ञा पुं० [सं०] १. चढ़ाना। रोपण करना। जैसे,—धनुष। २. स्थानांतरण। स्थल परिवृत्ति (को०)। ३. दे० 'आरोप'।

समारोपक—वि० [सं०] १. वर्धन करनेवाला। वर्धक। २. समारोप करनेवाला। ३. रोपने या उपजानेवाला (को०)।

समारोपण—संज्ञा पुं० [सं०] १. तानना या चढ़ाना। जैसे,—धनुष (को०)। २. दे० 'आरोपण'।

समारोपित—वि० [सं०] १. चढ़ाया हुआ। ताना हुआ। जैसे,—धनुष। २. किसी को दिया हुआ। प्रदत्त। ३. दे० 'आरोपित' (को०)।

समारोह—संज्ञा पुं० [सं०] १. आडंबर। तड़क भड़क। धूम धाम। २. कोई ऐसा कार्य या उत्सव जिसमें बहुत धूमधाम हो। ३. स्वीकरण। स्वीकार (को०)। ४. चढ़ना। दे० 'आरोह'।

समारोहण—संज्ञा पुं० [सं०] १. केशों का बढ़ना। बाल बढ़ना। २. आरोहण या सवार होने की क्रिया। ३. यज्ञ की अग्नि का स्थानांतरण (को०)।

समार्थ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] समान अर्थवाला शब्द। पर्य्याय।

समार्थ[2]—वि० जो समान अर्थवाला हो (को०)।

समार्थक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] समान अर्थवाला शब्द। पर्य्याय।

समार्थक[2]—वि० दे० 'समार्थ[2]' (को०)।

समार्थी—वि० [सं० समार्थिन्] १. समता या बराबरी का इच्छुक। २. शांति का अन्वेषक। शांति की कामनावाला (को०)।

समार्ष—वि० [सं०] एक ही प्रवर से संबंधित। जो समान प्रवरवाला हो (को०)।

समालंब—संज्ञा पुं० [सं० समालम्ब] रोहिष तृण। रूसा नामक घास।

समालबन—संज्ञा पुं० [सं० समालम्बन] आलंबन करना। टेक लेना। सहारा लेना [को०]।

समालंबित—वि० [सं० समालम्बित] किसी के सहारे टिका हुआ। आश्रित। टँगा हुआ। लगा हुआ [को०]।

समालंबिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० समालम्बिनी] एक तृण [को०]।

समालंबी[1]—संज्ञा पुं० [सं० समालम्बिन्] भू तृण।

समालंबी[2]—वि० पराश्रयी। परावलंबी [को०]।

समालंभ—संज्ञा पुं० [सं० समालम्भ] १. शरीर पर केशर आदि का लेप करना। २. मार डालना। हत्या करना। ३. ग्रहण करना। पकड़ना (को०)। ४. (यज्ञ में) पशु को बलि के लिये पकड़ना (को०)।

समालभन—संज्ञा पुं० [सं० समालम्भन] दे० 'समालंभ'।

समालक्ष्य—वि० [सं०] जो दिखाई पड़े। दिखाई पड़नेवाला। व्यक्त। गोचर [को०]।

समालब्ध—वि० [सं०] १. जो पकड़ में आ गया हो। गृहीत। २. संपर्क में आया हुआ [को०]।

समालाप—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी तरह बातचीत करना।

समालिंगन—संज्ञा पुं० [सं० समालिङ्गन] [वि० समालिंगित] कसकर आलिंगन करना। गाढ़ालिंगन [को०]।

स मालिप्त—वि० [सं०] अच्छी तरह लिप्त या पुता हुआ। लेप किया हुआ [को०]।

समाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुष्पगुच्छ। फूलों का गुच्छा। कुसुम का स्तबक। गुलदस्ता [को०]।

समालोक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अवलोकना। देखना। २. कल्पना। चिंतन। मनन [को०]।

स मालोकन—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह देखना। निरीक्षण। २. सोचना। विचारना। मनन। चिंतन (को०)।

समालोकी[1]—संज्ञा पुं० [सं० समालोकिन्] १. वह जो किसी चीज को अच्छी तरह देखता हो।

समालोकी[2]—वि० १. किसी वस्तु का अच्छी तरह निरीक्षण करनेवाला। २. सोचने विचारनेवाला। चिंतन मंनन करनेवाला [को०]।

समालोच—संज्ञा पुं० [सं०] बातचीत। संभाषण। संलाप [को०]।

समालोचक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो किसी चीज के गुण और दोष देखकर बतलाता हो। २. वह जो कृति के दोष गुण आदि को विवेचित करता हो। समालोचना करनेवाला। ३. अच्छी तरह देखनेवाला।

समालोचन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समालोचना'।

समालोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अच्छी तरह देखने की क्रिया। खूब देखना भालना। २. किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना। यह देखना कि किसी चीज में कौन सी बातें अच्छी और कौन सी खराब हैं; विशेषत: किसी पुस्तक के गुण और दोष आदि देखना। ३. वह कथन, लेख या निबंध आदि जिसमें इस प्रकार गुणों और दोषों की विवेचना हो। आलोचना।

समालोची—संज्ञा पुं० [सं० समालोचिन्] वह जो किसी चीज के गुण और दोष देखता हो। समालोचना करनेवाला।

समावर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] वशीभूत करना। अपनी ओर करना या खींचना। आकृष्ट करना [को०]।

समावर्जित—वि० [सं०] झुकाया हुआ। जिसे झुका दिया गया हो। कृतनम्र [को०]।

समावर्त्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. वापस आना। लौटना। २. दे० 'समावर्तन'। ३. विष्णु (को०)।

समावर्त्तन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समावर्तनीय] १. वापस आना। लौटना। २. गुरुकुल में विद्याध्ययन करके ब्रह्मचारी का गुरु की अनुमति से अपने घर वापस जाना। ३. प्राचीन वैदिक काल का एक प्रकार का संस्कार। समावर्तन संस्कार।

विशेष—यह संस्कार उस समय होता था, जब बालक या ब्रह्मचारी नियत समय तक गुरुकुल में रहकर और वेदों तथा अन्यान्य विद्याओं का अच्छी तरह अध्ययन करने के उपरांत स्नातक बनकर घर लौटता था। इस संस्कार के समय कुछ हवन आदि होते थे।

यौ०—समावर्तन संस्कार = दे० 'समावर्तन'—३।

समावर्तनीय—वि० [सं०] १. लौटने योग्य। वापसी के लायक। २. जो समावर्तन संस्कार करने योग्य हो गया हो।

समावर्तमान—वि० [सं०] दे० 'समावर्त्ती'।

समावर्त्ती—वि० [सं० समावर्त्तिन्] १. अध्ययन समाप्त कर गुरुकुल से लौटनेवाला। २. लौटने या वापस होनेवाला।

समावह—वि० [सं०] १. जो उत्पन्न या प्रस्तुत करे। २. जो किसी (कार्य या व्याधि) का कारणभूत हो [को०]।

समावाय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समवाय'।

समावास—संज्ञा पुं० [सं०] १. निवास स्थान। घर। २. ठहरने का स्थान। ३. शिविर। पड़ाव [को०]।

समावासित—वि० [सं०] १. ठहराया या टिकाया हुआ। २. बसाया हुआ [को०]।

यौ०—समावासित कटक = वह जिसने सेना को शिविर करने का आदेश दिया हो।

समाविग्न—वि० [सं०] १. भीत या डरा हुआ। २. उद्वेल्लित। क्षुब्ध। विह्वल। कंपित [को०]।

समाविद्ध—वि० [सं०] १. जिसका संयोग या संघटन हुआ हो। २. विह्वल। क्षोभयुक्त। आकुल (को०)। ३. क्षीण (को०)।

समाविष्ट—वि० [सं०] १. जिसका समावेश हुआ हो। समाया हुआ। २. जिसका चित्त किसी एक ओर लगा हुआ हो। एकाग्र चित्त। ३. गृहीत। ग्रहण किया हुआ (को०)। ४. भूतप्रेत

आदि के आवेश से ग्रस्त। भूताविष्ट (को०)। ५. संयुक्त। युक्त। संपन्न। सहित (को०)। ६. निश्चित। स्थिर किया हुआ (को०)। ७. पूर्णतः शिक्षित या सुनिर्दिष्ट (को०)। ८. पूर्णतः आच्छादित, प्रभावित या आवेष्टित (को०)।

समावी—वि० [अ०] आकस्मिक। आसमानी। दैवी।

समावृत्त—वि० [सं०] १. अच्छी तरह ढका या छाया हुआ। २. घिरा हुआ। लपेटा हुआ। वलयित (को०)। ३. सुरक्षित। अवरुद्ध या बंद किया हुआ (को०)। ४. रोका हुआ (को०)। ५. आकीर्ण। विकीर्ण (को०)।

समावृत्त[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो विद्या अध्ययन करके, समावर्तन संस्कार के उपरांत, घर लौट आया हो। जिसका समावर्तन संस्कार हो चुका हो।

समावृत्त[2]—वि० [सं०] १. पूर्ण या किया हुआ। २. लौटा हुआ। वापस (को०)। ३. जुटना। एकत्र होना। ४. जो गुरुकुल से लौटा हो (को०)।

समावृत्तक—संज्ञा पुं० [सं०] गुरुकुल से शिक्षा समाप्त कर लौटा हुआ स्नातक। दे० 'समावृत्त' (को०)।

समावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दे० 'समावर्त्तन'। २. पूर्णता। समाप्ति (को०)।

समावेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ या एक जगह रहना। २. एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अंतर्गत होना। जैसे,—इस एक ही आपत्ति में आपको सब आपत्तियों का समावेश हो जाता है। ३. चित्त को किसी एक ओर लगाना। मनोनिवेश। ४. मिलना। साहचर्य (को०)। ५. घुसना। प्रवेश करना (को०)। ६. प्रेतावेश (को०)। ७. प्रणयोन्माद। भावावेश (को०)। ८. मतैक्य (को०)। ९. व्याप्त होना (को०)।

समावेशन—संज्ञा पुं० [सं०] १. घुसना। बैठना। २. विवाह की संसिद्धि, संपन्नता या पूर्णावस्था (को०)।

समावेशित—वि० [सं०] १. जिसका समावेश किया गया हो (को०)। २. खचित। जड़ा हुआ। जटित (को०)। ३. दे० 'समाविष्ट'।

समाश—संज्ञा पुं० [सं०] अशन। खाना। भोजन (को०)।

समाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १. आश्रय। सहारा। २. सहायता। मदद। ३. आश्रय स्थान। शरण। शरण गृह (को०)। ४. निवास। घर (को०)। ५. शरण या सहारा ढूँढना (को०)।

समाश्रयण—संज्ञा पुं० [सं०] १. 'समाश्रय'। २. चयन। चुनना (को०)।

समाश्रित[1]—वि० [सं०] १. जिसने किसी स्थान पर अच्छी तरह आश्रय ग्रहण किया हो। २. जो सहारे पर हो। अवलंबित (को०)। ३. निवसित। बसा हुआ। अधिष्ठित (को०)। ४. सज्जित किया हुआ। जैसे,—कक्ष या घर (को०)। ५. एकत्रित (को०)।

समाश्रित[2]—संज्ञा पुं० सेवक। भृत्य (को०)।

समाश्लिष्ट—वि० [सं०] १. भली भाँति आलिंगित। २. संलग्न। चिपका या लगा हुआ (को०)।

समाश्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] गाढ़ आलिंगन (को०)।

समाश्वस्त—वि० [सं०] जिसे तसल्ली हो गई हो। सांत्वना प्राप्त। आश्वस्त। २. प्रोत्साहित (को०)।

समाश्वास—संज्ञा पुं० [सं०] १. संतोष होना। जी में जी आना। ढाढ़स बँधना। २. आस्था। भरोसा। विश्वास। ३. प्रोत्साहन। बढ़ावा (को०)।

समाश्वासन—संज्ञा पुं० [सं०] १. ढाँढ़स बँधाना। संतोष देना। २. उत्साह बढ़ाना (को०)।

समासंग—संज्ञा पुं० [सं० समासङ्ग] १. मिलन। मिलाप। मेल। २. लगाव। साहचर्य (को०)। ३. किसी के जिम्मे करना। काम सौंपना (को०)।

समासंजन—संज्ञा पुं० [सं० समासञ्जन] १. मिलाना। संयुक्त करना। २. खचित करना। जड़ना या रखना। ३. लगाव। मेल। संपर्क। संयोग (को०)।

समास—सं० पुं० [सं०] १. संक्षेप। २. समर्थन। ३. संग्रह। ४. पदार्थों का एक में मिलना। संमिलन। ५. व्याकरण में दो या अधिक शब्दों का संयोग। शब्दों का कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार आपस में मिलकर एक होना। जैसे,—'प्रेमसागर' शब्द प्रेम और सागर का, 'पराधीन' शब्द पर और अधीन का, 'लंबोदर' शब्द लंब और उदर का सामासिक रूप है।

विशेष—शब्दों का यह पारस्परिक संयोग संधि के नियमों के अनुसार होता है। हिंदी में चार प्रकार के समास होते हैं—(१) अव्ययी भाव जिसमें पहला शब्द प्रधान होता है और जिसका प्रयोग क्रियाविशेषण के समान होता है। जैसे,—यथाशक्ति, यावज्जीवन, प्रतिदिन आदि; (२) तत्पुरुष जिसमें पहला शब्द संज्ञा या विशेषण होता है और दूसरे शब्द की प्रधानता रहती है। जैसे,—ग्रंथकर्ता, निशाचर, राजपुत्र आदि; (३) समानाधिकरण तत्पुरुष या कर्मधारय जिसमें दोनों शब्द या तो विशेष्य और विशेषण के समान या उपमान और उपमेय के समान रहते हैं और जिनका विग्रह होने पर परवर्ती एक ही विभक्ति से काम चलता है। जैसे,—छुटभैया, अधमरा, नवरात्र, चौमासा आदि और (४) द्वंद्व जिसमें दोनों शब्द या उनका समाहार प्रधान होता है। जैसे,—हरिहर, गायबैल, दालभात, चिट्ठापत्री, अन्नजल, आदि।

६. मतभेद दूर करना। अंतर दूर करना। विवाद मिटाना (को०)। ७. संग्रह। संघात (को०)। ८. पूर्णता। समष्टि (को०)। ९. संधि। दो शब्दों का व्याकरण के नियमानुसार एक में मिलना (को०)। १०. संक्षेपण (को०)।

यौ०—समासप्राय। समासबहुल।

समासक्त—वि० [सं०] १. लगा हुआ। जुड़ा हुआ। अनुस्यूत। २. अनुरागयुक्त। आसक्त। ३. पहुँचा हुआ। प्राप्त। ४. प्रभावित। ५. रुका हुआ। ठहरा हुआ। (प्रभाव या असर करने में) जैसे, विष (को०)।

समासक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लगाव। संबंध। २. अनुरक्ति। आसक्ति। ३. दे० 'समासंग' [को०]।

समासत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नजदीक होने का भाव। समीपता [को०]।

समासन—संज्ञा पुं० [सं०] १. पटपर या सम भूमि पर बैठने की क्रिया। २. (कई लोगों का) एक साथ बैठना [को०]।

समासन्न—वि० [सं०] १. प्राप्त। पहुँचा हुआ। जो आ गया हो। २. नजदीकवाला। जो पास हो [को०]।

समासपर—संज्ञा पुं० [सं०] १. भोजराज के एक प्राचीन नगर का नाम। २. दे० 'समासप्राय'।

समासप्राय—वि० [सं०] पद या छंद आदि जिसमें समास की बहुलता हो।

समासबहुल—वि० [सं०] दे० 'समासप्राय'।

समासम—वि० [सं०] जो सम और असम हो [को०]।

समासर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] १. पूर्णतः परित्याग या छोड़ना। २. दे देना। अर्पित करना। न्यस्त या सुपुर्द करना [को०]।

समासवान्[१]—वि० [सं० समासवत्] जिनमें समास हो। समास युक्त। समासवाला [को०]।

समासवान्[२]—संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुत बड़ा पेड़। तुन नामक वृक्ष। विशेष दे० 'तुन' [को०]।

समासादन—संज्ञा पुं० [सं०] १. निकट होना या पहुँचना। २. प्राप्त करना या होना। मिल जाना। ३. संपन्न करना। पूर्ण करना [को०]।

समासादित—वि० [सं०] १. निकटस्थ। समीपस्थ। २. जो पहुँच गया हो। ३. आसादित। प्राप्त। लब्ध। ४. पूर्ण या सिद्ध किया हुआ (को०)।

समासार्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी छंद का वह अंतिमांश जिसके आधार पर छंद पूरा किया जाय। समस्या [को०]।

समासीन—वि० [सं०] १. अच्छी तरह बैठा हुआ। २. एक साथ बैठा हुआ [को०]।

समासोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें समान कार्य, समान लिंग और समान विशेषण आदि के द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत का ज्ञान होता है। जैसे,—'कुमुदिनिहू प्रफुलित भई, साँझ कलानिधि जोय' यहाँ प्रस्तुत 'कुमुदिनी' से नायिका का और 'कलानिधि' से नायक का ज्ञान होता है।

समास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कार्य काल। सत्र। २. साक्षात्कार। मुलाकात। ३. एक साथ बैठने की क्रिया [को०]।

समाहत—वि० [सं०] १. मिला हुआ। जुड़ा हुआ। २. घायल। चोट खाया हुआ। ३. आघातित। मारा हुआ। पीटा हुआ। जैसे,—नगाड़ा, धौंसा आदि। ४. एक साथ आघातित या प्रहारित [को०]।

समाहनन—संज्ञा पुं० [सं०] हनन या मारने की क्रिया [को०]।

समाहर—वि० [सं०] विध्वंसक। विनाशक [को०]।

समाहरण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समाहार'।

समाहर्ता—संज्ञा पुं० [सं० समाहर्तृ] १. समाहार करनेवाला। २. वह जो किसी चीज का संग्रह करता हो। ३. मिलानेवाला। ४. कौटिल्य के अनुसार प्राचीन काल का राजकर एकत्र करनेवाला प्रधान कर्मचारी।

विशेष—चंद्रगुप्त के समय में इसका मासिक वेतन २००० पण था। यह जनपद को चार भागों में विभक्त करके और ग्रामों का ज्येष्ठ, मध्यम और कनिष्ठ के नाम से विभाग करके करों के रजिस्टर में निम्नलिखित वर्गीकरण करता था—परिहारक, आयुधिक, धान्यकर, पशुकर, हिरण्यकर, कुप्यकर, विशिष्टकर और प्रतिकर। इनमें से प्रत्येक के लिये वह 'गोप' नियुक्त करता था, जिनके अधिकार में पाँच से दस गाँव तक रहते थे। इन गोपों के ऊपर स्थानिक होते थे।

समाहर्ता[२]—वि० १. समाहार करनेवाला। संग्राहक। २. मिलानेवाला।

समाहर्तृपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार समाहर्ता का कारिंदा।

समाहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत सी चीजों को एक जगह इकट्ठा करना। संग्रह। २. समूह। राशि। ढेर। ३. मिलना। मिलाप। ४. शब्दों या वाक्यों का परस्पर संयोग (को०)। ५. द्वंद्व और द्विगु समासों का समष्टिविधायक एक उपभेद (को०)। ६. संक्षेपण। संकोचन (को०)। ७. वर्णमाला के दो अक्षरों का शब्दांश में योग। प्रत्याहार (को०)।

समाहारद्वंद्व—संज्ञा पुं० [सं० समाहारद्वन्द्व] एक प्रकार का द्वंद्व समास। वह द्वंद्व समास जिससे उसके पादों के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता हो। जैसे,—सेठसाहूकार, हाथपाँव, दालरोटी आदि। इनमें से प्रत्येक के उनके पादों के अर्थ के सिवा उसी प्रकार के कुछ और व्यक्तियों या पदार्थों का भी बोध होता है।

समाहित[१]—वि० [सं०] १. रोका हुआ। पकड़ा हुआ। अधिकृत। २. जोड़ा हुआ। लगाया हुआ। जैसे,—आग में ईंधन। ३. संयोजित। ४. संकलित। ५. संचित किया हुआ। ६. व्यवस्थित। ७. प्रतिपादित किया हुआ। प्रतिपन्न। ८. स्वीकार किया हुआ। ९. समंजित। जिसमें सामंजस्य स्थापित किया गया हो। १०. दबाया हुआ। कम किया हुआ। जैसे,—उठता हुआ स्वर। ११. तै किया हुआ (को०)। १२. शांत (मन) (को०)। १३. प्रवृत्त। लीन (को०)। १४. सुपुर्द किया हुआ (को०)। १५. समान। सदृश। अनुरूप (को०)। १६. समभाव का। एक ही जैसा (को०)। १७. समध्वनित। संवादी। संगत (को०)। १८. भेजा हुआ। प्रेषित (को०)।

यौ०—समाहितधी, समाहितबुद्धि, समाहितमति = स्थिर बुद्धि। समाहितमना (मनस्) = स्थिर चित्त।

समाहित[२]—संज्ञा पुं० १. एकाग्रचित्त होना। एकनिष्ठता। २. वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि पुण्यमय हो। पुण्यात्मा [को०]।

समाहूत—वि० [सं०] [स्त्री० समाहूता] १. जिसे बुलाया या निमंत्रित किया गया हो। २. लड़ने या खेलने के लिये चुनौती दिया या पाया हुआ। जिसे ललकारा गया हो [को०]।

समाह्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो समान नाम का हो। समान नामवाला। २. ललकार। आह्वान। चुनौती। ३. आमंत्रण। बुलाना [को०]।

समाह्वय—संज्ञा पुं० [सं०] १. पशु पक्षियों (तीतर, बटेर, हाथी, शेर, भैंसे आदि) को लड़ाने और उनकी हार जीत पर बाजी लगाने का खेल।

विशेष—इसके संबंध में अर्थशास्त्र तथा स्मृतियों में अनेक नियम हैं।

२. चुनौती। चैलेंज। ललकार (को०)। ३. संग्राम। युद्ध (को०)। ४. द्वंद्व युद्ध। मल्ल युद्ध (को०)। ५. नाम। अभिधान (को०)।

समाह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोजिया या बनगोभी नाम की घास। गोजिह्वा। २. आख्या। नाम। अभिधान (को०)।

समाह्वाता—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सामाह्वातृ] १. पुकारनेवाला। बुलानेवाला। २. चैलेंज करनेवाला। चुनौती देनेवाला [को०]।

समाह्वान—संज्ञा पुं० [सं०] १. आह्वान। बुलाना। २. जूआ खेलने के लिये किसी को बुलाना या ललकारना। ३. दे० 'समाह्वय'—१। ४. चुनौती। ललकार (को०)।

समिंधन—संज्ञा पुं० [सं० समिन्धन] (आग, दीया आदि) प्रज्वलित करना। सुलगाना। २. ईंधन। ३. शोथ, सूजन या उभाड़ आदि का कारण [को०]।

समिक—संज्ञा पुं० [सं०] लंबा, और धारदार कोई भी हथियार। साँग, कुंत, बरछा आदि [को०]।

समित्—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेल। साथ। मिलाप (को०)। २. अग्नि (को०)। ३. युद्ध। समर। लड़ाई।

समित—वि० [सं०] १. साथ आया या मिला हुआ। २. एकत्रित। पुंजीभूत। ३. संबंधित। संयुक्त। संलग्न। ४. सन्निहित। समीपवर्ती। समीपस्थ। ५. समानांतर। तुल्य। सदृश। ६. प्रतिश्रुत। अंगीकृत। ७. खत्म किया हुआ। पूर्ण या समाप्त किया हुआ। ८. मापा हुआ [को०]।

समिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत महीन पीसा हुआ आटा। मैदा।

समितिंजय—संज्ञा पुं० [सं० समितिञ्जय] वह जिसने युद्ध में विजय प्राप्त की हो। युद्धजयी। २. वह जिसने किसी सभा आदि में विजय प्राप्त की हो। ३. यम। ४. विष्णु।

समिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सभा। समाज। २. प्राचीन वैदिक काल की एक प्रकार की संस्था जिसमें राजनीतिक विषयों पर विचार हुआ करता था। ३. किसी विशिष्ट कार्य के लिये नियुक्त की हुई कुछ आदमियों की सभा। ४. युद्ध। समर। लड़ाई। ५. समानता। साम्य। ६. सन्निपात नामक रोग। ७. इकट्ठा होना। जुटना। मिलना (को०)। ८. झुंड। रेवड़ (को०)। ९. संतुलित करना। मर्यादित करना (को०)। १०. आचारपद्धति। आचारसंहिता (जैन)।

यौ०—समितिमर्दन = युद्ध में परेशान करनेवाला। समितिशाली = वीर। योद्धा। समितिशोभन = युद्ध में प्रमुख या श्रेष्ठ।

समित्कलाप—संज्ञा पुं० [सं०] लकड़ियों, ईंधन का गट्ठर [को०]।

समित्काष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] ईंधन। चैला। लकड़ी [को०]।

समित्पांथ—संज्ञा पुं० [सं० समित्पान्थ] अनल। आग। पावक [को०]।

समित्पूल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समित्कलाप'।

समिथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. आहुति। ३. युद्ध। समर। लड़ाई। ४. जुटाव। सभा। समिति (को०)।

समिदाधान—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि में ईंधन डालना। २. अग्नि में समिधा डालना जो ब्रम्हचारी का दैनिक कृत्य है [को०]।

समिद्ध—वि० [सं०] १. जलता हुआ। प्रज्वलित। प्रदीप्त। २. उत्तेजनायुक्त। उत्तेजित (को०)। ३. अग्नि में डाला हुआ। अग्नि में न्यस्त (को०)। ४. आढ्य। पूर्ण (को०)।

यौ०—समिद्धकांति = जिसकी कांति दीप्त हो। समिद्धदर्प = अभिमान के कारण उत्तेजित। गर्व से स्फीत। समिद्धहोम = हवन। आहुति।

समिद्धन—संज्ञा पुं० [सं०] १. जलाने की लकड़ी। ईंधन। २. जलाने की क्रिया। सुलगाना। ३. उत्तेजना देना। उद्दीपन।

समिध्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आग जलाने की लकड़ी। ईंधन। २. यज्ञकुंड में जलाने की लकड़ी। समिधा।

समिध—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. दे० 'समिध्' (को०)।

समिधा—संज्ञा स्त्री० [सं० समिध्] दे० 'समिध्', 'समिधि'।

समिधि पु—संज्ञा स्त्री० [सं० समिध्] लकड़ी विशेषतः यज्ञकुंड में जलाने की लकड़ी। उ०—(क) प्रेम वारि तरपन भलो घृत सहज सनेहु। संसय समिधि अगिनि छमा समता बलि देहु।—तुलसी (शब्द०)। (ख) समिधि सेन चतुरंग बिहाई। महा महीप भए पसु आई।—मानस, १।२८३।

समिर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समीर'।

समिश्र—वि० [सं०] मिला हुआ। मिश्रित होनेवाला [को०]।

समिष्—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

समीक—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध। समर। लड़ाई।

समीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. समान करने की क्रिया। तुल्य या बराबर करना। २. आत्मसात् करना (को०)। ३. गणित में एक विशेष प्रकार की क्रिया जिससे किसी व्यक्त या ज्ञात राशि की सहायता से किसी अव्यक्त या अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है। ४. गणित में (भिन्न या किसी सवाल को) हल करना या सरल करना। ५. भूमि समतल करने का साधन। पाटा या हेंगा जिससे क्षेत्र समतल किया जाता है (को०)।

समीकार—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो छोटी बड़ी, ऊँची नीची या अच्छी बुरी चीजों को समान करता हो। बराबर करनेवाला। २. समान करने की क्रिया (को०)। ३. गणित में समीकरण।

समीकृत—वि० [सं०] १. समान किया हुआ। बराबर किया हुआ। २. जोड़ा या योग किया हुआ (को०)।

समीकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समान या तुल्य करने की क्रिया। समीकरण। २. वजन करना। तौलना।

समीक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'समीकरण'।

समीक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह देखने की क्रिया। २. दर्शन। ३. अन्वेषण। जाँच पड़ताल। ४. विवेचन। ५. सांख्य शास्त्र जिसके द्वारा प्रकृति और पुरुष का ठीक ठीक स्वरूप दिखाई देता है। ६. पूर्ण ज्ञान (को०)।

समीक्षक—वि० [सं०] १. समीक्षा करनेवाला। समालोचक। २. निरीक्षक। अच्छी तरह देखनेवाला।

समीक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १. दर्शन। देखना। २. अनुसंधान। अन्वेषण। जाँच पड़ताल। ३. आलोचना।

समीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० समीक्षित, समीक्ष्य] १. अच्छी तरह देखने की क्रिया। २. देखने की आकांक्षा। दिदृक्षा (को०)। ३. दृष्टि। चितवन। निगाह। नजर (को०)। ४. आलोचना। समालोचना। ५. प्रज्ञा। बुद्धि। मति। ६. यत्न। कोशिश। ७. विचार। संमति। राय (को०)। ८. अनुसंधान। अन्वेषण (को०)। ९. आत्मविद्या। आत्मा संबंधी ज्ञान (को०)। १०. सत्य का आधारभूत या मौलिक रूप (को०)। ११. मूलभूत सिद्धांत (को०)। १२. मीमांसा शास्त्र। १३. सांख्य में बतलाए हुए पुरुष, प्रकृति, बुद्धि, अहंकार आदि तत्व।

समीक्षित—वि० [सं०] १. भली भाँति देखा परखा हुआ। २. जिसकी समीक्षा या समालोचना की गई हो।

समीक्ष्य—वि० [सं०] समीक्षा करने के योग्य। भली भाँति देखने के योग्य।

समीक्ष्यकारी—वि० [सं० समीक्ष्यकारिन्] अच्छी तरह सोच समझ कर काम करनेवाला (को०)।

समीक्ष्यवादी—संज्ञा पुं० [सं० समीक्ष्यवादिन्] वह जो किसी विषय को अच्छी तरह जाँच या समझ कर कोई बात कहता हो।

समीच—संज्ञा पुं० [सं०] १. जलनिधि। समुद्र। सागर। २. शशि। चंद्रमा (को०)।

समीचक—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसंग। मैथुन। संभोग।

समीची—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्तव। गुणगान। वंदना। २. हरिणी। मृगी (को०)।

समीचीन¹—वि० [सं०] १. यथार्थ। ठीक। २. उचित। वाजिब। ३. न्यायसंगत। ४. सत्य। सही (को०)।

समीचीन²—संज्ञा पुं० १. सत्य। २. गरिमा (को०)।

समीचीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] समीचीन होने का भाव या धर्म।

समीचीनत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समीचीनता'।

समीति, समीता—संज्ञा स्त्री० [सं० समिति] दे० 'समिति'। उ०—राग रोष इरषा बिमोह बस रुची न साधु समीति।—तुलसी (शब्द०)।

समीद—संज्ञा पुं० [सं०] मैदा। गेहूँ का बहुत महीन आटा (को०)।

समीन—वि० [सं०] १. वार्षिक। सालाना। २. जो एक वर्ष के लिये भाड़े पर लिया गया हो। ३. एक साल का (को०)।

समीनिका—संज्ञा [सं०] वह गौ जो प्रति वर्ष बच्चा देती हो। हर साल ब्यानेवाली गाय।

समीप¹—वि० [सं०] दूर का उलटा। पास। निकट। नजदीक।

समीप²—संज्ञा पुं० सामीप्य। निकटता (को०)।

समीपता—संज्ञा स्त्री० [सं०] समीप का भाव या धर्म।

समीपवर्ती—वि० [सं० समीपवर्त्तिन्] समीप का। पास का। नजदीक।

समीपसप्तमी—संज्ञा पुं० [सं०] समीपता का व्यंजक कारक। सप्तमी विभक्ति।

समीपस्थ—वि० [सं०] जो समीप में हो। पास का।

समीभाव—संज्ञा पुं० [सं०] सहज स्थिति। सम भाव में होना (को०)।

समीय—वि० [सं०] १. तुल्य। समान। २. समान कारण होने से एक सा समझा जानेवाला। ३. जो एक ही मूल का हो। ४. समान या तुल्य संबंधी। सम संबंधी (को०)।

समीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। हवा। २. वायु देवता (को०)। ३. शमी वृक्ष। ४. प्राणवायु जिसे योगी वश में रखते हैं। उ०—कछु न साधन सिधि जानों न निगम बिधि नहिं जप तप बस न समीर।—तुलसी (शब्द०)।

समीरण¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। हवा। २. गंध तुलसी। मरुआ। ३. रास्ता चलनेवाला। पथिक। बटोही। ४. प्रेरणा। ५. श्वास। साँस (को०)। ६. शरीरस्थ प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान नामक पाँच वायु (को०)। ७. पाँच की संख्या (को०)। ८. वायु देवता (को०)। ९. भेजना। प्रेषण (को०)।

समीरण²—वि० गतिशील या प्रेरित करनेवाला। उद्दीप्त करनेवाला (को०)।

समीरसूनु—संज्ञा पुं० [सं०] वायुपुत्र। हनुमान। उ०—राम की रजाय तें रसायनी समीरसूनु उतरि पयोधि पार सोधि सखाक सो।—तुलसी ग्रं०, पृ० १७१।

समीरित—वि० [सं०] १. क्षुब्ध। उत्प्रेरित। २. उच्चारित (शब्द या स्वर)।

समीसर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शनैश्चर, हिं० सनीचर] शनैश्चर। शनि। उ०—रा० रू०, पृ० २७२।

समीहन¹—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

समीहन²—वि० लालायित। ईर्ष्यालु। उत्सुक (को०)।

समीहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उद्योग। प्रयत्न। चेष्टा। कोशिश। २. इच्छा। ख्वाहिश। ३. अनुसंधान। तलाश। जाँच पड़ताल।

समीहित¹—वि० [सं०] अभिलषित। आकांक्षित। इच्छित। २. प्रारंभ किया हुआ। शुरू किया हुआ। ३. जिसके लिये चेष्टा या प्रयत्न किया गया हो (को०)।

समीहित²—संज्ञा पुं० अभिलाषा। आकांक्षा। स्पृहा। २. प्रयत्न। कोशिश। चेष्टा (को०)।

समुंद⑤—संज्ञा पुं० [सं० समुद्र] समुद्र ।

समुंदन—संज्ञा पुं० [सं० समुन्दन] १. गीलापन। सीलन। तरी। २. पूरी तरह आर्द्र या तर होना [को०]।

समुंदर—संज्ञा पुं० [सं० समुद्र] दे० 'समुद्र'।

समुंदरफल—संज्ञा पुं० [हिं० समुंदर+फल] मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष। इंजर।

विशेष—यह वृक्ष रुहेलखंड और अवध के जंगलों में झरनों के किनारे और नम जमीन पर होता है। बंगाल में भी यह अधिकता से होता है और दक्षिण भारत में लंका तक पाया जाता है। कहीं कहीं लोग इसे शोभा के लिये बागों में भी लगाते हैं। इसकी लकड़ी से प्रायः नावें बनती हैं। औषध में भी इसकी पत्तियों और छाल आदि का व्यवहार होता है।

समुंदरफूल—संज्ञा पुं० [हिं० समुंदर+फूल] एक प्रकार का विधारा। वृद्धदारुक।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह मधुर, कसैला, शीतल और कफ, पित्त तथा रुधिरविकार को दूर करनेवाला और गर्भिणी की पीड़ा हटनेवाला होता है।

समुंदरसोख—संज्ञा पुं० [हिं० समुंदर+सोखना] एक प्रकार का क्षुप जो प्रायः सारे भारत में थोड़ा बहुत पाया जाता है।

विशेष—समुंदरसोख के पत्ते तीन चार अंगुल लंबे, अंडाकार और नुकीले होते हैं। इसकी डालियों के अंत में छोटे छोटे बीज होते हैं। वैद्यक में यह वातकारक, मलरोधक, पित्तकारक तथा कफकारक कहा गया है।

समुक्त—वि० [सं०] १. जिसे कहा गया हो। उक्त। कथित। २. जिसकी लानत मलामत की गई हो। तिरस्कृत। भर्त्सित। निंदित [को०]।

समुक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १. सींचने या जल आदि छिड़कने की क्रिया। तरवतर करना। २. नाँखना। ढुलकाना। गिराना [को०]।

समुक्षित—वि० [सं०] १. अच्छी तरह छिड़का या सींचा हुआ। तर किया हुआ। २. जिसे उत्तेजना या बढ़ावा दिया गया हो। उत्साहित [को०]।

समुख[१]—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अच्छी तरह बातें करना जानता हो। वाग्मी। वाक्पटु।

समुख[२]—वि० १. भाषणपटु। २. बकवादी। बातूनी। ३. मुखवाला। मुख-युक्त [को०]।

समुचित—वि० [सं०] १. यथेष्ट। उचित। योग्य। ठीक। वाजिब। २. जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त। जैसे,—आपने उनकी बातों का समुचित उत्तर दिया। ३. जो रुचि या विचार के अनुकूल हो। जो पसंद हो।

समुच्च—वि० [सं०] जो बहुत ऊँचा हो [को०]।

समुच्चय—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत सी चीजों का एक में मिलना। समाहार। मिलन। २. समूह। राशि। ढेर। ३. साहित्य में एक प्रकार का अलंकार जिसके दो भेद माने गए हैं। एक तो वह जहाँ आश्चर्य, हर्ष, विषाद आदि बहुत से भावों के एक साथ उदित होने का वर्णन हो। जैसे,—हे हरि तुम बिनु राधिका सेज परी अकुलाति। तरफराति, तमकति, तचति, सुसकति, सूखी जाति। दूसरा वह जहाँ किसी एक ही कार्य के लिये बहुत से कारणों का वर्णन हो। जैसे,—गंगा गीता गायत्री गनपति गरुड़ गोपाल। प्रातःकाल जे नर भजैं ते न परैं भव-जाल। ४. वाक्य या शब्दों का समाहार। शब्दों का परस्पर मिलन या योग (को०)। ५. कौटिल्य के मत से वह आपत्ति जिसमें यह निश्चय हो कि इस उपाय के अतिरिक्त और उपायों से भी काम हो सकता है।

समुच्चयन—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत सी चीजों का एक में समाहार करना। एकत्र करना [को०]।

समुच्चयालंकार—संज्ञा पुं० [सं० समुच्चयालङ्कार] समुच्चय नामक अलंकार। दे० 'समुच्चय'—३।

समुच्चयोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुच्चयालंकार से बनी उपमा [को०]।

समुच्चर—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ आना जाना। २. ऊपर की ओर उठना या चढ़ना। आरोह। ३. लाँघ जाना। पार हो जाना [को०]।

समुच्चार—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्पष्ट बोलना। उच्चारण करना। २. विसर्जन। त्याग [को०]।

समुच्चित—वि० [सं०] १. ढेर लगाया हुआ। राशि के रूप में रखा हुआ। २. एकत्र किया हुआ। जमा किया हुआ। संगृहीत। ३. क्रम से लगाया हुआ (को०)।

समुच्छन्न—वि० [सं०] १. खुला हुआ। नग्न। अनावृत। २. उद्ध्वस्त। विनष्ट। तितर बितर किया हुआ [को०]।

समुच्छित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूर्णतः उच्छेद या उत्पाटन। २. ध्वंस। नाश। बरबादी।

समुच्छिन्न—वि० [सं०] १. जड़ से उखाड़ा हुआ या उत्पाटित। पूर्णतः नष्ट या बर्बाद किया हुआ। २. तार तार। फटा हुआ [को०]।

यौ०—समुच्छिन्न वासन = (१) जिसके वस्त्र फटे हुए या उच्छिन्न हों। (२) जिसकी वासना या भ्रम दूर हो गया हो।

समुच्छेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. जड़ से उखाड़ना। उन्मूलन। २. ध्वंस। नाश। बरबादी।

समुच्छेदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. जड़ से उखाड़ना। २. नष्ट करना। बरबाद करना।

समुच्छ्रय—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तुंगता। ऊँचाई। २. वैर। विरोध। शत्रुता। ३. संग्रह। संचय। ढेर। ४. युद्ध। लड़ाई। ५. पहाड़। पर्वत। ६. वृद्धि। विकास। ७. जन्म। (बौद्ध)। ८. ऊपर उठना। उत्थान। ९. उच्च पद [को०]।

समुच्छ्राय—सं० पुं० [सं०] १. ऊँचाई। उच्चता। २. उन्नति। उत्थान। ३. बढ़ती। वृद्धि [को०]।

समुच्छ्रित—वि० [सं०] १. ऊँचा। उन्नत। उठा हुआ। २. शक्तिशाली। ३. लहरें लेता हुआ। ४. ऊपर किया या उठाया हुआ [को०]।

समुच्छ्रिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उन्नति । बढ़ती । वृद्धि [को०] ।

समुच्छ्वसित—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसने गंभीर एवम् दीर्घ श्वास छोड़ा हो । २. गहरी साँस [को०] ।

समुच्छ्वास—संज्ञा पुं० [सं०] दीर्घ श्वास । लंबी साँस [को०] ।

समुज्ज्वल—वि० [सं०] खूब उज्ज्वल । चमकता हुआ ।

समुज्जृंभण—संज्ञा पुं० [सं० समुज्जृम्भण] १. जँभाई लेना । २. ऊपर की ओर बढ़ना । निकलना । ३. प्रयत्न करना [को०] ।

समुज्झित[१]—वि० [सं०] १. छोड़ा हुआ । परित्यक्त । २. गया हुआ । ३. मुक्त [को०] ।

समुज्झित[२]—संज्ञा पुं० परित्याग [को०] ।

समुझ(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० समझ] दे० 'समझ' ।

विशेष—इसके यौगिक और क्रियाओं आदि के लिये दे० 'समझ' शब्द के यौगिक और क्रियाएँ ।

समुझना—क्रि० अ० [सं० सम्यक् ज्ञान] दे० 'समझना' । उ०—जाको बालविनोद समुझि जिय डरत दिवाकर भोर को । —तुलसी ग्रं० ।

समुझनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० समझना] समझने की क्रिया या भाव ।

समुझाना—क्रि० स० [हिं० समझना] दे० 'समझाना' । उ०—पुनि रघुपति बहु विधि समुझाए । लै पादुका अवधपुर आए । —मानस, ७।६५ ।

समुत्कंटकित—वि० [सं० समुत्कण्टकित] जिसके रोएँ खड़े हो गए हों । रोमहर्ष से युक्त ।

समुत्कंठा—संज्ञा स्त्री० [सं० समुत्कण्ठा] तीव्र इच्छा । गहरी चाह या लालसा [को०] ।

समुत्क—वि० [सं०] अत्यंत उत्सुक । लालायित [को०] ।

समुत्कट—वि० [सं०] १. उत्तुंग । उन्नत । ऊँचा । २. अत्यंत । अत्यधिक । प्रगाढ़ । ३. महान् । गौरवयुक्त । ४. अत्यधिक । अनगिनत [को०] ।

समुत्कर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. आत्म उन्नति । अपना उत्कर्ष । अपनी संपन्नता या वृद्धि । २. गौरव । ३. (आभूषण आदि) उतार कर एक ओर रख देना [को०] ।

समुत्कीर्ण—वि० [सं०] १. भली भाँति उत्कीर्ण । २. छेदा हुआ । छिद्रित [को०] ।

समुत्क्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊपर उठना । २. प्रतिबंध को न मानना । सीमा का अतिक्रमण । हद पार करना [को०] ।

समुत्क्रोश—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुरर नाम का पक्षी । २. जोर से चिल्लाना (को०) । ३. भारी कोलाहल (को०) ।

समुत्तेजक—वि० [सं०] उत्तेजना करनेवाला । जो उत्तेजित करे [को०] ।

समुत्तेजन—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तेजित करने की क्रिया । बढ़ावा या उत्तेजना देना [को०] ।

समुत्थ—वि० [सं०] १. उठा हुआ । उन्नत । २. उत्पन्न । जात । घटित । उद्भूत ।

समुत्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १. उठने की क्रिया । २. उत्पत्ति । ३. आरंभ । ४. रोग का निदान या निर्णय । ५. पुनर्जीवन प्राप्त करना । जीवित होकर पुनः उठना । रोग का पूरी तरह शांत होना । ६. परिश्रम । उद्यम । उद्योग (को०) । ७. वृद्धि । विकास (को०) । ८. उत्तोलन । फहराना । जैसे,—ध्वजा, पताका (को०) । ९ (नाभि का) उभड़ना । फूलना (को०) ।

समुत्थापक—वि० [सं०] जगाने या उठानेवाला । उत्थापन करनेवाला [को०] ।

समुत्थित—वि० [सं०] १. एक साथ उठा हुआ । जैसे,—समुत्थित धूलि । २. अत्यंत ऊँचा । जैसे,—समुत्थित शैल शिखर । ३. एकत्रित । घनीभूत । जैसे,—बादल । ४. उद्यत । प्रस्तुत । ५. जो फूला या सूज आया हो । ६. जो स्वास्थ्यलाभ कर चुका हो । ७. उत्पन्न । जात । उद्भूत [को०] ।

समुत्पतन—संज्ञा पुं० [सं०] १. उड़ना । ऊपर उठना । २. प्रयत्न । कोशिश । चेष्टा [को०] ।

समुत्पत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति । पैदाइश । २. जड़ । मूल । ३. होना । घटित होना [को०] ।

समुत्पन्न—वि० [सं०] उत्पन्न । उद्भूत । घटित [को०] ।

समुत्परिवर्त्रिम—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार बेचे हुए पदार्थों में चालाकी से दूसरा पदार्थ मिला देना [को०] ।

समुत्पाट—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्पाटन । उन्मूलन । २. अलगाव । पृथक्करण [को०] ।

समुत्पात—संज्ञा पुं० [सं०] संकट की सूचना देनेवाला उपद्रव [को०] ।

समुत्पादन—संज्ञा पुं० [सं०] उत्पादन करना । उत्पन्न करना । पैदा करना [को०] ।

समुत्पिंज[१]—वि० [सं० समुत्पिञ्ज] अत्यंत घबराया हुआ [को०] ।

समुत्पिंज[२]—संज्ञा पुं० १. इतस्ततः अस्तव्यस्त या तितर बितर हुई सेना । २. भारी अव्यवस्था [को०] ।

समुत्पिंजल, समुत्पिंजलक—वि०, संज्ञा पुं० [सं० समुत्पिञ्जल, समुत्पिञ्जलक] दे० 'समुत्पिंज' [को०] ।

समुत्पुंसन—संज्ञा पुं० [सं०] अपनयन । दूरीकरण [को०] ।

समुत्सन्न—वि० [सं०] पूरी तौर से उच्छिन्न । विनष्ट । ध्वस्त [को०] ।

समुत्सर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. छोड़ना । त्याग । २. देना । प्रदान करना । ३. मल त्याग । ४. उत्सर्ग करना । निर्गमन । जैसे,—पुंवीर्य [को०] ।

समुत्सर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] आगे बढ़ना । अग्रसरण [को०] ।

समुत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] वृहत् उत्सव । बड़ा जलसा [को०] ।

समुत्सारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. भगाना । हाँक देना । २. पीछे लगना । दौड़ाना । ३. हाँके का शिकार करना [को०] ।

समुत्साह—संज्ञा पुं० [सं०] उत्साह या इच्छाशक्ति [को०] ।

समुत्सुक—वि० [सं०] १. अत्यंत बेचैन । आतुर । अधीर । २. उत्कंठित । उत्सुक । ३. दुःखपूर्ण । शोकपूर्ण । खेदजनक [को०] ।

समुत्सेध—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊँचाई। उत्तुंगता। २. मोटाई। स्थूलता। ३. घनता। सांद्रता [को०]।

समुदंत—वि० [सं० समुदन्त] १. कोर। तट या किनारे के ऊपर उठा २. जो उफनकर या उमड़कर बहने की स्थिति में हो।

समुद[1]—वि० [सं०] आनंदयुक्त। हृष्ट। खुशी के साथ। प्रसन्नता युक्त। [को०]।

समुद(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं० समुद्र, प्रा० समुद्द] समुद्र।

समुदक्त—वि० [सं०] खींचकर ऊपर लाया या उठाया हुआ। जैसे,—कूप से जल [को०]।

समुदय—संज्ञा पुं० [सं०] १. उठने या उदित होने की क्रिया। उदय। २. दिन। ३ युद्ध। समर। लड़ाई। ४. ज्योतिष में लग्न। ५. सूर्य का उगना (को०)। ६. समुच्चय। ढेर (को०)। ७. संमिश्रण। मेल (को०)। ८. राजस्व (को०)। ९. प्रयत्न। चेष्टा (को०)। १०. सेना का पिछला भाग (को०)। ११. वित्त। धन (को०)। १२. उत्पत्ति का हेतु (को०)। १३. नक्षत्रोदय (को०)।

समुदय[2]—वि० समस्त। सब। कुल।

समुदाइ, समुदाई(पु)—संज्ञा पुं० [सं० समुदाय] समूह। समुदाय। उ०—(क) राका पति षोडस उअहिं तारागन समुदाइ। सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु रबि राति न जाइ।—मानस, ७।७८। (ख) काटत बढ़हिं सीस समुदाई।—मानस, ६।१०१।

समुदागम—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण ज्ञान [को०]।

समुदाचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिष्टाचार। भलमनसहत का व्यवहार। सदाचार। २. नमस्कार, प्रणाम आदि। अभिवादन। ३. आशय। अभिप्राय। मतलब।

समुदानय—संज्ञा पुं० [सं०] एक साथ लाना। साथ लाना [को०]।

समुदाय—संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। ढेर। २. झुंड। गरोह। जैसे,—विद्वानों का समुदाय। ३. युद्ध। समर। लड़ाई। ४. पीछे की ओर की सेना। ५. उदय। ६. उन्नति। तरक्की। ७. संयोग (को०)। ८. शरीर के तत्वों का समाहार (को०)। ९. एक नक्षत्र (को०)।

समुदायवाचक—वि० [सं०] वस्तुओं के संग्रह को प्रकट करनेवाला शब्द [को०]।

समुदायशब्द—संज्ञा पुं० [सं०] संग्रह की अभिव्यक्ति करनेवाला शब्द [को०]।

समुदायि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० समुदाय] झुंड। समूह। गिरोह।

समुदाव—संज्ञा पुं० [सं० समुदाय] दे० 'समुदाय'। उ०—रुचौ एक सब गुनिन को, वर बिरंचि समुदाव।—केशव (शब्द०)।

समुदाहरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. घोषणा करना। २. निदर्शन। उदाहरण देना [को०]।

समुदाहार—संज्ञा पुं० [सं०] बातचीत। वार्तालाप [को०]।

समुदित—वि० [सं०] १. उठा हुआ। २. उन्नत। ३. उत्पन्न। जात। ४. एकत्रित। संचित (को०)। ५. अन्वित। युक्त। सज्जित (को०)। ६. जो राजी या सहमत हो (को०)। ७. प्रचलित (को०)। ८. जिससे बात की गई हो (को०)।

समुदीरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. बोलना। कहना। उच्चारण करना। २. दुहराना। बार बार करना।

समुदीर्ण—वि० [सं०] १. दीप्तिमान्। अत्यंत चमकदार। २. उन्नत [को०]।

समुद्ग[1]—वि० [सं०] १. उगनेवाला। ऊपर चढ़नेवाला। २. पूर्णतः व्यापक। ३. आवरण या ढक्कन से युक्त। ४. फलियों से युक्त [को०]।

समुद्ग[2]—संज्ञा पुं० १. ढका हुआ संदूक। मंजूषा। गोल पेटारी। २. कली की नोक। ३. मंदिर की गोल आकृति। ४. एक प्रकार की चमक [को०]।

समुद्गक—संज्ञा पुं० [सं०] १. ढक्कनदार पेटारी। २. एक प्रकार का छंद [को०]।

समुद्गत—वि० [सं०] १. जो उदय हुआ हो। उदित। २. उत्पन्न। जात।

समुद्गम—संज्ञा पुं० [सं०] १. उठान चढ़ाई। २. उगना। निकलना। ३. जन्म [को०]।

समुद्गार—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत अधिक वमन होना। ज्यादा कै होना। २. भाषण। कथन (को०)। ३. ऊपर खींचना। उठाना (को०)।

समुद्गिरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. वमन करना। कै करना। २. उगली हुई वस्तु। ३. उठाना। ऊपर करना [को०]।

समुद्गीत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] उच्च स्वर से गाया जानेवाला गीत [को०]।

समुद्गीत[2]—वि० १. उच्च स्वर से या भली भाँति गाया हुआ [को०]।

समुद्गीर्ण—वि० १. वमित। २. उक्त। कथित। ३. उठाया या ऊपर किया हुआ [को०]।

समुद्दंड—वि० [सं० समुद्दण्ड] १. ऊपर उठाया हुआ। जैसे,—हाथ। २. (लाक्ष०) खौफनाक। भयानक [को०]।

समुद्देश—संज्ञा पुं० [सं०] १. भली भाँति निर्देश करना। २. पूर्ण विवरण ३. अभिप्राय। ४. सिद्धांत [को०]।

समुद्धत—वि० [सं०] १. ऊपर उठाया हुआ। उन्नीत। २. उत्तेजित। ३. घमंडी। अभिमानी। ४. अशिष्ट। असभ्य। ढीठ। धृष्ट। ५. तीव्र। उग्र। प्रखर। [को०]

समुद्धरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह अन्न जो वमन करने पर पेट से निकला हो। २. ऊपर की ओर उठाने, खींचने या बाहर निकालने की क्रिया। ३. उद्धार। ४. दूरीकरण। निवारण (को०)। ५. उच्छेद। उन्मूलन (को०)।

समुद्धर्त्ता—संज्ञा पुं० [सं० समुद्धर्तृ] १. वह जो ऊपर की ओर उठाता या निकालता हो। २. उद्धार करनेवाला। ३. ऋण चुकानेवाला। कर्ज अदा करनेवाला।

समुद्धार—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समुद्धरण'।

समुद्धृत—वि० [सं०] १. ऊपर उठाया हुआ। २. बचाया हुआ। मुक्त किया हुआ। ३. वमित। कै किया हुआ। ४. अपसा-

रित। हटाया हुआ। ५. विभक्त। ६. ग्रसित। ग्रस्त। ७. दुष्ट। उद्दंड [को०]।

समुद्बोधन—संज्ञा पुं० [सं०] १. भली भाँति जगाना। होश में लाना। २. उत्साह देना। पुनः जीवित करना [को०]।

समुद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्पत्ति। जन्म। २. होम के लिये जलाई हुई अग्नि। ३. पुनरुद्धार। पुनरुज्जीवन (को०)।

समुद्भूत—वि० [सं०] जात। उत्पन्न [को०]।

समुद्भूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्पन्न होने की किया। उत्पत्ति। जन्म।

समुद्भेद—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्पत्ति। २. विकास। ३. फाड़कर निकलना (को०)। ४. व्यक्त होना (को०)।

समुद्यत—वि० [सं०] १. जो भली भाँति उद्यत हो। अच्छी तरह से तैयार। २. ऊपर को उठा या उठाया हुआ (को०)। ३. जो दिया गया हो। प्रदत्त (को०)। ४. किसी कार्य में लगा हुआ। प्रवृत्त (को०)।

समुद्यम—संज्ञा पुं० [सं०] १. उद्यम। चेष्टा। २. आरंभ। शुरू। ३. ऊपर करना। उठाना। (को०)। ४. आक्रमण। ५. तैयारी (को०)।

समुद्योग—संज्ञा पुं० [सं०] १. सक्रिय चेष्टा। पूरी तैयारी। २. प्रयोग। व्यवहार। ३. (कई कारणों का) समवेत होना।

समुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जलराशि जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है और जो इस पृथ्वीतल के प्रायः तीन चतुर्थांश में व्याप्त है। सागर। अंबुधि।

विशेष—यद्यपि समस्त संसार एक ही समुद्र से घिरा हुआ है, तथापि सुभीते के लिये उसके पाँच बड़े भाग कर लिए गए हैं; और इनमें से प्रत्येक भाग सागर या महासागर कहलाता है। पहला भाग जो अमेरिका से यूरोप और अफ्रिका के मध्य तक विस्तृत है, एटलांटिक समुद्र (सागर या महासागर भी) कहलाता है। दूसरा भाग जो अमेरिका और एशिया के मध्य में है, पैसिफिक या प्रशांत समुद्र कहलाता है। तीसरा भाग जो अफ्रिका से भारत और आस्ट्रेलिया तक है, इंडियन या भारतीय समुद्र हिंद महासागर कहलाता है। चौथा समुद्र जो एशिया, यूरोप और अमेरिका, उत्तर तथा उत्तरी ध्रुव के चारो ओर है, आर्कटिक या उत्तरी समुद्र कहलाता है और पाँचवा भाग जो दक्षिणी ध्रुव के चारो ओर है, एंटार्कटिक या दक्षिणी समुद्र कहलाता है। परंतु आजकल लोग प्रायः उत्तरी और दक्षिणी ये दो ही समुद्र मानते हैं, क्योंकि शेष तीनों दक्षिणी समुद्र से बिलकुल मिले हुए हैं; दक्षिण की ओर उनकी कोई सीमा नहीं है। समुद्र के जो छोटे छोटे टुकड़े स्थल में अंदर की ओर चले जाते हैं, वे खाड़ी कहलाते हैं। जैसे,—बंगाल की खाड़ी। समुद्र की कम से कम गहराई प्रायः बारह हजार फुट और अधिक से अधिक गहराई प्रायः तीस हजार फुट तक है। समुद्र में जो लहरें उठा करती हैं, उनका स्थल की ऋतुओं आदि पर बहुत कुछ प्रभाव पड़ता है। भिन्न भिन्न अक्षांशों में समुद्र के ऊपरी जल का तापमान भी भिन्न होता है। कहीं तो वह ठंढा रहता है, कहीं कुछ गरम और कहीं बहुत गरम। ध्रुवों के आसपास उसका जल बहुत ठंढा और प्रायः बरफ के रूप में जमा हुआ रहता है। परंतु प्रायः सभी स्थानों में गहराई की ओर जाने पर अधिकाधिक ठंढा पानी मिलता है। गुण आदि की दृष्टि से समुद्र के सभी स्थानों का जल बिलकुल एक सा और समान रूप से खारा होता है। समुद्र के जल में सब मिलाकर उन्तीस तरह के भिन्न भिन्न तत्व हैं, जिनमें क्षार या नमक प्रधान है। समुद्र के जल से बहुत अधिक नमक निकाला जा सकता है, परंतु कार्यतः अपेक्षाकृत बहुत ही कम निकाला जाता है। चंद्रमा के घटने बढ़ने का समुद्र के जल पर विशेष प्रभाव पड़ता है और उसी के कारण ज्वार भाटा आता है। हमारे यहाँ पुराणों में समुद्र की उत्पत्ति के संबंध में अनेक प्रकार की कथाएँ दी गई हैं और कहा गया है कि सब प्रकार के रत्न समुद्र से ही निकलते हैं; इसी लिये उसे 'रत्नाकर' कहते हैं।

पर्या०—समुद्र। अब्धि। अकूपार। पारावार। सरित्पति। उदन्वान्। उदधि। सिंधु। सरस्वान्। सागर। अर्णव। रत्नाकर। जलनिधि। नदीकांत। नदीश। मकरालय। नीरधि। नीरनिधि। अंबुधि। पाथोधि। निधि। इंदुजनक। तिमिकोष। क्षीराब्धि। मितद्रु। वाहिनीपति। जलधि। गंगाधर। तोयनिधि। दारद। तिमि। महाशय। वारिराशि। शैलशिविर। महीप्राचीर। कंपति। पयोधि। नित्य। आदि आदि।

२. किसी विषय या गुण आदि का बहुत बड़ा आगार। ३. बहुत बड़ी संख्या का वाचक शब्द (को०। ४. शिव का एक नाम (को०)। ५. चार की संख्या (को०)। ६. नक्षत्रों और ग्रहों की एक विशेष प्रकार स्थिति (को०)। ७. एक प्राचीन जाति का नाम।

समुद्रकटक—संज्ञा पुं० [सं०] जलपोत। जहाज [को०]।

समुद्रकफ—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रफेन।

समुद्रकांची—संज्ञा स्त्री० [सं० समुद्रकाञ्ची] पृथ्वी, जिसकी मेखला समुद्र है।

समुद्रकांता—संज्ञा स्त्री० [सं० समुद्रकान्ता] १. नदी, जिसका पति समुद्र माना जाता है और जो समुद्र में जाकर मिलती है। २. असबरग। पृक्का (को०)।

समुद्रकुक्षि—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र का किनारा [को०]।

समुद्रग[१]—वि० [सं०] १. समुद्र की ओर जानेवाला। २. समुद्री कार्य करनेवाला [को०]।

समुद्रग[२]—संज्ञा पुं० १. माँझी। २. समुद्री व्यापारी [को०]।

समुद्रगमन—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र का किनारा [को०]।

समुद्रगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नदी जो समुद्र की ओर गमन करती है। २. गंगा का एक नाम।

समुद्रगामी—वि० [सं० समुद्रगामिन्] दे० 'समुद्र'।

समुद्रगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] गुप्त राजवंश के एक बहुत बड़े, प्रसिद्ध वीर सम्राट् का नाम जिनका समय सन् ३३५ से ३७५ ई० तक माना जाता है।

विशेष—अनेक बड़े बड़े राज्यों को जीतकर गुप्त साम्राज्य हुगली से चंबल तक और हिमालय से नर्मदा तक विस्तृत था। पाटलिपुत्र में इनकी राजधानी थी, परंतु अयोध्या और कौशांबी भी इनकी राजधानियाँ थीं। इन्होंने एक बार अश्वमेध यज्ञ भी किया था।

समुद्रगृह—संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्रीष्म ताप से त्राण के लिये जल के बीच में बना हुआ भवन। २. नहाने का कक्ष। स्नानगृह [को०]।

समुद्रचुलुक—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि जिन्होंने चुल्लुओं से समुद्र पी डाला था।

समुद्रज[१]—वि० [सं०] समुद्र से उत्पन्न। समुद्रजात।

समुद्रज[२]—संज्ञा पुं० मोती, हीरा, पन्ना आदि रत्न जिनकी उत्पत्ति समुद्र से मानी जाती है।

समुद्रझाग—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रफेन।

समुद्रतट, समुद्रतीर—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र का किनारा।

समुद्रदयिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। दरिया।

समुद्रनवनीत—संज्ञा पुं० [सं०] १. अमृत। २. चंद्रमा।

समुद्रनवनीतक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समुद्रनवनीत'।

समुद्रनेमि, समुद्रनेमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

समुद्रपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। दरिया।

समुद्रपर्यंत—वि० [सं० समुद्रपर्यन्त] जिसकी सीमा समुद्रतक हो। आसमुद्र [को०]।

समुद्रपात—संज्ञा पुं० [सं० समुद्र + हिं० पात (=पत्ता)] एक प्रकार की झाड़दार लता जो प्रायः सारे भारत में पाई जाती है। समुंदर का पत्ता। समुंदरसोख।

विशेष—इसके डंठल बहुत मजबूत और चमकीले होते हैं और पत्ते प्रायः पान के आकार के होते हैं। पत्ते ऊपर की ओर हरे और मुलायम होते हैं। इन पत्तों में एक विशेष गुण यह होता है कि यदि घाव आदि पर इनका ऊपरी चिकना तल रखकर बाँधा जाय, तो वह घाव सूख जाता है। और यदि नीचे का रोएँदार भाग रखकर फोड़े आदि पर बाँधा जाय, तो वह पककर बह जाता है। वसंत के अंत में इसमें एक प्रकार के गुलाबी रंग के फूल लगते हैं जो नली के आकार के लंबे होते हैं। ये फूल प्रायः रात के समय खिलते हैं और इनमें से बहुत मीठी गंध निकलती है। इसमें एक प्रकार के गोल, चिकने, चमकीले और हलके भूरे रंग के फल भी लगते हैं। वैद्यक के अनुसार इसकी जड़ बलकारक और आमवात तथा स्नायु संबंधी रोगों को दूर करनेवाली मानी गई है; और इसके पत्ते उत्तेजक, चर्मरोग के नाशक और घाव को भरनेवाले कहे गए हैं।

समुद्रफल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जो अवध, मध्य भारत आदि में नदियों के किनारे और तर भूमि में तथा कोंकण में समुद्र के किनारे बहुत अधिकता से पाया जाता है।

विशेष—यह प्रायः ३० से ५० फुट तक ऊँचा होता है। इसकी लकड़ी सफेद और बहुत मुलायम होती है और कुछ भूरी या काली होती है। इसके पत्ते प्रायः तीन इंच तक चौड़े और दस इंच तक लंबे होते हैं। शाखाओं के अंत में दो ढाई इंच के घेरे के गोलाकार सफेद फूल लगते हैं। फल भी प्रायः इतने ही बड़े होते हैं जो पकने पर नीचे की ओर से चिपटे या चौपहल हो जाते हैं। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, गरम, कड़वा और त्रिदोषनाशक होता है तथा सन्निपात, भ्रांति, सिर के रोग और भूतबाधा आदि को दूर करता है।

समुद्रफेन—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र के पानी का फेन या झाग जो उसके किनारे पर पाया जाता है और जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है। समुंदरफेन। समुंदर झाग।

विशेष—समुद्र में लहरें उठने के कारण उसके खारे पानी में एक प्रकार का झाग उत्पन्न होता है जो किनारे पर आकर जम जाता है। यही झाग समुद्रफेन के नाम से बाजारों में बिकता है। देखने में यह सफेद रंग का, खरखरा, हलका और जालीदार होता है। इसका स्वाद, फीका, तीखा और खारा होता है। कुछ लोग इसे एक प्रकार की मछली की हड्डियों का पंजर भी मानते हैं। वैद्यक के अनुसार यह कसैला, हलका, शीतल, सारक, रुचिकारक, नेत्रों को हितकारी, विष तथा पित्तविकार का नाशक और नेत्र तथा कंठ आदि के रोगों को दूर करनेवाला होता है।

समुद्रभव—वि० [सं०] जो समुद्र में उत्पन्न हो। समुद्रजात [को०]।

समुद्रमंडूकी—संज्ञा स्त्री० [सं० समुद्रमण्डूकी] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

समुद्रमंथन—संज्ञा पुं० [सं० समुद्रमन्थन] समुद्र को मथना।

समुद्रमथन—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंधु का मंथन। समुद्रमंथन। २. एक दैत्य का नाम [को०]।

समुद्रमहिषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र की पत्नी। गंगा नदी [को०]।

समुद्रमालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी, जो समुद्र को अपने चारों ओर माला की भाँति धारण किए हुए है।

समुद्रमेखला—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी, जो समुद्र को मेखला के समान धारण किए हुए है।

समुद्रयात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की यात्रा।

समुद्रयात्री—वि० [सं० समुद्रयात्रिन्] समुद्रयात्रा करनेवाला।

समुद्रयान—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र यात्रा। २. समुद्र पर चलने की सवारी। जैसे,—जहाज, स्टीमर आदि।

समुद्रयायी—वि० [सं० समुद्रयायिन्] दे० 'समुद्रग' [को०]।

समुद्रयोषित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरिता। नदी [को०]।

समुद्ररसना—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

समुद्रलवण—संज्ञा पुं० [सं०] करकच नाम का लवण जो समुद्र के जल से तैयार किया जाता है। वैद्यक के अनुसार यह लघु, हृद्य, पित्तवर्धक, विदाही, दीपन, रुचिकारक और कफ तथा वात का नाशक माना जाता है।

समुद्रवल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र की पत्नी, नदी [को०]।

समुद्रवसना—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

समुद्रवह्नि—संज्ञा पुं० [सं०] बड़वानल।

समुद्रवास—संज्ञा पुं० [सं० समुद्रवासस्] अग्नि।

समुद्रवासी—संज्ञा पुं० [सं० समुद्रवासिन्] १. वह जो समुद्र में रहता हो। २. वह जो समुद्र के तट पर रहता हो।

समुद्रवेला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सागर की तरंग। समुद्र की लहर। २. समुद्रतट। सागरतट। ३. ज्वार भाटा [को०]।

समुद्रव्यवहारी—संज्ञा पुं० [सं० समुद्रव्यवहारिन्] वह जो समुद्रयात्रा करके व्यापार करता है। समुद्री व्यापारी [को०]।

समुद्रशुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्र की सीपी। समुद्रोत्पन्न सीपी।

समुद्रसार—संज्ञा पुं० [सं०] मोती।

समुद्रसुभगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

समुद्रशोष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समुद्रपात'।

समुद्रस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो समुद्र के तट पर था।

समुद्रांत[१]—संज्ञा पुं० [सं० समुद्रान्त] १. समुद्र का किनारा। २. जातीफल। जायफल।

समुद्रांत[२]—वि० जो समुद्र तक विस्तृत हो।

समुद्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं० समुद्रान्ता] १. दुरालभा। २. कपास। कर्पासी। ३. पृक्का। ४. जवासा। ५. पृथ्वी, जो समुद्र तक विस्तृत है (को०)।

समुद्रांबरा—संज्ञा स्त्री० [सं० समुद्राम्बरा] पृथ्वी।

समुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शमी। २. कचूर (को०)।

समुद्राभिसारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कल्पित देवबाला जो समुद्रदेव की सहचरी मानी जाती है।

समुद्रायणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

समुद्रारु—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुंभीर नामक जलजंतु। २. सेतबंध। ३. एक प्रकार की मछली जिसे तिमिंगिल कहते हैं।

समुद्रार्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

समुद्रावरणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

समुद्रावरोहण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि। समाधि का एक ढंग [को०]।

समुद्रिय—वि० [सं०] १. समुद्र संबंधी। समुद्र का। २. समुद्र से उत्पन्न। समुद्रजात। ३. एक प्रकार का वृत्त (को०)।

समुद्री—वि० [सं० समुद्रिय] १. दे० 'समुद्रिय'। २. जो समुद्र की ओर से आता हो। जैसे,—वायु। ३. जो समुद्रयान द्वारा की जाय। जैसे,—यात्रा। ३. जलसेना संबंधी।

समुद्रीय—वि० [सं०] समुद्र संबंधी। समुद्र का। समुद्रिय।

समुद्रोन्मादन—संज्ञा पुं० [सं०] कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

समुद्र्य—वि० [सं०] दे० 'समुद्रीय' [को०]।

समुद्वह—वि० [सं०] १. श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़िया। २. वहन करनेवाला। ३. नीचे ऊपर जानेवाला (को०)।

समुद्वाह—संज्ञा पुं० [सं०] १. बिवाह। शादी। पाणिग्रहण। २. धारण करना। ऊपर उठाना (को०)।

समुद्वाहित—वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ या धारण किया हुआ।

समुद्वेग—संज्ञा पुं० [सं०] १. घबड़ाहट की स्थिति। बेचैनी। २. डर। भय। त्रास [को०]।

समुन्न—वि० [सं०] १. आर्द्र। गीला। २. गंदा। मलिन [को०]।

समुन्नत[१]—वि० [सं०] १. जिसकी यथेष्ट उन्नति हुई हो। खूब बढ़ा हुआ। २. बहुत ऊँचा। ३. ऊपर उठाया हुआ (को०)। ४. गौरवान्वित (को०)। ५. अभिमानी। घमंडी। गर्वयुक्त (को०)। ६. खरा। सच्चा। ७. जो आगे की ओर बढ़ा या निकला हो।

समुन्नत[२]—संज्ञा पुं० वास्तु विद्या के अनुसार एक प्रकार का स्तंभ या खंभा।

समुन्नति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. यथेष्ट उन्नति। काफी तरक्की। २. महत्व। बड़ाई। ३. उच्चता। ४. श्रेष्ठ पद या ओहदा। उच्च पद (को०)। ५. ऊपर की ओर करना या उठाना (को०)। ६. घमंड। अभिमान (को०)।

समुन्नद—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण के अनुसार एक राक्षस का नाम।

समुन्नद्ध[१]—वि० [सं०] १. जो अपने आपको बड़ा पंडित समझता हो। २. अभिमानी। घमंडी। ३. उत्पन्न। उद्भूत। जात। ४. उन्नत। उच्छ्रित (को०)। ५. सूजा हुआ। फूला हुआ (को०)। ६. पूर्ण। पूरा (को०)। ६. विकृत। बुरे चेहरे मोहरे का (को०)। ८. बंधनमुक्त। ९. सर्वोत्कृष्ट। सर्वश्रेष्ठ। सर्वप्रधान (को०)।

समुन्नद्ध[२]—संज्ञा पुं० प्रभु। स्वामी। मालिक।

समुन्नमन—संज्ञा पुं० [सं०] उठाना। चढ़ाना। जैसे, भौंह का [को०]।

समुन्नय—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राप्ति। लाभ। २. वृत्तांत। घटना। ३. नतीजा। निष्कर्ष। ४. अनुमान [को०]।

समुन्नयन—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊपर की ओर उठाने या ले जाने की क्रिया। २. प्राप्ति। लाभ।

समुन्नाद—संज्ञा पुं० [सं०] एक साथ होनेवाली चिल्लाहट [को०]।

समुन्नीत—वि० [सं०] उन्नत किया हुआ। ऊपर किया हुआ [को०]।

समुन्मीलन—संज्ञा सं० [सं०] १. खोलना या खुलना। जैसे,—फूल की पंखुड़ियों या नेत्र की पलकों का। २. फैलाना। ३. दिखाना। प्रदर्शन।

समुन्मीलित—वि० [सं०] १. खोला हुआ। खुला हुआ। २. फैलाया हुआ। ३. दिखाया हुआ। प्रदर्शित [को०]।

समुन्मूलन—संज्ञा पुं० [सं०] जड़ से उखाड़ फेकना। बिल्कुल नष्ट कर देना [को०]।

समुपकरण—संज्ञा पुं० [सं०] उपकरण। साधन। सामान। सामग्री। उ०—पार कर जीवन प्रलोभन, समुपकरण।—अपरा, पृ० १२।

समुपक्रम—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रारंभ। शुरुआत। २. दवा शुरू करना। आरंभिक चिकित्सा [को०]।

समुपगम—संज्ञा पुं० [पुं०] लगाव। संपर्क। पहुँच [को०]।

समुपचार—संज्ञा पुं० [सं०] आदर संमान करना। ध्यान रखना या देना।

समुपद्रुत—वि० [सं०] जिसे आक्रांत किया गया हो। रौंदा हुआ [को०]।

समुपनयन—संज्ञा पुं० [सं०] पास ले जाना [को०]।

समुपभुक्त—वि० [सं०] १. खाया हुआ। भोग किया हुआ। २. कृत मैथुन [को०]।

समुपभोग—संज्ञा पुं० [सं०] उपभोग करना। व्यवहार में लाना। २. मैथुन। संभोग। ३. खाना। भक्षण [को०]।

समुपयुक्त—वि० [सं०] १. ठीक और वाजिब। उचित। उपयुक्त। २. भोगा हुआ। व्यवहृत। भुक्त [को०]।

समुपवेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. विनोद। तोष। आनंद। २. एक साथ बैठना। ३. आदर। सत्कार अभ्यर्थना [को०]।

समुपवेशन—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी तरह बैठने की क्रिया। २. आसन (को०)। ३. अभ्यर्थना। ४. भवन। आवास। निवास।

समुपष्टभ—संज्ञा पुं० [सं० समुपष्टम्भ] सहारा। आश्रय [को०]।

समुपस्तंभ—संज्ञा पुं० [सं० समुपस्तम्भ] आश्रय। भरोसा। सहारा।

समुपस्था, समुपस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १. पहुँच। प्रवेश। २. निकटता। सामीप्य। ३. घटित होना। आ पड़ना। घटना [को०]।

समुपस्थित—वि० [सं०] १. पहुँचा हुआ। उपस्थित। २. बैठा हुआ। ३. व्यक्त। जाहिर। ४. समय के अनुकूल। ५. हिस्से में आया हुआ। जो आ पड़ा हो। प्राप्त। ६. सन्नद्ध। तैयार। ७. जिसका निश्चय कर लिया गया हो [को०]।

समुपस्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उपस्थिति। २. नजदीक होने का भाव। ३. पहुँच। ४. घटित होने की क्रिया [को०]।

समुपहत—वि० [सं०] खंडित। जिसे काट दिया गया हो। जैसे,—समुपहत सिद्धांत [को०]।

समुपह्वव—संज्ञा पुं० [सं०] १. होम आदि के द्वारा देवताओं का आमंत्रण करना। २. बहुत से लोगों को एक साथ आमंत्रित करना।

समुपह्वर—संज्ञा पुं० [सं०] शरण गृह। छिपने का स्थान। गुप्त स्थान [को०]।

समुपागत—वि० [सं०] पास आया या पहुँचा हुआ। प्राप्त [को०]।

समुपार्जन—संज्ञा पुं० [सं०] सम्यक् अर्जन करना। एक साथ प्राप्त करना [को०]।

समुपेत—वि० [सं०] १. समवेत रूप से आगत। एकत्रित। २. पहुँचा हुआ। ३. सज्जित। युक्त। ४. आबाद। बसा हुआ [को०]।

समुपेक्षक—वि० [सं०] ध्यान न देनेवाला। उपेक्षा करनेवाला [को०]।

समुपोढ़—वि० [सं० समुपोढ] १. उन्नत। उत्थित। उठा हुआ। २. बढ़ा हुआ। वृद्धि प्राप्त। ३. आकृष्ट। ४. नियंत्रित। रोका हुआ। ५. आरंभ किया हुआ [को०]।

समुपोषक—वि० [सं०] जो उपवास करता हो। उपवासी [को०]।

समुल्लसित—वि० [सं०] १. जो चमक रहा हो। उद्भासित। आभायुक्त। सुंदर। कांतिमान्। २. जो खेल रहा हो। क्रीड़ा करनेवाला। आनंद मनाता हुआ [को०]।

समुल्लास—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० समुल्लसित] १. उल्लास। आनंद। प्रसन्नता। खुशी। २. ग्रंथ आदि का प्रकरण या परिच्छेद।

समुल्लेख—संज्ञा पुं० [सं०] १. उन्मूलन। उच्छेद। उत्पाटन। २. उत्खनन। उल्लेखन। ३. चर्चा। जिक्र।

समुहा[१]—वि० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह, हिं० सामुहें] १. सामने का। आगे का। २. सामना। सीधा।

समुहा(पु)[२]—क्रि० वि० सामने। आगे। उ०—मरिबे को साहसु ककै बढ़ै बिरह की पीर दौरति है समुही ससी सरसिज सुरभि समीर।—सं० सप्तक, पृ० १०६।

समुहाना†—क्रि० अ० [सं० सम्मुख, पु०हिं० सामुहें] सामने आना। संमुख होना। उ०—सबहीं त्यों समुहाति छिनु चलति सबनु दै पीठि। वाही त्यौं ठहराति यह कबिल नबी लौं दीठि।—बिहारी (शब्द०)।

समुहैं(पु)—क्रि० वि० [हिं०] सामने। आगे।

समूचा—वि० [सं० समुच्चय] [स्त्री० समूची] समग्र। संपूर्ण। सब का सब। कुल।

समूढ़—वि० [सं० समूढ] १. ढेर लगाया हुआ। २. एकत्र किया हुआ। संचित। संगृहीत। ३. पकड़ा हुआ। ४. भोगा हुआ। भुक्त। ५. जिसका विवाह हो चुका हो। विवाहित। ६. जो अभी उत्पन्न हुआ हो। सद्यः जात। ७. संगत। ठीक। ८. ढँका हुआ। आवृत (को०)। ९. सहित। युक्त (को०)। ११. वक्र। झुका हुआ (को०)। १२. निर्मल। स्वच्छ (को०)। १३. संचालित किया हुआ। जिसका नेतृत्व किया गया हो (को०)।

समूर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मृग। शंबर या साबर नामक हिरन।

समूर[२]—वि० [सं० समूल] दे० 'समूल'।

समूरक—संज्ञा पुं० [सं०] सं० 'समूर'[१]।

समूरु, समूरुक—संज्ञा पुं० [सं०] समूर मृग। संबर मृग।

समूल²—वि० [सं०] १. जिसमें मूल या जड़ हो। २. जिसका कोई हेतु हो। कारण सहित।

समूल³—क्रि० वि० जड़ से। मूल सहित। जैसे,—किसी का कार्य समूल नष्ट कर देना।

समूह—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ही तरह की बहुत सी चीजों का ढेर। राशि। २. समुदाय। झुंड। गरोह।

समूहक्षारक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'समूहगंध' [को०]।

समूहगंध—संज्ञा पुं० [सं० समूहगन्ध] १. मोतिया नामक फूल। गंधराज। २. गंध बिलाव (को०)।

समूहन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ मिलाना। २. संग्रह। राशि। ३. धनुष पर बाण चढ़ाना [को०]।

समूहन—वि० १. बुहारनेवाला। २. एकत्र करनेवाला [को०]।

समूहनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] झाड़ू। बुहारी।

समूह हितवादी—संज्ञा पुं० [सं०] जनता के हित के साधन में तत्पर रहनेवाला। जनता का प्रतिनिधि।

विशेष—याज्ञवल्क्य ने लिखा है कि किसी स्थान का शासन धर्मज्ञ, निर्लोभ और पवित्र समूह हितवादियों के हाथ में देना चाहिए।

समूह्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ की अग्नि। २. यज्ञाग्नि रखने के लिये बना हुआ स्थान [को०]।

समूह्य²—वि० १. तर्क करने के योग्य। ऊहा करने के योग्य। २. बुहारने योग्य (को०)।

समृतⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] दे० 'स्मृति'। उ०—समृत पुराणाँ कहत श्रुत न्यायादिक मतनेक।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० २९।

यौ०—समृतवेताह ⓟ = स्मृतिवेत्ता। स्मृतियों का जानकार। उ०—कीधा माजी न्याव किल जग माँझल जेताह। काजी सुँण धिन धिन कहैं विप्र समृतवेताह।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० २५।

समृतिⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] दे० 'स्मृति'—उ०—पढ़त सुनत मन दै निगम, आगम, समृति, पुरान।—मति० ग्रं०, पृ० ३६।

समृद्ध¹—वि० [सं०] १. जिसके पास बहुत अधिक संपत्ति हो। संपन्न। धनवान। २. उत्पन्न। जात। ३. प्रसन्न। भाग्यशाली (को०)। ४. भरा पूरा। बढ़ा चढ़ा (को०)। ५. फलयुक्त। ६. समग्र। पूर्ण (को०)। ७. पूर्णतः विकसित (को०)। ८. प्रभूत। भूरि। प्रचुर (को०)। ९. गतिशील (को०)।

समृद्ध²—संज्ञा पुं० महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

समृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुत अधिक संपन्नता। ऐश्वर्य। अमीरी। २. कृतकार्यता। सफलता। ३. प्रभाव। ४. बहुलता। प्रचुरता (को०)। ५. प्रधानता। प्रमुखता। सर्वोपरित्व (को०)। ६. अभिवृद्धि। वृद्धि। बढ़ती।

समृद्धी¹—संज्ञा पुं० [सं० समृद्धिन्] १. वह जो बार बार अपनी समृद्धि बढ़ाता रहता हो। २. उन्नतिशील। संपन्न व्यक्ति। भरा पूरा (को०)।

समृद्धी²—संज्ञा स्त्री० [सं० समृद्धि] दे० 'समृद्धि'।

समेटना—क्रि० स० [हिं० सिमटना] १. बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना। २. अपने ऊपर लेना। जैसे,—किसी का सब समेटना। ३. बिछौना आदि लपेटना या तह करके रखना।

समेड़ो—संज्ञा स्त्री० [सं० समेडी] कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

समेत¹—वि० [सं०] १. संयुक्त। मिला हुआ। २. साथ साथ आया हुआ। सह आगत (को०)। ३. निकट आया हुआ। पहुँचा हुआ (को०)। ४. सज्जित। युक्त (को०)। ५. संघृष्ट। संघर्षित। भिड़ा हुआ (को०)। ६. स्वीकृत। सहमत (को०)।

समेत²—अव्य० सहित। साथ।

समेत³—संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

समेध—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मेरु के अंतर्गत एक पर्वत का नाम।

समेधन—संज्ञा पुं० [सं०] विकास। वृद्धि [को०]।

समेधित—वि० [सं०] १. अत्यधिक बढ़ा हुआ। प्रचुर। बहुल। प्रभूत। २. शक्तिशाली। मजबूत। ३. जुटा हुआ। मिला हुआ। संयुक्त [को०]।

समै, समैया, समोⓟ—संज्ञा पुं० [सं० समय] काल। अवसर। मौका। दे० 'समय'। उ०—(क) तुलसी तिन्ह सरिस तेऊ भूरिभाग जेऊ सुनि कै सुचित तेहि समैं समैहैं।—तुलसी ग्रं०, पृ० ३४२। (ख) देहि गारि लहकौरि समौ सुख पावहिं।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५९।

समोखनाⓟ—क्रि० स० [सं० सम्बोधन, सन्तोषण, पुं० हिं० समोख] समझा कर कहना। जोर देकर कहना।

समोद—वि० [सं०] समुद। आनंदित। प्रसन्न। उ०—कुछ दिन रह गृह तू फिर समोद, बैठी नानी की स्नेह गोद।—अपरा, पृ० १८३।

समोदक¹—वि० [सं०] जिसमें जल आधी मात्रा में हो। जिसमें आधा जल मिला हो [को०]।

समोदक²—संज्ञा पुं० मट्ठा। घोल [को०]।

समोधⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सम्बोध] संबोध। ज्ञान। उ०—रुंधी सु गाय बन व्याघ्र कोध। आयौ सु राज राजन समोध। कुरुलाय करिय करुना सुधेन। छंडाय राज राजन बलेन।—पृ० रा० ११९४।

समोधनाⓟ—क्रि० स० [सं० सम्बोधन] बोध देना। समझाना बुझाना। प्रबोधन करना। ढाढ़स बँधाना। उ०—नंद समोधत ताकौ चित्त। सब अदिष्ट बस होतु है मित्त।—नंद० ग्रं०, पृ० २३६।

समोनाⓟ¹—क्रि० स० [हिं० समाना] १. समन्वित करना। एक में करना या मिलाना। २. समेटना। उ०—पूरन दया सद्गुरु

की होई। वंश आपु में लेहि समोई।--कबीर सा०, पृ० ९५५।

समोना[२]--क्रि० अ० [सं० समुद] आनंदित होना। प्रसन्न होना। अनुरक्त होना। उ०--जोति बरै साहेब के निसु दिन तकि तकि रहत समोई।--कबीर० श०, भा० ३, पृ० ६।

समोसा--संज्ञा पुं० [फ़ा० संबोसह्] एक प्रकार का प्रसिद्ध व्यंजन। सिंघाड़ा। तिकोना।

विशेष--यह मैदे से बनाया जाता है। मैदा गूँथ कर छोटी पतली रोटी की तरह बेल लेते हैं। इसी बेली हुई रोटी को बीच से काट कर दो अर्द्धवृत्त की शक्ल में कर लेते हैं। फिर एक हिस्सा लेकर उसके बीच मसालेदार आलू मटर आदि भरकर तिकोने के आकार में लपेट लेते हैं और घी या तेल में छान लेते हैं। यह नमकीन और मीठा दोनों प्रकार का बनाया जाता है।

समोह--संज्ञा पुं० [सं०] समर। युद्ध। लड़ाई।

समौ--संज्ञा पुं० [सं० समय, पु हिं० समउ] दे० 'समय'।

समौरिया†--वि० [हिं० सम + उमरिया] बराबर उम्रवाला। समवयस्क।

सम्मंत्रण--संज्ञा पुं० [सं० सम्मन्त्रण] राय लेना। मंत्रणा करना [को०]।

सम्मंत्रणीय--वि० [सं० सम्मन्त्रणीय] दे० सम्मंत्रव्य'।

सम्मंत्रव्य--वि० [सं० सम्मन्त्रव्य] १. मंत्रणा करने योग्य। २. भली भाँति मनन करने योग्य।

सम्मंत्रित--वि० [सं० सम्मन्त्रित] अच्छी तरह विचार किया हुआ। भली भाँति समझा बूझा हुआ [को०]।

सम्म--संज्ञा पुं० [अ०] विष। गरल [को०]।

सम्मग्न--वि० [सं०] पूर्णतः निमग्न। डूबा हुआ। तल्लीन। खोया हुआ [को०]।

सम्मत[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. राय। संमति। सलाह। २. अनुमति। ३. धारणा (को०)। ४. सावर्णि मनु का एक पुत्र (को०)।

सम्मत[२]--वि० १. जिसकी राय मिलती हो। सहमत। अनुमत। २. पसंद। प्रिय (को०)। ३. सोचा विचारा हुआ (को०)। ४. समान। तुल्य (को०)। ५. संमानित। प्रतिष्ठित (को०)। ६. युक्त। सहित (को०)।

सम्मति[१]--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सलाह। राय। २. अनुमति। आदेश। अनुज्ञा। ३. मत। अभिप्राय। ४. सम्मान। प्रतिष्ठा। ५. इच्छा। वासना। ६. आत्मबोध। आत्मज्ञान। ७. सहमति। समर्थन (को०)। ८. प्रेम। स्नेह (को०)। ९. एक नदी का नाम (को०)।

सम्मति[२]--वि० [सं० सम मति] समान मति या एक राय का।

सम्मत्त--वि० [सं०] १. मतवाला। नशे में धुत। २. जिसके गंडस्थल से मद बहता हो (हाथी)। ३. जो आनंदातिरेक से मस्त हो। आनंदविह्वल (को०)।

सम्मद[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. हर्ष। आमोद। आह्लाद। २. एक ऋषि (को०)। ३. एक प्रकार की मछली।

विशेष--विष्णुपुराण में लिखा है कि यह मछली अधिक जल में रहती है और बहुत बड़ी होती है। इसके बहुत बच्चे होते हैं।

सम्मद[२]--वि० सुखी। आनंदित। हर्षयुक्त। प्रसन्न।

सम्मदी--वि० [सं० सम्मदिन्] आनंदयुक्त। प्रसन्न [को०]।

सम्मन--संज्ञा पुं० [अं० समन्स] अदालत का वह सूचनापत्र या आदेश पत्र जिसमें किसी को निर्दिष्ट समय पर अदालत में उपस्थित या हाजिर होने की सूचना या आदेश लिखा रहता है। तलबीनामा। इत्तिलानामा। आह्वानपत्र।

क्रि० प्र०--आना।--देना।--निकलना।--निकलवाना।--जारी कराना।--जारी होना।--तामील होना।--तामील कराना।

सम्मर[१]--संज्ञा पुं० [सं० स्मर] दे० 'स्मर'। उ०--छुटि समाधि ऋषि नैन उघारे। अति सकोपि सम्मर उर मारे।--ह० रासो, पृ० २७।

सम्मर--संज्ञा पुं० [सं० समर] युद्ध। रण। लड़ाई।

सम्मर्द--संज्ञा पुं० [सं०] १. युद्ध। लड़ाई। २. समूह। भीड़। ३. परस्पर का विवाद। लड़ाई झगड़ा। ४. रगड़। घिसना। घर्षण (को०)। ५. कुचलना। रौंदना (को०)। ६. (लहरों की) टक्कर या मुठभेड़।

सम्मर्दन--संज्ञा पुं० [सं०] १. भली भाँति मर्दन करने का व्यापार। रौंदना। २. वसुदेव के पुत्रों में एक पुत्र। ३. रगड़ना। घिसना। संघर्षण (को०)। ४. लड़ाई। युद्ध (को०)। ५. वह जो भली भाँति मर्दन करता हो। अच्छी तरह मर्दन करनेवाला।

सम्मर्दी--संज्ञा पुं० [सं० सम्मर्दिन्] १. भली भाँति मर्दन करनेवाला। २. रगड़ने या घिसनेवाला।

सम्मर्शन--संज्ञा पुं० [सं०] थपथपाना। सहलाने की क्रिया [को०]।

सम्मर्शी--वि० [सं० सम्मर्शिन्] भले बुरे, सत् असत् का निर्णय कर सकनेवाला [को०]।

सम्मर्ष--संज्ञा पुं० [सं०] मर्ष। सहन। धैर्य।

सम्महा--संज्ञा पुं० [सं० शुष्मा] अग्नि। आग। पावक। (डिं०)।

सम्मा--संज्ञा स्त्री० [सं०] संख्या, आकार आदि की तुल्यता या समानता। २. एक छंद का नाम (को०)।

सम्मातृ--वि० [सं०] जिसकी माता पतिव्रता हो। सती मातावाला।

सम्मातुर--वि० [सं०] सती साध्वी मातावाला। सन्मातुर [को०]।

सम्माद--संज्ञा पुं० [सं०] १. नशा। मद। २. उन्माद। पागलपन।

सम्मान[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. समादर। इज्जत। मान। गौरव। प्रतिष्ठा। २. माप। मान (को०)। ३. तुलना। समानता (को०)।

सम्मान[२]--वि० १. मान सहित। २. जिसका मान पूरा हो। ठीक मानवाला।

सम्मानन—संज्ञा पुं० [सं०] १. समादर करना। २. सीख देना। सिखलाना। शिक्षा देना [को०]।

सम्मानना[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] सम्मानन। दे० 'सम्मान'।

सम्मानना(पु)[२]—क्रि० स० संमान करना। आदर करना।

सम्माननीय—वि० [सं०] सम्मान के योग्य [को०]।

सम्मानित—वि० [सं०] जिसका संमान हुआ हो। प्रतिष्ठित। इज्जतदार।

सम्मानी—वि० [सं० सम्मानिन्] जिसमें संमान करने की भावना हो [को०]।

सम्मान्य—वि० [सं०] दे० 'संमाननीय'।

सम्मार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा मार्ग। सत्मार्ग। श्रेष्ठ पद प्राप्त कराने का रास्ता। २. वह मार्ग जिससे मोक्ष की प्राप्ति होती है। ३. माँजना। प्रक्षालन। धोना। साफ करना (को०)। ४. बोझ बाँधने की रस्सी। गतार। जून (को०)।

सम्मार्ज्जक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुहारन। झाड़ू। कूचा। २. भंगी। मेहतर (को०)।

सम्मार्जन—संज्ञा पुं० [सं०] १. झाड़ना बुहारना। २. माजना। रगड़ कर साफ करना। ३. झाड़ू। कूँचा। ४. कुशकंडिका में यज्ञारंभ के समय स्रुवा को साफ करने के लिए रखा हुआ कुश-समूह। ५. गुफ़ना। उबसन। उसकन। जूना। ६. भोजन के बाद थाली में शेष उच्छिष्ट अन्न। ७. मूर्ति या प्रतिमा का स्नान [को०]।

सम्मार्जनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] झाड़ू। बुहारी। कूचा।

सम्मार्जित—वि० [सं०] जिसका सम्मार्जन किया गया हो।

सम्मार्ष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सम्मार्जन। सफाई [को०]।

सम्मित[१]—वि० [सं०] १. समान। सदृश। अनुरूप। मिलता जुलता। २. मापा या नापा हुआ (को०)। ३. समान माप, विस्तार या मूल्य का (को०)। ४. युक्त। सज्जित (को०)। ५. समान महत्व का (को०)। ६. समानुगातिक। समरूप। समनुकूल (को०)। ७. दूर तक फैलाया हुआ (को०)।

सम्मित[२]—संज्ञा पुं० [सं०] १. दूरी। फासला। २. वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम। ३. एक योनि [को०]।

सम्मिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऊँची और बड़ी कामना। उच्चाकांक्षा। २. तुलना। बराबरी (को०)।

सम्मियात—संज्ञा स्त्री० [अ० सम्म का बहु व०] विषाक्त वस्तुएँ [को०]।

सम्मिलन—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलन। मिलाप। मेल। २. इकट्ठा होना। जुटना। एकत्र होना।

सम्मिलित—वि० [सं०] १. मिला हुआ। मिश्रित। युक्त। २. एकत्र। इट्ठा।

सम्मिश्र—वि० [सं०] १. मिला हुआ। संबद्ध। २. संयुक्त। युक्त। संपन्न।

सम्मिश्रण—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलाने की क्रिया। मिश्रण। २. मेल। मिलावट।

सम्मिश्रित—वि० [सं०] मिलाया हुआ। मिश्रित। मिलावटी [को०]।

सम्मिश्ल—संज्ञा पुं० [सं०, इंद्र [को०]।

सम्मीयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] जहरीलापन। विषत्व [को०]।

सम्मीलन—संज्ञा पुं० [सं०] १. संकोचन। मुँदना (आँख या पुष्प आदि का)। २. आवृत करना। आच्छादित करना। ३. पूरा ग्रहण लगना। खग्रास। ४. क्रिया का अंत या समाप्ति। अक्रियता [को०]।

सम्मीलित—वि० [सं०] बंद। ढँका हुआ। मुँदा हुआ। आच्छन्न [को०]।

यौ०—सम्मीलित द्रुम = लाल गदहपूरना।

सम्मुख[१]—अव्य० [सं०] सामने। समक्ष। आगे। जैसे,—बड़ों के सम्मुख इस प्रकार की बातें नहीं कहनी चाहिए।

सम्मुख[२]—वि० [वि० स्त्री० संमुखा, संमुखी] १. आगे आनेवाला। सामने आनेवाला। आँखें मिलानेवाला। २. मुकाबला करने या भिड़नेवाला। ३. जो अनुकूल हो। ४. ठीक। उचित। उपयुक्त। ५. अभिमुख। प्रवृत्त [को०]।

सम्मुखी—संज्ञा पुं० [सं० सम्मुखिन्] १. वह जो सामने हो। २. वह जिसमें मुख देखा जाय। दर्पण। मुकुर। आइना।

सम्मुखीन वि० [सं०] जो संमुख हो। सामने का। दे० 'सम्मुख'।

सम्मुग्ध—वि० [सं०] १. जो रास्ते से भटक गया हो। रास्ता भूला हुआ। पथभ्रष्ट। २. बौखलाया या घबड़ाया हुआ। जिसने भली भाँति न समझा हो। साफ साफ न समझा हुआ। ३. सलोना। सुंदर [को०]।

सम्मूढ़—वि० [सं० सम्मूढ] १. मोहयुक्त। मुग्ध। २. निर्बोध। अज्ञान। ३. टूटा हुआ। भग्न। ४. ढेर लगाया हुआ। ५. किंकर्तव्यमूढ़। व्याकुल। घबड़ाया हुआ (को०)। ६. अस्त-व्यस्त। अव्यवस्थित (को०)। ७. तीव्रता से उत्पन्न (को०)।

सम्मूढ़चेता—वि० [सं० सम्मूढचेतस्] हतबुद्धि। हक्का बक्का।

सम्मूढ़ पोड़िका—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्मूढपीडिका] एक प्रकार का शुक्र रोग।

विशेष—इस रोग में लिंग टेढ़ा हो जाता है और उसपर फुंसियाँ निकल आती हैं। कहते हैं कि वायु के कुपित होने से इसकी उत्पत्ति होती है।

सम्मूढा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की पहेली [को०]।

सम्मूर्छ—संज्ञा पुं० [सं०] घना होना। बढ़ना या फैलना [को०]।

सम्मूर्छज—संज्ञा पुं० [सं०] घास पात। तृण [को०]।

सम्मूर्छन—संज्ञा पुं० [सं० सम्मूर्च्छन] [वि० सम्मूर्छित] १. भली भाँति व्याप्त होने की क्रिया। अभिव्याप्ति। २. मोह। मूर्छा। बेहोशी। ३. वृद्धि। बढ़ती। ४. विस्तार। ५. घना होना। गाढ़ा होना। जम जाना (को०)। ६. उच्चता। ऊँचाई (को०)। ७. मिश्रण (को०)।

सम्मूर्छनोद्भव—संज्ञा पुं० [सं० सम्मूर्च्छनोद्भव] मछली, नक्र आदि जलजंतु [को०]।

सम्मूर्छित—वि० [सं० सम्मूर्च्छित] १. चेतनाहीन। बेहोश। २. घनीभूत। गाढ़ा। ३. मिलाया हुआ। मिश्रित [को०]।

सम्मृत—वि० [सं०] जिसमें बिलकुल जान न हो। बेजान। मृत [को०]।

सम्मृष्ट—वि० [सं०] १. जिसका संशोधन भली भाँति हुआ हो। २. अच्छी तरह साफ किया हुआ। ३. भली भाँति झाड़ा बुहारा हुआ।

सम्मेघ—संज्ञा पुं० [सं०] वह मौसम जिसमें बादल घिर आए हों। घिरी घटाओं वाला दिन। मेघाच्छन्न दिन [को०]।

सम्मेत, सम्मेद—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

सम्मेलन—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्यों का किसी निमित्त एकत्र हुआ समाज। २. जमावड़ा। जमघट। ३. मेल। मिलाप। संगम। ४. मिश्रण (को०)।

सम्मोचित—वि० [सं०] छोड़ा हुआ। मुक्त [को०]।

सम्मोद—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रीति। प्रेम। २. हर्ष। प्रसन्नता। आनंद। ३. सुगंध। महक (को०)।

सम्मोदिक—संज्ञा पुं० [सं०] साथी। सहचर [को०]।

सम्मोह—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोह। प्रेम। २. भ्रम। संदेह। ३ मूर्च्छा। बेहोशी। ४. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक गुरु होता है। ५. घबराहट। अव्यवस्था (को०)। ६. अज्ञान। मूर्खता (को०)। ८. आकर्षण। वशीकरण (को०)। ९. संग्राम। कोलाहल (को०)। १०. ज्योतिष में एक विशेष ग्रह योग (को०)।

सम्मोहक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो मोह लेता हो। मोहक। लुभावना। २. एक प्रकार का सन्निपात ज्वर, जिसमें वायु अति प्रबल होती है। इसके कारण शरीर में वेदना, कंप, निद्रानाश आदि होता है। ३. अचेत करनेवाला। संज्ञाहीन करनेवाला (को०)।

सम्मोहन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोहित करने की क्रिया। मुग्ध करना। २. वह जिसमें मोह उत्पन्न होता हो। मोहकारक। ३. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु को मोहित कर लेते थे। ४. कामदेव के पाँच बाणों में एक बाण का नाम।

सम्मोहन[2]—वि० दे० 'सम्मोहक'।

सम्मोहनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] माया [को०]।

सम्मोहित—वि० [सं०] १. वशीभूत। वश में किया हुआ। २. घबड़ाया हुआ। ३. पथभ्रष्ट। हतबुद्धि। ४. अचेत किया हुआ। बेहोश (को०)।

सम्यक्[1]—संज्ञा पुं० [सं०] समुदाय। समूह।

सम्यक्[2]—वि० १. पूरा। समस्त। सब। २. साथ जाने या रहनेवाला (को०)। ३. सही। युक्त। ठीक। उचित (को०)। ४. शुद्ध। सत्य। यथार्थ (को०)। ५. सुहावना। रुचिकर (को०)। ६. एकरूप (को०)।

सम्यक्[3]—क्रि० वि० १. सब प्रकार से। २. अच्छी तरह। भलीभाँति। उचित रूप से। सही ढंग से। ३. स्पष्ट रूप से (को०) ४. सम्मानपूर्वक। ससम्मान (को०)। ५. यथार्थतः। वस्तुतः। सचमुच (को०)।

सम्यक्कर्मांत—संज्ञा पुं० [सं० सम्यक्कर्मान्त] सत्कार्य। अच्छा काम। सत्कर्म [को०]।

सम्यक्चारित्र—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के अनुसार धर्मत्रय में से एक धर्म। बहुत ही धर्म तथा शुद्धतापूर्वक आचरण करना।

सम्यक्ज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के धर्मत्रय में से एक। न्यायप्रमाण द्वारा प्रतिष्ठित सात या नौ तत्वों का ठीक ठीक और पूरा ज्ञान।

सम्यक् दर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के अनुसार धर्मत्रय में से एक। रत्नत्रय, सातो तत्वों और आत्मा आदि में पूरी पूरी श्रद्धा होना।

सम्यक्दर्शी—संज्ञा पुं० [सं० सम्यक्दर्शिन्] वह जिसे सम्यक्दर्शन प्राप्त हो।

सम्यक्दृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सम्यक्दर्शन' [को०]।

सम्यक्वृत्त—संज्ञा स्त्री० [सं०] कर्तव्य का ठीक ठीक पालन। अनवरत अभ्यास या उद्योग [को०]।

सम्यक्पाठ—संज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध उच्चारण। ठीक ठीक पढ़ना [को०]।

सम्यक्प्रणिधान—संज्ञा पुं० [सं०] प्रगाढ़ समाधि [को०]।

सम्यक्प्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] उचित या उपयुक्त उपयोग। ठीक प्रयोग करना [को०]।

सम्यक्प्रवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रियों की उचित प्रवृत्ति [को०]।

सम्यक्प्रहाण—संज्ञा पुं० [सं०] ठीक प्रयत्न। उचित चेष्टा। (बौद्ध)।

सम्यक्श्रद्धान—संज्ञा पुं० [सं०] ठीक विश्वास। उचित श्रद्धा [को०]।

सम्यक् संबुद्ध—संज्ञा पुं० [सं० सम्यक् सम्बुद्ध] [संज्ञा स्त्री० सम्यक् संबुद्धि] १. वह जिसे सब बातों का पूरा और ठीक ज्ञान प्राप्त हो। २. बुद्ध का एक नाम।

सम्यक्संबोध—संज्ञा पुं० [सं० सम्यक् सम्बोध] एक बुद्ध का नाम।

सम्यक्समाधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

सम्यक्स्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] साथ साथ रहने की स्थिति।

सम्यक्स्मृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] ठीक ठीक स्मरण। सही स्मृति [को०]।

सम्यगवबोध—संज्ञा पुं० [सं०] उचित बोध। ठीक ज्ञान। सही समझ [को०]।

सम्यगाजीव—संज्ञा पुं० [सं०] उचित रहन सहन।

सम्याना पु—संज्ञा पुं० [फ़ा० शामियाना] दे० 'शामियाना'।

सम्यीची—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रशंसा। स्तुति। २. हरिनी। मृगी [को०]।

सम्रथ(पु)—वि० [सं० समर्थ, हिं० समरथ] दे० 'समर्थ'।

सम्राज्ञी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सम्राट् की पत्नी। २. साम्राज्य की अधीश्वरी।

सम्राट्—संज्ञा पुं० [सं० सम्राज्] वह बहुत बड़ा राजा जिसके अधीन बहुत से राजा महाराज आदि हों और जिसने राजसूय यज्ञ भी किया हो। महाराजाधिराज। शाहंशाह।

सम्हरना, सम्हलना†—क्रि० अ० [हिं० सँभलना] दे० 'सँभलना'।

सम्हार, सम्हाल†—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्भार] दे० 'सँभाल'।

सम्हारना, सम्हालना†—क्रि० स० [सं० सम्भार] दे० 'सँभालना'। उ०—(क) हीरा जनम दियौ प्रभु हमकौं दीनी बात सम्हार।—सूर०, १।१९६। (ख) आनँद उर अंचल न सम्हारति सीस सुमन बरषावति।—सूर०, १०।२३।

सय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शत, प्रा० सय] दे० 'शत'। उ०—दिन दिन सय गुन भूपति भाऊ। देखि सराह महा मुनिराऊ।—मानस, १।३६०।

यौ०—सयगुन = सौगुना।

सयन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। २. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

सयन²—संज्ञा पुं० [सं० शयन] १. शयन करने का आसन। बिस्तर। उ०—निज कर राजीवनयन पल्लव-दल रचित सयन प्यास परस्पर पियूष प्रेम पान की।—तुलसी (शब्द०)। २. लेटने की क्रिया। सोने की क्रिया। उ०—सयन करहु निज निज गृह जाई।—मानस, ६।१४।

सयन(पु)³—संज्ञा स्त्री० [सं० सैन्य] सेना। वाहिनी। सैन्य। उ०—तट कालिंद्री तहँ बिमल करि मुकाम नृपराज। सथ्थ सयन सामंत भर सूर जु आए साज।—पृ० रा०, ६१।१३५।

सयल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शैल] पर्वत। शिखर। दे० 'शैल'। उ०—गहि सयल तेहि गढ़ पर चलावहि जहँ सो तहँ निसिचर हुए।—मानस, ६।४८।

सयान(पु)¹—संज्ञा पुं० [हिं०सयानापन] दे० 'सयानापन'। उ०—आई गौने कालि ही, सीखी कहा सयान। अब ही तैं रूसन लगी, अब ही तैं पछितान।—मतिराम (शब्द०)।

सयान²—वि० [सं० सज्ञान] ज्ञानवान्। कुशल। चतुर। जिसे जानकारी हो। चालाक। उ०—सोइ सयान जो परधन हारी। जो कर दंभ सो बड़ आचारी।—मानस, ७।१८।

यौ०—सयानपन = चतुरता या चालाकी।

सयानप(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सयान + प (प्रत्य०)] दे० 'सयानापन'। उ०—(क) हरि तुम बलि को छलि कहा लीन्यौ। बाँधन गए बँधाए आपुन कौन सयानप कीन्यौ।—सूर०, ८।१५। (ख) अति सूधो सनेह को मारग है जहँ नेंकु सयानप बाँक नहीं।—घनानंद, पृ० ८६।

सयानपत(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सयान + पत (प्रत्य०)] चालाकी। धूर्तता।

सयानपन—संज्ञा पुं० [हिं० सयान + पन (प्रत्य०)] १. सयाना होने का भाव। २. चतुरता। बुद्धिमानी। होशियारी। ३. चालाकी। धूर्तता।

सयाना¹—वि० [सं० सज्ञान] [वि० स्त्री० सयानी] १. अधिक अवस्थावाला। वयस्क। जैसे,—अब तुम लड़के नहीं हो; सयाने हुए। उ०—भली बुद्धि तेरैं जिय उपजी, बड़ी बैस अब भई सयानी।—सूर०, १०।३६५। २. बुद्धिमान्। चतुर। होशियार। उ०—और काहि बिधि करौं तुमहिं तैं कौन सयानो।—सूर०, १०।४९२। ३. चालाक। धूर्त।

सयाना²—संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा बूढ़ा। वृद्ध पुरुष। २. वह जो झाड़-फूँक करता हो। जंतर मंतर करनेवाला। ओझा। ३. चिकित्सक। हकीम। ४. गाँव का मुखिया। नंबरदार।

सयानाचारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सयाना + चार (प्रत्य०)] वह रसूम जो गाँव के मुखिया को मिलता है।

सयावक—वि० [सं०] लाक्षारंजित। जावकयुत [को०]।

सयूथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो समान समूह, श्रेणी या वर्ग का हो [को०]।

सयोग—संज्ञा पुं० [सं०] मेल। मिलाप। संयोग। संगम [को०]।

सयोनि¹—वि० [सं०] १. जो एक ही योनि से उत्पन्न हुए हों। २. एक ही जाति या वर्ग आदि के।

सयोनि²—संज्ञा पुं० १. इंद्र का एक नाम। २. सहोदर भ्राता। सगा भाई (को०)। ३. सुपारी आदि काटने का सरौता (को०)।

सयोनिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सयोनि होने का भाव या धर्म।

सयोनीय पथ—संज्ञा पुं० [सं०] खेतों में जानेवाला मार्ग।

सयोषण—वि० [सं०] स्त्रियों से युक्त। स्त्रियों के साथ [को०]।

सरंग¹—संज्ञा पुं० [सं० सरङ्ग] १. चौपाया। चतुष्पद जंतु। २. चिड़िया। पक्षी। ३. एक प्रकार का मृग। सारंग [को०]।

सरंग²—वि० १. अनुनासिक युक्त। सानुनासिक। २. वर्ण या रंगयुक्त। रंगीन [को०]।

सरंजाम—संज्ञा पुं० [फ़ा०] दे० 'सरअंजाम'।

सरंड—संज्ञा पुं० [सं० सरण्ड] १. पक्षी। चिड़िया। २. कामुक या लंपट व्यक्ति। ३. कृकलास। ४. धूर्त या खल व्यक्ति। ५. एक प्रकार का आभूषण [को०]।

सरंडर—वि० [अं० सरंडर्ड] जिसने अपने को दूसरे के हवाले किया हो। जिसने दूसरे के संमुख आत्मसमर्पण किया हो। उपस्थित। हाजिर। जैसे,—उनपर गिरफ्तारी का वारंट था; सोमवार को अदालत में सरंडर हो गए।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सर¹—संज्ञा पुं० [सं० सरस्] १. बड़ा जलाशय। ताल। तालाब। २. गमन। गति (को०)। ३. तीर। बाण। उ०—सत सत सर मारे दस भाला।—मानस, ६।८२। ४. जमा हुआ दूध। दही का चक्का (को०)। ५. नमक (को०)। ६. लड़ी। हार। माला (को०)। ७. झरना। जलप्रपात

८. जल। सलिल (को०)। ९. वायु (को०)। १०. छंद में लघु मात्रा (को०)।

सर[२]—वि० १. गतिशील। गमनशील। २. रेचन करनेवाला। रेचक।

सर(पु)†[३]—संज्ञा पुं० [सं० शर] दे० 'शर'। उ०—कागज गरे मेघ मसि खूटी सर दौ लागि जरे। सेवक सूर लिखैं ते आधौ पलक कपाट अरे।—सूर (शब्द०)।

सर[४]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सिर। २. सिरा। चोटी। उच्च स्थान।

यौ०—सरअंजाम। सरपरस्त। सरपंच। सरदार। सरहद।

मुहा०—सर करना = बंदूक छोड़ना। फायर करना।

३. प्रेम। स्नेह। प्रीति (को०)। ४. इरादा। इच्छा। विचार (को०)। ५. श्रेष्ठ। उत्तम (को०)।

सर[५]—वि० दमन किया हुआ। जीता हुआ। पराजित। अभिभूत।

मुहा०—सर करना = (१) जीतना। वश में लाना। दबाना। (२) खेल में हराना।

सर[६]—संज्ञा पुं० [अं०] एक बड़ी उपाधि जो अँगरेजी सरकार देती है।

सर(पु)[७]—संज्ञा स्त्री० [सं० शर] चिता। उ०—पाएउँ नहिं होइ जोगी जती। अब सर चढ़ौं जरों जस सती।—जायसी (शब्द०)।

सर अंजाम—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सामान। सामग्री। असबाब। २. प्रबंध। बंदोबस्त (को०)। ३. अंत। पूर्ति। समाप्ति। ४. परिणाम। फल। नतीजा (को०)।

सरई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरहरी] दे० 'सरहरी'।

सरकंडा—संज्ञा पुं० [सं० शरकाण्ड] सरपत की जाति का एक पौधा जिसमें गाँठवाली छड़ें होती हैं।

सरक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सरकने की क्रिया। खिसकना। चलना। २. मद्यपात्र। शराब का प्याला। ३. गुड़ की बनी शराब। ४. मद्यपान। शराब पीना। ५. यात्रियों का दल। कारवाँ। ६. शराब का खुमार। उ०—बय अनुहरत बिभूषन बिचित्र अंग जोहे जिय अति सनेह की सरक सी।—तुलसी (शब्द०)। ७. तालाब। सरोवर। तीर्थ (को०)। ८. आकाश। स्वर्ग (को०)। ९. राजपथ की अटूट पंक्ति। १०. मोती। मुक्ता (को०)।

सरकना—क्रि० अ० [सं० सरक, सरण] १. जमीन से लगे हुए किसी ओर धीरे से बढ़ना। किसी तरफ हटना। खिसकना। जैसे,—थोड़ा पीछे सरको। २. नियत काल से और आगे जाना। टलना। जैसे,—विवाह सरकना। ३. काम चलना। निर्वाह होना। जैसे,—काम सरकना।

संयो० क्रि०—जाना।

सरकफूँदा—संज्ञा पुं० [हिं० सरकना + फंदा] सरकनेवाला फंदा। दे० 'सरकवाँसी'।

सरकर्दा—वि० [फ़ा० सरकर्दह्] अगुआ। मुखिया। नेता [को०]।

सरकवाँसी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरकना + सं० पाश, पाशक] एक प्रकार का सरकनेवाला फंदा जो किसी चीज में डालकर खींचने से सरक कर उसे जकड़ लेता है।

सरकश—वि० [फ़ा०] १. उद्धत। उद्दंड। अक्खड़। २. शासन न माननेवाला। विरोध में सिर उठनेवाला। ३. शरारती।

सरकशी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. उद्दंडता। औद्धत्य। २. नटखटी। शरारत।

सरका[१]—संज्ञा पुं० [अ० सरक़ा] चोरी [को०]।

सरका(पु)[२]—संज्ञा पुं० [सं० सरक (= गगन)] आकाश।

मुहा०—सरका कूटना = (१) गगन मंडल में बिहार करना। समाधिस्थ होना। लौ लगाना। (२)† हस्तमैथुन करना (बाजारू)।

सरकार—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] [वि० सरकारी] १. प्रधान। अधिपति। मालिक। शासक। प्रभु। २. राज्य। राज्य संस्था। शासन-सत्ता। गवर्नमेंट। ३. राज्य। रियासत। जैसे,—निजाम सरकार। ४. न्यायालय। न्यायपीठ (को०)। ५. राजदरबार। राजसभा (को०)। ६. बड़े व्यक्तियों के लिये संबोधन का शब्द (को०)।

सरकारी—वि० [फ़ा०] १. सरकार का। मालिक का। २. राज्य का। राजकीय। जैसे,—सरकारी इंतजाम, सरकारी कागज।

यौ०—सरकारी अहलकार = राज्य का कर्मचारी। सरकार का मुलाजिम। सरकारी कागज = (१) राज्य के दफ्तर का कागज। (२) प्रामिसरी नोट। जैसे,—उसके पास डेढ़ लाख रुपयों के सरकारी कागज हैं। सरकारी साँड = (१) लंपट। धूर्त। मक्कार। (लाक्ष०)। (२) गाय बैलों को नस्ल सुधारने के लिये रखा हुआ अच्छी जाति का साँड़।

सरखत—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरख़त] १. वह कागज या दस्तावेज जिस-पर मकान आदि किराए पर दिए जाने की शर्तें होती हैं। २. तनखाह आदि के हिसाब का कागज (को०)। ३. दिए और चुकाए हुए ऋण का ब्योरा। उ०—आयसु भो लोकनि सिधारे लोकपाल सबै तुलसी निहाल कै कै दियो सरख(ष)तु है।—तुलसी ग्रं०, पृ० १९८।

सरग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग] १. दे० 'स्वर्ग'। उ०—(क) मूल पताल सरग ओहि साखा। अमर बेलि को पाय को चाखा।—जायसी (शब्द०)। (ख) धरनि धामु धनु पुर परिवारू। सरगु नरकु जहँ लगि व्यवहारू।—मानस, २।९२। २. आकाश। व्योम। उ०—का घूँघट मुख मूँदहु नवला नारि। चाँद सरग पर सोहत एहि अनुहारि।—तुलसी ग्रं०, पृ० २०।

यौ०—सरगतरु = स्वर्गतरु। आकाश वृक्ष। उ०—पात पात को सीचिबो न करु सरग तरु हेत।—तुलसी ग्रं०, पृ० १४०।

सरगना[१]—क्रि० अ० [देश०] डींग मारना। शेखी बघारना। बढ़ चढ़ कर बातें करना।

सरगना[२]—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरग़नह्] मुखिया। सरदार। अगुवा। जैसे,—चोरों का सरगना।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्रायः बुरे अर्थ में ही होता है।

सरगपताली[१]—वि० [सं० स्वर्ग, हिं० सरग + सं० पातालीय] जिसका एक अंग ऊपर और एक नीचे की ओर हो। तिरछा। बाँका।

सरगपताली[२]—संज्ञा पुं० १. वह बैल जिसका एक सींग ऊपर और दूसरा नीचे की ओर झुका हो। २. ऐंची आँखोंवाला।

सरगम—संज्ञा पुं० [हिं० सा, रे, ग, म] संगीत में सात स्वरों के चढ़ाव उतार का क्रम। स्वर ग्राम।

सरगर्दानी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] परेशानी। हैरानी। दिक्कत।

सरगर्म—वि० [फ़ा०] १. जोशीला। आवेशपूर्ण। २. उमंग से भरा हुआ। उत्साही। कटिबद्ध। ३. तन्मय। तल्लीन (को०)।

सरगर्मी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. जोश। आवेश। २. उमंग। उत्साह। ३. तन्मयता। संलग्नता।

सरगही†—संज्ञा स्त्री० [अ० सहर + फ़ा० गह] व्रत के दिनों में पूर्व-रात्रि के उत्तरार्ध का खाना। दे० 'सहरगही'।

सरगुन(पु)—वि० [सं० सगुण] गुणयुक्त। दे० 'सगुण'। 'निरगुन' का विलोम।

सरगुनिया—वि० [हिं० सरगुन + इया (प्रत्य०)] सगुणोपासक। वह जो सगुण की उपासना करता हो। 'निरगुनिया' का विलोम या उलटा।

सरघा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मधुमक्खी।

सरज—संज्ञा पुं० [सं०] १. शुद्ध नवनीत। ताजा मक्खन। २. वह जो धूलियुक्त हो [को०]।

सरजनहार(पु)—वि० [हिं० सरजना + हार (प्रत्य०)] निर्माता। रचयिता। उ०—आपै आप करत विचारा। को हमको सरजनहारा।—रामानंद०, पृ० ११।

सरजना(पु)—क्रि० स० [सं० सृजन] १. सृष्टि करना। २. रचना। बनाना।

सरजमीन—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सरज़मीं] १. पृथ्वी। जमीन। २. देश। मुल्क। सल्तनत [को०]।

सरजसा, सरजस्का—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋतुमती स्त्री। रजस्वला स्त्री [को०]।

सरजा[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सरजस्] ऋतुमती स्त्री [को०]।

सरजा[२]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शरजाह (= उच्च पदवाला); अ० शरजह् (= सिंह)] १. श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदार। २. सिंह। उ०—सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।—भूषण (शब्द०)।

सरजीव(पु)—वि० [सं० सजीव] जो जीवयुक्त हो। निर्जीव का विलोम या उलटा।

सरजीवन†—वि० [सं० सञ्जीवन] १. संजीवन। जिलानेवाला। २. हराभरा। उपजाऊ।

सरजोर—वि० [फ़ा० सरज़ोर] १. जबरदस्त। २. उद्दंड। दुर्दमनीय। सरकश।

सरजोरी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सरज़ोरी] १. जबरदस्ती। २. उद्दंडता।

सरजोश—वि० [फ़ा०] जो पहले जोश में उतारा जाय। सार। सत [को०]।

सरट्—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। हवा। २. मेघ। बादल। ३. गिरगिट। कृकलास। ४. मधुमक्खी। ५. डोरा। सूत [को०]।

सरट—संज्ञा पुं० [सं०] १, छिपकली। २. गिरगिट। ३. वायु।

सरटि—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २. हवा। वायु [को०]।

सरटु—संज्ञा पुं० [सं०] कृकलास। गिरगिट [को०]।

सरण[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. धीरे धीरे हटना या चलना। आगे बढ़ना। सरकना। खिसकना। २. तीव्र गति से चलना। शीघ्र गमन (को०)। ३. स्थानांतर। गमन (को०)। ४. लोहे का मोर्चा। लौहकिट्ट (को०)।

सरण[२]—वि० १. गतिशील। गतिमय। २. बहनेवाला [को०]।

यौ०—सरणमार्ग = जाने का रास्ता।

सरणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लता [को०]।

सरणि, सरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मार्ग। रास्ता। २. पगडंडी। ढुर्री। ३. लगातार और सीधी पंक्ति, रेखा या लकीर। ४. ढर्रा। विधि। व्यवस्था (को०)। ५. कंठ का एक रोग (को०)। ६. एक लता। गंध प्रसारणी (को०)।

सरण्यु—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। हवा। २. मेघ। ३. जल। पानी। ४. वसंत ऋतु। यमराज। ६. अग्नि [को०]।

सरत्—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूत। तागा। धागा। २. वह जो गतिशील हो [को०]।

सरतराश—संज्ञा पुं० [फ़ा०] नाई। नापित। क्षौरकार [को०]।

सरतराशी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] क्षौर कर्म। नाई का काम [को०]।

सरताज—वि० [फ़ा०] १. शिरोमणि। सबसे श्रेष्ठ। २. सरदार। नायक। सिरताज [को०]।

सरतान—संज्ञा पुं० [अ०] १. केकड़ा। कर्कट। २. कर्क राशि। ३. दूषित व्रण [को०]।

सरता बरता—संज्ञा पुं० [सं० बर्तन, हिं० बरतना + अनु० सरतना] बाँटा। बँटाई।

मुहा०—सरता बरता करना = आपस में काम चला लेना।

सरतारा(पु)—वि० [?] निश्चित। सावकाश।

सरत्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की हाथ की माप [को०]।

सरथ[१]—वि० [सं०] रथपर चढ़ा हुआ। रथयुक्त [को०]।

सरथ[२]—संज्ञा पुं० [सं०] रथारोही सैनिक [को०]।

सरद[१]—वि० [फ़ा० सर्द] दे० 'सर्द'।

सरद(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शरत्] शरद ऋतु। उ०—(क) सरद रात मालति सघन फूलि रही बन बास।—पृ० रा०, २।३६०। (ख) कंत दुसह दारुन सरद।—पृ० रा०, ६१।४२।

सरदई—वि० [फ़ा० सरदह्] सरदे के रंग का। हरापन लिए पीला।

सरदर—क्रि० वि० [फ़ा० सर + दर (= भाव)] १. एक सिरे से। २. सब एक साथ मिला कर। औसत में।

सरदर्द—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. शिरोवेदना। सिर का दर्द। २. कष्ट। झमेला। झंझट। जंजाल [को०]।

सरदल¹—संज्ञा पुं० [देश०] दरवाजे का बाजू या साह।

सरदल²—क्रि० वि० [फ़ा० सरदर] दे० 'सरदर'।

सरदा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर्दह्] एक प्रकार का बहुत बढ़िया खरबूजा जो काबुल से आता है।

सरदार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. किसी मंडली का नायक। अगुवा। श्रेष्ठ व्यक्ति। २. किसी प्रदेश का शासक। ३. अमीर। रईस। ४. वेश्याओं की परिभाषा में वह व्यक्ति जिसका किसी वेश्या से संबंध हो। ५. वह जो सिख संप्रदाय को मानता हो। सिखों की उपाधि।

सरदार तंत्र—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरदार+सं० तन्त्र] एक प्रकार की सरकार जिसमें राजसत्ता या शासनसूत्र सरदारों, बड़े बड़े ताल्लुकदारों या ऐश्वर्यशाली नागरिकों के हाथ में रहता है। कुलीन तंत्र। अभिजात तंत्र। कुलतंत्र। दे० 'ऐरिस्टोक्रैसी'।

सरदारनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरदार] प्रतिष्ठित सिख महिला। सरदार की पत्नी।

सरदारी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सरदार का भाव। अध्यक्षता। स्वामित्व।

सरदाला—संज्ञा स्त्री० [देश०] उत्तरी भारत की रेतीली भूमि में होनेवाली एक प्रकार की बारहमासी घास जो चौरे के लिये अच्छी समझी जाती है। बादरी।

सरद्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] १. गौतम ऋषि। २. गौतम ऋषि के एक पुत्र का नाम [को०]।

सरधन(पु)—वि० [सं० सधन] धनी। अमीर। निर्धन का विपरीत वाचक।

सरधाँकी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा जो प्रायः रेतीली भूमि में होता है। यह वर्षा और शरद् ऋतु में फूलता है। इसका व्यवहार औषधि के रूप में होता है।

सरधा(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रद्धा] दे० 'श्रद्धा'।

सरधौंकी—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सरधाँकी'।

सरन(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [सं० शरण] दे० 'शरण'। उ०—अब आयौ हौं सरन तिहारी ज्यों जानौ त्यौं तारौ।—सूर०, १।१७८।

सरनगत(पु)—वि० [सं० शरणागत] शरण में गया हुआ। जो शरणागत हो।—उ० सूरदास गोपाल सरनगत भएँ न को गति पावत।—सूर०, १।१८१।

सरनदीप—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण द्वीप या सिंहल द्वीप] लंका का एक प्राचीन नाम जो अरबवालों में प्रसिद्ध था। उ०—दिया दीप नहिं तम उँजियारा। सरनदीप सरि होइ न पारा।—जायसी (शब्द०)।

सरनविश्त—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. भाग्यलिपि। २. हालचाल। वृत्तांत। खबर [को०]।

सरना¹—क्रि० अ० [सं० सरण (=चलना, सरकना)] १. चलना। सरकना। खिसकना। २. हिलना। डोलना। ३. काम चलना। पूरा पड़ना। जैसे,—इतने में काम नहीं सरेगा। ४. संपादित होना। किया जाना। निबटना। जैसे,—काम सरना। ५. निर्वाह होना। गुजारा होना। निभना। ६. दे० 'सड़ना'। ७. खत्म होना। बीत जाना। समाप्त होना। उ०—बीतैं जाम बोलि तब आयौ, सुनहु कंस तव आइ सरयौ।—सूर०, १०।५६।

सरनाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शरण] शरण। आश्रय। रक्षा। उ०—(क) जौ सभीत आवा सरनाई।—मानस, ६।४४। (ख) सूर कुटिल राखौ सरनाई इहि व्याकुल कलिकाल।—सूर०, १।२०१।

सरनागत—वि० [सं० शरणागत] दे० 'शरणागत'। उ०—सरनागत कहु जे तजहिं निज अनहित अनुमानि।—मानस, ६।४३।

यौ०—सरनागतबच्छल = दे० 'शरणागतवत्सल'। उ०—सरनागत बच्छल भगवाना।—मानस, ६।४३।

सरनाम—वि० [फ़ा०] जिसका नाम हो। प्रसिद्ध। मशहूर। विख्यात। उ०—तुलसी सरनाम गुलाम है राम को जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।—तुलसी ग्रं०, पृ० २२३।

सरनामा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरनामह्; तुल सं० शिरोनाम] १. किसी लेख या विषय का निर्देश जो ऊपर लिखा रहता है। शीर्षक। २. पत्र का आरंभ या संबोधन। ३. पत्र आदि पर लिखा जानेवाला पता।

सरनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरणि] दे० 'सरणी'। उ०—ब्रज जुवती सब देखि थकित भईं सुंदरता की सरनी।—सूर०, १०।१२३।

सरपंच—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर+हिं० पंच] पंचों में बड़ा व्यक्ति। पंचायत का सभापति।

सरपंजर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शरपञ्जर] बाणों का घेरा। सरपिंजर। उ०—अवघट घाट बाट गिरिकंदर। मायाबल कीन्हेसि सरपंजर।—मानस, ६।७२।

सरप(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सर्प] साँप।

सरपट¹—क्रि० वि० [सं० सपर्ण] तीव्रगति से। सरपट चाल से।

क्रि० प्र०—छोड़ना।—डालना।—दौड़ना।—फेंकना।

सरपट²—संज्ञा स्त्री० घोड़े की बहुत तेज दौड़ जिसमें वह दोनों अगले पैर साथ साथ आगे फेंकता है।

सरपट³—वि० समथर। चौरस। सपाट।

सरपत—संज्ञा पुं० [सं० शरपत्र] कुश की तरह की एक घास।

विशेष—इसमें टहनियाँ नहीं होतीं बहुत पतली (आधे जौ भर) और हाथ दो हाथ लंबी पत्तियाँ ही मध्य भाग से निकलकर चारों ओर घनी फैली रहती हैं। इसके बीच से पतली छड़ निकलती है जिसमें फूल लगते हैं। यह घास छप्पर आदि छाने के काम में आती है।

सरपरस्त—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. रक्षा करनेवाला। २. श्रेष्ठ पुरुष। ३. अभिभावक। संरक्षक।

सरपरस्ती—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. संरक्षा। २. अभिभावकता।

सरपिंजर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शरपिञ्जर] बाणों का पिंजड़ा। बाणों का घेरा। उ०—अर्जुन तब सरपिंजर कियौ। पवन सँचार रहन नहिं दियौ।—सूर०, १०।४३०६।

सरपि, सरपी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सर्पिष] घी। उ०—सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत।—मानस, १।३२८।

सरपेंच, सरपेच—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना। २. दो ढाई अंगुल चौड़ा गोटा।

सरपोश—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. थाल या तस्तरी ढकने का कपड़ा। २. गुप्त वस्तु या रहस्य (लाक्ष०)।

सरफर—वि० [सं० सर (=गतिशील)+हिं० फर्र] तेज। त्वरायुक्त। आनन फानन में करनेवाला।

सरफराज—वि० [फ़ा० सर फ़राज़] १. उच्च पदस्थ। बड़ाई को पहुँचा हुआ। महत्वप्राप्त। २. अभिमानी। घमंडी। गर्वी। ३. धन्य। कृतार्थ।

मुहा०—सरफराज करना=वेश्या के साथ प्रथम समागम करना। (बाजारू)।

सरफराना—क्रि० अ० [हिं० सरफर] तड़फड़ाना। व्यग्र होना।

सरफरोश—वि० [फ़ा० सरफ़रोशी] जो जान देने के लिये तैयार हो। जो किसी खातिर अपना सर कटाने को सन्नद्ध हो।

सरफरोशी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सरफ़रोशी] १. जान देने या बलिदान होने को तैयार रहना। २. वीरत्व।

सरफा—संज्ञा पुं० [अ० सर्फ़ह्] व्यय। खर्च। सर्फा।

सरफूँदा†—संज्ञा पुं० [हिं० सर+फंदा] दे० 'सरकवाँसी'।

सरफोका—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सरकंडा'।

सरबंगी(पु)—वि० [सं० सर्वज्ञ] दे० 'सर्वज्ञ'। उ०—सूधी कहै सबन समुझावत हे साँचे सरबंगी।—सूर० (राधा०), २९९७।

सरबंधी—संज्ञा पुं० [सं० शरबन्ध] तीरंदाज। धनुर्धर।

सरब(पु)†—वि० [सं० सर्व] दे० 'सर्व'। उ०—एही दरबार है गरब ते सरब हानि, लाभ जोग छेम को गरीबी मिसकीनता।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५८९।

यौ०—सरबबियापी=सर्वव्यापी।

सरबग्य, सरबज्ञ(पु)—वि० [सं० सर्वज्ञ] दे० 'सर्वज्ञ'।—उ०—(क) अंतरजामी राम सिय तुम्ह सरबग्य सुजान।—मानस, २।२५६। (ख) सूर स्याम सरबज्ञ कृपानिधि करुना मृदुल हियौ।—सूर०, १।१२१।

सरबत्तर†, **सरबत्तरि**(पु)—अव्य० [सं० सर्वत्र] दे० 'सर्वत्र'।

सरबदा(पु)—अव्य० [सं० सर्वदा] दे० 'सर्वदा'।

सरबरा†—संज्ञा स्त्री० [हिं०] १. तुल्यता। बराबरी। समता। २. बढ़ बढ़ कर बोलना।

सरबरना—क्रि० स० [हिं० सरबर+ना (प्रत्य०)] बराबरी करना। समता देना। उपमा देना।

सरबराह—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. प्रबंधकर्ता। इंतजाम करनेवाला। कारिंदा। २. राज-मजदूरों आदि का सरदार।

सरबराहकार—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरबराह+कार] किसी कार्य का प्रबंध करनेवाला। कारिंदा।

सरबराहकारी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दे० 'सरबराही'।

सरबराही—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. प्रबंध। इंतजाम। २. माल असबाब की निगरानी। ३. सरबराह का पद या कार्य।

सरबस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सर्वस्व] दे० 'सर्वस्व'।

सरबसर—अव्य० [फ़ा०] एक दम ठीक। पूरा पूरा। बराबर।

सरबोर(पु)—वि० [सं० स्राव+हिं० बोर] दे० 'सराबोर'।

सरभक—संज्ञा पुं० [सं०] अन्न का एक कीड़ा [को०]।

सरभस—वि० [सं०] १. वेगवान। फुर्तीला। २. उग्र। प्रचंड। ३. क्रोधपूर्ण। ४. प्रसन्न [को०]।

सरम(पु)—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शर्म] लज्जा। हया।

सरमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं की एक कुतिया।

विशेष—ऋग्वेद में यह इंद्र की कुतिया और यमराज के चार आँखोंवाले कुत्तों की माता कही गई है। पणि लोग जब इंद्र की या आर्यों की गौएँ चुरा ले गए थे, तब यह उन्हें जाकर ढूँढ लाई थी। महाभारत में इसका उल्लेख देवशुनी के नाम से हुआ है। सरमा देवशुनी ऋग्वेद के एक मंत्र की द्रष्टा भी है।

२. कुतिया। ३. कश्यप की एक स्त्री का नाम। (अग्नि पु०)। ४. दक्ष की पुत्री का नाम (को०)। ५. विभीषण की स्त्री का नाम (को०)।

यौ०—सरमापुत्र, सरमासुत=सरमात्मज।

सरमात्मज—संज्ञा पुं० [सं०] देवशुनी सरमा के पुत्र।

सरमाया—संज्ञा पुं० [फ़ा०] पूँजी। मूलधन [को०]।

सरमायादार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] पूँजीपति। धनी व्यक्ति [को०]।

सरया—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मोटा धान जिसका चावल लाल होता है और जो कुवार में तैयार हो जाता है। सारो।

सरयु[१]—संज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा [को०]।

सरयु[२]—संज्ञा स्त्री० दे० 'सरयू'।

सरयू—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी जिसके किनारे पर प्राचीन अयोध्या नगरी बसी थी।

विशेष—ऋग्वेद में सरस्वती, सिंधु और गंगा आदि नदियों के साथ इसका भी नाम आया है।

सरर—संज्ञा पुं० [हिं० सरकंडा] बाँस या सरकंडे की पतली छड़ी जो ताना ठीक करने के लिये जुलाहे लगाते हैं। सथिया। सतगारा।

सरराना†—क्रि० अ० [अनु० सरसर] हवा बहने या हवा में किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द होना। उ०—धररान कूर लागे। तररान सूर आगे। चररान बाल उट्ठी। सररान तीर मुट्ठी।—सूदन (शब्द०)।

सरल[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सरला] १. जो सीधा चला गया हो। २. जो टेढ़ा न हो। सीधा। ३. जो कुटिल न हो। जो चालबाज न हो। निष्कपट। सीधा सादा। भोला भाला। ४. जिसका करना कठिन न हो। सहज। आसान। ५. सही। ठीक। तथ्य।

युक्त । सच्चा (को०) । ६. फैलाया हुआ । विस्तारित (को०) । ७. ईमानदार । सच्चा । असली ।

सरल[२]—संज्ञा पुं० १. चीड़ का पेड़ जिससे गंधाबिरोजा निकलता है । २. एक चिड़िया । ३. अग्नि । ४. एक बुद्ध का नाम । ५. साल का गोंद । गंधाबिरोजा । ६. गणित में समीकरण ।

सरलकद्रु—संज्ञा पुं० [सं०] चिरौंजी । पियाल वृक्ष ।

सरलकाष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] चीड़ की लकड़ी ।

सरलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. टेढ़ा न होने का भाव । सीधापन । २. निष्कपटता । सिधाई । ३. सुगमता । आसानी । ४. सादगी सादापन । भोलापन । ५. सत्यता । सच्चाई ।

सरलतृण—संज्ञा पुं० [सं०] भूतृण । गंधतृण ।

सरलद्रव—संज्ञा पुं० [सं०] १. गंधाबिरोजा । २. तारपीन का तेल । श्रीवेष्ठ ।

सरलनिर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] १. गंधाबिरोजा । २. तारपीन का तेल । श्रीवेष्ठ ।

सरलपुंठी—संज्ञा स्त्री० [सं० सरलपुण्ठी] पहिना मछली ।

सरलयायिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पौधा जिसका तना सीधा हो (को०) ।

सरलयायी—वि० [सं० सरलयायिन्] जो सीधा जानेवाला हो (को०) ।

सरलरका— संज्ञा स्त्री० [सं०] विकंकत । कँटाई ।

सरलरस– संज्ञा पुं० [सं०] १. गंधा बिरोजा । २. तारपीन का तेल ।

सरलस्यंद– संज्ञा पुं० [सं० सरलस्यन्द] १. गंधाबिरोजा । तारपीन का तेल ।

सरलांग—संज्ञा पुं० [सं० सरलाङ्ग] १. गंधाबिरोजा । २. तारपीन का तेल ।

सरला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चीड़ का पेड़ । २. काली तुलसी । कृष्ण तुलसी । ३. मल्लिका । मोतिया । ४ सफेद निसोथ ।

सरलित— वि० [सं०] सीधा या सहज किया हुआ ।

सरलीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्लिष्ट विषय को आसान या सुकर बनाना । २. किसी जटिल या कठिन भिन्न को संक्षिप्त करना ।

सरव[१]—वि० [सं०] रव या ध्वनियुक्त (को०) ।

सरव(पु)[२]—संज्ञा पुं० दे० 'सराव' ।

सरव(पु)[३]—संज्ञा पुं० [?] दे० 'सरौ' ।

सरवत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. धनाढ्यता । समृद्धि । २. ऐश आराम । भोग विलास (को०) ।

सरवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] वितस्ता नदी (को०) ।

सरवन[१]—संज्ञा पुं० [सं० श्रमण] अंधक मुनि के पुत्र जो अपने पिता को एक बहँगी में बैठाकर ढोया करते थे ।

विशेष—इनकी कथा रामायण के अयोध्या कांड में उस समय आई है जब दशरथ राम के बन जाने के शोक में प्राण त्याग कर रहे थे । दशरथ ने कौशल्या से अंधक मुनि के शाप की कथा इस प्रकार कही थी—एक बार दशरथ ने जंगली हाथी के धोखे में सरयू नदी के किनारे जल लेते हुए एक तापस कुमार पर बाण चला दिया । जब वे पास गए, तब तापस कुमार ने बतलाया कि मैं अपने अंधे माता पिता को एक जगह रख उनके लिये पानी लेने आया था । जब तापसकुमार मर गया तब राजा दशरथ शोक करते हुए अंधक मुनि के पास गए और सब वृत्तांत कह सुनाया । मुनि ने शाप दिया कि जिस प्रकार मैं पुत्र के शोक से प्राणत्याग कर रहा हूँ, उसी प्रकार तुम भी प्राणत्याग करोगे । ठीक यही कथा बौद्धों के 'शाम जातक' में भी है । केवल दशरथ का नाम नहीं है और ऊपर से इतना और जोड़ा गया है कि अंधे मुनि ने जब बुद्ध भगवान् और धर्म की दुहाई दी, एक देवी ने प्रकट होकर तापसकुमार को जिला दिया । सरवन की पितृभक्ति के गीत गानेवाले भिक्षुकों का एक संप्रदाय अब भी अवध तथा उसके आसपास के प्रदेशों में पाया जाता है । जान पड़ता है कि यह संप्रदाय पहले बौद्ध भिक्षुओं का ही एक दल था, जैसा कि 'सरवन' या श्रमण नाम से स्पष्ट प्रतीत होता है । बाल्मीकि रामायण में केवल तापसकुमार कहा गया है, कोई नाम नहीं आया है ।

सरवन(पु)‡[२]—संज्ञा पुं० [सं० श्रवण] दे० 'श्रवण' ।

सरवनी(पु)†— संज्ञा स्त्री० [सं० स्मरण] दे० 'सुमिरनी' ।

सरवर[१]—संज्ञा पुं० [सं० सरोवर] दे० 'सरोवर' । उ०—सभा सरवर लोक कोकनद कोकगन, प्रमुदित मन देखि दिनमनि भोर हैं ।—तुलसी ग्रं०, पृ० ३०७ ।

सरवर[२]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] सरदार । अधिपति ।

सरवर[३]—संज्ञा स्त्री० [हिं०] सरबर । सरवरि । बराबरी ।

सरवरि(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [सं० सदृश, प्रा० सरिस + वर] बराबरी । तुलना । समता । उ०—(क) शशि जो होइ नहिं सरवरि छाजै । होइ सो अमावस दिनमन लाजे ।—जायसी (शब्द०) । (ख) हमहिं तुमहिं सरवरि कस नाथा ।—तुलसी (शब्द०) ।

सरवरिया—संज्ञा पुं० [हिं० सरवार + इया (प्रत्य०)] सरयूपारीण ब्राह्मणों का एक वर्ग जो सरवार का है ।

सरवरी†(पु)[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरवर + ई] १. तुलना । बराबरी । २. सरदारी । आधिपत्य ।

सरवरी(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शर्वरी] रात्रि । रात । शर्वरी ।

सरवरीनाथ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शर्वरीनाथ] चंद्रमा ।

सरवा‡—संज्ञा पुं० [हिं० साला] दे० 'साला' ।

सरवाक—संज्ञा पुं० [सं० शरावक (=प्याला)] १. संपुट । प्याला । २. दीया । कसोरा । उ०—राम की रजाय तें रसायनी समीर सूनु उतरि पयोधिपार सोधि सरवाक सो । जातुधान पुट बुट पुटपाक लंक जातरूप रतन जतन जारि कियो है मृगांक सो ।—तुलसी ग्रं०, पृ० १७७ ।

सरवान—संज्ञा पुं० [फ़ा० सराचह्; तुल० सरमान (=तंबू) कीर्तिलता, और वर्णरत्नाकर] तंबू । खेमा । उ०—उठि सरवान गगन लगि छाए । जानहु राते मेघ देखाए ।—जायसी (शब्द०) ।

सरवार†—संज्ञा पुं० [सं० सरयूपार] सरयू नदी के पार का भूखंड। यहाँ के ब्राह्मण सरयूपारी या सरवरिया कहे जाते हैं।

सरवाला—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की लता जिसे घोड़ाबेल भी कहते हैं। बिलाई कंद इसी की जड़ होती है। विशेष दे० 'घोड़ा बेल'।

सरविस—संज्ञा स्त्री० [अं० सर्विस] १. नौकरी। २. खिदमत। सेवा।

सरवे—संज्ञा स्त्री० [अं० सर्वे] १. जमीन की पैमाइश। २. वह सरकारी विभाग जो जमीन की पैमाइश किया करता है।

सरव्य—संज्ञा पुं० [सं०] निशाना। लक्ष्य। शरव्य [को०]।

सरसफ—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सरशफ़ तुल० सं० सर्षप] सरसो।

सरशार—वि० [फ़ा०] १. परिपूर्ण। ऊपर तक भरा हुआ। लबरेज। २. उन्मत्त। मत्त। ३. छलकता हुआ [को०]।

सरशीर—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दूध की मलाई। क्षीर सार। बालाई [को०]।

सरसंप्रत—संज्ञा पुं० [सं० सरसम्प्रत ?] तिधारा। थूहर। पत्रगुप्त वृक्ष।

सरस्—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० सरसी] १. सरोवर। तालाब। २. जल। पानी (को०)। ३. वाणी (को०)।

सरस[१]—वि० [सं०] १. रसयुक्त। रसीला। २. गीला। भीगा। सजल। ३. जो सूखा या मुरझाया न हो। हरा। ताजा। ४. सुंदर। मनोहर। ५. मधुर। मीठा। ६. जिसमें भाव जगाने की शक्ति हो। भावपूर्ण। जैसे,—सरस काव्य। उ०—(क) सरस काव्य रचना करौं खलजन सुनि न हसंत।—पृ० रा०, १।५१। (ख) निज कवित्त केहि लाग न नीका। सरस होहु अथवा अति फीका।—तुलसी (शब्द०)। ७. छप्पय छंद के ३५ वें भेद का नाम जिसमें ३६ गुरु, ८० लघु, कुल ११६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ८. रसिक। सहृदय। भावुक। ९. बढ़कर। उत्तम। उ०—ब्रह्मानंद हृदय दरस सुख लोचननि अनुभए उभय सरस राम जागे हैं। —तुलसी (शब्द०)। १०. पसीने से तर (को०)। ११. प्रेमपूर्ण। प्रणयोन्मत्त (को०)। १२. घना। ठस। सांद्र (को०)।

सरस[२]—संज्ञा पुं० तालाब। सरोवर [को०]।

सरसइ(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती, प्रा० सरसई] सरस्वती नदी। उ०—सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा।—तुलसी (शब्द०)।

सरसई(पु)[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती, प्रा० सरसई] सरस्वती नदी या देवी।

सरसई(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस + हिं० ई (प्रत्य०)] १. सरलता। रसपूर्णता। २. हरापन। ताजापन। उ०—तिय निज हिय जु लगी चलत पिय लख रेख खरोट। सूखन देति न सरसई खोंटि खोंटि खत खोट।—बिहारी (शब्द०)।

सरसई†[३]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरसों] फल के छोटे अंकुर या दाने जो पहले दिखाई पड़ते हैं। जैसे,—आम की सरसई।

सरसठ—वि० [हिं०] दे० 'सड़सठ'।

सरसठवाँ—वि० [हिं०] दे० 'सड़सठवाँ'।

सरसना—क्रि० अ० [सं० सरस + हिं० ना (प्रत्य०)] १. हरा होना। पनपना। वृद्धि को प्राप्त होना। बढ़ना। उ०—सुफल होत मन कामना मिटत बिघन के द्वंद। गुन सरसत बरषत हरख सुमिरत लाल मुकुंद।—(शब्द०)। ३. शोभित होना। सोहाना। उ०—वाको विलोकिए जो मुख इंदु लगै यह इंदु कहूँ लवलेस मैं। बेनी प्रबीन महा सरसै छबि जो परसै कहूँ स्यामल केस मैं।—बेनी (शब्द०)। ४. रसपूर्ण होना। ५. भाव की उमंग से भरना। ६. रसयुक्त अर्थात् जलपूर्ण होना।

सरसब्ज—वि० [फ़ा० सरसब्ज़] १. हरा भरा। जो सूखा या मुरझाया न हो। लहलहाता हुआ। २. जहाँ हरियाली हो। जो घास और पेड़ पौधों से हरा हो। ३. समृद्ध। मालदार (को०)। ४. आबाद (को०)। ५. उपजाऊ (को०)।

सरसमान†—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर व सामान] दे० 'सरोसामान'।

सर सर[१]—संज्ञा पुं० [अनु०] १. जमीन पर रेंगने का शब्द। २. तीव्र वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि। जैसे,—हवा सर सर चल रही है।

सर सर[२]—क्रि० वि० सरसर की ध्वनि के साथ।

सर सर[३]—वि० [सं०] इतस्ततः घूमनेवाला [को०]।

सर सर[४]—संज्ञा स्त्री० [अ०] आँधी अंधड़। तीखी हवा।

सरसराना—क्रि० अ० [अनु० सर सर] १. सर सर की ध्वनि होना। २. वायु का सर सर की ध्वनि करते हुए बहना। वायु का तेजी से चलना। सनसनाना। उ०—सरसराती हुई हवा केले के पत्तों को हिलाती है।—रत्नावली (शब्द०)। ३. साँप या किसी कीड़े का रेंगना।

सरसराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरसर + आहट (प्रत्य०)] १. साँप आदि के रेंगने का सा अनुभव। २. खुजली। सुरसुराहट। ३. वायु के बहने का शब्द।

सरसरी[१]—वि० [फ़ा०] १. जमकर या अच्छी तरह नहीं। जल्दी में। जैसे—सरसरी नजर से देखना। २. चलते ढंग पर। काम चलाने भर को। स्थूल रूप से। मोटे तौर पर। जैसे,—अभी सरसरी तौर से कर जाओ।

यौ०—सरसरी नजर। सरसरी निगाह। सरसरी तौर से।

सरसरी[२]—संज्ञा स्त्री० १. औरतों की एक सांकेतिक भाषा। २. एक शिरोभूषण।

सरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद निसोथ। शुक्ल त्रिवृता।

सरसाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरस + आई (प्रत्य०)] १. सरसता। २. शोभा। सुंदरता। ३. अधिकता।

सरसाना[१]—क्रि० स० [हिं० सरसना] १. रसपूर्ण करना। २. हरा भरा करना।

सरसाना(पु)[२]—क्रि० अ० दे० 'सरसना'।

सरसाना(पु)[३]—क्रि० अ० शोभित होना। शोभा देना। साजना। उ०—(क) लै आए निज अंक में शोभा कही न जाई। जिमि जलनिधि की गोद में शशिशिशु शुभ सरसाई।—गोपाल

(शब्द०)। (ख) सुंदर सूधी सुगोल रची विधि कोमलता अति ही सरसात है।—हरिऔध (शब्द०)।

सरसाम—संज्ञा पुं० [फ़ा०] सन्निपात। त्रिदोष। बाई।

सरसार†—वि० [फ़ा० सरशार] १. डूबा हुआ। मग्न। २. गड़ाप। चूर। मदमस्त (नशे में)।

सरसिक—संज्ञा पुं० [सं०] सारस पक्षी [को०]।

सरसिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिंगुपत्री। २. छोटा ताल। बावली।

सरसिज[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो ताल में होता हो। २. कमल। ३. सारस पक्षी (को०)।

सरसिज[2]—वि० सर में जात। ताल में पैदा होनेवाला।

सरसिजयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] कमल से उत्पन्न, ब्रह्मा।

सरसिरुह—संज्ञा पुं० [सं०] (सर में उत्पन्न) कमल।

यौ०—सरसिरुहबंधु = सूर्य।

सरसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा ताल। छोटा सरोवर। तलैया। २. पुष्करिणी। बावली। उ०—कठुला कंठ बघनहा नीके। नयन सरोज नयन सरसी के।—सूर (शब्द०)। ३. एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, भ, ज, ज, ज, र होते हैं।

सरसीक—संज्ञा पुं० [सं०] सारस पक्षी।

सरसीरुह—संज्ञा पुं० [सं०] १. सरसी में उत्पन्न होनेवाला, कमल। २. सारस पक्षी।

सरसुलगोरंटी—संज्ञा स्त्री० [देश०] सफेद कटसरैया। श्वेत झिंटी।

सरसेट†—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. झगड़ा। तकरार। झंझट। बखेड़ा।

सरसेटना—क्रि० स० [अनु० सरसेट] १. खरी खोटी सुनाना। फटकारना। भला बुरा कहना। २. रगेदना। रपटना। ३. तेजी से समाप्त करना।

सरसों—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्षप; तुल० फ़ा० सर्शफ़] एक धान्य या पौधा जिसके गोल गोल छोटे बीजों से तेल निकलता है। एक तेलहन।

विशेष—भारत के प्रायः सभी प्रांतों में इसकी खेती की जाती है। इसका डंठल दो तीन हाथ ऊँचा होता है। पत्ते हरे और कटे किनारेवाले होते हैं। ये चिकने होते और डंठी से सटे रहते हैं। फलियाँ दो तीन अंगुल लंबी और गोल होती हैं जिनमें महीन बीज के दाने भरे होते हैं। कार्तिक में गेहूँ के साथ तथा अलग भी इसे बोते हैं। माघ तक यह तैयार हो जाता है। सरसों दो प्रकार की होती है—लाल और पीली या सफेद। इसे लोग मसाले के काम में भी लाते हैं। इसका तेल, जो कड़ुवा तेल कहलाता है, नित्य के व्यवहार में आता है। इसके पत्तों का साग बनता है।

सरसौहाँ†—वि० [हिं० सरस + औहाँ (प्रत्य०)] सरस बनाया हुआ। रसयुक्त किया हुआ। रसीला। उ०—तिय तरसौंहैं मुनि किए करि सरसौहैं नेह। घर परसौंहैं ह्वै रहे झर बरसौंहैं मेह।—बिहारी (शब्द०)।

सरस्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्राचीन नदी जो पंजाब में बहती थी और जिसकी क्षीण धारा कुरुक्षेत्र के पास अब भी है। २. विद्या या वाणी की देवी। वाग्देवी। भारती। शारदा।

विशेष—वेदों में इस नदी का उल्लेख बहुत है और इसके तट का देश बहुत पवित्र माना गया है। पर वहाँ यह नदी अनिश्चित सी है। बहुत से स्थलों में तो सिंध नदी के लिये ही इसका प्रयोग जान पड़ता है। कुरुक्षेत्र के पास से होकर बहनेवाली मध्यदेशवाली सरस्वती के लिये इस शब्द का प्रयोग थोड़ी ही जगहों में हुआ है। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि पारसियों के अवेस्ता ग्रंथ में अफगानिस्तान की जिस 'हरख्वैती' नदी का उल्लेख है, वास्तव में वही मूल सरस्वती है। पीछे पंजाब की नदी को यह नाम दिया गया। ऋग्वेद में इस नदी के समुद्र में गिरने का उल्लेख है। पर पीछे की कथाओं में इसको धारा लुप्त होकर भीतर भीतर प्रयाग में जाकर गंगा से मिलती हुई कही गई है। वेदों में सरस्वती नदियों की माता कही गई है और उसकी सात बहिनें बताई गई हैं। एक स्थान पर वह स्वर्णमार्ग से बहती हुई और वृत्रासुर का नाश करनेवाली कही गई है। वेद मंत्रों में जहाँ देवता रूप में इसका आह्वान है, वहाँ पूषा, इंद्र और मरुत आदि के साथ इसका संबंध है। कुछ मंत्रों में यह इडा और भारती के साथ तीन यज्ञदेवियों में रखी गई है। वाजसनेयी संहिता में कथा है कि सरस्वती ने वाचादेवी के द्वारा इंद्र को शक्ति प्रदान की थी। आगे चलकर ब्राह्मण ग्रंथों में सरस्वती वाग्देवी ही मान ली गई है। पुराणों में सरस्वती देवी ब्रह्मा की पुत्री और स्त्री दोनों कही गई है और उसका वाहन हंस बताया गया है। महाभारत में एक स्थान पर सरस्वती को दक्ष प्रजापति की कन्या लिखा है। लक्ष्मी और सरस्वती देवी का वैर भी प्रसिद्ध है।

३. विद्या। इल्म। ४. एक रागिनी जो शंकराभरण और नट नारायण के योग से उत्पन्न मानी जाती है। ५. ब्राह्मी बूटी। ६. मालकँगनी। ज्योतिष्मती लता। ७. सोमलता। ८. एक छंद का नाम। ९. गाय। १० वचन। वाणी। शब्द। स्वर (को०)। ११ नदी। सरिता (को०)। १२. उत्कृष्ट या श्रेष्ठ स्त्री। सभ्य एवं शिष्ट महिला (को०)। १३. दुर्गा देवी का एक रूप। महासरस्वती (को०)। १४. बौद्धों की एक देवी (को०)।

सरस्वतीकंठाभरण—संज्ञा पुं० [सं० सरस्वतीकण्ठाभरण] १. ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक। २. भोजकृत अलंकार का एक ग्रंथ। ३. एक पाठशाला जिसे धार के परमारवंशी राजा भोज ने स्थापित किया था।

सरस्वती पूजन—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सरस्वती पूजा'।

सरस्वती पूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती का उत्सव जो कहीं वसंत पंचमी को और कहीं आश्विन के नवरात्र में होता है।

सरस्वान्[1]—वि० [सं० सरस्वत्] १. जलपूर्ण। जलयुक्त। २. रसमय। रसीला। ३. सुस्वादु। स्वादिष्ट। ४. भव्य। शोभन। चुस्त-दुरुस्त। ५. भावनाप्रधान। भावुक।

सरस्वान्[2]—संज्ञा पुं० १. सागर। समुद्र। २. तालाब। सरोवर। ३. नद। महानद। ४. भैंसामहिष। ५. वायु [को०]।

सरहंग—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सेना का अफसर। नायक। कप्तान। २. मल्ल। पहलवान। ३. जबरदस्त। बलवान्। ४. वह जो किसी से न दबता हो। उद्दंड। सरकश। ५. पैदल सिपाही। ६. चोबदार। ७. कोतवाल।

सरहंगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सिपहगिरी। सेना की नौकरी। २. उद्दंडता। ३. वीरता। ४. पहलवानी।

सरह—संज्ञा पुं० [सं० शलभ, प्रा० सरह] १. पतंग। फतिंगा। २. टिड्डी। उ०—कटक सरह अस छूट।—जायसी (शब्द०)।

सरहज—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यालजाया] साले की स्त्री। पत्नी के भाई की स्त्री।

सरहटी—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पाक्षी] सर्पाक्षी नाम का पौधा। नकुलकंद।

विशेष—यह पौधा दक्षिण के पहाड़ों, आसाम, बरमा और लंका आदि में बहुत होता है। इसके पत्ते समवर्ती, २ से ५ इंच तक लंबे तथा १ से १॥ इंच तक चौड़े, अंडाकार, अनीदार और नुकीले होते हैं। टहनियों के अंत में छोटे छोटे सफेद रंग के फल आते हैं। इसके बीज बारीक तथा तिकोने होते हैं। सरहटी स्वाद में कुछ खट्टी और कड़वी होती है। कहते हैं कि जब साँप और नेवले में युद्ध होता है, तब नेवला अपना विष उतारने के लिये इसे खाता है। इसी से हिंदुस्तान और सिंहल आदि में इसकी जड़ साँप का विष उतारने की दवा समझी जाती है। इसकी छाल, पत्ती और जड़ का काढ़ा पुष्ट होता है और पेट के दर्द में भी दिया जाता है।

सरहत‡—संज्ञा पुं० [देश०] खलिहान में फैला हुआ अनाज बुहारने का झाड़ू।

सरहतना‡—क्रि० स० [देश०] अनाज को साफ करने के लिये फटकना। पछोड़ना।

सरहद—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सर+अ० हद] १. सीमा। २. किसी भूमि की चौहद्दी निर्धारित करनेवाली रेखा या चिह्न। ३. सीमा पर की भूमि। सीमांत। सिवान।

सरहदी—वि० [फ़ा० सरहद+ई (प्रत्य०)] सरहद का। सरहद संबंधी। सीमा संबंधी। जैसे,—सरहदी झगड़े।

सरहद्—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दे० 'सरहद'।

सरहना—संज्ञा स्त्री० [देश०] मछली के ऊपर का छिलका। चूईं।

सरहर—संज्ञा पुं० [सं० शर] [संज्ञा स्त्री० सरहरी] भद्रमंजु। रामशर। सरपत।

सरहरा[1]—वि० [सं० सरल+हिं० धड़ अथवा हिं० सरहर] १. सीधा ऊपर को गया हुआ। जिसमें इधर उधर शाखाएँ न निकली हों (पेड़)।

सरहरा[2]—वि० [सं० सरण] [वि० स्त्री० सरहरी] जिसपर हाथ पैर रखने से न जमे। फिसलाववाला। चिकना।

सरहरी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शर] १. मूंज या सरपत की जाति का एक पौधा जिसकी छड़ पतली, चिकनी और बिना गाँठ की होती है। २. गंडनी। सर्पाक्षी।

सरहरी[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरहरा] सर्दी या जुकाम की दशा में गले में होनेवाली खराश। सुरसुरी। सुरहुरी।

सरहस्य—वि० [सं०] १. गूढ़। भेदपूर्ण। २. उपनिषद् के साथ युक्त। ३. दार्शनिक शिक्षा या पराविद्या से युक्त [को०]।

सरहिंद—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर+हिंद] पंजाब का एक स्थान।

सराँग†—संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] लोहे की एक मोटी छड़ जिसपर पीटकर लोहार बरतन बनाते हैं।

सरा(पु)[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शर] चिता। उ०—चंदन अगर मलयगिर काढ़ा। घर घर कीन्ह सरा रचि ठाढ़ा।—जायसी (शब्द०)।

सरा[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गति। संचलन। २. निर्झर। प्रपात। ३. प्रसारिणी लता [को०]।

सरा[3]—संज्ञा पुं० [अ०] पाताल।

सरा[4]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सराय। मुसाफिरखाना। २. घर। मकान। ३. जगह। स्थान।

सरा[5]—वि० [फ़ा० सरहू] बेमेल। खालिस। खरा [को०]।

सरा†[6]—संज्ञा स्त्री० [देशी] माला। स्रक्।—देशी०, ८।२।

सराई†[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] १. शलाका। सलाई। २. सरकंडे की पतली छड़ी।

सराई[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शराव (=प्याला)] मिट्टी का प्याला या दीया। सकोरा।

सराई†[3]—[फ़ा० सराचह् (=एक पहनावा)] पायजामा।

सराग†[1]—संज्ञा पुं० [सं० शलाक] १. लोहे की सीख। पतला सीखचा। नुकीली छड़। २. वह लकड़ी जो कुलाबे के बीच में लगाई जाती है और उसके ऊपर कुलाबा घूमता है।

सराग[2]—वि० [सं०] १. रागयुक्त। रंगीन। रंगदार। २. अलक्तक से रँगा हुआ। लाक्षारजित। ३. प्रेमाविष्ट। मुग्ध। ४. शोभायुक्त। सुंदर [को०]।

सराजाम‡—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर अजाम] सामग्री। असबाब। सामान।

सराध‡—संज्ञा पुं० [सं० श्राद्ध] दे० 'श्राद्ध'। उ०—(क) जज्ञ सराध न कोऊ करै।—सूर, १।२६०। (ख) द्विज भोजन मख होम सराधा। सब कै जाइ करहु तुम बाधा।—मानस, १।१८१।

यौ०—सराधपख = श्राद्ध का पक्ष या पखवारा जो आश्विन कृ० १ से अमावास्या तक माना जाता है। पितृपक्ष। उ०—जौ लगि काग सराध पख तौ लगि तौ सनमानु।—बिहारी र०, दो० ४३४।

सराना—क्रि० स० [हिं० सारना का प्रेर०] पूर्ण कराना। संपादित कराना। (काम) कराना। उ०—तैं ही उनकौ मूड़ चढ़ायो। भवन बिपिन सँग ही सँग डोलैं ऐसेहि भेद लखायो। पुरुष भँवर दिन चारि आपुनो अपनो चाउ सरायो।—सूर (शब्द०)।

सराप—संज्ञा पुं० [सं० श्राप] दे० 'शाप'। उ०—तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढ़ा।—मानस, १।१३५।

सरापना[पु]—क्रि॰ स॰ [सं॰ श्राप, हिं॰ सराप+ना (प्रत्य॰)] १. शाप देना। बददुआ देना। अनिष्ट मनाना। कोसना। २. बुरा भला कहना। गाली देना।

सरापा[१]—अव्य॰ [फ़ा॰] आपाद मस्तक। पूरा का पूरा। संपूर्ण।

यौ॰—सरापानाज=नाज नखरे से पूर्ण या भरा हुआ। सरापाशरारत=शरारत भरा।

सरापा[२]—संज्ञा पुं॰ १. नखशिख। नख से शिख तक सर्वांग। २. नखशिख का वर्णन [को॰]।

सराफ—संज्ञा पुं॰ [अ॰ सर्राफ़] १. रुपए पैसे या चाँदी सोने का लेन देन करनेवाला महाजन। २. सोने चाँदी का व्यापारी। ३. सोने चाँदी के बरतन, जेवर आदि का लेन देन करनेवाला। ४. बदले के लिये रुपए पैसे रखकर बैठनेवाला दूकानदार।

यौ॰—सराफखाना=जहाँ सराफे का काम होता हो। सराफा।

सराफा—संज्ञा पुं॰ [अ॰ सर्राफ़] १. सराफी का काम। रुपए पैसे या सोने चाँदी के लेन देन का काम। २. वह स्थान जहाँ सराफों की दूकानें अधिक हों। सराफों का बाजार। जैसे,—अभी सराफा नहीं खुला होगा। ३. कोठी। बंक।

क्रि॰ प्र॰—खोलना।

सराफी—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सराफ+ई (प्रत्य॰)] १. सराफ का काम। चाँदी सोने या रुपए पैसे के लेन देन का रोजगार। २. वह वर्णमाला जिसमें अधिकतर महाजन लोग लिखते हैं। महाजनी। मुंडा। ३. नोट रुपए आदि भुनाने का बट्टा जो भुनानेवाले को देना पड़ता है।

यौ॰—सराफी पारचा=हुंडी।

सराब[१]—संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. मृगतृष्णा। २. धोखा देनेवाली वस्तु। ३. धोखा। वंचन।

सराब†[२]—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰ शराब] दे॰ 'शराब'।

सराबोर—वि॰ [सं॰ स्राव+हिं॰ बोर] बिलकुल भीगा हुआ। तरबतर। नहाया हुआ। आप्लावित।

सराय[१]—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] १. रहने का स्थान। घर। मकान। २. यात्रियों के ठहरने का स्थान। मुसाफिरखाना।

मुहा॰—सराय का कुत्ता=अपने मतलब का यार। स्वार्थी। मतलबी। सराय की भठियारी=लड़ाकी और निर्लज्ज स्त्री।

सराय[२]—संज्ञा पुं॰ [देश॰] गुल्ला नाम का पहाड़ी पेड़।

विशेष—यह वृक्ष बहुत ऊँचा होता है और हिमालय पर अधिक होता है। इसके हीर की लकड़ी सुगंधित और हलकी होती है और मकान आदि बनवाने के काम में आती है।

सरार—संज्ञा पुं॰ [देश॰] घोड़ा बेल नाम की लता जिसकी जड़ बिलाई कंद कहलाती है। दे॰ 'घोड़ा बेल'।

सराव[पु]†—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शराव] १. मद्यपात्र। प्याला। (शराब पीने का)। २. कसोरा। कटोरा। ३. दीया। उ॰—हरि जू की आरती बनी। अति बिचित्र रचना रचि राखी परति न गिरा गनी। कच्छप अध आसन अनूप अति डाँड़ी शेष फनी। मही सराव सप्त सागर घृत बाती शैल घनी।—सूर (शब्द॰)। ४. एक तौल जो ६४ तोले की होती थी।

यौ॰—सराव संपुट।

सराव[२]—वि॰ [सं॰] ध्वनियुक्त। गुंजित। शब्दायमान [को॰]।

सराव[३]—संज्ञा पुं॰ १. आवरण। ढक्कन। २. कसोरा। शराव [को॰]।

सराव[४]—संज्ञा स्त्री॰ [देश॰] एक प्रकार की पहाड़ी बकरी।

सरावग—संज्ञा पुं॰ [सं॰ श्रावक] जैन। सरावगी। उ॰—ईस सीस बिलसत बिमल तुलसी तरल तरंग। स्वान सरावग के कहे लघुता लहै न गंग।—तुलसी ग्रं॰, पृ॰ १३५।

सरावगी—संज्ञा पुं॰ [सं॰ श्रावक] श्रावक धर्मावलंबी। जैन धर्म माननेवाला। जैन।

विशेष—प्रायः इस मत के अनुयायी आजकल वैश्य ही अधिक पाए जाते हैं।

सरावन†—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सरण, हिं॰ सरना] जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। हेंगा।

सरावसंपुट—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शराव+सम्पुट] रसौषध फूँकने के लिये मिट्टी के दो कसोरों का मुँह मिलाकर बनाया हुआ एक बरतन।

सराविका—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ शराविका] एक प्रकार की फुंसी। दे॰ 'शराविका'।

सरास[पु]—संज्ञा पुं॰ [?] तुष। भूसी।

सरासन—संज्ञा पुं॰ देश॰ [सं॰ शरासन] दे॰ 'शरासन'। उ॰—(क) कटि निषंग कर बान सरासन।—मानस, ६।११। (ख) (ख) लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ।—मानस, ६।५१।

सरासर[१]—वि॰ [सं॰] इधर उधर घूमनेवाला [को॰]।

सरासर[२]—अव्य॰ [फ़ा॰] १. एक सिरे से दूसरे सिरे तक। यहाँ से वहाँ तक। २. बिलकुल। पूर्णतया। जैसे,—तुम सरासर झूठ कहते हो। ३. साक्षात्। प्रत्यक्ष।

सरासरी[१]—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] १. आसानी। फुरती। २. शीघ्रता। जल्दी। ३. मोटा अंदाज। स्थूल अनुमान। ४. बकाया लगान का दावा।

क्रि॰ प्र॰—करना।—होना।

सरासरी[२]—क्रि॰ वि॰ १. जल्दी में। हड़बड़ी में। जमकर नहीं। इतमीनान से नहीं। २. मोटे तौर पर। स्थूल रूप से।

सराह[पु]—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ श्लाघा] बड़ाई। प्रशंसा। तारीफ। श्लाघा।

सराहत—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] स्पष्ट कहना। विवृत करना या व्याख्या करना।

सराहना[१]—क्रि॰ स॰ [सं॰ श्लाघन] १. तारीफ करना। बड़ाई करना। प्रशंसा करना। उ॰—(क) ऊँचे चितै सराहियत गिरह कबूतर लेत। दृग झलकित मुकलित बदन तन पुलकित हित हेत।—बिहारी (शब्द॰)। (ख) जे फल देखी सोइय

फीका। ताकर काहु सराहै नीका।—जायसी (शब्द०)। (ग) सबै सराहत सीय लुनाई।—तुलसी (शब्द०)।

सराहना[२]—संज्ञा स्त्री० प्रशंसा। तारीफ। उ०—श्रीमुख जासु सराहना कीन्ही श्री हरिचंद।—प्रतापनारायण (शब्द०)।

सराहनीय(पु)—वि० [हिं० सराहना+ईय (प्रत्य०)] १. प्रशंसा के योग्य। तारीफ के लायक। श्लाघनीय। २. अच्छा। बढ़िया। उम्दा।

सराहु—वि० [सं०] १. राहु से युक्त। राहु के साथ। २. (चंद्रमा) जो राहु से ग्रस्त हो [को०]।

सरि[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. झरना। निर्झर। झालर (को०)। २. दिशा (को०)। ३. दे० 'सरी[१]'।

सरि(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] नदी।

सरि(पु)[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० सदृश, प्रा० सरिस] बराबरी। समता। उ०—दाड़िम सरि जो न कै सका फाटेउ हिया दरक्कि।—जायसी (शब्द०)।

सरि[४]—वि० तुल्य। सदृश। समान।

सरि[५]—संज्ञा स्त्री० [देशी] हार। लरी। माला।

सरिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सरिका] गमनशील। जो जा रहा हो [को०]।

सरिका[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हींगपत्री। हींगुपत्री। २. मोतियों की लड़ी। ३. मुक्ता। ४. रत्न। ५. छोटा ताल या सरोवर। ६. एक तीर्थ। ७. गमन। प्रस्थान (को०)। ८. जानेवाली स्त्री (को०)।

सरिका[२]—संज्ञा पुं० [अ० सरिक़ह्] चौर्य। चोरी। तस्करता [को०]।

सरिगम—संज्ञा पुं० [हिं० सरगम] दे० 'सरगम'।

सरित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नदी। २. दुर्गा का एक नाम (को०)। सूत्र। डोरी (को०)।

सरित(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] सरिता। नदी। उ०—दुर्गति दुर्गन ही जु कुटिल गति सरितन ही की।—केशव (शब्द०)।

सरितांपति—संज्ञा पुं० [सं० सरिताम्पति] १. नदियों का पति, समुद्र। २. चार की संख्या का वाचक शब्द [को०]।

सरितांबरा—संज्ञा स्त्री० [सं० सरिताम्बरा] गंगा, जो नदियों में श्रेष्ठ है [को०]।

सरिता—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित् (=बहा हुआ)] १. धारा। प्रवाह। २. नदी। दरिया।

सरित्कफ—संज्ञा पुं० [सं०] नदी का फेन।

सरित्त(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] नदी। सरिता।

सरित्पति—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। २. दे० 'सरितांपति'।

सरित्सुत—संज्ञा पुं० [सं०] (गंगा के पुत्र) भीष्म।

सरित्वान्—संज्ञा पुं० [सं० सरित्वत्] सिंधु। समुद्र [को०]।

सरित्सुरंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्सुरङ्गा] नहर। कुल्या [को०]।

सरिद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सरित्'।

सरिदधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सरित्पति' [को०]।

सरिदिही—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सर (=सरदार)+देह (=गाँव)] वह नजर या भेंट जो जमींदार या उसका कारिंदा किसानों से हर फसल पर लेता है।

सरिदुभय—संज्ञा पुं० [सं०] नदी का दोनों किनारा [को०]।

सरिद्भर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सरिद्भर्तृ] समुद्र।

सरिद्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। सागर [को०]।

सरिद्वरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] (उत्तम नदी) गंगा।

सरिन्नाथ—संज्ञा पुं० [सं०] सागर [को०]।

सरिन्मुख—संज्ञा पुं० [सं०] नदी का उद्गम। मुहाना [को०]।

सरिमा—संज्ञा पुं० [सं० सरिमन्] १. गति। गमन। २. वायु। ३. काल। समय [को०]।

सरिया†[१]—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. ऊँची भूमि। २. पैसा या और कोई छोटा सिक्का। (सोनार)।

सरिया[२]—संज्ञा पुं० [सं० शर] १. सरकंडे की छड़ जो सुनहले या रुपहले तार बनाने में काम आती है। सरई। २. पतली छड़।

सरियाना—क्रि० स० [सं० स्तर] १. तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना। बिखरी हुई चीजें ढंग से समेटना। जैसे,—लकड़ी सरियाना, कागज सरियाना। २. मारना। लगाना। (बाजारू)।

सरिर, सरिल—संज्ञा पुं० [सं०] सलिल। जल।

सरिवन—संज्ञा पुं० [सं० शालपर्णी] शालपर्णी नाम का पौधा। त्रिपर्णी अंशुमती।

विशेष—यह क्षुप जाति की वनौषधि है और भारत के प्रायः सभी प्रांतों में होती है। इसकी उँचाई तीन चार फुट होती है। यह जंगली झाड़ियों में पाई जाती है। इसका कांड सीधा और पतला होता है। पत्ते बेल के पत्तों की भाँति एक सींके में तीन तीन होते हैं। ग्रीष्म ऋतु को छोड़ प्रायः सभी ऋतुओं में इसके फल फूल देखे जाते हैं। फूल छोटे और आसमानी रंग के होते हैं। फलियाँ चिपटी, पतली और प्रायः आध इंच लंबी होती हैं। सरिवन औषध के काम में आती है।

सरिवर, सरिवरि(पु)†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरि+सं० प्रति, प्रा० पड़ि, वड़ि] बराबरी। समता। उ०—तुमहिं हमहिं सरिवरि कस नाथा।—तुलसी (शब्द०)।

सरिश्क—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. आँसू। २. बूँद [को०]।

सरिश्त—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. स्वभाव। प्रवृत्ति। २. बनावट। निर्मिति। सृष्टि [को०]।

सरिश्ता—संज्ञा पुं० [फ़ा० सररिश्तह् का विकृत रूप सरिश्तह्] १. अदालत। कचहरी। २. शासन या कार्यालय का विभाग। महकमा। दफ्तर। आफिस।

सरिश्तेदार—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरिश्तह्दार] १. किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी। २. अदालतों में देशी भाषाओं में मुकदमों की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।

सरिश्तेदारी--संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सरिश्ते का भाव । २. सरिश्तेदार का काम या पद ।

सरिषप--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सर्षप' [को०] ।

सरिसⓅ--वि० [सं० सदृश, प्रा० सरिस] सदृश । समान । तुल्य । उ०--(क) जल पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति की रीति यह ।--तुलसी (शब्द०)। (ख) उठिकै निज मस्तक भयो चालत असुर महान । वात वेग ते फल सरिस महि महँ गिरे बिमान ।--गिरधरदास (शब्द०) ।

सरी[१]--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तलैया । पुष्करिणी । छोटा जलाशय । २. झरना । छोटा प्रपात [को०] ।

सरी[२]--संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] अध्यक्षता । सरदारी [को०] ।

सरी[३]--संज्ञा स्त्री० [देशी] माला । हार ।

सरीक†--वि० [फ़ा० शरीक] दे० 'शरीक' ।

सरीकत†--संज्ञा स्त्री० दे० [फ़ा० शिरकत] दे० 'शिरकत' ।

सरीकताⓅ--संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शरीक + सं० ता (प्रत्य०)] साझा । हिस्सा । शिरकत । उ०--निपट निदरि बोले बचन कुठारपानि मानी त्रास औवनिपन मानो मौनता गही । रोषे माषे लखन अकन अनखौहीं बातैं तुलसी बिनीत बानी बिहँसि ऐसी कही । सुजस तिहारो भरे भुअन भृगुतिलक प्रबल प्रताप आपु कहो सो सबै कही । टूटचौ सो न जुरैगो सरासन महेस जू को, रावरी पिनाक में सरीकता कहा रही ।--तुलसी (शब्द०) ।

सरीका†--वि० [सं० सदृक्ष, प्रा० सरिक्ख, हिं० सरीखा] दे० 'सरीखा' ।

सरीखा--वि० [सं० सदृक्ष, प्रा० सरिक्ख] सदृश । समान । तुल्य ।

सरीफा--संज्ञा पुं० [सं० श्रीफल] एक छोटा पेड़ जिसके फल खाए जाते हैं ।

विशेष--इसकी छाल पतली खाकी रंग की होती है और पत्ते अमरूद के पत्तों के से होते हैं । फूल तीन दलवाले, चौड़े और कुछ अनीदार होते हैं । फल गोलाई लिए हरे रंग का होता है और उसपर उभरे हुए दाने होते हैं जो देखने में बड़े सुंदर लगते हैं । बीजकोशों का गूदा बहुत मीठा होता है । इस फल में बीज अधिक होते हैं । सरीफा गरमी के दिनों में फूलता है और कातिक अगहन तक फल पकते हैं । विंध्य पर्वत पर बहुत से स्थानों में यह आप से आप उगता है । वहाँ इसके जंगल के जंगल खड़े हैं । जंगली सरीफे के फल छोटे होते हैं और उनमें गूदा बहुत कम होता है ।

सरीर[१]--संज्ञा पुं० [सं० शरीर] दे० 'शरीर' । उ०--सरुज सरीर बादि बहु भोगा ।--मानस, २।१७८ ।

सरीर[२]--संज्ञा पुं० [अ०] सिंहासन । राजगद्दी । तख्त [को०] ।

सरीर[३]--संज्ञा स्त्री० १. पदचाप । पदध्वनि । २. कलम की खरखराहट ।

यौ०--सरीरेकलम = लिखते समय कागज पर होनेवाली कलम की खरखराहट ।

सरीसⓅ[१]--वि० [सं० सदृश, प्रा० सरिस] समान । तुल्य । सरीखा । उ०--(क) विक्रम राज सरीस भौ बुधि ब्रन्नन कबि चंद ।--पृ० रा० १। ७०३ । (ख) सुनहु लखन भले भरत सरीसा ।--मानस, २।२३० ।

सरीसⓅ[२]--संज्ञा पुं० [देशी] सह । साथ । उ०--परतापसि सातउ भ्रात सरीस । प्रथीपति आइ नमाइय सीस ।--पृ० रा०, ५।३८ ।

सरीसृप--संज्ञा पुं० [सं०] १. रेंगनेवाला जंतु । जैसे,--साँप, कनखजूरा आदि । २. सर्प । साँप । ३. विष्णु का एक नाम ।

सरीसृप[२]--वि० रेंगनेवाला । पेट के बल घिसटते हुए चलनेवाला [को०] ।

सरीह--वि० [अ०] जो प्रत्यक्ष हो । खुला हुआ ।

सरीहन्--अव्य० [अ०] प्रत्यक्षतः । स्पष्टतः [को०] ।

सरु[१]--वि० [सं०] पतला । लघु । छोटा [को०] ।

सरु[२]--संज्ञा पुं० १. तीर । बाण । २. तलवार या कटार की मूठ । त्सरु [को०] ।

सरुख--वि० [सं० सरुष] सक्रोध । क्रोधयुक्त ।

सरुक्--वि० [सं०] १. दे० 'सरुच्' । २. दे० 'सरुज्' ।

सरुच्--वि० [सं०] शोभायुक्त । कांतिमान् ।

सरुज्--वि० [सं०] कष्टग्रस्त । व्याधिग्रस्त । रोगयुक्त ।

सरुज--वि० [सं०] रोगी । रोगयुक्त । रुग्न । उ०--सरुज सरीर बादि बहु भोगा । बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा ।--मानस, २।१७८ ।

सरुट्, सरुष्, सरुष--वि० [सं०] क्रोधयुक्त । कुपित । उ०--बोले भृगुपति सरुष हँसि तहूँ बंधु सम बास ।--मानस, १।२८२ ।

सरुहानाⓅ†[१]--क्रि० अ० [?] अच्छा होना । ठीक होना ।

सरुहानाⓅ[२] क्रि० स० चंगा करना । अच्छा करना । उ०--समुझि रहनि सुनि कहनि बिरह व्रत अनष अमिय औषध सरुहाए ।--तुलसी (शब्द०) ।

सरूप[१]--वि० [सं०] [संज्ञा स्त्री० सरूपता] १. रूपयुक्त । आकारवाला । २. एक ही रूप का । सदृश । समान । ३. रूपवान । सुंदर ।

सरूप†[२]--संज्ञा पुं० [सं० स्वरूप] दे० 'स्वरूप' । उ०--जो सरूप बस सिव मन माहीं । जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ।--मानस १।१४६ ।

सरूपता--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक रूप या समान होने की स्थिति या भाव । सदृशता । २. ब्रह्मरूप होना, लीन होना जो मुक्ति के चार भेदों में एक है । दे० 'सारूप्य' ।

सरूपत्व--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सरूपता' ।

सरूपा--संज्ञा स्त्री० [सं०] भूत की स्त्री जो असंख्य रुद्रों की माता कही गई है ।

सरूपी--वि० [सं० सरूपिन्] समान रूपवाला । सदृश [को०] ।

सरूर--संज्ञा पुं० [फ़ा० सुरूर] १. आनंद । खुशी । प्रसन्नता । २. हलका नशा । नशे की तरंग । मादकता ।

सरेखⓅ--वि० [सं० श्रेष्ठ] [वि० स्त्री० सरेखी] अवस्था में बड़ा और समझदार । श्रेष्ठ । चतुर । चालाक । सयाना । उ०--हँसि हँसि पूछैं सखी सरेखो । जनहु कुमुदचंदन मुख देखो ।--जायसी (शब्द०) ।

सरेखना—क्रि० स० [हिं०] १. अच्छी तरह समझा देना। १. दे० 'सहेजना'।

सरेखा¹—संज्ञा पुं० [सं० श्लेषा] दे० 'श्लेषा' (नक्षत्र)।

सरेखा(पु)²—वि० [सं० श्रेष्ठ] दे० 'सरेख'। उ०—ततखन बोला सुआ सरेखा। अगुवा सोइ पंथ जेहि देखा।—जायसी (शब्द०)।

सरेदस्त—क्रि० वि० [फ़ा०] १. इस समय। अभी। २. फिलहाल। अभी के लिये। इस समय के लिये। उ०—हाँ, यों तो मेरा खयाल है, सरेदस्त आप किसी संकट में नहीं हैं।—कंठहार, पृ० ६६।

सरेनौ—क्रि० वि० [फ़ा०] नए ढंग से। पुनः शुरू से।

सरेबाजार—क्रि० वि० [फ़ा० सरे बाज़ार] बाजार में। जनता के सामने। २. खुलेआम। सबके सामने।

सरबाम—संज्ञा पुं० [फ़ा०] अटारी। कोठा [को०]।

सरेरा, सरेला—संज्ञा पुं० [देश०] १. पाल में लगी हुई रस्सी जिसे ढीला करने से पाल की हवा निकल जाती है। २. मछली की बंसी की डोरी। शिस्त।

सरेश—वि०, संज्ञा पुं० [फ़ा०] दे० 'सरेस'।

सरेशाम—संज्ञा पुं० [फ़ा०] सायंकाल। संध्याकाल। संध्यामुख [को०]।

सरेशीर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] मलाई। सरशीर।

सरेस¹—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरेश] एक लसदार वस्तु जो ऊँट, गाय, भैंस, आदि से चमड़े या मछली के पोटे को पकाकर निकालते हैं। सहरेस। सरेश।

विशेष—यह कागज, कपड़े, चमड़े आदि को आपस में जोड़ने या चिपकाने के काम आता है। जिल्दबंदी में इसका व्यवहार बहुत होता है।

सरेस²—वि० चिपकनेवाला। लसीला।

सरेसमाही—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरेश-माही] सफेद या काले रंग का गोंद के समान एक द्रव्य।

विशेष—यह एक प्रकार की मछली के पेट से निकलता है जिसकी नाक लंबी होती है और जिसे नदी का सुअर कहते हैं। यह दुर्गंधयुक्त और स्वाद में कड़ुवा होता है।

सरौंट(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शाट+वर्त्त, हिं० सिलवट] कपड़ों में पड़ी हुई सिलवट। शिकन। वली। उ०—नट न सीस साबित भई लुटी सुखन की मोट। चुप करिए चारी करति सारी परी सरौंट।—बिहारी (शब्द०)।

सरो—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर्व] एक सीधा पेड़ जो बगीचों में शोभा के लिये लगाया जाता है। बनझाऊ।

विशेष—इस पेड़ का स्थान काश्मीर, अफगानिस्तान और फारस आदि एशिया के पश्चिमी प्रदेश हैं। फारसी की शायरी में इसका उल्लेख बहुत अधिक है। ये शायर नायिका के सीधे डीलडौल की उपमा प्रायः इसी से दिया करते हैं। यह पेड़ बिलकुल सीधा ऊपर को जाता है। इसकी टहनियाँ पतली होती हैं और पत्तियों से भरी होने के कारण दिखाई नहीं देतीं। पत्तियाँ टेढ़ी रेखाओं के जाल के रूप में बहुत घनी और सुंदर होती हैं। यह पेड़ झाऊ की जाति का है, और उसी के से फल भी इसमें लगते हैं।

सरोई—संज्ञा पुं० [हिं० सरो ?] एक प्रकार का बड़ा पेड़।

विशेष—यह वृक्ष बहुत ऊँचा होता है। इसकी लकड़ी ललाई लिए सफेद होती है और चारपाइयाँ आदि बनाने के काम में आती है। इसकी छाल से रंग भी निकाला जाता है।

सरोकार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० सरोकारी] १. परस्पर व्यवहार का संबंध। २. लगाव। वास्ता। प्रयोजन। मतलब।

सरोकारी—वि० [फ़ा०] सरोकार रखनेवाला [को०]।

सरोज(पु)—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल। २. सारस पक्षी (को०)। (पु) ३. मुख। उ०—फूले सरोज बनाइ कै ऊपर तापर खंजन द्वै थिरकाइहौं।—भिखारी ग्रं०, भा० १, पृ० ३१।

यौ०—सरोजखंड = कमलों का समूह। सरोजनयन। सरोजमुख। सरोजराग = पद्मराग। सरोजल।

सरोजना(पु)—क्रि० स० [सं० सायुज्य] पाना। उ०—हम सालोक्य स्वरूप सरोज्यो रहत समीप सहाई। सो तजि कहत और की औरे तुम अलि बड़े अदाई।—सूर (शब्द०)।

सरोजमुखी—वि० स्त्री० [सं०] कमल के समान मुखवाली। सुंदरी। उ०—तो तन मनोज की ही मौज है सरोजमुखी हाइभाइ साइकै रहे हैं सरसाइ कै।—भिखारी ग्रं०, भा० १, पृ० ९६।

सरोजल—संज्ञा पुं० [सं०] तालाब का पानी [को०]।

सरोजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमलों से भरा हुआ ताल। कमलपूर्ण सरसी। २. कमलों का समूह। कमलवन। ३. कमल का पौधा (को०)। ४. कमल का फूल।

सरोजी¹—वि० [सं० सरोजिन्] [स्त्री० सरोजिनी] १. कमलवाला। २. जहाँ कमल हों।

सरोजी²—संज्ञा पुं० १. (कमल से उत्पन्न) ब्रह्मा। २. बुद्ध का एक नाम।

सरोतर†—वि० [सं० सर्वत्र, हिं० सरबत्तर] १. निरंतर। लगातार। अनवरत। उ०—रँग छनला जहाँ सरोतर चक। ऊ गुरुन क बनारसी बैठक।—खुदा की०। २. साफ। सुस्पष्ट।

सरोता†—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सरौता'।

सरोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] १. बकुला। बक पक्षी। २. सारस।

सरोद—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. बीन की तरह का एक प्रकार का बाजा।

विशेष—इसमें ताँत और लोहे के तार लगे रहते हैं और इसके आगे का हिस्सा चमड़ा से मढ़ा रहता है।

२. नाचने गाने की क्रिया। गान और नृत्य।

सरोदा—संज्ञा पुं० [सं० स्वरोदय] श्वास के दाहिने या बाएँ नथने से निकलना देखकर भविष्य की बातें कहने की विद्या।

सरोपा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सिर और पैर। २. सिरोपाव। खिलअत [को०]।

सरोरक्ष, सरोरक्षक--संज्ञा पुं० [सं०] जलाशय की रक्षा करनेवाला व्यक्ति [को०]।

सरोरुह--संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

सरोला--संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की मिठाई।

विशेष--यह पोस्ते, छुहारे, बादाम आदि मेवों के साथ मैदे को घी और चीनी में पकाकर बनाई जाती है।

सरोवर--संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सरोवरी] १. तालाब। पोखरा। २. झील। ताल।

सरोवरी--संज्ञा स्त्री० [सं०] पुष्करिणी। छोटी तलैया। सरसी। उ०--नाभि सरोवरी औ' त्रिबली की तरंगनि पैरत ही दिन-राति है।--भिखारी ग्रं०, भा० २, पृ० १२६।

सरोविंदु--संज्ञा पुं० [सं० सरोविन्दु] एक प्रकार का वैदिक गीत।

सरोष--वि० [सं०] क्रोधयुक्त। कुपित। उ०--सुनि सरोष भृगुनायक आए। बहुत भाँति तिन आँखि देखाए।--मानस, १।२९३।

सरोस(पु)--वि० [सं० सरोष] दे० 'सरोष'।

सरोसामान--संज्ञा पुं० [फ़ा० सर + व + सामान] सामग्री। उपकरण। असबाब।

सरोही--संज्ञा स्त्री० [हिं० सिरोही] दे० 'सिरोही'।

सरौं[1]--संज्ञा पुं० [सं० शराव] १. कटोरी। प्याली। २. ढक्कन। ढकना।

सरौं[2]--संज्ञा स्त्री० [हिं० सरो] एक वृक्ष विशेष। दे० 'सरो'।

सरौंट(पु)--संज्ञा स्त्री० [हिं० सिलवट] दे० 'सरौंट'।

सरौता--संज्ञा [सं० सार (=लोहा) + पत्र; प्रा० सारवत्त] [स्त्री० अल्पा० सरौती] सुपारी काटने का औजार।

विशेष--यह लोहे के दो खंडों का होता है। ऊपर का खंड गँड़ासी की भाँति धारदार होता है और नीचे का मोटा, जिसपर सुपारी रखते हैं, दोनों खंडों के सिरे ढीली कील से जुड़े रहते हैं, जिससे वे ऊपर नीचे घूम सकते हैं। इन्हीं दोनों खंडों के बीच में रखकर और ऊपर से दबाकर सुपारी काटी जाती है।

सरौती[1]--संज्ञा स्त्री० [हिं० सरौता] छोटा सरौता।

सरौती[2]--संज्ञा स्त्री० [सं० शरपत्री] एक प्रकार की ईख जिसकी छड़ पतली होती है।

विशेष--इस ईख की गाँठें काली होती हैं और सब तना फेद होता है।

सर्क--संज्ञा पुं० [सं०] १. मन। चित्त। २. वायु। ३. एक प्रजापति का नाम। ४. ब्रह्मा (को०)।

सर्करा(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० शर्करा] दे० 'शर्करा'। उ०--ज्यों सर्करा मिलै सिकता महँ बल ते न कोउ बिलगावै।--तुलसी ग्रं०, पृ० ५४२।

सर्कस--संज्ञा पुं० [अं०] १. वह स्थान जहाँ जानवरों का खेल और शारीरिक शक्ति का करतब दिखाया जाता है। क्रीड़ांगन। २. वह मंडली जो पशुओं तथा नटों को साथ रखती है और खेल कूद के तमाशे दिखाती है।

सर्का--संज्ञा पुं० [अ० सर्क़ह्] १. चोरी। २. दूसरे के भाव या लेख को चुरा लेने की क्रिया। साहित्यिक चोरी।

सर्कार--संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सरकार'।

सर्कारी--वि० [हिं०] दे० 'सरकारी'।

सर्किट--संज्ञा पुं० [अं०] १. मंडल। परिधि। परिणाह। घेरा। २. परिभ्रमण। आवर्तन।

यौ०--सर्किट हाउस = दे० 'सर्क्युट हाउस'।

सर्किल--संज्ञा पुं० [अं०] कई महल्लों, गाँवों या कसबों आदि का समूह जो किसी काम के लिये नियत हो। हलका। जैसे,--सर्किल अफसर, सर्किल इन्सपेक्टर। २. घेरा। वृत्त।

सर्क्युट हाउस--संज्ञा पुं० [अं०] जिले के प्रधान नगर में वह सरकारी मकान या कोठी जहाँ, दौरा करते हुए उच्च राज्य कर्मचारी या बड़े अफसर लोग ठहरते हैं। सरकारी कोठी।

सर्क्यूलर--संज्ञा पुं० [अं०] १. गश्ती चिट्ठी। २. सरकारी आज्ञापत्र जो दफ्तरों में घुमाया जाता है। ३. वह पत्र, विज्ञप्ति या सूचना जो बहुत से व्यक्तियों के नाम भेजी जाय। गश्ती चिट्ठी।

सर्क्ष--वि० [सं०] ऋक्षयुक्त। नक्षत्रमंडित। नक्षत्रयुक्त [को०]।

सर्ग[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १. गमन। गति। चलना या बढ़ना। २. संसार। सृष्टि। जगत् की उत्पत्ति। ३. बहाव। झोंक। प्रवाह। ४. छोड़ना। चलाना। फेंकना। ५. छोड़ा हुआ अस्त्र। ६. मूल। उद्गम। उत्पत्ति स्थान। ११. प्रयत्न। चेष्टा। १२. संकल्प। १३. किसी ग्रंथ (विशेषतः काव्य) का अध्याय। प्रकरण। परिच्छेद। उ०--प्रथम सर्ग जो सेष रह, दूजे सप्तक होइ। तीजे दोहा जानिए सगुन बिचारब सोइ।--तुलसी ग्रं०, पृ० ६७। १४. मोह। मूर्छा। १५. शिव का एक नाम। १६. धावा। हमला (सेना का)। १७. स्वीकृति (को०)। १८. युद्धोपकरण, शस्त्रादि का उत्पादन (को०)। १९. रुद्र का एक पुत्र (को०)। २० जीव। प्राणी (को०)। २१. मलत्याग (को०)।

सर्ग(पु)[2]--संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग] दे० 'स्वर्ग'।

यौ०--सर्गपताली।

सर्गक--वि० [सं०] सर्जन करनेवाला। निर्माता [को०]।

सर्गकर्ता--संज्ञा पुं० [सं० सर्गकर्तृ] सृष्टि निर्माता। स्रष्टा [को०]।

सर्गकालीन--वि० [सं०] जो सृष्टिनिर्माण के काल का या उससे संबद्ध हो [को०]।

सर्गक्रम--संज्ञा पुं० [सं०] सृष्टि का सिलसिला। सर्ग का क्रम [को०]।

सर्गपताली--संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग + पाताल + हिं० ई (प्रत्य०)] १. जिसकी आँखें ऐंची हों। ऐंचाताना। २. वह बैल जिसका एक सींग ऊपर की ओर उठा हो और दूसरा नीचे की ओर झुका हो।

सर्गपुट--संज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध राग का एक भेद।

सर्गबंध--वि० [सं० सर्गबन्ध] जो कई अध्यायों या सर्गों में विभक्त हो। जैसे,--सर्गबंध काव्य।

सर्गुंन‡—वि० [सं० सगुण] दे० 'सगुण'।

सर्चलाइट—संज्ञा स्त्री० [अं०] एक प्रकार की बहुत तेज बिजली की रोशनी जिसका प्रकाश रिफलेक्टर या प्रकाश-परावर्त्तक द्वारा लंबाई में बहुत दूर तक जाता है। अन्वेषक प्रकाश। प्रकाश प्रक्षेपक।

विशेष—इसका प्रकाश इतना तेज होता है कि आँखें सामने नहीं ठहरतीं और दूर तक की चीजें साफ दिखाई देती हैं। दुर्घटना के बचाव के लिये पहले प्रायः जहाजों पर इसका उपयोग होता था; पर आजकल मेल, एक्सप्रेस आदि ट्रेनों के इंजिनों के आगे भी यह लगी रहती है।

सर्ज[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ी जाति का शाल वृक्ष। अजकरण वृक्ष। २. राल। धूना। करायल। ३. शल्लकी वृक्ष। सलई का पेड़। ४. विजयसाल का पेड़। असन वृक्ष।

यौ०—सर्जनिर्यास, सर्जनिर्यासक = दे० 'सर्जमणि'। सर्जरस।

सर्ज[2]—संज्ञा स्त्री० [अं०] एक प्रकार का बढ़िया मोटा ऊनी कपड़ा जो प्रायः कोट आदि बनाने के काम में आता है।

सर्जक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा शाल वृक्ष। २. विजयसाल। ३. सलई का पेड़। ४. मट्ठा छोड़ने पर गरम दूध का फटाव।

सर्जन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सर्जनीय, सर्जित] १. छोड़ना। त्याग करना। फेकना। २. निकालना। ३. सृष्टि का उत्पन्न होना। सृष्टि। ४. निर्माण। ५. सेना का पिछला भाग। ६. ढीला करना (को०)। ७. मलत्याग (को०)। ८. साल का गोंद।

सर्जन[2]—संज्ञा पुं० [अं०] अस्त्र चिकित्सा करनेवाला। चीर फाड़ करनेवाला डाक्टर। जर्राह।

सर्जना—संज्ञा स्त्री० [सं०] रचना। निर्माण। सृष्टि (को०)।

सर्जनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुदा की वलियों में से बीचवाली वली जो मल, पवनादि निकालती है।

सर्जमणि—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोचरस। सेमल का गोंद। २. राल। धूना। करायल।

सर्जरस—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सर्जमणि' (को०)।

सर्जरी—संज्ञा स्त्री० [अं०] चीर फाड़ करके चिकित्सा करने की क्रिया या विद्या। शल्य चिकित्सा।

सर्जि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सज्जी।

सर्जिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सज्जी खार।

सर्जिकाक्षार, सर्जिक्षार—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जी। क्षार।

सर्जी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सर्जि'।

सर्जु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. वणिक। व्यापारी। २. दे० 'सर्जू'।

सर्जु[2]—संज्ञा स्त्री० विद्युत्। बिजली।

सर्जू[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वणिक्। व्यापारी। २. गले का हार। कंठहार। ३. गमन। अनुसरण (को०)।

सर्जू[2]—संज्ञा स्त्री० दे० 'सर्जु[2]'।

सर्जू(पु)[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० सरयू] दे० 'सरयू'।

सर्जूर—संज्ञा पुं० [सं०] दिन।

सर्जेंट—संज्ञा पुं० [अं०] दे० 'सारजंट'।

सर्ज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. राल। धूना (को०)।

सर्टिफिकेट—संज्ञा पुं० [अं० सर्टिफ़िकेट] १. परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रमाणपत्र। सनद। २. चाल चलन, स्वास्थ, योग्यता आदि का प्रमाणपत्र।

सर्णसि, सर्णीक—संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी (को०)।

सर्त—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शर्त] दे० 'शर्त'।

सर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सर्तृ] घोड़ा।

सर्द—वि० [फ़ा०] १. ठंढा। शीतल। २. सुस्त। काहिल। ढीला। ३. मंद। धीमा।

यौ०—सर्द गर्म = (१) ऊँच नीच। (२) काल या दशा का परिवर्तन। सर्दबाई। सर्दबाजारी = बाजार में वस्तुओं की माँग का अभाव। सर्दमिजाज।

मुहा०—सर्द होना = (१) ठंढा पड़ना। शीतल होना। (२) मरकर तमाम हो जाना। (३) मंद हो जाना। धीमा हो जाना। (४) उत्साह रहित होना। चुप हो जाना। दब जाना।

४. नपुंसक। नामर्द। ५. बेस्वाद। बेमजा।

सर्दई—वि० [पं० सर्दा + ई (प्रत्य०)] सर्दा के रंग का। हरिताभा-युक्त पीले रंगवाला।

सर्दबाई—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सर्द + हिं० बाई] हाथी की एक बीमारी जिसमें उसके पैर जकड़ जाते है।

सर्दमिजाज—वि० [फ़ा० सर्द + मिजाज] १. मुर्दा दिल। जिसमें शील न हो। बेमुरौवत। रूखा।

सर्दा—संज्ञा पुं० [पं०] बढ़िया जाति का लंबोतरा खरबूजा जो काबुल से आता है।

सर्दाबा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर्दाबह्] १. तहखाना। तलगृह (को०)। २. कब्र। समाधि।

सर्दार—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरदार] दे० 'सरदार'।

सर्दी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सर्द होने का भाव। ठंढापन। शीतलता। २. जाड़ा। शीत।

मुहा०—सर्दी पड़ना = जाड़ा होना। सर्दी खाना = ठंढ सहना। शीत सहना। सर्दी लगना = सर्दी खाना।

३. जुकाम।

क्रि० प्र०—होना।

सर्प—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सर्पिणी] १. रेंगना। २. साँप।

यौ०—सर्पकंकालिका = दे० 'सर्पकंकाली'। सर्प कोटर = साँप का बिल। सर्पदंश = साँप का काटना। सर्पदष्ट = (१) वह जिसे साँप ने काटा हो। सर्प द्वारा दष्ट। (२) साँप का काटना। सर्पधारक = सँपेरा। सर्पनामा = दे० 'सर्पकंकाली'। सर्पनिर्मोचन = केंचुल। सर्पफण, सर्पफणा = साँप का फन। सर्पबलि = साँपों को दी जानेवाली बलि या उपहार। सर्पभृता = पृथ्वी।

धरित्री। सर्पमणि = वह मणि या रत्न जो सर्प के सिरपर पाया जाता है। सर्पविद् = सँपेरा। सर्पविवर = साँप का बिल। सर्पवेद = दे० 'सर्प विद्या'। सर्पव्यापादन = (१) साँप द्वारा काटे जाने से मरना। (२) सर्प का व्यापादन। साँपों को मारना।

३. ज्योतिष में एक प्रकार का बुरा योग। ४. नागकेसर। ५. ग्यारह रुद्रों में से एक। ६. एक म्लेच्छ जाति। ७. सरण। गमन (को०)। ८. वक्र या कुटिल गति (को०)। ९. आश्लेषा नक्षत्र (को०)। १०. एक राक्षस (को०)।

सर्पकंकालिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पकङ्कालिका] सर्प लता।

सर्पकाल—संज्ञा पुं० [सं०] साँपों का काल, गरुड़। उ०—सर्पकाल कालीगृह आए। खगपति बलि बलात सो खाए।—गोपाल (शब्द०)।

सर्पगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पगन्धा] १. गंध नाकुली। २. नकुल कंद। नाकुली। ३. नागदवन नामक जड़ी।

सर्पगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सर्प की गति। २. कुटिल गति। कपट की चाल।

सर्पगृह—संज्ञा पुं० [सं०] साँप का घर। बाँबी।

सर्पघातिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरहँटी। सर्पाक्षी।

सर्पच्छत्र, सर्पच्छत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] छत्राक। खुमी। कुकरमुत्ता।

सर्पछिद्र—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प + हिं० छिद्र] साँप का बिल। बाँबी।

सर्पण - संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सर्पित, सर्पणीय] १. रेंगना। सरकना। २. धीरे धीरे चलना। ३. छोड़े हुए तीर का भूमि से लगा हुआ जाना। ४. कुटिल या वक्र गति (को०)।

सर्पतनु—संज्ञा पुं० [सं०] बृहती का एक भेद।

सर्पतृण—संज्ञा पुं० [सं०] नकुल कंद।

सर्पदंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पदण्डा] सिंहली पीपल।

सर्पदंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पदण्डी] १. गोरक्षी। गोरख इमली। २. गँगरेन। नागबला।

सर्पदंता—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पदन्ता] सिंहली पीपल।

सर्पदंती—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पदन्ती] नागदंती। हाथी शुंडी।

सर्पदंष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. साँप का दंत। २. जमालगोटा।

सर्पदंष्ट्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दांती। उदुंबर पर्णी।

सर्पदंष्ट्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अजशृंगी। विषाणी (को०)।

सर्पदंष्ट्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वृश्चिकाली। २. दंती। उदुंबर-पर्णी। ३. बिछुआ। वृश्चिका।

सर्पदमनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंध्या कर्कोटकी (को०)।

सर्पद्विट्, सर्पद्विष—संज्ञा पुं० [सं०] मोर। मयूर।

सर्पनेत्रा—संज्ञा पुं० [सं०] १. सर्पाक्षी। २. गंधनाकुली।

सर्पपति—संज्ञा पुं० [सं०] शेषनाग।

सर्पपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नागदंती। २. बाँझ खेखसा।

सर्पप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] चंदन।

सर्पफणज—संज्ञा पुं० [सं०] सर्पमणि।

सर्पफेण—संज्ञा पुं० [सं०] अफीम। अहिफेन।

सर्पबंध—संज्ञा पुं० [सं० सर्पबन्ध] कुटिल या पेचीली चाल।

सर्पबेलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागबल्ली। पान।

सर्पभक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १. नकुल कंद। नाकुली कंद। २. मोर। मयूर पक्षी।

सर्पभुक्, सर्पभुज्—संज्ञा पुं० [सं०] १. नकुल कंद। २. मोर। मयूर। ३. सारस पक्षी। ४. एक प्रकार का बहुत बड़ा साँप (को०)।

सर्पमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरहँटी। सर्पाक्षी।

सर्पयज्ञ, सर्पयाग—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जो नागों के संहार के लिये जनमेजय ने किया था।

सर्पराज—संज्ञा पुं० [सं०] १. सर्पों के राजा, शेषनाग। २. वासुकि।

सर्पलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागवल्ली। पान।

सर्पवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागवल्ली। पान।

सर्पविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] साँप को पकड़ने या उन्हें वश में करने की विद्या।

सर्पव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का एक प्रकार का व्यूह जिसकी रचना सर्प के आकार की होती थी।

सर्पशीर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम में आती थी। २. तांत्रिक पूजा में हाथ और पंजे की एक मुद्रा।

सर्पसत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सर्पयज्ञ'।

सर्पसत्री—संज्ञा पुं० [सं० सर्पसत्रिन्] राजा जनमेजय का एक नाम जिन्होंने सर्पयज्ञ किया था।

सर्पसुगंधा, सर्पसुगंधिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पसुगन्धा, सर्पसुगन्धिका] सर्पगंधा। गंधनाकुली।

सर्पसहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरहँटी। सर्पाक्षी।

सर्पसारी व्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार वह भोगव्यूह जिसमें पक्ष, कक्ष तथा उरस्य विषम हों।

सर्पहा[1]—संज्ञा पुं० [सं० सर्पहन्] १. सर्प को मारनेवाला। नेवला। २. गरुड़ (को०)।

सर्पहा[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंडेनी। सरहँटी। सर्पाक्षी।

सर्पांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पाङ्गी] १. सरहँटी। २. सिंहली पीपल। ३. नकुल कंद।

सर्पांत—संज्ञा पुं० [सं० सर्पान्त] गरुड़ का एक पुत्र (को०)।

सर्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साँपिन। सर्पिणी। २. फणिलता।

सर्पाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. रुद्राक्ष। शिवाक्ष। २. सर्पाक्षी। सरहँटी।

सर्पाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरहँटी। २. गंधनाकुली। ३. सर्पिणी। ४. श्वेत अपराजिता। ५. शंखिनी।

सर्पाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] नाग केसर।

सर्पादनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गंधनाकुली। गंध रास्ना। रास्ना। २. नकुल कंद।

सर्पाभ—वि० [सं०] १. साँप जैसे रंगवाला। २. जो साँप की तरह का हो [को०]।

सर्पाराति—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सर्पारि' [को०]।

सर्पारि—संज्ञा पुं० [सं०] सर्पों का शत्रु। १. गरुड़। २. नेवला। ३. मयूर। मोर।

सर्पावास—संज्ञा पुं० [सं०] १. सर्पों के रहने का स्थान। बाँबी। २. चंदन। मलयज। संदल।

सर्पाशन—संज्ञा पुं० [सं०] १. मयूर। मोर। २. गरुड़।

सर्पास्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसका मुँह साँप की तरह हो। साँप के समान मुखवाला। २. खर नामक राक्षस का एक सेनापति जिसे राम ने युद्ध में मारा था।

सर्पास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक योगिनी का नाम [को०]।

सर्पि—संज्ञा पुं० [सं०] १. घृत। घी। २. एक वैदिक ऋषि का नाम।

यौ०—सर्पिमंड = घी का मट्ठा या फेन। सर्पिसमुद्र = घी का समुद्र।

सर्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा साँप। २. एक नदी का नाम।

सर्पिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साँपिन। मादा साँप। २. भुजगी लता।

विशेष—यह सर्प के आकार की होती है और इसमें विष का नाश करने और स्तनों को बढ़ाने का गुण होता है।

सर्पित—संज्ञा पुं० [सं०] साँप के काटने का क्षत। सर्पदंश।

सर्पिरब्धि—संज्ञा पुं० [सं०] घृत का सागर।

सर्पिर्मंड—संज्ञा पुं० [सं० सर्पिर्मण्ड] पिघले हुए मक्खन का फेन।

सर्पिर्मेही—संज्ञा पुं० [सं० सर्पिर्मेहिन्] एक प्रकार के प्रमेह रोग से ग्रस्त व्यक्ति।

सर्पिल—वि० [सं०] साँप के समान [को०]।

सर्पिष्क—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सर्पिस्'।

सर्पिष्कुंडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पिष्कुण्डिका] घी रखने का पात्र। घृतकुंभ।

सर्पिष्मान्—वि० [सं० सर्पिष्मत्] घृताक्त। घी से तर [को०]।

सर्पिस्—संज्ञा पुं० [सं० सर्पिष्] घृत। घी।

सर्पी¹—वि० [सं० सर्पिन्] [सं० सर्पिणी] रेंगनेवाला। धीरे धीरे चलनेवाला।

सर्पी²—संज्ञा पुं० [सं० सर्पिन्] दे० 'सर्पि' या 'सर्पिस्'।

सर्पेंट—संज्ञा पुं० [अं०] साँप। सर्प।

सर्पेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वासुकि का नाम जो साँपों के राजा हैं [को०]।

सर्पेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] चंदन।

सर्पोन्माद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का उन्माद जिसमें मनुष्य सर्प की भाँति लोटता, जीभ निकालता और क्रोध करता है। इसमें गुड़, दूध आदि खाने की अधिक इच्छा होती है।

सर्फ—संज्ञा पुं० [अ० सर्फ़] १. व्यय। खर्च। जैसे,—इस काम में सौ रुपए सर्फ हो गए। २. उपयोग। इस्तेमाल (को०)। ३. व्याकरण में पदव्याख्या। वाक्यविश्लेषण (को०)।

सर्फा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर्फ़ह्] १. खर्च। व्यय। २. लाभ। नफा। मुनाफा (को०)। ३. अधिक व्यय। अपव्यय (को०)। ४. कंजूसी। कृपणता (को०)। ५. सत्ताइस नक्षत्रों में १२ वाँ नक्षत्र। उत्तराफाल्गुनी (को०)। ६. इंसाफ। न्याय (को०)।

सर्फी—वि० [अ० सर्फ़ी] सर्फ अर्थात् पदव्याख्या, वाक्यविश्लेषण आदि का ज्ञाता। व्याकरण जाननेवाला [को०]।

सर्बस(पु)—वि० [सं० सर्वस्व] दे० 'सरबस'।

सर्म(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० शर्म] दे० 'शर्म'। कल्याण। देहि अवलंब न बिलंब अंभोजकर चक्रधर तेज बल सर्म रासी।—तुलसी (शब्द०)।

सर्म²—संज्ञा पुं० [सं०] १. गति। गमन। २. आकाश। व्योम। ३. स्वर्ग [को०]।

सर्म³—संज्ञा पुं० [सं० शर्मन्] प्रसन्नता। आनंद। खुशी [को०]।

सर्मक—संज्ञा पुं० [अ० सर्मक] एक साग। वास्तुक। बथुआ [को०]।

सर्मा—संज्ञा पुं० [फ़ा०] शीत ऋतु। शीत काल [को०]।

सर्माई—वि० [फ़ा०] शीत ऋतु का। जाड़े का। जैसे, कपड़ा, पहनावा [को०]।

सर्रा—संज्ञा पुं० [अनु० सर सर] लोहे या लकड़ी की छड़ जिसपर गराड़ी घूमती है। धुरी। धुरा।

सर्राफ—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ़] १. सोने चाँदी या रुपए पैसे का व्यापार करनेवाला। २. बदले के लिये पैसे, रुपए आदि लेकर बैठनेवाला।

मुहा०—सर्राफ के से टके = वह सौदा जिसमें किसी प्रकार की हानि न हो।

३. धनी। दौलतमंद। ४. पारखी। परखनेवाला।

सर्राफ नानुआ—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ़ + ?] विवाह आदि शुभ अवसरों पर कोठीवालों या महाजनों का नौकरों को मिठाई, रुपया पैसा आदि बाँटना।

सर्राफा—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ़ह्] दे० 'सराफा'।

सर्राफी—संज्ञा स्त्री० [अ० सर्राफ़ी] दे० 'सराफी'।

सर्व¹—वि० [सं०] सारा। सब। समस्त। तमाम। कुल।

यौ०—सर्वकांचन = पूरा सोने का बना हुआ। सर्वकाम्य = (१) जिसकी प्रत्येक व्यक्ति इच्छा करे। (२) सर्वप्रिय। सर्वकृत् = सर्वोत्पादक। ब्रह्मा। सर्वकृष्ण = अत्यंत काला। सर्वक्षय = संपूर्ण प्रलय या विनाश। सर्वक्षित् = जो सब में हो। सर्वजन = सब लोग। सर्वज्ञाता = सब कुछ जाननेवाला। सर्वत्याग = संपूर्ण का त्याग। सर्वपति, सर्वप्रभु = सबका स्वामी। सर्वप्राप्ति = सब कुछ प्राप्त होना। सर्वभयंकर = सबको भय पैदा करनेवाला। सर्वभोगीन, सर्वभोग्य = जिसका उपभोग सभी कर सकें। जो सबके लिये भोग्य हो। सर्वमंगल = सबके लिये मंगलकारक या शुभ। सर्वमहान् = सर्वश्रेष्ठ।

जो सबसे महान् हो। सर्वरक्षण = जो सब का रक्षण करे या सबसे रक्षा करनेवाला। सर्वरक्षी = सबकी सुरक्षा करनेवाला। सर्ववल्लभ = सबका प्यारा। जो सबको प्रिय हो। सर्ववातसह = पोत या यान जो सभी प्रकार की वायु को सहन करने में सक्षम हो। सर्ववादिसम्मत = जिससे सभी सहमत हों। सर्ववासक = पूर्णतः वस्त्राच्छादित। सर्वविज्ञान = सभी विषयों का ज्ञान। सर्वविज्ञानी = सभी विषयों का ज्ञाता। सर्वविनाश = सर्वनाश। सर्वविषय = जो सब विषयों से संबद्ध हो। सर्ववीर्य = समग्र शक्ति से युक्त। सर्वशंका = सब के प्रति शक की भावना। सर्वशक = दे० 'सर्वशक्तिमान्'। सर्वशास्त्री = सभी प्रकार के शस्त्रों से युक्त। सर्वशीघ्र = जो सबसे तीव्र या तेज हो। सर्वश्राव्य = जिसे सभी लोग सुन सके। सर्वसंपन्न = जो सभी चीजों में संपन्न या युक्त हो।

सर्व² —संज्ञा पुं० १. शिव का एक नाम। २. विष्णु का एक नाम। ३. पारा। पारद। ४. रसौत। ५. शिलाजतु। सिलाजीत। ६. एक मुनि का नाम (को०)। ७. जल (को०)। ८. एक जनपद (को०)।

सर्व³—संज्ञा पुं० [अ०] एक वृक्ष। दे० 'सरो' [को०]।

सर्वक —वि० [सं०] सब समस्त। पूरा। तमाम। कुल। समग्र [को०]।

सर्वकर —संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वकर्त्ता —संज्ञा पुं० [सं० सर्वकर्तृ] १. ब्रह्मा। २. ईश्वर (को०)।

सर्वकर्मा —संज्ञा पुं० [सं० सर्वकर्मन्] शिव [को०]।

सर्वकर्मीण —वि० [सं०] सब कार्य करनेवाला [को०]।

सर्वकाम--संज्ञा पुं० [सं०] १. सब इच्छाएँ रखनेवाला। २. सब इच्छाएँ पूरी करनेवाला। ३. शिव का एक नाम। ४. एक बुद्ध या अर्हत् का नाम।

यौ०--सर्वकामगम = इच्छानुसार सभी जगह गमन करनेवाला। सर्वकामद। सर्वकामदुघ = सभी कामनाएँ पूर्ण करनेवाला। सर्वकामवर।

सर्वकामद--वि० [सं०] [वि० स्त्री० सर्वकामदा] सब कामनाएँ पूरी करनेवाला।

सर्वकामद²--संज्ञा पुं० शिव [को०]।

सर्वकामवर —संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

सर्वकामिक--वि० [सं०] १. सारी इच्छाएँ पूरी करनेवाला। २. जिसकी सारी इच्छाएँ पूरी हो गई हों [को०]।

सर्वकामी—वि० [सं० सर्वकामिन्] सभी इच्छाएँ पूर्ण करनेवाला। २. जिसकी सभी इच्छाएँ पूर्ण हों। ३. स्वेच्छा से काम करनेवाला [को०]।

सर्वकारी—वि० [सं० सर्वकारिन्] १. जो सब कुछ करने में समर्थ हो। २. सबका निर्माण करनेवाला [को०]।

सर्वकाल--क्रि० वि० [सं०] हर समय। सब दिन। सदा।

सर्वकालप्रसाद—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वकालिक, सर्वकालीन--वि० [सं०] सब समय या काल का [को०]।

सर्वकेशी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वकेशिन्] अभिनेता। एक्टर। नट [को०]।

सर्वकेसर--संज्ञा पुं० [सं०] बकुल वृक्ष या पुष्प। मौलिसिरी।

सर्वक्षार--संज्ञा पुं० [सं०] १. मोखा। मुष्कक वृक्ष। २. एक प्रकार का क्षार। महाक्षार (को०)। ३. सब कुछ नष्ट कर देना या काम लायक न रहने देना।

यौ०—सर्वक्षारनीति = युद्ध में सेना द्वारा पीछे हटते हुए सब सामान नष्ट कर देना जिसमें शत्रुपक्ष उसका उपयोग न कर सके और उसे आगे बढ़ने में बाधा हो।

सर्वगंध—संज्ञा पुं० [सं० सर्वगन्ध] १. दालचीनी। गुडत्वक्। २. एला इलायची। ३. तेजपात। ४. नागकेसर। नागपुष्प। ५. शीतल चीनी। ६. लौंग। लवंग। ७. अगर। अगरु। ८. शिलारस। ९. कर्पूर। १०. वह जो सभी प्रकार के गंध से युक्त हो। ११. केसर।

सर्वगंधिक —संज्ञा पुं० [सं० सर्वगन्धिक] दे० 'सर्वगंध' [को०]।

सर्वग¹--वि० [सं०] [वि० स्त्री० सर्वगा] जिसकी गति सब जगह हो। जो सब जगह जा सके। सर्वव्यापक।

सर्वग²--संज्ञा पुं० १. पानी। जल। २. जीव। आत्मा। ३. ब्रह्म। ४. शिव का एक नाम।

सर्वगण —संज्ञा पुं० [सं०] खारी मिट्टी। रेह।

सर्वगत--वि० [सं०] जो सब में हो। सर्वव्यापक।

सर्वगति--वि० [सं०] जिसका शरण सब लोग हों। जो सबको गति हो। जिसमें सब आश्रय लें।

सर्वगा--संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रियंगु क्षुप।

सर्वगामी--वि० [सं० सर्वगामिन्] दे० 'सर्वग'।

सर्वग्रंथि--संज्ञा पुं० [सं० सर्वग्रन्थि] पीपला मूल।

सर्वग्रंथिक--संज्ञा पुं० [सं० सर्वग्रन्थिक] दे० 'सर्वग्रंथि'।

सर्वग्रह--वि० [सं०] एक बार में सब कुछ भक्षण करनेवाला [को०]।

सर्वग्रहापहा —संज्ञा स्त्री० [सं०] नागदमनी। नागदौन।

सर्वग्रास--संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्र या सूर्य का वह ग्रहण जिसमें उनका मंडल पूर्ण रूप से छिप जाता है। पूर्ण ग्रहण। खग्रास ग्रहण। २. वह जो सब कुछ खा जाय, बचा न रहने दे।

सर्वचक्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों की एक तांत्रिक देवी।

सर्वचर्मीण--वि० [सं०] १. जो पूर्णतः चर्मनिर्मित हो। २. जिसमें सभी प्रकार के चमड़े लगे हों [को०]।

सर्वचारी¹—वि० [सं० सर्वचारिन्] [वि० स्त्री० सर्वचारिणी] सब में रमनेवाला। व्यापक।

सर्वचारी²--संज्ञा पुं० शिव का एक नाम।

सर्वच्छंदक—वि० [सं० सर्वच्छन्दक] सबको अनुकूल या वशीभूत करनेवाला [को०]।

सर्वज—वि० [सं०] जो त्रिदोष के कारण उद्भूत हो [को०]।

सर्वजन —संज्ञा पुं० [सं०] सभी जन। सब लोग [को०]।

सर्वजनप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २. वेश्या, जो सभी लोगों की प्रिया है।

सर्वजनीन—वि० [सं०] १. सब लोगों से संबंध रखनेवाला। सब का। सार्वजनिक। २. विश्वव्यापी। प्रसिद्ध (को०)। ३. सबका हितकारी। सबका कल्याण करनेवाला (को०)।

सर्वजनीय—वि० [सं०] दे० 'सर्वजनीन'।

सर्वजया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सबजय नाम का पौधा जो बगीचों में फूलों के लिये लगाया जाता है। देवकली। २. मार्गशीर्ष महीने में होनेवाला स्त्रियों का एक प्राचीन पर्व।

सर्वजित्[१]—वि० [सं०] १. सबको जीतनेवाला। २. सबसे बढ़ा चढ़ा। सबसे श्रेष्ठ या उत्तम।

सर्वजित्[२]—संज्ञा पुं० १. साठ संवत्सरों में से इक्कीसवाँ संवत्सर। २. मृत्यु। काल। ३. एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वजीव—संज्ञा पुं० [सं०] सब की आत्मा। सर्वात्मा (को०)।

सर्वजीवी—वि० [सं० सर्वजीविन्] जिसके पिता, पितामह और प्रपितामह तीनों जीते हों।

सर्वज्ञ[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला। जिसे कुछ अज्ञात न हो।

सर्वज्ञ[२]—संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. देवता। सुर। ३ बुद्ध या अर्हत्। ४. शिव का एक नाम।

सर्वज्ञतर—संज्ञा स्त्री० [सं०] सर्वज्ञ होने का भाव।

सर्वज्ञत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सर्वज्ञ होने का भाव। सर्वज्ञता।

सर्वज्ञा[१]—वि० स्त्री० [सं०] सब कुछ जाननेवाली।

सर्वज्ञा[२]—संज्ञा स्त्री० १, दुर्गा देवी। २. एक योगिनी।

सर्वज्ञाता—वि० [सं० सर्वज्ञातृ] दे० 'सर्वज्ञ'।

सर्वज्ञानी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वज्ञानिन्] वह जो सबकुछ जानता हो। सबकुछ जाननेवाला। सर्वज्ञ।

सर्वज्यानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सब वस्तुओं की हानि। सर्वनाश।

सर्वतंत्र[१]—संज्ञा पुं० [सं० सर्वतन्त्र] १. सर्व प्रकार के शास्त्र सिद्धांत। २. वह जिसने सभी शास्त्रों को पढ़ा हो और उनमें निष्णात हो।

यौ०—सर्वतंत्र स्वतंत्र = सभी तंत्र या शास्त्र जिसके लिये अपना शास्त्र हो। जो सभी तंत्रों में निष्णात हो।

सर्वतंत्र[२]—वि० दे० जिसे सब शास्त्र मानते हों। सर्वशास्त्रसंमत। जैसे,—सर्वतंत्र सिद्धांत।

सर्वतः—अव्य० [सं० सर्वतस्] १. सब ओर। चारों तरफ। २. सब प्रकार से। हर तरह से। ३. पूरी तरह से। पूर्ण रूप से।

यौ०—सर्वतः पाणिपाद = जिसके हाथ पाँव सब ओर हों। सर्वतःशुभा।

सर्वतःशुभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कँगनी नाम का अनाज। काकुन। प्रियंगु।

सर्वतमोनुद—वि० [सं०] (सूर्य) जो समग्र अंधकार को हटाने या दूर करनेवाला है।

सर्वतश्चक्षु—वि० [सं० सर्वतश्चक्षुष्] जिसकी दृष्टि चारों ओर हो। जो सर्वत्र सब कुछ देखता हो।

सर्वतापन संज्ञा पुं० [सं०] १. (सबको तपानेवाला) सूर्य। २. कामदेव।

सर्वतिक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भंटाकी। बरहंटा। २. मकोय। काकमाची।

सर्वतूर्यनिनादी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वतूर्यनिनादिन्] शिव (को०)।

सर्वतोगामी—वि० [सं० सर्वतोगामिन्] जो सभी दिशाओं में जा सके। सब जगह गमन करनेवाला। सर्वव्यापी (को०)।

सर्वतोदिश—क्रि० वि० [सं०] चारों ओर। चतुर्दिक्।

सर्वतोधार—वि० [सं०] जिसमें सर्वत्र तेज धार हो।

सर्वतोधुर—वि० [सं०] जो सब ओर शीर्षस्थानीय हो।

सर्वतोभद्र[१]—वि० [सं०] १. सब ओर से मंगल। सर्वांश में शुभ या उत्तम। २. जिसके सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सब के बाल मुड़े हों।

सर्वतोभद्र[२]—संज्ञा पुं० १. वह चौखूँटा मंदिर जिसके चारों ओर दरवाजे हों। २. युद्ध में एक प्रकार का व्यूह। ३. एक प्रकार का चौखूँटा मांगलिक चिह्न जो पूजा के वस्त्र पर बनाया जाता है। ४. एक प्रकार का चित्रकाव्य। ५. एक प्रकार की पहेली जिसमें शब्द के खंडाक्षरों के भी अलग अलग अर्थ लिए जाते हैं। ६. विष्णु का रथ। ७ बाँस। ८. एक गंधद्रव्य। ९. वह मकान जिसके चारों ओर परिक्रमा का स्थान हो। १०. एक वन का नाम (को०)। ११. एक पर्वत (को०)। १२. इस नाम का एक चक्र (ज्यौतिष)। १३. देवताओं का एक वन (को०)। १४. मुंडन कराना। क्षौरकर्म कराना। १५. हठ योग में बैठने का एक आसन या मुद्रा। १६. नीम का पेड़।

सर्वतोभद्रकछेद—संज्ञा पुं० [सं० सर्वतोभद्रकच्छेद] भगंदर की चिकित्सा के लिये अस्त्र से लगाया हुआ चौकोर चीरा।

सर्वतोभद्रचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में शुभाशुभ फल जानने का एक चौखूँटा चक्र (को०)।

सर्वतोभद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काश्मरी वृक्ष। गंभारी। २. अभिनेत्री। अभिनय करनेवाली। नर्तकी। नटी।

सर्वतोभद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] काश्मरी वृक्ष। गंभारी। गम्हार वृक्ष।

सर्वतोभाव, सर्वतोभावेन—अव्य० [सं०] सर्व प्रकार से। संपूर्ण रूप से। अच्छी तरह। भली भाँति।

सर्वतोभोगी—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार वह वश्य मित्र जो अमित्रों, आसारों, (संगी साथियों), पड़ोसियों तथा जांगलिकों से रक्षा करे।

सर्वतोमुख[१]—वि० [सं०] १. जिसका मुँह चारों ओर हो। २. जो सब दिशाओं में प्रवृत्त हो। ३. पूर्ण व्यापक।

सर्वतोमुख[२]—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की व्यूह रचना। २. जल। पानी। ३. आत्मा। जीव। ४. ब्रह्म। ५. ब्रह्मा (जिनके चार मुँह हैं)। ६. ब्राह्मण। विप्र (को०)। ७. शिव। ८. अग्नि। ९. स्वर्ग। १०. आकाश।

सर्वतोमुखी—वि० स्त्री० [सं० सर्वतोमुख] दे० 'सर्वतोमुख'। जैसे,—आपकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है।

सर्वतोवृत्त—वि० [सं०] सर्वव्यापक।

सर्वत्र—अव्य० [सं०] १. सब कहीं। सब जगह। हर जगह। २. हर काल में। हमेशा।

सर्वत्रग[1]—वि० [सं०] सर्वगामी। सर्वव्यापक।

सर्वत्रग[2]—संज्ञा पुं० १. वायु। २. मनु के एक पुत्र का नाम। ३. भीमसेन के एक पुत्र का नाम।

सर्वत्रगत—वि० [सं०] जो सब जगह पहुँचा हो [को०]।

सर्वत्रगामी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वत्रगामिन्] १. वह जो सर्वत्र गमनशील हो। २. वायु। हवा।

सर्वत्रसत्त्व—संज्ञा पुं० [सं०] सर्वात्मकता। विश्वात्मकता। विश्वरूपता [को०]।

सर्वत्रापि—वि० [सं०] सब स्थानों में जानेवाला।

सर्वथा—अव्य० [सं०] १. सब प्रकार से। सब तरह से। २. बिलकुल। सब। ३. सर्वदा। हमेशा। निरंतर (को०)। ४. पूरी तौर से। पूर्णतः (को०)। ५. बहुत अधिक। अत्यंत (को०)।

सर्वदंडधर—वि० [सं० सर्वदण्डधर] सब को दंड देनेवाला (शिव) [को०]।

सर्वदंडनायक—संज्ञा पुं० [सं० सर्वदण्डनायक] सेना या पुलिस का एक ऊँचा अधिकारी।

सर्वद[1]—वि० [सं०] सब कुछ देनेवाला।

सर्वद[2]—संज्ञा पुं० शिव का एक नाम।

सर्वदमन[1]—वि० [सं०] सबको दमन करनेवाला [को०]।

सर्वदमन[2]—संज्ञा पुं० दुष्यंत के पुत्र भरत का एक नाम।

सर्वदर्शन—वि० [सं०] सब कुछ देखनेवाला [को०]।

सर्वदर्शी[1]—संज्ञा पुं० [सं० सर्वदर्शिन्] [स्त्री० सर्वदर्शिणी] सब कुछ देखनेवाला।

सर्वदर्शी[2]—संज्ञा पुं० १. ईश्वर। परमात्मा। २. एक बुद्ध या अर्हत् [को०]।

सर्वदा—अव्य० [सं०] सब काल में। हमेशा। सदा।

सर्वदाता—वि० संज्ञा पुं० [सं० सर्वदातृ] सब कुछ दे देनेवाला। सर्वस्व देनेवाला [को०]।

सर्वदान—संज्ञा पुं० [सं०] सर्वस्व का दान करना [को०]।

सर्वदिग्विजय—संज्ञा स्त्री० [सं०] सभी दिशाओं को जीतना। विश्वविजय [को०]।

सर्वदेवमय[1]—वि० [सं०] जिसमें सब देवता हों [को०]।

सर्वदेवमय[2]—संज्ञा पुं० १. शिव। २. कृष्ण।

सर्वदेवमुख—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि [को०]।

सर्वदेशीय—वि० [सं०] १. सभी देशों से संबद्ध। २. सभी देशों में होनेवाला या प्राप्य [को०]।

सर्वदेश्य—वि० [सं०] दे० 'सर्वदेशीय' [को०]।

सर्वद्रष्टा—वि० [सं० सर्वद्रष्टृ] सब कुछ देखनेवाला।

सर्वद्वारिक—वि० [सं०] जिसकी विजययात्रा के लिये सब दिशाएँ खुली हों। दिग्विजयी।

सर्वधन्वी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वधन्विन्] कामदेव [को०]।

सर्वधातुक—संज्ञा पुं० [सं०] ताँबा। ताम्र।

सर्वधारी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वधारिन्] १. साठ संवत्सरों में से बाइसवाँ संवत्सर। २. शिव का एक नाम।

सर्वधुरावह—संज्ञा पुं० [सं०] गाड़ी में जोता जानेवाला जानवर।

सर्वधुरीण—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सभी प्रकार का बोझा ढोने के उपयुक्त हो [को०]।

सर्वनाभ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र।

सर्वनाम—संज्ञा पुं० [सं० सर्वनामन्] व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है। जैसे,—मैं, तू, वह।

सर्वनाश—संज्ञा पुं० [सं०] सत्यानाश। विध्वंस। पूरी बरबादी।

सर्वनाशी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वनाशिन्] सर्वनाश करनेवाला। विध्वंसकारी। चौपट करनेवाला।

सर्वनिर्देश—संज्ञा स्त्री० [सं०] गणना करने की एक पद्धति विशेष [को०]।

सर्वनिधन—संज्ञा पुं० [सं०] १. सब का नाश या वध। २. एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वनियोजक—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम जो सबके नियोजक हैं [को०]।

सर्वनिलय—वि० [सं०] जिसका निलय या निवास सब जगह हो [को०]।

सर्वनियंता—संज्ञा पुं० [सं० सर्वनियन्तृ] सब को अपने नियम के अनुसार ले चलनेवाला। सब को वश में करनेवाला।

सर्वपति—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सबका मालिक हो।

सर्वपथीन—वि० [सं०] १. जो सर्वत्र गमनशील हो। सभी दिशाओं में जानेवाला। २. जो चारों ओर फैला हो [को०]।

सर्वपा[1]—वि० [सं०] १. सब कुछ पीनेवाला। २. सब की रक्षा करनेवाला [को०]।

सर्वपा[2]—संज्ञा स्त्री० दैत्यराज बलि की स्त्री का नाम।

सर्वपाचक—संज्ञा पुं० [सं०] सुहागा। टंकण क्षार।

सर्वपारशव—वि० [सं०] पूर्णतः लोहे का बना हुआ [को०]।

सर्वपार्श्वमुख—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

सर्वपावन—संज्ञा पुं० [सं०] सबको पवित्र करनेवाले, शिव [को०]।

सर्वपूजित—संज्ञा पुं० [सं०] जो सबके द्वारा पूजित हैं, शिव [को०]।

सर्वपूत—वि० [सं०] पूर्णतः पवित्र या शुद्ध [को०]।

सर्वपूर्ण—वि० [सं०] सब कुछ से भरा पूरा।

सर्वपृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ।

सर्वप्रथम—वि० [सं०] १. सबसे पहिले। २. सभी लोगों में पहला या प्रथम श्रेणी का [को०]।

सर्वप्रद—वि० [सं०] सर्वस्व देनेवाला [को०]।

सर्वप्रिय—वि० [सं०] १. सब को प्यारा। जिसे सब चाहें। जो सब को अच्छा लगे। २. जिसे सब कुछ प्रिय हो।

सर्वबंधविमोचन—संज्ञा पुं० [सं० सर्वबन्धविमोचन] सभी बंधनों से छुड़ानेवाला—शिव [को०]।

सर्वबल—संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुत बड़ी संख्या। (बौद्ध)।

सर्वबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध करने की एक विधि।

सर्वबीज—संज्ञा पुं० [सं०] सबका बीज या मूल [को०]।

सर्वभक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सब कुछ खा डालनेवाला, अग्नि। आग।

सर्वभक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकरी। छागी।

सर्वभक्षी[1]—संज्ञा पुं० [सं० सर्वभक्षिन्] [वि० स्त्री० सर्वभक्षिणी] सबकुछ खानेवाला।

सर्वभक्षी[2]—संज्ञा पुं० अग्नि।

सर्वभवोद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सर्वभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १. संपूर्ण सत्ता। सारा अस्तित्व। २. संपूर्ण आत्मा। ३. पूर्ण तुष्टि। मन का पूरा भरना।

सर्वभावकर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

सर्वभावन—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सब का उत्पादक हो। सब की भावना करनेवाला। २. महादेव। शिव।

सर्वभूत[1]— पुं० [सं०] सब प्राणी या सृष्टि। चराचर।

सर्वभूत[2]—वि० जो सब कुछ हो या सब में हो। सर्वस्वरूप।

सर्वभूतगुहाशय—वि० [सं०] सबके हृदय में निवास करनेवाला [को०]।

सर्वभूतपितामह—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा। प्रजापति [को०]।

सर्वभूतहर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वभूतहित—संज्ञा पुं० [सं०] सब प्राणियों की भलाई।

सर्वभूमिक—संज्ञा पुं० [सं०] दारचीनी। गुड़त्वक्।

सर्वभृत्—वि० [सं०] जो सबका पालन पोषण करे [को०]।

सर्वभोग—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार वह वश्यमित्र जो सेना, कोश तथा भूमि से सहायता करे।

सर्वभोगसह—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार सब प्रकार से उपयोगी मित्र सब प्रकार के कामों में समर्थ मित्र।

सर्वभोगी—वि० [सं० सर्वभोगिन्] [वि० स्त्री० सर्वभोगिनी] १. सब का आनंद लेनेवाला। २. सब कुछ खानेवाला।

सर्वमंगला[1]—वि० [सं० सर्वमङ्गला] सब प्रकार का या सबका मंगल करनेवाली।

सर्वमंगला[2]—संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. लक्ष्मी।

सर्वमलापगत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

सर्वमांसाद—वि० [सं०] सभी प्रकार के मांस का भक्षण करनेवाला [को०]।

सर्वमूल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. कौड़ी। कपर्दक। २. कोई छोटा सिक्का।

सर्वमूषक—संज्ञा पुं० [सं०] (सबको मूसने या ले जानेवाला) काल।

सर्वमेध—संज्ञा पुं० [सं०] १. सार्वजनिक सत्र। २. एक उपनिषद् का नाम (को०)। ३. यज्ञ (को०)। ४. एक प्रकार का सोमयाग जो दस दिनों तक होता था।

सर्वयंत्री—वि० [सं० सर्वयन्त्रिन्] सभी औजारों से युक्त [को०]।

सर्वयोगी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वयोगिन्] शिव का एक नाम।

सर्वयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] सब का मूल। सब की जड़ [को०]।

सर्वरत्नक—संज्ञा पुं० [सं०] जैन शास्त्रानुसार नौ निधियों में एक।

सर्वरत्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में एक श्रुति [को०]।

सर्वरस—संज्ञा पुं० [सं०] १. राल। धूना। करायल। २. लवण। नमक। ३. एक प्रकार का बाजा। ४. सब विद्याओं में निपुण व्यक्ति। विद्वान् व्यक्ति। ५. सभी प्रकार के रस, भोज्य पदार्थ आदि। ६. वह जो सब रसों से युक्त हो।

सर्वरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाजा का माँड़। धान की खीलों का माँड़।

सर्वरसोत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] नमक। लवण।

सर्वरास—संज्ञा पुं० [सं०] १. राल। करायल। धूना। २. एक प्रकार का वाद्य [को०]।

सर्वरी (पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शर्वरी] दे० 'शर्वरी'।

सर्वरीस (पु)—संज्ञा पुं० [सं० शर्वरीश] दे० 'शर्वरीश'।

सर्वरूप[1]—वि० [सं०] जो सब रूपों का हो। सर्वस्वरूप।

सर्वरूप[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार की समाधि।

सर्वार्थसिद्धि—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार सब से ऊपर का अनुसार या स्वर्गों के ऊपर का लोक।

सर्वलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] सभी शुभ लक्षण या चिह्न [को०]।

सर्वलाक्षत—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वला—संज्ञा स्त्री० [सं०] लोहे का डंडा।

सर्वलालस—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

सर्वलिंग—वि० [सं० सर्वलिङ्ग] जो प्रत्येक लिंग में हो। (विशेषण) जो प्रत्येक लिंग (पुं०, स्त्री० और नपुंसक) में होता है।

सर्वलिंगी[1]—वि० [सं० सर्वलिङ्गिन्] [वि० स्त्री० सर्वलिंगिनी] सब प्रकार के ऊपरी आडंबर रखनेवाला। पाखंडी।

सर्वलिंगी[2]—संज्ञा पुं० [सं०] नास्तिक।

सर्वली—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा लौहदंड या तोमर।

सर्वलोक—संज्ञा पुं० [सं०] समग्र लोक। चराचर जगत् [को०]।

यौ०—सर्वलोककृत् = शिव का एक नाम। सर्वलोकगुरु = विष्णु। सर्वलोकपितामह = ब्रह्मा जो सबके पितामह हैं। सर्वलोकप्रजापति, सर्वलोकभृत् = दे० 'सर्वलोककृत्'। सर्वलोकमहेश्वर = (१) शिव। शंकर। (२) विष्णु का एक नाम।

सर्वलोकेश, सर्वलोकेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. ब्रह्मा। ३. विष्णु। ४. कृष्ण।

सर्वलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सर्वलोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा जो औषध के काम में आता है। गंधनाकुली।

सर्वलोह—संज्ञा पुं० [सं०] १. तीर। बाण। २. वह जो पूर्णतः लाल वर्ण का हो [को०]।

सर्वलौह—संज्ञा पुं० [सं०] १. ताँबा। ताम्र। २. बाण। तीर।

सर्ववर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंभारी का पेड़।
सर्ववर्णी—वि० [सं० सर्ववर्णिन्] विभिन्न वर्ण का। विभिन्न जाति या प्रकार का [को०]।
सर्ववल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुलटा स्त्री।
सर्ववागीश्वरेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु [को०]।
सर्ववादी—संज्ञा पुं० [सं० सर्ववादिन्] शिव का एक नाम।
सर्ववास—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।
सर्ववासी—संज्ञा पुं० [सं० सर्ववासिन्] शिव [को०]।
सर्वविक्रयी—वि० [सं० सर्वविक्रयिन्] सभी प्रकार की वस्तुओं को बेचनेवाला।
सर्वविख्यात, सर्वविग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।
सर्वविद्[1]—वि० [सं०] सर्वज्ञ।
सर्वविद[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर। २. ओंकार।
सर्वविद्य—वि० [सं०] समग्र विद्याओं का ज्ञाता। सर्वज्ञ [को०]।
सर्वविश्रंभी—वि० [सं० सर्वविश्रम्भिन्] सबका विश्वास करनेवाला। प्रत्येक का विश्वास करनेवाला [को०]।
सर्ववीर—वि० [सं०] जिसके बहुत से पुत्र हों।
यौ०—सर्ववीरजित् = समस्त वीरों को जीतनेवाला।
सर्ववेत्ता—वि० [सं० सर्ववेतृ] सर्वविद्। सर्वज्ञ।
सर्ववेद—वि० [सं०] सब वेदों का जाननेवाला। पूर्णतः ज्ञानवान्।
सर्ववेदस्—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अपनी यज्ञ में दान कर दे।
सर्ववेदस—संज्ञा पुं० [सं०] १. सारी संपत्ति। सारा मालमता। २. वह यज्ञ जिसमें समग्र संपत्ति दान कर दी जाय (को०)। ३. दे० 'सर्ववेदस्' (को०)।
सर्ववेदसी—वि० [सं० सर्ववेदसिन्] जो अपनी समग्र संपत्ति का दान कर दे [को०]।
सर्ववेदी—वि० [सं० सर्ववेदिन्] जो सब कुछ जानता हो। सर्वज्ञ [को०]।
सर्ववेशी—संज्ञा पुं० [सं० सर्ववेशिन्] नट। अभिनेता [को०]।
सर्ववैनाशिक—संज्ञा पुं० [सं०] आत्मा आदि सबको नाशवान् माननेवाला। क्षणिकवादी। बौद्ध।
सर्वव्यापक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सर्वव्यापी'।
सर्वव्यापी[1]—वि० [सं० सर्वव्यापिन्] [वि० स्त्री० सर्वव्यापिनी] सबमें रहनेवाला। सब पदार्थों में रमणशील।
सर्वव्यापी[2]—संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. शिव।
सर्वशः—अव्य० [सं० सर्वशस्] १. पूरा पूरा। २. समूचा। पूर्ण रूप से।
सर्वशक्तिमान्[1]—वि० [सं० सर्वशक्तिमत्] [स्त्री० सर्वशक्तिमती] सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला।
सर्वशक्तिमान्[2]—संज्ञा पुं० ईश्वर।
सर्वशांतिकृत्—संज्ञा पुं० [सं० सर्वशान्तिकृत्] दुष्यंत के पुत्र भरत का एक नाम [को०]।
सर्वशून्य—वि० [सं०] १. बिलकुल खाली। पूर्णतः रिक्त। २. जिसके लिये सब शून्य या अस्तित्वविहीन हो [को०]।
सर्वशून्यवादी—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध।
सर्वशून्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] दरिद्रता (जिसमें सब कुछ सूना सूना प्रतीत होता है)।
सर्वशूर—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।
सर्वश्री—वि० [सं०] जहाँ सभी लोग श्रीयुक्त हों। अनेक व्यक्तियों का नाम एक साथ आने पर सब के लिये एक बार आरंभ में इसका प्रयोग होता है। जैसे, सर्वश्री अमुक, फलाँ आदि। यह प्रयोग आधुनिक है और अंग्रेजी शब्द 'मेसर्स' का अनुवाद है।
सर्वश्रेष्ठ—वि० [सं०] सब में बड़ा। सब से उत्तम।
सर्वश्वेता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक ओषधि का नाम। २. एक प्रकार का विषैला कीड़ा। सर्षपिक। (सुश्रुत)।
सर्वसंगत—संज्ञा पुं० [सं० सर्वसङ्गत] षष्टिक धान्य। साठी धान।
सर्वसंज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बहुत बड़ी संख्या [को०]।
सर्वसंभव—संज्ञा पुं० [सं० सर्वसम्भव] वह जो सबका उत्पत्तिस्थान या मूल हो। [को०]।
सर्वसंमत—वि० [सं० सर्वसम्मत] जिसके पक्ष में सभी लोग सहमत हों [को०]।
सर्वसंमति—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्वसम्मति] सभी सदस्यों की राय [को०]।
सर्वसंस्थ—वि० [सं०] १. सर्वव्यापक। २. सर्वविनाशक [को०]।
सर्वसंस्थान—वि० [सं०] सब रूपों में रहनेवाला। सर्वरूप।
सर्वसंहार—संज्ञा पुं० [सं०] काल।
सर्वसंहारी—वि० [सं० सर्वसंहारिन्] दे० 'सर्व समाहर'।
सर्वसख—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जन। सबका मित्र। साधु पुरुष [को०]।
सर्वसन्नाह—संज्ञा पुं० [सं०] पूरी तौर से सेना को एकत्र और शास्त्र-सज्ज करना।
सर्वसमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निष्पक्षता। समता।
सर्वसमाहर—वि० [सं०] सबका विनाश करनेवाला [को०]।
सर्वस(५)—वि० [सं० सर्वस्व] दे० 'सर्वस्व'।
सर्वसर—संज्ञा पुं० [सं०] मुँह का एक रोग जिसमें छाले से पड़ जाते हैं तथा खुजली तथा पीड़ा होती है।
विशेष—यह तीन प्रकार का होता है—वातज, पित्तज और कफज। वातज में मुख में सुई चुभने की सी पीड़ा होती है। पित्तज में पीले या लाल रंग के दाहयुक्त छाले पड़ते हैं। कफज में पीड़ारहित खुजली होती है।
सर्वसह—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सब कुछ सहन करे। सहनशील व्यक्ति। २. गूगल। गुग्गुल।
सर्वसहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धरित्री। सर्वसहा पृथ्वी [को०]।
सर्वसांप्रत—संज्ञा पुं० [सं० सर्वसाम्प्रत] सर्वत्र वर्तमान रहने का भाव। सर्वव्यापकता [को०]।
सर्वसाक्षी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वसाक्षिन्] १. वह जो सब कुछ देखता हो। ईश्वर। परमात्मा। २. अग्नि। ३. वायु।

सर्वसाद--वि० [सं०] १. समग्र जगत् जिसमें लीन हो। २. जिसमें सब कुछ लीन हो (को०)।

सर्वसाधन--संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। स्वर्ण। २. धन। ३. शिव का एक नाम। ४. वह जो सब कुछ का साधन कर सकता हो। सब कुछ सिद्ध करनेवाला (को०)। ५. हर एक प्रकार का साधन या उपकरण।

सर्वसाधारण¹--संज्ञा पुं० [सं०] साधारण लोग। जनता। आम लोग।

सर्वसाधारण²--जो सब में पाया जाता हो। आम। सामान्य।

सर्वसामान्य--वि० [सं०] जो सब में एक सा पाया जाय। मामूली।

सर्वसारंग--संज्ञा पुं० [सं० सर्वसारङ्ग] एक नाग का नाम।

सर्वसार--संज्ञा पुं० [सं०] सब का सारभूत पदार्थ या सार तत्व।

सर्वसाह--वि० [सं०] जो सब कुछ सह ले। सब कुछ सह लेनेवाला। पूर्णतः सहनशील [को०]।

सर्वसिद्धा--संज्ञा स्त्री० [सं०] चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी ये तीन तिथियाँ।

सर्वसिद्धार्थ--वि० [सं०] जिसके सभी अर्थ या प्रयोजन सिद्ध हो चुके हों। जिसकी सभी कामनाएँ पूर्ण हों [को०]।

सर्वसिद्धि--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सब कार्यों और कामनाओं का पूरा होना। २. पूर्ण तर्क। ३ बिल्व वृक्ष। श्रीफल। बेल।

सर्वसुलभ--वि० [सं०] जो सबको सुलभ हो। जिसे सब लोग सुभीते से प्राप्त कर सकें।

सर्वसौवर्ण--वि० [सं०] जो पूर्णतः स्वर्णनिर्मित हो [को०]।

सर्वस्तोम--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वस्व--संज्ञा पुं० [सं०] १. जो कुछ अपना हो वह सब। २. किसी की सारी संपत्ति। सब कुछ। कुल मालमता।

यौ०--सर्वस्वदंड = सारी संपत्ति जब्त कर लेने का दंड। सर्वस्वदक्षिण = वह यज्ञ जिसमें समग्र संपत्ति का दान कर दिया जाय। सर्वस्वसंधि = दे० 'क्रम में'। सर्वस्वहरण, सर्वस्वहार = (१) सब कुछ हरण करना या मूस लेना। (२) दे० 'सर्वस्वदंड'।

सर्वस्वसंधि--संज्ञा स्त्री० [सं० सर्वस्वसन्धि] सर्वस्व देकर शत्रु से की हुई संधि।

विशेष--कौटिल्य ने कहा है कि शत्रु के साथ यदि ऐसी संधि करनी पड़े तो राजधानी को छोड़कर शेष सब उसको सुपुर्द कर देना चाहिए।

सर्वस्वामी--वि० [सं० सर्वस्वामिन्] सब का स्वामी या प्रभु [को०]।

सर्वस्वार--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वस्वी--संज्ञा पुं० [सं० सर्वस्विन्] [वि० स्त्री० सर्वस्विनी] ब्रह्मवैवर्त्त-पुराण के अनुसार एक जाति। नापित पिता और गोप माता से उत्पन्न एक संकर जाति।

सर्वहर--संज्ञा पुं० [सं०] १. सब कुछ हर लेनेवाला। २. वह जो किसी की सारी संपत्ति का उत्तराधिकारी हो। ३. महादेव। शंकर। ४. यमराज। ५. काल।

सर्वहरण, सर्वहार--संज्ञा पुं० [सं०] सर्वस्व का हरण। समग्र संपत्ति का हरण [को०]।

सर्वहारा--संज्ञा पुं० [सं० सर्व + हिं० हारना] वह जिसके पास कुछ भी न हो। समाज का पिछड़ा हुआ निम्नतम श्रमिक वर्ग। कमकर, श्रमिक, मजदूर वर्ग के लोग (अं० प्रोलेटेरियट)।

सर्वहारी¹--वि० [सं० सर्वहारिन्] [वि० स्त्री० सर्वहारिणी] सब कुछ हरण करनेवाला।

सर्वहारी²--संज्ञा पुं० एक प्रेत [को०]।

सर्वहित¹--संज्ञा पुं० [सं०] १. शाक्य मुनि। गौतम बुद्ध। २. सबका कल्याण। ३. मरिच। मिर्च।

सर्वहित²--वि० जो सबके लिये हित पथ्य या कल्याणकारी हो [को०]।

सर्वहित कर्म--संज्ञा पुं० [सं०] सामाजिक समारोह, उत्सव या जलसा आदि।

विशेष--कौटिल्य ने लिखा है कि जो नाटक आदि सामाजिक जलसों में योग न दे, उसे उसमें संमिलित होने या उसे देखने का अधिकार नहीं है; उसे हटा देना चाहिए। यदि न हटे तो वह दंड का भागी हो।

सर्वांग--संज्ञा पुं० [सं० सर्वाङ्ग] १. संपूर्ण शरीर। सारा बदन। जैसे,--सर्वांग में तैलमर्दन। २. शिव का एक नाम (को०)। ३. सब अवयव या अंश। ४. सब वेदांग।

सर्वांगपूर्ण--वि० [सं० सर्वाङ्गपूर्ण] सब प्रकार से पूर्ण। जिसके सभी अंग या अवयव पूर्ण हों।

सर्वांगरूप--संज्ञा पुं० [सं० सर्वाङ्ग रूप] शिव का एक नाम।

सर्वांगसुदर--वि० [सं० सर्वाङ्गसुन्दर] जो हर तरह से सुंदर हो।

सर्वांगिक--वि० [सं० सर्वाङ्गिक] सभी अंगों का। जो सब अंगों के काम आए। जैसे, गहना [को०]।

सर्वांगीण--वि० [सं० सर्वाङ्गीण] १. जो सभी अंगों में व्याप्त या उनसे संबंधित हो। जैसे, सर्वांगीण स्पर्श। २. वेदांगों से संबद्ध [को०]।

सर्वांत--संज्ञा पुं० [सं० सर्वान्त] सब का अंत या विनाश।

यौ०--सर्वांतकृत् = दे० 'सर्वांतक'।

सर्वांतक--वि० [सं० सर्वान्तक] सब का अंतक या नाशक। सबका विनाशक या अंत करनेवाला [को०]।

सर्वांतरस्थ--वि० [सं० सर्वान्तरस्थ] सब के अंतर में स्थित या रहनेवाला। सब के भीतर निवास करनेवाला।

सर्वांतरात्मा--संज्ञा पुं० [सं० सर्वान्तरात्मन्] भगवान्। ईश्वर।

सर्वांतर्यामी--संज्ञा पुं० [सं० सर्वान्तर्यामिन्] ईश्वर। परमात्मा।

सर्वांत्य--संज्ञा पुं० [सं० सर्वान्त्य] वह पद्य जिसके चारों चरणों के अंत्याक्षर एक से हों।

सर्वाकार--क्रि० वि० [सं०] पूर्ण रूप से। पूर्णतः।

सर्वाक्ष--संज्ञा पुं० [सं०] १. रुद्राक्ष। शिवाक्ष। २. वह जो सबको देखता हो।

सर्वाक्षी--संज्ञा स्त्री० [सं०] दुग्धिका। दुधिया घास। दुद्धी।

सर्वाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] पारद। पारा।

सर्वाजीव—वि० [सं०] सबको जीविका देनेवाला। सबके योगक्षेम की व्यवस्था करनेवाला।

सर्वाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा। पार्वती। शर्वाणी।

सर्वातिथि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सबका आतिथ्य करे। वह जो सब आए गए लोगों का सत्कार करे।

सर्वातिशायी—वि० [सं० सर्वातिशायिन्] सबसे आगे बढ़ जानेवाला। जो सबसे प्रधान या श्रेष्ठतम हो।

सर्वातोद्यपरिग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वात्मा—संज्ञा पुं० [सं० सर्वात्मन्] १. सबकी आत्मा। सारे विश्व की आत्मा। संपूर्ण विश्व में व्याप्त चेतन सत्ता। ब्रह्म। २. शिव का एक नाम। ३. जिन। अर्हत्।

सर्वादृश—वि० [सं०] सबके समान। अन्यों के समान।

सर्वाधिक—वि० [सं०] सबसे अधिक। सबसे आगे [को०]।

सर्वाधिकार—संज्ञा पुं० [सं०] १. सब कुछ करने का अधिकार। पूर्ण प्रभुत्व। पूरा इख्तियार। २. सब प्रकार का अधिकार।

सर्वाधिकारी—संज्ञा पुं० [सं० सर्वाधिकारिन्] १. पूरा अधिकार रखनेवाला। वह जिसके अधिकार में पूरा इख्तियार हो। २. हाकिम। ३. निरीक्षणकर्ता। निरीक्षक। ४. सबका प्रधान। अध्यक्ष (को०)।

सर्वाधिपत्य—संज्ञा पुं० [सं०] सबपर प्रभुत्व या आधिपत्य [को०]।

सर्वाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सबपर शासन करता हो [को०]।

सर्वानुकारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शालपर्णी।

सर्वानुकारी—वि० [सं० सर्वानुकारिन्] [वि० स्त्री० सर्वानुकारिणी] सबका अनुकरण या अनुगमन करनेवाला [को०]।

सर्वानुक्रमणिका, सर्वानुक्रमणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सभी वस्तुओं या विषयों की क्रमबद्ध ब्यौरेवार सूची।

सर्वानुभू—वि० [सं०] सबका अनुभव करनेवाला। जो सबकी अनुभूति करता हो।

सर्वानुभूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समग्र की, सबकी अनुभूति। वह अनुभूति जो व्यापक हो। २. श्वेत त्रिवृता या निसोथ [को०]।

सर्वान्न—संज्ञा पुं० [सं०] हर तरह का अन्न।

यौ०—सर्वान्नभक्षक, सर्वान्नभोजी = हर तरह का अन्न या खाद्य पदार्थ खानेवाला।

सर्वान्नीन—वि० [सं०] सभी प्रकार के भोज्य पदार्थ खानेवाला। सर्वान्नभोजी [को०]।

सर्वान्य—वि० [सं०] जो पूर्णतः भिन्न हो [को०]।

सर्वापरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] मोक्ष। मुक्ति [को०]।

सर्वाभिभू—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम।

सर्वाभिशंकी—वि० [सं० सर्वाभिशङ्किन्] शंकालु। शक्की स्वभाव का। सबपर शंका करनेवाला [को०]।

सर्वाभिसंधक—संज्ञा पुं० [सं० सर्वाभिसन्धक] सबको धोखा देनेवाला (मनु०)।

सर्वाभिसंधी—वि० [सं० सर्वाभिसन्धिन्] १. सबको धोखा देनेवाला। २. ढोंगी। पाखंडी। बंचक [को०]।

सर्वाभिसार—संज्ञा पुं० [सं०] चढ़ाई के लिये संपूर्ण सेना की तैयारी या सजाव।

सर्वामात्य—संज्ञा पुं० [सं०] किसी परिवार या गृहस्थी में रहनेवाले घर के प्राणी, नौकर चाकर आदि सब लोग। (स्मृति)।

सर्वायिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद निसोथ।

सर्वायस—वि० [सं०] जो पूर्णतः लौहनिर्मित हो। पूर्णतः लोहे का बना हुआ [को०]।

सर्वायुध—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सर्वारण्यक—वि० [सं०] वन में होनेवाली वस्तुओं को ही खानेवाला [को०]।

सर्वार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] समग्र विषय या पदार्थ [को०]।

यौ०—सर्वार्थकर्ता = जो सब वस्तुओं का निर्माण करता हो। सर्वार्थकुशल = सभी विषयों में चतुर या निष्णात। सर्वार्थचिंतक = सबका चिंतन करनेवाला। प्रधान अधिकारी। सर्वार्थसाधक = सभी कार्यों को सिद्ध या पूर्ण करनेवाला। सर्वार्थसाधिका। सर्वार्थसिद्धि।

सर्वार्थसाधन—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सभी प्रयोजनों को सिद्ध करता हो। २. सब प्रयोजन सिद्ध होना। सारे मतलब पूरे होना।

सर्वार्थसाधिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा [को०]।

सर्वार्थसिद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धार्थ। शाक्य मुनि। गौतम बुद्ध।

सर्वार्थसिद्धि[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारे उद्देश्यों का सिद्ध होना। लक्ष्य पूर्ण होना [को०]।

सर्वार्थसिद्धि[2]—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों का एक देव वर्ग [को०]।

सर्वार्थानुसाधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक नाम। सर्वार्थसाधिका [को०]।

सर्वालोककर—संज्ञा पुं० [सं०] समाधि का एक प्रकार [को०]।

सर्वावसर—संज्ञा पुं० [सं०] आधी रात।

सर्वावसु—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की एक किरण का नाम।

सर्वावास—वि० [सं०] दे० 'सर्वावासी'।

सर्वावासी—वि० [सं० सर्वावासिन्] जिसका निवास सर्वत्र हो [को०]।

सर्वाशय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सबका शरण या आधारभूत स्थान। २. शिव का एक नाम।

सर्वाशी—वि० [सं० सर्वाशिन्] [वि० स्त्री० सर्वाशिनी] सब कुछ खानेवाला। सर्वभक्षी। (स्मृति)।

सर्वाश्य—संज्ञा पुं० [सं०] सब कुछ खाना। सर्वभक्षण।

सर्वाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सबका आश्रय स्थान हो। सबको आश्रय देनेवाला, शिव [को०]।

सर्वास्तिवाद—संज्ञा पुं० [सं०] यह दार्शनिक सिद्धांत कि सब वस्तुओं की वास्तव सत्ता है, वे असत् नहीं हैं।

विशेष—यह बौद्ध मत की वैभाषिक शाखा के चार भिन्न भिन्न मतों में से एक है जिसके प्रवर्त्तक गौतम बुद्ध के पुत्र राहुल माने जाते हैं।

सर्वास्तिवादी —वि०, संज्ञा पुं० [सं० सर्वास्तिवादिन्] सर्वास्तिवाद मत का माननेवाला बौद्ध।

सर्वास्त्र—वि० [सं०] सब प्रकार के शस्त्रास्त्रों से युक्त। शस्त्रास्त्रों से सज्जित [को०]।

सर्वास्त्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैनों की सोलह विद्या देवियों में से एक।

सर्विस—संज्ञा स्त्री० [अं०] १. नौकरी। चाकरी। २. सेवा। सुश्रूषा। परिचर्या।

सर्वीय—वि० [सं०] १. सबका। जो सबसे संबद्ध हो। २. जो जनसाधारण के लिये उपयुक्त हो। सर्वोपयुक्त [को०]।

सर्वे संज्ञा पुं० [अं०] १ भूमि की नापजोख। पैमाइश। २. वह सरकारी विभाग जो भूमि को नापकर उसका नक्शा बनाता है।

सर्वेयर—संज्ञा पुं० [अं०] वह जो सर्वे अर्थात् जमीन की नापजोख करता हो। पैमाइश करनेवाला। अमीन।

सर्वेश, सर्वेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सबका स्वामी। सबका मालिक। २. ईश्वर। ३. चक्रवर्त्ती राजा। ४. शिव। ५. एक प्रकार की ओषधि।

सर्वेसर्वा—वि० [सं० सर्व] १. वह व्यक्ति जिसे किसी मामले में सब कुछ करने का अधिकार हो। २. सर्वप्रधान कर्त्ता धर्ता।

सर्वोत्तम—वि० [सं०] सबसे उत्तम। जिससे अच्छा दूसरा न हो [को०]।

सर्वोदय—संज्ञा पुं० [सं०] सभी के उदय या उत्थान की भावना से आचार्य विनोबा भावे द्वारा प्रवर्तित स्वतंत्र भारत का एक संघटन।

सर्वोपकारी—वि० [सं० सर्वोपकारिन्] सबका मददगार। जो सबकी सहायता करे।

सर्वोपरि—वि० [सं०] सबसे ऊपर या बढ़कर। सर्वश्रेष्ठ।

सर्वोपाधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वे गुण जो सबमें साधारणतः पाए जाते हों। सर्वसामान्य गुण [को०]।

सर्वौघ—संज्ञा पुं० [सं०] १. सर्वांगपूर्ण सेना। २. दे० 'सर्वाभिसार'। ३. एक प्रकार का मधु या शहद।

सर्वौषध—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सर्वौषधि'।

सर्वौषधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आयुर्वेद में ओषधियों का एक वर्ग जिसके अंतगर्त दस जड़ी बूटियाँ हैं।

विशेष—राजनिघंटु के अनुसार कुष्ठ, मांसी, हरिद्रा, वचा, शैलेय, चंदन, मुरा, रक्त चंदन, कर्पूर और मुस्तक तथा शब्दचंद्रिका के अनुसार मुरा, माँसी, वचा, कुष्ठ, शैलेय, रजनी द्वय, शटी चंपक और मोथा इस वर्ग में गिनाई गई हैं।

सर्षफ—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर्शफ़, तुल० सं० सर्षप] दे० 'सर्षप'।

सर्शप—संज्ञा पुं० [सं०] १. सरसों। २. सरसों भर का मान या तौल। ३. एक प्रकार का विष।

यौ०—सर्षपकंद। सर्षपकण=सरसों का दाना। सर्षपतैल। सर्षपनाल। सर्षपशाक=सरसों का साग। सर्षपस्नेह=सरसों का तेल।

सर्षपकंद—संज्ञा पुं० [सं० सर्षपकंद] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ विष होती है।

सर्षपक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साँप।

सर्षपकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक विषैला कीड़ा। २. एक प्रकार का चर्म रोग (को०)।

सर्षपतैल—संज्ञा पुं० [सं०] सरसों का तेल।

सर्षपनाल—संज्ञा पुं० [सं०] सरसों का साग।

सर्षपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद सरसों।

सर्षपारुण—संज्ञा पुं० [सं०] पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार असुरों का एक गण।

सर्षपिक—संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला कीड़ा जिसके काटने से आदमी मर जाता है।

सर्षपिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का लिंग रोग।

विशेष—इस रोग में लिंग पर सरसों के समान छोटे छोटे दाने निकल आते हैं। यह रोग प्रायः दुष्ट मैथुन से होता है।

२. मसूरिका रोग का एक भेद। ३. सर्षपिक नाम का जहरीला कीड़ा। दे० 'सर्षपिक'।

सर्षपी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्राविका। २. सफेद सरसों। ३. ममोला। खंजन पक्षी। ४. एक प्रकार के छोटे दाने जो शरीर पर निकल आते हैं।

सर्सों—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरसों] दे० 'सरसों'।

सर्हद—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरहद] दे० 'सरहद'।

सलंबा नोन—संज्ञा पुं० [सलंबा ? + हिं० नोन] कचिया नोन। काच लवण।

सल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल। पानी। २. सरल वृक्ष। ३. एक प्रकार का कीड़ा जो प्रायः घास में रहता है। इसे बोंट भी कहते हैं।

सल[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं०] १. सिकुड़न। सिलवट। २. तह। पर्त।

सलई—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] १. शल्लकी वृक्ष। चीढ़। वि० दे० 'चीढ़'। २. चीढ़ का गोंद। कुंदुर।

सलक—संज्ञा पुं० [अ०] चुकंदर। कंदशाक।

सलक्षण—वि० [सं०] १. समान लक्षणों से युक्त। २. चिह्न या लक्षणयुक्त [को०]।

सलखपात—संज्ञा पुं० [सं० शल्क + पद] कच्छप। कछुआ।

सलगा—वि० [सं० सलग्न] पूरा का पूरा। कुल। समग्र। जो टूटा न हो। उ०—कठिन समैया कलिकाल को कुटिल दैया सलग रुपैया भैया कापै दियो जात है।—कविता कौ०, भा० १, पृ० ३६०।

सलगम—संज्ञा पुं० [फ़ा० शलजम] दे० 'शलजम'।

सलगा संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] शल्लकी। सलई। चीढ़।

सलग्नक—वि० [सं०] जो (ऋण) प्रतिभू अर्थात् जामिन देकर लिया गया हो [को०]।

सलज[1]—वि० [सं० सलज्ज] दे० 'सलज्ज'।

सलज[2]—संज्ञा पुं० [सं० सल (=जल)] पहाड़ी बरफ का पानी।

सलजम—संज्ञा पुं० [फ़ा० शलजम] दे० 'शलजम'।

सलज्ज—वि० [सं०] जिसे लज्जा हो। शर्म और हयावाला। लज्जाशील।

सलटुक—संज्ञा पुं० [सं०] चौलाई का साग।

सलतंत†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सलतनत] १. सुभीता। आराम। २. व्यवस्था। प्रबंध जुगाड़।

सलतनत—संज्ञा स्त्री० [अ० सल्तनत] १. राज्य। बादशाहत। २. साम्राज्य। ३. इंतजाम। प्रबंध।

मुहा०—सलतनत बैठना=प्रबंध ठीक होना। इंतजाम बैठना।

४. सुभीता। आराम। जैसे,—पहले जरा सलतनत से बैठ लो, तब बातें होंगी।

सलना[१]—क्रि० अ० [सं० शल्य] १. साला जाना। छिदना। भिदना। २. किसी छेद में किसी चीज का डाला या पहनाया जाना। ३. गड़ना। चुभना।

सलना[२]—संज्ञा पुं० लकड़ी छेदने का बरमा।

सलना[३]—संज्ञा पुं० [सं०] मोती।

सलपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दालचीनी। गुड़त्वक्।

सलपन—संज्ञा पुं० [देश०] दो तीन हाथ ऊँची एक झाड़ी जिसकी टहनियों पर सफेद रोएँ होते हैं।

विशेष—यह प्रायः सारे भारत, लंका, बरमा, चीन और मलाया में पाई जाती है। यह वर्षा ऋतु में फूलती है। इसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है।

सलफ—संज्ञा पुं० [अ० सलफ़] पूर्वपुरुष। पूर्वज। पुराने जमाने के पुरखे लोग [को०]।

सलब[१]—वि० [अ० सल्ब] नष्ट। बरबाद। जैसे,—साल ही भर में उन्होंने बाप दादा की सारी कमाई सलब कर दी।

सलब[२]—संज्ञा पुं० दे० 'सल्ब'।

सलभ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शलभ] दे० 'शलभ'।

सलमह—संज्ञा पुं० [फ़ा०] बथुवा नाम का साग।

सलमा—संज्ञा पुं० [अ० सलम ?] सोने या चाँदी का बना हुआ चमकदार गोल लपेटा हुआ तार जो टोपी, साड़ी आदि में बेलबूटे बनाने के काम में आता है। बादला।

सलवट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिलवट] दे० 'सिलवट'।

सलवन—संज्ञा पुं० [सं० शालिपर्णी] सरिवन।

सलवात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बरकत। २. रहमत। मेहरबानी। ३. गाली। दुर्वचन। कुवाच्य।

क्रि० प्र०—सुनाना।

सलवार—संज्ञा पुं० [फ़ा० शलवार] एक प्रकार का ढीला पायजामा जिसमें चुन्नटें रहती हैं।

सलसल बोल—संज्ञा पुं० [अ०] बहुमूत्र रोग या मधुप्रमेह नामक रोग।

सलसलाना[१]—क्रि० अ० [अनु०] १. धीरे धीरे खुजली होना। सरसराहट होना। २. गुदगुदी होना। ३. कीड़ों का पेट के बल चलना। सरसराना। रेंगना। ४. आर्द्र या गीला होने से कार्य के अनुपयुक्त होना।

सलसलाना[२]—क्रि० स० १. खुजलाना। २. गुदगुदाना। ३. शीघ्रता से कोई कार्य करना।

सलसलाहट—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. सलसल शब्द या ध्वनि। २. सलसलाने का भाव या क्रिया। ३. खुजली। खारिश। ४. गुदगुदी। कुलकुली।

सलसी—संज्ञा स्त्री० [देश०] माजूफल की जाति का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो बूक भी कहलाता है। विशेष दे० 'बूक'।

सलहज—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यालजाया] साले की पत्नी। सरहज।

सला—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. निमंत्रित करना। २. आवाज देना। बुलाना [को०]।

सलाई[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शलाका] १. धातु की बनी हुई कोई पतली छोटी छड़। जैसे,—सुरमा लगाने की सलाई। घाव में दवा भरने की सलाई। मोजा या गुलूबंद बुनने की सलाई।

मुहा०—सलाई फेरना=(१) आँखों में सुरमा या औषध लगाना। (२) सलाई गरम करके अंधा करने के लिये आँखों में लगाना। आँखें फोड़ना।

२. दियासलाई। माचिस।

सलाई[२]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सालना] १. सालने की क्रिया या भाव। २. सालने की मजदूरी।

सलाई[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] १. सलई। शल्लकी। २. चीड़ की लकड़ी।

सलाक[१]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सोने या चाँदी की सलाई [को०]।

सलाक(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सलाख़] बाण। तीर। उ०—शुद्ध सलाक समान लसी अति रोषमयी दृग दीठि तिहारी।—केशव (शब्द०)।

सलाकना†—क्रि० अ० [सं० शलाका+हिं० ना (प्रत्य०)] सलाई या इसी तरह की और किसी चीज से किसी दूसरी चीज पर लकीर खींचना। सलाई की सहायता से चिह्न करना।

सलाख—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सलाख़, मि० सं० शलाका] १. लोहे आदि धातु की बनी हुई छड़। २. शलाका। सलाई। ३. लकीर। खत।

सलाजीत—संज्ञा स्त्री० [हिं० शिलाजीत] दे० 'शिलाजीत'।

सलात—संज्ञा स्त्री० [अ०] नमाज [को०]।

सलातीन—संज्ञा पुं० [अ० सुलतान का बहु व०] शासक वर्ग [को०]।

सलाद—संज्ञा पुं० [अं० सैलाड] १. गाजर, मूली, राई, प्याज आदि पत्तों का अंगरेजी ढंग से सिरके आदि में डाला अचार। २. एक विशिष्ट जाति के कंद के पत्ते जो प्रायः कच्चे खाए जाते हैं और बहुत पाचक होते हैं। इसके कई भेद होते हैं।

सलाबत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कठोरता। सख्ती। २. प्रताप। शौर्य। वीरता [को०]।

सलाम—संज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम करने की क्रिया। प्रणाम। बंदगी। आदाब।

मुहा०—दूर से सलाम करना = किसी बुरी वस्तु के पास न जाना। किसी बुरे आदमी से दूर रहना। जैसे,—उनको तो हम दूर ही से सलाम करते हैं। सलाम है = हम दूर रहना चाहते हैं। बाज आए। जैसे,—अगर उनका यही रंग ढंग है, तो फिर हमारा तो यहीं से उनको सलाम है। सलाम लेना = सलाम का जवाब देना। सलाम कबूल करना। सलाम देना = (१) सलाम करना। (२) सलाम कहलाना। सलाम करके चलना = किसी से नाराज होकर चलना। अप्रसन्न होकर बिदा होना। सलाम फेरना = (१) नमाज खतम करना। (२) किसी से अप्रसन्न होकर उसका प्रणाम न स्वीकार करना।

यौ०—सलाम अलैक या सलाम अलैकम = अभिवादन। सलाम। तुम सलामत रहो, तुमपर सलामती हो इस प्रकार परस्पर अभिवादन। सलामो पयाम = (१) किसी का प्रणाम और संदेशा आना या भेजना। (२) विवाह की बातचीत।

सलामकराई—संज्ञा स्त्री० [अ० सलाम + हिं० कराई] १. सलाम करने की क्रिया या भाव। २. वह धन जो कन्या पक्षवाले मिलनी के समय पर वर पक्ष के लोगों को देते हैं। (मुसल०)।

सलामत[१]—वि० [अ०] १. सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ रक्षित। जैसे,—घर तक सलामत पहुँचे, तब समझना।

यौ०—सही सलामत।

२. जीवित और स्वस्थ। तंदुरुस्त और जिंदा। जैसे,—आप सलामत रहें; हमें बहुतेरा मिला करेगा। ३. कायम। बरकरार। जैसे,—सिर सलामत रहे, टोपियाँ बहुत मिलेंगी। ४. अखंड। अक्षत।

सलामत[२]—क्रि० वि० कुशलपूर्वक। खैरियत से।

सलामत[३]—संज्ञा स्त्री० शामिल या पूरा होने का भाव। अखंडित और संपूर्ण होने का भाव।

सलामती—संज्ञा स्त्री० [अ० सलामत + ई (प्रत्य०)] १. तंदुरुस्ती। स्वस्थता। २. कुशल। क्षेम। जैसे,—हम तो हमेशा आपकी सलामती चाहते हैं।

मुहा०—सलामती से = ईश्वर की कृपा से। परमात्मा के अनुग्रह से।

विशेष—इस मुहावरे का प्रयोग प्रायः स्त्रियाँ और विशेषतः मुसलमान स्त्रियाँ, कोई बात कहते सयय, शुभ भावना से करती हैं। जैसे,—सलामती से उनके दो दो लड़के हैं।

३. एक प्रकार का मोटा कपड़ा। ४. जीवन। जिंदगी।

सलामी[१]—संज्ञा स्त्री० [अ० सलाम + ई (प्रत्य०)] १. प्रणाम करने की क्रिया। सलाम करना। जैसे,—दूल्हे को सलामी में १०) मिले थे। २. वर वधू को प्राप्त होनेवाली वह रकम जो सलामी की रस्म में दी जाती है। ३. शस्त्रों से प्रणाम करने की क्रिया। सैनिकों की प्रणाम करने की प्रणाली। सिपाहियाना सलाम। जैसे,—सिपाहियों की सलामी, तोपखाने की सलामी। ४. नजराना। अकोर। भेंट। ५. ढाल। ६. तोपों या बंदूकों की बाढ़ जो किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है।

मुहा०—सलामी उतारना = किसी के स्वागतार्थ बंदूकों या तोपों की बाढ़ दागना।

क्रि० प्र०—दगना।—दागना।—होना।

सलामी[२]—वि० १. सलाम करनेवाला। प्रार्थना या अर्ज करनेवाला। २. ढालवाँ। ढालदार। क्रमशः झुकावदार।

सलार—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया। उ० चकई चकवा और पिदारे। नकटा लेदी सोन सलारे।—जायसी (शब्द०)।

सलासत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मृदुता। नम्रता। २. सरलता। सुगमता। ३. शिष्टता। सभ्यता। ४. वह भाषा जो सरल और अक्लिष्ट शब्दों से युक्त हो। भाषा का अक्लिष्ट, गतिशील और सरल होना [को०]।

सलाह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संमति। परामर्श। राय। मशवरा।

क्रि० प्र०—पूछना। देना।—बताना।—लेना।

मुहा०—सलाह ठहराना = राय पक्की होना संमति निश्चित होना। जैसे,—सब लोगों की सलाह ठहरी है कि कल बाग चलें।

२. अच्छाई। भलाई। ३. मेल। सुलह।

सलाहकार—संज्ञा पुं० [अ० सलाह + फ़ा० कार (प्रत्य०)] वह जो परामर्श देता हो। राय देनेवाला।

सलाही—संज्ञा पुं० [अ० सलाह] सलाहकार। परामर्शदाता। जैसे,—कानूनी सलाही। (भारतीय शासनपद्धति।) (क्व०)।

सलाहीयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अच्छाई। खूबी। भलाई। २. योग्यता। पात्रता। ३. इंद्रियनिग्रह। पारसाई। संयम। ४. विद्वत्ता। ५. गंभीरता [को०]।

सलिंग—वि० [सं० सलिङ्ग] समान लिंग से युक्त। समान चिह्नवाला। सदृश। अनुरूप [को०]।

सलिंगी—वि० [सं० सलिङ्गिन्] जो केवल चिह्न धारण करता हो। पाखंडी। ढोंगी [को०]।

सलि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शर ?] चिता।

सलिता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरिता] नदी। सरिता। उ०—द्रप्पन सम आकास श्रवत जल अमृत हिमकर। उज्जल जल सलिता सु सिद्धि सुंदर सरोज सर।—पृ० रा०, ६१।४२।

सलिल—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल। पानी। २. उत्तराषाढ़ नक्षत्र (को०) (को०)। ३. अश्रु। आँसू (को०)। ४. सलिल बात। एक प्रकार की हवा (को०)। ५. वर्षा का जल (को०)। ६. बहुत बड़ी संख्या (को०)। ७. एक वृत्त (को०)।

सलिलकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सलिलकर्मन्] पितारों के लिये दिया जानेवाला जल। तर्पण [को०]।

सलिलकुंतल—संज्ञा पुं० [सं० सलिलकुंतल] शैवाल। सिवार।

सलिलकुक्कुट—संज्ञा पुं० [सं०] एक जल पक्षी। जलकुक्कुट [को०]।

सलिलक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रेत का तर्पण। जलांजलि। उदकक्रिया। विशेष दे० 'उदकक्रिया'। २. मृतक क्रिया के समय शव को नहलाना [को०]।

सलिलगर्गरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पानी की गगरी [को०]।

सलिलगुरु—वि० [सं०] १. जलपूर्ण। पानी से भरा हुआ। २. अश्रु से परिपूर्ण [को०]।

सलिलचर—वि० [सं०] जल में विचरण करनेवाला जलचर।

यौ०—सलिलचरकेतन=कामदेव का एक नाम।

सलिलज—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल। पद्म। २. वह जो जल से उत्पन्न हो। जलजात। जलजीव या वस्तुएँ।

सलिलजन्मा—संज्ञा पुं० [सं० सलिलजन्मन्] १. कमल। पद्म। २. वह जो जल से उत्पन्न हो। जलजात।

सलिलद[1]—वि० [सं०] सलिल देनेवाला। जल देनेवाला। जो जल दे।

सलिलद[2]—संज्ञा पुं० मेघ। बादल।

सलिलधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोथा। मुस्तक। २. बादल। मेघ (को०)। ३. अमृतपायी। देवता (को०)।

सलिलदायी—वि० [सं० सलिलदायिन्] जल बरसानेवाला। वर्षा करनेवाला [को०]।

सलिलनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] १. जलनिधि। समुद्र। २. सरसी छंद का एक नाम।

सलिलनिपात—संज्ञा पुं० [सं०] जल गिरना। वर्षा होना [को०]।

सलिलनिषेक—संज्ञा पुं० [सं०] जलसिंचन। जल द्वारा सींचना [को०]।

सलिलपति—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल के स्वामी—वरुण। २. समुद्र। सागर।

सलिलप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] सूअर। शूकर।

सलिलभर—संज्ञा पुं० [सं०] ताल। झील। पोखरा [को०]।

सलिलमुच्—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।

सलिलयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. वह वस्तु जो जल में उत्पन्न होती हो।

सलिलरय—संज्ञा पुं० [सं०] जल की धारा। सलिल का प्रवाह [को०]।

सलिलराज—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल का स्वामी, वरुण। २. समुद्र। सागर।

सलिलराशि—संज्ञा पुं० [सं०] १. जलाशय। जलाधार। २. समुद्र। सागर [को०]।

सलिलवात, सलिलवायु—संज्ञा पुं० [सं०] सलिल को संस्पर्श कर के आती हुई वायु।

सलिलस्तंभी—वि० [सं० सलिलस्तम्भिन्] जल की गति का अवरोध करनेवाला। जलस्तंभन करनेवाला [को०]।

सलिलस्थलचर—वि० [सं०] जो जल और स्थल दोनों में विचरण करता हो। जैसे,—हंस, साँप आदि।

सलिलांजलि—संज्ञा स्त्री० [सं० सलिलाञ्जलि] मृतक के उद्देश्य से दी जानेवाली जलांजलि।

सलिलाकर—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। सागर।

सलिलाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

सलिलार्णव—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। सागर।

सलिलार्थी—वि० [सं० सलिलार्थिन्] जल का इच्छुक। प्यासा [को०]।

सलिलालय—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

सलिलाशन—वि० [सं०] केवल जल पीकर रहनेवाला।

सलिलाशय—संज्ञा पुं० [सं०] जलाशय। तालाब।

सलिलाहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो केवल जल पीकर रहता हो। २. केवल जल पीकर रहने की क्रिया।

सलिलेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० सलिलेन्द्र] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

सलिलेंधन—संज्ञा पुं० [सं० सलिलेन्धन] बड़वानल।

सलिलेचर—संज्ञा पुं० [सं०] जल में रहनेवाला जीव। जलचर।

सलिलेश—संज्ञा पुं० [सं०] जल के अधिष्ठाता देवता—वरुण।

सलिलेशय—वि० [सं०] जल में सोनेवाला। जलशायी।

सलिलेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] सलिलेंद्र। वरुण [को०]।

सलिलोद्भव[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल। २. जल में उत्पन्न होनेवाली कोई चीज।

सलिलोद्भव[2]—वि० जल में उत्पन्न [को०]।

सलिलोपजीवी[1]—वि० [सं० सलिलोपजीविन्] केवल जल पर निर्भर रहनेवाला। जलोपजीवी।

सलिलोपजीवी[2]—संज्ञा पुं० मल्लाह। मछुवा [को०]।

सलिलोपप्लव—संज्ञा पुं० [सं०] जलप्रलय जलप्लावन [को०]।

सलिलौका[1]—संज्ञा पुं० [सं० सलिलौकस्] जोंक। जलौका।

सलिलौका[2]—वि० जल में रहनेवाला [को०]।

सलिलौदन—संज्ञा पुं० [सं०] पकाया हुआ अन्न। ओदन।

सलीका—संज्ञा पुं० [अ० सलीक़ह्] १. काम करने का ठीक ठीक या अच्छा ढग। शऊर। तमीज। २. हुनर। लियाकत। ३. चालचलन। बरताव। ४. तहजीब। सभ्यता।

क्रि० प्र०—आना।—सिखाना।—सीखना।—होना।

सलीकामंद—वि० [अ० सलीक़ह् + फ़ा० मंद (प्रत्य०)] १. जिसे सलीका हो। शऊरदार। तमीजदार। २. हुनरमंद। ३. शिष्ट। सभ्य।

सलीकेदार—वि० [अ० सलीक़ह् दार] दे० 'सलीकामंद'।

सलीखा—संज्ञा पुं० [सं० शल्क (=छिलका)] तज। त्वक्पत्र।

सलीता—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत मोटा कपड़ा जो प्रायः मारकीन या गजी की तरह का होता है।

सलीपर—संज्ञा पुं० [अं० स्लिपर] १. एक प्रकार का हलका जूता जिसके पहनने पर पंजा ढँका रहता है और एँड़ी खुली रहती है।

आराम पाई। सलपट जूती। २. वह लकड़ी का तख्ता जो रेल की पटरियों के नीचे बिछाया रहता है। दे० 'स्लीपर'। ३. हाल जो पहिए पर चढ़ाई जाती है।

सलीब—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्राणदंड देने की टिकठी जिसपर ईसा मसीह को चढ़ाया गया था। २. ईसाइयों का धार्मिक चिह्न जिसे वे पहने रहते हैं। इसका आकार † ऐसा है। फाँसी। सूली [को०]।

सलीबी—संज्ञा पुं० [अ०] सलीब का आकार जिसका धार्मिक चिह्न हो, ईसाई [को०]।

सलीम[1]—वि० [अ०] १. गंभीर शांत। विनीत। २. ठीक। सही। ३. स्वस्थ [को०]।

सलीम[2]—संज्ञा पुं० अकबर के पुत्र जहाँगीर का नाम।

यौ०—सलीमचिश्ती = अकबर के समय में फतहपुर सीकरी में रहनेवाले एक प्रसिद्ध मुसलमान फकीर। सलीमशाही = दिल्ली में बननेवाला एक तरह का सुंदर मखमली जूता। सलेमशाही पादत्राण।

सलीमी—संज्ञा स्त्री० [अ० सलीम] एक प्रकार का कपड़ा।

सलील[1]—वि० [सं०] क्रीड़ाशील। लीलायुक्त [को०]।

सलील[2]—अव्य० १. खेल खेल में। २. स्नेहपूर्वक। सानुराग [को०]।

सलीलगजगामी—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्ध का एक नाम।

सलीस—वि० [अ०] १. सहज। सुगम। आसान। २. जिसका तल बराबर हो। समतल। हमवार। ३. महावरेदार और चलती हुई (भाषा)।

यौ०—सलीसजबान = सरल, मुहावरेदार और चलती हुई भाषा।

सलूक—संज्ञा पुं० [अ०] १. तौर। तरीका। ढंग। (क्व०)। २. बरताव। व्यवहार। आचरण। जैसे,—अपने साथियों के साथ उनका सलूक अच्छा नहीं होता। ३. मिलाप। मेल। सद्भाव। जैसे,—उनके घर में सब लोग सलूक से रहते हैं। ४. ईश्वर की प्राप्ति का प्रयत्न। भगवत्प्राप्ति की चेष्टा (को०)। ५. भलाई। नेकी। उपकार। जैसे,—जहाँतक हो, गरीबों के साथ कुछ न कुछ सलूक करते रहना चाहिए।

सलूका—संज्ञा पुं० [फ़ा० शलूका] स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की कुर्ती। दे० 'शलूका'।

सलून[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. शार्ङ्गधर संहिता के अनुसार एक प्रकार के बहुत छोटे कीड़े। २. जूँ। लीख।

सलून[2]—वि० [सं० सलवण, प्रा० सलूण] लावण्ययुक्त। सलोना।

सलूना†[1]—संज्ञा पुं० [हिं० स + लून (= नमक)] पकी हुई तरकारी या भाजी। (पश्चिम)।

सलूना[2]—वि० दे० 'सलोना'।

सलूनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० स + लोन (= नमक)] चूक या चूका शाक। चुक्रिका।

सलूनोपु[1]—वि० [हिं० स + लोन] दे० 'सलोना'।

सलूनो†[2]—संज्ञा पुं० [सं० श्रावण] एक त्योहार। दे० 'सलोनो'।

सलेक—संज्ञा पुं० [सं०] तैत्तरीय संहिता के अनुसार एक आदित्य का नाम।

सलेप—वि० [सं०] लेपयुक्त। स्नेह पदार्थों से युक्त [को०]।

सलेश—वि० [सं०] संपूर्ण। समग्र [को०]।

सलैना†—संज्ञा पुं० [हि० सालना] काटकर और छीलकर दुरुस्त करना। दे० 'सालना'।

सलैया†—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] शल्लकी। सलई।

सलोक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. नगर। शहर। २. वह जो नगर में रहता हो। नागरिक।

सलोकपु[2]—संज्ञा पुं० [सं० श्लोक, प्रा० सलोक] २. प्रशंसा। कीर्ति।

सलोक[3]—वि० समान। तुल्य। सदृश।

सलोकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] चार प्रकार की मुक्तियों में से एक मुक्ति जिसमें साधक अपने इष्टदेव के लोक में सहनिवास प्राप्त करता है। सालोक्य।

सलोट†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिलवट] दे० 'सिलवट'।

सलोतर—संज्ञा पुं० [सं० शालिहोत्र] पशुओं, विशेषतः घोड़ों की चिकित्सा का विज्ञान।

सलोतरी—संज्ञा पुं० [सं० शालिहोत्री] पशुओं, विशेषतः घोड़ों की चिकित्सा करनेवाला। शालिहोत्री।

सलोन, सलोना—वि० [सं० सलवण, प्रा० सलूण, सलोण, हिं० स + लोन (= नमक)] [वि० स्त्री० सलोनी] १. जिसमें नमक पड़ा हो। नमक मिला हुआ। नमकीन। २. जिसमें नमक या सौंदर्य हो। रसीला। सुंदर। जैसे,—तोरे नैनों श्याम सलोने, जादूभरी कि कटारी। (गीत)।

सलोनापन—संज्ञा पुं० [हिं० सलोना + पन (प्रत्य०)] सलोना होने का भाव।

सलोनो—संज्ञा पुं० [सं० श्रावणी] हिंदुओं का एक त्योहार जो श्रावण मास में पूर्णिमा के दिन पड़ता है। इस दिन लोग राखी बाँधते और बँधवाते हैं। रक्षाबंधन। राखी पूनो।

सलोल—वि० [सं०] अत्यंत चपल। चंचलतायुक्त।

सलोहित—वि० [सं०] १. रक्त वर्ण से युक्त। लाल रंग में रँगा हुआ। २. समान रक्त का। एक ही खून का [को०]।

सलौनापु—वि० [सं० सलवण] दे० 'सलोन,' 'सलोना'।

सल्तनत—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सलतनत'।

सल्ब—संज्ञा पुं० [अ०] १. निवारण। दूर करना। २. विनाश। लोप। खात्मा। दे० 'सलब'। ३. छीनना। हरण करना। ४. आत्मसात् करना। डकार जाना [को०]।

सल्ल—संज्ञा पुं० [सं० सरल] सरल वृक्ष। सररद्रुम।

सल्लका, सल्लकि, सल्लकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शल्लकी वृक्ष। सलई। २. कुंदरू। शल्लकी निर्यास।

सल्लक्षणतीर्थ†—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सल्लक्ष्य—वि० [सं०] १. सदुद्देश्य। २. ठीक लक्ष्य या निशाना [को०]।

सल्लना(पु)—क्रि० स० [सं० शल्यन, हिं० सालना] १. दुःख देना। कष्ट देना। चुभाना। २. दे० 'सालना'।

सल्लम—संज्ञा पुं० स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मोटा कपड़ा। गजी। गाढ़ा।

सल्लाह—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सलाह'।

सल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] शल्लकी। सलई।

सल्लू[१]—वि० [देश०] मूर्ख। बेवकूफ।

सल्लू[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सलना] चमड़े की डोरी।

सल्लोक—संज्ञा पुं० [सं० सत्+लोक] शिष्ट या सज्जन व्यक्ति। भद्र पुरुष। सत्पुरुष [को०]।

सल्व—संज्ञा पुं० [सं० शल्व] दे० 'शल्व'।

सवंशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वृक्ष।

सव[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल। पानी। २. पुष्परस। पुष्पद्रव। मकरंद। ३. यज्ञ। ४. सूर्य। ५. संतान। औलाद। ६. चंद्रमा। ७. सोमलता का रस निकालना (को०)। ८. बलि। तर्पण (को०)। ९. वह जो उत्पादन करता हो (को०)। १०. अर्क या मदार का पौधा (को०)। ११. अनुज्ञा। आज्ञा। आदेश (को०)। १२. प्रोत्साहन। उभारना। प्रेरणा करना (को०)।

सव[२]—वि० अज्ञ। मूर्ख। अनाड़ी।

सव[३]—संज्ञा पुं० [सं० शव] दे० 'शव'। उ०—फिरत सृगाल सज्यौ सव काटत चलत सो सिर लै भागि।—सूर०, ९।१५८।

सवगात†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौगात] दे० 'सौगात'।

सवजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बर्बरी। अजगंधा।

सवत†—संज्ञा स्त्री० [सं० सपत्नी] दे० 'सौत'।

सवति(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—(क) जरि तुम्हारि चह सवति उखारी।—मानस, २।१७। (ख) सेवहि सकल सवति मोहि नीके।—मानस, २।१८।

सवत्स—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सवत्सा] बच्चे के सहित। जिसके साथ बच्चा हो। जैसे,—दान में सवत्स गौ दी जाती है।

सवधूक—वि० [सं०] वधू के साथ। पत्नीसहित [को०]।

सवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसव। बच्चा जनना। २. श्योनाक वृक्ष। सोनापाठा। ३. यज्ञस्नान। ४. सोमपान। ५. यज्ञ। ६. चंद्रमा। ७. पुराणानुसार भृगु के एक पुत्र का नाम। ८. वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम। ९. रोहित मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक ऋषि का नाम। १०. स्वायंभुव मनु के एक पुत्र का नाम। ११. अग्नि का एक नाम। १२. सोमलता को निचोड़कर रस निकालना (को०)। १३. उपहार। बलि (को०)।

यौ०—सवनकाल = आहुति देने, तर्पण आदि का समय। सवनक्रम = यज्ञादि के विभिन्न कृत्यों का क्रम। सवनसंस्था = यज्ञ कर्म का अंत या समाप्ति।

सवनकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सवनकर्मन्] यज्ञकार्य।

सवनमुख—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ का आरंभ।

सवनिक—वि० [सं०] सवन संबंधी। सवन का।

सवनीय—वि० [सं०] सोम तर्पण से संबंधी। सवन संबंधित [को०]।

यौ०—सवनीय पशु = वह पशु जिसकी यज्ञ में बलि चढ़ाई जाय। सवनीय पात्र = सोमरस पीने का पात्र।

सवपुष—वि० [सं० सवपुष्] शरीर के साथ। शरीर सहित। मूर्त [को०]।

सवयस—वि० [सं० सवयस्] दे० 'सवयस्क'।

सवयस्क—वि० [सं०] समान अवस्थावाले। बराबर की उम्रवाले।

सवया[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] सखी। सहचरी। सहेली।

सवया[२]—वि० [सं० सवयस्] हम उम्र। समान अवस्था का।

सवया[३]—संज्ञा पुं० सखा। सहचर। मित्र। वयस्य [को०]।

सवर—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल। २. शिव का एक नाम।

सवररोध्र—संज्ञा पुं० [सं०] पठानी लोध। सफेद लोध।

सवर्ण[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सवर्णा] १. समान। सदृश। एक ही प्रकार का। समान वर्ण का। समान जाति का। ३. एक ही रंग का (को०)। ४. व्याकरण में अक्षरों के समान वर्ग से संबद्ध। एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाला (को०)। ५. गणित में समान 'हर' वाली संख्या (को०)।

सवर्ण[२]—संज्ञा पुं० ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता से उत्पन्न संतान। विशेष दे० 'माहिष्य' [को०]।

सवर्णन—संज्ञा पुं० [सं०] गणित में भिन्नों को समान हर वाली भिन्न के रूप में लाना [को०]।

सवर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पत्नी छाया का एक नाम।

सवर्य—वि० [सं०] वर्य, श्रेष्ठ एवं अच्छे गुणों से युक्त [को०]।

सवहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] निसोथ। त्रिवृत।

सवाँग†—संज्ञा पुं० [हिं० स्वाँग] दे० 'स्वाँग'। उ०—हिलि मिलि करत सवाँग सभा रसकेलि हो। नाउनि मन हरखाइ सुगंधन मेलि हो।—तुलसी ग्रं०, पृ० ६।

सवाँगना(पु)—क्रि० अ० [हिं० स्वाँगना] दे० 'स्वाँगना'।

सवा—संज्ञा स्त्री० [सं० स+पाद] चौथाई सहित। संपूर्ण और एक का चतुर्थांश। चतुर्थांश सहित। जैसे,—सवा चार, अर्थात् चार और एक का चतुर्थांश = $4\frac{1}{4}$।

सवाई[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सवा + ई (प्रत्य०)] १. ऋण का एक प्रकार जिसमें मूल धन का चतुर्थांश ब्याज में देना पड़ता है। २. जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि। ३. मूत्रयंत्र संबंधी एक प्रकार का रोग।

सवाई[२]—वि० १. एक और चौथाई। सवा। २. किसी से बीस या और अधिक बढ चढ़कर उ०—सीसनि टिपारे, उपवीत, पीत पट कटि, दोना बाम करनि सलोने भे सवाई हैं।—तुलसी ग्रं०, पृ० ३०५।

सवाक्—वि० [सं० सवाच्] वाणीयुक्त। वाक्युक्त। बोलता हुआ। अवाक् का उलटा।

सवाक् चित्र--संज्ञा पुं० [सवाक्+चित्र] वह चित्र जिसमें पात्रों के बोलने, गाने आदि की ध्वनि भी सुनाई दे। बोलता हुआ सिनेमा (अं० टॉकी)।

सवागी--संज्ञा पुं० [हिं० सुहागा] सुहागा। टंकण क्षार।

सवाती(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० स्वाती] स्वाती नक्षत्र [को०]।

सवाद(पु)--संज्ञा पुं० [हिं० स्वाद] दे० स्वाद।

सवादिक--वि० [हिं० सवाद+इक (प्रत्य०)] खाने में जिसका स्वाद अच्छा हो। स्वाद देनेवाला। स्वादिष्ट।

सवादिल(पु)--वि० [हिं० सवाद+इल (प्रत्य०)] दे० 'सवादिक'।

सवाब--संज्ञा पुं० [अ०] १. शुभ कृत्य का फल जो स्वर्ग में मिलेगा। पुण्य।

मुहा०--सवाब कमाना=ऐसा काम करना जिसमें पुण्य हो। पुण्य कार्य करना।

२. पलटा। प्रतिफल। बदला। ३. भलाई। नेकी।

सवाया--वि० [हिं० सवा+या (प्रत्य०)] १. दे० 'सवाई'। २. अधिक बढ़ चढ़ कर। उ०--कहि रामानँद सबद सवाया और सबै घट रीता।--रामानंद०, पृ० १३।

सवार¹--संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह जो घोड़े पर चढ़ा हो। अश्वारोही। २. अश्वारोही सैनिक। रिसाले का सिपाही। ३. वह जो किसी चीज, हाथी, घोड़ा, ऊँट यान आदि पर चढ़ा हो। ४. घुड़सवार सिपही।

सवार²--वि० १. किसी चीज पर चढ़ा या बैठा हुआ। जैसे,--वे गाड़ी पर सवार होकर घूमने निकलते हैं। २. नशे में मस्त या मतवाला।

सवार(पु)**³**--संज्ञा पुं० [हिं०] १. प्रभात। सुबह। भोर। २. शीघ्र।

सवारना--क्रि० स० [हिं० सँवारना] दे० 'सँवारना'।

सवारी--संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. किसी चीज पर विशेषतः चलने के लिये चढ़ने की क्रिया। २. वह चीज जिसपर यात्रा आदि के लिये चढ़ते हों। सवार होने की वस्तु। चढ़ने की चीज। जैसे,--घोड़ा, हाथी, मोटर, रेल आदि।

मुहा०--सवारी लेना=सवारी के काम में लाना। सवार होना।

३. वह व्यक्ति जो सवार हो। जैसे--एक्केवाले चार आने फी सवारी माँगते हैं। ४. जलूस। जैसे,--राजा साहब की सवारी बहुत धूम से निकली थी। ५. कुश्ती में अपने विपक्षी को जमीन पर गिराकर उसकी पीठ पर बैठना और उसी दशा में उसे चित करने का प्रयत्न।

क्रि० प्र०--कसना।

६. संभोग या प्रसंग के लिये लिये स्त्री पर चढ़ने की क्रिया। (बाजारू)।

क्रि० प्र०--कसना। - गाँठना।

सवाल--संज्ञा पुं० [अ०] १. पूछने की क्रिया। २. वह जो कुछ पूछा जाय। प्रश्न। ३. अर्जी। दरखास्त। माँग। याचना।

मुहा०--(किसी पर) सवाल देना=(किसी पर) नालिश करना। फरियाद करना।

४. विनती। निवेदन। प्रार्थना। ५. भिक्षा की याचना। ६. गणित का प्रश्न जो उत्तर निकालने के लिये दिया जाता है।

क्रि० प्र०--करना।--निकालना।--देना।

सवालजवाब--संज्ञा पुं० [अ०] १. बहस। वादविवाद। जैसे,--सब बातों में सवालजबाव मत किया करो, जो कहा जाय, वह किया करो। २. तकरार। हुज्जत। झगड़ा।

सवालात--संज्ञा पुं० [अ०] सवाल का बहुवचन। अनेक प्रश्न।

सवालिया--वि० [अ०] जिसमें कोई बात पूछी गई हो। जैसे--सवालिया जुमला।

सवासा--वि० [सं० सवासस्] वस्त्रयुक्त [को०]।

सविकल्प¹--वि० [सं०] १. विकल्प सहित। संदेहयुक्त। संदिग्ध। २. जो किसी विषय के दोनों पक्षों या मतों आदि को, कुछ निर्णय न कर सकने के कारण, मानता हो। ३. ऐच्छिक। इच्छानुकूल (को०)। ४. जो विकल्प या अंतर (ज्ञाता और ज्ञेय में) मानता हो।

सविकल्प²--संज्ञा पुं० १. दो प्रकार की समाधियों में से एक प्रकार की समाधि। वह समाधि जो किसी आलंबन की सहायता से होती है। २. वेदांत के अनुसार ज्ञाता और ज्ञेय के भेद का ज्ञान।

सविकल्पक--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सविकल्प'।

सविकार--वि० [सं०] १. जिसमें विकार हो। विकार वा विकृतियुक्त। २. जो उन्मिषित या विकसित हो रहा हो। ३. (फल, खाद्य आदि) जो सड़ा गला हो। गलित। खराब [को०]।

सविकाश, सविकास--वि० [सं०] १. विकासयुक्त। विस्तारयुक्त। २. विकसित। खिला हुआ। कांतिमान [को०]।

सविग्रह--वि० [सं०] १. शरीरी। विग्रहयुक्त। मूर्तिमान्। देहधारी। २. अर्थवाला। सार्थक। ३. संघर्षरत। झगड़ालू [को०]।

सविचार--संज्ञा पुं० [सं०] चार प्रकार की सविकल्प समाधियों में से एक प्रकार की समाधि।

सविज्ञान--वि० [सं०] १. विज्ञानयुक्त। विशिष्ट ज्ञान सहित। २. विवेकयुक्त। विचारवान्।

सविडालंभ--संज्ञा पुं० [सं० सविडालम्भ] नाट्यशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का परिहास या मजाक।

सवितर्क¹--संज्ञा पुं० [सं०] चार प्रकार की सविकल्प समाधियों में से एक प्रकार की समाधि।

सवितर्क²--वि० वितर्कयुक्त। विचारशील [को०]।

सविता¹--संज्ञा पुं० [सं० सवितृ] १. सूर्य। दिवाकर। २. बारह की संख्या। ३. आक। अर्क। मदार। ४. शिव का एक नाम (को०)। ५. इंद्र (को०)। ६. जगत्स्रष्टा। संसार का रचयिता (को०)। ७. अट्ठाइस व्यासों में से एक (को०)।

सविता²--वि० [वि० स्त्री० सवित्री] जनक। उत्पादक। स्रष्टा [को०]।

सवितातनय--संज्ञा पुं० [सं० सवितृतनय] सूर्य के पुत्र हिरण्यपाणि, यमराज, शनि आदि।

सवितादैवत—संज्ञा पुं० [सं० सवितृदैवत] हस्त नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता सूर्य माने जाते हैं।

सवितापुत्र—संज्ञा पुं० [सं० सवितृपुत्र] सूर्य के पुत्र, हिरण्यपाणि, यम, शनि आदि।

सविताफल—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मेरु के उत्तर के एक पर्वत का नाम।

सवितासुत—संज्ञा पुं० [सं० सवितृसुत] सूर्य के पुत्र, शनैश्चर।

सवितृल--वि [सं०] दे० 'सवित्रिय' (को०)।

सवित्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्रजनन। प्रसव करना। लड़का जनना।

सवित्रिय--वि० [सं०] सूर्य संबंधी। सविता या सूर्य का।

सवित्री--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रसव करानेवाली धाई। धात्री। दाई। २. प्रसव करनेवाली, माता। माँ। ३. गौ।

सविद्य—वि० [सं०] १. विद्वान्। पंडित। २. तुल्य या समान विषय का अध्ययन करनेवाला (को०)।

सविध¹--वि० [सं०] १. निकट। पास। समीप। २. समान। सजातीय। एक ही वर्ग का (को०)।

सविध²--संज्ञा पुं० निकटता। सामीप्य (को०)।

सविध³—अ० विधिपूर्वक। विधिवत्।

सविधि—वि० [सं०] दे० 'सविध'।

सविनय—वि० [सं०] १. विनययुक्त। विनम्र। २. विनम्रता या शिष्टतापूर्वक (को०)।

सविनय अवज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सविनय कानून भंग'।

सविनय कानून भंग—संज्ञा पुं० [सं० सविनय + फ़ा० कानून + हिं० भंग] नम्रता या भद्रतापूर्वक राज्य की किसी ऐसी व्यवस्था या कानून अथवा आज्ञा को न मानना जो अपमानजनक और अन्यायमूलक प्रतीत हो। और ऐसी अवस्था में राज्य की ओर से होनेवाले पीड़न तथा कारादंड आदि को धीरतापूर्वक सहन करना। भद्र अवज्ञा। सविनय अवज्ञा। (सिविल डिसओबीडिएंस)।

सविभक्तिक—वि० [सं०] विभक्तियुक्त (को०)।

सविभाल—संज्ञा पुं० [सं०] नखी या हट्टविलासिनी नामक गंध द्रव्य।

सविभास—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का एक नाम।

सविभ्रम—वि० [सं०] दे० 'सविलास' (को०)।

सविमर्श—वि० [सं०] दे० 'सवितर्क' (को०)।

सविलास—वि० [सं०] १. भोग विलास करनेवाला। भोगी। विलासी। २. क्रीड़ा या प्रणययुक्त (को०)।

सविशंक—वि० [सं०] शंकित। शंकायुक्त (को०)।

सविशेष—वि० [सं०] १. विशिष्ट गुणों से युक्त। २. विशिष्ट। असाधारण। खास। ३. अंतर करनेवाला। विशेषतासूचक (को०)। ४. विलक्षण (को०)।

सविशेषक¹—वि० [सं०] १. जो विशेष गुणों से युक्त हो। २. सुविचारित (को०)।

सविशेषक²—संज्ञा पुं० विशेष गुण (को०)।

सविश्रंभ—वि० [सं०] दिली। अंतरंग। अभिन्नहृदय (को०)।

सविष--संज्ञा पुं० [सं०] एक नरक (को०)।

सविस्तर—अ० [सं०] विवरण के साथ। विस्तार के साथ (को०)।

सविस्मय—वि० [सं०] १. चकित। विस्मित। २. संदेहपूर्ण। ३. विस्मयपूर्वक (को०)।

सवीर—वि० [सं०] वीरों से युक्त। अनुयायि जनों के साथ।

सवीर्य—वि० [सं०] १. समान शक्तिवाला। २. शक्तिशाली (को०)।

सवीर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सतावर। शतावरी।

सवृत्त—वि० [सं०] चरित्रवान् (को०)।

सवृद्धिक—वि० [सं०] ब्याज के साथ (को०)।

सवृष्टिक--वि० [सं०] वर्षा से युक्त। वृष्टियुक्त।

सवेग¹—वि० [सं०] १. समान वेगवाला। २. उग्र (को०)।

सवेग²—क्रि० वि० वेगपूर्वक। शीघ्र गति से। उ०—चले सवेग राम तेहि काला।—मानस २।२४२।

सवेताल—वि० [सं०] बेताल से ग्रस्त (को०)।

सवेध—संज्ञा पुं० [सं०] समीपता (को०)।

सवेरा—संज्ञा पुं० [हिं० स + सं० वेला] १. सूर्य निकलने के लगभग का समय। प्रातःकाल। सुबह। २. निश्चित समय के पूर्व का समय। (क्व०)।

सवेरे--अव्य० [हिं०] तड़के। भोर में। सुबह।

सवेश—वि० [सं०] १. निकट। समीप पास। २. विभूषित। अलंकृत (को०)।

सवेशीय--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

सवेष—वि० [सं०] अलंकृत। सज्जित (को०)।

सवेष्टन—वि० [सं०] पगड़ीयुक्त। जिसपर पगड़ी हो (को०)।

सवैया—संज्ञा पुं० [हिं० सवा + ऐया (प्रत्य०)] १. तौलने का एक बाट जो सवा सेर का होता है। २. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है। इसे 'मालिनी' और 'दिवा' भी कहते हैं।

विशेष—इस अर्थ में कुछ लोग इसे स्त्री लिंग भी बोलते हैं।

३. वह पहाड़ा जिसमें एक, दो, तीन आदि संख्याओं का सवाया रहता है। ४. दे० 'सवाई'।

सवैलक्ष्य—वि० [सं०] १. अप्राकृतिक। अस्वाभाविक। २. लज्जित। लज्जायुक्त। शर्मिदा (को०)।

यौ०—सवैलक्ष्य स्मित = अस्वाभाविक मुस्कान। झेंपभरी हँसी।

सव्य¹—वि० [सं०] १. वाम। बायाँ। २. दक्षिण। दाहिना।

विशेष—सव्य शब्द का वाम और दक्षिण दोनों अर्थ में प्रयोग होता है। पर साधारणतः यह वाम के ही अर्थ में प्रयुक्त

होता है। ३. प्रतिकूल। विरुद्ध। खिलाफ। ४. अनुकूल। उपयुक्त। दक्षिण (को०)। ५. जो घृत से सिंचित न हो। शुष्क। रूखा (को०)।

सव्य[२]—संज्ञा पुं० १. यज्ञोपवीत। २. चंद्र या सूर्यग्रहण के दस प्रकार के ग्रासों में एक प्रकार का ग्रास। ३. अंगिरा के पुत्र का नाम जो ऋग्वेद के कई मंत्रों के द्रष्टा थे।

विशेष—कहते हैं कि अंगिरा के तपस्या करने पर इंद्र ने उनके घर पुत्र रूप में जन्म ग्रहण किया था, जिनका नाम सव्य पड़ा।

४. विष्णु। ५. अग्नि, जो किसी के मृत्युकाल में दीप्त की जाय (को०)।

सव्यचारी—संज्ञा पुं० [सं० सव्यचारिन्] १. अर्जुन का एक नाम। दे० 'सव्यसाची'। २. अर्जुन वृक्ष। कौह वृक्ष।

सव्यजानु—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध का एक ढंग [को०]।

सव्यथ—वि० [सं०] १. पीड़ा या व्यथा से ग्रस्त। २. शोकाकुल। दुःखान्वित [को०]।

सव्यपेक्ष—वि० [सं०] आसरा या अपेक्षायुक्त। किसी पर निर्भर या अवलंबित [को०]।

सव्यबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] बाएँ हाथ से लड़ने का एक तरीका [को०]।

सव्यभिचार—संज्ञा पुं० [सं०] हेत्वाभास का एक भेद।

सव्यसाची—संज्ञा स्त्री० [सं० सव्यसाचिन्] अर्जुन।

विशेष—कहते हैं कि अर्जुन दाहिने हाथ से भी तीर चला सकते थे और बाएँ हाथ से भी; इसी लिये उनका यह नाम पड़ा।

सव्यभिचरण—वि० [सं०] व्यभिचारि भाव से युक्त [को०]।

सव्यांत—संज्ञा पुं० [सं० सव्यान्त] युद्ध करने का एक प्रकार [को०]।

सव्याज—वि० [सं०] १. व्याज या छद्मयुक्त। २. कपटी। धूर्त। चालबाज [को०]।

सव्यापार—वि० [सं०] काम में लगा हुआ [को०]।

सव्येतर—वि० [सं०] दाहिना [को०]।

सव्येष्टा—स्त्री० पुं० [सं० सव्येष्टृ] दे० 'सव्येष्ठ'।

सव्येष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] सारथी।

सव्येष्ठा, सव्येष्ठाता—संज्ञा पुं० [सं० सव्येष्ठृ, सव्येष्ठातृ] सारथी। दे० 'सव्येष्ठ' [को०]।

सव्रण—वि० [सं०] १. चोटैल। व्रणयुक्त। २. घायल। ३. दोषयुक्त। छिद्रयुक्त। सदोष [को०]।

सव्रणशुक्र—संज्ञा पुं० [सं०] आँख का एक रोग जिसमें आँख की पुतली पर सूई से किए हुए छोटे छेद के समान गहरी फूली पड़ती है और आँखों से गरम आँसू निकलते हैं।

सव्रती—वि० [सं० सव्रतिन्] १. व्रतयुक्त। २. समान ढंग से काम करनेवाला। समान रीतिरिवाज वाला [को०]।

सव्रीड—वि० [सं०] व्रीड़ा या लज्जायुक्त। लज्जित [को०]।

सशंक—वि० [सं० सशङ्क] १. जिसे शंका हो। शंकायुक्त। २. भयभीत। डरा हुआ। ३. भयकारी। भयानक। ४. शंका उत्पन्न करनेवाला। भ्रामक।

सशंकना(पु)—क्रि० अ० [सं० सशङ्क + हिं० ना (प्रत्य०)] १. शंकायुक्त होना। शंकित होना। २. भयभीत होना। डरना।

सशक्तिक—वि० [सं०] बलयुक्त। शक्तिशाली।

सशब्द—वि० [सं०] १. ध्वनियुक्त। शब्द करता हुआ। २. चिल्ला कर कहा हुआ। जोरों से घोषित। ३. नादयुक्त। नाद के साथ [को०]।

सशयन—वि० [सं०] समीपवर्ती। पास पड़ोस का।

सशरीर—वि० [सं०] १. शरीरयुक्त। देहधारी। मूर्त। २. अस्थियुक्त। ३. शरीर के साथ।

सशल्क[१]—वि० [सं०] जिसमें शल्क हो। शल्कयुक्त।

सशल्क[२]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का मत्स्य [को०]।

सशल्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] रीछ। भालू।

सशल्य[२]—वि० १. शल्ययुक्त। काँटेदार। २. काँटे या नोकदार अस्त्रों से बिंधा हुआ। ३. कठिन। मुश्किल। कष्टमय [को०]।

सशल्यव्रण—संज्ञा पुं० [सं०] व्रण रोग का एक भेद।

विशेष—काँटे आदि के चुभ जाने से यह व्रण उत्पन्न होता है। इसमें विद्ध स्थान में सूजन होती है और कालांतर में वह पक जाता है।

सशल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागदंती। हाथी शुंडी।

सशवी—संज्ञा पुं० [?] काला जीरा। कृष्ण जीरक।

सशस्त्र—वि० [सं०] १. शस्त्रयुक्त। शस्त्रसज्ज। हथियारों से लैस। २. जिसमें शस्त्रों, हथियारों का उपयोग हुआ हो [को०]।

सशस्य—वि० [सं०] १. अन्न से युक्त। २. जिसमें अनाज पैदा हो। उपजाऊ [को०]।

सशस्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागदंती [को०]।

सशाक—संज्ञा पुं० [सं०] अदरक। आदी।

सशाद्वल—वि० [सं०] हरी हरी घासों से पूर्ण [को०]।

सशुक्र—वि० [सं०] दीप्तियुक्त। चमकदार [को०]।

सशूक[१]—वि० [सं०] टूँड़वाला [को०]।

सशूक[२]—संज्ञा पुं० ईश्वरविश्वासी। आस्तिक [को०]।

सशेष—वि० [सं०] जिसमें शेष हो। २. अपूर्ण। अधूरा।

सशोथ—वि० [सं०] सूजा हुआ।

सशोथपाक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का नेत्र रोग।

विशेष—इस रोग में आँखों में से आँसू निकलते हैं और उनमें खुजली तथा शोथ होता है। आँखें लाल भी हो जाती हैं।

सश्मश्रु[१]—वि० [सं०] श्मश्रुयुक्त। दाढ़ी मूँछवाला।

सश्मश्रु[२]—संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसे दाढ़ी मूँछ उग आई हो [को०]।

सश्रद्ध—वि० [सं०] १. श्रद्धायुक्त। आस्थावान्। २. विश्वास करने योग्य। सच्चा [को०]।

सश्रम—वि० [सं०] १. श्रमयुक्त। २. थका हुआ। ३. श्रमपूर्वक।

सश्रीक—वि० [सं०] १. समृद्धियुक्त। भाग्यशाली। २. शोभायुक्त। सुंदर [को०]।

सश्रीवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का घोड़ा, जिसके वक्षस्थल पर भँवरी हो [को०]।
सश्लेष—वि० [सं०] श्लेषयुक्त। द्वयर्थक। श्लिष्ट [को०]।
सश्वास—वि० [सं०] जीवित। जो श्वासयुक्त हो [को०]।
ससंक(पु)—वि० [सं० सशङ्क] शंकित। शंकायुक्त।
ससंकना(पु)—क्रि० अ० [सं० सशङ्क+हिं० ना] दे० 'सशंकना'। उ०—शिवहिं बिलोकि ससंकेउ मारू।—मानस, २।८६।
ससंकेत—वि० [सं० ससङ्केत] जिसके साथ कोई संकेत या गुप्त समझौता हुआ हो [को०]।
ससंग—वि० [सं० ससङ्ग] संबद्ध। संगयुक्त। संलग्न [को०]।
ससंततिक—वि० [सं० ससन्ततिक] संततियुक्त। बाल बच्चेदार [को०]।
ससंदेह¹—वि० [सं० ससन्देह] संशय युक्त।
ससंदेह²—संज्ञा पुं० संदेह नामक अलंकार।
ससंध्य—वि० [सं० ससन्ध्य] संध्या संबंधी [को०]।
ससंपद्—वि० [सं० ससम्पद्] संपद्युक्त। सुखी। समृद्धिशील [को०]।
ससंभ्रम¹—वि० [सं० ससम्भ्रम] व्याकुल। घबड़ाया हुआ [को०]।
ससंभ्रम²—अव्य० १. हड़बड़ी में। शीघ्रतापूर्वक। घबड़ाहट में। २. अभ्यर्थनापूर्वक। सादर [को०]।
ससंरंभ—वि० [सं० ससंरम्भ] संरंभ युक्त। क्रुद्ध [को०]।
ससंवाद—वि० [सं०] समान राय। एकमत [को०]।
ससंवित्क—वि० [सं०] समझदार। विवेकशील [को०]।
ससंविद्—वि० [सं०] जिसके साथ कोई समझौता हुआ हो [को०]।
ससंशय¹—वि० [सं०] अनिश्चित। संदेहयुक्त [को०]।
ससंशय²—संज्ञा पुं० एक काव्यदोष। संदिग्धता [को०]।
ससंहार—वि० [सं०] संहार या निरोध शक्ति से युक्त [को०]।
सस¹—संज्ञा पुं० [सं० शशि] चंद्रमा। शशि।
सस²—संज्ञा पुं० [सं० शस्य] खेती बारी। उ०—सपने के सौतुख सुख सस सुर सींचत देत बिराई के।—तुलसी (शब्द०)।
सस³—संज्ञा पुं० [सं० शश] खरगोश।
ससक†¹—संज्ञा पुं० [सं० शशक] खरहा। खरगोश।
ससक†²—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सिसक'।
ससकना†—क्रि० अ० [हिं० ससङ्कना] घबड़ाना। झिझकना।
ससत्व—वि० [सं०] १. शक्तियुक्त। साहसपूर्ण। २. सत्वयुक्त। गर्भयुक्त। ३. पशु, पक्षियां, जंतु, जीवों से पूर्ण [को०]।
ससत्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गर्भवती स्त्री। गर्भिणी।
ससदल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशधर] चंद्रमा। उ०—भींसुर ससदल भाल।—ढोला०, दू० ४७६।
ससधर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशधर] चंद्रमा।
ससन—संज्ञा पुं० [सं०] पशु का वध [को०]।
ससना†—क्रि० अ० [हिं०] दे० 'ससकना'।
ससरना†—क्रि० अ० [सं० सम्+सरण] सरकना। खिसकना। घसकना।
ससहर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशधर,प्रा० ससहर] चंद्रमा। उ०—सोइ सूर तुम ससहर आनि मिलावौं सोइ। तस दुख महँ सुख उपजै रैनि माँह दिन होइ।—जायसी (शब्द०)।

ससहाय—वि० [सं०] सहायकों, साथियों के साथ [को०]।
ससा†—संज्ञा पुं० [सं० शशा] १. खरगोश। शशक। २. खीरा।
ससाध्वस—वि० [सं०] चकित। भयभीत। डरा हुआ [को०]।
ससाना†—क्रि० अ० [हिं०] दे० 'ससकना'।
ससार्थ—वि० [सं०] सार्थयुक्त। जिसमें वणिक् अपने बनिज के साथ हो (काफिला)।
ससि¹—संज्ञा पुं० [सं० शशि] शशि। चंद्रमा। उ०—वीण अलापी देखि ससि, रमणी नाद सलीण।—ढोला०, दू० ५७०।
ससि(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० सस्य] धान्य।—उ०—ससि संपन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै संपति जैसी।—मानस, ४।१५।
ससित—वि० [सं०] सिता या शर्करायुक्त [को०]।
ससिद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा शाल। सर्ज वृक्ष।
ससिधर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशधर] शशि। चंद्रमा।
ससिरिपु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशिरिपु] दिन। उ०—ससिरिपु बरष सूररिपु जुग बर हररिपु कीन्हौ घात।—सूर०, १०।३९७६।
ससिहर(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० शशधर] चंद्रमा।—उ०—ससिहर मृगरस्थ मोहियउ तिण हसि मेल्ही वीण, ढोला० दू० ५७०।
ससिहर(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० शशि+धर] शिशिर ऋतु। उ०—कहि नारि पीय बिनु कामिनी रिति ससिहर किम जीजइय।—पृ० रा०, ६१।६४।
ससी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शशि] शशि। चंद्रमा।
ससील(पु)—वि० [सं० सशील] शीलयुक्त। सुशील।
ससुर¹—संज्ञा पुं० [सं० श्वशुर] जिसके पुत्री या पुत्र से ब्याह हुआ हो। पति या पत्नी का पिता। श्वशुर। दे० 'श्वसुर'।
ससुर²—वि० [सं० स+सुर] १. देवगणों के साथ। देवताओं से युक्त। २. मदमत्त। मतवाला नशे में चूर। ३. सुरा या मदिरायुक्त [को०]।
ससुरा—संज्ञा पुं० [सं० श्वसुर] १. श्वशुर। ससुर। २. एक प्रकार की गाली। जैसे,—वह ससुरा हमारा क्या कर सकता है। ३. दे० 'ससुराल'। उ०—कित यह रहसि जो आउब करना। ससुरइ अंत जनम दुख भरना।—जायसी (शब्द०)।
ससुरार, ससुरारि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वसुरालय] दे० 'ससुराल'। उ०—ससुरारि पिआरि लगी जबतें। रिपुरूप कुटुंब भए तबतें।—मानस, ७।१०१।
ससुराल—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वशुरालय] १. श्वसुर का घर। पति या पत्नी के पिता का घर। २. जेलखाना। बंदीगृह। (बदमाश)।
ससेन, ससैन—वि० [सं०] सेना से युक्त। सेना या वाहिनी के साथ।
सस्तर¹—वि० [सं०] आस्तरण या पत्ते आदि के बने हुए बिछौने से युक्त [को०]।
सस्तर(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० शस्त्र] दे० 'शस्त्र'।
सस्ता—वि० [सं० स्वस्थ] [वि० स्त्री० सस्ती] १. जो महँगा न हो। जिसका मूल्य साधारण से कुछ कम हो। थोड़े मूल्य का। जैसे,—

उन्हें यह मकान बहुत सस्ता मिल गया। २. जिसका भाव बहुत उत्तर गया हो। जैसे,—आजकल सोना सस्ता हो गया है।

यौ०—सस्ता समय = ऐसा समय जब कि सब चीजें सस्ती हों। सस्ता माल = घटिया दर्जे का माल।

मुहा०—सस्ता लगना = कम दाम पर बेचना। दाम या भाव कम कर देना। सस्ते छूटना = जिस काम में अधिक व्यय, परिश्रम या कष्ट आदि होने को हो, वह काम थोड़े व्यय, परिश्रम या कष्ट में हो जाना।

३. जो सहज में प्राप्त हो सके। जिसका विशेष आदर न हो। ४. घटिया। साधारण। मामूली। (क्व०)।

सस्ताना[1]—क्रि० अ० [हिं० सस्ता + ना (प्रत्य०)] किसी वस्तु का कम दाम पर बिकना। सस्ता हो जाना।

सस्ताना[2]—क्रि० स० किसी चीज का भाव सस्ता करना। सस्ते दामों पर बेचना।

सस्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सस्ता + ई (प्रत्य०)] १. सस्ता होने का भाव। सस्तापन। अल्पमूल्यता। महँगी का अभाव। २. वह समय जब कि सब चीजें सस्ते दाम पर मिला करती हों। जैसे,—सस्ती में यही कपड़ा तीन आने गज मिला करता था।

सस्त्रीक—वि० [सं०] जिसके साथ स्त्री हो। स्त्री या पत्नी के सहित। जैसे,—वे सस्त्रीक यहाँ आनेवाले हैं।

सस्नेह—वि० [सं०] १. स्नेहयुक्त। प्रेमपूर्वक। प्रेमपूर्ण। २. स्नेह या तैलयुक्त (को०)।

सस्पृह—वि० [सं०] स्पृहायुक्त। इच्छायुक्त (को०)।

सस्पेंड-वि० [अं०] जो किसी काम से, किसी अभियोग के संबंध में, जाँच पूरी न होने तक, अलग कर दिया गया हो। जो किसी काम से, किसी अपराध पर, कुछ समय के लिये छुड़ा दिया गया हो। मुअत्तल। जैसे,—उसपर घूस लेने का अभियोग है; इसलिये वह सस्पेंड कर दिया गया है।

क्रि० प्र०—करना।

सस्फुर—वि० [सं०] १. स्पंदनशील। २. जीवित (को०)।

सस्मय—वि० [सं०] १. आश्चर्ययुक्त। चकित। २. हँसता हुआ। सस्मित। ३. घमंडी। अभिमानी (को०)।

सस्मित—वि० [सं०] हँसता हुआ। मुसकान युक्त (को०)।

सस्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. धान्य। २. शास्त्र। ३. उत्तम गुण। ४. वृक्षों का फल। ५. दे० 'शस्य'। ६. एक कीमती पत्थर (को०)।

विशेष—'सस्य' के यौगिक आदि शब्दों के लिये दे० 'शस्य' के यौगिक शब्द।

सस्यक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार की मणि। २. तलवार। ३. शालि। ४. साधु। ५. नारियल की गिरी (को०)। ६. शस्त्र (को०)।

सस्यक[2]—वि० १. सत्य से युक्त। २. जो योग्यता, सद्विचार, अच्छाई आदि सद्गुणों से युक्त हो (को०)।

सस्यप्रद—वि [सं०] उपजंवाला। जो उपजाऊ हो (को०)।

सस्यमंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सस्यमञ्जरी] दे० 'शस्यमंजरी'।

सस्यमारी[1]—संज्ञा पुं० [सं० सस्यमारिन्] मूसा। चूहा।

सस्यमारी[2]—वि० शस्य या अनाज का नाश करनेवाला।

सस्यमाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] धान्य से पूर्ण धरती (को०)।

सस्यशीर्षक—संज्ञा पुं० [सं०] अनाज की बाल। शस्यमंजरी।

शस्यशूक—संज्ञा पुं० [सं०] यव, धान आदि की बालों का नुकीला अगला भाग या टूँड़ (को०)।

सस्यसंवत्सर—संज्ञा पुं० [सं०] शाल। साखू।

सस्यसंवर—संज्ञा पुं० [सं० सस्यसम्वर] १. सलई। शल्लकी। २. शाल का वृक्ष।

सस्यसंवरण—संज्ञा पुं० [सं० सस्यसम्वरण] शाल या अश्वकर्ण वृक्ष। साखू।

सस्यहंता, सस्यहा—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सस्यहन्तृ, सस्यहन्] दे० 'शस्यहंता'।

सस्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] अरनी। गणिकारिका। गनियल।

सस्याद—वि० [सं०] अनाज या खेत चर जानेवाला। शस्यभक्षक (को०)।

सस्येष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] फसल के पकने पर किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ (को०)।

सस्वेद—वि० [सं०] पसीने से युक्त। पसीने से लथपथ (को०)।

सस्वेदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कुमारी कन्या जिसका कौमार्य सद्यः भंग हुआ हो (को०)।

सहंडुक—संज्ञा पुं० [सं० सहण्डुक] एक प्रकार का मांस का रसा या शोरबा।

विशेष—बकरे आदि पशुओं के मांसभरे अंगों के टुकड़ों को धोकर घी में हींग आदि का तड़का देकर धीमी आँच में भून ले। अनंतर उसे छानकर पानी, नमक, मसाला आदि डाले और पक जाने पर उतार ले। भावप्रकाश में यह शोरबा शुक्रवर्धक, बलकारक, रुचिकर, अग्निदीपक, त्रिदोष शांति के लिये श्रेष्ठ और धातुपोषक बताया गया है।

सहँगा—वि० [देश०] जो महँगा न हो। सस्ता। महँगा शब्द के साथ यौगिक रूप में प्रयुक्त। जैसे—महँगासहँगा। उ०—मनि मनिक मँहगे किए सँहगे तृन, जल, नाज। तुलसी ऐसो जानिए राम गरीबनेवाज।—तुलसी ग्रं०, पृ० १५२।

सह[1]—अव्य० [सं०] १. सहित। समेत। २. एक साथ। युगपत्।

सह[2]—वि० [सं०] १. विद्यमान। उपस्थित। मौजूद। २. सहिष्णु। सहनशील। ३. समर्थ। योग्य। सशक्त। ४. पराभूत या वशीभूत करनेवाला (को०)।

सह[3]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सादृश्य। समानता। बराबरी। २. सामर्थ्य। बल। शक्ति। ३. अगहन का महीना। ४. महादेव का एक नाम। ५. रेह का नोन। पांशु लवण। ६. अग्नि (को०)। ७. कृष्ण के एक पुत्र का नाम जिसकी माता का नाम माद्री था (को०)। ८. मनु का एक पुत्र। ९. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। १०. प्राचीन काल की एक प्रकार की वनस्पति या बूटी जिसका व्यवहार यज्ञों आदि में होता था।

सह⁴—संज्ञा स्त्री० समृद्धि।

सहक—वि० [सं०] सहनशील। सहिष्णु। क्षमाशील [को०]।

सहकरण—संज्ञा पुं० [सं०] कोई काम साथ साथ करना।

सहकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सहकर्तृ] जो काम करने में मददगार या सहायक हो [को०]।

सहकार¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुगंधियुक्त पदार्थ। २ आम का पेड़। ३. कलमी आम। ४. आम की मंजरी या बौर (को०)। ५. आम्र का रस (को०)। ६. सहायक। मददगार। ७. साथ मिलकर काम करना। सहयोग।

सहकार²—वि० हकार की ध्वनि से युक्त [को०]।

सहकारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहायता। मदद।

सहकारभंजिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सहकारभञ्जिका] प्राचीन काल की एक प्रकार की क्रीड़ा या अभिनय।

सहकारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहकारी होने का भाव। सहायक होने का भाव। २. सहायता। मदद।

सहकारी—संज्ञा पुं० [सं० सहकारिन्] [वि० स्त्री० सहकारिणी] १. साथ काम करनेवाला। साथी। सहयोगी। २. सहयोगात्मक। सहयोगयुक्त। ३. सहायक। मददगार। सहायता करनेवाला।

सहकृत्—वि० [सं०] दे० 'सहकारी'।

सहगमन—संज्ञा पुं० [सं०] १. साथ जाने की क्रिया। २ पति के शव के साथ पत्नी के सती होने का व्यापार। सती होने की क्रिया।

सहगवन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहगमन, प्रा० सहगवण] दे० 'सहगमन'।

सहगामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जो पति के शव के साथ सती हो जाय। पति की मृत्यु पर उनके साथ जल मरनेवाली स्त्री। उ०—मंगल सकल सोहाहिं न कैसे। सहगामिनिहि विभूषन जैसे।—मानस, २।३७। २. स्त्री। पत्नी। सहचरी। साथिन।

सहगामी—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सहगामिन्] [स्त्री० सहगामिनी] १. साथ चलनेवाला। साथी। २. अनुकरण करनेवाला। अनुयायी।

सहगौन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहगमन, प्रा० सहगवन] दे० 'सहगमन'।

सहचर—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सहचरी] १. वह जो साथ चलता हो। साथ चलनेवाला। साथी। हमराही। २. सेवक। दास। भृत्य। नौकर। ३. दोस्त। सखा। मित्र। ४. कटसरैया। ५. पति (को०)। ६. प्रतिबंधक। जामिन (को०)।

सहचरण—संज्ञा पुं० [सं०] साथ साथ जाना या लगे रहना।

सहचरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नीली कटसरैया।

सहचराद्य तैल—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का तेल।

विशेष—यह तैल बनाने के लिये नीले फूलवाली कटसरैया, धमास, कत्था, जामुन की छाल, आम की छाल, मुलेठी, कमलगट्टा सब एक टके भर लेते हैं और उनका चूर्ण बनाकर १६ सेर जल में डालकर औटाते हैं। जब चौथाई रह जाता है, तब उसे तेल या बकरी के दूध में पकाते हैं। कहते हैं कि इसके सेवन से दाँत मजबूत हो जाते हैं।

सहचरित—वि० [सं०] १. साथ जाने या रहनेवाला। २. संगत। अनुरूप। युक्त [को०]।

सहचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहचर का स्त्री० रूप। २. पत्नी। भार्या। जोरू। ३. सखी। सहेली। ४. पीली कटसरैया। पीत भिंटी (को०)।

सहचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सदा साथ रहता हो। सहचर। संगी। साथी। २. साथ। संग। सोहबत। ३. समन्वय। सामंजस्य। संगति (को०)। ४. न्याय में हेतु के साथ साध्य का अनिवार्य होना (को०)।

सहचार उपाधि लक्षणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लक्षणा जिसमें जड़ सहचारी के कहने से चेतन सहचारी का बोध होता है। जैसे,—'गद्दी को नमस्कार करो,' यहाँ गद्दी शब्द से गद्दी पर बैठनेवाले का बोध होता है।

सहचारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साथ में रहनेवाली। सहचरी। सखी। २. पत्नी। स्त्री। जोरू।

सहचारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहचारी होने का भाव।

सहचारित्व—संज्ञा पुं० [सं०] सहचारी होने का भाव।

सहचारी—संज्ञा पुं० [सं० सहचारिन्] [स्त्री० सहचारिणी] १. संगी। साथी। दे० 'सहचर'। २. सेवक। नौकर।

सहज¹—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सहजा] १. सहोदर भाई। सगा भाई। एक माँ का जाया भाई। २. निसर्ग। स्वभाव। ३. ज्योतिष में जन्म लग्न से तृतीय स्थान। भाइयों और बहनों आदि का विचार इसी स्थान को देखकर किया जाता है। ४. जीवन्मुक्त (को०)।

सहज²—वि० स्वाभाविक। स्वभावोत्पन्न। प्राकृतिक। जैसे,—काटना तो साँपों का सहज स्वभाव है। २. साधारण। ३. जन्मजात। ४. सरल। सुगम। आसान। जैसे,—जब तुमसे इतना सहज काम भी नहीं हो सकता, तब तुम और क्या करोगे। ५. साथ साथ उत्पन्न होनेवाला।

सहजअरि प्रकृति—संज्ञा पुं० [सं०] वह राजा जो विजेता का पड़ोसी और स्वभावतः शत्रुता रखनेवाला हो।

सहजकृति—संज्ञा पुं० [सं०] सोना। स्वर्ण।

सहजक्लैव्य—संज्ञा पुं० [सं०] नपुंसकता रोग का एक भेद। वह नपुंसकता जो जन्म से ही हो।

सहजजन्मा—वि० [सं० सहजजन्मन्] १. यमज। यमल। जुड़वाँ। २. सगा। सहोदर [को०]।

सहजता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहज होने का भाव। २. सरलता। स्वाभाविकता।

सहजधार्मिक—वि० [सं०] जो स्वभावतः धर्मनिष्ठ हो [को०]।

सहजन—संज्ञा पुं० [हिं० सहिजन] दे० 'सहिजन'।

सहजन्मा—वि० [सं० सहजन्मन्] १. एक गर्भ से एक साथ ही होनेवाली संतानें। यमज। यमल। जोड़ा। २. एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा (भाई आदि)। ३. जन्मना या स्वभावतः प्राप्त।

सहजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक यक्ष का नाम।

सहजन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सहजपंथ—संज्ञा पुं० [हिं० सहज+पंथ] गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय का निम्न वर्ग।

विशेष—इस संप्रदाय के प्रवर्तकों के मतानुसार भजन साधन के लिये पहले एक नवयौवनसंपन्न सुंदर परकीया रमणी की आवश्यकता होती है। बाद रसिक भक्त या गुरु से सम्यक् रूप से उपदेश लेकर उस नायिका के प्रति तन मन अर्पणकर साधन भजन करने से अविलंब ब्रजनंदन रसिकशिरोमणि श्रीकृष्ण की प्राप्ति होती है। सहजियों का कहना है कि इस प्रकार की लीला महाप्रभु सर्वसाधारण को न दिखाकर गुप्त रूप से राय रामानंद और स्वरूप दामोदर आदि कई मार्मिक भक्तों को बता गए हैं।

सहजमलिन—वि० [सं०] प्रकृत्या मलिन। स्वभावतः गंदा।

सहजमित्र—संज्ञा पुं० [सं०] स्वभाविक मित्र।

विशेष—शास्त्रों में भानजा, मौसेरा भाई और फुफेरा भाई सहजमित्र और वैमात्रेय तथा चचेरे भाई सहज शत्रु बताए गए हैं। भानजे आदि से संपत्ति का कोई संबंध नहीं होता; इसी से ये सहज मित्र हैं। परंतु चचेरे भाई संपत्ति के लिये झगड़ा कर सकते हैं, इससे वे सहज शत्रु कहे गए हैं।

सहजमित्र प्रकृति—संज्ञा पुं० [सं०] वह राजा जो विजेता का पड़ोसी, कुलीन तथा स्वभाव से ही मित्र हो।

सहजवत्सल—वि० [सं०] स्वभावतः कोमल हृदयवाला [को०]।

सहजशत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रों के अनुसार वैमात्रेय या चचेरा भाई जो संपत्ति के लिये झगड़ा कर सकता है। विशेष दे० 'सहजमित्र'।

सहजसुहृद(पु)—वि० [सं० सहजसुहृद्] सहजमित्र। स्वभाव या प्रकृति से जो मित्र हो। उ०—सहज सुहृद गुरु स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि। सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि।—मानस, २।६३।

सहजांधदृक्—वि० [सं० सहजान्धदृश्] जो जन्म से ही अंधा हो।

सहजात—वि० [सं०] १. सहोदर। २. यमज। ३. स्वाभाविक। प्राकृतिक (को०)। ४. एक ही काल में उत्पन्न (को०)।

सहजाधिनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली के तीसरे या सहज स्थान का अधिपति ग्रह।

सहजानि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। स्त्री। जोरू।

सहजानि²—वि० स्त्री के साथ। जोरू के साथ। सपत्नीक।

सहजारि—संज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रों के अनुसार वैमात्रेय या चचेरा भाई जो समय पड़ने पर संपत्ति आदि के लिये झगड़ा कर सकता है। सहज शत्रु।

सहजार्श—संज्ञा पुं० [सं०] वह अर्श या बवासीर जिसके मस्से कठोर, पीले रंग के और अंदर की ओर मुँहवाले हों।

सहजिया—संज्ञा पुं० [हिं० सहज (=पंथ+इया (प्रत्य०)] वह जो सहजपंथ का अनुयायी हो। सहजपंथ को माननेवाला। विशेष दे० 'सहजपंथ'।

सहजीवी—वि० [सं० सहजीविन्] एक साथ जीवन धारण करनेवाले। साथ रहनेवाले।

सहजेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० सहजेंन्द्र] फलित ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली के तीसरे या सहज स्थान के अधिपति ग्रह।

सहजेतर—वि० [सं०] सहज अर्थात् प्राकृतिक या जन्मजात से इतर अथवा भिन्न [को०]।

सहजै(पु)—अव्य० [हिं० सहज+ही] स्वभावतः। सरलतापूर्वक। आसानी से।

सहजोदासीन—वि० [सं०] जो प्रकृत्या या स्वभाविक रूप मित्र या शत्रु न हो [को०]।

सहत¹—संज्ञा पुं० [फ़ा० शहद] दे० 'शहद'।

सहत†²—वि० [हिं० सस्ता] दे० 'सस्ता'।

सहतमहत—संज्ञा पुं० [सं० श्रावस्ती] दे० 'श्रावस्ति'।

सहतरा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाहतरह्] पित्त पापड़ा। पर्पटक।

सहता¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सहत्व' [को०]।

सहता†²—वि० [हिं० सस्ता] कम दाम का। सस्ता।

सहताना(पु)¹—क्रि० अ० [हिं० सुसताना] श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। विश्राम करना। आराम करना। सुस्ताना। उ०—सहतात कहाँ नर वे जग में जिन मीत के कारज सीस धरे।—लक्ष्मण सिंह (शब्द०)।

सहताना†²—क्रि० अ० [हिं० सस्ता+ना (प्रत्य०)] सस्ता होना। अपेक्षाकृत कम मूल्य का होना।

सहती†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सस्ती] सस्तापन। दे० 'सस्ती'।

सहतूत—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाहतूत, शहतूत] एक फल। दे० 'शहतूत'।

सहत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. 'सह' का भाव। २. एक होने का भाव। एकता। ३. मेलजोल।

सहदंड—वि० [सं० सहदण्ड] दंड के साथ। सेना से युक्त।

सहदइया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सहदेई] दे० 'सहदेई'।

सहदान—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत से देवताओं के उद्देश्य से एक साथ ही या एक मे किया जानेवाला दान। २. तर्पण। जलदान।

सहदानी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञान] निशानी। पहचान। चिह्न। उ०—सारँगपाणि मूँदि मृगनैनी मणि मुख माँह समानी। चरण चापि महि प्रगटि करी पिय शेष शीश सहदानी।—सूर (शब्द०)।

सहदार—वि० [सं०] १. सपत्नीक। स्त्री के साथ। २. जिसका विवाह हो चुका हो। विवाहित [को०]।

सहदीक्षित—वि० [सं०] जिन्होंने एक साथ दीक्षा प्राप्त की हो।

सहदीक्षिती—वि० [सं० सहदीक्षितिन्] एक साथ दीक्षा लेनेवाले [को०]।

सहदूलⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शार्दूल] सिंह। शार्दूल।

सहदेई—संज्ञा स्त्री० [सं० सहदेवी] क्षुप जाति की एक वनौषधि जो पहाड़ी भूमि में अधिक उपजती है।

विशेष—यह तीन चार फुट ऊँची होती है। इसके पत्ते बथुए के पत्तों के समान होते हैं। वर्षा ऋतु में यह उगती है। बढ़ने के साथ साथ इसके पत्ते छोटे होते जाते हैं। पत्तों की जड़ में फूलों की कलियाँ निकलती हैं। ये फूल बरियारे के फूलों की भाँति पीले रंग के होते हैं। इसके पौधे चार प्रकार के पाए जाते हैं।

सहदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा पांडु के पाँच पुत्रों में से सबसे छोटे पुत्र।

विशेष—कहते हैं कि माद्री के गर्भ और अश्विनी कुमारों के औरस से इनका जन्म हुआ था; और ये पुरुषोचित सौंदर्य के आदर्श माने जाते थे। द्रौपदी के गर्भ से इन्हें श्रुतसेन नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। ये बड़े विद्वान् थे। विशेष दे० 'पांडु'।

२. जरासंध का पुत्र। महाभारत युद्ध में इसने पांडवों के विपक्षियों का साथ दिया था। यह अभिमन्यु के हाथ से मारा गया था। ३. हरिवंश के अनुसार हर्यश्व के एक पुत्र का नाम।

सहदेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहदेई। पीतपुष्पी। विशेष दे० 'सहदेई'। २. बरियारा। बला। ३. दंडोत्पल। ४. अनंतमूल। शारिवा। ५. सरहँटी। सर्पाक्षी। ६. प्रियंगु। ७. नील। ८. सोनवली नामक वनस्पति जो भारतवर्ष में प्रायः सभी प्रांतों में पाई जाती है।

विशेष—यह क्षुप जाति की वनस्पति है। इसकी ऊँचाई दो फुट तक होती है। इसकी डंडी के नीचे के भाग में पत्ते नहीं होते। पत्ते दो से चार इंच तक चौड़े, गोल और सिरे पर कुछ तिकोने होते हैं। इनकी डंडियाँ १—२ इंच लंबी होती हैं। फूल छोटे छोटे होते हैं। यह वनस्पति औषध के काम में आती है।

९. भागवत के अनुसार देवक की कन्या और वसुदेव की पत्नी का नाम।

सहदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहदेई। पीतष्पुपी। विशेष दे० 'सहदेई'। २. सर्पाक्षी। सरहँटी। ३. बरियारा। बला (को०)। ४. अनंतमूल (को०)। ५. महानीली। ६. प्रियंगु। ७. सहदेव की एक पत्नी का नाम (को०)।

सहदेवीगण—संज्ञा पुं० [सं०] सहदेई, बला, शतमूली, शतावर, कुमारी, गुड़ूच, सिंही और व्याघ्री आदि ओषधियों का समूह जिनसे देवप्रतिमाओं को स्नान कराया जाता है।

सहधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] समान धर्म, आचार, कर्तव्य आदि।

सहधर्मचर—वि० पुं० [सं०] सहधर्म का पालन करनेवाला [को०]।

सहधर्मचरण—संज्ञा पुं० [सं०] स्वामी या पति के साथ कर्तव्य का पालन करना [को०]।

सहधर्मचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। पत्नी। जोरू।

सहधर्मचारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्त्री। पत्नी। भार्या। २. सहकर्मिणी।

सहधर्मचारी—संज्ञा पुं० [सं० सहधर्मचारिन्] १. वह जो साथ साथ कर्तव्य, धर्म का पालन करता हो। २. खाविंद। पति।

सहधर्मिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। स्त्री [को०]।

सहधर्मी—वि० [सं० सहधर्मिन्] समान कर्तव्य या धर्मयुक्त [को०]।

सहन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहने की क्रिया। बरदाश्त करना। २. क्षमा। शांति। तितिक्षा। ३. दे० 'सहनशील'।

सहन[2]—वि० सहनशील। सहिष्णु। २. शक्तियुक्त। शक्तिशाली। ३. क्षमा करनेवाला। क्षमाशील [को०]।

सहन[3]—संज्ञा पुं० [अ० सह्न] १. मकान के बीच का खुला छोड़ा हुआ भाग। अँगनाई। अजिर। आँगन। चौक। २. मकान के सामने का खुला छोड़ा हुआ समतल भाग। द्वार प्रकोष्ठ। प्रघण। प्रघाण। (अं० पोर्टिको, पोर्च)। उ०—बाहर सहन में दो गाड़ियाँ खड़ी थीं।—कंठहार, पृ० ३८२।

यौ०—सहनदार = मकान जिसमें सहन हो।

३. एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा। ४. एक प्रकार का मोटा, गफ, चिकना सूती कपड़ा जो मगहर में अच्छा बनता है। गाढ़ा।

सहनक—संज्ञा पुं० [अ० सह्नक] १. एक प्रकार की छिछली रकाबी जिसका व्यवहार प्रायः मुसलमान लोग करते हैं। छोटा तबक। २. बीबी फातिमा की नियाज या फातिहा (मुसल०)।

सहनची—संज्ञा स्त्री० [अ० सह्नची] सहन की बगल में बनाया हुआ छोटा दालान या कमरा [को०]।

सहनभंडार, सहनभँडारⓅ—संज्ञा पुं० [अ० सहन + सं० भण्डार] १. कोष। खजाना। निधि। २. धनराशि। दौलत। उ०—रानिन दिए बसन मनि भूषण राजा सहनभँडार। मागध सूत भाट नट जाचक जहँ जहँ करहिं कबार।—तुलसी (शब्द०)।

सहनर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] साथ में नाचना। साथ साथ नृत्य करना [को०]।

सहनशील—वि० [सं०] १. जिसका स्वभाव सहन करने का हो। जो सरलता से सह लेता हो। बरदाश्त करनेवाला। सहिष्णु। २. संतोषी। धैर्य धारण करनेवाला। सब्र करनेवाला।

सहनशीलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहनशील होने का भाव। २. धीरता। संतोष। सब्र।

सहना—क्रि० स० [सं० सहन] १. बरदाश्त करना। झेलना। भोगना। जैसे,—(क) अपने पाप के कारण ही तुम इतना दुःख सहते हो। (ख) अब तो यह कष्ट नहीं सहा जाता। (ग) तुम क्यों उसके लिये बदनामी सहते हो। २. परिणाम भोगना। अपने ऊपर लेना। फल भोगना। जैसे,—इस काम में जो घाटा होगा,

वह सब तुम्हें सहना पड़ेगा। ३. बोझ बरदाश्त करना। भार वहन करना। जैसे,—भला यह लकड़ी इतना बोझ कहाँ से सहेगी।

संयो० क्रि०—जाना।—लेना।

सहनाई—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शहनाई] दे० 'शहनाई'। उ०—सुर नर नारि सुमंगल गाई। सरस राग बाजहिं सहनाई।—मानस, १।३०२।

सहनायन(५)†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शहनाई+हिं० आयन (प्रत्य०)] शहनाई बजानेवाली स्त्री। उ०—नटनी डोमिन ढारिन, सहनायन परकार। निरतत नाद बिनोद सो, बिहसत खेलत वार।—जायसी (शब्द०)।

सहनिर्वाप—संज्ञा पुं० [सं०] वह दान तर्पण आदि जो साथ साथ किया जाय [को०]।

सहनिवास—संज्ञा पुं० [सं०] साथ निवास करना। एक साथ रहना।

सहनीय—वि० [सं०] सहन करने के योग्य। जो असह्य न हो। जो सहा जा सके। सह्य।

सहनृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहनर्तन'।

सहपंथा—संज्ञा पुं० [सं० सहपन्था] वह जो साथ साथ यात्रा करे। सहयात्री [को०]।

सहपति—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा का एक नाम।

सहपत्नीक—वि० [सं०] सपत्नीक। सस्त्रीक।

सहपथी—संज्ञा पुं० [सं० सहपथिन्] यात्रा में साथ देनेवाला व्यक्ति। हमराही। सहयात्री [को०]।

सहपांशुकिल—संज्ञा पुं० [सं०] लँगोटिया मित्र। बचपन का साथी [को०]।

सहपांशुक्रीडी—संज्ञा पुं० [सं० सहपांशुक्रीडिन्] साथ साथ धूलमिट्टी में खेलनेवाला बचपन का साथी [को०]।

सहपाठी—संज्ञा पुं० [सं० सहपाठिन्] वह जो साथ में पढ़ा हो। वह जिसने साथ में विद्या का अध्ययनन किया हो। सहाध्यायी।

सहपान, सहपानक—संज्ञा पुं० [सं०] साथ साथ आसव आदि पीने की क्रिया।

सहपिंड—संज्ञा पुं० [सं० सहपिण्ड] सपिंड नाम की क्रिया। विशेष दे० 'सपिंडी'।

सहपिंडक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं० सहपिण्डक्रिया] साथ साथ पिंडदान [को०]।

सहप्रयायी—संज्ञा पुं० [सं० सहप्रयायिन्] साथ साथ यात्रा करनेवाला। सहयात्री [को०]।

सहप्रस्थायी—संज्ञा पुं० [सं० सहप्रस्थायिन्] सहयात्री [को०]।

सहबाला†—संज्ञा पुं० [फ़ा० शहबाला, शाहबाला] दे० 'शहबाला'।

सहभार्य—वि० [सं०] सपत्नीक। सभार्य। सस्त्रीक [को०]।

सहभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १. साथीपन। मित्रता। सख्यता। २. सहजीवन या युगपत् स्थिति की भावना। सह अस्तित्व की भावना [को०]।

सहभावी—संज्ञा पुं० [सं० सहभाविन्] १. वह जो सहायता करता हो। सहायक। मददगार। २. सहोदर। ३. वह जो साथ रहता हो। सखा। सहचर।

सहभू—वि० [सं०] एक साथ उत्पन्न। सहज।

सहभूत—वि० [सं०] जो साथ हो। सबंद्ध। युक्त [को०]।

सहभोज—संज्ञा पुं० [सं० सहभोजन] विभिन्न वर्णो के लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना। सामूहिक भोज जिसमें विभिन्न जाति और संप्रदाय के लोग एक साथ संमिलित हों।

सहभोजन—संज्ञा पुं० [सं०] एक साथ बैठकर भोजन करना। मित्रों के साथ खाना।

सहभोजी—संज्ञा पुं० [सं० सहभोजिन्] वे जो एक साथ बैठकर खाते हों। साथ भोजन करनेवाले।

सहम—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. डर। भय। खौफ।

मुहा०—सहम चढ़ना = डर होना। भय होना।

२. संकोच। लिहाज। मुलाहजा।

यौ०—सहमनाक = खौफनाक। भयानक। डरावना।

सहमत—वि० [सं०] जिसका मत दूसरे के साथ मिलता हो। एक मत का। जैसे,—मैं इस विषय में आपसे सहमत हूँ कि वह बड़ा भारी झूठा है।

सहमना[1]—क्रि० अ० [फ़ा० सहम+हिं० ना (प्रत्य०)] भय खाना। भयभीत होना। शंकित होना। डरना। उ०—सहमी सभा सकल जनक भए विकल राम लखि कौशिक असीस आज्ञा दई है।—तुलसी (शब्द०)।

संयो० क्रि०—जाना।—पड़ना।

सहमना[2]—वि० [सं० सहमनस्] चतुरता या बुद्धिमत्तापूर्ण [को०]।

सहमरण—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री का पति के साथ मरने का व्यापार। सती होने की क्रिया। दे० 'सहगमन'।

सहमातृक—वि० [सं०] जो माता के साथ हो। माता सहित [को०]।

सहमान—संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर का एक नाम। २. वह जो मान या गर्वयुक्त हो। मानी। अभिमानी व्यक्ति।

सहमाना—क्रि० स० [हिं० सहमना का सक०] किसी को सहमने में प्रवृत्त करना या घबड़ाहट में डाल देना। भयभीत करना। डराना।

संयो० क्रि०—देना।

सहमृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो अपने मृत पति के शव के साथ जल मरे। सहमरण करनेवाली स्त्री। सती।

सहयायी—संज्ञा पुं० [सं० सहयायिन्] दे० 'सहपंथा,' सहयात्री [को०]।

सहयोग—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ मिलकर काम करने का भाव। सहयोगी होने का भाव। २. साथ। संग। ३. मदद। सहायता। ४. आधुनिक भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में सरकार के साथ मिलकर काम करने, उसकी काउंसिलों आदि में संमिलित होने और उसके पद आदि ग्रहण करने का सिद्धांत।

सहयोगवाद—संज्ञा पुं० [सं०] राजनीतिक क्षेत्र में सरकार से सहयोग अर्थात् उसके साथ मिलकर काम करने का सिद्धांत।

सहयोगवादी—संज्ञा पुं० [सं० सहयोग + वादिन्] राजनीतिक क्षेत्र में सरकार से सहयोग करने अर्थात् उसके साथ मिलकर काम करने के सिद्धांत को माननेवाला।

सहयोगी—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहायक। मददगार। २. वह जो किसी के साथ मिलकर कोई काम करता हो। सहयोग करनेवाला। साथ काम करनेवाला। ३. हमउमर। समवयस्क। ४. वह जो किसी के साथ एक ही समय में वर्तमान हो। समकालीन। ५. आधुनिक भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में सब कामों में सरकार के साथ मिले रहने, उसकी काउंसिलों आदि में संमिलित होने और उसके पद तथा उपाधियाँ आदि ग्रहण करनेवाला व्यक्ति।

सहर[१]—संज्ञा पुं० [अ०] प्रातःकाल। भोर। सबेरा।

सहर[२]—संज्ञा पुं० [अ० सेह्र] जादू। टोना।

सहर[३]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शहर, शह्र] दे० 'शहर'।

सहर†[४]—संज्ञा पुं० [हिं० सिहोर] दे० 'सिहोर' (वृक्ष)।

सहर†[५]—क्रि० वि० [हिं० सहारना (= सहना) या सहलाना (= सुसताना)]। धीरे। मंद गति से। रुक रुक कर। जैसे,—तुम तो सब काम सहर सहर कर करते हो।

सहरई†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शहर, हिं० सहर + ई] नागरिकता। शहरी होने का भाव। शहरीपन।

यौ०—सहरईपन = सहरई। शहरीपन।

सहरक्षा—संज्ञा पुं० [सं० सहरक्षस्] तीन प्रकार की यज्ञाग्नियों में से में से एक [को०]।

सहरगही—संज्ञा स्त्री० [अ० सहर + फ़ा० गह] वह भोजन जो किसी दिन निर्जल व्रत करने के पहले बहुत तड़के या कुछ रात रहे ही किया जाता है। सहरी।

विशेष—इस प्रकार का भोजन प्रायः मुसलमान लोग रमजान के दिनों में रोजा रखने पर करते हैं। वे प्रायः ३ बजे रात को उठकर कुछ भोजन कर लेते हैं; और तब दिन भर निर्जल और निराहार रहते हैं। हिंदुओं में स्त्रियाँ प्रायः हरतालिका तीज का व्रत रखने से पहले भी इसी प्रकार बहुत तड़के उठकर भोजन कर लिया करती हैं। और इसे 'सरगही' कहती हैं। दे० 'सरगही'।

क्रि० प्र०—खाना।

सहरना—क्रि० अ० [हिं० सिहरना] दे० 'सिहरना'।

सहरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बन मूँग। जंगली मूँग। मुद्गपर्णी।

सहरा—संज्ञा पुं० [अ०] जंगल। बन। अरण्य। २. सियाहगोश नामक जंतु। ३. चटियल मैदान। रेगिस्तान। मरुभूमि।

यौ०—सहरा आजम = अफ्रीका की विशाल मरुभूमि और जंगल। सहरागर्द = वनेचर। काननचारी। सहरागर्दी = बन परिभ्रमण। वनचर होना। वनेचरत्व। सहरानशी = (१) जंगल का निवासी। जंगली। (२) तपसी।

सहराई[१]—वि० [अ० सहरा + हिं० आई] जंगली। वन्य। आरण्यक।

सहराई†[२]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सहर (= शहर) + आई] दे० 'सहरई'।

सहराती†—वि० [फ़ा० शहर + हिं० आती (प्रत्य०)] दे० 'शहराती'।

यौ०—सहरातीपन = दे० 'सहरई'।

सहराना[१]—क्रि० स० [हिं० सहलाना] धीरे धीरे हाथ फेरना। सहलाना। मलना। उ०—बाघ बछानि को गाइ जिआवत बाघिन पै सुरभी सुत चोवै। न्योरनि को सहरावत साँप अहारनि दै बेइहै प्रनिपोपै।—गुमान (शब्द०)।

सहराना[२]—क्रि० अ० [हिं० सिहरना] डर से काँपना। सिहर उठना।

सहरि—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. वृष। साँड़।

सहरिया—संज्ञा पुं० [अ० सहरगही] एक प्रकार का गेहूँ।

सहरी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] शफरी मछली। शफरी। उ०—पात भरी सहरी सकल सुत बारे बारे केवट की जाति कछु वेद न पढ़ाइहौं। सब परिवार मेरो याही लागे राजा जू हौं दीन वित्त हीन कैसे, दूसरी गढ़ाइहौं। तुलसी (शब्द०)।

सहरी[२]—संज्ञा स्त्री० [अ०] व्रत के दिन बहुत तड़के किया जानेवाला भोजन। सरगही। विशेष दे० 'सहरगही'।

सहरी[३]—वि० [अ०] प्राभातिक। प्रातःकालीन [को०]।

सहरुण—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा के एक घोड़े का नाम।

सहर्ष—वि० [सं०] हर्षयुक्त। आनंदयुक्त। प्रसन्नतापूर्वक।

सहल—वि० [अ०, मि० सं० सरल] जो कठिन न हो। सरल। सहज। आसान। उ०—टहल सहल जन महल महल जागत चारिउ जुग जाम सो। देखत दोष न खीझत रीझत सुनि सेवक गुनग्राम सो।—तुलसी (शब्द०)।

यौ०—सहल इनकार = काहिल। सुस्त। सहल इनकारी = ढिलाई। आलस्य। सुस्ती।

सहलगी‡—संज्ञा पुं० [हिं० साथ + लगना] वह जो साथ हो ले। रास्ते का साथी। हमराही।

सहलाना[१]—क्रि० स० [हिं० सहर (= धीरे) या अनु०] १. धीरे धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना। सहराना। सुहराना। जैसे,—तलवा सहलाना, पैर सहलाना। उ०—वारी फेरी होके तलवे सहलाने लगी।—इंशा अल्ला खाँ (शब्द०)। २. मलना। ३. गुदगुदाना।

संयो० क्रि०—देना।

सहलाना[२]—क्रि० अ० गुदगुदी होना। खुजलाना। जैसे—बड़ी देर से पैर का तलुआ सहला रहा है।

सहलोकधातु—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम। वह लोक जहाँ मनुष्य बसते हैं। पृथिवी।

सहवन—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का तेलहन जिससे तेल निकाला जाता है।

सहवर्त्ती—वि० [सं० सहवर्त्तिन्] जो साथ हो। साथ लगा हुआ। साथ का।

सहवसति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक साथ रहना [को०]।

सहवसु—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम जिसका उल्लेख ऋग्वेद में आता है।

सहवाच्य—वि० [सं०] जो साथ साथ वाच्य हो या कहा गया हो।

सहवाद—संज्ञा पुं० [सं०] आपस में होनेवाला तर्क वितर्क। वाद-विवाद। बहस।

सहवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ रहने का व्यापार। संग। साथ। २. मैथुन। रति। संभोग।

सहवासिक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहवासी' [को०]।

सहवासी—संज्ञा पुं० [सं० सहवासिन्] १. साथ रहनेवाला। संगी। साथी। मित्र। दोस्त। २. प्रतिवेशी। पड़ोसी।

सहवीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] ताजा नवनीत। सद माखन [को०]।

सहव्रत—वि० [सं०] समान व्रत या कर्तव्ययुक्त [को०]।

सहव्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। भार्या। जोरू।

सहशय—वि० [सं०] साथ में शयन करनेवाला [को०]।

सहशयान—वि० [सं०] जो साथ में सोया हुआ हो।

सहशय्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एकत्र या पास सोने का भाव [को०]।

सहशिष्ट—वि० [सं०] एक साथ सीखा या शिक्षा पाया हुआ [को०]।

सहसंजात—वि० [सं० सहसञ्जात] साथ जनमा हुआ [को०]।

सहसंभव—वि० [सं० सहसम्भव] जो एक साथ उत्पन्न हुए हों। सहज।

सहसंवाद—संज्ञा पुं० [सं०] परस्पर बातचीत। गपशप।

सहसंवास—संज्ञा पुं० [सं०] एकत्र रहने का भाव। साथ रहना [को०]।

सहसंवेग—वि० [सं०] संवेगों से युक्त। उत्तेजनायुक्त। उत्तेजित।

सहसंसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर का संसर्ग। शारीरिक लगाव [को०]।

सहस(पु)—वि० [सं० सहस्र] दे० 'सहस्र'।

सहसकर, सहसकिरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रकिरण] रवि। सूर्य। मरीचिमाली। उ०—सहसकिरनि रूप मन भूला। जहँ जहँ दृष्टि कमल जनु फूला।—जायसी (शब्द०)।

सहसगो(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रगु] सूर्य। सहस्रांशु।

सहसजीभ—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रजिह्व] शेषनाग।

सहसदल—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रदल] कमल। शतपत्र।

सहसनयन—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रनयन] सहस्र आँखोंवाला, इंद्र। उ०—सहसनयन बिनु लोचन जाने।—मानस, २।२१७।

सहसपत्र—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रपत्र] कमल।

सहसफण—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रफण] हजार फणोंवाला, शेषनाग।

सहसबदन—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रवदन] हजार मुखोंवाला, शेषनाग।

सहसबाहु—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रबाहु] दे० 'सहस्रबाहु'। उ०—सहसबाहु सुरनाथ त्रिसंकू। केहि न राजमद दीन्ह कलंकू।—मानस, २।२२८।

सहसमुख—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रमुख] शेषनाग।

सहसवदन—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रवदन] शेषनाग।

सहससीस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रशीर्ष] शेषनाग। उ०—जो सहससीस अहीस महिधर लखन सचराचर धनी।—मानस, २।१२६।

सहसा—अव्य० [सं०] एक दम से। एकाएक। अचानक। अकस्मात्। जैसे,—सहसा आँधी आई और चारों ओर अंधकार छा गया। २. बलपूर्वक। बलात्। जबरदस्ती (को०)। ३. उतावली के साथ। बिना बिचारे (को०)। ४. हँसता हुआ। मुस्कराता हुआ (को०)।

सहसाक्षि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्राक्ष] सहस्र आँखोंवाला, इंद्र।

सहसाखी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहस्राक्ष] इंद्र। सहस्राक्ष। उ०—जे पर दोष लखहिं सहसाखी। परहित घृत जिनके मन माखी।—मानस, १।४।

सहसादृष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १. दत्तक पुत्र। गोद लिया हुआ लड़का। २. वह जो एकाएक दिखाई पड़ जाय। अकस्मात् दिखाई पड़नेवाला व्यक्ति।

सहसान[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. मयूर। मोर पक्षी। २. यज्ञ।

सहसान[2]—वि० सहनशील [को०]।

सहसानन—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रानन] सहस्र मुखोंवाला, शेषनाग।

सहसानु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोर पक्षी। २. धर्मानुष्ठान। यज्ञ [को०]।

सहसानु[2]—वि० जो सहन करे। चुपचाप सहन कर जानेवाला। क्षमावान् [को०]।

सहसिद्ध—वि० [सं०] स्वाभाविक। प्राकृतिक। सहज [को०]।

सहसेवी—वि० [सं० सहसेविन्] किसी के साथ संभोग या मैथुन करनेवाला [को०]।

सहस्त—वि० [सं०] १. हाथवाला। बाहुयुक्त। २. जो शस्त्रास्त्र चलाने में कुशल हो [को०]।

सहस्थ, सहस्थित—वि० [सं०] १. साथी। २. साथ रहनेवाला [को०]।

सहस्य—संज्ञा पुं० [सं०] पूस का महीना। पौष मास।

सहस्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] दस सौ की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००।

सहस्र[2]—वि० जो गिनती में दस सौ हो। पाँच सौ का दूना।

यौ०—सहस्रगुण = हजार गुना। सहस्रघाती। सहस्रजलधार = एक पर्वत का नाम। सहस्रजिह्व = जिनको हजार जीभ हैं, शेषनाग। सहस्रधामा। सहस्रपरम = हजारों में एक। सहस्रबुद्धि। सहस्रभानु। सहस्रमरीचि। सहस्ररोम। सहस्रवदन। सहस्रहस्त।

सहस्रक—वि० [सं०] एक हजार तक या एक हजारवाला [को०]।

सहस्रकर—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य ।

सहस्रकांडा—संज्ञा स्त्री० [सं० सहस्रकाण्डा] सफेद दूब । श्वेत दूर्वा ।

सहस्रकिरण—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य । सहस्ररश्मि ।

सहस्रकेतु—वि० [सं०] हजार केतु या पताकायुक्त [को०] ।

सहस्रगु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य । सहस्ररश्मि । २. इंद्र । शक्र जिसे सहस्र नेत्र हैं ।

सहस्रगु²—वि० [सं०] १. हजार गौ वाला । २. सहस्र किरणों से युक्त । ३. जिसको हजार नेत्र हों [को०] ।

सहस्रगुण—वि० [सं०] हजार गुना [को०] ।

सहस्रघाती—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रघातिन्] एक प्रकार का विशेष युद्ध-यंत्र जो हजारों को मारने की शक्ति से युक्त था ।

सहस्रचक्षु—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रचक्षुस्] हजार आँखोंवाला, इंद्र ।

सहस्रचरण—संज्ञा पुं० [सं०] जिसे हजार पैर हों, सहस्रपाद् । विष्णु ।

सहस्रचित्त—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु ।

सहस्रजित्—संज्ञा पुं० [सं०] १. मृगमद । कस्तूरी । २. कृष्ण की पटरानी जांबवती के दस पुत्रों में से एक । ३. विष्णु का एक नाम । ४. वह जो हजार योद्धाओं को जीतने की शक्ति से युक्त हो (को०) ।

सहस्रणी—संज्ञा पुं० [सं०] हजार रथियों की रक्षा या नेतृत्व करनेवाले, भीष्म पितामह ।

सहस्रतय¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सहस्रतयी] हजार गुना ।

सहस्रतय²—संज्ञा पुं० एक हजार की संख्या [को०] ।

सहस्रदंष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] पाठीन मछली ।

सहस्रदंष्ट्री—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रदंष्ट्रिन्] एक मत्स्य । बोदाल । बोआरी ।

सहस्रद—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत बड़ा उदार या दानी व्यक्ति । हजारों गौएँ आदि दान करनेवाला । २. बोआरी मछली । पाठीन । पहिना । ३. शिव (को०) ।

सहस्रदक्षिण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जिसमें हजार गौएँ या हजार मोहरें दान दी जाती हैं ।

सहस्रदल—संज्ञा पुं० [सं०] पद्म । कमल ।

सहस्रदीधिति—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य ।

सहस्रदृश्—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु । २. इंद्र ।

सहस्रदोस्—संज्ञा पुं० [सं०] जिसकी हजार भुजाएँ हों, कार्तवीर्यार्जुन का एक नाम [को०] ।

सहस्रधा—अव्य० [सं०] १. हजार तरह से । हजार भागों में । २. हजारगुना ।

सहस्रधामा—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रधामन्] सूर्य का एक नाम [को०] ।

सहस्रधार¹—वि० [सं०] १. जिसमें हजार धाराएं हों । हजार धाराओं में बहनेवाला । २. जिसमें हजार धार हों [को०] ।

सहस्रधार²—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का चक्र [को०] ।

सहस्रधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं आदि को स्नान कराने का एक प्रकार का पात्र जिसमें हजार छेद होते हैं । इन्हीं छेदों से जल निकलकर देवता पर पड़ता है ।

सहस्रधी—वि० [सं०] बहुत बड़ा बुद्धिमान् । खूब समझदार ।

सहस्रधौत—वि० [सं०] हजार बार धोया हुआ (घृत आदि जो ओषधि के काम में आता है ।)

सहस्रनयन—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु । २. इंद्र ।

सहस्रनाम—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्तोत्र जिसमें किसी देवता के हजार नाम हों । जैसे,—विष्णु सहस्रनाम, शिव सहस्रनाम आदि ।

सहस्रनामा—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रनामन्] १. विष्णु । २. शिव । ३. अमलबेंत ।

सहस्रनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र । २. विष्णु ।

सहस्रपति—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो हजार गाँवों का स्वामी और शासक हो ।

सहस्रपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल । कमलपत्र । २. एक पहाड़ का नाम ।

सहस्रपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १. शर । तीर । २. एक प्रकार का वृक्ष ।

सहस्रपर्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद दूब । श्वेत दूर्वा ।

सहस्रपाद्—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु । २. पुरुष (को०) । ३. शिव । ४. ब्रह्मा (को०) । ५. एक ऋषि का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है ।

सहस्रपाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य । २. विष्णु । ३. सारस । कारंडव पक्षी ।

सहस्रबाहु—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव । २. कार्त्तवीर्यार्जुन, जिसके विषय में पुराणों में कई कथाएँ हैं ।

विशेष—यह क्षत्रिय राजा कृतवीर्य का पुत्र था । इसका दूसरा नाम हैहय था । इसकी राजधानी माहिष्मती में थी । एक बार यह नर्मदा में स्त्रियों सहित जलक्रीड़ा कर रहा था । उस समय इसने अपनी सहस्र भुजाओं से नदी की धारा रोक दी जिसके कारण समीप में शिवपूजा करते हुए रावण की पूजा में विघ्न पड़ा । उसने क्रुद्ध होकर इससे युद्ध किया, पर परास्त हुआ । एक बार यह अपनी सेना सहित जमदग्नि मुनि के आश्रम के निकट ठहरा था । मुनि के पास कपिला कामधेनु थी । उन्होंने कार्तवीर्य की अच्छी तरह से आदर किया । राजा ने लालच में आकर मुनि से कामधेनु छीन ली । जमदग्नि ने राजा को रोका और वे मारे गए । कार्तवीर्य गौ लेकर चला पर वह स्वर्ग चली गई । परशुराम उस समय आश्रम में नहीं थे । लौटने पर उन्होंने अपने पिता के मारे जाने का हाल सुना, तो उन्होंने कार्तवीर्य को मार डालने की प्रतिज्ञा की और अंत में मार भी डाला ।

३. विष्णु का एक नाम (को०) । ४. राजा बलि के सबसे बड़े पुत्र बाणासुर का नाम ।

सहस्रबुद्धि—वि० [सं०] सहस्रधी। अत्यंत चतुर [को०]।

सहस्रभागवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवी की एक मूर्ति का नाम।

सहस्रभानु—संज्ञा पुं० [सं०] जिसे हजारों किरण हो। सहस्र किरणों वाला, सूर्य [को०]।

सहस्रभित्—संज्ञा पुं० [सं०] १. अमलबेंत। २. कस्तूरी। मृगमद।

सहस्रभुज—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसे हजार भुजाएँ हों। दे० 'सहस्रबाहु'। २. विष्णु (को०)।

सहस्रभुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवी का वह रूप जो उन्होंने महिषासुर को मारने के लिये धारण किया था। उस समय उनकी हजार भुजाएँ हो गई थीं। इसी से उनका यह नाम पड़ा था।

सहस्रमरीचि—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सहस्रमूर्ति—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

सहस्रमूर्द्धा—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रमूर्द्धन्] १. विष्णु। २. शिव।

सहस्रमूलिका, सहस्रमूली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कांड पत्नी। २. बड़ी दंती। ३. मूसाकानी। ४. बड़ी शतावर। ५. बनमूँग। मुद्गपर्णी।

सहस्रमौलि—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. अनंतदेव का एक नाम।

सहस्रयाजी—वि० [सं० सहस्रयाजिन्] सहस्र गौ की दक्षिणा से युक्त यज्ञ करानेवाला।

सहस्रयुग—संज्ञा पुं० [सं०] एक हजार युगों की अवधि या काल।

सहस्ररश्मि—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सहस्ररुच्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहस्ररश्मि' [को०]।

सहस्ररोम—संज्ञा पुं० [सं० सहस्ररोमन्] ऊर्ण वस्त्र। कंबल [को०]।

सहस्रलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. विष्णु (को०)।

सहस्रवक्त्र—वि० [सं०] जिसे हजार मुख हों।

सहस्रवदन—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम [को०]।

सहस्रवाक—संज्ञा पुं० [सं०] वह (ग्रंथ आदि) जिसमें हजार छंद हों [को०]।

सहस्रवाच्—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सहस्रवीर्य—वि० [सं०] बहुत बड़ा बलवान्। बहुत ताकतवर।

सहस्रवीर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दूब। २. बड़ी शतावर।

सहस्रवेध—संज्ञा पुं० [सं०] १. चूक नामक खटाई। २. काँजी। ३. हींग।

सहस्रवेधिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कस्तूरी।

सहस्रवेधी[1]—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रवेधिन्] १. हींग। २. अम्लबेंत। ३. कस्तूरी।

सहस्रवेधी[2]—वि० हजारों का वेध करनेवाला।

सहस्रशः—अव्य० [सं० सहस्रशस्] हजारों की संख्या में [को०]।

सहस्रशाख—संज्ञा पुं० [सं०] वेद, जिसकी हजार शाखाएँ हैं।

सहस्रशिखर—संज्ञा पुं० [सं०] विंध्य पर्वत का एक नाम।

सहस्रशिर—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रशिरस्] दे० 'सहस्रशीर्ष'।

सहस्रशीर्ष—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रशीर्षन्] सहस्र शिरोंवाला। जिसे हजार शिर हों। परम पुरुष। विष्णु।

सहस्रशीर्षा—वि० [सं० सहस्रशीर्षन्] दे० 'सहस्रशीर्ष'।

सहस्रश्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

सहस्रश्रुति—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार जंबू द्वीप के एक वर्ष पर्वत का नाम।

सहस्रसम—वि० [सं०] सहस्र वर्ष पर्यंत चलने या रहनेवाला।

सहस्रसाव—संज्ञा पुं० [सं०] अश्वमेध यज्ञ।

सहस्रसाव्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अयन।

सहस्रसीस(पु)—वि० पुं० [सं० सहस्र + शीर्ष, प्रा० सीस] हजार शिर-वाला। जिसे हजार शिर हों। उ०—सेस सहस्रसीस जगकारन। जो अवतरेउ भूमि भय टारन।—मानस, १।१७।

सहस्रस्तुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भागवत के अनुसार एक नदी का नाम।

सहस्रस्रोत—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वर्ष पर्वत का नाम।

सहस्रहर्यश्व, सहस्रहयाश्व—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का रथ।

सहस्रहस्त—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक रूप [को०]।

सहस्रांक—संज्ञा पुं० [सं० सहस्राङ्क] सूर्य [को०]।

सहस्रांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सहस्राङ्गिन्] १. मोरशिखा। मयूरशिखा। २. मधुपीलु वृक्ष। पीलू।

सहस्रांशु—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सहस्रांशुज—संज्ञा पुं० [सं०] शनि ग्रह।

सहस्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मात्रिका। अंबष्ठा। मोइया। २. मोर-शिखा। मयूरशिखा।

सहस्राक्ष[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहस्र आँखोंवाला, इंद्र। २. परम पुरुष। विष्णु। ३. देवी भागवत के अनुसार एक पीठस्थान। इस स्थान की देवी उत्पलाक्षी कही गई हैं।

सहस्राक्ष[2]—वि० १. जिसे हजार नेत्र हों। हजार आखोंवाला। २. सावधान। सतर्क [को०]।

सहस्राख्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम। विंध्य पर्वत [को०]।

सहस्रात्मा—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रात्मन्] ब्रह्मा।

सहस्राधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी राजा की ओर से एक हजार गाँवों का शासन करने के लिये नियुक्त हो।

सहस्रानन—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. शेषनाग। सहस्रसीस।

सहस्रानीक—संज्ञा पुं० [सं०] राजा शतानीक के पुत्र का नाम।

सहस्राब्द, सहस्राब्दी—संज्ञा पुं० [सं०] हजार वर्षों का काल। एक हजार वर्ष का समय। सहस्रायुष्।

सहस्रायु—वि० [सं०] सहस्र वर्षों की आयु पानेवाला। सहस्र वर्ष का।

सहस्रायुतीय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

सहस्रार—संज्ञा पुं० [सं०] १. हजार दलोंवाला एक प्रकार का कल्पित कमल। कहते हैं कि यह कमल मनुष्य के मस्तक में उलटा लगा रहता है; और इसी में सृष्टि, स्थिति तथा लयवाला परबिंदु रहता है। २. जैनों के अनुसार बारहवें स्वर्ग का नाम।

सहस्रारज—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के एक देवता का नाम।

सहस्रार्चिस्—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव का नाम। २. सहस्र किरणोंवाला, सूर्य।

सहस्रावर—संज्ञा पुं० [सं०] १. हजार पण से नीचे का जुरमाना। २. वह अर्थदंड या जुरमाना जो ५०० से एक हजार पण के अंदर हो [को०]।

सहस्रावर्तक—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

सहस्रावर्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवी की एक मूर्ति का नाम।

सहस्रास्य—संज्ञा पुं० [सं०] हजार मुखवाले, विष्णु। २. शेषनाग या अनंत का एक नाम।

सहस्री[१]—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रिन्] १. वह वीर या नायक जिसके पास हजार योद्धा, घोड़ा या हाथी आदि हों। २. हजार व्यक्तियों का समूह या दल (को०)।

सहस्री[२]—वि० १. हजारवाला। जिसके पास हजार हो। २. जिसने सहस्रावर अर्थदंड अदा किया हो। ३. एक सहस्र तक का। जिसकी सीमा एक सहस्र हो [को०]।

सहस्रेक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] हजार आँखोंवाला—इंद्र। सहस्राक्ष [को०]।

सहस्वान्—वि० [सं० सहस्वत्] शक्तिशील। ताकतवर।

सहांपति—संज्ञा पुं० [सं० सहाम्पति] १. ब्रह्मा। पितामह। २. एक नाग का नाम। ३. एक बोधिसत्व [को०]।

सहा[१] संज्ञा पुं० [सं०] १. घीकुआर। ग्वारपाठा। २. बनमूँग। ३. दंडोत्पल। ४. सफेद कटसरैया। ५. ककही या कंघी नाम का वृक्ष। ६. सर्पिणी। ७. रासना। ८. सत्यानाशी। ९. सेवती। १०. हेमंत ऋतु। ११. अगहन मास। १२. मषवन। १३. देवताड़ वृक्ष। १४. मेंहदी।

सहा[२]—संज्ञा [सं० सहस्] १. धरित्री। पृथिवी। २. घृतकुमारी। घीकुआर [को०]।

सहाइ(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० सहाय्य] सहायक। मददगार।

सहाइ(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद। उ०—(क) दीन्ही है रजाइ राम पाइ सो सहाइ लाल लषन समर्थ बीर हेरि हेरि मारि है।—तुलसी ग्रं०, पृ० २३३। (ख) हरि जू ताकी करी सहाइ।—सूर०, ७।२।

सहाई(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० सहाय्य] सहायक। मददगार। उ०—अति आरति कहि कथा सुनाई। करहु कृपा करि होहु सहाई।—मानस, १।१३२।

सहाई(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद।

सहाउ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सहाय, प्रा० सहाउ] दे० 'सहाय'

सहाचर—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीली कटसरैया। पीली झिंटी। २. दे० 'सहचर'।

सहाद्वय—संज्ञा पुं० [सं०] बनमूँग। जंगली मूँग।

सहाध्ययन—संज्ञा पुं० [सं०] १. साथ साथ या मिलकर पढ़ना। २. साथ साथ पढ़ने का भाव। सहपाठी होना। ३. समान विषय या अध्ययन [को०]।

सहाध्यायी—संज्ञा पुं० [सं० सहाध्यायिन्] १. वह जो साथ पढ़ा हो। सहपाठी। २. वह जो समान या एक ही विषय का अध्ययन करता हो।

सहाना[१]—संज्ञा पुं० [सं० शोभन या फ़ा० शाह] एक प्रकार का राग। विशेष दे० 'शहाना'[१]।

सहाना(पु)[२]—वि० [फ़ा० शहानह्, शहाना] शाही। राजसी।

सहाना†[३]—क्रि० स० [सं० सहन, हिं० सहना] बर्दाश्त करना। सहने के लिये प्रेरित करना।

सहानी[१]—वि० [फ़ा० शाहाना] पीलापन लिए हुए लाल रंग का जैसे,—सहानी चूड़ियाँ। दे० 'शहाना' के यौ०।

सहानी[२]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का रंग जो पीलापन लिए लाल होता है।

सहानुगमन†—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री का अपने पति के शव के साथ जल मरना। सती होना। सहगमन।

सहानुसरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. साथ साथ अथवा समान रूप से अनुसरण करना। २. सहगमन।

सहानुभूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी को दुःखी देखकर स्वयं दुःखी होना। दूसरे के कष्ट से दुःखी होना। हमदर्दी।

क्रि० प्र०—करना।—दिखाना।—रखना।

सहान्य—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत [को०]।

सहापवाद—वि० [सं०] अपवाद युक्त। असहमति युक्त [को०]।

सहाब[१]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शहाब] एक प्रकार का गहरा लाल रंग। दे० 'शहाब'।

सहाब[२]—संज्ञा पुं० [अ०] मेघ। पर्जन्य [को०]।

सहावत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मैत्री। दोस्ती। मित्रता। २. सहायता। मदद [को०]।

सहाय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहायता। मदद। सहारा। २. आश्रय। भरोसा। ३. सहायक। मददगार। ४. मित्रता। मैत्री (को०)। ५. एक प्रकार की वनस्पति या गंध द्रव्य। ६. एक प्रकार का हंस या चक्रवाक पक्षी। ७. शिव का एक नाम (को०)। ८. मित्र। साथी (को०)।

यौ०—सहायकरण = सहायता करना। सहायकृत् = संगी। जो मदद करे। सहायकृत्य = सहायता करना।

सहायक—वि० [सं०] १. सहायता करनेवाला। मददगार। २. (वह छोटी नदी) जो किसी बड़ी नदी में मिलती हो। जैसे,—यमुना भी गंगा की सहायक नदियों में से एक है। ३. किसी की अधीनता में रहकर काम में उसकी सहायता करनेवाला। जैसे,—सहायक संपादक।

सहायता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी के कार्यसंपादन में शारीरिक या और किसी प्रकार योग देना। ऐसा प्रयत्न करना जिसमें किसी का काम कुछ आगे बढ़े। मदद। सहाय। जैसे,—मकान बनाने में सहायता देना, किताब लिखने में सहायता देना। २. मित्रों का समूह (को०)। ३. वह धन जो किसी कार्य को आगे बढ़ाने के लिये लिये दिया जाय। मदद। जैसे,—उन्हें लड़की के ब्याह में कई जगहों से सौ सौ रुपए की सहायता मिली।

क्रि० प्र०—करना।—पाना।—देना।—मिलना।—होना।

सहायत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. मित्रता। मैत्री। २. मित्र मंडल। मित्रसमूह। ३. सहायता मदद [को०]।

सहायन—संज्ञा पुं० [सं०] १. साथ देना या रहना। २. अनुगमन। साथ जाना [को०]।

सहायवान्—वि० [सं० सहायवत्] १. मित्रवाला। संगी साथी से युक्त। २. सहायताप्राप्त। जिसे मदद मिली हो [को०]।

सहायी[1]—वि० [सं० सहायिन्] [वि० स्त्री० सहायिनी] साथ जाने या अनुगमन करनेवाला।

सहायी[2]—संज्ञा पुं० [सं० सहाय + ई (प्रत्य०)] १. सहायक। मददगार। सहायता करनेवाला। २. सहायता। मदद। सहाय।

सहार[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. आम का पेड़। आम्रवृक्ष। सहकार। २. महाप्रलय।

सहार[2]—संज्ञा पुं० [हिं० सहना] १. बर्दाश्त। सहनशीलता। २. सहन करने की क्रिया।

सहारना†—क्रि० स० [सं० सहन, हिं० सँभाल या सहाय] १. सहन करना। बर्दाश्त करना। सहना। उ०—कठिन बचन सुनि श्रवन जानकी सकी न बचन सहार। तृण अंतर दै दृष्टि तिरौंछी दई नैन जलधार।—सूर (शब्द०)। २. अपने ऊपर भार लेना। सँभालना। ३. गवारा करना।

सहारा—संज्ञा पुं० [सं० सहाय] १. मदद। सहायता।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

२. जिसपर बोझ डाला जा सके। आश्रय। आसरा। ३. भरोसा। ४. इतमीनान।

मुहा०—सहारा पाना = मदद पाना। सहारा देना = (१) मदद देना। (२) टेक देना। (३) आसरा देना। (४) रोकना। सहारा ढूँढ़ना = आसरा ताकना। वसीला ढूँढ़ना।

सहारोग्य—वि० [सं०] स्वस्थ। रोगरहित [को०]।

सहार्थ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहयोग। २. साधारण या समान विषय। ३. आनुषंगिक विषय [को०]।

सहार्थ[2]—वि० १. समान अर्थ युक्त। २. समान उद्देश्य, वस्तु या विषयवाला [को०]।

सहार्द—वि० [सं०] हृदयवाला। स्नेही [को०]।

सहार्ध—वि० [सं०] आधे के साथ। जिसमें आधा और हो [को०]

सहालग—संज्ञा पुं० [सं० साहित्य (= संबंध)] १. वह वर्ष जो हिंदू ज्योतिषियों के कथनानुसार शुभ माना जाता है। २. वे मास या दिन जिनमें विवाह के मुहूर्त हों। ब्याह शादी के दिन।

सहालाप—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के साथ बातचीत [को०]।

सहाव—वि० [सं०] १. 'हाव' से युक्त। २. कामासक्त। विलासी [को०]।

सहावल—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाकूल] लोहे या पत्थर का वह लटकन जिसे तागे से लटकाकर दीवार की सिधाई नापी जाती है। शाकूल। लटकन। सनसाल। विशेष दे० 'साहुल'।

सहासन—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही आसन पर बैठना [को०]।

सहासिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] साथ साथ बैठना। सहगोष्ठी [को०]।

सहिंजन—संज्ञा पुं० [सं० शोभाञ्जन] दे० 'सहिजन'।

सहिजन—संज्ञा पुं० [सं० शोभाञ्जन] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो भारत के प्रायः सभी प्रांतों में उत्पन्न होता है, पर अवध में अधिक देखा जाता है। शोभांजन। मुनगा।

विशेष—इसकी छाल मोटी होती है, पर लकड़ी अधिक कड़ी नहीं होती। पत्ते गुलतुर्रा के पत्तों की तरह होते हैं। कातिक मास से वसंत ऋतु के आरंभ तक इसमें फूल रहते हैं। इसके फूल एक इंच के घेरे में गोलाकार सफेद रंग के होते हैं और बहुत से एक साथ गुच्छे में लगते हैं। इसके फल दस इंच से बीस इंच लंबी फलियों के आकार के होते हैं जिनकी मोटाई एक अंगुल से अधिक नहीं होती। ये फल तरकारी के काम में आते हैं। इसके बीज सफेद रंग के और तिकोने होते है। बीजों से उत्पन्न होने के अतिरिक्त यह डाल लगा देने से भी लग जाता है और शीघ्र फलने लगता है। यह ओषधि के काम में भी लाया जाता है। कहीं कहीं नीले रंग के फूलोंवाला सहिजन भी पाया जाता है।

सहिजानी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञान] निशानी। चिह्न। पहचान।

सहित[1]—अव्य० [सं०] १. साथ। समेत। संग। युक्त। जैसे,—सीता और लक्ष्मण सहित रामजी वन गए थे।

सहित[2]—वि० १. युक्त। साथ। २. बर्दाश्त या सहन किया हुआ। झेला या भोगा हुआ। ३. (ज्यौतिष) किसी के साथ लगा हुआ या संयुक्त [को०]।

सहित[3]—संज्ञा पुं० वह धनुष जो ३०० पल का वजन सँभाल सकता हो [को०]।

सहितत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सहित का भाव या धर्म।

सहितव्य—वि० [सं०] सहन करने के योग्य। जो सहा जा सके।

सहिता—वि० [सं० सहितृ] सहनेवाला। सहनशील [को०]।

सहित्र—संज्ञा पुं० [सं०] सहन करने की क्षमता। धीरता। धैर्य [को०]।

सहिथा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति, हिं० सैंथी, सैंहथी] बरछी। साँग।

सहिदान(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० संज्ञान] चिह्न। पहचान। निशान।

सहिदानी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञान] चिह्न। पहचान। निशान। उ०—(क) सुनो अनुज इह बन इतननि मिलो जानकि प्रिया हरी। कुछ इक अंगनि की सहिदानी मेरी दृष्टि परी। कटि

केहरि कोकिल वाणी अरु शशि मुख प्रभा खरी। मृग मूसी नैनन की शोभा जाहि न गुप्त करी।—सूर (शब्द०)। (ख) जारि वारि कै विधूम वारिधि बुताई लूम नाइ माथो पगनि भो ठाढो कर जोरि कै। 'मातु कृपा कीजै सहिदानी दीजै' सुनि सिय दीन्ही है असीस चारु चूड़ामनि छोरि कै। —तुलसी (शब्द०)।

सहिबाला†—संज्ञा पुं० [फ़ा० शहबाला] दे० 'शहबाला'।

सहिम—वि० [सं०] बर्फ युक्त। बर्फ के समान ठंढा [को०]।

सहिर—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत। पहाड़ [को०]।

सहिरिया†—संज्ञा स्त्री० [देश०] बसंत की वह फसल जो बिना सींचे होती है, सींची नहीं जाती।

सहिष्ठ—वि० [सं०] बलवान्। ताकतवर।

सहिष्णु[1]—वि० [सं०] जो कष्ट या पीड़ा आदि सहन कर सके। सहनशील। बरदाश्त करनेवाला।

सहिष्णु[2]—संज्ञा पुं० १. विष्णु। उपेंद्र। २. हरिवंश में उल्लिखित एक ऋषि। ३. पुलह के एक पुत्र का नाम। ४. छठे मन्वंतर के सप्तर्षियों में एक का नाम [को०]।

सहिष्णुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहिष्णु होने का भाव। सहनशीलता। २. क्षमा।

सहिष्णुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहिष्णुता'।

सहीⓟ[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सखी, प्रा० सही] सखी। सहेली।

सही[2]—वि० [फ़ा०] सीधा। ऋजु। सरल। जैसे,—सहीकद = सीधा। सीधे आकार का [को०]।

सही[3]—वि० [फ़ा० सहीह] १. सत्य। सच। २. प्रामाणिक। ठीक। यथार्थ। ३. जो गलत न हो। शुद्ध। ठीक।

४. स्वस्थ। तंदुरुस्त। चंगा (को०)। ५. पूर्ण। पूरा। समूचा। साबित (को०)।

मुहा०—सही पड़ना = ठीक उतरना। सच होना। प्रमाणित होना। सही भरना = तसलीम करना। मान लेना। उ०—बानी बिधि गौरि हर सेसहूँ गनेस कही सही भरी लोमस भुसुंडिबहु वारिषो।—तुलसी (शब्द०)।

सही[4]—संज्ञा स्त्री० [सं० साक्ष्य या साक्षी, प्रा० सक्खी ?] (स्वीकृति-सूचक) हस्ताक्षर। दस्तखत। उ०—मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ की, परी रघुनाथ सही है।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५६५।

क्रि० प्र०—करना।—लेना।

सहीसबूत—संज्ञा पुं० [फ़ा० सहीसाबित] साक्षी। प्रमाण। सबूत।

सहीसलामत—वि० [फ़ा०] १. स्वस्थ। आरोग्य। भला चंगा। तंदुरुस्त। २. जिसमें कोई दोष या न्यूनता न आई हो।

सहीह—वि० [फ़ा०] दे० 'सही' [को०]।

सहीसालिम—वि० [फ़ा०] १. दे० 'सहीसलामत'। २. जैसे का तैसा। ज्यों का त्यों। जैसा था वैसा ही। उ०—बर्छी टूटी हुई थी लेकिन राइफल सहीसालिम थी।—रजिया०, पृ० ३७८।

सहुँ—अव्य० [सं० सम्मुख] १. संमुख। सामने। २. ओर। तरफ। उ०—जा सहुँ हेर जाइ सो मारा। गिरिवर ठर्रहिं भौंह जो टारा।—जायसी (शब्द०)।

सहुरि[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सहुरि[2]—संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरित्री।

सहूर†—संज्ञा पुं० [अ० शुऊर, शऊर] दे० 'शऊर'।

सहूलत—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दे० 'सहूलियत'।

सहूलियत—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. आसानी। सुगमता। जैसे,—अगर आप आ जायँगे, तो मुझे अपने काम में और सहूलियत हो जायगी। २. अदब। कायदा। शऊर। जैसे,—अब तुम बड़े हुए कुछ सहूलियत सीखो।

सहृदय[1]—वि० [सं०] १. जो दूसरे के दुःख सुख आदि समझने की योग्यता रखता हो। समवेदनायुक्त पुरुष। २. दयालु। दयावान्। ३. रसिक। ४. सज्जन। भला आदमी। ५. सुस्वभाव। अच्छे मिजाजवाला। ६. प्रसन्नचित्त। खुशदिल।

सहृदय[2]—संज्ञा पुं० १. विद्वान् व्यक्ति। २. गुणों की समझ रखने और सराहना करनेवाला व्यक्ति [को०]।

सहृदयता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहृदय होने का भाव। २. सौजन्य। ३. रसिकता। ४. दयालुता।

सहृल्लेख[1]—वि० [सं०] संदेहास्पद। आपत्तिजनक। संदिग्ध [को०]।

सहृल्लेख[2]—संज्ञा पुं० संदिग्ध खाद्य [को०]।

सहेज†—संज्ञा पुं० [देश०] वह दही जो दूध को जमाने के लिये उसमें छोड़ा जाता है। जामन।

सहेजना—क्रि० स० [अ० सही ?] १. भली भाँति जाँचना। अच्छी तरह से देखना कि ठीक या पूरा है या नहीं। सँभालना। जैसे,—रुपए सहेजना। कपड़े सहेजना।

संयो० क्रि०—देना।—लेना।

२. अच्छी तरह कह सुनकर सिपुर्द करना।

क्रि० प्र०—देना।

सहेजवाना†—क्रि० स० [हिं० सहेजना का प्रेर० रूप] सहेजने का काम दूसरे से करवाना।

सहेटⓟ—संज्ञा पुं० [हिं० सहेत, सहेट] मिलने की जगह। दे० 'सहेत'। उ०—भौंन ते निकसि वृषभानु की कुमारी देख्यो ता समै सहेट को निकुंज गिरचो तीर को।—मतिराम (शब्द०)।

सहेटीⓟ—वि० स्त्री० [हिं० सहेट] १. संकेत स्थल की ओर जाती रहनेवाली। घुमक्कड़। घूमनेवाली। उ०—आड़ न मानति चाड़ भरी उघरी ही रहै अति लाग लपेटी। ढीठि भई मिलि ईठि सुजान न देहि क्यौं पीठि जु दीठि सहेटी।—घनानंद, पृ० १३। २. संकेतस्थल पर जानेवाली। अभिसार करनेवाली।

सहेतⓟ†—संज्ञा पुं० [सं० सङ्केत] वह निर्दिष्ट स्थान जहाँ प्रेमी प्रेमिका मिलते हैं। अभिसार का पूर्वनिर्दिष्ट या निश्चित स्थान। मिलने की जगह।

सहेतु—वि० [सं०] हेतु युक्त। सहेतुक। कारणयुक्त। हेतु सहित। सकारण [को०]।

सहेतुक—वि० [सं०] जिसका कोई हेतु हो। जिसका कुछ उद्देश्य या मतलब हो। जैसे,—यहाँ यह पद सहेतुक आया है, निरर्थक नहीं है।

सहेरवा‡—संज्ञा पुं० [देश०] हरसिंगार या पारिजात का वृक्ष।

सहेल†—संज्ञा पुं० [देश०] वह सहायता जो असामी या काश्तकार अपने जमींदार को उसके खुदकाश्त खेत को काश्त करने के बदले में देता है। यह सहायता प्रायः बेगारी और बीज आदि के रूप में होती है।

सहेल²—वि० [सं०] क्रीड़ायुक्त। हेलायुक्त। चितारहित। लापरवाह [को०]।

सहेलरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सहेली] दे० 'सहेली'।

सहेलवाल—संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

सहेली—संज्ञा स्त्री० [सं० सह+हिं० एली (प्रत्य०)] साथ में रहनेवाली स्त्री। संगिनी। सखी। २. अनुचरी। पारिचारिका। दासी।

सहैयाⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० सहाय] सहायता करनेवाला। सहायक।

सहैया²—वि० [सं० सहन] सहनेवाला। सहन करनेवाला।

सहोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें 'सह', 'संग', 'साथ' आदि शब्दों का व्यवहार होता है और अनेक कार्य साथ ही होते हुए दिखाए जाते हैं। प्रायः इन अलंकारों में क्रिया एक ही होती है। जैसे,—बल प्रताप वीरता बड़ाई। नाक, पिनाकहि संग सिधाई।—तुलसी (शब्द०)।

सहोजा—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. इंद्र।

सहोटज—संज्ञा पुं० [सं०] पर्णकुटी। ऋषियों आदि के रहने की पर्णकुटी।

सहोढ़—संज्ञा पुं० [सं० सहोढ] १. बारह प्रकार के पुत्रों में से एक प्रकार का पुत्र। गर्भ की अवस्था में व्याही हुई कन्या का पुत्र। वह पुत्र जिसकी माता विवाह से पूर्व ही गर्भवती रही हो। २. वह चोर जो चोरी के माल के साथ पकड़ा गया हो (को०)।

सहोढ़ज—संज्ञा पुं० [सं० सहोढज] दे० 'सहोढ़'–१।

सहोणीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं०] सखी। सहेली।

सहोत्थ—वि० [सं०] जो सहज या स्वाभाविक हो [को०]।

सहोत्थायी—वि० [सं० सहोत्थायिन्] साथ साथ उठने या उन्नति करनेवाला [को०]।

सहोदक—वि० [सं०] साथ साथ तर्पण करनेवाला। दे० 'समानोदक' [को०]।

सहोदर¹—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सहोदरा] एक ही उदर से उत्पन्न संतान। एक माता के पुत्र।

सहोदर²—वि० १. सगा। अपना। खास (क्व०)। २. जो एक माता उदर से पैदा हों।

सहोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अलंकार। उपमा। अलंकार काएज भेद।

सहोबल—संज्ञा पुं० [सं०] भयंकर क्रूरता या बर्बरता [को०]।

सहोर¹—संज्ञा पुं० [सं० शाखोट] एक प्रकार का वृक्ष। सिहोर। शाखोट।

विशेष—इसका वृक्ष प्रायः जंगली प्रदेशों में होता है और विशेषतः शुष्क भूमि में अधिक उत्पन्न होता है। यह अत्यंत गठीला और झाड़दार होता है। प्रायः यह सदा हराभरा रहता है पतझड़ में भी इसके पत्ते नहीं गिरते। इसकी छाल मोटी होती है और रंग भूरा खाकी होता है। इसकी लकड़ी सफेद और साधारणतः मजबूत होती है। इसके पत्ते हरे छोटे और खुर्दुरे होते हैं। फाल्गुन मास तक इसका वृक्ष फूलता फलता है और वैशाख से आषाढ़ तक फल पकते हैं। फूल आध इंच लंबे, गोल और सफेद या पीलापन लिए होते हैं। इसके गोल फल गूदेदार होते हैं और बीज गोलाकार होते हैं। इसकी टहनियों को काटकर लोग दातून बनाते हैं। चिकित्साशास्त्र के अनुसार यह रक्तपित्त, बवासीर, वात, कफ और अतिसार का नाशक है।

पर्या०—शाखोट। भूतावास। पीतफलक। पिशाचद।

सहोर²—वि० [सं०] अच्छा। उत्कृष्ट। उत्तम [को०]।

सहोर³—संज्ञा पुं० महात्मा। साधु। संत [को०]।

सहोवर‡—संज्ञा पुं० [सं० सहोदर] सगा भाई। एक माता के पुत्र।

सहोवल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहोबल'।

सह्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत। विशेष दे० 'सह्याद्रि'। २. स्वास्थ्य। आरोग्यलाभ (को०)। ३. मदद। सहायता (को०)। ३. युक्तता। पर्याप्ति (को०)।

सह्य²—वि० १. सहने योग्य। सहने लायक। बर्दाश्त करने लायक। जो सहन करने में समर्थ हो। २. आरोग्य। ३. प्रिय। प्यारा। ४. झेलने, भोगने या वहन करने योग्य (को०)। ५. समर्थ। शक्तिशाली (को०)।

सह्य³—संज्ञा पुं० साम्य। समानता। बराबरी।

सह्यकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सह्यकर्मन्] मदद। सहायता। सहारा।

सह्यवासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा की एक मूर्ति।

सह्यात्मजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सह्य नामक पर्वतसे निकलनेवाली नदी। कावेरी [को०]।

सह्याद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध पर्वत। जो बंबई (महाराष्ट्र) प्रांत में है।

विशेष—पश्चिमीय घाट का वह भाग जो मलयाचल पर्वत के उत्तर नीलगिरी तक है, सह्याद्रि कहलाता है। पूना से बंबई जानेवाली रेल इसी को पार करती हुई गई है। शिवाजी प्रायः अपने शत्रुओं से बचने के लिये इसी पर्वतमाला में रहा करते थे।

सह्ल—संज्ञा पुं० [सं०] पहाड़। पर्वत [को०]।

सह्व—संज्ञा पुं० [अ०] अनवधानता। प्रमाद।

सह्वन्—अव्य० [अ०] प्रमाद के कारण। गलती से।

सांकथिक—वि० [सं० साङ्कथिक] बार्तापटु। वार्तालाप करने में कुशल [को०]।

सांकथ्य—संज्ञा पुं० [सं० साङ्कथ्य] बातचीत। वार्तालाप [को०]।

सांकरिक—वि० [सं० साङ्करिक] वर्णसंकर [को०]।

सांकर्य—संज्ञा पुं० [सं० साङ्कर्य] घालमेल। मिश्रण। घपला। मिलावट।

सांकल—वि० [सं० साङ्कल] [वि० स्त्री० साङ्कली] योग या मिश्रण द्वारा उत्पन्न या निष्पादित किया हुआ [को०]।

सांकल्पिक—वि० [सं० साङ्कल्पिक] १. संकल्पजन्य। संकल्प द्वारा कृत। २. कल्पनाजन्य। कल्पना से उत्पन्न [को०]।

सांकाश्य—संज्ञा पुं० [सं० साङ्काश्य] जनक के भाई कुशध्वज की राजधानी का नाम [को०]।

सांकाश्या—संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्काश्या] दे० 'सांकाश्य'।

सांकूजित—संज्ञा पुं० [सं० साङ्कूजित] पक्षियों का जोर से चहचहाना।

सांकेतिक—वि० [सं० साङ्केतिक] १. सकेत संबंधी। प्रतीकात्मक। उ०—रहस्यवादियों की सार्वभौम प्रवृत्ति के अनुसार ये सिद्ध लोग अपनी बानियों के सांकेतिकता दूसरे अर्थ भी करते थे।—इतिहास, पृ० १२। २. परंपरित। परंपराप्राप्त। प्रचलित।

यौ०—सांकेतिक हड़ताल = अपनी माँग के समर्थन में आगे की जानेवाली कारवाई की अग्रिम सूचना के प्रतीक या संकेत में की जानेवाली हड़ताल। (अं० टोकेन स्ट्राइक)।

सांकेतिकता—संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्केतिक + ता (प्रत्य०)] सूक्ष्मता। संकेत या प्रतीक रूप में होने का भाव। उ०—यहाँ एकदम विक्षिप्तता और अत्यंत सांकेतिकता नहीं है।—इति०, पृ० ८६।

सांकेत्य—संज्ञा पुं० [सं० साङ्केत्य] १. सहमति। राजीनामा। समझौता। २. प्रिय अथवा प्रिया के साथ मिलन के समय का निश्चय किया जाना [को०]।

सांक्रमिक—वि० [सं० साङ्क्रमिक] संक्रमणशील। संक्रामक [को०]।

सांक्षेपिक—वि० [सं० साङ्क्षेपिक] संक्षिप्त। संक्षेप या कम किया हुआ [को०]।

सांख्य[1]—संज्ञा पुं० [सं० साङ्ख्य] १. हिंदुओं के छह् दर्शनों में से एक दर्शन जिसके कर्ता महर्षि कपिल हैं।

विशेष—इस दर्शन में सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम दिया गया है। इसमें प्रकृति को ही जगत् का मूल माना है और कहा गया है कि सत्व, रज और तम इन तीनों के योग से सृष्टि का और उसके सब पदार्थों आदि का विकास हुआ है। इसमें ईश्वर की सत्ता नही मानी गई है; और आत्मा को ही पुरुष कहा गया है। इसके अनुसार आत्मा अकर्ता, साक्षी और प्रकृति से भिन्न है। आत्मा या पुरुष अनुभवात्मक कहा गया है, क्योंकि इसमें प्रकृति भी नहीं है और विकृति भी नहीं है। इसमें सृष्टि के चार मुख्य विधान माने गए हैं—प्रकृति, विकृति, विकृति-प्रकृति और अनुभव। इसमें आकाश आदि पाँचों भूत और ग्यारह इंद्रियाँ प्रकृति हैं। विकृति या विकार सोलह प्रकार के माने गए है। इसमें सृष्टि को प्रकृति का परिणाम कहा गया है; इसलिये इसका मत परिणामवाद भी कहलाता है। विशेष दे० 'दर्शन'। २. शिव। ३. वह जो सांख्यमत का अनुयायी हो (को०)।

सांख्य[2]—वि० संख्या संबंधी। २. आकलनकर्ता। गणक। ३. विवेचक। ४. विचारक। तार्किक।

सांख्यकारिका—संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्ख्यकारिका] सांख्यदर्शन की पद्यबद्ध टीका जिसकी रचना ईश्वरकृष्ण ने ईसा की तीसरी सदी में की थी। उ०—सांख्यदर्शन के प्रवर्तक कपिल ई० पू० ७–६वीं सदी में हुए होंगे पर इसका पहला ग्रंथ ईश्वरकृष्णकृत सांख्यकारिका तीसरी ईस्वी सदी की रचना है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १६४।

सांख्यजोगⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सांख्य + योग, हिं० जोग] दे० 'सांख्य'। उ०—सांख्य जोग यह धर्म है, कर्म बीज को जार।—केशव० अमी०, पृ० १।

सांख्यप्रसाद—संज्ञा पुं० [सं० साङ्ख्यप्रसाद] शिव [को०]।

सांख्यमुख्य—संज्ञा पुं० [सं० साङ्ख्यमुख्य] शिव [को०]।

सांख्यवादी—संज्ञा पुं० [सं० साङ्ख्यवादिन्] सांख्यदर्शन का अनुयायी। उ०—सांख्यवादियों ने जिसको प्रकृति कहा है करीब करीब उसको वेदांतियों ने माया कहा है।—हिंदी काव्य०, पृ० ८।

सांख्यायन—संज्ञा पुं० [सं० साङ्ख्यायन] एक प्राचीन आचार्य।

विशेष—इन्होंने ऋग्वेद के सांख्यायन ब्राह्मण की रचना की थी। इनके कुछ श्रौत सूत्र भी हैं। सांख्यायन कामसूत्र भी इन्हीं का बनाया हुआ है।

सांग[1]—वि० [सं० साङ्ग] १. सब अंगों सहित। संपूर्ण। २. अवयव या अंगवाला। अंगयुक्त (को०)। ३. छह् अंगों या उपांगों से युक्त (को०)।

यौ०—सांगोपांग।

सांगⓟ†[2]—संज्ञा पुं० [हिं० स्वाँग] दे० 'स्वाँग'। उ०—खिलवत हास खुसामदी, सुरका दुरका सांग।—बाँकी ग्रं०, भा० २, पृ० ७७।

सांगग्लानि—वि० [सं० साङ्गग्लानि] थकित। क्लांत [को०]।

सांगज—वि० [सं० साङ्गज] रोमराजियुक्त। केशयुक्त। बालों से ढका हुआ [को०]।

सांगतिक[1]—वि० [सं०] संगति, समाज या संघ से संबद्ध [को०]।

सांगतिक[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १. अतिथि। अभ्यागत। नवागंतुक। २. वह व्यक्ति जो व्यापार, (आदान प्रदान, भुगतान आदि) के सिल-सिले में आया हो [को०]।

सांगत्य—संज्ञा पुं० [सं० साङ्गत्य] संगति। समागम। संगम [को०]।

सांगम—संज्ञा पुं० [सं० साङ्गम] संगम। मिलन। संपर्क [को०]।

सांगि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कु, हिं० साँगी] दे० 'साँगी'। उ०—शब्द की सांगि समसेर तुम पकरि ले, सुरति नेजा निर्वान कीना।—संत० दरिया पृ० ७०।

सांगीत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० साङ्गीत] दे० 'संगीत'। उ० जोतिक आगम जानि, सामुद्रिक सांगीत सब।—हिं० क० का०, पृ० १८८।

सांगुष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्गुष्ठा] १. गुंजा। २. करंजनी।

सांगोपांग—अव्य० [सं० साङ्गोपाङ्ग] अंगों और उपांगों सहित। संपूर्ण। समस्त। पूर्ण। जैसे—(क) विवाह के कृत्य सांगोपांग होने चाहिए। (ख) यज्ञ सांगोपांग पूरा हो गया।

सांगोपांगता—संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्गोपाङ्ग+ता (प्रत्य०)] सब अंगों से युक्त होने का भाव। उ०—समस्या संबंधी विवेचना की पूर्णता व्यवस्था अथवा सांगोपांगता में नहीं है।—इति०, पृ० १२७।

सांग्रहिक—वि० [सं० साङ्ग्रहिक] संग्रहकर्ता। जो संग्रह करने में कुशल हो [को०]।

सांग्राम—संज्ञा पुं० [सं० साङ्ग्राम] दे० 'संग्राम'।

सांग्रामिक[१]—वि० [सं० साङ्ग्रामिक] जो संग्राम से संबंधित हो। युद्धविषयक [को०]।

सांग्रामिक[२]—संज्ञा पुं० १. यौद्धिक उपकरण। युद्ध की सामग्री। २. सेनानायक। सेनापति [को०]।

सांग्रामिक गुण—संज्ञा पुं० [सं० साङ्ग्रामिक गुण] राजा के युद्ध संबंधी (शक्ति, षड्गुण और अस्त्रादि अभ्यास आदि) गुण।

सांग्रामिक परिच्छद—संज्ञा पुं० [सं० साङ्ग्रमिक परिच्छद] युद्धोपकरण। लड़ाई के औजार [को०]।

सांग्राहिक—वि० [सं० साङ्ग्राहिक] मलावरोधक। कोष्ठबद्धकारक। (चरक)।

सांघाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्घाटिका] १. वह स्त्री जो प्रेमी और प्रेमिका का संयोग कराती हो। कुटनी। दूती। ३. स्त्री प्रसंग। मैथुन। ३. एक प्रकार का वृक्ष।

सांघात—संज्ञा पुं० [सं० साङ्घात] समूह। दल।

सांघातिक[१]—वि० [सं० साङ्घातिक] [वि० स्त्री० सांघातिकी] १. अत्यंत विनाशात्मक। मारक। २. दल या समूह से संबंधित [को०]।

सांघातिक[२]—संज्ञा पुं० ज्योतिष में जन्मनक्षत्र से सोलहवाँ नक्षत्र जो सांघातिक कहा गया है।

सांघिक—वि० [सं० साङ्घिक] संघ से संबद्ध। भिक्षुओं के संघ से संबंधित [को०]।

यौ०—सांघिक संपत्ति = भिक्षुसंघ की संपत्ति।

सांचारिक—वि० [सं० साञ्चारिक] [वि० स्त्री० सांचारिकी] संचरणशील। गमनशील। जंगम [को०]।

सांजन[१]—संज्ञा पुं० [सं० साञ्जन] गिरगिट। छिपकली [को०]।

सांजन[२]—वि० अशुद्ध। कलुषित। पवित्रतारहित [को०]।

सांड—वि० [सं० साण्ड] जो बधिया न किया गया हो। जो अंड सहित हो [को०]।

सांत[१]—वि० [सं० शान्त, प्रा० सान्त] दे० 'शांत'।

सांत[२]—वि० [सं० सान्त] १. जिसका अंत हो। अंतयुक्त। जैसे—संसार का प्रत्येक पदार्थ सांत है। २. खुश। प्रसन्न।

सांततिक—वि० [सं० सान्ततिक] संतान देनेवाला। संततिदायक [को०]।

सांतपन संज्ञा पुं० [सं० सान्तपन] एक प्रकार का तप। सांतपन कृच्छ्र।

सांतपनकृच्छ्र—संज्ञा पुं० [सं० सान्तपनकृच्छ्र] एक प्रकार का व्रत जिसमें व्रत करनेवाला प्रथम दिवस भोजन त्यागकर गोमूत्र, गोमय, दूध, दही और घी को कुश के जल में मिलाकर पीता है और दूसरे दिन उपवास करता है।

सांतर—वि० [सं० सान्तर] १. अंतराल या अवकाशयुक्त। २. जो दृढ़ न हो। ३. झीना [को०]।

सांतानिक[१]—वि० [सं० सान्तानिक] संतान संबंधी। संतान का। औलाद का। २. फैलनेवाला। बढ़नेवाला। जैसे, वृक्ष (को०)। ३. संतान नामक वृक्ष संबंधी (को०)। ४. प्रजाकाम। पुत्रकाम। संतान का अभिलाषी (को०)। ५. विवाह का इच्छुक (को०)।

सांतानिक[२]—संज्ञा पुं० संतान की कामना से विवाह करनेवाला ब्राह्मण [को०]।

सांतापिक—वि० [सं० सान्तापिक] संताप देनेवाला। कष्ट देनेवाला।

सांति(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शान्ति, प्रा० सांति] दे० 'शांति'। उ०—कंस के सांति होइ जो अबै। देव काज तौ बिगरचौ सबै।—नंद० ग्रं०, पृ० २२२।

सांत्व—संज्ञा पुं० [सं० सान्त्व] दे० 'सांत्वन'।

सांत्वन—संज्ञा पुं० [सं० सान्त्वन] १. किसी दुखी को सहानुभूतिपूर्वक शांति देने की क्रिया। आश्वासन। ढारस। सांत्वना। २. स्नेहपूर्वक कुशल मंगल पूछना और बातचीत करना। ३. प्रणय। प्रेम। ४. संधि। मिलन। दे० 'सांत्वना'।

सांत्वना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुःखी व्यक्ति को उसका हृदय हलका करने के लिये समझाने बुझाने और शांति देने की क्रिया। शांति देने का काम। ढारस। आश्वासन। २. चित्त की शांति। सुख। ३. प्रणय। प्रेम। ४. दे० 'सांत्वन'—४। ५. मृदुता (को०)। ६. अभिवादन या कुशलक्षेम (को०)।

सांत्ववाद—संज्ञा पुं० [सं० सान्त्ववाद] वह वचन जो किसी को सांत्वना देने के लिये कहा जाय। सांत्वना का वचन।

सांत्वित—वि० [सं० सान्त्वित] जिसे सांत्वना दी गई हो। जिसे ढाढ़स बँधाया गया हो। आश्वस्त किया हुआ [को०]।

सांदीपनि—संज्ञा पुं० [सं० सान्दीपनि] सांदीपन के गोत्र के एक प्रसिद्ध मुनि जो बहुत बड़े धनुर्धर थे और जिन्होंने श्रीकृष्ण और बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा दी थी। विष्णुपुराण, हरिवंश, भागवत आदि में इनके संबंध में कई कथाएँ मिलती हैं।

सांदृष्टिक—वि० [सं० सान्दृष्टिक] [वि० स्त्री० सान्दृष्टिकी] १. एक ही दृष्टि में होनेवाला। देखते ही होनेवाला। तात्कालिक। २. स्पष्ट। प्रकट। प्रत्यक्ष।

सांदृष्टिक न्याय--संज्ञा पुं० [सं० सान्दृष्टिक न्याय] एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस समय किया जाता है, जब कोई चीज देखकर उसी तरह की पहले देखी हुई कोई चीज याद आ जाती है।

सांद्र[1]--संज्ञा पुं० [सं० सान्द्र] १. वन। जंगल। २. ढेर। राशि (को०)।

सांद्र[2]--वि० १. घना। गहरा। घोर। २. मृदु। कोमल। ३. स्निग्ध। चिकना। ४. सुंदर। खूबसूरत। ५. मोटा। कसा हुआ। गफ (को०)। ६. बलवान्। बलिष्ट। शक्तिमान्। प्रचंड (को०)। ७. पर्याप्त। अतिशय। अधिक (को०)। ८. माफिक। रुचिकर। अनुकूल (को०)।

सांद्रकुतूहल--वि० [सं० सान्द्रकुतूहल] अत्यंत कौतूहल से युक्त। जो अत्यंत उत्सुक हो [को०]।

सांद्रता--संज्ञा स्त्री० [सं० सान्द्रता] सांद्र होने का भाव।

सांद्रत्वक्क--वि० [सं० सान्द्रत्वक्क] घनी या मोटी छालवाला [को०]।

सांद्रपुष्प--संज्ञा पुं० [सं० सान्द्रपुष्प] विभीतक। बहेड़ा।

सांद्रप्रमेह--संज्ञा पुं० [सं० सान्द्रप्रमेह] दे० 'सांद्रप्रसाद।' उ०--सांद्रप्रमेह से रात्रि में पात्र में धरने से जैसा होवे ऐसा मूत्र होय।--माधव०, पृ० १८३।

सांद्रप्रसाद--संज्ञा पुं० [सं० सान्द्रप्रसाद] एक प्रकार का कफज प्रमेह।

विशेष--इस प्रमेहरोग में कुछ मूत्र तो गाढ़ा और कुछ पतला निकलता है। यदि ऐसे रोगी का मूत्र किसी बरतन में रख दिया जाय, तो उसका गाढ़ा अंश नीचे बैठा जाता है और पतला अंश ऊपर रह जाता है।

सांद्रमणि--संज्ञा पुं० [सं० सान्द्रमणि] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सांद्रमूत्र--वि० [सं० सान्द्रमूत्र] जिसका मूत्र सांद्रप्रसाद के रोगी की तरह गाढ़ा या लसदार हो [को०]।

सांद्रमेह--संज्ञा पुं० [सं० सान्द्रमेह] दे० 'सांद्रप्रसाद'।

सांद्रस्निग्ध--वि० [सं० सान्द्रस्निग्ध] गाढ़ा और चिपचिपा या लसदार [को०]।

सांद्रस्पर्श--वि० [सं० सान्द्रस्पर्श] जो छूने में चिकना या कोमल हो [को०]।

सांद्रोहⓅ--वि० [सं० स्वामिद्रोह] स्वामिद्रोही। स्वामी से शत्रुता करनेवाला। उ०--भग्यौ वैं बंगाली करंनाटवाली। भग्यौ भागि सांद्रोह कूरंमवाली।--पृ० रा०, २४।२६०।

सांध[1]--वि० [सं० सान्ध] १. संधि संबंधी। संधि का। २. जो जोड़ या संधि पर स्थित हो।

सांध[2]--संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सांधिक--संज्ञा पुं० [सं० सान्धिक] १. वह जो मद्य बनाता या बेचता हो। कलाल। शौंडिक। २. वह जो संधि करता हो। संधि करनेवाला।

सांधिविग्रहिक--संज्ञा पुं० [सं० सान्धिविग्रहिक] प्राचीन काल का राज्यों का वह अधिकारी जिसे संधि और विग्रह करने का अधिकार हुआ करता था।

सांध्य--वि० [सं० सान्ध्य] १. संध्या संबंधी। सायंकालीन। संध्या का। उ०--सांध्य मेघ की अमल अर्गला सी भली। फैल रही थी जहाँ कनक रेखावली।--शकुं०, पृ० ४५। २. प्रातःकाल से संबंधित। प्रभात का। प्राभातिक (को०)।

सांध्यकुसुमा--संज्ञा स्त्री० [सं० सान्ध्यकुसुमा] वे वृक्ष, पौधे और बेलें आदि जो संध्या के समय फूलती हों।

सांध्यभोजन--संज्ञा पुं० [सं० सान्ध्यभोजन] सायंकालीन भोजन। बियारी। ब्यालू [को०]।

सांपत्तिक--वि० [सं० साम्पत्तिक] संपत्ति से संबंध रखनेवाला। आर्थिक। माली।

सांपद--वि० [सं० साम्पद] संपत्ति संबंधी। संपत्ति का। आर्थिक। माली।

सांपन्निक--वि० [सं० साम्पन्निक] संपन्नतापूर्वक रहनेवाला। विलासपूर्वक रहनेवाला [को०]।

सांपरतⓅ--अव्य० [सं० साम्प्रत] दे० 'सांप्रत'। उ०--माजी मानै वेदमत सुणै सदा सुरगाह। सतो आठमी सांपरत दसमी श्री दुरगाह।--बाँकी० ग्रं०, भा०, २, पृ० २५।

सांपराय[1]--वि० [सं० साम्पराय] १. आवश्यकता या आपत्ति के कारण जिसकी अपेक्षा हुई हो। २. युद्ध से संबद्ध। सामरिक। ३. परलोक या भविष्य से संबंधित [को०]।

सांपराय[2]--संज्ञा पुं० १. इहलोक से परलोक में जाने का मार्ग। २. विपत्ति। आपत्ति। ३. जरूरत के समय काम आनेवाला सहायक या मित्र। ४. झगड़ा। संघर्ष। ५. भविष्य। भविष्य का जीवन। ६. अनिश्चय। ७. भविष्य की जिज्ञासा। ८. अन्वेषण। गवेषणा। जिज्ञासा [को०]।

सांपरायण--संज्ञा पुं० [सं० साम्परायण] मृत्यु जो इस लोक से दूसरे लोक में ले जाती है [को०]।

सांपरायिक[1]--वि० [सं० साम्परायिक] १. परलोक संबंधी। पारलौकिक। २. युद्ध में काम आनेवाला। ३. युद्ध संबंधी। युद्ध का। ४. जरूरत के समय काम आनेवाला। ५. व्यसनों में पड़ा हुआ। विपत्तिग्रस्त (को०)। ६. दाहकर्म संबंधी। और्ध्वदेहिक (को०)।

सांपरायिक[2]--संज्ञा पुं० १. युद्ध। समर। २. लड़ाई का रथ (को०)।

सांपरायिक कल्प--संज्ञा पुं० [सं० साम्परायिक कल्प] एक प्रकार का सैनिक व्यूह [को०]।

सांपातिक--वि० [सं० साम्पातिक] संपात संबंधी। संपात का।

सांपादिक--वि० [सं० साम्पादिक] गुणकारी। लाभदायक [को०]।

सांप्रत[1]--अव्य० [सं० साम्प्रत] १. इसी समय। सद्यः। अभी। तत्काल। २. अब। अधुना (को०)। ३. ठीक ढंग से। उचित रीति से (को०)।

सांप्रत[2]--वि० १. युक्त। मिला हुआ। २. योग्य। उचित। उपयुक्त (को०)। ३. संगत। प्रासंगिक। सामयिक (को०)। ४. प्रत्यक्ष। प्रकट। व्यक्त। उ०--दाता जग माता पिता दाता सांप्रत देव।--बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ४७।

सांप्रतकाल--संज्ञा पुं० [सं० साम्प्रतकाल] वर्तमान समय। वर्तमान काल [को०]।

सांप्रतिक--वि० [सं० साम्प्रतिक] [वि० स्त्री० सांप्रतिकी] १. वर्तमान काल से संबंध रखनेवाला। वर्तमानकालिक। इस समय का। आधुनिक। उ०--संपादकीय प्रबंध वा प्रेरित पत्र आदि सांप्रतिक पत्रों में प्रकाशित होने की चाल चल रही है।--प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६४। २. वर्तमानजीवी। आधुनिक काल की सीमा में रहनेवाला (व्यक्ति)। उ०--पर जब उनके जीवनबोध ने अपनी परमिति को छू लिया तो सांप्रतिकों को उनका स्थान ग्रहण करते देर न लगी।--बंदनवार (भू०), पृ० १७। ३. उचित। योग्य। ठीक। उपयुक्त (को०)।

सांप्रदायिक--वि० [सं० साम्प्रदायिक] [वि० स्त्री० सांप्रदायिकी] १. किसी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। संप्रदाय का। २. परंपरित। परंपरासिद्ध (को०)।

सांप्रदायिकता--संज्ञा स्त्री० [सं० साम्प्रदायिकता] १. किसी संप्रदाय से संबंधित होने का भाव। २. संप्रदाय के प्रति कट्टरता का भाव। दूसरे संप्रदाय के अहित पर अपने संप्रदाय की हितरक्षा।

सांप्रियक--वि० [सं० साम्प्रियक]। जहाँ परस्पर प्रियजन अथवा परस्पर भाईचारा रखनेवाले लोग रहते हों [को०]।

सांबंधिक[१]--वि० [सं० साम्बन्धिक] १. संबंधजन्य। संबंध का। २. विवाह संबंधी।

सांबंधिक[२]--संज्ञा पुं० १. स्त्री का भाई, साला। ३. संबंध। रिश्तेदारी (को०)।

सांब--संज्ञा पुं० [सं० साम्ब] १. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम जो जांबवती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

विशेष--बाल्यावस्था में इन्होंने बलदेव से अस्त्रविद्या सीखी थी। बहुत अधिक बलवान् होने के कारण ये दूसरे बलदेव माने जाते थे। भविष्यपुराण में लिखा गया है कि ये बहुत सुंदर थे और अपनी सुंदरता के अभिमान में किसी को कुछ न समझते थे। एक बार इन्होंने दुर्वासा मुनि का कृश शरीर देखकर उनका कुछ परिहास किया, जिससे दुर्वासा ने शाप दिया था कि तुम कोढ़ी हो जाओगे। इसके उपरांत एक अवसर पर रुक्मिणी, सत्यभामा और जांबवती को छोड़कर श्रीकृष्ण की और सब रानियाँ इनके रूपपर इतनी मुग्ध हो गईं कि उनका रेत स्खलित हो गया था। इसपर श्रीकृष्ण ने भी इन्हें शाप दिया था कि तुम कोढ़ी हो जाओ। इसी लिये ये कोढ़ी हो गए थे। अंत में इन्होंने नारद के परामर्श से सूर्य की मित्र नामक मूर्ति की उपासना आरंभ की जिससे अंत में इनका शरीर नीरोग हो गया। कहते हैं कि जिस स्थान पर इन्होंने 'मित्र' की उपासना की थी, उस स्थान का नाम 'मित्रवण' पड़ा। इन्होंने अपने इस नाम से सांबपुर नामक एक नगर भी, चंद्रभागा के तट पर बसाया था। महाभारत के युद्ध में ये जरासंध और शाल्व आदि से बहुत वीरतापूर्वक लड़े थे।

२. शिव का एक नाम, जो अंबा, पार्वती के सहित हैं (को०)।

सांबपुर--संज्ञा पुं० [सं० साम्बपुर] पंजाब के मुलतान नगर का एक प्राचीन नाम।

विशेष--यह नगर चंद्रभागा नदी के तट पर है। कहते हैं कि इसे श्रीकृष्ण के पुत्र सांब ने बसाया था।

सांबपुराण--संज्ञा पुं० [सं० साम्बपुराण] एक उपपुराण का नाम।

सांबपुरी--संज्ञा स्त्री० [सं० साम्बपुरी] दे० 'सांबपुर'।

सांबर[१]--संज्ञा पुं० [सं० साम्बर] १. साँभर हरिन। विशेष दे० 'साँभर'। २. साँभर नमक।

सांबर[२]--संज्ञा पुं० [सं० सम्बल] पाथेय। संबल। राहखर्च।

सांबरी†[१]--वि० [सं० साम्बर+ई] सांबर मृग के चर्म या साँभर क्षेत्र का बना हुआ। उ०--पाए पाँणही सांबरी, चउघड्या मांह दीई मिलाँण।--बी० रासो, पृ० ७७।

सांबरी[२]--संज्ञा स्त्री० [सं० साम्बरी] १. माया। जादूगरी। २. जादूगरनी।

विशेष--कहते हैं कि इस विद्या का आविष्कार श्रीकृष्ण के पुत्र सांबर ने किया था; इसी से इसका यह नाम पड़ा।

सांबाधिक--संज्ञा पुं० [सं० साम्बाधिक] रात्रि का द्वितीय याम या प्रहर [को०]।

सांभर--संज्ञा पुं० [सं० साम्भर] साँभर नमक [को०]।

सांभवी--संज्ञा स्त्री० [सं० साम्भवी] १ लाल लोध। २. आशंका। संभावना (को०)।

सांभाष्य--संज्ञा स्त्री० [सं० साम्भाष्य] संभाषण। बातचीत।

सांमुखी--संज्ञा स्त्री० [सं० साम्मुखी] वह तिथि जिसका मान सायंकाल तक हो।

सांमुख्य--संज्ञा पुं० [सं० साम्मुख्य] १. प्रत्यक्षता। समक्षता। सामने होने की स्थिति। २. अनुकूलता। कृपाभाव। तरफदारी।

सांयमन--वि० [सं०] संयमन संबंधी। संयमन विषयक।

सांयात्रिक--संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्रीय व्यापार करनेवाला व्यापारी। पोतवणिक्। २. यान। सवारी। ३. उषाकाल [को०]।

सांयुग--वि० [सं०] संयुग संबंधी। युद्ध से संबंधित [को०]।

सांयुगीन[१]--वि० [सं०] १. युद्ध से संबंधित। सामरिक। २. रणकुशल। युद्धचतुर [को०]।

सांयुगीन[२]--संज्ञा पुं० १. युद्ध में कुशल व्यक्ति। २. श्रेष्ठ योद्धा या वीर। बहादुर। लड़ाकू।

सांराविण--संज्ञा पुं० [सं०] कई व्यक्तियों का एक साथ चीखना-पुकारना। शोर गुल [को०]।

सांवत्सर[१]--वि० [सं०] वार्षिक। वर्ष में होनेवाला। जो संवत्सर से संबंधित हो [को०]।

सांवत्सर[२]--संज्ञा पुं० १. ज्योतिषी। ज्योतिर्विद। २. वह जो ग्रहादि की गति के अनुसार पंचांग बनाता हो। ३. चांद्रमास। ३. काला चावल। ४. मृतक का एक वर्ष के उपरांत होनेवाला कृत्य। बरसी [को०]।

सांवत्सरक[१]--वि० [सं०] (ऋण) जो एक वर्ष में चुकाया जाय [को०]।

सांवत्सरक[२]--संज्ञा पुं० ज्योतिषी [को०]।

सांवत्सररथ—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य, जिनका रथ संवत्सर है [को०]।

सांवत्सरिक[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सांवत्सरिक] वार्षिक। संवतार से संबंधित।

सांवत्सरिक[२]—संज्ञा पुं० १. वार्षिक भूमि कर। सालाना मालगुजारी। २. वर्षभर में चुका दिया जानेवाला ऋण। ३. ज्यौतिर्विद। ज्यौतिषी [को०]।

सांवत्सरिक श्राद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] प्रति वर्ष किया जानेवाला श्राद्ध। वार्षिक श्राद्ध।

सांवत्सरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृतक का एक साल बाद होनेवाला श्राद्ध। बरसी [को०]।

सांवत्सरीय—वि० [सं०] वर्ष संबंधी। वार्षिक। सांवत्सर।

सांवर्तक—संज्ञा पुं० [सं०] प्रलयाग्नि। प्रलय काल की अग्नि। प्रलय से संबंधित या प्रलयकाल में प्रकट होनेवाली आग [को०]।

सांवादिक[१]—वि० [सं०] १. बोलचाल में प्रयुक्त। संवाद, वार्तालाप आदि में प्रचलित। २. विवादास्पद। बहस तलब [को०]।

सांवादिक[२]—संज्ञा पुं० १. विवादग्रस्त विषय। २. तार्किक। तर्कशास्त्री। नैयायिक [को०]।

सांवास्यक—संज्ञा पुं० [सं०] एक साथ रहना। एक जगह रहना [को०]।

सांवित्तिक—वि० [सं०] अधिकरणनिष्ठ। विषयगत। विषयी [को०]।

सांविद्य—संज्ञा पुं० [सं०] रजामंदी। सहमति [को०]।

सांवृत्तिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सांवृत्तिकी] अलीक। भ्रांतिजनक। ऐंद्रजालिक [को०]।

सांव्यावहारिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] कंपनी के हिस्सेदार होकर काम या व्यापार करनेवाला व्यापारी।

सांव्यावहारिक[२]—वि० आमफहम। प्रचलित। व्यावहारिक [को०]।

सांश—वि० [सं०] जो अंश सहित हो। अंशयुक्त। जिसमें भाग या हिस्सा हो [को०]।

सांशयिक[१]—वि० [सं०] १. संदेहास्पद। संदिग्ध। २. जो निश्चित न हो अनिश्चित। ३. संदेही [को०]।

सांशयिक[२]—संज्ञा पुं० अनिश्चित, संदेहास्पद या खतरे से भरा हुआ काम [को०]।

सांशयिकत्व—संज्ञा पुं० [सं०] संदेह। शंका। अनिश्चय [को०]।

सांसर्गिक—वि० [सं०] संस्पर्श या छूत से उत्पन्न। संपर्कजन्य। संसर्गजन्य [को०]।

सांसारिक—वि० [सं०] संसार संबंधी। इस संसार का। लौकिक। ऐहिक। जैसे,—अब आप सांसारिक झगड़ों से अलग होकर भगवद्भजन में लीन रहते हैं।

सांसिद्धिक—वि० [सं०] १. प्रकृति से संबंधित। प्राकृतिक। स्वाभाविक। २. वेव संबंधी। दैविक। दैवी। ३. याहच्छिक। ऐच्छिक। स्वतःप्रवर्तित [को०]।

यौ०—सांसिद्धिक प्रवाह = जल का स्वाभाविक या स्वतःप्रवर्तित प्रवाहक्रम अथवा गति।

सांसिद्धय—संज्ञा पुं० [सं०] जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर लेने की स्थिति। संसिद्धि। परिपूर्णता [को०]।

सांसृष्टिक—वि० [सं०] सीधे संबंध रखनेवाला [को०]।

सांस्कारिक—वि० [सं०] संस्कारसंबंधी। जो अंत्येष्टि अथवा अन्य संस्कारों से संबद्ध हो [को०]।

सांस्कृतिक वि० [सं०] परंपरा, संस्कार और आचार विचारों से संबद्ध। संस्कृति संबंधी [को०]।

सांस्थानिक—वि० [सं०] समान देश या स्थान से संबंधित।

सांस्राविण—संज्ञा पुं० [सं०] प्रवाह। बहाव। धारा [को०]।

सांहत्य—संज्ञा पुं० [सं०] संपर्क। संबंध। साथ [को०]।

सांहननिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सांहननिकी] शरीर से संबंधित। शारीरिक [को०]।

साँइयाँ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] दे० 'साँई, साई'। उ०—बाँका परदा खोलि के संमुख ले दीदार। बालसनेही साँइयाँ आदि अंत का यार।—कबीर सा० सं०, पृ० १९।

साँई[१]—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी, प्रा० सामि, सामी] १. स्वामी। मालिक। उ०—आप को साफ कर तुहीं साँई।—केशव० अमी०, पृ० ६। २. ईश्वर। परमात्मा। परमेश्वर। उ०—गुर गौरीस साँई सीतापति हित हनुमानहि जाइ कै। मिलिहौं मोहि कहाँ की वे अब अभिमत अवधि अघाइ कै।—तुलसी (शब्द०)। ३. पति। शौहर। भर्ता। उ०—(क) चल्यो धाय कमठी चढ़ाय फुरकाय आँख बाई जग साँई बात कछु न तनक को।—हृदयराम (शब्द०) (ख) पूस मास सुनि सखिन पैं साँई चलत सवार। गहि कर बीन प्रबीन तिय राग्यौ राग मलार।—बिहारी (शब्द०)। ४. मुसलमान फकीरों की एक उपाधि।

साँकड़[१]—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्खल] १. शृंखला। जंजीर। सीकड़। २. सिकड़ी जो दरवाजे में लगाई जाती है। अर्गला। ३. चाँदी का बना हुआ एक प्रकार का गहना जो पैर में पहना जाता है। साँकड़ा।

साँकड़भीड़ो(पु)†—वि० [हिं० सँकरा ?] संकुचित। छोटा। संकीर्ण। उ०—गुड़िया ढाहै मदँधगज ताता चाल तुरंग। साँकड़भीड़ो सुरग हूँ, जिको कहीजै जंग।—बाँकी ग्रं०, भा० १, पृ० ६।

साँकड़ा[१]—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्खला, प्रा० संकला] एक प्रकार का आभूषण जो पैर में पहना जाता है। यह मोटी चपटी सिकड़ी की भाँति होता है। प्रायः मारवाड़ी स्त्रियाँ इसे पहनती हैं।

साँकड़ा(पु)[२]—संज्ञा पुं० [सङ्कीर्ण ?] क्षुद्र स्वभाव या वृत्ति का। संकीर्ण। उ०—संतनं साँकड़ो दुष्ट पीड़ा करै, बाहरैं वाहलौ बेगि आवै।—दादू०, पृ० ५४९।

साँकड़ाना†[१]—क्रि० स० [हिं० साँकड़] बाँधना। साँकल से बाँधना। उ०—दोनूं फोज घोड़ा की बाहे साँकड़ाया।—शिखर०, पृ० ७४।

साँकड़ाना(पु)[२]—क्रि० स० [हिं० संकीर्ण] सँकरा कर देना। संकीर्ण कर देना। रोकना। उ०—किल्ला की सफीलाँ मोरिचा नै साँकडाया।—शिखर०, पृ० ५०।

साँकड़िⓅ†—वि० [सं० सङ्कीर्ण] सँकरी। संकीर्ण। उ०—जमुन क तिरे तिरे साँकड़ि बारी।—विद्यापति, पृ० ३०।

साँकतⓅ—वि० [सं० शङ्कित] दे० 'शंकित'। उ०—डावा कर ऊपर दुसट, कर जीमणो करंत। सो लगाय मुख साँकतो माव-ड़ियो कुचरंत।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० १६।

साँकनाⓅ—क्रि० अ० [सं० शङ्कन] शंका करना। शंकित होना। संदेह में पड़ना। उ०—साँकिया राज राँणा सकल, अकल पाँण छिलियौ असुर।—रा० रू०, पृ० १६।

साँकरⓅ[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खल] शृंखला। जंजीर। सीकड़। उ०—(क) काड़ा आसू बूद, कसि साँकर बरुनी सजल। कीने बदन निमूद, दृग मलिग डारै रहत।—बिहारी र०, दो० २३०।

साँकर[२]—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कीर्ण] कष्ट संकट। उ०—(य) साँकरे की साँकरन सनमुख हो न तौ रे।—केशव (शब्द०)। (ख) मुकती साँठि गाँठि, जो करै। साँकर परे सोइ उपकरै।—जायसी (शब्द०)।

साँकर[३]—वि० १. संकीर्ण। तंग। सँकरा। २. दुःखमय। कष्टमय। उ०—सिंहल दीप जो नाहिं निबाहू। यही ठाढ़ साँकर सब काहू।—जायसी (शब्द०)।

साँकरा†[१]—वि० [हिं० सँकरी] दे० 'सँकरा'।

साँकरा[२]—संज्ञा पुं० [हिं० साँकड़ा] दे० 'साँकड़ा'।

साँकराⓅ[३]—वि० [हिं० सँकरा (=संकट)] सकट में पड़ा हुआ। संकटग्रस्त। उ०—साँकरे को साँकरन सनमुख तोरै। दशमुख मुख जोवैं गजमुख मुख को।—रामचं०, पृ० १।

साँकरि†Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] दे० 'साँकल'। उ०—तब श्रीठाकुर जी भीतर की साँकरि खोलते।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १०१।

साँकरीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कीर्ण] संकट। उ०—उड़वत धूर धरे काँकरी। सबनि के दृगनि परी साँकरी।—नंद० ग्रं०, पृ० २४२।

साँकल—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] १. जंजीर। सिक्कड़। दे० 'साँकर'। २. अर्गला। दरवाजे की सिकड़ी।

साँकाहुली—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खपुष्पी] 'शंखाहुली'।

साँखाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्का] दे० 'शंका'। उ०—पंखी नावँ न देखा पाँखा। राजा होइ फिरा कै साँखा।—जायसी ग्रं०, पृ० १६४।

साँग—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति या शङ्कु] १. एक प्रकार की बरछी जो भाले के आकार की होती है; पर इसकी लंबाई कम होती है और यह फेंककर मारी जाती है। शक्ति। उ०—कोउ माजत बरछीन साँग उर वेधनवाली।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २४। २. एक प्रकार का औजार जो कुँआ खोदते समय पानी फोड़ने के काम में आता है। ३. भारी बोझ उठाने का डंडा।

साँगरी[१]—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का रंग जो कपड़े रँगने के काम आता है। यह जंगार से निकलता है। २. एक प्रकार का शाक। उ०—फोग के र काचर फली गेघर गेघरपात। बड़ियाँ मेले वाणियाँ, साँगरियाँ सोगात।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ६७।

साँगामाची†—संज्ञा स्त्री० [सं० सांग+हिं० मचिया] एक प्रकार की छोटी माँची या खाट। उ०—तब श्रीगुसाई जी एक साँगामाँची धराइ कै बीच में बिराजे।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ३३६।

साँगिⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सं० शङ्कु या शक्ति, हिं० साँग, साँगी] दे० 'साँग। उ०—रणधीर सु कोपि कै साँगि लई।—ह० रासो०, पृ० ७६।

साँगी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कु या शक्ति] १. बरछी। साँग। उ०—चले निसाचर आयसु माँगी। गहि कर भिंदिपाल वर साँगी।—मानस, ६।३६। २. बैलगाड़ी में गाड़ीवान के बैठने का स्थान। जुआ।

साँगी[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० साङ्ग (=उपकरण युक्त), हिं० संग या सामग्री] जाली जो एक्के या गाड़ी के नीचे लगी रहती है और जिसमें मामूली चीजें रखी जाती हैं।

साँघणाⓅ†—वि० [सं० सघन ?] दे० 'सघन'। उ०—माँहिली माँडली छीदा होइ। वारली माँडली साँघणा।—बी० रासो, पृ० ५।

साँचⓅ[१]—संज्ञा पुं० [सं० सत्य, प्रा० सत्त, सच्च] [स्त्री० साँची] सत्य। यथार्थ। जैसे,—साँच को आँच नहीं। (कहा०)।

साँचⓅ[२]—वि० सत्य। सच। ठीक। यथार्थ।

साँचⓅ[३]—संज्ञा पुं० [सं० स्थाता, हिं० साँचा] दे० 'साँचा'। उ०—चाक चढ़ाइ साँच जनु कीन्हा। बाग तुरंग जानु गहि लीहा।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० १६३।

साँचनाⓅ—क्रि० स० [हिं० साँचा] साँचे में ढालना। संचित करना। सुंदर आकार प्रदान करना। उ०—सब सोभा ससि सानि कै साँची इंछिनि एक।—पृ० रा०, १४।५६।

साँचरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सहचरी] सखी। सहेली। उ०—आवी अवाँसइ साँचरी। हीयडइ हरीष मन रंग अपार।—बी० रासो, पृ० ११४।

साँचला†—वि० [हिं० साँच+ला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० साँचली] जो सच बोलता हो। सच्चा। सत्यवादी।

साँचा—संज्ञा पुं० [सं० स्थाता] १. वह उपकरण जिसमें कोई तरल पदार्थ ढालकर अथवा गीली चीज रखकर किसी विशिष्ट आकार प्रकार की कोई चीज बनाई जाती है। फरमा। जैसे,—ईंटों का साँचा, टाइप का साँचा। उ०—जैसे धातु कनक की एका। साँचा माही रूप अनेका।—कबीर सा०, पृ० १०११।

विशेष—जब कोई चीज किसी विशिष्ट आकार प्रकार की बनानी होती है, तब पहले एक ऐसा उपकरण बना लेते हैं जिसके अंदर वह आकार बना होता है। तब उसी में वह चीज डाल या भर दी जाती है, जिससे अभीष्ट पदार्थ बनाना होता है। जब वह चीज जम जाती है, तब उसी उपकरण के भीतरी आकार

की हो जाती है। जैसे,—ईंट बनाने के लिये पहले उनका एक साँचा तैयार किया जाता है; और तब उसी साँचे में सुरखी; चूना आदि भरकर ईंटें बनाते हैं।

मुहा०—साँचे में ढला होना = (१) अंग प्रत्यंग से बहुत ही सुंदर होना। रूप और आकार आदि में बहुत सुंदर होना। उ०—वह सरापा के साँचे में ढली थी।—प्रेमघन, भा० २, पृ० ४५४। (२) संवेदनाहीन। एक रस। एक रूप। उ०—अच्छी कुंठारहित इकाई साँचे ढले समाज से।—अरी ओ०, पृ० ४। साँचे में ढालना = बहुत सुंदर बनाना।

२. वह छोटी आकृति जो कोई बड़ी आकृति बनाने से पहले नमूने के तौर पर तैयार की जाती है और जिसे देखकर वही बड़ी आकृति बनाई जाती है।

विशेष—प्रायः कारीगर जब कोई बड़ी मूर्ति आदि बनाने लगते है, तब वे उसके आकार की मिट्टी, चूने, 'प्लैस्टर आफ पेरिस' आदि की एक आकृति बना लेते हैं; और तब उसी के अनुसार धातु या पत्थर की आकृति बनाते हैं।

३. कपड़े पर बेल बूटा छापने का ठप्पा जो लकड़ी का बनता है। छापा। ४. एक हाथ लंबी लकड़ी जिसपर सटक बनाने के लिये सल्ला बनाते हैं। ५. जुलाहों की वे दो लकड़ियाँ जिनके बीच में कूँच के साल को दबाकर कसते हैं।

साँचिⓅ—वि० [सं० सत्य, प्रा० सच्च] दे० 'साँच'[२]। उ०—हूँ तौ तिहारी अग्याकारिनि साँचि बात मोसौं कहा कहौ महराज।—नंद० ग्रं०, पृ० ३६८।

साँचिया—संज्ञा पुं० [हिं० साँचा + इया (प्रत्य०)] १. किसी चीज का साँचा बनानेवाला। २. धातु गलाकर साँचे में ढालनेवाला।

साँचिलाⓅ—वि० [हिं० साँच] सच्चा। साँवला। उ०—एक सनेही साँचिलो कोशलपाल कृपालु।—तुलसी ग्रं०, पृ०

साँची[१]—संज्ञा पुं० [साँची नगर ?] एक प्रकार का पान जो खाने में ठंडा होता है। विशेष—दे० 'पान'।

साँचीⓅ[२]—वि० स्त्री० [सं० सत्य, प्रा० सच्च] सत्य। दे० 'साँच'[१]। उ०—हरखी सभा बात सुनि साँची।—मानस, १।२६०।

साँची[३]—संज्ञा पुं० [?] पुस्तकों की छपाई का वह प्रकार जिसमें पंक्तियाँ सीधे बल में न होकर बेड़े बल में होती हैं।

विशेष—इसमें पुस्तकें चौड़ाई के बल में नहीं बल्कि लंबाई के बल में लिखी या छापी जाती हैं। प्राचीन काल के जो लिखे हुए ग्रंथ मिलते हैं वे अधिकांश ऐसे ही होते हैं। इनमें पृष्ठ लंबा अधिक और चौड़ा कम रहता है; और पंक्तियाँ लंबाई के बल में होती हैं। प्रायः ऐसी पुस्तकें बिना सिली हुई ही होती हैं, और उनके पन्ने बिलकुल एक दूसरे से अलग अलग होते हैं।

साँचोरा‡—संज्ञा पुं० [देश०] गुर्जर ब्राह्मणों की एक उपजाति। उ०—सो गोपालदास भगवद् इच्छा तें गुजरात में एक साँचोरा ब्राह्मण के प्रगटे।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १०।

साँझ—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्या, प्रा० संझ, संझा] संध्या। शाम। सायंकाल। उ०—साँझ समय सानंद नृपु गएउ कैकई गेह।—मानस, २।२४। (ख) सखी सोभ सब बसि भई मनो कि फूली साँझ।—पृ० रा०, १४।५५।

साँझला†—संज्ञा पुं० [सं० सन्ध्या, हिं० साँझ + ला (प्रत्य०)] उतनी भूमि जितनी एक हल से दिन भर में जोती जा सकती है। दिन भर में जुत जानेवाली जमीन।

साँझा—संज्ञा पुं० [सं० सार्द्ध, प्रा० सड्ढ, सद्ध सज्झ] व्यापार, व्यवसाय आदि में होनेवाला हिस्सा। पत्ती। विशेष दे० 'साझा'। संध्या।

साँझिⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्ध्य, प्रा० संझा] दे० 'साँझ'। संध्या। उ०—साँझि ही सिंगार सजि प्रानप्यारे पास जाति।—नंद० ग्रं०, पृ० ३१५।

साँझी—संज्ञा स्त्री० [सं० सान्ध्य या सज्जा ?] देवमंदिरों में देवताओं के सामने जमीन पर की हुई फूल पत्तों आदि की सजावट जो विशेषतः पितृपक्ष में सायंकाल के समय की जाती है। प्रायः सावन के महीने में शृंगार आदि के अवसर पर भी ऐसी सजावट होती है।

मुहा०—साँझी खेलना या साँझी पुजावनाⓅ—सायंकाल के समय साँझी की सजावट तैयार करना या पूरी करना। उ०—(क) सखि क्वार मास लग्यौ सुहावन सबै साँझी खेलहीं।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ५०८। (ख) पुजावति साँझी कीरति माय कुँवरि राधा को लाड़ लड़ाय।—घनानंद, पृ० ५६१।

साँट[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सट से अनु०] १. छड़ी। साँटी। पतली कमची। २. कोड़ा। ३. शरीर पर का वह लंबा गहरा दाग जो कोड़े या बेंत का आघात पड़ने से होता है।

क्रि० प्र०—उभड़ना।—पड़ना।—लगना। उ०—हे मोरि सखियाँ लागलि गुरु के साँट भइलि मनभावन।—गुलाल०, पृ० ४६।

साँट[२]—संज्ञा स्त्री० [देश० ?] लाल गदहपूरना।

साँटⓅ[३]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] लगाव। मिलान। लपेट। उ०—गगन मंडल में रास रचो लगि दृष्टि रूप कै साँट।—भीखा० श०, पृ० १६।

साँटमारी—संज्ञा स्त्री० [हिं०] हाथियों को साँटे मारकर लड़ाना। दे० 'साटमारी'। उ०—उसने बतलाया, इमाम अली! काजी हूँ सरकार और साँटमारी भी करता हूँ।—झाँसो०, पृ० ६८।

साँटा—संज्ञा पुं० [हिं० साँट (= छड़ी)] १. करघे के आगे लगा हुआ वह डंडा जिसे ऊपर नीचे करने से ताने के तार ऊपर नीचे होते हैं। २. कोड़ा। ३. ऐंड़। ४. ईख। गन्ना। उ०—राजा के दर्शनों को चलने के समय ब्राह्मण ने साँठे के टुकड़ों को नहीं देखा।—भारतेंदु ग्रं०, भा० ३, पृ० ३०। ५. प्रतिकार। बदला। उ०—यह साँटो लै कृष्णवतार। तब ह्वैहौ तुम संसार पार।—राम चं०, पृ० ८६।

साँटिⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] मेल मिलाप। उ०—निकस्यो मान गुमान सहित वह मैं यह होत न जानो। नैननि साँटि करी मिली नैननि उनही सों रुचि मानो।—सूर (शब्द०)।

साँटिया⑤†—संज्ञा पुं० [हिं० साँटी] डौंड़ी पीटनेवाला। डुग्गीवाला। उ०—चहूँ दिसि आनि साँटिया फेरी। भै कठकाई राजा केरी।—जायसी (शब्द०)।

साँटी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टिका] १. पतली छोटी छड़ी। २. बाँस की पतली कमची। शाखा। उ०—बाम्हन को ले साँटी मारे। तोर जनेऊ आगी डारे।—कबीर सा०, पृ० २५५।

क्रि० प्र०—मारना।—सटकारना।

साँटी[२]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सटना] १. मेल मिलाप। २. बदला। प्रतिकार। प्रतिहिंसा।

साँठ[१]—संज्ञा पुं० [देश०] १. एक प्रकार का कड़ा जिसे प्रायः राजपूताने के किसान पैर में पहनते हैं। २. दे० 'साँकड़ा'।

साँठ[२]—संज्ञा पुं० [सं० यष्टि, हिं० साँट] १. ईख। गन्ना। २. सरकंडा। ३. वह लंबा डंडा जिससे अन्न पीटकर दाने निकालते हैं।

साँठ[३]—संज्ञा पुं० [सं० सन्धि ? या हिं० सटना] मेलजोल। मेल-मिलाप। दे० 'साँटी'। जैसे,—साँठ गाँठ।

साँठगाँठ—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ + अनु० साँठ] १. मेल मिलाप। २. छिपा और दूषित संबंध। जैसे,—उस स्त्री से उसकी साँठ-गाँठ थी। उ०—क्या भोली बनी जाती है और बागवाँ से खुद ही साँठगाँठ जो की थी।—फिसाना०, भा० ३, पृ० १२६। ३. षड्यंत्र। दुरभिसंधि। साजिश। जैसे,—उन दोनों ने साँठगाँठकर उसे वहाँ से निकलवा दिया।

साँठना⑤—क्रि० स० [सं० सन्धि, हिं० साँठ] पकड़े रहना। उ०—नाथ सुनी भृगुनाथ कथा बलि बाल गए चलि बात के साँठे।—तुलसी (शब्द०)।

साँठि⑤—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ] दे० 'साँठी'[१]। उ०—साँठि नाहि जग बात को पूछा।—जायसी ग्रं०, पृ० १५७।

साँठी⑤[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ ? या सं० स + अर्थ (= धन) = सार्थ ?] पूँजी। धन। उ०—सब निबहिहि तहँ आपन साँठी। साँठी बिना रहब मुख माँटी।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० २०७।

साँठी[२]—संज्ञा स्त्री० [देश०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

साँठी[३]—संज्ञा पुं० [सं० षष्ठिक, हिं० साठी] दे० 'साठी' (धान)।

साँड़[१]—संज्ञा पुं० [सं० षण्ड या साण्ड] १. वह बैल (या घोड़ा) जिसे लोग केवल जोड़ा खिलाने के लिये पालते हैं।

विशेष—ऐसा जानवर बधिया नहीं किया जाता और न उससे कोई काम लिया जाता है।

२. वह बैल जो मृतक की स्मृति में हिंदू लोग दागकर छोड़ देते हैं। वृषोत्सर्ग में छोड़ा हुआ वृषभ।

मुहा०—साँड़ की तरह घूमना = आजाद और बेफिक्र घूमना। साँड़ की तरह डकारना = बहुत जोर से चिल्लाना।

साँड़[२]—वि० १. मजबूत। बलिष्ठ। २. आवारा। बदचलन।

साँड़नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँड़ ?] ऊँटनी या मादा ऊँट जिसकी चाल बहुत तेज होती है। विशेष दे० 'ऊँट'। उ०—द्रव्यलाभ धावमान साँडनी। सद्गृहस्थ गेह की उजाड़नी।—भारतेंदु ग्रं०, भा० ३, पृ० ८४५।

साँड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० साँड़] छिपकली की जाति का पर आकार में उससे कुछ बड़ा एक प्रकार का जंगली जानवर। इसकी चरबी निकाली जाती है जो दवा के काम में आती है।

साँड़िया—संज्ञा पुं० [डिं० साढ़ियो] १. तेज चलनेवाला ऊँट। २. साँड़नी पर सवारी करनेवाला।

साँढ़नी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँड़ ?] दे० 'साँड़नी'। उ०—यह सुनत ही तत्काल नामजी एक साँढ़नी लै ग्राम दोइसैं एक ओर, दोइसैं दूसरी ओर धरि कै तहाँ ते श्रीजी द्वार को चले।—दो सौ बावन०, भा०, पृ० १९।

साँढिया⑤†—संज्ञा पुं० [डिं०] दे० 'साँढ़ियो'। उ०—नितु नितु नवला साँढियाँ, नितु नितु नवला साजि।—ढोला०, दू० ८१।

साँढियो—संज्ञा पुं० [डिं०] ऊँट। क्रमेलक।

साँत⑤†—संज्ञा स्त्री० [सं० शान्ति] दे० 'शांति'। उ०—होर शोर भी भाँत भाँत का था, बहु भाँत जो मेग साँत का था।—दक्खिनी०, पृ० १६६।

साँतिया†—संज्ञा पुं० [सं० स्वस्तिक] दे० 'स्वतिक-१२'। उ०—धरहुँ सुहआ साँतिये, अपने विरँन दरबार, बधाई बाजी नंद के।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ९२२।

साँती⑤—संज्ञा स्त्री० [सं० शान्ति] दे० 'शांति'। उ०—राजै सुना हिये भइ साँती।—जायसी ग्रं०, पृ० ११७।

साँथड़ा—संज्ञा पुं० [?] बादिया का वह हिस्सा जो पेंच बनाने के लिये घुमाया जाता है (लुहार)।

साँथरा⑤—संज्ञा पुं० [सं० संस्तर] दे० 'साँथरी'। उ०—कामी लज्या ना करै मन माँहैं अहिलाद। नींद न माँगै साँथरा भूख न माँगै स्वाद।—कबीर ग्रं०, पृ० ४१।

साँथरी—संज्ञा स्त्री० [सं० संस्तर] १. चटाई। २. बिछौना। आसन। उ०—कुस साँथरी निहारि सुहाई। कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जाई।—मानस, २।१९९।

साँथा—संज्ञा पुं० [देश०] लोहे का एक औजार जो चमड़ा कूटने के काम में आता है।

साँथी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. वह लकड़ी जो ताने के तारोंको ठीक रखने के लिये करघे के ऊपर लगी रहती है। २. ताने के सूतों के ऊपर नीचे होने की क्रिया।

साँद[१]—संज्ञा पुं० [देश०] वह लकड़ी आदि जो पशुओं के गले में इस लिये बाँध दी जाती है, जिसमें वे भागने न पावें। लंगर। ढेका।

साँद⑤[२]—अव्य० [हिं० साथ ?] दे० 'साथ'। उ०—सीने में दम कूँ अपने साँद लेकर। कमर कूँ अपने दामन बँद लेकर।—दक्खिनी०, पृ० २८१।

साँदा†—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'साँद'।

साँध[१]—संज्ञा पुं० [सं० सन्धान] वह वस्तु जिसपर निशाना लगाया जाय। लक्ष्य। निशाना।

साँध[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] १. संधि। मित्रता। उ०—जाएँ तोड़ जहान सूँ साँध न जाएँ लीह।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० २३। २. छिद्र। संधि। फाँक। दरार। खाली जगह। उ०—कनातों की साँधों से जगमोहन ने वह नाच देखा था।—ज्ञानदान, पृ० ४८।

साँधना[१]—क्रि० स० [सं० सन्धान] निशाना साधना। लक्ष्य करना। संधान करना। उ०—(क) अगिन बान दुइ जानो साँधे। जग बेधे जो होहिं न बाँधे।—जायसी (शब्द०)। (ख) जनु घुघची वह तिलकर भूहाँ। विरह बान साँधो सामूहाँ।—जायसी (शब्द०)।

साँधना[२]—क्रि० स० [सं० साधन] सिद्ध करना। साधना। उ०—सीस काटि के पैरी बाँधा। पावा दाँव बैर जस साँधा।—जायसी (शब्द०)।

साँधना[३]—क्रि० स० [सं० सन्धि] १. एक में मिलाना। मिश्रित करना। उ०—बिबिध मृगन कर आमिष राँधा। तेहि महँ विप्रमासु खल साँधा।—तुलसी (शब्द०)। २. रस्सियों आदि में जोड़ लगाना। (लश०)। ३. संधान करना। तैयार करना। बनाना। उ०—धोआउरि धाने मदिरा साँध, देउर भाँगि मसीद बाँध।—कीर्ति०, पृ० ४४।

साँधा—संज्ञा पुं० [सं० सन्धि] दो रस्सियों आदि में दी हुई गाँठ। (लश०)।

मुहा०—साँधा मारना=दो रस्सियों आदि में गाँठ लगाकर उन्हें जोड़ना। (लश०)।

साँनⓅ—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शान] दे० 'शान'। उ०—गरबी गुमाँन होइ बड़ौ सावधाँन होइ, साँन होइ सहिबी प्रताप पुंज धाँम कौ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४३२।

साँननाⓅ-क्रि० स० [हिं० सानना] गूँधना। मिलाना। दे० 'सानना'। उ०—पाँच तत तीनि गुण जुगति करि साँनियाँ।—कबीर ग्रं०, पृ० १५६।

साँप—संज्ञा पुं० [सं० सर्प, प्रा० सप्प] [स्त्री० साँपिन] १. एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला लंबा कीड़ा जिसके हाथ पैर नहीं होते और जो पेट के बल जमीन पर रेंगता है।

विशेष—केवल थोड़े से बहुत ठंढे देशों को छोड़कर शेष प्रायः समस्त संसार में यह पाया जाता है। इसकी सैकड़ों जातियाँ होती हैं जो आकार और रंग आदि में एक दूसरी से बहुत अधिक भिन्न होती हैं। साँप आकार में दो ढाई इंच से २५-३० फुट तक लंबे होते हैं और मोटे सूत से लेकर प्रायः एक फुट तक मोटे होते हैं। बहुत बड़ी जातियों के साँप अजगर कहलाते हैं। कुछ साँपों के सिर पर फन होता है। ऐसे साँप नाग कहलाते हैं। साँप पीले, हरे, लाल, काले, भूरे आदि अनेक रंगों के होते हैं। साँपों की अधिकांश जातियाँ बहुत डरपोक और सीधी होती हैं, पर कुछ जातियाँ जहरीली और बहुत ही घातक होती हैं। भारत के गेहुअन, धामिन, नाग और काले साँप बहुत अधिक जहरीले होते हैं, और उनके काटने पर आदमी प्रायः नहीं बचता। इनके मुख में साधारण दाँतों के अतिरिक्त एक बहुत बड़ा नुकीला खोखला दाँत भी होता है जिसका संबंध जहर की एक थैली से होता है। काटने के समय वही दाँत शरीर में गड़ाकर ये विष का प्रवेश करते हैं। सब साँप मांसाहारी होते हैं और छोटे छोटे जीव-जंतुओं को निगल जाते हैं। इनमें यह विशेषता होती है कि ये अपने शरीर की मोटाई से कहीं अधिक मोटे जंतुओं को निगल जाते हैं। प्रायः छोटी जाति के साँप पेड़ों पर और बड़ी जाति के जंगलों, पहाड़ों आदि में यों ही जमीन पर रहते हैं। इनकी उत्पत्ति अंडों से होती है; और मादा हर बार में बहुत अधिक अंडे देती है। साँपों के छोटे बच्चे प्रायः रक्षित होने के लिये अपनी माता के मुँह में चले जाते हैं; इसी लिये लोगों में यह प्रवाद है कि साँपिन अपने बच्चों को आप ही खा जाती है। इस देश में साँपों के काटने की चिकित्सा प्रायः जंतर मंतर और झाड़ फूँक आदि से की जाती है। भारतवासियों में यह भी प्रवाद है कि पुराने साँपों के सिर में एक प्रकार की मणि होती है जिसे वे रात में अंधकार के समय बाहर निकालकर अपने चारों ओर प्रकाश कर लेते हैं।

मुहा०—कलेजे पर साँप लहराना या लोटना=बहुत अधिक व्याकुलता या पीड़ा होना। अत्यंत दुःख होना। (ईर्ष्या आदि के कारण)। साँप उतारना=सर्प के काटने पर विष को मंत्रादि से दूर करना। साँप का पाँव देखना=असंभव वस्तु को पाने का प्रयत्न करना। साँप कीलना=मंत्र द्वारा साँप को वश में करना। मंत्र द्वारा साँप को काटने से रोकना। साँप को खिलाना=अत्यंत खतरनाक कार्य करना। साँप से खेलना=अत्यंत खतरनाक व्यक्ति से संबंध रखना। साँप सूँघ जाना=साँप का काट खाना। मर जाना। निर्जीव हो जाना। जैसे,—ऐसे सोए हैं मानों साँप सूँघ गया है। उ०—अरे इस मकान में कोई है या सबको साँप सूँघ गया।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३४। साँप खेलाना=मंत्र बल से या और किसी प्रकार साँप को पकड़ना और क्रीड़ा करना। साँप की तरह केंचुली झाड़ना=पुराना भद्दा रूप रंग छोड़कर नया सुंदर रूप धारण करना। साँप की लहर=साँप काटने पर रह रह कर आनेवाली विष की लहर। साँप काटने का कष्ट। साँप की लकीर=पृथ्वी पर का चिह्न जो साँप के निकल जाने पर होता है। साँप के मुँह में=बहुत जोखिम में। साँप (के) चले जाने पर लकीर को पीटना=(१) अवसर बीत जाने पर भी उस अवसर को जिलाए रखना। किसी विषय को असमय में उठाना। (२) खतरे के अवसर पर उसका प्रतिरोध न करके बाद में उसे दूर करने की चेष्टा करना। मौका गुजर जाने पर मुस्तैदी दिखाना। साँप छछूँदर की गति या दशा=भारी असमंजस की दशा। दुविधा। उ०—भइ गति साँप छछूँदर केरी।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—साँप छछूँदर की कहावत के संबंध में कहा जाता है कि यदि साँप छछूँदर को पकड़ने पर खा जाता है, तो वह तुरंत मर जाता है; और यदि न खाय और उगल दे, तो अंधा हो जाता है।

पर्या०—भुजग। भुजंग। अहि। विषधर। व्याल। सरीसृप। कुंडली। चक्षुश्रवा। फणी। विलेशय। उरग। पन्नग। पवना-

शन। फणधर। व्याड। दंष्ट्री। गोकर्ण। गूढ़पाद। हरि। द्विजिह्व।

२. बहुत ही दुष्ट आदमी। अत्यंत दुष्ट व्यक्ति। (क्व०)।

साँपड़ना(पु)--क्रि० अ० [सं० स्नापन या देश०] स्नान करना। नहाना। उ०--साँपड़ि खीर समंद दुरंग सँवारिया।--बाँकी० ग्रं०, भा० ३, पृ० ३१।

साँपधरन(पु)--संज्ञा पुं० [हिं० साँप+धरन] सर्प धारण करनेवाले, शिव। महादेव।

साँपना(पु)--क्रि० स० [सं० समर्पण, प्रा० समप्पन, सउप्पन, हिं० सौंपना] देना। प्रदान करना। उ० उभी भावज दइ छइ सीष, रतन कचौली राय साँपजै भीष।--बी० रासो, पृ० ४५।

साँपा--संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सियापा'।

साँपिन--संज्ञा स्त्री० [हिं० साँप+इन (प्रत्य०)] १. साँप की मादा। २. घोड़े के शरीर पर की एक प्रकार की भौंरी जो अशुभ समझी जाती है। ३. †एक प्रकार की गाय जो जीभ को काफी लंबी निकालकर उसे सर्पिणी की तरह घुमाती रहती है। ऐसी गाय का रखना अशुभ माना जाता है।

साँपिनि, साँपिनी(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पिणी] दे० 'साँपिन'। उ०--सिसुघातिनी परम पापिनी। संतति की डसनी जु साँपिनी।--नंद० ग्रं०, पृ० २३६।

साँपिया--संज्ञा पुं० [हिं० साँप+इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का काला रंग जो प्रायः साधारण साँप के रंग से मिलता जुलता होता है।

साँभर[1]--संज्ञा पुं० [सं० सम्भल या साम्भल] १. राजपूताने की एक झील जहाँ का पानी बहुत खारा है। इसी झील के पानी से साँभर नमक बनाया जाता है। २. उक्त झील के जल से बनाया हुआ नमक। ३. भारतीय मृगों की एक जाति।

विशेष--इस जाति का मृग बहुत बड़ा होता है। इसके कान लंबे होते हैं और सींग बारहसिंगों की सींगों के समान होते हैं। इसकी गरदन पर बड़े बड़े बाल होते हैं। अक्तूबर के महीने में यह जोड़ा खाता है।

साँभर†[2]--संज्ञा पुं० [सं० सम्बल या सम्भार] मार्ग के लिये साथ में लिया हुआ जलपान या भोजन। संबल। पाथेय। उ०--जावत अहहिं सकल अरकाना। साँभर लेहु दूरि है जाना।--जायसी (शब्द०)।

साँभरि(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० सम्बल] दे० 'साँभर--२'। उ०--एक कोस जाना चलि आई। गाँठी साँभरि बाँधु बनाई।--संत० दरिया, पृ० ३४।

साँभलना(पु)--क्रि० स० [सं० √सम्भाल्, सम्भालयति; गुज०] १. सुनना। उ०--राव आव्या की साँभली बात। नाचउ रूप मनोहर पात।--बी० रासो, पृ० ६१। २. स्मरण करना। उ०--गायो हो रास सुनै सब कोई। साँभल्याँ रास गंगाफल होई।--बी० रासो, पृ० ५।

साँम(पु)[1]--संज्ञा पुं० [सं० श्याम, प्रा० साम] कृष्ण का नाम। श्याम। उ०--न चंबा न नानको न गोरखो न साँम को।--प्राण०, पृ० ११६।

साँम†[2]--संज्ञा पुं० [सं० साम] साम वेद। दे० 'साम'--१। उ०--भृकुटी विराजत स्वेत मानहुँ मंत्र अदभुत साम के।--पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४५७।

साँम†[3]--संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] स्वामी। मालिक। प्रभु। उ०--रिजक उजालै साँम रौ पालै साँमधरम्म।--बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० १।

साँमजि(पु)†--संज्ञा पुं० [सं० समाज] समूह। दल। उ०--साँमजि करि, उभा रजपूत, हरिष नरायण दीधो सूत।--बी० रासो, पृ० १४।

साँमधरम्म(पु)--संज्ञा पुं० [सं० स्वामिधर्म] स्वामी के प्रति अपना कर्तव्य। उ०--नमसकार सूराँ नराँ, विरद नरेस वरंम। रिजक उजालै साँम रौ, पालै साँमधरंम।--बाँकी०, ग्रं०, भा० १, पृ० १।

साँमन(पु)--संज्ञा पुं० [सं० श्रावण] दे० 'श्रावण' (मास)। उ०--संवत नव षट् बसु ससी, साँमन सुदि बुधवार।--पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ५४३।

साँमर(पु)--सं० [सं० श्यामल] दे० 'साँवला'।

साँमहा(पु)†--वि० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह] [वि० स्त्री० साँमही] संमुख। सामने। उ०--साँमही छींक हुणँइ कपाल।--बी० रासो, पृ० ५१।

साँमुहें†--अव्य० [सं० सम्मुखे] सामने। सम्मुख।

साँमेला(पु)†--संज्ञा पुं० [सं० सम्मिलन] मिलना। मिलाप। उ०--(क) चउघड़ियउ बाजइ सीह दुवारि, साँमेला की बेला हुई।--बी० रासो, पृ० १५। (ख) परण पधारे राम जीत दुजराजनै, तुरत करोजे त्यार साँमेलो साजनै।--रघु० रू०, पृ० ६२।

साँम्हा(पु)--अव्य० [सं० सम्मुख] संमुख। सामने। उ०--भाज गई चिंता भड़ाँ, घड़ाँ कठट्ठे जंग। नाँमा रक्खण देख खल, साँम्हा किया तुरंग।--रा० रू०, पृ० ३३।

साँय साँय--संज्ञा पुं० [अनु०] सन्नाटे में हवा की गति से पैदा होनेवाली ध्वनि। उ०--करता मारुत साँय साँय है।--साकेत, पृ० ३६१।

साँवक[1]--संज्ञा पुं० [देश०] वह ऋण जो हलवाहों को दिया जाता है और जिसके सूद के बदले में वे काम करते हैं।

साँवक[2]--संज्ञा पुं० [सं० श्यामक] साँवाँ नामक अन्न।

साँवत†[1]--संज्ञा पुं० [सं० सामन्त] सुभट। योद्धा। सामंत। दे० 'सामंत'। उ०--दुरजोधन अवतार नृप सत साँवत सकबंध।--प० रासो, पृ० १।

साँवत[2]--संज्ञा पुं० [सं० सामन्त या देश०] एक प्रकार का राग।

साँवती†--संज्ञा [देश०] बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी के नीचे लगी हुई वह जाली जिसमें घास आदि रखते हैं।

साँवन--संज्ञा पुं० [देश०] मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष जिसका तना प्रायः झुका हुआ होता है।

विशेष--इसकी छाल पतली और भूरे रंग की होती है। यह देहरादून, अवध, बुंदेलखंड और हिमालय में ४००० फुट की ऊँचाई पर पाया जाता है। फागुन चैत में पुरानी पत्तियों के झड़ने और नई पत्तियों के निकलने पर इसमें फूल लगते हैं। इसमें से एक प्रकार का गोंद निकलता है जो ओषधि के रूप में काम आता और मछलियों के लिये विष होता है। इसके हीर की लकड़ी मजबूत और कड़ी होती है और सजावट के सामान बनाने के काम में आती है। पशु इसकी पत्तियाँ बड़े चाव से खाते हैं।

साँवर[1]--वि० [सं० श्यामल] [वि० स्त्री० साँवरि या साँवरी] दे० 'साँवला'। उ०--काहे राम जिउ साँवर लछिमन गोर हो। कीदँह रानि कौसिलहि परिगा भोर हो।--तुलसी ग्रं०, पृ० ५। २. सलोना। सुंदर। उ०--सखि रोके साँवर लाल, घन घेरचौ मनो दामिनी।--नंद० ग्रं०, पृ० ३८५।

साँवर(पु)[2]--संज्ञा पुं० [सं० सम्भल, साम्भल] दे० 'साँबर', 'साँभर'। उ०--जाँवत अहै सकल ओरगाना। साँवर लेहु दूरि है जाना। --जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० २०६।

साँवरा--वि०, संज्ञा पुं० [हिं० साँवला] दे० 'साँवला'।

साँवरो(पु)--वि०, संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'साँवला'। उ०--सखन सहित सजि सुघर साँवरो, सुनतहि सनमुख आए।--नंद० ग्रं०, पृ० ३८१।

साँवल(पु)[1]--वि०, संज्ञा पुं० [सं० श्यामल] दे० 'साँवला'। उ०--अद्भुत साँवल अंग बन्यो अद्भुत पीतांबर। मूरति धरि सिंगार प्रेम अंबर ओढ़े हरि।--नंद० ग्रं०, पृ० २८।

साँवलताई†--संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामल, हिं० साँवल + ताई (प्रत्य०)] साँवला होने का भाव। श्यामता। श्यामलता।

साँवला[1]--वि० [सं० श्यामलक] [वि० स्त्री० साँवली] जिसके शरीर का रंग कुछ कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।

साँवला[2]--संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. पति या प्रेमी आदि का बोधक एक नाम।

विशेष--इन अर्थों में इस शब्द का प्रयोग गीतों आदि में होता है।

साँवलापन--संज्ञा पुं० [हिं० साँवला + पन] साँवला होने का भाव। वर्ण की श्यामता।

साँवलि(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामला, प्रा० साँवली] श्यामल वर्ण की बदली। उ०--साँवलि काँइ न सिरजियाँ, अंबर लागि रहत। वाट चलंती साल्ह प्रिव, ऊपर छाँह करंत।--ढोला०, दू०, ४१५।

साँवलिया[1]--संज्ञा पुं० [हिं० साँवलिया] १. कृष्ण। २. प्रिय का संबोधन। प्रिय। ३. पति। स्वामी।

साँवलिया[2]--वि० [सं० श्यामल] दे० 'साँवला'। उ०--बैल दो साँवलिया और धौला।--कुकुर०, पृ० ५१।

साँवाँ--संज्ञा पुं० [सं० श्यामाक] कँगनी या चेना की जाति का एक अन्न जो सारे भारत में बोया जाता है।

विशेष--यह प्रायः फागुन चैत में बोया जाता है और जेठ में तैयार होता है। कहीं कहीं इसकी बोआई आषाढ़-सावन में होती है और भादोंतक यह काट लिया जाता है। यह बरसाती अन्न है। इसके विषय में यह कहावत पूर्वी जिलों में प्रसिद्ध है कि 'साँवाँ साठी साठ दिना। देव बरीसे रात दिना।' यह अन्न बहुत ही सुपाच्य और बलवर्धक माना जाता है और प्रायः चावल की भाँति उबालकर खाया जाता है। कहीं कहीं रोटी के लिये इसका आटा भी तैयार किया जाता है। इसकी हरी पत्तियाँ और डंठल पशुओं के लिये चारे की भाँति काम में आते हैं, और पंजाब में कहीं कहीं केवल चारे के लिये भी इसकी खेती होती है। अनुमान है कि यह मिस्र या अरब से इस देश में आया है।

साँस--संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] १. नाक या मुँह के द्वारा बाहर से हवा खींचकर अंदर फेफड़ों तक पहुँचाने और उसे फिर बाहर निकालने की क्रिया। श्वास। दम।

विशेष--यद्यपि यह शब्द संस्कृत 'श्वास' (पुल्लिग) से निकला है और इसलिये पुल्लिग ही होना चाहिए, परंतु लोग इसे स्त्रीलिंग ही बोलते हैं। परंतु कुछ अवसरों पर कुछ विशिष्ट क्रियाओं आदि के साथ यह कवल पुल्लिग भी बोला जाता है। जैसे,--इतनी दूर से दौड़े हुए आए हैं, साँस फूलने लगा।

क्रि० प्र०--आना।--जाना।--लेना।

मुहा०--साँस अड़ना = दे० 'साँस रुकना'। साँस उखड़ना = (१) मरने के समय रोगी का देर देर पर और बड़े कष्ट से साँस लेना। (२) साँस टूटना। दम टूटना। उ०--पवन पी रहा था शब्दों को निर्जनता की उखड़ी साँस।--कामायनी, पृ० १६। (३) साँस या दमा के रोगी का जोर जोर की खाँसी आने से श्लथ होना। साँस उड़ना = प्राणांत होना। जीवनलीला समाप्त होना। साँस ऊपर नीचे होना = साँस का ठीक तरह से ऊपर नीचे न आना। साँस रुकना। साँस का अंदर की अंदर और बाहर की बाहर रह जाना = भौंचक्का रह जाना। चकित रह जाना। साँस का टूट टूट जाना = धीरज का जाते रहना। उ०--आस कैसे न टूट जाती तब, साँस जब टूट टूट जाती है।--चुभते०, पृ० ५१। साँस खींचना = (१) नाक के द्वारा वायु अंदर की ओर खींचना। साँस लेना। (२) वायु अंदर खींचकर उसे रोक रखना। दम साधना। जैसे,--हिरन साँस खींचकर पड़ गया। साँस चढ़ना = अधिक वेग से या परिश्रम का काम करने के कारण साँस का जल्दी जल्दी आना और जाना। साँस चढ़ाना = दे० 'साँस खींचना'। साँस चलना = (१) जीवित होना। जीवित रहना। (२) रोग या अवस्थता की स्थिति में जल्दी जल्दी और जोर से साँस लेना। साँस छोड़ना = नाक द्वारा अंदर खींची हुई वायु को बाहर निकालना। साँस टूटना = दे० 'साँस उखड़ना'। साँस डकार न लेना = किसी चीज को पूर्णतः पचा जाना। किसी चीज को इस प्रकार छिपाकर दाब जाना कि पता तक न चले। साँस तक न लेना = बिलकुल चुपचाप रहना। कुछ

न बोलना। जैसे,––उनके सामने तो यह लड़का साँस नहीं लेता। साँस फूलना=बार बार साँस आना और जाना। साँस चढ़ना। साँस भरना=दे॰ 'ठंढी साँस लेना'। साँस रहते=जीते जी। जीवन पर्यंत। साँस रुकना=साँस के आने और जाने में बाधा। श्वास की क्रिया में बाधा होना। जैसे,––यहाँ हवा की इतनी कमी है कि साँस रुकती है। साँस लेना=(१) नाक के द्वारा वायु खींचकर अंदर लेना और फिर उसे बाहर निकालना। (२) सुस्ताना। थोड़ी देर आराम करना। अंतिम साँस लेना=प्राणांत होना। मर जाना। अंतिम साँसें गिनना=मरने के निकट होना। आसन्न मृत्यु होना। उलटी साँस लेना=(१) दे॰ 'गहरी साँस भरना या लेना।' (२) मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से अंतिम साँस लेना। ऊपर को साँस चढ़ना=मरणासन्न होना। मृत्यु का निकट होना। साँसों में जी का होना=मरणासन्न होना। मृत्यु का निकट होना। गहरी साँस भरना या लेना=बहुत अधिक दु:ख आदि के आवेग के कारण बहुत देर तक अंदर की ओर वायु खींचते रहना और उसे कुछ देर तक रोक कर बाहर निकालना। ठंढी या लंबी साँस लेना=दे॰ 'गहरी साँस भरना या लेना'।

२. अवकाश। फुरसत। विश्राम।

मुहा॰—साँस लेना=थक जाने पर विश्राम लेना। ठहर जाना। जैसे,—(क) घंटों से काम कर रहे हो, जरा साँस ले लो। (ख) वह जबतक काम पूरा न कर लेगा तबतक साँस न लेगा। साँस लेने या मारने तक की फुरसत न होना=बिल्कुल अवकाश न रहना। अत्यंत व्यस्त होना।

३. गुंजाइश। दम। जैसे,—अभी इस मामले में बहुत कुछ साँस है। ४. वह संधि या दरार जिसमें से होकर हवा जा या आ सकती है।

मुहा॰—(किसी पदार्थ का) साँस लेना=किसी पदार्थ में संधि या दरार पड़ जाना। (किसी पदार्थ का) बीच में से फट जाना या नीचे की ओर धँस जाना। जैसे,—(क) इस भूकंप में कई मकानों और दीवारों ने साँस ली है। (ख) इस भाथी में कहीं न कहीं साँस जरूर है; इसी से पूरी हवा नहीं लगती।

५. किसी अवकाश के अंदर भरी हुई हवा।

मुहा॰—साँस निकलना=(१) किसी चीज के अंदर भरी हुई हवा का बाहर निकल जाना। जैसे,––टायर की साँस निकलना, फुटबाल की साँस निकलना। (२) प्राणांत होना। समाप्त हो जाना। साँस भरना=(१) किसी चीज के अंदर हवा भरना। (२) अत्यधिक थकान से जल्दी जल्दी और जोर की साँस आना।

६. वह रोग जिसमें मनुष्य बहुत जोरों से, पर बहुत कठिनता से साँस लेता है। दम फूलने का रोग। श्वास। दमा।

क्रि॰ प्र॰––फूलना।

साँसत—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ साँस+त (प्रत्य॰)] १. दम घुटने का सा कष्ट। २. बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा। ३. झंझट। बखेड़ा। उ॰––रेल राँड़ पर चढ़त होत सहजहिँ परबस नर। सौ सौ साँसत सहत तऊ नहिं सकत कछू कर।––प्रेमघन॰, भा॰ १, पृ॰ ७।

यौ॰––साँसतघर।

साँसतघर––संज्ञा पुं॰ [हिं॰ साँसत+घर] कारागार में एक प्रकार की बहुत तंग और बहुत अँधेरी कोठरी जिसमें अपराधियों को विशेष दंड देने के लिये रखा जाता है। कालकोठरी। २. बहुत तंग या छोटा मकान जिसमें हवा या रोशनी न आती हो।

साँसति(पु)––संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰] दे॰ 'साँसत'। उ॰––तब तात न मात न स्वामी सखा सुत बंधु बिसाल बिपत्ति बटैया। साँसति घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुँ ओर डटैया।––तुलसी (शब्द॰)।

साँसना(पु)†––क्रि॰ स॰ [सं॰ शासन] १. शासन करना। दंड देना। २. डाँटना। डपटना। ३. कष्ट देना। दु:ख देना।

साँसल––संज्ञा पुं॰ [देश॰] १. एक प्रकार का कंबल। २. बीज बोने की क्रिया।

साँसा†[१]––संज्ञा पुं॰ [सं॰ श्वास, प्रा॰ सास] १. साँस। श्वास। जैसे,–जबतक साँसा, तबतक आसा। (कहा॰)। २. जीवन। जिंदगी। ३. प्राण।

साँसा[२]––संज्ञा पुं॰ [हिं॰ साँसत] १. घोर कष्ट। भारी पीड़ा। तकलीफ। २. चिंता। फिक्र। तरद्दुद।

मुहा॰––साँसा चढ़ना=फिक्र होना। चिंता होना।

साँसा[३]––संज्ञा पुं॰ [सं॰ संशय] १. संशय। संदेह। शक। २. डर। भय। दहशत।

मुहा॰––साँसा पड़ना=संशय होना। संदेह होना। उ॰—आवण का साँसा पडई। जाणि हीमालइ राजा गलिया हो जाई।––बी॰ रासो, पृ॰ ४८।

साँही(पु)†––संज्ञा पुं॰ [सं॰ स्वामी, प्रा॰ साँई] फकीर। औलिया। दे॰ 'साईं'। उ॰––कही बत्त गोरी तिनं सों सबाँही। कहैं जेब जबाब पुच्छंत साँही।––पृ॰ रा॰, १९।३३।

सा[१]––अव्य॰ [सं॰ सदृश्य, सह] १. समान। तुल्य। सदृश। बराबर। जैसे,––उनका रंग तुम्हीं सा है। २. एक प्रकार का मानसूचक शब्द। जैसे,––बहुत सा, थोड़ा सा, जरा सा।

सा[२]––संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. गौरी। पार्वती। २ लक्ष्मी [को॰]।

सा[३]––संज्ञा पुं॰ संगीत के सात स्वरों में प्रथम स्वर। षड्ज का संक्षिप्त रूप।

साअत––संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ साअ़त] दे॰ 'साइत–१'।

साअद––संज्ञा पुं॰ [अ॰ साइद] आरोहक।––दक्खिनी॰, पृ॰ ९५।

साइंस––संज्ञा स्त्री॰ [अं॰ साइन्स] किसी विषय का विशेष ज्ञान-विज्ञान शास्त्र। विशेष दे॰ 'विज्ञान'। २. रासायनिक और भौतिक विज्ञान।

साइ(पु)––संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰ स्याही] दे॰ 'स्याही'। उ॰––साइ सप्त साइर करी, करी कलम बनराइ।––पोद्दार अभि॰ ग्रं॰, पृ॰ ४३५।

साइक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शायक, प्रा० साइक] बाण। दे० 'शायक'। उ०—बीर पठन कर साइक तानिय।—प० रासो, पृ० १५३।

साइकिल—संज्ञा स्त्री० [अं०] दो पहियों की पैरगाड़ी। बाईसिकिल। पाँवगाड़ी। उ०—उसके पिता की एक बहुत बड़ी साइकिलों की एजेंसी थी।– तारिका, पृ० ७।

साइग—संज्ञा पुं० [अ० साइग़] स्वर्णकार। सुनार [को०]।

साइक्लोपीडिया—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ वह बड़ा ग्रंथ जिसमें किसी एक विषय के अंगों और उपांगों आदि का पूरा वर्णन हो। २. वह बड़ा ग्रंथ जिसमें संसार भर के सब मुख्य मुख्य विषयों और विज्ञानों आदि का पूरा पूरा विवेचन हो। विश्वकोष। इनसाइक्लोपीडिया।

साइत[१]—संज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। २. पल। लहमा। उ०—अभी एक साइत हुई कि मैं राजभवन और अपने अनुचरों की स्वामिनी और अपने मन की रानी थी।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ६०६। ३. मुहूर्त। शुभ लग्न। उ०—अर्थात् काबुल लेना शुभ साइत में हुआ था कि सब संतानें काबुल में हुई।—हुमायूँ०, पृ० १३।

क्रि० प्र०—देखना।—निकलना।—निकलवाना।

यौ०—साइत सुदेवस = शुभ लग्न और दिन।

साइत†[२]—अ० [फ़ा० शायद] दे० 'शायद'। उ०—साइत तुम्हें अनजान समझ कर रास्ते में कुछ दिक करे।—गोदान, पृ० ८।

साइनबोर्ड—संज्ञा पुं० [अं०] वह तख्ता या टीन आदि का टुकड़ा जिसपर किसी व्यक्ति, दूकान या व्यवसाय आदि का नाम और पता आदि अथवा सर्वसाधारण के सूचनार्थ इसी प्रकार की कोई और सूचना बड़े बड़े अक्षरों में लिखी हो।

विशेष—ऐसा तख्ता दूकान, मकान या संस्था आदि के आगे किसी ऐसे स्थान पर लगाया जाता है, जहाँ सब लोगों की दृष्टि पड़े।

साइबड़ी†—संज्ञा स्त्री० [?] वह धन जो किसान फसल के समय धार्मिक कार्यों के निमित्त देते हैं।

साइबान—संज्ञा पुं० [फ़ा० सायबान] दे० 'सायबान'।

साइम—वि० [अ०] [वि० स्त्री० साइमा] रोजा या व्रत रखनेवाला। दे० 'सायम'।

साइयाँ—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी, प्रा० सामी, साईं] दे० 'साईं'। उ०—जाको राखे साइयाँ मारि न सकिहै कोइ। बाल न बाँका करि सकै जो जग बैरी होइ।—कबीर (शब्द०)।

साइर†[१]—संज्ञा पुं० [अ०] आमदनी के वह साधन जिनपर जमींदारों को प्रायः लगान नहीं देना पड़ता था। जैसे,—स्वतत्रता के पूर्व जंगल, नदी, बाग, ताल आदि जो कहीं कहीं सरकारी कर से मुक्त रहते थे। दे० 'सायर'।

साइर[२]—वि० [वि० स्त्री० साइरा] १. चंक्रमणशील। घूमने फिरनेवाला। २. कुल। पूरा। ३. बचा हुआ। शेष। बाकी [को०]।

साइर(पु)[३]—संज्ञा पुं० [सं० सागर, प्रा० सायर] दे० 'सागर'। उ०—(क) दौं लागी साइर जल्या पंखी बैठे आइ।—कबीर ग्रं०, पृ० १२। (ख) साइ सप्त साइर करी, करी कलम बनराइ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ ४३५।

साइल—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० साइरा] १. प्रार्थी। उम्मीदवार। आसरा लगानेवाला। २. भिक्षुक। भिखमंगा। ३. जिज्ञासा करनेवाला। प्रश्नकर्ता। उ०—कहे तब हाजिरों ने अर्ज यूँ कर। हुए साइल के एं आलम रहबर।—दक्खिनी०, पृ० ३२६।

साईं—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] १.स्वामी। मालिक। प्रभु। २. ईश्वर। परमात्मा। ३ पति। खाविंद। ४. एक प्रकार का पेड़। दे० 'साँईं'।

साई[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वामिक, प्रा० साइअ या हिं० साइत ?] वह धन जो गाने बजानेवाले या इसी प्रकार के और पेशेकारों को किसी अवसर के लिये उनकी नियुक्ति पक्की करके, पेशगी दिया जाता है। पेशगी। बयाना।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

मुहा०—साई बजाना = जिससे साई ली हो, उसके यहाँ नियत समय पर जाकर गाना बजाना।

साई†[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सहाय] वह सहायता जो किसान एक दूसरे को दिया करते हैं।

साई[३] संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का कीड़ा जिसके घाव पर बीट कर देने से घाव में कीड़े पैदा हो जाते हैं। २. वे छड़ें जो गाड़ी के अगले हिस्से में बेंड़े बल में एक दूसरे को काटते हुए रखी जाती हैं और जिनके कारण उनकी मजबूती और भी बढ़ जाती है।

साई[४] संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'साईकाँटा'।

साई(पु)[५]—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी, प्रा० सामि] स्वामी। मालिक। उ०—है परष परष साई सुकीय। छुट्टंत अरस जनु किरनकीय।—पृ० रा०, ११ २५।

साईकाँटा—संज्ञा पुं० [हिं० साही (= जंतु) + काँटा] एक प्रकार का वृक्ष। साई। मोगली।

विशेष—यह वृक्ष बंगाल, दक्षिण भारत, गुजरात और मध्यप्रदेश में पाया जाता है। इसकी लकड़ी सफेद होती है और छाल चमड़ा सिझाने के काम में आती है। इसमें से एक प्रकार का कत्था भी निकलता है।

साईबान संज्ञा पुं० [फ़ा० सायबान, साइबान] दे० 'सायबान'। उ०—बीच में एक बड़ा कमरा हवादार बहुत अच्छा बना हुआ था। उसके चारों तरफ संगमरमर का साईबान और साईबान के गिर्द फव्वारों की कतार।—श्रीनिवास ग्रं०, पृ० १७७।

साईस—संज्ञा पुं० [हिं० रईस का अनु०] [अ० साइस, सईस (= घोड़े का रखवाला)] वह आदमी जो घोड़े की खबरदारी और सेवा करता है, और उसे दाना घास आदि देता, मलता और टहलाता तथा इसी प्रकार के दूसरे काम करता है।

साईसी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साईस + ई (प्रत्य०)] साईस का काम, भाव या पद।

साउ†—संज्ञा पुं० [सं० साधु, प्रा० साहु] दे० 'साहु'।

साउजⓅ—संज्ञा पुं० [सं० श्वापद, प्रा० सावय ?] वे जानवर जिनका शिकार किया जाता है। आखेट। अहेर। उ०—कीन्हेसि साउज आरन रहई। कीन्हेसि पंख उड़हिं जहँ चहई।—जायसी ग्रं०, पृ० १।

साउथ—संज्ञा पुं० [अं०] दक्षिण दिशा।

साऊⓅ—संज्ञा पुं० [सं० साधु, प्रा० साहु] सज्जन। भला पुरुष। साऊ थे दुसमन होइ लागे सबने लगूँ कड़ी। तुम बिन साऊ कोऊ नहीं है डिगी नाव मेरे समँद अड़ी।—संतवाणी०, पृ० ७१।

साएरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सागर, प्रा० सायर] दे० 'सागर'। उ०—विरह अगिनि तन जरि बन जरे। नैन नीर साएर सब भरे।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० २७१।

साएरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [अ० शायरी] दे० 'शायरी'। उ०—एह सब साएरी कवि कथा। दधी मथि घ्रित साधु लीन्हौ छाछि को गुन गथा।—संत० दरिया, पृ० १५१।

साओनⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० श्रावण, प्रा० सावण] सावन का महीना दे० 'श्रावण'। उ०—साओन सयँ हम करब पिरीत। जत अभिमत अभिसारक रीत।—विद्यापति, पृ० २२९।

साकंभरी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाकम्भरी] देवी दुर्गा की एक मूर्ति।

साकंभरी[२]—संज्ञा पुं० शाकभरी क्षेत्र। साँभर झील या उसके आसपास का प्रांत जो राजपूताने में है।

साक[१]—संज्ञा पुं० [सं० शाक] शाक। साग। सब्जी। तरकारी। भाजी।

साक[२]—संज्ञा पुं० [हिं०] १. दे० 'सागौन'।

साक[३]—संज्ञा स्त्री० [हिं० साख] १. दे० 'धाक'। उ०—को हौ तुम अब का भए, कहाँ गए करि साक।—भारतेंदु ग्रं०, भा० ३, पृ० ३४०। २. दे० 'साख'। उ०—तहाँ कबीरा चढ़ि गया, गहि सतगुरु की साक।—कबीर सा० सं०, पृ० ६०।

साक़[४]—संज्ञा स्त्री० [अ० साक़] १. वृक्ष का तना या धड़। २. पौधे की शाख या डंठल। ३. पिंडली [को०]।

साक[५]—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्क] शंका। दुविधा। उ०—मन फाटा बाइक बुरै मिटी सगाई साक।—कबीर ग्रं०, पृ० ६०।

साकचेरि†—संज्ञा स्त्री० [सं० शाक + चेरी ?] मेंहदी। नखरंजन। हिना।

साकट—संज्ञा पुं० [सं० शाक्त] १. शाक्त मत का अनुयायी। उ०—सोवत साधु जगाइए करै नाम का जाप। ये तीनो सोवत भले साकट सिंह रु साप।—संतवाणी०, पृ० २८९। २. वह जो मांसादि भक्षण करता हो। ३. वह जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो। गुरुरहित। ४. दुष्ट। पाजी। शरीर।

साकणीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० शाकिनी] डाकिनी। पिशाचिनी। उ०—कलकै वीर कराली, हलकै साकण्याँ।—नट०, पृ० १७०।

साकत[१]—संज्ञा पुं० [सं० शाक्त] दे० 'साकट'।

साकतⓅ[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] दे० 'शक्ति'। उ०—वही अनेक साकते। कहंत चंद बाकते।—पृ० रा०, ६।१८७।

साकत्तिⓅ—वि० [हिं०] दे० 'शक्ति'। उ०—चढचौ मंगि सुरतान साहाब ताजी। जरं जीन अंमोल साकत्ति साजी।—पृ० रा०, १९।२९।

साकबंधी—वि० [हिं० साका + बाँधना] संवत्सर चलानेवाला (राजा)। उ०—गए साकबंधी सका बाँधि केते।—धरनी०, पृ० ११।

साकम—संज्ञा पुं० [सं० सङ्क्रम, मि० बं० साँको] खाईं आदि का छोटा पुल। उ०—वकवार, साकम बोध पोषरि नीक नीक निकेतना।—कीर्ति०, पृ० २६।

साकर†[१]—वि० [सं० सङ्कीर्ण] संकीर्ण। सँकरा। तंग।

साकर[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] दे० 'साँकल'।

साकर‡[३]—संज्ञा स्त्री० [हिं० शकर तुल० सं० शर्करा] दे० 'शक्कर'। उ०—जा पर कृपा सोई भल जानै। गूंगो साकर कहा बखानै।—रैदास०, पृ० ४८।

साकरⓅ[४]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाका + हिं० ड़ (प्रत्य०)] साख। धाक। खलबली। उ०—बज्जत सुगज्जत साखरे। जे करत दिसि दिसि साकरे।—पद्माकर ग्रं०, पृ० ८।

साकल[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खल] दे० 'साँकल'।

साकल[२]—संज्ञा पुं० [सं० शाकल] १. पंजाब (वाहीक) का पुराना नाम। २. मद्र देश का एक नगर। स्यालकोट।

साकल्य[१]—संज्ञा पुं० [सं० शाकल्य] दे० 'शाकल्य'।

साकल्य[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्णता। समग्रता। किसी वस्तु का पूर्ण होने का भाव।

साकल्यक—वि० [सं०] रोगी। रुग्ण। बीमार।

साकल्लिⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० शाकल्य] दे० 'शाकल्य'। उ०—अब होम उभय प्रकार सुनि शिष कहौं तोहि बखानि। इक अग्नि महिं साकल्ल होमै सो प्रवृत्ती जानि।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० ४०।

साकवर†—संज्ञा पुं० [?] बैल। वृषभ।

साकांक्ष—वि० [सं० साकाङ्क्ष] १. आकांक्षा से युक्त। इच्छुक। चाहनेवाला। २. महत्वपूर्ण। ३. जिसके लिये कुछ और, पूरक वस्तु अपेक्षित हो [को०]।

साका—संज्ञा पुं० [सं० शाका] १ संवत्। शाका।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।

२. ख्याति। प्रसिद्धि। शोहरत। उ०—घहरत घंटा धुनि धमकत धौंसा करि साका।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० २८२। ३. यश। कीर्ति। उ०—आनँद के घन प्रीति साकौ न बिगारिए।—घनानंद, पृ० ४०। ४. कीर्ति का स्मारक। ५. धाक। रोब।

मुहा०—साका करना = महान् कार्य करके कीर्ति स्थापित करना। उ०—साकौ करि पहुँतौ सरग, अचलौ ऐ उजवाल।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ८२। साका चलना = प्रभाव माना जाना। उ०—हृदय मुकुतामाल निरखत वारि अवलि वलाक। करज कर पर कमल वारत चलति जहँ तहँ साक।—सूर

(शब्द०)। साका चलाना = रोब जमाना। धाक जमाना। साका बाँधना = दे० साका चलाना'। उ०—किते बिकरमाजीत साका बाँधि मर गए।—पलटू०, भा० २, पृ० ८४।

६. कोई ऐसा बड़ा काम जो सब लोग न कर सकें और जिसके कारण कर्ता की कीर्ति हो। उ०—गीध मानो गुरु, कपि भालु मानो मीन कै, पुनीत गीत साके सब साहब समत्थ के। —तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

७. समय। अवसर। मौका। उ०—जो हम मरन दिवस मन ताका। आजु आइ पूजी वह साका।—जायसी (शब्द०)।

साकार[1]—वि० [सं०] १. जिसका कोई आकार हो। जिसका स्वरूप हो। जो निराकार न हो। आकार या रूप से युक्त। २. मूर्तिमान। साक्षात्। ३. स्थूल। व्यक्त। ४. अच्छे आकार का। सुंदर (को०)।

साकार[2]—संज्ञा पुं० ईश्वर का वह रूप जो आकार युक्त हो। ब्रह्म का मूर्तिमान स्वरूप।

साकारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] साकार होने का भाव। साकारपन।

साकारोपासना—संज्ञा स्त्री० [सं०] ईश्वर की वह उपासना जो उसका कोई आकार या मूर्ति बनाकर की जाती है। ईश्वर की मूर्ति बनाकर उसकी उपासना करना।

साकित(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाक्त] दे० 'शाक्त'। उ०—साकित गिरही बानेधारी हैं सबही अज्ञान।—चरण० बानी, पृ० ८४।

साकिन—वि० [अ०] निवासी। रहनेवाला। बाशिंदा। जैसे,—रामलाल साकिन मौजा रामनगर। २. निश्चेष्ट। गतिहीन (को०)। ३. स्वर वर्ण से रहित। हलंत (को०)।

साकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शाकिनी] पिशाचिनी। डाइन। उ०—घूमत कहूँ काली करालबदना मुँह बाए। झुंड डाकिनी और साकिनी संग लगाए।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३१।

साकिया—संज्ञा पुं० [अ० साक़ियह्] शराब पिलानेवाली स्त्री। उ०—जो बंद कर पलकें सहज दो घूँट हँसकर पी गया। जिससे सुधा मिश्रित गरल वह साकिया का जाम है। —हिल्लोल, पृ० ३६।

साकी[1]—संज्ञा पुं० [देश०] कपूर कचरी। गंध पलाशी।

साकी[2]—संज्ञा पुं० [अ० साक़ी] १. वह जो लोगों को मद्य पिलाता हो। शराब पिलानेवाला। उ०—सिर्फ खैयामों की आवश्यकता है, साकी हजारों सुराही लिए यहाँ तैयार मिलेंगे।—किन्नर०, पृ० ३७। २. वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। माशूक।

साकुच—संज्ञा पुं० [सं०] सकुची मछली। शकुल मत्स्य।

साकुन, साकुन्न(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाकुन] दे० 'शाकुन-२'। उ०—साकुन्न कला क्रीडन बिसार। चिन्नन सुजोग कवि चवत चारु।—पृ० रा०, १।७३३।

साकुर‡—संज्ञा पुं० [हिं०] घोड़ा। उ०—एता लिछमरण आपिया, साकुर ऊँट समाज।—शिखर०, पृ० १०६।

साकुरुंड—संज्ञा पुं० [सं० साकुरुण्ड] दे० 'सकुरुंड'।

साकुल—वि० [सं०] हतबुद्धि। परीशान। घबड़ाया हुआ [को०]।

साकुश†—संज्ञा पुं० [डिं०] घोड़ा। अश्व। बाजि।

साकूत—वि० [सं०] १. अर्थयुक्त। सार्थक। साभिप्राय। २. क्रीडापूर्वक। ३. शृंगारप्रिय। स्वेच्छाचारी। विषयी [को०]।

साकूतस्मित—संज्ञा पुं० [सं०] १. अर्थपूर्ण मुस्कान। २. कामुक दृष्टि। वासनाभरी निगाह [को०]।

साकूतहसित—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'साकूतस्मित' [को०]।

साकृत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाकल्य] शाकल्य। साकला हवन करने की वस्तु। उ०—गिद्धि सिद्धि बेताल पेषि पल साकृत छंडिय। —पृ० रा०, २५।४५३।

साकेत—संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या नगरी। अवधपुरी।

साकेतक—संज्ञा पुं० [सं०] साकेत का निवासी। अयोध्या का रहनेवाला।

साकेतन—संज्ञा पुं० [सं०] साकेत। अयोध्या।

साकोटक—संज्ञा पुं० [सं० शाखोटक] शाखोट वृक्ष। सिहोर।

साकोह†—संज्ञा पुं० [सं० शाल] साखू। शाल। वृक्ष।

साक्त†—संज्ञा पुं० [सं० शाक्त] दे० 'शाक्त'। उ०—सो एक समै एक साक्त गाम की सहनगी लैं भूमि भरन आयो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ३१७।

साक्तुक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. जौ जिससे सत्तू बनता है। भूना हुआ जौ। २. जौ का सत्तू। ३. एक प्रकार का विष।

साक्तुक[2]—वि० सत्तू संबंधी। सत्तू का।

साक्ष—वि० [सं०] १. नेत्रयुक्त। नेत्रसहित। २. अक्षमाला या जप के मनकों से युक्त [को०]।

साक्षर—वि० [सं०] जिसे अक्षरों का बोध हो। जो पढ़ना लिखना जानता हो। शिक्षित।

साक्षरता—संज्ञा पुं० [सं० साक्षर+ता (प्रत्य०)] शिक्षित होने का भाव। पढ़ा लिखा होना।

साक्षरता आंदोलन—संज्ञा पुं० [हिं० साक्षरता+आंदोलन] अपढ़ लोग पढ़ लिख सकें और उनमें शिक्षा का प्रसार हो इस दृष्टि से किया जानेवाला आंदोलन या आयोजन। शिक्षाप्रसार अभियान।

साक्षात्[1]—अव्य० [सं०] १. सामने। संमुख। प्रत्यक्ष। २. वस्तुतः। ठीक ठीक। ३. सीधे। बिना किसी माध्यम के।

साक्षात्[2]—वि० मूर्तिमान्। साकार। स्पष्ट। जैसे,- आप तो साक्षात् सत्य हैं।

साक्षात्[3]—संज्ञा पुं० भेंट। मुलाकात। देखा देखी।

साक्षात्कर—वि० [सं०] साक्षात् करनेवाला। साक्षात्कारी।

साक्षात्करण—संज्ञा पुं० [सं०] १. दृष्टिगत कराने का कार्य। आँखों के संमुख उपस्थित करना। २. इंद्रियबोध कराना। ३. आभ्यंतरिक ज्ञान। आंतरिक ज्ञान [को०]।

साक्षात्कर्ता – वि० [सं० साक्षात्कर्तृ] साक्षात् करनेवाला [को०]।

साक्षात्कार—संज्ञा पुं० [सं०] १. भेंट। मुलाकात। मिलन। २. पदार्थों का इंद्रियों द्वारा होनेवाला ज्ञान।

साक्षात्कारी--संज्ञा पुं० [सं० साक्षात्कारिन्] १. साक्षात् करनेवाला। २. भेंट या मुलाकात करनेवाला।

साक्षात्कृत—वि० [सं०] साक्षात्कार कराया हुआ। प्रत्यक्ष कराया हुआ [को०]।

साक्षात्क्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अंतर्ज्ञानपरक प्रत्यक्ष ज्ञान। २. प्रत्यक्षीकरण [को०]।

साक्षाद्दृष्ट - वि० [सं०] साक्षात् देख हुआ। आँखों से देखा हुआ।

साक्षिणी—वि० स्त्री० [सं०] साक्ष्य प्रस्तुत करनेवाली। प्रमाणस्वरूप। उ०—कहेगी शतद्रु शतसंगरों की साक्षिणी सिक्ख थे सजीव। —लहर, पृ० ६०।

साक्षिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] साक्षी का काम। साक्षित्व। गवाही।

साक्षित्व संज्ञा पुं० [सं०] साक्षिता [को०]।

साक्षिद्वैध—संज्ञा पुं० [सं०] साक्षी में दुविधा होना [को०]।

साक्षिपरीक्षा--संज्ञा स्त्री० [सं०] गवाह की परीक्षा [को०]।

साक्षिप्त अव्य० [सं०] अविचारपूर्वक। अविचारित। बिना विचारे।

साक्षिप्रत्यय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'साक्षीप्रत्यय'।

साक्षिभावित—वि० [सं०] गवाह के बयान से सिद्ध [को०]।

साक्षिभूत—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

साक्षिमान्‌आधि--संज्ञा पुं० [सं०] साक्षियों के सामने गिरवी रखा हुआ धन जिसकी लिखापढ़ी न की गई हो।

साक्षी[१]—संज्ञा पुं० [सं० साक्षिन्] [वि० स्त्री० साक्षिणी] १. वह मनुष्य जिसने किसी घटना को अपनी आँखों देखा हो। चश्मदीद गवाह। २. वह जो किसी बात की प्रामाणिकता बतलाता हो। गवाह। ३. देखनेवाला। दर्शक। ४. परमात्मा (को०)। ५. दर्शन शास्त्र में पुरुष या ब्रह्म् (को०)।

साक्षी[२]--वि० १. द्रष्टा। देखनेवाला। अपनी आँखों से किसी घटना को देखनेवाला [को०]।

साक्षी[३]--संज्ञा स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया।

साक्षीद्वैध—संज्ञा पुं० [सं०] विरोधी बयान। बयानों में परस्पर अंतर्विरोध [को०]।

साक्षीपरीक्षा--संज्ञा स्त्री० [सं०] गवाह की परीक्षा लेना। जिरह [को०]।

साक्षीप्रत्यय—संज्ञा पुं० [सं०] गवाहों का बयान [को०]।

साक्षीप्रश्न—संज्ञा पुं० [सं०] साक्षीपरीक्षा। जिरह [को०]।

साक्षीभावित—वि० [सं०] प्रमाण या सबूत से सिद्ध [को०]।

साक्षीभूत[१]--वि० [सं०] १. साक्षात्कार करनेवाला। स्वयंद्रष्टा। २. प्रमाणस्वरूप। उ०—बर सो जीवन मुक्त है तुरिया साक्षीभूत।—सुंदर० ग्रं०, भा० २, पृ० ७८६।

साक्षीभूत[२]—संज्ञा पुं० विष्णु [को०]।

साक्षीलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] साक्षी से सिद्ध। प्रमाण से सिद्ध [को०]।

साक्षेप –वि० [सं०] १. पक्षपाती। पक्ष लेनेवाला। आपत्तिजनक। २. व्यंग्यपूर्ण। ताने से युक्त [को०]।

साक्ष्य[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. साक्षी का काम। गवाही। शहादत। प्रमाण। उ०—दरिया साहब के निधन के लगभग ३० वर्ष बाद ही इस पथ के तीन साधुओं के साक्ष्य के आधार पर अपना वृत्तांत लिखा था।—संत० दरिया, पृ० ८। २. दृश्य।

साक्ष्य[२]--वि० दृश्य। दिखाई देनेवाला। (समासांत में प्रयुक्त)।

साख[१]--संज्ञा पुं० [हिं० साक्षी] १. साक्षी। गवाह। २. गवाही। शहादत। उ०—(क) तुम बसीठ राजा की ओरा। साख होहु यह भीख निहोरा।—जायसी (शब्द०)। (ख) जैसी भुजा, कलाई तेहि बिधि जाय न भाख। कंकन हाथ होव जेहि तेहि दरपन का साख।—जायसी (शब्द०)।

मुहा०—साख पूरना = साखी भरना। समर्थन करना।

साख[२]—संज्ञा पुं० [सं० शाका, हिं० साका] १. धाक। रोब। २. मर्यादा। उ०—प्रीति बेल उरझइ जब तब सुजान सुख साख।—जायसी (शब्द०)। ३. बाजार में वह मर्यादा या प्रतिष्ठा जिसके कारण आदमी लेन देन कर सकता हो। लेन-देन का खरापन या प्रामाणिकता। जैसे,—जबतक बाजार में साख बनी थी, तबतक लोग लाखों रुपए का माल उन्हें उठा देते थे। ४. विश्वास। भरोसा।

क्रि० प्र०—बनना। —बिगड़ना।

साख†[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाखा] १. दे० 'साखा'। २. उपज। फसल। उ०—ढाढी एक संदेसडउ कहि ढोलउ समझाइ। जोबण आँबउ फलि रह्यउ साख न खावउ आइ।—ढोला०, दू० ११७।

साख(पु)[४]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] शिखा। ज्वाला। उ०—संपेख अगनग साख सी। रत रोष मारग राष सी।—रघु० रू०, पृ० ६७।

साखत(पु)—संज्ञा पुं० [?] घोड़े के आभूषण विशेष। उ०- साखत पेमवंद अरु पूजी। हीरन जटित हैकलैं दूजी।—हम्मीर०, पृ० ३।

साखना(पु)--क्रि० स० [सं० साक्षि, हिं० साख + ना (प्रत्य०)] साक्षी देना। गवाही देना। शहादत देना। उ०—जन की और कौन पत राखं। जात पाँति कुलकानि न मानत वेद पुराननि साखैं।—सूर०, १।१५।

साखर(पु)†—वि० [सं० साक्षर] जिसे अक्षरों का ज्ञान हो। पढ़ा लिखा। साक्षर।

साखा(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० शाखा] १. वृक्ष की शाखा। डाली। टहनी। उ०—भरी भार साखा रही भुम्मि लग्गी। लगे संकुलं पादपं तैं उमग्गी।—ह० रासो, पृ० ३५। २. वंश या जाति की शाखा या उपभेद। ३. दे० 'शाखा'। ४. वह कीली जो चक्की के बीच में लगी होती है। चक्की का धुरा। ५. सोचने विचारने का सिलसिला। विचारक्रम। उ०—को करि तर्क बढ़ावैं साखा।—मानस, १।५२।

साखामृग(पु) — संज्ञा पुं० [सं० शाखामृग] दे० 'शाखामृग'। उ०—सठ साखामृग जोरि सहाई। बाधा सिंधु इहै प्रभुताई। —मानस, ६।२८।

साखि(पु) —संज्ञा स्त्री० [सं० साक्षि, प्रा० सक्खि] दे० 'साखी'। गवाही। उ०—व्याध, गनिका, गज, अजामिल साखि निगमनि भने। —तुलसी ग्रं०, पृ० ५३६।

साखिल्य —संज्ञा पुं० [सं०] दोस्ती। मैत्री। मित्रता [को०]।

साखी[१]—संज्ञा पुं० [सं० साक्षि] साक्षी। गवाह। उ०—(क) ऊँच नीच ब्यौरौ न रहाइ। ताकी साखी मैं सुनि भाइ।—सूर०, १।२३०। (ख) सूरदास प्रभु अटक न मानत ग्वाल सबै हैं साखी।—सूर०, १०।७७४।

साखी[२]—संज्ञा स्त्री० १. साक्षी। गवाही।

मुहा०—साखी पुकारना = साक्षी का कुछ कहना। साक्षी देना। गवाही देना। उ०—याते योग न आवै मन में तू नीके करि राखि। सूरदास स्वामी के आगे निगम पुकारत साखि।—सूर (शब्द०)।

२. ज्ञान संबंधी पद या दोहे। वह कविता जिसका विषय ज्ञान हो। जैसे,—कबीर की साखी। उ०—साखी सबदी दोहरा कहि किहनी उपखान। भगति निरूपहि भगत कलि निंदहि बेद पुरान।—तुलसी ग्रं०, पृ० १५१।

साखी[३]—संज्ञा पुं० [सं० शाखिन्] १. (शाखाओं वाला) वृक्ष। पेड़। उ०—(क) तुलसीदास रूँध्यो यहै सठ साखि सिहारे।—तुलसी (शब्द०)। (ख) धरती बान बेधि सब राखी। साखी ठाढ़ देहिं सब साखी।—जायसी (शब्द०)। २. †पंच। निर्णायक।

साखीभूत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० साक्षीभूत] दे० 'साक्षिभूत'। उ०—करता है सो करेगा, दादू साखीभूत।—दादू०, पृ० ४५७।

साखू—संज्ञा पुं० [सं० शाख] शाल वृक्ष। सखुआ। अश्वकर्ण वृक्ष।

साखेय—वि० [सं०] १. जो सखा या मित्र से संबंधित हो। २. मैत्रीपूर्ण। मिलनसार [को०]।

साखोचार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाखोच्चार] दे० 'साखोचारन'। उ०—बर कुअँरि करतल जोरि साखोचारु दोउ कुलगुरु करैं। —मानस, १।३२४।

साखोचारन(पु)†—संज्ञा दे० [सं० शाखोच्चारण] विवाह के अवसर पर वर और वधू के वंश गोत्रादि का चिल्ला चिल्लाकर परिचय देने की क्रिया। गोत्रोच्चार।

साखोच्चार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाखोच्चार] दे० 'साखोचारन'। उ०—बर दुलहिनिहि बिलोकि सकल मन रहसहिं। साखोच्चार समय सब सुर मुनि बिहसहिं।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४१।

साखोट[१]—संज्ञा पुं० [सं० शाखोट] शाखोट वृक्ष। सिहोर वृक्ष। सिहोरा। भूतावास।

साखोट†[२]—वि० छोटा, टेढ़ा और भद्दा (वृक्ष)।

साख्त[१]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० साख़्त] १. बनावट। गढ़न। २. कृत्रिमता। बनावटीपन। ३. काट छाँट। तराश। ४. बहाना। व्याजवार्ता [को०]।

साख्ता—वि० [फ़ा० साख़्तह्] १. निर्मित। बनाया हुआ। २. बनावटी। कृत्रिम। नकली।

यौ०—साख्ता परदाख्ता = (१) पालापोसा। बनाया सँवारा। (२) कृत। किया कराया। किया हुआ।

साख्त(पु)†[२]—संज्ञा पुं० [सं० शाक्त, पुं० हिं० साकट, साकत] दे० 'शाक्त'। उ०—साख्त मुठे बाट महिं जानि न मिलहिं हजूर। संत सहाई साथ बिनु मरहि बिसूर बिसूर।—प्राण०, पृ० २५३।

साख्तगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० साख़्तगी] बनावट। गढ़न [को०]।

साख्य—संज्ञा पुं० [सं०] सखा भाव। मैत्री। मित्रता [को०]।

साख्यात(पु)† —अव्य० [सं० साक्षा(क्षा)त्] दे० 'साक्षात्'। उ०—अवर सिरीमुख उक्त रा, उभै भेद अखियात। पहिलो कल्पत पेखजै, समभ बियौ साख्यात।—रघु० रू०, पृ० ४६।

साग[१]—संज्ञा पुं० [सं० शाक] पौधों की खाने योग्य पत्तियाँ। शाक। भाजी। जैसे,—सोए, पालक, बथुए, मरसे आदि का साग। २. पकाई हुई भाजी। तरकारी। जैसे,—आलू का साग, कुम्हड़े का साग। (वैष्णव)।

यौ०—सागपात = कंदमूल। रूखासूखा भोजन। जैसे,—जो कुछ सागपात बना है, कृपा करके भोजन कीजिए।

मुहा०—सागपात समझना = बहुत तुच्छ समझना। कुछ न समझना।

साग(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति, हिं० साँग] दे० 'साँग'। उ०—गहि सुभ साग उद्द कर लिनिय। लखत पसर सावंतन किनिय। —प० रासो०, पृ० १२०।

सागड़ी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाकटिक] शकट या रथ चलानेवाला। सारथी। उ०—सोच करै नह सागड़ी, धवल तणी दिस भाल।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ३८।

सागम—वि० [सं०] यथान्याय। न्याय्य। उचित। ईमानदारी से प्राप्त। वैधानिक [को०]।

सागरंगम—वि० [सं० सागरङ्गम] दे० 'सागरग'।

सागर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। उदधि। जलधि। दे० 'समुद्र'।

विशेष—ऐसा माना जाता है कि राजा सगर के नाम पर 'सागर' शब्द पड़ा।

२. बड़ा तालाब। झील। जलाशय। ३. संन्यासियों का एक भेद। ४. एक प्रकार का मृग। ५. चार की संख्या (को०)। ६. दस पद्म की संख्या (को०)। ७. एक नाग। नागदैत्य (को०)। ८. गत उत्सर्पिणी के तीसरे अर्हत। ९. सगर के पुत्र (को०)।

मुहा०—सागर उमड़ना = आधिक्य होना। मात्रा में अत्यधिक होना। उ०—सागर उमड़ा प्रेम का खेवटिया कोइ एक। सब प्रेमी मिलि बूड़ते जो यह नहिं होता टेक।—कबीर सा० सं०, पृ० ५१।

सागर[२]—वि० सागर संबंधी। समुद्र संबंधी।

सागर[३]—संज्ञा पुं० [अ० साग़र] १. प्याला। खोरा। २. शराब का प्याला। उ०—वचन का पी सागर सुराही अकल। भर्या मद फिरा सत अजाँ में नवल।—दक्खिनी०, पृ० २६७।

सागरक—संज्ञा पुं० [सं०] एक जनपद या नगर [को०]।

सागरकश—वि० [फ़ा० सागरकश] शराब पीनेवाला। मद्यप [को०]।

सागरगंभीर—संज्ञा पुं० [सं० सागरगम्भीर] समुद्र की तरह गंभीर समाधि [को०]।

सागरग, सागरगम—वि० [सं०] समुद्र यात्रा करनेवाला। समुद्र में जानेवाला [को०]।

सागरगमा, सागरगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नदी। दरिया। २. गंगा नदी (को०)।

सागरगामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। सरिता [को०]।

सागरगामी—वि० [सं० सागरगामिन्] [स्त्री० सागरगामिनी] दे० 'सागरग' [को०]।

सागरगासुत—संज्ञा पुं० [सं०] गंगा के पुत्र--भीष्म [को०]।

सागरज—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र लवण।

सागरजमल—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रफेन। अब्धिकफ।

सागरधरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। भूमि।

सागरधीरचेता—वि० [सं० सागरधीरचेतस्] समुद्र की तरह विशाल, दृढ़ तथा गंभीर मनोवृत्तिवाला [को०]।

सागरनेमि, सागरनेमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] धरित्री। पृथ्वी।

सागरपर्यंत—क्रि० वि० [सं० सागरपर्यन्त] १. सागर से घिरा हुआ (जैसे,—पृथ्वी)। २. सागर तक। आसमुद्र [को०]।

सागरप्लवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र पार करना। समुद्र संतरण। २. घोड़े की एक विशेष चाल [को०]।

सागरमति—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम [को०]।

सागरमुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ध्यान, आराधना करने की एक प्रकार की मुद्रा।

सागरमेखला—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

सागरलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] ललित विस्तर के अनुसार एक प्राचीन लिपि।

सागरवरधर—संज्ञा पुं० [सं०] महासागर।

सागरवासी—संज्ञा पुं० [सं० सागरवासिन्] १. वह जो समुद्र में रहता हो। समुद्र में रहनेवाला। २. वह जो समुद्र के तट पर रहता हो। समुद्र के किनारे रहनेवाला।

सागरव्यूहगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

सागरशय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो समुद्र में सोता हो, विष्णु का एक नाम [को०]।

सागरशुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] समुद्री सीप [को०]।

सागरसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी [को०]।

सागरसूनु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा [को०]।

सागरांत—संज्ञा पुं० [सं० सागरान्त] समुद्र का किनारा।

सागरांता—संज्ञा स्त्री० [सं० सागरान्ता] पृथ्वी। धरती [को०]।

सागरांबरा—संज्ञा स्त्री० [सं० सागराम्बरा] पृथ्वी।

सागरा—संज्ञा पुं० [सं० सागर ?] श्री राग का एक पुत्र। उ०—सावा सारंग सागरा औ गंधारी भीर। अस्ट पुत्र श्रीराग के गौल बुंड गंभीर।—माधवानल०, पृ० १९४।

सागरानुकूल—वि० [सं०] समुद्र के किनारे पर बसा हुआ [को०]।

सागरापांग—वि० [सं० सागरापाङ्ग] समुद्र से घिरा हुआ। जैसे,—पृथ्वी [को०]।

सागरालय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सागर में रहनेवाले, वरुण। २. वह जो समुद्र में रहता हो। समुद्रवासी [को०]।

सागरावर्त—वि० [सं०] समुद्र की खाड़ी [को०]।

सागरेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम।

सागरोत्थ—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्री लवण।

सागरोद्गार—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र का उमड़ना। ज्वार [को०]।

सागरोपम—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो समुद्र की तरह उदात्त, अतलस्पर्श और गंभीर हो। २. एक बहुत बड़ी संख्या (जैन)।

सागवन, सागवान—संज्ञा पुं० [हिं० सागौन] एक वृक्ष दे० 'शाल—१'।

सागस—वि० [सं० स+आगस] सापराध। अपराधी। कसूरवार। उ०—प्रीतम कौं जब सागस लहै। व्यंगि अव्यंगि बचन कछु कहै।—नंद० ग्रं०, पृ० १४७।

सागुन्य(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाकुनिक (=सगुनियाँ), हिं० सगुन] शकुन विचारनेवाला। उ०—सागुन्य सगुन फल कहे जब्ब। प्रमुदित्त मंन चहुआंन तब्ब।—पृ० रा०, १७।४५।

सागू—संज्ञा पुं० [अं० सैगो] १. ताड़ की जाति का एक प्रकार का पेड़ जो जावा, सुमात्रा, बोर्निओ आदि में अधिकता से पाया जाता है और बंगाल तथा दक्षिण भारत में भी लगाया जाता है।

विशेष—इसके कई उपभेद है जिनमें से एक को माड़ भी कहते हैं। इसके पत्ते ताड़ के पत्तों की अपेक्षा कुछ लंबे होते हैं और फल सुडौल गोलाकार होते हैं। इसके रेशों से रस्से, टोकरे और बुरुश आदि बनते हैं। कहीं कहीं इसमें से पाछकर एक प्रकार का मादक रस भी निकाला जाता है और उस रस से गुड़ भी बनता है। जब यह पंद्रह वर्ष का हो जाता है तब इसमें फल लगते हैं और इसके मोटे तने में आटे की तरह का एक प्रकार का सफेद पदार्थ उत्पन्न होकर जम जाता है। यदि यह पदार्थ निकाला न जाय, तो पेड़ सूख जाता है। यही पदार्थ निकालकर पीसते हैं और तब छोटे छोटे दानों के रूप में सुखाते हैं। कुछ वृक्ष ऐसे भी होते हैं जिनके तने के टुकड़े टुकड़े करके उनमें से गूदा निकाल लिया जाता है और पानी में कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है। इन्हीं को सागूदाना या साबूदाना कहते हैं। इस वृक्ष का तना पानी में जल्दी नहीं सड़ता; इसलिये उसे खोखला करके उससे नली का काम लेते हैं। यह वृक्ष वर्षा ऋतु में बीजों से लगाया जाता है।

२. दे० 'सागूदाना'।

सागूदाना—संज्ञा पुं० [हिं० सागू+दाना] सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा। साबूदाना।

विशेष—यह पहले आटे के रूप में होता है और फिर कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है। यह बहुत जल्दी पच

जाता है, इसलिये यह दुर्बलों और रोगियों को पानी या दूध में उबालकर, पथ्य के रूप में दिया जाता है। इसे साबूदाना भी कहते हैं। विशेष— दे० 'सागू'।

सागै†—क्रि० वि० [?] प्रकट में।—रघु० रू०, पृ० २३९।

सागो—संज्ञा पुं० [अं० सैगो] दे० 'सागू'।

सागौन—संज्ञा पुं० [अं० सैगो] दे० 'शाल'—१।

साग्नि—वि० [सं०] १. अग्नि सहित। अग्नियुक्त। २. यज्ञाग्नि को रखनेवाला। ३. अग्नि संबंधी [को०]।

साग्निक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके पास यज्ञ या हवन की अग्नि रहती हो। वह जो बराबर अग्निहोत्र आदि किया करता हो। अग्निहोत्री। २. अग्नि द्वारा साक्षी किया हुआ।

साग्र—वि० [सं०] १. समस्त। कुल। सब। २. बचा हुआ। शेष। अधिक (को०)।

साघलⓅ†—क्रि० वि० [सं० सकल, प्रा० सगल, सयल] सब। समग्र। उ०—साठ अंतेवर राजकुमार साघलाँ ऊपरि जाति पमाँर। —बी० रासो, पृ० ३०।

साचⓅ—वि० [सं० सत्य, प्रा० सच्च, हिं० सच] दे० 'सत्य'। उ०—इस पतिया का यह परिमाण। साच सील चालो सुलतान। —दक्खिनी०, पृ० २१।

साचक—संज्ञा स्त्री० [तु० साचक़] मुसलमानों में विवाह की एक रस्म जिसमें विवाह से एक दिन पहले वर पक्षवाले अपने यहाँसे कन्या के लिये मेहँदी, मेवे, फल तथा कुछ सुगंधित द्रव्य आदि भेजते हैं।

साचयⓅ—अव्य० [सं० सत्यम्] वस्तुतः। यथार्थतः। सचमुच। उ०—सरन्नि राव राखि राखि मैं सरन्नि साचयं। —ह० रासो, पृ० ५१।

साचरजⓅ—वि० [सं० स+आश्चर्य] आश्चर्य के साथ। आश्चर्य-युक्त। उ०- जयंत (साचरज)—वाह! कार्तिकेय—वृत्रासुर के वचन सुनि चकित होइ सुरराइ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४९३।

साचरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी जो कुछ लोगों के मत से भैरव राग की पत्नी है।

साचार—वि० [सं०] १. सद्व्यवहार से युक्त। २. सद् आचार से युक्त। अच्छे आचरणवाला [को०]।

साचि—क्रि० वि० [सं०] बगल से। टेढ़े तिरछे [को०]।

साचिवाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद पुनर्नवा। गदहपूरना।

साचिविलोकित—संज्ञा पुं० [सं०] तिरछी निगाह। बंक दृष्टि। टेढ़ी चितवन [को०]।

साचिव्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सचिव का भाव या धर्म। सचिवता। २. शासन (को०)। ३. सहायता। मदद।

साचिव्याक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] आपत्ति पूर्ण स्वीकृति। आपत्ति गुंफित स्वीकार।

साचीकुम्हड़ा—संज्ञा पुं० [देश० साची+कुम्हड़ा] भतुआ कुम्हड़ा। सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

साचीकृत—वि० [सं०] १. टेढ़ा बनाया हुआ। २. तिरछा। भुका हुआ। ३ विकृत।

साचीगुण—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक देश का नाम।

साचीन—वि० [सं०] बगल से आनेवाला [को०]।

साच्छातⓅ—अव्य० [सं० साक्षात्, प्रा० साच्छात] दे० 'साक्षात्'। उ०- अरु साच्छात मात कौ भ्रात। सो वह कंस हत्यौ किहि बात।—नंद० ग्रं०, पृ० २१९।

साच्छीⓅ—संज्ञा पुं० [सं० साक्षी] दे० 'साक्षी'। उ०—महा सुद्ध साच्छी चिदुरूप। परमातम प्रभु परम अनूप।—दरिया० बानी, पृ० १६।

साछⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० साक्ष्य] दे० 'साख', 'साक्ष्य'। उ०—सतगुर के सदकै करूँ, दिल अपणी का साछ।—कबीर ग्रं०, पृ० १।

साछीⓅ—संज्ञा पुं० [सं० साक्षिन्] दे० 'साक्षी'। उ०—रसिक पपीहा साछी आछी अछरौटी के।—घनानंद, पृ० २०५।

साज[१]—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्व भाद्रपद नक्षत्र।

साज[२]—संज्ञा पुं० [फ़ा० साज़, मि० सं० सज्जा] १. सजावट का काम। तैयारी। ठाटबाट। २. वह उपकरण जिसकी आवश्यकता सजावट आदि के लिये होती हो। वे चीजें जिनकी सहायता से सजावट की जाती है। सजावट का सामान उपकरण। सामग्री। जैसे,—घोड़े का साज (जीन लगाम, तंग, दुमची आदि), लहँगे का साज (गोटा, पट्ठा, किनारी आदि) बरामदे का साज (खंभे, घुड़िया आदि)।

यौ०—साजसमाज = साज सज्जा। अलंकार। उ०—आए साज-समाज सजि भूषन बसन सुदेश।—तुलसी ग्रं० पृ० ८२। साजसामान।

मुहा०—साज सजना = तैयारी करना। व्यवस्था करना। उ०—मो कह तिलक साज सजि सोऊ।—मानस, २। १८२

३. वाद्य। बाजा। जैसे,—तबला, सारंगी, जोड़ी, सितार, हारमोनियम आदि।

मुहा०—साज छेड़ना = बाजा बजना आरंभ करना। साज मिलाना = बाजा बजाने से पहले उसका सुर आदि ठीक करना।

४. लड़ाई में काम आनेवाले हथियार। जैसे,—तलवार, बंदूक, ढाल, भाला आदि। उ०—करौ तयारी कोट मैं, सजा जुद्ध कौ साज।—हम्मीर० पृ० २९। ५. बढ़इयों का एक प्रकार का रंदा जिससे गोल गलता बनाया जाता है। ६. मेल जोल। घनिष्टता।

यौ०—साजबाज = हेलमेल। घनिष्ठता।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।—होना।

साज[३]—वि० १. बनानेवाला। मरम्मत या तैयार करनेवाला। काम करनेवाला। २. बनाया हुआ। निर्मित। रचित।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्दों के अंत में होता है। जैसे,—घड़ीसाज, रंगसाज, खुदासाज आदि।

साज[४]—संज्ञा पुं० [अ०] साखू या साल का वृक्ष जिसको लकड़ी इमारती कामों में आती है। उ०—इमारती लकड़ी में सागौन,

साज, सेमल, बीजा, हल्दुग्रा, तिशा, शीशम, सलई ग्रादि किस्म की लकड़ी बहुतायत से पाई जाती है।—शुक्ल ग्रभि० ग्रं० पृ० १४।

साजक—संज्ञा पुं० [सं०] बाजरा। बजरा।

साजगार—वि० [फ़ा० साज़गार] १. शुभद। ग्रनुकूल। माफिक [को०]।

साजगिरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

साजड़—संज्ञा पुं० [देश०] गुलू नामक वृक्ष जिससे कतीरा गोंद निकलता है। विशेष दे० 'गुलू'।

साजतिⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सजावट] सजावट। दे० 'सज्जा'। उ०—जान तग्णी साजति करउ। जीरह रंगावली परिहरज्यो टोप।—बी० रासो, पृ० ११।

साजन—संज्ञा पुं० [सं० सज्जन] १. पति। भर्ता। स्वामी। २. प्रेमी। वल्लभ। ३. ईश्वर। ४. सज्जन। भला ग्रादमी।

साजनाⓅ†¹—क्रि० स० [सं० सज्जा] १. दे० 'सजाना'। उ०—(क) चढ़ा ग्रसाढ़ गगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।—जायसी (शब्द०)। (ख) बेल ताल जुग हेम कलस गिरि कटोरि जिनिग्रा कुच साजा।—विद्यापति, पृ० ७१। २. सजाना। तैयार करना। ३. छोटे बड़े पानों को उनके ग्राकार के ग्रनुसार ग्रागे पीछे या ऊपर नीचे रखना। (तमोली)।

साजनाⓅ²—संज्ञा पुं० [सं० सज्जन] दे० 'साजन'। उ०—मिलहिं जो बिछुरै साजना गहि गहि भेंट गहंत। तपनि मिरगिसिरा जे सहहिं ग्रद्रा ते पलुहंत।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० ३५४।

साजनाⓅ³—संज्ञा पुं० [हिं० सजाना] सजावट। साज। सज्जा। उ०—कीन्हेसि सहस ग्रठारह बरन बरन उपराजि। भुगुति दिहेसि पुनि सबन कहँ सकल साजना साजि।—जायसी ग्रं०, पृ० २।

साजबाज—संज्ञा पुं० [फ़ा० साज़बाज़ या सं० साज+बाज (ग्रनु०)] १. तैयारी। २. गठबंधन। मेलजोल। घनिष्टता। ३. ग्रभिसंधि। गुप्त ग्रभिसंधि।

संयो० क्रि०—करना।—बढ़ाना।—रखना।—होना।

साजबार—वि० [हिं० साज+फ़ा० वार (प्रत्य०)] शोभास्पद। शोभनीय। उ०—बोलना सुल्ताँ उसे है साजबार। सल्तनत जिसके दायम बरक़रार।—दक्खिनी०, पृ० १८७।

साजर—संज्ञा पुं० [देश०] गुलू नामक वृक्ष जिससे कतीरा गोंद, निकलता है। विशेष दे० 'गुलू'—१।

साजसⓅ†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० साज़िश] दे० 'साजिश'। उ०—केता साजस साह सूँ, राजस राग्णो राग्ण।—रा० रू०, पृ० ३६२।

साजसामान—संज्ञा पुं० [फ़ा० साज़सामान] १. सामग्री। उपकरग्ण। ग्रसबाब। जैसे,—बारात का सब साजसामान पहले से ठीक कर लेना चाहिए। २. ठाट बाट।

साजात्य—संज्ञा पुं० [सं०] सजाति होने का भाव जो वस्तु के दो प्रकार के धर्मों में से एक है (वस्तुग्रों का दूसरे प्रकार का धर्म वैजात्य कहलाता है)। सजातीयता। समान वर्ग या श्रेग्णी का होना।

साजिंदा—संज्ञा पुं० [फ़ा० साज़िन्दह्] १. वह जो कोई साज बजाता हो। साज या बाजा बजानेवाला। २. वेश्याग्रों की परिभाषा में तबला, सारंगी या जोड़ी बजानेवाला। सपरदाई। समाजी।

साजिश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० साज़िश] १. मेल मिलाप। २. किसी के विरुद्ध कोई काम करने में सहायक होना। किसी को हानि पहुँचाने में किसी को सलाह या मदद देना। जैसे,—इतना बड़ा मामला बिना उनकी साजिश के हो ही नहीं सकता। ३. दुरभिसंधि। षड्यंत्र।

साजिशी—वि० [फ़ा० साज़िशी] साजिश करनेवाला। कुचक्री। षडयंत्री [को०]।

साजीवनⓅ—वि० [सं० सह+जीवन] जीवनयुक्त। सजीव। उ०—केहि विधि मृतक होय साजीवन।—कबीर सा०, पृ० ८।

साजुज्य, साजोजⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सायुज्य] दे० 'सायुज्य'। उ०—(क) ब्रह्म ग्रगिनि जरि सुद्ध ह्वै सिद्धि समाधि लगाइ। लीन होई साजुज्य में, जोतै जोति लगाइ।—नंद० ग्रं०, पृ० १७६। (ख) सालोक संगति रहै, सामीप संमुख सोइ। सारूप सारीखा भया, साजोज एकै होइ।—दादू०, पृ० १८६।

साझनाⓅ†—क्रि० स० [हिं० सजाना] दे० 'सजाना'। उ०—लाखाँ सूँ बंधड़ै लड़ाई सार प्रथम साझिया सिपाई।—रा० रू०, पृ० २३६।

साझा—संज्ञा पुं० [सं० सहार्ध्य] १. किसी वस्तु में भाग पाने का ग्रधिकार। सराकत। हिस्सेदारी। जैसे,—बासी रोटी में किसी का क्या साझा ? (कहा०)।

क्रि० प्र०—लगाना।

२. हिस्सा। भाग। बाँट। जैसे,—उनके गल्ले के रोजगार में हमारा ग्राधा साझा है।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।—होना।

साझी—संज्ञा पुं० [हिं० साझा+ई (प्रत्य०)] वह जिसका किसी काम या चीज में साझा हो। साझेदार। भागी। हिस्सेदार।

साझेदार—संज्ञा पुं० [हिं० साझा+दार (प्रत्य०)] शरीक होनेवाला। हिस्सेदार। साझी।

साझेदारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साझेदार+ई (प्रत्य०)] साझेदार होने का भाव। हिस्सेदारी। शराकत।

साट¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सट से ग्रनु०] दे० 'साँट'।

साट†²—वि० [सं० षष्ठि, प्रा० सट्ठि, हिं० साठ] दे० 'साठ'। उ०—साट घरी मों साई की बीसर, पर नही मोकूँ येक घरी हो।—दक्खिनी०, पृ० १३२।

साटⓅ³—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँठ का ग्रनु०] साजिश। षडयंत्र। उ०—शेख तकी बादशाह के पीर का विरुद्धता करना ग्रौर

ब्राह्मणों तथा मुल्लाओं की साट से कबीर साहब के साथ कुव्यवहार करना।—कबीर मं०, पृ० १०१।

साट⑤४—संज्ञा पुं० [देशी सट्ट] सट्टा। विनिमय। बदला। उ०—खंजर नेत विसाल, गय चाही लागइ चक्ख। एकण साटइ मारुवी, देह एराकी लक्ख।—ढोला०, दू० ४५८।

साटक—संज्ञा पुं० [?] १. भूसी। छिलका। २. बिलकुल तुच्छ और निरर्थक वस्तु। निकम्मी चीज। उ०—गज बाजि घटा, भले भूरि भटा, बनिता सुत भौंह तकै सब वै। धरनी धन धाम सरीर भलो, सुर लोकहु चाहि इहै सुख स्वै। सब फोकट साटक है तुलसी, अपनो न कछू सपनो दिन द्वै। जर जाउ सो जीवन जानकीनाथ! जियै जग में तुम्हरो बिन ह्वै।—तुलसी (शब्द०)। ३. एक प्रकार का छंद। उ०—छंद प्रबंध कबित्त जति साटक गाह दुहत्थ।—पृ० रा०, १.८१।

विशेष—कुछ लोग इसे शार्दूलविक्रीडित का अपभ्रष्ट रूप मानते हैं। 'रूपदीप पिंगल' के अनुसार इसका लक्षण इस प्रकार है—कर्म द्वादश अंक आद सज्ञा मात्रा सिवो सागरे। दुज्जी बी करिके कलाष्ट दस बी अर्को विरामाधिकम्। अते गुर्व निहार धार सबके औरो कछू भेद ना। तीसो मत्त उनीस अंक चरनेसेसो भणौ साटिकम्। यथा—आदीदेव प्रनम्य नम्य गुरयं बानीय बंदे पयं।—पृ० रा० १।१।

साटन—संज्ञा पुं० [अं० सैटिन] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा जो प्रायः एकरुखा और कई रंगों का होता है। उ०—पीछे अधिकारियों की कुर्सियाँ लगी थीं जिनपर भी नीली साटन चढ़ी थी। भारतेंदु ग्रं०, भा० ३, पृ० १:७।

साटना⑤†—क्रि० स० [हिं० सटाना] १. दो चीजों का इस प्रकार मिलाना कि उनके तल आपस में मिल जायँ। सटाना। जोड़ना। मिलाना। २. दे० 'सटाना'।

साटनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] कलंदरों की परिभाषा में भालू का नाच।

साटमार†—संज्ञा पुं० [हिं० साँट+मारना] वह जो हाथियों को साँटे मार मारकर लड़ाता हो। हाथियों को लड़ानेवाला।

साटमारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साटमार+ई (प्रत्य०)] साँटे मार मारकर हाथियों को लड़ाने का कार्य। इस प्रकार की हाथियों की लड़ाई।

साटा⑤—संज्ञा पुं० [देशी सट्ट, सट्टक (=विनिमय)] १. सौदा। दे० 'सट्टा'। उ०—सोई सास सुजाण नर साँई सेती लाइ। करि साटा सिरजनहार सूँ मँहगे मोलि बिकाइ।—दादू०, पृ० ३८। २. दे० 'साठी'। उ०—कहूँ न मन माने निमष ज्यों मनि बिना भुयंग। सद माखन साटौ दही। धरचौ रहै मनमंद।—पृ० रा०, २।५५६।

साटिकफिटिक†—संज्ञा पुं० [अं० सर्टिफिकेट] प्रमाणपत्र। उ०—लखि कै साँचे साटिकफिटिक सराहैं सब जन।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २४।

साटी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. पुनर्नवा। गदहपूर्ना। २. सामान। सामग्री। दे० 'साँठी'। ३. कमची। दे० 'साँटी'। उ०—बाजीगर के हाथ डोरी है जब साटिन ते सटका।—संत० दरिया, पृ० १३४।

साटे‡—अव्य० [देशी] बदले में। परिवर्तन में।

साटेबरदार—संज्ञा पुं० [हिं० साट+फ़ा० बर+दार (प्रत्य०)] लाठी धारण करनेवाले। लट्ठधारी। उ०—उधर साटेबरदार, बरछीवाले दौड़े, पर चँदोवे के नीचे भगदड़ मच गई।—तितली, पृ० १६१।

साटोप—वि० [सं०] १. आडंबरयुक्त। अभिमानी। मदोद्धत। २. शानदार। शाही। ३. (जल आदि से) फूला या भरा हुआ। ४. गर्जता हुआ। गर्जन करता हुआ। जैसे, बादल [को०]।

साठ१—वि० [सं० षष्ठि, प्रा० सट्ठि] पचास और दस। जो पचपन से पाँच ऊपर हो।

साठ२ संज्ञा पुं० पचास और दस के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।

साठ३—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'साटी'।

साठन—संज्ञा पुं० [अं० सैटिन] दे० 'साटन'। उ०—बढ़िया साठन की मढ़ी हुई काँच, कुर्सियें जगह जगह मौके से रक्खी थीं।—श्रीनिवास ग्रं०, पृ० १७७।

साठनाठ—वि० [हिं० साँठि+नाठ (<नष्ट)] १. जिसकी पूँजी नष्ट हो गई हो। निर्धन। दरिद्र। उ०—साठनाठ लग बात को पूँछा। बिन जिय फिरै मूँज तन छूँछा।—जायसी (शब्द०)। २. नीरस। रूखा। ३. इधर उधर। तितर बितर। उ०—चेटक लाइ हरहिं मन जब लहि होइ गथ फेंट। साठनाठ उठि भए बटाऊ, ना पहिचान न भेंट।—जायसी (शब्द०)।

साठसाती—संज्ञा स्त्री० [सं० सार्ध, प्रा० सड्ढ हिं० साठ+सं० सप्तक ?] 'साढ़ेसाती'।

साठा१ संज्ञा पुं० [देश०] १. ईख। गन्ना। ऊख। २. एक प्रकार का धान जिसे साठी कहते है। विशेष दे० 'साठी-१'। ३. वह खेत जो बहुत लंबा चौड़ा हो। ४. एक प्रकार की मधुमक्खी जिसे साठुरिया कहते हैं।

साठा२—वि० [हिं० साठ] जिसकी अवस्था साठ वर्ष की हो गई हो। साठ वर्ष की उम्रवाला। जैसे,—साठा सो पाठा। (कहा०)।

साठा⑤३—संज्ञा पुं० [हिं० सट्टा] बदला। उ०—पंच बयेरा माँगै दीजै। उनके साठै बहु हय लीजै।—प० रासो, पृ० ११९।

साठी१—संज्ञा पुं० [सं० षष्टिक] एक प्रकार का धान।

विशेष—कहते हैं कि यह धान साठ दिन में तैयार हो जाता है—साँवा, साठी साठ दिना, देव बरीसै रात दिना। इसी से इसे साठी कहते हैं। इसके दाने दो प्रकार के होते हैं—काले और सफेद। काले की अपेक्षा सफेद दानेवाला अधिक अच्छा समझा जाता है। इसमें गुण अधिक होता है।

साठी⑤२—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'साँटा-१'। उ०—कालबूत कसणी भई, सेवग साठी जान। रज्जब ताबै तोरगर, यूँ सतगुरु की बानि।—रज्जब०, पृ० २०।

साड—वि० [सं०] जिसमें आर हो। नुकीला। नोकदार। डंकवाला। चुभनेवाला [को०]।

साड़ना(पु)†--क्रि० स० [हिं० सालना] दे० 'सालना'। उ०--अल्लह कारणि आपकौं साड़ै अंदरि माहि।--दादू०, पृ० ६४।

साड़ा - संज्ञा पुं० [देश०] १. घोड़ों का एक प्राणघातक रोग। २. बाँस का वह टुकड़ा, जो नाव में मल्लाहों के बैठने के स्थान के नीचे लगा रहता है।

साड़ी[1]--संज्ञा स्त्री० [सं० शाटिका, प्रा०] स्त्रियों के पहनने की धोती जिसमें चौड़ा किनारा या बेल आदि बनी होती है। सारी।

साड़ी[2]--संज्ञा स्त्री० [सं० सार] दे० 'साढ़ी-२'।

साढ़†--वि० [सं० सार्ध] दे० 'साढ़े'।

साढ़साती--संज्ञा स्त्री० [हिं० साढ + साती] दे० 'साढ़ेसाती'। उ०--अवध साढ़साती जनु बोली।--तुलसी (शब्द०)।

साढ़ासती(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० सार्धक, प्रा० सड्ढअ, साढअ + हिं० साढा + साती] दे० 'साढ़ेसाती'। उ०- राम ही केतु अरु राहु साढ़ासती। राम ही राम सो सप्तबारा।--राम० धर्म०, पृ० २१६।

साढ़ी[1]--संज्ञा स्त्री० [सं० आषाढ़, हिं० असाढ़] वह फसल जो असाढ़ में बोई जाती है। असाढ़ी।

साढ़ी[2]--संज्ञा स्त्री० [देश० अथवा सं० सज्ज + दधि] दूध के ऊपर जमनेवाली बालाई। मलाई। उ०--सब हेरि धरीहै साढ़ी। लै उपर उपरते काढ़ी।--सूर (शब्द०)।

साढ़ी[3]--संज्ञा स्त्री० [सं० शाल] शाल वृक्ष का गोंद।

साढ़ी[4]--संज्ञा स्त्री० [सं० शाटिका] दे० 'साड़ी'।

साढ़ू--संज्ञा पुं० [सं० श्यालिवोढ़ृ] साली का पति। पत्नी की बहन का पति।

साढ़े--वि० [सं० सार्द्ध] और आधे से युक्त। आधा और के साथ। जैसे,--साढ़े सात।

साढ़ेचौहारा--संज्ञा पुं० [हिं० साढ़े + चौ (=चार) + हारा (प्रत्य०)] एक प्रकार की बाँट जिसमें फसल का ५।१६ अंश जमींदार को मिलता है और शेष ११।१६ अंश काश्तकार को।

साढ़ेसाती--संज्ञा स्त्री० [हिं० साढ़े + सात + ई (प्रत्य०)] शनि ग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात दिन आदि की दशा।

विशेष--फलित ज्योतिष के अनुसार शनि ग्रह की साढेसाती का फल बहुत बुरा होता है।

मुहा०--साढ़ेसाती आना या चढ़ना = दुर्दशा या विपत्ति के दिन आना।

साण(पु)†[1]--संज्ञा पुं० [फ़ा० शान या सं० शाण] शान। गुमान। उ०--भोरे भोरे तन करै षंडै करि कुरबाँण। मिट्टा कौड़ा ना लगै, दादू तौ हू साण।--दादू०, पृ० ६५।

साण(पु)†[2]--संज्ञा स्त्री० [सं० शाण] दे० 'सान[1]'। उ०--जन रज्जब गुरु साण परि झूँठी मनतर वारि।--रज्जब०, पृ० ११।

सात[1]--वि० [सं० सप्त, प्रा० सत्त] पाँच और दो। छह से एक अधिक।

सात[2]--संज्ञा पुं० पाँच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है--७।

मुहा०--सात की नाक कटना = परिवार भर की बदनामी होना। सात पाँच = चालाकी। मक्कारी। धूर्तता। जैसे,--वह बेचारा सात पाँच नहीं जानता; सीधा आदमी है। सात धार होकर निकलना = भोजन का बिना पचे पतली दस्त होकर निकलना। सात पाँच करना = (१) बहाना करना। (२) झगड़ा करना। उपद्रव करना। (३) चालबाजी करना। धूर्तता करना। सात परदे में रखना = (१) अच्छी तरह छिपा कर रखना। (२) बहुत सँभालकर रखना। सातवें आसमान पर चढ़ना = बहुत घमंडी बनना। अत्यधिक अभिमान दिखाना। उ०--मिसेज रालिंसन तो जैसे सातवें आसमान पर चढ़ गईं।--जिप्सी, पृ० १६६। सात समुद्र पार = बहुत दूर। उ०--सात समुद्र पार, सहस्रों कोस की दूरी पर बैठे।--प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३७२। सात सलाम(पु) = अनेकानेक प्रणाम। अत्यंत विनीतता। उ०--पंथी एक सँदेसड़उ कहिज्यउ सात सलाम।--ढोला०, दू० १३६। सातों भूल जाना = होश हवाश चला जाना। इंद्रियों का काम न करना (पाँच इंद्रियाँ, मन और बुद्धि ये सब मिलकर सात हुए)। सात राजाओं की साक्षी देना = बहुत दृढ़तापूर्वक कोई बात कहना। किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। उ०--मनसि बचन अरु कर्मना कछु कहति नाहिन राखि। सूर प्रभु यह बोल हिरदय सात राजा साखि।--सूर (शब्द०)। सात सींकें बनाना = शिशु के जन्म के छठें दिन की एक रीति जिसमें सात सींकें रखी जाती है। उ०--साथिये बनाइकै देहि द्वारे सात सींक बनाय। नव किसोरी मुदित ह्वै ह्वै गहति यशुदाजी के पायँ।--सूर (शब्द०)।

सात(पु)[3]--संज्ञा पुं० [सं० शान्त] साहित्य शास्त्र में वर्णित रसों में से ६ वाँ रस। विशेष--दे० 'शांत'। उ०--बीभछ अरिन समूह, सात उप्पनौ मरन भय।--पृ० रा०, २५।५०१।

सात[4]--वि० [सं०] १. प्रदत्त। दिया हुआ। २. नष्ट। ध्वस्त [को०]।

सात[5]--संज्ञा पुं० [सं०] आनंद। प्रसन्नता [को०]।

सातक(पु)[1]--वि० [सं० सात्विक] दे० 'सात्विक'। उ०--राजस तामस सातक माया।--प्राण०, पृ० ५६।

सातक[2]--वि० [सं० सप्त, हिं० सात + क (प्रत्य०) या एक] लगभग सात। जो सात की संख्या के आस पास हो। उ०--साथ किरात छ सातक दीन्हें। मुनिवर तुरत बिदा चर कीन्हें।--मानस, २।२७१।

यौ०--छ सातक = दे० 'सातक[2]'।

सातगी(पु)--संज्ञा स्त्री० [हिं० सादगी] सात्विकता। सादगी। उ०--दादू माया का गुण बल करै आपा उपजै आइ। राजस् तामस सातगी, मन चंचल ह्वै जाइ।--दादू०, पृ० ४१६।

सातत्य--संज्ञा पुं० [सं०] सततता। नैरंतर्य। स्थायी रूप से चलते रहने की स्थिति [को०]।

सातपूती--संज्ञा स्त्री० [हिं० सात + पूती] दे० 'सतपुतिया'।

सातफेरी--संज्ञा स्त्री० [हिं० सात + फेरी] विवाह की भाँवर नामक रीति जिसमें वर और वधू अग्नि की सात बार परिक्रमा करते हैं। सप्तपदी।

सातभाई--संज्ञा स्त्री० [हिं० सात + भाई] दे० 'सतभइया'।

सातम(पु)--वि० [सं० सप्तम] दे० 'सातवाँ'। उ०--छउ सातम दिन आवीयो। निहचइ औलगि चालणहार।--बी० रासो, पृ० ४६।

सातमइ(पु)--वि० [हिं० सातम + इ (प्रत्य०)] दे० 'सातवाँ'। उ०--घाट दुर्घट ते लाँघीया। सातमइ मास पहुंतइ हो जाई।--बी० रासो, पृ० ७६।

सातला--संज्ञा पुं० [सं० सप्तला, सातला] एक प्रकार का थूहर जिसका दूध पीले रंग का होता है। सप्तला। भूरिफेना। स्वर्णपुष्पी।

विशेष--शालग्राम निघंटु में लिखा है कि यह एक प्रकार की बेल है जो जंगलों में पाई जाती है। इसके पत्ते खैर के पत्तों की भाँति और फूल पीले होते हैं। इसमें पतली चिपटी फली लगती है जिसे सीकाकाई कहते हैं। इसके बीज काले होते हैं जिनमें पीले रंग का दूध निकलता है। परंतु इंडियन मेडिकल प्लांट्स के अनुसार यह क्षुप जाति की बनस्पति है। इसकी डाल एक से तीन फुट तक लंबी होती है जिसमें रोएँ होते हैं इसके पत्ते एक इंच लंबे और चौथाई इंच चौड़े अंडाकार अनीदार होते हैं। डाल के अंत में बारीक फूलों के घने गुच्छे लगते हैं जो लाल रंग के होते हैं। फल चिकने और छोटे होते हैं। यह वनस्पति सुगंधयुक्त होती है। इसका तेल सुगंधित और उत्तेजक होता है जो मिरगी रोग में काम आता है।

सातवाँ--वि० [हिं० सात + वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम से सात पर हो। सात की संख्यावाला। छह के बाद पड़नेवाली संख्या से संबंधित। उ०--दूसरे तीसरे पाँचयें सातयें आठवें तो भला आइवो कीजिए।--ठाकुर श०, पृ० २।

सातवाहन--संज्ञा पुं० [सं०] शालिवाहन नरेश का नाम।

सातसंख(पु)--संज्ञा पुं० [हिं० सात + संख] सात शंख की एक माप। (संत०)। उ०--सात संख तिनकी ऊँचाई।--कबीर० श०, पृ० ७२।

सातसूत(पु)--संज्ञा पुं० [हिं० सात + सूत] सात प्रकार की वायु। (संत०)। उ०--सात सूत दे गंड बहतरि, पाट लगी अधिकाई। कबीर ग्रं०, पृ० १५३।

साति(पु)[१]--संज्ञा स्त्री० [सं० शास्ति] शासन। दंड।

साति[२]--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देना। दान। भेंट। २. प्राप्ति। उपलब्धि। ३. मदद। सहायता। ४. विनाश। बरबादी। ५. अंत। निष्कर्ष। ६. तेज दर्द। तीव्र पीड़ा। ७. विराम। ठहराव। ८. संपत्ति। धन [को०]।

सातिक, सातिग(पु)--वि० [सं० सात्विक] दे० 'सात्विक'। उ०--राजस करि उतपति करै, सातिक करि प्रतिपाल।--दादू०, पृ० ४५७।

सातिना--संज्ञा स्त्री० [सं०] कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार का काली किस्म का चमड़ा।

सातिया--संज्ञा पुं० [सं० स्वस्तिक] दे० 'सथिया'।

सातिशय--वि० [सं०] अत्यंत। अत्यधिक। बहुत ज्यादा।

साती[१]--संज्ञा स्त्री० [देश०] साँप काटने की एक प्रकार की चिकित्सा जिसमें साँप के काटे हुए स्थान को चीरकर उसपर नमक या बारूद मलते हैं।

साती(पु)†[२]--क्रि० वि० [हिं० साथ + ही = साथी] साथ ही साथ। उ०--चंदन के साती लिब हुआ चंदन। क्यौं कर रोवे देख ए हिगन।--दक्खिनी०, पृ० २२।

सातीन, सातीनक, सातीलक--संज्ञा पुं० [सं०] मटर [को०]।

सातुक, सातुक्क(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सात्विक] दे० सात्विक'। उ०--(क) बंसी सुर संभरचौ हरचौ गोपी सु चित्त सुर। कछुत्र करचौ कछु करचौ गए सातुक सुभाव गुर।--पृ० रा०, २।३१७। (ख) सजे तामसं राज सातुक्क तज्जं।--पृ० रा०, २५।५५३।

सातुवंती(पु)--वि० स्त्री० [सं० सत्ववती] सत्व गुण से युक्त। सत्ववती। उ०--तुही राजसं तामसं सातुवंती। तुही आहितं हित्त चित्तं चरंती।--पृ० रा०, ६१।६६५।

सात्त्व--वि० [सं०] सतोगुणी। सत्व गुण संबंधी [को०]।

सात्त्विक--वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सात्विक'।

सात्त्विकी--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सात्विकी'।

सात्म--वि० [सं० सात्मन्] आत्मयुक्त। अपने से युक्त [को०]।

सात्मक--वि० [सं०] आत्मा के सहित। आत्मायुक्त।

सात्मीकृत--वि० [सं०] अभ्यस्त। आदी [को०]।

सात्मीभाव--संज्ञा पुं० [सं०] जनकत्व। कारणत्व [को०]।

सात्म्य[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. सारूप्य। सरूपता। २. वैद्यक के अनुसार वह रस जिसके सेवन से शरीर का किसी प्रकार का उपकार होता हो और जिसके फलस्वरूप प्रकृतिविरुद्ध कोई कार्य करने पर भी शरीर का अनिष्ट न होता हो। ३. ऋतु, काल, देश आदि के अनुकूल पड़नेवाला आहार विहार आदि। ४. अनुकूलता (को०)। ५. आदत। स्वभाव (को०)।

सात्म्य[२]--वि० अनुकूल। रुचिकर [को०]।

सात्यकि--संज्ञा पुं० [सं०] एक यादव जिसका दूसरा नाम युयुधान था।

विशेष--सात्यकि के पिता का नाम सत्यक था। सात्यकि का कृष्ण के सारथी के रूप में भी उल्लेख है। महाभारत के युद्ध में इसने पांडवों का पक्ष लिया था। और इसने कौरवपक्षीय भूरिश्रवा को मारा था। श्रीकृष्ण और अर्जुन से इसने शस्त्रविद्या सीखी थी। यादवों के पारस्परिक मुशल युद्ध में यह मारा गया था।

सात्यकी--संज्ञा पुं० [सं० सात्यकि] दे० 'सात्यकि'।

सात्यदूत--संज्ञा पुं० [सं०] वह होम जो सरस्वती आदि देवियों या देवताओं के उद्देश्य से किया जाय।

सात्ययज्ञ--संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक आचार्य का नाम।

सात्यरथि--संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सत्यरथ के वंश में उत्पन्न हुआ हो।

सात्यवत--संज्ञा पुं० [सं०] सत्यवती के पुत्र वेदव्यास।

सात्यवतेय--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सात्यवत'।

सात्यहव्य—संज्ञा पुं० [सं०] वशिष्ठ के वंश के एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सात्रव—संज्ञा पुं० [?] गंधक।

सात्राजित—संज्ञा पुं० [सं०] राजा शतानीक जो सत्राजित के वंशज थे।

सात्राजिती—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्यभामा का एक नाम।

सात्व—वि० [सं० सात्त्व] सत्व गुण संबंधी। सात्विक।

सात्वत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. बलराम। २. श्रीकृष्ण। ३. विष्णु। ४. यदुवंशी। यादव। ५. मनुसंहिता के अनुसार एक वर्णसंकर जाति। जातिच्युत वैश्य और त्यक्त क्षत्रिय पत्नी से उत्पन्न संतान। ६. सात्वत के अनुयायी। वैष्णव (को०)। ७. एक प्राचीन देश का नाम।

सात्वत[2]—वि० १. सात्वत अर्थात् विष्णु से संबंधित। वैष्णव। २. भक्त। ३. पांचरात्र से संबंधित (को०)।

सात्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिशुपाल की माता का नाम। २. दे० 'सात्वती वृत्ति' (को०)। ३. सुभद्रा का एक नाम।

यौ०—सात्वतीपुत्र, सात्वतीसूनु = शिशुपाल।

सात्वतीवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य के अनुसार चार नाटकीय वृत्तियों में से एक प्रकार की वृत्ति।

विशेष—इसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शांत रसों में होता है। यह वृत्ति उस समय मानी जाती है जब कि नायक द्वारा ऐसे सुंदर और आनंदवर्धक वाक्यों का प्रयोग होता हैं, जिनसे उसकी शूरता, दानशीलता, दाक्षिण्य आदि गुण प्रकट होते हैं।

सात्विक[1]—वि० [सं० सात्त्विक] १, सत्वगुण से संबंध रखनेवाला। सतोगुणी। २. जिसमें सत्वगुण की प्रधानता हो। ३. सत्व गुण से उत्पन्न। ४. वास्तविक। यथार्थ। ५. सत्य। स्वाभाविक (को०)। ६. ईमानदार। सच्चा (को०)। ७. गुणयुक्त (को०)। ८. शक्तिशाली। ओजपूर्ण (को०)। ९. आंतरिक भावना से प्रेरित (को०)।

सात्विक[2]—संज्ञा पुं० १. सतोगुण से उत्पन्न होनेवाले निसर्गजात अंगविकार। ये आठ प्रकार के होते हैं,—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य अश्रु और प्रलय।

विशेष—केशव के अनुसार आठवाँ प्रलय नहीं प्रलाप होता है।

२. साहित्य के अनुसार एक प्रकार की वृत्ति जिसका व्यवहार अद्भुत, वीर, शृंगार और शांत रसों में होता है। सात्वती वृत्ति। ३. ब्रह्मा। ४. विष्णु। ५ चार प्रकार के अभिनयों में से एक। सात्विक भावों को प्रदर्शित करके, हँसने, रोने, स्तंभ और रोमांच आदि के द्वारा अभिनय करना। ६. ब्राह्मण (को०)। ७. शरद् ऋतु की रात्रि (को०)। ८. बिना जल के दी जानेवाली आहुति या बलि (को०)।

सात्विकी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सात्त्विकी] दुर्गा का एक नाम।

सात्विकी[2]—वि० स्त्री० सत्व गुण संबंधी। सत्व गुण से संबंध रखनेवाली। सत्वगुण की।

साथ[1]—संज्ञा पुं० [सं० सह या सहित, पु०हिं० सथ्थ] १. मिलकर या संग रहने का भाव। संगत। सहचार।

क्रि० प्र०—करना।—रहना।—लगना।—होना।

मुहा०—साथ छूटना = संग छूटना। अलग होना। जुदा होना। साथ देना = किसी काम में संग रहना। सहानुभूति करना या सहायता देना। जैसे,—इस काम में हम तुम्हारा साथ देंगे। साथ निबहना = साथ साथ या मेल जोल के साथ समय बीतना। साथ लगना = किसी कार्य में शरीक होना। किसी का साथ पकड़ना। साथ लगाना = किसी कार्य में सम्मिलित करना। साथ करना। साथ लेकर डूबना = अपना नुकसान करने के साथ साथ दूसरे का भी नुकसान करना। साथ लेना = अपने संग रखना या ले चलना। जैसे,—जब तुम चलने लगना तो हमें भी साथ ले लेना। साथ सोना = समागम करना। संभोग करना। साथ सोकर मुँह छिपाना = बहुत अधिक घनिष्टता होने पर भी संकोच या दुराव करना। साथ का या साथ को = तरकारी, भाजी आदि जो रोटी के साथ खाई जाती है। साथ का खेला = बाल्यावस्था का मित्र। बचपन का साथी। साथ होना = मेलजोल होना। मित्रता होना।

२. वह जो संग रहता हो। बराबर पास रहनेवाला। साथी। संगी। ३. मेल मिलाप। घनिष्टता। जैसे,—आजकल उन दोनों का बहुत साथ है। ४. कबूतरों का झुंड या टुकड़ी। (लखनऊ)।

साथ[2]—अव्य० १. एक संबंधसूचक अव्यय जिससे प्रायः सहचार का बोध होता है। सहित। से। जैसे,—(क) तुम भी साथ चले जाओ। (ख) वह बड़े आराम के साथ काम करता है।

मुहा०—साथ में घसीटना किसी की इच्छा के विरुद्ध उसको किसी कार्य में संमिलित करना। साथ ही = सिवा। अतिरिक्त। जैसे,—साथ ही यह भी एक बात है कि आप वहाँ नहीं जा सकेंगे। साथ ही साथ = एक साथ। एक सिलसिले में। जैसे,—साथ ही साथ दोहराते भी चलो। एक साथ = एक सिलसिले में जैसे,—(क) एक साथ दोनो काम हो जायँगे। (ख) जब एक साथ इतने आदमी पहुँचेंगे तो वे घबरा जायँगे।

२. विरुद्ध। से। जैसे,—सबके साथ लड़ना ठीक नहीं। ३. प्रति। से। जैसे,—(क) उनके साथ हँसी मजाक मत किया करो। (ख) बड़ों के साथ शिष्टतापूर्वक व्यवहार किया करो। ४. द्वारा। उ०—नखन साथ तव उदर बिदारचो।—सूर (शब्द०)।

साथरा†—संज्ञा पुं० [सं० संस्तरण] [स्त्री० साथरी] १. बिछौना। बिस्तर। २. चटाई। ३. कुश की बनी चटाई। उ०—रघुपति चद्र विचार करचो। नातो मानि सगर सागर सों कुश साथरे परचो।—सूर (शब्द०)।

साथरी—संज्ञा स्त्री० [सं० संस्तरण] दे० 'साथरा'।

साथियाⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्वस्तिक] दे० 'सथिया'। उ०—(क) साथिये बनाइ कै देहि द्वारे सात सींक बनाय।—सूर (शब्द०)। (ख) मंगल सदन चारि साथिये इन तरें जुत जंदु फल चारि तकि सुख करौं हौं।—घनानंद, पृ० ३५२।

साथी—संज्ञा पुं० [हिं० साथ + ई (प्रत्य०)] [स्त्री० साथिन] १. वह जो साथ रहता हो। साथ रहनेवाला। हमराही। संगी। २. दोस्त। मित्र। ३. सहायक। सहकारी। सहयोगी।

साद[२]—संज्ञा पुं० [सं०] १. डूबना। तल में बैठना। २. थकान। क्लांति। ३. पतलापन। तन्वंगता। तनुता। ४. नष्ट होना। विनाश। ५. पीड़ा। व्यथा। ६. स्वच्छता। पवित्रता। ७. गति। गमन। गतिशीलता [को०]।

साद(पु)[३]—संज्ञा पुं० [सं० शब्द, प्रा० सद्द] दे० 'शब्द'। उ०—सिथल पुकारी साद सुणीजै, कीजै हो हरि! बाहर कीजै।—रघु० रू०, पृ० १३५।

सादक(पु)—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सदका'—३।

सादगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सादा होने का भाव। सादापन। सरलता। २. सीधापन। निष्कपटता।

सादन—संज्ञा पुं० [सं०] १. थकान। क्लांति। २. विनाश। बरबादी। ३. भवन। निवासस्थान। ४. पात्र। स्थाली (को०)। ५. क्लांत करना। थकाना (को०)। ६. पात्र आदि व्यवस्थित करना [को०]।

सादनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. थकान। क्लांति। २. बरबादी। विनाश। ३. कुटकी नामक पौधा [को०]।

सादर(पु)—वि० [सं०] आदरपूर्वक। आदर के साथ। उ०—सदा सुनहिं सादर नर नारी। तेइ सुरबर मानस अधिकारी।—मानस, १।३८।

सादव—वि० [सं० स + द्रव या सत् + रव] सद्रव। जलयुक्त। उ०—जल जंगल महिय गान सूझत दादुर मोर रोर घन सादव। जदपि मघो मेघ झरि मंडि बुझि विरह विरह विकल विन कादव।—अकबरी०, पृ० ३१७।

सादा—वि० [फ़ा० सादह्] [वि० स्त्री० सादी] १. जिसकी बनावट आदि बहुत संक्षिप्त हो। जिसमें बहुत अंग उपांग, पेच या बखेड़े आदि न हों। जैसे,—चरखा सूत कातने का सबसे सादा यंत्र है। २. जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो। जैसे,—सादा दुपट्टा, सादी जिल्द, सादा खिलौना। ३. जिसमें किसी विशेष प्रकार का मिश्रण न हो। बिना मिलावट का। खालिस। जैसे,—सादा पानी या सादी भाँग (जिसमें चीनी आदि न मिली हो); सादी पूरी (जिसमें पीठी आदि न भरी हो); सादा भोजन (जिसमें अधिक मसाले या भेद आदि न हों)। ४. जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो। जैसे,—सादा कागज, सादा किनारा (जिसमें बेल बूटे आदि न बने हों)। ५. जिसके ऊपर कोई रंग न हो। सफेद। जैसे,—सादे किनारे की धोती। ६. जो कुछ छल कपट न जानता हो। जिसमें किसी प्रकार का आडंबर या अभिमान आदि न हो। सरल-हृदय। सीधा। जैसे,—वे बहुत ही सादे आदमी हैं।

यौ०—सादा कपड़ा = (१) बिना बेलबूटे का कपड़ा। (२) वस्त्र जो रंगीन न हो। सादा कागज = (१) बिना कुछ लिखा हुआ कोरा कागज। (२) कागज जिसपर टिकट या स्टांप न लगा हो। सादाकार। सादादिल = साफ दिल। निष्कपट हृदय। सादापन। सादामिजाज = साफ दिल। सादालोह। सीधासादा = सरल हृदय।

७. बेवकूफ। मूर्ख। (क्व०)। जैसे,—(क) वह सादा क्या जाने कि दर्शन किसे कहते हैं। (ख) यहाँ कौन ऐसा सादा है जो तुम्हारी बात मान ले।

८. सरल। सात्विक। पवित्र। ९. ढोंगरहित। आडंबरहीन। साधारण। जैसे,—सादा जीवन उच्च विचार (लोकोक्ति)।

सादाकार—वि० [फ़ा०] १. जो सोने चाँदी का काम अच्छा जानता हो। २. सादा और हलका काम बनानेवाला।

सादकारी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सादाकार या सुनार का काम। सुनारी का पेशा [को०]।

सादात—संज्ञा पुं० [अ०] १. श्रेष्ठजन। बुजुर्ग या वृद्ध जन। २. सैयद वंश या जाति [को०]।

सादान(पु)—संज्ञा पुं० [फ़ा० शादियानह्] प्रसन्नता या हर्षसूचक वाद्य। जीत का नगाड़ा। उ०—सादान बज्जि रन रज्जि सह, तह सु संध्धरकत करिय। सोमेस सूर चहुआंन सुअ किति चंद छंदह धरिअ।—पृ० रा०, ७।१५९।

सादापन—संज्ञा पुं० [फ़ा० सादा + पन (प्रत्य०)] सादा होने का भाव। सादगी। सरलता।

सादालौह—वि० [फ़ा० सादह्लौह] १. छलविहीन। निश्छल। निष्कपट। २. मूर्ख। बुद्धू [को०]।

सादाशिव—वि० [सं०] सदाशिव से संबंधित [को०]।

सादि[१]—वि० [सं०] आदि से युक्त। प्रारंभ सहित [को०]।

सादि[२]—संज्ञा पुं० १. रथ हाँकनेवाला। सारथी। २. वीर। योद्धा। बहादुर। ३. उत्साहहीन या खिन्न व्यक्ति। ४. वायु। पवन [को०]।

सादिक[१]—वि० [अ० सादिक़] १. सच्चा। सत्यवादी। उ०—सादिक हूँ अपने कौल का गालिब खुदा गवाह। कहता हूँ सच कि झूट की आदत नहीं मुझे।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ४५६। २. न्यायपूर्ण। उचित (को०)। ३ वफादार। स्वामिभक्त (को०)।

सादिक(पु)†[२]—संज्ञा पुं० [सं० साधक] दे० 'साधक'। उ०—सतगुरु सादिक रमता सादु।—रामानंद०, पृ० ४९।

सादित—वि० [सं०] १. बैठने के लिये प्रेरित किया हुआ। बैठाया हुआ। २. क्लिन्न। दुःखी। ३. क्लांत। थका हुआ। ४. विनष्ट। बरबाद [को०]।

सादिर—वि० [अ०] १. निस्तब्ध। २. उद्विग्न। चकित। भ्रांत। ३. चालू होनेवाला। जारी होनेवाला [को०]।

सादी[१]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सादह्] १. लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिड़िया जिसका शरीर भूरे रंग का होता है और जिसके शरीर पर चित्तियाँ नहीं होतीं। बिना चित्ती की मुनियाँ। सदिया। २. वह पूरी जिसमें पीठी आदि नहीं भरी होती।

३. पतंग उडाने की सादी डोर। वह डोर जिसपर माँझा न लगा हो।

सादी[२]—वि० [सं० सादिन्] १. बैठा हुआ। उपविष्ट। २. नष्ट करनेवाला। विनाशक। ३. सवारी करनेवाला [को०]।

सादी[३]—संज्ञा पुं० १. घुड़सवार। उ०—दीख पड़ते हैं न सादी आज। —साकेत, पृ० १६८। २. वह जो हाथी पर सवार हो या सवारी में बैठा हो। ३. रथ हाँकनेवाला। सारथी [को०]।

सादी[४]—संज्ञा पुं० [सं० सादिन्] १. शिकारी। उ०—सहरुज सादी संग सिधारे। शूकर मृगा सबन बहु मारे।—रघुराज (शब्द०)। २. अश्व। घोड़ा। (डिं०)।

सादी[५]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शादी] दे० 'शादी'। उ०—कहत कमाली कबीर की बालकी सादी से मैं कुमारी भली सी।—कबीर मं०, पृ० १६४।

सादी(पु)[६]—वि० [सं० साधिन्, साधी] साधक। सिद्ध करनेवाला। उ०—अविद्या न विद्या न सिद्धं न सादी। तुही ए तुही ए तुही एक आदी।—पृ० रा०, २।६८।

सादीनव—वि० [सं०] पीड़ित। व्यथाग्रस्त [को०]।

सादु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० साधु] दे० 'साधु'। उ०—सतगुरु सादिक रमता सादु।—रामानंद० पृ० ४६।

सादुल, सादूल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शार्दूल] दे० 'शार्दूल'। सिंह।

सादूर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शार्दूल] १. शार्दूल। सिंह। उ०—चौथ दीन्ह सावक सादूरू। पाँचौ परस जो कंचन मूरू।—जायसी (शब्द०)। २. कोई हिंसक पशु।

सादृश्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सदृश होने का भाव। समानता। एकरूपता। २. बराबरी। तुलना। समान धर्म। ३. प्रतिमूर्ति। प्रतिबिंब। ४. कुरंग। मृग।

सादृश्यता—संज्ञा स्त्री० [सं० सादृश्य+ता] दे० 'सादृश्य'।

सादृश्यत्व—संज्ञा पुं० [सं० सादृश्य+त्व] सदृश होने का भाव। सादृश्य।

सादृस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सादृश्य] सम्मान। तुल्य। उ०—कपोल गोल आदृसं, कि भौंह भौंर सादृसं।—हम्मीर रा०, पृ० २४।

सादेह(पु)—क्रि० वि० [सं० स+देह] देह के साथ। सशरीर। उ०—सादेह दीसै संमुख भाई। नाद बिंद बिधि देह बनाई।—घट०, पृ० २५८।

साद्यंत—वि० [सं० साद्यन्त] पूर्ण। पूरा। संपूर्ण [को०]।

साद्य—वि० [सं०] नवीन। नया। ताजा [को०]।

साद्यस्क[१]—वि० [सं०] १. तुरत होनेवाला। २. तत्काल फल देनेवाला। ३. नया। ताजा [को०]।

साद्यस्क[२]—संज्ञा पुं० एक विशेष यज्ञ जिसका एक नाम 'साद्यस्क्र' भी है [को०]।

साधंत—संज्ञा पुं० [सं० साधन्त] भिखारी। भिक्षुक [को०]।

साध[१]—संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. साधु। महात्मा। उ०—योगेश्वर वहु गति नहिं पाई। सिद्ध साध की कौन चलाई।—कबीर सा०, पृ० ८४५। २. योगी। उ०—राजा इंदर का राज डोलाऊँ तो मैं सच्चा साध।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ३७६। ३. अच्छा आदमी। सज्जन।

साध[२]—वि० उत्तम। अच्छा। उ०—अशेष शास्त्र विचार कै जिन जानियों मत साध।—केशव (शब्द०)।

साध[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० उत्साह] १. इच्छा। ख्वाहिश। कामना। उ०—जेहि अस साध होइ जिव खोवा। सो पतंग दीपक अस रोवा।—जायसी (शब्द०)। २. गर्भ धारण करने के सातवें मास में होनेवाला एक प्रकार का उत्सव। इस अवसर पर स्त्री के मायके से मिठाई आदि आती है।

साध[४]—संज्ञा पुं० फर्रुखाबाद और कन्नौज के आस पास पाई जानेवाली एक जाति।

विशेष—इस जाति के लोग मूर्तिपूजा आदि नहीं करते, किसी के सामने सिर नहीं झुकाते और केवल एक परमात्मा की ही आराधना करते हैं।

साधक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. साधना करनेवाला। साधनेवाला। सिद्ध करनेवाला। २. योगी। तप करनेवाला। तपस्वी। ३. जिससे कोई कार्य सिद्ध हो। करण। वसीला। जरिया। ४. भूत प्रेत को साधने या अपने वश में करनेवाला। ओझा। ५. वह जो किसी दूसरे के स्वार्थसाधन में सहायक हो। जैसे,—दोनों सिद्ध साधक बनकर आए थे। ६. पुत्रजीव वृक्ष। ७. दौना। ८. पित्त। उ०—आलोचक, रंजक, साधक, पाचक, भ्राजक इन भेदों से पित्त पाँच प्रकार का है।—माधव०, पृ० ५८।

साधक[२]—वि० [स्त्री० साधका, साधिका] १. पूरा करनेवाला। २. कुशल। ३. प्रभावशील। ४. चमत्कारिक। ऐंद्रजालिक। ५. सहयोगी। सहायक। ६. निष्कर्षात्मक [को०]।

साधकता—संज्ञा स्त्री० [सं० साधक+ता (प्रत्य०)] १. साधक होने का भाव। २. उपयुक्तता। औचित्य। ३. उपयोगिता [को०]।

साधकत्व—संज्ञा पुं० [सं०] साधक होने का भाव या स्थिति ' साधकता। उ०—साथ ही उक्ति के अलौकिक सुख साधकत्व को लेकर हम इसे चाहें तो अलौकिक विज्ञान भी कह सकते हैं। —शैली, पृ० २७।

साधकवर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] साधक की बत्ती। ऐंद्रजालिक बत्ती या पलीता [को०]।

साधका—संज्ञा [सं०] दुर्गा का एक नाम जिसे स्मरण करने से सब कार्यों की सिद्धि होती है।

साधन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी काम को सिद्ध करने की क्रिया। सिद्धि। विधान। २. वह जिसके द्वारा कोई उपाय सिद्ध हो। सामग्री। सामान। उपकरण। जैसे,—साधन के अभाव में मैं यह काम न कर सका। ३. उपाय। युक्ति। हिकमत। ४. उपासना। साधना। ५. सहायता। मदद। ६. धातुओं के शोधने की क्रिया। शोधन। ७. कारण। हेतु। सबब। ८. अचार। संधान। ९. मृतक का अग्निसंस्कार। दाह कर्म। १०.

जाना। गमन। ११. धन। दौलत। द्रव्य। १२. पदार्थ। चीज। १३. घोड़े, हाथी और सैनिक आदि जिनकी सहायता से युद्ध होता है। १४. उपाय। तरकीब। १५. सिद्धि। १६. प्रमाण। १७. तपस्या आदि के द्वारा मंत्र सिद्ध करना। साधना। १८. यंत्र। (को०)। १९. दमन करना। जीत लेना (को०)। २०. वशीकरण (को०)। २१. वसूली का आदेश प्राप्त कर द्रव्य, वस्तु, ऋण आदि को वसूल करना (को०)। २२. मारण। बध। विनाश (को०)। २३. व्याकरण में करण कारक (को०)। २४. मोक्ष या मुक्ति पाना (को०)। २५ लिंगेंद्रिय। शिश्न (को०)। २६. शरीर की इंद्रियाँ या अंग (को०)। २७. कुच। स्तन (को०)। २८. प्राप्ति। लाभ (को०)। २९. गणना। संगणना (को०)। ३०. बाद में जाना। अनुगमन (को०)। ३१. मैत्री। मित्रता (को०)। ३२. अधिकार में करना या लेना (को०)। ३३. तैयार करना। तैयारी (को०)। ३४. नीरोग या स्वस्थ करना (को०)। ३५. तुष्ट करना (को०)।

साधन² वि० १. पूरा करनेवाला। २. प्राप्त करनेवाला। ३. प्रेतादि आत्माओं को बुलाने या वशीभूत करनेवाला। ४. अभिव्यंजक [को०]।

साधनक—संज्ञा पुं० [सं०] साधन। उपकरण [को०]।

साधनक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समापिका क्रिया। २. कारक से संबंधित क्रिया (को०)।

साधनक्षम—वि० [सं०] जिसके लिये प्रमाण दिया जा सके [को०]।

साधनचतुष्टय—संज्ञा पुं० [सं०] चार तरह के प्रमाण [को०]।

साधनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साधन का भाव या धर्म। २. साधन करने की क्रिया। साधना। उ०—कहि आचार भक्त विध भाषी हंस धर्म प्रकटायो। कही विभूति सिद्ध साधनता आश्रम चार कहायो।—सूर (शब्द०)। ३. सिद्धि प्राप्ति की अवस्था (को०)।

साधनत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'साधनता'।

साधननिर्देश—संज्ञा पुं० [सं०] प्रमाण उपस्थित करना। हेतु का प्रस्तुतीकरण [को०]।

साधनपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्रमाणरूप में प्रस्तुत या उपस्थित किया हुआ लेख, पत्र आदि [को०]।

साधनहारⓅ—संज्ञा पुं० [सं० साधन + हिं० हार (प्रत्य०)] १. साधनेवाला। जो सिद्ध करता हो। २. जो साधा जा सके। सिद्ध होने के योग्य।

साधना¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोई कार्य सिद्ध या संपन्न करने की क्रिया। सिद्धि। २. किसी देवता या यंत्र आदि को सिद्ध करने के लिये उसकी आराधना या उपासना करना। ३. दे० 'साधन'।

साधना²—क्रि० स० [सं० साधन] १. (कोई कार्य) सिद्ध करना। पूरा करना। उ०—आसन साधि पवन पुनि पीवै। कोटि बरस लगि काहिं न जीवै।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० ३३७। २. निशाना लगाना। संधान करना। जैसे,—लक्ष्य साधना। ३. नापना। पैमाइश करना। जैसे,—लकड़ी साधना, टोपी साधना। ४. अभ्यास करना। आदत डालना। स्वभाव डालना। जैसे,—योग साधना, तप साधना। उ०—जब लगि पीउ मिले तुहि साधि प्रेम की पीर। जैसे सीप स्वाति कहँ तपै समुँद मँझ नीर।—जायसी (शब्द०)। ५. शोधना। शुद्ध करना। ६. सच्चा प्रमाणित करना। ७. पक्का करना। ठहराना। ८. एकत्र करना। इकट्ठा करना। उ०—वैदिक विधान अनेक लौकिक आचरत सुनि जान कै। बलिदान पूजा मूल कामनि साधि राखी आनि कै।—तुलसी (शब्द०)। ९. अपनी ओर मिलाना या काबू में करना। वश में करना। उ०—गाधिराज को पुत्र साधि सब मित्र शत्रु बल।—केशव (शब्द०)।

साधनी—संज्ञा स्त्री० [सं० साधन] लोहे या लकड़ी का एक प्रकार का लंबा औजार जिससे जमीन चौरस करते हैं।

साधनीय—वि० [सं०] १. साधना करने के योग्य। साधने या सिद्ध करने लायक। २. जो हो सके। जो साधा जा सके। ३. उपयोगी। ४. प्राप्य। अर्जन या प्राप्त करने योग्य। जैसे,—ज्ञान। ५. निर्माण या रचना करने योग्य। जैसे,—शब्द (को०)।

साधयंत—संज्ञा पुं० [सं० साधयत्] भिक्षुक। भिखारी [को०]।

साधयंती—संज्ञा स्त्री० [सं० साधयतीन्ती] साधना करनेवाली उपासिका। आराधिका [को०]।

साधयितव्य—वि० [सं०] साधन करने के योग्य। साधने या सिद्ध करने लायक।

साधयिता—संज्ञा पुं० [सं० साधयितृ] वह जो साधन करता हो। साधन करनेवाला। साधक।

साधर्मिक—वि० [सं०] साधर्म्य या समान धर्म का अनुकरण करनेवाला [को०]।

साधर्म्य—संज्ञा पुं० [सं०] समान धर्म होने का भाव। एकधर्मता। समानधर्मता। तुल्यधर्मता। इन दोनों में कुछ भी साधर्म्य नहीं है। उ०—मनुष्यों के रूप, व्यापार या मनोवृत्तियों के सादृश्य, साधर्म्य की दृष्टि से जो प्राकतिक वस्तु व्यापार आदि लाए जाते हैं, उनका स्थान गौण ही समझना चाहिए।—रस०, पृ० ९।

साधवाⓅ—संज्ञा पुं० [सं० साधु का बहुवचन साधवः] १. साधना करनेवाला। साधक। २. सत् जन। साधु जन।—दादू० पृ० १।

साधवीⓅ—वि० स्त्री० [सं० साध्वी] दे० 'साध्वी'—१। उ०—साधवी सीय भगनी प्रिथा प्रथा बरन चित्रंग पर। इन सम न कोइ भुवनह भयौ न न ह्वैहै रवि चक्क तर।—पृ० रा०, २१।२१४।

साधसⓅ—संज्ञा पुं० [सं० साध्वस] दे० 'साध्वस'।

साधाⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० साध] अभिलाषा। साध। उत्कंठा।

साधार—वि० [सं०] १. आधार सहित। जिसका कुछ आधार हो। २. जो किसी के सहारे टिका हो [को०]।

साधारण¹—वि० [सं०] १. जिसमें कोई विशेषता न हो। मामूली । सामान्य । जैसे—साधारण बात, साधारण काम, साधारण उपाय । २. आसान । सरल । सहज । ३. सार्वजनिक । आम । ४. समान । सदृश । तुल्य । ५. मिश्रित । घुलामिला (को०) । ६. तर्कशास्त्र में एकाधिक से संबद्ध । पक्षाभास (को०) । ७. मध्यवर्ती स्थान ग्रहण करनेवाला (को०) ।

साधारण²—संज्ञा पुं० [सं०] भाव प्रकाश के अनुसार वह प्रदेश जहाँ जंगल अधिक हों, पानी अधिक हो, रोग अधिक हों और जाड़ा तथा गरमी भी अधिक पड़ती हो । २. ऐसे देश का जल । ३. सामान्य या सार्वजनिक नियम (को०) । ४. जातिगत या वर्गीय गुण (को०) । ५. एक संवत्सर (को०) ।

साधारणगांधार—संज्ञा पुं० [सं० साधारण गान्धार] एक प्रकार का विकृत स्वर जो वज्रिका नामक श्रुति से आरंभ होता है। इसमें तीन प्रकार की श्रुतियाँ होती हैं ।

साधारणतः—अव्य० [सं०] १. मामूली तौर पर । आम तौर पर। सामान्यतः । २. बहुधा । प्रायः ।

साधारणतया—अव्य० [सं०] दे० 'साधारणतः' ।

साधारणता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साधारण होने का भाव या धर्म । मामूलीपन । २. सर्वसामान्य या साधारण हित (को०) ।

साधारणत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'साधारणता' ।

साधारण देश संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का देश। दे० 'साधारण' ।

साधारणधन—संज्ञा पुं० [सं०] संयुक्त संपत्ति [को०] ।

साधारण धर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह धर्म जो सबके लिये हो। सार्वजनिक धर्म ।

विशेष—मनु के अनुसार अहिंसा, सत्य अस्तेय, शौच, इंद्रिय-निग्रह, दम, क्षमा, आर्जव, दान ये दस साधारण धर्म हैं ।

२. वह धर्म जो साधारणतः एक ही प्रकार के सब पदार्थों में पाया जाय । ३. चारों वर्णों के कर्तव्य कर्म । प्रजनन । संतानोत्पादन । जनन (को०) ।

साधारणपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐसा दल जिसमें सभी प्रकार के लोग हों । २. वह जो मध्यवर्ती हो [को०] ।

साधारणस्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या । रंडी ।

साधारणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक अप्सरा का नाम। उ०—ग्रहण कियो नहिं तिन्हैं सुरासुर साधारण जिय जानी । ताते साधारणी नाम तिन लह्यो जगत छबिखानी ।—रघुराज (शब्द०) । २. सामान्या । साधारण स्त्री । वेश्या । ३. कुंजी । चाभी । ताली । ४. बाँस की कइन (को०) ।

साधारणीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य के रसविधान में विभावन नामक व्यापार । दे० 'विभावन'।—२ ।

साधारण्य—संज्ञा पुं०[सं०] साधारण होने का भाव या धर्म । साधारणता । मामूलीपन ।

साधारित—वि० [सं०] जो आधारप्राप्त हो या जिसे आधार प्रदान किया गया हो [को०] ।

साधिक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० साधक] दे० 'साधक' । उ०—सिद्ध बिना न साधिक निपजै ज्यौं घट होइ उज्याला ।—रामानंद०, पृ० १३ ।

साधिका¹—वि० स्त्री० [सं०] सिद्ध करनेवाली । जो सिद्ध करे ।

साधिका²—संज्ञा स्त्री० गहरी नींद । सषुप्ति ।

साधित—वि० [सं०] १. सिद्ध किया हुआ । जो सिद्ध किया गया हो । जो साधा गया हो । २. जिसे किसी प्रकार का दंड दिया गया हो । ३. शुद्ध किया हुआ । शोधित । ४. जिसका नाश किया गया हो । ५. ऋण आदि जो चुकाया गया हो । ६. छोड़ा हुआ । प्रक्षिप्त । ७. विजित । पराभूत । ८. प्रयोग द्वारा प्रमाणित या प्रदर्शित । ९. प्राप्त (को०) ।

साधिमा—संज्ञा पुं० [सं० साधिमन्] अच्छापन । उत्तमता [को०] ।

साधिवास वि० [सं०] सुगंधित । सुगंधयुक्त [को०] ।

साधिष्ठ—वि० [सं०] १. अत्यंत समीचीन या उत्तम । उत्कृष्टतम । २. बहुत मजबूत । अडिग । कठोर [को०] ।

साधी—वि० [सं० साधिन्] साधने या सिद्ध करनेवाला [को०] ।

साधीय—वि० [सं० साधीयस्] १. उत्कृष्टतर । २, बलवत्तर । अधिक बली । ३. औचित्यतर । सुंदरतर [को०] ।

साधु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसका जन्म उत्तम कुल में हुआ हो। कुलीन । आर्य । २. वह धार्मिक, परोपकारी और सद्गुणी पुरुष जो सत्योपदेश द्वारा दूसरों का उपकार करे। धार्मिक पुरुष । परमार्थी । महात्मा । संत । ३. वह जो शांत, सुशील, सदाचारी, वीतराग और परोपकारी हो । भला आदमी। सज्जन ।

मुहा०—साधु साधु कहना = किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी बहुत प्रशंसा करना ।

४. वह जिसकी साधना पूरी हो गई हो । ५. साधु धर्म का पालन करनेवाला । जैन साधु । ६. दौना नामक पौधा । दमनक। ७. वरुण वृक्ष । ८. जिन । ९. मुनि । १०. वह जो सूद या व्याज से अपनी जीविका चलाता हो । ११. साध । इच्छा। १०. गर्भ के सातवें महीने में होनेवाला एक संस्कार। उ०—ए मैं अपुबिस अपुबिस साध पुजाऊँ। लज्जा राखूँ नँनद को ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ९१९ ।

साधु²—वि० १. अच्छा । उत्तम । भला । २. सच्चा । ३. प्रशंसनीय। ४. निपुण । होशियार । ५. योग्य । उपयुक्त । ६. उचित । मुनासिब । ७. शुद्ध । सही । शास्त्रीय । ८. दयालु । कृपालु । ९. रुचिकर । अनुकूल । २०. योग्य । खानदानी ।

साधुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. कदम । कदंब वृक्ष । २. वरुण वृक्ष ।

साधुकारी—संज्ञा पुं० [सं० साधुकारिन्] वह जो उत्तम कार्य करता हो । अच्छा काम करनेवाला । दक्ष या कुशल व्यक्ति ।

साधुकृत—वि० [सं०] अच्छी तरह किया हुआ [को०] ।

साधुकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. हानि की पूर्ति होना । क्षतिपूर्ति । २. लाभ । प्राप्ति । प्रतिफल [को०] ।

साधुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका जन्म उत्तम कुल में हुआ हो। कुलीन।

साधुजात—वि० [सं०] १. सुंदर। खूबसूरत। २. उज्ज्वल। साफ। स्वच्छ।

साधुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साधु होने का भाव या धर्म। २. साधुओं का धर्म। साधुओं का आचरण। ३. सज्जनता। भलमनसाहत। उ०—तदपि तुम्हारि साधुता देखी।—मानस, ७।१०६। ४. भलाई। नेकी। ५. सीधापन। सिधाई।

साधुतिⓊ—संज्ञा स्त्री० [सं० साधु] संग। साथ। उ०—फुर फुर कहत मारु सब कोई। झूठहि झूठा साधुति होई।—कबीर बी० (शिशु०), पृ० १६४।

साधुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'साधुता'।

साधुदर्शन –वि० [सं०] १. सुंदर। सुरूप। प्रियदर्शन। २. विचारयुक्त। विचारपूर्ण [को०]।

साधुदर्शी—वि० [सं० साधुदर्शिन्] विवेकी [को०]।

साधुदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सास [को०]।

साधुधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार साधुओं का धर्म। यतियों का धर्म।

विशेष—यह दस प्रकार का कहा गया है—क्षांति, मार्दव, आर्जव भुक्ति, तप, संयम, सत्य, शौच, अकिंचन और ब्रह्म।

साधुधी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पत्नी या पति की माता। सास। २. अच्छी बुद्धि (को०)।

साधुधी²—वि० [सं०] मृदु या उत्तम स्वभाव का। दयालु [को०]।

साधुध्वनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] साधुवाद। वाहवाही। प्रशंसात्मक करतल ध्वनि [को०]।

साधुपद—संज्ञा पुं० [सं०] सत्पथ। सत् का मार्ग [को०]।

साधुपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] स्थल कमल। स्थल पद्म।

साधुफल—वि० [सं०] उत्तम फल देनेवाला [को०]।

साधुभवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. साधुओं के रहने की जगह। कुटीर। कुटी। २. मठ।

साधुभाव—संज्ञा पुं० [सं०] विनम्रता। दयालुता [को०]।

साधुमंत्र—संज्ञा पुं० [सं० साधुमन्त्र] प्रभावशाली मंत्र। फलदायक या कारगर मंत्र [को०]।

साधुमत्—वि० [सं०] १. अच्छा। उत्तम। २. प्रसन्नता या आनंद देनेवाला [को०]।

साधुमत¹—वि० [सं०] जिसके विषय में ऊँचे स्तर से विचार किया गया हो। जिसका उच्च स्तर से मूल्यांकन किया गया हो।

साधुमतⓊ**²**—संज्ञा पुं० साधुजनों, सत्पुरुषों का विचार या मत। भले आदमियों की राय। उ०—भरतविनय सादर सुनिअ, करिअ, बिचारु बहोरि। करब साधुमत, लोकमत, नृपनय निगम निचोरि।—मानस, २।२५७।

साधुमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तांत्रिकों की एक देवी का नाम। २. बौद्धों के अनुसार दसवीं पृथ्वी का नाम।

साधुमात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] उचित या ठीक ठीक परिमाण [को०]।

साधुम्मन्य—वि० [सं०] अपने को साधु या सज्जन माननेवाला [को०]।

साधुवाद—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के कोई उत्तम कार्य करने पर 'साधु साधु' कहकर उसकी प्रशंसा करने का काम।

साधुवादी—वि० [सं० साधुवादिन्] १. न्यायसंगत बात कहनेवाला। २. प्रशंसक। प्रशंसा करनेवाला।

साधुवाह—संज्ञा पुं० [सं०] घोड़ा जो अच्छी तरह से सिखाया गया हो। निकाला हुआ घोड़ा। [को०]।

साधुवाही¹—वि० [सं० साधुवाहिन्] १. अच्छी तरह वहन करने या (सवारी) आदि खींचनेवाला। २. जिसके पास अच्छी किस्म के शिक्षित अश्व हों [को०]।

साधुवाही²—संज्ञा पुं० दे० 'साधुवाह'।

साधुवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. कदम का पेड़। कदंब। २. वरुण का वृक्ष।

साधुवृत्त¹—वि० [सं०] १. उत्तम स्वभाव और चरित्रवाला। साधु आचरण करनेवाला। २. ठीक वृत्तवाला। खूब गोला।

साधुवृत्त²—संज्ञा पुं० १. साधु एवं सच्चरित्र व्यक्ति। २. सदाचार। दे० 'साधुवृत्ति' [को०]।

साधुवृत्ति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम और श्रेष्ठ वृत्ति। सद्वृत्ति।

साधुवृत्ति²—वि० साधुवृत्त। सदाचारी [को०]।

साधुशब्द –संज्ञा पुं० [सं०] प्रशंसा। साधुवाद।

साधुशील—वि० [सं०] सत् स्वभाव का। धर्मात्मा। सत्पुरुष [को०]।

साधुशुक्ल—वि० [सं०] बिल्कुल सफेद [को०]।

साधुसंमत—वि० [सं० साधुसम्मत] सत्पुरुषों द्वारा मान्य। उ०—सुद्ध सो भएउ साधुसंमत अस। मानस, २।२४७।

साधुसंसर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] सत्संगति [को०]।

साधुसाधु—अव्य० [सं०] एक पद जिसका व्यवहार किसी के बहुत उत्तम कार्य करने पर किया जाता है। धन्य धन्य। वाह वाह। बहुत खूब। उ०—(अ) अस्तुति सुनि मन हर्ष बढ़ायो। साधु साधु कहि सुरनि सुनायो।—सूर (शब्द०)।

साधू—संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. धार्मिक पुरुष। साधु। संत महात्मा। २. सज्जन। भला आदमी। ३. सीधा आदमी। भोला भाला। ४. दे० 'साधु'। उ०—साधू सनमुख नाम से, रन में फिरै न पूठ।—दरिया० बानी, पृ० १२।

साधूक्त—वि० [सं०] सज्जनों द्वारा कथित [को०]।

साधूत—संज्ञा पुं० [सं०] १. दुकान। २. आतपत्र। छाता। ३. मोरों का झुंड [को०]।

साधो—संज्ञा पुं० [सं० साधु] धार्मिक पुरुष। संत। साधु।

साध्य¹—वि० [सं०] १. सिद्ध करने योग्य। साधनीय। २. जो सिद्ध हो सके। पूरा हो सकने के योग्य। जैसे,—यह कार्य साध्य नहीं जान पड़ता। ३. सहज। सरल। आसान। ४. जो प्रमाणित करना हो। जिसे साबित करना हो। ५. प्रतिकार करने के योग्य। शोधनीय। ६. जानने के योग्य। ७. (चिकित्सा आदि

द्वारा) ठीक करने योग्य। चिकित्स्य। उ०—साध्य बीमारी भी दो प्रकार की है।—शार्ङ्गधर०, पृ० ५६। ८. प्राप्त करने योग्य। विजेतव्य (को०)। १०. प्रयोक्तव्य। जो प्रयुक्त करने योग्य हो। ११. विध्वस्त, समाप्त या नष्ट करने योग्य (को०)।

साध्य[२]—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार के गणदेवता जिनकी संख्या बारह है और जिनके नाम इस प्रकार हैं—मन, मंता, प्राण, नर, अपान, वीर्यवान्, विनिर्भय, नय, दंस, नारायण, वृष और प्रभुंच। शारदीय नवरात्र में इन गणों के पूजन का विधान है। २. देवता। ३. ज्योतिष में विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से इक्कीसवाँ योग जो बहुत शुभ माना जाता है।

विशेष—कहते हैं कि इस योग मे जो काम किया जाता है, वह भलीभाँति सिद्ध होता है। जो बालक इस योग में जन्म लेता है वह असाध्य कार्य भी सहज में कर लेता है और बहुत वीर, धीर, बुद्धिमान् तथा विनयशील होता है।

४. तंत्र के अनुसार गुरु से लिए जानेवाले चार प्रकार के मंत्रों में से एक प्रकार का मंत्र। ५. न्याय वैशेषिक दर्शन में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय। जैसे,—पर्वत से धूआँ निकलता है, अतः वहाँ अग्नि है। इसमें 'अग्नि' साध्य है। ६. कार्य करने की शक्ति। सामर्थ्य। जैसे,—यह काम हमारे साध्य के बाहर है। ७. परिपूर्णता। पूर्ति (को०)। ८. चाँदी (को०)।

साध्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साध्य का भाव या धर्म। साध्यत्व। शक्यता। २. रोग आदि जो चिकित्सा द्वारा साध्य हो (को०)। ३. न्याय वैशेषिक दर्शन में वह पदार्थधर्म (साध्य का धर्म) जो अनुमान में सद्हेतु द्वारा अनुमेय हो (को०)।

साध्यपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] मुकदमें में पूर्वपक्ष [को०]।

साध्यर्षि—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

साध्यवसानरूपक—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक के ढंग का एक अलंकार जिसमें अध्यवसान केवल मूर्त प्रत्यक्षीकरण के लिये होता है, आतिशय्य को व्यंजना के लिये नहीं। किसी मत या वाद को स्पष्ट करने के लिये की हुई रूप योजना। जैसे,—जल में कुंभ, कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी। फूटा कुंभ, जल जलहि समाना, यह तत कथौ गियानी।—चिंतामणि, भा० २, पृ० ६८।

साध्यवसाना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'साध्यवसानिका' [को०]।

साध्यवसानिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्यदर्पण के अनुसार एक प्रकार की लक्षणा।

साध्यवसाय—वि० [सं०] जिसका अर्थ ऊपर से ग्रहण किया जाय [को०]।

साध्यवान्—संज्ञा पुं० [सं० साध्यवत्] १. व्यवहार में वह पक्ष जिस पर वाद प्रमाणित करने का भार हो। २. वह जिसमें साध्य या अनुमेय निहित हो [को०]।

साध्यसम—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में वह हेतु जिसका साधन साध्य की भाँति करना पड़े। जैसे,—पर्वत से धूआँ निकलता है; अतः वहाँ अग्नि है। इसमें 'पर्वत' पक्ष है, 'धूआँ' हेतु है और 'अग्नि' साध्य है। धूएँ की सहायता से अग्नि का होना प्रमाणित किया जाता है। परंतु यदि पहले यही प्रमाणित करना पड़े कि धूआँ निकलता है, तो इसे साध्यसम कहेंगे।

साध्यसाधन—संज्ञा पुं० १. साध्य का साधन। हेतु। २. साध्य और साधन।

साध्यसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साध्य अर्थात् करणीय की सिद्धि। लक्ष्य की उपलब्धि। २. निष्पत्ति [को०]।

साध्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

साध्वस—संज्ञा पुं० [सं०] १. भय। डर। २. व्याकुलता। घबराहट। ३. प्रतिभा। ४. निष्क्रियता। जड़ता। जाड्य (को०)।

साध्वसविप्लुत—वि० [सं०] भयभीत। भय से परिपूर्ण [को०]।

साध्वाचार—संज्ञा पुं० [सं०] १. साधुओं का सा आचार। २. शिष्टाचार।

साध्वी[१]—वि० स्त्री० [सं०] १. पतिव्रता। पतिपरायणा (स्त्री)। २. शुद्ध चरित्रवाली (स्त्री)। सच्चरित्रा।

साध्वी[२]—संज्ञा स्त्री० १. दुग्ध पाषाण। २. मेदा नामक अष्टवर्गीय औषधि।

सानंद[१]—संज्ञा पुं० [सं० सानन्द] १. गुच्छकरंज। स्निग्ध दल। २. एक प्रकार की संप्रज्ञात समाधि। ३. संगीत में १६ प्रकार के ध्रुवकों में से एक प्रकार का ध्रुवक जिसका व्यवहार प्रायः वीर रस के वर्णन के लिये होता है।

सानंद[२]—क्रि० वि० आनंद के साथ। आनंदपूर्वक।

सानंद[३]—वि० आनंदयुक्त। हर्षित। प्रसन्न।

सानंदनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सानन्दनी] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

सानंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सानन्दा] लक्ष्मी का एक रूप [को०]।

सानंदाश्रु—संज्ञा पुं० [सं० सानन्दाश्रु] आनंद के आँसू। आनंदानुभूति से उत्पन्न आँसू [को०]।

सानंदुरी—संज्ञा पुं० [सं० सानन्दुरी] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

सानंदूर—संज्ञा पुं० [सं० सानन्दूर] वाराहपुराण में उल्लिखित एक तीर्थ विशेष [को०]।

सान[१]—संज्ञा पुं० [सं० शाण, प्रा० सान; तुल० फ़ा० सान] वह पत्थर की चक्की जिसपर अस्त्रादि तेज किए जाते हैं। शाण। कुरंड। उ०—तेज के प्रताप गात कच्छहू लखात नीको दीपत चढ़ायो सान हीरा जिमी छीनो है।—शकुंतला०, पृ० ११०।

मुहा०—सान चढ़ाना, सान देना = धार तीक्ष्ण करना। धार तेज करना। सान धरना = अस्त्र तेज करना। चोखा करना।

सान[२]—संज्ञा स्त्री० [अ० शान] दे० 'शान'।—उ० कै सुलतान की सान रहै कै हमीर हठी की रहै हठ गाढ़ी।—हम्मीर०, पृ० १६।

सानक—वि० [अ०] समान। तुल्य। उ०—जिनके अंगे चान सूरज भीक के सानक हैं दो। ऐसे ऐसे आफताबों को उठा लाती हूँ मैं।—दक्खिनी०, पृ० २६५।

साननाः[१]—क्रि० स० [हिं० सनना का सक० रूप] १. दो वस्तुओं को आपस में मिलाना; विशेषतः चूर्ण आदि को तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना। गूँधना। जैसे,—आटा सानना। २. संमिलित करना। शामिल करना। उत्तरदायी बनाना। जैसे,—आप मुझे तो व्यर्थ ही इस मामले में सानते हैं। ३. मिलाना। लपेटना। मिश्रित करना। संयुक्त करना। जैसे,—तुमने अपने दोनों हाथ मिट्टी में सान लिए। उ०—यह सुनि धावत धरनि चरन की प्रतिमा खगी पंथ में पाई। नैन नीर रघुनाथ सानिकै शिव सो गात चढ़ाई।—सूर (शब्द०)।

संयो० क्रि०—डालना।—देना। लेना।

साननाः[२]—क्रि० स० [हिं० सान + ना (प्रत्य०)] सानपर चढ़ाकर धार तेज करना। (क्व०)।

सानमान(पु)—वि० [सं० सानुमत्] चोटियों वाला। ऊँचा (पर्वत)। उ०—बलिहारी भूधर तुमैं धीर करैं गुन गान। सानमान कहि अचल कहि सब जग करैं बखान।—दीन ग्रं०, पृ० २१०।

सानल[१]—संज्ञा पुं० [सं०] शाल वृक्ष से निकलनेवाला निर्यास [को०]।

सानल[२]—वि० अनलयुक्त। अग्नियुक्त। २. कृत्तिका नामक नक्षत्र से युक्त [को०]।

सानसि—संज्ञा पुं० [सं०] सोना। सुवर्ण [को०]।

सानाथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] मदद। सहयोग। सहायता।

सानिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंशी। मुरली।

सानिधि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सान्निध्य] दे० 'सान्निध्य'। उ०—भगवदीन संगकरि, बात उनकी लै सदाँ, सानिधि इहि देति भैई। —नंद० ग्रं०, पृ० ३२८।

सानिध्य—संज्ञा पुं० [सं० सान्निध्य] दे० 'सान्निध्य'। उ०—और श्री आचार्यजी के पलंगड़ी सानिध्य आत्मनिवेदन की आज्ञा किए। —दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १६।

सानिया—संज्ञा पुं० [अ० सानियह्] १. घंटे का ६०वाँ भाग। मिनिट। २. पल। क्षण। लमहा [को०]।

सानियिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सानिका' [को०]।

सानी[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सानना] १. वह भोजन जो पानी में सानकर पशुओं को खिलाया जाता है।

विशेष—नाद में भूसा भिगो देते है और उसमें खली, दाना, नमक आदि छोड़कर उसे पशुओं को खिलाते हैं। इसी को सानी कहते हैं।

२. अनुचित रीति से एक में मिलाए हुए कई प्रकार के खाद्यपदार्थ। (व्यंग्य)। ३. गाड़ी के पहिए में लगाने की गिट्टक।

सानी[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शण या शाण, शाणी (= सन का वस्त्र) प्रा० साणी] दे० 'सनई'।

सानी[३]—वि० [अ०] १. दूसरा। द्वितीय। जैसे,—औरंगजेब सानी। २. बराबरी का। समानता रखनेवाला। मुकाबले का। जैसे,—इन बातों में तो तुम्हारा सानी और कोई नहीं है। उ०—बले अब तूँ ओ शै के सानी नहीं। जो देऊँ अन्यिा अव सो तेरे तईं।—दक्खिनी०, पृ० २३६।

यौ०—ला सानी = जिसके समान और कोई न हो। अद्वितीय।

सानु—संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत की चोटी। शिखर। उ०—अचल हिमालय का शोभनतम लता कलित शुचि सानु शरीर।—कामायनी, पृ० २९। २. अंत। सिरा। ३. समतल भूमि। (पर्वत के ऊपर की) चौरस जमीन। ४. बन। जंगल। विशेषतः पहाड़ी जंगल। ५. मार्ग। रास्ता। ६. पल्लव। पत्ता। ७. सूर्य। ८. विद्वान्। पंडित। ९. अँखुआ। अंकुर (को०)। १०. अतट। करारा। प्रपात (को०)। ११. चट्टान (को०)। १२. हवा का झोंका। प्रभंजन (को०)।

सानुकंप—वि० [सं० सानुकम्प] अनुकंपा या दया से युक्त। सहानुभूतिशील [को०]।

सानुक—वि० [सं०] उठा हुआ। उद्धत। उच्छ्रित। दृप्त। घमंडी [को०]।

सानुकूल—वि० [सं०] दे० 'अनुकूल'। उ०—सदा सो सानुकूल रह मो पर। कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर।—मानस, १।१७।

सानुकूल्य—संज्ञा पुं० [सं०] अनुकूल होने का भाव। अनुकूलता। पक्षग्रहण। सहयोगिता [को०]।

सानुक्रोश—वि० [सं०] अनुक्रोश अर्थात् कृपायुक्त। दयालु। कृपालु [को०]।

सानुग—वि० [सं०] अनुगमन करनेवालों या अनुचरों से युक्त [को०]।

सानुज[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रपौंड्रिक वृक्ष। पुंडेरी। २. तुंबुरु नामक वृक्ष।

सानुज[२]—वि० छोटे भाई के साथ। उ०—सानुज पठइअ मोहिं बन कीजिअ सबहि सनाथ।—मानस, २।२६७।

सानुतर्ष—वि० [सं०] तृषा या प्यासयुक्त। प्यासा [को०]।

सानुनय[१]—वि० [सं०] विनयशील। शिष्ट।

सानुनय[२]—क्रि० वि० विनम्रता के साथ [को०]।

सानुनासिक—वि० [सं०] १. जो अनुनासिक वर्ण से युक्त हो। २. नाक के बल गानेवाला [को०]।

सानुपातिक—वि० [सं०] समुचित अनुपातयुक्त। उचित अंशयुक्त। उ०—सानुपातिक संगीतात्मकता, रचना शैली की प्रधानता तथा ऐसी पूर्णता जो विश्लेषण से परे होने पर भी प्रतिदिन एक नए अर्थ को जन्म देगी।—हिं० का० आं० प्र०, पृ० १४४।

सानुप्रास—वि० [सं०] जिसमें अनुप्रास हो। अनुप्रास से युक्त [को०]।

सानुप्लव—वि० [सं०] अनुयायी वर्ग से युक्त। अनुगंताओं, सहचरों आदि के साथ [को०]।

सानुबंध—वि० [सं० सानुबन्ध] १. अनुबंधयुक्त। व्यतिक्रमरहित। क्रमबद्ध। २. जिसके परिणाम हों। परिणाम या फल से युक्त। ३. अपनी वस्तुओं के साथ [को०]।

सानुभाव—वि० [सं० स+अनुभाव] अनुभावयुक्त। कृपालु। सदय। अनुकूल। उ०—तब यह ब्राह्मन ने कह्यो जो मो पैं महादेव सानुभाव हैं।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ४५।

सानुभावता—संज्ञा स्त्री० [सं० सानुभावता] अनुभाव युक्त होने की स्थिति या भाव। उ०—सो कछूक दिन में इनको सानुभावता जनाए।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १०।

सानुमान्—संज्ञा पुं० [सं० सानुमत्] पर्वत [को०]।

सानुमानक—संज्ञा पुं० [सं०] पुंडेरी। प्रपौंड्रीक।

सानुराग—वि० [सं०] अनुरागयुक्त। प्रेमयुक्त। आसक्त [को०]।

सानुरुह—वि० [सं०] पहाड़ पर या पहाड़ की चोटी पर पैदा होनेवाला [को०]।

सानुष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सानूकर्ष—वि० [सं०] धुरीवाला (रथ) [को०]।

सानेयी संज्ञा स्त्री० [सं०] वंशी [को०]।

सानेरमा—वि० [सं०] निर्माता। बनानेवाला। स्रष्टा [को०]।

सानोका†—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की घास।

सान्नत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

सान्नत्य—वि० [सं०] स्वाभाविक या प्राकृतिक। प्रवृत्ति संबंधी [को०]।

सान्नहनिक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सान्नाहिक'।

सान्नाय—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्रों से पवित्र किया हुआ वह घी जिससे हवन किया जाता है।

सान्नाहिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सन्नाह पहने हो। कवचधारी।

सान्नाहिक²—वि० १. युद्धार्थ प्रोत्साहित करनेवाला। २. कवचधारी। सन्नाह से युक्त [को०]।

सान्नाहुक—वि० [सं०] जो कवच, शस्त्र आदि धारण करने योग्य हो [को०]।

सान्निध्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. समीपता। सामीप्य। सन्निकटता। २. एक प्रकार की मुक्ति जिसमें आत्मा का ईश्वर के समीप पहुँच जाना माना जाता है। मोक्ष।

सान्निध्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सान्निध्य का धर्म या भाव।

सान्निपातकी—संज्ञा संज्ञा [सं०] एक प्रकार का योनि रोग जो त्रिदोष से उत्पन्न होता है।

सान्निपातिक—वि० [सं०] १. सन्निपात संबंधी। सन्निपात का। २. त्रिदोष संबंधी। त्रिदोष से उत्पन्न होनेवाला (रोग)। उ०—तीनो दोषों के लक्षण मिलते हों उसको सान्निपातिक रक्त पित्त जानना।—माधव०, पृ० १७। ३. उलझा हुआ। पेचीदा। जटिल (को०)।

सान्न्यासिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जो अपने धार्मिक जीवन के चतुर्थ आश्रम में प्रविष्ट हो। वह जिसने संन्यास ग्रहण किया हो। सन्यासी।

सान्मातुर—संज्ञा पुं० [सं०] सती साध्वी स्त्री की संतान [को०]।

सान्यपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के एक वैदिक आचार्य।

सान्वय—वि० [सं०] १. वंशपरंपरागत। २. कुल या वशजों के साथ। ३. कुलविशेष से संबंधित। ४. महत्वपूर्ण। ५. समान कार्य या व्यापारवाला। ६. पद्य के शब्दों की वाक्यरचना के नियमानुसार परस्पर क्रमबद्धता से युक्त [को०]।

साप पु¹ संज्ञा पुं० [सं० शाप] दे० 'शाप'। उ०—ऋण छूटचो पूरचो बचन, द्विजहु न दीनो साप।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० २९३।

साप†²—वि० [अ० साफ़] दे० 'साफ'। उ०—मना मनशा साप करो।—दक्खिनी०, पृ० ५९।

सापणी पु—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पिणी] दे० 'साँपिन'। उ०—पंथी एक सँदेसणउ, लग ढोलइ पैहच्याइ। निकसी वेणी सापणी, स्वात न बरसउ आइ।—ढोला०, दू० १२५।

सापत्न¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सापत्नी] १. सपत्न या शत्रु संबंधी। २. सौत संबंधी या सौत से उत्पन्न [को०]।

सापत्न²—संज्ञा पुं० एक ही पति की अनेक पत्नियों से उत्पन्न संतति। सौतेली संतान [को०]।

सापत्नक—संज्ञा पुं० [सं०] १. द्वेष। शत्रुता। २. दे० 'सापत्न्य' [को०]।

सापत्नेय—वि० [सं०] सपत्नी का। सौतेला [को०]।

सापत्न्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. सपत्नी का भाव या धर्म। सौतपन। २. सपत्नी का पुत्र। सौत का लड़का। ३. शत्रु। दुश्मन। ४. द्वेष। शत्रुता (को०)। ५. सौतेला भाई (को०)।

सापत्न्य²—वि० [सं०] सपत्नी संबंधी। सपत्नी या सौत का [को०]।

सापत्न्यक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सापत्नक' [को०]।

सापत्य¹—वि० [सं०] १. अपत्ययुक्त। संततियुक्त। संतान युक्त। २. जिसे गर्भ हो। गर्भ से युक्त [को०]।

सापत्य²—संज्ञा पुं० १. सपत्नी का पुत्र। सौत का बेटा। २. सौतेला भाई [को०]।

सापत्रप—वि० [सं०] अपत्रप या संकोच में पड़ा हुआ। लज्जित [को०]।

सापद पु—संज्ञा पुं० [सं० श्वापद] श्वापद। पशु।

सापन¹—संज्ञा पुं० [देश० ?] एक प्रकार का रोग। जिसमें सिर के बाल गिर जाते हैं।

सापन पु²—संज्ञा स्त्री० [सं० सर्पिणी] दे० 'साँपिन'। उ०—हन्यौ संग दुअ अंग निकसि दुअ अंगुल सापन।—पृ० रा०, ७।१२०।

सापना पु†—क्रि० स० [सं० शाप, हिं० साप+ना (प्रत्य०)] १. शाप देना। बददुआ देना। उ०—चहत महामुनि जाग गयो। नीच निसाचर देत दुसह दुख कृस तनु ताप तयो। सापे पाप नए निदरत खल, तब यह मंत्र ठयो। विप्र साधु सुर धेनु धरनि हित हरि अवतार लयो।—तुलसी ग्रं०, पृ० २९३। २. दुर्वचन कहना। गाली देना। कोसना।

सापराध—वि० [सं०] दोषी। अपराधी [को०]।

सापवाद—वि० [सं०] लोकापवाद से युक्त। कलंकपूर्ण [को०]।

सापवारक—वि० [सं०] जिसका अपवाद हो सके [को०]।

सापाय—वि० [सं०] १. शत्रु से लड़नेवाला। २. अपाययुक्त। खतरे से पूर्ण [को०]।

सापाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] वह मकान जिसके पिछले भाग में खुली दालान हो (को०)।

सापिंड्य—संज्ञा पुं० [सं० सापिण्ड्य] सापिंड होने का भाव या धर्म।

सापुरस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सत्पुरुष] दे० 'सत्पुरुष'। उ०—(क) सोइ सूर सापुरसो।—रा० रू०, पृ० १३८। (ख) अंग न छूटै आखड़ी, सीहाँ सापुरसाँह।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० १६।

सापेक्ष—वि० [सं०] एक दूसरे के संबंध पर स्थित। अपेक्षा सहित। उ०—मानम, मानुषी, विकासशास्त्र हैं तुलनात्मक, साक्षेप ज्ञान।—युगांत, पृ० ६०।

सापेक्षिक—वि० [सं०] दे० 'सापेक्ष'। उ०—सर्वमान्य तथ्य तो एक सापेक्षिक बात है।—आचार्य०, पृ० १२६।

सापेक्ष्य—वि० [सं०] अपेक्षित। आवश्यक। उ०—इसी से इस प्रश्न के संबंध में सावधानी सापेक्ष्य है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २३८।

सात्ततंत्व—संज्ञा पुं० [सं० सात्ततन्त्व] प्राचीन काल का एक धार्मिक संप्रदाय।

सातपद[1]—वि० [सं०] [स्त्री० साप्तपदी] १. सप्तपदी। सात पद साथ साथ चलने या सात शब्द, वाक्य परस्पर वार्ता करने से संबंधित। २. सप्तपदी संबंधी।

सातपद[2]—संज्ञा पुं० १. घनिष्ठता। मित्रता। २. विवाह के समय वर तथा वधू द्वारा यज्ञाग्नि की सात प्रदक्षिणा करना (को०)।

सातपदीन—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'साप्तपद'।

सातपुरुष—वि० [सं०] दे० 'साप्तपौरुष'।

सातपौरुष—वि० [सं०] [वि० स्त्री० साप्तपौरुषी] सात पीढ़ियों तक जानेवाला। सात पीढ़ियों को संमिलित करनेवाला (को०)।

सातमिक—वि० [सं०] १. सप्तमी संबंधी। सप्तमी का। २. सप्तमी विभक्ति से संबंधित (को०)।

सातरथवाहनि—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक प्राचीन ऋषि का नाम।

साताहिक[1]—वि० [सं०] १. सप्ताह से संबंधित। २. सप्ताह भर का या सप्ताह भर के लिये। जैसे,—साप्ताहिक राशन। ३. प्रति सप्ताह या सप्ताह सप्ताह प्रकाशित होनेवाला। जैसे,—साप्ताहिक पत्र।

साताहिक[2]—संज्ञा पुं० साप्ताहिक समाचार पत्र।

साफ[1]—वि० [अ० साफ़] १. जिसमें किसी प्रकार का मैल या कूड़ा करकट आदि न हो। मैला या गँदला का उलटा। स्वच्छ। निर्मल। जैसे,—साफ कपड़ा, साफ कमरा, साफ रंग। २. जिसमें किसी और चीज की मिलावट न हो। शुद्ध। खालिस। जैसे,—साफ पानी। ३ जिसकी रचना या संयोजक अंगों में किसी प्रकार की त्रुटि या दोष न हो। जैसे,—साफ लकड़ी। ४. जो स्पष्टतापूर्वक अंकित या चित्रित हो। जो देखने में स्पष्ट हो। जैसे,—साफ लिखाई, साफ छपाई, साफ तसवीर। ५. जिसका तल चमकीला और सफेदी लिए हो। उज्ज्वल। जैसे,—साफ कपड़ा। ६. जिसमें किसी प्रकार का भद्दापन या गड़बड़ी आदि न हो। जिसे देखने में कोई दोष न दिखाई दे। जैसे,—साफ खेल। (इंद्रजाल या व्यायाम आदि के), साफ कुदान। ७. जिसमें किसी प्रकार का झगड़ा, पेच या फेरफार न हो जिसमें कोई बखेड़ा या झंझट न हो। जैसे,—साफ मामला, साफ बरताव। ८. जिसमें धुँधलापन न हो। स्वच्छ। चमकीला। जैसे,—साफ शीशा, साफ आसमान। ९. जिसमें किसी प्रकार का छल कपट न हो। निष्कपट। जैसे,—साफ दिल। साफ आदमी।

मुहा०—साफ साफ सुनाना=बिल्कुल स्पष्ट और ठीक बात कहना। खरी बात कहना।

१०. जो स्पष्ट सुनाई पड़े या समझ में आवे। जिसके समझने या सुनने में कोई कठिनता न हो। जैसे, साफ आवाज, साफ लिखावट, साफ खबर। ११. जिसका तल ऊबड़ खाबड़ न हो। समतल। हमवार। जैसे,—साफ जमीन, साफ मैदान। १२. जिसमें किसी प्रकार की विघ्न बाधा आदि न हो। निर्विघ्न। निर्बाध। १३. जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो। सादा। कोरा। १४. जिसमें किसी प्रकार का दोष न हो। बेऐब। १५. जिसमें से अनावश्यक या रद्दी अंश निकाल दिया गया हो। १६. जिसमें से सब चीजें निकाल ली गई हों। जिसमें कुछ तत्व न रह गया हो।

यौ०—साफ साफ=स्पष्ट रूप से। खुलकर।

मुहा०—साफ करना=(१) मार डालना। वध करना। हत्या करना। (२) नष्ट करना। चौपट करना। बरबाद करना। न रहने देना। (३) खा जाना। मैदान साफ होना=किसी प्रकार की विघ्न बाधा न होना। निर्द्वंद्व होना। साफ बोलना=(१) किसी शब्द का ठीक ठीक उच्चारण करना। स्पष्ट बोलना। (२) साफ होना। समाप्त होना। खतम होना। ११. लेनदेन आदि का निपटना। चुकता होना। जैसे,—हिसाब साफ होना।

साफ[2]—क्रि० वि० १. बिना किसी प्रकार के दोष, कलंक या अपवाद आदि के। बिना दाग लगे। जैसे,—साफ छूटना। २. बिना किसी प्रकार की हानि या कष्ट उठाए हुए। बिना किसी प्रकार की आँच सहे हुए। जैसे,—साफ बचना। साफ निकलना। ३. इस प्रकार जिसमें किसी को पता न लगे या कोई बाधक न हो। जैसे,—(माल या स्त्री आदि) साफ उड़ा ले जाना। ४. बिलकुल। नितांत। जैसे,—साफ इनकार करना। साफ बेवकूफ बनाना। ५. बिना अन्न जल के। निराहार।

साफगो—वि० [फ़ा० साफ़गो] स्पष्ट कहनेवाला। स्पष्टवक्ता (को०)।

साफगोई—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० साफ़गोई] स्पष्टवादिता। दो टूक या साफ साफ बात कहना (को०)।

साफ़दिल—वि० [फ़ा० साफ़दिल] निष्कपट हृदयवाला। सच्चे दिल का।

साफदिली—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० साफ़दिली] १. अंतःशुद्धि। मन का निष्कपट होना। २. किसी के प्रति द्वेषभाव न होना।

साफदीदा— वि० [फ़ा० साफ़दीदह्] निर्लज्ज। बेशरम। धृष्ट।

साफलⓅ—संज्ञा पुं० [सं० साफल्य] दे० 'साफल्य'। उ० - हरि भज साफल जीवना, पर उपचार समाइ। दादू मरणा तहँ भला, जहाँ पसु पंखी खाइ।—संतवाणी०, पृ० ७८।

साफल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफल होने का भाव। सफलता। कृत-कार्यता। २. सिद्धि। लाभ। ३. उत्पादकता। उपयोगिता।

साफा - संज्ञा पुं० [अ० साफ़] [स्त्री० साफी] १. सिर पर बाँधने की पगड़ी। मुरेठा। मुड़ासा।

यौ०—साफेबाज = साफा पहननेवाला। उ०—चाहे साफेबाज, फेटेबाज या अम्मामेबाज।—प्रेमघन०, भा० ३, पृ० २७७।

२. शिकारी जानवरों को शिकार के लिये या कबूतरों को दूर तक उड़ने के लिये तैयार करने के उद्देश्य से उपवास कराना।

मुहा०—साफा देना = उपवास करना। भूखा रखना।

३. नित्य के पहनने या ओढ़ने के वस्त्रों आदि को साबुन लगाकर साफ करना। कपड़े धोना। (बोल०)।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

यौ०—साफा पानी = अवकाश के समय इतमीनान के साथ कपड़ों का धोना और नहाना।

साफिर[१]—संज्ञा पुं० [अ० साफ़िर] १. दुर्बल घोड़ा। २. सफर करने-वाला यात्री [को०]।

साफी—संज्ञा स्त्री० [अ० साफ़ी] १. हाथ में रखने का रूमाल। दस्ती। २. वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते हैं। ३. भाँग छानने का कपड़ा। छनना। उ०—साफी छानै सुरति अमल हरि नाम का।—पलटू०, भा० २, पृ० ६४। ४. एक प्रकार का रंदा जो लकड़ी को बिलकुल साफ कर देता है। ५. वह कपड़ा जिससे चूल्हे पर से कड़ाही आदि उतारी जाय।

साबकाⓅ—संज्ञा पुं० [अ० साबिक़ह्] दे० 'साबिका'। उ०—बाप साबका करै लराई मयासद मतवारी।—कबीर ग्रं०, पृ० ३२७।

साबतⓅ[१]—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त] सामंत। सरदार। (डिं०)।

साबतⓅ[२]—वि० [फ़ा० अ० सबूत] दे० 'साबूत'। उ०—मुसकनि मल्हिम लगाय घाव साबत करि दीन्हौं।—ब्रज० ग्रं०, पृ० १४।

साबन—संज्ञा पुं० [अ० साबून, उर्दू साबुन] दे० 'साबुन'।

साबर—संज्ञा पुं० [सं० शम्बर] १. दे० 'साँभर'। २. साँभर मृग का चमड़ा जो मुलायम होता है। ३. शबर जाति के लोग। ४. थूहर वृक्ष। ५. मिट्टी खोदने का एक औजार। सबरी। ६. एक प्रकार का सिद्ध मंत्र जो शिवकृत माना जाता है। उ०—स्वारथ के साथी मेरे हाथ सो न लेवा देई काहू तो न पीर रघुबर दीन जन की। साप सभा साबर लबार भए देव दिव्य दुसह साँसति कीजै आगे दै या तन की।—तुलसी (शब्द०)।

साबरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साबर + ई (प्रत्य०)] साँभर मृग का मुलायम चमड़ा। उ०—दूजे पैं साबरी परतला परि मन मोहत।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० १३।

साबल†—संज्ञा पुं० [सं० शबर] बरछी। भाला। उ०—सूरजमाल दुकाल नेज गज ढाल निहारे। फल साबर फोरियों, विडंग औरियौ बधारे।—रा० रू०, पृ० ८६। २. सबरी। साबर।

साबस‡[१]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाबास] वाहवाही देने की क्रिया। दाद। दे० 'शाबाश'।

साबस[२]—अव्य० वाह वाह। धन्य। साधु साधु। उ०—बोल्यौ बहुरि हमीर, साबस जग तेरौ जनम।—हम्मीर०, पृ० ४८।

साबाध—वि० [सं०] अस्तव्यस्त। बाधायुक्त। अव्यवस्थित [को०]।

साबिक—वि० [अ० साबिक़] पूर्व का। पहले का। पुराने समय का। उ०—प्रभू जू मैं ऐसो अमल कमायो। साबिक जमा हुती जो जोरी मीजाँकुल तल लायो।—सूर (शब्द०)।

यौ०—साबिक दस्तूर = जैसा पहले था, वैसा ही। पहले की ही तरह। जिसमें कुछ परिवर्तन न हुआ हो। जैसे,—उसका हाल वही साबिक दस्तूर है।

साबिका—संज्ञा पुं० [अ० साबिक़ह्] १. जान पहचान। मलाकात। भेंट। २. उपसर्ग (को०)। ३. संबंध। सरोकार। व्यवहार।

मुहा०—साबिका पड़ना = (१) काम पड़ना। वास्ता पड़ना। (२) लेन देन होना। (३) मेल मिलाप होना।

साबिग—वि० [अ० साबिग़] रँगनेवाला [को०]।

साबित[१]—वि० [अ०, फ़ा०] जिसका सबूत दिया गया हो। प्रमाणित। सिद्ध। २. मजबूत। दृढ़ (को०)। ३. ठहरा हुआ। स्थिर (को०)। ४. सबूत। समग्र। सब। साबूत। पूरा। ५. दुरुस्त। ठीक। उ०—द्वै लोचन साबित नहि तेऊ।—सूर (शब्द०)।

साबित[२]—संज्ञा पुं० वह नक्षत्र या तारा जो चलता न हो, एक ही स्थान पर सदा ठहरा रहता हो।

साबितकदम—वि० [अ० साबितक़दम] दृढ़निश्चयी। दृढ़प्रतिज्ञ [को०]।

साबितकदमी—संज्ञा स्त्री० [अ० साबितक़दमी] इरादे की दृढ़ता। दृढ़प्रतिज्ञता [को०]।

साबिर—वि० [अ०] [स्त्री० साबिरा] १. सहनशील। धैर्यवान। २. जो प्रत्येक स्थिति में ईश्वरकृपा पर निर्भर हो [को०]।

साबुत—वि० [फ़ा० सबूत] १. जिसका कोई अंग कम न हो। साबूत। संपूर्ण। २. दुरुस्त। ३. स्थिर। निश्चल।

साबुन—संज्ञा पुं० [अ०] रासायनिक क्रिया से प्रस्तुत एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और वस्त्रादि साफ किए जाते हैं।

विशेष—यह सज्जी, चूने, सोड़ा तेल और चर्बी आदि के संयोग से बनाया जाता है। देशी साबुन में चर्बी नहीं डाली जाती, पर विलायती साबुन में प्रायः चर्बी का मेल रहता है। शरीर में लगाने के विलायती साबुनों में अनेक प्रकार की सुगंधियाँ भी रहती हैं।

यौ०—साबुनफरोश = साबुन बेचनेवाला। साबुनसाज = साबुन बनानेवाला। साबुनसाजी = साबुन बनाने का काम।

साबूत—वि० [फ़ा० सबूत] दे० 'साबुत'। उ०—संत सिलाह संतोख साबूत तुम पहिरु सहिदान मरदान यारा।—संत० दरिया, पृ० ८१।

साबूदाना—संज्ञा पुं० [अं० सैगो, हि० सागू + दाना] दे० 'सागूदाना'।

साबूनी—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की मिठाई [को०]।

साब्दी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की दाख। द्राक्षा।

साब्दी² ⓟ—वि० [सं० शाब्दी] शब्द संबंधिनी। दे० 'शाब्दी'।

साभार—क्रि० वि० [सं०] आभार के साथ। एहसान प्रकट करते हुए।

साभाव्य—संज्ञा पुं० [सं०] प्रकृति या स्वभाव की परख। प्रकृति की पहिचान [को०]।

साभिनय—क्रि० वि० [सं०] नाटकीयता के साथ। अभिनय मुद्रा के साथ [को०]।

साभिनिवेश—वि० [सं०] १. किसी वस्तु के लिये उत्कट अनुराग, रुचि, पक्षपात आदि से युक्त। अभिनिवेशयुक्त। २. अभिनिवेशपूर्वक [को०]।

साभिप्राय—वि० [सं०] १. अभिप्राय के साथ। विशेष अर्थ से युक्त। २. विशेष प्रयोजन से युक्त। सोद्देश्य। उ०—सकल साभिप्राय, समझ पाया था नहीं मैं, थी तभी यह हाय।—अपरा, पृ० १६४।

साभिमान¹—वि० [सं०] अभिमानयुक्त। घमंडी।

साभिमान²—अव्य० अभिमान के साथ। अभिमानपूर्वक [को०]।

साभिवादन—वि० [सं० स + अभिवादन] अभिवादनयुक्त। अभिवादन के साथ उ०—नवीन नरेश महाराज बंधुवर्मा ने साभिवादन श्री चरणों में संदेश भेजा है।—स्कंद०, पृ० ७।

साभ्यसूय—वि० [सं०] डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु। द्वेषी [को०]।

सामंजस्य—संज्ञा पुं० [सं० सामञ्जस्य] १. औचित्य। २. यथार्थता। शुद्धता (को०)। ३. उपयुक्तता। ४. अनुकूलता। ५. वैषम्य या विरोध आदि का अभाव। मेल।

सामंत¹—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त] १. वीर। योद्धा। उ०—अजबेस सामंत भगवान बौले त्याहीं। सेस ज्वाला की सी पर सोनागिर ज्याहीं।—रा० रू०, पृ० ११४। २, किसी राज्य का करद कोई बड़ा जमींदार या सरदार। शुक्रनीति के अनुसार वह नरेश जिसकी भूमि का राजस्व ३ लाख कर्ष हो। ३. पड़ोसी। ४. श्रेष्ठ प्रजा। ५. समीपता। सामीप्य। नजदीकी। ६. पड़ोसी राजा। पड़ोस के राज्य का नरेश (को०)।

सामंत²—वि० १. समीपवर्ती। सीमावर्ती। सरहद्दी। २. अनुगत। सेवक। ३. सर्वव्यापक। विश्वव्यापक [को०]।

सामंतचक्र—संज्ञा पुं० [सं० सामन्तचक्र] पड़ोसी अथवा करद राजाओं का मंडल [को०]।

सामंतज—वि० [सं० सामन्तज] जो पड़ोसी या करद राजाओं द्वारा उत्पन्न हो [को०]।

सामंतभारती—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त भारती] राग मल्लार और सारंग के मेल से बना हुआ एक संकर राग।

सामंतवासी—वि० [सं० सामन्तवासिन्] पड़ोस में रहनेवाला। पड़ोसी [को०]।

सामंत सारंग—संज्ञा पुं० [सं० सामन्तसारङ्ग] एक प्रकार का सारंग राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

सामंती¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सामन्ती] एक प्रकार की रागिनी जो मेघ राग की प्रिया मानी जाती है।

सामंती²—संज्ञा स्त्री० [सं० सामन्त + ई (प्रत्य०)] १. सामंत का भाव या धर्म। २. सामंत का पद।

सामंती³—वि० सामंत की। सामंत संबंधी। उ०—मध्यकाल के कवियों ने इस सामंती चाकरी के विरोध में लोक साहित्य की नींव डाली थी।—आचार्य०, पृ० १२।

सामंती†⁴—संज्ञा स्त्री० [देशी] समतल भूमि। सम भूमि [को०]।

सामंतेय—संज्ञा पुं० [सं० सामन्तेय] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सामंतेश्वर—संज्ञा पुं० [सं० सामन्तेश्वर] चक्रवर्ती सम्राट्। शाहंशाह।

सामंद ⓟ†—संज्ञा पुं० [सं० समुद्र, प्रा० समुद्द] दे० 'समुद्र'। उ०—दुझल जिण भुजाँबलहूत आठूँ दिसाँ, लंघ सामंद कीधी लड़ाई।—रघु० रू०, पृ० ३१।

सामंदर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] अग्नि कीट। आग में रहनेवाला कीड़ा। समंदर [को०]।

साम¹—संज्ञा पुं० [सं० सामन्] १. वे वेद मंत्र जो प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाए जाते थे। छंदोबद्ध स्तुतिपरक मंत्र या सूक्त। २ चारों वेदों में तीसरा वेद। विशेष—दे० 'सामवेद'। ३. मीठी बातें करना। मधुर भाषण। ४. राजनीति के चार अंगों या उपायों में से एक। अपने वैरी या विरोधी को मीठी बातें करके प्रसन्न करना और अपनी ओर मिला लेना। (शेष तीन अंग या उपाय दाम, दंड और भेद हैं। ५. संतुष्ट करना। शांत करना (को०)। ६. मृदुता। कोमलता (को०)। ७. ध्वनि। स्वर। आवाज (को०)।

साम²—वि०, संज्ञा पुं० [सं० श्याम] दे० 'स्याम'। उ०—धूम साम धौरे घन छाए।—जायसी ग्रं०, पृ० १५२।

साम³—संज्ञा पुं० [अ० शाम] दे० 'शाम' (देश)।

साम⁴—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शाम] सायंकाल। दे० 'शाम'। उ०—घुरबिनिया छोड़त नहिं कबहीं होइ भोर भा साम।—गुलाल०, पृ० १६।

साम ⓟ⁵—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'शामी' (लोहे का बंद)। हथियार। उ०—सूरा के सिर साम है, साधों के सिर राम।—दरिया० बानी, पृ० १४।

साम ⓟ⁶—संज्ञा पुं० [फ़ा० सामान, सामाँ] दे० 'सामान'। उ०—बालमीकि अजामिल के कछु हुतो न साधन सामो।—तुलसी (शब्द०)।

साम⁷—वि० [सं०] जो पचा न हो। जिसका अच्छी तरह पाक न हुआ हो [को०]।

सामक¹—संज्ञा पुं० [सं० श्यामक, प्रा० सामय] साँवाँ नामक अन्न। विशेष दे० 'साँवाँ'।

सामक²—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह मूल धन जो ऋण स्वरूप लिया या दिया गया हो। कर्ज का असल रुपया। २. सान धरने का पत्थर। ३. वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो। ४. समान धन।

सामक[३]--वि० सामवेद संबंधी । सामवेदीय [को०] ।

सामकपुंख--संज्ञा पुं० [सं० सामकपुङ्ख] सरफोंका घास ।

सामकल--संज्ञा पुं० [सं०] मृदु स्वर या मैत्रीपूर्ण वार्ता [को०] ।

सामकारी--संज्ञा पुं० [सं० सामकारिन्] १. वह जो मीठे वचन कह कर किसी को ढाढ़स देता हो । सांत्वना देनेवाला । २. एक प्रकार का सामगान ।

सामग[१]--संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सामगी] १. वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो । २. विष्णु का एक नाम ।

सामग[२]--वि० सामगायक । उ०--गर्जना के साथ वेदों को गानेवाले सामग ऋषि समाज ने राजसूय यज्ञ करवाया तो भी यज्ञपूर्ति का शंख नहीं बजा ।--राम० धर्म०, पृ० २८० ।

सामगर्भ--संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु ।

सामगान--संज्ञा पुं० [सं०[१. एक प्रकार का साम । २. वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो ।

सामगानप्रिय--संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव । २. मंगल ग्रह [को०] ।

सामगाय--संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सामगान का अच्छा ज्ञाता हो । २. सामगान ।

सामगायक--संज्ञा पुं० [सं०] सामवेदी ब्राह्मण [को०] ।

सामगायन --संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु २. साम का गान [को०] ।

सामगायी--वि० [सं० सामगायिन्] साम गानेवाला । सामगायक [को०] ।

सामग्री--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्य में उपयोग होता है । जैसे,--यज्ञ की सामग्री । २. असबाब । सामान । ३. आवश्यक द्रव्य । जरूरी चीज । ४. किसी कार्य की पूर्ति के लिये आवश्यक वस्तु । साधन ।

सामग्य -संज्ञा पुं० [सं०] १. अस्त्र शस्त्र । हथियार । २. क्षेम । कुशल (को०) । ३. समग्रता । संपूर्णता (को०) । ४. समुदायत्व । समूहबद्धता (को०) । ५. भांडार । खजाना ।

सामज[१]--वि० [सं०] १. जो सामवेद से उत्पन्न हुआ हो । २. साम नीति के कारण उत्पन्न ।

सामज[२]--संज्ञा पुं० हाथी, जिसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के सामगान से मानी जाती है ।

सामजात--वि० [सं०] दे० 'सामज' [को०] ।

सामत[१]--संज्ञा पुं० [सं० सामन्त] दे० 'सामंत' ।

सामत[२]--संज्ञा स्त्री० [अ० शामत] दे० 'शामत' ।

सामताⓅ[१]--संज्ञा स्त्री० [सं० समता] समत्व । साम्य । समता । उ०--दरिया साध और स्वांग का, कोड कोस या बीच । नाम स्वा सो सामता स्वांग काल की कीच ।--दरिया० बानी, पृ० ३३ ।

सामता[२]--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सामत्व' ।

सामतिⓅ--संज्ञा स्त्री० [सं० सामर्थ्य, प्रा० सामच्छ, सामत्थ] दे० 'सामर्थ्य' । उ०--जा घट जैसी सामति देषो ता घट तैसा मेलो ।--रामानंद०, पृ० १६ ।

सामत्रय--संज्ञा पुं० [सं०] हर्रे, सोंठ और गिलोय इन तीनों का समूह ।

सामत्व--संज्ञा पुं० [सं०] साम का भाव या धर्म । सामता ।

सामध--Ⓟ--संज्ञा पुं० [सं० सम्बन्धी, हिं० समधी] विवाह के अवसर पर समधियों के परस्पर मिलने की एक रस्म । उ०--(क) सामध देखि देव अनुरागे ।--(ख) पहिलहिं पवरि सु सामध भा सुखदायक । इत बिधि उत हिमवान सरिस सब लायक ।--तुलसी ग्रं०, पृ० ४० ।

सामध्वनि--संज्ञा पुं० [सं०] सामवेद की ध्वनि । साम का गान [को०] ।

सामन[१]--वि० [सं०] शांतिप्रिय । अनुद्विग्न । स्वस्थ । साम द्वारा उपचार करने योग्य [को०] ।

सामनⓅ†[२]--संज्ञा पुं० [सं० श्रावण, हिं० सावन] दे० 'सावन' । उ०--सखी री सामन दूल्है आयौ ।--पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० १४८ ।

सामना--संज्ञा पुं० [हिं० सामने, पु० हिं० सम्मुह, सामुँहे] १. किसी के समक्ष होने की क्रिया या भाव । जैसे,--जब हमारा उनका सामना होगा, तब हम उनसे बातें करेंगे ।

मुहा०--सामने आना = आगे आना । संमुख आना । जैसे,--अब तो वह कभी हमारे सामने ही नहीं आता । सामने का = (१) जो समक्ष हो । (२) जो अपने देखने में हुआ हो । जो अपनी उपस्थिति में हुआ हो । जैसे,--(क) यह तो हमारे सामने का लड़का है । (ख) यह तो हमारे सामने की बात है । सामने करना = किसी के समक्ष उपस्थित करना । आगे लाना । सामने की चोट = सीधी चोट । सामने से होनेवाली घातक मार । सामने की बात = आँखों देखी बात । वह बात जो अपनी उपस्थिति में हुई हो । सामने पड़ना = (१) दृष्टि के आगे आना । (२) बाधा खड़ी करना । मार्ग रोकना । सामने से उठ जाना = देखते देखते अस्तित्व समाप्त हो जाना । सामने होना = (१) (स्त्रियों का) परदा न करके समक्ष आना । जैसे,--उनके घर की स्त्रियाँ किसी के सामने नहीं होतीं ।

२. भेंट । मुलाकात । ३. किसी पदार्थ का अगला भाग । आगे की ओर का हिस्सा । आगा । जैसे,--उस मकान का सामना तालाब की ओर पड़ता है । ४. किसी के विरुद्ध या विपक्ष में खड़े होने की क्रिया या भाव । मुकाबला । जैसे,--वह किसी बात में आपका सामना नहीं कर सकता । ५. भिडंत । मुठभेड़ । लड़ाई । जैसे,--युद्धक्षेत्र में दोनों दलों का सामना हुआ । ६. उद्दंडता । गुस्ताखी । ढिठाई ।

मुहा०--सामना करना = धृष्टता करना । सामने होकर जबाब देना । गुस्ताखी करना । जैसे,--जरा सा लड़का, अभी से सबका सामना करता है ।

सामनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] पशुओं को बाँधने की रज्जु । पगहा [को०] ।

सामने--क्रि० वि० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुंहे, पु०हिं० सामुहें] १. संमुख । समक्ष । आगे । २. उपस्थिति में । मौजूदगी में । जैसे--तुम्हारे सामने उन्हें कौन पूछेगा । ३. सीधे । आगे । जैसे,--सामने जाने पर एक मोड़ मिलेगा । ४. मुकाबले में । विरुद्ध ।

सामन्य[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. सामवेद का ज्ञाता ब्राह्मण । २. वह जो सामवेद का कुशलतापूर्वक गायन करे [को०] ।

सामन्य[२]--वि० १. अनुकूल । जो विरुद्ध न हो । २. जो सामगायन में प्रवीण हो [को०] ।

सामपुष्पि—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सामप्रधान—वि० [सं०] जिसमें साम नीति मुख्य हो। मैत्रीपूर्ण। दोस्ताना [को०]।

सामप्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] सान्त्वना प्रदायक वचन या कथन [को०]।

सामय(पु)—संज्ञा पुं० [सं० समय] दे० 'समय'। उ०—सामय समय पनीह बटा।—नंद० ग्रं०, पृ० ८४।

सामयाचारिक[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सामयाचारिकी] समयाचार संबंधी प्रचलित व्यवस्थाओं, निर्धारित मान्यताओं एवं स्वीकृत परंपराओं, या विधान संबंधी [को०]।

यौ०—सामयाचारिक सूत्र = समयाचार संबंधी एक ग्रंथ।

सामयिक[१]—वि० [सं०] १. समय संबंधी। समय का। २. वर्तमान समय से संबंध रखनेवाला।

यो०—समसामयिक। सामयिकपत्र = समाचार पत्र।

३. समय की दृष्टि से उपयुक्त। समय के अनुसार। समयोचित। ४. किसी एक निश्चित कालावधि का। नियतकालिक (को०)। ५. जो तय हुआ हो उसके अनुसार। समय के अनुकूल (को०)। ६. ठीक समय पर होनेवाला (को०)। ७. अल्पकालिक। अस्थायी (को०)।

सामयिक[२]—संज्ञा पुं० समय या अवधि। नियत काल [को०]।

सामयिकपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. शुक्रनीति के अनुसार वह इकरारनामा या दस्तावेज जिसमें बहुत से लोग अपना अपना धन लगाकर किसी मुकदमे की पैरवी करने के लिये लिखापढ़ी करते है। २. समाचारपत्र। अखबार।

सामयीन(पु)—संज्ञा पुं० [अ० सामिईन] श्रोतागण। श्रोतृवृंद। सुननेवाले लोग। उ०—खबर सुन सामयीन ने मिल के सारे कल्हा भेजे हैं उसकूँ के। दक्खिनी०, पृ० १६०।

सामयोनि—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. हाथी।

सामर[१]—संज्ञा पुं० [सं० समर] दे० 'समर'।

सामर[२]—वि० [सं०] १. समर संबंधी। समर का। युद्ध का। १. अमर अर्थात् देवताओं से युक्त।

सामर(पु)[३]—संज्ञा पुं० [सं० शम्बर, सम्बर] एक मृग। दे० 'साँभर'। उ०—सिंह कोल गज रींछ बहुत सामर बलवंते। —पृ० रा०, ६। ६४।

सामर†[४]—वि० [सं० श्यामल] दे० 'साँवरा', 'साँवला'।

सामरथ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सामर्थ्य] दे० 'सामर्थ्य'।

सामरस्य—संज्ञा पुं० [सं०] हर स्थिति में एक ही प्रकार की अनुभूति करने का भाव। समरसता। जैसे,—उनका जीवन सामरस्य से भरा होता है।

सामरा(पु)—वि० [सं० श्यामल] दे० 'साँवला'। उ०—सामर बदन पर भाँवरे भरत है।—मति० ग्रं०, पृ० ३५०।

सामराधिप—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का प्रधान अधिकारी। सेनापति।

सामरिक—वि० [सं०] समर संबंधी। युद्ध का। जैसे,—सामरिक समाचार।

सामरिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समर या समर संबंधी कार्यों में लिप्त रहना। २. युद्ध। लड़ाई।

सामरिकवाद—संज्ञा पुं० [सं० सामरिक + वाद] वह सिद्धांत जिसके अनुसार राष्ट्र सामरिक कार्यों—सेना बढ़ाने, नित्य नए नए भयंकर और घातक युद्धोपकरण बनवाने आदि की ओर, अधिकाधिक ध्यान दे। शस्त्रसज्ज और विराट् सेना रखने का सिद्धांत।

सामरेय—वि० [सं०] समर संबंधी। युद्ध का।

सामर्घ्य—संज्ञा पुं० [सं०] सस्तापन। सस्ती [को०]।

सामर्थ(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० सामर्थ्य] समर्थता। दे० 'सामर्थ्य'। उ०—धर हरि अंस हुवे धरपत्ती। सस्त्रबंध सामर्थ सकत्ती। —रा० रू०, पृ० ६।

सामर्थी—संज्ञा पुं० [हिं० सामर्थ + ई (प्रत्य०)] १. सामर्थ्य रखनेवाला। जिसे सामर्थ्य हो। २. जो किसी कार्य के करने की शक्ति रखता हो। ३. पराक्रमी। बलवान।

सामर्थ्य—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं०] १. समर्थ होने का भाव। किसी कार्य के संपादन करने की शक्ति। बल। २. शक्ति। ताकत। ३. औचित्य। उपयुक्तता। योग्यता। ४. शब्द की व्यंजना शक्ति। शब्द की वह शक्ति जिससे वह भाव प्रकट करता है। ५. व्याकरण में शब्दों का परस्पर संबंध। ६. एक लक्ष्य या समान उद्देश्य होने का भाव (को०)। ७. अभिरुचि। लगाव (को०)। १०. धन (को०)।

सामर्थ्यवान†—वि० [सं० सामर्थ्यवत्] शक्तिशाली। समर्थ। उ०—जो श्री गुसाँई जो सर्व सामर्थ्यवान हैं।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २५८।

सामर्थ्यहीन—वि० [सं०] जो सामर्थ्य से रहित हो। शक्ति, बल, योग्यता आदि से हीन।

सामर्ष—वि० [सं०] अमर्षयुक्त। कोपाकुल [को०]।

सामल(पु)—वि० [फ़ा० शामिल] एक साथ। साथ साथ। मिल जुलकर। उ०—सिंघ अजा सामल सलल पीवै इक थाला। तसकर दबे उलूक ज्यूँ ऊँगा किरणालाँ।—रघु० रू०, पृ० १७०।

सामवाद—संज्ञा पुं० [सं०] सांत्वनापूर्ण बात। मैत्रीपूर्ण बातचीत। सामनीति से युक्त कथन [को०]।

सामवायिक[१]—वि० [सं०] १. समवाय संबंधी। २. जो अटूट या अविच्छेद्य संबंध से युक्त हो। ३. समूह या झुंड संबंधी।

सामवायिक[२]—संज्ञा पुं० १. अमात्य। मंत्री। वजीर। २. किसी श्रेणी, वर्ग, समाज या दल का प्रधान (को०)।

सामवायिकराज्य—संज्ञा पुं० [सं०] वे राज्य जो जो किसी युद्ध के निमित्त मिल गए हों।

विशेष—कौटिल्य ने लिखा है कि सामवायिक शत्रु राज्यों से कभी अकेला न लड़े।

सामविद्—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो।

सामविप्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जो अपने सब कर्म सामवेद के विधानों के अनुसार करता हो।

सामवेद—संज्ञा पुं० [सं० साम (न्) वेद] भारतीय आर्यों के चार वेदों में से प्रसिद्ध तीसरा वेद।

विशेष—पुराणों में कहा है कि इस वेद की एक हजार संहिताएँ थीं, परंतु आजकल इनमें से केवल एक ही संहिता मिलती है। यह संहिता दो भागों में विभक्त है, जिनमें से एक 'आर्चिक' और दूसरा 'उत्तरार्चिक' कहलाता है। इन दोनों भागों में जो १८१० ऋचाएँ हैं, उनमें से अधिकांश ऋग्वेद में आई हुई हैं। ये सब ऋचाएँ प्रायः गायत्री छंद में ही हैं। यज्ञों के समय जो स्तोत्र आदि गाए जाते थे, उन्हीं स्तोत्रों का इस वेद में संग्रह है। भारतीय संगीतशास्त्र का आरंभ इन्हीं स्तोत्रों से होता है। इस वेद का उपवेद गांधर्ववेद है।

सामवेदिक[1]—वि॰ [सं॰] सामवेद संबंधी।

सामवेदिक[2]—संज्ञा पुं॰ सामवेद का ज्ञाता या अनुयायी ब्राह्मण।

सामवेदी—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सामवेदिन्] सामवेद का अध्येता एवम् जानकार ब्राह्मण [को॰]।

सामवेदीय—वि॰, संज्ञा पुं॰ [सं॰] दे॰ 'सामवेदिक'।

सामश्रवा—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सामश्रवस्] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

सामसर—संज्ञा पुं॰ [देश॰] एक प्रकार का गन्ना जो डुमराँव (बिहार) में होता है।

सामसाध्य—वि॰ [सं॰] जो साम नीति के द्वारा साध्य हो।

सामसाली(ु)—संज्ञा पुं॰ [सं॰ साम + शाली] राजनीति के साम, दाम, दंड और भेद नामक अंगों को जाननेवाला। राजनीतिज्ञ। उ॰—जयति राज राजेंद्र राजीवलोचन राम नाम कलि काम तरु सामसाली। अनय अंभोधि कुंभज निसाचर निकर तिमिर घनघोर वर किरिनिमाली।—तुलसी (शब्द॰)।

सामसावित्री—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] एक प्रकार का सावित्री मंत्र।

सामसुर—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक प्रकार का सामगान।

सामस्तंबि—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सामस्तम्बि] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

सामस्त(ु)[1]—वि॰ [सं॰ समस्त] दे॰ 'समस्त'।

सामस्त[2]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] शब्दों के विन्यास, मिश्रण, रचना या संधि-संबंधी विद्या। शब्द विज्ञान [को॰]।

सामस्त्य—संज्ञा पुं॰ [सं॰] समस्तता। संपूर्णता [को॰]।

सामहलि(ु)—क्रि॰ वि॰ [सं॰ सम्भाल्य ?] देखकर। समझ या जानकर। उ॰—साँझी वेला सामहलि कंटलि थई अगासि। ढोलइ करह कँवाइयउ आयउ पूगल पासि।—ढोला॰, दू॰ ५२२।

सामहिं(ु)—अव्य॰ [सं॰ सन्मुख] सामने। संमुख। समक्ष। उ॰—तिन सामहिं गोरा रन कोपा। अंगद सरिस पाउँ भुइँ रोपा।—जायसी (शब्द॰)। (ख) कोप सिंह सामहिं रन मेला। लाखन सों ना मरै अकेला।—जायसी (शब्द॰)।

सामाँ[1]—संज्ञा पुं॰ [सं॰ श्यामाक] एक अन्न। दे॰ 'साँवाँ'।

सामाँ[2]—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰ सामान] दे॰ 'सामान' उ॰—चंद तस्वीरे बुताँ चंद हसीनों के खुतूत बाद मरने के मेरे घर से ये सामाँ निकला।—चंद॰, पृ॰ १।

सामाँ[3]—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ श्यामा] दे॰ 'श्यामा'।

सामा(ु)—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰ सामान का संक्षिप्त रूप] सामग्री। सामान। सरंजाम। उ॰—(क) भोजन की सामा सत्यभामा की भुलाई भले।—पद्माकर ग्रं॰, पृ॰ २४७। (ख) आखर लगाय लेत लाखन की सामा हो।—पद्माकर ग्रं॰, पृ॰ ३०६।

यौ॰—सामा सामाज = सामग्री, उपकरण और समाज या समूह। उ॰—सामासमाज सबहीं वृथा सब सौ अदभुत दैवगति।—ब्रज॰ ग्रं॰, पृ॰ ७६.

सामाजिक[1]—वि॰ [सं॰] १. समाज से संबंध रखनेवाला। समाज का। जैसे,—सामाजिक कुरीतियाँ, सामाजिक झगड़े, सामाजिक व्यवहार। २. सभा से संबंध रखनेवाला। ३. सहृदय। रसज्ञ।

सामाजिक[2]—संज्ञा पुं॰ १. सभासद। सदस्य। सभ्य। २. (नाटक) देखनेवाला। (नाटक का) सहृदय पाठक या दर्शक। उ॰—उन्होंने बतलाया कि सामाजिकों के हृदय में वासनारूप में स्थित स्थायी रति आदि भाव को ही रसत्व प्राप्त होता।—रसक॰, पृ॰ २२।

सामाजिकता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सामाजिक का भाव। लौकिकता।

सामाधान—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. शमन करने की क्रिया। शांति। २. शंका का निवारण। ३. किसी कार्य को पूर्ण करने का व्यापार। संपादन।

सामान—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] १. किसी कार्य के लिये साधन स्वरूप आवश्यक वस्तुएँ। उपकरण। सामग्री। २. माल। असबाब।

मुहा॰—सामान बनना = (१) वस्तुओं का तैयार होना। (२) किसी प्रकार की तैयारी होना। सामान बाँधना = माल असबाब बाँधकर चलने की तैयारी करना।

३. औजार। ४. बंदोबस्त। इंतजाम। उ॰—इसके नाम व निशान को भी मिटा देने का सामान कर रहे है।—प्रेमघन॰, भा॰ २, पृ॰ ३६२।

क्रि॰ प्र॰—करना।—होना।

सामानग्रामिक—वि॰ [सं॰] एक ही ग्राम में रहनेवाले। एक ही गाँव के निवासी।

सामानदेशिक—वि॰ [सं॰] एक ही देश या गाँव से संबंधित। सामानग्रामिक।

सामानाधिकरण्य—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. समान अवस्था या परिस्थिति में होना। २. समान पद या समान कार्य। ३. एक ही कर्म से संबंधित होना (व्या॰, नव्य न्याय)। एक ही कारक या समानाधिकरण में होना [को॰]।

सामानि(ु)—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सामान्या] दे॰ 'सामान्या-१'। उ॰—प्रथम स्वकीया पुनि परिकीया। इक सामानि बखानी तिया।—नंद॰ ग्रं॰, पृ॰ १४५।

सामानिक—वि॰ [सं॰] समानपदीय। समान स्थिति या पद का [को॰]।

सामान्य[1]—वि॰ [सं॰] १. जिसमें कोई विशेषता न हो। साधारण। मामूली। २. दे॰ 'समान'। ३. महत्वहीन। अदना। तुच्छ (को॰)। ४. पूरा। संपूर्ण (को॰)। ५. औसत दरजे का (को॰)।

सामान्य²--संज्ञा पुं० [सं०] १. समान होने का भाव। सादृश्य। समानता। बराबरी। २. वह एक बात या गुण जो किसी जाति या वर्ग की सब चीजों में समान रूप से पाया जाय। जातिसाधर्म्य। जैसे,—मनुष्यों में मनुष्यत्व या गौओं में गोत्व।

विशेष--वैशेषिक में जो छह् पदार्थ माने गए हैं, सामान्य उनमें से एक है। इसी को जाति भी कहते हैं।

३. साहित्य में एक प्रकार का अलंकार। यह उस समय माना है, जब एक ही आकार की दो या अधिक ऐसी वस्तुओं का वर्णन होता है जिनमें देखने में कुछ भी अंतर नहीं जान पड़ता। जैसे,—(क) एक रूप तुम भ्राता दोऊ। (ख) नाहि फरक श्रुतिकमल अरु हरिलोचन अभिसेष। (ग) जानी न जात मसाल औ बाल गोपाल गुलाल चलावत चूकैं। ४. संपूर्णता। पूर्ण होने का भाव (को०)। ५. किस्म। प्रकार (को०)। ६. सार्वजनिक कार्य। ७. अनुरूपता। तुल्यता (को०)। ८. वह धर्म जो मनुष्य, पशु पक्षी आदि सभी में सामान्य रूप से पाया जाय (को०)। ९. पहचान। लक्षण। चिह्न (को०)। १०. वह अवस्था जिसमें किसी एक ओर झुकाव न हो। मध्य स्थिति। तटस्थता (को०)।

सामान्य छल--संज्ञा पुं० [सं०] न्यायशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का छल जिसमें संभावित अर्थ के स्थान में अति सामान्य के योग से असंभूत अर्थ की कल्पना की जाती है। जब वादी किसी संभूत अर्थ के विषय में कोई वचन कहे, तब सामान्य के संबंध से किसी असंभूत अर्थ के विषय में उस वचन की कल्पना करने की क्रिया। विशेष दे० 'छल'।

सामान्यज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्तुओं के सामान्य गुणों की जानकारी या ज्ञान। २. सब विषयों का साधारण या कामचलाऊ ज्ञान [को०]।

सामान्य ज्वर--संज्ञा पुं० [सं०] साधारण ज्वर। मामूली बुखार।

सामान्यतः--अव्य० [सं०] सामान्य रूप से। साधारण रीति से। साधारणतः। जैसे,--राजनीति में सामान्यतः अपना ही स्वार्थ देखा जाता है।

सामान्यतया--अव्य० [सं०] सामान्य रूप से। साधारण रीति से। मामूली तौर से। सामान्यतः। साधारणतया।

सामान्यतोदृष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १. तर्क और न्यायशास्त्र के अनुसार अनुमान संबंधी एक प्रकार की भूल जो उस समय मानी जाती है जब किसी ऐसे पदार्थ के द्वारा अनुमान करते हैं जो न कार्य हो, न कारण। जैसे,--कोई आम को बौरते देखकर यह अनुमान करे कि अन्य वृक्ष भी बौरते होंगे। २. दो वस्तुओं या बातों में ऐसा साधर्म्य जो कार्यकारण संबंध से भिन्न हो। जैसे,—बिना चले कोई दूसरे स्थान पर नहीं पहुँच सकता। इसी प्रकार दूसरे को भी किसी स्थान पर भेजना बिना उसके गमन के नहीं हो सकता।

सामान्यत्व--संज्ञा पुं० [सं०] सामान्य या साधारण होने का भाव। सामान्यता। साधारणता। उ०—इस सामान्यत्व की स्थापना के कई हेतु होते हैं। --आ० रा० शुक्ल, पृ० ८९।

सामान्यनायिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] सामान्य वनिता। वेश्या [को०]।

सामान्यपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] दो अतिसीमाओं के मध्य की स्थिति।

सामान्यभविष्यत्—संज्ञा पुं० [सं०] भविष्य क्रिया का वह काल जो साधारण रूप बतलाता है। जैसे,--आएगा, जाएगा, खाएगा।

सामान्यभूत—संज्ञा पुं० [सं०] भूत क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है और भूतकाल की विशेषता नहीं पाई जाती है। जैसे,--खाया, गया, उठा।

सामान्यलक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] वह गुण या लक्षण जो किसी जाति या वर्ग में समान रूप से पाया जाय [को०]।

सामान्यलक्षणा--संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गुण जिसके अनुसार किसी एक सामान्य को देखकर उसी के अनुसार उस जाति के और सब पदार्थों का बोध होता है। किसी पदार्थ को देखकर उस जाति के और सब पदार्थों का बोध करानेवाली शक्ति। जैसे,--किसी एक गौ या घड़े को देखकर समस्त गौओं या घड़ों का जो ज्ञान होता है, वह इसी सामान्य लक्षण के अनुसार होता है।

सामान्यवचन¹ – वि० [सं०] सामान्य लक्षण बतानेवाला।

सामान्यवचन²—संज्ञा पुं० वस्तु या पदार्थबोधक शब्द [को०]।

सामान्यवनिता संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी [को०]।

सामान्यवर्तमान—संज्ञा पुं० [सं०] वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्ता का उसी समय कोई कार्य करते रहना सूचित होता है। जैसे,—खाता है, जाता है।

सामान्यविधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] साधारण विधि या आज्ञा। जैसे,—हिंसा मत करो, झूठ मत बोलो, चोरी मत करो, किसी का अपकार मत करो, आदि सामान्य विधि के अंतर्गत हैं। परंतु यदि यह कहा जाय कि यज्ञ में हिंसा की जा सकती है, अथवा ब्राह्मण की रक्षा के लिये झूठ बोला जा सकता है तो इस प्रकार की विधि विशेष होगी और वह सामान्य विधि की अपेक्षा अधिक मान्य होगी।

सामान्य शासन--संज्ञा पुं० [सं०] ऐसी राजाज्ञा जो सबपर समान रूप से लागू हो [को०]।

सामान्य शास्त्र--संज्ञा पुं० [सं०] सबपर समान रूप से लागू होनेवाला विधि या शास्त्र।

सामान्या--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साहित्य के अनुसार वह नायिका जो धन लेकर किसी से प्रेम करती है।

विशेष--इस नायिका के भी उतने ही भेद होते हैं जितने अन्य नायिकाओं के होते हैं।

२. गणिका। वेश्या।

सामायिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के अनुसार एक प्रकार का व्रत या आचरण जिसमें सब जीवों पर सम भाव रखकर एकांत में बैठकर आत्मचिंतन किया जाता है।

सामायिक²—वि० मायायुक्त। माया सहित।

सामाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] वह भवन या प्रासाद आदि जिसके पश्चिम ओर वीथिका या सड़क हो।

सामासिक[१]—वि० [सं०] १. समास से संबंध रखनेवाला। समास का। २. सामूहिक। समुच्चयात्मक (को०)। ३. संहत। संक्षिप्त (को०)। ४. मिश्रित (को०)।

सामासिक[२]—संज्ञा पुं० समास।

सामि[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा। शिकायत।

सामि[२]—वि० १. जो पूरा न हुआ हो। जो अपूर्ण या आंशिक रूप में हो। अधूरा। २. दोषावह। निंदनीय। ३. शीघ्रतापूर्वक (को०)।

सामि(पु)[३]—संज्ञा पुं० [सं० स्वामि] स्वामी। पति। उ०—आवहु सामि सुलच्छना जीय बसै तुम्ह नाउँ। —जायसी ग्रं०, पृ० १०१।

सामिक—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष। पेड़ (को०)।

सामिकृत—वि० [सं०] आंशिक या अधूरा किया हुआ। (कार्य आदि) जो अंशतः कृत हो (को०)।

सामिग्री—संज्ञा स्त्री० [सं० सामग्री] दे० 'सामग्री'।

सामिअ(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० स्वामिन्] दे० 'स्वामी'। उ०—पुण्ण कहानी पिअ कहहु सामिअ सुनओ सुहेण।—कीर्ति०, पृ० १६।

सामित—वि० [सं०] गेहूँ के आटे के साथ मिश्रित (को०)।

सामित्त(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० स्वामित्व] दे० 'स्वामित्व'।

सामित्त(पु)[२]—संज्ञा पुं० [सं० साम्यत्व] दे० 'समता'। उ०—घटि बढ़ि पंच दिसा फिरि आयौ। कवि मुष तौ सामित्त करायौ। —पृ० रा०, २।४०७।

सामित्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] समिति का भाव या धर्म।

सामित्य[२]—वि० समिति का। समिति संबंधी।

सामिधेन—वि० [सं०] यज्ञाग्नि प्रज्वलित करने से संबंधित (को०)।

सामिधेनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का ऋक् मंत्र जिसका पाठ होम की अग्नि प्रज्वलित करने के समय (अथवा सामिधा डालते समय) किया जाता है। २. समिधा (को०)।

सामिधेन्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सामिधेनी'।

सामिपीत—वि० [सं०] आधा पिया हुआ। अर्धपीत (को०)।

सामिभुक्त—वि० [सं०] आधा खाया हुआ (को०)।

सामियाना—संज्ञा पुं० [फ़ा० शामियाना] दे० 'शामियाना'।

सामिल—वि० [फ़ा० शामिल] दे० 'शामिल'।

सामिष—वि० [सं०] आमिष सहित। मांस मद्य आदि के सहित। निरामिष का उलटा। जैसे,—सामिष भोजन, सामिष श्राद्ध।

सामिषश्राद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों आदि के उद्देश्य से किया जानेवाला वह श्राद्ध जिसमें मांस, मद्य आदि का व्यवहार होता है। जैसे,—मांसाष्टका आदि सामिष श्राद्ध हैं।

सामिसंस्थित—वि० [सं०] आधा किया हुआ। अर्धकृत (को०)।

सामी(पु)†[१]—संज्ञा पुं० [सं० स्वामिन्] दे० 'स्वामी'।

सामी[२]—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'शामी'।

सामीची—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वंदना। प्रार्थना। स्तुति। २. नम्रता। सौजन्य। शिष्टता (को०)।

सामीचीकरणीय—वि० [सं०] शिष्टतापूर्वक नमन करने योग्य। जो नम्रतापूर्वक प्रणाम करने योग्य हो (को०)।

सामीचीन्य—संज्ञा पुं० [सं०] उपयुक्तता। समीचीनता (को०)।

सामीप(पु)—वि० [सं० समीप या सामीप्य] दे० 'समीप'। उ०—कहा धरम उपदेश है, मूढ़न के सामीप।—दीन० ग्रं०, पृ० ८४।

सामीप्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. समीप होने का भाव। निकटता। २. एक प्रकार का मुक्ति जिसमें मुक्त जीव का भगवान् के समीप पहुँच जाना माना जाता है। उ०—निर्बान मारग को जो कोई ध्यावै, सो सामीप्य मुक्ति बैकुंठ को पावै।—कबीर सा०, पृ० ९०५। ३. पड़ोस। ४. पड़ोसी। प्रतिवेशी।

सामीर(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० समीर] समीर। पवन। (डिं०)। उ०—चरस करत लिषमण चमर, अरस अगर, सामीर। इम सिय जुत जन मंछ उर, बसो सदा रघुबीर।—रघु० रू०, पृ० १।

सामीर[२]—वि० दे० 'सामीर्य'।

सामीरण—वि० [सं०] दे० 'सामीर्य'।

सामीर्य—वि० [सं०] समीर संबंधी। समीर का। हवा का।

सामुझि(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्बुद्धि] दे० 'समझ'। उ०—प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी। —मानस, १।९।

सामुदायिक[१]—वि० [सं०] समुदाय संबंधी। समुदाय का। सामूहिक।

सामुदायिक[२]—संज्ञा पुं० बालक के जन्म समय के नक्षत्र से आगे के अठारह नक्षत्र जो फलित ज्योतिष के अनुसार अशुभ माने जाते हैं और जिनमें किसी प्रकार का शुभ कार्य करने का निषेध है।

सामुद्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह संधि या जोड़ जिसमें कुछ गहरापन हो। खात या गर्तयुक्त संधि। जैसे,—काँख या कूल्हे की संधि। २. भोजन के पहले और बाद में ली जानेवाली औषधि (को०)।

सामुद्र[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र से निकला हुआ नमक। वह नमक जो समुद्र के खारे पानी से निकाला जाता है। २. समुद्रफेन। ३. वह व्यापारी जो समुद्र के द्वारा दूसरे देशों में जाकर व्यापार करता हो। ४. नारियल। ५. जहाजी। नाविक। माँझी (को०)। ६. एक प्रकार का मच्छड़। सुश्रुत के अनुसार सामुद्र, परिमंडल, हस्तिनाशक, कृष्ण और पर्वतीय इन पाँच मच्छड़ों में से एक (को०)। ७. करण और वेश्या से उत्पन्न संतति। एक जातिविशेष (को०)। ८. समुद्र की एक कन्या जो प्राचीनबर्हिष् की पत्नी थी (को०)। ९. आश्विन मास की वर्षा का जल (को०)। १०. शरीर में होनेवाले चिह्न या लक्षण आदि जिन्हें देखकर शुभाशुभ का विचार किया जाता है। विशेष दे० 'सामुद्रिक'।

सामुद्र[२]—वि० १. समुद्र से उत्पन्न। समुद्र से निकला हुआ। २. समुद्र संबंधी। समुद्र का।

सामुद्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्री नमक। २. सामुद्रिक विद्या। दे० 'सामुद्र'।

सामुद्रनिष्कुट—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रतट वासी (को०)।

सामुद्रनिष्कूट—संज्ञा पुं० [सं०] १. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम। २. इस जनपद का निवासी।

सामुद्रबंधु—संज्ञा पुं० [सं० सामुद्र बन्धु] चंद्रमा [को०]।

सामुद्रमत्स्य—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र में होनेवाली बड़ी बड़ी मछलियाँ जिनका मांस सुश्रुत के अनुसार भारी, चिकना, मधुर, वातनाशक, कफवर्धक, उष्ण और वृष्य होता है।

सामुद्रविद्—संज्ञा पुं० [सं०] सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता [को०]।

सामुद्रस्थलक—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र तट का प्रदेश। समुद्र के आसपास का देश।

सामुद्राद्य चूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जो, साँभर, साँचर और सेंधा नमक, अजवायन, जवाखार, बायविडंग, हींग, पीपल, चीतामूल और सोंठ को बराबर मिलाने से बनता है।

विशेष—कहते हैं कि इस चूर्ण का घी के साथ सेवन करने से उदर के सब प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। यदि भोजन के आरंभ में इसका सेवन किया जाय तो यह बहुत पाचक होता है और इससे कोष्ठबद्धता दूर होती है।

सामुद्रिक[1]—वि० [सं०] १. समुद्र से संबंध रखनेवाला। समुंदरी। सागर संबंधी। २. शरीरचिह्न संबंधी (को०)।

सामुद्रिक[2]—संज्ञा पुं० १. फलित ज्योतिष का एक अंग जिसके अनुसार हथेली की रेखाओं, शरीर के तिलों तथा अन्यान्य लक्षणों आदि को देखकर मनुष्य के जीवन की घटनाएँ तथा शुभाशुभ फल बतलाए जाते है; यहाँतक कि कुछ लोग केवल हाथ की रेखाओं को देखकर जन्मकुंडली तक बनाते हैं। २. वह जो इस शास्त्र का ज्ञाता हो। हाथ की रेखाओं तथा शरीर के तिलों और लक्षणों आदि को देखकर जीवन की घटनाएँ और शुभाशुभ फल बतलानेवाला पंडित। ३. नाविक (को०)। ४. एक जलपक्षी। उ०—डुबकियाँ लगाते सामुद्रिक, धोती पीली चोंचें धोबिन।—ग्राम्या, पृ० ३७।

सामुहाँ(पु)†[1]—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने। संमुख।

सामुहाँ[2]—संज्ञा पुं० आगे का भाग या अंश। सामना। (क्व०)।

सामुहें(पु)†—अव्य० [सं० सन्मुख] सामने। सन्मुख।

सामूना—संज्ञा स्त्री० [सं०] काले रंग का एक हिरन [को०]।

सामूर—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार बह्लव देश का चमड़ा [को०]।

सामूली—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य वर्णित बह्लव देशीय चमड़े का एक प्रकार [को०]।

सामूहाँ(पु)—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने। संमुख। उ०—जनु घुघची वह तिलकर मूहाँ। बिरहबान साँधो सामूहाँ।—जायसी(शब्द०)।

सामूहिक—वि० [सं०] १. समूह संबंधी। समूह का। २. जो समूहबद्ध हो (को०)।

सामृद्ध्य—संज्ञा पुं० [सं०] समृद्धि का भाव या समृद्धिता।

सामेधिक—वि० [सं०] कौटिल्य के अनुसार जो अद्भुत प्राकृतिक शक्ति से संपन्न हो [को०]।

सामोद—वि० [सं०] १. आनंदयुक्त। प्रसन्नतापूर्ण। २. आमोद या सुगंधियुक्त [को०]।

सामोद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।

सामोपनिषद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

साम्न—वि० [सं०] सामवेद के मंत्रों से संबंधित [को०]।

साम्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का छंद। २. जानवरों को बाँधने की रस्सी [को०]।

साम्नी अनुष्टुप्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें १४ वर्ण होते हैं।

साम्नी उष्णिक्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें १४ वर्ण होते है।

साम्नी गायत्री—एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें १२ वर्ण होते हैं।

साम्नी जगती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें २२ संपूर्ण वर्ण होते है।

साम्नी त्रिष्टुप्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें २२ संपूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्नी पंक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० साम्नी पङ्क्ति] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें २० संपूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्नी बृहती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वैदिक छंद जिसमें १८ संपूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्मत्य—संज्ञा पुं० [सं०] संमति का भाव।

साम्मुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह तिथि जो सायंकल तक रहती हो।

साम्मुख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. संमुख का भाव। सामना। २. उपस्थिति (को०)। ३. कृपा। अनुग्रह (को०)।

साम्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. समान होने का भाव। तुल्यता। समानता। जैसे,—इन दोनों पुस्तकों में बहुत कुछ साम्य है। २. दृष्टिकोण की समानता या एकता (को०)। ३. संगति। सामंजस्य (को०)। ४. अवधि। माप। काल। सम (को०)। ४. समता की स्थिति। उदासीनता। तटस्थता। निष्पक्षता (को०)

यौ०—साम्यग्राह = (१) घड़ियाल बजानेवाला। (२) संगीत में 'सम' को ग्रहण करने और ताल देनेवाला। साम्यतालविशारद = लय और ताल का ज्ञाता। जो लय और ताल का जानकार हो।

साम्यतंत्र—संज्ञा पुं० [सं० साम्य + तन्त्र] वह शासनप्रणाली जो साम्यवाद के सिद्धांत पर हो। साम्यवादी सिद्धांत के अनुरूप चलनेवाला शासन। उ०—ये राज्य प्रजाजन, साम्यतंत्र, शासन चालन के कृतक मान।—युगांत, पृ० ६०।

साम्यता—संज्ञा स्त्री० [सं० साम्य + ता] दे० 'साम्य'।

साम्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पाश्चात्य सामाजिक (समाजवादी) सिद्धांत। समष्टिवाद। उ०—थे राष्ट्र, अर्थ, जन, साम्यवाद, छल सभ्य जगत के शिष्ट मान।—युगांत, पृ० ५८।

विशेष—इस सिद्धांत का प्रवर्तन ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ माना जाता है। इस सिद्धांत का प्रतिपादन कार्लमार्क्स ने किया है जो जर्मनी का निवासी था। इस सिद्धांत के प्रचारक समाज में साम्य स्थापित करना चाहते हैं और उसका वर्तमान

वैषम्य दूर करना चाहते हैं। वे लोग चाहते हैं कि समाज से व्यक्तिगत प्रतियोगिता उठ जाय और भूमि तथा उत्पादन के समस्त साधनों पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार न रह जाय, बल्कि सारे समाज का अधिकार हो जाय। इस प्रकार सब लोगों में धन आदि का बराबर बराबर वितरण हो; न तो कोई बहुत गरीब रह जाय और न कोई बहुत अमीर रह जाय।

साम्यवादी--वि० [सं० साम्य+वादिन्] १. साम्यवाद से संबंधित। साम्यवाद का। २. जो साम्यवाद को मानता हो। साम्यवाद का अनुयायी।

साम्यावस्था--संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अवस्था जिसमें सत्व, रज और तम तीनों गुण बराबर हों, उनमें किसी प्रकार का विकार, या वैषम्य न हो। प्रकृति।

साम्यावस्थान--संज्ञा पुं० [सं०] प्रकृति। दे० 'साम्यावस्था' [को०]।

साम्राज्य--संज्ञा पुं० [सं०] १. वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों और जिसमें किसी एक सम्राट् का शासन हो। सार्वभौम राज्य। सलतनत। २. आधिपत्य। पूर्ण अधिकार। ३. आधिक्य। बाहुल्य (को०)। ४. प्रधानता (को०)।

साम्राज्यकृत्--वि० [सं०] साम्राज्य करनेवाला। साम्राज्य का शासक [को०]।

साम्राज्यलक्ष्मी--संज्ञा स्त्री० [सं०] तंत्र के अनुसार एक देवी जो साम्राज्य की अधिष्ठात्री मानी जाती है।

साम्राज्यवाद--संज्ञा पुं० [सं० साम्राज्य+वाद] साम्राज्य के देशों की रक्षा और वृद्धि या विस्तार का सिद्धांत। उ०--साम्राज्यवाद था कंस, बंदिनी मानवता पशु बलाक्रांत।--युगांत, पृ० ६०।

साम्राज्यवादी--संज्ञा पुं० [सं० साम्राज्यवादिन् अथवा हिं० साम्राज्यवाद+ई (प्रत्य०)] वह जो साम्राज्यशासन प्रणाली का पक्षपाती और अनुरागी हो। वह जो साम्राज्य की स्थापना और उसकी विस्तारवृद्धि का पक्षपाती हो।

साम्राणिकर्द्दम--संज्ञा पुं० [सं०] गंधमार्जार या गंधबिलाव का वीर्य जो गंधद्रव्यों में माना जाता है। जवादि नामक कस्तूरी।

साम्राणिज--संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा पारेवत।

साम्हना†--संज्ञा पुं० [हिं० सामना] दे० 'सामना'।

साम्हने†--अव्य० [हिं० सामने] दे० 'सामने'।

साम्हर†--संज्ञा पुं० [सं० शाकम्भर या सम्भल, साम्भल] १. दे० 'शाकंबर'। २. दे० 'साँभर'। ३. साँभर झील का बना नमक। उ०--कोट यतन सों विजन करई। साम्हर बिन फीका सब रहई।--कबीर सा०, पृ० २०६।

साम्हें(पु)--अव्य० [सं० सम्मुख] दे० 'सामुहें'। उ०--कहिए अब लौं ठहरचौ कौन। सोई भाग्यो तुव साम्हें सो गयो परिछ्यौ जौन। भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० २९८।

सायं[१]--वि० [सं०] संध्या संबंधी। सायंकालीन। संध्याकालीन।

सायं[२]--अव्य० शाम के समय।

सायं[३]--संज्ञा पुं० १. दिन का अंतिम भाग। संध्या। शाम। २. वाण। तीर।

सायंकाल--संज्ञा पुं० [सं० सायङ्काल] [वि० सायंकालीन] दिन का अंतिम भाग दिन और रात की संधि। संध्याकाल। संध्या। शाम।

सायंकालिक--वि० [सं० सायङ्कालिक] संध्या के समय का। शाम का।

सायंकालीन - वि० [सं० सायङ्कालीन] संध्या के समय का। शाम का।

सायंगृह--संज्ञा पुं० [सं० सायङ्गृह] वह जो संध्यासमय जहाँ पहुँचता हो, वहीं अपना घर बना लेता हो।

सायंतन--वि० [सं० सायन्तन] सायंकालीन। संध्या संबंधी। संध्या का।

यौ०--सायंतनमल्लिका = शाम को खिलनेवाली चमेली। सायंतनसमय = शाम। सायंकाल [को०]।

सायंतनी--वि० [सं० सायन्तनी] दे० 'सायंतन'।

सायंधृति--संज्ञा स्त्री० [सं० सायन्धृति] सायंकालीन हवन [को०]।

सायंनिवास--संज्ञा पुं० [सं० सायन्निवास] वह स्थान जहाँ शाम को रहा जाय [को०]।

सायंपोष--संज्ञा पुं० [सं० सायम्पोष] सायंकाल किया जानेवाला भोजन। ब्यालू [को०]।

सायंप्रातः--अव्य० [सं० सायम्प्रातर्] सुबह शाम।

सायंभव--वि० [सं० सायम्भव] संध्या का। शाम का।

सायंभोजन--संज्ञा पुं० [सं०] शाम का भोजन। ब्यालू [को०]।

सायंमंडन--संज्ञा पुं० [सं० सायम्मण्डन] १. सूर्यास्त। २. सूर्य [को०]।

सायंसंध्या--संज्ञा स्त्री० [सं० सायम्सन्ध्या] १. वह संध्या (उपासना) जो सायंकाल में की जाती है। २. सरस्वती देवी जिसकी उपासना संध्या के समय की जाती है। ३ सूर्यास्त का काल। गोधूलि वेला (को०)।

सायंसंध्यादेवता--संज्ञा स्त्री० [सं० सायम्सन्ध्या देवता] देवी सरस्वती का एक नाम।

सायंस--संज्ञा स्त्री० [अं० साइंस] १. विज्ञान। शास्त्र। २. वह शास्त्र जिसमें भौतिक तथा रासायनिक पदार्थों के विषय में विवेचन हो। विशेष दे० 'विज्ञान'।

साय--संज्ञा पुं० [सं०] १. संध्या का समय। शाम। २ वाण। तीर। ३. समाप्ति। अंत (को०)।

सायक--संज्ञा पुं० [सं०] १. बाण। तीर। शर। उ०--लखि कर सायर अरु तुम्हे कर सायक सर चाप।--शकुंतला, पृ० ७। २. खड्ग। उ०--धीर सिरोमनि वीर बड़े बिजई बिनई रघुनाथ सोहाए। लायकही भृगुनायक से धनु सायक सौंपि सुभाय सिधाए।--तुलसी (शब्द०)। ३. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है (IIS, SII, SSI, I,S)। ४. भद्र मुंज। राम सर। ५. पाँच की संख्या। (कामदेव के पाँच बाणों के कारण। ६. आकाश का विस्तार। अक्षांश (को०)।

सायकपुंख—संज्ञा पुं० [सं० सायकपुङ्ख] वाण का वह भाग जिसमें पंख लगा रहता है [को०]।

सायकपुंखा—संज्ञा स्त्री० [सं० सायकपुङ्खा] शरपुंखा। सरफोका।

सायका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुंजदह। लाई।

सायण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने चारों वेदों के बहुत उत्तम और प्रसिद्ध भाष्य लिखे हैं।

विशेष—इनके पिता का नाम मायण था। पहले ये राज्यमंत्री थे पर पीछे से संन्यासी होकर शृंगेरी मठ के अधिष्ठाता हुए थे। उस समय इनका नाम विद्यारण्य स्वामी हुआ था। इनका समय ईसवी चौदहवीं (१३७०) शताब्दी है। इनके नाम से और भी बहुत से संस्कृत ग्रंथ प्रसिद्ध हैं।

सायणवाद—संज्ञा पुं० [सं०] आचार्य सायण का मत या सिद्धांत।

सायणीय—वि० [सं०] १. सायण संबंधी। सायण का। २. सायण कृत (ग्रंथ)।

सायत[1]—संज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। २. दंड। पल। लमहा। ३. शुभ मुहूर्त। अच्छा समय। उ०—जलद ज्योतिषी बैन, सायत धरत पयान की।—श्यामा०, पृ० १२५।

सायत†[2]—अव्य० [फ़ा० शायद] दे० 'शायद'।

सायन[1]—संज्ञा पुं० [सं० सायण] दे० 'सायण'।

सायन[2]—वि० [सं०] अयनयुक्त। जिसमें अयन हो (ग्रह आदि)। उ०—गोविंद ने मुहूर्त चिंतामणि के संक्रांति प्रकरण में सायन संक्रांति के ऊपर लिखा है।—सुधाकर (शब्द०)। (ख) भारतवर्ष के ज्योतिषाचार्यों ने जब देखा कि सायन दूसरे नक्षत्र में गया।—ठाकुर प्र० (शब्द०)।

सायन[3]—संज्ञा पुं० सूर्य की एक प्रकार की गति।

सायब—संज्ञा पुं० [फ़ा० साहब] पति। स्वामी। (डिं०)।

सायबान—संज्ञा पुं० [फ़ा० सायह्बान] १. मकान के सामने धूप से बचने के लिये लगाया हुआ ओसार। बरामदा। २. मकान के आगे की ओर बढ़ी या निकली हुई वह छाजन या छप्पर आदि जो छाया के लिये बनाई गई हो।

सायम्—अव्य० [सं०] शाम को। शाम के समय।

सायमशन—संज्ञा पुं० [सं०] शाम का भोजन। ब्यालू [को०]।

सायमाहुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह आहुति जो संध्या के समय दी जाय।

सायर†[1]—संज्ञा पुं० [सं० सागर, प्रा० सायर] १. सागर। समुद्र। उ०—(क) सायर मद्धि सुठाम करन त्रिभुवन तन अंजुल।—पृ० रा०, २।६२। (ख) जहँ लग चंदन मलय गिरि औ सायर सब नीर। सब मिलि आय बुझावहिं बुझै न आग सरीर।—जायसी (शब्द०)। २. ऊपरी भाग। शीर्ष।

सायर[2]—संज्ञा पुं० [अ०] १. वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता। २. मुतफर्रकात। फुटकर।

सायर[3]—वि० १. घुमक्कड़। सैर करनेवाला। घूमनेवाला। २. जो नियत या स्थिर न हो। अस्थायी। अनियत [को०]।

सायर†[4]—संज्ञा पुं० [देश०] १. वह पटरा जिससे खेत की मिट्टी बराबर करते हैं। हेंगा। २. एक देवता जो चौपायों का रक्षक माना जाता है।

सायर†[5]—संज्ञा पुं० [अ० शाइर, शायर] कवि। कविता करनेवाला। दे० 'शायर'।

सायल[1]—संज्ञा पुं० [अ०] १. सवाल करनेवाला। प्रश्नकर्ता। २. माँगनेवाला। याचना करनेवाला। ३. भिखारी। फकीर। ४. दर्ख्वास्त करनेवाला। प्रार्थना करनेवाला। ५. उम्मीदवार। आकांक्षी। ६. न्यायालय में फरियाद करने या किसी प्रकार की अरजी देनेवाला। प्रार्थी।

सायल[2]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो सिलहट में होता है।

सायवस—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

साया[1]—संज्ञा पुं० [फ़ा० सायह्] १. छाया। छाँह। उ०—छाँव सूँ मेरे हुए हैं बादशाह। साया परवरदा हैं मेरे सब मलूक।—दक्खिनी०, पृ० १८६।

यौ०—सायेदार।

२. आश्रय। संरक्षण। सहारा।

मुहा०—साये में रहना = शरण में रहना। संरक्षण में रहना। साया उठना = संरक्षक का न रहना। देखभाल और परवरिश करनेवाले का मर जाना।

३. परछाईं। अक्स। प्रतिबिंब।

मुहा०—साये से भागना = बहुत दूर रहना। बहुत बचना।

४. जिन, भूत, प्रेत, परी आदि।

मुहा०—साया उतरना = भूत, प्रेत का प्रभाव समाप्त होना। साया होना = प्रेताविष्ट होना। भूत, प्रेत का प्रभाव होना। साये में आना = भूत, प्रेतादि से प्रभावान्वित होना।

५. असर। प्रभाव।

मुहा०—साया पड़ना = किसी को संगत का असर होना। साया डालना = (१) कृपा करना। (२) प्रभाव डालना।

साया[2]—संज्ञा पुं० [अं० शेमीज] १. घाघरे की तरह का एक पहनावा जो प्रायः पाश्चात्य देशों की स्त्रियाँ पहनती हैं। २. एक प्रकार का छोटा लहँगा जिसे स्त्रियाँ प्रायः महीन साड़ियों के नीचे पहनती हैं।

सायाबंदी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सायह्बंदी] मुसलमानों में विवाह के अवसर पर मंडप बनाने की क्रिया।

सायास—वि० [सं० स + आयास] आयासपूर्वक। प्रयत्नपूर्वक। श्रमपूर्वक। उ०—सहज चुन चुन लघु तृण खर, पात। नीड़ रच रच निसि दिन सायास।—गुंजन, पृ० ७४।

सायाह्न—संज्ञा पुं० [सं०] दिन का अंतिम भाग। संध्या का समय। शाम।

सायिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उचित क्रम में होना। क्रम के अनुसार स्थिति होना। २. छुरिका। कटार [को०]।

सायी—संज्ञा पुं० [सं० सायिन्] घोड़े का सवार। अश्वारोही।

सायुज--संज्ञा पुं० [सं० सायुज्य] दे० 'सायुज्य'। उ०—गुरुनानक का भेदाभेद ईश्वर और जीव में सायुज संबंध मानता है।—हिंदी काव्य०, पृ० ४६।

सायुज्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक में मिल जाना। ऐसा मिलना कि कोई भेद न रह जाय। २. पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति जिसमें जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाता है। उ०—हरि भे कहत गरीयसि मेरी। भक्ति होई सायुज्य बड़ेरी।—गर्गसंहिता (शब्द०)। ३. समानता। एकरूपता।

सायुज्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सायुज्य का भाव या धर्म। सायुज्यत्व।

सायुज्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सायुज्य का भाव या धर्म। सायुज्यता।

सायुध—वि० [सं०] आयुधयुक्त। शस्त्रसज्ज [को०]।

यौ०—सायुध प्रग्रह = जो हाथ में शस्त्र ताने हुए हो।

सारंग, सारँग¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का मृग। २. कोकिल। कोयल। उ०—वयन वर सारंग सम।—सूर (शब्द०)। ३. श्येन। बाज। ४. सूर्य। उ०—जलसुत दुखी दुखी है मधुकर है पंछी दुख पावत। सूरदास सारँग केहि कारण सारंग कुलहि लजावत।—सूर (शब्द०)। ५. सिंह। उ०—सारंग सम कटि हाथ माथ विच सारँग राजत। सारँग लाए अंग देखि छबि सारँग लाजत। सारंग भूषण पीत पट सारँग पद सारंगधर। रघुनाथ दास वेदन करत सीतापति रघुवंशधर।—विश्राम (शब्द०)। ६. हंस पक्षी। ७. मयूर। मोर। ८. चातक। ९. हाथी। १०. घोड़ा। अश्व। ११. छाता। छत्र। १२. शंख। उ०—सारँग अधर सधर कर सारंग सारँग जाति सारँग मति भोरी। सारँग दसन वसन पुनि सारँग वसन पीतपट डोरी।—सूर (शब्द०)। १३. कमल। कंज। उ०—(क) सारंग वदन विलास विलोचन हरि सारंग जानि रति कीन्हीं।—सूर (शब्द०)। (ख) सारँग दृग मुख पाणि पद सारँग कटि वपुधार। सारँगधर रघुनाथ छवि सारँग मोहनहार।—विश्राम (शब्द०)। १४. स्वर्ण। सोना। उ०—सारँग से दृग लाल माल सारँग की सोहत। सारँग ज्यों तनु श्यामवदन लखि सारँग मोहत।—विश्राम (शब्द०)। १५. आभूषण। गहना। १६. सर। तालाब। उ०—मानहु उमँगि चल्यो चाहत है सारँग सुधा भरे।—सूर० (शब्द०)। १७. भ्रमर। भौंरा। उ०—नचत हैं सारंग सुंदर करत शब्द अनेक।—सूर (शब्द०)। १८. एक प्रकार की मधुमक्खी। १९. विष्णु का धनुष। उ०—(क) एकहू बाण न आयो हरि के निकट तब गह्यो धनुष सारंगधारी।—सूर (शब्द०) (ख) सबै परथमा जौवन सोहैं। नयनबान औ सारँग मोहैं।—जायसी (शब्द०)। २०. कर्पूर। कपूर। उ०—सारंग लाए अंग देखि छबि सारँग लाजत।—विश्राम (शब्द०)। २१. लवा पक्षी। २२. श्रीकृष्ण का एक नाम। उ०—गिरिधर व्रजधर मुरलीधर धरनीधर पीतांबरधर मुकुटधर गोपधर उरगधर शंखधर सारंगधर चक्रधर गदाधर रस धरें अधरसुधाधर।—सूर (शब्द०)। २३. चंद्रमा। शशि। उ०—तामहि सारँग सुत भोभित है ठाढ़ी सारंग सँभारि।—सूर (शब्द०)। २४. समुद्र। सागर। २५. जल। पानी। २६. वाण। शर। तीर। २७. दीपक। दीया। २८. पपीहा। २९. शंभु। शिव। उ०—जनु पिनाक की आश लागि शशि सारँग शरन बचे।—सूर (शब्द०)। ३०. सुगंधित द्रव्य। ३१. सर्प। साँप। उ०—सारँग चरन पीठ पर सारँग कनक खंभ अहि मनहुँ चढो री।—सूर (शब्द०)। ३२. चंदन। ३३. भूमि। जमीन। ३४. केश। बाल। अलक। उ०—शीश गंग सारँग भस्म सर्वांग लगावत।—विश्राम (शब्द०)। ३५. दीप्ति। ज्योति। चमक। ३६. शोभा। सुंदरता। ३७. स्त्री। नारी। उ०—सूरदास सारँग केहि कारण सारँग कुलहि लजावत सूर (शब्द०)। ३८. रात्रि। रात। विभावरी। ३९. दिन। उ०—सारँग सुंदर को कहत रात दिवस बड़ भाग।—नंददास (शब्द०)। ४०. तलवार। खड्ग। (डिं०)। ४१. कपोत। कबूतर। ४२. एक प्रकार का छंद जिसमें चार तगण होते हैं। इसे मैनावली भी कहते हैं। ४३. छप्पय छंद के २६वें भेद का नाम।

विशेष—इसमें ४५ गुरु, ६२ लघु कुल १०७ वर्ण या १५२ मात्राएँ अथवा ४५ गुरु, ५८ लघु कुल १०३ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं।

४४. मृग। हिरन। उ०—(क) श्रवण सुयश सारंग नाद विधि चातक विधि मुख नाम।—सूर (शब्द०)। (ख) भरि थार आरति सजहिं सब सारंग शायक लोचना।—तुलसी (शब्द०)। ४५. मेघ। बादल। घन। उ०—(क) कारी घटा देखि अँधियारी सारँग शब्द न भावै।—सूर (शब्द०)। (ख) सारँग ज्यों तनु श्याम वदन लखि सारंग मोहत।—विश्राम (शब्द०)। ४६. मोती। (डिं०)। ४७. कुच। स्तन। ४८. हाथ। कर। ४९. वायस। कौआ। ५०. ग्रह। नक्षत्र। ५१. खंजन पक्षी। सोनचिड़ी। ५२. हल। ५३. मेंढक। ५४. गगन। आकाश। ५५. पक्षी। चिड़िया। ५६. वस्त्र। कपड़ा। ५७. सारंगी नामक वाद्ययंत्र। ५८. ईश्वर। भगवान्। ५९. काजल। नयनांजन। ६०. कामदेव। मन्मथ। ६१. विद्युत्। बिजली। ६२. पुष्प। फूल। ६३. संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

विशेष—शास्त्रों में यह मेघ राग का सहचर कहा गया है; पर कुछ लोग इसे संकर राग मानते और नट, मल्लार तथा देवगिरि के संयोग से बना हुआ बतलाते हैं। इसकी स्वरलिपि इस प्रकार कही गई है—स रे ग म प ध नि स। स नि ध प म ग रे स। स रे ग म प प ध प प म ग म प म ग म ग रे स। स रे ग रे स।

सारंग, सारँग²—वि० १. रँगा हुआ। रंजित। रंगीन। उ०—सारँग दशन बसन पुनि सारँग वसन पीत पट डोरी।—सूर (शब्द०)। २. सुंदर। सुहावना। उ०—सारँग वचन कहत सारँग सो सारँग रिपु है राखति झीनी।—सूर (शब्द०)। ३. सरस। उ०—सारँग तैन बैन वर सारँग सारँग वदन कहै

छवि को री।—सूर (शब्द०)। ४. अनेक रंगों से युक्त। चितकबरा (को०)।

सारंगचर—संज्ञा पुं० [सं० सारङ्गचर] काँच। शीशा।

सारगज—संज्ञा पुं० [सं० सारङ्गज] मृग। हिरन [को०]।

सारंगनट—संज्ञा पुं० [सं० सारङ्गनट] संगीत में सारंग और नट के संयोग से बना हुआ एक प्रकार का संकर राग।

सारंगनाथ—संज्ञा पुं० [सं० सारङ्गनाथ] काशी के समीप स्थित एक स्थान जो सारनाथ कहलाता है।

विशेष—यही प्राचीन मृगदाव है यह बौद्धों, जैनियों और हिंदुओं का प्रसिद्ध तीर्थ है।

सारंगनैनी—वि० [सं० सारङ्ग+हिं० नैन] सारंग के से नयनवाली। मृगनैनी। उ०—सारंगनैनी री काहे कियौ एतौ मान।—नंद० ग्रं०, पृ० ३६६।

सारंगपाणि—संज्ञा पुं० [सं० सारङ्गपाणि] सारंग नामक धनुष धारण करनेवाले विष्णु।

सारंगपानि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सारङ्गपाणि] दे० 'सारंगपाणि'। उ०—सुमिरत श्री सारंगपानि छन मैं सब सोचु गयो। चले मुदित कौसिक कोसलपुर सगुननि साथु दयो।—तुलसी (शब्द०)।

सारंगलोचना—वि० स्त्री० [सं० सारङ्ग लोचना] जिसकी आँखें हिरन की सी हों। मृगनयनी।

सारंगशबल—वि० [सं० सारङ्गशबल] घोड़ा जो रंग बिरंगा और चितकबरा हो [को०]।

सारंगहर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शार्ङ्गधर, प्रा० सारंगहर] विष्णु।

सारगा—संज्ञा स्त्री० [सं० सारङ्गा] १. एक प्रकार की छोटी नाव जो एक ही लकड़ी की बनती है। २. एक प्रकार की बड़ी नाव जिसमें ६००० मन माल लादा जा सकता है। ३. एक रागिनी का नाम जो कुछ लोगों के मत से मेघ राग की पत्नी है।

सारंगाक्षा—वि० स्त्री० [सं० सारङ्गाक्षा] जिसके नेत्र मृग की तरह हों। मृगनैनी [को०]।

सारंगिक—संज्ञा पुं० [सं० सारङ्गिक] १. वह जो पक्षियों को पकड़कर अपना निर्वाह करता हो। चिड़ीमार। बहेलिया। २. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, यगण औ सगण (न, य, स) होते हैं।

विशेष—कवि भिखारीदास ने इसे मात्रिक छंद माना है।

सारंगिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सारङ्गिका] १. दे० 'सारंगिका'। २. दे० 'सारंगी'। ३. बहेलिया की स्त्री।

सारंगिया—संज्ञा पुं० [हिं० सारंगी+आ (प्रत्य०)] सारंगी बजाने वाला। साजिंदा।

सारंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सारङ्ग] एक प्रकार का बहुत प्रसिद्ध बाजा जिसका प्रचार इस देश में बहुत प्राचीन काल से है। उ०—विविध पखावज आवज संचित बिचबिच मधुर उपंग। सुर सहनाई सरस सारंगी उपजत तान तरंग।—सूर (शब्द०)।

विशेष—यह काठ का बना हुआ होता है और इसकी लंबाई प्रायः डेढ़ हाथ होती है। इसके सामने का भाग, जो परदा कहलाता है, पाँच छह अंगुल चौड़ा होता है, और नीचे का सिरा अपेक्षाकृत कुछ अधिक चौड़ा और मोटा होता है। इसमें ऊपर की ओर प्रायः ४ या ५ खूँटियाँ होती हैं जिन्हें कान कहते हैं। उन्ही खूँटियों से लगे हुए लोहे और पीतल के कई तार होते हैं जो बाजे की पूरी लंबाई में होते हुए नीचे की ओर बँधे रहते है। इसे बजाने के लिये लकड़ी का एक लंबा और दोनों ओर कुछ झुका हुआ एक टुकड़ा होता है जिसमें एक सिरे से दूसरे सिरे तक घोड़े की दुम के बाल बँधे होते हैं। इसे कमानी कहते हैं। बजाने के समय यह कमानी दाहिने हाथ में ले ली जाती है और उसमें लगे हुए घोड़े के बाल से बाजे के तार रेते जाते हैं। उधर बायें हाथ की उँगलियाँ तारों पर रहती है जो बजाने के लिये स्वरों के अनुसार ऊपर नीचे और एक तार से दूसरे तार पर आती जाती रहती हैं। इस बाजे का स्वर बहुत ही मधुर और प्रिय होता है; इसलिये नाचने गाने का पेशा करनेवाले लोग अपने गाने के साथ प्रायः इसी का व्यवहार करते हैं।

सारंड—संज्ञा पुं० [सं० सारण्ड] साँप का अंडा।

सारंभ—संज्ञा पुं० [सं० सारम्भ] क्रोधपूर्ण वार्तालाप [को०]।

सार¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ में का मूल, मुख्य, काम का, या असली भाग। तत्व। सत्त। २. कथन आदि से निकलनेवाला मुख्य अभिप्राय। निष्कर्ष। उ०—तत्त सारं इहै आहै अवर नाहीं जान।—जग० बानी, पृ० १४। ३. किसी पदार्थ में से निकला हुआ निर्यास या अर्क आदि। रस। ४. चरक के अनुसार शरीर के अंतर्गत आठ स्थिर पदार्थ जिनके नाम इस प्रकार हैं—त्वक्, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र और सत्व (मन)। ५. जल। पानी। ६. गूदा। मग्ज। ७. वह भूमि जिसमें दो फसलें होती हों। ८. गोशाला। बाड़ा। ९. खाद। १०. दूहने के उपरांत तुरंत औटाया हुआ दूध। ११. औटाए हुए दूध पर की साढ़ी। मलाई। १२. लकड़ी का हीर। १३. परिणाम। फल। नतीजा। १४. धन। दौलत। १५. नवनीत। मक्खन। १६. अमृत। १७ लोहा। १८. वन। जंगल। १९. बल। शक्ति। ताकत। २०. मज्जा। २१. वज्रक्षार। २२. वायु। हवा। २३. रोग। बीमारी। २४. जूआ खेलने का पासा। २५. अनार का पेड़। २६. पियाल वृक्ष। चिरौंजी का पेड़। २७. वंग। २८. मुद्ग। मूँग। २९. क्वाथ। काढ़ा। ३०. नीली वृक्ष। नील का पौधा। ३१. साल। सार। ३२. पना। पतला शरबत। ३३. कपूर। ३४. तलवार। (डिं०)। ३५. द्रव्य। (डिं०)। ३६. हाड़। अस्थि। (डिं०)। ३७. एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसमें २८ मात्राएँ होती हैं और सोलहवीं मात्रा पर विराम होता है। इसके अंत में दो गुरु होते है। प्रभाती नामक गीत इसी छंद में होता है। ३८. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसमें एक गुरु और एक लघु होता है। इसे 'ग्वाल' और 'शानु' भी कहते है। विशेष दे० 'ग्वाल'। ३९. एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उत्तरोत्तर

वस्तुओं का उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णित होता है। इसे 'उदार' भी कहते हैं। उ०--(क)—सब मम प्रिय सब मम उपजाए। सब ते अधिक मनुज मोहिं भाए। तिन महँ द्विज, द्विज महँ श्रुतिधारी। तिन महँ निगम नीति अनुसारी। तिन महँ पुनि विरक्त पुनि ज्ञानी। ज्ञानिहु ते अति प्रिय विज्ञानी। तिनतें मोहि अति प्रिय निज दासा। जेहि गति मोरि न दूसरी आसा। (ख) हे करतार बिनै सुनो 'दास' की लोकनि को अवतार करचो जनि। लोकनि को अवतार करचो तो मनुष्यन को तो सँवार करचो जनि। मानुष हू को सँवार करचो तो तिन्हैं बिच प्रेम पसार करचौ जनि। प्रेम पसार करचो तो दयानिधि कैहूँ बियोग बिचार करचौ जनि। ४०. वस्त्र। कपड़ा। उ०--बगरे बार भीनें सार मैं झलकति अधर नई अरुनई सरसानि।--घनानंद, पृ० ५०६। ४१. गमन। क्रमण। गति (को०)। ४२. मवाद। पस (को०)। ४३. गोबर। गोमय (को०)। ४४. प्रसार। फैलाव। विस्तृति (को०)। ४५ दृढ़ता। मजबूती। धैर्य। धीरता।

सार२—वि० १. उत्तम। श्रेष्ठ। २. ठोस। दृढ़। मजबूत। ३. न्याय्य। ४. आवश्यक। अनिवार्य (को०)। ५. सही। वास्तविक (को०)। ६. अनेक प्रकार का। रंग बिरंगा। चितकबरा (को०)। ७. भगानेवाला। दूर करनेवाला।

सार(पु)३--संज्ञा पुं० [सं० सारिका] सारिका। मैना। उ०—गहबर हिय शुक सों कहँ सारो।--तुलसी (शब्द०)।

सार४—संज्ञा पुं० [हिं० सारना] १. पालन। पोषण। रक्षा। उ०--जड़ पंच मिलै जिहिं देह करी करनी लषु धौं धरनीधर की। जनु को कहु क्यों करिहैं न सँभार जो सार करै सचराचर की। —तुलसी (शब्द०)। २. शय्या। पलंग। उ०--रची सार दोनों इक पासा। होय जुग जुग आवहिं कैलासा।—जायसी (शब्द०)। ३. खबरदारी। संभाल। हिफाजत। उ०—भरत सौगुनी सारकरत हैं अति प्रिय जानि तिहारे।--तुलसी (शब्द०)। ४. सुधबुध। अवसान। होश हवास। ५. खोजखबर।

सार५—संज्ञा पुं० [सं० श्याल, हिं० साला] पत्नी का भाई। साला।

विशेष--इस शब्द का प्रयोग प्रायः गाली के रूप में भी किया जाता है।

सार६—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. उष्ट्र। ऊँट। २ एक चिड़िया [को०]।

सार७--प्रत्य० पदांत में प्रयुक्त होकर यह फारसी प्रत्यय निम्नांकित अर्थ देता है—१. वाला। जैसे,—शर्मसार। २. बहुतायत। जैसे,--कोहसार। ३. मानिंद। तुल्य। समान। जैसे,—देव सार [को०]।

सार†८—संज्ञा स्त्री० [सं० शाला] पशुओं को बाँधने का स्थान। पशुशाला। जैसे, गो सार।

सारक१—वि० [सं०] रेचक। दस्तावर [को०]।

सारक२—संज्ञा पुं० जमालगोटा [को०]।

सारखदिर—संज्ञा पुं० [सं०] दुर्गंध खदिर। बबुरी।

सारखा†—वि० [सं० सदृश, हिं० सरीखा] सदृश। समान। तुल्य। उ०—ता घर मरहट सारखे भूत बसहिं तिन माहिं।—कबीर ग्रं०, पृ० २५५।

सारगंध—संज्ञा पुं० [सं० सारगन्ध] चंदन। संदल।

सारगंधि—संज्ञा पुं० [सं० सारगन्धि] चंदन।

सारग--वि० [सं०] १. शक्तिशाली। सबल। २. सारगर्भित [को०]।

सारगराही(पु)—वि० [सं० सारग्राही] दे० 'सारग्राही'। उ०—औगुन छाँड़ै गुन गहै, सारगराही लच्छ।—कबीर सा०, पृ० ६०।

सारगर्भ—वि० [सं०] दे० 'सारगर्भित'।

सारगर्भित—वि० [सं०] जिसमें तत्व भरा हो। सारयुक्त। तत्वपूर्ण। जैसे,—सारगर्भित पुस्तक, सारगर्भित व्याख्यान।

सारगात्र—वि० [सं०] सारयुक्त या शक्तिशाली अंगों वाला। पुष्टांग। बलवान [को०]।

सारगुण—संज्ञा पुं० [सं०] प्रधान या प्रमुख गुण। प्रधान धर्म [को०]।

सारगुरु—वि० [सं०] जो वजन में भारी हो। तौल में भारी।

सारग्राहिणी-वि० स्त्री० [सं०] दे० 'सारग्राही'। उ०—रिपुदमन—और वो बुद्धि कैसी अच्छी होती है। रणधीर--सारग्राहिणी। —श्रीनिवास ग्रं०, पृ० ६२।

सारग्राही—वि० [सं० सारग्राहिन्] [वि० स्त्री० सारग्राहिणी] सार तत्व को ग्रहण करनेवाला। किसी वस्तु का मुख्य अंश ले लेनेवाला [को०]।

सारग्रीव—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

सारघ--संज्ञा पुं० [सं०] वह मधु जो मधुमक्खी तरह तरह के फूलों से संग्रह करती है।

विशेष वैद्यक में यह लघु, रुक्ष, शीतल, कमल और अर्श रोग का नाशक, दीपन, बलकारक, अतिसार, नेत्र रोग तथा घाव में हितकर कहा गया है।

सारजंट--संज्ञा पुं० [अं० सारजेंट] पुलिस के सिपाही का जमादार; विशेषतः गोरा या युरेशियन जमादार।

सारज--संज्ञा पुं० [सं०] नवनीत। मक्खन।

सारजासव--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का आसव जो धान, फल, फूल, मूल, सार, टहनी, पत्ते, छाल और चीनी इन नौ चीजों से बनता है।

विशेष--वैद्यक में यह आसव मन, शरीर और अग्नि को बल देनेवाला, अनिद्रा, शोक और अरुचि का नाश करनेवाला तथा आनंदवर्धक बतलाया गया है।

सारटिफिकट--संज्ञा पुं० [अं० सर्टिफिकेट] १. प्रशंसापत्र। २. सनद। प्रमाणपत्र।

सारण१--संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का गंध द्रव्य। २. आम्रातक वृक्ष। अमड़ा। ३, अतिसार। दस्त की बीमारी। ४. भद्रबला। ५. पारा आदि रसों का संस्कार। दोषशुद्धि। ६. रावण के एक मंत्री का नाम जो रामचंद्र की सेना में उनका भेद लेने गया था। ७. आँवला। ८. गंधप्रसारिणी। ९. नवनीत। मक्खन। १०. गंध। महक। ११. घर की ओर ले चलना (को०)। १२. शरद् ऋतु की वायु (को०)। १३. तक्र। मट्ठा (को०)।

सारण२--वि० १. रेचक। प्रवाहित करने या बहानेवाला। २. चिटका हुआ। फटा हुआ। ३. जिसके सिर पर बालों के पाँच गुच्छे हों [को०]।

सारणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पारद आदि रसों का एक प्रकार का संस्कार। सारण। २. विस्तार करना। फैलाना (को०)। ३. ध्वनि या स्वर उत्पन्न करना (को०)।

सारणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गंधप्रसारिणी। २. पुनर्नवा। गदहपूरना। ३. छोटी नदी। ४. नाली। प्रणालिका। मोरी (को०)।

सारणिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारणिकी] १. पथिक। राहगीर। बटोही। २. घूम घूमकर बेचनेवाला व्यापारी। फेरीवाला। बिसाती (को०)।

सारणिक[2]—वि० यात्रा करनेवाला [को०]।

सारणिकघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] पथिकों का विनाश करनेवाला, डाकू।

सारणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गंधप्रसारिणी। २. छोटी नदी। ३. दे० 'सारिणी।

सारणेश—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

सारतंडुल—संज्ञा पुं० [सं० सारतण्डुल] चावल। हलका उबाला हुआ चावल जिसके सब दाने साबूत हों।

सारतः—अव्य० [सं० सारतस्] १. प्रकृति के अनुसार। प्रकृत्या। २. बलपूर्वक। ३. धन के अनुसार। वित्त के अनुसार [को०]।

सारतरु—संज्ञा पुं० [सं०] १. केले का पेड़। २. खैर का पेड़।

सारता†—संज्ञा स्त्री० [सं०] सार का भाव या धर्म। सारत्व।

सारति—संज्ञा स्त्री० [हिं० सारना] तैयारी। व्यवस्था। उ०—तब वकील कर जोरि अरज करी कछु अरज की। तब सुजानि दृग मोरि मसलति की सारति करी।—सुजान०, पृ० ६।

सारतैल—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार अशोक, अगर, सरल, देवदारु आदि का तेल जिसका व्यवहार क्षुद्र रोगों में होता है।

सारथि—संज्ञा पुं० [सं०] १. रथादि का चलानेवाला। सूत। रथनागर। २. समुद्र। सागर। ३. साथी। सहयोगी (को०)। ४. अगुआ। नेता। पथप्रदर्शक (को०)।

सारथित्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. सारथि का कार्य। २. सारथि का भाव या धर्म। ३. सारथि का पद।

सारथी—संज्ञा पुं० [सं० सारथि] दे० 'सारथि—१'। उ०—आपने बाण सो काटि ध्वज रुक्म के असुर औ सारथी तुरत मारयो। —सूर (शब्द०)।

सारथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. रथ आदि का चलाना। गाड़ी आदि हाँकना। २. सवारी। ३. सहायता। मदद।

सारद(पु)[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शारदा] सरस्वती। शारदा। उ०—सुक से मुनी सारद सेवकता चिरजीवन लोमस ते अधिकाने। ऐसे भए तो कहा तुलसी जो पै राजिवलोचन राम न जाने। —तुलसी (शब्द०)।

सारद[2]—वि० [सं० शरद > शारद] शारदीय। शरद संबंधी। उ०—सोहति धोती सेत में, कनक बरन तन बाल। सारद बारद बीजुरी, भा रद कीजत लाल।—बिहारी (शब्द०)।

सारद[3]—संज्ञा पुं० [सं० शरद] शरद ऋतु।

सारदर्शी—वि० [सं० सारदर्शिन्] सार तत्व को जाननेवाला। महत्वपूर्ण अंश को पहचाननेवाला [को०]।

सारदा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दे० 'शारदा'। २. दुर्गा [को०]।

सारदा[2]—संज्ञा पुं० [सं० शरद् ?] स्थल कमल।

सारदा[3]—वि० स्त्री० [सं०] सार देनेवाली। जो सार दे।

सारदातीर्थ—संज्ञा पुं० [सं० शारदातीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ।

सारदारु—संज्ञा पुं० [सं०] वह लकड़ी जिसमें सार भाग अधिक हो।

सारदासुंदरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शारदासुन्दरी] दुर्गा का एक नाम।

सारदी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलपीपल।

सारदी[2]—वि० [सं० शारदी] दे० 'शारदीय'। उ०—कहुँ कहुँ वृष्टि सारदी थोरी। कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी।—मानस, ४। १६।

सारदूल—संज्ञा पुं० [हिं० शार्दूल] दे० 'शार्दूल'। उ०—क्रीड़ा मृग जाको सारदूल। तन बरन कांति मनु हेम फूल।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ३७३।

सारद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] १. खैर का पेड़। २. वह वृक्ष जिसकी लकड़ी में सारभाग अधिक हो।

सारधाता—संज्ञा पुं० [सं० सारधातृ] १. वह जो ज्ञान उत्पन्न करता हो। बोध करानेवाला। २. शिव।

सारधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम धान। बढ़िया चावल। २. बढ़िया अन्न।

सारधू†—संज्ञा स्त्री० [हिं०] पुत्री। बेटी। कन्या।

सारना—क्रि० स० [हिं० सरना का सक० रूप] १. पूर्ण करना। समाप्त करना। संपूर्ण रूप से करना। उ०—धनि हनुमंत सुग्रीव कहत है, रावण को दल मारयो। सूर सुनत रघुनाथ भयो सुख काज आपनो सारयो।—सूर (शब्द०)। २. साधना। बनाना। दुरुस्त करना। ३. सुशोभित करना। सुंदर बनाना। ४. देख रेख करना। रक्षा करना। सँभालना। ५. आँखों में अंजन आदि लगाना। ६. (अस्त्र आदि) चलाना। संचालित करना। उ०—ससि पर करवत सारा काहू। नखतन्ह भरा दीन्ह बड दाहू।—जायसी (शब्द०)। ७. गलाना। सड़ाना। उ०—सन असंत है एक काट के जल में सारैं। —पलटू०, भा० १, पृ० १७। ८. काढ़ना। लगाना। उ०— (क) जातहि राम तिलक तेहि सारा।—मानस, ५। ४६। (ख) सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा —मानस, ६। १०५।

सारनाथ—संज्ञा पुं० [सं० सारङ्गनाथ] बनारस से उत्तरपश्चिम चार मील पर एक प्रसिद्ध स्थान।

विशेष—यह स्थान हिंदुओं, जैनियों और बौद्धों का एक प्रसिद्ध तीर्थ है। यही प्राचीन मृगदाव है जहाँसे भगवान् बुद्ध ने अपना उपदेश आरंभ (धर्मचक्र प्रवर्तन) किया था। यहाँ खुदाई होने पर कई बौद्धस्तूप, बौद्ध मंदिरों का ध्वंसावशेष तथा कितनी ही हिंदू, बौद्ध और जैन मूर्तियाँ पाई गई हैं। इसके अतिरिक्त अशोक का एक स्तंभ भी यहाँ पाया गया है।

सारपत्र—वि० [सं०] (वृक्ष) जिसकी पत्तियाँ मजबूत और कड़ी हो [को०]।

सारपद—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का पक्षी जो चरक के अनुसार विष्किर जाति का है। २. वह पत्ता जिसमें सार अर्थात् खाद हो।

सारपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शालपर्णी' [को०]।

सारपाक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का विषैला फल जिसका उल्लेख सुश्रुत ने किया है।

सारपाद—संज्ञा पुं० [सं०] धन्वंग वृक्ष। धामिन।

सारपादप—संज्ञा पुं० [सं०] धन्वंग वृक्ष। धामिन।

सारफल—संज्ञा पुं० [सं०] जँबीरी नीबू।

सारबंधका—संज्ञा स्त्री० [सं० सारबन्धका] मेथी।

सारबान—संज्ञा पुं० [फा०] ऊँट पालनेवाला। ऊँटवाला [को०]।

सारभंग—संज्ञा पुं० [सं० सारभङ्ग] सार या शक्ति का अभाव [को०]।

सारभांड—संज्ञा पुं० [सं० सारभाण्ड] १. व्यापार की बहुमूल्य वस्तु। २. खजाना। ३. प्राकृतिक पात्र। प्रकृतिनिर्मित पात्र। जैसे, मृगनाभि। कस्तूरी। ४. चोखा माल। असली माल।

सारभाटा—संज्ञा पुं० [हिं० ज्वार का अनु० + भाटा] ज्वारभाटा का उलटा। समुद्र की वह बाढ़ जिसमें पानी पहले बढ़कर समुद्र तट से आगे निकल जाता है और फिर कुछ देर बाद पीछे लौटता है।

सारभुक्—संज्ञा पुं० [सं० सारभुज्] लोहे को खानेवाली, अग्नि। आग।

सारभूत[१]—वि० [सं०] १. सारस्वरूप। उ०—तामहिँ सारभूत द्वै साधैं। सिद्धासन पद्मासन बाँधै।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० १०६।

सारभूत[२]—संज्ञा पुं० प्रमुख तत्त्व या सर्वोत्तम वस्तु।

सारभृत्—वि० [सं०] सारग्रहण करनेवाला। सारग्राही।

सारमंडूक—संज्ञा पुं० [सं० सारमण्डूक] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीड़ा जो मेढ़क की तरह का होता है।

सारमहत्—वि० [सं०] अत्यंत मूल्यवान्। बहुत कीमती।

सारमार्गण—संज्ञा पुं० [सं०] १. मज्जा या मेद ढूँढ़ना। २. सार तत्त्व या अंश खोजना [को०]।

सारमिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रुति। वेद।

सारमूषिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवदाली। घघरबेल। बंदाल।

सारमेय—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारमेयी] १. सरमा की संतान। २. कुत्ता। ३. सुफलक के पुत्र और अक्रूर के एक भाई का नाम।

यौ०—सारमेयगणाधिप = कुबेर का एक नाम। सारमेयचिकित्सा = कुत्ते की चिकित्सा करने की कला।

सारमेयादन—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुत्ते का भोजन। २. भागवत के अनुसार एक नरक का नाम।

सारमेयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुतिया।

सारयोध—वि० [सं०] चुने हुए योद्धाओं से युक्त। अच्छे वीरों से युक्त [को०]।

साररूप—वि० [सं०] १. निचोड़। निष्कर्ष स्वरूप। २. सर्वोत्तम। प्रमुख। ३. अत्यंत सुंदर [को०]।

सारलोह—संज्ञा पुं० [सं०] लोहसार। इस्पात। लोहा।

विशेष—वैद्यक में यह ग्रहणी, अतिसार, अर्द्धांग, वात, परिणामशूल, सर्दी, पीनस, पित्त और श्वास का नाशक बताया गया है।

सारल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सरल होने का भाव। सरलता। उ०—किंतु हा! यह कैसा सारल्य? सालता है जो बनकर शल्य।—साकेत, पृ० ३५। २. सत्यता। ईमानदारी। सचाई (को०)।

सारव—वि० [सं०] सरयू नदी से संबंधित [को०]।

सारवती[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. योग में एक प्रकार की समाधि। २. एक प्रकार का छंद जिसमें तीन भगण और एक गुरु होता है।

सारवती[२]—वि० स्त्री० [सं० सारवत्] दे० 'सारवान्'।

सारवत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सार ग्रहण करने का भाव। सारग्राहिता।

सारवना(पु)—क्रि० स० [सं० स्राव करण] स्रवित करना। चुआना। ढालना। उ०—ब्रम्ह अगनि जौवन जरै चेतन चितहि उजासो रे। सुमति कलाली सारवै कोइ पीवै बिरला दासो रे।—दादू०, पृ० ४६३।

सारवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वे वृक्ष या वनस्पतियाँ आदि जिनमें से किसी प्रकार का दूध या सफेद तरल पदार्थ निकलता हो। क्षीरवृक्ष।

सारवर्जित—वि० [सं०] जिसमें कुछ भी सार न हो। साररहित। निःसार। रसहीन।

सारवस्तु—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारवान् वस्तु। महत्वपूर्ण चीज [को०]।

सारवान्—दे० [सं० सारवत्] १. महत्वपूर्ण। मूल्यवान। २. मजबूत। दृढ़। ठोस। ३. पोषक। ४. सार अर्थात् द्रव, रस या निर्यासयुक्त। ५. सारयुक्त। घन। ससार। ६, उर्वर। उपजाऊ [को०]।

सारवाला—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की जंगली घास जो तर जगहों में होती है।

विशेष—यह घास प्रायः बारह वर्ष तक सुरक्षित रहती है। मुलायम होने पर यह पशुओं को खिलाई जाती है।

सारविद्—वि० [सं०] किसी वस्तु के सार का ज्ञाता। किसी के तत्व, मूल्य, अथवा महत्व को जाननेवाला [को०]।

सारवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] धामिन। धन्वंग वृक्ष।

सारशन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सारसन'।

सारशल्य—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद खैर का पेड़। श्वेत खदिर।

सारशून्य—वि० [सं०] तत्वरहित। महत्वहीन। निरर्थक [को०]।

सारस¹—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारसी] १. एक प्रकार का प्रसिद्ध सुंदर पक्षी जो एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और युरोप के उत्तरी भागों में पाया जाता है। उ०—मोर हंस सारस पारावत। भवननि पर सोभा अति पावत।—मानस, ७।२८।

विशेष—इसकी लंबाई पूँछ के आखिरी सिरे तक ४ फुट होती है। पर भूरे होते हैं। सिर का ऊपरी भाग लाल और पैर काले होते हैं। यह एक स्थान पर नहीं रहता बराबर घूमा करता है। किसानों के नए बीज बोने पर यह वहाँ पहुँच जाता है और बीजों को चट कर जाता है। यह मेढ़क, घोंघा आदि भी खाता है। यह प्राय: घास फूस के ढेर में घोंसला बनाकर या खँडहरों में रहता है। यह अपने बच्चों का लालन पालन बड़े यत्न से करता है। कहीं कहीं लोग इसे पालते हैं। बाग बगीचों में छोड़ देने पर यह कीड़े मकोड़ों को खाकर उनसे पेड़ पौधों की रक्षा करता हैं। कुछ लोग भ्रमवश हंस को ही सारस मानते हैं। वैद्यक में इसके मांस का गुण मधुर, अम्ल, कषाय तथा महातिसार, पित्त, ग्रहणी और अर्श रोग का नाशक बताया गया है।

पर्या०—पुष्कराह्व। लक्ष्मण। सरसीक। सरोद्भव। रसिक। कामी।

२. हंस। ३. गरुड़ का पुत्र। ४. चंद्रमा। ५. स्त्रियों का एक प्रकार का कटिभूषण। ६. झील का जल।

विशेष—नदी का जल पहाड़ आदि के कारण रुक कर जहाँ जमा होता है, उसे 'सरस' और उसके जल को सारस जल कहते हैं। ऐसा जल बलकारी, प्यास बुझानेवाला, लघु, रुचिकारक और मलमूत्र को रोकनेवाला माना गया है।

७. कमल। जलज। उ०—(क) सारस रस अचवन को मानो तृषित मधुप जुग जोर। पान करत कहूँ तृप्ति न मानत पलक न देत अकोर।—सूर (शब्द०)। (ख) मंजु अंजन सहित जलकन चुवत लोचन चारु। स्याम सारस मग मनो ससि श्रवत सुधा सिँगारु।—तुलसी (शब्द०)। ८. खग। पक्षी। विहग (को०)। ९. संगीत में एक ताल (को०)। १०. छप्पय का ३७ वाँ भेद। इसमें ३४ गुरु, ८४ लघु, कुल ११८ वर्ण या १५१ मात्राएँ अथवा ३४ गुरु, ८० लघु कुल ११४ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं।

सारस²—वि० १. तालाब संबंधी। २. सारस पक्षी संबंधी। ३. चिल्लानेवाला। बुलानेवाला [को०]।

सारसक—संज्ञा पुं० [सं०] सारस।

सारसन—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्रियों का कमर में पहनने का मेखला नामक आभूषण। करधनी। चंद्रहार। २. तलवार की पेटी। कमरबंद। ३. कवच। उरस्त्राण (को०)।

सारसप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारसी [को०]।

सारसा—संज्ञा पुं० [अं० सालसा] दे० 'सालसा'।

सारसाक्ष—वि० [सं०] एक प्रकार का रत्न। लाल [को०]।

सारसाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पद्मलोचना। कमलनैनी स्त्री [को०]।

सारसिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारस पक्षी की मादा। सारसी [को०]।

सारसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आर्या छंद का २३ वाँ भेद जिसमें ५ गुरु और ४८ लघु मात्राएँ होती हैं। २. सारस पक्षी की मादा।

सारसुता (पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सूरसुता] यमुना। उ०—निरखति बैठि नितंबिनि पिय सँग सारसुता की ओर।—सूर (शब्द०)।

सारसुती (पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती] दे० 'सरस्वती'।

सारसैंधव—संज्ञा पुं० [सं० सारसैन्धव] सेंधा नमक।

सारस्य¹—वि० [सं०] जिसमें बहुत अधिक रस हो। बहुत रसवाला।

सारस्य²—संज्ञा पुं० १. रसदार होने का भाव। रसीलापन। सरसता। २. जल का प्राचुर्य। जल की अधिकता (को०)। ३. उत्क्रोश। कलकल। निनाद (को०)।

सारस्वत¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. दिल्ली के उत्तरपश्चिम का वह भाग जो सरस्वती नदी के तट पर है और जिसमें पंजाब का कुछ भाग संमिलित है। (प्राचीन आर्य पहले यहीं आकर बसे थे और इसे बहुत पवित्र समझते थे।) सारस्वत प्रदेश। २. इस देश के निवासी ब्राह्मण। ३. सरस्वती नदी के पुत्र एक मुनि का नाम। ४. एक प्रसिद्ध व्याकरण। ५. बिल्वदंड। ६. वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जिसके सेवन से उन्माद, वायुजनित विकार तथा प्रमेह आदि रोगों का दूर होना माना जाता है। ७. वैद्यक में एक प्रकार का औषधयुक्त घृत जो पुष्टिकारक माना जाता है। ८. एक कल्प का नाम (को०)। ९. वक्तृत्व। वाग्मिता (को०)। १०. दे० 'सारस्वत कल्प (को०)।

सारस्वत²—वि० १. सरस्वती (वाग्देवी) संबंधी। सरस्वती का। २. वाक्पटु। वाग्मी। विद्वान् (को०)। ३. सरस्वती नदी संबंधी (को०)। ४. सारस्वत देश का।

सारस्वतकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] सरस्वतीपूजन संबंधी एक उत्सव का नाम। सारस्वतोत्सव [को०]।

सारस्वतव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार का व्रत जो सरस्वती देवता के उद्देश्य से किया जाता है।

विशेष—कहते हैं कि इस व्रत का अनुष्ठान करने से मनुष्य बहुत बड़ा पंडित, भाग्यवान् और कुशल हो जाता है और उसे पत्नी तथा मित्रों आदि का प्रेम प्राप्त हो जाता है। यह व्रत बराबर प्रति रविवार या पंचमी को किया जाता है और इसमें किसी अच्छे ब्राह्मण की पूजा करके उसे भोजन कराया जाता है।

सारस्वतीय—वि० [सं०] सरस्वती संबंधी। सरस्वती का।

सारस्वतोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] वह उत्सव जिसमें सरस्वती देवी का पूजन किया जाता है।

सारस्वत्य—वि० [सं०] सरस्वती संबंधी। सरस्वती का।

साराभस—संज्ञा पुं० [सं०] नीबू का रस।

सारांश—संज्ञा पुं० [सं०] १. खुलासा। संक्षेप। सार। निचोड़। २. तात्पर्य। मतलब। अभिप्राय। ३. नतीजा। परिणाम। ४. उपसंहार। परिशिष्ट।

सारा[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काली निसोथ। कृष्णत्रिवृत्ता। २. दूब। दूर्वा। ३. शातला। ४. थूहर। ५. केला। ६. कुश। कुशा (को०)। ७. तालिसपत्र।

सारा[२]—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु दूसरी से बढ़कर कही जाती है। जैसे, – ऊखहु ते मधुर पियूषहु ते मधुर प्यारी तेरे ओठ मधुरता को सागर है।

सारा†[३]—संज्ञा पुं० [सं० श्यालक] दे० 'साला'।

सारा[४]—वि० [सं० सर्व] [वि० स्त्री० सारी] समस्त। संपूर्ण। समूचा। पूरा। उ०—के है पाकदामन तू नरियाँ में आज। बड़ाई बड़ी तुज है सारियाँ में आज।—दक्खिनी०, पृ० ८४।

सारा†[५]—संज्ञा पुं० [हिं० ओसारा] दे० 'ओसारा'। उ०—जब सारे में धूप फैल जाए तब कहीं आँख खुले।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३६८।

सारादान—संज्ञा पुं० [सं०] सार वस्तु को ग्रहण करना। उत्कृष्ट या सर्वोत्तम को चयन करना [को०]।

सारापहार—संज्ञा पुं० [सं०] सार अंश या संपत्ति को लूटना [को०]।

सारामुख—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का धान या चावल [को०]।

साराम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] १. जँबीरी नीबू। २. धामिन।

सारार्थी—वि० [सं० सारार्थिन्] सारभाग का इच्छुक। लाभ लेने का इच्छुक [को०]।

साराल—संज्ञा पुं० [सं०] तिल।

साराव—वि० [सं०] नादयुक्त। रवयुक्त [को०]।

सारावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का छंद जिसे सारावली भी कहते हैं।

सारि—संज्ञा पुं० [सं०] १. पासा या चौपड़ खेलनेवाला। २. जुआ खेलने का पासा। उ०—ढारि पासा साधु संगति केरि रसना सारि। दाँव अब के परचो पूरी कुमति पिछली हारि।—सूर (शब्द०)। ३. गोटी। ४. एक पक्षी। मैना (को०)।

यौ०—सारिक्रीडा = पाँसे का खेल। गोटियों का खेल। सारिफलक = बिसात जिसपर गोटी खेलते हैं।

सारिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सारिका'।

सारिक[२]—संज्ञा पुं० [अ० सारिक़] [स्त्री० सारिका] चोर। तस्कर [को०]।

सारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मेना नामक पक्षी। दे० 'मैना'। उ०—बन उपवन फल फूल, सुभग सर शुक सारिका हंस पारावत।—सूर (शब्द०)। २. सारंगी, सितार, वीणा आदि तंत्र वाद्यों का ऊँचा उठा हुआ वह भाग जिसके ऊपर से होकर तार जाता है। घुड़िया। घोरिया (को०)। ३. चांडाल वीणा (को०)। ४. विश्वस्त व्यक्ति। चर (को०)।

सारिकामुख—संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीड़ा।

सारिखाⓅ†—वि० [सं० सदृश या सदृक्ष] दे० 'सरीखा'। उ०—(क) तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरे।—मानस, ५। (ख) सतगुरु संग न संचरा, सत्त नाम उर नाहिं। ते घट मरघट सारिखा, भूत बसै ता माँहि।—दरिया० बानी, पृ० ६। (ख) सुंदर सदगुरु सारिखा उपकारी नहिं कोइ।—सुंदर० ग्रं०, भा० २, पृ० ६६७।

सारिणी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहदेई। सहदेवी। महाबला। पीतपुष्पा। २. कपास। ३. धमासा। दुरालभा। कपिल शिंशपा। काला सीसो। ४. गंध प्रसारिणी। ५. रक्त पुनर्नवा। ६. जलप्रणाली। स्रोत की धारा (को०)।

सारिणी[२]—संज्ञा स्त्री० १. दे० 'सारणी'। २. वह तालिका या ग्रंथ जिससे ग्रहों आदि की गति का क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त होता हो। जैसे,—चंद्र सारिणी, सूर्यसारिणी। ३. सूची। तालिका। फेहरिस्त।

सारिव—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का धान।

सारिवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनंतमूल।

पर्या०—शारदा। गोपी। गोपकन्या। गोपवल्ली। प्रतानिका। लता। आस्फोता। काष्ठ शारिवा। गोपा। उत्पल सारिवा। अनंता। शारिवा। श्यामा।

२. काला अनंतमूल।

पर्या०—कृष्ण मूली। कृष्णा। चंदन सारिवा। भद्रा। चंदन गोपा। चंदना। कृष्ण वल्ली।

सारिवाद्वय—संज्ञा पुं० [सं०] अनंतमूल और श्यामा लता इन दोनों का समूह।

सारिष्ट—वि० [सं०] अरिष्ट अर्थात् अमंगल एवम् अशुभ लक्षणों से युक्त। मृत्यु के लक्षणों से युक्त [को०]।

सारिष्ठ—वि० [सं०] १. सबसे सुंदर। २. सबमें श्रेष्ठ।

सारिसृक्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जो ऋग्वेद के कुछ मंत्रों के द्रष्टा थे।

सारी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सारिका पक्षी। मैना। उ०—शुभ सिद्धांत वाक्य पढ़ते हैं शुक सारी भी आश्रम के।—पंचवटी, —पृ० ६। २. पासा। गोटी। ३. सातला। सप्तला। थूहर। ४. भौहों की भंगिमा या वक्रता (को०)।

सारी[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाटिका, शाटी, हिं० साड़ी] १. दे० 'साड़ी'। उ०—तन सुरंग सारी, नयन अंजन, बेंदी भाल। सजे रही जग जालिमा भामिनि देखहु लाल।—स० सप्तक, पृ० २५२।

सारी†[३]—संज्ञा स्त्री० [हिं० साला] स्त्री की बहन। पत्नी की बहन।

सारीⓅ[४]—संज्ञा स्त्री० [सं० सार] मलाई। बालाई। साढ़ी।

सारी[५]—संज्ञा पुं० [सं० सारिन्] वह जो अनुकरण करनेवाला हो। वह जो अनुसरण करे।

सारी[६]—वि० [सं० सारिन्] १. गमनशील। जानेवाला। गंता। २. किसी वस्तु का सार भाग लेनेवाला (को०)।

सारीख, सारीखाⓅ—वि० [सं० सदृक्ष, प्रा० सारिक्ख] [वि० स्त्री० सारीखी] समान। तुल्य। सदृश। उ०—(क) जोध सुर असुर वो सरोवर जूटिया, बरोबर करै सारीख बाहाँ।—रघु०

रू०, पृ० २१। (ख) सारीखी जोड़ी जुड़ी ग्रा नारी ग्रउ नाह।
—ढोला०, दू० ६।

सारुⓤ†—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सार'। उ०—संगर में सरजा शिवाजी ग्ररि सैनन को, सारु हरि लेत हिंदुवान सिर सारु दै।—भूषण ग्रं०, पृ० ५४।

सारूप—संज्ञा पुं० [सं०] समान रूप होने का भाव। सरूपता।

सारूप्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति जिसमें उपासक ग्रपने उपास्य देव के रूप में रहता है ग्रौर ग्रंत में उसी उपास्य देवता का रूप प्राप्त कर लेता है। २. समान रूप होने का भाव। एकरूपता। सरूपता। ३. ग्रनुकूल वस्तु की सरूपता ग्रथवा रूपसादृश्य के कारण जन्य चित्तक्षोभ की वृद्धि ग्रथवा क्रोधादि व्यवहार (को०)। ४. किसी पदार्थ को या उससे मिलती जुलती सूरत को देखकर होनेवाला ग्राश्चर्य (को०)।

सारूप्य[२]—वि० सनुपयुक्त। उचित। ठीक [को०]।

सारूप्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारूप्य का भाव या धर्म।

सारोⓤ†[१]—संज्ञा पुं० [सं० शालि] एक प्रकार का धान जो ग्रगहन मास में तैयार हो जाता है।

सारोⓤ†[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सारिका] दे० 'सारिका'।

सारोदक—संज्ञा पुं० [सं०] ग्रनंतमूल का रस।

सारोपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक प्रकार की लक्षणा जो उस स्थान पर होती है जहाँ एक पदार्थ में दूसरे का ग्रारोप होने पर कुछ विशिष्ट ग्रर्थ निकलता है। जैसे,—गरमी के दिनों में पानी ही जान है। यहाँ 'पानी' में 'जान' का ग्रारोप किया गया है। पर ग्रभिप्राय यह निकलता है कि यदि थोड़ी देर भी पानी न मिले तो जान निकलने लगती है।

सारोष्टिक, सारोष्ट्रिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का विष।

सारोह—वि० [सं०] १. ग्रारोहयुक्त। ऊपर उठा हुग्रा। २. घोड़ेवाले या घुड़सवार के साथ [को०]।

सारौंⓤ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सारो] सारिका। मैना।

सार्क—वि० [सं०] ग्रर्क या सूर्य से युक्त। धूप या ग्रातपयुक्त [को०]।

सार्गड, सार्गल—वि० [सं०] ग्रर्गलायुक्त। प्रतिबंधित। रोक या प्रतिबंध से युक्त। प्रतिरोधित [को०]।

सार्गाल—वि० [सं० शार्गाल ?] शृगाल संबंधी। स्यार का।

सार्गिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सृष्टि करने में समर्थ हो। स्रष्टा। सृष्टिकर्ता।

सार्जंट—संज्ञा पुं० [ग्रं० सार्जेंट] दे० 'सर्जंट'।

सार्ज—संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना।

सार्जनाक्षि—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सार्टिफिकेट—संज्ञा पुं० [ग्रं० सार्टिफिकेट] दे० 'सर्टिफिकेट'।

सार्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] घर। निवास [को०]।

सार्थ[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. जंतुग्रों का समूह। पशुग्रों का झुंड। २. वणिकों का समूह। कारवाँ। ३. समूह। गरोह। झुंड। ४. व्यापारी माल (कौटि०)। ५. कारबार करनेवाला। व्यापारी। रोजगारी। ६. धनी व्यक्ति (को०)। ७. तीर्थयात्री (को०)। ८. समाज। समूह। भीड़। दल (को०)।

सार्थ[२]—वि० १. ग्रर्थ सहित। जिसका ग्रर्थ हो। २. उद्देश्ययुक्त। जिसका कुछ उद्देश्य हो (को०)। ३. समान ग्रर्थ या महत्व का (को०)। ५. संपन्न। धनी (को०)। ६. जो उपयोगी या काम के लायक हो (को०)।

सार्थक—वि० [सं०] १. ग्रर्थ सहित। २. सफल। सिद्ध। पूर्ण मनोरथ। ३. उपकारी। गुणकारी। मुफीद। ४. लाभकर। लाभदायक।

सार्थकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सार्थक होने का भाव। २. सफलता। सिद्धि। उ०—ग्रधिक प्राणों के पास, ग्रधिक ग्रानंदमय, ग्रधिक कहने के लिये प्रगति की सार्थकता।—ग्राराधना, पृ० ८६।

सार्थघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सार्थ या कारवाँ को नष्ट करता ग्रथवा लूट लेता हो। डाकू [को०]।

सार्थज—वि० [सं०] सार्थ में उत्पन्न। कारवाँ में पला हुग्रा [को०]।

सार्थपति—संज्ञा पुं० [सं०] व्यापार करनेवाला। वणिक्। रोजगारी। सार्थ का स्वामी। कारवाँ का प्रधान।

सार्थपाल—वि० [सं०] सार्थ की देखभाल करनेवाला। व्यापारियों के काफिले का रक्षक [को०]।

सार्थभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] सार्थ का संचालक या प्रधान [को०]।

सार्थवत्—वि० [सं०] १. जिसका कुछ ग्रर्थ हो। ग्रर्थयुक्त। २. यथार्थ। ठीक। ३. सार्थ या समूहवाला। विशाल समूह के साथ (को०)।

सार्थवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १. सार्थ का प्रधान या नेता। २. व्यापारी। रोजगारी [को०]।

सार्थवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सार्थवाह'।

सार्थसंचय—वि० [सं० सार्थसञ्चय] धनी। मालदार [को०]।

सार्थहा[१]—वि० [सं० सार्थहन्] सार्थ का नाश करनेवाला [को०]।

सार्थहा[२]—संज्ञा पुं० डाकू [को०]।

सार्थहीन—वि० [सं०] ग्रपने सार्थ से बिछुड़ा हुग्रा। जो ग्रपने दल से बिछुड़ गया हो [को०]।

सार्थवान्—वि० [सं० सार्थवत्] १. ग्रर्थयुक्त। २. ग्रभिप्राय से युक्त। महत्वपूर्ण। ३. जिसके साथ बहुत बड़ा समूह हो [को०]।

सार्थातिवाह्य—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य ग्रर्थशास्त्र के ग्रनुसार माल की चलान। व्यापारिक माल को रवाना करना।

सार्थिक[१]—वि० [सं०] १. दे० 'सार्थक'। २. सहयात्री। साथ में यात्रा करनेवाला (को०)।

सार्थिक[२]—संज्ञा पुं० १. वणिक्। व्यापारी। २. सहयात्री [को०]।

सार्थीⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सारथिन्] रथ हाँकनेवाला। कोचवान।

सार्दूल—संज्ञा पुं० [सं० शार्दूल] सिंह। केसरी। विशेष दे० 'शार्दूल'।

सार्द्ध—वि० [सं०] १. जिसमें पूरे के ग्रतिरिक्त ग्राधा भी मिला या लगा हो। ग्रर्धयुक्त। २. सहित।

सार्द्र—वि० [सं०] भींगा हुआ । आर्द्र । गीला ।

सार्ध—वि० [सं०] दे० 'सार्द्ध' ।

सार्प—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सार्प्य' ।

सार्पिष, सार्पिष्क—वि० [सं०] [स्त्री० सार्पिषी, सार्पिष्की] १. घृत संबंधी । घृत का । २. घी में पकाया हुआ । घृतपक्व । ३. जिसमें घी हो । घी से युक्त [को०] ।

सार्प्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] अश्लेषा नक्षत्र ।

सार्प्य²—वि० सर्प संबंधी । साँप का ।

सार्बभौम—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सार्वभौम' । उ०—पुष्पदंत हू के दंत तोरयो ज्यों पुहुपसार, छीन लेत सार्बभौम हूँ के सदा मद है ।—मति० ग्रं०, पृ० ४२७ ।

सार्य—वि० जिसका उच्चारण में लोप किया जा सके [को०] ।

सार्वसह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लवण [को०] ।

सार्व¹—संज्ञा पुं० [सं० सार्ब] १. बुद्ध । २. जिन ।

सार्व²—वि० [स्त्री० सार्वी] सबसे संबंध रखनेवाला । जैसे,—सार्वजनिक, सार्वकालीन, सार्वराष्ट्रीय । २. जो सबके लिये उचित या उपयुक्त हो ।

सार्वकर्मिक—वि० [सं०] सभी कार्यों के लिये उपयुक्त [को०] ।

सार्वकामिक—वि० [सं०] [स्त्री० सार्वकामिकी] सब प्रकार की कामनाओं को पूर्ण करनेवाला [को०] ।

सार्वकाम्य—संज्ञा पुं० [सं०] सभी कामनाओं का पूर्ण होना । प्रत्येक इच्छा की पूर्ति [को०] ।

सार्वकाल—वि० [सं०] प्रत्येक काल में होनेवाला । हर समय में होनेवाला [को०] ।

सार्वकालिक—वि० [सं०] १. जो सब कालों में होता हो । सब समय का । २. सब कालों से संबंधित (को०) ।

सार्वगण—संज्ञा पुं० [सं०] क्षारयुक्त भूमि । नोनावाली भूमि [को०] ।

सार्वगुण¹—वि० [सं०] सर्वगुण संबंधी ।

सार्वगुण²—संज्ञा पुं० खारी नमक ।

सार्वगुणिक—वि० [सं०] सर्वगुणसंपन्न । अच्छे गुणों से युक्त [को०] ।

सार्वजनिक—वि० [सं०] १. सब लोगों से संबंध रखनेवाला । सर्वसाधारण संबंधी । उ०—क्या उसको अधिकार हमारे प्राण पर । क्या वह उतनी सार्वजनिक संपत्ति है ।—करुणा०, पृ० ७ । २. सब लोगों के लिये उपयोगी (को०) ।

सार्वजनिकता—संज्ञा स्त्री० [सं० सार्वजनिक + ता (प्रत्य०)] सार्वजनिक होने का भाव । सार्वजनीन होने का भाव । उ०—हो सार्वजनिकता जयी अजित ।—युगांत, पृ० ५७ ।

सार्वजनीन—वि० [सं०] १. सब लोगों से संबंध रखनेवाला । सब लोगों का । २. सर्वोपयोगी (को०) ।

सार्वजन्य—वि० [सं०] १. सब लोगों से संबंध रखनेवाला । २. जिससे सब लोगों को लाभ हो । लोक हितकर ।

सार्वज्ञ, सार्वज्ञ्य—संज्ञा पुं० [सं०] होने का भाव । सर्वज्ञता ।

सार्वत्रिक—वि० [सं०] सब स्थानों से संबद्ध । सब स्थानों में होनेवाला । प्रत्येक स्थितियों, स्थानों एवं अवस्थाओं में होनेवाला । सर्वत्रव्यापी । जैसे, सार्वत्रिक नियम ।

सार्वदेशिक—वि० [सं०] संपूर्ण देशों का । सर्वदेश या राष्ट्र संबंधी ।

सार्वधातुक¹—वि० [सं०] [स्त्री० सार्वधातुकी] संस्कृत व्याकरण के अनुसार सभी धातुओं में व्यवहृत होनेवाला । गण विकरण लगाने के पश्चात् धातु के समग्र रूपों में व्यवहृत होनेवाला ।

सार्वधातुक²—संज्ञा पुं० संस्कृत व्याकरण में चार लकारों (लट्, लोट्, लङ और लिङ) के तिङादि प्रत्यय या लिट् तथा आशीलिङ को छोड़कर और सभी लकारों के विभक्तिचिह्न और 'श्' ध्वनि से प्रकट होनेवाले विकरण ।

सार्वनामिक—वि० [सं०] सर्वनाम से संबधित ।

सार्वभौतिक—वि० [सं०] [स्त्री० सार्वभौतिकी] सर्वभूत संबंधी । सब प्राणियों या भूतों से संबंध रखनेवाला ।

सार्वभौम¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. सप्तद्वीपा वसुंधरा का नरेश । समस्त भूमि का राजा । चक्रवर्ती राजा । २. पुरुवंशी अहंयाति का पुत्र । ३. भागवत के अनुसार विदूरथ के पुत्र का नाम । ४. कुबेर की दिशा अर्थात् उत्तर दिशा का दिग्गज । हाथी । ५. शुक्रनीति के अनुसार वह राज्य जिसका कर या राजस्व प्रतिवर्ष ५० करोड़ कर्ष हो (को०) । ६. समग्र विश्व की भूमि । दुनियाँ का राज्य (को०) ।

सार्वभौम²—वि० १. समस्त भूमि संबंधी । संपूर्ण भूमि का । जैसे,—सार्वभौम राजा । २. समग्र पृथ्वी का शासन करनेवाला (को०) । ३. जो संपूर्ण विश्व में विख्यात हो (को०) । ४. योग के अनुसार मन की सभी स्थितियों, अवस्थाओं से संबंध रखनेवाला (को०) ।

यौ०—सार्वभौमगृह, सार्वभौमभवन = चक्रवर्ती नरेश का प्रासाद ।

सार्वभौमवाद—संज्ञा पुं० [सं० सार्वभौम + वाद] वह सिद्धांत जिसमें पृथ्वी के समस्त प्राणियों के प्रति समता का भाव रखा जाता है । सभी के साथ समान भाववाला सिद्धांत । उ०—उपनिषदीय सार्वभौमवाद और उस काल का प्रचलित वर्णधर्म इनका बेमेल सहवास क्योंकर निभ सकता था ।—संत० दरिया (भू०), पृ० ६२ ।

सार्वभौमसत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] समग्र भूमि पर शासन करने की सर्वोच्च शक्ति । व्यापक शक्ति या अबाध अधिकार (अं० पैरामाउंट पावर) । उ०—निस्संदेह उन्हें महसूस करना चाहिए कि सार्वभौम सत्ता न शिमला में है न ह्वाइट हाल (लंदन) में ।—आज, १९५४ ।

सार्वभौमिक—वि० [सं०] संपूर्ण धरती संबंधी । विश्व में व्याप्त या फैला हुआ [को०] ।

सार्वभौमिकता—संज्ञा पुं० [सं०] सार्वभौमिक होनेका भाव । सर्वव्यापकता ।

सार्वयज्ञिक, सार्वयज्ञीय--वि० [सं०] जो सभी प्रकार के यज्ञों से संबद्ध हो [को०]।

सार्वयौगिक--वि० [सं०] प्रत्येक रोग में उपयोगी या उपकारक [को०]।

सार्वरात्रिक--वि० [सं०] पूरी रात चलने या टिकनेवाला। जैसे,--दीपक [को०]।

सार्वराष्ट्रिय--वि० [सं०] दे० 'सार्वराष्ट्रीय'।

सार्वराष्ट्रीय--वि० [सं०] जिसका दो या अधिक राष्ट्रों से संबंध हो। भिन्न भिन्न राष्ट्र संबंधी। जैसे,--सार्वराष्ट्रीय प्रश्न। सार्वराष्ट्रीय राजनीति।

सार्वरुह--संज्ञा पुं० [सं०] शोरा। मृत्तिकासार। सूर्यक्षार।

सार्वरोगिक, सार्वरौगिक--वि० [सं०] दे० 'सार्वयौगिक'।

सार्वलौकिक--वि० [सं०] सब लोगों को ज्ञात। सारी दुनिया में फैला हुआ। सार्वदेशिक [को०]।

सार्ववर्णिक--वि० [सं०] १. हर किस्म का। हर प्रकार का। २. हर जाति या वर्ग से संबंधित [को०]।

सार्वविद्य--संज्ञा पुं० [सं०] सर्वज्ञता [को०]।

सार्ववेदस्--संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो यज्ञ में अपनी संपूर्ण संपत्ति दान कर दे। २. किसी की समग्र संपत्ति। पूरी संपत्ति [को०]।

सार्ववैद्य--संज्ञा पुं० [दे०] १. वह ब्राह्मण जिसे चारों वेदों का ज्ञान हो। संपूर्ण वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण। २. समग्र वेद। चारो वेद [को०]।

सार्वसेन--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पंचरात्र यज्ञ [को०]।

सार्षप[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. सरसों। २. सरसों का तेल। ३. सरसों का साग।

सार्षप[२]--वि० सरसों संबंधी। सरसों का।

सार्ष्ट--वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सार्ष्टि'।

सार्ष्टि[१]--संज्ञा स्त्री० [सं०] पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति।

सार्ष्टि[२]--वि० जो तुल्य या समान स्थान, पद, अधिकार, शक्ति, श्रेणी आदि से युक्त हो [को०]।

सार्ष्टिता--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पद या शक्ति की समानता। २. एक प्रकार की मुक्ति [को०]।

सार्ष्ट्य--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सार्ष्टिता' [को०]।

सालंकार--वि० [सं० सालङ्कार] अलंकारयुक्त। भूषित। आभूषणयुक्त। अलंकृत [को०]।

सालंग--संज्ञा पुं० [सं० सालङ्ग] संगीत में तीन प्रकार के रागों में से एक प्रकार का राग। वह राग जो बिलकुल शुद्ध हो, जिसमें किसी और राग का मेल न हो; पर फिर भी किसी राग का आभास जान पड़ता हो।

सालंब--वि० [सं० सालम्ब] जो सहारा लिए हो। आलंबयुक्त [को०]।

साल[१]--संज्ञा पुं०, स्त्री० [हिं० सलना या सालना] १. सालने या सलने की क्रिया या भाव। २. छेद। सूराख। ३. चारपाई के पावों में किया हुआ वह चौकोर छेद जिसमें पाटी आदि बैठाई जाती है। ४. घाव। जख्म। ५. दुख। पीड़ा। वेदना। कसक। चुभन। उ०--को जानि मात बिभनी पीर। सौति कौ साल साले सरीर।--पृ० रा०, १।३७५।

साल[२]--संज्ञा पुं० [सं०] १. जड़। मूल। २. कूचबंदों की परिभाषा में खस की जड़ जिससे कूच बनती है। ३. राल। धूना। ४. वृक्ष। पेड़। ५. प्राकार। परकोटा। ६. दीवार। ७. एक प्रकार की मछली जो भारत, लंका और चीन में पाई जाती है। ८. सियार। ९. कोट। किला। (डिं०)। १०. साल का वृक्ष। दे० 'साल'।

साल[३]--संज्ञा पुं० [फ़ा०] वर्ष। बरस। बारह महीने।

साल[४]--संज्ञा पुं० [सं० शालि] दे० 'शालि'।

साल[५]--संज्ञा स्त्री० [सं० शाल] दे० 'शाला'।

साल†[६]--संज्ञा पुं० [सं० श्याल] दे० 'साला'।

साल†[७]--संज्ञा पुं० [फ़ा० शाल] दे० 'शाल'।

साल अमोनिया--संज्ञा पुं० [अं०] नौसादर।

सालइलाही--संज्ञा पुं० [फ़ा०] मुगल सम्राट् अकबर द्वारा प्रचारित एक संवत् या वर्ष जिसका प्रारंभ उसके सिंहासन पर बैठने की तिथि से हुआ था [को०]।

सालई†--संज्ञा [हिं०] दे० 'सलई'।

सालक[१]--वि० [हिं० सालना + क (प्रत्य०)] सालनेवाला। दुःख देनेवाला। उ०--जद्यपि मनुज दनुज कुल घालक। मुनि पालक खल सालक बालक।--मानस, १।१३।

सालक[२]--वि० [सं०] अलकों से युक्त। बालों से सुशोभित [को०]।

सालकि--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सालक्षण्य--संज्ञा पुं० [सं०] लक्षणों, गुणों या चिह्नों की तुल्यता [को०]।

सालग[१]--संज्ञा पुं० [सं०] एक राग।

यौ०--सालसूडक = संगीत में एक ताल।

सालग†[२]--संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सलई'।

सालगिरह--संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बरस गाँठ। जन्मदिन।

सालग्राम--संज्ञा पुं० [सं० शालग्राम] दे० 'शालग्राम'।

सालग्रामी--संज्ञा स्त्री० [सं० शालग्राम] गंडक नदी।

विशेष--इसका यह नाम इसलिये पड़ा कि उसमें शालग्राम की शिलाएँ पाई जाती हैं।

सालज--संज्ञा पुं० [सं०] सर्जरस। राल। धूना।

सालजक--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सालज'।

सालद्रुम--संज्ञा पुं० [सं०] सागौन।

सालन[१]--संज्ञा पुं० [सं० सलवण] मांस, मछली या साग सब्जी की मसालेदार तरकारी।

सालन[२]--संज्ञा पुं० [सं०] सर्जरस। धूना। राल। २. गोंद (को०)।

सालना[१]--क्रि० अ० [सं० शूल] १. दुःख देना। खटकना। कसकना। २. चुभना। गड़ना।

संयो० क्रि०--जाना।

सालना[२]—क्रि० स० १. दुःख पहुँचाना। व्यथित करना। उ०—सौति कौ साल सालै सरोर।—पृ० रा०, १।३७५। २. चुभाना। गड़ाना। ३. चारपाई की पाटी के दोनों छोर पर बने हुए पतले हिस्से को उसके गोड़ों के छेद में ठोक कर ठीक करना।

सालनिर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना। सर्जरस। करायल।

सालपान—संज्ञा पुं० [सं० शालिपर्णी] एक प्रकार का क्षुप। कसरवा। चाँचर।

विशेष—यह क्षुप देहरादून, अवध और गोरखपुर की नम भूमि में पाया जाता है। यह वर्षा ऋतु के अंत में फूलता है। इसकी जड़ का ओषधि के रूप में व्यवहार होता है।

सालपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरिवन। शालपर्णी।

सालपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थल कमल। २. पुंडेरी।

सालभंजिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सालभञ्जिका] पुतली। मूर्त्ति।

सालम मिश्री—संज्ञा स्त्री० [अ० सालव+मिस्री (मिश्र देश का)] सुधामूली। अमृतोत्था। वीरकंदा।

विशेष—यह एक प्रकार का क्षुप है जिसकी ऊँचाई प्रायः डेढ़ फुट तक होती है। इसके पत्ते प्याज के पत्ते के समान और फैले हुए होते हैं। डंडी के अंत में फूलों का गुच्छा होता है। फल पीले रंग के होते हैं। इसका कंद कसेरू के समान पर चिपटा, सफेद और पीले रंग का तथा कड़ा होता है। इसमें वीर्थ के समान गंध आती है और यह खाने में लसीला और फीका होता है। इसके पौधे भारत के कितने ही प्रांतों में होते हैं, पर काबुल, बलख, बुखारा आदि देशों की सालम मिश्री अच्छी होती है। इसका कंद अत्यंत पौष्टिक होता है और पुष्टिकर ओषधियों में इसका विशेष प्रयोग होता है। वैद्यक के अनुसार यह स्निग्ध, उष्ण, वाजीकरण, शुक्रजनक, पुष्टिकर और अग्निप्रदीपक माना जाता है।

सालर†—संज्ञा पुं० [सं० शल्लकी] दे० 'सलई'।

सालरस—संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना।

सालवाहन—संज्ञा पुं० [सं० शालवाहन] शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा। विशेष दे० 'शालिवाहन'।

सालवेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] करायल। धूना। राल [को०]।

सालशृंग—संज्ञा पुं० [सं० सालशृङ्ग] दीवार या प्राचीर के आगे का हिस्सा।

सालस[१]—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो दो पक्षों के झगड़ों का निपटारा करे। पंच।

सालस[२]—वि० [सं०] १. आलसयुक्त। आलस के साथ। अलस। मंद। सुस्त। अलसित। उ०—दो एक टोलियाँ, मंद मंद औ सालस लालस प्रेम सनी, अरमान भरी, दो एक बोलियाँ।—चाँदनी पृ०, ३४। २. थका हुआ। श्लथ। क्लांत (को०)।

सालसा—संज्ञा पुं० [अं०] खून साफ करने का एक प्रकार का अँग्रेजी ढंग का काढ़ा जो अनंतमूल आदि से बनता है।

सालसी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सालस होने की क्रिया या भाव। दूसरों का झगड़ा निपटाना। २. पंचायत।

सालहज—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सलहज'।

सालहासाल—क्रि० वि० [फ़ा०] वर्षों से। मुद्दतों से। वर्षानुवर्ष। काफी समय से। उ०—हिंदुओं से सालहासाल से बर्ताव एगानियत का चला आ रहा है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ६।

साला[१]—संज्ञा पुं० [सं० श्यालक] [स्त्री० साली] १. पत्नी का भाई। २. एक प्रकार की गाली।

सालाⓅ**[२]**—संज्ञा पुं० [सं० सारिका] सारिका। मैना। उ०—देखत ही गे सोइ कृपाला लखि प्रभात बोला तब साला।—विश्राम (शब्द०)।

साला[३]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीवार। भित्ति। २. गृह। मकान। दे० 'शाला'।

साला[४]—वि० [फ़ा० सालह् (प्रत्य०)] साल का। वर्ष का। वर्षीय। साल पर होनेवाला। (समस्त पदों में प्रयुक्त)। जैसे,—एकसाला, पंचसाला।

सालाकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गृह परिचारिका। २. युद्ध में प्राप्त पराजित पक्ष की स्त्री [को०]।

सालातुरीय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शालातुरीय'।

सालाना—वि० [फ़ा० सालानह्] साल का। वर्ष का। वार्षिक। जैसे,—सालाना मेला, सालाना चंदा।

सालार[१]—संज्ञा पुं० [सं०] दीवाल में गाड़ी हुई खूँटी। नागदंतिका [को०]।

सालार[२]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सेनापति। सिपहसालार। २. नायक। नेता। प्रधान [को०]।

सालारजंग—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सेनापति। सेना का नायक। २. सैनिकों की एक उपाधि [को०]।

सालावृक—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुत्ता। श्वान। २. गीदड़। सियार। ३. वृक। भेड़िया।

सालावृकेय—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्ता, गीदड़, स्यार, भेड़िया आदि का बच्चा [को०]।

सालि[१]—संज्ञा पुं० [सं० शालि] दे० 'शालि'। उ०—भरत नाम सुमिरत मिटहिं, कपट, कलेस कुचालि। नीति प्रीति परतीति हित सगुन सुमंगलि सालि।—तुलसी ग्रं०, पृ० ७८।

सालिⓅ**[२]**—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्य] साल। पीड़ा। चुभन।

सालिक—वि० [अ०] १. पथिक। बटोही। मुसाफिर। राही। २. जो गृहस्थाश्रम में रहते हुए बहुत बड़ा साधक हो [को०]।

सालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँसुरी [को०]।

सालिगरामⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शालग्राम] दे० 'शालग्राम'। उ०—(क) उठे थन थोर बिराजत बाम। धरे जनु हाटक सालिगराम।—पृ० रा०,। (ख) रूपे के अरघा मनों पौढ़े सालिगराम।—पोद्दार अभि०, ग्रं० पृ० ३८६।

सालिग्राम—संज्ञा पुं० [सं० शालग्राम] दे० 'शालग्राम'।

सालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शालिनी] दे० 'शालिनी'।

सालिब मिश्री—संज्ञा स्त्री० [अ० सालम मिस्री] दे० 'सालम मिश्री'।

सालिम—वि० [अ०] १. स्वस्थ। तंदुरुस्त (को०)। २. महफूज। सुरक्षित (को०)। ३. जो कहीं खंडित न हो। पूर्ण। संपूर्ण। पूरा। उ०—बिन माँगे बिन जाँचे देय। सो सालिम बाजी जीत लेय।—कबीर० श०, भा० २, पृ० १११।

सालियाना—वि० [फ़ा० सालियानह्] वार्षिक। दे० 'सालाना'। २. जो प्रतिवर्ष देय हो। जैसे, वेतन, भृति आदि (को०)।

सालिस—वि० [अ०] १. तीसरा। तृतीय। २. दो पक्षों में समझौता करानेवाला। पंच। मध्यस्थ। बिचौलिया। उ०—से सालिस होय समुझि ले, जीम जहान बसीर।—धरनी०, पृ० ४५।

सालिसिटर—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का वकील जो कलकत्ते, बंबई और मद्रास के हाइकोर्टों में होनेवाले मुकदमे लेता और उनके कागज पत्र तैयार करके बैरिस्टर को देता है। एटर्नी। एडवोकेट।

विशेष—ये सालिसिटर हाईकोटों में बहस नहीं कर सकते, पर अन्य अदालतों में इन्हें बहस करने का पूरा अधिकार है। इनका दर्जा एडवोकेट के समान ही है।

सालिसी—संज्ञा [अ०] पंचायत [को०]।

सालिह वि० [अ०] [स्त्री० सालिहा] सच्चरित्र। पुण्यात्मा [को०]।

सालिहोत्री—संज्ञा पुं० [सं० शालिहोत्रिन्] दे० 'शालिहोत्री'।

साली¹—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० साल+ई प्रत्य०)] १. वह जमीन जो सालाना देने के हिसाब से ली जाती है। २. खेती बारी के औजारों की मरम्मत के लिये बढ़ई को सालाना दी जानेवाली मजूरी।

साली²—संज्ञा पुं० [सं० शालि] दे० 'शालि'।

सालीⓅ³—संज्ञा स्त्री० [हिं० साला] पत्नी की बहन।

सालुⓅ¹—संज्ञा पुं० [हिं० सालना] १. ईर्ष्या। २. कष्ट।

सालुⓅ²—संज्ञा पुं० [सं० सार] दे० 'सार'। उ०—चढ़िआ नजर सराफ की मोती मनु है सालु।—प्राण०, पृ० १०५।

सालुलⓅ†—वि० [सं० सलावण्य ?] कोमल। मृदु। सलोना। उ०—कोतिक लखे हुए विकराल दीरघ रद किया। सालुल बणे चंड सरीर, खावण कज सिया।—रघु० रू०, पृ० १२६।

सालू—संज्ञा पु० [पं०, मि० फ़ा० शाल] एक प्रकार का लाल कपड़ा जो मांगलिक कार्यों में उपयोग में आता है। (पश्चिमी)। उ०—कल; देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।—मधुकरी, भा० २, पृ० २३। २. साड़ी। सारी। (डिं०)। ३. ओढ़नी।

सालूर—संज्ञा पुं० [सं०] मेढ़क। शालूर [को०]।

सालेय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शालेय' [को०]।

सालेया—संज्ञा स्त्री० [सं०] सौंफ।

सालैगुग्गुल—संज्ञा पुं० [फ़ा० सालै+सं० गुग्गुल] गुग्गुल का गोंद या राल। विशेष दे० 'गुग्गुल'।

सालोक्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँच प्रकार की मुक्ति में से एक जिसमें मुक्त जीव भगवान् के साथ एक लोक में वास करता है। सलोकता। २. किसी के साथ समान लोक में निवास करना (को०)।

सालोत्रⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शालिहोत्र] दे० 'शालिहोत्र'। उ०—है लषै सक्क करि भेद छेद, दिष्षंत नयन सालोत्र षेद। गज चिगछ इच्छ जानंत सब्ब, नाटिक निवास सम सेस कब्ब।—पृ० रा०, ६।६।

सालोहित—संज्ञा पुं० [सं०] सगोत्री। गोती [को०]।

साल्मली—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मलि] दे० 'शाल्मली'।

साल्व—संज्ञा पुं० [सं०] एक नगर और उसके निवासी लोग। दे० 'शाल्व'। २. एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था (को०)।

साल्वहा—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु [को०]।

साल्विक—संज्ञा पुं० [सं०] सारिका पक्षी [को०]।

साल्वेय¹—वि० [सं०] साल्व या शाल्व संबंधी।

साल्वेय²—संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन देश का नाम। २. साल्व या शाल्व देश का रहनेवाला।

सावंत—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त] १. वह भूस्वामी या राजा जो किसी बड़े राजा के अधीन हो और उसे कर देता हो। करद राजा। २. योद्धा वीर। ३. अधिनायक। उ०—छत्र भंग मेरौ भयो, मरे सूर सावंत।—हम्मीर०, पृ० ३६। ४. उत्तम या श्रेष्ठ प्रजा।

सावँकरन—संज्ञा पुं० [सं० श्यामकर्ण] श्यामकर्ण घोड़ा जिसके सब अंग श्वेत, पर कान काले होते है। (साईस)। उ०—सोरह सहस घोर घोरसारा। सावँकरन बालका तुखारा।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० १३७।

साव¹—संज्ञा पुं० [सं० शाव, प्रा० साव (=शावक, शिशु)] शिशु। बालक। पुत्र। (डिं०)।

साव²—संज्ञा पुं० [सं० साधु, प्रा० साहु] दे० 'साहु'।

सावⓅ³—संज्ञा पुं० [सं० स्वादु, प्रा० साउ ?] दे० 'स्वाद'। उ०—चंगो साव चखावसी, इभरमणो आखेट।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ३४।

साव⁴—संज्ञा पुं० [सं०] तर्पण। पितरों को जल देना।

सावक¹—वि० [सं०] [स्त्री० साविका] जन्म देनेवाला। उत्पन्न करनेवाला [को०]।

सावक²—संज्ञा पुं० १. दे० 'शावक'। २. पशु का बच्चा। छौना। बछवा। बछेरा। उ०—(क) चौथ दीन्ह सावक सादूरू।—जायसी ग्रं०, पृ० १८५। (ख) सावक मोर बिछुड़ गयो, ढूँढत फिरौं बेहाल।—हिंदी० प्रेमा०, पृ० २४५।

सावक³—संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] दे० 'श्रावक'।

सावकार†—संज्ञा पुं० [हिं० साहूकार] दे० 'साहूकार'। उ०—सईस ने बतलाया कुल्लू के सावकार ने कारखाना बनाया है।—किन्नर०, पृ० १२।

सावकाश¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. अवकाश। फुर्सत। छुट्टी। २. मौका। अवसर।

सावकाश[२]--वि० १. जिसे मौका या फुरसत हो। अवकाशयुक्त। २. अनुकूल। उचित। योग्य [को०]।

सावकाश[३]--क्रि० वि० फुर्सत से। सुभीते से।

सावकास(पु)--क्रि० वि० [सं० सावकाश] दे० 'सावकाश[३]'। उ०--सावकास ह्वै घनी घुटनि तें विसद पुलिन मँडराइ रुकौं।--घनानंद, पृ० ४२३।

सावग(पु)--संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] दे० 'श्रावक'।

सावगी--संज्ञा पुं० [सं० श्रावक, प्रा० सावग] दे० 'सरावगी'।

सावग्रह--वि० [सं०] १. 'अवग्रह' चिह्न से युक्त। २. नियंत्रित। संयमित। ३. जिसका विश्लेषण किया गया हो [को०]।

सावचेत(पु)‡--संज्ञा पुं० [सं० सा + हिं० चेत अथवा सं० साव हित + हिं० चेत] सावधान। सतर्क। होशियार। चौकन्ना। उ०--अब इससे सावचेत रहना चाहिए।--श्रीनिवास ग्रं०, पृ० ६७।

सावचेती--संज्ञा स्त्री० [हिं० सावचेत + ई (प्रत्य०)] सावधानी। सतर्कता। खबरदारी। चौकन्नापन।

सावज(पु)†--संज्ञा पुं० [सं० श्वापद, प्रा० सावय] जंगली जानवर जिसका शिकार किया जाता है।

सावज्ञ--वि० [सं०] १. अवज्ञा या तिरस्कार युक्त। २. अरुचि का अनुभव करनेवाला। घृणा करनेवाला [को०]।

सावणिक--संज्ञा पुं० [सं० श्रावणिक] श्रावण मास। सावन का महीना। (डिं०)।

सावत(पु)[१]--संज्ञा पुं० [सं० सापत्न्य; देशी सावक्क, सावत्त, सावत या हिं० सौत] १. सौतों में होनेवाला पारस्परिक द्वेष। सौतियाडाह। २. ईर्ष्या। डाह। उ०--तहँ गए मद मोह लोभ अति सरगहुँ मिटति न सावत।--तुलसी (शब्द०)।

सावत(पु)[२]--संज्ञा पुं० [सं० सामन्त, हिं० सावंत] दे० 'सावंत'। उ०--बड़े सावतं उद्द कनकेश मारे।--प० रासो, पृ० ४५।

सावद्य[१]--वि० [सं०] निंदनीय। दूषणीय। आपत्तिजनक।

सावद्य[२]--संज्ञा पुं० तीन प्रकार की योग शक्तियों में से एक शक्ति जो योगियों को प्राप्त होती है।

विशेष--अन्य दो शक्तियों के नाम निरवद्य और सूक्ष्म हैं।

सावधान--वि० [सं०] १ सचेत। सतर्क। होशियार। खबरदार। सजग। चौकस। २. उद्यमी। परिश्रमी (को०)। ३. अवधानयुक्त। ध्यानपूर्वक। उ०--सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि। भरत कथा भवबंध विमोचनि।--मानस, २।२८७।

सावधानता--संज्ञा स्त्री० [सं०] सावधान होने का भाव। सतर्कता। होशियारी। खबरदारी। सावधानी।

सावधानी--संज्ञा स्त्री० [सं० सावधान + ई (प्रत्य०)] सावधान होने का भाव। दे० 'सावधानता'।

सावधारण--वि० [सं०] निश्चययुक्त। निश्चित। प्रतिबंधित [को०]।

सावधि--वि० [सं०] अवधि अर्थात् नियत काल या सीमा से युक्त। जिसके समय की सीमा निश्चित हो [को०]।

सावधि आधि--संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गिरवी जो इस शर्त पर रखी जाय कि इतने दिनों के अंदर अवश्य छुड़ा ली जायगी।

सावन[१]--संज्ञा पुं० [सं० श्रावण] १. श्रावण का महीना। आषाढ़ के बाद का और भाद्रपद के पहले का महीना। श्रावण।

मुहा०--सावन के अंधे को हरियाली सूझना = हरा ही हरा दिखाई देना या सूझना। अच्छी परिस्थितियों में रहने या उन्हें देखनेवाले व्यक्ति का प्रतिकूल स्थितियों को भी किसी कारणवश पूर्ववत् समझना या जानना। सावन का फोड़ा = जल्दी ठीक न होनेवाला घाव। असाध्य रोग। उ०--पकपक कर ऐसा फूटा है, जैसा सावन का फोड़ा है।--आराधना, पृ० ७३। सावन हरा न भादों सूखा = समान या तुल्य जानना। समान परिस्थिति का समझना। प्राकृतिक या लौकिक परिवर्तन के प्रभाव से रहित जीवन जीना। उ०--मगर यहाँ सावन हरे न भादो सूखे दोनों बराबर हैं।--फिसाना०, भा० ३ पृ० ३७७।

२. एक प्रकार का गीत जो श्रावण के महीने में गाया जाता है। (पूरब)। ३. कजली नामक गीत। ४. आधिक्य। प्रचुरता। राशि।

सावन[२]--संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ कर्म का अंत। यज्ञ की समाप्ति। २. यज्ञ कर्म का यजमान। ३. वरुण। ४. पूरे एक दिन और एक रात का समय। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दंड का समय।

विशेष--इस प्रकार के ३० दिनों का एक सावन मास होता है और ऐसे बारह सावन मासों अर्थात् ३६० दिनों का एक सावन वर्ष होता है, मलमासतत्व के अनुसार--'सौर संवत्सरे दिन षट्काधिकः सावनो भवति'। अर्थात् सौर और सावन वर्ष में लगभग ६ दिनों का अंतर होता है। विशेष--दे० 'वर्ष'।

५. तीस दिवस का मास (को०)। ६. एक विशेष वर्ष (को०)।

यौ०--सावन मास = तीस दिन का महीना। सावनवर्ष = वह साल जो सावन मास या ३६० दिनों का होता है।

सावन[३]--वि० सवन यज्ञ संबंधी [को०]।

सावनी[१]--संज्ञा पुं० [हिं० सावन + ई (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का धान जो भादों में काटा जाता है। २. तंबाकू जो सावन भादों में बोया जाता है, कार्तिक में रोपा जाता है और फागुन में काटा जाता है। ३. एक प्रकार का फूल।

सावनी[२]--संज्ञा स्त्री० वह बायन जो सावन महीने में वर पक्ष से वधू के यहाँ भेजा जाता है।

सावनी[३]--संज्ञा स्त्री० [सं० श्रावणी] दे० 'श्रावणी'।

सावनी[४]--वि० सावन संबंधी। सावन का। जैसे,--सावनी समाँ = सावन मास की शोभा।

सावनी--संज्ञा स्त्री० [हिं० सावन] १. श्रावण मास का गीत। २. कजली गीत।

सावमर्द--वि० [सं०] परस्परविरुद्ध। अरुचिकर। अप्रिय [को०]।

सावयव--वि० [सं०] अवयव युक्त। अंगोंसहित। सांग [को०]।

सावर[१]—संज्ञा पुं० [सं० शाबर] शिवकृत एक तंत्र का नाम।

विशेष—इसके संबंध में इस प्रकार की कथा है—एक बार जब शिवपार्वती किरात देश में बन में विचरण कर रहे थे, तब पार्वतीजी ने प्रश्न किया कि प्रभो! आपने संपूर्ण मंत्र कील दिए हैं, पर अब कलिकाल है, इस समय के जीवों का उपकार कैसे होगा। तब शिवजी ने उसी वेश में नए मंत्रों की रचना की जो शावर या सावर कहाते हैं। इन मंत्रों को जपने या सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं, ये स्वयंसिद्ध हैं। न इनके कुछ अर्थ ही हैं।

२. एक प्रकार का लोहे का लंबा औजार जिसका एक सिरा नुकीला और गुलमेख की तरह होता है। इसपर खुरपा रखकर हथौड़े से पीटा जाता है जिससे खुरपा पतला और तेज हो जाता है।

सावर[२]—संज्ञा पुं० [सं० शबर या साम्बर] एस प्रकार का हिरन। उ०—चीते सु रोझ सावर दबंग। गैडा गलीनु डोलत अभंग। —सूदन (शब्द०)।

सावर[३]—संज्ञा पुं० [सं०] १. लोध। लोध्र। २. पाप। अपराध। गुनाह। ३. एक प्रकार का मृग।

सावरक—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद लोध।

सावरण—वि० [सं०] १. छिपा हुआ। गोपनीय। २. ढका हुआ। बंद। ३. जो घेरे के अंदर हो [को०]।

सावरणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सम्मार्जनी] वह बुहारी जो जैन यति अपने साथ लिए रहते हैं।

सावरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिना जहरवाली जोंक।

सावर्ण[१]—वि० [सं०] सवर्ण संबंधी। समान वर्ण या जाति संबंधी।

सावर्ण[२]—संज्ञा पुं० दे० 'सावर्णि'।

सावर्णक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सावर्णि'।

सावर्णलक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. चमड़ा। चर्म। २. एक ही वर्ण और जाति की तुल्यता का बोधक समान चिह्न (को०)।

सावर्णि—संज्ञा पुं० [सं०] १. आठवें मनु जो सूर्य के पुत्र थे।

विशेष—कहते हैं कि सूर्य की पत्नी छाया सूर्य का तेज सहन न कर सकने के कारण अपने वर्ण की (सवर्ण) एक छाया बनाकर और उसे पति के घर छोड़कर अपने पिता के घर चली गई थी। उसी के गर्भ से सावर्णि मनु की उत्पत्ति हुई थी।

२. एक मन्वंतर का नाम। ३. एक गोत्र का नाम।

सावर्णिक—वि० [सं०] समान जाति या कुल से संबद्ध [को०]।

सावर्ण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. रंग की समानता। २. वर्ग या जाति की समानता। ३. आठवें मनु का युग अथवा मन्वंतर [को०]।

सावलेप—वि० [सं०] अवलेपयुक्त। गर्व से भरा हुआ। धृष्ट [को०]।

सावशेष—वि० [सं०] १. जिसका कुछ अंश शेष हो। २. जो पूरा न हो। अपूर्ण। अधूरा [को०]।

यौ०—सावशेषजीवित = जिसकी आयु अभी बाकी हो। जिसका जीवनकाल अभी शेष हो। सावशेषबंधन = जिस पर कुछ प्रतिबंध शेष हो। जो अभी भी बंधन में हो।

सावष्टंभ[१]—संज्ञा पुं० [सं० सावष्टम्भ] वह मकान जिसके उत्तरदक्षिण दिशा में सड़क हो। ऐसा मकान बहुत शुभ माना गया है।

सावष्टंभ[२]—वि० १. दृढ़। मजबूत। २. आत्मनिर्भर। स्वावलंबी। ३. गर्वोद्धत। घमंडी। शानदार। गुमानी (को०)। ४. हिम्मती। साहसी (को०)।

यौ०—सावष्टंभवास्तु = एक प्रकार का मकान। दे० 'सावष्टंभ'।

सावहित वि० [सं०] अवधान युक्त। सावधान [को०]।

सावहेल वि० [सं०] अवहेला से युक्त। घृणा या तिरस्कार करनेवाला [को०]।

सावाँ†—संज्ञा पुं० [सं० श्यामाक] दे० 'साँवाँ'।

साविका[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] धात्री। दाई [को०]।

साविका(पु)[२]—संज्ञा पुं० [अ० साबिकह्] आवश्यकता। व्यवहार। संबंध। सरोकार। प्रयोजन। उ०—सुनौ सपूतौ साविकौ सबकौं परै न रोज। लियौ जात याही समय, हित अनहित कौ खोज।—हम्मीर०, पृ० ४४।

सावित्र[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. शिव। ३. वसु। ४. ब्राह्मण। ५. सूर्य के पुत्र। ६. कर्ण। ७. गर्भ। ८. यज्ञोपवीत। ९. उपनयन संस्कार। यज्ञोपवीत। ९. हस्त नक्षत्र (को०)। १०. अग्नि का एक रूप (को०)। ११. कलछा या चम्मचभर परिमाण (को०)। १२. दसवें कल्प का नाम (को०)। १३. मेरु पर्वत का एक शिखर (को०)। १४. एक प्रकार की आहुति या होम (को०)। १५. एक वन का नाम (को०)। १३. एक प्रकार का अस्त्र।

सावित्र[२]—वि० १. सविता संबंधी। सविता का। जैसे,—सावित्र होम। २. सूर्य से उत्पन्न। सूर्यवंशीय। ३. गायत्री से युक्त। गायत्री मंत्र से दीक्षित।

सावित्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक शक्ति [को०]।

सावित्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेदमाता गायत्री। २. सरस्वती। ३. ब्रह्मा की पत्नी जो सूर्य की पृश्नि नाम की पत्नी से उत्पन्न हुई थी। ४. वह संस्कार जो उपनयन के समय होता है और जिसके न होने से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य व्रात्य या पतित हो जाते हैं। ५. धर्म की पत्नी और दक्ष की कन्या। ६. कश्यप की पत्नी। ७. अष्टावक्र की कन्या। ८. मद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या और सत्यवान की सती पत्नी का नाम।

विशेष—पुराणों में इसकी कथा यों है। मद्र देश के धर्मनिष्ठ प्रजाप्रिय राजा अश्वपति ने कोई संतान न होने के कारण ब्रह्मचर्यपूर्वक कठिन व्रत धारण किया। वह सावित्री मंत्र से प्रतिदिन एक लाख आहुति देकर दिन के छठे भाग में भोजन करता था। इस प्रकार अठारह वर्ष बीतने पर सावित्री देवी ने प्रसन्न होकर राजा को दर्शन दिए और इच्छानुसार वर

माँगने को कहा। राजा ने बहुत से पुत्रों की कामना की। देवी ने कहा कि ब्रह्मा की कृपा से तुम्हारे एक कन्या होगी जो बड़ी तेजस्विनी होगी। कुछ दिनों बाद बड़ी रानी के गर्भ से एक कन्या हुई। सावित्री की कृपा से वह कन्या हुई थी, इसलिये राजा ने इसका नाम भी सावित्री ही रखा। सावित्री अद्वितीय सुंदरी थी, पर किसी को इसका वरप्रार्थी होते न देखकर अश्वपति ने सावित्री से स्वयं अपनी इच्छानुसार वर ढूँढकर वरण करने को कहा। तदनुसार सावित्री वृद्ध मंत्रियों के साथ तपोवन में भ्रमण करने लगी। कुछ दिनों बाद वह तीर्थों और तपोवनों का भ्रमण कर लौट आई और उसने अपने पिता से कहा शाल्व देश में द्युमत्सेन नामक एक प्रसिद्ध धर्मात्मा क्षत्रिय राजा थे। वे अंधे हो गए हैं। उनका एक पुत्र है जिसका नाम सत्यवान् है। एक शत्रु ने उनका राज्य हस्तगत कर लिया है। राजा अपनी पत्नी और पुत्रसहित बन में निवास कर रहे हैं। मैंने उन्हीं सत्यवान् को अपने उपयुक्त वर समझकर उन्हीं को पति वरण किया है। नारदजी ने कहा—सत्यवान में और सब गुण तो हैं, पर वह अल्पायु है। आज से एक वर्ष पूरा होते ही वह मर जायगा। इसपर भी सावित्री ने सत्यवान् से ही विवाह करना निश्चित किया। विवाह हो गया, एक वर्ष बीतने पर सत्यवान् की मृत्यु हो गई। यमराज जब उसका सूक्ष्म शरीर ले चला, तब सावित्री ने उसका पीछा किया। यमराज ने उसे बहुत समझा बुझाकर लौटाना चाहा, पर उसने उसका पीछा न छोड़ा। अंत में यमराज ने प्रसन्न होकर उसकी मनस्कामना पूर्ण की। मृत सत्यवान् जीवित होकर उठ बैठा। सावित्री ने मन ही मन जो कामनाएँ की थीं, वे पूरी हुई। राजा द्युमत्सेन को पुनः दृष्टि प्राप्त हो गई। उसके शत्रुओं का विनाश हुआ। सावित्री के सौ पुत्र हुए। साथ ही उसके वृद्ध ससुर के भी सौ पुत्र हुए। उसने यह भी वर प्राप्त कर लिया था कि पति के साथ मैं बैकुंठ जाऊँ।

९ यमुना नदी। १० सरस्वती नदी। ११. प्लक्ष द्वीप की एक नदी। १२. धार के राजा भोज की स्त्री। १३. सधवा स्त्री। १४. आँवला। १५. प्रकाश की किरण (को०)। १६. पार्वती का एक नाम (को०)। १७. सूर्य की रश्मि (को०)। १८. अनामिका उँगली (को०)।

सावित्री तीर्थ – संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सावित्रीपतित, सावित्रीपरिभ्रष्ट संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जाति का वह व्यक्ति जिसका उचित समय पर उपनयन संस्कार न हुआ हो [को०]।

सावित्रीपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों की एक उपजाति या वर्ग।

सावित्री व्रत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत जो स्त्रियाँ पति की दीर्घायु की कामना से ज्येष्ठ कृष्ण १४ को करती हैं।

विशेष कहते हैं कि यह व्रत करने से स्त्रियाँ विधवा नहीं होतीं।

सावित्रीव्रतक—संज्ञा पुं० [सं०] सावित्री व्रत।

सावित्रीसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञोपवीत जो सावित्री दीक्षा के समय धारण किया जाता है।

सावित्रेय—संज्ञा पुं० [सं०] सविता के पुत्र, यम [को०]।

साविनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरिता। नदी [को०]।

साविष्कार वि० [सं०] १. शक्ति आदि का प्रदर्शन करनेवाला। उद्धत। घमंडी। २. प्रकट, व्यक्त [को०]।

सावेग—क्रि० वि० [सं०] वेगपूर्वक। शीघ्रता से। झटके से [को०]।

सावेरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी (संगीत)।

साशंक—वि० [सं० साशङ्क] आशंकायुक्त। भयभीत। शंकित [को०]।

साशंकता—संज्ञा स्त्री० [सं० साशङ्कता] आशंका। डर। भय [को०]।

साशस—वि० [सं०] आकांक्षापूरित। इच्छुक। आशान्वित [को०]।

साशयंदक—संज्ञा पुं० [सं० साशयन्दक] छोटी छिपकली [को०]।

साशिव—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश का नाम।

विशेष—अर्जुन के दिग्विजय के प्रकरण में यह उत्तर दिशा में बतलाया गया है। इसे जीतकर अर्जुन यहाँ से आठ घोड़े लाया था।

२. ऋषीक। ऋषिपुत्र।

साशूक—संज्ञा पुं० [सं०] ऊनी कंबल [को०]।

साश्चर्य—वि० [सं०] १. आश्चर्यान्वित। चकित। भौचक। २. आश्चर्य या कौतूहलजनक [को०]।

यौ०—साश्चर्याचर्य = आश्चर्यजनक व्यवहारवाला।

साश्र, सास्र—वि० [सं०] १. अस्र या कोण युक्त। जिसमें कोण या कोने हों। कोणात्मक। २. अश्रुयुक्त। रोता हुआ। साश्रु [को०]।

साश्रु—वि० [सं०] अश्रुपूर्ण। आँसू बहाता हुआ। रोता हुआ [को०]।

साश्रुधी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी या पति की माता। सास।

साश्वत—वि० [सं० शाश्वत] दे० 'शाश्वत'।

साषा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शाखा] दे० 'शाखा'। उ०—मुनि पुनि कर्म फलनि तजि जैसे। अप अपनी श्रुति साषा बैसें।—नंद० ग्रं०, पृ० २९५।

साषि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० साक्षी] गवाह।

साषित(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाक्त] वह जो शक्ति का उपासक हो। शक्ति को माननेवाला। वि० दे० 'शाक्त'। उ०—साषित कै तूँ हरता करता, हरि भगतन कै चेरी।—कबीर ग्रं०, पृ० १५१।

साष्टांग—वि० [सं० साष्टाङ्ग] आठो अंग सहित।

यौ०—साष्टांग प्रणाम = मस्तक, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, बचन, और मन से भूमि पर लेटकर प्रणाम करना।

मुहा०—साष्टांग प्रणाम करना = बहुत बचना। दूर रहना। (व्यंग्य)। जैसे—हम यहीं से उन्हें साष्टांग प्रणाम करते है।

साष्टांग योग—संज्ञा पुं० [सं० साष्टाङ्ग योग] वह योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठो अंग हों। विशेष दे० 'योग'।

साष्टी—संज्ञा पुं० [देश०] एक टापू जो बंबई प्रदेश के थाना जिले में है।

विशेष—इस टापू को वहाँवाले 'फालता' और 'शास्तर' तथा अँगरेज 'सालसीट' कहते हैं। यह बंबई से बीस मील ईशानकोण

में उत्तर को झुकता हुआ समुद्र के तट पर बसा है। यहाँ एक किला भी बना है।

साध्यात(पु)—वि० [सं० साक्षात् = साक्षात] दे० 'साक्षात्'। उ०—करि स्नान दान सुचि रुचि कुँआर। हाइ देव रूप साध्यात चार।—पृ०, रा०, ६।१३२।

सास¹—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वश्रु] पति या पत्नी की माँ।

सास(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वास] दे० 'साँस'। उ०—झावकि पइठी झालि, सुंदरि दीठी सास विण।—ढोला०, दू० ६०४।

सास³—वि० [सं०] धनुषयुक्त। धनुष रखनेवाला [को०]।

सासण†—संज्ञा पुं० [सं० शासन; डिं०] दे० 'शासन'। उ०—सिघासण चढ़णं नर आसण सासण सह मानै संसार।—रघु० रू०, पृ० २२।

सासत¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शास्ति] दे० 'साँसत'। उ०—चौरासी लख जिव तोहि दीन्हा। ले जीवन बड़ सासत कीन्हा।—कबीर, सा०, पृ० १३।

सासत(पु)²—वि० [सं० शाश्वत] निरंतर। दे० 'शाश्वत'। उ०—बणियो रहै बाडियाँ बागाँ बरसाणँ सासतो बसंत।—बाँकी० ग्रं०, भा० ३, पृ० १२२।

सासतर‡—संज्ञा पुं० [सं० शास्त्र] दे० 'शास्त्र'। उ०—सासतरों में कहा है।—गोदान, पृ० १०४।

सासन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शासन] दे० 'शासन'। उ०—पुत्र श्री दशरत्थ के बनराज सासन आइयो।—केशव (शब्द०)।

सासनलेट—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का सफेद जालीदार कपड़ा।

सासना(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शासन] १. दे० 'शासन'। उ०—सासना न मानई जो कोटि जन्म नर्क जाय।—केशव (शब्द०)। २. कष्ट। त्रास। दुःख। पीड़ा। उ०—बहु सासना दई पैहलादै, तऊ निसंक लियौ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० २४०।

सासर बाड़ो—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वश्रू, बं०, हिं० सासर + बाड़ी] ससुराल। उ०—करहा देस सुहामणँउ जे मूँ सासर बाड़ि। आँब सरीखउ आक गिणि जाति करीराँ झाड़ि।—ढोला०, दू० ४३२।

सासरा†—संज्ञा पुं० [सं० श्वश्रू + आलय] दे० 'ससुराल'।

सासहि—वि० [सं०] १. सहन करने योग्य। सह्य। २. जीतने या विध्वंस करनेवाला [को०]।

सासा(पु)¹—संज्ञा स्त्री० [सं० संशय, पु० हिं० संसा (कबीर)] संदेह। शक। उ०—आई बतावन हौं तुम्हैं राधिके लीजिए जानि न कीजिए सासा।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

सासा²—संज्ञा पुं० [सं० श्वास] दे० 'श्वास' या 'साँस'।

सासार—वि० [सं०] १. आसार युक्त। मूसलाधार वृष्टि से युक्त। २. बरसाती [को०]।

सासि—वि० [सं०] असि या कृपाणयुक्त [को०]।

सासु¹—वि० [सं०] असु या प्राणयुक्त। जीवित।

सासु(पु)²—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वश्रू] दे० 'सास'। उ०—आया मन में भर आकर्षण, उन नयनों का, सासु ने कहा।—अनामिका, पृ० १२४।

सासुर†—संज्ञा पुं० [हिं० ससुर] १. पति या पत्नी का पिता। ससुर। २. ससुराल। उ०—केलि करैं मधुमत्त जहँ घन मधुपन के पुंज। सोच न कर तुव सासुरे, सखी ! सघन वनकुंज।—मति० ग्रं०, पृ० २६०।

सासुस्—वि० [सं०] जिसमें बाण हो। बाणयुक्त [को०]।

सासूय—वि० [सं०] असूया युक्त। द्वेषी। ईर्ष्यालु [को०]।

सास्थि—वि० [सं०] अस्थियुक्त। हड्डीवाला [को०]।

सास्थितास्रार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] काँसा [को०]।

सास्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] गौओं आदि का गलकंबल।

सास्वत—वि० [सं० शाश्वत] शाश्वत। अमर। नित्य [को०]।

सास्मित—संज्ञा पुं० [सं०] शुद्ध सत्व को विषय बनाकर की जानेवाली भावना।

सास्वादन—संज्ञा पुं० [सं०] जैन मतानुसार निर्वाण प्राप्ति की चौदह अवस्थाओं में से दूसरी अवस्था [को०]।

साह¹—संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. साधु। सज्जन। भला आदमी। जैसे,—वह चोर है और तुम बड़े साह हो। उ०—चुरी वस्तु दै कै जिमि कोई। चोरहि साह बनावत होई।—शकुंतला, पृ० ६२। २. व्यापारी। साहूकार। ३. धनी। महाजन। सेठ। ४. लकड़ी या पत्थर का वह लंबा टुकड़ा जो दरवाजे के चौखटे में देहलीज के ऊपर दोनों पार्श्वों में लगा रहता है।

मुहा०—साहखर्ची = फिजूलखर्ची। अनावश्यक खर्च। शान शौकत के लिये धन का अपव्यय। उ०—पुराने ढर्रे की साहखर्ची और पास पड़ोस के लोगों से यश पाने की भूख—इन दोनों लतों ने खोखा पंडित को तबाह कर रखा था।—नई०, पृ० ४।

साह²—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाह] स्वामी। दे० 'शाह'। उ०—प्रति ही अयाने उपखानो नहि बूझै लोग, साह ही को गोत गोत होत है गुलाम को।—तुलसी ग्रं०, पृ० २२०।

साह³—वि० [सं०] १. जो साहस और सफलतापूर्वक प्रतिरोध करे। २. निरोध या दमन करनेवाला [को०]।

साहचर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहचर होने का भाव। साथ रहने का भाव। सहचरता। २. संग। साथ।

साहजिक—वि० [सं०] सहज। नैसर्गिक। स्वाभाविक [को०]।

साहजिकधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] शुक्रनीति के अनुसार पारितोषिक। वेतन, विजय आदि में मिला हुआ धन।

साहणहार(पु)—वि० [हिं० सहना + हार (प्रत्य०)] झेलनेवाला। सहनेवाला। सहन करनेवाला। उ०—ज्यूँ ज्यूँ हरि गुण साँभलौं त्यूँ त्यूँ लागै तीर। लागै थै भागा नहीं साहणहार कबीर।—कबीर ग्रं०, पृ० ६४।

साहन—संज्ञा पुं० [सं०] सहन शक्ति। सहनशीलता [को०]।

साहना†—क्रि० स० [सं० साहित्य (=मिलन)] भैंसों का जोड़ा खिलाना। बुहाना।

साहनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सेनानी या फ़ा० शह्नह् ?] १. सेना। फौज। उ०—(क) आयकै आपने आश्रम में कियो यज्ञ अरंभ प्रमोद प्रफुल्ला। आय निशाचर साहनी साजै मरीच सुबाहु सुने मख गुल्ला।—रघुराज (शब्द०)। (ख) करत बिहार द्विरद मतवारे। गिरि सम वपुष भूलते कारे। कोटिन वाजि साहनी आवैं। नीर पियाइ नदी अन्हवावैं।—सबल (शब्द०)। २. साथी। संगी। उ०—हम खेलब तव साथ, होइ नीच सब भाँति जो। कह्यो बचन कुरुनाथ शकुनी तो सिरमौर मम। धरहु भार निज शीश, बैठारहु किन साहनी। हमहिं न ओछि महीश मैं खेलब नृप सदसि महँ।—सबल (शब्द०)। ३. पारिषद। उ०—भरत सकल साहनी बोलाए।—तुलसी (शब्द०)। ४. कोतवाल। ५. सेनापति।

साहब[१]—संज्ञा पुं० [अ० साहिब] [स्त्री० साहिबा] १. मित्र। दोस्त। साथी। २. मालिक। स्वामी। ३. परमेश्वर। ईश्वर। ४. एक सम्मानसूचक शब्द जिसका व्यवहार नाम के साथ होता है। महाशय। जैसे,—मुं० कालिका प्रसाद साहब।

यौ०—साहबजादा। साहब सलामत।

५. गोरी जाति का कोई व्यक्ति। फिरंगी। ६. अफसर। हाकिम। सरदार। ७. अंग्रेजोंकी तरह ठाट बाट से रहनेवाला व्यक्ति।

साहब[२]—वि० वाला।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का व्यवहार यौगिक शब्दों में होता है। जैसे,—साहबइकबाल। साहबतदवीर। साहबदिमाग।

साहबइंसाफ—वि० [अ० साहिब ए इंसाफ] न्यायी। न्यायशील [को०]।

साहबखाना—संज्ञा पुं० [अ० साहिब + फ़ा० खानह्] घर का स्वामी। गृहपति [को०]।

साहबगरज—वि० [अ० साहिबगरज] गर्जू। स्वार्थी। खुदगरज [को०]।

साहबजादा—संज्ञा पुं० [अ० साहिब + फ़ा० जादह्] [स्त्री० साहबजादी] १. भले या बड़े आदमी का लड़का। २. पुत्र। बेटा। जैसे,—आज आपके साहबजादा कहाँ हैं ?

साहबदिल—वि० [अ० साहिब + फ़ा० दिल] सहृदय। साधु। सज्जन। मनस्वी [को०]।

साहबपन—संज्ञा पुं० [अ० साहिब + हिं० पन (प्रत्य०)] साहब होने का भाव। साहबी [को०]।

साहब बहादुर—संज्ञा पुं० [अ० साहिब + फ़ा० बहादुर] १. सम्मानित व्यक्ति या राजा का संबोधन। २. योरोपीय ढंग से रहनेवाला व्यक्ति।

साहबान—संज्ञा पुं० [अ० साहिब का बहु ब०] सज्जन वृंद। सत्पुरुष।

साहबाना—वि० [अ० साहिबानह्] साहबी ढंग का। साहबी।

साहब सलामत—संज्ञा स्त्री० [अ०] परस्पर मिलने के समय होनेवाला अभिवादन। बंदगी। सलाम। जैसे,—जब कभी वे रास्ते में मिल जाते हैं, तब साहबसलामत हो जाती है।

साहबी[१]—वि० [अ० साहिब + ई (प्रत्य०)] साहब का। साहब संबंधी। जैसे,—साहबी चाल। साहबी रंग ढंग।

साहबी[२]—संज्ञा स्त्री० १. साहब होने का भाव। २. प्रभुता। मालिकपन। ३. सर्वोच्चता। सर्वोपरि होने का भाव। ईश्वरत्व। ४. बड़ाई। बड़प्पन। महत्व।

मुहा०—साहबी करना = (१) अफसरी दिखाना। अफसरों की तरह रहना। (२) रोब गाँठना। (३) सीमा से बाहर अधिक व्यय करके ठाटबाट से रहना।

साहबीयत—संज्ञा स्त्री० [अ० साहिब + इयत (प्रत्य०)] साहबपन। साहबी। अफसरी ढंग।

साह बुलबुल—संज्ञा पुं० [अ० शाह + फ़ा० बुलबुल] एक प्रकार का बुलबुल जिसका सिर काला, सारा शरीर सफेद और दुम एक हाथ लंबी होती है।

साहय—वि० [सं०] सहन करने में प्रवृत्त करनेवाला [को०]।

साहस—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह मानसिक गुण या शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य यथेष्ट बल के अभाव में भी कोई भारी काम कर बैठता है या दृढ़तापूर्वक विपत्तियों या कठिनाइयों आदि का सामना करता है। हिम्मत। हियाव। जैसे,—वह साहस करके डाकुओं पर टूट पड़ा।

क्रि० प्र०—करना।—दिखलाना।—होना।

२. जबरदस्ती दूसरे का धन लेना। लूटना। ३. कोई बुरा काम। दुष्ट कर्म। ४. द्वेष। ५. अत्याचार। ६. क्रूरता। बेरहमी। ७. परस्त्री गमन। ८. बलात्कार। ९. दंड। सजा। १०. जुर्माना। ११. अविमृश्यकारिता। अविवेकिता। औद्धत्य। उतावलापन। १२. वह अग्नि जिसपर यज्ञ के लिये चरु पकाया जाता है।

साहसकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. साहस करना। बल प्रयोग। २. उग्रता। क्रूरता।

साहसकारी—वि० [सं० साहसकारिन्] १. साहस करनेवाला। साहसी। बहादुर। हिम्मती। २. उद्धत। अविवेकी [को०]।

साहसदंड—संज्ञा पुं० [सं० साहसदण्ड] १. सबसे बड़ा दंड। कठोरतम दंड। प्राणदंड [को०]।

साहसलांछन—वि० [सं० साहसलाञ्छन] जिसकी पहचान साहस हो। जो अपने साहस से जाना पहचाना जाय [को०]।

साहसांक—संज्ञा पुं० [सं० साहसाङ्क] १. राजा विक्रमादित्य का एक नाम। २. एक कोशकार का नाम (को०)। ३. एक कवि का नाम (को०)।

साहसाधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] पुलिस अफसर [को०]।

साहसाध्यवसायी—वि० [सं० साहसाध्यवसायिन्] किसी कार्य में उतावली या जल्दीबाजी करनेवाला [को०]।

साहसिक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसमें साहस हो। साहस करनेवाला। हिम्मतवर। पराक्रमी। २. डाकू। ३. चोर।

तस्कर। ४, मिथ्यावादी। ५. कर्कश वचन बोलनेवाला। ६. परस्त्रीगामी।

विशेष—शास्त्रों में डाका, चोरी, झूठ बोलना, कठोर वचन कहना और परस्त्रीगमन ये पाँचो कर्म करनेवाले साहसिक कहे गए हैं और अत्यंत पापी बतलाए गए हैं। धर्मशास्त्रों में इन्हें यथोचित दंड देने का विधान है। स्मृतियों में लिखा है कि 'साहसिक व्यक्ति' की साक्षी नहीं माननी चाहिए क्योंकि ये स्वयं ही पाप करनेवाले होते हैं।

६. वह जो हठ करता हो। हठी। हठीला। ७. निर्भीक। निर्भय। निडर। ८. अविचारशील। अविवेकी (को०)। ६. क्रूर। अत्याचारी (को०)।

साहसिकता—संज्ञा स्त्री० [सं० साहसिक+ता (प्रत्य०)] साहसिक होने का भाव दिलेरपन। हिम्मत। उ०—कितनी सरल, स्वतंत्र और साहसिकता से भरी हुई यह रमणी है।—आँधी, पृ० १६।

साहसिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. साहस दिखाने का भाव। साहसिकता। प्रचंडता। २. असमीक्ष्यकारिता। अविवेकिता। औद्धत्य [को०]।

साहसी[1]—वि० [सं० साहसिन्] १. वह जो साहस करता हो। हिम्मती। दिलेर। २. अविवेकी। उद्धत। ३. क्रूर। निष्ठुर (को०)। ४. असह्य। उग्र। प्रचंड (को०)।

साहसी[2]—संज्ञा पुं० बलि का पुत्र जो शाप के कारण गधा हो गया था। इसे बलराम ने मारा था।

साहसैकरसिक—वि० [सं०] साहसिकता में ही आनंद या रस माननेवाला। अत्यंत अत्याचारी। उद्धत। उद्दंड। क्रूर [को०]।

साहस्र—वि० [सं०] १. सहस्र संबंधी। हजार का। २. (ब्याज आदि) जो हजार पीछे दिया जाय (को०)। ३. जो हजार में क्रीत किया गया हो (को०)। ४. सहस्रगुणित। हजार गुना (को०)। ५. असंख्य। अत्यधिक संख्यायुक्त। असंख्येय (को०)। ६. हजार से युक्त (को०)।

साहस्र[2]—संज्ञा पुं० १. सहस्र का समूह। २. एक हजार सैनिकों की टुकड़ी (को०)।

साहस्रक[1]—वि० [सं०] जो एक हजार से युक्त हो। एक हजार की संख्यावाला [को०]।

साहस्रक[2]—संज्ञा पुं० १. एक हजार का समूह। एक सहस्र। २. एक तीर्थ का नाम [को०]।

साहस्रवेधी—संज्ञा पुं० [सं० साहस्रवेधिन्] कस्तूरी।

साहस्रांत—संज्ञा पुं० [सं० साहस्रान्त] एक प्रकार का एकाह यज्ञ [को०]।

साहस्राद्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'साहस्रांत'।

साहस्रिक[1]—वि० [सं०] सहस्र संबंधी। हजार का।

साहस्रिक[2]—संज्ञा पुं० किसी पदार्थ के एक सहस्र भागों में से एक भाग—$\frac{1}{1000}$।

साहा—संज्ञा पुं० [सं० साहित्य] १. वर्ष जो हिंदू ज्योतिष के अनुसार विवाह के लिये शुभ माना जाता है। २. विवाह आदि शुभ कार्यों के लिये निश्चित लग्न या मुहूर्त।

साहानसाहⓅ—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाहंशाह] दे० 'शाहंशाह'। उ०—साहानसाह आलम निवाज। रनथंभ कोट चहुँआन राज। हम्मीर०, पृ० १६।

साहायक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहयोग। मदद। सहायता। २. मित्रता। मैत्री। ३. सहयोगियों या मित्रों का मंडल। ४. उपकारक या सहायक सेना [को०]।

साहाय्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहायता। मदद। २. दोस्ती। मैत्री। संग (को०)। ३. (नाटक में) एक दूसरे को संकट में मदद पहुँचाना (को०)।

साहाय्यकर—वि० [सं०] मदद करनेवाला। सहायक [को०]।

साहाय्यदान—संज्ञा पुं० [सं०] सहायता देना। मदद देना [को०]।

साहिⓅ†[1]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाह] १. राजा। उ०—भूपन भनि ताके भयो, भुव भूषन नृप साहि। रातौ दिन संकित रहैं, साहि सबै जग माहि।—भूषण ग्रं०, पृ० ८। २. दे० 'साहु'।

साहितⓅ—संज्ञा पुं० [सं० साहित्य] दे० 'साहित्य'। उ०—गुरुभूम पाठ पिंगल मता, साहित बोदग सार नैं।—रघु० रू०, पृ० १४।

साहिती—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'साहित्य'।

साहित्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. एकत्र होना। मिलना। मिलन। २. वाक्य में पदों का एक प्रकार का संबंध जिसमें वे परस्पर अपेक्षित होते हैं और उनका एक ही क्रिया से अन्वय होता है। ३. किसी एक स्थान पर एकत्र किए हुए लिखित उपदेश, परामर्श या विचार आदि। लिपिबद्ध विचार या ज्ञान। ४. अलंकार शास्त्र। रीतिशास्त्र। काव्यकला। काव्यशास्त्र आदि। ५. गद्य और पद्य सब प्रकार के उन ग्रंथों का समूह जिनमें सार्वजनिक हित संबंधी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं। वे समस्त पुस्तकें जिनमें नैतिक सत्य और मानव भाव बुद्धिमत्ता तथा व्यापकता से प्रकट किए गए हों। वाङ्मय।

विशेष—इस अर्थ में यह शब्द बहुत अधिक व्यापक रूप में भी बोला जाता है (जैसे,—समस्त संसार का साहित्य); और देश काल, भाषा या विषय आदि के विचार से परिमित रूप में भी (जैसे,—हिंदी साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य, बिहारी का साहित्य आदि)।

६. संगति। सामंजस्य। तालमेल (को०)। ७. किसी वस्तु के उत्पादन या किसी कार्य की संपन्नता के लिये सामग्री का संग्रह (को०)।

साहित्यदर्पण—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य शास्त्र का एक सुप्रसिद्ध ग्रंथ जिसके रचयिता विश्वनाथ कविराज हैं।

साहित्यशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें साहित्यिक विधाओं (अलंकार, रस, रूपक, छंद आदि) का शास्त्रीय ढंग से मूल्यांकन हो।

साहित्यिक[1]--वि० [सं० साहित्य+हिं० इक (प्रत्य०)] साहित्य संबंधी। जैसे--साहित्यिक चर्चा।

साहित्यिक[2]--संज्ञा पुं० वह जो साहित्य सेवा में संलग्न हो। साहित्य शास्त्र का विद्वान्। साहित्यसेवी। जैसे,--वहाँ कितने ही प्रसिद्ध साहित्यिक उपस्थित थे।

साहिनी--संज्ञा स्त्री० [सं० सेनानी?] दे० 'साहनी'।

साहिब--संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० साहिबा] स्वामी। प्रभु। दे० 'साहब'। उ०--साहिब सीतानाथ से सेवक तुलसी दास।--मानस, १।२८।

साहिबिनी(पु)--संज्ञा स्त्री० [अ० साहिब+इनी (प्रत्य०)] स्वामिनी। मलकिन। उ०--मेरी साहिबिनि सदा सीस पर बिलसति, देवि क्यों न दास को देखाइयत पाय जू।--तुलसी ग्रं०, पृ० २३१।

साहिबी--संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'साहबी'। उ०--(क) सुलभ सिद्धि सब साहिबी सुमिरत सीता राम।--तुलसी ग्रं०, पृ० १५२। (ख) लै त्रिलोक की साहिबी दै धतूर कौ फूल।--स० सप्तक, पृ० १४६।

साहिब्ब(पु)--संज्ञा पुं० [अ० साहिब] दे० 'साहब'। उ०--साहिब्ब बचन इम उच्चरै अली औलिया पीर गनि।--ह० रासो, पृ० ५७।

साहियाँ(पु)--संज्ञा पुं० [सं० स्वामी, या फ़ा० शाह, हिं० साह, साहि] दे० 'साँई'।

साहिर--संज्ञा पुं० [अ०] [बहु व० सहरा] जादूगर। उ०--अफसोस मार झटपट दिल को रखै है अटका। किस साहिरों से सीखा जुल्फों ने तेरी लटका।--कविता कौ०, भा० ४, पृ० १९।

साहिरी--संज्ञा स्त्री० [अ० साहिर] जादूगरी।

साहिल[1]--संज्ञा पुं० [अ०] १. किनारा। कूल। तट। २. समुद्र अथवा नदी का तट [को०]।

साहिल[2]--संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] दे० 'साही'।

साहिलो--संज्ञा स्त्री० [अ० साहिल (=समुद्र तट)] १. एक प्रकार का पक्षी जिसका रंग काला और लंबाई एक बालिश्त से अधिक होती है।

विशेष--यह प्रायः उत्तरी भारत और मध्य प्रदेश में पाया जाता है। यह पेड़ की टहनियों पर प्याले के आकार का घोंसला बनाता है। इसके अंडों का रंग भूरा होता है।

२. बुलबुल चश्म।

साही[1]--संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] एक प्रसिद्ध जंतु जो प्रायः दो फुट लंबा होता है।

विशेष--इसका सिर छोटा, नथुने लंबे, कान और आँखें छोटी और जीभ बिल्ली की तरह काँटेदार होती है। ऊपर नीचे के जबड़े में चार दाँतों के अतिरिक्त कुतरनेवाले दो दाँत ऐसे तीक्ष्ण होते हैं कि लकड़ी के मोटे तख्ते तक को काट डालते हैं। इसका रंग भूरा, सिर और पाँव पर काले काले सफेदी लिए छोटे छोटे बाल और गर्दन पर के बाल लंबे और भूरे रंग के होते हैं। पीठ पर लंबे नुकीले काँटे होते हैं। काँटे बहुधा सीधे और नोकें पूँछ की भाँति फिरी रहती हैं। जब यह क्रुद्ध होता है, तब काँटे सीधे खड़े हो जाते हैं। यह अपने शत्रुओं पर अपने काँटों से आक्रमण करता है। इसका किया हुआ घाव कठिनता से आराम होता है। इन काँटों से लिखने की कलम बनाई जाती है और चूड़ाकर्म में भी कहीं कहीं इनका व्यवहार होता है। ये जंतु आपस में बहुत लड़ते हैं, इसलिये लोगों का विश्वास है कि यदि इसके दो काँटे दो आदमियों के दरवाजों पर गाड़ दिए जाएँ, तो दोनों में बहुत लड़ाई होती है। यह दिन में सोता और रात में जागता है। यह नरम पत्ती, साग, तरकारी और फल खाता है। शीतकाल में यह बेसुध पड़ा रहता है। यह प्रायः ऊष्ण देशों में पाया जाता है। स्पेन, सिसिली आदि प्रायद्वीपों और अफ्रीका के उत्तरी भाग, एशिया के उत्तर, तातार, ईरान तथा हिंदुस्तान में यह बहुत मिलता है। इसे कहीं कहीं 'सेई' और 'स्याऊ' भी कहते हैं।

साही[2]--वि० [फ़ा० शाही] दे० 'शाही'। उ०--साही हुकुम्म किज्जिय सुवेग।--प० रासो, पृ० ६५।

साहु--संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. सज्जन। भला मानस। उ०--ताहि न खोजहु साहु के पूता। का पाहन पूजहु अजगूता--कबीर सा०, पृ० ३६६। २. महाजन। धनी। साहुकार। चोर का उलटा।

विशेष--प्रायः वणिकों के नाम के आगे यह शब्द आता है। इसको कुछ लोग भ्रम से फारसी 'शाह' का अपभ्रंश समझते हैं। पर यथार्थ में यह संस्कृत 'साधु' का प्राकृत रूप है।

साहुन‡--संज्ञा पुं० [सं० श्रावण, हिं० सावन] दे० 'सावन' (मास)। उ०--सदा तुरैया फूले नहीं, सदा न साहुन होय। सदा नै कंसा रन चढ़ै सदा न जीवे कोय।--शुक्ल अभि० ग्रं०, पृ० १५३।

साहुनि(पु)--संज्ञा स्त्री० [हिं० साहु] साहु की स्त्री। साहुआइन। उ०--साहु के माल चोर धरि साँधा। साहुनि कूदि साहु कहँ बाँधा।--संत० दरिया, पृ० ३६६।

साहुरड़ा(पु)‡--संज्ञा पुं० [सं० श्वसुरालय या हिं० सासुर+ड़ा (प्रत्य०)] पति का घर। ससुराल। सासुर। उ०--पेवक दै दिन चार है साहुरड़े जाणा। अंधा लोक न जाणई मूरखु एयाणा।--कबीर ग्रं०, पृ० ३०६।

साहुल--संज्ञा पुं० [फ़ा० शाकूल] दीवार की सीध नापने का एक प्रकार का यंत्र जिसका व्यवहार राज और मिस्त्री लोग मकान बनाने के समय करते हैं।

विशेष--यह पत्थर की गोली के आकार का होता है और इसमें एक लंबी डोरी लगी रहती है। इसी डोरी के सहारे से इसे लटकाकर दीवार की टेढ़ाई या सिधाई नापते हैं।

साहू--संज्ञा पुं० [सं० साधु, प्रा० साहु] दे० 'साहु'।

साहूकार--संज्ञा पुं० [हिं० साहु+कार (प्रत्य०)] बड़ा महाजन या व्यापारी। कोठीवाल। धनाढ्य।

साहूकारा[1]--संज्ञा पुं० [हिं० साहूकार+आ (प्रत्य०)] १. रुपयों का लेनदेन। महाजनी। २. वह बाजार जहाँ बहुत से साहूकार या महाजन कारबार करते हों। ३. साहूकारों का मुहल्ला।

साहूकारा[2]—वि० साहूकारों का। जैसे,—साहूकारा व्यवहार या ब्याज।

साहूकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० साहूकार + ई (प्रत्य०)] १. साहूकार होने का भाव। साहूकारपन। २. साहूकार का काम। साहूकारा। महाजनी (को०)।

साहेब—संज्ञा पुं० [अ० साहिब] दे० 'साहब'।

साहैं ⓤ†[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँह] भुजदंड। बाजू। उ०—सकल भुअन मंगल मंदिर के द्वार बिसाल सुहाई साहैं।—तुलसी (शब्द०)।

साहैं[2]—अव्य० [हिं० सामुहें] सामने। सम्मुख।

साह्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. संयोजन। मेल। साथ। २. सहायता। मदद [को०]।

साह्यकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] साथी [को०]।

साह्न—वि० [सं०] १. दिन से संबद्ध। दिन सहित। दिनयुक्त। २. दिन पूरा करनेवाला। दिवस समाप्त करनेवाला [को०]।

साह्व—वि० [सं०] नामवाला [को०]।

साह्वय—संज्ञा पुं० [सं०] १. जानवरों की लड़ाई कराकर जुआ खेलना। २. पशुओं के लड़ाने के लिये योजित करना।

सिउँ, सिँउँ ⓤ‡—प्रत्य० [अप० सिउँ (= समं)] दे० 'त्यों'। उ०—रतन जनम अपनो तैं हास्यो गोविंद गत नहिं जानी। निमिष न लीन भयो चरनन सिउँ बिरथा अउध सिरानी।—तेगबहादुर (शब्द०)।

सिंकना, सिँकना—क्रि० अ० [सं० श्रृत (= पका हुआ) + करण; हिं० सेंकना] आँच पर गरम होना या पकना। सेंका जाना। जैसे,—रोटी सिँकना।

सिकली—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रृङ्खला, हिं० साँकल] करधनी। मेखला। कमर में पहनने की जंजीर। उ०—खुटी सिंकली सूता एकावटी चुलि वलया मेषला त्रिका।—वर्ण०, पृ० ४।

सिंकोना—संज्ञा पुं० [अं०] कुनैन का पेड़।

सिखला—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रृङ्खला, हिं० साँकल] १. दरवाजा बंद करने की सिकड़ी। साँकल। २. बंधन। घेरा। रोक। प्रतिबंध। अर्गला। उ०—तोरि सिखला गेह की हो लोक लाज भय खोय। 'हरीचंद' हरि सो मिलौं होनी होय सो होय।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ३७४।

सिंग[1]—संज्ञा पुं० [सं० श्रृङ्ग] दे० 'सींग'।

सिंग†[2]—वि० [देशी] कृश। दुर्बल।—देशी० ८।२८।

सिंगड़ा†—संज्ञा पुं० [सं० श्रृङ्ग + हिं० ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० सिंगड़ी] सींग का बना हुआ बारूद रखने का एक प्रकार का बरतन। उ०—तन बंदूक सुमन का सिंगड़ा ज्ञान का गज ठहकाई।—कबीर० श०, भा० १, पृ० २७।

सिंगरा† - संज्ञा पुं० [हिं० सीग + रा (प्रत्य०)] दे० 'सिंगड़ा' उ०—(क) तन बंदूक सुमति कै सिंगरा ज्ञान के गज ठहकाई।—पलटू०, भा० ३, पृ० ४०। (ख) रंजक दानी, सिंगरा तूलि पलीता दानी।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० १३।

सिंगरफ—संज्ञा पुं० [फ़ा० शिंगरफ] ईंगुर।

सिंगरफी—वि० [फ़ा० शिंगरफी] ईंगुर का। ईंगुर से बना हुआ।

सिंगरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] एक प्रकार की मछली जिसके सिर पर सींग से निकले होते हैं।

सिंगरौर—संज्ञा पुं० [सं० श्रृङ्गवेर] प्रयाग के पश्चिमोत्तर नौ दस कोस पर एक स्थान जो प्राचीन श्रृंगवेरपुर माना जाता है। यहाँ निषादराज गुह की राजधानी थी। उ०—सो जामिनि सिंगरौर गँवाई।—मानस, २।१५१।

सिंगल[1]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बड़ी मछली जो भारत और बरमा की नदियों में पाई जाती है। यह छह फुट तक लंबी होती है।

सिंगल[2]—संज्ञा पुं० [अं० सिगनल] दे० 'सिगनल'।

सिंगल[3]—वि० [अं० सिंगिल] एक। दे० 'सिंगिल'। जैसे,—सिंगल कप (डबल = दो अर्थात् भरा हुआ पूर्ण और सिंगल = एक अर्थात् आधा)।

सिंगा[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सींग] फूँककर बजाया जानेवाला सींग या लोहे का बना एक बाजा। तुरही। रणसिंगा।

सिंगा†[2]—संज्ञा स्त्री० [देशी] फली। छीमी। फलियाँ।

सिंगार, सिँगार ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० श्रृङ्गार, प्रा० सिंगार] १. सजावट। सज्जा। बनाव। २. शोभा। ३. श्रृंगार रस। उ०—ताही ते सिंगार रस बरनि कह्यो कवि देव। जाको है हरि देवता सकल देव अधिदेव।—देव (शब्द०)।

सिंगारदान—संज्ञा पुं० [हिं० सिंगार + सं० आधान या फ़ा० दान (प्रत्य०)] वह पात्र या छोटा संदूक जिसमें शीशा, कंघी आदि श्रृंगार की सामग्री रखी जाती है। प्रसाधन की सामग्री रखने का संदूक।

सिंगारना, सिँगारना ⓤ—क्रि० स० [हिं० सिंगार + ना (प्रत्य०)] वस्त्र, आभूषण, अंगराग आदि से शरीर सुसज्जित करना। सजाना। सँवारना। उ०—(क) सुरभी वृषभ सिंगारि बहुबिधि हरदी तेल लगाई।—सूर (शब्द०)। (ख) कटे कुंड कुंडल सिँगारे गंड पुंडन पै कटि मैं भुसुंड सुंड दंडन की मंडनी।—गि० दास (शब्द०)।

सिंगारपटार†—संज्ञा पुं० [सं० श्रृङ्गार + प्रस्तार] अच्छी तरह किया हुआ श्रृंगार। श्रृंगार। सिंगार। उ०—साबुन मल मल कर हाथ मुँह धोया फिर इत्र पाउडर लगाकर सिंगारपटार किया।—कंठहार, पृ० ९८।

सिंगारभोग—संज्ञा पुं० [सं० श्रृङ्गार + भोग] श्रृंगारकालीन भोग। वह भोग या नैवेद्य जो देवविग्रह के स्नान एवं धूप आरती के उपरांत तथा श्रृंगार आरती के पूर्व अर्पण किया जाता है। बालभोग। कलेवा। उ०—फेरि रसोइ में जाइ, समै भए भोग सराइ श्रीठाकुरजी की मंगला आर्ति करि, सिंगार करि सिंगार-भोग धरतें।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १०१।

सिंगारमेज—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रृङ्गार + फ़ा० मेज़] एक प्रकार की मेज जिसपर दर्पण लगा रहता है और श्रृंगार की सामग्री सजी

रहती है। इसके सामने बैठकर लोग बाल सँवारते और वस्त्र आभूषण आदि पहनते हैं।

सिंगारहाट— संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार + हाट (= बाजार)] १. सौंदर्य का बाजार। वेश्याओं के रहने का स्थान। चकला। २ वह बाजार जहाँ श्रृंगार या प्रसाधन की वस्तुएँ बिकती हों।

सिंगारहार— संज्ञा पुं० [सं० हारश्रृङ्गार] हरसिंगार नामक फूल। परजाता। उ०—नागेसर सदबरग नेवारी। औ सिंगारहार फुलवारी। —जायसी (शब्द०)।

सिंगारिया— वि० [सं० श्रृङ्गार + हिं० सिंगार + इया (प्रत्य०)] किसी देवमूर्ति का श्रृंगार करनेवाला, पुजारी।

सिंगारी, सिँगारी(पु)—वि० पुं० [सं० श्रृङ्गारिन्, प्रा० सिंगारि, हिं० सिंगार + ई (प्रत्य०)] १. श्रृंगार करनेवाला। शोभित करनेवाला। सजानेवाला। उ०—समर बिहारी सुर सम बलधारी धरि मल्लजुद्धकारी औ सिंगारी भट भेरु के।—गोपाल (शब्द०)। २. सिंगारिया। श्रृंगार का विशेषज्ञ। रामलीला, नाटक आदि में पात्रों को सजानेवाला। उ० —आवत दूर दूर सौ सिच्छक गुनी सिंगारी।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३०।

सिंगाल†—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पहाड़ी बकरा जो कुमायूँ से नैपाल तक पाया जाता है।

सिंगाला— वि० [हिं० सींग + आला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सिंगाली] सींगवाला। जैसे,—गाय, बैल।

सिंगासन†—संज्ञा पुं० [सं० सिंहासन, प्रा० सिंघासन] दे० 'सिंहासन'।

सिंगिया—संज्ञा पुं० [सं० श्रृङ्गिक] एक प्रसिद्ध स्थावर विष।

विशेष- इसका पौधा अदरक या हल्दी का सा होता है और सिक्किम की ओर नदियों के किनारे की कीचड़वाली जमीन में उगता है। इसकी जड़ ही विष होती है, जो सूखने पर सींग के आकार की दिखाई पड़ती है। लोगों का विश्वास है कि यह विष यदि गाय की सींग में बाँध दिया जाय, तो उसका दूध रक्त के समान लाल हो जाय। यह कुछ आयुर्वेदिक दवाओं में प्रयुक्त होता है।

सिंगिया†—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रृङ्गिका, प्रा० सिंगिया] पिचकारी। फुहारा [को०]।

सिंगिल— वि० [अं०] १. अविवाहित। एकाकी २. एक मात्र। इकहरा। जैसे,—सिंगिल लाइन सिंगिल रीड बाजा।

सिंगी[१]—संज्ञा पुं० [हिं० सींग] १. सींग का बना हुआ फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा। तुरही।

विशेष—इसे शिकारी लोग कुत्तों को शिकार का पता देने के लिये बजाते हैं।

२. सींग का बाजा जिसे योगी लोग फूँककर बजाते हैं। उ०—सिंगी नाद न बाजही कित गए सो जोगी।—दादू (शब्द०)।

क्रि० प्र०—फूँकना —बजाना।

३. घोड़ों का एक बुरा लक्षण।

सिंगी[२]—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मछली।

विशेष—यह मछली बरसाती पानी में अधिकता से होती है। इसके काटने या सींग गड़ाने से एक प्रकार का विष चढ़ता है। यह एक फुट के लगभग लंबी होती है और खाने के योग्य नहीं होती।

२. सींग की बनी नली जिससे घूमनेवाले देहाती जर्राह शरीर का रक्त चूसकर निकालते हैं।

क्रि० प्र०—लगाना।

सिंगीमोहरा—संज्ञा पुं० [हिं० सिंगी + मुहरा] सिंगिया नामक विष।

सिंगुल(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सींग + उल (प्रत्य०)] सींग। उ०—पीत वरण आरक्त खुर सिर सिंगुल सुकुमार। कमलासन के अग्र अरि गो गोरूप पुकार —प० रासो, पृ० ७।

सिंगौटी, सिँगौटी[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग + औटी (प्रत्य०)] १. सींग का आकार। २. बैल के सींग पर पहनाने का एक आभूषण। ३. सींग का बना हुआ घोंटना। ४. तेल आदि रखने के लिये सींग का पात्र। ५. जंगल में मरे हुए जानवरों के सींग।

सिंगौटी, सिँगौटी[२]— संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार + औटी] सिंदूर, कंघी आदि रखने की स्त्रियों की पिटारी।

सिंघ(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० सिंह, प्रा० सिंघ] १. दे० 'सिंह'। २. शंख। ३. राजा। राव। ४. शूर। बीर। उ०—सिंघ सूर को कहत कवि बहुरि संख को सिंघ। सिंघ राव औ सिंघ वपु धरो भेष नरसिंघ।—अनेकार्थ०, पृ० १६३।

सिंघण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिंहाण' [को०]।

सिंघपोरि†—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंह + हिं० पौर] राजा के प्रासाद या मंदिर का मुख्य द्वार। सिंहपौर। उ० सो सुनिकै श्री रुक्मिनी जी आदि सब पटरानी निज सखी सहचारिन को सग ले कै सोरहहू सिंगार किए अपने अपने मंदिर तें निकसी। सो सिंघपोरि आई —दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ७।

सिंघल—संज्ञा पुं० [सं० सिंहल] दे० 'सिंहल'।

सिंघली— वि० [सं० सिंहल + ई] दे० 'सिंहली'।

सिंघा†—संज्ञा पुं० [सं० श्रृङ्गक, हिं० सिंगा] दे० 'सिंगा'।

सिंघाड़, सिँघाणा† संज्ञा पुं० [सं० श्रृङ्गाटक] १. पानी में फैलनेवाली एक लता जिसके तिकोने फल खाए जाते हैं। पानी फल।

विशेष—यह भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत में तालों और जलाशयों में रोपकर लगाया जाता है। इसकी जड़ें पानी के भीतर दूर तक फैलती है। इसके लिये पानी के भीतर कीचड़ का होना आवश्यक है, कँकरीली या बलुई जमीन में यह नहीं फैल सकता। इसके पत्ते तीन अंगुल चौड़े कटावदार होते हैं। जिनके नीचे का भाग ललाई लिए होता है। फूल सफेद रंग के होते हैं। फल तिकोने होते हैं जिनकी दो नोकें काँटे या सींग की तरह निकली होती हैं। बीच का भाग खुरदरा होता है। छिलका मोटा पर मुलायम होता है जिसके भीतर सफेद गूदा या गिरी होती है। ये फल हरे खाए जाते हैं। सूखे फलों की गिरी का आटा भी बनता है जो व्रत के दिन फलाहार के रूप में लोग खाते हैं।

अबीर बनाने में भी यह आटा काम में आता है। वैद्यक में सिंघाड़ा शीतल, भारी कसैला वीर्यवर्द्धक, मलरोधक, वातकारक तथा रुधिरविकार और त्रिदोष को दूर करनेवाला कहा गया है।

पर्या०—जलफल। वारिकंटक। त्रिकोणफल।

२. सिंघाड़े के आकार की तिकोनी सिलाई या बेल बूटा। ३. सोनारों का एक औजार जिससे वे सोने की माला बनाते हैं। ४. एक प्रकार की मुनिया चिड़िया। ५. समोसा नाम का नमकीन पकवान जो सिंघाड़े के आकार का तिकोना होता है। ६. सिंघाड़े के आकार की मिठाई। मीठा समोसा। ७. एक प्रकार की आतिशबाजी। ७. रहट की लाट में ठोकी हुई लकड़ी जो लाट को पीछे की ओर घूमने से रोकती है।

सिंघाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंघाड़ा] वह तालाब जिसमें सिंघाड़ा रोपा जाता है।

सिंघाण—संज्ञा पुं० [सं० सिङ्घाण] दे० 'सिंहाण'।

सिंघाणक—संज्ञा पुं० [सं० सिङ्घाणक] दे० 'सिंहाणक'।

सिंघारनाⓅ†—क्रि० स० [सं० संहारण] संहार करना। उ०—धनुधारे! रे धनुधारे। सर एका बाल सिंघारे।—रघु० रू०, पृ० १५५।

सिंघासन—संज्ञा पुं० [सं० सिंहासन, प्रा० सिंघासण, सिंघासन] दे० 'सिंहासन'। उ०—(क) दशरथ राउ सिंघासन बैठि बिराजहिं हो।—तुलसी (शब्द०)। (ख) तहाँ सिंघासन सुभग निहारा। दिव्य कनकमय मनि दुति कारा।—मधुसूदन (शब्द०)।

सिंघिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नासिका [को०]।

सिंघिनी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] नासिका। नाक।

सिंघिनी[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंह, प्रा० सिंघ + हिं० इनी (प्रत्य०)] दे० 'सिंहिनी'।

सिंघिया—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गिक] दे० 'सिंहिनी' (विष)।

सिंघी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] १. एक प्रकार की छोटी मछली जिसका रंग सुर्खी लिए हुए होता है। इसके गलफड़े के पास दोनों तरफ दो काँटे होते हैं। २. सोंठ। शुंडी।

सिंघू—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जीरा जो कुल्लू और बूशहर (फारस) से आता है और काले जीरे के स्थान पर बिकता है।

सिंघेला, सिँघेल†—संज्ञा पुं० [सं० सिंह, प्रा० सिंघ + हिं० एला (प्रत्य०)] शेर का बच्चा। उ०—तौ लगि गाज न गाज सिंघेला। सौंह साह सौं जुरौं अकेला।—जायसी (शब्द०)।

सिंचता—संज्ञा स्त्री० [सं० सिञ्चता] दे० सिंचिता' [को०]।

सिंचन—संज्ञा पुं० [सं० सेचन] १. जल छिड़कना। पानी के छींटे डालकर तर करना। २. पेड़ों में पानी देना। सींचना।

सिंचना, सिँचना†—क्रि० अ० [हिं० सींचना] सींचा जाना।

सिंचाई, सिँचाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० √सींच + आई (प्रत्य०)] १. पानी छिड़कने का काम। जल के छींटों से तर करने की क्रिया। उ०—निजकर पुनि पत्रिका बनाई। कुंकुम मलयज बिंदु सिंचाई।—रघुराज (शब्द०)। २. सींचने का काम। वृक्षों में जल देने का काम। ३. सींचने का कर या मजदूरी।

सिंचाना, सिँचाना—क्रि० स० [हिं० सींचना का प्रे० रूप] १. पानी से छिड़काना। २. सींचने का काम कराना।

सिंचित—वि० [सं० सिञ्चित] [स्त्री० सिंचिता] १. जल छिड़का हुआ छींटों से तर किया हुआ। सींचा हुआ।

सिंचिता—संज्ञा स्त्री० [सं० सिञ्चिता] पिप्पली। पीपर।

सिंचौनी, सिँचौनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींचना + औनी (प्रत्य०)] दे० 'सिंचाई'।

सिंजा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिञ्जा] १. अलंकारों की ध्वनि। भूषणों की रुनझुन। २. दे० 'शिंजा'।

सिंजालपारी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक औजार। विशेष दे० 'गाबलीन'।

सिंजित—संज्ञा स्त्री० [सं० सिञ्जित] शब्द। ध्वनि। झनक। झंकार। उ०—घुटुरुन चलत घुंघुरू बाजैं। सिंजित सुनत हंस हिय लाजैं।—लाल कवि (शब्द०)।

सिंडिकेट—संज्ञा पुं० [अं०] १. सिनेट या विश्वविद्यालय की प्रबंध सभा के सदस्यों या प्रतिनिधियों की समिति। २. धनी व्यापारियों या जानकार लोगों की ऐसी मंडली जो किसी कार्य को, विशेषकर अर्थसंबंधी उद्योग या योजना को अग्रसर करने के लिये बनी हो।

सिंदनⓅ‡—संज्ञा पुं० [सं० स्यन्दन] दे० 'स्यंदन'। उ०—गज बाजि सु सिंदन जान चढ़े।—ह० रासो, पृ० ७८।

सिंदरवानी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की हलदी।

विशेष—इस हलदी की जड़ से एक प्रकार का तीखुर निकलता है। यह असली तीखुर में मिला भी दिया जाता है।

सिंदुक—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दुक] सिंदुवार वृक्ष। संभालु।

सिंदुरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूर] दे० 'सिंदूर'।

सिंदुररसना—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्दुर रसना ?] मदिरा। शराब। (अनेकार्थ०)।

सिंदुरिया—वि० [हिं० सिंदूर + इया (प्रत्य०)] सिंदूर जैसे रंग वाला। सिंदूरिया [को०]।

सिंदुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्दूर] बलूत की जाति का एक छोटा पेड़ जो हिमालय के नीचे के प्रदेश में चार साढ़े चार हजार फुट तक पाया जाता है।

सिंदुवार—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दुवार] सँभालू वृक्ष। निर्गुंडी।

सिंदुवारक—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दुवारक] दे० 'सिंदुवार' [को०]।

सिंदूर—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूर] १. इँगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण जिसे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ अपनी माँग में भरती हैं।

विशेष—सिंदूर स्त्रियों का सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। गणेश और हनुमान की मूर्तियों पर भी यह घी में मिलाकर

पोता और चढाया जाता है। आयुर्वेद में यह भारी, गरम, टूटी हड्डी को जोड़नेवाला, घाव को शोधने और भरनेवाला तथा कोढ़, खुजली और विष को दूर करनेवाला माना गया है। यह घातक और अभक्ष्य है।

पर्या०—नागरेणु। वीरज। गणेशभूषण। संध्याराग। शृंगारक। सौभाग्य। अरुण। मंगल्य।

२. बलूत की जाति का एक पहाड़ी पेड़ जो हिमालय के निचले भागों में अधिक पाया जाता है।

सिंदूरकारण—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूरकारण] सीसा नामक धातु।

सिंदूरतिलक—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूरतिलक] १. सिंदूर का तिलक। २. हाथी।

सिंदूरतिलका—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्दुर तिलका] सधवा स्त्री।

सिंदूरदान—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूरदान] विवाह के अवसर की एक प्रधान रीति। वर का कन्या की माँग में सिंदूर डालना।

सिंदूरपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्दूरपुष्पी] एक पौधा जिसमें लाल रंग के फूल लगते हैं। वीरपुष्पी। सदा सुहागिन।

पर्या०—सिंदूरी। तृणपुष्पी। करच्छदा। शोणपुष्पी।

सिंदूरबंदन—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूर + वन्धन ?] विवाह संस्कार में एक प्रधान रीति जिसमें वर कन्या की माँग में सिंदूर डालता है। उ०—सिंदूरबंदन, होम लावा होन लागी भाँवरी। सिलपोहनी करि मोहनी मन हरयो मूरति साँवरी।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५६।

सिंदूररस—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूररस] रस सिंदूर।

विशेष—यह पारे और गंधक को आँच पर उड़ाकर बनाया जाता हैं और चंद्रोदय या मकरध्वज के स्थान पर दिया जाता है।

सिंदूरवंदन—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूरवन्दन] दे० 'सिंदूरदान'।

सिंदूरिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्दूरिका] सिंदूर [को०]।

सिंदूरित—वि० [सं० सिन्दूरित] सिंदूरयुक्त। लाल किया हुआ। सिंदूर पोता हुआ [को०]।

सिंदूरिया[१]—वि० [सं० सिन्दूर + इया (प्रत्य०)] सिंदूर के रंग का। खूब लाल। जैसे,—सिंदूरिया आम।

सिंदूरिया[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्दूर (पुष्पी)] सदा सुहागिन नाम का पौधा। सिंदूरपुष्पी।

सिंदूरी[१]—वि० [सं० सिन्दूर + ई (प्रत्य०)] सिंदूर के रंग का। उ०—भली सँझोखी सैल सिंदूरी छाए बादर।—अंबिकादत्त (शब्द०)।

सिंदूरी[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्दूरी] १. धातकी। धव। २. रोचनी। हल्दी। लाल हल्दी। ३. सिंदूरपुष्पी। ४. कबीला। ५. लाल वस्त्र।

सिंदोरा—संज्ञा पुं० [हिं० सिंधोरा] लकड़ी की एक डिबिया जिसमें स्त्रियाँ सिंदूर रखती है।

विशेष—यह सौभाग्य की सामग्री मानी जाती है।

सिंध[१]—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धु] भारत के पश्चिम प्रांत का एक प्रदेश जो बंबई प्रांत के अंतर्गत था। अब यह पाकिस्तान का एक प्रांत है।

सिंध[२]—संज्ञा स्त्री० १. पंजाब की एक प्रधान नदी। २. भैरव राग की एक रागिनी।

सिंधव—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धव] दे० 'सैंधव'। उ०—(क) सिंधव फटिक पषान का, ऊपर एकइ रंग। पानीं माहैं देखिए, न्यारा न्यारा अंग।—दादूदयाल (शब्द०)। (ख) सिंधव झष आराम मधि ते आज हेरायो श्याम। सूर (शब्द०)।

सिंधवी—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धु] एक रागिनी।

विशेष—यह रागिनी आभीरी और आशावरी के मेल से बनी मानी जाती है। इसका स्वरूप कान पर कमल का फूल रखे, लाल वस्त्र पहने, क्रुद्ध और हाथ में त्रिशूल लिए कहा गया है। हनुमत के मत से इस रागिनी का स्वरग्राम यह है—सा रे ग म प ध नि सा अथवा सा ग म प ध नि सा।

सिंधसागर—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुसागर] पंजाब में एक दोआब। झेलम और सिंधु नदी के बीच का प्रदेश।

सिंधारा†—संज्ञा पुं० [देश०] श्रावण मास के दोनो पक्षों की तृतीया को लड़की की सुसराल में भेजा हुआ पकवान आदि।

सिंधी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंध + ई (प्रत्य०)] सिंध देश की बोली या भाषा।

विशेष—यह समस्त सिंध प्रांत और उसके आसपास लास बेला, कच्छ और बहावलपुर आदि रियासतों के कुछ भागों में बोली जाती है। इसमें फारसी और अरबी भाषा के बहुत अधिक शब्द मिल गए हैं। यह लिखी भी एक प्रकार की अरबी फारसी लिपि में ही जाती है। इसमें 'सिरैकी', 'लारी' और 'थरेली' तीन मुख्य बोलियाँ हैं। पश्चिमी पंजाब की भाषा के समान इसमें भी दो स्वरों के बीच में कहीं कहीं 'त' पाया जाता है।

सिंधी[२]—वि० सिंध देश का। सिंध देश संबंधी।

सिंधी[३]—संज्ञा पुं० १. सिंध देश का निवासी। २. सिंध देश का घोड़ा जो बहुत तेज और मजबूत होता है। अत्यंत प्राचीन काल से सिंध घोड़े की नस्ल के लिये प्रसिद्ध है।

सिंधु[१]—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धु] १. नद। नदी। २. एक प्रसिद्ध नद जो पंजाब के पश्चिम भाग में है। ३. समुद्र। सागर। ४. चार की संख्या। ५. सात की संख्या। ६. वरुण देवता। ७. सिंध प्रदेश। ८. सिंध प्रदेश का निवासी। ९. ओठों का गीलापन। ओष्ठ की आर्द्रता। १०. हाथी के सूँड़ से निकला हुआ पानी। ११. हाथी का मद। गजमद। १२. श्वेत टंकण। खूब साफ सोहागा। १३. सिंदुवार का पौधा। निगुंडी। १४. संपूर्ण जाति का एक राग।

विशेष—यह राग मालकोश का पुत्र माना जाता है। इसमें गांधार और निषाद दोनों स्वर कोमल लगते हैं। इसके गाने का समय दिन को १० दंड से १६ दंड तक है।

१५. गंधर्वों के एक राजा का नाम। १६. वरुण का एक नाम (को०)। १७. विष्णु का एक नाम (को०)। १८. एक नागराज (को०)। १९. बाढ़। प्लावन (को०)।

सिंधु[२]—संज्ञा स्त्री० १. नदी। सरिता। २. दक्षिण की एक छोटी नदी जो यमुना में मिलती है।

सिंधुक—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुक] निर्गुंडी। सँभालु वृक्ष।

सिंधुक[२]—वि० १. समुद्र में उत्पन्न। समुद्र का। समुद्र संबंधी। २. सिंध प्रदेश का (को०)।

सिंधुकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुकन्या] लक्ष्मी।

सिंधुकफ—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुकफ] समुद्रफेन।

सिंधुकर—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुकर] श्वेत टंकरण। सोहागा।

सिंधुकालक—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुकालक] नैर्ऋत्य कोरण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम।

सिंधुखेल—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धु खेल] सिंध प्रदेश।

सिंधुज[१]—वि० [सं० सिन्धुज] १. समुद्र से उत्पन्न। २. सिंध देश में होनेवाला। ३. नदो से उत्पन्न (को०)। ४. जलोत्पन्न। जल में या जल से उत्पन्न (को०)।

सिंधुज[२]—संज्ञा पुं० १. सेंधा नमक। २. शंख। उ०—जाके क्रोध भूमि जल पटके कहा कहैगो सिंधुज पानी।—सूर (शब्द०)। ३. पारद। पारा। ४. सोहागा। ५. समुद्र का पुत्र, चंद्रमा (को०)।

सिंधुजन्मा—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुजन्मन्] १. चंद्रमा। २. सेंधा नमक।

सिंधुजन्मा—वि० दे० 'सिंधुज १'।

सिंधुजा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुजा] १. समुद्र से उत्पन्न, लक्ष्मी। उ०—चौंर ढारत सिंधुजा जय शब्द बोलत सिद्ध। नारदादिक बिप्र मान अशेष भाव प्रसिद्ध।—केशव (शब्द०)। २. सीप जिससे मोती निकलता है।

सिंधुजात—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुजात] १. सिंधी घोड़ा। २. मोती।

सिंधुड़ा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धु] एक रागिनी जो मालव राग की भार्या मानी जाती है।

सिंधुतीरसंभव—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुतीरसम्भव] सुहागा।

सिंधुदेश—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुदेश] सिंध नाम का देश।

सिंधुनंदन—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुनन्दन] (समुद्र का पुत्र) चंद्रमा।

सिंधुनाथ—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुनाथ] नदियों का पति या स्वामी। समुद्र (को०)।

सिंधुपति—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुपति] दे० 'सिंधुराज'।

सिंधुपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुपर्णी] गंभारी वृक्ष।

सिंधुपिव—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुपिव] अगस्त्य ऋषि का एक नाम, जो समुद्र पी गए थे।

सिंधुपुत्र—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुपुत्र] १. चंद्रमा। २. तिंदुक की जाति का एक पेड़।

सिंधुपुलिंद—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुपुलिन्द] एक जनपद का नाम (को०)।

सिंधुपुष्प—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुपुष्प] १. शंख। २. कदंब। कदम। ३. मौलसिरी। बकुल।

सिंधुप्रसूत—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुप्रसूत] सेंधा नमक।

सिंधुमंथ—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुमन्थ] १ पर्वत। २. समुद्रमंथन।

सिंधुमंथज—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुमन्थज] सेंधा नमक।

सिंधुमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुमातृ] नदियों की माता, सरस्वती।

सिंधुमुख—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुमुख] नदी का मुहाना। नदी का संगम स्थल (को०)।

सिंधुर—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुर] [स्त्री० सिंधुरा] १. हस्ती। हाथी। उ०—चली संग बनराज के, रसे एक बन आहिं। सिंधुर यूथप बहुत तहँ, निकसे तेहि बन माहिं।—सबलसिंह (शब्द०)। २. आठ की संख्या।

सिंधुरद्वेषी—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुरद्वेषिन्] हाथी का शत्रु, सिंह।

सिंधुरमणि, सिंधुरमनि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुरमणि] गजमुक्ता। उ०—पीत बसन कटि कलित कंठ सुंदर सिंधुरमनि माल। तुलसी (शब्द०)।

सिंधुरवदन—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुरवदन] गजवदन। गणेश। उ०—गुरु सुरसइ सिंधुरवदन, ससि सुरसरि सुरगाइ। सुमिरि चलहु मग मुदित मन होइहि सुकृत सहाइ।—तुलसी (शब्द०)।

सिंधुरागामिनि(पु)—वि० स्त्री० [सं० सिंधुरागामिनी] 'सिंधुरागामिनी'। हाथी की सी चालवाली। उ०—गावत चली सिंधुरागामिनि। —तुलसी (शब्द०)।

सिंधुरागामिनी—वि० स्त्री० [सं० सिन्धुरागामिनी] गजगामिनी।

सिंधुराज—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुराज] १. जयद्रथ का नाम। २. सेंधा नमक। ३. समुद्र (को०)।

सिंधुराव—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुराव] निर्गुंडी। सँभालू।

सिंधुल—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुल] राजा भोज के पिता का नाम।

सिंधुलताग्र—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुलताग्र] मूँगा। प्रवाल।

सिंधुलवण—संज्ञा पुं० [सं०] सेंधा नमक।

सिंधुवार—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुवार] १. सिंदुवार। निर्गुंडी। २. फारस या सिंध से खरीदा घोड़ा। ३. सिंध देश का अश्व (को०)।

सिंधुवारित—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुवारित] दे० 'सिंधुवार (को०)।

सिंधुवासी—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुवासिन्] सिंध देश का निवासी।

सिंधुविष—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुविष] हलाहल विष जो समुद्र मथने पर निकलता था। उ०—आसोविष, सिंधुविष पावक सों तो कछू हुतो प्रहलाद सों पिता को प्रेम छूट्यो है।—केशव (शब्द०)।

सिंधुवृष—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुवृष] विष्णु का एक नाम।

सिंधुवेषण—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुवेषण] गंभारी वृक्ष।

सिंधुशयन—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुशयन] विष्णु।

सिंधुसंगम—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धु सङ्गम] नदियों का संगम या समुद्र मिलन (को०)।

सिंधुसंभवा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुसम्भवा] फिटकिरी।

सिंधुसर्ज—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुसर्ज] शाल वृक्ष। साखू।

सिंधुसहा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुसहा] निर्गुंडी। सिंदुवार।

सिंधुसागर—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुसागर] सिंधु नद तथा सागर के बीच का देश [को०]।

सिंधुसुत—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुसुत] जलंधर नामक राक्षस जिसे शिवजी ने मारा था। उ०—सिधुसुत गर्व गिरि वज्र गौरीस भव दक्ष मख अखिल विध्वंसकर्त्ता।—तुलसी (शब्द०)।

सिंधुसुता—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुसुता] १. लक्ष्मी। २. सीप।

सिंधुसुतासुत—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुसुतासुत] सिंधुसुता, सीप का पुत्र अर्थात् मोती। उ०—सिंधुसुतासुत ता रिपु गमनी सुन मेरी तू बात।—सूर (शब्द०)।

सिंधुसौवीर—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुसौवीर] सिंधुनद के आस पास बसनेवाली जाति [को०]।

सिंधूत्थ—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धूत्थ] १. चंद्रमा। २. सेंधा नमक [को०]।

सिंधूद्भव—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धूद्भव] सेंधा नमक [को०]।

सिंधूपल—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धूपल] सेंधा नमक [को०]।

सिंधूरा—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुर] संपूर्ण जाति का एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र माना जाता है।

विशेष—यह वीर रस का राग है। इसमें ऋषभ और निषाद स्वर कोमल लगते हैं। इसके गाने का समय दिन में ११ दंड से १५ दंड तक है।

सिंधूरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुर+हिं० ई] एक रागिनी जो हिंडोल राग की पुत्रवधू मानी जाती है।

सिंधोरा, सिँधोरा—संज्ञा पुं० [हिं० सिंदूर+ओरा (प्रत्य०)] सिंदूर रखने का लकड़ी का पात्र जो कई आकार का बनता है। उ०—गृहि ते निकरी सती होन को देखन को जग दौरा। अब तो जरे मरे बनि आई लीन्हा हाथ सिंधोरा।—कबीर (शब्द०)।

सिँधोरिया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंदूर+इया (प्रत्य०) १. सिंदूर रखने की छोटी डिबिया। दे० 'सिंदूरिया'।

सिंधोरी, सिँधोरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंदूर] सिंदूर रखने की काठ की डिबिया। दे० 'सिंधोरा'। उ०—काहू हाथ चंदन के खोरी। कोइ सेंधूर कोइ गहे सिंधोरी।—जायसी (शब्द०)।

सिंपा†—संज्ञा स्त्री० [सं० शम्पा] विद्युत्। बिजली। उ०—खुरतालु के झमके सत सिंपा के सिलाव।—रघु० रू०, पृ० २५०।

सिंपी(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सीविन् (=सीनेवाला, दर्जी)] सीवक। छीपी। दर्जी। उ०—मन मेरी सुई तन मेरो धागा। खेचर जी के चरन पर नामा सिंपी लागा।—दक्खिनी०, पृ० १८।

सिंब—संज्ञा पुं० [सं० शिम्ब] दे० 'शिंब'।

सिंबा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिम्बा] १. शिंबी धान। शमी धान्य। २. नखी नामक गंध द्रव्य। हट्टविलासिनी। ३. सोंठ। ४. फली। छीमी (को०)। ५. सेम (को०)।

सिंबिजा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिम्बिजा] द्विदल जातीय अन्न [को०]।

सिंबी—संज्ञा स्त्री० [सं० सिम्बी] १. छीमी। फली। २. सेम। निष्पावी। ३. बन मूँग।

सिंभ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शम्भु] दे० 'सिंभु'।

सिंभालू—संज्ञा पुं० [सं० सम्भालू] सिंदुवार। निर्गुंडी।

सिंभु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शम्भु] शिव। शंकर। उ०—धरचो तन वस्त्र सुकोर कुआर। मँडी जनु सिंभु मनम्मथ रार।—पृ० रा०, १४।६१।

सिंमृति†—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] स्मृति ग्रंथ। उ०—गुर मति वेद सिंमृति अभ्यास।—प्राण०, पृ० २२८।

सिंसप—संज्ञा पुं० [सं० शिंशपा] दे० 'शिंशपा'।

सिंसपा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिंशपा] दे० 'शिंशपा'।

सिंसिपा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिंशपा] दे० 'शिंशपा'। उ०—सरो सिंसिपा सीकम की शोभा शुभ झलकी।—श्यामा०, पृ० ३९।

सिंसुपा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिंशपा] १. एक वृक्ष। शिंशपा। सीसम। उ०—जहँ सिंसुपा पुनीत तरु रघुबर किय बिस्राम।—मानस, २।१९८। २. अशोक (को०)।

सिंह—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिंहनी] १. बिल्ली की जाति का सबसे बलवान् पराक्रमी और भव्य जंगली जंतु जिसके नर वर्ग की गरदन पर बड़े बड़े बाल या केसर होते हैं। शेर बबर।

विशेष—यह जंतु अब संसार में बहुत कम स्थानों में रह गया है। भारतवर्ष के जंगलों में किसी समय सर्वत्र सिंह पाए जाते थे, पर अब कहीं नहीं रह गए हैं। केवल गुजरात या काठियावाड़ की ओर कभी कभी दिखाई पड़ जाते हैं। उत्तरी भारत में अंतिम सिंह सन् १८३९ में दिखाई पड़ा था। आजकल सिंह केवल अफ्रिका के जंगलों में मिलते हैं। इस जंतु का पिछला भाग पतला होता है, पर सामने का भाग अत्यंत भव्य और विशाल होता है। इसकी आकृति से विलक्षण तेज टपकता है और इसकी गरज बादल की तरह गूँजती है, इसी से सिंह का गर्जन प्रसिद्ध है। देखने में यह बाघ की अपेक्षा शांत और गंभीर दिखाई पड़ता है और जल्दी क्रोध नहीं करता। रंग इसका ऊँट के रंग का सा और सादा होता है। इसके शरीर पर चित्तियाँ आदि नहीं होतीं। मुँह व्याघ्र की अपेक्षा कुछ लंबोतरा होता है, बिलकुल गोल नहीं होता। पूँछ का आकार भी कुछ भिन्न होता है। यह पतली होती है और उसके छोर पर बालों का गुच्छा सा होता है। सारे धड़ की अपेक्षा इसका सिर और चेहरा बहुत बड़ा होता है जो केसर या बालों के कारण और भी भव्य दिखाई पड़ता है। कवि लोग सदा से वीर या पराक्रमी पुरुष की उपमा सिंह से देते आए हैं। यह जंगल का राजा माना जाता है।

पर्या०—मृगराज। मृगेंद्र। केसरी। पंचानन। हरि। पंचास्य।

२. ज्योतिष में मेष आदि बारह राशियों में से पाँचवीं राशि।

विशेष—इस राशि के अंतर्गत मघा, पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी के प्रथम पाद पड़ते हैं। इसका देवता सिंह और वर्ण पीतधूम्र माना गया है। फलित ज्योतिष में यह राशि पित्त प्रकृति की, पूर्व दिशा की स्वामिनी, क्रूर और शब्दवाली कही गई है। इस राशि में उत्पन्न होनेवाला मनुष्य क्रोधी, तेज चलनेवाला, बहुत बोलनेवाला, हँसमुख, चंचल और मत्स्यप्रिय बतलाया गया है।

३. वीरता या श्रेष्ठतावाचक शब्द। जैसे,—पुरुष सिंह। ४. छप्पय छंद का सोलहवाँ भेद जिसमें ५५ गुरु, ४२ लघु कुल ९७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ५. वास्तुविद्या में प्रासाद का एक भेद जिसमें सिंह की प्रतिमा से भूषित बारह कोने होवे

हैं। ६. रक्त शिग्रु। लाल सहिंजन। ७. एक राग का नाम। ८. वर्तमान अवसर्पिणी के २४ वें अर्हत् का चिह्न जो जैन लोग रथयात्रा आदि के समय झंडों पर बनाते हैं। ९. एक आभूषण जो रथ के बैलों के माथे पर पहनाते हैं। १०. एक कल्पित पक्षी। ११. वेंकट गिरि का एक नाम। १२. कृष्ण के एक पुत्र का नाम (को०)। १३. विद्याधरों का एक राजा (को०)।

सिंहकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] वास्तु की एक विशेष सज्जा। भवन के तोरण आदि पर बना वह ताखा या मुख जो सिंह की आकृति का हो [को०]।

सिंहकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाण चलाने में दाहिने हाथ की एक मुद्रा।

सिंहकर्मा—संज्ञा पुं० [सं० सिंहकर्मन्] सिंह के समान वीरता से काम करनेवाला। वीर पुरुष।

सिंहकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

सिंहकेलि—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसिद्ध बोधिसत्व मंजुश्री का एक नाम।

सिंहकेशर, सिंहकेसर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंह की गरदन के बाल। २. मौलसिरी। बकुल वृक्ष। ३. एक प्रकार की मिठाई। सूत-फेनी। काता।

सिंहग—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सिंहगर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिंहनाद'।

सिंहग्रीव—वि० [सं०] सिंह के समान गर्दनवाला [को०]।

सिंहघोष—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम।

सिंहचित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मषवन। माषपर्णी।

सिंहच्छदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद दूब।

सिंहतल—संज्ञा पुं० [सं०] अंजलि। अँजुरी [को०]।

सिंहताल, सिंहतालाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिंहतल' [को०]।

सिंहतुंड—संज्ञा पुं० [सं० सिंहतुण्ड] १. सेहुँड़। स्नुही। थूहर। २. एक प्रकार की मछली।

सिंहतुंडक—संज्ञा पुं० [सं० सिंहतुण्डक] एक मत्स्य। सिंहतुंड [को०]।

सिंहदंष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का बाण। २. शिव का एक नाम। ३. एक असुर (को०)।

सिंहदर्प—वि० [सं०] सिंह के समान गर्ववाला [को०]।

सिंहद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] प्रासाद का मुख्य द्वार या सदर फाटक जहाँ सिंह की मूर्ति बनी हो। उ०—सिंहद्वार आरती उतारत यशुमति आनँदकंद।—सूर (शब्द०)।

सिंहद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] एक द्वीप का नाम [को०]।

सिंहध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम।

सिंहध्वनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिंह की गर्जना। २. युद्धघोष। रणनाद [को०]।

सिंहनंदन—संज्ञा पुं० [सं० सिंहनन्दन] संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

सिंहनर्दी—वि० [सं० सिंहनर्दिन्] सिंह के समान नाद करनेवाला [को०]।

सिंहनाद—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंह की गरज। २. युद्ध में वीरों की ललकार। युद्धघोष। रणनाद। ३. सत्यता के निश्चय के कारण किसी बात का निःशंक कथन। जोर देकर कहना। ललकार के कहना। ४. एक प्रकार का पक्षी। ५. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, जगण, सगण, सगण और एक गुरु होता है। कलहंस। नंदिनी। उ०—सजि सी सिंगार कलहंस गती सी। चलि आइ राम छवि मंडप दीसी। ६. संगीत में एक ताल। ७. शिव का एक नाम। ८. बौद्ध-सिद्धांतपरक ग्रंथों का पाठ (को०)। ९. एक असुर (को०)। १०. रावण के एक पुत्र का नाम।

सिंहनादक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंघा नामक बाजा। २. सिंह की गरज। सिंहनाद (को०)। ३. युद्धघोष (को०)।

सिंहनाद गुग्गुल—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक यौगिक औषध जिसमें प्रधान योग गुग्गुल का रहता है।

सिंहनादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवासा। धमासा। दुरालभा। हिंगुआ।

सिंहनादी[१]—वि० [सं० सिंहनादिन्] [स्त्री० सिंहनादिनी] सिंह के समान गरजनेवाला।

सिंहनादी[२]—संज्ञा पुं० एक बोधिसत्व का नाम।

सिंहनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिंह की मादा। शेरनी। २. एक छंद का नाम।

विशेष—इसके चारों पदों में क्रम से १२, १८, २० और २२ मात्राएँ होती हैं। अंत में एक गुरु और २०, २० मात्राओं पर १ जगण होता है। इसके उलटे को गाहिनी कहते हैं।

सिंहपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] माषपर्णी।

सिंहपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अडूसा। वासक।

सिंहपिप्पली—संज्ञा स्त्री० [सं०] सैंहली।

सिंहपुच्छ—संज्ञा पुं० [सं० पिठवन] पृश्निपर्णी।

सिंहपुच्छिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सिंहपुष्पी'।

सिंहपुच्छी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चित्रपर्णी। २. जंगली उरद। माष-पर्णी। ३. पृश्निपर्णी। पिठवन (को०)।

सिंहपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक वासुदेव।

सिंहपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पिठवन। पृश्निपर्णी।

सिंहपौर—संज्ञा पुं० [सं० सिंह + हिं० पौर] सिंहद्वार। प्रासाद का सदर फाटक (जिसपर सिंह की मूर्त्ति बनी हो)। उ०—भीर जानि सिंहपौर त्रियन की यशुमति भवन दुराई।—सूर (शब्द०)।

सिंहप्रगर्जन—वि० [सं०] सिंह की तरह गरजनेवाला [को०]।

सिंहप्रगर्जित—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह की गरज। सिंहनाद [को०]।

सिंहप्रणाद—संज्ञा पुं० [सं०] युद्धघोष। रणनाद। ललकार [को०]।

सिंहमल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की धातु या पीतल। पंचलौह।

सिंहमाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिंह की माया। सिंह की आकृति का भ्रम या वहम।

सिंहमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव के एक गण का नाम। २. वह जिसका मुख सिंह के समान हो (को०)।

सिंहमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बाँस। २. अड़ूसा। वासक। ३. बन उरद। जंगली उड़द। ४. खारी मिट्टी। ५. कृष्ण निर्गुंडी। काला सँभालू।

सिंहयाना, सिंहरथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] (सिंह जिसका वाहन हो) दुर्गा।

सिंहरव—संज्ञा पुं० [सं०] सिंहनाद। सिंह का गर्जन।

सिंहल—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक द्वीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है और जिसे लोग रामायणवाली लंका अनुमान करते है।

विशेष—जान पड़ता है कि प्राचीन काल में इस द्वीप में सिंह बहुत पाए जाते थे, इसी से यह नाम पड़ा। रामेश्वर के ठीक दक्षिण पड़ने के कारण लोग सिंहल को ही प्राचीन लंका अनुमान करते हैं। पर सिंहलवासियों के बीच न तो यह नाम ही प्रसिद्ध है और न रावण की कथा ही। सिंहल के दो इतिहास पाली भाषा में लिखे मिलते हैं—महाबंसो और दीपबंसो, जिनसे वहाँ किसी समय यक्षों की बस्ती होने का पता लगता है। रावण के संबंध में यह प्रसिद्ध है कि उसने लंका से अपने भाई यक्षों को निकालकर राक्षसों का राज्य स्थापित किया था। बंग देश के विजय नामक एक राजकुमार का सिंहल विजय करना भी इतिहासों में मिलता है। ऐतिहासिक काल में यह द्वीप स्वर्णभूमि या स्वर्णद्वीप के नाम से प्रसिद्ध था, जहाँ दूर देशों के व्यापारी मोती और मसाले आदि के लिये आते थे। प्राचीन अरब स्वर्ण द्वीप को 'सरनदीब' कहते थे। रत्नपरीक्षा के ग्रंथों में सिंहल द्वीप मोती, मानिक और नीलम के लिये प्रसिद्ध पाया जाता है। भारतवर्ष के कलिंग, ताम्रलिप्ति आदि प्राचीन बंदरगाहों से भारतवासियों के जहाज बराबर सिंहल, सुमात्रा, जावा आदि द्वीपों की ओर जाते थे। गुप्तवंशीय चंद्रगुप्त (सन् ४०० ईसवी) के समय फाहियान नामक जो चीनी यात्री भारतवर्ष में आया था, वह हिंदुओं के ही जहाज पर सिंहल होता हुआ चीन को लौटा था। उस समय भी यह द्वीप स्वर्णद्वीप या सिंहल ही कहलाता था, लंका नहीं। इधर की कहानियों में सिंहलद्वीप पद्मिनी स्त्रियों के लिये प्रसिद्ध है। यह प्रवाद विशेषतः गोरखपंथी साधुओं में प्रसिद्ध है जो सिंहल को एक प्रसिद्ध पीठ मानते हैं। उनमें कथा चली आती है कि गोरखनाथ के गुरु मत्स्येंद्र नाथ (मछंदरनाथ) सिद्ध होने के लिये सिंहल गए, पर पद्मिनियों के जाल में फँस गए। जब गोरखनाथ गए तब उनका उद्धार हुआ। वास्तव में सिंहल के निवासी बिलकुल काले और भद्दे होते हैं। वहाँ इस समय दो जातियाँ बसती हैं—उत्तर की ओर तो तामिल जाति के लोग और दक्षिण की ओर आदिम सिंहली निवास करते हैं।

२. सिंहल द्वीप का निवासी। ३. टीन। रंग। राँगा (को०)। ४. एक धातु पीतल (को०)। ५. छाल। वल्कल (को०)। ६. पीपर। पिप्पली (को०)।

सिंहलक[१]—वि० [सं०] सिंहल संबंधी।

सिंहलक[२]—संज्ञा पुं० १. पीतल। २. दारचीनी। ३. सिंहल द्वीप (को०)।

सिंहलद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] सिंहल नाम का टापू जो भारत के दक्षिण में है। विशेष दे० 'सिंहल'।

सिंहलद्वीपी—वि० [सं० सिंहलद्वीपिन्] १. सिंहल द्वीप में होनेवाला। २. सिंहलद्वीप का निवासी। उ०—कनक हाट सब कुहकुह लीपी। बैठ महाजन सिंहलद्वीपी।—जायसी (शब्द०)।

सिंहलस्थ—वि० [सं०] [स्त्री० सिंहलस्था] सिंहल निवासी।

सिंहलस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] सैंहली। सिंहली पीपल।

सिंहलांगुली—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंहलाङ्गुली] पिठवन। पृश्निपर्णी।

सिंहला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिंहल द्वीप। लंका। २. राँगा। ३. पीतल। ४. छाल। वकला। ५. दारचीनी।

सिंहलास्थान—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ताड़ जो दक्षिण में होता है।

सिंहली[१]—वि० [हिं० सिंहल + ई (प्रत्य०)] १. सिंहल द्वीप का। २. सिंहल द्वीप का निवासी।

विशेष—सिंहली काले और भद्दे होते हैं। वे अधिकांश हीनयान शाखा के बौद्ध हैं। पर बहुत से सिंहली मुसलमान भी हो गए हैं।

सिंहली[२]—संज्ञा स्त्री० १. सिंहली पीपल। २. सिंहल की बोली या भाषा (को०)।

सिंहली पीपल—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंहपिप्पली] एक लता जिसके बीज दवा के काम में आते हैं।

विशेष—यह सिंहल द्वीप के पहाड़ों पर उत्पन्न होती है। इसका रंग और रूप साँप के समान होता है और बीज लंबे होते हैं। यह चरपरी गरम तथा कृमि रोग, कफ, श्वास और वात की पीड़ा को दूर करनेवाली कही गई है।

सिंहलील—संज्ञा पुं० [सं०] १. संगीत में एक ताल। २. कामशास्त्र में एक रतिबंध।

सिंहवक्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह का मुख। २. एक राक्षस का नाम। ३. एक नगर (को०)।

सिंहवत्स—संज्ञा पुं० [सं०] एक नाग का नाम (को०)।

सिंहवदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अड़ूसा। २. माषपर्णी। बनउड़दी। ३. खारी मिट्टी।

सिंहवल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अड़ूसा।

सिंहवाह—वि० [सं०] जो सिंह पर सवार हो।

सिंहवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंह पर चढ़ने या सवारी करनेवाला। २. शिव का एक नाम (को०)।

सिंहवाहना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा देवी।

सिंहवाहिनी[१]—वि० स्त्री० [सं०] सिंह पर चढ़नेवाली। उ०—सकल सिंगार करि सोहे आजु सिंहोदरी सिंहासन बैठी सिंहवाहिनी भवानी सी।—देव (शब्द०)।

सिंहवाहिनी[२]—संज्ञा स्त्री॰ दुर्गादेवी जिनका वाहन सिंह है। उ॰—रूप रस एवी महादेवी देवदेवन की सिंहासन बैठी सौं हैं सोहैं सिंहवाहिनी।—देव (शब्द॰)।

सिंहवाही—वि॰ पुं॰ [सं॰ सिंहवाहिन्] दे॰ 'सिंहवाह'।

सिंहविक्रम—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. घोड़ा। २. संगीत में एक ताल। ३. चंद्रगुप्त नरेश का एक नाम (को॰)। ४. एक विद्याधर राज (को॰)।

सिंहविक्रांत[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सिंहविक्रान्त] १. सिंह की चाल। २. अश्व। घोड़ा। ३. दो नगण और सात या सात से अधिक यगणों के दंडक का एक नाम।

सिंहविक्रांत[२]—वि॰ सिंह के समान पराक्रमवाला [को॰]।

यौ॰—सिंहविक्रांत गति = सिंह के समान गमन करनेवाला। सिंहविक्रांतगामिता, सिंहविक्रांतगामी = दे॰ 'सिंहविक्रांतगति'।

सिंहविक्रांतगामिता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सिंहविक्रान्तगामिता] बुद्ध के अस्सी अनुव्यंजनों (छोटे लक्षणों) में से एक।

सिंहविक्रीड़—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सिंहविक्रीड] दंडक का एक भेद जिसमें ६ से अधिक यगण होते हैं।

सिंहविक्रीड़ित—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सिंहविक्रीडित] १. संगीत में एक ताल। २. एक प्रकार की समाधि। ३. एक बोधिसत्व का नाम। ४. एक छंद का नाम।

सिंहविजृंभित—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सिंहविजृम्भित] एक प्रकार की समाधि (बौद्ध)।

सिंहविन्ना—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] माषपर्णी।

सिंहविष्कंभित—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सिंहविष्कम्भित] एक प्रकार की समाधि [को॰]।

सिंहविष्टर—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सिंहासन [को॰]।

सिंहवृंता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सिंहवृन्ता] बन उड़दी। माषपर्णी।

सिंहशाव, सिंहशावक, सिंहशिशु—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सिंह का शिशु या छौना [को॰]।

सिंहसंहनन[१]—वि॰ [सं॰] १ सिंह के समान शक्ति या बलयुक्त। २. सुंदर। सुरूप। रूपवान [को॰]।

सिंह संहनन[२]—संज्ञा पुं॰ सिंह का हनन [को॰]।

सिंहसावक(पु)—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सिंह का बच्चा। उ॰—सिंहसावक ज्यौं तजै गृह, इंद्र आदि डेरात।—सूर॰, १।१०६।

सिंहस्कंध—वि॰ [सं॰ सिंहस्कन्ध] सिंह के समान कंधोंवाला [को॰]।

सिंहस्थ—वि॰ [सं॰] १. सिंह राशि में स्थित (बृहस्पति)। २. एक पर्व जो बृहस्पति के सिंह राशि में होने पर होता है।

विशेष—सिंहस्थ बृहस्पति में विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित हैं।

सिंहस्था—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] दुर्गा।

सिंहहनु[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सिंह के समान दाढ़ या दाढ़ की हड्डी जो कि बुद्ध के बत्तीस प्रधान लक्षणों में से एक है।

सिंहहनु[२]—वि॰ जिसकी दाढ़ सिंह के समान हो।

सिंहहनु[३]—संज्ञा पुं॰ गौतम बुद्ध के पितामह का नाम।

सिंहा[१]—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. नाड़ी शाक। करेमू। २. भटकटैया। कटाई। कंटकारी। ३. बृहती। बनभंटा। ४. नाड़ी (को॰)।

सिंहा[२]—संज्ञा पुं॰ १. नाग देवता। २. सिंह लग्न। ३. वह समय जब तक सूर्य इस लग्न में रहता है।

सिंहाचल—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक पर्वत [को॰]।

सिंहाटक—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शृङ्गाटक] चतुष्पथ। चौराहा। उ॰—और बनारस के बाहर सिंहाटक (चौराहे) पर मृगमांस बिकने का उल्लेख है।—हिंदु॰ सभ्यता, पृ॰, २९९।

सिंहाढ्य—वि॰ [सं॰] सिंहों से संकुल या भरा हुआ [को॰]।

सिंहाण—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. नाक का मल। नकटी। रेंट। २. लोहे का मुरचा। जंग।

सिंहाणक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. नाक का मल। नकटी। रेंट। २. लोहे का मुरचा। जंग (को॰)।

सिंहान—संज्ञा पुं॰ [सं॰] दे॰ 'सिंहाण'।

सिंहानक—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सिंहाणक] दे॰ 'सिंहाणक'।

सिंहानन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. कृष्ण निर्गुंडी। काला सँभालू। २. वासक। अडूसा।

सिंहारहार(पु)—संज्ञा पुं॰ [सं॰ हार + शृङ्गार] दे॰ हरसिंगार [को॰]।

सिंहाली—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सिंहली पीपल।

सिंहावलोक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक प्रकार का वृत्त। दे॰ 'सिंहावलोकन'—३।

सिंहावलोकन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २. आगे बढ़ने के पहले पिछली बातों का संक्षेप में कथन। ३. पद्यरचना की एक युक्ति जिसमें पिछले चरण के अंत के कुछ शब्द या वाक्य लेकर अगला चरण चलता है। उ॰—गाय गोरी सोहनी सुराग बाँसुरी के बीच कानन सुहाय मार मंत्र को सुनायगो। नायगो री नेह डोरी मेरे गर में फँसाय हिरदै थल बीच चाय वेलि को बँधायगो।—दीनदयाल (शब्द॰)।

सिंहावलोकित—संज्ञा पुं॰ [सं॰] दे॰ 'सिंहावलोकन'।

सिंहासन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. राजा या देवता के बैठने का आसन या चौकी।

विशेष—यह प्रायः काठ, सोने, चाँदी, पीतल आदि का बना होता है। इसके हत्थों पर सिंह का आकार बना होता है।

२. कमल के पत्ते के आकार का बना हुआ देवताओं का आसन। ३. सोलह रतिबंधों के अंतर्गत चौदहवाँ बंध। ४. मंडूर। लौहकिट्ट। ५. दोनो भौंहों के बीच में बैठकी के आकार का चंदन या रोली का तिलक।

सिंहासनचक्र—संज्ञा पुं॰ [सं॰] फलित ज्योतिष में मनुष्य के आकार का सत्ताइस कोठों का एक चक्र जिसमें नक्षत्रों के नाम भरे रहते हैं।

सिंहासनत्रय—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष का एक चक्र [को०]।

सिंहासनच्युत, सिंहासनभ्रष्ट—वि० [सं०] सिंहासन से हटाया हुआ। राज्यच्युत [को०]।

सिंहासनयुद्ध, सिंहासनरण—संज्ञा पुं० [सं०] राज्यसिंहासन की प्राप्ति के लिये होनेवाला संग्राम।

सिंहासनस्थ—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सिंहासनस्था] सिंहासन पर स्थित। सिंहासन पर आसीन [को०]।

सिंहास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र [को०]।

सिंहास्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वासक। अडूसा। २. कोविदार। कचनार। ३. एक प्रकार की बड़ी मछली। ४ हाथों की एक विशिष्ट मुद्रा (को०)।

सिंहास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] अडूसा [को०]।

सिंहिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक राक्षसी जो राहु की माता थी। उ०—जलधि लंघन सिंह सिंहिका मद मथन, रजनिचर नगर उत्पात केतू।—तुलसी (शब्द०)। (ख) ललित श्रीगोपाल लोचन स्याम शोभा दून। मनु मयंकहि अंक दीन्ही सिंहिका के सून।—सूर (शब्द०)।

विशेष—यह राक्षसी दक्षिण समुद्र में रहकर उड़ते हुए जीवों की परछाईं देखकर ही उनको खींचकर खाती थी। इसको लंका जाते समय हनुमान ने मारा था।

यौ०—सिंहिकाचित्तनंदन, सिंहिकातनय, सिंहिकापुत्र, सिंहिकासुत = सिंहिका का पुत्र, राहु।

२. शोभन छंद का एक नाम। इसके प्रत्येक पद में १४, १० के विराम से २४ मात्राएँ और अंत में जगण होता है। ३. दाक्षायणी देवी का एक रूप। ४. टेढे घुटनों की कन्या जो विवाह के अयोग्य कही गई है। ५. अडूसा। ६. बनभंटा। ७. कंटकारी।

सिंहिकासूनु—संज्ञा पुं० [सं०] सिंहिका का पुत्र, राहु।

सिंहिकेय—संज्ञा पुं० [सं०] (सिंहिका का पुत्र) राहु।

सिंहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सिंहनी] मादा सिंह। शेरनी। उ०—श्वान संग सिंहिनी रति अजगुत बेद विरुद्ध असुर करै आइ। सूरदास प्रभु बेगि न आवहु प्राण गए कहा लैहौ आइ।—सूर (शब्द०)। २. बौद्धों के अनुसार एक देवी (को०)।

सिंही—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिंह की मादा। शेरनी। उ०—सिंही की गोद से छीनता है शिशु कौन?—अपरा, पृ० १०। २. अडूसा। ३. स्नुही। थूहर। ४. मुद्गपर्णी। ५. चंद्रशेखर के मत से आर्या का पचीसवाँ भेद। इसमें ३ गुरु और ५१ लघु होते हैं। ६. बृहती लता। ७. सिंघा नाम का बाजा। ८. पीली कौड़ी। ९. धमनी। नस। नाड़ी (को०)। १०. नाड़ी-शाक। करेमू। ११. राहु की माता सिंहिका।

सिंहीलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बैगन। भंटा।

सिंहेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

सिंहोड़—संज्ञा पुं० [सं० सेहुण्ड] दे० 'सेहुड़' या 'थूहर'।

सिंहोदरी—वि० स्त्री० [सं०] सिंह के समान पतली कमरवाली। उ०—सकल सिंगार करि सोहै आजु सिंहोदरी सिंहासन बैठी सिंह-वाहिनी भवानी सी।—देव० (शब्द०)।

सिंहोद्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सिंहोन्नता' [को०]।

सिंहोन्नता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वसंततिलका वृत्त का दूसरा नाम। उ०—इसकी अन्य संज्ञाएँ उद्धर्षिणी, सिंहोन्नता, वसंततिलक प्रभृति हैं। छंद:०, पृ० १९५।

सिअनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सीवन, प्रा० सीवण, हिं० सीवन, सीअन] सिलाई। उ०—तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे। सिअनि सोहावनि टाट पटोरे।—मानस, १।१४।

सिअर(पु)†—वि० [सं० शीतल] दे० 'सिअरा'। उ०—मेलेसि चंदन मकु खिनु जागा। अधिकौ सूत सिअर तन लागा।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० २५२।

सिअरा(पु)[१]—वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअड] ठंडा। शीतल। उ०—सिअरे बदन सूखि गए कैसे। परसत तुहिन ताम रस जैसे।—तुलसी (शब्द०)।

सिअरा[२]—संज्ञा पुं० [सं० छाया, फ़ा० सायह्] छाहँ। उ०—सिरसि टेपारो लाल नीरज नयन बिसाल सुंदर बदन ठाढ़े सुर तरु सिअरे।—तुलसी (शब्द०)।

सिअरा†[३]—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल, प्रा० सिआड़] दे० 'सियार'।

सिआना—क्रि० स० [सं० सीव] दे० 'सिलाना'।

सिआमग—संज्ञा पुं० [सं० श्यामाङ्ग (= काले शरीरवाला)] सुमात्रा द्वीप में पाया जानेवाला एक प्रकार का बंदर।

सिआर—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल, प्रा० सिआल] [स्त्री० सिआरी] शृगाल। गीदड़। उ०—भयो चलत असगुन अति भारी। रबि के आछत फेकर सिआरी।—सबल सिंह (शब्द०)।

सिउरना‡—क्रि० स० [देश०] छाजन के लिये मुट्ठों को काँड़ियों पर बिछाकर रस्सी से बाँधना।

सिकंजबीन—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सिकंजबीन] सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शरबत।

विशेष—यह शर्बत ठंढा होता है और दवा के काम आता है। गर्मी के दिनों में ठंढक के लिये लोग इसे पीते हैं। यह सफरा और बलगम के लिये हितकर कहा गया है।

सिकंजा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शिकंजह्] दे० 'शिकंजा'।

सिकंदर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] यूनान का एक प्रसिद्ध और प्रतापी नरेश जो मकदूनियाँ के राजा फिलिप्स (फैलकूस या फैलक्स) का पुत्र और अरस्तू का शागिर्द था। मिस्र, ईरान, अफगानिस्तान जय करता हुआ यह हिंदुस्तान तक आया था और इसने तक्षशिला और सिंध का कुछ अंश भी जीत लिया था।

सिकंदरा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिकंदरा] रेल की लाइन के किनारे ऊँचे खंभे पर लगा हुआ हाथ या डंडा जो आती हुई गाड़ी की सूचना देता है। सिगनल।

विशेष—कथा प्रसिद्ध है कि सिकंदर बादशाह जब सारी दुनिया जीतकर समुद्र पर भ्रमण करने गया, तब बड़वानल के पास

पहुँचा। वहीं उसने जहाजियों को सावधान करने के लिये खंभे के ऊपर एक हिलता हुआ हाथ लगवा दिया जो उधर जानेवाले यात्रियों को बराबर मना करता रहता है और 'सिकंदरी भुजा' कहलाता है। इसी कहानी के अनुसार लोग सिगनल को भी 'सिकंदरा' कहने लगे।

सिकंदरी[1]—वि० [फ़ा०] सिकंदर का। सिकंदर संबंधी।

सिकंदरी[2]—संज्ञा स्त्री० घोड़े की ठोकर [को०]।

सिकटा†—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० सिकटी] खपड़े या मिट्टी के टूटे बरतनों का छोटा टुकड़ा।

सिकटी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] छोटी कंकड़ी या टुकड़ी।

सिकड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] १. किवाड़ की कुंडी। साँकल। जंजीर। २. जंजीर के आकार का सोने का गले में पहनने का गहना। ३. करधनी। तागड़ी। ४. चारपाई में लगी हुई वह दाँवनी जो एक दूसरी में गूँथ कर लगाई जाती है।

सिकड़ी पनवाँ†— संज्ञा पुं० [हिं० सिकड़ी + पान] गले में पहनने की वह सिकड़ी जिसके बीच में पान सी चौकी होती है।

सिकतⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सिकता] सिकता। रेत।

सिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बालू। रेत। उ०—बारि मथे घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल। बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल। तुलसी (शब्द०)। २. बलुई जमीन। ३. प्रमेह का एक भेद। अश्मरी। पथरी। ४. चीनी। शर्करा। ५. लोणिका या लोनी नामक शाक।

यौ०—सिकताप्राय रेतीला तट। सिकतामय = १) रेतीला तट। (२) रेतीला टापू। (३) रेतीला। सिकतामेह। सिकतावर्त्म। सिकता सेतु = बालू का बना बाँध।

सिकतामेह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का प्रमेह जिसमें पेशाब के साथ बालू के से कण निकलते हैं।

सिकतावर्त्म—संज्ञा पुं० [सं० सिकतावर्त्मन्] आँख की पलकों का एक रोग।

सिकतावान्—वि० [सं० सिकतावत्] रेतीला। सिकतामय [को०]।

सिकतिल—संज्ञा स्त्री० [सं०] रेतीला।

सिकतोत्तर—वि० [सं०] रेतीभरा। बालुकामय। सिकतिल [को०]।

सिकत्तर†—संज्ञा पुं० [अं० सेक्रेटरी] किसी संस्था या सभा का मंत्री। सेक्रेटरी।

सिकरⓅ[1]—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] गीदड़। सियार।

सिकरⓅ[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीकड़] जंजीर। सिकड़ी।

सिकरवार—संज्ञा पुं० [देश०] क्षत्रियों की एक शाखा। उ०—वीर बड़गूजर जसाउत सिकरवार, होत असवार जे करत निरवार हैं।—सूदन (शब्द०)।

सिकरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिकड़ी] दे० 'सिकड़ी'।

सिकली—संज्ञा स्त्री० [अ० सैक़ल] धारदार हथियारों को माँजने और उनपर सान चढ़ाने की क्रिया। उ०—सकल कबीरा बोलै बीरा अजहूँ हो हुसियारा। कह कबीर गुरु सिकली दरपन हरदम करौ पुकारा।—कबीर (शब्द०)।

सिकलीगढ़—संज्ञा पुं० [हिं० सिकली + फ़ा० गर] दे० 'शिकलीगर'। उ०— बढ़ई संगतरास बिसाती। सिकलीगढ़ कहार की पाती। —गिरधरदास (शब्द०)।

सिकलीगर—संज्ञा पुं० [अ० सैकल + फ़ा० गर] तलवार और छुरी आदि पर बाढ़ रखनेवाला। सान धरनेवाला। चमक देनेवाला। उ०—यों छबि पावत है लखौ अंजन आँजे नैन। सरस बाढ़ सैफन धरी जनु सिकलीगर मैन।—रसनिधि (शब्द०)।

सिकसोनी संज्ञा स्त्री० [देश०] काक जंघा।

सिकहर, सिकहरा—संज्ञा पुं० [सं० शिक्य + धर] छींका। झींका। सींका।

सिकहुती, सिकहुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींक + औती या औली (प्रत्य०)] मूँज, कास आदि की बनी छोटी डलिया।

सिकाकोल—संज्ञा स्त्री० [देश०] दक्षिण की एक नदी।

सिकार‡—संज्ञा पुं० [फ़ा० शिकार] दे० 'शिकार'। उ०—(क) कंपहिं सिकार गज तुंड डर सब विघंन गनपति हरय। —पृ० रा०, ६।९८। (ख) खिल्लत सिकार पिथ कुँअर डर पशु पींपर दल थरहरै।—पृ० रा०, ६।१००।

सिकारी—वि०, संज्ञा पुं० [फ़ा० शिकारी] दे० 'शिकारी'। उ०—मारत खोज सिकार सिकारी जे अति चातुर।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २६।

सिकिलिⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिकली] दे० 'सिकली'। उ०—गुरू के भेद को पाइ कै सिकिलि करु।—पलटू०, पृ० १६।

सिकुड़न—संज्ञा स्त्री० [सं० सङ्कुचन, अथवा प्रा० संकुड, संकुडिअ] १. दूर तक फैली हुई वस्तु का सिमटकर थोड़े स्थान में होना। संकोच। आकुंचन। २. वस्तु के सिमटने से पड़ा हुआ चिह्न। बल। शिकन सिलवट।

सिकुड़ना—क्रि० अ० [सं० सङ्कुचन] १. दूर तक फैली वस्तु का सिमटकर थोड़े स्थान में होना। सुकड़ना। आकुंचित होना। बटुरना। २. संकीर्ण होना। तंग होना। ३. बल पड़ना। शिकन पड़ना।

संयो० क्रि०—जाना।

सिकुरनाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० सिकुड़ना] दे० 'सिकुड़ना'।

सिकोड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिकुड़ना] दे० 'सिकुड़ना'। उ०—वृद्ध अनुभव की सिकोड़। वृथा मुझे सांत्वना मत दो।—ग्रंथि, पृ० ८४।

सिकोड़ना—क्रि० स० [हिं० सिकुड़ना] १. दूर तक फैली हुई वस्तु को समेट कर थोड़े स्थान में करना। संकुचित करना। २. समेटना। बटोरना। ३ संकीर्ण करना। तंग करना।

संयो० क्रि०—देना।

सिकोरनाⓅ†—क्रि० स० [हिं० सिकोड़ना] दे० 'सिकोड़ना'। उ०—सुनि अघ नरकहु नाक सिकोरी।—तुलसी (शब्द०)।

सिकोरा संज्ञा पुं० [हिं० कसोरा] दे० 'सकोरा या 'कसोरा'।

सिकोली—संज्ञा स्त्री० [देश०] बाँस के फट्टों, कास, मूँज, बेंत आदि की बनी डलिया। उ०—प्रसादी जल की मथनी में भारी ठलाय,

सिकोली में बीड़ा ठलाय, कसेंड़ी में चरणामृत ठलाय, पाछें पात्र सब धोय साजि के ठिकाने धरिए।—वल्लभ पु० (शब्द०)।

सिकोही—वि० [फ़ा० शिकोह (तड़क भड़क)] १. ग्रानबानवाला। गर्वीला। दर्पवाला। २. बीर। बहादुर। उ०—तरवार सिरोही सोहती। लाख सिकोही कोहती।—गोपाल (शब्द०)।

सिक्कक—संज्ञा पुं० [सं०] बाँसुरी में लगाने की जीभी या उसके स्वर को मधुर बनाने के लिये लगाया हुग्रा तार।

सिक्कड़—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्खल] दे० 'सीकड़'।

सिक्कर—संज्ञा पुं० [हिं० सीकड़] दे० 'सीकड़'। उ०—ग्रकरि ग्रकरि करि डकरि डकरि वर पकरि पर्करि कर सिक्कर फिरावते। —गोपाल (शब्द०)।

सिक्का—संज्ञा पुं० [ग्र० सिक्कह्] १. मुहर। मुद्रा। छाप। ठप्पा। २. रुपए, पैसे ग्रादि पर की राजकीय छाप। मुद्रित चिह्न। ३. राज्य के चिह्न ग्रादि से ग्रंकित धातु खंड जिसका व्यवहार देश के लेन देन में हो। टकसाल में ढला हुग्रा धातु का टुकड़ा जो निर्दिष्ट मूल्य का धन माना जाता है। रुपया, पैसा, ग्रशरफी ग्रादि। मुद्रा।

मुहा०—सिक्का बैठना या जमना = (१) ग्रधिकार स्थापित होना। प्रभुत्व होना। (२) ग्रातंक जमना। प्रधानता प्राप्त होना। रोब जमना। धाक जमना। सिक्का बैठाना या जमाना = (१) ग्रधिकार स्थापित करना। प्रभुत्व जमाना। (२) ग्रातंक जमाना। प्रधानता प्राप्त करना। रोब जमाना। सिक्का पड़ना = सिक्का ढलना।

४. पदक। तमगा। ५. माल का वह दाम जिसमें दलाली न शामिल हो। (दलाल)। ६. मुहर पर ग्रंक बनाने का ठप्पा। ७. नाव के मुँह पर लगी एक हाथ लंबी लकड़ी। ८. लोहे की गावदुम पतली नली जिससे जलती हुई मशाल पर तेल टपकाते हैं। ९. वह धन जो लड़की का पिता लड़के के पिता के पास सगाई पक्की होने के लिये भेजता है।

सिक्की—संज्ञा स्त्री० [ग्र० सिक्कह्] १. छोटा सिक्का। २. चार ग्राने (२५ पैसे) का सिक्का। चवन्नी। सूकी। ३. ग्राठ ग्राने (पचास पैसे) का सिक्का। ग्रठन्नी।

सिक्ख[१]—संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] दे० 'सिख[३]'।

सिक्ख[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा, प्रा० सिक्खा, हिं० सीख] दे० 'सिख[१]'। उ०—दिन्नी जु सिक्ख तव सेख कौं, ग्रप्प ग्रप्प सिबरन गवय। —ह० रासो, पृ० ४३।

सिक्त—वि० [सं०] १. सिंचित। सींचा हुग्रा। २. भींगा हुग्रा। तर। गीला। ३. जिसे गर्भयुक्त किया गया हो। गर्भित (को०)।

सिक्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिंचित होने या सींचे जाने की क्रिया या भाव [को०]।

सिक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सींचने की क्रिया। २. उद्गारण। स्राव। निषेक। निषेचन (को०)।

सिक्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. उबाले हुए चावल का दाना। भात का एक दाना। सीथ। २. भात का ग्रास या पिंड। ३. मोम। ४. मोतियों का गुच्छा (जो तौल में एक धरण हो)। ३२ रत्ती तौल का मोतियों का समूह। ५. नील।

सिक्थक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिक्थ'।

सिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिक्य' [को०]।

सिक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्फटिक। काँच। बिल्लौर [को०]।

सिखंड—संज्ञा पुं० [सं० शिखण्ड] मोर की पूँछ। मयूरपक्ष। उ०—सिरनि सिखंड सुमन दल मंडन बाल सुभाय बनाए।—तुलसी (शब्द०)।

सिखंडी—संज्ञा पुं० [सं० शिखण्डी] दे० 'शिखंडी'।

सिख[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा, प्रा० सिक्खा, हिं० सीख] सीख। शिक्षा। उपदेश। उ०—(क) गुरु सिख देइ राय पहिं गएऊ। —मानस, २।१०। (ख) राजा जु सों कहा कहौं ऐसिन की सुनै सिख, साँपिनि सहित विष रहित फननि की।—केशव (शब्द०)। (ग) किती न गोकुल कुल बधू, काहि न किहि सिख दीन। कौने तजी न कुल गली ह्वै मुरली सुर लीन।—बिहारी (शब्द०)।

सिख(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] चोटी। जैसे,—नखसिख।

सिख[३]—संज्ञा पुं० [सं० शिष्य, प्रा० सिक्ख] १. शिष्य। चेला। २. गुरु नानक तथा गुरु गोविंदसिंह ग्रादि दस गुरुग्रों का ग्रनुयायी संप्रदाय। नानकपंथी। ३. वह जो सिख संप्रदाय का ग्रनुयायी हो।

विशेष—इस संप्रदाय के लोग ग्रधिकतर पंजाब में हैं।

यौ०—सिखपाल = शिष्य का पालन। उ०—गुरु है दीनदयाल करै सिखपाल सदाई। ग्रवै भक्ति परसंग सदा सेवक सुखदाई। —राम० धर्म०, पृ० १७५।

सिख इमलो—संज्ञा पुं० [हिं० सिख + ग्र० इल्म या इमला] भालू को नचाना सिखाने की रीति।

विशेष—कलंदर लोग पहले हाथ में एक लोहे की चूड़ी पहनते हैं ग्रौर उसे एक लकड़ी से बजाते हैं। इसी के इशारे पर वे भालू को नचाना सिखाते हैं।

सिखना†—क्रि० स० [सं० शिक्षण] दे० 'सीखना'।

सिखर[१]—संज्ञा पुं० [सं० शिखर] १. शृंग। दे० 'शिखर'। उ०—ग्ररुन ग्रधर दसननि दुति निरखत, बिद्रुम सिखर लजाने। सूर स्याम ग्राछौ वपु काछे, पटतर मेटि बिराने।—सूर०, १०।१७५६। २. मुकुट का किरीट।

सिखर[२]—संज्ञा पुं० [सं० शिक्य + धर] दे० 'सिकहर'।

सिखरन—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रीखण्ड] दही मिला हुग्रा चीनी का शरबत जिसमें केसर, गरी ग्रादि मसाले पड़े हों। उ०—(क) बासौंधी सिखरन ग्रति सोभी। मिलै मिरच मेटत चकचौंधी।—सूर (शब्द०)। (ख) सिखरन सौध छनाई काढ़ी। जामा दही दूधि सों साढ़ी।—जायसी (शब्द०)।

सिखरबंद—वि० [सं० शिखर + फ़ा० बंद (प्रत्य०)] शिखरयुक्त। कलशयुक्त। उ०—तब थोरी सी दूरि एक सिखरबंध एक देहरा दीस्यो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १७८।

सिखरीⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शिखरिन्] १. पहाड़ ।—अनेकार्थ०, पृ० ५३ । २. मयूर । मोर ।

सिखराना—क्रि० स० [हिं० सिखाना] दे० 'सिखाना' ।

सिखवन—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षण, प्रा० सिक्खवण, सिक्खावण] शिक्षा । सीख । उ०—जो सिखवन समरथ का लेहो । ता कोल हमार आगे करि देहो ।—कबीर सा०, पृ० ६२८ ।

सिखवनाⓅ†—क्रि० स० [प्रा० सिक्खवण] दे० 'सिखाना' ।

सिखा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] दे० 'शिखा' ।

सिखाना—क्रि० स० [सं० शिक्षण] १. शिक्षा देना । उपदेश देना । बतलाना । २. अध्ययन करना । पढ़ाना । ३. धमकाना । दंड देना । ताड़न करना ।

यौ०—सिखाना पढ़ाना = चालें बताना । चालाकी सिखाना । जैसे,—उसने गवाहों को सिखा पढ़ा कर खूब पक्का कर दिया है ।

सिखापनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा + हिं० पन या सं० शिक्षापयन] १. शिक्षा । उपदेश । उ०—(क) साजि कै सिँगार ससिमुखी काज सजनी वै ल्याई केलि मंदिर सिखापन निधानै सी । —प्रतापनारायण (शब्द०) । (ख) सचिव सिखापन मधुर सुनायौ । जुहित सदहुँ परनाम सुहायौ ।—पद्माकर (शब्द०) । २. सिखाने का काम ।

सिखावन—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षण या सं० शिक्षापयन] सीख । शिक्षा । उपदेश । उ०—(क) का मैं मरन सिखावन सिखी । आयो मरैं मीच हति लिखी ।—जायसी (शब्द०) । (ख) उनको मैं यह दीन्ह सिखावन । थाहहु मध्यम कांड सुहावन ।—विश्राम (शब्द०) ।

सिखावनाⓅ†—क्रि० स० [सं० शिक्षापयन] दे० 'सिखाना' ।

सिखिरⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० शिखर] १. दे० 'शिखर' । २. पारस-नाथ पहाड़ जो जैनों का तीर्थ है ।

सिखी—संज्ञा पुं० [सं० शिखिन्] दे० 'शिखी' । उ०—(क) धुनि सुनि उतै लिखी नाचै, सिखी नाचै इते, पी करैं पपीहा उतै इते प्यारी सी करैं ।—प्रतापनारायण (शब्द०) । (ख) सिखी सिखर तनु धातु बिराजति सुमन सुगंध प्रवाल ।—सूर (शब्द०) ।

सिगता†—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिकता । बालू । रेत ।

सिगनल—संज्ञा पुं० [अं०] १. दे० 'सिकंदरा' । २. इशारा । संकेत ।

सिगर—संज्ञा पुं० [अ० सिग्र] बाल्यावस्था । बचपन ।

यौ०—सिगरसिन = छोटो उम्र का । सिगरसिनी = शिशुता । बचपन । छोटाई ।

सिगराⓅ†[१]—वि० [सं० समग्र] [वि० स्त्री० सिगरी] सब । संपूर्ण । सारा । उ०—(क) त्यों पदमाकर साँझही ते सिगरी निशि केलि कला परगासी ।—पद्माकर (शब्द०) । (ख) सिगरे जग माँझ हँसावत हैं । रघुबंसिन्ह पाप नसावत हैं ।—केशव (शब्द०) ।

सिगराⓅ†[२]—संज्ञा पुं० [सं० सगुरु] सगुरा । दीक्षित । उ०—अरे हाँ रे पलटू निगरा सिगरा आहि कहो कोइ रोगी भोगी ।—पलटू०, पृ० ७६ ।

सिगरेट—संज्ञा पुं० [अं०] तंबाकू भरी हुई कागज की बत्ती जिसका धुआँ लोग पीते हैं । छोटा सिगार ।

सिगरो, सिगरौⓅ†—वि० [सं० समग्र] दे० 'सिगरा' । उ०—(क) सिगरोई दूध पियो मेरे मोहन बलहिं न देयहु बाटी । सूरदास नँद लेहु दोहनी दुहहु लाल की नाटी ।—सूर (शब्द०) । (ख) कुल मंडन छत्रसाल बुँदेला । आपु गुरू सिगरौ जग चेला । —लाल कवि (शब्द०) ।

सिगा—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सेहगाह] संगीत में चौबीस शोभाओं में से एक ।

सिगार—संज्ञा पुं० [अं०] चुरुट ।

सिगिनल†—संज्ञा [अं० सिगनल] दे० 'सिकंदरा', 'सिगनल' । उ०—एक छोटा सा टुकड़ा बादल का भी सिगिनल सा झुका दिखाई देता है ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १० ।

सिगोती—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी चिड़िया ।

सिगोन—संज्ञा स्त्री० [सं० सिगता, सिकता] नालों के पास पाई जाने-वाली लाल रेत मिली मिट्टी ।

सिचय—संज्ञा पुं० [सं०] १. कपड़ा । परिधान । पोशाक । वस्त्र । २. फटा पुराना कपड़ा । चीथड़ा [को०] ।

सिचानⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सञ्चान] बाज पक्षी ।—उ० निति संसौ हँसौ बचतु, मानौ इहि अनुमान । बिरह अगनि लपटिन सकै, झपट न मीच सिचान ।—बिहारी (शब्द०) ।

सिचानाⓅ—क्रि० स० [सं० सिञ्चन] सिँचाना । सिंचित कराना । उ०—नारि सहित मुनिपद सिर नावा । चरन सलिल सब भवन सिचावा ।—मानस, २।६६ ।

सिच्छकⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षक] शिक्षा देनेवाला । गुरु । उ०—आवत दूर दूर सों सिच्छक गुनी सिँगारी ।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३० । २. शास्ति करनेवाला । दंड देनेवाला (को०) ।

सिच्छनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षण] पढ़ाना । अध्यापन । उ०—बहुदर्शी बहुतै जानत नीको सिच्छन बिधि ।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २० ।

सिच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा] दे० 'शिक्षा' । उ०—सैन बैन सब साथ है मन में सिच्छा भाव । तिल आपन शृंगार रस सकल रसन को राव ।—मुबारक (शब्द०) ।

सिच्छितⓅ—वि० पुं० [सं० शिक्षित] दे० 'शिक्षित' । उ०—भारत के भुज बल जग रक्षित । भारत विद्या लहि जग सिच्छित ।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ४६१ ।

सिजदा—संज्ञा पुं० [अ० सिज्दह्] प्रणाम । दंडवत । माथा टेकना । सिर झुकाना । (मुसल०) । उ०—सिजदा सिरजनहार कौं मुरशिद कौं ताजीम ।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० २८६ ।

सिजदागाह—संज्ञा पुं० [अ० सिज्दा + फ़ा० गाह] पूजा का स्थल । प्रार्थनागृह ।

सिजरा†—संज्ञा पुं० [अ० शज्रह्] वंशवृक्ष। वंशावली। कुर्सीनामा। उ०—कहि अंतर सिजरा लिखि दीन्हा। कहि जादू कहि भैंरो कीन्हा।—संत० दरिया, पृ० ५५।

सिजल—वि० [हिं० सजीला] जो देखने में अच्छा लगे। सुंदर।

सिजली—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम में आता है।

सिजादर—संज्ञा पुं० [लश०] पाल के चौखूंटे किनारे से बँधा हुआ रस्सा, जिसके सहारे पाल चढ़ाया जाता है।

सिज्या†—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या, प्रा० सिज्जा] दे० 'शय्या', 'सेज'। उ०—कोऊ सिज्या सम्हारत है।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ३३।

यौ०—सिज्या भोग = वह भोग जो भगवान् को शयन कराने के उपरांत सिरहाने रखा जाता है। उ०—वाकों श्रीनाथजी एक दिन सिज्या भोग को लड्वा उहाँई दियो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २११।

सिझना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध, प्रा० सिज्झ] आँच पर पकाना। सिझाया जाना।

सिझाना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध, प्रा० सिज्झ + हिं० आना (प्रत्य०)] १. आँच पर गलाना। पकाकर गलाना। २. पकाना। राँधना। उबालना। ३. मिट्टी को पानी देकर पैर से कुचल और साफ करके बरतन बनाने योग्य बनाना। ४. शरीर को तपाना या कष्ट देना। तपस्या करना। उ०—लेत घूँट भरि पानि सु रस सुरदानि रिझाई। पपीहऱ्यो तप साधि जपी तन तपन सिझाई।—सुधाकर (शब्द०)। ५. रासायनिक प्रक्रिया द्वारा पकाना। विशेष दे० 'चमड़ा सिझाना'।

सिटकिनी—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किवाड़ों के बंद करने या अड़ाने के लिये लगी हुई लोहे या पीतल की छड़। अगरी। चटकनी। चटखनी।

सिटनल†—संज्ञा पुं० [अं० सिगनल] दे० 'सिगनल'।

सिटपिटाना—क्रि० अ० [अनु०] १. दब जाना। मंद पड़ जाना। २. किंकर्त्तव्य विमूढ़ होना। स्तब्ध हो जाना। ३. सकुचाना। उ०—पहले तो पंचजी बहुत सिटपिटाए, किंतु सबों का बहुत कुछ आग्रह देख सभापति की कुर्सी पर जा डटे।—बालमुकुंद (शब्द०)।

सिटी[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] दे० 'सिट्टी'।

मुहा०—सिटी बिटी भूलना = दे० 'सिट्टीपिट्टी भूलना'। उ०—हुस्न का रोब ऐसा छाया कि सब सिटी बिटी भूल गई।—फिसाना०, भा० ३, पृ० २६२।

सिटी[२]—संज्ञा स्त्री० [अं०] नगर। शहर।

यौ०—सिटी बस = नगर में चलनेवाली राजकीय बस। सिटी बस सर्विस = राजकीय नगर परिवहन सेवा।

सिट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] बहुत बढ़बढ़ कर बोलना। वाक्‌पटुता।

मुहा०—सिट्टी गुम हो जाना = दे० 'सिट्टी भूलना'। उ०—अधिकारी वर्ग की सिट्टी गुम हुई।—किन्नर०, पृ० २६। सिट्टी पिट्टी भूल जाना = सिटपिटा जाना। सिट्टी भूलना = घबरा जाना। सिटपिटा जाना।

सिट्टू—वि० [हिं० सीटना] बहुत बढ़कर गप्प करनेवाला। बढ़कर बोलनेवाला। डींग मारनेवाला। उ०—सिपारसी डरपुकने सिट्टू बोलैं बात अकासी—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ३३३।

सिट्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिष्ट] बचा हुआ। दे० 'सीठी'।

सिठनी†—संज्ञा स्त्री० [सं० अशिष्ट] विवाह के अवसर पर गाई जानेवाली गाली। सीठना।

सिठाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीठी] १. फीकापन। नीरसता। २. मंदता।

सिड़—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिड़ी] १. पागलपन। उन्माद। बावलापन। २. सनक। धुन।

क्रि० प्र०—चढ़ना।

मुहा०—सिड़ सवार होना = सनक होना। धुन होना।

सिड़पन, सिड़पना—संज्ञा पुं० [हिं० सिड़ + पन (प्रत्य०)] १. पागलपन। बावलापन। २. सनक। धुन।

सिड़बिल्ला, सिड़बिल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० सिड़ी + बिलल्ला] [स्त्री० सिड़बिली, सिड़बिल्ली] १. पागल। बावला। २. बेवकूफ। भोंदू। बुद्धू।

सिड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँटी] डेढ़ हाथ लंबी लकड़ी जिसमें बुनते समय बादला बँधा रहता है।

सिड़ी—वि० [सं० शृणीक] [स्त्री० सिड़िन] १. पागल। दीवाना। बावला। उन्मत्त। उ०—यह तो सिड़ी हो गया है इसके साथ रहने से मैं भी ऐसी बातें कहने लगा।—शकुंतला, पृ० १२१। २. सनकी। धुनवाला। ३. मनमौजी। मनमाना काम करनेवाला।

सिढ़ी(५)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] दे० 'सीढ़ी'। उ०—गहि शशिवृत्त नरिंद सिढ़ी लंघत ढहि थोरी। काम लता कल्हरी पेम मारुत झकझोरी।—पृ० रा०, २५।३८१।

सितंबर—संज्ञा पुं० [अं० सेप्टेंबर] अंग्रेजी नवाँ महीना अक्तूबर से पहले और अगस्त के पीछे का महीना।

सित[१]—वि० [सं०] १. श्वेत। सफेद। उजला। शुक्ल। उ०—अरुण असित सित वपु उनहार। करत जगत में तुम अवतार।—सूर (शब्द०)। २. उज्ज्वल। शुभ्र। दीप्त। चमकीला। ३. स्वच्छ। साफ। निर्मल। ४. आबद्ध। बद्ध। बँधा हुआ (को०)। ५. घिरा हुआ। परिवेष्टित (को०)। ६. जाना हुआ। निश्चित। ज्ञात (को०)। ७. पूर्ण। समाप्त (को०)। ८. किसी से संयुक्त। युक्त (को०)।

सित[२]—संज्ञा पुं० १. शुक्र ग्रह। २. शुक्राचार्य। ३. शुक्ल पक्ष। उजाला पाख। ४. चीनी। शक्कर। ५ सफेद कचनार। ६. स्कंद के एक अनुचर का नाम। ७. मूली। मूलक। ८. चंदन। ९. भोजपत्र। १०. सफेद तिल। ११. चाँदी। १२. श्वेत वर्ण। सुफेद रंग (को०)। १३. तीर। बाण (को०)।

सितकंगु--संज्ञा स्त्री० [सं० सितकङ्गु] राल । सर्जनिर्यास ।

सितकंटकारिका--संज्ञा स्त्री० [सं० सितकण्टकारिका] सफेद कंटकारी [को०] ।

सितकंटा--संज्ञा स्त्री० [सं० सितकण्टा] श्वेत कंटकारी [को०] ।

सितकंठ¹--वि० [वि० सितकण्ठ] जिसकी गर्दन सफेद हो। सफेद गर्दनवाला ।

सितकठ²--संज्ञा पुं० मुर्गाबी । दात्यूह पक्षी ।

सितकंठ³--संज्ञा पुं० [सं० सितिकण्ठ] शितिकंठ । महादेव । शिव । उ०--नीलकंठ सितकंठ शंभु हर । महाकाल कंकाल कृपाकर । सबलसिंह (शब्द०) ।

सितकटभी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पेड़ ।

सितकमल--संज्ञा पुं० [सं०] सफेद कमल [को०] ।

सितकर--संज्ञा पुं० [सं०] १. भीमसेनी कपूर । २. चंद्रमा।

सितकरा --संज्ञा स्त्री० [सं०] नीली दूब ।

सितकर्णिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सितकर्णी' [को०] ।

सितकर्णी--संज्ञा स्त्री० [सं०] अडूसा । वासक ।

सितकर्मा --वि० [सं० सितकर्मन्] शुद्ध एवं पूत कर्मोवाला [को०] ।

सितकाच--संज्ञा पुं० [सं०] १ हलब्बी शीशा । २. बिल्लौर ।

सितकारिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] बला या बरियारा नामक पौधा ।

सितकार(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सीत्कार] दे० 'सीत्कार'। उ०--(क) लै सितकार सखिहि घुरि गई।--नंद० ग्रं०, पृ० १२६ । (ख) ज्यों तिय सुरत समय सितकारा। निकल जाहिं जौं बधिर भतारा ।--नंद० ग्रं०, पृ० ११८ ।

सितकुंजर--संज्ञा पुं० [सं० सितकुञ्जर] १. ऐरावती हाथी। श्वेत हस्ती। २. इंद्र का गज जो श्वेत है। ३. (ऐरावत हाथीवाले) इंद्र ।

सितकुंभी--संज्ञा स्त्री० [सं० सितकुम्भी] श्वेत पाटल का वृक्ष। सफेद पाँड़र का पेड़ ।

सितक्षार--संज्ञा पुं० [सं०] सुहागा ।

सितक्षुद्रा--संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद फूल की भटकटैया । श्वेत कंटकारी ।

सितखंड--संज्ञा पुं० [सं० सितखण्ड] दे० 'सिताखंड' ।

सितगुंजा--संज्ञा स्त्री० [सं० सितगुञ्जा] श्वेत गुंजा। सफेद घुंघची [को०] ।

सितचिह्न--संज्ञा पुं० [सं०] खैरा मछली । छिपुआ मछली ।

सितच्छत्र--संज्ञा पुं० [सं०] १. श्वेत राजछत्र । २. सूत्रजाल । मकरी आदि का जाला (को०) ।

सितच्छत्रा--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौंफ। २. सोवा।

सितच्छत्रित--वि० [सं०] श्वेत राजछत्र युक्त । सित छत्रयुक्त [को०] ।

सितच्छत्री--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौंफ । शतपुष्पा । २. सोवा ।

सितच्छद¹--संज्ञा पुं० [सं०] १. हंस । मराल । २. लाल सहिंजन । रक्त शोभांजन ।

सितच्छद²--वि० १. श्वेत पत्तों या श्वेत पंखों वाला ।

सितच्छदा--संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद दूब ।

सितजा--संज्ञा स्त्री० [सं०] मधुखंड । मधुशर्करा ।

सितजाफल--संज्ञा पुं० [सं०] मधु नारियल ।

सितजाम्रक--संज्ञा पुं० [सं०] कलमी ग्राम ।

सितता--संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी । श्वेतता ।

सिततुरग--संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन (जिनके रथ के घोड़े श्वेत वर्ण के हैं) ।

सितदर्भ--संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत कुश ।

सितदीधिति--संज्ञा पुं० [सं०] (सफेद किरनवाला) चंद्रमा ।

सितदीप्य--संज्ञा पुं० [सं०] सफेद जीरा ।

सितदूर्वा संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत दूर्वा । सफेद दूब [को०] ।

सितद्रु--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की लता ।

सितद्रुम--संज्ञा पुं० [सं०] १. शुक्लवर्ण का वृक्ष । अर्जुन । २. मोरट । क्षीर मोरट ।

सितद्विज--संज्ञा पुं० [सं०] हंस ।

सितधातु--संज्ञा पुं० [सं०] १. शुक्लवर्ण की धातु । २, खरी। खरिया मिट्टी । दुद्धी ।

सितपक्ष--संज्ञा पुं० [सं०] १. हंस--जिसके पक्ष श्वेत हों। २. शुक्ल पक्ष । उजेला पाख (को०) । ३. श्वेत पंख ।

सितपच्छ(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सितपक्ष, प्रा० सितपक्ख] दे० 'सितपक्ष' ।

सितपत्र(पु)--संज्ञा पुं० [सं० शतपत्र] शतपत्र। कमल। उ०--सत सितपत्र प्रमान उधारियं वीर वृंदायं ।--पृ० रा०, ७।१२८ ।

सितपद्म--संज्ञा पुं० [सं०] सफेद कमल [को०]।

सितपर्णी--संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्कपुष्पी । अंधाहुली ।

सितपाटलिका --संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद पाँडर । श्वेत पाटला [को०] ।

सितपुंखा--संज्ञा स्त्री० [सं० सितपुङ्खा] एक प्रकार का पौधा ।

सितपुंडरीक--संज्ञा पुं० [सं० सितपुण्डरीक] श्वेत कमल । सितपद्म [को०] ।

सितपुष्प --संज्ञा पुं० [सं०] १. तगर का पेड़ या फूल । गुलचाँदनी । २. एक प्रकार का गन्ना । ३. सिरिस का पेड़ । श्वेत रोहित । ४. पिंड खजूर । ५. कैवर्त मुस्तक । केवटी मोथा (को०) । ६. काँस तृण । कास (को०) ।

सितपुष्पा --संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बला । बरियारा । २. कंघो का पौधा । ३. एक प्रकार की चमली । मल्लिका ।

सितपुष्पिका --संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद दागवाला । कोढ़ । श्वेत कुष्ट । फूल । चरक ।

सितपुष्पी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्वेत अपराजिता । कैवर्त मुस्तक । केवटी मोथा नाम का घास । कास नामक तृण । ४. नागदंती । ५. नागवल्ली । पान ।

सितप्रभ¹--संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी ।

सितप्रभ²--वि० [सं०] श्वेत प्रभावाला । उज्ज्वल [को०] ।

सितभान(ग)—संज्ञा पुं० [सं० सितभानु] चंद्रमा। उ०—सुखहि अलक को छूटिबो अवसि करै दुतिमान। बिन विभावरी के नहीं जगमगात सितभान।—रामसहाय (शब्द०)।

सितभानु—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सितम—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. गजब। अनर्थ। आफत। २. अनीति। जुल्म। अत्याचार।

मुहा०—सितम ढाना = अनर्थ करना। जुल्म करना।।

सितमगर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] जालिम। अन्यायी। दुःखदायी। उ०—यार का मुझको इस सबब डर है। शोख जालिम है औ सितमगर है।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० २९।

सितमणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्फटिक। बिल्लौर।

सितमना—वि० [सं० सितमनस्] निर्मल मन का व्यक्ति। शुद्ध हृदयवाला [को०]।

सितमरिच—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफेद मिर्च। २. शिग्रुबीज। सहिंजन के बीज।

सितमाष—संज्ञा पुं० [सं०] राजमाष। लोबिया। बोड़ा।

सितमेघ—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत बादल। शरत्कालीन मेघ [को०]।

सितयामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चाँदनी रात। चंद्रिका [को०]।

सितरंज—संज्ञा पुं० [सं० सितरञ्ज] कपूर। कर्पूर।

सितरंजन—संज्ञा पुं० [सं० सितरञ्जन] पीत वर्ण। पीला रंग।

सितरश्मि—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद किरणोंवाला। चंद्रमा।

सितराग—संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी। रजत। रौप्य।

सितरुचि—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत किरणवाला। चंद्रमा।

सितरुती—संज्ञा स्त्री० [देश०] गंध पलाशी। कपूर कचरी।

विशेष—पहाड़ी लोग इसकी पत्तियों की चटाइयाँ बनाते हैं।

सितलता[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] अमृतवल्ली नामक लता।

सितलता(ग)[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतलता] शीतल होने का भाव। शीतलता। उ०—अगिनि के पुंज हैं सितलता तन नहीं। विष और अमृत दोनु एक सानी।—कबीर० रे०, पृ० २७।

सितलशुन—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद लहसुन [को०]।

सितलाई(ग)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीतल + आई (प्रत्य०)] शीतलता। शैत्य। उ०—गोपद सिंधु अनल सितलाई।—मानस, ५।६।

सितलाय(ग)—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतलता] शांति। शीतलता। ठंडापन। नम्रता। उ०—त्यागि दे बकवाद बकना गहे रहु सितलाय।—जग० बानी०, पृ० ६९।

सितली—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल] वह पसीना जो बेहोशी या अधिक पीड़ा के समय शरीर से निकलता है।

क्रि० प्र०—छूटना।

सितवराह—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत वाराह।

सितवराहतिय(ग)—संज्ञा पुं० [सं० सितवराह + हिं० तिय] पृथ्वी। धरा। उ०—सितवराहतिय ख्यात सुजस नरसिंह कोप धर। सँग भट बावन सहस सबै भृगुपति सम धनुधर।—गोपाल (शब्द०)।

सितवराहपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। धरती।

सितवर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] खिरनी। क्षीरिणी।

सितवर्षाभू—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद पुनर्नवा।

सितवल्लरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली जामुन। कठ जामुन।

सितवल्लीज—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद मिर्च।

सितवाजी—संज्ञा पुं० [सं० सितवाजिन्] अर्जुन का नाम।

सितवार, सितवारक—संज्ञा पुं० [सं०] शालिंच शाक। शांति शाक।

सितवारण—संज्ञा पुं० [सं०] ऐरावत। श्वेत हाथी [को०]।

सितवारिक—संज्ञा पुं० [सं०] सैंहली। सिंहली पीपल।

सितशायका—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद शरपुंखा। सरफोंका [को०]।

सितशिंबिक—संज्ञा पुं० [सं० सितशिम्बिक] एक प्रकार का गेहूँ।

सितशिंशपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत शिंशपा वृक्ष [को०]।

सितशिव—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेंधा नमक। २. शमी का पेड़।

सितशूक—संज्ञा पुं० [सं०] जौ। यव।

सितशूरण—संज्ञा पुं० [सं०] वन सूरण। सफेद जमीकंद।

सितशृंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० शितशृङ्गी] अतीस। अतिविषा।

सितसप्ति—संज्ञा पुं० [सं०] (सफेद घोड़ेवाले) अर्जुन।

सितसर्षप—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत सर्षप। पीली सरसों [को०]।

सितसागर—संज्ञा पुं० [सं०] क्षीर सागर। उ०—सितसागर ते छबि उज्ज्वल जाकी। जनु बैठक सोहत है कमला की।—गुमान (शब्द०)।

सितसायका—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत सरफोंका। सितशायक [को०]।

सितसार, सितसारक—संज्ञा पुं० [सं०] शालिंच शाक। शांति शाक। सोहमारक।

सितसिंधु[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सितसिन्धु] क्षीर समुद्र।

सितसिंधु[2]—संज्ञा स्त्री० गंगा नदी जिनका जल श्वेत है।

सितसिंही—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद भटकटैया। श्वेत कंटकारी।

सितसिद्धार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद या पीली सरसों जो मंत्र या झाड़ फूँक में काम आती है।

सितसिद्धार्थक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सितसिद्धार्थ'।

सितसूर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] हुरहुर। आदित्यभक्ता।

सितह—संज्ञा स्त्री० [अ० सतह] दे० 'सतह'।

सितहूण—संज्ञा पुं० [सं०] हूणों की एक शाखा।

सितांक—संज्ञा पुं० [सं० सिताङ्क] एक प्रकार की मछली। बालुकागड़ मत्स्य।

सितांग[1]—संज्ञा पुं० [सं० सिताङ्ग] १. शिव का नाम (को०)। २. श्वेत रोहितक वृक्ष। रोहिड़ा सफेद। ३. बेला। वार्षिकी पुष्प वृक्ष। ४. दे० 'सितांक (को०)।

सितांग[2]—वि० श्वेत अंगवाला।

सितांबर[1]—वि० [सं० सिताम्बर] श्वेत वस्त्र धारण करनेवाले।

सितांबर[2]—संज्ञा पुं० जैनों का श्वेतांबर संप्रदाय।

सितांबुज—संज्ञा पुं० [सं० सिताम्बुज] श्वेत कमल।

सितांभोज—संज्ञा पुं० [सं० सिताम्भोज] दे० 'सितांबुज'। उ०—उत्पल, राजिव, कोकनद, सितांभोज जलजात।—नंद० ग्रं०, पृ० ११०।

सितांशु—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर।

सितांशुक—वि० [सं०] श्वेत वस्त्रधारी। सफेद वर्ण का वस्त्र धारण करनेवाला [को०]।

सिताँ[१]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. राष्ट्र। देश। २. निवासभूमि। ३. स्थान। जगह। ४. वह स्थान जहाँ किसी वस्तु का आधिक्य हो।

सिताँ[२]—वि० ग्रहण करनेवाला। ले लेनेवाला [को०]।

सिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चीनी। शक्कर। शर्करा। उ०—दूध औटि तेहि सिता मिलाऊँ मैं नारायण भोग लगाऊँ। रघराज (शब्द०)। २. शुक्ल पक्ष। उ०—चैत चारु नौमी सिता मध्य गगन गत भानु। नखत जोग ग्रह लगन भल दिन मंगल मोद विधानु।—तुलसी (शब्द०)। ३. मल्लिका। मोतिया। ४. श्वेत कंटकारी। सफेद भटकटैया। ५. बकुची। सोमराजी। ६. विदारी कंद। ७. श्वेत दूर्वा। ८. चाँदनी। चंद्रिका। ९. कुटंबिनी का पौधा। १०. मद्य। शराब। ११. पिंगा। १२. त्रायमाणा लता। १३. अर्कपुष्पी। अंधाहुली। १४. बच। १५. सिंहली पीपल। १६. आमड़ा। आम्रातक। १७. गोरोचन। १८. वृद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि। १९. चाँदी। रजत। रूपा। २० श्वेत निसोथ। २१. त्रिसंधि नामक पुष्प वृक्ष। २२. पुनर्नवा। सफेद गदहपूरना। २३. पहाड़ी अपराजिता। २४. सफेद पाड़र। पाटला वृक्ष। २५. सफेद सेम। २६. मूर्वा। गोकर्णी लता। मुरा। २७. आकर्षक महिला। सुंदरी स्त्री (को०)। २८. गंगा नदी (को०)। २९. मिस्री (को०)।

सिताइश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. तारीफ। प्रशंसा। २. धन्यवाद। शुक्रिया। ३. वाहवाही। शाबाशी।

सिताखंड—संज्ञा पुं० [सं० सिताखण्ड] १. मधुशर्करा। शहद से बनाई हुई शक्कर। २. मिस्री।

सिताख्य—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद मिर्च।

सिताख्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद दूब।

सिताग्र—संज्ञा पुं० [सं०] काँटा। कंटक।

सिताजाजी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद जीरा।

सितातपत्र, सितातपत्रारण संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत आतपत्र। श्वेत चँदोवा या छत्र [को०]।

सितादि—संज्ञा पुं० [सं०] शक्कर आदि का कारण या पूर्व रूप, गुड़।

सितानन[१]—वि० [सं०] सफेद मुँहवाला।

सितानन[२]—संज्ञा पुं० १. गरुड़। २. बेल। बिल्व वृक्ष। ३. शिव का एक गण (को०)।

सितापांग—संज्ञा पुं० [सं० सितापाङ्ग] मयूर। मोर।

सितापाक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिताखंड'।

सिताब(पु)[१]—क्रि० वि० [फ़ा० शिताब] जल्दी। तुरंत। झटपट। उ०—प्रीतम आवत जानिकै भिस्ती नैन सिताब। हित मग मैं कर देत है अँसुवन को छिरकाब।—रसनिधि (शब्द०)।

सिताब[२]—संज्ञा स्त्री० जल्दी। शीघ्रता। उ०—दिना दोइ में कूँच होइ आगैं नवाब कौ। तातैं ढील न होइ काम यह है सिताब कौ।—सुजान०, पृ० ६२।

सिताबी[१]—क्रि० वि० [फ़ा० शिताब] दे० 'सिताब[१]'।

सिताबी[२]—संज्ञा स्त्री० १. चाँदनी। २. दे० 'सिताब[२]'।

सिताब्ज—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सितांबुज' [को०]।

सिताभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्पूर। कपूर। २. शर्करा। ३. वह जिसकी प्रभा श्वेत हो।

सिताभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] तक्रा। तक्राह्वा क्षुप।

सिताभ्र, सिताभ्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद बादल। २. कपूर। कर्पूर।

सितामोघा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद पाडर। श्वेत पाटला।

सितायुध—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की मछली।

सितार—संज्ञा पुं० [फ़ा०; या सं० सप्त + तार, फ़ा० सेहतार] एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा जिसमें सात तार होते हैं और जो लगे हुए तारों को उँगली से झनकारने से बजता है। एक प्रकार की वीणा।

विशेष—यह काठ की दो ढाई हाथ लंबी और चार पाँच अंगुल चौड़ी पोली पटरी के एक छोर पर गोल कद्दू की तुंबी जड़कर बनाया जाता है। इसका ऊपर का भाग समतल और चिपटा होता है और नीचे का गोल। समतल भाग पर पर्दे बँधे रहते हैं जो सप्तक के स्वरों को व्यक्त करते हैं। इनके ऊपर तीन से लेकर सात तार लंबाई के बल में बँधे रहते हैं। इन तारों को कोण द्वारा झनकारने से यह बजता है।

सितारबाज—संज्ञा पुं० [हिं० सितार + फ़ा० बाज] सितार बजानेवाला। सितारिया।

सितारजन—संज्ञा पुं० [फ़ा० सितारज़न] सितारवादक।

सितारबाजी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सितार + फ़ा० बाजी] सितार बजाना।

सितारवादक—संज्ञा पुं० [हिं० सितार + सं० वादक] सितार बजानेवाला। सितारिया।

सितारा[१]—संज्ञा पुं० [फ़ा० सितारह्] १. तारा। नक्षत्र। उ०—मनौ सितारे भूमि नभ फिरि आवत फिरि जात।—स० सप्तक, पृ० ३६३। २. भाग्य। प्रारब्ध। नसीब।

मुहा०—सितारा चमकना = भाग्योदय होना। अच्छी किस्मत होना। सितारा बलंद या बुलंद होना = दे० 'सितारा चमकना'। सितारा मिलना = (१) फलित ज्योतिष में ग्रहमैत्री मिलना। गणना बैठना। (२) मन मिलना। परस्पर प्रेम होना।

३. चाँदी या सोने के पत्तर की बनी हुई छोटी गोल बिंदी के आकार की टिकिया जो कामदार टोपी, जूते आदि में टाँकी जाती है या शोभा के लिये चेहरे पर चिपकाई जाती है। चमकी। उ०—नील सलमें सितारे या बादले।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८७। ४. दे० 'सितारा पेशानी'।

सितारा[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सितार] दे० 'सितार'। उ०—जलतरंग कानून अमृत कुंडली सुबीना। सारंगी रु रबाब सितारा महुवर कीना।—सूदन (शब्द०)।

सिताराचश्म—वि० [फ़ा०] सितारे जैसे नेत्रोंवाला [को०]।

सिताराजबीं—वि० [फ़ा०] दे० 'सितारापेशानी'।

सितारादाँ—संज्ञा पुं० [फ़ा०] नक्षत्रों का जानकार। ज्योतिषी।

सितारापरस्त—वि० [फ़ा०] तारों का उपासक [को०]।

सितारापेशानी—वि० [फ़ा०] (घोड़ा) जिसके माथे पर अँगूठे के छिप जाने योग्य सफेद टीका या बिंदी हो (ऐसा घोड़ा बहुत ऐबी समझा जाता है)।

सिताराबीं—वि० [फ़ा०] ज्योतिषी। नजूमी [को०]।

सिताराबीनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] ग्रहों के द्वारा फलाफल का ज्ञान। ज्योतिष विद्या [को०]।

सिताराशनास—वि० [फ़ा०] ज्योतिषी [को०]।

सिताराशनासी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] ज्योतिष विद्या [को०]।

सितारिया—संज्ञा पुं० [फ़ा० सितार+हिं० इया (प्रत्य०)] सितार बजानेवाला।

सितारी[१]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सितार] छोटा सितार। छोटा तंबूरा।

सितारी[२]—वि० [हिं० सितार] सितार बजानेवाला। सितारिया। उ०—कहाँ है रबाबी मृदंगी सितारी। कहाँ हैं गवैये कहाँ नृत्यकारी।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ७०५।

सितारेहिंद—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार की उपाधि जो सरकार की ओर से सम्मानार्थ दी जाती है। उ०—राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद थे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४१२।

विशेष—यह शब्द वास्तव में अँग्रेजी वाक्य 'स्टार आफ इंडिया' का अनुवाद है।

सितार्कक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० सितालक [को०]।

सितार्जक—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत तुलसी।

सितालक, सितालर्क—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत अर्क। सफेद मदार।

सितालता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अमृतवल्ली। अमृतस्रवा। २. सफेद दूब।

सितालि—वि० [सं०] श्वेत रेखाओं या पंक्तियोंवाला।

सितालिकटभी—संज्ञा स्त्री० [सं०] किहिणी वृक्ष। सफेद कटभी।

सितालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] ताल की सीपी। जलसीप। शुक्ति। सितुही।

सिताव—संज्ञा स्त्री० [देश०] बरसात में उगनेवाला एक पौधा जो दवा के काम आता है। सर्पदंष्ट्रा। पीतपुष्पा। विषापहा। दूर्वपत्रा। त्रिकोणबीजा।

विशेष—यह पौधा हाथ डेढ़ हाथ ऊँचा और झाड़दार होता है। इसकी पत्तियाँ दूब से मिलती जुलती होती हैं। इसके डंठल भी हरे रंग के होते हैं। इसका मूसला कत्थई रंग का और बहुत बारीक रेशों से युक्त होता है। इसमें अंगुल डेढ़ अंगुल घेरे के गोल पीले फूल लगते हैं। इसके फलों की नोक पर बैंगनी रंग का लंबा सूत सा निकला होता है। फलों के भीतर तिकोने कत्थई रंग के बीज होते हैं। यही बीज विशेषत: औषध के काम में आते हैं और 'सिताब' के नाम से बिकते हैं। ये बहुत कड़वे और गंधयुक्त होते हैं। इस पौधे की जड़ और पत्तियाँ भी दवा के काम में आती हैं। वैद्यक में सिताब गरम, कड़वी, दस्तावर तथा वात, कफ को नाश करनेवाली, रुधिर को शुद्ध करनेवाली, बल, वीर्य और दूध को बढ़ानेवाली तथा पित्त के रोगों में लाभकारी कही गई है।

सिताअभेद—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक पौधा जिसके सब अंग औषध के काम में आते हैं।

विशेष—इसकी पत्तियाँ लंबी, गँठीली और कटावदार होती हैं और उनमें से तेल की सी कटु गंध आती है। फूल पीलापन लिए होते हैं। फलों में चार बीजकोश होते हैं जिनमें से प्रत्येक में ७ या ८ बीज होते हैं।

सितावर—संज्ञा पुं० [सं०] सिरियारी। सुनिष्णक शाक। सुसना का साग।

सितावरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकची। सोमराजी।

सिताश्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. अर्जुन का एक नाम। २. चंद्रमा।

सितासित—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्वेत और श्याम। सफेद और काला। उ०—कुच तें श्रम जलधार चलि मिलि रोमावलि रंग। मनो मेरु की तरहटी भयो सितासित संग।—मतिराम (शब्द०)। २. बलदेव। ३. शुक्र के सहित शनि। ४. जमुना के सहित गंगा।

सितासितनीरⓅ—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत और नीला या श्याम वर्ण का जल। गंगा यमुना का संगम। त्रिवेणी। उ०—सबिधि सितासित नीर नहाने।—मानस, २।२०३।

सितासितरोग—संज्ञा पुं० [सं०] आँख का एक रोग।

सितासिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बकची। सोमराजी। २. गंगा और यमुना। यमुना और गंगा।

सिताह्वय—संज्ञा पुं० [सं०] १. शुक्र ग्रह। २. श्वेत रोहित वृक्ष। ३. सफेद फूलों का सहिंजन। ४. सफेद या हरे डंठलकी तुलसी।

सिति[१]—वि० [सं०] दे० 'शिति'।

सिति[२]—संज्ञा स्त्री० १. श्वेत या श्याम वर्ण। २. बंधन। बाँधना [को०]।

सितिकंठ—संज्ञा पुं० [सं०] नीलकंठ। शिव। महादेव।

सितिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेतता। सफेदी।

सितिवार, सितिवारक—संज्ञा पुं० [सं० शितिवार] १. शिरियारी शाक। सुसना का साग। २. कुड़ा। कुटज वृक्ष। कोरैया।

सितिवास—संज्ञा पुं० [सं० सितिवासस्] (नीले वस्त्रवाले) बलराम।

सितिसारक—संज्ञा पुं० [सं०] शांति शाक। शालिंच शाक।

सितुई†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] ताल की सीपी। सुतही। सितुही।

सितुही—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्तिका] ताल की सीपी। सुतुही।

सितूदा—वि० [फ़ा० सितूद्ह] प्रशंसित। तारीफ के योग्य [को०]।
यौ०—सितूदाकार = उत्तम या प्रशंसनीय कार्य करनेवाला।

सितून—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. स्तंभ। खंभा। थूनी। २. लाट। मीनार।

सितेक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गन्ना [को०]।

सितेतर¹—वि० [सं०] (श्वेत से भिन्न) काला या नीला।

सितेतर²—संज्ञा पुं० १. कृष्ण धान्य। काला धान। २. कुलथी। कुरथी।

सितेतरगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि। आग।

सितोत्पल—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद कमल।

सितोदर संज्ञा पुं० [सं०] (श्वेत उदरवाला) कुबेर।

सितोदरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] (श्वेत उदरवाली) एक प्रकार की कौड़ी।

सितोद्भव¹—संज्ञा पुं० [सं०] चंदन। संदल।

सितोद्भव²—वि० चीनी से उत्पन्न या बना हुआ।

सितोपल—संज्ञा पुं० [सं०] १. कठिनी। खड़ी। खरिया मिट्टी। दुद्धी। २. बिल्लौर। स्फटिक मणि।

सितोपला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मिस्री। २. चीनी। शक्कर।

सितोष्णवारण—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद आतपत्र या छाता [को०]।

सिथिल(पु)—वि० [सं० शिथिल] दे० 'शिथिल'। उ०—पुलक सिथिल तनु बारि विमोचन। महि नख लिखन लगी सब सोचन। —मानस, २।२८०।

सिद—संज्ञा पुं० [देश०] बाकली।

सिदक†—संज्ञा स्त्री० [अ० सिद्क] निश्छलता। यथार्थता। सत्यता। उ०—व अव्वल जबाँ सू च इकरार कर। सो भई सिदक कर मानना दिल बेहतर।—दक्खिनी०, पृ० १६२।

सिदका—संज्ञा पुं० [अ० सदक़ह्] दे० 'सदका'।

सिदना(पु)—क्रि० स० [सं० सीदति] कष्ट पहुँचाना। पीड़ित करना। उ०—समै के दिलीप दिलीपति को सिदति है।—भूषण ग्रं०, पृ० ८२।

सिदरी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सेहदरी] तीन दरवाजोंवाला कमरा या बरामदा। तिदुवारी दालान। उ०—बहु बेलिन बूटन संयुत सोहैं। परदा सिदरीन लगे मन मोहैं।—गुमान (शब्द०)।

सिदाकत—संज्ञा स्त्री० [अ० सदाक़त] सत्यता। सच्चाई। यथार्थता। उ०—मेरी हिमाकत का बयान आपकी लियाकत की सिदाकत करता है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २४।

सिदामा—संज्ञा पुं० [सं० श्रीदामा] दे० 'श्रीदामा'।

सिदिक¹—वि० [अ० सिद्क़] सच्चा। सत्य। उ०—अबाबकर सिद्दीक सयाने। पहिले सिदिक दीन वै आने।—जायसी (शब्द०)।

सिदिक²—संज्ञा स्त्री० दे० 'सिदक'।

सिदौसी—संज्ञा स्त्री० [सं० सद्यस्] १. तड़के। मुँह अँधेरे। धुँधलका। उ०—खूब सिदौसी, मुँह अँधियारे वाकी चकिया जबै पुकारे, तब तू वाकी सुनियो ना; गुइयाँ, प्रीति को मरम काहूते वतैयो ना।—कुंकुम, पृ० ८३। २. जल्दी। शीघ्र। विना विलंब लगाए। उ०—अमर नगर पहिचान सिदौसी तब नहि आवन जाना रे।—चरण० बानी, पृ० १०६।

सिद्गुंड—संज्ञा पुं० [सं० सिगुद्ण्ड] वह वर्णसंकर पुरुष जिसका पिता ब्राह्मण और माता पराजकी हो।

सिद्दीक—वि० [अ० सिद्दीक़] बहुत सच्चा। ईमानदार [को०]।

सिद्धंत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धान्त] दे० 'सिद्धांत'। उ०—सोइ सुनिय सिद्धंत संत सब भाषत वोई।—सुंदर ग्रं०, भा० १, पृ० ३६।

सिद्ध¹—वि० [सं०] १. जिसका साधन हो चुका हो। जो पूरा हो गया हो। जो कया जा चुका हो। सपन्न। संपादित। निबटा हुआ। अजाम दिया हुआ। जैसे,—कार्य सिद्ध होना। २. प्राप्त। सफल। हासिल। उपलब्ध। जैसे,—मनोरथ सिद्ध होना। प्रयत्न सिद्ध होना। उद्देश्य सिद्ध होना। ३. प्रयत्न में सफल। कृतकार्य। जिसका मतलब पूरा हो चुका हो। कामयाब। ४. जिसका तप या योगसाधन पूरा हो चुका हो। जिसने योग या तप द्वारा अलौकिक लाभ या सिद्धि प्राप्त की हो। पहुँचा हुआ। जैसे,—बाबाजी बड़े सिद्ध महात्मा हैं। ५. करामाती योग की विभूतियाँ दिखानेवाला। ६. मोक्ष का अधिकारी। ७. लक्ष्य पर पहुँचा हुआ। निशाने पर बैठा हुआ। ८. जो ठीक घटा हो। जिस (कथन) के अनुसार कोई बात हुई हो। जैसे,—वचन सिद्ध होना, आशीर्वाद सिद्ध होना। ९. जो तर्क या प्रमाण द्वारा निश्चित हो। प्रमाणित। साबित। निरूपित जैसे,—अपराध सिद्ध करना। कथन को सत्य सिद्ध करना। व्याकरण का प्रयोग सिद्ध करना। १०. जिसका फैसला या निबटारा हो गया हो। फैसल। निर्णीत। ११. शोधित। अदा किया हुआ। चुकता (ऋण आदि)। १२. संघटित। अंतर्भूत। जैसे,—स्वभावसिद्ध बात। १३. जो अनुकूल किया गया हो। कार्यसाधन के उपयुक्त बनाया हुआ। गौं पर चढ़ाया हुआ। जैसे,—उसको हम कुछ रुपये देकर सिद्ध कर लेगें। १४. आँच पर मुलायम किया हुआ। सीझा हुआ। पका हुआ। उबला हुआ। जैसे,—सिद्ध अन्न। उ०—वही के सिद्ध रंग से उसे रंगते।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २३६। १५. प्रसिद्ध। विख्यात। १६. बना हुआ। तैयार। प्रस्तुत। उ०—पाछे दरजी वे बागा सब सिद्ध करि लायो।—दो सौ बावन०, पृ० १७२। १७. बसा हुआ। स्थापित (को०)। १८. वैध। न्याय्य (को०)। १९. सच माना हुआ (को०)। २०. वश में किया गया। जीता गया (को०)। २२. पूर्णतः विज्ञ दक्ष (को०)। २३. पावन। पवित्र। पुण्यात्मा (को०)। २४. दिव्य। अविनश्वर। नित्य (को०)। २५. संतुष्ट (को०)। २६. स्वकीय। निजी। व्यक्तिगत (को०)।

सिद्ध²—संज्ञा पुं० १. वह जिसने योग या तप में सिद्धि प्राप्त की हो। योग या तप द्वारा अलौकिक शक्ति प्राप्त पुरुष। जैसे,—यहाँ

एक सिद्ध आए हैं। २. कोई ज्ञानी या भक्त महात्मा। मोक्ष का अधिकारी पुरुष। ३. एक प्रकार के देवता। एक देवयोनि।

विशेष—सिद्धों का निवास स्थान भुवर्लोक कहा गया है। वायुपुराण के अनुसार उनकी संख्या अठासी हजार है और वे सूर्य के उत्तर और सप्तर्षि के दक्षिण अंतरिक्ष में वास करते हैं। वे अमर कहे गए हैं पर केवल एक कल्प भर तक के लिये। कहीं कहीं सिद्धों का निवास गंधर्व, किन्नर आदि के समान हिमालय पर्वत भी कहा गया है।

४. अर्हंत। जिन। ५. ज्योतिष का एक योग। ६. व्यवहार। मुकदमा। मामला। ७. काला धतूरा। ८. गुड़। ९. ज्योतिष में विष्कंभ आदि २७ योगों में से इक्कीसवाँ योग। १०. कृष्ण सिंदुवार। काली निर्गुंडी। ११. सफेद सरसों। १२. सेंधा नमक (को०)। १३. जादूगर। ऐंद्रजालिक (को०)। १४. चौबीस की संख्या (को०)। १५. बाजीगरी। १६. अलौकिक शक्ति (को०)।

सिद्धक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सँभालू। सिंदुवार वृक्ष। २. एक वृत्त या छंद (को०)। ३. शाल वृक्ष। साखू।

सिद्धकज्जल—संज्ञा पुं० [सं०] एक विशिष्ट प्रकार का अंजन। जादू का काजल। सिद्धांजन (को०)।

सिद्धकाम—वि० [सं०] १. जिसकी कामना पूरी हुई हो जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो। २. सफल। कृतार्थ।

सिद्धकामेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामाख्या अर्थात् दुर्गा की पंचमूर्ति के अंतर्गत प्रथम मूर्ति।

सिद्धकारी—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धकारिन्] [स्त्री० सिद्धकारिणी] धर्मशास्त्र के अनुसार आचरण करनेवाला।

सिद्धकार्थ—वि० [सं०] जिसकी कामना पूर्ण हो गई हो। सिद्धकाम। सफल। कृतकार्य (को०)।

सिद्धक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ योग या तंत्र प्रयोग जल्दी सिद्ध हो। २. वह स्थान जहाँ सिद्ध रहते हों। सिद्धों का क्षेत्र (को०)। ३. दंडक बन के एक विशेष भाग का नाम।

सिद्धखंड—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धखण्ड] खाँड़ का एक भेद (को०)।

सिद्धगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मंदाकिनी। आकाश गंगा। स्वर्ग गंगा।

सिद्धगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैन मतानुसार वे कर्म जिनसे मनुष्य सिद्ध हो।

सिद्धगुटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मंत्रसिद्ध गोली जिसे मुँह में रख लेने से अदृश्य होने आदि की अद्भुत शक्ति आ जाती है। दे० 'सिद्धि गुटिका'।

सिद्धग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का प्रेत जो उन्माद रोग उत्पन्न करता है। २. एक प्रकार का प्रेतजन्य उन्माद (को०)।

सिद्धजल—संज्ञा पुं० [सं०] १. कांजी। २. औटा हुआ जल।

सिद्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिद्ध होने की अवस्था। २. प्रामाणिकता। सिद्धि। ३. पूर्णता।

सिद्धतापस—संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धिप्राप्त तपस्वी (को०)।

सिद्धत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिद्धता'।

सिद्धदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] अलौकिक शक्तियुक्त संत का दर्शन।

सिद्धदात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] नव दुर्गा में से एक दुर्गा।

सिद्धदेव—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

सिद्धद्रव्य—संज्ञा पुं० [सं०] वह द्रव्य या वस्तु जो सिद्ध की गई हो। ऐंद्रजालिक या जादू की वस्तु (को०)।

सिद्धधातु—संज्ञा पुं० [सं०] पारा। पारद।

सिद्धनर—संज्ञा पुं० [सं०] दैवज्ञ। ज्योतिषी। भविष्य या भाग्यकथन करनेवाला (को०)।

सिद्धनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिद्धेश्वर। महादेव। २. गुलतुर्रा।

सिद्धनामक—संज्ञा पुं० [सं०] अश्मंतक वृक्ष। आबुटा।

सिद्धपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी प्रतिज्ञा या बात का वह अंश जो प्रमाणित हो चुका हो। २. प्रमाणित बात। साबित बात।

सिद्धपथ—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश। अंतरिक्ष।

सिद्धपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] स्कंद के एक अनुचर का नाम।

सिद्धपीठ—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ, योग, तप या तांत्रिक प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो। उ०—साहसी समीरसुनु नीरनिधि लंघि लखि लंक सिद्धपीठ निसि जागो है मसान सो। तुलसी (शब्द०)।

सिद्धपुर—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक कल्पित नगर जो किसी के मत से पृथ्वी के उत्तरी छोर पर और किसी के मत से दक्षिण या पाताल में है। (ज्योतिष)। २. गुजरात में एक तीर्थ जहाँ माता का श्राद्ध किया जाता है। मातृगया।

सिद्धपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सिद्धपुर'।

सिद्धपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] वह पुरुष जिसे सिद्धिलाभ हो गया हो। वह व्यक्ति जिसे अलौकिक सिद्धि प्राप्त हो (को०)।

सिद्धपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] करवीर। कनेर का पेड़।

विशेष—यह सिद्ध लोगों को प्रिय और यंत्रसिद्धि में प्रयुक्त किया जाता है।

सिद्धप्रयोजन—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद सरसों। श्वेत सर्षप।

सिद्धभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिद्धपीठ। सिद्धक्षेत्र।

सिद्धमंत्र—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धमन्त्र] सिद्ध किया हुआ मंत्र।

सिद्धमत—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह सिद्धांत या वाद जो पूर्णतः प्रमाणित हो। २. सिद्ध व्यक्तियों या संतों का मत।

सिद्धमनोरम—संज्ञा पुं० [सं०] कर्म मास (को०)।

सिद्धमातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक देवी का नाम। २. एक प्रकार की लिपि।

सिद्धमानस—वि० [सं०] पूर्ण संतुष्ट मन या मस्तिष्कवाला (को०)।

सिद्धमोदक—संज्ञा पुं० [सं०] तुरंजवीन की खाँड़। तवराजखंड।

सिद्धयात्रिक—संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धि के निमित्त यात्रा करनेवाला व्यक्ति। दे० 'सिद्धियात्रिक' (को०)।

सिद्धयामल--संज्ञा पुं० [सं०] एक तंत्र का नाम।

सिद्धयोग--संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्योतिष का एक योग। २. एक यौगिक रसौषध।

सिद्धयोगिनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक योगिनी का नाम।

सिद्धयोगी--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धयोगिन्] शिव। महादेव।

सिद्धर--संज्ञा पुं० [?] एक ब्राह्मण जो कंस की आज्ञा से कृष्ण को मारने आया था। उ०--सिद्धर बाभन करम कसाई। कह्यौ कंस सो वचन सुनाई।--सूर (शब्द०)।

सिद्धरत्न--वि० [सं०] जिसके पास सिद्ध या अलौकिक शक्तिवाला रत्न हो [को०]।

सिद्धरस--संज्ञा पुं० [सं०] १. पारा। पारद। २. रसेंद्र दर्शन के अनुसार वह योगी जिससे पारा सिद्ध हो गया हो। सिद्ध रसायनी।

सिद्धरसायन--संज्ञा पुं० [सं०] वह रसोषध जिससे दीर्घ जीवन और प्रभूत शक्ति प्राप्त हो।

सिद्धलक्ष--वि० [सं०] जिसका निशाना खूब सधा हो। जो कभी न चूके।

सिद्धलक्ष्मी--संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी की एक विशेष मूर्ति [को०]।

सिद्धलोक--संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धों का आवास या लोक [को०]।

सिद्धवटी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।

सिद्धवर्ति--संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐंद्रजालिक या जादू की एक प्रकार की बत्ती [को०]।

सिद्धवस्ति--संज्ञा पुं० [सं०] तैल आदि की वस्ति या पिचकारी। (आयुर्वेद)।

सिद्धविद्या--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक महाविद्या का नाम।

सिद्धविनायक--संज्ञा पुं० [सं०] गणेश की एक मूर्ति।

सिद्धव्यंजन--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धव्यञ्जन] तपस्वी के वेश में गुप्तचर [को०]।

सिद्धशावरतंत्र--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धशावर तन्त्र] सावर तंत्र।

सिद्धशिला--संज्ञा स्त्री० [सं०] जैन मत के अनुसार ऊर्ध्वलोक का एक स्थान।

विशेष--कहते हैं कि यह शिला स्वर्गपुरी के ऊपर ४५ लाख योजन लंबी, इतनी ही चौड़ी तथा ८ योजन मोटी है। मोती के श्वेतहार या गोदुग्ध से भी उज्ज्वल है; सोने के समान दमकती हुई और स्फटिक से भी निर्मल हैं। यह चौदहवें लोक की शिखा पर है और इसके ऊपर शिवपुर धाम है। यहाँ मुक्त पुरुष रहते हैं। यहाँ किसी प्रकार का बंधन या दुःख नहीं हैं।

सिद्धसंकल्प--वि० [सं० सिद्धसङ्कल्प] जिसको सब कामनाएँ पूरी हों।

सिद्धसरित्--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आकाश गंगा। २. गंगा।

सिद्धसलिल--संज्ञा पुं० [सं०] काँजो। सिद्धजल।

सिद्धसाधक--संज्ञा पुं० [सं०] सब मनोरथ पूर्ण करनेवाला कल्प वृक्ष।

सिद्धसाधन--संज्ञा पुं० [सं०] १. सिद्धि के लिये योग या तंत्र की क्रिया या अनुष्ठान। २. तांत्रिक क्रियाओं की सिद्धि में काम आनेवाली वस्तु या पदार्थ (को०)। ३. सफेद सरसों। ४. प्रमाणित बात को फिर प्रमाणित करना।

सिद्धसाधित--वि० [सं०] जिसने व्यवहार द्वारा ही चिकित्सा आदि का अनुभव प्राप्त किया हो, शास्त्र के अध्ययन द्वारा नहीं।

सिद्धसाध्य[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का मंत्र। २. सबूत। प्रमाण (को०)।

सिद्धसाध्य[२]--वि० १. जो किया जानेवाला काम पूरा कर चुका हो। २. प्रमाणित। साबित।

सिद्धसारस्वत--वि० [सं०] जो सरस्वती को सिद्ध कर चुका हो [को०]।

सिद्धसिंधु--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धसिन्धु] आकाश गंगा। मंदाकिनी।

सिद्धसिद्ध--वि० [सं०] तंत्रसार के अनुसार विशेष प्रभाव कारक एक मंत्र [को०]।

सिद्धसुसिद्ध--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मंत्र।

सिद्धसेन--संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय।

सिद्धसेवित--संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव या भैरव का एक रूप। बटुक भैरव। २. वह जो सिद्धों द्वारा सेवित हो।

सिद्धस्थल--संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिद्धस्थली] वह स्थान जो सिद्ध या प्रभावकर हो।

सिद्धस्थाली--संज्ञा स्त्री० [सं०] सिद्ध योगियों की बटलोई जिसमें से आवश्यकतानुसार जो भी ईप्सित हो और जितना चाहे उतना भोजन निकाला जा सकता है।

विशेष--कहते हैं कि इस प्रकार की एक बटलोई व्यासजी ने पांडवों के बनवास के समय द्रौपदी को दी थी।

सिद्धहस्त--वि० [सं०] १. जिसका हाथ किसी काम में मँजा हो। २. कार्यकुशल। प्रवीण। निपुण।

सिद्धहस्तता--संज्ञा स्त्री० [सं०] निपुणता। प्रवीणता। कौशल। उ०--उसकी सिद्धहस्तता पर मैं मुग्ध हूँ।--कंठहार (भू०), पृ० १।

सिद्धांगना--संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धाङ्गना] सिद्ध नामक देवताओं की स्त्रियाँ। वह नारी जिसे सिद्धि प्राप्त हो।

सिद्धांजन--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धाञ्जन] वह अंजन जिसे आँख में लगा लेने से भूमि के नीचे की वस्तुएँ (गड़े खजाने आदि) भी दिखाई देने लगती हैं।

सिद्धांत--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धान्त] १. भलीभाँति सोच विचार कर स्थिर किया हुआ मत। वह बात जिसके सदा सत्य होने का निश्चय मन में हो। उसूल। २. प्रधान लक्ष्य। मुख्य उद्देश्य या अभिप्राय। ठीक मतलब। ३. वह बात जो विद्वानों या उनके किसी वर्ग या संप्रदाय द्वारा सत्य मानी जाती हो। मत।

विशेष--न्याय शास्त्र में सिद्धांत चार प्रकार के कहे गए हैं। सर्वतंत्र सिद्धांत, प्रतितंत्र सिद्धांत, अधिकरण सिद्धांत, और अभ्युपगम सिद्धांत। सर्वतंत्र वह सिद्धांत है जिसे विद्वानों के

सब वर्ग या संप्रदाय मानते हों अर्थात् जो सर्वसम्मत हो। प्रतितंत्र वह सिद्धांत है जिसे किसी शाखा के दार्शनिक मानते हों और किसी शाखा के विरोध करते हों। जैसे,—पुरुष या आत्मा असंख्य है, यह सांख्य का मत है, जिसका वेदांत विरोध करता है। अधिकरण वह सिद्धांत है जिसे मान लेने पर कुछ और सिद्धांत भी साथ मानने ही पड़ते हों - यह मानना ही पड़ता है कि आत्मा मन आदि इंद्रियों से पृथक् कोई सत्ता है। अभ्युपगम वह सिद्धांत है जो स्पष्ट रूप से कहा न गया हो, पर सब स्थलों को विचार करने से प्रकट होता हो। जैसे, न्यायसूत्रों में कहीं यह स्पष्ट नहीं कहा गया है कि मन भी एक इंद्रिय है, पर मन संबंधी सूत्रों का विचार करने पर यह बात प्रकट हो जाती है।

४. सम्मति। पक्की राय। ५. निर्णीत अर्थ या विषय। नतीजा। तत्व की बात।

क्रि० प्र०—निकलना।—निकालना।—पर पहुँचना।

६. पूर्व पक्ष के खंडन के उपरांत स्थिर मत। ७. किसी शास्त्र (ज्योतिष, गणित आदि) पर लिखी हुई कोई विशेष पुस्तक। जैसे,—सूर्य सिद्धांत, ब्रह्म सिद्धांत।

सिद्धांतकोटि—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धान्त कोटि] तर्क में निर्णायक स्थल [को०]।

सिद्धांतकौमुदी—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धान्त कौमुदी] पाणिनि के संस्कृत व्याकरण पर भट्टोजि दीक्षित द्वारा रचित एक प्रसिद्ध ग्रंथ।

सिद्धांतज्ञ—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धान्तज्ञ] सिद्धांत को जाननेवाला। तत्वज्ञ। विद्वान्।

सिद्धांतधर्मागम—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धान्त धर्मागम] परंपरा से आगत नियम। परंपरा प्राप्त विधि।

सिद्धांतपक्ष—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धान्त पक्ष] वाद में वह पक्ष जो तर्क संगत या सिद्धांत के रूप में मान्यता प्राप्त हो [को०]।

सिद्धांताचार—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धान्ताचार] तांत्रिकों का आचार। एकाग्र चित्त से शक्ति की उपासना।

सिद्धांतित—वि० [सं० सिद्धान्तित] तर्क द्वारा प्रमाणित। निर्णीत। निरूपित। साबित।

सिद्धांती—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धान्तिन्] १. आपत्तियों का निराकरण करते हुए अनुमान या पूर्व पक्ष की स्थापना करनेवाला। तार्किक। २. मीमांसा शास्त्र का अनुयायी। मीमांसक (को०)। ३. शास्त्र के तत्त्व को जाननेवाला।

सिद्धांतीय—वि० [सं० सिद्धान्तीय] सिद्धांत संबंधी।

सिद्धांबा संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धाम्बा] देवी दुर्गा [को०]।

सिद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिद्ध की स्त्री। देवांगना। २. एक योनि का नाम। ३. ऋद्धि नाम की जड़ी। ४. चंद्रशेखर के मत से आर्या छंद का १५ वाँ भेद, जिसमें १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं।

सिद्धाई—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्ध + हिं० आई] सिद्ध होने की अवस्था। सिद्धपन। सिद्धई। उ०—झूठ मूठ जटा बढ़ा कर सिद्धाई करते और जप पुरश्चरण आदि में फँसे रहते है। - दयानंद (शब्द०)।

सिद्धाचल—संज्ञा पुं० [सं०] काठियावाड़ में जैनियों का एक तीर्थ। उ०—सिद्धाचल दर्शण सुखद, आदीस्वर नौकार।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ५६।

सिद्धाज्ञ—वि० [सं०] जिसकी आज्ञा सिद्ध अर्थात् मानी जाती हो [को०]।

सिद्धादेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. द्रष्टा का अनागत वा भविष्यकथन। २. वह जा भविष्यकथन करता हो। भविष्यद्वक्ता [को०]।

सिद्धान्न—संज्ञा पुं० [सं०] पका या उबला हुआ अन्न [को०]।

सिद्धापगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिद्धों की नदी। आकाश गंगा। २. गंगा नदी।

सिद्धायिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी जो २४ बुद्धों के शासनांतर्गत है। अर्हंतों के आदेशांतर्गत एक देवी विशेष [को०]।

सिद्धारथ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धार्थ] राजा दशरथ का एक मंत्री। उ०—धृष्ट जयंती अरु विजय सिद्धारथ पुनि नाम। तथा अर्थ साधन अपर, त्यों अशोक मति धाम।—रघुराज (शब्द०)।

सिद्धारि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मंत्र।

सिद्धार्थ[१]—वि० [सं०] १. जिसकी कामनाएँ पूर्ण हो गई हों। सफल-मनोरथ। पूर्णकाम। २. जो लक्ष्य या सिद्धि तक ले जाय (को०)। ३. जिसका अर्थ या प्रयोजन ज्ञात हो। ज्ञाताभिप्राय (को०)।

सिद्धार्थ[२]—संज्ञा पुं० १. गौतम बुद्ध। २. स्कंद के गणों में से एक। ३. राजा दशरथ का एक मंत्री। ४. साठ संवत्सरों में से एक। ५. जैनों के २४ वें अर्हत् महावीर के पिता का नाम। ६. वह भवन जिसमें पश्चिम और दक्षिण ओर बड़ी शालाएँ (कमरे का हाल) हों। ७. श्वेत सर्षप या पीली सरसो (को०)। ८. शिव (को०)। ९. एक मारपुत्र (को०)। १०. बटी वृक्ष (को०)। ११. प्रसिद्ध अर्थ (को०)।

सिद्धार्थक—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्वेत सर्षप। सफेद सरसों। २. एक प्रकार का मरहम।

सिद्धार्थकारी—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धार्थकारिन्] शिव का एक नाम [को०]।

सिद्धार्थमति—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

सिद्धार्थमानी—वि० [सं० सिद्धार्थमानिन्] अपने को कृतकार्य या सफल मनोरथ माननेवाला [को०]।

सिद्धार्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जैनों के चौथे अर्हत् की माता का नाम। २. सफेद सरसों। ३. देशी अंजीर। ४. साठ संवत्सरों में से ५३ वें संवत्सर का नाम। ५. बटी वृक्ष (को०)।

सिद्धार्थी—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धार्थिन्] साठ संवत्सरों में से ५३ वें संवत्सर का नाम।

सिद्धासन—संज्ञा पुं० [सं०] हठ योग के ८४ आसनों में से एक प्रधान आसन।

विशेष—मलेंद्रिय और मूत्रेंद्रिय के बीच में बाएँ पैर का तलुवा तथा शिश्न के ऊपर दाहिना पैर और छाती के ऊपर चिबुक रखकर दोनों भौहों के मध्य भाग को देखना 'सिद्धासन' कहलाता है।

सिद्धि¹--संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सिद्धि²--संज्ञा स्त्री० १. काम का पूरा होना। पूर्णता। प्रयोजन निकलना। जैसे,--कार्य सिद्ध होना। २. सफलता। कृतकार्यता। कामयाबी। ३. लक्ष्यबेध। निशाना मारना। ४. परिशोध। बेबाकी। चुकता होना (ऋण का)। ५. प्रमाणित होना। साबित होना। ६. किसी बात का ठहराया जाना। निश्चय। पक्का होना। ७. निर्णय। फैसला। निबटारा। ८. हल होना। ९. परिपक्वता। पकना। सीझना। १०. वृद्धि। भाग्योदय। सुखसमृद्धि। ११. तप या योग के पूरे होने की अलौकिक शक्ति या संपन्नता। विभूति।

विशेष--योग की अष्टसिद्धियाँ प्रसिद्ध हैं--अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, और वशित्व। पुराणों में ये आठ सिद्धियाँ और बतलाई गई हैं - अंजन, गुटका, पादुका, धातुभेद, वेताल, वज्र, रसायन और योगिनी। सांख्य में सिद्धियाँ इस प्रकार कही गई हैं तार, सुतार, तारतार, रम्यक, आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक।

१२. मुक्ति। मोक्ष। १३. अद्भुत प्रवीणता। कौशल। निपुणता। कमाल। दक्षता। १४ प्रभाव। असर। १५. नाटक के छत्तीस लक्षणों में से एक जिससे अभिमत वस्तु की सिद्धि के लिये अनेक वस्तुओं का कथन होता है। जैसे,--कृष्ण में जो नीति थी, अर्जुन में जो विक्रम था, सब आपकी विजय के लिये आप में आ जाय। १५. ऋद्धि या वृद्धि नाम की ओषधि। १७. बुद्धि। १८. संगीत में एक श्रुति। १९. दुर्गा का एक नाम। २०. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म की पत्नी थी। २१. गणेश की दो स्त्रियों में से एक। २२. मेढ़ासिगी। २३. भाँग। विजया। २४. छप्पय छंद के ४१ वें भेद का नाम जिसमें ३० गुरु और ९२ लघु कुल १२२ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। २५. राजा जनक की पुत्रवधू। लक्ष्मीनिधि की पत्नी। २६. किसी नियम या विधि की वैधता (को०)। २७. समस्या का समाधान (को०)। २८. तत्परता (को०)। २९. सिद्धपादुका जिसे पहनकर जहाँ कहीं भी आवागमन किया जा सके (को०)। ३०. अंतर्धान। लोप (को०)। ३१. उत्तम प्रभाव। अच्छा असर (को०)।

सिद्धिक--संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धि से प्राप्त अलौकिक शक्ति [को०]।

सिद्धिकर--वि० [सं०] १. सिद्धि करनेवाला। सफलता दिलानेवाला। २. समृद्धिकारक [को०]।

सिद्धिकारक--वि० [सं०] १. प्रभावी। असर करनेवाला। २. दे० 'सिद्धिकर' [को०]।

सिद्धिकारण--संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धि या मुक्ति का कारण [को०]।

सिद्धिकारी--वि० [सं० सिद्धिकारिन्] सिद्धि करने या करानेवाला [को०]।

सिद्धि गुटिका(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गुटिका जिसकी सहायता से रसायन बनाया या इसी प्रकार की और कोई सिद्धि की जाती हो। उ०--सिद्धि गुटिका अब मो सँग कहा। भएउँ राँग सत हिय न रहा।--जायसी (शब्द०)।

सिद्धिद¹--वि० [सं०] १. सिद्धि देनेवाला। २. ईश्वर सायुज्य या मोक्ष देनेवाला (को०)।

सिद्धिद²--संज्ञा पुं० १. बटुक भैरव। २. शिव (को०)। ३. पुत्रजीव नाम का वृक्ष। ४. बड़ा शाल वृक्ष।

सिद्धिदर्शी--वि० [सं० सिद्धिदर्शिन्] १. भविष्य की सफलता या स्थिति का ज्ञान रखनेवाला [को०]।

सिद्धिदाता--संज्ञा पुं० [सं० सिद्धिदातृ] [स्त्री० सिद्धिदात्री] (सिद्धि देनेवाले) गणेश।

सिद्धिदात्री--संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक रूप। नव दुर्गा में अंतिम देवी [को०]।

सिद्धिप्रद--वि० [सं०] [वि० स्त्री० सिद्धिप्रदा] सिद्धि देनेवाला।

सिद्धिभूमि--संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ योग या तप शीघ्र सिद्ध होता हो।

सिद्धिमार्ग--संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धि प्राप्त करने का उपाय। २. सिद्ध लोक की प्राप्ति का मार्ग [को०]।

सिद्धियात्रिक--संज्ञा पुं० [सं०] वह यात्री जो योग की सिद्धि प्राप्त करने के लिये यात्रा करता हो।

सिद्धियोग--संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष में एक प्रकार का शुभ योग।

सिद्धियोगिनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक योगिनी का नाम।

सिद्धियोग्य--वि० [सं०] जो सिद्धि के लिये जरूरी हो [को०]।

सिद्धिरस--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिद्धरस'।

सिद्धिराज--संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

सिद्धिलाभ--संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धि का प्राप्त होना [को०]।

सिद्धिली--संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी पिपीलिका। छोटी चींटी।

सिद्धिवर्ति--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सिद्धवर्ति' [को०]।

सिद्धिविनायक--संज्ञा पुं० [सं०] गणेश की एक मूर्ति। सिद्धविनायक गणेश [को०]।

सिद्धिसाधक--संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद सरसों। २. दमनक। दौने का पौधा।

सिद्धिस्थान--संज्ञा पुं० [सं०] १. पुण्य स्थान। मोक्ष प्राप्ति का स्थान। तीर्थ। २. आयुर्वेद के ग्रंथ में चिकित्सा का प्रकरण।

सिद्धीश्वर--संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २, एक पुण्य क्षेत्र का नाम।

सिद्धेश्वर--संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सिद्धेश्वरी] १. बड़ा सिद्ध। महायोगी। उ०--सत्यनाथ आदिक सिद्धेश्वर। श्रीशैलादि बसैं श्री शंकर।--शंकरदिग्विजय (शब्द०)। २. शिव। महादेव। ३ गुलतुर्रा। शंखोदरी। ४. एक पर्वत का नाम। श्रीशैल नामक पर्वत (को०)।

सिद्धेश्वरी--संज्ञा स्त्री० [सं०] नव देवियों में एक का नाम [को०]।

सिद्धोदक--संज्ञा पुं० [सं०] १. काँजी। कांजिक। २. एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सिद्धौघ--संज्ञा पुं० [सं०] तांत्रिकों के गुरुओं का एक वर्ग। मंत्र शास्त्र के आचार्य।

विशेष—इस वर्ग के अंतर्गत ये पाँच योगी या ऋषि हैं—नारद, कश्यप, शंभु, भार्गव और कुलकौशिक।

सिद्धौषध—संज्ञा पुं० [सं०] अचूक दवा। अव्यर्थ ओषधि [को०]।

सिधंतⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धान्त] दे० 'सिद्धांत'। उ०—संन्यासी कहावै तो तूं तीन्यौ लोक न्यास करि, सुंदर परमहंस होइ या सिधंत है।—सुंदर ग्रं०, भा० २, पृ० ६१२।

सिधⓅ[१]—वि० [सं० सिद्ध] दे० 'सिद्ध'। उ०—कत तप कीन्ह छाड़ि कै राजू। आहर गएउ न भा सिध काजू।—जायसी ग्रं०, पृ० २५८।

सिध[२]—संज्ञा स्त्री० [देश०] चार हाथ की एक लंबी लकड़ी जिसमें सीढ़ी बँधी रहती है।

सिधⓅ[३]—संज्ञा पुं० [सं० सिद्ध] दे० 'सिद्ध'। जैसे,—सिधवर = श्रेष्ठ सिद्ध।

सिधरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

सिधवरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सिद्ध + वर] श्रेष्ठ सिद्ध। उच्च कोटि का सिद्ध। उ०—मुनिवर, सुरबर सिधवर जिते। बरषत कुसुम भरे मुद तिते।—नंद० ग्रं०, पृ० ३०६।

सिधवाई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीधा, सिधवाना] गाड़ी के पहिये निकालने के समय गाड़ी को उठाए रखने के लिये लगाई हुई टेक। २. दे० 'सिधाई'।

सिधवाना† क्रि० स० [हिं० सीधा] सीधा कराना।

सिधा†Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सिद्ध का बहुवचन] सिद्ध लोग। उ०—सुनो सिधा काया नगरी हृदय अस्थान।—रामानंद०, पृ० १३।

सिधाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीधा] सीधापन। सरलता।

सिधानाⓅ—क्रि० अ० [सं० सिद्ध (= दूर किया हुआ, हटाया हुआ) + हिं० आना (प्रत्य०)] सिधारना। जाना। गमन करना। प्रस्थान करना। चलना। उ०—(क) लायक हे भृगुनायक सो धनु सायक सौपि सुभाय सिधाए।—तुलसी (शब्द०)। (ख) चाहै न चंप कली की थली मलिनी नलिनी की दिशान सिधावै।—केशव (शब्द०)। (ग) उग्रसेन सब कुटुम लै ता ठौर सिधायो।—सूर (शब्द०)। २. †आगमन होना। आना।

सिधारना[१]—क्रि० अ० [हिं० सिधाना] १. जाना। गमन करना। प्रस्थान करना। बिदा होना। रवाना होना। उ०—(क) हरि बैकुंठ सिधारे पुनि ध्रुव आए अपने धाम। कीन्हों राज तीस षट वर्षन कीन्हे भक्तन काम।—सूर (शब्द०)। (ख) मुदित नयन फल पाइ गाइ गुन सुर सानद सिधारे।—तुलसी (शब्द०)। (ग) सूकर श्वान समेत सबै हरिचंद के सत्य सदेह सिधारे।—केशव (शब्द०)। २. मरना। स्वर्गवास होना। जैसे,—वे तो कल रात्रि में ही सिधार गए।

संयो० क्रि०—जाना।

सिधारनाⓅ†[२]—क्रि० स० [सं० सिद्ध + करण] दे० 'सुधारना'। उ०—आँगन हीरन साँजि सँवारो। छज्जनि मैं करि दंत सिधारो।—गुमान (शब्द०)।

सिधिⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धि] दे० 'सिद्धि'। उ०—कीरतिकूख मँजूष प्रगट भई सुख सोभा सिधि है हो।—घनानंद, पृ० ६५६।

सिधिगुटका—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धि + गुटिका] दे० 'सिद्धि गुटिका'। उ०—सिधि गुटिका अब मो सँग कहा। भएउँ राग सन हिय न रहा।—जायसी (शब्द०)।

सिधु—संज्ञा पुं० [सं० सीधु] दे० 'सीधु'।

सिधोई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीधा] दे० 'सिधवाई'।

सिधोसामान†—संज्ञा पुं० [हिं० सीधा + सामान, गुज०] सीधा सामान। भोजन सामग्री। सीधा। रसद। उ०—पाछें बजार तें सिधोसामान आयो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ११०।

सिध्म[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुष्ठ रोग। २. कोढ़ का दाग। ३. खाज। विचर्चिका। खुजली [को०]।

सिध्म[२]—वि० १. सफेद दागवाला। २. श्वेत कुष्ठवाला।

सिध्मपुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेंहुआ। छीप। किलास।

सिध्मल—वि० [सं०] १. छीटा रोगवाला। सेहुँएवाला। २. जिसको कोढ़ हो। कोढ़ के चिह्नों से युक्त (को०)।

सिध्मला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूखी मछली। २. एक प्रकार का कुष्ठ रोग (को०)।

सिध्मवान्—वि० [सं० सिध्मवत्] दे० 'सिध्मल' [को०]।

सिध्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुष्ठ रोग। २. कोढ़ का दाग या धब्बा। ३. कासश्वास [को०]।

सिध्य—संज्ञा पुं० [सं०] पुष्य नक्षत्र।

सिध्र[१]—वि० [सं०] १. साधु। श्रेष्ठ। उत्तम। २. त्राता। रक्षक (को०)। ३. सफल। असर करनेवाला।

सिध्र[२]—संज्ञा पुं० १. वृक्ष। पेड़। २. साधु। सत्पुरुष [को०]।

सिध्रक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वृक्ष।

सिध्रकावण—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के एक उद्यान का नाम [को०]।

सिन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर। देह। २. वस्त्र। पहनावा। ३. ग्रास। कौर। ४. कुंभी का पेड़ जो हिमालय की तराई में होता है और जिसकी छाल का काढ़ा आम और अतीसार में दिया जाता है।

सिन[२]—वि० १. काना। एक आँख का। २. सित। श्वेत।

सिन[३]—संज्ञा पुं० [अ०] उम्र। अवस्था। वयस। उ०—कहाँ यह जवानी फिर य सिन।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४०८। २. दशन। दंत। दाँत (को०)।

यौ०—सिनरसीद = वृद्ध। गतायु। बूढ़ा। सिनरसीदी = बुढ़ौती। बुढ़ापा। वृद्धावस्था।

मुहा०—सिन को पहुँचना = सयाना होना। वयस्क होना। सिन या सिन से उतरना = जवानी ढलना।

सिनक—संज्ञा स्त्री० [सं० सिङ्घाणक] कपाल के केशों आदि का मल जो नाक से निकलता हो। रेंट। नेटा।

सिनकना—क्रि० स० [सं० सिङ्घाणक, हिं० सिनक + ना] जोर से हवा निकाल कर नाक का मल बाहर फेंकना। साँस के झोंके से नाक से रेंट निकालना।

संयो० क्रि० -देना।

सिनट—संज्ञा पुं० [अं० सेनेट] १. शासन का समस्त अधिकार रखनेवाली सभा। २. विश्वविद्यालय का प्रबंध करनेवाली सभा।

सिना—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दे० 'सिनान' [को०]।

यौ०—सिनाकश = तीरंदाज। धनुर्धर।

सिनान—संज्ञा स्त्री० [फा० सिनाँ] १. बाण की नोक। अनी। २, बरछा। भाला। ३. बरछी की नोक [को०]।

सिनिवाली(५)—संज्ञा स्त्री० [सं० सिनीवाली] एक नदी। दे० 'सिनीवाली'—५। उ०—सिनिवाली, रजनी, कुहू, मंदा, राका, जानु। सरस्वती अरु जनुमती सातो नदी बखानु।—केशव (शब्द०)।

सिनी—संज्ञा पुं० [सं० शिनि] १. एक यादव का नाम जो सात्यकि का पिता था। उ०—सिनि स्यंदन चढ़ि चलेउ लाइ चंदन जदुनंदन। —गोपाल (शब्द०)। २. क्षत्रियों की एक प्राचीन शाखा।

सिनी[२]—संज्ञा पुं० [सं० शिनि] एक यादव वीर। विशेष दे० 'शिनि'—३। उ०—चलेउ सिनीपति विदित धीर धरनीपति अति मति।—गोपाल (शब्द०)।

यौ०—सिनीपति = क्षत्रियों की एक प्राचीन शाखा का प्रधान। विशेष दे० 'शिनि'—३।

सिनी[३]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. 'सिनीवाली'। २. गौर वर्ण की स्त्री (को०)।

सिनीत—संज्ञा स्त्री० [देश०] सात रस्सियों को बटकर बनाई गई चिपटी रस्सी। (लश्करी)।

सिनीवाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वैदिक देवी, मंत्रों में जिसका आह्वान सरस्वती आदि के साथ मिलता है।

विशेष—ऋग्वेद में यह चौड़ी कटिवाली, सुंदर भुजाओं और उँगलियोंवाली कही गई है और गर्भप्रसव की अधिष्ठात्री देवी मानी गई है। अथर्ववेद में सिनीवाली को विष्णु की पत्नी कहा है। पीछे की श्रुतियों में जिस प्रकार राका शुक्ल पक्ष की द्वितीया की अधिष्ठात्री देवी कही गई है, उसी प्रकार सिनीवाली शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा की, जब कि नया चंद्रमा प्रत्यक्ष निकला नहीं दिखाई देता, देवी बताई गई है।

२. शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा। ३. अंगिरा की एक पुत्री का नाम। ४. दुर्गा। ५. मार्कंडेय पुराण में वर्णित एक नदी का नाम।

सिनेट—संज्ञा स्त्री० [अं० सेनेट] दे० 'सिनट'।

सिनेमा—संज्ञा पुं० [अं०] १, वह मकान जहाँ बायस्कोप दिखाया जाता है। २. छाया चित्र। चल चित्र।

यौ०—सिनेमाघर, सिनेमा हाउस = वह स्थान जहाँ सिनेमा दिखाया जाय।

सिनेरियो—संज्ञा स्त्री० [अं०] पटकथा। किसी कहानी का नाटच रूप। उ०—कौन सिनेरियो लिखता और किसे डायलॉग का ठेका मिलता।—तारिका, पृ० २४।

सिनेह(५)†—संज्ञा पुं० [सं० स्नेह] दे० 'स्नेह'। उ०—(क) खत कुमेढ़ा सन बुझल सिनेह।—विद्यापति, पृ० ५६३। (ख) सिनेह और ममता का भूखा।—नई०, पृ० ८१।

सिनो—संज्ञा पुं० [देश०] खेत की पहली जोताई।

सिन्न—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सिन[३]'।

सिन्नी†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शीरीनी] १. मिठाई। २. बताशे या मिठाई जो किसी खुशी में बाँटी जाय। ३. बताशे या मिठाई जो किसी पीर या देवता को चढ़ाकर प्रसाद की तरह बाँटी जाय।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।—बाँटना।—मानना।

सिपर—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वार रोकने का हथियार। ढाल। उ०—तूल झूल, लाल तूल लाल तल तूल नौल डील, तूल नील सैल माथ पै सिपर है।—गिरधर (शब्द०)।

मुहा०—सिपर डालना, सिपर फेंकना = लड़ाई में हथियार डाल देना। पराजय स्वीकार कर लेना। सिपर मुँह पर लेना, सिपर लेना = आघात से बचाव के लिये ढाल को आगे करना।

यौ०—सिपर अंदाजी = हार मान लेना।

सिपरा—संज्ञा स्त्री० [सं० सिप्रा] दे० 'सिप्रा'।

सिपह—संज्ञा पुं० [फ़ा०] 'सिपाह' का लघु रूप। सेना। फौज [को०]।

यौ०—सिपहगरी, सिपहदार = सेनानायक। सेनापति। सिपहबद, सिपहबुद = सिपहसालार।

सिपहगरी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सिपाही का काम। युद्ध व्यवसाय।

सिपहसालार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] फौज का सबसे बड़ा अफसर। सेनापति। सेनानायक।

सिपहसालारी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सेनापतित्व। सिपहसालार का कार्य [को०]।

सिपाई‡—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिपाही] दे० 'सिपाही'। उ०—कह्यो सिपाई अबहिं चोराई। इतै भागि अत्र कह सिर नाई।—रघुराज (शब्द०)।

सिपारस‡—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सिफारिश] दे० 'सिफारिश'। उ०—इतिय सिपारस आसु किय, देव करण लघु भाय। सुनत भूप परिमाल कहि, बिस्वा लेहु बुलाय।—प० रासो, पृ० ३०।

सिपारसी‡—वि० [फ़ा० सिफारिशी] दे० 'सिफारशी'। उ०—सिपारसी डरपुकने सिट्टू बोलैं बात अकासी।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ३३३।

सिपारह—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिपारह] दे० 'सिपारा'। उ०—नमै निज साइय पंच बपत्त। सिपारह तीस पढ़ै दिन रत्त।—पृ० रा०, ६।६७।

सिपारा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिपारह] मुसलमानों के धर्मग्रंथ कुरान के तीस भागों में से कोई एक।

विशेष—कुरान तीस भागों में विभक्त किया गया है जिनमें से प्रत्येक सिपारा कहलाता है।

सिपारी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सुपारी। डली। छालिया [को०]।

सिपाव—संज्ञा पुं० [फ़ा० सेहपाव] लकड़ी की एक प्रकार की टिकठी या तीन पायों का ढाँचा जो छकड़े आदि में आगे की ओर अड़ान के लिये दिया जाता है।

सिपावा भाथी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सेहपाव + हि० भाथी] लोहारों की हाथ से चलाई जानेवाली धौंकनी।

सिपास—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. धन्यवाद। शुक्रिया। कृतज्ञताप्रकाशन। २. प्रशंसा। बडाई। स्तुति।

यौ०—सिपासगुजार, सिपासगो = स्तुतिपाठक। प्रशंसक। सिपासनामा।

सिपासनामा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिपासनामह्] १. बिदाई के समय का अभिनंदनपत्र। २. प्रतिष्ठापत्र। मानपत्र।

सिपाह—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] फौज। सेना। कटक। लश्कर। उ०—अरि जय चाह चले संगर उछाह रेल विविध सिपाह हमराह जदुनाह के।—गोपाल (शब्द०)।

सिपाहगरी, सिपाहगिरी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सिपाही का काम या पेशा। अस्त्र व्यवसाय। २. शूरता। बहादुरी (को०)।

सिपाहियाना—वि० [फ़ा० सिपाहियानह्] १. सिपाहियों का सा। सैनिकों का सा। जैसे,—सिपाहियाना ढंग, सिपाहियाना ठाट। २. वीरतापूर्ण। शौर्ययुक्त। बहादुराना (को०)।

सिपाही—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सैनिक। लड़नेवाला। शूर। योद्धा। फौजी आदमी। २. कांस्टेबिल। पुलिस। तिलंगा। ३. चपरासी। अरदली।

सिपुर्द‡—वि० [फ़ा० सिपुर्द] सौंपा हुआ। हवाले किया हुआ। दे० 'सुपुर्द'।

सिपुर्दगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सिपुर्द करना। सौंपना। २. हवालात। हिरासत [को०]।

सिपुर्दा—वि० [फ़ा० सिपुर्दह्] सौंपा हुआ। हस्तांतरित [को०]।

सिपेद—वि० [फ़ा०] श्वेत। सफेद [को०]।

सिपेद—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिपेदह्] सफेदी। धवलिमा [को०]।

सिप्पर(पु)—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सिपर] दे० 'सिपर'। उ०—झम झमत सिप्पर सेल साँगरु जिरह जग्गो दीसियं। मनु सहित उड़गन नव ग्रहनु मिल जुद्ध रक्कि वरीसियं।—सुजान (शब्द०)।

सिप्पा—संज्ञा पुं० [देश०] १. निशाने पर किया हुआ वार। लक्ष्यबेध। २. कार्य साधन का उपाय। डौल। युक्ति। तदबीर। टिप्पस।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाता।

मुहा०—सिप्पा लड़ना या भिड़ना = (१) युक्ति या तदबीर होना। अभिसंधि होना। (२) युक्ति सफल होना। इधर उधर की कोशिश कामयाब होना। सिप्पा भिड़ाना या लड़ाना = युक्ति या तदबीर करना। लोगों से मिलकर उन्हें कार्यसाधन में सहायक बनाना। इधर उधरकर कहसुनकर कोशिश करना। जैसे—जगह के लिये उसने बहुत सिप्पा लड़ाया पर न मिली।

३. डौल। सूत्रपात। प्रारंभिक कार्रवाई।

मुहा०—सिप्पा जमाना = डौल खडा करना। किसी काम की नींव देना। किसी कार्य के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करना। भूमिका बाँधना।

४. रंग। प्रभाव। धाक।

क्रि० प्र०—जमना। जमाना।

सिप्पी†—संज्ञा स्त्री० [हि० सीपी] दे० 'सीपी'।

सिप्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुधांशु। चंद्र। २. एक सरोवर का नाम। ३. पसीना। प्रस्वेद [को०]।

सिप्रा—संज्ञा पुं० [सं०] १. महिषी। भैंस। २. एक झील। ३. स्त्रियों का कटिबंध। ४. मालवा की एक नदी जिसके किनारे उज्जैन (प्राचीन उज्जयिनी) बसा है। शिप्रा।

सिफत—संज्ञा स्त्री० [अ० सिफ़त] १. विशेषता। गुण। उ०—जबान बिना क्या सिफत आवै।—पलटू०, पृ० ६३। २. लक्षण। उ०—भला मखलूक खालिक की सिफत समझे कहाँ कुदरत। इसी से नेति नेति से पार वेदों ने पुकारा है।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ८५१। ३. स्वभाव। ४. प्रशंसा। स्तुति (को०)। ५. सूरत। शक्ल।

सिफति(पु)†—संज्ञा स्त्री० [अ० सिफ़त] गुणगान। स्तुति। प्रशस्ति। उ०—सिफति करौं दिन राति टारे ना टरौंगा।—पलटू०, पृ० ८६।

सिफर—संज्ञा पुं० [अ० सिफ़र, अं० साइफ़र, सिफ़र] १. शून्य। सुन्ना। बिंदी। २. रिक्त, साधारण या तुच्छ व्यक्ति (को०)।

सिफलगी—संज्ञा स्त्री० [अ०सिफ़लह् + फ़ा० गी] ओछापन। कमीनापन।

सिफला—वि० [अ० सिफ़लह्, सिफ़्लह्] १. नीच। कमीना। २. छिछोरा। ओछा।

यौ०—सिफलाकार = निम्न कोटि के काम करनेवाला। सिफलाखूँ = 'दे० सिफलामिजाज'। सिफलानवाज = नीचों, छिछोरों को उत्साहित करनेवाला। सिफलापन। सिफलापरवर = सिफलानवाज। सिफलामिजाज = क्षुद्र प्रकृतिवाला। निम्न स्वभाव का।

सिफलापन—संज्ञा पुं० [अ० सिफ़लह् + हिं० पन (प्रत्य०)] १. छिछोरापन। ओछापन। २. पाजीपन।

सिफा—संज्ञा स्त्री० [अ० शिफ़] दे० 'शिफा'।

सिफात[1]—संज्ञा स्त्री० [अ० सिफ़ात] सिफ़त का बहुवचन। उ०—अलख सबै नापै कहौ लखौ कौन बिधि जाइ। पाक जात की रसिकनिधि जगत सिफात दिखाइ।—स० सप्तक, पृ० १७६।

सिफाती—वि० [अ० सिफ़ाती] १. जो सहज या स्वाभाविक न हो। जो अभ्यास आदि से प्राप्त हो। २. सिफत से संबद्ध। गुण आदि से संबद्ध। उ०—सिफाती सिजदा करै जाती बेपरवाह। दादू०, पृ० ३५०।

सिफारत—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सिफ़ारत] १. दौत्य। दूत कार्य। २. किसी राज्य का प्रतिनिधिमंडल [को०]।

सिफारतखाना—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिफ़ारतखानह्] दूतावास। दूत के रहने तथा कार्य करने का स्थान [को०]।

सिफारश—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिफ़ारिश] दे० 'सिफारिश'। उ०—इस्का लेन देन डेढ़ पौने दो बरस से एक दोस्त की सिफारश

पर लाला मदन मोहन के यहाँ हुआ है।—श्रीनिवास ग्रं०, पृ० १६४।

सिफारिश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सिफ़ारिश] १. किसी के दोष क्षमा करने के लिये किसी से कहना सुनना। २. किसी के पक्ष में कुछ कहना सुनना। किसी का कार्य सिद्ध करने के लिये किसी से अनुरोध। ३. माध्यम। जरिया। वसीला। ४. नौकरी देनेवाले से किसी नौकरी चाहनेवाले की तारीफ। नौकरी दिलाने के लिये किसी की प्रशंसा। जैसे,—नौकरी तो सिफारिश से मिलती है। ५. संस्तुति।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सिफारिशनामा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिफ़ारिशनामह्] सिफारिशी पत्र या चीठी।

सिफारिशी वि० [फ़ा० सिफ़ारिशी] १. सिफारिशवाला। जिसमें सिफारिश हो। जैसे,—सिफारिशी चिट्ठी। २. जिसकी सिफारिश की गई हो। जैसे,—सिफारिशी टट्टू। ३. अनुशंसा या सिफारिश करनेवाला।

सिफारिशी टट्टू—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिफ़ारिशी+हिं० टट्टू] वह जो केवल सिफारिश या खुशामद से किसी पद पर पहुँचा हो।

सिफाल—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सिफ़ाल] १. मिट्टी का बरतन। मृत्पात्र। २. मिट्टी का ठीकरा [को०]।

सिफालगर वि० [फ़ा० सिफ़ालगर] मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्हार [को०]।

सिफाली—वि० [फ़ा० सिफ़ाली] मिट्टी का। मृत्तिकानिर्मित। मिट्टी का बना हुआ [को०]।

सिफ्त, सिफ्तिⓅ—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सिफ़त] दे० 'सिफत'। उ०—(क) खुदा तुज को शाही सजावार है। सिफत को तेरी कुछ न आकार है।—दक्खिनी०, पृ० २९९। (ख) भी सुंदर कहि न सकै कोइ तिसनौ जिसदी सिफ्ति अलेषै।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० २७५।

सिबिकाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० शिविका] दे० 'शिविका'। उ०—सिबिका सुभग ओहार उघारी।—मानस, १।३४८।

सिमंतⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सीमन्त] दे० 'सीमंत'। उ०—स्याम के सीम सिमंत सराहि सनाल सरोज फिराइ कै मारो।—मन्नालाल (शब्द०)।

सिम—वि० [सं०] प्रत्येक। संपूर्ण। समग्र। समस्त [को०]।

सिमई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिँवई] दे० 'सिवँई,' 'सिवैंयाँ'।

सिमट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिमटना] सिमटने की क्रिया या भाव।

सिमटना—क्रि० अ० [सं० समित (=एकत्र)+हिं० ना (प्रत्य०) या देश०] १. दूर तक फैली हुई वस्तु का थोड़े स्थान में आ जाना। सुकड़ना। संकुचित होना। २. शिकन पड़ना। सलवट पड़ना। ३. इधर उधर बिखरी हुई वस्तु का एक स्थान पर एकत्र होना। बटोरा जाना। बटुरना। इकट्ठा होना। ४. व्यवस्थित होना। तरतीब से लगना। ५. पूरा होना। निबटना। जैसे,—सारा काम सिमट गया। ६. संकुचित होना। लज्जित होना। ७. सहमना। सिटपिटा जाना।

संयो० क्रि०—जाना।

सिमटी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा जिसकी बुनावट खेस के समान होती है।

सिमरⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मलि ?] सेमर। विशेष दे० 'सेमल'। उ०—चंदन भरम सिमर आलिंगल सालि रहल हिय काटे।—विद्यापति, पृ० ९१।

सिमरख‡—संज्ञा पुं० [फ़ा० संगर्फ़] दे० 'शिंगरफ'।

सिमरगोला—संज्ञा पुं० [सिमर ? + गोला] एक प्रकार की मेहराब।

सिमरनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्मरण] याद करना। स्मरण। स्मृति।

सिमरना†—क्रि० स० [सं० स्मरण] दे० 'सुमिरना'। उ०—(क) राम नाम का सिमरनु छोड़िया माजा हाथ बिकाना।—तेग बहादुर (शब्द०)। (ख) सिमरे जो एक बार ताको राम बार बार बिसरे बिसारे नाहीं सो क्यों बिसराइये।—हृदयराम (शब्द०)।

सिमरिख—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

सिमल—संज्ञा पुं० [सं० सीर (=हल)+माला] १. हल का जूआ। २. जूए में पड़ी हुई खूँटी।

सिमला आलू—संज्ञा पुं० [हिं० शिमला+आलू] एक प्रकार का पहाड़ी बड़ा आलू। मरबुली।

सिमसिम—वि० [?] जो कुछ कुछ आर्द्र या शीतल हो।

सिमसिमाना—क्रि० अ० [?] साधारण आर्द्रता या शीतलता प्रतीत होना।

सिमाना†[१]—संज्ञा पुं० [सं० सीमान्त] सिवाना। हद।

सिमानाⓅ[२]—क्रि० स० [हिं० सिलाना] दे० 'सिलाना'। उ०—लाओ बेगि याही छन मन को प्रवीन जानि लायो दुख मानि ब्योंत लई सो सिमाइ कै।—नाभा (शब्द०)।

सिमिटनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० समित+हिं० ना (प्रत्य०) या देश०] दे० 'सिमटना'। उ०—(क) यह सुनि जहाँ तहाँ ते सिमिटैं आइ होइ इक ठौर।—सूर (शब्द०)। (ख) जलचर बृंद जाल अंतरगत सिमिटि होत एक पास। एकहि एक खात लालच बस नहिं देखत निज नास।—तुलसी (शब्द०)।

सिमृतिⓅ‡—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] दे० 'स्मृति'। उ०—द्रुपद सुता को लज्जा राखी। बेद पुरान सिमृति सब साखी।—लाल कवि (शब्द०)।

सिमेंट—संज्ञा पुं० [अं० सीमेंट] १. एक विशेष प्रकार के पत्थर का विशिष्ट प्रक्रिया से तैयार किया हुआ चूर्ण जो पलस्तर आदि करने के काम में आता है। २. एक प्रकार का लसदार गारा जो सूखने पर बहुत कड़ा और मजबूत हो जाता है।

सिमेटनाⓅ†—क्रि० स० [सं० समित+हिं० ना] दे० 'समेटना'।

सिम्त—संज्ञा स्त्री० [अ०] ओर। तरफ। दिशा। उ०—इस हिंद से सब दूर हुई कुफ्र की जुल्मत, की तूने व रहमत, नक्कारए ईमाँ को हरेक सिम्त बजाया।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ५३०।

सियⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] सीता। जानकी। उ०—उपदेश यह जेहि तात तुम तें राम सिय सुख पावहीं।—तुलसी (शब्द०)।

सियनाⓅ¹—क्रि० स० [सं० सृजन] उत्पन्न करना। रचना। उ०—जेहि बिरंचि रचि सीय सँवरि औ रामहिं ऐसो रूप दियो री। तुलसिदास तेहि चतुर बिधाता निज कर यह संजोग सियो री।—तुलसी (शब्द०)।

सियना†²—क्रि० स० [सं० सीवन] दे० 'सीना'।

सियरⓅ—वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअल] दे० 'सियरा'। उ०—पदुमावति तन सियर सुवासा। नैहर राज कंत पर पासा।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० ३४६।

सियराⓅ¹—वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअड़] [स्त्री० सियरी] १. ठंढा। शीतल। उ०—(क) श्याम सुपेत कि राता पियरा अबरण बरण कि ताता सियरा।—कबीर (शब्द०)। (ख) सियरे बदन सूखि गए कैसे। परसत तुहिन तामरस जैसे।—तुलसी (शब्द०)। २. कच्चा। ३. छाया। छाँह।

सियरा²†—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल, प्रा० सिआल] सियार। शृगाल।

सियराईⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल, प्रा० सीअल, हिं० सियरा+ई (प्रत्य०)] शीतलता। ठंढक। उ०—मुकुलित कुसुम नयन निद्रा तजि रूप सुधा सियराई।—सूर (शब्द०)।

सियरानाⓅ—क्रि० अ० [हिं० सियरा+ना] ठंढा होना। जुड़ाना। शीतल होना। उ०—(क) हारन सो हहरात हियो मुकुता सियरात सुवेसर ही को।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) पादप पुहुमि नव पल्लव ते पूरि आए हरि आए सियराए भाए ते शुमार ना।—रघुराज (शब्द०)।

सियरी¹—वि० [सं० शीतल] दे० 'सियरा'। उ०—(क) लोचे परी सियरी पर्यंक पै बीती घरीन खरी खरी सोचै।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) खरे उपचार खरी सियरी सियरे तैं खरोई खरो तन छीजै।—केशव (शब्द०)।

सियरी²—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सैरी] तृप्ति। अघाव। शांति। मनस्तोष। तुष्टि। उ०—मैं तुम्हारा दिल लेने के लिये कहती थी। मर्दों की तो कैफियत यह है कि एक दर्जन भर भी औरतें हों तो भी उनकी सियरी नहीं होती।—सैर०, पृ० २५।

सियह—वि० [फ़ा०] दे० 'सियाह'। उ०—मुझे तेरी जुल्फों का ध्यान आ गया। जो देखी सियह सिर पै छाई घटा।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ४६०।

सिया—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] सीता। जानकी। उ०—तब अंगद इक बचन कह्यो। तो करि सिंधु सिया सुधि लावै किहिं बल इतो लह्यो।—सूर (शब्द०)।

सियाक—संज्ञा पुं० [अ० सियाक़] १. गणित। हिसाब। २. चलाना। ३. बाज के पैर की डोर [को०]।

सियादत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सैयद होने का भाव। २. प्रतिष्ठा। बुजुर्गी। ३. सरदारी। अध्यक्षता [को०]।

सियाना†¹—वि० [सं० सज्ञान, सण्णाण] दे० 'सयाना'। उ०—सो सतगुरु जो होय सियाना।—कबीर सा०, पृ० १६००।

सियाना²—क्रि० स० [सं० सीवन] दे० 'सिलाना'।

सियानी†—वि० [सं० सज्ञाना] १. चतुर। बुद्धिमती। अनुभवी। उ०—पाँच सखी मिलि देखन आईं एक ते एक सियानी।—कबीर० सा० सं०, पृष्ठ ३१। २. वयस्का। वयप्राप्त। युवती। उ०—देखते देखते सियानी होने लगी।—फूलो०, पृ० २१६।

सियानोब—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

सियापा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सियाहपोश] मरे हुए मनुष्य के शोक में कुछ काल तक बहुत सी स्त्रियों के प्रतिदिन इकट्ठा होकर रोने की रीति। मातम।

विशेष—यह रिवाज पंजाब आदि पश्चिमी प्रांतों में पाया जाता है।

सियार†—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल, प्रा० सिआड़] [स्त्री० सियारी, सियारिन] गीदड़। जंबुक।

सियार लाठी—संज्ञा पुं० [देश०] अमलतास।

सियारा¹—संज्ञा पुं० [सं० सीता (=कर्षणचिह्न), प्रा० सीआ+रा (प्रत्य०)] जुती हुई जमीन बराबर करने का लकड़ी का फावड़ा।

सियारा²—संज्ञा पुं० [सं० शीतकाल] दे० 'सियाला'।

सियारी—संज्ञा स्त्री० [सं० शृगाली] दे० 'सियार'।

सियालⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] शृगाल। गीदड़। उ०—चहुँ दिसि सूर सोर करि धावै ज्यों केहरिहिं सियाल।—सूर (शब्द०)।

सियाला¹—संज्ञा पुं० [सं० शीतकाल] शीतकाल। जाड़े का मौसिम।

सियाला²—संज्ञा पुं० [सं० सीता, प्रा० सीया+ला (प्रत्य०)] दे० 'सियारा'।

सियाला पोका—संज्ञा पुं० [हिं० सियारा (=शीतयुक्त, आर्द्र) (?)+पोका (=कीड़ा)] एक बहुत छोटा कीड़ा जो सफेद चिपटे कोश के भीतर रहता है और पुरानी लोनी मिट्टीवाली दीवारों पर मिलता है। लोना पोका।

सियाली¹—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का विदारी कंद।

सियाली²—वि० [सं० शीतकालीन] १. जाड़े के मौसिम की। २. खरीफ की फसल।

सियावड़—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सियावड़ी'।

सियावड़ी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. अनाज का वह हिस्सा जो खेत कटने पर खलियान में से साधुओं के निमित्त निकाला जाता है। २. वह काली हाँड़ी जो खेतों में चिड़ियों को डराने और फसल को नजर में बचाने के लिये रखी जाती है।

सियासत¹—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. देश का शासन प्रबंध तथा व्यवस्था। २. नीति। कूटनीति। राजनीति (को०)। ३. छल। फरेब। धूर्तता। मक्कारी (को०)। ४. डाँट डपट। चेतावनी (को०)। ५. दंड। सजा (को०)।

सियासत[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शास्ति] १. शासन । दंड । पीड़न । २. कष्ट । यंत्रणा ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

यौ०—सियासतगर = दंड देनेवाला । सियासतगाह = (१) दंड देने का स्थान । (२) मक्कारी का अड्डा । सियासतदाँ = नीतिज्ञ । राजनीति में पटु ।

सियासी—वि० [फ़ा०] १. राजनीति संबंधी । राजनीति का । २. राजनीतिज्ञ [को०] ।

सियाह[१]—वि० [फ़ा०] १. दे० 'स्याह' । २. अशुभ । मातमी ।

यौ०—सियाहकार = दुश्चरित्र । गुनाहगार । सियाहकारी = गुनाह । बुरा काम । सियाहगोश । सियाहचश्म = (१) जिसकी आँखें काली हों । (२) बेवफा । (३) शिकारी चिड़िया । सियाहजबाँ = जिसका शाप तुरत सिद्ध हो । सियाहदस्त = कंजूस । कृपण । सियाहदाना = (१) स्याहदाना । काला जीरा । (२) धनियाँ । (३) सौंफ का फूल । सियाहदिल = (१) निष्ठुर । क्रूर । (२) गुनाहगार । अपराधी । सियाहपोश = (१) काले कपड़े पहननेवाला । (२) मातम या शोक मनानेवाला । सियाहवक्त = अभागा । बदकिस्मत । सियाहबख्ती = दुर्भाग्य । अभाग्य । सियाहमस्त = मदमत्त । नशे में चूर । सियाहमस्ती = अत्यधिक मस्ती । सियाहरू = (१) पापी । बदकार । (२) काले मुँह का । कृष्णमुख । सियाहसफेद = हित अहित । बुराई भलाई ।

सियाह[२]—संज्ञा पुं० [अ०] १. चीख पुकार । बावेला । चिल्लाहट । २. जोर की आवाज । निनाद । ३. रोना पीटना [को०] ।

सियाहगोश—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. काले कानवाला । २. बिल्ली की जाति का एक जंगली जानवर । बनबिलाव ।

विशेष—इसके अंग लंबे होते हैं, पूँछ पर बालों का गुच्छा होता है और रंग भूरा होता है । खोपड़ी छोटी और दाँत लंबे होते हैं । कान बाहर की ओर काले और भीतर की ओर सफेद होते हैं । इसकी लंबाई प्राय: ४० इंच होती है । यह घास की झाड़ियों में रहता और चिड़ियों को मारकर खाता है । इसकी कुदान पाँच से छह फुट तक की होती है । यह सारस और तीतर का शत्रु है । यह बड़ी सुगमता से पाला और चिड़ियों का शिकार करने के लिये सिखाया जा सकता है । इसे अमीर लोग शिकार के लिये रखते हैं ।

सियाहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. देश देश घूमना । पर्यटन । २. यात्रा । सफर [को०] ।

सियाहपोश—वि० [फ़ा० सियाह + पोश] १. काला या नीला कपड़ा पहननेवाला । २. अशुभ या भद्दा पोशाक पहने हुए । उ०—हरवक्त सियाहपोश मूँ में लूको लगाए ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १५५ ।

सियाहा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सियाहह्] १. आय व्यय की बही । रोजनामचा । बही खाता । २. सरकारी खजाने का वह रजिस्टर जिसमें जमींदारी से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है । ३. वह सूची जिसमें काश्तकारों से प्राप्त लगान दर्ज करते हैं ।

मुहा०—सियाहा करना = हिसाब की किताब में लिखना । टाँकना । चढ़ाना । सियाहा होना = सियाहा में दर्ज होना । लिखा जाना ।

सियाहानवीस—संज्ञा पुं० [फ़ा०] सियाहा का लिखनेवाला । सरकारी खजाने में सियाहा लिखने के लिये नियुक्त कर्मचारी ।

सियाही—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दे० 'स्याही' ।

यौ०—सियाहीचट, सियाहीसोख = सोखता । ब्लाटिंग पेपर ।

सिरंग(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सिर] शीर्ष अंग । दे० 'सिर' । उ०—सेंतीस सहस सज्जे फिरंग । तिन लंब झूल टोपी सिरंग । —पृ० रा०, १३।१८ ।

सिर[१]—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्] १. शरीर के सबसे अगले या ऊपरी भाग का गोल तल जिसके भीतर मस्तिष्क रहता है । कपाल । खोपड़ी । २. शरीर का सबसे अगला या ऊपर का गोल या लंबोतरा अंग जिसमें आँख, कान, नाक और मुँह ये प्रधान अवयव होते हैं और जो गरदन के द्वारा धड़ से जुड़ा रहता है । उ०—उत्थि सिर नवइ सब्ब कइ ।—कीर्ति०, पृ० ५० ।

मुहा०—सिर अलग करना = सिर काटना । प्राण ले लेना । सिर आँखों पर होना = सहर्ष स्वीकार होना । माननीय होना । जैसे,—आपकी आज्ञा सिर आँखों पर है । सिर आँखों पर बिठाना, बैठाना या रखना = बहुत आदर सत्कार करना । (भूत प्रेत या देवी देवता का) सिर आना = आवेश होना । प्रभाव होना । खेलना । सिर उठाना = (१) ज्वर आदि से कुछ फुरसत पाना । जैसे,—जब से बच्चा पड़ा है, तब से सिर नहीं उठाया है । (२) विरोध में खड़ा होना । शत्रुता के लिये संनद्ध होना । मुकाबिल के लिये तैयार होना । जैसे,—बागियों ने फिर सिर उठाया । (३) ऊधम मचाना । दंगा फसाद करना । शरारत करना । उपद्रव करना । (४) इतराना । अकड़ दिखाना । घमंड करना । (५) सामने मुँह करना । बराबर ताकना । लज्जित न होना । जैसे,—ऊँची नीची सुनता रहा, पर सिर न उठाया । (६) प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना । इज्जत के साथ लोगों से मिलना । जैसे,—जब तक भारतवासियों की यह दशा है, तब तक सभ्य जातियों के बीच वे कैसे सिर उठा सकते हैं ? उ०—मान के ऊँचे महल में या जिसे, सिर उठाये जाति के बच्चे घुसे ।—चुभते०, पृ० ५ । सिर उठाने की फुरसत न होना = जरा सा काम छोड़ने की छुट्टी न मिलना । कार्य की अधिकता होना । सिर उठाकर चलना = इतराकर चलना । घमंड दिखाना । अकड़कर चलना । सिर उतरवाना = सिर कटाना । मरवा डालना । सिर उतारना = सिर काटना । मार डालना । (किसी का) सिर ऊँचा करना = संमान का पात्र बनाना । इज्जत देना । (अपना) सिर ऊँचा करना = प्रतिष्ठा के साथ लोगों के बीच खड़ा होना । दस आदमियों में इज्जत बनाए रखना । सिर औंधाकर पड़ना = चिंता और शोक के कारण सिर नीचा किए पड़ा या बैठा

रहना। सिर काढ़ना = प्रसिद्ध होना। प्रसिद्धि प्राप्त करना। सिर करना = (स्त्रियों के) बाल सँवारना। चोटी गूँथना। (कोई वस्तु) सिर करना = जबरदस्ती देना। इच्छा के विरुद्ध सपुर्द करना। गले मढ़ना। सिर कलम करना या काटना = सिर उतारना। मार डालना। सिर का बोझ टलना = निश्चितता होना। झंझट टलना। सिर का बोझ टालना = बेगार टालना। अच्छी तरह न करना। जी लगाकर न करना। सिर के बल चलना = बहुत अधिक आदरपूर्वक किसी के पास जाना। उ०—जो मिले जी खोलकर उनके यहाँ, चाह होती है कि सिर के बल चले।—चोखे०, पृ० १४। सिर खपाना = (१) सोचने विचारने में हैरान होना। (२) कार्य में व्यग्र होना। सिर खाली करना = (१) बकवाद करना। (२) माथा पच्ची करना। सोच विचार में हैरान होना। सिर खाना = बकवाद करके जी उबाना। व्यर्थ की बातें करके तंग करना। सिर खुजलाना = मार खाने को जी चाहना। शामत आना। नटखटी सूझना। सिर चकराना = दे० 'सिर घूमना'। सिर चढ़ जाना = (१) मुँह लग जाना। (२) गुस्ताख होना। निहायत बे अदब होना। उ० नवाब साहब ने जो हँसी हँसी में उस दिन जरी मुँह लगाया तो सिर चढ़ गई।—सैर०, पृ० २६। सिर चढ़ा = मुँह लगा। लाड़ला। धृष्ट। सिर चढ़ाना = (१) माथे लगाना। पूज्य भाव दिखाना। आदरपूर्वक स्वीकार करना। सिर माथे लेना। उ० नृप दूतहिं बीरा दीनौ। उनि सिर चढ़ाइ करि लीनौ।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० १२०। (२) बहुत बढ़ा देना। मुँह लगाना। गुस्ताख बनाना। (३) किसी देवी देवता के सामने सिर काटकर बलि चढ़ाना। सिर घूमना = (१) सिर में दर्द होना। (२) घबराहट या मोह होना। बेहोशी होना। सिर चढ़कर बोलना = (१) भूत प्रेत का सिर पर आकर बोलना। (२) स्वयं प्रकट हो जाना। छिपाए न छिपना। सिर चढ़कर मरना = किसी को अपने खून का उत्तरदायी ठहराना। किसी के ऊपर जान देना। सिर चला जाना = मृत्यु हो जाना। सिर जोड़कर बैठना = मिलकर बैठना। सिर जोड़ना = (१) एकत्र होना। पंचायत करना। (२) एका करना। षड्यंत्र रचना। सिर झाड़ना = बालों में कंघी करना। सिर झुकाना = (१) सिर नवाना। नमस्कार करना। (२) लज्जा से गरदन नीची करना (३) सादर स्वीकार करना। चुपचाप मान लेना। सिर टकराना = सिर फोड़ना। अत्यंत परिश्रम करना। (किसी के) सिर डालना = सिर मढ़ना। दूसरे के ऊपर कार्य का भार देना। सिर टूटना = (१) सिर फटना। (२) लड़ाई झगड़ा होना। सिर तोड़ना = (१) सिर फोड़ना। (२) खूब मारना पीटना। (३) वश में करना। सिर दर्द के लिये मूँड़ कटाना = छोटी बात के लिये बड़ा नुकसान करना। उ०—रोजमर्रा की जलन से बचने के लिये अलबत्ता ऐसी स्त्री को अलग कर दिया जा सकता है, परंतु वह सिर दर्द के लिये मूँड़ कटाने का इलाज है।—पिंजरे०, पृ० ११४। सिर देना = प्राण निछावर करना। जान देना। सिर धरना = **सादर स्वीकार करना। मान लेना। अंगीकार करना।** (किसी के) सिर धरना = आरोप करना। लगाना। मढ़ना। उत्तरदायी बनाना। सिर धुनना = शोक या पछतावे से सिर पीटना। पछताना। हाथ मलना। शोक करना। उ०—कीन्हे प्राकृत जन गुनगाना। सिर धुनि गिरा लगति पछिताना।—मानस, पृ० १०। सिर नंगा करना = (१) सिर खोलना। (२) इज्जत उतारना। सिर नवाना = (१) सिर झुकाना। नमस्कार करना। (२) विनीत बनना। दीन बनना। आजिजी करना। सिर भिन्नाना = सिर चकराना। (अपना सिर) नीचे करना = अप्रतिष्ठा होना। इज्जत बिगड़ना। मान भंग होना। (२) पराजय होना। हार होना। (३) लज्जा होना। सिर पचाना = (१) परिश्रम करना। उद्योग करना। (२) सोचने विचारने में हैरान होना। सिर पटकना = (१) सिर फोड़ना। सिर धुनना। (२) बहुत परिश्रम करना। (३) अफसोस करना। हाथ मलना। सिर पर कफन बाँधकर चलना = प्रति पल मृत्यु के लिये तैयार रहना। सिर पर किसी का न होना = निरंकुश रहना। कोई रोकने टोकनेवाला न होना। उ०—कोई उनके सिर पर तो है नहीं, अपनी आप मुख्तार हैं।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३७। सिर पर आ पड़ना = अपने ऊपर घटित होना। ऊपर आ बनना। सिर पर आ जाना = (१) बहुत समीप आ जाना। (२) थोड़े ही दिन और रह जाना। सिर पर उठा लेना = ऊधम जोतना। धूम मचाना। सिर पर चढ़ जाना = गुस्ताखी करना। बेअदबी करना। मुँह लगना। उ०—एक दफा तरह दी तो अब सिर पर चढ़ गया।—फिसाना०, भा० ३, पृ० १२५। (अपने) सिर पर पाँव रखना = बहुत जल्द भाग जाना। हवा होना। (किसी के) सिर पर पाँव रखना = किसी के साथ बहुत उद्दंडता का व्यवहार करना। सिर पर धरती या पृथ्वी उठाना = बहुत उत्पात करना। सिर पर पड़ना = (१) जिम्मे पड़ना। (२) अपने ऊपर घटित होना। गुजरना। सिर पर खेलना = जान को जोखों में डालना। सिर पर खून चढ़ना या सवार होना = (१) जान लेने पर उतारू होना। (२) हत्या के कारण आपे में न रहना। सिर पर रखना = प्रतिष्ठा करना। मान करना। सिर पर छप्पर रखना = बोझ से दबाना। दबाव डालना। सिर पर मिट्टी डालना = शोक करना। सिर पर लेना = ऊपर लेना। जिम्मे लेना। सिर पर शैतान चढ़ना = गुस्सा चढ़ना। सिर पर जूँ न रेंगना = ध्यान न होना। चेत न होना। होश न आना। सिर रहना = मान रहना। प्रतिष्ठा बनी रहना। (किसी के) सिर डालना = माथे मढ़ना। आरोपण करना। सिर पर बीतना = सिर पर पड़ना। सिर पर होना = थोड़े ही दिन रह जाना। बहुत निकट होना। (किसी का किसी के) सिर पर होना = संरक्षक होना। रक्षा करनेवाला होना। सिर पर हाथ धरना या रखना = (१) संरक्षक होना। सहायक होना। (२) शपथ खाना। सिर पड़ना = (१) जिम्मे पड़ना। भार ऊपर दिया जाना। (२) हिस्से में जाना। सिर पड़ी सहना = अपने जिम्मे आई विपत्ति या झंझट को झेलना। उ०—पक गया जी नाक में दम हो **गया, तुम न सुधरे, सिर पड़ी हमने सही।—चोखे०, पृ०**

४७। सिर पर हाथ फेरना = प्यार करना। आश्वासन देना। ढारस बँधाना। उ०—बेतरह फेर में पड़े हम हैं, फेरते हाथ क्यों नहीं सिर पर।—चुभते०, पृ० ४। सिर फिरना = (१) सिर घूमना। सिर चकराना। (२) पागल हो जाना। उन्माद होना। (३) बुद्धि नष्ट होना। सिर फोड़ना = (१) लड़ाई झगड़ा करना। (२) कपालक्रिया करना। सिर फेरना = कहा न मानना। अवज्ञा करना। अस्वीकार करना। सिर बाँधना = (१) सिर पर आक्रमण करना। (पटेबाजी)। (२) चोटी करना। सिर गूँथना। (३) घोड़े की लगाम इस प्रकार पकड़ना कि चलते समय घोड़े की गर्दन सीधी रहे। सिर बेचना = सिर देना। फौज की नौकरी करना। सिर भारी होना = सिर में पीड़ा होना। सिर घूमना। सिर मारना = (१) समझाते समझाते हैरान होना। (२) सोचने विचारने में हैरान होना। सिर खपाना। (३) चिल्लाना। पुकारना। (४) बहुत प्रयत्न करना। अत्यंत श्रम करना। सिर मुँड़ाना = (१) बाल बनवाना। (२) जोगी बनना। फकीरी लेना। संन्यासी होना। सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना = आरंभ में ही कार्य बिगड़ना। कार्यारंभ होते ही विघ्न पड़ना। सिर मढ़ना = जिम्मे करना। इच्छा के विरुद्ध सपुर्द करना। सिर रँगना = सिर फोड़ना। सिर लोहू लोहान करना। सिर रहना = (१) किसी के पीछे पड़ना। (२) रात दिन परिश्रम करना। सिर सफेद होना = वृद्धावस्था आ जाना। सिर पर सेहरा होना = किसी कार्य का श्रेय प्राप्त होना। वाहवाही मिलना। सिर सहलाना = खुशामद करना। प्यार करना। सिर से बला टालना = बेगार टालना। जी लगाकर काम न करना। सिर से बोझ उतरना = (१) झंझट दूर होना। (२) निश्चितता होना। सिर से पानी गुजरना = सहने की पराकाष्ठा होना। असह्य हो जाना। सिर घुटाना या घोटाना = सिर मुड़ाना। सिर से पैर तक = आरंभ से अंत तक। चोटी से एड़ी तक। सर्वांग में। पूर्णतया। सिर से पैर तक आग लगना = अत्यंत क्रोध होना। आग बबूला होना। सिर से चलना = बहुत संमान करना। सिर के बल चलना। सिर से सिरवाहा है = सिर के साथ पगड़ी है। अर्थात् सरदार के साथ फौज अवश्य रहेगी। मालिक के साथ उसके आश्रित अवश्य रहेंगे। सिर से कफन बाँधना = मरने के लिये उद्यत होना। सिर से खेलना = सिर पर भूत आना। सिर से खेल जाना = प्राण दे देना। सिर पर सींग होना = कोई विशेषता होना। खसूसियत होना। सुरखाब का पर होना। सिर का पसीना पैर तक आना = बहुत परिश्रम होना। सिर हथेली पर लेना = मृत्यु के लिये हरदम तैयार रहना (किसी का किसी के) सिर होना। (१) पीछे पड़ना। पीछा न छोड़ना। साथ साथ लगा रहना। (२) बार बार किसी बात का आग्रह करके तंग करना। (३) उलझ पड़ना। झगड़ा करना। (किसी बात के) सिर होना = ताड़ लेना। समझ लेना। (दोष आदि किसी के) सिर होना = जिम्मे होना। ऊपर पड़ना। जैसे,—यह अपराध तुम्हारे सिर है।

२. ऊपर की ओर। सिरा। चोटी। ३. किनारा। ४. किसी वस्तु का ऊपरी भाग ४. सरदार। प्रधान। जैसे, सिर से सिरवाहा। ५. दिमाग। अक्ल। ६. शुरूआत। प्रारंभ।

सिर²—संज्ञा पुं० [सं० शिर] पिपरामूल। पिप्पलीमूल।

सिर³—संज्ञा पुं० [अ० सिर्र] रहस्य। मर्म। भेद। राज [को०]।

सिरई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर + ई (प्रत्य०)] चारपाई में सिरहाने की पट्टी।

सिरकटा—वि० [हिं० सिर + कटना] [वि० स्त्री० सिरकटी] १. जिसका सिर कट गया हो। जैसे,—सिरकटी लाश। २. दूसरों के सिर काटनेवाला। अनिष्ट करनेवाला। बुराई करनेवाला। अपकारी।

सिरका—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिरकह्] धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ ईख, अंगूर, जामुन, आदि का रस। उ०—(क) भई मिथौरी सिरका बरा। सोंठ लाय के खरसा धरा।—जायसी (शब्द०)। (ख) हे रे कलाली तैं क्या किया। सिरका सातैं प्याला दिया। —संतवाणी०, पृ० ३३।

विशेष—ईख, अंगूर, खजूर, जामुन आदि के रस को धूप में पकाकर सिरका बनाया जाता है। यह स्वाद में अत्यंत खट्टा होता है। वैद्यक में यह तीक्ष्ण, गरम, रुचिकारी, पाचक, हलका, रूखा, दस्तावर, रक्तपित्तकारक तथा कफ, कृमि और पांडु रोग का नाश करनेवाला कहा गया है। यूनानी मतानुसार यह कुछ गरमी लिए ठंढा और रुक्ष, स्निग्धताशोधक, नसों और छिद्रों में शीघ्र ही प्रवेश करनेवाला, गाढ़े दोषों को छाँटनेवाला, पाचक, अत्यंत क्षुधाकारक तथा रोध का उद्घाटक है। यह बहुत से रोगों के लिये परम उपयोगी है।

सिरकाकश—संज्ञा पुं० [फ़ा०] अरक खींचने का एक प्रकार का यंत्र।

सिरकाफरोश—वि० [फ़ा० सिरकह् फ़रोश] १. सिरका बेचनेवाला। जो सिरका बेचता हो। २. रूखी बातें करनेवाला। बेमुरव्वत [को०]।

सिरकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरकंडा] १. सरकंडा। सरई। सरहरी। २. सरकंडे या सरई की पतली तीलियों की बनी हुई टट्टी जो प्राय: दीवार या गाड़ियों पर धूप और वर्षा से बचाव के लिये डालते हैं। उ०—विदित न सनमुख ह्वै सकै अँखिया बड़ी लजोर। बरुनी सिरकिन ओट ह्वै हेरत गोहन ओर।—रसनिधि (शब्द०)। ३. बाँस की पतली नली जिसमें बेल बूटे काढ़ने का कलाबत्तू भरा रहता है।

सिरखप¹—वि० [हिं० सिर + खपना] १. सिर खपानेवाला। २. परिश्रमी। ३. निश्चय का पक्का।

सिरखप²—संज्ञा स्त्री० दे० 'सिरखपी'। उ०—जो तुमको यही समझ होती, तो मुझको इतनी सिरखप क्यों करनी पड़ती।—ठेठ०, पृ० ८।

सिरखपी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर + खपना] १. परिश्रम। हैरानी। २. जोखिम। साहसपूर्ण कार्य।

सिरखिली—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया जिसका संपूर्ण शरीर मटमैला, पर चोंच और पैर काले होते हैं।

सिरखिस्त—संज्ञा पुं० [फ़ा० शीरख़िस्त] एक प्रसिद्ध पदार्थ जो कुछ पेड़ों की पत्तियों पर ओस की तरह जम जाता है और दवा के काम में आता है। यव शर्करा। यवास शर्करा।

सिरखी—वि० [सं० सदृश, प्रा० सरिक्ष, राज० सिरखी] [पुं० सिरखा (=सरीखा)] सदृश। समान। सरीखी। उ०—सूली सिरखी सेभड़ी, तो विण जाणे नाह।—ढोला०, दू० १६६।

सिरगनेस†—संज्ञा पुं० [हिं० श्रीगणेश] आरंभ। शुरुआत। उ०—पहले झगड़ा का सिरगनेस दो ही औरतों में होता है।—मैला०, पृ० ७१।

सिरगा—संज्ञा स्त्री० [देश०] घोड़े की एक जाति। उ०—सिरगा समँदा स्वाइ सेलिया सूर सुरंगा। मुसकी पँचकल्यान कुमेता केहरिरंगा। —सूदन (शब्द०)।

सिरगिरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+गिरि (=चोटी)] १. कलगी। शिखा। २. चिड़ियों के सिर की कलगी।

सिरगोला—संज्ञा पुं० [देश०] दुग्धपाषाण।

सिरघुरई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+घूरना (=घूमना), तुल० बँ० घुर] ज्वरांकुश तृण।

सिरचंद—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+चंद] एक प्रकार का अर्धचंद्राकार गहना जो हाथी के मस्तक पर पहनाया जाता है। उ०—सिरचंद चंद दुचंद दुति आनंद कर मनिमय बसैं।—गोपाल (शब्द०)।

सिरचढ़ा—वि० [हिं० सिर+चढ़ना] मुँहलगा। बेअदब। ढीठ।

सिरजक(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सर्जक, हिं० सिरिजन (< सं० √सृज् > सिरिज+अन (प्रत्य०))] बनानेवाला। रचनेवाला। सृष्टिकर्ता। उ०—अब बंदौं कर जोरि कै, जग सिरजक करतार। रामकृष्ण पद कमल युग, जाको सदा अधार।—रघुराज (शब्द०)।

सिरजन—संज्ञा पुं० [सं० सर्जन, (हिं० सृजन)] निर्माण। रचना। सृष्टि करना। जैसे, सिरजनहार।

सिरजनहार(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सिरजन+हार (=वाला)] १. रचनेवाला। बनानेवाला। सृष्टिकर्ता। कर्तार। उ०—हे गुसाईं तू सिरजनहारू। तुइं सिरजा एहि समुँद अपारू।—जायसी (शब्द०)। २. परमेश्वर। उ०—माया सगी न मन सगा, सगा न यह संसार। परशुराम यह जीव को, सगा तो सिरजनहार।—रघुराज (शब्द०)।

सिरजना(पु)¹—क्रि० स० [सं० सर्जन] रचना। उत्पन्न करना। सृष्टि करना। उ०—जग सिरजत पालत संहरत पुनि क्यो बहुरि करचो।—सूर (शब्द०)।

सिरजना(पु)²—क्रि० स० [सं० सञ्चयन] संचय करना। हिफाजत से रखना।

सिरजित(पु)—वि० [सं० सर्जित] सिरजा हुआ। रचा हुआ। उ०—तुम जदुनाथ अनन्य उपासी। नहिं मम सिरजित लोक विलासी।—रघुराज (शब्द०)।

सिरताज—संज्ञा पुं० [सं० सिर+फ़ा० ताज] १. मुकुट। शिरोभूषण। २. शिरोमणि। सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु। सबसे उत्कृष्ट व्यक्ति या वस्तु। उ०—राम को बिसारिबो निषेध सिरताज रे। राम नाम महामनि फनि जगजाल रे।—तुलसी (शब्द०)। ३. पति। शौहर (क्व०)। ४. स्वामी। प्रभु। मालिक। उ०—कुंजन में क्रीड़ा करै मनु वाही को राज। कंस सकुच नहिं मानई रहत भयो सिरताज। सूर (शब्द०)। ५. सरदार। अग्रगण्य। अगुआ। मुखिया। उ०—सूर सिरताज महाराजनि के महाराज जाको नाम लेत है सुखेत होत ऊसरो।—तुलसी (शब्द०)। ६. एक प्रकार का आवरण, पर्दा या नकाब (क्व०)।

सिरतान—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+तान ?] १. आसामी। काश्तकार। २. मालगुजार।

सिरतापा—क्रि० वि० [फ़ा० सर+ता+पा] १. सिर से पाँव तक। नख से लेकर शिख तक। उ०—केस मेघावरि सिर ता पाहिं। —जायसी (शब्द०)। २. आदि से अंत तक। संपूर्ण। बिलकुल। सरासर।

सिरती†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीर] जमा जो आसामी जमींदार को देता है। लगान।

सिरत्राण(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्त्राण] दे० 'शिरस्त्राण'।

सिरदा(पु)—संज्ञा पुं० [अ० सिजदा] दे० 'सिजदा'। उ०—(क) एकादशी न रोजा करई। डंडवत करै न सिरदा परई।—पलटू०, भा० ३, पृ० ६०। (ख) कई लाख तुम रंडी छांड़ी केते बेटी बेटा। कितने बैठे सिरदा करते माया जाल लपेटा। —मलूक०, पृ० १।

सिरदार(पु)‡—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरदार] दे० 'सरदार'। उ०—ब्रज परगन सिरदार महरि तू ताकी करत नन्हाई।—सूर (शब्द०)। (ख) सिरदार जूझत खेत मैं। भजि गए बहुत अचेत मैं। —सूदन (शब्द०)।

सिरदारी(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सरदार+ई (प्रत्य०)] दे० 'सरदारी'। उ०—साहिजहाँ यह चित्त बिचारी। दारा कौ दीन्हीं सिरदारी।—लाल कवि (शब्द०)।

सिरदुआली—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर+फ़ा० दुवाल] लगाम के कड़ों में लगा हुआ कानों के पीछे तक का घोड़ों का एक साज जो चमड़े या सूत का बना होता है।

सिरनाम(पु)—वि० [फ़ा० सरनाम] ख्यात। मशहूर। प्रसिद्ध। उ०—रोम रोम जो अघ भरचौ पतितन मैं सिरनाम। रसनिधि वाहि निबाहिबौ प्रभु तेरोई काम।—स० सप्तक, पृ० २२५।

सिरनामा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर+नामह् (=पत्र)] १. लिफाफे पर लिखा जानेवाला पता। २. पत्र के आरंभ में पत्र पानेवाले का नाम, उपाधि, अभिवादन आदि। ३. किसी लेख के विषय में निर्देश करनेवाला शब्द या वाक्य जो ऊपर लिख दिया जाता है। शीर्षक। (अं०) हेडिंग। सुर्खी।

सिरनेत—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+सं० नेत्री (=धज्जी या डोरी)] १. पगड़ी। पटा। चीरा। उ०—(क) रे नेही मत डगमगै बाँध प्रीति सिरनेत।—रसनिधि (शब्द०)। (ख) अधम उधारन बिरद कौ तुम बाँधौ सिरनेत।—स० सप्तक, पृ० २२६। २. क्षत्रियों की एक शाखा जो अपना मूल स्थान श्रीनगर

(गढ़वाल) बताती है। उ०—पुनि सिरनेतन्ह देस सिधारा। कीन्हो ब्याह, उछाह अपारा।—रघुराज (शब्द०)।

सिरपाँव†—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + पाँव] दे० 'सिरोपाव'।

सिरपाउ(पु)—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सिरोपाव'। उ०—सिरपाउ भाउ नष्षे सरस्स। को गनै द्रव्य भंडार अस्स।—पृ० रा०, ४।१२।

सिरपाव—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + पाँव] दे० 'सिरोपाव'। उ०—कीरतसिंह भी घोड़े और सिरपाव पाकर अपने बाप के साथ रुखसत हुआ।—देवीप्रसाद (शब्द०)।

सिरपेँच, सिरपेच—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर + पेच] १. पगड़ी। २. पगड़ी के ऊपर का छोटा कपड़ा। ३. पगड़ी पर बाँधने का एक आभूषण। उ०—कलगी, तुर्रा और जग सिरपेच सुकुंडल।—सूदन (शब्द०)।

सिरपैंच(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० सिरपेंच] दे० 'सिरपेच'। उ०—दीठि गई सिरपैंच पै फिर हारी मैं ऐंच। जो उरझी सुरझी न फिर परी पैंचि कै पैंच।—स० सप्तक, पृ० ३७६।

सिरपोश—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरपोश] १. सिर पर का आवरण। टोप। कुलाह। २. बंदूक के ऊपर का कपड़ा। (लश्करी)।

सिरफूल—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + फूल] सिर पर पहना जानेवाला स्त्रियों का फूल की आकृति का एक आभूषण। उ०—(क) छतियाँ पर लोल लुरै अलकैं सिरफूल अरुझि सो यौं दुति दै।—मन्नालाल (शब्द०)। (ख) बेनी चुनी चमकै किरनैं सिरफूल लख्यो रवि तूल अनूपमै।—मन्नालाल (शब्द०)।

सिरफेंटा—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + फेंटा] साफा। पगड़ी। मुरेठा। उ०—पीरो झग पटुका बिन छोर छरी कर लाल जरी सिरफेंटा।—मन्नालाल (शब्द०)।

सिरबंद—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + फ़ा० बंद] साफा।

सिरबंदी[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर + फा० बेंदी] माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण।

सिरबंदी[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + बंद] रेशम के कीड़े का एक भेद।

सिरबोझी—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + बोझ] एक प्रकार के पतले बाँस जो पाटन के काम में आते हैं।

सिरपच्चन†—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + पचाना] सिर खपाना। सिर मगजन।

सिरमगजन†—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + अ० मग्ज़] माथा खोटी। माथा पच्ची। २. सिर खपाना। उ०—बेचारे वृद्ध आदमी को सुबह से शाम तक सिरमगजन करते गुजरता था।—रंगभूमि, भा० २, पृ० ६१६।

सिरमनि(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + मणि] दे० 'शिरोमणि'।

सिरमुँड़ा—वि० [हिं०] १. जिसका सिर मुँड़ा हो। २. निगुरा। निगोड़ा। स्त्रियों की एक गाली।

सिरमौर—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + मौर] १. सिर का मुकुट। उ०—याकैं तीर सदा खुलि खेलत राधारमन रसिक सिरमौर।—घनानंद, पृ० ४४३। २. सिरताज। शिरोमणि। प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति। उ०—सहज सलोने राम लखन ललित नाम जैसे सुने तैसेई कुँअर सिरमौर हैं।—तुलसी (शब्द०)।

सिररुह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सिरोरुह] दे० 'शिरोरुह'। उ०—बिथुरित सिररुह बरुथ कुंचित बिच सुमन जूथ, मनिजुत सिसु फनि अनीक ससि समीप आई।—तुलसी (शब्द०)।

सिरवा†—संज्ञा पुं० [हिं० सिरा] वह कपड़ा जिससे खलियान में अनाज बरसाने के समय हवा करते हैं। ओसाने में हवा करने का कपड़ा।

मुहा०—सिरवा मारना = भूसा उड़ाने के लिये कपड़े आदि से हवा करना।

सिरवार(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० शैवाल] दे० 'सिवार'।

सिरवार†[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सीर + कार] जमींदार का वह कारिंदा जो उसकी खेती का प्रबंध करता है।

सिरस—संज्ञा पुं० [सं० शिरीष] शीशम की तरह का लंबा एक प्रकार का ऊँचा पेड़।

विशेष—इसका वृक्ष बड़ा किंतु अचिरस्थायी होता है। इसकी छाल भूरापन लिए हुए खाकी रंग की होती है। लकड़ी सफेद या पीले रंग की होती है, जो टिकाऊ नहीं होती। हीर की लकड़ी कालापन लिए भूरी होती है। पत्तियाँ इमली के पत्तियों के समान परंतु उनसे लंबी चौड़ी होती हैं। चैत वैशाख में यह वृक्ष फूलता फलता है। इसके फूल सफेद, सुगंधित, अत्यंत कोमल तथा मनोहर होते हैं। कवियों ने इसके फूल की कोमलता का वर्णन किया है। इसके वृक्ष से बबूल के समान गोंद निकलता है। इसकी छाल, पत्ते, फूल और बीज औषध के काम में आते हैं। इसके तीन भेद होते हैं। काला, पीला और लाल। आयुर्वेद के अनुसार यह चरपरा, शीतल, मधुर, कड़वा, कसैला, हलका तथा वात, पित्त, कफ सूजन, विसर्प, खाँसी, घाव, विषविकार, रुधिरविकार, कोढ़, खुजली, बवासीर, पसीने और त्वचा के रोगों को हरण करनेवाला है। यूनानी मतानुसार यह ठंडा और रूखा है। उ०—(क) बाम विधि मेरो सुख सिरस सुमन ताको छल छुरी कोह कुलिस ले टेई है।—तुलसी (शब्द०)। (ख) फूलों ही के कामवाण हैं, यह सब कहते आते हैं। सिरस फूल से भी मृदुतर, हम उसके बाहु बताते हैं।—महावीरप्रसाद (शब्द०)।

सिरसा—संज्ञा पुं० [सं० शिरीष] दे० 'सिरस'।

सिरसी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का तीतर।

सिरहाना—संज्ञा पुं० [सं० शिरस् + आधान] चारपाई में सिर की ओर का भाग। खाट का सिरा। मुँड़वारी। उ०—छूटी लटैं लटकैं सिरहाने ह्वै फैलि रह्यो मुखस्वेद को पानी (शब्द०)।

सिरांबु—संज्ञा पुं० [सं० सिराम्बु] रक्त। खून [को०]।

सिरांचा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पतला बाँस जिससे कुरसियाँ और मोढ़े बनते हैं।

सिराँह(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल, प्रा० सीअल, सीअउ, हिं० सियरा] शीतलता। छाँह या छाया जो शीतल है। उ०—रह्यौ न

काम कछू काहू सों पालत प्रान रावरी आँह। आनँदघन दुखताप मेटियै कीजै कृपा सिराँह।—घनानंद, पृ० ५०६।

सिरा[१]—संज्ञा पुं० [हिं० सिर] १. लंबाई का अंत। लंबाई के दो छोरों में से कोई एक। छोर। टोंक। जैसे,—एक सिरे से दूसरे सिरे तक। २. ऊपर का भाग। शीर्ष भाग। ३ अंतिम भाग। आखिरी हिस्सा। ४. आरंभ का भाग। शुरू का हिस्सा। जैसे,—(क) सिरे से कहो, मैंने सुना नहीं। (ख) अब वह काम नए सिरे से करना पड़ेगा। (ग) सिरे से आखीर तक। ५. नोक। अनी। ६. अग्रभाग। अगला हिस्सा।

मुहा०—सिरे का = अव्वल दरजे का। पल्ले सिरे का। सिरे का रंग = सबसे प्रधान रंग। जेठा रंग। (रँगरेज)।

सिरा[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रक्तनाड़ी। २. सिँचाई की नाली। ३. खेत की सिँचाई। ४. पानी की पतली धारा। ५. गगरा। कलसा। डोल।

सिराज—संज्ञा पुं० [अ०] १. सूर्य। २. दीपक। दिया [को०]।

सिराजाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. नेत्र का एक रोग। शिराजाल। २. छोटी रक्तनाड़ियों का समूह। नाड़ीजाल [को०]।

सिराजी—संज्ञा पुं० [फ़ा० शीराज (नगर)] शीराज का घोड़ा। उ०—अबलक अरबी लखी सिराजी। चौधर चाल समँद भल ताजी।—जायसी (शब्द०)।

सिरात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रास्ता। सीधा मार्ग। २. नर्क के आरपार बाल से भी पतला और तलवार की धार से भी तेज पुल।

विशेष—हदीस के अनुसार इस पुल पर से सभी को कयामत के दिन गुजरना होगा। धर्मात्मा इसपर से पार हो जायँगे और पापी कट मर जायँगे।

सिराना†(पु)[१]—क्रि० अ० [हिं० सीरा + ना] १. ठंढा होना। शीतल होना। २. मंद पड़ना। हतोत्साह होना। उमंग न रह जाना। हार जाना। उ०—वज्रायुध जल वरषि सिराने। परचो चरन तब प्रभु करि जाने।—सूर (शब्द०)। ३. समाप्त होना। खतम होना। अंत को पहुँचना। जैसे,—काम सिराना। ४. शांत होना। मिटना। दूर होना। उ०—अब रघुनाथ मिलाऊँ तुमको सुंदरि सोग सिराइ।—सूर (शब्द)। ५ व्यतीत होना। बीत जाना। गुजर जाना। उ०—वेई चिरजीवी अमर निधरक फिरौ कहाइ। छिन बिछुरे जिनके न इहि पावस आयु सिराइ।—बिहारी (शब्द०)। ६. काम से छुट्टी मिलना। फुरसत वा अवकाश मिलना।

सिराना[२]—क्रि० स० १. ठंढा करना। शीतल करना। २. जल में डुबाकर शीतल करना। जैसे, मौर सिराना। ३. समाप्त करना। खतम करना। ४. व्यतीत करना। बिताना।

सिरापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. अश्वत्थ वृक्ष। पीपल का वृक्ष। २. एक प्रकार की खजूर।

सिराप्रहर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिराहर्ष'।

सिरामूल—संज्ञा पुं० [सं०] नाभि।

सिरामोक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] फसद खुलवाना। शरीर का दूषित रक्त निकलवाना।

सिरायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] जज्ब होना। प्रवेश करना। घुसना [को०]।

सिरायना—क्रि० स० [हिं० सिराना] दे० 'सिराना'।

सिरार—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिरा] वह लकड़ी जो पाई के सिरे पर लगाई जाती है। (जुलाहे)।

सिराल[१]—वि० [सं०] जिसमें बहुत नसें या रेशे हों।

सिराल[२]—संज्ञा पुं० कमरख। दे० 'सिराला' [को०]।

सिरालक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अंगूर।

सिराला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का पौधा। कमरख का फल। कर्मरंग फल।

सिराली—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिर] मयूरशिखा। मोर की कलगी।

सिरालु—वि० [सं०] बहुत शिराओंवाला। सिराल [को०]।

सिरावन[१]—संज्ञा पुं० [सं० सीर (= हल)] जुता हुआ खेत बराबर करने का पाटा। हेंगा।

सिरावन[२]—वि० [हिं० सिराना] १. शीतल करनेवाला। सिरानेवाला। २. संताप या कष्ट दूर करनेवाला।

सिरावना(पु)†—क्रि० स० [हिं० सिराना] दे० 'सिराना'। उ०—जोइ जोइ भावे मेरे प्यारे। सोई सोइ दैहौं जु रेदुला। कहचौ है सिरावन सीरा। कछु हट न करौ बलबीरा।—सूर (शब्द०)।

सिरावृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] सीसा नामक धातु।

सिरावेध, सिरावेधन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिरामोक्ष' [को०]।

सिराव्यध, सिराव्यधन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिरामोक्ष' [को०]।

सिराहर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुलक। रोमांच। २. आँख के डोरों की लाली।

सिरिख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिरीष] दे० 'सिरस'।

सिरिन—संज्ञा पुं० [देश] रक्तशिरीष वृक्ष। लाल सिरस।

सिरियारी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिरियारी] सुचिष्णक शाक। सुसना का साग। हाथीशुंडी।

सिरिश्ता—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरिश्तह्] विभाग। मुहकमा।

सिरिश्तेदार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] अदालत का वह कर्मचारी जो मुकदमों के कागजपत्र रखता है।

सिरिश्तेदारी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सरिश्तेदार का काम या पद।

सिरिस—संज्ञा पुं० [सं० शिरीष, प्रा० सिरिस] दे० 'सिरस'। उ०—विधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरिस सुमन कन बेधिय हीरा।—मानस, १।२५८।

सिरी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. करघा। २. कलिहारी। लांगली।

सिरी(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्री] १. लक्ष्मी। २. शोभा। कांति। ३. रोली। रोचना। उ०—(क) धधकी है गुलाल की धूँधुर में धरि गोरी लला मुख मीड़ि सिरी।—शंभु (शब्द०)। (ख) सोन रूप भल भएउ पसारा। धवल सिरी पोतहिं घर बारा।—जायसी (शब्द०)।

विशेष—'श्री' का लाल चिह्न तिलक में रोली से बनाते हैं, इसी-लिये रोली को भी श्री या 'सिरी' कहते हैं।

४. ऐश्वर्य। विभव। संपत्ति। समृद्धि। ५. माथे पर का एक गहना। उ०—सुंडा दंड लसै जैसो वैसो रद दरसावै सोहै सभी सीस भारी सिरी कुंभ पर है।—गोपाल (शब्द०)।

सिरीज—संज्ञा पुं० [ग्रं०] मंगल और बृहस्पति के बीच का एक ग्रह जिसका पता आधुनिक पाश्चात्य ज्योतिषियों ने लगाया है।

विशेष—यह सूर्य से प्रायः साढ़े अट्ठाइस कोटि मील की दूरी पर है। इसका व्यास १७६० मील का है। इस निजकक्षा की परिक्रमा में १६८० दिन लगते हैं। १९वीं शताब्दी में सिसली नामक उपद्वीप में यह ग्रह पहले देखा गया था। इसका वर्ण लाल है और यह आठवें परिमाण के तारों के समान दिखाई पड़ता है।

सिरीपंचमी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रीपञ्चमी] दे० 'श्रीपंचमी'। उ०—दई दई कर सुरनि गँवाई। सिरीपंचमी पूजै आई।—जायसी (शब्द०)।

सिरीराग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्रीराग] संपूर्ण जाति का एक राग। छह प्रमुख रागों में तीसरा राग। विशेष दे० 'श्रीराग'। उ०—पचएँ सिरी राग भल कियो। छठएँ दीपक उठा बर दियो।—जायसी (शब्द०)।

सिरीस—संज्ञा पुं० [सं० शिरीष, प्रा० सिरीस] दे० 'सिरस'।

सिरोत्पात—संज्ञा पुं० [सं०] एक नेत्ररोग जिसमें आँखों के डोरे अधिक सुर्ख हो जाते हैं [को०]।

सिरोना—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+ओना] रस्सी का बना हुआ मेंडरा जिसपर घड़ा रखते हैं। इँडुरी। बिड़वा।

सिरोपाव—संज्ञा पुं० [हिं० सिर+पाँव] सिर से पैर तक का पहनावा (अंगा, पगड़ी, पाजामा, पटका और दुपट्टा) जो राज दरबार से संमान के रूप में दिया जाता है। खिलअत।

सिरोमनि—संज्ञा पुं० [सं० शिरोमणि] दे० 'शिरोमणि'।

सिरोरुह—संज्ञा पुं० [सं० शिरोरुह] दे० 'शिरोरुह'।

सिरोही¹—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया जिसकी चोंच और पैर लाल और शेष शरीर काला होता है।

सिरोही²—संज्ञा पुं० १. राजपुताने में एक स्थान जहाँ की बनी हुई तलवार बहुत ही लचीली और बढ़िया होती है। उ०—तरवार सिरोही सोहती लाख सिकोही बोहती। जिमि सेना द्रोही जोहती लाज अरोही मोहती।—गोपाल (शब्द०)। २. तलवार। असि।

सिर्का—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिरकह्] दे० 'सिरका'।

सिर्फ़¹—क्रि० वि० [अ० सिर्फ़] केवल। मात्र।

सिर्फ़²—वि० १. एक मात्र। अकेला। २. शुद्ध। खालिस।

सिर्री†—वि० [सं० शृगीक] दे० 'सिड़ी'।

सिल¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शिला] १. पत्थर। चट्टान। शिला। उ०—धोवैं नीर उडप पग धरजै, रज सिल उठी, किसू वनदार।—रघु० रू०, पृ० ११०। २. पत्थर की बनी हुई एक प्रकार की चौकोर या लंबोतरी पटिया जिसपर बट्टे से मसाला आदि पीसते हैं।

यौ०—सिल बट्टा।

३. पत्थर का गढ़ा हुआ चौकोर टुकड़ा जो इमारतों में लगता है। चौकोर पटिया। ४. काठ की पटरी जिसपर दबाकर रूई की पूनी बनाई जाती है।

सिल²—संज्ञा पुं० [सं० शिल] कटे हुए खेत में गिरे अनाज चुनकर निर्वाह करने की वृत्ति। दे० 'शिल', 'शिलोंछ'।

सिल³—संज्ञा पुं० [देश०] बलूत की जाति का एक पहाड़ी पेड़ जो हिमालय पर होता है। बंज। मारू।

सिल⁴—संज्ञा पुं० [अ०] तपेदिक। राजयक्ष्मा। क्षय रोग।

सिलक¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सलग (=लगातार)] १. लड़ी। हार। २. पंक्ति। पाँत।

सिलक²—संज्ञा पुं० तागा। धागा।

सिलकी—संज्ञा पुं० [देश०] बेल। उ०—सुरभी सिलकी सदाफल बेल ताल मालूर।—अनेकार्थ० (शब्द०)।

सिलखड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल+खड़िया] १. एक प्रकार का चिकना मुलायम पत्थर जो बरतन बनाने के काम आता है।

विशेष—इसकी बुकनी चीजों को चमकाने के लिये पालिश और रोगन बनाने के भी काम में आती है।

२. सेतखड़ी। खरिया मिट्टी। दुद्धी।

सिलखरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल+खड़िया] दे० 'सिलखड़ी'।

सिलगना—क्रि० अ० [हिं० सुलगना] दे० 'सुलगना'। उ०—(क) बिरहिन पै आयौ मनौ मैन दैन तनखाह। जुगनू नाहीं जामुगी सिलगत ब्याहमि ब्याह।—रसनिधि (शब्द०)। (ख) आग भी आतिशदान में सिलग रही है। हवा उस समय सर्द चल रही थी।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

सिलप(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शिल्प] दे० 'शिल्प'। उ०—विश्वकर्मा सुतिहार श्रुति धरि सुलभ सिलप दिखावनो। तेहि देखे त्रय ताप नाशै ब्रजवधू मन भावनो। सूर (शब्द०)।

सिलपची—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० चिलमची] दे० 'चिलमची'।

सिलपट¹—वि० [सं० शिलापट्ट] १. साफ। २. बराबर। चौरस।

क्रि० प्र०—करना। होना।

३. घिसा हुआ। मिटा हुआ। ४. चौपट। सत्तानाश।

सिलपट²—संज्ञा पुं० [अं० स्लिपर] एड़ी की ओर खुली हुई जूती। चट्टी। चप्पल।

सिलपोहनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल+पोहना] विवाह की एक रीति। उ०—सिंदूर बंदन होम लावा होन लागी भाँवरी। सिल-पोहनी करि मोहनी मन हरयौ मूरति साँवरी।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—विवाह में मातृकापूजन के समय वर और कन्या के माता पिता सिल पर थोड़ी सी भिगोई हुई उरद की दाल रखकर पीसते हैं। इसी को 'सिलपोहनी' कहते हैं।

सिलफची - संज्ञा स्त्री० [फ़ा० चिलमची] दे० 'चिलमची'।

सिलफोड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० सिल + फोड़ना] पाषाणभेद। पत्थरचूर नाम का पौधा।

सिलबट्टा—संज्ञा पुं० [हिं० सिल + बट्टा] सिल और बट्टा अर्थात् लोढ़िया।

सिलबरुआ—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बाँस जो पूरबी बंगाल की ओर होता है।

सिलमाकुर—संज्ञा पुं० [अँ० सेलमेकर] पाल बनानेवाला। (लश्करी)।

सिलवट[१]—संज्ञा स्त्री० [देश०] सुकड़ने से पड़ी हुई लकीर। चुनट। बल। शिकन। सिकुड़न। वली।

क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।

सिलवट[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सिल + बट्टा] १. दे० 'सिलबट्टा'। २. सिल जिसपर मसाला आदि पीसते हैं।

सिलवाना—क्रि० स० [हिं० सीना का प्रे० रूप] किसी को सीने में प्रवृत्त करना। सिलाना।

सिलसिला[१]—संज्ञा पुं० [अ०] १. बँधा हुआ तार। क्रम। परंपरा २. श्रेणी। पंक्ति। जैसे,—पहाड़ों का सिलसिला। ३. जंजीर। लड़ी। ४. व्यवस्था। तरतीब। जैसे,—कुरसियों को सिलसिले से रख दो। ५. कुलपरंपरा। वंशानुक्रम। ६. संबंध। लगाव। वेश। ८. बेड़ी। शृंखला। निगड।

सिलसिला[२]—वि० [सं० सिक्त] १. भींगा हुआ। आर्द्र। गीला। २. जिसपर पैर फिसले। रपटनवाला। रपटीला। ३. चिकना। मृदु। उ०—बैंदी भाल तमोल मुख, सीस सिलसिले बार। दृग आँजे राजे खरी, येही सहज सिंगार।—बिहारी (शब्द०)।

सिलसिलाबंदी—संज्ञा स्त्री० [अ० सिलसिला + फा० बंदी] १. क्रम का बंधान। तरतीब। २. कतारबंदी। पंक्ति बँधाई।

सिलसिलेवार—वि० [अ० सिलसिला + फ़ा० वार] तरतीबवार। क्रमानुसार।

सिलह संज्ञा पुं० [अ० सिलाह] हथियार। शस्त्र। उ०—आपु गुसल करि सिलह करि हुवै नगारे दोइ। देत नगारे तीसरे ह्वै सवार सब कोइ।—सूदन (शब्द०)।

यौ०—सिलहखाना। सिलहदस्त = शस्त्रपाणि। सशस्त्र। सिलहदार = (१) दे० 'सिलहपोश'। (२) योद्धा। सिपाही। शस्त्रजीवी। सिलहदारी = सिपाही का काम या पेशा। सिलहपोश = शस्त्रधारी। हथियारबंद।

सिलहखाना—संज्ञा पुं० [अ० सिलाह + फ़ा० खानह्] अस्त्रागार। हथियार रखने का स्थान।

सिलहट—संज्ञा पुं० [देश०] १. आसाम का एक नगर। २. एक प्रकार का अगहनी धान। ३. एक प्रकार की नारंगी जो सिलहट (आसाम) में होती है।

सिलहटिया[१]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की नाव जिसके आगे पीछे दोनों तरफ के सिक्के लंबे होते हैं।

सिलहटिया[२]—वि० [सिलहट + हिं० इया (प्रत्य०)] सिलहट संबंधी। सिलहट का।

सिलहार, सिलहारा—संज्ञा पुं० [सं० शिलकार] खेत में गिरा हुआ अनाज बीननेवाला।

सिलहिला—वि० [हिं० सील, सीड़ + हीला (= कीचड़)] [वि० स्त्री० सिलहिली] जिसपर पैर फिसले। रपटनवाला। रपटीला। कीचड़ से चिकना। उ०—घर कबीर का शिखर पर, जहाँ सिलहली गैल। पाँय न टिकै पिपीलिका, खलक न लादे बैल। —कबीर (शब्द०)।

सिलही—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

सिला[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिला] दे० 'शिला'। उ०—ह्वैहैं सिला सब चंद्रमुखी परसे पद मंजुल कंज तिहारे। कीन्हीं भली रघुनंदन जू करुना करि कानन को पग धारे।—तुलसी (शब्द०)।

सिला[२]—संज्ञा पुं० [सं० शिल] १. खेत से कटी फसल उठा ले जाने के पश्चात् गिरा हुआ अनाज। कटे खेत में से चुना हुआ दाना। उ०—करौं जो कछु धरौं सचि पचि सुकृत सिला बटोरि। पैठि उर बरबस दयानिधि दंभ लेत अँजोरि।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—चुनना।—बीनना।

२. पछोड़ने या फटकने के लिये रखा हुआ अनाज का ढेर। ३. कटे हुए खेत में गिरे अनाज के दानों को बीन या चुन कर उसी से जीवन निर्वाह करने की वृत्ति अथवा क्रिया। शिलवृत्ति।

सिला[३]—संज्ञा पुं० [अ० सिलह्] १. बदला। एवज। पलटा। प्रतीकार।

मुहा०—सिले में = बदले में। उपलक्ष में।

२. इनाम। पुरस्कार (को०)। ३. उपहार। तोहफा (को०)।

सिलाई[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीना + आई (प्रत्य०)] १. सीने का काम। सूई का काम। २. सीने का ढंग। जैसे,—इस कोट की सिलाई अच्छी नहीं है। ३. सीने की मजदूरी। ४. टाँका। सीवन।

सिलाई†[२]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक कीड़ा जो प्रायः ऊख या ज्वार के खेतों में लग जाता है। इसका शरीर भूरापन लिए हुए गहरा लाल होता है।

सिलाजीत—संज्ञा पुं० [सं० शिलाजतु] १. पत्थर की चट्टानों का लसदार पसेव जो बड़ी भारी पुष्टई माना जाता है। विशेष दे० 'शिलाजीत'। २. गेरू। गैरिक।

सिलाना[१]—क्रि० स० [हिं० सीना का प्रे० रूप] सीने का काम दूसरे से कराना। सिलवाना।

सिलाना⑤[२]—क्रि० स० [हिं० सिराना] दे० 'सिराना'।

सिलाबाक—संज्ञा पुं० [हिं० शिला + पाक] पथरफूल। छरीला। शैलज।

सिलाबी—वि० [हिं० सीड़, सील + फा० आब (= पानी); अथवा फा० सैलाबी ?] सीड़वाला। तर।

सिलामा—संज्ञा पुं० [अ० सिलामह्] १. मसाला आदि पीसने की सिल। २. बट्टा। दे० 'सिलौट' (को०)।

सिलारस—संज्ञा पुं० [सं० शिलारस] १. सिल्हक वृक्ष। २. सिल्हक वृक्ष का निर्यास या गोंद जो बहुत सुगंधित होता है।

विशेष—यह पेड़ एशियाई कोचक के दक्खिन के जंगलों में बहुत होता है। इसका निर्यास 'सिलारस' के नाम से बिकता है और औषध के काम में आता है।

सिलावट—संज्ञा पुं० [सं० शिला + पट्ट] पत्थर काटने और गढ़नेवाले। संगतराश। उ०—अली मरदान खाँ को लिखा कि खाती बेलदार और सिलावट भेजकर रस्ता चौड़ा करे।—देवी-प्रसाद (शब्द०)।

सिलासार—संज्ञा पुं० [सं० शिलासार] लोहा।

सिलाह—संज्ञा पुं० [अ०] १. जिरह बकतर। कवच। उ०—जाली की आँगी कसी यों उरोजनि मानो सिपाहों सिलाह किए द्वै।—मन्नालाल (शब्द०)। २. अस्त्र शस्त्र। हथियार।

सिलाहखाना—संज्ञा पुं० [अ० सिलाह + फ़ा० खानह्] हथियार रखने का स्थान। शस्त्रालय। अस्त्रागार।

सिलाहपोश, सिलाहबंद—वि० [अ० सिलाह + फ़ा० बंद] सशस्त्र। हथियारबंद। शस्त्रों से सुसज्जित।

सिलाहर—संज्ञा पुं० [सं० शिल + हर] १. खेत में से एक एक दाना अन्न बोनकर निर्वाह करनेवाला मनुष्य। सिला बीननेवाला। सिलहार। २. अकिंचन। दरिद्र।

सिलाहसाज—संज्ञा पुं० [अ० सिलाह + फ़ा० साज] हथियार बनानेवाला।

सिलाही—संज्ञा पुं० [अ० सिलाह + ई (प्रत्य०)] शस्त्र धारण करनेवाला। सैनिक। सिपाही।

सिलिगिया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० शिलांग + इया (प्रत्य०)] पूरबी हिमालय के शिलांग प्रदेश में पाई जानेवाली एक प्रकार की भेड़।

सिलिⓤ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल या सिल्ली] शिला। पत्थर की पटिया। उ०—सुख के माथे सिलि परैं, (जो) नाम हृदय से जाय। बलिहारी वा दुःख की पल पल नाम रटाय।—कबीर सा० सं०, पृ० ५।

सिलिपⓤ[1]†—संज्ञा पुं० [सं० शिल्प] दे० 'शिल्प'। उ०—खेती, बनि बिद्या, बनिज, सेवा, सिलिप सुकाज। तुलसी सुरतरु, धेनु, महि, अभिमत भोग बिलास।—तुलसी (शब्द०)।

सिलिप[2]—संज्ञा स्त्री० [अँ० स्लिप] कागज का छोटा टुकड़ा जिसपर कोई संक्षिप्त बात टाँकी जाय या लिखकर कहीं भेजा जाय।

सिलिपर—स्त्री० पुं० [अँ० स्लीपर] दे० 'सिलीपर'।

सिलिया—संज्ञा स्त्री० [सं० शिला] एक प्रकार का पत्थर जो मकान बनाने के काम में आता है।

सिलियार, सिलियारा—संज्ञा पुं० [सं० शिल + हार या हारक] दे० 'सिलाहर'।

सिलिसिलिक—संज्ञा पुं० [सं०] गोंद। लासा।

सिलींध्र—संज्ञा पुं० [सं० शिलीन्ध्र] दे० 'शिलींध्र'।

सिलीपर—संज्ञा पुं० [अं० स्लीपर] १. लकड़ी की वह धरन जिनके ऊपर रेल की पटरी बिछाई जाती है। २. दे० 'स्लीपर'।

सिलीमुखⓤ—संज्ञा पुं० [सं० शिलीमुख] दे० 'शिलीमुख'। उ०—रावन सिर सरोज बन चारी। चलि रघुबीर सिलीमुख धारी।—मानस, ६।९१।

सिलेक्ट कमिटी—संज्ञा स्त्री० [अं०] वह कमिटी जिसमें कुछ चुने हुए मेंबर या सदस्य होते हैं और जो किसी महत्व के विषय पर विचार कर अपना निर्णय साधारण सभा में उपस्थित करती है।

सिलेट†—संज्ञा स्त्री० [अं० स्लेट] दे० 'स्लेट'।

सिलोंध†—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बड़ी मछली जो भारत और बर्मा की नदियों में पाई जाती है। यह छह फुट तक लंबी होती है।

सिलोच्च—संज्ञा पुं० [सं० शिलोच्च] एक पर्वत जो गंगा तट पर विश्वामित्र के सिद्धाश्रम से मिथिला जाते समय राम को मार्ग में मिला था। उ०—यह हिमवंत सिलोच्चं नामा। शृंग गंग तट अति अभिरामा।—रघुराज (शब्द०)।

सिलौआ—संज्ञा पुं० [देश०] सन के मोटे रेशे जिनसे टोकरी बनाई जाती है।

सिलौट, सिलौटा—संज्ञा पुं० [हिं० सिल + बट्टा] १. सिल। २. सिल तथा बट्टा।

सिलौटी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल + औटा (प्रत्य०)] भाँग, मसाला आदि पीसने की छोटी सिल।

सिल्क—संज्ञा पुं० [अं०] १. रेशम। २. रेशमी कपड़ा।

सिल्पⓤ—संज्ञा पुं० [सं० शिल्प] दे० 'शिल्प'।

सिल्ल—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सिल'।

सिल्लकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शल्लकी वृक्ष। सलई का पेड़।

सिल्ला—संज्ञा पुं० [सं० शिल] १. अनाज की बालियाँ या दाने जो फसल कट जाने पर खेत में पड़े रह जाते हैं और जिन्हें चुनकर कुछ लोग निर्वाह करते हैं।

मुहा०—सिल्ला बीनना या चुनना = खेत में गिरे अनाज के दाने चुनना। उ०—कबिरा खेतो उन लई, सिल्ला बिनत मजूर (शब्द०)। २. खलियान में गिरा हुआ अनाज का दाना। ३. खलियान में बरसान के स्थान पर लगा हुआ भूसे का ढेर जिसमें कुछ दाने भी चले जाते हैं।

सिल्ली[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिला] १. पत्थर का सात आठ अंगुल लंबा छोटा टुकड़ा जिसपर घिसकर नाई उस्तरे की धार तेज करते हैं। हथियार की धार चोखा करने का पत्थर। सान। २. आरे से चीरकर पड़ा से निकाला हुआ तख्ता। फलक। पटरा। ३. पत्थर का छोटा पतला पटिया। ४. नदी में वह स्थान जहाँ पानी कम और धारा बहुत तेज होती है। (माझी)।

सिल्ली[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिल्ला] फटकने के लिये लगाया हुआ अनाज का ढेर।

सिल्ली[3]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जलपक्षी जिसका शिकार किया जाता है।

विशेष—यह हाथ भर के लगभग लंबा होता है और तालों के किनारे दलदलों के पास पाया जाता है। यह मछली पकड़ने के लिये पानी में गोता लगाता है।

सिल्ह—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिलारस नामक गंधद्रव्य। २. सिलारस का पेड़।

यौ०—सिल्हभूमिक = शिलारस वृक्ष। सिल्हसार।

सिल्हक—संज्ञा पुं० [सं०] सिलारस नामक गंधद्रव्य। कपितैल। कपिचंचल।

सिल्हकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह पेड़ जिससे शिलारस निकलता है। २. कुंदुरु। शल्लकी निर्यास।

सिल्हसार—संज्ञा पुं० [सं०] एक गंधद्रव्य। शिलारस [को०]।

सिव(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिव] दे० 'शिव'। उ०—सिव सिवता इनही तैं लही।—सूर०, ३।१३।

यौ०—सिवरिपु (पु) = शिवका शत्रु कामदेव। सिवलिंग = दे० 'शिवलिंग'। सिवलिंगी = एक लता। शिवलिंगी।

सिवई—संज्ञा स्त्री० [सं० समिता (= गेहूँ का गुँधा हुआ आटा), या सूत्रिका] गुँधे हुए आटे के सूत के से सूखे लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं। सिवैयाँ।

मुहा० सिवई बटना या तोड़ना = गीले आटे को हथेलियों के बीच में रगड़ते हुए सूत के से लच्छे बनाना। सिवैयाँ बनाना। सिवई पूरना = दे० 'सिवई बटना'।

सिवक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सीनेवाला। २. दरजी।

सिवता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवता] शिव का भाव या धर्म। उ०—गंगा प्रगट इनहि तै भई। सिव सिवता इनहीं तै लई।—सूर०, ३।१३।

सिवर—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी। हस्ती। गज।

सिवलिंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवलिङ्गी] दे० 'शिवलिंगी'।

सिवस—संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्त्र। कपड़ा। २. पद्य। श्लोक।

सिवा(पु)[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवा] १. पार्वती। दे० 'शिवा'। उ०—रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाखा।—मानस, १।३५। २. शृगालिन। सियारिन।

सिवा[२]—अव्य० [अ०] अतिरिक्त। छोड़कर। अलावा। बाद देकर। जैसे,—तुम्हारे सिवा और यहाँ कोई नहीं आया।

सिवा[३]—वि० अधिक। ज्यादा। फालतू।

सिवाइ(पु)—अव्य० [अ० सिवा] 'सिवाय', 'सिवा'[१]।

सिवाई[१]—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मिट्टी।

सिवाई[२]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिव (= सीना) + आई (प्रत्य०)] दे० 'सिलाई'।

सिवाती(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वाति, हिं० स्वाती] स्वाती नाम का नक्षत्र। उ०—तुरत गरभ रहि जाइ सिवाती चात्रिक पानी।—पलटू०, पृ० ६५।

सिवान—संज्ञा पुं० [सं० सीमान्त] १. किसी प्रदेश का अंतिम भाग जिसके आगे दूसरा प्रदेश पड़ता हो। हृद। सरहद। सीमा। २. किसी गाँव के छोर पर की भूमि। गाँव की हद। सीमा। ३. गाँव के अंतर्गत भूमि। ४. फसल तैयार हो जाने पर जमींदार और किसान में अनाज का बँटवारा।

सिवाय[१]—क्रि० वि० [अ० सिवा] अतिरिक्त। अलावा। छोड़कर। बाद देकर। उ०—समुद्र को चंद्रमा के सिवाय और कौन बढ़ा सकता है।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ३८६।

सिवाय[२]—वि० १. आवश्यकता से अधिक जरूरत से ज्यादा। बेशी। २. अधिक। ज्यादा। ३. ऊपरी। बालाई। मामूली से अतिरिक्त और।

सिवाय[३]—संज्ञा पुं० वह आमदनी जो मुकर्रर वसूली के ऊपर हो।

सिवार—संज्ञा स्त्री० पुं० [सं० शैवाल] पानी में बालों के लच्छों की तरह फैलनेवाला एक तृण। उ०—(क) पग न इत उत धरन पावत उरझि मोह सिवार।—सूर (शब्द०)। (ख) चलती लता सिवार की, जल तरंग के संग। बड़वानल को जनु धरचो, धूम धूमरो रंग।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—यह नदियों में प्रायः होता है। इसका रंग हलका हरा होता है। यह चीनी साफ करने तथा दवा के काम में आता है। वैद्यक में यह कसैला, कड़ुआ, मधुर, शीतल, हलका, स्निग्ध, नमकीन, दस्तावर, घाव को भरनेवाला तथा त्रिदोष को नाश करनेवाला कहा गया है।

सिवाल—संज्ञा स्त्री०, पुं० [सं० शैवाल] दे० 'सिवार'। उ०—नीलांबर नील जाल बीच ही उरझि सिवाल लट जाल में लपटि परचो।—देव (शब्द०)।

सिवाला—संज्ञा पुं० [सं० शिवालय] शिव का मंदिर।

सिवाली—संज्ञा पुं० [सं० शैवाल] एक प्रकार का मरकत या पन्ना जिसका रंग कुछ हलका होता है और जिसमें कभी कभी ललाई की भी कुछ आभा रहती है।

सिवि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिवि] एक नरेश। विशेष दे० 'शिवि'। उ०—सिवि दधीचि हरिचंद कहानी।—मानस, २।४८।

सिविका(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शिविका] दे० 'शिविका'। उ०—राजा की रजाइ पाइ सचिव सहेली धाइ सतानंद ल्याए सिय सिविका चढ़ाइ कै।—तुलसी (शब्द०)।

सिविर—संज्ञा पुं० [सं० शिविर] दे० 'शिविर'। उ०—बसत सिविर मधि मगध अध सुत। जिमि उड़गन मधि रवि ससि छबि जुत।—गि० दास (शब्द०)।

सिविल—वि० [अँ०] १. नगर संबंधी। नागरिक। २. नगर की शांति के समय देखरेख या चौकसी करनेवाला। जैसे—सिविल पुलिस। ३. मुल्की। माली। ४. शालीन। सभ्य। मिलनसार।

सिविल डिसओबीडिएंस—संज्ञा पुं० [अँ०] दे० 'सविनय कानून का भंग'।

सिविल नाफरमानी—संज्ञा पुं० [अँ० सिविल + फ़ा० नाफ़र्मानी] सविनय अवज्ञा। सविनय कानून भंग।

सिविल प्रोसीजर कोड—संज्ञा पुं० [अँ०] न्यायविधान। जाब्ता दीवानी।

सिविल वार—संज्ञा पुं० [अं०] दे० 'गृहयुद्ध'।

सिविल सर्जन—संज्ञा पुं० [अं०] सरकारी बड़ा डाक्टर जिसे जिले भर के अस्पतालों, जेलखानों तथा पागलखानों को देखने का अधिकार होता है।

सिविल सर्विस—संज्ञा स्त्री० [अं०] ब्रिटिश शासनकाल में अँगरेजी सरकार की एक विशेष परीक्षा जिसमें उत्तीर्ण व्यक्ति देश के प्रबंध और शासन में ऊँचे पद पर नियुक्त होते थे।

सिवीलियन—संज्ञा पुं० [अं०] १. सिविल सर्विस परीक्षा पास किया हुआ मनुष्य। २. मुल्की अफसर। देश के शासन और प्रबंध विभाग का कर्मचारी।

सिवैयाँ—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सिवई'।

मुहा०—सिवैयाँ तोड़ना, सिवैयाँ पूरना या बटना = दे० 'सिवई बटना'।

सिष(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] शिष्य। चेला। उ०—ना गुर मिला न सिष भया लालच खेल्या डांव।—कबीर ग्रं०, पृ० २।

सिष्ट[1]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शिस्त] बंसी की डोरी। उ०—हस्ती लाय सिष्ट सब ढीला। दौड़ आय इक चाल्हहिं लीला।—जायसी (शब्द०)।

सिष्ट(पु)†[2]—वि० [सं० सृष्ट] रचित। उ०—सिष्टं धारण धार्यं वसुमती।—पृ० रा०, १।१।

सिष्ट(पु)[3]—वि० [सं० शिष्ट] दे० 'शिष्ट'। उ०—बर्नाश्रम में निष्ट इष्ट रत सिष्ट अदूषित।—श्यामा० (भू०), पृ० ४।

सिष्णासु—वि० [सं०] स्नान का इच्छुक [को०]।

सिष्य(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] दे० 'शिष्य'। उ०—पाय रजायसु राय को ऋषिराज बोलाए। सिष्य सचिव सेवक सखा सादर सिर नाए।—तुलसी (शब्द०)।

सिस(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० शिशु] दे० 'सिसु'।

सिसकना—क्रि० अ० [अनु० या सं० सीत् + करण] १. भीतर ही भीतर रोने में रुक रुककर निकलती हुई साँस छोड़ना। जैसे,—लड़का सिसक सिसककर रोता है। २. रोक रोककर लंबी साँस छोड़ते हुए भीतर ही भीतर रोना। शब्द निकालकर न रोना। खुलकर न रोना। उ०—पिय बिन जिय तरसत रहे, पल भर बिरह सताय। रैन दिवस माहिं कल नहीं, सिसक सिसक जिय जाय।—कबीर सा० सं०, पृ० ४४।

मुहा०—सिसकती भिनकती = मैली कुचैली और रोनी सूरत की (स्त्री)।

३. जी धड़कना। धकधकी होना। बहुत भय लगना। जैसे,—वहाँ जाते हुए जी सिसकता है। ४. उलटी साँस लेना। हिचकियाँ भरना। मरने के निकट होना। ५. (प्राप्ति के लिये) तरसना, रोना। (पाने के लिये) व्याकुल होना। उ०—प्रभुहि बिलोकि मुनिगन पुलके कहत भूरि भाग भए सब नीच नारि नर हैं। तुलसी सो सुख लाहु लूटत किरात कोल जाको सिसकत सुर विधि हरि हर हैं।—तुलसी (शब्द०)।

सिसकारना[1]—क्रि० अ० [अनु० सी सी + करना] १. जीभ दबाते हुए वायु मुँह से छोड़ना। सीटी का सा शब्द मुँह से निकालना। सुसकारना।

संयो० क्रि०—देना।

२. जीभ दबाते हुए मुँह से साँस खींचकर 'सी सी' शब्द निकालना। अत्यंत पीड़ा या आनंद के कारण मुँह से साँस खींचना। शीत्कार करना।

सिसकारना[2]—क्रि० स० सुसकार कर या सीटी के शब्द से कुत्ते को किसी ओर लपकाना। लहकारना।

संयो० क्रि०—देना।

सिसकारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिसकारना] १. सिसकारने का शब्द जीभ दबाते हुए मुँह से वायु छोड़ने का शब्द। सीटी का सा शब्द। २. कुत्ते को किसी ओर लपकाने के लिये सीटी का शब्द। ३. जीभ दबाते हुए मुँह से साँस खींचने का शब्द। अत्यंत पीड़ा या आनंद के कारण मुँह से निकला हुआ 'सी सी' शब्द। शीत्कार।

क्रि० प्र०—देना।—भरना।

सिसकी—संज्ञा स्त्री० [अनु० सी सी या सं० शीत्] १. भीतर ही भीतर रोने में रुक रुककर निकलती हुई साँस का शब्द। खुलकर न रोने का शब्द। रुकती हुई लंबी साँस भरने का शब्द।

क्रि० प्र०—भरना।—लेना।

२. सिसकारी। शीत्कार। उ०—भ्रुव मटकावति नैन नचावति। सिंजित सिसकिन सोर मचावति।—पद्माकर ग्रं०, पृ० २२७।

सिसिक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सींचने की इच्छा। छिड़कने या तर करने की इच्छा [को०]।

सिसिक्षु—वि० [सं०] तर करने, सींचने का इच्छुक [को०]।

सिसियांद—संज्ञा स्त्री० [सं०] मछली की सी गंध। बिसायँध।

सिसिर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिशिर] एक ऋतु। दे० 'शिशिर'। उ०—(क) चलत चलत लौं ले चले, सब सुख संग लगाय। ग्रीसम बासर सिसिर निसि, पिय मो पास बसाय।—बिहारी (शब्द०)। (ख) पावस परषि रहे उधरारै। सिसिर समै बसि नीर मझारै।—पद्माकर (शब्द०)।

सिसु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिशु] दे० 'शिशु'। उ०—(क) लोचना-भिराम घनस्याम राम रूप सिसु, सखी कहै सखी सों तू प्रेम पथ पालि री।—तुलसी (शब्द०)। (ख) देवर फूल हने जु सिसु उठी हरखि अँग फूल। हँसी करत औखध सखिनि देह ददोरनि भूल।—बिहारी (शब्द०)।

सिसुघातिनी(पु)—वि० [सं० शिशुघातिनी] शिशु की हत्या करनेवाली (पूतना)। उ०—सिसुघातिनी परम पापिनी। संतनि की डसनी जु साँपिनी।—नंद० ग्रं०, पृ० २३६।

सिसुता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शिशुता] दे० 'शिशुता'। उ०—(क) श्याम के संग सदा बिलसी सिसुता में सुता म कछू नहीं जान्यो।—देवी (शब्द०)। (ख) छुटो न सिसुता की झलक, झलक्यो

जोबन अंग। दीपति देहि दुहून मिलि दिपति ताफता रंग। बिहारी (शब्द०)।

सिसुपालⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० शिशुपाल] चेदि देश का राजा। विशेष दे० 'शिशुपाल'।

सिसुमार—संज्ञा पुं० [सं० शिशुमार] दे० 'शिशुमार'।

सिसुमार चक्र—संज्ञा पुं० [सं० शिशुमारचक्र] सौर जगत्। दे० 'शिशुमारचक्र'। उ०—एक एक नग देखि अनेकन उडगन वारिय। बसत मनहुँ सिसुमार चक्र तन इमि निरधारिय। —गि० दास (शब्द०)।

सिसृक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सृष्टि करने की इच्छा। रचने या बनाने की इच्छा।

सिसृक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] सृष्ट करने की इच्छा रखनेवाला। रचना का इच्छुक। उ०—जाको मुमुक्षु जे प्रेम बुभुक्षु गुणी यह विश्व सिसृक्षु सदा ही। काल जिघृक्षु सरुक्षु कृपा की स्वपानन स्वक्ष स्वपक्ष प्रिया ही।—रघुराज (शब्द०)।

सिसोदिया—संज्ञा पुं० [सिसोद (स्थान)] गुहलौत राजपूतों की एक शाखा जिसकी प्रतिष्ठा क्षत्रिय कुलों में सबसे अधिक है और जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौड़ थी और आधुनिक राजधानी उदयपुर है।

विशेष—क्षत्रियों में चित्तौड़ या उदयपुर का घराना सूर्यवंशीय महाराज रामचंद्र की वंशपरंपरा में माना जाता है। इन क्षत्रियों का पहले गुजरात के वल्लभीपुर नामक स्थान में जाना कहा जाता है। वहाँ से बाप्पारावल ने आकर चित्तौड़ को तत्कालीन मोरी शासक से लेकर अपनी राजधानी बनाया। मुसलमानों के आने पर भी चित्तौड़ स्वतंत्र रहा और हिंदू शक्ति का प्रधान स्थान माना जाता था। चित्तौड़ में बड़े बड़े पराक्रमी राणा हो गए हैं राणा समर सिंह, राणा कुंभा, राणा साँगा आदि मुसलमानों से बड़ी वीरता से लड़े थे। प्रसिद्ध वीर महाराणा प्रताप किस प्रकार अकबर से अपनी स्वाधीनता के लिये लड़े, यह प्रसिद्ध ही है। सिसोद नामक स्थान में कुछ दिन बसने के कारण गुहिलौतों को यह शाखा सिसोदिया कहलाई।

सिस्कⓅ‡—वि० [सं० शुष्क] दे० 'शुष्क'। उ०—करत देह को सिस्क।—ब्रज० ग्रं०, पृ० ४७।

सिस्टिⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सृष्टि] दे० 'सृष्टि'।

सिस्न—संज्ञा पुं० [सं० शिश्न] दे० 'शिश्न'।

सिस्यⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] दे० 'शिष्य'।

सिह—वि० [फ़ा०] तीन। त्रय [को०]।

सिहद्दा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिह या सेह + अ० हद] वह स्थान जहाँ तीन हदें मिलती हों।

सिहपर्णी—संज्ञा पुं० [सं०] अड़ूसा। वासक वृक्ष।

सिहर—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल] उ०—सिहरने की क्रिया या भाव। सिहरन। उ०—सिकता को रेखाएँ उभारभर जाती अपनी तरल सिहर।—लहर, पृ० २।

सिहरन—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल] कँपकँपी। रोमांच। सिहरने की क्रिया।

सिहरना†—क्रि० अ० [सं० शीत + हिं० ना] १. ठंढ से काँपना। २. काँपना। कंपित होना। ३. भयभीत होना। दहलना। उ०—छनक वियोग कु याद परैं अतिसैं हिय सिहरत। —व्यास (शब्द०)। ४. रोंगटे खड़े होना।

सिहरा—संज्ञा पुं० [हिं० सिर + हरा या हार] दे० 'सेहरा'।

सिहराना[१]—क्रि० स० [हिं० सिहरना] १. सरदी से कँपाना। शीत से कंपित करना। २. कँपाना। कंपित करना। ३. भयभीत करना। दहलाना।

सिहराना[२]—क्रि० स०, क्रि० अ० दे० 'सहलाना'। २. दे० 'सिहलाना'—१।

सिहरावन†—संज्ञा पुं० [हिं० सिहलाना] दे० 'सिहलावन'।

सिहरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिहरना] १. शीतजन्य कंप। ठंढ के कारण कँपकँपी। २. कंप। कँपकँपी। ३. भय। दहलना। ४. जूड़ी का बुखार। ५. रोंगटे खड़े होना। रोमहर्ष। लोमहर्ष।

सिहरू—संज्ञा पुं० [देश०] संभालू। सिंदुवार।

सिहलाना†—क्रि० अ० [सं० शीतल] १. सिराना। ठंढा होना। २. शीत खा जाना। सीड़ खाना। नम होना। ३. ठंढ पड़ना। सरदी पड़ना।

सिहलावन†—संज्ञा पुं० [हिं० सिहलाना] सरदी। ठंढ। जाड़ा।

सिहली—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतली] शीतली जटा। शीतली लता।

सिहान—संज्ञा पुं० [सं० सिंहाण] मंडूर। लोहकिट्ट।

सिहाना†[१]—क्रि० अ० [सं० ईर्ष्या, पु० हिं० हिंसिषा] १. ईर्ष्या करना। डाह करना। २. किसी अच्छी वस्तु को देखकर इस बात से दुःखी होना कि वैसी वस्तु हमारे पास नहीं है। स्पर्धा करना। उ०—द्वारिका की देखि छबि सुर असुर सकल सिहात।—सूर (शब्द०) ३. पाने के लिये ललचना। लुभाना। उ०—सूर प्रभु को निरखि गोपी मनहि मनहि सिहाति।—सूर (शब्द०)। ४. मुग्ध होना। मोहित होना। उ०—सूर श्याम मुख निरखि जसोदा मनहीं मनहि सिहानी।—सूर (शब्द०)। (ख) लाल अलौकिक लरिकई लखि लखि सखी सिहाति—बिहारी (शब्द०)।

सिहाना[२]—क्रि० स० १. ईर्ष्या की दृष्टि से देखना। २. अभिलाष की दृष्टि से देखना। ललचना। उ०—समउ समाज राज दशरथ को लोकप सकल सिहाहीं।—तुलसी (शब्द०)। ३. अभिलाषुक अथवा मुग्ध होकर प्रशंसा करना। उ०—देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं। आज पुरंदर सम कोउ नाहीं।—मानस १।३१७।

सिहारनाⓅ†—क्रि० स० [देश०] तलाश करना। ढूँढ़ना। २. जुटाना। उ०—हम कन्यन को ब्याह बिचारौ। इनहि जोग बर तुमहु सिहारौ।—पद्माकर (शब्द०)।

सिहिकना—क्रि० अ० [सं० शुष्क] सूखना। (फसल का)।

सिहिटि†Ⓟ—[सं० सृष्टि] दे० 'सृष्टि'।

सिहुंड—संज्ञा पुं० [सं० सिहुण्ड] सेहुँड़ का पेड़। स्नुही। थूहर।

सिहोड़, सिहोर†—संज्ञा पुं० [सं० सिहुण्ड] थूहर। सेहुँड़। स्नुही। उ०—बेगि बोलि, बलि, बरजिए करतूति कठोरे। तुलसी दलि रूँध्यो चहै सठ साखि सिहोरे।—तुलसी (शब्द०)।

सिह्ल, सिह्लक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अश्म पुष्प। शैलज। लोहबान। धूप। २. एक वृक्ष का सुगंधित गोंद। गुग्गुल [को०]।

सिह्लकी, सिह्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुगंधित गोंदवाला वृक्ष। गुग्गुल का पेड़। २. लोहबान। तुरुष्क [को०]।

सींक—संज्ञा स्त्री० [सं० इषीका] १. मूँज या सरपत की जाति के एक पौधे के बीच का सीधा पतला कांड जिसमें फूल या घूआ लगता है। मूँज आदि की पतली तीली। उ०—सींक धनुष हित सिखन सकुचि प्रभु लीन। मुदित माँगि इक धनुही नृप हँसि दीन।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—इस कांड का घेरा मोटी सूई के बराबर होता है और यह कई कामों में आता है। बहुत सी तीलियों को एक में बाँधकर झाड़ू बनाते हैं।

२. किसी तृण का सूक्ष्म कांड। किसी घास का महीन डंठल। ३. किसी घास फूस के महीन डंठल का टुकड़ा। तिनका। ४. शंकु। तीली। सूई की तरह पतला लंबा खंड। ५. नाक का एक गहना। लौंग। कील। उ०—जटित नीलमनि जगमगति सींक सुहाई नाक। मनौ अली चंपक कली बसि रस लेत निसाँक।—बिहारी (शब्द०)। ६. कपड़े पर की खड़ी महीन धारी।

सींकपार—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बत्तख।

सींकर संज्ञा पुं० [हिं० सींक] सींक में लगा फूल या घूआ।

सींका¹—संज्ञा पुं० (हिं० सींक) पेड़ पौधों की बहुत पतली उपशाखा या टहनी जिसमें पत्तियाँ उगी रहती या फूल लगते हैं। हाँड़ी। जैसे नीम का सींका।

सींका²—संज्ञा पुं० [सं० शिक्यक] सिकहर। सीका। विशेष दे० 'छीका'।

सींकिया¹—संज्ञा पुं० [हिं० सींक + इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का रंगीन कपड़ा सिसमें सींक सी महीन सीधी धारियाँ बिलकुल पास पास होती हैं। जैसे,—सींकिये का पायजामा।

सींकिया²—वि० सींक सा पतला।

मुहा०—सींकिया पहलवान = दुबला, पतला आदमी जो अपने को बड़ा बली समझता हो।

सींग—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्ग] १. खुरवाले कुछ पशुओं के सिर के दोनों ओर शाखा के समान निकले हुए कड़े नुकीले अवयव जिनसे वे आक्रमण करते हैं। विषाण। जैसे,—गाय के सींग, हिरन के सींग।

विशेष—सींग कई प्रकार के होते है और उनकी योजना भी भिन्न भिन्न उपादानों की होती है। गाय, भैंस आदि के पोले सींग ही असली सींग हैं जो अंडधातु और चूने आदि से संघटित तंतुओं के योग से बने होते हैं और बराबर रहते हैं। बारहसिंगों के सींग हड्डी के होते हैं और हर साल गिरते और नए निकलते हैं।

क्रि० प्र०—निकलना।—मारना।

मुहा०—सींग कटाकर बछड़ों में मिलना = बूढ़े होकर बच्चों में मिलना। किसी सयाने का बच्चों का साथ देना। सींग दिखाना = अँगूठा दिखाना। कोई वस्तु न देना और चिढ़ाना। सींग निकलना = (१) चौपाए का जवान होना। (२) इतराना। पागलपन करना। सनकना। सींग पर मारना = कुछ न समझना। तुच्छ समझना। कुछ परवा न करना। सींग पूँछ गिराना = निरीह या दीन होना। अति नम्रता दिखाना। परास्त होना। (कहीं) सींग समाना = कहीं ठिकाना मिलना। शरण मिलना। जैसे,—जहाँ कहीं सींग समाएगी वहाँ। (किसी के सिर पर) सींग होना = कोई विशेषता होना। कोई खसूसियत होना। औरों से बढ़कर कोई बात होना (व्यंग्य)।

२. सींग का बना एक बाजा जो फूँककर बजाया जाता है। सिंगी। उ०—सींग बजावत देखि सुकवि मेरे दृग अटके।—व्यास (शब्द०)। ३. पुरुष की इंद्रिय (बाजारू)।

सींगड़ा¹—संज्ञा पुं० [हिं० सींग + ड़ा (प्रत्य०)] १. बारूद रखने का चोंगा। बारूददान। २. एक प्रकार का बाजा जो मुँह से बजाया जाता है। सिंगी। ३. शृंग। सींग। उ०—माथा ऊपर सींगड़ा लंबा नव नव हाथ।—राम० धर्म०, पृ० ७७।

सींगणि†—संज्ञा स्त्री० [सं० शिञ्जनी] प्रत्यंचा। उ०—इक लष सींगणि नव लष बाँन। बेध्या मीन गगन अस्थाँन। बेध्या मीन गगन कै साथ। सति सति भाषंत श्री गोरखनाथ।
—गोरख०, पृ० ४५।

सींगना—क्रि० स० [हिं० सींग] सींग देखकर चोरी के पशु पकड़ना। चोरी के चौपायों की सींग द्वारा शिनाख्त करना।

सींगर, सींगरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का लोबिया या फली जिसकी तरकारी होती है। मोगरे की फली। सींगर। उ०—सूरन करि तरि सरस तोरई। सेमि सींगरी छमकि झोरई। सूर (शब्द०)।

सींगा—संज्ञा पुं० [हिं० सींग] दे० 'सींगी'। उ०—चंगु, चुटुकुल, बाँसी, पुहिल, सींगा, बजा।—वर्ण० पृ० २।

सींगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] १. हिरन के सींग का बना बाजा जो मुँह से बजाया जाता है। सिंगी। उ०—सींगी संख सेग डफ बाजे। बंसकार महुआ (अर) सुर साजे।—जायसी (शब्द०)। २. वह पोला सींग जिससे जर्राह शरीर से दूषित रक्त खींचते हैं।

मुहा०—सींगी लगाना या तोड़ना = (१) सींगी से रक्त खींचना। (२) चुंबन करना। (बाजारू)।

३. एक प्रकार की मछली जिसके मुँह के दोनों ओर सींग से निकले

रहते हैं। तोमड़ी। उ०—सींगी भाकुर बिनि सब धरी। —जायसी (शब्द०)।

सींघन—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों के माथे पर दो या अधिक भौंरीवाला टीका।

सींच—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींचना] १. सींचने की क्रिया या भाव। सिंचाई। छिड़काव।

सींचना—क्रि० स० [सं० सिञ्चन] १. पानी देना। पानी से भरना। आबपाशी करना। पटाना। जैसे,—खेत सींचना; बगीचा सींचना। उ०—अति अनुराग सुधाकर सींचत दाड़िम बीज समान।—सूर (शब्द०)। २ पानी छिड़ककर तर करना। भिगोना। ३. छिड़कना। (पानी आदि) डालना या छितराना। उ०—(क) मार सुमार करी खरी अरी भरी हित मारि। सींच गुलाब घरी घरी अरी बरोहि न बारि। - बिहारी (शब्द०)। (ख) आँच पय उफनात सींचत सलिल ज्यों सकुचाइ।—तुलसी (शब्द०)।

सींची—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींचना] सींचने का समय।

सींव, सींवⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सीमा] सीमा। हद। मर्यादा। उ०—(क) सुख की सींवँ अवधि आनँद की अवध बिलोकिहौं जाइहौं।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सुखनि की सींव सोहै सुजस समूह फैलो मानो अमरावती को देखि कै हँसतु है। —गुमान (शब्द०)।

मुहा०—सींव चरना या कोड़ना = अधिकार दिखाना। दबाना। जबरदस्ती करना। उ०—है काके द्वै सीस ईस के जो हठि जन की सींव चरै।—तुलसी (शब्द०)।

सींवनिⓅ†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीना] जोड़ या संधि का स्थान। जोड़ की रेखा या चिह्न। उ०—येडी वाम पाँव की लगावै सींवनि कै बीचि, वाही जोनि ठोर ताहि नीकैं करि जानिए।—सुंदर ग्रं०, भा० १, पृ० ४२।

सींवा—संज्ञा स्त्री० [सं० सीमा] दे० 'सीमा'। उ०—निरखि सखि सुंदरता की सींवा। अधर अनूप मुरलिका राजति, लटकि रहति अध ग्रीवा।—सूर०, १०।१८०८।

सी—वि० स्त्री० [सं० सम, हिं० सा] सम। समान। तुल्य सदृश। जैसे,—वह स्त्री बावली सी है। उ०—(क) मूरति की सूरति कही न परै तुलसी पै जानै सोई जाके उर कसकै करक सी। तुलसी (शब्द०)। (ख) दुरै न निबरघटौ दिए ए गवरी कुचाल। विष सी लागति है बुरी हँसी खिसी की लाल। —बिहारी (शब्द०। (ग) सरद चंद की चाँदनी मंद परति सी जाति।—पद्माकर (शब्द०)।

मुहा०—अपनी सी = अपने भरसक। जहाँ तक अपने से हो सके, वहाँ तक। उ०—मैं अपनी सी बहुत करी री।—सूर (शब्द०)।

सी[२]—संज्ञा स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो अत्यंत पीड़ा या आनंद रसास्वाद के समय मुँह से निकलता है। शीत्कार। सिसकारी। उ०—'सी' करनवारी सेद सीकरन वारी रति सी करन कारी सो बसीकरनवारी है।—पद्माकर (शब्द०)।

सी[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० सीत] बीज की बोआई।

सी†[४]—संज्ञा पुं० [सं० शीत] शीत। दे० 'सीउ'। उ०—माह मास सी पड़्यो अतिसार।—बी० रासो, पृ० ६७।

सीⓅ[५]—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] उ०—अपने अपने को सब चाहत नीको मूल दुहूँ को दयालु दूलह सी को।—तुलसी ग्रं०, पृ० ५४६।

सी० आई० डी०—संज्ञा पुं० [अं० क्रिमिनल इनवेस्टिगेशन डिपार्टमेंट का संक्षिप्त रूप] दे० 'क्रिमिनल इनवेस्टिगेशन डिपार्टमेंट'। खुफिया विभाग। जैसे,—सी० आई० डी० ने संदेह पर एक आदमी को गिरफ्तार किया। २. भेदिया। गुप्तचर।

सीअⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] दे० 'सीता'। उ० भयउ मोह सिव कहा न कीन्हा। भ्रम बस वेषु सीअ कर लीन्हा। —मानस, पृ० ५५

सीउⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शीत] शीत। ठंढ। उ०—(क) कीन्हेसि धूप सीउ औ छाहाँ।—जायसी (शब्द०)। (ख) जहाँ भानु तहँ रहा न सीउ।—जायसी (शब्द०)।

सीकचा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीखचह्] लोहे की छड़। सीखचा।

सीकर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. जलकण। पानी की बूँद। छींटा। उ०—(क) श्रम स्वेद सीकर गुंड मंडित रूप अंबुज कोर।—सूर (शब्द०)। (ख) राम नाम रति स्वाति सुधा सुभ सीकर प्रेम पियासा।—तुलसी (शब्द०)। २. पसीना। स्वेदकण। उ०—आनन सीकर सी कहिए धक सोवत ते अकुलाय उठी क्यों।—केशव (शब्द०)।

सीकरⓅ[२]—संज्ञा पुं० [सं० शृगाल] स्यार। गीदड़।

सीकरⓅ[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] जंजीर। सिकड़ी। उ०—भट भट धरे असी कर में चढ़े सीकर सुंडन मैं लसत।—गि० दास (शब्द०)।

सीकराⓅ—संज्ञा पुं० [फ़ा० शिकरह्] बाज। श्येन। एक शिकारी पक्षी। उ०—सीकरा सो काल है कलसरी सी लपेट लेहै, चंगुल के तले दबे दबे चिचयायगे।—मलूक० बानी, पृ० ३१।

सीकल†[१]—संज्ञा पुं० [देश०] डाल का पका हुआ आम।

सीकल[२]—संज्ञा स्त्री० [अ० सैकल] हथियारों का मोरचा छुड़ाने की क्रिया। हथियार की सफ़ाई।

सीकस—संज्ञा पुं० [देश०] ऊसर। उ०—सिंह शार्दुल यक हर जोतिनि सीकस बोइनि धाना।—कबीर (शब्द०)।

सीका[१]—संज्ञा पुं० [सं० शीर्षक] १. सोने का एक आभूषण जो सिर पर पहना जाता है। २. सिक्का।

सीका[२]—संज्ञा पुं० [सं० शिक्या] ऊपर टाँगने की सुतरी आदि की जाली जिसपर दूध, दही आदि का बरतन रखते हैं। छींका। सिकहर।

सीकाकाई—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी फलियाँ रीठे की भाँति सिर के बाल आदि मलने के काम में आती हैं। कुछ लोग इसे सातला भी मानते हैं।

सीकार(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सीत्कार] दे० 'सीत्कार'। उ०—चुंबन करत कपोल मुखहि सीकार करावत। हृदय माँझ धँसि जात कुचन पर रोम बढ़ावत।—ब्रज० ग्रं०, पृ० १०३।

सीकारी(पु)—संज्ञा पुं० [फ़ा० शिकार] शिकारी। उ०—बड़े बड़े सीकारी जोधा, आगे पग है डारा।—धरम० श०, पृ० २७।

सीकी[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीका] छोटा सीका या छीका। छोटा सिकहर।

सीकी[2]—संज्ञा पुं० [देश०] १. छेद। सूराख। २. मुँह। मुहँड़ा।

सीकुर—संज्ञा पुं० [सं० शूक] गेहूँ, जौ आदि की बाल के ऊपर निकले हुए बाल के से कड़े सूत। शूक। उ०—गड़त पाँइ जव आइ, बड़ी बिथा सीकुर करत। क्यों न पीर सरसाइ याके हिय भूपति चुभ्यो।—गुमान (शब्द०)।

सीको†—संज्ञा पुं० [सं० शिक्य] दे० 'सीका'।

सीक्रेट[1]—वि० [अं०] छिपा हुआ। गुप्त। पोशीदा। जैसे, सीक्रेट पुलिस। सीक्रेट कमिटी।

सीक्रेट[2]—संज्ञा पुं० गुप्त बात। जैसे,—गवर्नमेंट सीक्रेट बिल।

सीख[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा, प्रा० सिक्खा] १. सिखाने की क्रिया या भाव। शिक्षा। तालीम। २. वह बात जो सिखाई जाय। उ०—(क) मोही मैं रहत रहै मोही सौं उदास सदा सीखत न सीख तन सीख निरधारौ है।—ठाकुर० पृ० १२। ३. परामर्श। सलाह। मंत्रणा। उपदेश। उ०—(क) याकी चीख सुनै ब्रज को रे।—सूर (शब्द०)। (ख) मोल्हन कहत सीख मेरो सीस धरु रे।—हम्मीर०, पृ० २०।

सीख[2]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सीख़] १. लोहे की लंबी पतली छड़। शलाका। तीली। २. वह पतली छड़ जिसमें गोदकर मांस भूनते हैं। ३. बड़ी सूई। सूआ। शंकु। ४. लोहे की छड़ जिससे जहाज के पेंदे में आया हुआ पानी नापते हैं। (लश०)।

सीखचा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीख़चह्] १ लोहे की सीख जिसपर मांस लपेटकर भूनते हैं। २. लोहे की छड़। ३. लोहेकी नुकीली छड़।

यौ०—सीखचा कबाब = सीखचे पर गोद कर भूना हुआ कबाब।

सीखना(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षण, प्रा० सिक्खण, हिं० सीखना] शिक्षा। सीख।

सीखना—क्रि० स० [सं० शिक्षण, प्रा० सिक्खण] १. ज्ञान प्राप्त करना। जानकारी प्राप्त करना। किसी से कोई बात जानना। जैसे,—विद्या सीखना, कोई बात सीखना। २. किसी कार्य के करने की प्रणाली आदि समझना। काम करने का ढंग आदि जानना। जैसे,—सितार सीखना, शतरंज सीखना। ३. अनुभव प्राप्त करना।

संयो० क्रि०—जाना।—लेना।

सीगा[1]—संज्ञा पुं० [अ० सीग़ह्] १. साँचा। ढाँचा। २. व्यापार। पेशा। ३. पुरुष, काल आदि की दृष्टि से क्रिया का रूप (को०)। ४. विभाग। महकमा।

यौ०—सीगेवार = ब्योरेवार।

५. एक प्रकार के वाक्य जो मुसलमानों के विवाह के समय कहे जाते हैं।

सीगा[2]—संज्ञा पुं० [अं० सिगार] दे० 'सिगार'।

सीगा(पु)†[3]—वि० [हिं० सगा] अपना। निकटस्थ। जो पराया न हो। संबंधी। उ०—नेड़ा बेसाँ जाय नित, सीगो मित्र समान।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ४५।

सीगारा[1]—संज्ञा पुं० [देश०] मोटा कपड़ा।

सीगारा[2]—संज्ञा पुं० [अं० सिगार] दे० 'सिगार'।

सीच(पु)—संज्ञा स्त्री० [?] हाल।

सीचन—संज्ञा पुं० [देश०] खारी पानी से मिट्टी निकालने का एक ढंग।

सीचापू—संज्ञा स्त्री० [सं०] यक्षिणी।

सीछन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षण] दे० 'शिक्षण'। उ०—सीछन काज वजीरन को कढ़ै बोल यों एदिलसाहि सभा सों।—भूषण ग्रं०, पृ० १३५।

सीज[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धि, प्रा० सिज्झि, हिं० सीझ] दे० 'सीझ'।

सीज[2]—संज्ञा पुं० [देश०] थूहर। सेहुँड़।

सीजना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध, प्रा० सिज्झ, हिं० सीज + ना] दे० 'सीझना'।

सीझ—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्धि, प्रा० सिज्झि] सीझने की क्रिया या भाव। गरमी से गलाव।

सीझना—क्रि० अ० [सं० सिद्ध, प्रा० सिज्झ, हिं० सीज, सीझ + ना (प्रत्य०)] १. आँच या गरमी पाकर गलना पकना। चुरना। जैसे,—दाल सीझना, रसोई सीझना। २. आँच या गरमी से मुलायम पड़ना। ताव खाकर नरम पड़ना। ३. सिद्ध होना। उ०—सबद बिंदौ अवधू सबद बिंदौ सबदे सीझंत काया।—गोरख०, पृ० ४५। ४. सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि में भींगकर मुलायम होना। ५. ताप या कष्ट सहना। क्लेश झेलना। ६. कायक्लेश सहना। तप करना। तपस्या करना। उ०—(क) एइ वहि लागि जनम भरि सीझा। चहै न औरहि, ओही रीझा।—जायसी (शब्द०)। (ख) गनिका गीध अजामिल आदिक लै कासी प्रयाग कब सीझे।—तुलसी (शब्द०)। ७. सरदी से गलना। बहुत ठंढ खाना। ८. ऋण का निबटारा होना। ९. मिलने के योग्य होना। प्राप्तव्य होना। जैसे,—(क) बयाना हुआ और तुम्हारी दलाली सीझी। (ख) वह मकान रेहन रख लोगे तो १) सैंकड़े का ब्याज सीझेगा।

सीट[1]—संज्ञा स्त्री० [अं०] १. बैठने का स्थान। आसन। २. एक आदमी के बैठने की जगह (को०)। ३. किसी सभा, समिति मंडल आदि के सदस्य की संख्या (को०)।

सीट[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] सीटने की क्रिया या भाव। जीट।

सीटना—क्रि० स० [अनु०] डींग मारना। शेखी मारना। बढ़ बढ़ कर बातें करना।

सीट पटाँग--संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना + (ऊट) पटाँग] बढ़ बढ़कर की जानेवाली बातें। घमंड भरी बात।

सीटी--संज्ञा स्त्री० [सं० शीतृ] १. वह पतला महीन शब्द जो ओठों को गोल सिकोड़कर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है।

क्रि० प्र०--बजाना।

मुहा०--सीटी देना = सीटी के शब्द से बुलाना या और कोई संकेत करना।

२. इसी प्रकार का शब्द जो किसी बाजे या यंत्र आदि के भीतर की हवा निकालने से होता है। जैसे,--रेल की सीटी।

मुहा०--सीटी देना = (१) सीटी का शब्द निकालना। जैसे,--रेल सीटी दे रही है। (२) सीटी से सावधान करना।

३. वह बाजा या खिलौना जिसे फूँकने से उक्त प्रकार का शब्द निकले।

यौ०--सीटीबाज = मुँह से बार बार सीटी की आवाज निकालनेवाला।

सीठ--संज्ञा स्त्री० [सं० शिष्ट, प्रा० सिट्ठ (= शेष)] दे० 'सीठी'।

सीठना--संज्ञा पुं० [सं० अशिष्ट, प्रा० असिट्ठ + हिं० ना (प्रत्य०)] अश्लील गीत जो स्त्रियाँ विवाहादि मांगलिक अवसरों पर गाती हैं। सीठनी। विवाह की गाली।

सीठनी--संज्ञा स्त्री० [हिं० सीठना] विवाह की गाली।

सीठा--वि० [सं० शिष्ट, प्रा० सिट्टी (= बचा हुआ)] नीरस। फीका। बिना स्वाद का। बेजायका।

सीठापन--संज्ञा पुं० [हिं० सीठा + पन] नीरसता। फीकापन।

सीठी[१]--संज्ञा स्त्री० [सं० शिष्ट, प्रा० सिट्ठी (= बचा हुआ)] १. फल, फूल पत्ते आदि का रस निकल जाने पर बचा हुआ निकम्मा अंश। वह वस्तु जिसका रस या सार निचुड़ गया हो। खूद। जैसे,--अनार की सीठी, भाँग की सीठी, पान की सीठी। २. निस्सार वस्तु। सारहीन पदार्थ। ३. नीरस वस्तु। फीकी चीज।

सीठी[२]--वि० स्त्री० दे० 'सीठा'।

सीड़--संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल या शीत + प्रा० ड (प्रत्य०)] सील। तरी। नमी।

सीढ़ी--संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी या देशी सिड्ढी (= सीढ़ी)] १. किसी ऊँचे स्थान पर क्रम क्रम से चढ़ने के लिये एक के ऊपर एक बना हुआ पैर रखने का स्थान। निसेनी। जीना। पैड़ी। २. बाँस के दो बल्लों का बना लंबा ढाँचा, जिसमें थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर रखने के लिये डंडे लगे रहते हैं और जिसे भिड़ाकर किसी ऊँचे स्थान तक चढ़ते हैं। बाँस की बनी पैड़ी।

क्रि० प्र०--लगाना।

यौ०--सीढ़ी का डंडा = पैर रखने के लिये बाँस की सीढ़ी में जड़ा हुआ डंडा।

मुहा०--सीढ़ी सीढ़ी चढ़ना = क्रम क्रम से ऊपर की ओर बढ़ना। धीरे धीरे उन्नति करना।

३. उत्तरोत्तर उन्नति का क्रम। धीरे धीरे आगे बढ़ने की परंपरा। ४. हैंड प्रेस का एक पुर्जा जिसपर टाइप रखकर छापने का प्लैटेन लगा रहता है। ५. घुड़िया के आकार का लकड़ी का पाया जो खंडसाल में चीनी साफ करने के काम में आता है। ६. एक गराड़ीदार लकड़ी जो गिरदानक की आड़ के लिये लपेटन के पास गड़ी रहती है। (जुलाहे)।

सीत(५)†[१]--संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] दे० 'सीता'। उ०--बड़ कँवरि सीत विदेह री रघुनाथ वर राजेस।--रघु० रू०, पृ० ८४।

सीत†[२]--संज्ञा पुं० [सं० शीत] दे० 'शीत'।

सीत†[३]--संज्ञा पुं० [सं० सिक्थ] दे० 'सीथ'। उ०--बड़ा महापरसाद सीत संतन कर छाड़न।--पलटू०, भा० १, पृ० १५।

सीतकर--संज्ञा पुं० [सं० शीतकर] चंद्रमा। उ०--हौं हीं बौरी बिरह बस, कै बौरौ सबु गाउँ। कहा जानि ए कहत हैं ससिहिं सीतकर नाउँ।--बिहारी र०, दो० ६५।

सीतपकड़--संज्ञा पुं० [हिं० शीत + पकड़ना] एक रोग जो हाथी को शीत से होता है।

सीतपन(५)†--संज्ञा पुं० [सं० सीतापति] दे० 'सीतापति'। उ०--प्रारंभै दौलत पुन पाणां पुणै सुवाणां सीतपत।--रघु० रू०, पृ० २४।

सीतमयूख(५)--संज्ञा पुं० [सं० शीतमयूख] चंद्रमा। सीतकर। सुधाकर। उ०--घोर अनल कों भखत है सीतमयूख सहाय।--दीन० ग्रं०, पृ० १७६।

सीतल‡(५)--वि० [सं० शीतल] दे० 'शीतल'।

सीतल चीनी--संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल + हिं० चीनी] दे० 'शीतलचीनी'।

सीतलपाटी--संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल + हिं० पाटी] १. एक प्रकार की बढ़िया चिकनी चटाई। २. पूर्व बंगाल और आसाम के जंगलों में होनेवाली एक प्रकार की झाड़ी जिससे चटाई या सीतलपाटी बनती है। ३. एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

सीतल बुकनी--संज्ञा स्त्री० [हिं० शीतल + बुकनी] १. सत्तू। सतुआ। २. संतों की बानी। (साधु)।

सीतला--संज्ञा स्त्री० [सं० शीतला] दे० 'शीतला'।

यौ०--सीतला माई = शीतला माता।

सीता--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह रेखा जो जमीन जोतते समय हल की फाल के धँसने से पड़ती जाती है। कूँड़।

विशेष--वेदों में सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी और कई मंत्रों की देवता हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मण में सीता ही सावित्री और पाराशर गृह्यसूत्र में इंद्रपत्नी कही गई हैं।

२. मिथिला के राजा सीरध्वज जनक की कन्या जो श्रीरामचंद्र जी की पत्नी थीं।

विशेष--इनकी उत्पत्ति की कथा यों है कि राजा जनक ने संतति के लिये एक यज्ञ की विधि के अनुसार अपने हाथ से भूमि

जोती। जुती हुई भूमि की कूँड़ (सीता) से सीता उत्पन्न हुईं। सयानी होने पर सीता के विवाह के लिये जनक ने धनुर्यज्ञ किया, जिसमें यह प्रतिज्ञा थी कि जो कोई एक विशेष धनुष को चढ़ावे, उससे सीता का विवाह हो। अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र कुमार रामचंद्र ही उस धनुष को चढ़ा और तोड़ सके इससे उन्हीं के साथ सीता का विवाह हुआ। जब विमाता की कुटिलता के कारण रामचंद्र जी ठीक अभिषेक के समय पिता द्वारा १४ वर्षों के लिये वन में भेज दिए गए, तब पतिपरायणा सती सीता भी उनके साथ बन में गईं और वहाँ उनकी सेवा करती रहीं। वन में ही लंका का राजा रावण उन्हें हर ले गया, जिसपर राम ने बंदरों का भारी सेना लेकर लंका पर चढ़ाई की और राक्षसराज रावण को मारकर वे सीता को लेकर १४ वर्ष पूरे होने पर फिर अयोध्या आए और राजसिंहासन पर बैठे।

जिस प्रकार महाराज रामचंद्र विष्णु के अवतार माने जाते हैं, उसी प्रकार सीता देवी भी लक्ष्मी का अवतार मानी जाती हैं और भक्तजन राम के साथ बराबर इनका नाम भी जपते हैं। भारतवर्ष में सीता देवी सतियों में शिरोमणि मानी जाती हैं। जब राम ने लोकमर्यादा के अनुसार सीता को अग्निपरीक्षा की थी, तब स्वयं अग्निदेव ने सीता को लेकर राम को सौंपा था।

पर्या०—वैदेही। जानकी। मैथिली। भूमिसंभवा। अयोनिजा।

यौ०—सीता की मचिया = एक प्रकार का गोदना जो स्त्रियाँ हाथ में गुदाती हैं। सीता की रसोई = (१) एक प्रकार का गोदना। (२) बच्चों के खेलने के लिये रसोई के छोटे छोटे बरतन। सीता को पँजीरी = कर्पूरवल्ली नाम की लता।

३. वह भूमि जिसपर राजा की खेती होती हो। राजा की निज की भूमि। सीर। ४. दाक्षायणी देवी का एक रूप या नाम। ५. आकाशगंगा की उन चार धाराओं में से एक जो मेरु पर्वत पर गिरने के उपरांत हो जाती है।

विशेष—पुराणों के अनुसार यह नदी या धारा भद्राश्व वर्ष या द्वीप में मानी गई है।

६. मदिरा। ७. ककही का पौधा। ८. पातालगारुड़ी लता। ९. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते हैं। उ०—जन्म बीता जात सीता अंत रीता बावरे! राम सीता राम सीता राम सीता गाव रे। छंद:०, पृ० २०७। १०. सीताध्यक्ष के द्वारा एकत्र किया हुआ अनाज। ११. जैनों के अनुसार विदेह की एक नदी का नाम। १३. हल से जुती हुई भूमि (को०)। १४. कृषि। खेती (को०)। १५. इंद्र की पत्नी (को०)। १६. उमा का नाम (को०)। १७. लक्ष्मी का नाम (को०)।

सीताकुंड—संज्ञा पुं० [सं० सीताकुण्ड] वह कुंड जो सीता देवी के संबंध से पवित्र तीर्थ माना जाता हो।

विशेष—इस नाम के अनेक कुंड और झरने भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं। **जैसे,**—(१) मुंगेर से ढाई कोस पर गरम पानी का एक कुंड है। इसके विषय में प्रसिद्ध है कि जब देवताओं ने सीता जी की पूजा नहीं स्वीकार की, तब वे फिर अग्निपरीक्षा के लिये अग्निकुंड में कूद पड़ीं। आग चट बुझ गई और उसी स्थान पर पानी का एक सोता निकल आया। (२) भागलपुर जिले में मंदार पर्वत पर एक कुंड। (३) चंपारन जिले में मोतिहारी से छह कोस पूर्व एक कुंड। (४) चटगाँव जिले में एक पर्वत की चोटी पर एक कुंड। (५) मिरजापुर जिले में विंध्याचल के पास एक झरना और कुंड।

सीतागोप्ता—संज्ञा पुं० [सं० सीतागोप्तृ] सीता का रक्षक। जुते हुए खेत का रक्षक (को०)।

सीताजानि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी पत्नी सीता हैं—श्रीरामचंद्र।

सीतातीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वायुपुराण में वर्णित एक तीर्थ।

सीतात्यय—संज्ञा पुं० [सं०] अर्थशास्त्र के अनुसार किसानों पर होनेवाला जुरमाना। खेती के संबंध का जुरमाना (कौटि०)।

सीताद्रव्य—संज्ञा पुं० [सं०] खेती के उपादान। काश्तकारी का सामान।

सीताधर—संज्ञा पुं० [सं०] हलधर। बलराम जी।

सीताध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेतीबारी आदि का प्रबंध करता हो।

सीतानवमी व्रत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत।

सीतानाथ—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

सीतापति—संज्ञा पुं० [सं०] (सीता के स्वामी) श्रीरामचंद्र।

सीतापहाड़—संज्ञा पुं० [सं० सीता + हिं० पहाड़] एक पर्वत जो बंगाल के चटगाँव जिले में है।

सीताफल—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीफा। २. कुम्हड़ा।

सीताबट(५)—संज्ञा पुं० [सं० सीतावट] दे० 'सीतावट'। उ०—बिटप महीप सुरसरित समीप सोहै, सीताबट पेखत पुनीत होत पातकी। बारिपुर दिगपुर बीच बिलसति भूमि, अंकित जो जानकी चरन जलजात की।—तुलसी ग्रं०, पृ० २६२।

सीतायज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] हल जोतने के समय होनेवाला एक यज्ञ।

सीतारमण—संज्ञा पुं० [सं०] (सीता के पति) रामचंद्र जी।

सीतारमन(५)—संज्ञा पुं० [सं० सीतारमण] श्रीरामचंद्र।

सीतारवन, सीतारौन‡—संज्ञा पुं० [सं० सीता + रमण, प्रा० रवण, हिं० रवन, रौन] दे० 'सीतारमण'।

सीतालोष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सीतालोष्ठ'।

सीतालोष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] जुते हुए खेत की मिट्टी का ढेला (गोभिल श्राद्धकल्प)।

सीतावट—संज्ञा पुं० [सं०] प्रयाग और चित्रकूट के बीच एक स्थान जहाँ वट वृक्ष के नीचे राम और सीता दोनों ठहरे थे।

सीतावन—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम (को०)।

सीतावर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

सीट पटाँग—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना + (ऊट) पटाँग] बढ़ बढ़कर की जानेवाली बातें। घमंड भरी बात।

सीटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतृ] १. वह पतला महीन शब्द जो ओठों को गोल सिकोड़कर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है।

क्रि० प्र०—बजाना।

मुहा०—सीटी देना = सीटी के शब्द से बुलाना या और कोई संकेत करना।

२. इसी प्रकार का शब्द जो किसी बाजे या यंत्र आदि के भीतर की हवा निकालने से होता है। जैसे,—रेल की सीटी।

मुहा०—सीटी देना = (१) सीटी का शब्द निकालना। जैसे,—रेल सीटी दे रही है। (२) सीटी से सावधान करना।

३. वह बाजा या खिलौना जिसे फूँकने से उक्त प्रकार का शब्द निकले।

यौ०—सीटीबाज = मुँह से बार बार सीटी की आवाज निकालनेवाला।

सीठ—संज्ञा स्त्री० [सं० शिष्ट, प्रा० सिट्ठ (= शेष)] दे० 'सीठी'।

सीठना—संज्ञा पुं० [सं० अशिष्ट, प्रा० असिट्ठ + हिं० ना (प्रत्य०)] अश्लील गीत जो स्त्रियाँ विवाहादि मांगलिक अवसरों पर गाती हैं। सीठनी। विवाह की गाली।

सीठनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीठना] विवाह की गाली।

सीठा—वि० [सं० शिष्ट, प्रा० सिट्टी (= बचा हुआ)] नीरस। फीका। बिना स्वाद का। बेजायका।

सीठापन—संज्ञा पुं० [हिं० सीठा + पन] नीरसता। फीकापन।

सीठी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिष्ट, प्रा० सिट्ठी (= बचा हुआ)] १. फल, फूल पत्ते आदि का रस निकल जाने पर बचा हुआ निकम्मा अंश। वह वस्तु जिसका रस या सार निचुड़ गया हो। खूद। जैसे,—अनार की सीठी, भाँग की सीठी, पान की सीठी। २. निस्सार वस्तु। सारहीन पदार्थ। ३. नीरस वस्तु। फीकी चीज।

सीठी[२]—वि० स्त्री० दे० 'सीठा'।

सीड़—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल या शीत + प्रा० ड (प्रत्य०)] सील। तरी। नमी।

सीढ़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी या देशी सिड्ढी (= सीढ़ी)] १. किसी ऊँचे स्थान पर क्रम क्रम से चढ़ने के लिये एक के ऊपर एक बना हुआ पैर रखने का स्थान। निसेनी। जीना। पैड़ी। २. बाँस के दो बल्लों का बना लंबा ढाँचा, जिसमें थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर रखने के लिये डंडे लगे रहते हैं और जिसे भिड़ाकर किसी ऊँचे स्थान तक चढ़ते हैं। बाँस की बनी पैड़ी।

क्रि० प्र०—लगाना।

यौ०—सीढ़ी का डंडा = पैर रखने के लिये बाँस की सीढ़ी में जड़ा हुआ डंडा।

मुहा०—सीढ़ी सीढ़ी चढ़ना = क्रम क्रम से ऊपर की ओर बढ़ना। धीरे धीरे उन्नति करना।

३. उत्तरोत्तर उन्नति का क्रम। धीरे धीरे आगे बढ़ने की परंपरा। ४. हैंड प्रेस का एक पुर्जा जिसपर टाइप रखकर छापने का प्लैटेन लगा रहता है। ५. घुड़िया के आकार का लकड़ी का पाया जो खंडसाल में चीनी साफ करने के काम में आता है। ६. एक गराड़ीदार लकड़ी जो गिरदानक की आड़ के लिये लपेटन के पास गड़ी रहती है। (जुलाहे)।

सीत(पु)†[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] दे० 'सीता'। उ०—बड़ कँवरि सीत विदेह री रघुनाथ वर राजेस।—रघु० रू०, पृ० ८४।

सीत†[२]—संज्ञा पुं० [सं० शीत] दे० 'शीत'।

सीत†[३]—संज्ञा पुं० [सं० सिक्थ] दे० 'सीथ'। उ०—बड़ा महापरसाद सीत संतन कर छाड़न।—पलटू०, भा० १, पृ० १५।

सीतकर—संज्ञा पुं० [सं० शीतकर] चंद्रमा। उ०—हौं हीं बौरी बिरह बस, कै बौरौ सबु गाउँ। कहा जानि ए कहत हैं ससिहिं सीतकर नाउँ।—बिहारी र०, दो० ९५।

सीतपकड़—संज्ञा पुं० [हिं० शीत + पकड़ना] एक रोग जो हाथी को शीत से होता है।

सीतपत(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सीतापति] दे० 'सीतापति'। उ०—प्रारंभै दौलत पुन पाणां पुणी सुवाणां सीतपत।—रघु० रू०, पृ० २४।

सीतमयूख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शीतमयूख] चंद्रमा। सीतकर। सुधाकर। उ०—घोर अनल कों भखत है सीतमयूख सहाय।—दीन० ग्रं०, पृ० १७६।

सीतल‡(पु)—वि० [सं० शीतल] दे० 'शीतल'।

सीतल चीनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल + हिं० चीनी] दे० 'शीतलचीनी'।

सीतलपाटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल + हिं० पाटी] १. एक प्रकार की बढ़िया चिकनी चटाई। २. पूर्व बंगाल और आसाम के जंगलों में होनेवाली एक प्रकार की झाड़ी जिससे चटाई या सीतलपाटी बनती है। ३. एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

सीतल बुकनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० शीतल + बुकनी] १. सत्तू। सतुआ। २. संतों की बानी। (साधु)।

सीतला—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतला] दे० 'शीतला'।

यौ०—सीतला माई = शीतला माता।

सीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह रेखा जो जमीन जोतते समय हल की फाल के धँसने से पड़ती जाती है। कूँड़।

विशेष—वेदों में सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी और कई मंत्रों की देवता हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मण में सीता ही सावित्री और पाराशर गृह्यसूत्र में इंद्रपत्नी कही गई हैं।

२. मिथिला के राजा सीरध्वज जनक की कन्या जो श्रीरामचंद्र जी की पत्नी थीं।

विशेष—इनकी उत्पत्ति की कथा यों है कि राजा जनक ने संतति के लिये एक यज्ञ की विधि के अनुसार अपने हाथ से भूमि

जोती। जुती हुई भूमि की कूँड़ (सीता) से सीता उत्पन्न हुई। सयानी होने पर सीता के विवाह के लिये जनक ने धनुर्यज्ञ किया, जिसमें यह प्रतिज्ञा थी कि जो कोई एक विशेष धनुष को चढ़ावे, उससे सीता का विवाह हो। अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र कुमार रामचंद्र ही उस धनुष को चढ़ा और तोड़ सके इससे उन्हीं के साथ सीता का विवाह हुआ। जब विमाता की कुटिलता के कारण रामचंद्र जी ठीक अभिषेक के समय पिता द्वारा १४ वर्षों के लिये वन में भेज दिए गए, तब पतिपरायणा सती सीता भी उनके साथ बन में गई और वहाँ उनकी सेवा करती रहीं। वन में ही लंका का राजा रावण उन्हें हर ले गया, जिसपर राम ने बंदरों का भारी सेना लेकर लंका पर चढ़ाई की और राक्षसराज रावण को मारकर वे सीता को लेकर १४ वर्ष पूरे होने पर फिर अयोध्या आए और राजसिंहासन पर बैठे।

जिस प्रकार महाराज रामचंद्र विष्णु के अवतार माने जाते हैं, उसी प्रकार सीता देवी भी लक्ष्मी का अवतार मानी जाती हैं और भक्तजन राम के साथ बराबर इनका नाम भी जपते हैं। भारतवर्ष में सीता देवी सतियों में शिरोमणि मानी जाती हैं। जब राम ने लोकमर्यादा के अनुसार सीता की अग्नि-परीक्षा की थी, तब स्वयं अग्निदेव ने सीता को लेकर राम को सौंपा था।

पर्या०—वैदेही। जानकी। मैथिली। भूमिसंभवा। अयोनिजा।

यौ०—सीता की मचिया = एक प्रकार का गोदना जो स्त्रियाँ हाथ में गुदाती हैं। सीता की रसोई = (१) एक प्रकार का गोदना। (२) बच्चों के खेलने के लिये रसोई के छोटे छोटे बरतन। सीता को पँजीरी = कर्पूरवल्ली नाम की लता।

३. वह भूमि जिसपर राजा की खेती होती हो। राजा की निज की भूमि। सीर। ४. दाक्षायणी देवी का एक रूप या नाम। ५. आकाशगंगा की उन चार धाराओं में से एक जो मेरु पर्वत पर गिरने के उपरांत हो जाती है।

विशेष—पुराणों के अनुसार यह नदी या धारा भद्राश्व वर्ष या द्वीप में मानी गई है।

६. मदिरा। ७. ककही का पौधा। ८. पातालगारुड़ी लता। ९. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते हैं। उ०—जन्म बीता जात सीता अंत रीता बावरे! राम सीता राम सीता राम सीता गाव रे। छंदः०, पृ० २०७। १०. सीताध्यक्ष के द्वारा एकत्र किया हुआ अनाज। ११. जैनों के अनुसार विदेह की एक नदी का नाम। १३, हल से जुती हुई भूमि (को०)। १४. कृषि। खेती (को०)। १५. इंद्र की पत्नी (को०)। १६. उमा का नाम (को०)। १७. लक्ष्मी का नाम (को०)।

सीताकुंड—संज्ञा पुं० [सं० सीताकुण्ड] वह कुंड जो सीता देवी के संबंध से पवित्र तीर्थ माना जाता हो।

विशेष—इस नाम के अनेक कुंड और झरने भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं। जैसे,—(१) मुंगेर से ढाई कोस पर गरम पानी का एक कुंड है। इसके विषय में प्रसिद्ध है कि जब देवताओं ने सीता जी की पूजा नहीं स्वीकार की, तब वे फिर अग्निपरीक्षा के लिये अग्निकुंड में कूद पड़ीं। आग चट बुझ गई और उसी स्थान पर पानी का एक सोता निकल आया। (२) भागलपुर जिले में मंदार पर्वत पर एक कुंड। (३) चंपारन जिले में मोतिहारी से छह कोस पूर्व एक कुंड। (४) चटगाँव जिले में एक पर्वत की चोटी पर एक कुंड। (५) मिरजापुर जिले में विंध्याचल के पास एक झरना और कुंड।

सीतागोता—संज्ञा पुं० [सं० सीतागोप्तृ] सीता का रक्षक। जुते हुए खेत का रक्षक [को०]।

सीताजानि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी पत्नी सीता हैं—श्रीरामचंद्र।

सीतातीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वायुपुराण में वर्णित एक तीर्थ।

सीतात्यय—संज्ञा पुं० [सं०] अर्थशास्त्र के अनुसार किसानों पर होनेवाला जुरमाना। खेती के संबंध का जुरमाना (कौटि०)।

सीताद्रव्य—संज्ञा पुं० [सं०] खेती के उपादान। काश्तकारी का सामान।

सीताधर—संज्ञा पुं० [सं०] हलधर। बलराम जी।

सीताध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेतीबारी आदि का प्रबंध करता हो।

सीतानवमी व्रत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत।

सीतानाथ—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

सीतापति—संज्ञा पुं० [सं०] (सीता के स्वामी) श्रीरामचंद्र।

सीतापहाड़—संज्ञा पुं० [सं० सीता + हिं० पहाड़] एक पर्वत जो बंगाल के चटगाँव जिले में है।

सीताफल—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीफा। २. कुम्हड़ा।

सीताबट(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सीतावट] दे० 'सीतावट'। उ०—विटप महीप सुरसरित समीप सोहै, सीताबट पेखत पुनीत होत पातकी। बारिपुर दिगपुर बीच बिलसति भूमि, अंकित जो जानकी चरन जलजात की।—तुलसी ग्रं०, पृ० २६२।

सीतायज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] हल जोतने के समय होनेवाला एक यज्ञ।

सीतारमण—संज्ञा पुं० [सं०] (सीता के पति) रामचंद्र जी।

सीतारमन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सीतारमण] श्रीरामचंद्र।

सीतारवन, सीतारौन‡—संज्ञा पुं० [सं० सीता + रमण, प्रा० रवण, हिं० रवन, रौन] दे० 'सीतारमण'।

सीतालोष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सीतालोष्ठ'।

सीतालोष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] जुते हुए खेत की मिट्टी का ढेला (गोभिल श्राद्धकल्प)।

सीतावट—संज्ञा पुं० [सं०] प्रयाग और चित्रकूट के बीच एक स्थान जहाँ वट वृक्ष के नीचे राम और सीता दोनों ठहरे थे।

सीतावन—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम [को०]।

सीतावर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

सीतावल्लभ—संज्ञा पुं० [सं०] सीतापति। रामचंद्र।

सीतास्वयंवर—संज्ञा पुं० [सं० सीतास्वयम्वर] सीता जी का स्वयंवर। धनुषयज्ञ।

सीताहरण—संज्ञा पुं० [सं०] रावण के द्वारा सीता जी का अपहरण।

सीताहरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सीताहरण] दे० 'सीताहरण'।

सीताहार—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पौधा।

सीतांनक—संज्ञा पुं० [सं०] १. मटर। २. दाल।

सीतालक—संज्ञा पुं० [पुं०] मटर।

सीतोदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैनों के अनुसार विदेह की एक नदी का नाम।

सीत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्द जो अत्यंत पीड़ा या आनंद के समय मुँह से साँस खींचने से निकलता है। सीसी शब्द। सिसकारी।

सीत्कारबाहुल्य—संज्ञा पुं० [सं०] वंशी के छह दोषों में से एक दोष।

विशेष—वंशी के छह दोष ये हैं—सीत्कारबाहुल्य, स्तब्ध, विस्वर खंडित, लघु और अमधुर।

सीत्कृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सीत्कार'।

सीत्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. धान्य। धान। २. खेत। कृषिक्षेत्र।

सीत्य[२]—वि० हल की फाल की रेखाओं से युक्त। कृष्ट। जोता हुआ।

सीथ—संज्ञा पुं० [सं० सिक्थ, प्रा० सित्थ] पके हुए अन्न का दाना। भात का दाना। उ०— लहि संतन की सीथ प्रसादी। आयो भुक्ति मुक्ति मरयादी।—रघुराज (शब्द०)।

सीथि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सिक्थ] दे० 'सीथ'।

सीदंतीय—संज्ञा पुं० [सं० सीदन्तीय] एक साम गान।

सीद—संज्ञा पुं० [सं०] ब्याज पर रुपया देना। सूदखोरी। कुसीद।

सीदना—क्रि० अ० [सं० सीदति] दुःख पाना। कष्ट झेलना। उ०—(क) जद्यपि नाथ उचित न होत अस प्रभु सौं करौं ढिठाई। तुलसिदास सीदत निसि दिन देखत तुम्हारि निठुराई।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सीदत साधु साधुता सोचति, बिलसत खल, हुलसति खलई है।—तुलसी (शब्द०)।

सीदी—संज्ञा पुं० [देश०] शक जाति का मनुष्य।

सीद्य—संज्ञा पुं० [सं०] आलस्य। काहिली। सुस्ती।

सीद्यमान—वि० [सं०] दुःखी। पीड़ित। उ०—साधु सीद्यमान जानि रीति पाय दीन की।—तुलसी ग्रं०, पृ० २४३।

सीध—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीधा] १. ठीक सामने की स्थिति। सन्मुख विस्तार या लंबाई। वह लंबाई जो बिना कुछ भी इधर उधर मुड़े एक तार चली गई हो, जैसे—नाक की सीध में चले जाओ। २. ऋजुता। सरलता। ३. लक्ष्य। निशाना।

मुहा०—सीध बाँधना = (१) सड़क, क्यारी आदि बनाने में पहले रेखा डालना। (२) निशाना साधना। लक्ष्य ठीक करना।

सीधा[१]—वि० [सं० शुद्ध, ब्रज० सूधा, सूधो] [वि० स्त्री० सीधी] १. जो बिना कुछ इधर उधर मुड़े लगातार किसी ओर चला गया हो। जो टेढ़ा न हो। जिसमें फेर या घुमाव न हो। अवक्र। सरल। ऋजु. जैसे—सीधी लकड़ी, सीधा रास्ता। २. जो किसी ओर ठीक प्रवृत्त हो। जो ठीक लक्ष्य की ओर हो।

मुहा०—सीधा करना = लक्ष्य की ओर लगाना। निशाना साधना, (बंदूक आदि का)। सीधी राह = सुमार्ग। अच्छा आचरण। सीधी सुनाना = (१) साफ साफ कहना। खरा खरा कहना। लगी लिपटी न रखना। (२) भला बुरा कहना। दुर्वचन कहना। गालियाँ देना। सीधा आना = सामना करना। भिड़ जाना।

३. जो कुटिल या कपटी न हो। जो चालबाज न हो। सरल प्रकृति का। निष्कपट। भोला भाला। ४. शांत और सुशील। शिष्ट। भला। जैसे—सीधा आदमी।

मुहा०—सीधी आँखों न देखना = (किसी का) सह न सकना। (किसी का) अच्छा न लगना। (किसी की) उपस्थिति खटकना। उ०—पढ़कर पुस्तक न फाड़ डालनेवालों को भी कदापि सीधी आँखों नहीं देख सकते।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २८६। सीधी तरह = शिष्ट व्यवहार से। नरमी से। जैसे—(क) सीधी तरह बोलो। (ख) वह सीधी तरह न मानेगा। सीधी अँगुली घी न निकलना = बिना कड़ाई के कार्य का न होना।

५. जो नटखट या उग्र न हो। जो बदमाश न हो। अनुकूल। शांत प्रकृति का। जैसे—सीधा जानवर, सीधा लड़का।

यौ०—सीधा सादा = (१) भोला भाला। निष्कपट। (२) जिसमें बनावट या तड़क भड़क न हो।

मुहा०—(किसी को) सीधा करना = दंड देकर ठीक करना। शासन करना। रास्ते पर लाना। शिक्षा देना। सीधा दिन = अच्छा दिन। शुभ दिन या मुहूर्त। जैसे—सीधा दिन देखकर यात्रा करना।

६. जिसका करना कठिन न हो। सुकर। आसान। सहल। जैसे,—सीधा काम, सीधा सवाल, सीधा ढंग। ७. जो दुर्बोध न हो। जो जल्दी समझ में आवे। जैसे—सीधी सी बात नहीं समझ में आती। ८. दहिना। बायाँ का उलटा। जैसे,—सीधा हाथ।

सीधा[२]—क्रि० वि० ठीक सामने की ओर। सम्मुख।

मुहा०—सीधा तीर सा = एकदम सीध में।

सीधा[३]—संज्ञा पुं० [सं० असिद्ध, सिद्ध] १. बिना पका हुआ अन्न। जैसे,—दाल, चावल, आटा। २. वह बिना पका हुआ अनाज जो ब्राह्मण या पुरोहित आदि को भोजनार्थ दिया जाता है। जैसे—एक सीधा इस ब्राह्मण को भी दे दो।

क्रि० प्र०—छूना।—देना।—निकालना।—मनसना।

सीधापन—संज्ञा पुं० [हिं० सीधा + पन (प्रत्य०)] सीधा होने का भाव। सिधाई। सरलता। भोलापन।

सीधा सादा—वि० [हिं०] भोला भाला। जैसे—वह बहुत सीधा सादा व्यक्ति है।

सीधु—संज्ञा पुं० [सं०] १. गुड़ या ईख के रस से बना मद्य। गुड़ की बनी हुई शराब। २. मद्य। आसव। मदिरा (को०)। ३. अमृत। सुधा। (लाक्ष०)।

सीधुगंध—संज्ञा पुं० [सं० सीधुगन्ध] मौलसिरी। बकुल।

सीधुप—वि० [सं०] मदिरा पीनेवाला। मद्यप। शराबी।

सीधुपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंभारी। काश्मरी वृक्ष।

सीधुपान—संज्ञा पुं० [सं०] मदिरापान।

सीधुपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. कदंब। कदम। २. मौलसिरी। बकुल।

सीधुपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] धातकी। धव। धौ।

सीधुरस—संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़।

सीधुराक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] बिजौरा नीबू। मातुलुंग वृक्ष।

सीधुराक्षिक—संज्ञा पुं० [सं०] कसीस।

सीधुवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] थूहर। स्नुही वृक्ष।

सीधुसंज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] बकुल का पेड़। मौलसिरी।

सीधे—क्रि० वि० [हिं० सीधा] १. सीध में। बराबर सामने की ओर। सम्मुख। (२) बिना कहीं मुड़े या रुके। जैसे—सीधे वहीं जाओ। ३. बिना और कहीं होते हुए। जैसे—सीधे राजा साहब के पास जाकर कहो। ४. मुलायमियत से। नरमी से। शिष्ट व्यवहार से। जैसे—वह सीधे रुपया न देगा। ५. शिष्टता के साथ। शांति के साथ। जैसे—सीधे बैठो।

सीध्र—संज्ञा पुं० [सं०] गुदा। मलद्वार।

सीन¹—संज्ञा पुं० [अं०] १. दृश्य। दृश्यपट। २. थियेटर के रंगमंच का कोई परदा जिसपर नाटक का कोई दृश्य चित्रित हो। ३. घटनाओं के घटित होने की जगह। घटनास्थल।—पद्माकर ग्रं०, पृ० १८।

यौ०—सीन सीनरी = रंगमंच की दृश्यानुरूप सजावट।

सीन(पु)²—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीनह्] दे० 'सीना'। उ०—दोऊ तरफ के सुभट हाँकत जुटे गए रिपु सीन सों।—हिम्मत०, पृ० २२।

यौ०—सीन साफ = दे० 'सीनासाफ'। उ०—सीन साफ मुख नूर बिराजै। शोभा सुंदर बहु विधि छाजै।—सत० दरिया, पृ० १३।

सीनरी—संज्ञा स्त्री० [अं०] प्राकृतिक दृश्य।

सीना¹—क्रि० स० [सं० सीवन] १. कपड़े, चमड़े आदि के दो टुकड़ों को सूई के द्वारा तागा पिरोकर जोड़ना। टाँकों से मिलाना या जोड़ना। टाँके मारना। जैसे—कपड़े सीना, जूते सीना। उ०—टुकड़े टुकड़े जोड़ जुगत सों सीं के अंग लिपटाना। कर डारा भला पावन सों लोभ मोह में सीना। साँच समझ अभिमानी।—कबीर० श०, भा० १, पृ० ४।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

यौ०—सीना पिरोना = सिलाई तथा बेलबूटे आदि का काम करना।

सीना²—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीनह्] छाती। वक्षस्थल।

यौ०—सीनाजोर। सीनातोड़। सीनाबंद।

मुहा०—सीने से लगाना = छाती से लगाना। आलिंगन करना।

२. स्तन। चूचुक (को०)।

सीना³—संज्ञा पुं० [सं० सीमिक] १. एक प्रकार का कीड़ा जो ऊनी कपड़ों को काट डालता है। सीवाँ।

क्रि० प्र०—लगना।

२. एक प्रकार का रेशम का कीड़ा। छोटा पाट।

सीनाचाक—वि० [फ़ा० सीनह् चाक़] विदीर्णहृदय। शोकाकुल [को०]।

सीनाजन—वि० [फ़ा० सीनह् ज़न] छाती पीटनेवाला। शोक या मातम मनानेवाला [को०]।

सीनाजनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सीनह् ज़नी] छातीपीटना। मातम करना।

सीनाजोर—वि० [फ़ा० सीनह् ज़ोर] १. अत्याचारी। जालिम। २. विद्रोही। बागी। ३. उद्दंड [को०]।

सीनाजोरी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सीनह् ज़ोरी] १. अत्याचार। २. विद्रोह। ३. उद्दंडता। उ०—न कालिदास की चोरी है बल्कि साफ सीनाजोरी है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४३३।

सीनातोड़—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीनह् + हिं० तोड़ना] कुश्ती का एक पेच।

विशेष—जब पहलवान अपने जोड़ की पीठ पर रहता है, तब एक हाथ से वह उसकी कमर पकड़ता है और दूसरे हाथ से उसके सामने का हाथ पकड़ और खींचकर झटके से गिराता है।

सीनापनाह—संज्ञा पुं० [फ़ा०] जहाज के निचले खंड में लंबाई के बल दोनों ओर का किनारा। (लश०)।

सीनाबंद—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. अँगिया। चोली। २. गरेबान का हिस्सा। ३. वह घोड़ा जो अगले पैरों से लँगड़ाता हो।

सीनाबसीना¹—क्रि० वि० [फ़ा० सीनह् बसीनह्] १. छाती से छाती मिलाते हुए। २. मुकाबले में।

सीनाबसीना²—वि० (मंत्र आदि) जो गुरु या वंशपरंपरा से क्रमागत हो [को०]।

सीनाबाँह—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीनह् + हिं० बाँह] एक प्रकार की कसरत जिसमें छाती पर थाप देते हैं।

सीनाबाज—वि० [फ़ा० सीनह् बाज़] १. खुली छाती का। २. चौड़ी छातीवाला [को०]।

सीनासाफ—वि० [फ़ा० सीनह् साफ़] निश्छल। निष्कपट [को०]।

सीनासिपर—वि० [फ़ा० सीनह् सिपर] डटकर मुकाबला करनेवाला। छाती तानकर लड़नेवाला [को०]।

सीनियर—वि० [अं०] १. बड़ा। वयस्क। २. श्रेष्ठ। पद में ऊँचा। जैसे—सीनियर मेंबर; सीनियर परीक्षा।

सीनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तश्तरी। थाली।

सीप—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ति, प्रा० सुत्ति] १. कड़े आवरण के भीतर बंद रहनेवाला शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जलजंतु जो छोटे तालाबों और झीलों से लेकर बड़े बड़े समुद्रों तक में

पाया जाता है। शुक्ति। मुक्तामाता। मुक्तागृह। सीपी। सितुही।

विशेष—तालों के सीप लंबोतरे होते हैं और समुद्र के चौखूँटे विषम आकार के और बड़े बड़े होते हैं। इनके ऊपर दोहरे संपुट के आकार का बहुत बड़ा आवरण होता है जो खुलता और बंद होता है। इसी संपुट के भीतर सीप का कीड़ा, जो बिना अस्थि और रीढ़ का होता है, जमा रहता है। ताल के सीपों का आवरण ऊपर से कुछ काला या मैला तथा समतल होता है, यद्यपि ध्यान से देखने से उसपर महीन महीन धारियाँ दिखाई पड़ती हैं। इस आवरण का भीतर की ओर रहनेवाला पार्श्व बहुत ही उज्ज्वल और चमकीला होता है, जिसपर प्रकाश पड़ने से कई रंगों की आभा भी दिखाई पड़ती है। समुद्र के सीपों के आवरण के ऊपर पानी की लहरों के समान टेढ़ी धारियाँ या लहरियाँ होती हैं। समुद्र के सीपों में ही मोती उत्पन्न होते हैं। जब इन सीपों की भीतरी खोली और कड़े आवरण के बीच कोई रोगोत्पादक बाहरी पदार्थ का कण पहुँच जाता है, तब जंतु रक्षा के लिये उस कण के चारों ओर आवरण ही की शंख धातु का एक चमकीला उज्वल पदार्थ जमने लगता है जो धीरे धीरे कड़ा पड़ जाता है। यही मोती होता है। समुद्री सीप प्रायः छिछले पानी में चट्टानों में चिपके हुए पाए जाते हैं। ताल के सीपों के संपुट भी कीड़ों को साफ करके काम में लाए जाते हैं। बहुत से स्थानों में लोग छोटे बच्चों को इसी से दूध पिलाते हैं।

२. सीप नामक समुद्री जलजंतु का सफेद कड़ा, चमकीला आवरण या संपुट जो बटन, चाकू के बेंट आदि बनाने के काम में आता है। ३. ताल के सीप का संपुट जो चम्मच आदि के समान काम में लाया जाता है। ४. वह लंबोतरा पात्र जिसमें देवपूजा या तर्पण आदि के लिये जल रखा जाता है। अरघा।

सीपज(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सीप + सं० ज] सीप से उत्पन्न, मोती। सीपिज। उ०—सीपज माल स्याम उर सोहै बिच बघनह छबि पावै री।—सूर०, १०।१३६।

सीपति(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्रीपति] विष्णु।

सीपर‡—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिपर] ढाल। उ०—मेरे मन की लाज इहाँ लौ हठि प्रिय पान दए हैं। लागत साँगि विभीषण ही पर, सीपर आपु भए हैं।—तुलसी (शब्द०)।

सीपसुत(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सीप + सुत] मोती। उ०—देखि माई हरि जू की लोटनि।...परसत आनन मनु रबि कुंडल अंबुज स्रवत सीपसुत जोटनि।—सूर०, १०।१८७।

सीपारा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीपारह्] कुरान का एक भाग।

विशेष—कुरान में कुल तीस भाग हैं जिनमें प्रत्येक को सीपारा (सिपारह भी) कहते हैं [को०]।

सीपिज(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सीपी + सं० ज] मोती। उ०—लाला हौं वारी तेरे मुख पर।...कुटिल अलक मोहन मन विहँसत भृकुटि विकट नैननि पर। दमकति द्वै द्वै दँतुलिया विहँसति मनौ सीपिज घरु कियो वारिज पर।—सूर (शब्द०)।

सीपी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति ?, हिं० सीप] दे० 'सीप'।

सीबी—संज्ञा स्त्री० [अनु० सी सी] वह शब्द जो पीड़ा या अत्यंत आनंद के समय मुँह से साँस खींचने से उत्पन्न होता है। सी सी शब्द। सिसकारी। शीत्कार उ०—नाक चढ़ै सीबी करै जितै छबीली छैल। फिरि फिरि भूलि वहै गहै पिय कँकरीली गैल।—बिहारी (शब्द०)।

सीभा†—संज्ञा पुं० [देश०] दहेज।

सीमंत—संज्ञा पुं० [सं० सीमन्त] १. स्त्रियों की माँग। २. अस्थि-संघात। हड्डियों का संधिस्थान। हड्डियों का जोड़।

विशेष—सुश्रुत के अनुसार इनकी संख्या १४ है। यथा—जाँघ में १, वंक्षण अर्थात् मूत्राशय तथा जंघा के संधिस्थान में १, पैर में ३, दोनों बाहों में ३-३, त्रिक या रीढ़ के नीचे के भाग में १ और मस्तक में १। भावप्रकाश के अनुसार हड्डियों का संधिस्थान सीया रहता है; इसलिये इसे 'सीमंत' कहते हैं।

३. हिंदुओं में एक संस्कार जो प्रथम गर्भस्थिति के चौथे, छठे या आठवें महीने में किया जाता है। दे० 'सीमंतोन्नयन'।

सीमंतक—संज्ञा पुं० [सं० सीमन्तक] माँग निकालने की क्रिया। २. ईंगुर। सिंदूर जिसे स्त्रियाँ माँग के बीच में लगाती हैं। ३. जैनों के सात नरकों में से एक नरक का अधिपति। ४. नरकावास। ५. एक प्रकार का मानिक या रत्न।

सीमंतकरण—संज्ञा पुं० [सं० सीमन्तकरण] माँग निकालना या काढ़ना [को०]।

सीमंतमणि—संज्ञा पुं० [सं० सीमन्तमणि] चूड़ामणि [को०]।

सीमंतनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सीमन्तिनी] स्त्री। नारी। सीमंतिनी।

सीमंतवान्—वि० [सं० सीमन्तवत्] [स्त्री० सीमंतवती] जिसे माँग हो। जिसकी माँग निकली हो।

सीमंतित—वि० [सं० सीमन्तित] माँग निकाला हुआ। जैसे—सीमंतित केश।

सीमंतिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सीमन्तिनी] स्त्री। नारी।

विशेष—स्त्रियाँ माँग निकालती हैं, इससे उन्हें सीमंतिनी कहते हैं।

सीमंतोन्नयन—संज्ञा पुं० [सं० सीमन्तोन्नयन] द्विजों के दस संस्कारों में से तीसरा संस्कार।

विशेष—गर्भस्थिति के तीसरे महीने में पुंसवन संस्कार करने के पश्चात् चौथे, छठे या आठवें महीने में यह संस्कार करने का विधान है। इसमें वधू की माँग निकाली जाती है। कहते हैं, इस संस्कार के द्वारा गर्भस्थ संतान के गर्भ में रहने के दोषों का निवारण होता है।

सीम(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० सीमा] सीमा। हद। पराकाष्ठा। सरहद। मर्यादा।

मुहा०—सीम चरना या काँड़ना = अधिकार दबाना। दबाना। जबरदस्ती करना। उ०—हैं काके द्वै सीस ईस के जो हठि जन की सीम चरै।—तुलसी (शब्द०)। सीम चाँपना = हद

दबाना। उ०—सीम कि चापि सकै कोइ तासू। बड़ रखवार रमापति जासू।—मानस, १।१९६।

सीम²—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. धन दौलत। २. रजत। चाँदी [को०]।

यौ०—सीमकश। फजूलखर्च। अपव्ययी। सीमतन=सुंदर। गौर।

सीमक—संज्ञा पुं० [सं०] सीमा। हद [को०]।

सीमल—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मलि] दे० 'सेमल'।

सीमलिंग—संज्ञा पुं० [सं० सीमलिङ्ग] सीमा का चिह्न। हद का निशान।

सीमांत—संज्ञा पुं० [सं० सीमान्त] १. सीमा का अंत। वह स्थान जहाँ सीमा का अंत होता हो। जहाँ तक हद पहुँचती हो। सरहद। २. गाँव की सीमा। ३. गाँव के अंतर्गत दूर की जमीन। सिवाना।

सीमांतपूजन—संज्ञा पुं० [सं० सीमान्तपूजन] १. वर का पूजन या अगवानी जब वह बारात के साथ गाँव की सीमा के भीतर पहुँचता है। २. ग्राम की सीमा का पूजन (को०)।

सीमांतप्रदेश—संज्ञा पुं० [सं० सीमान्तप्रदेश] १. सीमांत या सरहद पर स्थित भूभाग। २. दो देशों के बीच का प्रदेश [को०]।

सीमांतबंध—संज्ञा पुं० [सं० सीमान्तबन्ध] आचरण का नियम या मर्यादा।

सीमांतर—संज्ञा पुं० [सं० सीमान्तर] गाँवों की सीमा [को०]।

सीमांतलेखा—संज्ञा स्त्री० [सं० सीमान्तलेखा] आखिरी किनारा। अंतिम छोर [को०]।

सीमा¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सीमन्] दे० 'सीमा' २।

सीमा²—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माँग। २. किसी प्रदेश या वस्तु के विस्तार का अंतिम स्थान। हद। सरहद। मर्यादा। ३. आचरण व्यवहार आदि की शिष्टता। मर्यादा।

मुहा०—सीमा के बाहर जाना=उचित से अधिक बढ़ जाना। मर्यादा का उल्लंघन करना। हद से ज्यादा बढ़ना।

४. खेत, गाँव आदि की सीमा पर का बाँध या मेंड़ (को०)। ५. चिह्न। निशान (को०)। ६. किनारा। तीर। समुद्रतट (को०)। ७. क्षितिज (को०)। ८. उच्चतम या अधिकतम सीमा (को०)। ९. खेत (को०)। १०. ग्रीवा के पृष्ठ भाग में खोपड़ी आदि का जोड़ (को०)। ११. अंडकोष (को०)। १२. एक आभूषण।

सीमाकर्षक—संज्ञा पुं० [सं०] पाराशर स्मृति के अनुसार ग्राम की सीमा पर हल जोतने या खेती करनेवाला।

सीमाकृषाण—वि० [सं०] सिवान की खेती करनेवाला। दे० 'सीमाकर्षक'।

सीमागिरि—संज्ञा सं० [सं०] सीमा पर स्थित पर्वत (को०)।

सीमाज्ञान—संज्ञा पुं० [सं० सीमा+अज्ञान] सीमा के बारे में ज्ञान का अभाव।

सीमातिक्रमणोत्सव—संज्ञा पुं० [सं०] युद्धयात्रा में सीमा पार करने का उत्सव। विजययात्रा। विजयोत्सव।

विशेष—प्राचीन काल में विजयादशमी को क्षत्रिय राजा अपने राज्य की सीमा लाँघते थे।

सीमाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] १. पड़ोसी राजा। सीमा प्रदेश का रक्षक या अधिकारी [को०]।

सीमानिश्चय—संज्ञा पुं० [सं०] सीमारेखा या हदबंदी के संबंध में विधिसंमत निर्णय [को०]।

सीमापहारी—वि० [सं० सीमापहारिन्] सीमा के प्रदेश पर अधिकार करनेवाला। सीमा के चिह्न मिटानेवाला।

सीमापाल—संज्ञा पुं० [सं०] सीमा की रखवाली करनेवाला। सीमा-रक्षक।

सीमाबंध—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सीमांतबंध' [को०]।

सीमाब—संज्ञा पुं० [फ़ा०] पारा।

सीमाबद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] रेखा से घिरा हुआ। हद के भीतर किया हुआ।

सीमाबियत—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पारद की तरह चंचल होना। अस्थिरता। चंचलता [को०]।

सीमाबी—वि० [फ़ा०] पारे का। पारे से संबंधित [को०]।

सीमावरोध—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार सीमा स्थिर होना। हदबंदी।

सीमालिंग—संज्ञा पुं० [सं० सीमालिङ्ग] दे० 'सीमलिंग' [को०]।

सीमावाद—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सीमाविवाद' [को०]।

सीमाविनिर्णय—संज्ञा पुं० [सं०] सीमा संबंधी झगड़ों का निपटारा [को०]।

सीमाविवाद—संज्ञा पुं० [सं०] सीमा संबंधी विवाद। सरहद का झगड़ा। अठारह प्रकार के व्यवहारों में या मुकदमों में से एक।

विशेष—स्मृतियों में लिखा है कि यदि दो गाँवों में सीमा संबंधी झगड़ा हो, तो राजा को सीमा निर्देश करके झगड़ा मिटा डालना चाहिए। इस काम के लिये जेठ का महीना श्रेष्ठ बताया गया है। सीमास्थल पर बड़, पीपल, साल, पलास आदि बहुत दिन टिकनेवाले पेड़ लगाने चाहिए। साथ ही तालाब, कूआँ बनवा देना चाहिए, क्योंकि ये सब चिह्न शीघ्र मिटनेवाले नहीं हैं।

यौ०—सीमाविवाद धर्म=सीमाविवाद संबंधी नियम या कानून।

सीमावृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वह वृक्ष जो सीमा पर हो। हद बतानेवाला पेड़।

विशेष—मनुसंहिता में सीमा स्थान पर बहुत दिन टिकनेवाले पेड़ लगाने का विधान है। बहुधा सीमाविवाद सीमा पर का वृक्ष देखकर मिटाया जाता था।

सीमासंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० सीमासन्धि] दो सीमाओं का एक जगह मिलान। वह स्थान जहाँ सीमाएँ मिलती हैं।

सीमासेतु—संज्ञा पुं० [सं०] वह पुश्ता, बाँध या मेंड़ जो सीमा का निर्देश करता है। हदबंदी।

सीमिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का वृक्ष। २. दीमक। एक प्रकार का छोटा कीड़ा। ३. दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर।

सीमिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीमक या चींटी। २. वल्मीक। विमौट। ३. जीभ के नीचे की फुंसी [को०]।

सीमिया—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. परकायप्रवेश विद्या। २. जादू। इंद्रजाल। नजरबंदी [को०]।

सीमी—वि० [फ़ा०] १. चाँदी जैसा। २. चाँदी का। चाँदी का बना हुआ [को०]।

सीमीक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सीमिक' [को०]।

सीमुर्ग—संज्ञा पुं० [फ़ा० सीमुर्ग़] एक विशाल पक्षी जिसका निवास काफ पहाड़ी पर माना गया है [को०]।

सीमेंट—संज्ञा पुं० [अँ०] एक प्रकार के पत्थर का चूर्ण। दे० 'सिमेंट'।

सीमोल्लंघन—संज्ञा पुं० [सं० सीमोल्लङ्घन] १. सीमा का उल्लंघन करना। सीमा को लाँघना। हद पार करना। २. विजययात्रा। विशेष दे० 'सीमातिक्रमणोत्सव'। ३. मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना।

सीय(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सीता] सीता। जानकी। उ०—राम सीय सिर सेंदुर देही।—मानस, १।३२५।

सीयक—संज्ञा पुं० [सं०] मालवा के परमार राजवंश के दो प्राचीन राजाओं के नाम जिनमें पहला दसवीं शताब्दी के आरंभ में और दूसरा ग्यारहवीं शताब्दी के आरंभ में था। इसी दूसरे सीयक का पुत्र मुंज था जो प्रसिद्ध राजा भोज का चाचा था।

सीयन†—संज्ञा स्त्री० [सं० सीवन] दे० 'सीवन'।

सीयरा†—वि० [सं० शीतल] दे० 'सियरा'।

सीर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. हल। २. हल जोतनेवाले बैल। ३. सूर्य। ४. अर्क। आक का पौधा।

सीर²—संज्ञा स्त्री० [सं० सीर (=हल)] १. वह जमीन जिसे भूस्वामी या जमींदार स्वयं जोतता आ रहा हो, अर्थात् जिसपर उसकी निज की खेती होती आ रही हो। २. वह जमीन जिसकी उपज या आमदनी कई हिस्सेदारों में बँटती हो। ३. साझा। मेल।

मुहा०—सीर में=एक साथ मिलकर। इकट्ठा। एक में। जैसे—भाइयों का सीर में रहना।

सीर³—संज्ञा पुं० [सं० शिरा (=रक्तनाड़ी)] रक्त की नाड़ी। रक्त की नली।

मुहा०—सीर खुलवाना=नश्तर से शरीर से दूषित रक्त निकलवाना। फसद खुलवाना।

सीर†(पु)⁴—वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअड़, हिं० सीड़, सील, सीरा] ठंढा। शीतल। उ०—सीर समीर धीर अति सुरभित बहत सदा मन भायो।—रघुराज (शब्द०)।

सीर⁵—संज्ञा पुं० १. चौपायों का एक संक्रामक रोग। २. पानी की काट। (लश०)।

सीर⁶—संज्ञा पुं० [फ़ा०] लशुन। लहसुन [को०]।

सीरक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. हल। २. शिशुमार। सूस। ३. सूर्य।

सीरक(पु)²—वि० [हिं० सीरा] ठंढा करनेवाला।

सीरक(पु)³—संज्ञा पुं०, स्त्री० शीतलता। ठंढक। शैत्य। उ०—देखियत है करुणा की मूरति सुनियत है परपीरक। सोइ करौ जो मिटै हृदय को, दाहु परै उर सीरक।—सूर (शब्द०)।

सीरख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शीर्ष] 'शीर्ष'।

सीरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. स्वभाव। प्रकृति। आदत। २. जीवनचरित। ३. सौजन्य।

यौ०—सूरत सीरत=रूप और गुण।

सीरतन—वि० [अ०] स्वभावतः। स्वभाव से। आदत से [को०]।

सीरधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. हल धारण करनेवाला। २. बलराम।

सीरध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा जनक का नाम।

विशेष—जब ये पुत्र की कामना से यज्ञभूमि जोत रहे थे तब हल की कूट या रेखा से सीता की उत्पत्ति हुई। इसी से लोग इन्हें 'सीरध्वज' कहने लगे।

२. बलराम का नाम।

सीरन—संज्ञा पुं० [देश०] बच्चों का पहनावा।

सीरनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शीरीनी] मिठाई।

सीरपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] हलधर। बलदेव।

सीरभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १. हलधर। बलदेव। २. हल धारण करनेवाला।

सीरयोग—संज्ञा पुं० [सं०] हल में जुते हुए बैलों की जोड़ी। २. बैलों को हल में जोतना [को०]।

सीरवाह—संज्ञा पुं० [सं०] १. हल धारण करनेवाला। हलवाहा। २. जमींदार की ओर से उसकी खेती का प्रबंध करनेवाला कारिंदा।

सीरवाहक—संज्ञा पुं० [सं०] हलवाहा। किसान।

सीरष(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शीर्ष] दे० 'शीर्ष'।

सीरा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम।

सीरा²—संज्ञा पुं० [फ़ा० शीर] १. पकाकर मधु के समान गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस। चाशनी। २. मोहनभोग। हलवा।

सीरा³—संज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई का वह भाग जिधर लेटने में सिर रहता है। सिरहाना।

सीरा†(पु)⁴—वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअड़] [वि० स्त्री० सीरी] १. ठंढा। शीतल। उ०—सीरी पौन अगिनि सी दाहति, कोकिल अति सुखदाई।—सूर (शब्द०)। २. शांत। मौन। चुपचाप। उ०—दुर्जन हँसे न कोय आपु सीरे ह्वै रहिए।—गिरिधर (शब्द०)।

सीरियल—संज्ञा पुं० [अँ०] १. वह लंबी कहानी या दूसरा लेख जो कई बार और कई हिस्सों में निकले। २. वह कहानी या किस्सा जो बायस्कोप में कई बार कई हिस्सों में दिखाया जाय।

सीरी¹—संज्ञा पुं० [सं० सीरिन्] (हल धारण करनेवाले) बलराम।

सीरी²—वि० स्त्री० [सं० शीतल, प्रा० सीअड, सीयड़, हिं० सीरा] दे० 'सीरा'।

सीरीज—संज्ञा स्त्री० [अं० सीरीज] एक ही वस्तु का लगातार क्रम। सिलसिला। श्रेणी। लड़ी। माला। जैसे,—बालसाहित्य सीरीज की पुस्तकें अच्छी होती हैं।

सीरोसा—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की मिठाई।

सीलंध—संज्ञा स्त्री० [सं० सीलन्ध] एक प्रकार की मछली।

विशेष—वैद्यक में यह श्लेष्मावर्धक, वृष्य, पाक में मधुर और गुरु, वातपित्तहर, हृद्य और आमवातकारक कही गई है।

सील[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतल, प्रा० सीअड़] भूमि में जल की आर्द्रता सीढ़। नमी। तरी।

सील[२]—संज्ञा पुं० [सं० शलाका] लकड़ी का एक हाथ लंबा औजार जिसपर चूड़ियाँ गोल और सुडौल की जाती है।

सील†(पु)[३]—संज्ञा पुं० [सं० शील] दे० 'शील'।

यौ०—सीलवंत, सीलवान = शीलयुक्त। सुशील।

सील[४]—संज्ञा पुं० [अं०] १. मुहर। मुद्रा। ठप्पा। छाप। २. एक प्रकार की समुद्री मछली जिसका चमड़ा और तेल बहुत काम आता है।

सील[५]—संज्ञा पुं० [सं०] हल [को०]।

सीला[१]—संज्ञा पुं० [सं० शिल] १. अनाज के वे दाने जो फसल कटने पर खेत में पड़े रह जाते हैं जिन्हें तपस्वी या गरीब लोग चुनते हैं। सिल्ला। उ०—(क) कविता खेती उन लई सीला बिनत मजूर।—(शब्द०)। (ख) विष समान सब विषय बिहाई। बसैं तहाँ सीला बिनि खाई।—रघुराज (शब्द०)। २. खेत में गिरे दानों को चुनकर निर्वाह करने की मुनियों की वृत्ति।

सीला[२]—वि० [सं० शीतल] [वि० स्त्री० सीली] गीला। आर्द्र। तर। नम।

सीवक संज्ञा पुं० [सं०] सीनेवाला। सिलाई करनेवाला।

सीवड़ो—संज्ञा पुं० [सं० सीमान्त] ग्राम का सीमांत। सिवाना (डिं०)।

सीवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. सीने का काम। सिलाई। २. सीने से पड़ी हुई लकीर। कपड़े के दो टुकड़ों के बीच की सिलाई का जोड़। ३. दरार। दराज। संधि। ४. वह रेखा जो अंडकोश के बीचोबीच से लेकर मलद्वार तक जाती है।

सीवना[१]—संज्ञा पुं० [सं० सीमान्त] दे० 'सिवान'।

सीवना[२]—क्रि० स० [सं० सीवन] दे० 'सीना'।

सीवनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुई। सूचिका। सूची। २. वह रेखा जो लिंग के नीचे से गुदा तक जाती है।

विशेष—सुश्रुत में यह चार प्रकार की कही है—गोफणिाश, तुल्लसीवनी, वेल्लित और ऋजुग्रंथि।

३. घोड़े का गुदा के नीचे का भाग (को०)।

सीवी—संज्ञा स्त्री० [अनु० सी० सी०] दे० 'सीवी'।

सीव्य—वि० [सं०] सीने लायक। सीने के योग्य [को०]।

सीस[१]—संज्ञा पुं० [सं० शीर्ष] १. सिर। माथा। मस्तक। २. कंधा। (डिं०)। ३. अंतरीप (लश०)।

सीस[२]—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सीसा'।

सीसक—संज्ञा पुं० [सं०] सीसा नामक धातु।

सीसज—संज्ञा पुं० [सं०] सिंदूर।

सीसताज—संज्ञा पुं० [हिं० सीस + फ़ा० ताज] वह टोपी या ढक्कन जो शिकार पकड़ने के लिये पाले हुए जानवरों के सिर चढा रहता है और शिकार के समय खोला जाता है। कुलहा। उ०—तुलसी निहारि कपि भालु किलकत ललकत लखि ज्यों कँगाल पातरी सुनाज की। राम रुख निरखि हरष्यो हिय हनुमान मानो खेलवार खोली सीसताज बाज की।—तुलसी (शब्द०)।

सीसताण—संज्ञा पुं० [सं०] अफगानिस्तान और फारस के बीच का प्रदेश। सीस्तान।

सीसत्रान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्त्राण] टोप। कूँड। शिरस्त्राण। उ०—सीसत्रान अवतंसजुत मनिहाटक मय नाह। लेहु हरषि उर सजहु सिर बहु सोभा जिहि माह।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

सीसपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सीसा धातु।

सीसपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] सीसा धातु।

सीसफूल—संज्ञा पुं० [हिं० सीस + फूल] सिर पर पहनने का फूल के आकार का एक गहना।

सीसम—संज्ञा पुं० [फ़ा० शीशम] एक वृक्ष। दे० 'शीशम'।

सीसमहल—संज्ञा पुं० [फ़ा० शीशा + अ० महल] वह मकान जिसकी दीवारों में चारों ओर शीशे जड़े हों। शीशे का महल।

सीसर—संज्ञा पुं० [सं०] १. पराशर गृह्यसूत्र के अनुसार सरमा नाम की देवताओं की कुतिया का पति। २. एक बालग्रह जिसका रूप कुत्ते का माना गया है।

सीसल—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड़ जो केवड़े या केतकी की तरह का होता है और जिसका रेशा बहुत काम आता है। रामबाँस।

सीसा[१]—संज्ञा पुं० [सं० सीसक] एक मूल धातु जो बहुत भारी और नीलापन लिए काले रंग की होती है।

विशेष—आधुनिक रसायन में यह मूल द्रव्यों में माना गया है। यह पीटने से फैल सकता है, और तार रूप में भी हो सकता है, पर कुछ कठिनता से। इसका रंग भी जल्दी बदला जा सकता है। इसकी चद्दरें, नलियाँ और बंदूक की गोलियाँ आदि बनती हैं। इसका घनत्व ११.३७ और परमाणुमान २०६.४ है। सीसा दूसरी धातुओं के साथ बहुत जल्दी मिल जाता और कई प्रकार की मिश्र धातुएँ बनाने में काम आता है। छापे के टाइप की धातु इसी के योग से बनती है।

आयुर्वेद में सीसा सप्त धातुओं में है और अन्य धातुओं के समान यह भी रसौषध के रूप में व्यवहृत होता है। इसका भस्म कई रोगों में दिया जाता है। वैद्यक में सीसा आयु, वीर्य और कांति को बढ़ानेवाला, मेहनाशक, उष्ण तथा कफ को दूर करनेवाला माना जाता है। इसकी उत्पत्ति की कथा भावप्रकाश में इस

प्रकार है,—वासुकि एक नाग कन्या को देखकर मोहित हुए थे। उन्हीं के स्खलित वीर्य से इस धातु की उत्पत्ति हुई।

पर्या०—सीस। सीसक। गंडपदभव। सिंदूरकारण। वर्ध। स्वर्णारि। यवनेष्ट। सुवर्णक। वध्रक। चिच्चट। जड। भुजंगम। अग। कुरंग। परिपिष्टक। बहुमल। चीनपिष्ट। त्रपु। महाबल। मृदुकृष्णायस। पद्म। तारशुद्धिकर। शिरावृत्त। वयोवंग।

सीसा‡(पु)[२]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शीशह्] दे० 'शीशा'।

सीसी[१]—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. पीड़ा या अत्यंत आनंद के समय मुँह से साँस खींचने से निकला हुआ शब्द। शीत्कार। सिसकारी। उ०—सीसी किए ते सुधा सीसी सी ढरकि जाति—(शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।

२. शीत के कष्ट के कारण निकला हुआ शब्द।

सीसी†(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [हिं० शीशा] दे० 'शीशी'।

सीसों, सीसो†—संज्ञा पुं० [फ़ा० शीशम] दे० 'शीशम'।

सीसोदिया—संज्ञा पुं० [सिसोद (=स्थान)] दे० 'सिसोदिया'।

सीसोपधातु—संज्ञा पुं० [सं०] सिंदूर। ईंगुर।

सीसौदिया—संज्ञा पुं० [सिसोद स्थान] दे० 'सिसोदिया।

सीस्तान—संज्ञा पुं० [फ़ा०] अफगानिस्तान और फारस का मध्यवर्ती प्रदेश। सीसताए।

सीस्मोग्राफ—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का यंत्र जिससे भूकंप होने का पता लगता है।

विशेष—इस यंत्र से यह मालूम हो जाता है कि भूकंप किस दिशा में, कितनी दूर पर हुआ है, और उसका वेग हल्का था या जोर का।

सीह[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सीधु (=मद्य)] महक। गंध।

सीह[२]—संज्ञा पुं० [देश०] साही नामक जंतु। सेही।

सीह(पु)[३]—संज्ञा पुं० [सं० सिंह] दे० 'सिंह'।

सीहगोस—संज्ञा पुं० [फ़ा० सियहगोश] एक प्रकार का जंतु जिसके कान काले होते हैं। उ०—केसव सरभ सिंह सीहगोस रोस गति कूकरनि पास ससा सूकर गहाए हैं।—केशव (शब्द०)।

सीहुंड—संज्ञा पुं० [सं० सीहुण्ड] सेहुँड़ का पेड़। स्नुही। थूहर।

सुं(पु)† प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] दे० 'सों'।

सुंखड़—संज्ञा पुं० [देश०] साधुओं का एक संप्रदाय।

सुंगवंश—संज्ञा पुं० [सं० सुङ्गवंश] मौर्य वंश के अंतिम सम्राट् बृहद्रथ के प्रधान सेनापति पुष्यमित्र द्वारा प्रतिष्ठित एक प्राचीन राजवंश।

विशेष—ईसा से १८४ वर्ष पूर्व पुष्यमित्र सुंग ने बृहद्रथ को मारकर मौर्य साम्राज्य पर अपना अधिकार जमाया। यह राजा वैदिक या ब्राह्मण धर्म का पक्का अनुयायी था। जिस समय पुष्यमित्र मगध के सिंहासन पर बैठा, उस समय साम्राज्य नर्मदा के किनारे तक था और उसके अंतर्गत आधुनिक बिहार, संयुक्त प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि थे। कलिंग के राजा खारवेल्ल तथा पंजाब और काबुल के यवन (यूनानी) राजा मिनांडर (बौद्ध मिलिंद) ने सुंग राज्य पर कई बार चढ़ाइयाँ कीं, पर वे हटा दिए गए। यवनों का जो प्रसिद्ध आक्रमण साकेत (अयोध्या) पर हुआ था, वह पुष्यमित्र के ही राजत्व काल में। पुष्यमित्र के समय का उसी के किसी सामंत या कर्मचारी का एक शिलालेख अभी हाल में अयोध्या में मिला है जो अशोक लिपि में होने पर भी संस्कृत में है। यह लेख नागरीप्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार के एक और पुराने लेख का पता मिला है, पर वह अभी प्राप्त नहीं हुआ है। इससे जान पड़ता है कि पुष्यमित्र कभी कभी साकेत (अयोध्या) में भी रहता था और वह उस समय एक समृद्धिशाली नगर था।

पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र ने विदर्भ के राजा को परास्त करके दक्षिण में वरदा नदी तक अपने पिता के राज्य का विस्तार बढ़ाया। जैसा कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक से प्रकट है, अग्निमित्र ने विदिशा को अपनी राजधानी बनाया था जो वेत्रवती और विदिशा नदी के संगम पर एक अत्यंत सुंदर पुरी थी। इस पुरी के खँडहर भिलसा (ग्वालियर राज्य में) से थोड़ी दूर पर दूर तक फैले हुए हैं। चक्रवर्ती सम्राट् बनने की कामना से पुष्यमित्र ने इसी समय बड़ी धूमधाम से अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया। इस यज्ञ के समय महाभाष्यकार पतंजलि जी विद्यमान थे। अश्वरक्षा का भार पुष्यमित्र के पौत्र (अग्निमित्र के पुत्र) वसुमित्र को सौंपा गया जिसने सिंधु नदी के किनारे यवनों को परास्त किया। पुष्यमित्र के समय में वैदिक या ब्राह्मण धर्म का फिर से उत्थान हुआ और बौद्ध धर्म दबने लगा। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार पुष्यमित्र ने बौद्धों पर बड़ा अत्याचार किया और वे राज्य छोड़कर भागने लगे। ईसा से १४८ वर्ष पहले पुष्यमित्र की मृत्यु हुई और उसका पुत्र अग्निमित्र सिंहासन पर बैठा। उसके पीछे पुष्यमित्र का भाई सुज्येष्ठ और फिर अग्निमित्र का पुत्र वसुमित्र गद्दी पर बैठा। फिर धीरे धीरे इस वंश का प्रताप घटता गया और वसुदेव ने विश्वासघात करके कण्व नामक ब्राह्मण राजवंश की प्रतिष्ठा की।

सुंघनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूँघना] तंबाकू के पत्ते की खूब बारीक बुकनी जो सूँघी जाती है। हुलास। नस्य। मग्जरोशन।

क्रि० प्र०—सूँघना।

सुंघाना—क्रि० स० [हिं० सूँघना का प्रेर० रूप] आघ्राण कराना। सूँघने की क्रिया कराना।

सुंठि—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ठि] दे० 'शुंठि', 'सोंठ'।

सुंड—संज्ञा पुं० [सं० शुण्ड] 'शुंड', 'सूँड़'।

सुंडदंड—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डदण्ड] दे० 'शुंडादंड'।

सुंडभुसुंड—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डभुशुण्डि] हाथी जिसका अस्त्र सूँड है। उ०—चढ़ि चित्रित सुंडभुसुंड पैं, सोभित कंचन कुंड पैं। नृप सजेउ चलंत जदु शुंड पैं, जिमि गज मृग सिर पुंड पैं।—गोपाल (शब्द०)।

सुंडस—संज्ञा पुं० [देश०] लदुए गधे की पीठ पर रखने की गद्दी।

सुंडा[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूँड़] सूँड़। शुंड।

सुंडा¹—संज्ञा पुं० [देश०] लदुँए गधे की पीठ पर रखने की गद्दी या गद्दा।

सुंडाल—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डाल] हाथी। हस्ती। वह जो सूँड़वाला हो। उ०—सुंडाल चलत सुंडनि उठाइ। जिनकैं जँजीर भन-भनत पाइ।—सूदन (शब्द०)।

सुंडाली—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्डाल (=सूँड़वाला)] एक प्रकार की मछली।

सुंडोबेंत—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बेंत जो बंगाल, आसाम और खसिया की पहाड़ी पर पाया जाता है।

सुंद—संज्ञा पुं० [सं० सुन्द] १. एक वानर का नाम। २. एक राक्षस का नाम। ३. विष्णु। ४. संह्लाद का पुत्र। ५. एक असुर जो निसुंद (निकुंभ) का पुत्र और उपसुंद का भाई था।

विशेष—सुंद और उपसुंद दोनों बड़े बलवान असुर थे। इन्होंने ब्रह्मा से यह वर प्राप्त किया था कि वे तब तक मर नहीं सकते जब तक दोनों भाई परस्पर एक दूसरे को न मारें। इस तरह इन्हें कोई हरा नहीं सकता था। इंद्र द्वारा भेजी गई तिलोत्तमा नाम की अप्सरा के लिये अंततः दोनों आपस में ही लड़कर मर गए थे।

सुंदरमन्य—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरम्मन्य] जो अपने को सुंदर मानता या समझता हो।

सुंदर¹—वि० [सं० सुन्दर] [वि० स्त्री० सुंदरी] १. जो देखने में अच्छा लगे। प्रियदर्शन। रूपवान। शोभन। रुचिर। खूबसूरत। मनोहर। मनोज्ञ। २. अच्छा। भला। बढ़िया। श्रेष्ठ। शुभ। जैसे,—सुंदर मुहूर्त।

सुंदर²—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पेड़। २. कामदेव। ३. एक नाग का नाम। ४. लंका का एक पर्वत। ५. एक छंद।

सुंदरई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुंदर+ई (प्रत्य०)] सौंदर्य। सुंदरता। उ०—रीझे स्याम देखि वा मुख पर छबि मुख सुंदरई।—सूर० (राधा०), १९७९।

सुंदरक—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरक] १. एक तीर्थ का नाम। २. एक ह्रद का नाम।

सुंदरकांड—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरकाण्ड] १. रामायण के पाँचवें कांड का नाम जो लंका के सुंदर पर्वत के नाम पर रखा गया है। २. सुंदर सुडौल कांड या पर्व (को०)।

सुंदरता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरता] सुंदर होने का भाव। सौंदर्य। खूबसूरती। रूपलावण्य।—उ०—सुंदरता कहु सुंदर करई। छबिगृह दीपसिखा जनु बरई।—मानस, १।२३०।

सुंदरताई(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरता] दे० 'सुंदरता'। उ०—(क) हम भरि जन्म सुनहु सब भाई। दखी नहिं असि सुंदरताई।—राम०, पृ० ३९३। (ख) अंग बिलाकि त्रिलोक में ऐसी को नारि निहारिन नार नवाई। मूरतिवंत शृंगार समीप शृंगार किए जानो सुंदरताई।—केशव (शब्द०)।

सुंदरत्व—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरत्व] सुंदरता। सौंदर्य।

सुंदरवती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरवती] एक नदी का नाम।

सुंदरवन—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरवन] गंगा के डेल्टा में स्थित वन जहाँ की भूमि दलदली है।

सुंदराई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुंदर+आई (प्रत्य०) दे० 'सुंदरता'।

सुंदरापा—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दर, हिं० सुंदर+आपा (प्रत्य०)] सुंदरता।

सुंदरी¹—वि० स्त्री० [सं० सुन्दरी] रूपवती। खूबसूरत।

सुंदरी²—संज्ञा स्त्री० १. सुंदर स्त्री। २. हलदी। हरिद्रा। ३. एक प्रकार का बड़ा जंगली पेड़।

विशेष—यह पेड़ सुंदर वन में बहुत होता है। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और नाव, संदूक, मेज, कुरसी आदि सामान बनाने के काम में आती और इमारतों में भी लगती है। यह पेड़ खारे पानी के पास ही उग सकता है; मीठा पानी पाने से सूख जाता है।

४. त्रिपुरसुंदरी देवी। ५. एक योगिनी का नाम। ६. सवैया नामक छंद का एक भेद जिसमें आठ सगण और एक गुरु होता है। उ०—सब सों गहिं पानि मिले रघुनंदन भेंटि कियो सबको सुखभागी। यहि औसर की हर सुंदरि मूरति राखि जपै हिय में अनुरागी।—छंदः०, पृ० २४७। ७. बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमें एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है। द्रुतविलंबित। ८. तेईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति जिसमें क्रमशः दो सगण, एक भगण, एक सगण, एक नगण, दो जगण और एक लघु तथा एक एक गुरु होता है। छंदप्रभाकर में इसे 'सुंदरि' कहा है। उ०—सस भा स तजो जों लगि सखि ! ढूँढ़ौं कुंजगली बिछुरी हरि सों।—छंदः०, पृ० २३७। ९. एक प्रकार की मछली। १०. माल्यवान राक्षस की पत्नी जो नर्मदा नामक गंधर्वी की कन्या थी। ११. श्वफल्क की कन्या का नाम (को०)। १२. वैश्वानर की एक दुहिता (को०)।

सुंदरी³—संज्ञा स्त्री० [?] सितार, इसराज आदि में लगे वे लोहे या पीतल के परदे जो विभिन्न स्वरों के स्थान होते हैं।

सुंदरीमंदिर—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरीमन्दिर] अंतःपुर। जनानखाना (को०)।

सुंदरेश्वर—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दरेश्वर] शिव जी की एक मूर्ति।

सुंदोपसुंद—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दोपसुन्द] निसुंद (निकुंभ) नामक दैत्य के दोनों पुत्र सुंद और उपसुंद। विशेष दे० 'सुंद'।

यौ०—सुंदोपसुंद न्याय=एक न्याय। दे० 'न्याय' शब्द के अंतर्गत १०५ वाँ न्याय।

सुंदरौदन—संज्ञा पुं० [सं० सुन्दर+ओदन] अच्छा भात। अच्छी तरह पका हुआ चावल।

सुँधाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोंधा+आई (प्रत्य०)] दे० 'सुँधावट'।

सुँधावट—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध, हिं० सोंधा+आवट (प्रत्य०)] सोंधे होने का भाव। सोंधापन। सोंधी महक।

सुँधिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोंधा+इया (प्रत्य०)] १. एक प्रकार की

ज्वार। २. गुजरात में होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति जो पशुओं के चारे के काम में आती है।

सुंपलुंठ—संज्ञा पुं० [सं० सुम्पलुण्ठ] कपूरक। कपूर कचरी।

सुंबा—संज्ञा पुं० [देश०] १. इस्पंज। २. दागी हुई तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिये उसपर डाला हुआ गीला कपड़ा। पुचारा। (लश०)। ३. तोप की नली साफ करने का गज। (लश०) ४. लोहे का एक औजार जिससे लोहार लोहे में सूराख करते हैं।

सुंबी—संज्ञा स्त्री० [देश०] छेनी जिससे लोहे में छेद किया जाता है।

सुंबुल—संज्ञा पुं० [फ़ा० संबुल] १. एक सुगंधित घास। बालछड़। २. गेहूँ या जौ की बाल। ३. अलक। जुल्फ।

सुंबुला—संज्ञा पुं० [अ० सुंबुलह्] १. गेहूँ की बाल। २. कन्याराशि [को०]।

सुंभ[1]ⓤ—संज्ञा पुं० [सं० शुम्भ] दे० 'शुंभ'।

सुंभ[2]—संज्ञा पुं० [सं० सुम्भ] दे० 'सुम'।

सुंभा—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सुंबा'।

सुंभी—संज्ञा स्त्री० [देश०] लोहा छेदने का एक औजार जिसमें नोक नहीं होती।

सुंसारी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का लंबा काला कीड़ा जो अनाज के लिये हानिकारक होता है।

सु[1]—उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञा के साथ लगकर विशेषण का काम देता है। जिस शब्द के साथ यह उपसर्ग लगता है, उसमें (१) अच्छा, बढ़िया, भला, श्रेष्ठ, जैसे, सुगंधित; (२) सुंदर मनोहर, जैसे; सुकेशी, सुमध्यमा; (३) खूब, सर्वथा, पूरी तरह, ठीक प्रकार से; जैसे, सुजीर्ण; (४) आसानी से, सुभीते से, तुरंत, जैसे,—सुकर, सुलभ; (५) अत्यधिक, बहुत अधिक, जैसे, सुदारुण सुदीर्घ आदि का भाव आ जाता है। जैसे—सुनाम, सुपंथ, सुशील, सुवास आदि।

सु[2]—वि० १. सुंदर। अच्छा। २. उत्तम। श्रेष्ठ। संमानयोग्य। ३. शुभ। भला।

सु[3]—संज्ञा पुं० १. उत्कर्ष। उन्नति। २. सुंदरता। खूबसूरती। हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। ४. पूजा। ५. समृद्धि। ६. अनुमति। आज्ञा। ७. कष्ट। तकलीफ।

सुⓤ[4]—अव्य० [सं० सह] तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्ति का चिह्न।

सु[5]—सर्व० [सं० सः] सो। वह।

सुअंग—वि० [सं० सुअङ्ग] सुडौल शरीरवाला। सुगठित बदनवाला। सुंदर [को०]।

सुअⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सुत, प्रा० सुअ] दे० 'सुअन'।

सुअक्ष—वि० [सं०] १. अच्छे सुंदर नेत्रोंवाला। २. दृढ़ांग। पुष्ट अंगोंवाला [को०]।

सुअटा†—संज्ञा पुं० [सं० शुक, प्रा० सुअ, हिं० सूआ + टा प्रत्य०] सुग्गा। शुक। तोता। उ०—सुअटा रहै खुरुक जिउ अबहिं काल सो आव। सतु अहै जो करिया कबहुँ सो बोरै नाव।—(शब्द०)।

सुअनⓤ—संज्ञा पुं० [सं० सुत, प्रा० सुअ] आत्मज। पुत्र। बेटा। लड़का। उ०—वह दिन धौं कब आइहै ह्वैहै सुअन बिबाह। निज नयनन हम देखिहैं हे विधि यह उत्साह।—स्वामी रामकृष्ण (शब्द०)।

सुअनजर्दⓤ—संज्ञा पुं० दे० [सुवर्ण, हिं० सोना + फ़ा० जर्द] दे० 'सोनजर्द'। उ०—कोई सुअनजर्द ज्यों केसर। कोइ सिंगारहार नागेसर।—जायसी (शब्द०)।

सुअनाⓤ[1]—क्रि० अ० [सं० सवन (= प्रसव) अथवा हिं० उगना (= उत्पन्न होना) या हिं० सुअन] उत्पन्न होना। उगना। उदय होना। उ०—जैसो साँचो ग्यान प्रकाशत पाप दोष सब सुअत। धर्म विराग आदि सतगुन से तनमन के सुख सुअत।—देवस्वामी (शब्द०)।

सुअना[2]—संज्ञा पुं० [सं० शुक] दे० 'सुअटा'।

सुअर—संज्ञा पुं० [सं० शूकर]। दे० 'सूअर'।

सुअरदता†[1]—वि० [हिं० सुअर + दंता (= दाँतवाला)] सूअर के से दाँतोंवाला।

सुअरदता[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का हाथी जिसके दाँत पृथ्वी की ओर झुके रहते हैं। ऐसा हाथी ऐबी समझा जाता है।

सुअर्गपताली†—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग + पातालिका] वह बैल जिसका एक सींग स्वर्ग की ओर दूसरा पाताल की ओर अर्थात् एक आकाश की ओर और दूसरा जमीन की ओर रहता है।

सुअवसर—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा अवसर। अच्छा मौका।

सुआ—संज्ञा पुं० [सं० शुक] दे० 'सूआ'।

सुआउⓤ—वि० [सं० सु + आयु] जिसकी आयु बड़ी हो। दीर्घायु। उ०—सुधन न सुमन सुआउ सो।—तुलसी (शब्द०)।

सुआद[1]—संज्ञा पुं० [हिं० अथवा सं० स्मरण या हिं० सु + फ़ा० याद] स्मरण। याद।

सुआद[2]—संज्ञा पुं० [सं० स्वाद] दे० 'स्वाद'।

सुआनⓤ—संज्ञा पुं० [सं० श्वन्] दे० 'श्वान'। उ०—सुआन पूछ जिउ भयो न सूधउ बहुत जतन मैं कीनेउ।—तेगबहादुर (शब्द०)।

सुआना†—क्रि० स० [हिं० सूना का प्रेर० रूप] उत्पन्न कराना। पैदा कराना। सूने में प्रवृत्त करना।

सुआमीⓤ—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी] दे० 'स्वामी'। उ०—भुगत मुकति का कारन सुआमी मूढ़ ताहि बिसरावै। जन नानक कोटन मैं कोऊ भजन राम को पावै।—तेगबहादुर (शब्द०)।

सुआरⓤ†—संज्ञा पुं० [सं० सूपकार] रसोइया। भोजन बनानेवाला। पाककार। उ०—(क) परुसन लगे सुआर सुजाना।—मानस १,३२९। (ख) परुसन लगे सुआर बिबुध जन जेवहिं। देहिं गारि बरनारि मोद मन भेवहिं।—तुलसी (शब्द०)।

सुआरव(पु)--वि० [सं० सु + आरव (= शब्द, आवाज)] उत्तम शब्द करनेवाला। मीठे स्वर से बोलने या बजनेवाला। उ०--नाना सुआरव जंतरी नट चेटकी ज्वारी जिते। तेली तमोली रजक सूची चित्रकारक पुर तिते।]रामाश्वमेध (शब्द०)।

सुआसन—संज्ञा पुं० [सं०] बैठने का सुंदर आसन या पीढ़ा।

सुआसिन†—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवासिनी] दे० 'सुआसिनी'।

सुआसिनी†(पु)[१] -संज्ञा स्त्री० [सं० सुवासिनी ?] स्त्री, विशेषतः आस पास में रहनेवाली औरत। उ०--(क) विप्र वधू सनमानि सुआसिनि जब पुरजन बहिराइ। सनमाने अवनीस असीसत ईसुर में समनाइ।--तुलसी (शब्द०)। (ख) देव पितर गुर विप्र पूजि नृप दिए दान रचि जानी। मुनि बनिता पुरनारि सुआसिनि सहस भाँति सनपाइ अघाइ असीसत निकसत जाचक जग भए दानी।—तुलसी (शब्द०)।

सुआसिनी(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहागिन] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सौभाग्यवती स्त्री।

सुआहित—संज्ञा पुं० [सं० सु + आहत ?] तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ। उ०—तिमि सव्य जानु विजानु संकोचित सुआहित चित्र को। धृत लवन कुद्रव छिप्र सव्येतर तथा उत्तरत को। —रघुराज (शब्द०)।

सुइया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूआ] एक प्रकार की चिड़िया।

सुई—संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] दे० 'सूई'।

सुकंकवत् – संज्ञा पुं० [सं० सुकङ्कवत्] एक पर्वत का नाम जो मार्कंडेय पुराण के अनुसार मेरु के दक्षिण में है।

सुकंटका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकण्टका] १. घृतकुमारी। घीकुआर। गुआरपाठा। २. पिंडखजूर।

सुकंठ[१]—वि० [सं० सुकण्ठ] १. जिसका कंठ सुंदर हो। २. जिसका स्वर मीठा हो। सुरीला। उ०—द्वारे ठाढ़े हैं द्विज बावन। चारौं वेद पढ़त मुख आगर अति सुकंठ सुर गावन। सूर०, ८।१३।

सुकंठ[२]—संज्ञा पुं० रामचंद्र के सखा, सुग्रीव। उ० – बालि से बीर विदारि सुकंठ थप्यौ हरषे सुर बाजन बाजे। पल में दल्यौ दासरथी दसकंधर लंक विभीषण राज बिराजे।--तुलसी (शब्द०)।

सुकंठी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकण्ठी] मादा कोयल [को०]।

सुकंडु—संज्ञा पुं० [सं० सुकण्डु] कडु रोग। खाज। खुजली [को०]।

सुकंद—संज्ञा पुं० [सं० सुकन्द] १. कसेरू। २. पलांडु। प्याज (को०)। ३. आलू, कचालू, शकरकंद आदि कंद (को०)।

सुकंदक—संज्ञा पुं० [सं० सुकन्दक] १. बाराहीकंद। भिर्वोली कंद। गेंठी। २. प्याज। ३. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम। ४. इस देश का निवासी।

सुकंदकरण —संज्ञा पुं० [सं० सुकन्दकरण] प्याज। श्वेत पलांडु।

सुकंदन—संज्ञा पुं० [सं० सुकन्दन] १. बैजयंती तुलसी। २. बर्बरक। बबई तुलसी।

सुकंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकन्दा] १. लक्ष्मणाकंद। पुत्रदा। २. बंध्या कर्कोटकी। बाँझककोड़ा।

सुकंदी – संज्ञा पुं० [सं० सुकन्दिन्] सूरन। जमींकंद।

सुक[१]—संज्ञा पुं० [सं० शुक] १. तोता। शुक। कीर। सुग्गा। २. व्यासपुत्र। शुकदेव मुनि। ३ एक राक्षस जो रावण का दूत था।

सुक[२]—संज्ञा पुं० [सं० सुकटु] शिरीष वृक्ष। सिरस का पेड़।

सुकक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] अंगिरा वंश में उत्पन्न एक ऋषि जो ऋग्वेद के कई मंत्रों के द्रष्टा थे।

सुकचण†—संज्ञा पुं० [सं० सङ्कुचन] लज्जा। संकोच (डिं०)।

सुकचाना(पु)—क्रि० अ० [हिं० सकुच] दे० 'सकुचाना'।

सुकटि—वि० [सं०] अच्छी कमरवाली। जिसकी कमर सुंदर हो।

सुकटु[१]—संज्ञा पुं० [सं०] शिरीष वृक्ष। सिरस का पेड़।

सुकटु[२]—वि० अत्यंत कटु। बहुत कड़ुआ।

सुकड़ना—क्रि० अ० [सं० सङ्कुचन] दे० 'सिकुड़ना'।

सुकदेव—संज्ञा पुं० [सं० शुकदेव] व्यास जी के पुत्र। दे० 'शुकदेव'।

सुकना†[१]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो भादों महीने के अंत और आश्विन के आरंभ में होता है।

सुकना(पु)[२]—क्रि० अ० [सं० शुष्क, प्रा० सुक्क + हिं० ना (प्रत्य०)] शुष्क होना। सूखना। उ०—चलत पवन पावक समान परसत सुताप मन। सुकत सरोवर मचत कीच तलफंत मीन तन।— पृ० रा०, ६१।१७।

सुकनासा(पु)—वि० [सं० शुक + नासिका] जिसकी नाक शुक पक्षी के ठोर के समान हो। सुंदर नाकवाला।

सुकन्यक—वि० [सं०] जिसकी कन्या सुंदर हो [को०]।

सुकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शर्याति राजा की कन्या और च्यवन ऋषि की पत्नी। २. शोभन कन्या। सुंदरी कन्या (को०)।

सुकन्याक —वि० [सं०] दे० 'सुकन्यक' [को०]।

सुकपर्दा—वि० [सं०] (वह स्त्री) जिसने उत्तमता से केश बाँधे हों। जिसने उत्तमता से चोटी की हो।

सुकपिच्छक—संज्ञा पुं० [डिं०] गंधक।

सुकबि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुकवि] उत्तम काव्यकर्ता कवि। श्रेष्ठ कवि। उ०—या छबि की पटतर दीबे कों सुकबि कहा टकटोहै।— सूर०, १०।१५८।

सुकमार†—वि० [सं० सुकुमार] दे० 'सुकुमार'।

सुकमारता†—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकुमारता] दे० 'सुकुमारता'।

सुकर[१]—वि० [सं०] १. जो अनायास किया जा सके। सहज में होनेवाला। सुसाध्य। २. जिसका प्रबंध या व्यवस्था आसानी से की जा सके (को०)।

सुकर[२]—संज्ञा पुं० १. सरलता से वश में होनेवाला घोड़ा। सीधा घोड़ा। २. दान। उदारता। परोपकारिता [को०]।

सुकरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुकर का भाव। सहज में होने का

भाव। सुकरत्व। सौकर्य। २. सुंदरता। उ०—जहाँ क्रिया की सुकरता बरणत काज विरोध। तहाँ कहत व्याघात हैं औरो बुद्धि विबोध।—मतिराम (शब्द०)।

सुकरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुशील गाय। अच्छी और सीधी गौ।

सुकरात—संज्ञा पुं० [अ०] यूनान का एक प्रसिद्ध दार्शनिक जिसका शिष्य प्लेटो (अफलातून) था।

सुकराना—संज्ञा पुं० [फ़ा० शुक्रानह्] दे० 'शुकाना'। उ०—अरुन अन्यारे जे भरे अति ही मदन मजेज। देखे तुव दृग वारबै रब सुकराना भेज।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुकरितⓅ—वि० [सं० सुकृत] शुभ। सत्। अच्छा। भला। उ०—सुकरित मारग चालना बुरा न कबहूँ होइ। अम्रित खात परानियाँ मुआ न सुनिबा कोइ।—दादू (शब्द०)।

सुकरीहार—संज्ञा पुं० [सुकरी ? + हिं० हार] गले में पहनने का एक प्रकार का हार।

सुकर्णक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] हस्तीकंद। हाथीकंद।

सुकर्णक[२]—वि० जिसके कान सुंदर हों। अच्छे कानोंवाला।

सुकर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूषाकर्णी। मूसाकानी नाम की लता। २. महाबला।

सुकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रवारुणी। इंद्रायन।

सुकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा काम। सत्कर्म। २. देवताओं की एक श्रेणी या कोटि।

सुकर्मा[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुकर्मन्] १. विष्कंभ आदि सत्ताईस योगों में से सातवाँ योग।

विशेष—ज्योतिष में यह योग सब प्रकार के कार्यों के लिये शुभ माना गया है और कहा गया है कि जो बालक इस योग में जन्म लेता है, वह परोपकारी, कलाकुशल, यशस्वी, सत्कर्म करनेवाला और सदा प्रसन्न रहनेवाला होता है।

२. उत्तम कर्म करनेवाला मनुष्य। ३. विश्वकर्मा। ४. विश्वामित्र।

सुकर्मा[२]—वि० १. सत्कार्य करनेवाला। सुकर्मी। पुण्यात्मा। २. सक्रिय। कार्यकुशल (को०)।

सुकर्मी—वि० [सं० सुकर्मिन्] १. अच्छा काम करनेवाला। २. धार्मिक। पुण्यवान्। ३. सदाचारी।

सुकल[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो अपनी संपत्ति का उपयोग दान और भोग में करता है। दाता और भोला। २. मधुर, पर अस्फुट शब्द करनेवाला।

सुकल[२]—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ल] दे० 'शुक्ल'। उ०—दिन दिन बढ़ै बढ़ाइ अनंदा। जैसे सुकल पच्छ को चंदा।—लाल कवि (शब्द०)।

यौ०—सुकलपच्छ = दे० 'शुक्ल पक्ष'। उ०—नौमी तिथि मधुमास पुनीता। सुकलपच्छ अभिजित हरि प्रीता।—मानस, १।१९१।

सुकल[३]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का आम जो सावन के अंत में होता है।

सुकलिल—वि० [सं०] भली भाँति भरा हुआ (को०)।

सुकल्प—वि० [सं०] अत्यंत गुणी या योग्य। अत्यंत कुशल या निष्णात (को०)।

सुकल्पित—वि० [सं०] संनद्ध या सुसज्जित। शस्त्रसज्ज (को०)।

सुकल्य—वि० [सं०] पूर्ण स्वस्थ। उत्तम (को०)।

सुकवानाⓅ—क्रि० अ० [?] अचंभे में आना। आश्चर्यान्वित होना। उ०—परदे बाला वर लसै, घेरु दाब नहिं पाय। गिरवानहु असि तीन तकि रीझहुगे सुकवाय।—रामसहाय (शब्द०)।

सुकवि—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा कवि। सत्कवि। उत्तम कव्यकर्ता।

सुकष्ट—वि० [सं०] १. अति कष्टकर। २. (रोग आदि) जो कष्टसाध्य हो (को०)।

सुकांड[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुकाण्ड] करेले की लता।

सुकांड[२]—वि० सुंदर तना, कांड या डालवाला।

सुकांडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकाण्डिका] करेले की लता।

सुकांडी[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुकाण्डिन्] भ्रमर। भौंरा।

सुकांडी[२]—वि० १. सुंदर कांड या डालवाला। २. सुंदर ढंग से संयुक्त या जुड़ा हुआ (को०)।

सुकांत—वि० [सं० सुकान्त] अत्यंत सुंदर। अति सुंदर (को०)।

सुकाज—संज्ञा पुं० [सं० सु + हिं० काज] उत्तम कार्य। अच्छा काम। सुकार्य।

सुकातिज—संज्ञा पुं० [सं० शुक्तिज] मोती। (डिं०)।

सुकानाⓅ—क्रि० स० [सं० शुष्क प्रा० सुक्क, पु०हिं० सुकना] दे० 'सुखाना'।

सुकानी—संज्ञा पुं० [अ० सुक्कानी] माँझी। दे० 'सुखानी'। (डिं०)।

सुकाम वि० [सं०] उत्तम कामनावाला (को०)।

सुकामद—वि० [सं०] कामना पूर्ण करनेवाला (को०)।

सुकामव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] वह व्रत जो किसी उत्तम कामना से किया जाता है। काम्यव्रत।

सुकामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] त्रायमाणा लता। त्रायमान।

सुकार[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुकारा] १. सहज साध्य। सहज में होनेवाला। २. सहज में वश में आनेवाला (घोड़ा या गाय आदि)। ३. सहज में प्राप्त होनेवाला।

सुकार[२]—संज्ञा पुं० १. अच्छे स्वभाव का घोड़ा। २. कुंकुम शालि।

सुकाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुसमय। उत्तम समय। २. वह समय जो अन्न आदि की उपज के विचार से अच्छा हो। अकाल का उलटा।

सुकालिन—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों का एक गण। मनु के अनुसार ये शूद्रों के पितर माने जाते हैं।

सुकाली—संज्ञा पुं० [सं० सुकालिन्] दे० 'सुकालिन'।

सुकालुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] भटकटैया।

सुकावनाⓅ—क्रि० स० [सं० शुष्क, हिं० सुखाना] दे० 'सुखाना'।

उ०—भूमि भार दीवे को कि सुर ढाँप लीवे को, समुद्र कीच कीवे को कि पान कै सुकावनो।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सुकाशन—वि० [सं०] अत्यंत दीप्तिमान्। बहुत प्रकाशमान्। बहुत चमकीला।

सुकाष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. जलावन की लकड़ी। २. अच्छी लकड़ी।

सुकाष्ठक—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवदारु। २. वृक्ष आदि जिसमें काष्ठ अच्छा हो।

सुकाष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुटकी। २. काष्ठ कदली। वन-कदली। कठकेला।

सुकिजⓅ—संज्ञा पुं० [सं०] शुभ कर्म। उत्तम कार्य। उ०—सोचत हानि मानि मन गुनि गुनि गए निघटि फल सकल सुकिज को।—तुलसी (शब्द०)।

सुकियाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वकीया] वह स्त्री जो अपने ही पति में अनुराग रखती हो। स्वकीया नायिका। उ०—ता नायक की नायिका ग्रंथनि तीनि बखान। सुकिया परकीया अवर सामान्या सुप्रमान।—केशव (शब्द०)।

सुकी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक] तोते की मादा। सुग्गी। सारिका। तोती। उ०—कूजत हैं कलहंस कपोत सुकी सुक सोर करैं सुनि ताहू। नेकहू क्यो न लला सकुचौ जिय जागत है गुरु लोग लजाहू।—देव (शब्द०)।

सुकीउⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वकीया] अपने ही पति में अनुराग रखनेवाली स्त्री। स्वकीया नायिका। उ०—याही के निहोरे झूंठे साँचे राम मारे बाली लोग कहत तीय लै दई सुकीउ है। सुन्यो जाको नाँव मेरो देश देश गाँव सब शाखामृग राउर विमूरति सुग्रीउ है।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सुकीरतिⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सुकीर्ति] सुकीर्ति। सुयश। उ०—राम सुकीरति भनिति भदेसा। असमंजस अस मोहि अँदेसा।—मानस, १।१४।

सुकीर्ति[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम कीर्ति। सुयश।

सुकीर्ति[2]—वि० उत्तम कीर्तियुक्त। यशस्वी।

सुकुंडल, सुकुंतल—संज्ञा पुं० [सं० सुकुण्डल, सुकुन्तल] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुकुंद—संज्ञा पुं० [सं० सुकुन्द] राल। धूना।

सुकुंदक—संज्ञा पुं० [सं० सुकुन्दक] प्याज।

सुकुंदन—संज्ञा पुं० [सं० सुकुन्दन] बर्बरी। बबई तुलसी।

सुकुआर—वि० [सं० सुकुमार, वि० सुकुआरी] सुकुमार। उ०—इह न होइ जैसे माखन चोरी। तब वह मुख पहचानि मानि सुख देती जान हानि हुति छोरी। उन दिननि सुकुआर हते हरि हौं जानत अपनो मन मोरी।—सूर (शब्द०)।

सुकुट्ट, सुकुट्य—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

सुकुड़ना—क्रि० अ० [सं० संकुचन] दे० 'सिकुड़ना'।

सुकुति†Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] सीप। शुक्ति। उ०—पूरन परमानंद वही अहिवदन हलाहल। कदलीगत घनसार सुकुति महँ मुक्ता कोलाहल।—सुधाकर (शब्द०)।

सुकुमार[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुकुमारी] १. जिसके अंग बहुत कोमल हों। अति कोमल। नाजुक। २. सौंदर्ययुक्त। तरुण (को०)।

सुकुमार[2]—संज्ञा पुं० १. कोमलांग बालक। नाजुक लड़का। २. ऊख। ईख। ३. वनचंपा। ४. अपामार्ग। लटजीरा। ५. साँवाँ धान। ६. कँगनी। ७. एक दैत्य का नाम। ८. एक नाग का नाम। ९. काव्य का एक गुण।

विशेष—जो काव्य कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त होता है, वह सुकुमार-गुण-विशिष्ट कहलाता है।

१०. तंबाकू का पत्ता। ११. वैद्यक में एक प्रकार का मोदक।

विशेष—यह मोदक निसोथ, चीनी, शहद, इलायची और काली मिर्च के योग से बनता है और विरेचक तथा रक्तपित्त और वायु रोगों का नाशक माना जाता है।

सुकुमारक—संज्ञा पुं० [सं०] १. तंबाकू का पत्ता। २. तेजपत्र। तेजपत्ता। ३. साँवा धान। ४. सुंदर बालक। ५. कान का एक विशेष अंश (को०)। ६. दे० 'सुकुवार'—२। ७. जांबवान् के एक पुत्र का नाम।

सुकुमारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुकुमार होने का भाव या धर्म। कोमलता। सौकुमार्य। नजाकत।

सुकुमारत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुकुमारता'।

सुकुमारवन—संज्ञा पुं० [सं०] एक कल्पित वन जो भागवत के अनुसार मेरु के नीचे हैं। कहते हैं इसमें भगवान् शंकर भगवती पार्वती के साथ क्रीड़ा किया करते हैं।

सुकुमारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जूही। २. नवमल्लिका। ३. कदली। केला। ४. स्पृक्का। ५. एक नदी का नाम (को०)। ६. मालती।

सुकुमारिक—वि० [सं०] जिसकी कन्या सुंदर हो (को०)।

सुकुमारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] केले का पेड़।

सुकुमारी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नवमल्लिका। चमेली। २. शंखिनी नाम की ओषधि। ३. वनमल्लिका। ४. एक प्रकार की फली। जैसे—मूँग आदि की। ५. बड़ा करेला। ६. ऊख। ७. कदली वृक्ष। केले का पेड़। ८. त्रिसंधि नामक फूलदार पेड़। ९. स्पृक्का नामक गंधद्रव्य। १०. सुकुमार कन्या। ११. लड़की। बेटी।

सुकुमारी[2]—वि० कोमल अंगोंवाली। कोमलांगी।

सुकुरनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० सङ्कुचन] दे० 'सिकुड़ना'। उ०—मुकुर बिलोको लाल रहे क्यों धुकुरफुकुर है। सरमाने हो कहा रहे क्यों अंग सुकुर कै।—अंबिकादत्त व्यास (शब्द०)।

सुकुर्कुर—संज्ञा पुं० [सं०] बालकों का एक प्रकार का रोग जिसकी गणना बालग्रहों में होती है।

सुकुल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम कुल। २. वह जो उत्तम कुल में उत्पन्न हो। कुलीन। ३. कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपजाति।

सुकुल²—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ल] दे० 'शुक्ल'।

सुकुल³—वि० शुक्ल। शुभ्र श्वेत।

सुकुलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुकुल का भाव। कुलीनता।

सुकुलज—वि० [सं०] सत्कुल या उत्तम कुल में उत्पन्न [को०]।

सुकुलजन्मा—संज्ञा पुं० [सं० सुकुलजन्मन्] दे० 'सुकुलज'।

सुकुलबेद—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ल + हिं० बेत] एक प्रकार का वृक्ष।

सुकुलीन—वि० [सं०] सत्कुलजात। उत्तम कुलोत्पन्न।

सुकुवाँर, सुकुवार—वि० [सं० सुकुमार] दे० 'सुकुमार'। उ०—औचक ही घर माँझ साँझ ही अगिनि लागी बड़ी अनुरागी रहि गई सोउ डारिए। कहै आयो नाथ सब कीजिये जू अंगीकार हँसे सुकुवार हरि मोहि को निहारिए।—भक्तमाल (शब्द०)।

सुकुसुमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्कंद की एक मातृका का नाम।

सुकूत—संज्ञा पुं० [अ०] १. मौन। चुप्पी। खामोशी। २. सन्नाटा। निर्जनता [को०]।

सुकून—संज्ञा पुं० [अ०] १. सन्नाटा। २. शांति। अमन। ३. बीमारी में कमी। ४. ठहराव। विराम। ५. आराम। ६. संतोष। ७. धैर्य। ८. जी ठंढा होना। ९. अक्षर का हलंत होना [को०]।

सुकूनत—संज्ञा स्त्री० [अ०] निवास। ठहराव।

सुकूनती—वि० [अ०] निवासयोग्य। रहने योग्य [को०]।

सुकूर्कुर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुकुर्कुर'।

सुक्रत्¹—वि० [सं०] १. उत्तम और शुभ कार्य करनेवाला। २. धार्मिक पुण्यवान्। ३. बुद्धिमान्। विद्वान् (को०)। ४. भाग्यशाली (को०)। ५. यज्ञादि करनेवाला (को०)।

सुकृत्²—संज्ञा पुं० १. कुशल व्यक्ति। चतुर कार्यकर्ता। २. त्वष्ट्रा का नाम [को०]।

सुकृत¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुण्य। सत्कार्य। भला काम। २. दान। ३. पुरस्कार। ४. दया। मेहरबानी। ५. भाग्य। सौभाग्य (को०)।

सुकृत²—वि० १. भाग्यवान्। किस्मतवर। २. धर्मशील। पुण्यवान्। ३. जो उत्तम रूप से किया गया हो। ४. शुभ। कल्याणकर। ५. जिसके साथ कृपा का व्यवहार किया गया हो (को०)।

सुकृतकर्म¹—संज्ञा पुं० [सं० सुकृतकर्मन्] पुण्य कर्म। सत्कार्य। शुभ कार्य।

सुकृतकर्म²—वि० पुण्यात्मा। धर्मात्मा।

सुकृतभाक्—वि० [सं० सुकृतभाज्] सुकृत का भाजन। गुणी।

सुकृतव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत जो प्रायः द्वादशी के दिन किया जाता है।

सुकृतात्मा—वि० [सं० सुकृतात्मन्] वह जो सुकृत करता हो। धर्मात्मा। पुण्यात्मा।

सुकृतार्थ—वि० [सं०] जिसकी कामना पूर्ण हो गई हो। पूर्णकाम। सफलमनोरथ [को०]।

सुकृति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुभ कार्य। अच्छा काम। पुण्य। सत्कर्म। २. अनुकंपा। कृपा। दया (को०)। ३. तपस्या का अभ्यास (को०)। ४. मांगल्य। शुभ। शिव (को०)।

सुकृति²—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनु स्वारोचिष का पुत्र। २. दसवें मन्वंतर के सात ऋषियों में से एक। ३. पृथु का एक पुत्र [को०]।

सुकृतित्व—संज्ञा पुं० [सं०] सुकृत का भाव या धर्म।

सुकृती¹—वि० [सं० सुकृतिन्] १. धार्मिक। पुण्यवान। सत्कर्म करनेवाला। उ०—तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा। पावा दरसन राम प्रसादा।—मानस, २।२४९। २. भाग्यवान। तकदीरवर। ३. बुद्धिमान। अक्लमंद। ४. उदार। भलाई करनेवाला। परोपकारी (को०)।

सुकृती²—संज्ञा पुं० दसवें मन्वतर के एक ऋषि का नाम।

सुकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम कार्य। पुण्य। धर्मकार्य। २. एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सुकेत¹—संज्ञा पुं० [सं०] आदित्य। सूर्य।

सुकेत²—वि० उदारहृदय। दयालु [को०]।

सुकेतन—संज्ञा पुं० [सं०] भागवत के अनुसार सुनीथ राजा के पुत्र का नाम। कहीं कहीं इनका नाम 'निकेतन' भी मिलता है।

सुकेतु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. चित्रकेतु राजा का नाम। २. ताड़का राक्षसी के पिता का नाम। ३. सगर के पुत्र का नाम। ४. नंदिवर्धन का पुत्र। ५. केतुमंत के पुत्र का नाम। ६. सुनीथ राजा के पुत्र का पुत्र। ७. वह जो मनुष्यों और पक्षियों की बोली समझता हो।

सुकेतु²—वि० उत्तम केशोंवाला।

सुकेश¹—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुकेशि'।

सुकेश²—वि० [वि० स्त्री० सुकेशा] उत्तम केशोंवाला। जिसके बाल सुंदर हों।

सुकेशा—वि० स्त्री० [सं०] सुंदर केशवाली।

सुकेशर—संज्ञा पुं० [सं०] १. बीजपूर का वृक्ष। बिजौरा नीबू का पेड़। २. केशरी। सिंह। ३. दो छंदों के नाम [को०]।

सुकेशि—संज्ञा पुं० [सं०] विद्युत्केश राक्षस का पुत्र तथा माल्यवान, सुमाली और माली नामक राक्षसों का पिता।

विशेष—कहते हैं, जब इसका जन्म हुआ था, तब इसकी माता इसे मंदर पर्वत पर छोड़कर अपने पति के साथ विहार करने चली गई थी। उस समय पार्वती के कहने पर महादेव जी ने इसे चिरजीवी होने और आकाश में गमन करने का वरदान दिया था। पीछे से इसने एक गंधर्व कन्या के साथ विवाह किया था, जिससे उक्त तीनों पुत्र हुए थे। इन्हीं पुत्रों से राक्षसों का वंश चला था।

सुकेशी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्तम केशोंवाली स्त्री। वह स्त्री जिसके बाल बहुत सुंदर हों। २. महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम।

सुकेशी[२]—संज्ञा पुं० [सं० सुकेशिन्] [वि० स्त्री० सुकेशिनी] वह जिसके बाल बहुत सुंदर हों।

सुकेसर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंह। शेर। २. दे० 'सुकेशर'।

सुकोली—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्षीर काकोली नामक कंद। पयस्का। पयस्विनी।

सुकोशक—संज्ञा पुं० [सं०] एक वृक्ष। दे० कोशम।

सुकोशला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नगरी का नाम।

सुकोशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कोशातकी। तुरई। तरोई।

सुक्कड़ि—संज्ञा पुं० [सं० श्रीखण्ड, प्रा० सिरिखंड, गुज० सुखड] एक प्रकार का सूखा चंदन।

विशेष—वैद्यक में यह चंदन मूत्रकृच्छ्र, पित्तरक्त और दाह को दूर करनेवाला तथा शीतल और सुगंधिदायक बताया गया है।

सुक्कान[१]—संज्ञा पुं० [अ० ?] पतवार (जहाज की)। (लश०)।

मुहा०—सुक्कान पकड़ना या मारना = जहाज चलाना। (लश०)।

सुक्कान[२]—संज्ञा पुं० [अ० साकिन का बहु व०] निवासी लोग। रहनेवाले लोग।

सुक्कानी—संज्ञा पुं० [अ० मल्लाह] माझी। (लश०)।

सुक्ख (पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुख] दे० 'सुख'। उ०—जे जन भीजै रामरस विकसित कबहुँ न रुक्ख। अनुभव भाव न दरसै ते नर सुक्ख न दुक्ख।—कबीर (शब्द०)।

सुक्त—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक प्रकार की काँजी जो पानी में घी या तेल, नमक और कंद या फल आदि गलाकर बनाई जाती थी।

विशेष—वैद्यक में इसे रक्तपित्त और कफनाशक, बहुत उष्ण, तीक्ष्ण, रुचिकर, दीपन, और क्रमिनाशक माना है।

सुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] इमली।

सुक्ति[१]—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन पर्वत का नाम।

सुक्ति[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] दे० 'शुक्ति'।

सुक्र[१]—संज्ञा पुं० [सं० शुक्र] दे० 'शुक्र'।

सुक्र[२]—संज्ञा पुं० अग्नि। (डिं०)।

सुक्रतु[१]—वि० [सं०] उत्तम कर्म करनेवाला। सत्कर्म करनेवाला।

सुक्रतु[२]—संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. शिव। ३. इंद्र। ४. मित्रावरुण। ५. सूर्य। ६. चंद्र। सोम [को०]।

सुक्रतूया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुभ कर्म करने की इच्छा। २. प्रज्ञा। बुद्धि (को०)। ३. दक्षता। पाटव (को०)।

सुक्रय—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी खरीद। अच्छा या लाभकर सौदा [को०]।

सुक्रित (पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुकृत] दे० 'सुकृत'। उ०—कहहिं सुमति सब कोय सुक्रित सत जनम क जागै। तौ तुरतहिं सिलि जायँ सात रिखि सों सत भागै।—सुधाकर (शब्द०)।

सुक्रीडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुक्ल (पु)—वि० [सं० शुक्ल] दे० 'शुक्ल'। उ०—उनइस तेंतालीस को संवत माघ सुमास। सुक्ल पंचमी को भयो सुकवि लेख परकास।—अंबिकादत्त व्यास (शब्द०)।

सुक्षत्र[१]—वि० [सं०] १. अत्यंत धनशाली। २. सुराज्यशाली। ३. शक्तिशाली। बलवान्। दृढ़।

सुक्षत्र[२]—संज्ञा पुं० निरमित्र के पुत्र का नाम।

सुक्षद—संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर यज्ञशाला। बढ़िया यज्ञमंडप।

सुक्षम (पु)†—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—कारण सुक्षम तीन देह धरि भक्ति हत तृण तोरी। धर्मनि निरखि परखि गुरु मूरति जाहि के काज बनो री।—कबीर (शब्द०)।

सुक्षिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदर निवास स्थान। २. वह जो सुंदर स्थान में रहता हो। ३. वह जिसे यथेष्ट पुत्र पौत्रादि हों। धन धान्य और संतान आदि से सुखी।

सुक्षेत्र[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. मार्कंडेय पुराण के अनुसार दसवें मनु के पुत्र का नाम। २. वह घर जिसके दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की ओर दीवारें या मकान आदि हों। पूर्व ओर से खुला हुआ मकान जो बहुत शुभ माना जाता है।

सुक्षेत्र[२]—वि० [सं०] उत्तम क्षेत्र या कुक्षि से उत्पन्न [को०]।

सुक्षेम[१]—संज्ञा पुं० [सं०] अतिशय समृद्धि। अत्यंत सुख शांति [को०]।

सुक्षेम[२]—संज्ञा पुं० [सं० सुक्षेमन्] जल [को०]।

सुखंकर—वि० [सं० सुखङ्कर] सुखकर। सुकर। सहज।

सुखंकरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुखङ्करी] जीवंती। डोडी। विशेष दे० 'जीवंती'।

सुखंघुण—संज्ञा पुं० [सं० सुखङ्घुण] शिव का अस्त्र। शिवषट्वांग।

सुखंडरा—संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

सुखंडी[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूखना + ड़ी (प्रत्य०)] एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर सूखकर काँटा हो जाता है। यह रोग बच्चों को बहुत होता है।

सुखंडी[२]—वि० बहुत दुबला पतला।

सुखंद (पु)—वि० [सं० सुखद] सुखदायी। आनंददायक। उ०—धनगन बेली बनबदन सुमन सुरति मकरंद। सुंदर नायक श्रीरवन दच्छिन पवन सुखंद।—रामसहाय (शब्द०)।

सुख[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. मन की वह उत्तम तथा प्रिय अनुभूति जिसके द्वारा अनुभव करनेवाले का विशेष समाधान और संतोष होता है और जिसके बराबर बने रहने की वह कामना करता है। वह अनुकूल और प्रिय वेदना जिसकी सबको अभिलाषा रहती है। दुःख का उलटा। आराम। जैसे,—(क) वे अपने बाल बच्चों में बड़े सुख से रहते हैं। (ख) जहाँ तक हो सके सबको सुख पहुँचाने का प्रयत्न करना चाहिए।

विशेष—कुछ लोग सुख को हर्ष का पर्यायवाची समझते हैं, पर दोनों में अंतर है। कोई उत्तम समाचार सुनने अथवा कोई उत्तम पदार्थ प्राप्त करने पर मन में सहसा जो वृत्ति उत्पन्न होती है, वह हर्ष है। परंतु सुख इस प्रकार आकस्मिक नहीं

होता, और हर्ष की अपेक्षा अधिक स्थायी होता है। अनेक प्रकार की चिंताओं, कष्टों आदि से निरंतर बचे रहने पर और अनेक प्रकार की वासनाओं आदि की तृप्ति होने पर मन में जो प्रिय अनुभूति होती है, वह सुख है। हमारे यहाँ कुछ लोगों ने सुख को मन का और कुछ लोगों ने आत्मा का धर्म माना है। न्याय और वैशेषिक के अनुसार सुख आत्मा का एक गुण है। यह सुख दो प्रकार का कहा गया है—(१) नित्य सुख जो परमात्मा के विशेष सुख के अंतर्गत है और (२) जन्य सुख जो जीवात्मा के विशेष सुख के अंतर्गत है। यह धन या मित्र की प्राप्ति, आरोग्य और भोग आदि से उत्पन्न होता है। सांख्य और पातंजल के मत से सुख प्रकृति का धर्म है और इसकी उत्पत्ति सत्य से होती है। गीता में सुख तीन प्रकार का कहा गया है—(१) सात्विक जो ज्ञान, वैराग्य और ध्यान आदि के द्वारा प्राप्त होता है। (२) राजसिक जो विषय तथा इंद्रियों के संयोग से उत्पन्न होता है। (जैसे संगीत सुनने, सुंदर रूप देखने, स्वादिष्ट भोजन करने और संभोग आदि से होता है।) और (३) तामस जो आलस्य और उन्माद आदि के कारण उत्पन्न होता है।

पर्या०—प्रीति। मोद। आमोद। प्रमोद। आनंद। हर्ष। सौख्य।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—भोगना।—मिलना।

मुहा०—सुख मानना = परिस्थिति आदि की अनुकूलता के कारण ठीक अवस्था में रहना। जैसे,—यह पेड़ सभी प्रकार की जमीनों में सुख मानता है। सुख लूटना = यथेष्ट सुख का भोग करना। मौज करना। आनंद करना। सुख की नींद सोना = निश्चित होकर आनंद से सोना या रहना। खूब मजे में समय बिताना।

२. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ८ सगण और २ लघु होते हैं। ३. आरोग्य। तंदुरुस्ती। ४. स्वर्ग। ५ जल। पानी। ६. वृद्धि नाम की अष्टवर्गीय ओषधि। ७. समृद्धि (को०)। ८. आसानी। सुभीता। सहूलियत (को०)। ९. कल्याण। शुभ। १०. अभ्युन्नति। वृद्धि। बढ़ती।

सुख²—वि० [सं०] १. स्वाभाविक। सहज। उ०—जाके सुख मुखबास ते वासित होत दिगंत।—केशव (शब्द०)। २. सुख देनेवाला। सुखद। ३. प्रसन्न। खुश (को०)। ४. रुचिकर। मधुर (को०)। ५. सद्गुणी। पुण्यात्मा (को०)। ६. योग्य। उपयुक्त (को०)।

सुख³—क्रि० वि० १. स्वाभाविक रीति से। साधारण रीति से। उ०—कहुँ द्विज गण मिलि सुख श्रुति पढ़ही।—केशव (शब्द०)। २. शांतिपूर्वक। यथेच्छया। सुखपूर्वक। आराम से। ३. प्रसन्नता या हर्ष के साथ (को०)। ४. सरलता से। आसानी से (को०)।

सुखआसनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुख + आसन] सुखपाल। पालकी। डोली। उ०—चढ़ि सुखआसन नृपति सिधायो। तहाँ कहार एक दुख पायो।—सूर (शब्द०)।

सुखकंद—वि० [सं० सुख + कन्द] सुखमूल। सुख देनेवाला। आनंद देनेवाला। उ०—अहो पवित्र प्रभाव यह रूप नयन सुखकंद। रामायन रचि मुनि दियो बानिहिं परम अनंद।—सीताराम (शब्द०)।

सुखकंदनⓅ—वि० [सं० सुख + कन्दन] दे० 'सुखकंद'। उ०—श्री वृषभानु सुता दुलही दिन जोरी बनी बिधना सुखकंदन। रसखानि न आवत मो पै कह्यो कछु दोउ फँदे छबि प्रेम के कंदन।—रसखान (शब्द०)।

सुखकंदरⓅ—वि० [सं० सुख + कन्दरा] सुख का घर। सुख का आकर। उ०—सुंदर नंद महर के मंदिर प्रगटचो पूत सकल सुखकंदर।—सूर (शब्द०)।

सुखकⓅ†—वि० [सं० शुष्क; हिं० सूखा] सूखा। शुष्क। उ०—सुखक वृक्ष एक जक्त उपाया। समुझि न परी विषय कछु माया।—कबीर (शब्द०)।

सुखकर—वि० [सं०] १. सुख देनेवाला। सुखद। २. जो सहज में सुख से किया जाय। सुकर। ३. सुखद या हलके हाथवाला। उ०—परम निपुण सुखकर वर नापित लीन्ह्यो तुरत बुलाई। क्रम सों चारि कुमारन को नृप दिय मुंडन करवाई।—रघुराज (शब्द०)।

सुखकरण—वि० [सं० सुख + करण] सुख उत्पन्न करनेवाला। आनंद देनेवाला। उ०—सब सुखकरण हरण दुख भारी। जपैं जाहि शिव शैलकुमारी।—विश्राम (शब्द०)।

सुखकरनⓅ—वि० [सं० सुख + करण] दे० 'सुखकरण'। उ०—सुखकरन सब ते परम करवर वेनु वरकर धरत हैं। सुर मधुर तान बँधान तें प्रभु मनहुँ को मन हरत है।—गिरधरदास (शब्द०)।

सुखकार, सुखकारक—वि० [सं०] सुखदायक। सुख देनेवाला। आनंददायक।

सुखकारी—वि० [सं० सुखकारिन्] सुख देनेवाला। आनंददायक।

सुखकृत्—वि० [सं०] १. जो सुख या आराम से किया जाय। सुकर। सहज। २. सुख करनेवाला। सुखद (को०)।

सुखक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुख से किया जानेवाला काम। सहज काम। २. वह काम जिसे करने से सुख हो। आराम देनेवाला काम। ३. आराम या सुख देना।

सुखगंध—वि० [सं० सुखगन्ध] जिसकी गंध आनंद देनेवाली हो। सुगंधित।

सुखग—वि० [सं०] सुख से जानेवाला। आराम से चलने या गमन करनेवाला।

सुखगम—वि० [सं०] १. सरल। सुगम। सहज। २. दे० 'सुखगम्य'।

सुखगम्य—वि० [सं०] सुख से जाने योग्य। आराम से जाने योग्य। २. जिसमें सुखपूर्वक गमन किया जा सके।

सुखग्राह्य—वि० [सं०] १. सुख से ग्रहण करने योग्य। जो सहज में लिया जा सके। २. सुखबोध्य। सुबोध।

सुखघात्य—वि० [सं०] जिसका घात या हनन सरलता से किया जा सके।

सुखचर—वि० [सं०] सुख से चलनेवाला। आराम से चलनेवाला।

सुखचार—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम घोड़ा। बढ़िया घोड़ा।

सुखच्छाय—वि० [सं०] शीतल छाया देनेवाला। सुखद छायावाला।

सुखच्छेद्य—वि० [सं०] सरलता से छेदने या काटने योग्य।

सुखजनक—वि० [सं०] सुखदायक। आनंददायक। सुखद।

सुखजननि⑤, **सुखजननी**—वि० [सं०] सुख उपजानेवाली। सुख देनेवाली। उ०—मदन जीविका सुखजननि मनमोहनी विलास। निपट कृपाणी कपट की रति शोभा मुखवास।—केशव (शब्द०)।

सुखजात—वि० [सं०] १. सुखी। प्रसन्न २. जो सुख से जात या उत्पन्न हो।

सुखज्ञ—वि० [सं० सुख + ज्ञ] सुख का जाननेवाला। सुख का ज्ञाता। उ०—जागरत भाखि सुप्त सुखमाभिलाख जे सुखज्ञ सुखभाषी ह्वै तुरीयमय माने हैं। गुणत्रय भेद के अवस्था त्रय खेदहू के लच्छन के लच्छ ते बिलच्छन बखाने हैं।—चरणचंद्रिका (शब्द०)।

सुखड़ैना—संज्ञा पुं० [हिं० सूखना + ड़ैना (प्रत्य०)] बैलों का एक प्रकार का रोग जो उनका तालू खुल या फूट जाने से होता है। इसमें बैल खाना पीना छोड़ देता है जिससे वह बहुत दुबला हो जाता है।

सुखढरन⑤—वि० [सं० सुख + हिं० ढलना] सुख देनेवाला। सुखदायक। उ०—सज्जन सुखढरन भक्तजन कंठाभरन।—सरस्वती (शब्द०)।

सुखतला, सुखतल्ला—संज्ञा पुं० [हिं० सुखतला] चमड़े का वह टुकड़ा जो जूते के भीतर चिपकाया जाता है जिससे तलवे को आराम मिले।

सुखता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख का भाव या धर्म। सुखत्व।

सुखत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुखता'।

सुखथर⑤†—संज्ञा पुं० [सं० सुख + स्थल] सुख का स्थल। सुख देनेवाला स्थान। उ०—निपट भिन्न वा सब सो जो पहले हो सुखथर। विविध त्रास सो पूरित हैं वे भूमि भयंकर।—श्रीधर पाठक (शब्द०)।

सुखद[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुखदा] सुख देनेवाला। आनंद देनेवाला। सुखदायी। आरामदेह।

सुखद[2]—संज्ञा पुं० १. विष्णु का स्थान। विष्णु का आसन। २. विष्णु। ३. संगीत में एक प्रकार का ताल।

सुखदगीत—वि० [सं० सुखद + गीत] [वि० स्त्री० सुखदगीता] जिसकी बहुत अधिक प्रशंसा हो। प्रशंसनीय। उ०—जनक सुखदगीता पुत्रिका पाय सीता।—केशव (शब्द०)।

सुखदनियाँ⑤—वि० [सं० सुखदानी] दे० 'सुखदायी'। उ०—सुंदर स्याम सरोजबरन तन सब अँग सुभग सकल सुखदनियाँ।—तुलसी (शब्द०)।

सुखदा[1]—वि० स्त्री० [सं०] सुख देनेवाली। आनंद प्रदान करनेवाली। सुखदायिनी।

सुखदा[2]—संज्ञा स्त्री० १. गंगा का एक नाम। २. अप्सरा। ३. शमी वृक्ष। ४. एक प्रकार का छंद।

सुखदाइन⑤—वि० [सं० सुखदायिनी] दे० 'सुखदायिनी'। उ०—आइ हुती अन्हवावन नाइनि, सोंधो लिए कर सूधे सुभाइनि। कंचुकि छोरि उतै उपटैवे को ईंगुर से अँग की सुखदाइनि।—देव (शब्द०)।

सुखदाई⑤—वि० [सं० सुखदायिन्] दे० 'सुखदायी'।

सुखदात⑤—वि० [सं० सुखदातृ] दे० 'सुखदाता'। उ०—जो सब देव को देव अहै, द्विजभक्ति में जाकी घनी निपुणाई। दासन को सिगरो सुखदात प्रशांत स्वरूप मनोहरताई।—रघुराज (शब्द०)।

सुखदाता—वि० [सं० सुखदातृ] सुख देनेवाला। आनंद देनेवाला। आराम देनेवाला। सुखद। उ०—सुखदाता मातापिता सेवक सरन सधार। उपवन बैठे चंद जहँ द्वै पंचास पधार।—पृ० रा०, ६।३२।

सुखदान⑤—वि० [सं० सुख + देना] [स्त्री० सुखदानी] सुख देनेवाला। आनंद देनेवाला। उ०—(क) खेलति है गुड़ियान को खेल लए सँग मै सजनी सुखदान री।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)। (ख) जब तुम फूलन के दिवस आवत है सुखदान। फूली अंग समाति नहिं उत्सव करति महान।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुखदानी[1]—वि० स्त्री० [हिं० सुखदान] सुख देनेवाली। आनंद देनेवाली।

सुखदानी[2]—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ८ सगण और १ गुरु होता है। इसे सुंदरी, मल्ली और चंद्रकला भी कहते हैं।

सुखदाय—वि० [सं० सुखदायक] दे० 'सुखदायक'।

सुखदायक[1]—वि० [सं०] सुख देनेवाला। आराम देनेवाला। सुखद।

सुखदायक[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का छंद।

सुखदायिनी[1]—वि० स्त्री० [सं०] सुख देनेवाली। सुखदा।

सुखदायिनी[2]—संज्ञा स्त्री० मासरोहिणी नाम की लता। रोहिणी।

सुखदायी—वि० [सं० सुखदायिन्] [वि० स्त्री० सुखदायिनी] सुख देनेवाला। आनंद देनेवाला। सुखद।

सुखदायो⑤—वि० [सं० सुखदायक] दे० 'सुखदायी'। उ०—देखि श्याम मन हरष बढ़ायो। तैसिय शरद चाँदिनो निर्मल तैसोइ रास रंग उपजायो। तैसिय कनकबरन सब सुंदरि यह सोभा पर मन ललचायो। तैसो हंससुता पवित्र तट तैसोइ कल्पवृक्ष सुखदायो।—सूर (शब्द०)।

सुखदाव⑤—दे० [सं० सुखदायक] दे० 'सुखदायी'। उ०—जल दल चंदन चक्रदर घंट शिला हरि ताव। अष्ट वस्तु मिलि होत है चरणामृत सुखदाव।—विश्राम (शब्द०)।

सुखदास—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो अगहन महीने में तैयार होता है और जिसका चावल बरसों तक रह सकता है।

सुखदुःख—संज्ञा पुं० [सं०] आराम और कष्ट। सुख और दुःख का जोड़ा। द्वंद्व। २. भले और बुरे समय का क्रम। भाग्य और अभाग्य।

मुहा०—सुखदुःख का साथी = भले और बुरे में बराबर साथ देनेवाला।

सुखदृश्य—वि॰ [सं॰] जिसे देखने को जी चाहे। सुंदर [को॰]।

सुखदेनी(पु) – वि॰ [सं॰ सुखदायिनी] दे॰ 'सुखदायिनी'। उ॰—राजत रोमन की तन राजिव है रसबीज नदी सुखदेनी। आगे भई प्रतिबिंबित पाछे बिलंबित जो मृगनैनी कि बेनी।—सुंदरी-सर्वस्व (शब्द॰)।

सुखदैन(पु) – वि॰ [हिं॰ सुख + देना] दे॰ 'सुखदायी,' 'सुखदान'। उ॰—जियके मन मंजु मनोरथ आनि कहै हनुमान जगे पै जगे। सुखदैन सरोज कली से भले उभरैं ये उरोज लगे पै लगैं।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द॰)।

सुखदैनी(पु)—वि॰ [सं॰ सुखदायिनी] सुख देनेवाली। आनंद देनेवाली। सुखद। उ॰—भाल गुही गुन लाल लटैं लपटी लर मोतिन की सुखदैनी।—केशव

सुखदोहा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वह गाय जो सुखपूर्वक दूही जाय [को॰]।

सुखदोह्या—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वह गाय जिसको दुहने में किसी प्रकार का कष्ट न हो। बहुत सहज में दूही जा सकनेवाली गौ।

सुखधाम—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. सुख का घर। आनंदसदन। उ॰—सो सुखधाम राम अस नामा।—मानस, १। २. वह जो स्वयं सुखमय हो; या जो बहुत अधिक सुख देनेवाला हो। ३. वैकुंठ। स्वर्ग।

सुखन—संज्ञा पुं॰ [अ॰ सुख़न] दे॰ 'सखुन'। (सुखन शब्द के मुहा॰ और यौ॰ के लिये दे॰ 'सखुन' शब्द के मुहा॰ और यौ॰)।

सुखना(पु)—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ सूखना] दे॰ 'सूखना'।

सुखनीय—वि॰ [सं॰] सुखद। आनंदप्रद [को॰]।

सुखपर—वि॰ [सं॰] १. सुखी। खुश। प्रसन्न। २. सुख चाहनेवाला। आरामतलब।

सुखपाल—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुख + पाल (की)] एक प्रकार की पालकी जिसका ऊपरी भाग शिवाले के शिखर का सा होता है। उ॰—(क) सुखपाल और चंडोलों पर और रथों पर जितनी रानियाँ और महारानी लक्ष्मीवास पीछे चली आती थीं।—शिवप्रसाद (शब्द॰)। (ख) घोड़न के रथ दोइ दिए जरबाफ मढ़ी सुखपाल सुहाई।—रघुनाथ (शब्द॰)। (ग) हम सुख-पाल लिए खड़े हाजिर लगन कहार। पहुँचायौ मन मजिल तक तुहिं लै प्रान अधार। —रतनहजारा (शब्द॰)।

सुखपूर्वक—क्रि॰ वि॰ [सं॰] सुख से। आनंद से। आराम के साथ। मजे में। जैसे,—आप यदि उनके यहाँ पहुँच जायँगे तो बहुत सुखपूर्वक रहेंगे।

सुखपेय—वि॰ [सं॰] जिसके पीने में सुख हो। जिसके पान करने से आनंद मिले। सुपेय।

सुखप्रणाद—वि॰ [सं॰] सुखद ध्वनि या नादवाला [को॰]।

सुखप्रतीक्ष—वि॰ [सं॰] सुख की प्रतीक्षा करने, राह देखने या आशा करनेवाला [को॰]।

सुखप्रद—वि॰ [सं॰] सुख देनेवाला। सुखदायक। सुखद।

सुखप्रबोधक—वि॰ [सं॰] सुबोध। सरलता से बोध होनेवाला।

सुखप्रविचार—वि॰ [सं॰] सरलता से ग्रहण करने योग्य [को॰]।

सुखप्रवेय—वि॰ [सं॰] जिसे आसानी से कंपित किया जा सके। (वृक्ष आदि) जो आसानी से हिल सके।

सुखप्रश्न—संज्ञा पुं॰ [सं॰] कुशलक्षेम की जिज्ञासा। कुशल समाचार पूछना [को॰]।

सुखप्रसव, सुखप्रसवन - संज्ञा पुं॰ [सं॰] बिना कष्ट के होनेवाला प्रसव [को॰]।

सुखप्रसवा[1]—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सुख से प्रसव करनेवाली गौ, स्त्री आदि। आराम से जननेवाली स्त्री।

सुखप्रसवा[2]—वि॰ स्त्री॰ सुखपूर्वक जनन करनेवाली (गाय, स्त्री)।

सुखप्राप्त—वि॰ [सं॰] १. जिसे सुख प्राप्त हो। २. जो सुख से लभ्य हो।

सुखप्राप्य - वि॰ [सं॰] सुख से प्राप्त करने योग्य। सरलता से मिल जानेवाला [को॰]।

सुखबंधन—वि॰ [सं॰ सुखबन्धन] सुखों से आबद्ध। विलासी [को॰]।

सुखबद्ध—वि॰ [सं॰] सुंदर [को॰]।

सुखबोध—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. आनंद की अनुभूति। २. सहज ज्ञान। सुगम ज्ञान [को॰]।

सुखभंज—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुखभञ्ज] सफेद मिर्च।

सुखभक्ष—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सफेद सहिंजन। श्वेत शिग्रु।

सुखभक्षिकाकार—संज्ञा पुं॰ [सं॰] कांदबिक। हलवाई [को॰]।

सुखभाक्, सुखभाग् वि॰ [सं॰ सुखभागिन्] प्रसन्न [को॰]।

सुखभागी—वि॰ [सं॰ सुखभागिन्] दे॰ 'सुखभाग्'।

सुखभुक्—वि॰ [सं॰ सुखभुज्] १. प्रसन्न। सुखी। हर्षित। २. भाग्य-शाली [को॰]।

सुखभेद्य—वि॰ [सं॰] जो सरलता से तोड़ा या भेदा जा सके। कोमल। भंगुर [को॰]।

सुखभोग—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सुख का उपभोग। आनंदभोग [को॰]।

सुखभोगी—वि॰ [सं॰ सुखभोगिन्] सुख भोगनेवाला [को॰]।

सुखभोग्य—संज्ञा पुं॰ [सं॰] जिसका भोग सुखपूर्वक हो सके [को॰]।

सुखमद—वि॰ [सं॰] जिसका मद सुखद हो [को॰]।

सुखमन(पु)†—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सुषुम्ना] सुषुम्ना नाम की नाड़ी। मध्यनाड़ी। विशेष दे॰ 'सुषुम्ना'। उ॰—कहाँ पिंगला सुख-मन नारी। सूनि समाधि लागि गइ तारी।—जायसी (शब्द॰)।

सुखमा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सुषमा] १. शोभा। छवि। उ॰—तिय मुख सुखमा सो दृगनि बाँध्यो प्रेम अधार। रही अलक ह्वै लगी मनु बटुरी पुतरी तार।—मुबारक (शब्द॰)। २. एक प्रकार का वृत्त जिसमें एक तगण, एक यगण, एक मगण और एक गुरु होता है। इसे वामा भी कहते हैं।

सुखमानी—वि॰ [सं॰ सुखमानिन्] सुख माननेवाला। हर अवस्था में सुखी रहनेवाला।

सुखमुख —संज्ञा पुं० [सं०] यक्ष।

सुखमूल(पु)—वि० [सं०] सुखराशि। उ०—सुखमूल दूलह देखि दंपति पुलक तन हुलस्यो हियो।—मानस, १।३२४।

सुखमोद—संज्ञा पुं० [सं०] लाल सहिंजन। शोभांजन वृक्ष।

सुखमोदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शल्लकी का वृक्ष। सलई।

सुखयिता—वि० [सं० सुखयितृ] सुख देनेवाला। हर्षप्रद [को०]।

सुखरात्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दिवाली की रात। कार्तिक महीने की अमावस्या की रात। २. सुहागरात (को०)। ३. लक्ष्मी [को०]।

सुखरात्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी [को०]।

सुखराशि—वि० [सं०] जो सुख की पुंजीकृत राशि हो। जो सर्वथा सुखमय हो।

सुखरास(पु)—वि० [सं० सुख + राशि] जो सर्वथा सुखमय हो। जो सुख की राशि हो। उ०—मंदिर के द्वार रूप सुंदर निहारो करैं लग्यो शीत गात सकलात दई दास है। सोचे संग जाइबे की रीति को प्रमान बहै वैसे सब जानो माधवदास सुखरास है।—भक्तमाल (शब्द०)।

सुखरासी—वि० [सं० सुख + राशि] दे० 'सुखरास'। उ०—पूरन काम राम सुखरासी।—मानस, ३।२४।

सुखरूप—वि० [सं०] मनोहर रूप, आकृतिवाला [को०]।

सुखलक्ष्य—वि० [सं०] आसानी से लक्षित होनेवाला। सुख से पहचान में आनेवाला [को०]।

सुखलभ्य—वि० [सं०] जो सुखपूर्वक लभ्य हो। सुलभ।

सुखलिप्सा - संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख की लालसा। सुखाकांक्षा।

सुखलाना— क्रि० स० [हिं० सूखना का प्रे० रूप] दे० 'सुखाना'।

सुखवंत—वि० [सं० सुखवत्] १. सुखी। प्रसन्न। खुश। २. सुखदायक। आनंद देनेवाला। उ०—इसके कुंद कली से दंत। बचन तोतले हैं सुखवंत।—संगीत शा० (शब्द०)।

सुखवत्—वि० [सं०] सुखयुक्त। सुखी। प्रसन्न।

सुखवती—वि० स्त्री० [सं०] सुख से युक्त। सुखी (स्त्री)।

सुखवत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख का भाव या धर्म। सुख। आनंद।

सुखवन†[१]—संज्ञा पुं० [हिं० सूखना] वह फसल जो सूखने के लिये धूप में डाली जाती है। २. वह कमी जो किसी चीज में उसके सूखने के कारण होती है।

सुखवन[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सूखना] वह बालू जिसे लिखे हुए अक्षरों आदि पर डालकर उनकी स्याही सुखाते हैं। उ०—किलक ऊख ह्वै जाइ मसी हू होत सुधा सी। खाजा के परतन की सी छबि पत्र प्रकासी। सुखवन की बारूहू तहाँ चीनी सी ढरकी। सुकवि करैं किमि कविता मधुरे बधू अपर की।—अंबिकादत्त (शब्द०)।

सुखवर्चक—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जी मिट्टी। सजिका क्षार।

सुखवर्चस—संज्ञा पुं० [सं०] सज्जी मिट्टी।

सुखवह—वि० [सं०] जो सुखपूर्वक या आसानी से वहन किया जाय।

सुखवा†—संज्ञा [सं० सुख] सुख। आनंद। मोद। उ० सुखवा सकल बलबिरवा के घर, दुख नैहर गवन नाहिं देत।—रा० कृ० वर्मा (शब्द०)।

सुखवाद - संज्ञा पुं० [सं०] भौतिक सुख को ही सर्वोपरि माननेवाला मत।

सुखवादी—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सुख + वादिन्] (वह) जो इंद्रियसुख को ही सब कुछ समझता या मानता हो। (वह) जो भोग विलास आदि को ही जीवन का मुख्य उद्देश्य समझता हो। विलासी।

सुखवान्—वि० [सं० सुखवत्] सुखी।

सुखवार—वि० [सं० सुख + हिं० वार (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सुखवारी] सुखी। प्रसन्न। खुश। उ०—जहाँ दीन, घरहीन परी ठिठुरत बहु नारी। रही कदाचित कबहुँ गाम में सो सुखवारी। रोय चुकी पै निरदोषिन की सुनि सुनि ख्वारी।—श्रीधर पाठक (शब्द०)।

सुखवास—संज्ञा पुं० [सं०] १. तरबूज। शीर्णवृंत। २. वह स्थान जहाँ का निवास सुखकर हो। आनंद का स्थान। सुख की जगह।

सुखविहार—वि० [सं०] सुखपूर्वक विहार करनेवाला। आनंद की जिंदगी बसर करनेवाला।

सुखवेदन—संज्ञा पुं० [सं०] सुखानुभव। आनंदानुभूति [को०]।

सुखशयन—संज्ञा सं० [पुं०] सुखपूर्वक सोना।

सुखशयित—वि० [सं०] जो सुख या आराम से सोया हो।

सुखशय्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुख की नींद। २. सुखदायक शय्या।

सुखशांति—संज्ञा स्त्री० [सं० सुखशान्ति] अमन चैन।

सुखशायी—वि० [सं० सुखशायिन्] सुखपूर्वक सोया हुआ। जो आराम से सोया हो।

सुखश्रव, सुखश्राव्य—वि० [सं०] कानों को मधुर लगनेवाला। श्रुतिमधुर। सुरीला [को०]।

सुखश्रुति—वि० [सं०] दे० 'सुखश्रव'।

सुखसंग संज्ञा पुं० [सं० सुखसङ्ग] सुख के प्रति आसक्ति।

सुखसंगी—वि० [सं० सुखसंङ्गिन्] सुख का साथी। सुख के समय साथ देने या रहनेवाला [को०]।

सुखसंदूह्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सुखसन्दूह्या] वह गाय जो सुख से दूही जाय। जिस गाय को दूहने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

सुखसंदोह—संज्ञा पुं० [सं०] सुख की राशि। सुख का मूल। उ०—सुखसंदोह मोहपर ग्यान गिरा गोतीत।—राम०, पृ० ११६।

सुखसंदोह्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सुखसन्दोह्या] दे० 'सुखसंदूह्या'।

सुखसंपद, सुखसंपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सुखसम्पद, सुखसम्पत्ति] सुख और धन दौलत।

सुखसंयोग—संज्ञा पुं० [सं०] लोकोत्तर आनंद की प्राप्ति [को०]।

सुखसलिल—संज्ञा पुं० [सं०] उष्ण जल। गरम पानी।

विशेष—पानी गरम करने से उसमें कोई दोष नहीं रह जाता। वैद्यक में ऐसा जल बहुत उपकारी बताया गया है, और इसी लिये इसे 'सुखसिलल' कहा गया है।

सुखसागर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुख के सागर। आनंद के समुद्र। २ हिंदी का एक ग्रंथ जो भागवत के दशम स्कंध का अनुवाद है। इसके अनुवादक मुंशी सदासुखलाल थे।

सुखसाध्य—वि० [सं०] जिसका साधन सुकर हो। जिसके साधन में कोई कठिनाई न हो। सुख या सहज में होनेवाला। सुकर। सहज। २. (रोग आदि) जो सरलता से अच्छा हो सके।

सुखसार—संज्ञा पुं० [सं० सुख+सार] मुक्ति। मोक्ष। उ०—केशव तिन सौं यों कह्यौ क्यों पाऊँ सुखसारु।—केशव (शब्द०)।

सुखसुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख की नींद।

सुखसेव्य—वि० [सं०] १. सुख से सेवन या भोग करने योग्य। २. सुलभ [को०]।

सुखस्पर्श—वि० [सं०] १ छूने में सुखकर। २. तृप्तिकर [को०]।

सुखस्वप्न—संज्ञा पुं० [सं०] सुखमय जीवन की कल्पना [को०]।

सुखहस्त—वि० [सं०] जिसके हाथ कोमल एवं मृदु हों। मुलायम हाथोंवाला [को०]।

सुखांत—संज्ञा पुं० [सं० सुखान्त] १. वह जिसका अंत सुखमय हो। सुखद परिणामवाला। जिसका परिणाम सुखकर हो। २. मित्रता-पूर्ण। मैत्रीयुक्त [को०]। ३. सुख का नाश या विघात करनेवाला (को०)। ४. पाश्चात्य नाटकों के दो भेदों में से एक। वह नाटक जिसके अंत में कोई सुखपूर्ण घटना (जैसे संयोग, अभीष्टसिद्धि, राज्यप्राप्ति आदि) हो। दुःखांत (ट्रैजेडी) का उलटा। कॉमेडी।

सुखांबु—संज्ञा पुं० [सं० सुखाम्बु] गरम जल। उष्ण जल।

सुखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वरुण की पुरी का नाम। २. दयालुता। पुष्य (को०)। ३. संगीत की एक मूर्छना। ४. शिव की नौ शक्तियों में से एक शक्ति (को०)। ५. मुक्ति प्राप्त करने की साधना। मोक्षप्राप्ति की चेष्टा या उपाय (दर्शन)।

सुखाकर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुख का आकर या निधि। २. बौद्धों के एक लोक का नाम [को०]।

सुखागत—संज्ञा पुं० [सं०] स्वागत [को०]।

सुखाजात—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

सुखात्मा—संज्ञा पुं० [सं० सुखात्मन्] ईश्वर। ब्रह्म।

सुखाधार¹—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुखाधार²—वि० जो सुख का आधार हो। जिसपर सुख अवलंबित हो। जैसे—हमारे तो आप ही सुखाधार हैं।

सुखाधिष्ठान—संज्ञा पुं० [सं०] सुख का स्थान।

सुखाना¹—क्रि० स० [हिं० सूखना का प्रे० रूप] १. किसी गीली या नम चीज को धूप या हवा में अथवा आँच पर इस प्रकार रखना या ऐसी ही और कोई क्रिया करना जिससे उसकी आर्द्रता या नमी दूर हो या पानी सूख जाय। जैसे,—धोती सुखाना, दाल सुखाना, मिर्च सुखाना, जल सुखाना। २. कोई ऐसी क्रिया करना जिससे आर्द्रता दूर हो। जैसे,—इस चिंता ने तो मेरा सारा खून सुखा दिया।

सुखाना²†—क्रि० अ० दे० 'सूखना'।

सुखानी—संज्ञा पुं० [अ० सुक्कानी] माँझी। मल्लाह। (लश०)।

सुखानुभव—संज्ञा पुं० [सं०] सुख का अनुभव या अनुभूति [को०]।

सुखाप—वि० [सं०] जो सुखपूर्वक प्राप्त या लभ्य हो [को०]।

सुखाप्लव—वि० [सं०] जहाँ सुखपूर्वक स्नान किया जाय। निःशंक, आराम से नहाने योग्य [को०]।

सुखायत, सुखायन—संज्ञा पुं० [सं०] सहज में वश में आनेवाला घोड़ा। सीखा और सधा हुआ घोड़ा।

सुखापन्न—वि० [सं०] सुखयुक्त। सुखी।

सुखारा†पु—वि० [सं० सुख+हिं० आरा (प्रत्य०)] १. जिसे यथेष्ट सुख हो। सुखी। आनंदित। प्रसन्न। उ०—(क) इहि विधान निसि रहहिं सुखारे। करहिं कूँच उठि बड़े सकारे।—गिरधरदास (शब्द०)। (ख) नित ये मंगल मोद अवध सब बिधि सब लोग सुखारे।—तुलसी (शब्द०)। २. सुख देनेवाला। सुखद। उ०—जे भगवान प्रधान अजान समान दरिद्रन ते जन सारा। हेतु विचार हिये जग के भग त्यागि लखूँ निज रूप सुखारा।—(शब्द०)।

सुखारि—वि० [सं०] उत्तम हवि भक्षण करनेवाले (देवता आदि)।

सुखारी—वि० [सं० सुख+हिं० आरी] दे० 'सुखारी'। उ०—(क) राम संग सिय रहति सुखारी।—मानस, २।१४०। (ख) मुयो असुर सुर भए सुखारी।—सूर (शब्द०)। (ग) चौरासी लख के अधकारी। भक्त भए सुनि नाद सुखारी।—गिरधरदास (शब्द०)।

सुखारोपु—वि० [सुख+हिं० आरो] दे० 'सुखारा'।

सुखारोह—वि० [सं०] सुखपूर्वक आरोहण करने या चढ़ने योग्य।

सुखार्थी—वि० [सं० सुखार्थिन्] [वि० स्त्री० सुखार्थिनी] सुख चाहनेवाला। सुख की इच्छा करनेवाला। सुखकामी।

सुखाला—वि० [सं० सुख+हिं० आला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सुखाली] सुखदायक। आनंददायक। उ०—लगै सुखाली साँझ दिवस की तरुनाई से ताप नसै।—सरस्वती (शब्द०)।

सुखालुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की जीवंती। डोडी। विशेष दे० 'जीवंती'।

सुखालोक—वि० [सं०] मनोहर। सुंदर [को०]।

सुखावत्—वि० [सं० सुखवत्] दे० 'सुखवत्'।

सुखावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक स्वर्ग का नाम।

सुखावतीदेव—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्धदेव जो सुखावती नामक स्वर्ग के अधिष्ठाता माने जाते हैं। बौद्ध।

सुखावतीश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुद्धदेव। २. बौद्धों के एक देवता।

सुखावल—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार नृचक्षु राजा के एक पुत्र का नाम।

सुखावह—वि० [सं०] सुख देनेवाला। आराम देनेवाला। सुखद।

सुखाश¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुखपूर्वक खाना। २. वह जो खाने में बहुत अच्छा जान पड़े। ३. तरबूज। ४. वरुण देवता का एक नाम।

सुखाश[२]—वि॰ जिसे सुख की आशा हो।

सुखाशक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] तरबूज।

सुखाशा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सुख की आशा। आराम की उम्मीद।

सुखाश्रय—वि॰ [सं॰] जिसपर सुख अवलंबित हो। सुखाधार।

सुखासक्त[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] शिव का एक नाम।

सुखासक्त[२]—वि॰ सुख के प्रति आसक्तियुक्त। सुख में डूबा हुआ।

सुखासन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. वह आसन जिसपर बैठने से सुख हो। सुखद आसन। २. पद्मासन (को॰)। ३. नाव पर बैठने का उत्तम आसन। ४. एक प्रकार की पालकी या डोली। सुखपाल। उ॰—कहेउ बनावन पालकी सजन सुखासन जान।—मानस, २।१८६।

सुखासिका—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. स्वास्थ्य। तंदुरुस्ती। २. आराम। सुख। चैन।

सुखास्वाद[१]—वि॰ [सं॰] १. मधुर स्वाद का। मीठा। २. आनंददायक। रुचिकर [को॰]।

सुखास्वाद[२]—संज्ञा पुं॰ १. मधुर गंध। प्रिय गंध। २. आनंदानुभूति। सुखानुभूति [को॰]।

सुखासीन—वि॰ [सं॰] आराम से बैठा हुआ [को॰]।

सुखिआ(पु)—वि॰ [सं॰ सुख + हिं॰ इया (प्रत्य॰)] दे॰ 'सुखिया'। उ॰—कहु नानक सोई नर सुखिआ राम नाम गुन गावै। अउर सकल जगु माया मोहिआ निरभै पद नहि पावै।—तेगबहादुर (शब्द॰)।

सुखित[१](पु)—वि॰ [हिं॰ सूखना] सूखा हुआ। शुष्क। उ॰—पंथ थकित मद मुकित सुखित सरसिंदुर जोवत। काकोदर करकोश उदर तर केहरि सोवत।—केशव (शब्द॰)।

सुखित[२]—वि॰ [सं॰] सुखी। आनंदित। प्रसन्न। खुश। उ॰—(क) औरनि के औगुननि तजि कविजन राव होत हैं सुखित तेरो किर्तिवर न्हाय कै।—मतिराम (शब्द॰)। (ख) दृग थिर, कौहैं अधखुले देह थकौहैं ढार। सुरत सुखित सी देखियत, दुखित गरभ के भार।—बिहारी (शब्द॰)।

सुखित[३]—संज्ञा पुं॰ आनंद। प्रसन्नता। सुख। हर्ष [को॰]।

सुखिता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सुखी होने का भाव। सुख। आनंद।

सुखित्व—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सुखी होने का भाव। सुख। सुखिता। आनंद। प्रसन्नता।

सुखिया—वि॰ [हिं॰ सुख + इया (प्रत्य॰)] जिसे सब प्रकार का सुख हो। सुखी। प्रसन्न। उ॰—लखि के सुंदर वस्तु अरु मधुर गीत सुनि कोइ। सुखिया जनहू के हिये उतकंठा एहि होइ।—लक्ष्मण सिंह (शब्द॰)।

सुंखिर—संज्ञा पुं॰ [देश॰] साँप के रहने का बिल। बाँबी। उ॰—याकी असि साँपिनि कढ़त म्यान सुखिर सों लहलही श्याम महा चपल निहारी है।—गुमान (शब्द॰)।

सुखी[१]—वि॰ [सं॰ सुखिन्] सुख से युक्त। जिसे किसी प्रकार का कष्ट न हो, सब प्रकार का सुख हो। आनंदित। खुश। जैसे,—जो लोग सुखी हैं, वे दीन दुखियों का हाल क्या जानें।

सुखी[२]—संज्ञा पुं॰ यति। संत [को॰]।

सुखीन—संज्ञा पुं॰ [देश॰] एक प्रकार का पक्षी जिसकी पीठ लाल, छाती और गर्दन सफेद तथा चोंच चिपटी होती है।

सुखीनल—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पुराणानुसार राजा नृचक्षु के एक पुत्र का नाम।

सुखेतर[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सुख से भिन्न अर्थात् दुःख। क्लेश। कष्ट।

सुखेतर[२]—वि॰ सुखरहित। सुखहीन। अभागा [को॰]।

सुखेन[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुषेण] दे॰ 'सुषेण'। उ॰—सुग्रीव विभीषण जांववत। अंगद केदार सुखेन संत। सूर (शब्द॰)। (ख) वरुन सुखेन सरत परजन्यहु। मारुत हनुमानहि उतपन्यहु।—पद्माकर (शब्द॰)।

सुखेन[२]—क्रि॰ वि॰ [सं॰] सुखपूर्वक। सहर्ष। उ॰—जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ। करि अनाथ जन परिजन गाऊँ।—मानस, २।५७।

सुखेलक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज भ. ज, र, आता है। इसे 'प्रभद्रिका' और 'प्रभद्रक' भी कहते हैं।

सुखेष्ट, **सुखेष्ठ**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] शिव। महादेव।

सुखैधित—वि॰ [सं॰] सुख में पला हुआ [को॰]।

सुखैना(पु)†—वि॰ [सं॰ सुख + अयन] सुख देनेवाला। सुखदायक। उ॰—तो शंभुइ भावै मुनिजन ध्यावै कागभुशुंडि सुखैना। विश्राम। (शब्द॰)।

सुखैषी—वि॰ [सं॰ सुखैषिन्] [वि॰ स्त्री॰ सुखैषिणी] सुख का अभिलाषी। सुख चाहनेवाला [को॰]।

सुखोचित—वि॰ [सं॰] १. सुख के उपयुक्त या योग्य। २. जो सुख आराम आदि का आदी हो। सुख का अभ्यस्त।

सुखोत्पव—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. पति। स्वामी। २. प्रसन्नता। आनंद [को॰]।

सुखोदक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] गरम जल। सुखसलिल।

सुखोदय—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सुख का उदय या आगम। सुख की प्राप्ति। २. एक प्रकार का मादक पेय। ३. पुराणानुसार एक वर्ष या भूखंड [को॰]।

सुखोदर्क—वि॰ [सं॰] सुखद परिणामवाला [को॰]।

सुखोद्भवा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. हरीतकी। २. छोटा आँवला [को॰]।

सुखोद्य—वि॰ [सं॰] सुख से उच्चारण योग्य। जिसके उच्चारण में कोई कठिनाई न हो (शब्द, नाम, आदि)।

सुखोपविष्ट—वि॰ [सं॰] सुख से बैठा हुआ। चैन से बैठनेवाला [को॰]।

सुखोपाय[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. सुख की प्राप्ति का उपाय। २. सुगम साधन या उपाय [को॰]।

सुखोपाय[२]—वि॰ [सं॰] सुलभ। सहज। प्राप्य [को॰]।

सुखोर्जिक—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सज्जी मिट्टी। सर्जिकाक्षार।

सुखोष्ण[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] थोड़ा गरम जल। कुनकुना जल।

सुखोष्ण[२]—वि॰ थोड़ा गरम। कुनकुना [को॰]।

सुख्ख(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सुख] दे० 'सुख'।

सुख्य—वि० [सं०] १. सुखकर। सुखद। सुखदायक। २. सुख संबंधी। सुख का [को०]।

सुख्यात—वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर। यशस्वी।

सुख्याति--संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि। शोहरत। कीर्ति। यश। बड़ाई।

सुगंध[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्ध] १. अच्छी और प्रिय महक। सुवास। सौरभ। खुशबू। विशेष दे० 'गंध'।

क्रि० प्र०—आना।—उड़ना।—निकलना।—फैलना।

विशेष—यह शब्द संस्कृत में पुंलिंग है पर हिंदी में इस अर्थ में स्त्रीलिंग ही बोलते हैं।

२. वह पदार्थ जिससे अच्छी महक निकलती हो।

क्रि०प्र०—मलना।—लगाना।

३. गंधतृण। गंधेज घास। रसघास। अगिया घास। ४. श्रीखंड। चंदन। ६. गंधराज। ७. नीला कमल। ८. राल। धूना। ९. काला जीरा। १०. गठैला। ग्रंथिपर्ण। गठिवन। ११. एलुआ। एलवालुक। १२. बृहद् गंधतृण। १३. भतृण। १४. चना। १५. भूपलाश। १६. लाल सहिंजन। रक्तशिग्रु। १७. शालिधान्य। बासमती चावल। १८. मरुआ। मरुवक। १९. माधवीलता। २०. कसेरू। २१. सफेद ज्वार। २२. शिलारस। २३. तुंबुरू। २४. केवड़ा। श्वेतकेतकी। २५. रूसा घास जिससे तेल निकलता है। २६. एक प्रकार का कीड़ा। २७. गंधक (को०)। २८. व्यापारी (को०)। २९. एक पर्वत का नाम (को०)। ३०. एक तीर्थ (को०)।

सुगंध[२]—वि० सुगंधित। सुवासित। महकदार। खुशबूदार। उ०—(क) शीतल मंद सुगंध समीर से मन की कली मानों फूल सी खिल जाती थी।—शिवप्रसाद (शब्द०)। (ख) अंजलिगत शुभ सुमन, जिमि सम सुगंध कर दोउ।—मानस, १।३।

सुगंधक—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धक] १. द्रोणपुष्पी। गूमा। गोमा। २. २. रक्तशालिधान्य। साठी धान्य। ३. धरणी कंद। कंदालु। ४. गंधतुलसी। रक्त तुलसी। ५. गंधक। ६. वृहद्गंधतृण। ७. नारंगी। ८. अलाबु। कटुतुंबी (को०)। ९. कर्कोटक। ककोड़ा।

सुगंधकेसर—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धकेसर] लाल सहिंजन। रक्तशिग्रु।

सुगंधकोकिला--संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध कोकिला] एक प्रकार का गंधद्रव्य। गंधकोकिला।

विशेष--भावप्रकाश में इसका गुण गंधमालती के समान अर्थात् तीक्ष्ण, उष्ण और कफनाशक बताया गया है।

सुगंधगंधक--संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धगन्धक] गंधक।

सुगंधगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धगन्धा] दारु हलदी। दारुहरिद्रा।

सुगंधगण—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धगण] सुगंधित द्रव्यों का एक गण या वर्ग।

विशेष—सुगंधगण वर्ग में कपूर, कस्तूरी, लता कस्तूरी, गंधमार्जारवीर्य, चोरक, श्रीखंडचंदन, पीलाचंदन, शिलाजतु, लाल चंदन, अगर, काला अगर, देवदारु, पतंग, सरल, तगर, पद्माक, गूगल, सरल का गोंद, राल, कुंदुरु, शिलारस, लोबान, लौंग, जावित्री, जायफल, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, नागकेसर, सुगंधबाला, खस, बालछड़, केसर, गोरोचन, नख, सुगंध, वीरन, नेत्रवाला, जटामाँसी, नागरमोथा, मुलेठी, आँवा हलदी, कचूर, कपूरकचरी आदि सुगंधित पदार्थ कहे गए हैं।

सुगंधचंद्री—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धचन्द्री] गंधेज घास। गँधारण। गंधपलाशी। कपूर कचरी।

सुगंधतृण—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धतृण] गंधतृण। रूसा घास।

सुगंधतैलनिर्यास—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धतैल निर्यास] एक गंधद्रव्य। जवादि [को०]।

सुगंधत्रय—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धत्रय] चंदन, बला और नागकेसर इन तीनों का समूह।

सुगंधत्रिफला—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धत्रिफला] जायफल, लौंग और इलायची अथवा जायफल, सुपारी तथा लौंग इन तीनों का समूह।

सुगंधन—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धन] जीरा।

सुगंधनाकुली—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धनाकुली] एक प्रकार की रासना।

सुगंधपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धपत्रा] १. सतावर। शतावरी। शतमूली। २. कठजामुन। क्षुद्रजंबू। ३. बनभंटा। कटाई। बृहती। ४. छोटी धमासा। क्षुद्र दुरालभा। ५. अपराजिता। ६. लाल अपराजिता। रक्तापराजिता। ७. जीरा। बरियारा। बला। ९. विधारा। वृद्धदारु। १०. रुद्रजटा। रुद्रलता। ईश्वरी।

सुगंधपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धपत्री] १. जावित्री। २. रुद्रजटा।

सुगंधप्रियंगु—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धप्रियङ्गु] फूलफेन। फूलप्रियंगु। गंधप्रियंगु।

विशेष—वैद्यक में इसे कसैला, कटु, शीतल और वीर्यजनक तथा वमन, दाह, रक्तविकार, ज्वर, प्रमेह, मेद, रोग आदि को नाश करनेवाला बताया है।

सुगंधफल—संज्ञा पुं० [सं०सुगन्धफल] कंकोल। कक्कोल।

सुगंधबाला—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध + हिं० बाला] क्षुप जाति की एक प्रकार की वनौषधि।

विशेष—यह पश्चिमोत्तर प्रदेश, सिंध, पश्चिमी प्रायद्वीप, लंका आदि में अधिकता से होती है। सुगंधि के लिये लोग इसे बगीचों में भी लगाते हैं। इसका पौधा सीधा, गाँठ और रोएँदार होता है तथा पत्ते ककही के पत्तों के समान २॥—३ इंच के घेरे में गोलाकार, कटे किनारेवाले तथा ३ से ५ नोकवाले होते हैं। पत्रदंड लंबा होता हैं और शाखाओं के अंत में लंबे सीकों पर गुलाबी रंग के फूल होते हैं। बीजकोष कुछ लंबाई लिए गोलाकार होता है। वैद्यक में इसका गुण शीतल, रूखा, हलका, दीपक तथा केशों को सुंदर करनेवाला और कफ पित्त, हुल्लास, ज्वर, अतिसार, रक्तस्राव, रक्तपित्त, रक्तविकार, खुजली और दाह को नाश करनेवाला बताया गया है।

पर्या०—बालक। वारिद। ह्रीवेर। कुंतल। केश्य। वारितोय।

सुगंधभूतृण—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धभूतृण] रूसा घास। अगिया घास। दे० 'भूतृण'।

सुगंधमय—वि० [सं० सुगन्धमय] जो सुगंध से भरा हो। सुगंधित। सुवासित। खुशबूदार।

सुगंधमुख—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धमुख] एक बोधिसत्व का नाम [को०]।

सुगंधमुख्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धमुख्या] कस्तूरी। कस्तूरिका मृगनाभि।

सुगंधमूत्रपतन—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धमूत्रपतन] एक प्रकार का बिलाव जिसका मूत्र गंधयुक्त होता है। मुश्कबिलाव। सुगंधमार्जार।

सुगंधमूल—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धमूल] हरफारेवड़ी। लवलीफल।

विशेष—वैद्यक में इसे रुधिरविकार, बवासीर, कफपित्तनाशक तथा हृदय को हितकारी बताया गया है।

पर्या०—पांडु। कोमलवल्कला। घना। स्निग्धा।

सुगंधमूला—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धमूला] १. स्थलकमल। स्थलपद्म। २. रासना। रासन। ३. आँवला। ४. गंधपलाशी। कपूर-कचरी। ५. हरफारेवडी। लवलीवृक्ष।

सुगंधमूली—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धमूली] गंधपलाशी। गंधशरी। कपूरकचरी।

सुगंधमूषिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धमूषिका] छछूंदर।

सुगंधरा—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्ध + हिं० रा] एक प्रकार का फूल।

सुगंधरौहिष—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धरौहिष] रोहिष घास। गंधेज घास। मिरचिया गंध। अगियाघास।

सुगंधवल्कल—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धवल्कल] दालचीनी। गुड़त्वक्।

सुगंधवैरजात्य—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धवैरजात्य] गंधेजघास। रोहिष घास। हरद्वारी कुशा।

सुगंधशालि†—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धशालि] एक प्रकार का बढ़िया शालिधान। बासमती चावल।

विशेष—वैद्यक में यह चावल बलकारक तथा कफ, पित्त और ज्वरनाशक बताया गया है।

सुगंधषट्क—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धषट्क] छह सुगंधि द्रव्य, यथा जाय-फल, कंकोल(शीतलचोनी), लौंग, इलायची, कपूर और सुपारी।

सुगंधसार—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धसार] सागोन। शालवृक्ष।

सुगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धा] १. रामन। रासना। २. काला जीरा। कृष्ण जीरक। ३. गंधपलाशी। गंधशटी। कपूरकचरी। ४. रुद्रजटा। शंकरजटा। ५. शेखपुष्पी। सौंफ ६. बाँझ ककोड़ा। बनककोड़ा। बंध्याकर्कोटकी। ७. नेवारी। नवमल्लिका। ८. पीली जूही। स्वर्णमूषिका। ९. नकुलकंद। नाकुली। १०. अस-बरग। स्पृक्का। ११. गंगापत्री। १२. सलई। शल्लकी वृक्ष। १३. माधबीलता। अतिमुक्तक। १४ काली अनंतमूल। १६. बिजौरा नीबू। मातुलुंगा। १७. तुलसी। १८ गंधकोकिला। १९. निर्गुंडी। नील सिंधुवार। २०. एलुआ। एलवालुक। २१. वनमल्लिका। सेवती। २२. बकुची। सोमराजी। २३. २२ पीठस्थानों में से एक पीठस्थान में स्थित देवी का नाम। देवीभागवत के अनुसार इस देवी का स्थान माधववन में है।

सुगंधाढ्य—वि० [सं० सुगन्धाढ्य] सुगंधित। सुवासित। सुगंधयुक्त। खुशबूदार।

सुगंधाढ्या—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धाढ्या] १. त्रिपुरमाली। त्रिपुर-मल्लिका। वृत्तमल्लिका। २. बासमती चावल। सुगंधित शालिधान्य।

सुगंधार—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धार] शिव [को०]।

सुगंधि¹—सं० पुं० [सं० सुगन्धि] १. अच्छी महक। सौरभ। सुगंध। सुवास। खुशबू।

विशेष—यद्यपि यह शब्द संस्कृत में पुल्लिंग है, तथापि हिंदी में इस अर्थ में स्त्रीलिंग ही बोला जाता है।

२. परमात्मा। ३. आम। ४. कसेरू। ५. गंधतृण। अगिया घास। ६. पीपलामूल। पिप्पलीमूल। ७. धनिया। ८. मोथा। मुस्तक। ९. एलुवा। एलवालुक। १०. फूट। कचरिया। गोरखककड़ी। भकुर। गुरुभीहुँ। चिर्मिटा। ११. बबई। बर्बरिका। बन-तुलसी। १२. बरबर चंदन। बर्बर चंदन। १३. तुंबरू। तुंबुरू। १४. अनंतमूल। १५. सिंह (को०)।

सुगंधि²—वि० सुगंधियुक्त। सुवासित। सुगंधित। २. पुण्यात्मा। पवित्र-हृदय। धर्मपरायण (को०)।

सुगंधिक¹—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिक] १. गाँडर की जड़। खस। वीरन। उशीर। २. कुँई। कुमुदिनी। लाल कमल। ३. पुष्कर-मूल। पुहकरमूल। ४. गौरसुवर्ण शाक। दे० 'गौरसुवर्ण'। ५. कालाजीरा। कृष्णजीरक। ६. मोथा। मुस्तक। ७. एलुआ। एलवालुक। ८. माचीपत्र। सुरपर्ण। ९. शिलारस। सिल्हक। १०. बासमती चावल। महाशालि। ११. कैथ। कपित्थ। १२. गंधक। गंधपाषाण। १३. सुलतान चंपक। पुन्नाग। १४. श्वेत कमल। श्वेत पद्म (को०)। १५. सिंह। केसरी (को०)।

सुगंधिक²—वि० सुगंधयुक्त। खुशबूदार [को०]।

सुगंधिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिका] १. कस्तूरी। मृगनाभि। २. केवड़ा। पीली केतकी। ३. सफेद अनंतमूल। श्वेत सारिवा। ४. कृष्ण निर्गुंडी। ५. सिंहिनी। केसरी।

सुगंधिकुसुम—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिकुसुम] १. पीला कनेर। पीत करवीर २. असबरग। स्पृक्का। ३. वह फूल जिसमें किसी प्रकार की सुगंध हो। सुगंधित फूल।

सुगंधिकुसुमा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिकुसुमा] असवर्ग। पृक्का [को०]

सुगंधिकृत—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिकृत] शिलारस। सिल्हक।

सुगंधित वि० [सं० सुगन्धित] जिसमें अच्छी गंध हो। सुगंधयुक्त। खुशबूदार। सुवासित।

सुगंधिता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिता] सुगंधि। अच्छी महक। खुशबू।

सुगंधितेजन—संज्ञा पुं० [सं०] रूसा या गंधेज नाम की घास। अगिया घास। रोहिष तृण।

सुगंधित्रिफला†—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धित्रिफला] जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनों का समूह।

सुगंधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिनी] १. आरामशीतला नाम का शाक जिसे सुनंदिनी भी कहते हैं। २. पीली केतकी।

सुगंधिपुष्प—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिपुष्प] १. धाराकदंब। केलिकदंब। २. वह फूल जिसमें सुगंधि हो। खुशबूदार फूल।

सुगंधिफल—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिफल] शीतलचीनी। कबाबचीनी। कंकोल।

सुगंधिमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिमातृ] पृथिवी।

सुगंधिमुस्तक—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिमुस्तक] मोथा नामक घास की एक जाति [को०]।

सुगंधिमूत्रपतन—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिमूत्रपतन] दे० 'सुगंधमूत्रपतन'। गंधमार्जार।

सुगंधिमूल—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्धिमूल] १. खश। उशीर। २. मूलिका। मूली (को०)।

सुगंधिमूषिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धिमूषिका] छछूँदर।

सुगंधी[१]—वि० [सं० सुगन्धिन्] जिसमें अच्छी गंध हो। सुवासित। सुगंधयुक्त। खुशबूदार।

सुगंधी[२]—संज्ञा पुं० एलुआ। एलवालुक।

सुगंधी[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्धि] अच्छी महक। खुशबू। सुगंधि।

सुग[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुख। २. गंधर्व। ३. सन्मार्ग। उत्तम मार्ग। ४. पुरीष। विष्ठा। मल [को०]।

सुग[२]—वि० १. सुंदर। ललित। चारु। २. अच्छी चाल या सुंदर गतिवाला। ३. सुबोध। सरल। ४. सुलभ। सुगम [को०]।

सुगठन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सु + गठन] १. सुंदर गढ़न। उत्तम बनावट। सुघड़ता। २. शरीर की सुंदर बनावट। अंगसौष्ठव।

सुगठित—वि० [हिं०] १. सुंदर गढ़न या बनावटवाला। २. गठा या कसा हुआ। ३. जिसके अंग सौष्ठवयुक्त हों।

सुगण—वि० [सं०] १. गणनाकुशल। गणित में दक्ष। २. सरलता से गिनने योग्य [को०]।

सुगणक—वि० [सं०] अच्छा गणक या ज्योतिषी [को०]।

सुगणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्कंद की एक मातृका [को०]।

सुगत[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुद्धदेव का एक नाम। २. बुद्ध भगवान् के धर्म को माननेवाला। बौद्ध।

सुगत[२]—वि० १. सद्गतिप्राप्त। २. सुंदर गति या चाल से युक्त। ३. सरल। आसान [को०]।

सुगतदेव—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्ध भगवान्।

सुगतशासन—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्धमत। बौद्धसिद्धांत [को०]।

सुगतायन, सुगतालय—संज्ञा पुं० [सं०] बिहार। बौद्धमंदिर।

सुगति[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मरने के उपरांत होनेवाली उत्तम गति। मोक्ष। उ०—सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ह रघुनाथ। नाम उधारे अमित खल वेद बिदित गुन गाथ।—तुलसी (शब्द०)। २. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात सात मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है। इसे शुभगति भी कहते हैं। ३. कल्याण। सुख (को०)। ४. सुरक्षित आश्रय या शरण (को०)।

सुगति[२]—वि० १. सुंदर गतिवाला [को०]। २. जिसकी स्थिति सुंदर हो।

सुगति[३]—संज्ञा पुं० एक अर्हत् का नाम।

सुगन—संज्ञा पुं० [देश०] छकड़े में गाड़ीवान के बैठने की जगह के सामने आड़ी लगी हुई दो लकड़ियाँ, जिनकी सहायता से बैल खोल लेने पर भी गाड़ी खड़ी रहती है।

सुगना[१]—संज्ञा पुं० [सं० शुक, हिं० सुग्गा] तोता। सूआ।

सुगना[२]—संज्ञा पुं० दे० 'सहिजन'।

सुगभस्ति—वि० [सं०] १. दीप्तिमान्। प्रकाशमान। चमकीला। २. सुंदर गभस्तिवाला। कुशल हाथोंवाला।

सुगम[१]—वि० [सं०] १. जो सहज में जाने योग्य हो। जिसमें गमन करने में कठिनता न हो। २. जो सहज में जाना, किया या पाया जा सके। आसानी से होने या मिलनेवाला। सरल। सहज। आसान।

सुगम[२]—संज्ञा पुं० एक दानव का नाम [को०]।

सुगमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुगम होने का भाव। सरलता। आसानी। जैसे,—यदि आप उनकी संमति मानेंगे, तो आपके कार्य में बहुत सुगमता हो जायगी।

सुगम्य—वि० [सं०] १. जिसमें सहज में प्रवेश हो सके। सरलता से जाने योग्य। जैसे, —जंगली और पहाड़ी प्रदेश, उतने सुगम्य नहीं होते, जितने खुले मैदान होते हैं। २. दे० 'सुगम'

सुगर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] शिंगरफ। हिंगुल।

सुगर(पु)[२] वि० १. चतुर। कुशल। २. सुंदर कंठ या गलेवाला। ३. सुडौल। सुघर।

सुगरूप—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की सवारी जो प्रायः रेतीले देशों में काम आती है।

सुगर्भक—संज्ञा पुं० [सं०] खीरा। त्रपुष।

सुगल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सु + हिं० गल (= गला)] बालि का भाई सुग्रीव। उ०—पुनि पावस महँ बसे प्रवर्षण वर्षावर्णन कीन्ह्यो। सरद सराहि सकोप सुगल पहँ लषन पठै जिमि दीन्ह्यो।—रघुराज (शब्द०)।

सुगवि—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णुपुराण के अनुसार प्रसुश्रुत के एक पुत्र का नाम।

सुगहन—वि० [सं०] अत्यंत गहन। घोर। निबिड़ या घना [को०]।

सुगहना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुगहनावृत्ति'।

सुगहनावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह घेरा या बाड़ जो यज्ञस्थल में अस्पृश्यों आदि को रोकने के लिये लगाई जाती है। कुंबा।

सुगात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर देहयष्टिवाली स्त्री [को०]।

सुगाध—वि० [सं०] १. (नदी) जिसमें सुख से स्नान किया जा सके; अथवा जिसे सहज से पार किया जा सके। २. जो कम

गहरा हो। जिसकी थाह सहज में लग जाय। अगाध का उलटा (को०)।

सुगाना⁽ᵘ⁾¹—क्रि० अ० [सं० शोक] १. दुःखित होना। २. बिगड़ना। नाराज होना। उ०—आजुहि ते कहुँ जान न दैहौं मा तेरी कछु अकथ कहानी। सूर श्याम के सँग ना जैहौं जा कारण तू मोहिं सुगानी।—सूर (शब्द०)।

सुगाना²—क्रि० अ० [अ० शक] संदेह करना। शक करना। उ०—जो पावँउ अपनो जड़ताई। तुम्हहिं सुगाइ मातु कुटिलाई।—तुलसी (शब्द०)।

सुगीत¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक छंद। दे० 'सुगीतिका'। २. सुंदर गीत या गाना।

सुगीत²—वि० जो अच्छी तरह गाया गया हो।

सुगीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदर गायन। अच्छा गाना। २. आर्या छंद का एक भेद (को०)।

सुगीतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १५+१० के विराम से २५ मात्राएँ और आदि में लघु और अंत में गुरु लघु होते हैं।

सुगीथ—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि का नाम (को०)।

सुगुंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगुण्डा] गुंडासिनी तृण। गुंडाला। तृणपत्नी।

सुगुप्त—वि० [सं०] अच्छी तरह गुप्त या छिपाया हुआ। सुरक्षित (को०)।

सुगुप्तभांड—वि० [सं० सुगुप्तभाण्ड] [वि० स्त्री० सुगुप्तभांडा] घर गृहस्थी के बरतनों की भली भाँति देखभाल करनेवाला (को०)।

सुगुप्तभांडता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगुप्तभाण्डता] घर गृहस्थी के बरतनों की अच्छी देखभाल (को०)।

सुगुप्तलेख—संज्ञा पुं० [सं०] १. गोपनीय पत्र। २. सांकेतिक भाषा या चिह्नों में लिखा गया पत्र जिसे हर कोई न पढ़ सके (को०)।

सुगुप्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] किवाँच। कौंछ। कपिकच्छु। विशेष दे० 'कौंच'।

सुगुरा—संज्ञा पुं० [सं० सुगुरु] वह जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया हो।

सुगृद्ध—वि० [सं०] लालसायुक्त। सतृष्ण (को०)।

सुगृह—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का बत्तख या हंस। २. सुंदर मकान। बढ़िया घर (को०)।

सुगृही¹—वि० [सं० सुगृहिन्] सुंदर घरवाला। जिसका घर बढ़िया हो। २. सुंदर स्त्रीवाला। जिसकी पत्नी सुंदर हो।

सुगृही²—संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार प्रतुद जाति का एक पक्षी। सुगृह।

सुगृहीत—वि० [सं०] १. अच्छी तरह गृहीत। भली भाँति समझा हुआ। २. समुचित ढंग से व्यवहृत। शुभ रीति से प्रयुक्त (को०)।

सुगृहीतनामा—वि० [सं० सुगृहीतनामन्] कल्याण की भावना से जिसका नाम लिया जाय। प्रातःस्मरणीय। २. अत्यंत आदरणीय (को०)।

सुगृहीतग्रास—संज्ञा पुं० [सं०] स्वादिष्ट भोजन का कौर।

सुगेष्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किन्नरी (को०)।

सुगैया†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुग्गा + ऐया (प्रत्य०)] अँगिया। चोली। उ०—मोहि लखि सोवत बिथोरिगो सुबेनी बनी, तोरिगो हिये को हरा, छोरिगो सुगैया को।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

सुगौतम—संज्ञा पुं० [सं०] शाक्य मुनि। गौतम।

सुग्गा†—संज्ञा पुं० [सं० शुक] [स्त्री० सुग्गी] तोता। सुआ। शुक।

सुग्गापंखी—संज्ञा पुं० [हिं० सुग्गा + पंख] एक प्रकार का धान जो अगहन के महीने में होता है और जिसका चावल बरसों तक रह सकता है।

सुग्गासाँप—संज्ञा पुं० [हिं० सुग्गा + साँप] एक प्रकार का साँप।

सुग्रंथि¹—संज्ञा पुं० [सं० सुग्रन्थि] १. चोरक नाम गंधद्रव्य। २. पीपलामूल। पिप्पलीमूल।

सुग्रंथि—वि० सुंदर गाँठ या पोरवाला (को०)।

सुग्रह¹—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ या अच्छे ग्रह। जैसे,—बृहस्पति, शुक्र आदि।

सुग्रह²—वि० [सं०] १. जो सुखपूर्वक लभ्य हो। सुलभ। २. जिसकी मूँठ या हत्था उत्तम हो। ३. जो सीखने या समझने में सरल हो। सुगम। सुबोध (को०)।

सुग्रीव¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. बालि का भाई, वानरों का राजा और श्रीरामचंद्र का सखा।

विशेष—जिस समय श्रीरामचंद्र सीता को ढूँढ़ते हुए किष्किंधा पहुँचे थे, उस समय मतंग आश्रम में सुग्रीव से उनकी भेंट हुई थी। हनुमान जी ने श्रीरामचंद्र जी से सुग्रीव की मित्रता करा दी। बाली ने सुग्रीव को राज्य से भगा दिया था। उसके कहने से श्रीरामचंद्र ने बालि का बध किया, सुग्रीव को किष्किंधा का राज्य दिलाया और बालि के पुत्र अंगद को युवराज बनाया। रावण को जीतने में सुग्रीव ने श्रीरामचंद्र की बहुत सहायता की थी। सुग्रीव सूर्य के पुत्र माने जाते हैं। विशेष दे० 'बालि'।

२. विष्णु या कृष्ण के चार घोड़ों में से एक। ३. शुंभ और निशुंभ का दूत जो भगवती चंडी के पास उन दोनों का विवाह संबंधी संदेसा लेकर गया था। ४. वर्तमान अवसर्पिणी के नवें अर्हत के पिता का नाम। ५. इंद्र। ६. शिव। ७. पाताल का एक नाग। ८. एक प्रकार का अस्त्र। ९. शंख। १०. राजहंस। ११. एक पर्वत का नाम। १२. एक प्रकार का मंडप। १३. नायक। १४. जलखंड। जलाशय (को०)।

सुग्रीव²—वि० जिसकी ग्रीवा सुंदर हो। सुंदर गरदनवाला।

सुग्रीवा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुग्रीवी¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्ष की एक पुत्री और कश्यप की पत्नी जो घोड़ा, ऊँटों तथा गधों की जननी कही जाती है।

सुग्रीवेश—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

सुग्लै—वि० [सं०] अत्यंत थका हुआ। श्रांत (को०)।

सुघट—वि० [सं०] १. अच्छा बना हुआ। सुंदर। सुडौल। उ०—भृकुटि भ्रमर चंचल कपोल मृदु बोल अमृतसम सुघट। ग्रीव रस सीव कंठ मुकता विघटत तम।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। २. जो सहज में हो या बन सकता हो।

सुघटित—वि० [सं० सुघट+इत] जिसका निर्माण सुंदर हो। अच्छी तरह से बना हुआ। उ०—धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति। सियनिवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति।—तुलसी (शब्द०)।

सुघट्टित—वि० [सं०] दुरुस्त किया हुआ। समतल या हमवार किया हुआ।

सुघड़—वि० [सं० सुघट] १. सुंदर। सुडौल। उ० नील परेव कंठ के रंगा। वृष से कंध सुघड़ सब अंगा।—उत्तररामचरित (शब्द०)। २. निपुण। कुशल। दक्ष। प्रवीण। जैसे,—सुघड़बाहु।

सुघड़ई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड़+ई (प्रत्य०)] १. सुंदरता। सुडौलपन। अच्छी बनावट। उ०—विषय के भोगों में तृप्त हुए बिना ही उस (राजा) को, अधिक सुघड़ई के कारण विलासिनियों के भोगने योग्य को, वृथा ईर्ष्या करनेवाली जरा ने स्त्रीव्यवहार में असमर्थ होकर भी हरा दिया।—लक्ष्मण सिंह (शब्द०)। २. चतुरता। निपुणता। कुशलता। उ०—इसमें बड़ी बुद्धि और सुघड़ई का काम है।—ठाकुरप्रसाद (शब्द०)।

सुघड़ता—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड़+ता (प्रत्य०)] १. सुघड़ होने का भाव। सुंदरता। मनोहरता। २. निपुणता। कुशलता। दक्षता। सुघड़पन।

सुघड़पन—संज्ञा पुं० [हिं० सुघड़+पन (प्रत्य०)] १. सुघड़ होने का भाव। सुघड़ाई। सुंदरता। २. निपुणता। दक्षता। कुशलता।

सुघड़ाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड़] दे० 'सुघड़ई'।

सुघड़ापा—संज्ञा पुं० [हिं० सुघड़+आपा (प्रत्य०)। सुघड़ाई। सुंदरता। सुडौलपन। २. दक्षता। निपुणता। कुशलता।

सुघड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुघटी] अच्छी घड़ी। शुभ समय।

सुघर—वि० [सं० सुघट] दे० 'सुघड़'। उ०—(क) संयुत सुमन सुबेलि सी सेली सी गुणग्राम। लसत हवेली सी सुघर निरखि नवेली बाम।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) सुघर सौति बस पिय सुनत दुलहिनि दुगुन हुलास। लखी सखी तन दीठि करि सगरब सलज सहास।—अंबिकादत्त (शब्द०)।

सुघरई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड़+ई (प्रत्य०)] दे० 'सुघड़ई'।

सुघरता—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड़+ता प्रत्य०)] दे० 'सुघड़ता'।

सुघरपन—संज्ञा पुं० [हिं० सुघड़+पन (प्रत्य०)] दे० 'सुघड़पन'। उ०—(क) छन में जैहै सुघरपनो पीरो परिहै तन। परकर परि कै सुकवि फेर फिरि आवत नहिं मन।—अंबिकादत्त (शब्द०)।

सुघराई संज्ञा स्त्री० [हिं० सुघड़+आई (प्रत्य०)] १. दे० 'सुघड़ई'। उ०—(क) काम नाश करने के कारण जिन्हें न मोहै सुघराई। ऐसे शिव को किया चाहती है अपना पति सुखदाई।—महावीरप्रसाद (शब्द०)। (ख) सुघराई सुकाम विरंचि की है, तिय तेरे नितंबनि की छबि में।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)। २. संपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसके गाने का समय दिन में १० से १६ दंड तक है।

सुघराई कान्हड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० सुघराई+कान्हड़ा] संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

सुघराई टोड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुघराई+टोड़ी] संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

सुघरी¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सु+घड़ी] अच्छी घड़ी। शुभ समय। उ०—आनँद की सुघरी उघरी सिगरे मनवांछित काज भए हैं।- व्यंगार्थ० (शब्द०)।

सुघरी²—वि० स्त्री० [हिं० सुघड़] सुंदर। सुडौल। उ०—(क) भाग सोहाग भरी सुघरी पति प्रेम प्रनाली कथा अपढैना।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)। (ख) सुँदरि हौ सुघरी हौ सलौनी हौ सीलभरी रस रूप सनाई।—देव (शब्द०)।

सुघोष¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. चौथे पांडव नकुल के शंख का नाम। २. एक बुद्ध का नाम। ३. एक प्रकार का यंत्र। ४. सुंदर घोष। मधुर ध्वनि।

सुघोष²—वि० १. जिसका स्वर सुंदर हो। अच्छे गले या आवाजवाला। २. तीव्र निनाद करनेवाला। ऊँची आवाजवाला।

सुघोषक—संज्ञा पुं० [सं०] एक बाजे का नाम [को०]।

सुचंग—संज्ञा पुं० [हिं०] घोड़ा।

सुचंचुका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुचञ्चुका] बड़ा चंचुक शाक। महाचंचु। दीर्घपत्री।

सुचंदन—संज्ञा पुं० [सं० सुचन्दन] पतंग या बक्कम नाम की लकड़ी जिसका व्यवहार औषध और रंग आदि में होता है। रक्तसार। सुरंग।

सुचंद्र—संज्ञा पुं० [सं० सुचन्द्र] १. एक देवगंधर्व का नाम। २. एक बोधिसत्व (को०)। ३. सिंहिका के पुत्र का नाम। ४. इक्ष्वाकुवंशी राजा हेमचंद्र का पुत्र और धूम्राश्व का पिता।

सुचंद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुचन्द्रा] बौद्धों के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

सुचⓅ—वि० [सं० शुचि] दे० 'शुचि'।

सुचक्षु¹—संज्ञा पुं० [सं० सुचक्षुस्] १. गूलर। उदुंबर। २. शिव का एक नाम। ३. विद्वान् व्यक्ति। पंडित।

सुचक्षु²—वि० जिसके नेत्र सुंदर हों। सुंदर आँखोंवाला।

सुचक्षु³—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम।

सुचना—क्रि० स० [सं० सञ्चय] संचय करना। एकत्र करना। इकट्ठा करना। उ०—तरुवर फल नहिं खात है सरवर पियहिं न पानि। कहि रहीम परकाज हित संपति सुचहि सुजान।—रहीम (शब्द०)।

सुचरित¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसका चरित्र शुद्ध हो। उत्तम आचरणवाला। नेकचलन। २. सच्चरित्रता। ३. गुण (को०)।

सुचरित[२]—वि० १. शुद्ध चरित्रवाला। २. अच्छी तरह किया हुआ।

सुचरिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुचरित्रा'।

सुचरित्र—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुचरित'।

सुचरित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पतिपरायणा स्त्री। साध्वी। सती। २. धानी। धनियाँ (को०)।

सुचर्मा[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुचर्मन्] भोजपत्र।

सुचर्मा[२]—वि० सुंदर चर्म, ढाल या छाल से युक्त (को०)।

सुचा[१]—वि० [सं० शुचि] दे० 'शुचि'। उ०—सोल सुचा ध्यान धोवती काया कलस प्रेम जल।—दादू (शब्द०)।

सुचा[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सूचना] ज्ञान। चेतना। सुध। उ०—रही जो मुइ नागिनि जस तुचा। जिउ पाएँ तन कै भइ सुचा।—जायसी (शब्द०)।

सुचाना—क्रि० स० [हिं० सोचना का प्रेर० रूप] १. किसी को सोचने या समझने में प्रवृत्त करना। सोचने का काम दूसरे से कराना। २. दिखलाना। ३. किसी का ध्यान किसी बात की ओर आकृष्ट कराना।

सुचार(पु)[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० चाल] सुचाल। अच्छी चाल। उ०—थाई भाव थिरु है विभाव अनुभावनि सों सातुकनि संतत ह्वै संचरि सुचार है।—सूर (शब्द०)।

सुचार[२]—वि० [सं० सुचारु] सुचारु। सुंदर। मनोहर। उ०—अजहूँ लौं राजत नीरधि तट करत सांख्य विस्तार। सांख्यायन से बहुत महामुनि सेवत चरण सुचार।—सूर (शब्द०)।

सुचारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] यदुवंशी श्वफल्क की पुत्री जो अक्रूर की सास थी।

सुचारु[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २. विश्वक्सेन का पुत्र। ३. प्रतीर्थ। ४. बाहु का पुत्र।

सुचारु[२]—वि० अत्यंत सुंदर या सुरूपवान्। अतिशय मनोहर। बहुत खूबसूरत। जैसे,—वहाँ के सब कार्य बहुत ही सुचारु रूप से संपन्न हो गए।

यौ०—सुचारुदशना = सुंदर दाँतोंवाली नारी। सुचारुरूप = स्वरूपवान। खूबसूरत। सुचारुस्वन = सुरीले कंठवाला। सुरीला।

सुचारुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुचारु होने का भाव। सुचारुत्व अत्यंत सुंदरता (को०)।

सुचारुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुचारुता'।

सुचाल—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० चाल] उत्तम आचरण। अच्छी चाल। सदाचार। उ०—कह गिरिधर कविराय बड़न की याही बानी। चलिए चाल सुचाल राखिए अपनो पानी।—गिरिधर (शब्द०)।

सुचाली[१]—वि० [सं० सु + हिं० चाल + ई (प्रत्य०)] जिसके आचरण उत्तम हों। अच्छे चाल चलनवाला। सदाचारी। उ०—मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली।—मानस, २।६०।

सुचाली[२] संज्ञा स्त्री० [हिं०] पृथ्वी।

सुचाव†—संज्ञा पुं० [हिं० सुचा] सुचाने की क्रिया या भाव। सोचाना। सुझाव।

सुचिंतन—संज्ञा पुं० [सं० सुचिन्तन] गंभीर चिंतन या सोच-विचार (को०)।

सुचिंतित—वि० [सं० सुचिन्तित] खूब सोचा विचारा हुआ। भली भाँति सोचा हुआ। उ०—सास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिअ।—मानस, ३।३१।

सुचिंतितार्थ—संज्ञा पुं० [सं० सुचिन्तितार्थ] बौद्धों के अनुसार मार के पुत्र का नाम।

सुचि[१]—वि० [सं० शुचि] दे० 'शुचि'। उ०—(क) सहज सचिक्कन स्याम रुचि सुचि सुगंध सुकुमार। गनत न मन पथ अपथ लखि बिथुरे सुथरे बार।—बिहारी (शब्द०)। (ख) तुलसी कहत विचारि गुरु राम सरिस नहिं आन। जासु क्रिया सुचि होत रुचि विसद विवेक अमान।—तुलसी (शब्द०)।

सुचि[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] सूई। उ०—सुचि वेध ते नाको सकीर्न तहाँ परतीत को टाँडो लदावनो है।—हरिश्चंद्र (शब्द०)।

सुचिकरमा(पु)—वि० [सं० शुचिकर्मन्] दे० 'शुचिकर्मा'। उ०—चलेउ सुभेस नरेस छत्रधरमा सुचिकरमा। बिसुकरमा कृत सुरथ बैठि रव कंचन बरमा।—गोपाल (शब्द०)।

सुचित[१]—वि० [सं० सुचित्त] १. जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो। उ०—(क) ऐसी आज्ञा कर यमराज जब सुचित भए, तब नारद मुनि ने फिर उनसे पूछा कि किस कारण से तुम इहाँ से भाग गए सो मुझसे कहो।—सदल मिश्र (शब्द०)। (ख) अतिथि साधु यति सबनि खवाई। मैं हूँ सुचित भई पुनि खाई।—रघुराज (शब्द०)। २. निश्चित। चिंतारहित। बेफिक्र। ३. धान्य धन से युक्त। संपन्न। सुखी। ४. एकाग्र। स्थिर। सावधान। उ०—(क) सुचित सुनहु हरि सुजस कह बहुरि भई जो बात।—गिरिधरदास (शब्द०)। (ख) इहि विधान एकादशी करै सुचित चित होई।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सुचित[२]—वि० [सं० शुचि] पवित्र। शुद्ध (क्व०)।

सुचितई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुचित + ई (प्रत्य०)] १. सुचित होने का भाव। निश्चितता। बेफिक्री। उ०—(क) इमि देव दुंदुभी हरषि बरसत फूल सुफल मनोरथ भो सुख सुचितई है।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सुकवि सुचितई पैहै सब ह्वै हैं कबै मरन।—अंबिकादत्त (शब्द०)। २. एकाग्रता। स्थिरता। शांति। ३. छुट्टी। फुर्सत। उ०—ब्रजबासिनु कौ उचित धनु, जो धनु रुचित न कोई। सुचित न आयौ, सुचितई कहौ कहाँ तैं होइ।—बिहारी र०, दो० ५६१।

सुचिता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शुचिता] शुद्धता। पवित्रता। शुचिता। उ०—मकरंदु जिनको संभु सिर सुचिता अवधि सुर बरनई।—मानस १।३२४।

सुचिती† —वि॰ [हिं॰ सुचित+ई (प्रत्य॰)] १. जिसका चित्त किसी बात पर स्थिर हो। जो दुबिधा में न हो। स्थिरचित्त। शांत। उ॰—(क) सुचिती ह्वै औरै सबै ससिहि बिलौकैं आय। (ख) ससिहिं बिलौकैं आय सबै करि करि मन सुचिती।—अंबिकादत्त (शब्द॰)। २. निश्चिंत। चितारहित। बेफिक्र। उ॰—धाय सों जाय कै धाय कह्यौ कहूँ धाय कै पूछिए करते ठई है। बैठि रहो सुचितो सो कहा सुनि मेरी सबै सुधि भूलि गई है।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द॰)।

सुचित्त—वि॰ [सं॰] १. जिसका चित्त स्थिर हो। स्थिरचित्त। शांत। २. जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो। जो छुट्टी पा गया हो। निश्चित। उ॰—(क) ब्राह्मणों को नाना प्रकार के दान दे नित्य कर्म से सुचित हो।—लल्लू॰ (शब्द॰)। (ख) कन्या तो पराया धन है ही, उसको पति के घर भेज दिया, सुचित हो गए।—संगीत शाकुंतल (शब्द॰)।

क्रि॰ प्र॰—होना।

सुचित्तता—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] निश्चितता।। इत्मीनान।

सुचित्ती†—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सुचित्त] दे॰ 'सुचित्तता'।

सुचित्र[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक सर्प।

सुचित्र[२]—वि॰ [सं॰] १. रंग बिरंगा। विभिन्न रंगों का। २. विभिन्न प्रकार का।

सुचित्रकर्म[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] मुर्गाबी। मत्स्यरंग पक्षी। २. चित्रसर्प। चितला साँप। ३. अजगर।

सुचित्रक[२]—वि॰ रंगबिरंगा। विभिन्न प्रकार का [को॰]।

सुचित्रबोजा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] बायबिडंग। विडंग।

सुचित्रा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] चिर्भिटा या फूट नामक फल।

सुचिमंत—वि॰ [सं॰ शुचि+मत्] शुद्ध आचरणवाला। सदाचारी। शुद्धाचारी। पवित्र। उ॰—सो सुकृती सुचिमंत सुसंत सुशील सयान सिरोमनि स्वै। सुरतीरथता सुमनावन आवत पावन होत है तात न क्ष्वै।—तुलसो (शब्द॰)।

सुचिर[१]—संज्ञा पुं॰ [स॰] बहुत अधिक समय। दीर्घकाल।

सुचिर[२]—वि॰ १. बहुत दिनों तक रहनेवाला। २. पुराना। प्राचीन।

सुचिरायु—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुचिरायुस्] देवता।

सुची—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ शची] दे॰ 'शची'। उ॰—सोइ सुरपति जाके नारि सुची सो। निस दिन हो रँगरातो, काम हेतु गौतम गहि गयऊ निगम देतु है साखी।—कबीर (शब्द॰)।

सुचीरा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] दे॰ 'सुचारा'।

सुचीएाध्वज—संज्ञा पुं॰ [सं॰] कुभांडों के एक राजा का नाम (बौद्ध)।

सुचुक्रिका—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] इमली।

सुचुटी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. चिमटा। २. कैंची। ३. सँड़सी।

सुचेत—वि॰ [सं॰ सुचेतस्] चौकन्ना। सतर्क। होशियार। उ॰—(क) कोई नशे में मस्त हो कोई सुचेत हो। दिलवर गले से लिपटा हो सरसों का खेत हो।—नजीर (शब्द॰)। (ख) भाई तुम सुचेत रहो, केटो की दृष्टि बड़ी पैनी है।—तोताराम (शब्द॰)। २. प्रज्ञावान्। बुद्धिमान (को॰)।

क्रि॰ प्र॰—करना।—होना।—रहना।

सुचेतन[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] विष्णु। (डिं॰)।

सुचेतन[२]—वि॰ दे॰ 'सुचेत'।

सुचेता[१]—वि॰ [सं॰ सुचेतस्] दे॰ 'सुचेत'। उ॰—सुंदरता सौभाग्य निकेता। पंकज लोचन अहहिं सुचेता।—शं॰ दि॰ (शब्द॰)।

सुचेता[२]—संज्ञा पुं॰ प्रचेता के एक पुत्र का नाम।

सुचेतीकृत—वि॰ [सं॰] भली भाँति सावधान किया हुआ।

सुचेल—वि॰ [सं॰] उत्तम वस्त्रयुक्त। दे॰ 'सुचेलक' [को॰]।

सुचेलक[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सुंदर और महीन कपड़ा। पट।

सुचेलक[२]—वि॰ जिसका वस्त्र उत्तम हो।

सुचेष्टरूप—संज्ञा पुं॰ [सं॰] बुद्धदेव।

सुच्छंद⑤†—वि॰ [सं॰ स्वच्छन्द] दे॰ 'स्वच्छंद'। उ॰—बैठि इकंत होय सुच्छंदा। लहिए मर्छू परमानंदा।—निश्चल (शब्द॰)।

सुच्छ⑤†—वि॰ [सं॰ स्वच्छ, प्रा॰ सुअच्छ] उ॰—(क) मुच्छ पर हत्थ तन सुच्छ अंबर धरे तुच्छ नहिं वीर रस रंग रत्ते।—सूदन (शब्द॰)। (ख) कहीं मैं तो नून तुच्छ बोले हमहू ते सुच्छ जाने कोऊ नाहि तुम्हैं मेरी मति भीजिए।—नाभादास (शब्द॰)।

सुच्छत्र—संज्ञा पुं॰ [सं॰] शिव [को॰]।

सुच्छत्रा—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सतलज नदी।

सुच्छत्री—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] शतद्रु या सतलज नदी का एक नाम।

सुच्छद—वि॰ [सं॰] सुंदर पत्ती या आवरण से युक्त [को॰]।

सुच्छम[१]—वि॰ [सं॰ सूक्ष्म] दे॰ 'सूक्ष्म'।

सुच्छम[२]—संज्ञा पुं॰ [?] घोड़ा। (डिं॰)।

सुच्छाय—वि॰ [सं॰] १. जिसकी छाया अच्छी हो। २. (रत्न आदि) जिसकी प्रभा सुंदर हो [को॰]।

सुछंद⑤—वि॰ [सं॰ स्वच्छन्द, प्रा॰ सुछंद] दे॰ 'स्वच्छंद'। उ॰—निपट लागत अनम ज्यों जल चरहिं गमन सुछंद। न जरै जे नजरै रहै प्रीतम तुव मुखचंद।—रतनहजारा (शब्द॰)।

सुजंगो†—संज्ञा पुं॰ [गढ़वाली] भाँग के वे पौधे जिनमें बीज होते हैं।

विशेष—गढ़वाल में भाँग के बीजदार पौधों को सुजंगो या कलंगो कहते हैं।

सुजंघ—वि॰ [सं॰ सुजङ्घ] सुंदर उरु या जाँघोंवाला [को॰]।

सुजघन—वि॰ [सं॰] १. जिसकी श्रोणी, नितंब या कटि सुंदर हो। २. जिसका अंत या परिणाम भला हो [को॰]।

सुजड़—संज्ञा पुं॰ [डिं॰] तलवार।

सुजड़ी—संज्ञा स्त्री॰ [डिं॰] कटारी।

सुजन[१]—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. सज्जन। सत्पुरुष। भलामानस। भला आदमी। शरीफ। २. इंद्र के सारथी का नाम (को॰)।

सुजन¹—वि० १. भला। अच्छा। २. दयालु। परोपकारी [को०]।

सुजन²—संज्ञा पुं० [सं० स्वजन, प्रा० सुजन] परिवार के लोग। आत्मीय जन। उ०—(क) माँगत भीख फिरत घर घर ही सुजन कुटुंब वियोगी।—सूर (शब्द०)। (ख) हरषित सुजन सखा प्रिय बालक कृष्ण मिलन जिय भाए।—सूर (शब्द०)। (ग) रामराज नहिं कोऊ रोगी। नहिं दुरभिक्ष न सुजन वियोगी।—पद्माकर (शब्द०)।

सुजनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुजन का भाव। सौजन्य। भद्रता। भलमनसाहत। नेकी (को०)। २. भले लोगों का समूह। ३. धैर्य। पराक्रम। साहस (को०)।

सुजनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सोजनी] एक प्रकार की बड़ी चादर जो कई परत की होती और बिछाने के काम आती है। ऊपर साफ कपड़े देकर इसकी महीन सिलाई की जाती है। यह बीच बीच में बहुत जगहों में सी (सिली) हुई रहती है। २. पलंग पर बिछाने की चादर [को०]।

सुजन्मा—वि० [सं० सुजन्मन्] १. जिसका उत्तम रूप से जन्म हुआ हो। उत्तम रूप से जन्मा हुआ। सुजातक। २. विवाहित स्त्री पुरुष का औरस पुत्र। ३. अच्छे कुल में उत्पन्न। उ०—सूतक घर के आस पास फैले हुए उस सुजन्मा के स्वाभाविक तेज से आधी रात के दीपक सहज ही मंदज्योति हो गए।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुजय—संज्ञा पुं० [सं०] १. भारी जीत। महान् विजय। २. वह देश, स्थान आदि जो सरलता से जीतने योग्य हो [को०]।

सुजल¹—वि० सुंदर जल से युक्त।

सुजल²—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल। पद्म। २ सुंदर और अच्छा जल। उ०—कीन्ह सुजल हित कूप विसेखा।—मानस, २।

सुजला—वि० स्त्री० [सं०] सुंदर जल से युक्त। जलप्राय। अनूप। सुजलाम् सुफलाम् सस्य श्यामलाम् मातरम्। बंदे मातरम्।—राष्ट्रगीत।

सुजल्प—संज्ञा पुं० [सं०] १. उज्वलनीलमणि के अनुसार वह भाषण या कथन जो सहृदयता, उत्साह, उत्कंठा, ऋजुता, गांभीर्य, नम्रता, चापल्य तथा भावपूर्ण हो। २. उत्तम कथन। श्रेष्ठ भाषण।

सुजस—संज्ञा पुं० [सं० सुयश] दे० 'सुयश'। उ०—सुजस बखानत बाट चलहि बहु भाट गुनी गन। अमर राट सम सुरथ राजभट ठाट प्रबल तन —गिरधर (शब्द०)।

सुजाक—संज्ञा पुं० [फ़ा० सूज़ाक] दे० 'सूजाक'।

सुजागर—वि० [सं० सु (=भली भाँति)+जागर (=जागर=प्रकाशित होना)] जो देखने में बहुत सुंदर जान पड़े। प्रकाशमान। सुशोभित। उ०—मुरली मृदंगन अगाउनी भरत स्वर भाउती सुजागरै भरी है गुन आगरे।—देव (शब्द०)।

सुजात¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुजाता] १. उत्तम रूप से जन्मा हुआ। जिसका जन्म उत्तम रूप से हुआ हो। २. विवाहित स्त्री पुरुष से उत्पन्न। ३. अच्छे कुल में उत्पन्न। ४ सुंदर। ५. अत्यंत मधुर (को०)। ६ अच्छी तरह वर्धित या बढ़ा हुआ। लंबा (को०)। ७. अच्छे ढंग से निर्मित किया हुआ (को०)।

सुजात²—संज्ञा पुं० [सं०] १. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २. भरत के पुत्र का नाम। ३ साँड़ (बौद्ध)।

सुजातक—संज्ञा पुं० [सं०] सौंदर्य। सुंदरता।

सुजातका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शालि धान्य। कुंकुमशालि।

सुजातरिपु—संज्ञा पुं० [सं०] युधिष्ठिर।

सुजाता¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोपीचंदन तुवरी सोरठ की मिट्टी सौराष्ट्रमृत्तिका। २. उद्दालक ऋषि की पुत्री का नाम। ३. बुद्ध भगवान के समय की एक ग्रामीण कन्या जिसने उन्हें बुद्धत्व प्राप्त करने के उपरांत भोजन कराया था।

सुजाता²—वि० स्त्री० १. सुंदर। सौंदर्यशीला। २. सत्कुलीना (स्त्री)।

सुजाति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम जाति। उत्तम कुल।

सुजाति²—संज्ञा पुं० वीतिहोत्र का एक पुत्र।

सुजाति³—वि० उत्तम जाति का। अच्छे कुल का।

सुजातिया¹—वि० [सं० सु+जाति+हिं० इया (प्रत्य०)] अच्छे कुल का। उत्तम जाति का।

सुजातिया²—संज्ञा पुं० [सं० स्व+जाति+इया प्रत्य०)] अपनी जाति या वर्ग का। स्वजाति का। उ०—लखि बडवार सुजातिया अनख धरै मन नाहिं। बड़े नैन लखि अपुन पै नैना सही सिहाहिं।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुजातीय—वि० [सं०] उत्तम जाति का।

सुजान¹—वि० [सं० सज्ञान] १. समझदार। चतुर। सयाना। उ०—(क) करत करत अभ्यास के जडमति होत सुजान।—रहीम (शब्द०)। (ख) दोबल कहा देति मोहिं सजनी तू तो बड़ी सुजान। अपनी सी मैं बहुतै कीन्ही रहति न तेरी आन।—सूर (शब्द०)। (ग) ब्याही सो सुजान सील रूप बसुदेव जू को, विदित जहान जाकी अतिहि बड़ाई है।—गिरधर (शब्द०)। २. निपुण। कुशल। प्रवीण। ३. विज्ञ। पंडित। ४ सज्जन।

सुजान²—संज्ञा पुं० १. पति या प्रेमी। उ०—अरी नींद आवै चहै जिहि दृग बसत सुजान। देखी सुनी धरी कहूँ दो असि एक मयान। रतनहजारा (शब्द०)। २. परमात्मा। ईश्वर। उ०—बार बार सेवक सराहना करत राम, तुलसी सराहैं रीति साहिब सुजान की।—तुलसी (शब्द०)।

सुजानता—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुजान+ता (प्रत्य०)] सुजान होने का भाव या धर्म। सुजानपन। उ०—(क) केशोदास सकल सुवास की सी सेज किधौं सकल सुजानता की सखी सुखदानी है। किधौं मुखपंकज में शक्ति को तो सेवैं द्विज सविता की छवि ताकी कविता निधानी है।—केशव (शब्द०)। (ख) किधौं केशौदास कलगानता सुजानता निशंकता सों बचन विचित्रता किशोरी की।—केशव (शब्द०)।

सुजानी –वि॰ [सं॰ सु+ज्ञान हिं॰ सुजान] विज्ञ। पंडित। ज्ञानी। उ॰––(क) लखि विप्र सुजानी कहि मृदुबानी, अरे पुत्र! यह काह सिख्यो।––विश्राम (शब्द॰)। (ख) मैं ह्याँ ल्याई सुवन सुजानी। सुनि लखि हँसि भाखत नँदरानी।—गिरधर (शब्द॰)।

सुजामि––वि॰ [सं॰] अनेक भाई बहनों तथा संबंधियों से समृद्ध [को॰]।

सुजाव†––संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुजात] पुत्र (डिं॰)।

सुजावा†––संज्ञा पुं॰ [देश॰] बैलगाड़ी में की वह लकड़ी जो पैंजनी और फड़ से जड़ी रहती है (गाड़ीवान)।

सुजिह्व¹—वि॰ [सं॰] १. जिसकी जिह्वा या जीभ सुंदर हो। २. मधुरभाषी। मीठा बोलनेवाला।

सुजिह्व²—संज्ञा पुं॰ अग्नि। पावक। कृशानु।

सुजीर्ण—वि॰ [सं॰] १. अच्छी तरह पका या पचा हुआ अन्न। २. (खाना) जो खूब पच गया हो। ३. जीर्णशीर्ण। जर्जर।

सुजीवंती—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सुजीवन्ती] पीली जीवंती। सुनहरी जीवंती।

विशेष -वैद्यक के अनुसार यह बल-वीर्य-वर्धक, नेत्रों को हितकारी तथा वात, रक्त, पित्त, और दाह को दूर करनेवाली है।

पर्या॰ स्वर्णलता। स्वर्णजीवंती। हेमवल्ली। हेमपुष्पी। हेमा। सौम्या।

सुजीवित¹––संज्ञा पुं॰ [सं॰] सुखमय जीवन [को॰]।

सुजीवित²—वि॰ १. जिसका जीना सफल हो। २. सुखी जीवन व्यतीत करनेवाला [कौ॰]।

सुजेय—वि॰ [सं॰] जो सरलता से जीता जा सके।

सुजोगⓅ† - संज्ञा पुं॰ [सं॰ सु+योग] १. अच्छा अवसर। उपयुक्त अवसर। सुयोग। २. अच्छा संयोग। अच्छा मेल।

सुजोधनⓅ—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुयोधन] दे॰ 'सुयोधन'। उ॰––चलत सुजोधन कटक हलत किल बिकल सकल महि। कच्छप भारन छपत नाग चिक्करत अहि।—गिरधर (शब्द॰)।

सुजोर—वि॰ [सं॰ सु या फ़ा॰ शह+जोर] १. दृढ़। मजबूत। उ॰–– सरल बिसाल विराजहि विद्रुम खंग सुजोर। चारु पाटि पटि पुरट की झरकत मरकत भोर।–तुलसी (शब्द॰)। २. शक्तिशाली। शहजोर। बलवान् (को॰)।

सुज्ञ––वि॰ [सं॰] १. जो अच्छी तरह जानता हो। भली भाँति जाननेवाला। सुविज्ञ। २. पंडित। विद्वान्।

सुज्ञान¹ संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. उत्तम ज्ञान। अच्छी जानकारी। २. एक प्रकार का साम।

सुज्ञान²––वि॰ [सं॰] ज्ञानी। पंडित। जानकार। सुविज्ञ।

सुज्येष्ठ —संज्ञा पुं॰ [सं॰] भागवत के अनुसार शुंगवंशी राजा अग्निमित्र के पुत्र का नाम।

सुझाना¹––क्रि॰ स॰ [हिं॰ सूझना का प्रेर॰ रूप] ऐसा उपाय करना जिसमें दूसरे को सूझे। दूसरे के ध्यान या दृष्टि में लाना। दिखाना। बताना। जैसे,—आपको यह तरकीब उसी ने सुझाई है।

सुझाना²—क्रि॰ अ॰ दिखाई पड़ना। सूझना। समझ में आना। उ॰––तब तैं अब गाढ़ी परी मोकौं कछु न सुझाइ।––सूर॰ (राधा॰), ५८६।

सुझाव—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ सूझ+आव (प्रत्य॰)] १. किसी को कुछ सुझाने की क्रिया। सुझाने या बताने का भाव। २. किसी नई बात, किसी विशेष पक्ष या अंग की ओर ध्यान दिलाना। ३. सुझाने या ध्यान दिलाने के लिये कही हुई बात। सलाह। मशविरा। राय।

सुटंक—वि॰ [सं॰ सुटङ्क] तीव्र। कर्कश। कर्णकटु [को॰]।

सुटकन, सुटकुन—संज्ञा स्त्री॰ [अनु॰] बाँस की कैन।

सुटकना¹––क्रि॰ अ॰ [अनु॰] १. दे॰ 'सुड़कना'। २. दे॰ 'सिकुड़ना'।

सुटुकना²––क्रि॰ स॰ [अनु॰] सुटका मारना। चाबुक लगाना। उ॰— नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराहु। चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निबाहु।––तुलसी (शब्द॰)।

सुटुकना³†—क्रि॰ अ॰ [अनु॰] चुपके या धीरे से भाग जाना। सरकना।

सुठⓅ वि॰ [सं॰ सुष्ठु] दे॰ 'सुठि'। उ॰—राम घनश्याम अभिराम सुठ कामहू ते ताते हो परशुराम क्रोध मत जोरिए।—हनुमन्नाटक (शब्द॰)।

सुठहर†—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सु+स्थल, हिं॰ ठहर(=जगह)] अच्छा स्थान। बढ़िया जगह। उ॰––बालि मुदित कपि बालिधि मिस से देखि पूत को साज सुठहर बन लायो।—देवस्वामी (शब्द॰)।

सुठहरे†—क्रि॰ वि॰ [हिं सुठहर] अच्छी जगह पर। अच्छे स्थान पर।

सुठानⓅ––क्रि॰ वि॰ [हिं॰ सु+ठान(=स्थान)] अच्छे ढंग से। भली प्रकार से। उ॰––भौंह कमान सँधान सुठान जे नारि विलोकन बान ते बाँचे।––तुलसी ग्रं॰, पृ॰ २२६।

सुठारⓅ†––वि॰ [सं॰ सुष्ठु, प्रा॰ सुठ्ठ] [वि॰ स्त्री॰ सुठारी] सुडौल। सुंदर। उ॰––(क) सुठि सुठार ठोढ़ी अति सुंदर सुंदर ताको सार। चितवन चुअत सुधारस मानो रहि गई बूंद मझार।—सूर (शब्द॰)। (ख) चपल नैन नासा बिच शोभा अधर सुरंग सुठार। मनो मध्य खंजन शुक बैठ्यो लुब्ध्यो बिंब बिचार।––सूर (शब्द॰)। (ग) जावक रचित अँगुरियन्ह मृदुल सुठारी हो। प्रभु कर चरन पछालत अति सुकुमारी हो। ––तुलसी ग्रं॰, पृ॰ ५।

सुठि†¹—वि॰ [सं॰ सुष्ठु] १. सुंदर। बढ़िया। अच्छा। उ॰––(क) तून सरासन बान धरे तुलसी बन मारग में सुठि सौ हैं।— तुलसी (शब्द॰)। (ख) संग नारि सुकुमारि सुभग सुठि राजति बिन भूषन बसति।––तुलसी (शब्द॰)। (ग) बहुत प्रकार किए सब व्यंजन अमित बरन मिष्ठान। अति उज्वल कोमल सुठि सुंदर देखि महरि मन मान।—सूर॰

१०।८६। २. अतिशय। अत्यंत। बहुत। उ०—सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू। पाकें छत जनु लाग अँगारू।—मानस, २।१६१।

सुठि(पु)²—अव्य० [सं० सुष्ठु] पूरा पूरा। बिलकुल। उ०—हिए जो आखर तुम लिखे से सुठि लीन्ह परान।—जायसी (शब्द०)।

सुठोना(पु)†—वि० [हिं०] दे० 'सुठि'। उ०—रसखानि निहारि सकै जु सम्हारि कै को तिय है वह रूप सुठोनो।—रसखान (शब्द०)।

सुड़कना—क्रि० स० [अनु०] १. किसी वस्तु जैसे, नस्य, जल आदि को नाक से भीतर खींचना। २. नाक की रेंट को बाहर छिनकने के बजाय ऊपर खींच लेना। जैसे—नाक सुड़क जाना। ३. किसी तरल पदार्थ को पी जाना।

सुड़सुड़—संज्ञा स्त्री० [अनुध्व०] नली आदि द्वारा जल में वायु के घुसने से होनेवाली आवाज। गुड़गुड़।

सुड़सुड़ाना—क्रि० स० [अनु०] सुड़सुड़ शब्द उत्पन्न करना। जैसे, नाक सुड़सुड़ाना। हुक्का सुड़सुड़ाना।

सुडीन, सुडीनक—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षियों के उड़ने का एक ढंग या प्रकार।

सुड़ुकना—क्रि० स० [अनु०] दे० 'सुड़कना'।

सुडौल—वि० [सं० सु + हिं० डौल] सुंदर डौल या आकार का। जिसकी बनावट बहुत अच्छी हो। जिसके सब अंग ठीक और बराबर हों। सुंदर।

सुड्ढा†—संज्ञा पुं० [देश०] धोती की वह लपेट जिसमें रुपया पैसा रखते हैं। अंटी। आँट।

सुड्ढी—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सुड्ढा'।

सुढंग¹—संज्ञा पुं० [सं० सु + हिं० ढंग] १. अच्छा ढंग। अच्छी रीति। २. सुघड़ता। सुंदरता।

सुढंग²—वि० १. अच्छे रंग का। अच्छी चाल या स्वभाव का। २. उत्तम रीति या ढंग से युक्त। उ०—मिरदंग औ मुहचंग चंग सुढंग संग बजावहीं।—गिरधर (शब्द०)। ३. सुंदर। सुघड़। उ०—अंग उतंग सुढंग अति रंग देखि के दंग। सह उमंग अरि भंग कर जंग संग मातंग।—गिरधर (शब्द०)।

सुढर¹—वि० [सं० सु + हिं० ढलना] प्रसन्न और दयालु। जिसकी अनुकंपा हो। अनुकूल। उ०—(क) तुलसी सराहै भाग कौसिक जनक जू के विधि के सुढर होत सुढर सुहाय के।—तुलसी (शब्द०)। (ख) तुलसी सबै सराहत भूपहिं, भले पैत पासे सुदर ढरे री।—तुलसी (शब्द०)।

सुढर²—वि० [हिं० सुघड़] सुंदर। सुडौल। उ०—भौंहन चढ़ाइ कोई कहूँ चित्त चढयो चढ़ो सुढर सिढ़ोनि मूढ़ चढ़ी ये सुहाती जे।—देव (शब्द०)।

सुढार(पु)†—वि० [सं० सु + हिं०, ढलना] [वि० स्त्री० सुढारी] १. सुंदर ढला या बना हुआ। उ०—गृह गृह रचे हिंडोलना महि गच काच सुढार। चित्र विचित्र चहूँ दिसि परदा फटिक पगार।—तुलसी (शब्द०)। २. सुंदर। सुडौल। उ०—हिय मनिहार सुढार चार हय सहित सुरथ चढ़ि। निसित धार तरवार धरि जिय जय विचार मढ़ि।—गिरधर (शब्द०)। (ख) दीरघ मोल कह्यो व्यापारी रहे ठगे से कौतुकहार। कर ऊपर लै राखि रहे हरि देत न मुक्ता परम सुढार।—सूर (शब्द०)। (ग) लखि बिंदुरी पिय भाल भाल तुअ खौरि निहारी। लखि तुअ जूरा उनकी बेनी गुही सुढारी।—अंबिकादत्त (शब्द०)।

सुढारु(पु)—वि० [हिं० सु + ढलना] दे० 'सुढार'। उ०—घर बारन असवार चारु बखतर सुढारु तन। संग लसत चतुरंग करन रनरंग समुद मन।—गिरधर (शब्द०)।

सुणघड़िया—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + घड़ना (=गढ़ना)] सुनार। (डिं०)।

सुणना(पु)†—क्रि० स० [हिं० सुनना] श्रवण करना। दे० 'सुनना'। उ०—महिमा नाँव प्रताप की सुणौ सरवण चित्त लाइ। रामचरण रसना रटौ भ्रम सकल झड़ जाइ।

सुतंगम—संज्ञा पुं० [सं० सुतङ्गम] पुत्रवान् पिता [को०]।

सुतंत(पु)—वि० [सं० स्वतन्त्र, प्रा० सु + तंत] स्वतंत्र। स्वाधीन। बंधनहीन। स्वच्छंद। उ०—बंधुआ को जैसे लखत कोई मनुष सुतंत।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुतंतर(पु)†—वि० [सं० स्वतन्त्र] दे० 'स्वतंत्र'।

सुतंतु—संज्ञा पुं० [सं० सुतन्तु] १. शिव। विष्णु। ३. एक दानव का नाम।

सुतंत्र(पु)¹—वि० [सं० स्वतन्त्र] दे० 'स्वतंत्र'। उ०—(क) महावृष्टि चलि फटि कियारी। जिमि सुतंत्र भए बिगरहिं नारी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) या ब्रज मैं हौं बसत ही हेली आइ सुतंत्र। हेरन मैं कछु पढ़ि दियौ मोहन मोहन मंत्र।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुतंत्र²—क्रि० वि० स्वतंत्रतापूर्वक। स्वच्छंदतापूर्वक। उ०—विधि लिख्यो शोधि सुतंत्र। जनु जपाजप के मंत्र।—केशव (शब्द०)।

सुतंत्र³—वि० [सं० सुतन्त्र] १. जिसका तंत्र, सेना आदि ठीक हो। जिसके पास अच्छा सैन्य बल हो। २. तंत्र का ज्ञाता। सिद्धांतों का जानकार।

सुतंत्रि—संज्ञा पुं० [सं० सुतन्त्रि, सुतन्त्री] १. वह जो तार के बाजे (वीणा आदि) बजाने में प्रवीण हो। वह जो तंत्र वाद्य अच्छी तरह बजाता हो। २. वह जो कोई बाजा अच्छी तरह बजाता हो। ३. वह जिसका स्वर मधुर और लय ताल से युक्त हो।

सुतंभर—संज्ञा पुं० [सं० सुतम्भर] एक प्राचीन वैदिक ऋषि का नाम।

सुत¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुत्र। आत्मज। बेटा। लड़का। २. दसवें मनु का पुत्र। ३. जन्मकुंडली में लग्न से पाँचवाँ घर। ४. नरेश। भूपति। राजा (को०)। ५. निचोड़ा हुआ सोमरस (को०)। ६. सोम याग (को०)। ७. सोमबलि (को०)।

सुत[२]—वि० १. पार्थिव। २. उत्पन्न। जात। ३. उड़ेला हुआ (को०)। ४. निचोड़कर निकाला हुआ (को०)।

सुत†[३]—संज्ञा पुं० [?] बीस की संख्या। कोड़ी।

सुतकारी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] स्त्रियों के पहनने की जूती।

सुतजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पौत्री। पोती [को०]।

सुतजीवक—संज्ञा पुं० [सं०] पुत्रजीव नाम का वृक्ष। पितिजिया। विशेष दे० 'पुत्रजीव'।

सुतड़ा—संज्ञा पुं० [हिं० सूत + ड़ा (प्रत्य०)] दे० 'सुतरा'।

सुतत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सुत का भाव या धर्म।

सुतदा[१]—वि० स्त्री० [सं०] सुत या पुत्र देनेवाली।

सुतदा[२]—संज्ञा स्त्री० दे० 'पुत्रदा' (लता)।

सुतनय—वि० [सं०] उत्तम संतानवाला।

सुतना[१]—संज्ञा पुं० [?] दे० 'सूथन'।

सुतना[२]—क्रि० अ० [सं० शयन] दे० 'सूतना'।

सुतनिर्विशेष—वि० [सं०] पुत्रवत्। पुत्रकल्प। २. जिसका पुत्र के समान पालन पोषण किया गया हो [को०]।

सुतनु[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक गंधर्व का नाम। २. उग्रसेन के एक पुत्र का नाम। ३. एक बंदर का नाम।

सुतनु[२]—वि० १. सुंदर शरीरवाला। २. अत्यंत सुकुमार। बहुत ही क्षीण। पतला (को०)। ३. कृशकाय। दुर्बलशरीर (को०)।

सुतनु[३]—संज्ञा स्त्री० १. सुंदर शरीरवाली स्त्री। कृशांगी। २. आहुक की पुत्री और अक्रूर की पत्नी का नाम। ३. उग्रसेन की एक कन्या का नाम। ४. वसुदेव की एक उपपत्नी का नाम।

सुतनुज—वि० [सं०] दे० 'सुतनय'।

सुतनुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुतनु होने का भाव। २. शरीर की सुंदरता।

सुतनू—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुतनु'[३] [को०]।

सुतप[१]—वि० [सं०] सोम पान करनेवाला।

सुतप[२]—संज्ञा पुं० [सं० सुतपस्] तप। तपश्चर्या [को०]।

सुतपस्वी—वि० [सं० सुतपस्विन्] अत्यंत तपस्या करनेवाला। बहुत अच्छा और बड़ा तपस्वी।

सुतपा[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुतपस्] १. सूर्य। २. एक मुनि का नाम। ३. रौच्य मनु के एक पुत्र का नाम। ४. विष्णु। ५. कठोर तपस्या। दीर्घ साधना (को०)।

सुतपा—वि० १. कठोर तपस्या की साधना करनेवाला वानप्रस्थाश्रमी। २. जो अतिशय तापयुक्त हो [को०]।

सुतपादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी जाति की एक प्रकार की हंसपदी नाम की लता।

सुतपेय—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ में सोम पीने की क्रिया। सोमपान।

सुतयाग—संज्ञा पुं० [सं०] वह यज्ञ जो पुत्र की इच्छा से किया जाता है। पुत्रकाम यज्ञ। पुत्रेष्टि यज्ञ।

सुतर†[१]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शुतुर] दे० 'शुतुर'। उ०—सबके आगे सुतर सवार अपार शृंगार बनाए। धरे जमूरक तिन पीठिन पर सहित निसान सुहाये।—रघुराज (शब्द०)। (ख) भरि चले सुतर रथ एक राह। बीसल तड़ाग दिय दरिगाह।—पृ० रा०, १।४२०।

सुतर[२]—वि० [सं०] सुख से तैरने या पार करने योग्य। जो सुख या आराम से पार किया जा सके। (नदी आदि)।

सुतरण—वि० [सं०] सरलता से पार करने योग्य।

सुतरनाल—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शुतुरनाल] दे० 'शुतरनाल'। उ०—तिमि घरनाल और करनालैं सुतरनाल जंजालैं। गुरगुराव रहँकलैं भले तहँ लागे विपुल बयालैं।—रघुराज (शब्द०)।

सुतरसवार—संज्ञा पुं० [फ़ा० शुतुरसवार] ऊँट सवार। साँड़नी सवार।

सुतरां—अव्य० [सं० सुतराम्] १. अतः। इसलिये। निदान। २. अपितु। और भी। किं बहुना। ३. अगत्या। लाचार। ४. अत्यंत। ५. अवश्य।

सुतरा—संज्ञा पुं० [हिं० सूत + रा (प्रत्य०)] नाखून के ऊपर या बगल के चमड़े का सूत की तरह महीन छोटा अंश।

सुतरी(पु)[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० तुरही] तुरही। तूर। उ०—नौबत भरत द्वार द्वारन में शंख सुतरि सहनाई। औरहु विविध मनोहर बाजे बजत मधुर सुर छाई।—रघुराज (शब्द०)।

सुतरी[२]—संज्ञा पुं० [देश० या फ़ा० शुतुर, हिं० सुतर (= ऊँट)] वह बैल जिसका ऊँट का सा रंग हो। (यह मध्यम श्रेणी का मजबूत और तेज माना जाता है)।

सुतरी[३]—संज्ञा स्त्री० [देश०] वह लकड़ी जो पाई में साँथी अलग करने के लिये साँथी के दोनों तरफ लगी रहती है। इसे जुलाहों की परिभाषा में 'सुतरी' कहते हैं।

सुतरी[४]—संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रकार] दे० 'सुतारी'[१]।

सुतरी[५]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूत + री (प्रत्य०)]। दे० 'सुतली'।

सुतरेशाही—संज्ञा पुं० [सुथरा शाह (= एक संत का नाम)] दे० 'सुथरे शाही'।

सुतर्कारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता। सौनैया। घघर बेल। बेदाल। विशेष दे० 'देवदाली'।

सुतर्दन—संज्ञा पुं० [सं० सुतर्द्दन] कोकिल पक्षी। कोयल।

सुतर्मा—वि० [सं० सुतर्मन्] तरण करने या पार करने योग्य [को०]।

सुतल—संज्ञा पुं० [सं०] १. सात पाताल लोकों में से एक (किसी पुराण के मत से दूसरा और किसी के मत से छठा) लोक।

विशेष—भागवत के अनुसार इस पाताल लोक के स्वामी विरोचन के पुत्र बलि हैं। देवीभागवत में लिखा है कि विष्णु भगवान् ने बलि को पाताल भेजकर संसार की सारी संपदा दी थी और स्वयं उसके द्वार पर पहरा देते थे। एक बार रावण ने इसमें प्रवेश करना चाहा था, पर विष्णु भगवान् ने उसे अपने पैर के अँगूठे से हजारों योजन दूर फेंक दिया। विशेष दे० 'लोक'[१]।

२. किसी बड़े भवन की नींव (को०)।

सुतली—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूत + ली (प्रत्य०)] रूई, सन या इसी प्रकार के और रेशों के सूतों या डोरों को एक में बटकर बनाया हुआ लंबा और कुछ मोटा खंड जिसका उपयोग चीजें बाँधने, कुएँ से पानी खींचने, पलंग बुनने तथा इसी प्रकार के और कामों में होता है। रस्सी। डोरी। सुतरी।

सुतवत्[१]—वि० [सं०] १. पुत्रवाला। जिसके पुत्र हो। २. पुत्र के समान। पुत्रतुल्य।

सुतवत्[२]—संज्ञा पुं० पुत्र का पिता।

सुतवत्सल—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सुतवत्सला] वह पिता जो पुत्र के प्रति वात्सल्य से युक्त हो [को०]।

सुतवस्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सात पुत्र प्रसव करनेवाली स्त्री। वह स्त्री जिसके सात पुत्र हैं।

सुतवान्—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सुतवत्] दे० 'सुतवत्'।

सुतवाना—क्रि० स० [हिं० सुताना] दे० 'सुलवाना'। उ०—फिर सेजचतुर को अच्छा बिछौना करवा पलंग पर सुतवाया।—लल्लू (शब्द०)।

सुतश्रेणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूसाकानी। मूषिकपर्णी। विशेष दे० 'मूसाकानी'।

सुतसुत—संज्ञा पुं० [सं०] पुत्र का लड़का। पौत्र [को०]।

सुतसोम—संज्ञा पुं० [सं०] १. भीमसेन के एक पुत्र का नाम। २. वह जो सोम का सेवन करता हो। सोम तर्पण करनेवाला।

सुतसोमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की एक पत्नी [को०]।

सुतस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] जन्मकुंडली में लग्न से पंचम स्थान।

विशेष—फलित ज्योतिष के अनुसार सुतस्थान पर जितने ग्रहों की दृष्टि रहती है, उतनी ही संतान होती हैं। पुल्लिंग ग्रहों की दृष्टि से पुत्र और स्त्री ग्रहों की दृष्टि से कन्याएं होती हैं।

सुतर—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रधर, प्रा० सूत + हर] दे० 'सुतर'। उ०—सुधरि मुबारक तिय बदन परी अलक अभिराम। मनौ सौम पर सूत ह्वै राखो सुतहर काम।—मुबारक (शब्द०)।

सुतहा[१]—संज्ञा पुं० [हिं० सूत + हा (प्रत्य०)] सूत का व्यापारी। सूत बेचनवाला।

सुतहा[२]—वि० सूत का। सूत संबंधी।

सुतहा[३]—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ति] दे० 'सुतही'।

सुतहार(पु)—संज्ञा [सं० सूत्रधार, प्रा० सुत्तधार, सुत्तहार] दे० 'सुतार[१]'। उ०—कनक रतनमय पालनो रच्यो मनहुँ मार सुतहार। विविध खेलौना किंकिनी लागे मंजुल मुकुताहार।—तुलसी (शब्द०)।

सुतहिबुक योग—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह का एक योग।

विशेष—विवाह के समय लग्न में यदि कोई दोष हो और सुतहिबुक योग हो, तो सारे दोष दूर हो जाते हैं।

सुतही—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] दे० 'सुतुही'।

सुतहौनिया—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सुथौनिया'।

सुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लड़की। कन्या। पुत्री। बेटी। २. सखी। सहेली। (डिं०)।

सुतात्मज—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सुतात्मजा] १. लड़के का लड़का। पोता। २. लड़की का लड़का। नाती।

सुतादान—संज्ञा पुं० [सं०] कन्यादान [को०]।

सुतान—वि० [सं०] मधुर स्वरवाला। सुस्वर। सुकंठ [को०]।

सुताना†—क्रि० स० [हिं० सुलाना] दे० 'सुलाना'।

सुतापति—संज्ञा पुं० [सं०] कन्या का पति। दामाद। जामाता।

सुतार[१]—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकार, प्रा० सुत्तआर>सुत्तार] १. बढ़ई। २. शिल्पकार। कारीगर।

सुतार(पु)[२]—वि० [सं० सु + तार] अच्छा। उत्तम। उ०—कनक रतन मणि पालनो अति गढ़नो काम सुतार। विविध खिलौना भाँति भाँति के गजमुक्ता बहुधार।—सूर (शब्द०)।

सुतार†[३]—संज्ञा पुं० सुभीता। उपयुक्त समय। सुविधा।

क्रि० प्र०—बैठना।

सुतार[४]—वि० [सं०] १. अत्यंत उज्वल। २. जिसकी आँख की पुतलियाँ सुंदर हो। ३. अत्यंत उच्च।

सुतार[५]—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सुगंधिद्रव्य। २. एक आचार्य का नाम। ३. सांख्य दर्शन के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि। गुरु से पढ़े हुए अध्यात्मशास्त्र का ठीक ठीक अर्थ समझना।

सुतार[६]—संज्ञा पुं० [देश०] हुदहुद नामक पक्षी।

सुतारका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों की चौबीस शासन देवियों में से एक देवी का नाम।

सुतारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सांख्य के अनुसार नौ प्रकार की तुष्टियों में से एक। २. सांख्य के अनुसार आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक। दे० 'सुतार[५]'। ३. एक आभूषण।

सुतारी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रकार] १. मोचियों का सूआ जिससे वे जूता सीते हैं। २. सुतार या बढ़ई का काम।

सुतारी[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सुतार] शिल्पकार। कारीगर। उ०—हरिजन मणि को कोठरी आप सुतारी आहि। मुएहू न त्यागत टक निज ताहि ते छोड़ची नाहि।—विश्राम (शब्द०)।

सुतार्थी—वि० [सं० सुतार्थिन्] पुत्र की कामना करनेवाला। जिसे पुत्र की अभिलाषा हो। पुत्रार्थी।

सुताल—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में ताल का भेद [को०]।

सुताली—संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रकार] दे० 'सुतारी[१]'।

सुतासिंधु(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धुसुता] लक्ष्मी। सिंधुसुता। उ०—चकित होइ नीर में बहुरि बुड़की दई सहित सुतासिंधु तहँ दरस पाए।—सूर० (राधा०), प० २५७७।

सुतासुत—संज्ञा पुं० [सं०] पुत्री का पुत्र। दौहित्र। नाती।

सुतितिडी, सुतितिडी—संज्ञा स्त्री० [सुतिन्तिडा, सुतिन्तिडी] इमली [को०]।

सुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमरस का निष्कर्षण [को०]।

सुतिअ@—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० तिय] सुंदर स्त्री। उ०—भगति सुतिअ कल करन बिभूषन।—मानस, १।२०।

सुतिक्त[१]—संज्ञा पुं० [सं०] पित्तपापड़ा। पर्पटक।

सुतिक्त²—वि० जो बहुत तिक्त हो। अधिक तीता।

सुतिक्तक—संज्ञा पुं० [सं०] १. चिरायता। २. फरहद। पारिभद्र। ३. पित्तपापड़ा।

सुतिक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तोरई। कोशातकी। २. सलई। शल्लकी।

सुतिनⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सुतनु] सुंदर बाला। रूपवती स्त्री। (क्व०)। उ०—जो नहि देतौ अतन कहुँ दृगन हरबली आय। मन मानस जे सुतिन के को सर करतो जाय।—रतनहजारा। (शब्द०)।

सुतिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके पुत्र हों। पुत्रवती।

सुतियⓅ संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० तिया] सुंदर स्त्री।

सुतिया—संज्ञा स्त्री० [देश०] सोने या चाँदी का एक गहना जो स्त्रियाँ गले में पहनती हैं। हँसली।

सुतिया—संज्ञा पुं० [हिं० सु + तिया] सुंदर स्त्री।

सुतिहारⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकार, सूत्रधार; प्रा० सुत्तहार] दे० 'सुतार¹'। उ०—(क) मोतिन झालरि नाना भाँति खिलौना रचे विश्वकर्मा सुतिहार। देखि देखि किलकत दँतिला दो राजत क्रीड़त विविध विहार।—सूर (शब्द०)। (ख) विश्वकर्मा सुतिहार श्रुतिधरि सुलभ सिलय दिखावनो। तेहि देखे त्रय ताप नाशै ब्रजवधू मनभावनो।—सूर (शब्द०)।

सुती—संज्ञा पुं० [सं० सुतिन्] १. वह जो पुत्र की इच्छा करता हो। २. वह जिसे पुत्र हो। पुत्रवाला।

सुतीक्षणⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुतीक्ष्ण] दे० 'सुतीक्ष्ण¹'। उ०—दरसन दियो सुतीक्षण गौतम पंचवटी पग धारे। तहाँ दुष्ट सूर्पनखा नारी करि बिन नाक उधारे।—सूर (शब्द०)।

सुतीक्षणⓅ—वि० अत्यंत तीक्ष्ण। अत्यंत नुकीला।

सुतीक्ष्ण¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. अगस्त्य मुनि के भाई जो बनवास के समय श्रीरामचंद्र से मिले थे। २. सहिंजन वृक्ष। शोभांजन।

सुतीक्ष्ण²—वि० १, अत्यंत तीक्ष्ण। बहुत तेज। २. अत्यंत तीखा (को०)। ३. अत्यंत पीड़ाकारक।

सुतीक्ष्णक—संज्ञा पुं० [सं०] मुष्कक या मोखा नामक वृक्ष।

सुतीक्ष्णका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरसों। सर्षप।

सुतीक्ष्ण दशन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सुतीखनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुतीक्ष्ण, प्रा० सु + तिक्खन] दे० 'सुतीक्ष्ण'। उ०—तीखन तन को कियो सुतीखन को द्विज तुलसी।—सुधाकर (शब्द०)।

सुतीच्छनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुतीक्ष्ण] दे० 'सुतीक्ष्ण'।

सुतीर्थ¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुपथ। २. स्नान का उत्तम स्थान। ३. शिव। ४. पूज्य पात्र। ५. योग्य आचार्य।

सुतीर्थ²—वि० [सं०] सहज में पार करने योग्य।

सुतीर्थराज—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

सुतुंग¹—संज्ञा पुं० [सं० सुतुङ्ग] १. नारियल का पेड़। २. ग्रहों का उच्चांश।

विशेष—ज्योतिष के अनुसार ग्रहों के सुतुंग स्थान पर रहने से शुभ फल होता है।

सुतुंग²—वि० अत्यंत उच्च। बहुत ऊँचा।

सुतुआ—संज्ञा पुं० [हिं० सुतुही] [स्त्री० सुतुई] दे० 'सुतही'।

सुतुमुल—वि० [सं०] बहुत जोर का। अत्यंत घोर [को०]।

सुतुस—वि० [सं०] ठीक उच्चारण करने या बोलनेवाला [को०]।

सुतुही†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] १. सीपी, जिससे प्रायः छोटे बच्चों को दूध पिलाते हैं। वह सीप जिसके द्वारा पोस्ते से अफीम खुरची जाती है। सुतुआ। सुतहा। सूती। ३. वह सीप जिससे अचार के लिए कच्चा आम छीला जाता है। सीपी।

विशेष—इसे बीच में घिसकर इसके तल में छेद कर लेते हैं; और उसी छेद के चारों ओर के तेज किनारों से आम, आलू आदि छीलते हैं।

सुतून—संज्ञा पुं० [फ़ा०] खंभा। स्तंभ।

सुतूर—संज्ञा स्त्री० [अ०] सतर का बहुवचन। लकीरें [को०]।

सुतेकर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो यज्ञ करता हो। यज्ञकर्ता। यज्ञकारी। ऋत्विक्।

सुतेजन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. धामिन। धन्वन वृक्ष। २. बहुत नुकीला बाण या तीर।

सुतेजन—वि० १. नुकीला। २. तेज। धारदार।

सुतेजा¹—संज्ञा पुं० [सं० सुतेजस्] १. जैनों के अनुसार गत उत्सर्पिणी के दसवें अर्हत् का नाम। २. गृत्समद का पुत्र। ३. हुरहुर। आदित्यभक्ता।

सुतेजा²—वि० १. बहुत तेज या धारदार। २. अत्यंत दीप्त या ज्योतित (को०)। ३. अत्यंत शक्तिशाली (को०)।

सुतेजित—वि० [सं०] दे० 'सुतेजन'।

सुतेमन—संज्ञा पुं० [सं० सुतेमनस्] एक वैदिक आचार्य का नाम।

सुतैला—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाज्योतिष्मती नामक एक लता। विशेष दे० 'मालकँगनी' [को०]।

सुतोत्पत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्रजन्म [को०]।

सुतोर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वृष। बैल। २. उष्ट्र। ऊँट। ३. अश्व। घोड़ा [को०]।

सुतोष¹—संज्ञा पुं० [सं०] संतोष। सब्र।

सुतोष²—वि० जिसका संतोष हो गया हो। संतुष्ट। प्रसन्न।

सुतोषण—संज्ञा पुं० [सं०] सम्यक् तोष या तुष्टि [को०]।

सुत्ता†—वि० [हिं० सोना] सोया हुआ। सुषुप्त। (पश्चिम)।

सुत्तुर†—संज्ञा पुं० [हिं० सूत या फ़ा० शुतुर] जुलाहों के करघे का एक बाँस जिसमें कंघी बँधी रहती है। कुलवाँसा।

सुत्थन सुत्थना—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सूथन'।

सुत्य—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ के लिये सोमरस निकालने का दिन।

सुत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जनन। उत्पत्ति। प्रसव। २. दे० 'सूत्याँ'।

यौ०—सुत्याकाल = दे० 'सुत्य'।

सुत्रामा—संज्ञा पुं० [सं० सुत्रामन्] १. इंद्र। २. पुराणानुसार एक मनु का नाम। ३. वह जो उत्तम रूप से रक्षा करता हो।

सुत्रामा—संज्ञा स्त्री० पृथ्वी [को०]।

सुथना—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सूथन'।

सुथनिया†—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सुथनी'।

सुथनी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का ढीला पायजामा। सूथन। २. एक कंद। पिंडालु। रतालू।

सुथरा—वि० [सं० स्वच्छ, सुस्थल या स्वस्थ] [वि० स्त्री० सुथरी] स्वच्छ। निर्मल। साफ। उ०—(क) लरिकाई कहुँ नेक न छाँड़त सोई रहौ सुथरी सेजरियाँ। आए हरि यह बात सुनत ही धाइ लिये यशुमति महतरियाँ।—सूर (शब्द०)। (ख) मोतिन माँग भरी सुथरी लखै कंठ सिरीगर सी अवगाही।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्रायः 'साफ' शब्द के साथ होता है। जैसे,—साफ सुथरा मकान। साफ सुथरी भाषा = परिष्कृत भाषा।

सुथराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुथरा + ई (प्रत्य०)] सुथरापन। स्वच्छता निर्मलता। सफाई।

सुथरापन—संज्ञा पुं० [हिं० + पन (प्रत्य०)] दे० 'सुथराई'।

सुथराशाह—संज्ञा पुं० [हिं०] एक संत जो गुरुनानक के शिष्य थे।

सुथरेशाही—संज्ञा पुं० [सुथराशाह (महात्मा)] १. गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया संप्रदाय। २. उस संप्रदाय के अनुयायी या माननेवाले जो प्रायः सुथराशाह और गुरुनानक आदि के बनाए हुए भजन गाकर भिक्षा माँगते हैं।

सुथौनिया†—संज्ञा पुं० [देश०] मस्तूल के उपरी भाग में वह छेद या घर जिसमें पाल लगाने के समय उसकी रस्सी पहनाई जाती है। (लश०)।

सुदंड—संज्ञा पुं० [सं० सुदण्ड] बेंत। बेत्र।

सुदंडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुदण्डिका] १. गोरख इमली। गोरक्षी। ब्रह्मदंडी। अजदंडी।

सुदंत[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुदन्त] १. वह जो अभिनय करता हो। नट। २. नर्तक। नाचनेवाला। ३. सुंदर दाँत (को०)।

सुदंत[२]—वि० सुंदर दाँतोंवाला।

सुदंता[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुदन्ता] पुराणानुसार एक अप्सरा का नाम।

सुदंता—वि० स्त्री० सुंदर दाँतोंवाली।

सुदती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुदन्ती] १. हथिनी। हस्तिनी। २. वायव्य कोण के एक दिग्गज (पुष्पदंत) की हथिनी का नाम।

सुदंभ—वि० [सं० सुदम्भ] दे० 'सुदम'।

सुदंशित—वि० [सं०] १. अच्छी तरह डँसा हुआ। २. शस्त्र आदि से युक्त। ३. बहुत सघन, घन [को०]।

सुदंष्ट्र[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. कृष्ण का एक पुत्र। २. संबर का एक पुत्र। ३. एक राक्षस का नाम

सुदंष्ट्र[२]—वि० सुंदर दाँतोंवाला।

सुदंष्ट्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक किन्नरी का नाम।

सुदक्षिण[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. पौंड्रक राजा का पुत्र। २. विदर्भ का एक राजा।

सुदक्षिण[२]—वि० १. निष्कपट। खरा। २. उदार। यज्ञ में बहुत दक्षिणा-देनेवाला। ३ अत्यंत चतुर। ४. अत्यंत मृदुल स्वभाव-वाला [को०]।

सुदक्षिणा संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजा दिलीप की पत्नी का नाम। २. पुराणानुसार श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

सुदग्धिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुरुह नामक वृक्ष। दग्धा।

सुदच्छिन—संज्ञा पुं० [सं० सुदक्षिण] दे० 'सुदक्षिण'। उ०—चलेउ सुदच्छिन दच्छ समर जुध दच्छिन दच्छिन।—गिरधर (शब्द०)।

सुदत्—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुदती] सुंदर दाँतोंवाला।

सुदती—वि० [सं०] सुंदर दाँतोंवाली स्त्री। सुदंता। सुंदरी। उ०—(क) धीर धरो सोच न करो मोद भरो यदुराय। सुदति सँदेसे सनि रही अधरनि मैं मुसुकाय।—शृं० सत (शब्द०)। (ख) भौन भरी सब संपति दंपति श्रीपति ज्यों सुख सिंधु में सोवै। देव सों देवर प्राण सो पूत सुकौन दशा सुदती जिहि रोवै।—केवश (शब्द०)।

सुदम—वि० [सं०] जो सुकरता से पराजित या वशीभूत हो सके [को०]।

सुदमन—संज्ञा पु० [सं०] आम। आम्रवृक्ष।

सुदरसन(पु)[१]—संज्ञा [सं० सुदर्शन] दे० 'सुदर्शन'। उ०—नकुल सुदरसन दरसनी क्षेमकरी चुपचाप। दस दिसि देखत सगुन सुभ पूजहि मन अभिलाष।—तुलसी (शब्द०)।

सुदरसन[२]—संज्ञा पुं० दे० 'सुदर्शन'।

सुदरसनपानि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुदर्शनपाणि] दे० 'सुदर्शन पाणि'। उ०—ज्यों धाए गजराज उधारन सपदि सुदरसनपानि।—तुलसी (शब्द०)।

सुदर्भा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का तृण जिसे इक्षुदर्भा भी कहते हैं।

सुदर्श—वि० [सं०] १. दे० 'सुदर्शन'। २. जिसे सरलता से देखा जा सके [को०]।

सुदर्शन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु भगवान् के चक्र का नाम। २. शिव। ३. अग्नि का एक पुत्र। ४. एक विद्याधर। ५. मत्स्य। मछली। ६. जंबू वृक्ष। जामुन। ७. नौ बलदेवों में से एक। (जैन)। ८. वर्तमान अवसर्पिणी के अट्ठारहवें अर्हत् के पिता का नाम। (जैन)। ९. शंखन का पुत्र। १०. ध्रुवसधि का एक पुत्र। ११. अर्थसिद्धि का पुत्र। १२. दधीचि का एक पुत्र। १३. अजमोढ का एक पुत्र। १४. भरत का एक पुत्र। १५. एक नाग असुर। १६. प्रतीक का जामाता। १७. सुमेरु। १८. एक द्वीप का नाम। १९. गिद्ध। २०. एक प्रकार

की संगीतरचना। २१. संन्यासियों का एक दंड जिसमें छह गाँठें होती हैं। इसे वे भूत प्रेतों से अपना बचाव करने के लिये अपने पास रखते हैं। २२. मदनमस्त। २३. सोमवल्ली। बिशेष दे० 'सुदर्शना'। २४. इंद्रनगरी। अमरावती (को०)।

सुदर्शन[२]—वि० जो १. जो देखने में सुंदर हो। प्रियदर्शन। सुखदर्शन। सुंदर। मनोरम। २. जो आसानी से देखा जा सके।

सुदर्शन चक्र—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का आयुध।

विशेष—मत्स्य पुराण के अनुसार सूर्य के असह्य तेज को कम करने के लिये यंत्र के द्वारा उनका तेज विभक्त किया गया और उस विभक्त तेज से सुदर्शन चक्र, शिव का त्रिशूल और इंद्र के वज्र का निर्माण किया गया। पद्म पुराण के अनुसार सभी देवों के तेज में अपने तेज को मिलाकर शिव ने इस द्वादशारयुक्त सुदर्शन चक्र को बनाया और विष्णु को प्रदान किया।

सुदर्शन चूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार ज्वर की एक प्रसिद्ध औषध।

विशेष—इस चूर्ण के बनाने की विधि यह है—त्रिफला, दारुहल्दी, दोनों करियाली, कनेर, काली मिर्च, पीपल, पीपलामूल, मूर्वा, गुड़ुच, धनियाँ, अडूसा, कुटकी, त्रायमान, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, कमलतंतु, नीम की छाल, पोहकर मूल, मुँगने (सहिजन) के बीज, मुलहठी, अजवायन, इंद्रयव, भारंगी, फिटकरी, बच, तज, कमलगट्टा, पद्मकाष्ठ, चंदन, अतीस, खरेंटी, बायबिडंग, चित्रक, देवदारु, चव्य, लवंग, वंशलोचन, पत्राज, ये सब चीजें बराबर बराबर और इन सबकी तौल से आधा चिरायता लेकर सबको कूट पीसकर चूर्ण बनाते हैं। मात्रा एक टंक प्रति दिन सबेरे ठंढे जल के साथ है। कहते हैं, इसके सेवन से सब प्रकार के ज्वर, यहाँ तक कि विषमज्वर भी दूर हो जाता है। इसके सिवा खाँसी, साँस, पांडु, हृद्रोग, बवासीर, गुल्म आदि रोग भी नष्ट होते हैं।

सुदर्शन दंड—संज्ञा पुं० [सं० सुदर्शनदण्ड] वैद्यक के अनुसार ज्वर की एक औषध।

सुदर्शन द्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] जंबू द्वीप का एक नाम।

सुदर्शनपाणि—संज्ञा पुं० [सं०] (हाथ में सुदर्शनचक्र धारण करनेवाले) श्री विष्णु।

सुदर्शना[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सोमवल्ली। चक्रांगी। मधुपर्णिका।

विशेष—यह क्षुप जाति की वनस्पति है। यह रोएँदार होती है। पत्ते तीन से छह इंच के घेरे में गोलाकार तथा त्रिकोणाकार से होते हैं। इसमें गोल फूलों के गुच्छे लगते हैं जिनका रंग नारंगी का सा होता है वैद्यक के अनुसार इसका गुण मधुर, गरम और कफ, सूजन तथा वातरक्त दूर करनेवाला है।

२. एक प्रकार की मदिरा। ३. एक गधर्वी का नाम। ४. पद्मसरोवर। ५. जंबू वृक्ष। ६. इंद्रपुरी। अमरावती। ७. शुक्ल पक्ष की रात्रि। ८. आज्ञा। आदेश। हुक्म। ९. सुंदर स्त्री। प्रियदर्शना स्त्री (को०)। १०. स्त्री। औरत। नारी (को०)। **११. एक प्रकार की औषध।**

सुदर्शना[२]—वि० स्त्री जो देखने में सुंदर हो। सुंदरी।

सुदर्शनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्रपुरी। अमरावती। सुंदरी स्त्री।

सुदल[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोरट या क्षीरमोरट नाम की लता। २. मुचकुंद। ३. सेना। दल।

सुदल[२]—वि० अच्छे दलों या पत्तोंवाला।

सुदला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरिवन। शालपर्णी। २. सेवती।

सुदशन—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुदशना] सुंदर दाँतोंवाला। जिसके सुंदर दाँत हों। सुदंत।

सुदांत[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुदान्त] १. शाक्यमुनि के एक शिष्य का नाम। २. एक प्रकार की समाधि। ३. शतधन्वा का पुत्र।

सुदांत[२]—वि० अति शांत। बहुत सीधा। सधा हुआ। (घोड़ा)।

सुदाम—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण के सखा एक गोप का नाम। २. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद। ३. दे० 'सुदामा'।

सुदामन—संज्ञा पुं० [सं०] १. जनक के एक मंत्री का नाम। २. एक प्रकार का दैवास्त्र।

सुदामा[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुदामन्] १. एक दरिद्र ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का सहपाठी और परम सखा था और जिसे पीछे श्रीकृष्ण ने ऐश्वर्यवान् बना दिया था। २. श्रीकृष्ण का एक गोपसखा। ३. कंस का एक माली जो श्रीकृष्ण से उस समय मथुरा में मिला था, जब वे कंस के बुलाने से वहाँ गए थे। ४. एक पर्वत। ५. इंद्र का हाथी। ऐरावत। ६. समुद्र। सागर। ७. मेघ। बादल। ८ एक गंधर्व का नाम।

सुदामा[२]—संज्ञा स्त्री० १. स्कंद की एक मातृका। २. रामायण के अनुसार उत्तर भारत की एक नदी का नाम।

सुदामा[३]—वि० उत्तम रूप से दान करनेवाला। खूब देनेवाला।

सुदामिना—संज्ञा स्त्री० [सं०] भागवत के अनुसार शमीक की पत्नी का नाम।

सुदाय—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम दान। २. यज्ञोपवीत संस्कार के समय ब्रह्मचारी को दी जानेवाली भिक्षा। ३. विवाह के अवसर पर कन्या या जामाता को दिया जानेवाला दान। दहेज। ४. वह जो उक्त प्रकार के दान करे। (अर्थात् पिता, माता आदि)।

सुदारु—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवदारु। देवदार। २. धूप। सरल। सरल वृक्ष। ३. सुंदर काष्ठ। अच्छी लकड़ी। ४. विंध्य पर्वत का एक अंश। पारियात्र पर्वत।

सुदारुण[१]—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का दैवास्त्र।

सुदारुण[२]—वि० अत्यंत क्रूर या भयानक।

सुदावन (पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुदामन] जनक का एक मंत्री। दे० 'सुदामन'। उ०—जाय सुदावन कह्यो जनक सों आवत रघुकुल नाहा। देखन को धाए पुरवासी भरि उमाह मन माँहा।—रघुराज (शब्द०)।

सुदास[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. दिवोदास का पुत्र तथा त्रित्सु का राजा। २. ऋतुपर्ण का पुत्र। ३. सर्वकाम का पुत्र। ४. च्यवन का

पुत्र। ५. बृहद्रथ का एक पुत्र। ६. एक प्राचीन जनपद। ७. अच्छा दास या सेवक।

सुदाप[2]—वि० ईश्वर की सम्यक् रूप से पूजा या आराधना करनेवाला।

सुदि[1]—क्रि० वि० [सं०] शुक्ल पक्ष में।

सुदि[2]—संज्ञा स्त्री० दे० 'सुदी'।

सुदिन—संज्ञा पुं० [सं० सु+दिन] शुभ दिन। अच्छा दिन। मुबारक दिन। उ०—(क) मुनि तथास्तु कहि सुदिन विचारी। कारवाई मख राख तयारी।—रघुराज (शब्द०)। (ख) तहाँ तुरंत सुमंत गणक गण ल्यायो ललकि लिवाई। गुरु वशिष्ठ आज्ञानुसार ते दीन्ह्यो सुदिन बनाई रघुराज (शब्द०)। (ग) अस कहि कौशिक सुदिन बनायो। तहँ तुरंत प्रस्थान पठायो।—रघुराज (शब्द०)।

मुहा०—सुदिन बनाना, सुदिन बिचारना, सुदिन सोधना = किसी शुभ काम के लिये ज्योतिष शास्त्रानसार अच्छा मुहूर्त निकालना।

सुदिनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुदिन का भाव।

सुदिनाह—संज्ञा पुं० [सं०] पुण्य दिन। पुण्याह। शुभ दिन। प्रशस्त दिन।

सुदिव्—वि० [सं०] बहुत दीप्तिमान्। चमकीला।

सुदिवस—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुदिन'।

सुदिवातंति—संज्ञा पुं० [सं० सुदिवातन्ति] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सुदिह्—वि० [सं०] १. सुतीक्ष्ण। (जैसे, दाँत)। २. बहुत चिकना या उज्वल।

सुदी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुदिव (=शुक्ल या शुद्ध) या सुदि] किसी मास का उजाला पक्ष। शुक्ल पक्ष। जैसे—चैत सुदी १, सावन सुदी ६।

सुदीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

सुदीति[1]—संज्ञा पुं० [सं०] आंगिरस गोत्र के एक ऋषि का नाम।

सुदीति[2]—संज्ञा स्त्री० सुदीप्ति। उज्वल दीप्ति।

सुदीति[3]—वि० बहुत दीप्तिमान्। चमकीला।

सुदीपति(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुदीप्ति] दे० 'सुदीप्ति'। उ०—बाजतु है मृदु हास मृदंग सुदीपति दीपनि को उजियारो —केशव (शब्द०)।

सुदीप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक प्रकाश। खूब उजाला।

सुदीर्घ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] चिचड़ा। चिचिंडक।

सुदीर्घ[2]—वि० बहुत अधिक लंबा। अति विस्तृत।

सुदीर्घघर्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपराजिता। कोयल लता। असनपर्णी।

सुदीर्घजीवफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुदीर्घराजीवफला' [को०]।

सुदीर्घफलका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुदीर्घफलिका' [को०]।

सुदीर्घफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] ककड़ी। कर्कटी।

सुदीर्घफलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का बैंगन।

सुदीर्घराजीवफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की ककड़ी।

सुदीर्घा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चीना ककड़ी।

सुदीर्घा[2]—वि० स्त्री० अति दीर्घ। बहुत लंबी।

सुदुःख[1]—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत कष्ट, पीड़ा या शोक।

सुदुःख[2]—वि० अति दारुण। कष्टकर।

सुदुःखित—वि० [सं०] अति पीड़ित। शोकातुर। व्यथित।

सुदुःश्रव—वि० [सं०] जो सुनने में बुरा हो। कानों को अप्रिय। जैसे.—अपशब्द निंदा, गाली, कर्कश शब्द आदि।

सुदुःसह—वि० [सं०] असह्य। जो सहने में कठिन हो।

सुदुकूल—वि० [सं०] उत्तम वस्त्र से निर्मित।

सुदुघा—वि० [सं०] अच्छा दूध देनेवाली। खूब दूध देनेवाली (गौ)।

सुदुराचार—वि० [सं०] अत्यंत बुरे आचरणवाला। निहायत बदचलन [को०]।

सुदुराधर्ष—वि० [सं०] १. जिसकी प्राप्ति अत्यंत कठिन हो। २. २. अत्यंत असह्य [को०]।

सुदुरावर्त—वि० [सं०] जिसे समझाना अत्यंत कठिन हो [को०]।

सुदुरासद—वि० [सं०] जिस तक पहुँच बहुत कठिन हो। पहुँच के बाहर [को०]।

सुदुर्जय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्यूह [को०]।

सुदुर्जय[2]—वि० जिसे जीतना बड़ा कठिन हो [को०]।

सुदुर्जया—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार सिद्धि की दस अवस्थाओं में से एक [को०]।

सुदुर्जर—वि० [सं०] जिसका पाक कठिन हो। गुरुपाक [को०]।

सुदुर्दृश—वि० [सं०] जिसे देखना कष्टदायक हो। अत्यंत विरूप। जो प्रियदर्शन न हो [को०]।

सुदुर्भग—वि० [सं०] अत्यंत भाग्यहीन। अभागा [को०]।

सुदुर्भिद—वि० [सं०] जिसका भेदन कठिन हो। अभेद्य [को०]।

सुदुर्मनस्—वि० [सं०] १. अत्यंत दुष्ट हृदयवाला या खोटे स्वभाव का। २. विक्षुब्ध मनवाला। परेशानियों में पड़ा हुआ [को०]।

सुदुर्मर्ष—वि० [सं०] जो सहनशक्ति से बाहर हो। एकदम असह्य [को०]।

सुदुर्लभ—वि० [सं०] १. जो अत्यंत दुर्लभ हो। अद्वितीय। नायाब। २. जिसका पाना प्रायः असंभव हो। अप्राप्य [को०]।

सुदुर्वच—वि० [सं०] जिसकी बात का जवाब न हो [को०]।

सुदुर्विद, सुदुर्वेद—वि० [सं०] अत्यंत दुर्बोध। जो समझने में बहुत ही कठिन हो [को०]।

सुदुश्चर—वि० [सं०] १. जिसका करना अत्यंत कठिन हो। २. जो अत्यंत दुर्गम हो [को०]।

सुदुष्कर—वि० [सं०] अत्यंत कठिन। अत्यंत कष्टसाध्य [को०]।

सुदुश्चिकित्स—वि० [सं०] जिसका इलाज बहुत कठिन हो।

सुदुष्प्रभ—संज्ञा पुं० [सं०] नकुल। नेवला [को०]।

सुदुष्प्राप—वि० [सं०] जिसकी प्राप्ति कठिन हो। जो दुष्प्राप्य हो [को०]।

सुदुस्तर, सुदुस्तार—वि० [सं०] जिसे पार करना बड़ा कठिन हो [को०]।

सुदुस्त्यज—वि० [सं०] जिसे त्यागना बहुत कठिन हो [को०]।

सुदूर¹—वि० [सं०] बहुत दूर का। अति दूरवर्ती। जैसे—सुदूर पूर्व में।

सुदूर²—अव्य० बहुत दूर। अतिदूर।

सुदूर पराहत—वि० [सं०] १. जो बहुत पहले नष्ट हो चुका हो। पूर्ण ध्वस्त। २. जो पूर्वनिर्णीत हो। पूर्वनिराकृत।

सुदूरपूर्व—संज्ञा पुं० [सं०] अति दूरस्थ पूर्वीय देश।

सुदूरमूल—संज्ञा पुं० [सं० सुदृढमूल] धमासा। हिंगुआ।

सुदृढ़—वि० [सं० सुदृढ] बहुत दृढ। खूब मजबूत। जैसे,—सुदृढ़ बंधन।

सुदृढ़त्वचा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुदृढत्वचा] गंभारी। गम्हार।

सुदृश¹—वि० [सं०] १. सुंदर नेत्रोंवाला। २. पैनी या तीक्ष्ण दृष्टिवाला। ३. जो सुंदर हो [को०]।

सुदृश²—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों का एक देववर्ग [को०]।

सुदृश³—संज्ञा स्त्री० [सं०] रूपवती स्त्री [को०]।

सुदृष्टि¹—संज्ञा पुं० [सं०] गिद्ध।

सुदृष्टि²—संज्ञा स्त्री० उत्तम दृष्टि।

सुदृष्टि³—वि० १. दूरदर्शी। २. तीक्ष्णदृष्टि। तीखी चितवनवाला।

सुदेल्ल—संज्ञा पुं० [सं०] सुदेष्ण पर्वत का एक नाम। (महाभारत)।

सुदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम देवता। २ उत्तम क्रीड़ा करनेवाला। ३. एक काश्यप। ४. अक्रूर का एक पुत्र। ५. पौंड्र वासुदेव का एक पुत्र। ६. देवल का पुत्र। ७. विष्णु का एक पुत्र। ८. अंबरीष का एक सेनापति। ९. एक ब्राह्मण जिसने दमयंती के कहने से राजा नल का पता लगाया था। १०. परावसु गंधर्व के नौ पुत्रों में से एक जो ब्रह्मा के शाप से हिरण्याक्ष दैत्य के घर उत्पन्न हुआ था। ११. हर्यश्व का पुत्र और काशी का राजा।

सुदेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अरिह की पत्नी। २. विकुंठन की पत्नी।

सुदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भागवत के अनुसार नाभि की पत्नी और ऋषभ की माता।

सुदेव्य—संज्ञा पुं० [सं०] श्रेष्ठ देवताओं का समूह।

सुदेश¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंदर देश। उत्तम देश। अच्छा मुल्क। २. उपयुक्त स्थान। उचित स्थान। उ०—छूटि जात लाज तहाँ भूषण सुदेश केश टूट जात हार सब मिटत शृंगार है। —भूषण (शब्द०)।

सुदेश²—वि० सुंदर। उ०—(क) श्याम सुंदर सुदेश पीत पट शीश मुकुट उर माला। जनु घन दामिनि रवि तारागण उदित एक ही काला।—सूर (शब्द०)। (ख) लटकन चारु भृकुटिया टेढ़ो मेढ़ी सुभग सुदेश सुभाए।—तुलसी (शब्द०)। (ग) सीय स्वयंवरु जनकपुर मुनि सुनि सकल नरेश। आए साज समाज सजि भूषन बसन सुदेश।—तुलसी (शब्द०)।

सुदेशिक—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम पथप्रदर्शक [को०]।

सुदेष्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १. रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २. एक प्राचीन जनपद का नाम। ३. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। सुदेल्ल पर्वत। ४. राजा सगर के ज्येष्ठ पुत्र असमंजस का दत्तक पुत्र।

सुदेष्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बलि की पत्नी। २. विराट की पत्नी और कीचक की बहन।

सुदेष्णु—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुदेष्णा'।

सुदेस(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० सुदेश] दे० 'सुदेश'।

सुदेश³—संज्ञा पुं० [सं० स्वदेश] अपना देश। स्वदेश।

सुदेस²—वि० सुंदर। उ०—अति सुदे समृदु हरत चिकुर मन मोहन मुख बगराइ। मानों प्रगट कंज पर मंजुल अलि अवली फिर आइ। सूर०, १०।१०८।

सुदेसी†—वि० [सं० स्व + देश; हिं० सुदेस + ई (प्रत्य०)] स्वदेशी। अपने देश का।

सुदेह¹—संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर देह। सुंदर शरीर।

सुदेह²—वि० सुंदर। कमनीय। उ०—चले विदेह सुदेह हृदय हरि नेह बसाए। जरासंध बल अंध सैन सन बंध मिलाए।—गिरधर (शब्द०)।

सुदैव—संज्ञा पुं० [सं०] १. सौभाग्य। अच्छा भाग्य। अच्छी किसमत। २. अच्छा संयोग।

सुदोग्ध्री—वि० [सं०] अधिक दूध देनेवाली (गौ आदि)।

सुदोघ¹—वि० स्त्री० [सं०] बहुत दूध देनेवाली (गौ)।

सुदोघ²—वि० दानशील। उदार।

सुदोह, सुदोहना—वि० [सं०] सुख या आराम से दूहने योग्य। जिसे दूहने में कोई कष्ट न हो।

सुदौसौ(पु)—वि० [?] शीघ्रतापूर्वक। त्वरित।

सुद्दा—संज्ञा पुं० [अ० सुद्दह्] दे० 'सुद्दी'।

सुद्दी—संज्ञा स्त्री० [अ० सुद्दह्] पेट का जमा हुआ वह सूखा मल जो फुलाकर निकाला जाय।

सुद्ध(पु)—वि० [सं० शुद्ध, प्रा० सुद्ध] दे० 'शुद्ध'।

सुद्धाँ†—अव्य० [सं० सह] सहित। समेत। मिलाकर। जैसे,—उसके सुद्धाँ सात आदमी थे।

सुद्धांत—संज्ञा स्त्री० [सं० शुद्धान्त] जनाना। (डिं०)।

सुद्धा†—अव्य० [सं० सह] दे० 'सुद्धाँ'।

सुद्धि¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शुद्ध (बुद्धि)] दे० 'सुध'। उ०—(क) हिम्मति गई वजीर की ऐसी कीनी बुद्धि। होनहार जैसी कछू तैसीयै मन सुद्धि।—सूदन (शब्द०)। (ख) जैसी हो भवितव्यता तैसी उपजै बुद्धि। होनहार हिरदे बसै बिसर जाय सब सुद्धि।—लल्लू (शब्द०)।

सुद्धि²—संज्ञा स्त्री० [सं० शुद्धि] दे० 'शुद्धि'।

सुद्यु—संज्ञा पुं० [सं०] पुरुवंशी राजा चारुपद के पुत्र का नाम।

सुद्युत्—वि० [सं०] खूब प्रकाशमान। सुदीप्त।

सुद्युम्न—संज्ञा पुं० [सं०] वैवस्वत मनु का पुत्र जो इड़ नाम से प्रसिद्ध है।

विशेष—अग्निपुराण में इसकी कथा इस प्रकार दी है—एक बार हिमालय में महादेव जी पार्वती जी के साथ क्रीड़ा कर रहे थे।

उस समय वैवस्वत मनु का पुत्र इड़ शिकार के लिये वहाँ जा पहुँचा। महादेव जी ने उसे शाप दिया, जिससे वह स्त्री हो गया। एक बार सोम का पुत्र बुध उसे देख कामासक्त हो गया और उसके सहवास से उसके गर्भ से पुरुरवा का जन्म हुआ। अंत को बुध की आराधना करने पर महादेव जी ने उसे शाप-मुक्त कर दिया और वह फिर पुरुष हो गया।

सुद्रष्ट—वि० [सं० सदृष्ट] सौम्य दृष्टिवाला। जो दयावान हो। कृपा युक्त कृपालु। (डिं०)।

सुद्रष्टा—वि० [सं० सुद्रष्टृ] जिसकी दृष्टि तीक्ष्ण या पैनी हो।

सुद्विज—वि० [सं०] सुंदर दाँतोंवाला।

सुद्विजानन—वि० [सं०] जिसका मुख सुंदर दंतपंक्तियों से युक्त हो।

सुधंग—संज्ञा पुं० [हिं० सीधा+अंग या सु+ढंग?] अच्छा ढंग। उ०—(क) नृत्य करहिं नट नदी नारि नर अपने अपने रंग। मनहुँ मदनरति विविध वेष धरि नटत सुदेह सुधंग।—तुलसी (शब्द०)। (ख) कबहुँ चलत सुधंग गति सों कबहुँ उघटत बैन। लोल कुंडल गंडमंडल चपल नैननि सैन।—सूर (शब्द०)।

सुध[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शुद्ध (बुद्धि) या सु+धी] १. स्मृति। स्मरण। याद। चेत।

क्रि० प्र०—करना। रखना। होना।

मुहा०—सुध दिलाना=याद दिलाना। स्मरण करना। सुध न रहना=विस्मृत हो जाना। भूल जाना। याद न रहना। जैसे,—तुम्हारी तो किसी को सुध ही नहीं रह गई थी। सुध बिसरना=विस्मृत होना भूल जाना। सुध बिसराना या बिसारना=किसी को भूल जाना। किसी को स्मरण न रखना। उ०—तुम्हें कौन अनरीत सिखाई, सजन सुध बिसराई।—गीत (शब्द०)। सुध भूलना=दे० 'सुध बिसरना'। सुध भुलाना=दे० 'सुध बिसराना'।

२. चेतना। होश।

यौ०—सुध बुध=होश हवास।

मुहा०—सुध बिसरना=अचेत होना। होश में न रहना। सुध बिसराना=अचेत करना। होश में न रहने देना। सुध न रहना=होश न रहना। अचेत हो जाना। उ०—सुध न रही देखतु रहै कल न लखै बिनु तोहिं। देखै अनदेखै तुहे कठिन दुहूँ विधि मोहिं।—रतनहजारा (शब्द०)। सुध सँभालना=होश सँभालना। होश में आना।

३. खबर। पता।

मुहा०—सुध लेना=पता लेना। हालचाल जानना। सुध रखना=चौकसी रखना। उ०—(क) जब प्रसमन कौ बिलंब भयौ तब सत्राजित सुध लीन्हीं।—सूर (शब्द०)। (ख) दरदहि दै जानत लला सुध लै जानत नाहिं। कहो बिचारे नेहिया तव घाले किन जाहिं।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुध[2]—वि० [सं० शुद्ध] दे० 'शुद्ध'। उ०—सुकृत नीर में नहाय ले भ्रम भार टरे सुध होय देह।—कबीर (शब्द०)।

सुध[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुधा] दे० 'सुधा'। उ०—जाके रस को इंद्रहु तरसत सुधहु न पावत दाँज।—देव स्वामी (शब्द०)।

सुधन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] परावसु गंधर्व के नौ पुत्रों में से एक जो ब्रह्मा के शाप से (कोलकल्प में) हिरण्याक्ष दैत्य के नौ पुत्रों में से एक हुआ था।

सुधन[2]—वि० [सं०] बहुत धनी। बड़ा अमीर।

सुधना(पु)—क्रि० अ० [हिं० शोधना] शुद्ध होना। ठीक होना। सूधा होना।

सुधनु—संज्ञा पुं० [सं० सुधनुस्] १. राजा कुरु का एक पुत्र जो सूर्य की पुत्री तपती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। २. गौतम बुद्ध के एक पूर्वज।

सुधन्वा[1]—वि० [सं० सुधन्वन्] १. उत्तम धनुष धारण करनेवाला। २. अच्छा धनुर्धर।

सुधन्वा[2]—संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. विश्वकर्मा। ३. आंगिरस। ४. वैराज का एक पुत्र। ५. संभूत का एक पुत्र। ६. कुरु का एक पुत्र। ७. शाश्वत का एक पुत्र। ८. विदुर। ९. एक राजा जिसे मांधाता ने परास्त किया था। १०. व्रात्य वैश्य और सवर्णा स्त्री से उत्पन्न एक जाति। ११. अनंत। शेषनाग (को०)।

सुधन्वाचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] व्रात्य वैश्य और सवर्णा स्त्री से उत्पन्न एक संकर जाति।

सुध बुध—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+धी+बुद्धि] होश हवास। चेत। ज्ञान। दे० 'सुध'।

मुहा०—सुध बुध जाती रहना=होश हवास जाता रहना। सुध बुध ठिकाने न होना=बुद्धि ठिकाने न होना। होश हवास दुरुस्त न होना। सुध बुध न रहना, सुध बुध मारी जाना=बुद्धि का लोप हो जाना। होश हवास न रहना। सुध बुध बिसराना=अचेत करना। होश में न रहने देना। उ०—कान्हा ने कैसी बाँसुरी बजाई, मेरी सुध बुध बिसराई।—गीत (शब्द०)।

सुधमना(पु)†—वि० [हिं० सुध (=होश)+मन] [वि० स्त्री० सुधमनी] जिसे होश हो। सचेत। उ०—जब कबहूँ कै सुधमनी होति तब सुनौ एहो रघुनाथ गात तकि पाएँ परिकै। भावते की मूरति को ध्यान आए ल्यावति है आँखैं मूँदि गावति है आँसुन सों भरिकै।—रघुनाथ (शब्द०)।

सुधर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक अर्हत् का नाम। (जैन)।

सुधर[2]—संज्ञा पुं० [डिं०] बया नामक पक्षी।

सुधरना—क्रि० अ० [सं० शोधन; हिं० सुधना] बिगड़े हुए का बनना। दोष या त्रुटियों का दूर होना। संशोधन होना। संस्कार होना। जैसे,—काम सुधरना, भाषा सुधरना, चाल सुधरना, घर सुधरना।

संयो० क्रि०—जाना।

सुधरवाना—क्रि० स० [हिं० सुधरना] सुधार कराना। सुधार करने के लिये किसी को प्रेरित करना।

सुधराई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुधरना+आई (प्रत्य०)] १. सुधारने की क्रिया। सुधारने का काम। सुधार। २. सुधारने की मजदूरी।

सुधराव—संज्ञा पुं० [हिं० सुधरना + आव (प्रत्य०)] सुधराई। बनाव। संशोधन।

सुधर्म[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम धर्म। पुण्य कर्तव्य। २. जैन तीर्थंकर महावीर के दस शिष्यों में से एक। ३. किन्नरों के एक राजा का नाम। ४. देवताओं का एक वर्ग (को०)।

सुधर्म[2]—वि० धर्मपरायण। धर्मनिष्ठ।

सुधर्मनिष्ठ—वि० [सं०] अपने धर्म पर दृढ़ रहनेवाला। सुधर्मी।

सुधर्मा[1]—वि० [सं० सुधर्म्मन्] अपने धर्म पर दृढ़ रहनेवाला। धर्मपरायण।

सुधर्मा[2]—संज्ञा पुं० १. गृहस्थ। कुटुंबपालक। कुटुंबी। २. क्षत्रिय। ३. दशार्णों का एक राजा। ४. दृढ़नेमि का पुत्र। ५. जैनों के एक गणाधिप। ६. एक विश्वेदेव (को०)।

सुधर्मा[3]—संज्ञा स्त्री० १. इंद्र का सभाकक्ष। देवसभा। २. द्वारकापुरी का एक नाम (को०)।

सुधर्मी[1]—वि० [सं० सुधर्मिन्] धर्मपरायण। धर्मनिष्ठ।

सुधर्मी[2]—संज्ञा स्त्री० १. देवसभा। २. द्वारकापुरी (को०)।

सुधवाना—क्रि० स० [हिं० सुधरना या सं० शोधन, हिं० सोधना का प्रेर० रूप] दोष या त्रुटि दूर कराना। शोधन कराना। ठीक कराना। दुरुस्त कराना।

सुधाँ—अव्य० [सं० सार्ध] दे० 'सुद्धाँ'। उ०—हाथी सुधाँ सब्ब हाथी परचो खेत। संग्राम में स्वामि के काम के हेत।—सूदन (शब्द०)।

सुधांग—संज्ञा पुं० [सं० सुधाङ्ग] चंद्रमा।

सुधांशु—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर।

सुधांशुतैल—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर का तेल।

सुधांशुरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] मोती। मुक्ता।

सुधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अमृत। पीयूष। अमी। २. मकरंद। ३. गंगा। ४. जल। ५. दूध। ६. रस। अर्क। ७. मूर्विका। मरोड़फली। ८. आँवला। आमलकी। ९. हर्रे। हरीतकी। १०. सेहुँड़। थूहर। ११. सरिवन। शालपर्णी। १२. बिजली। विद्युत्। १३. पृथ्वी। धरती। जमीन। १४. विष। जहर। हलाहल। १५. चूना। १६. ईंट। इष्टका। १७. गिलोय। गुड़ूची। १८. रुद्र की स्त्री। १९. एक प्रकार का वृत्त। २०. पुत्री। २१. वधू। २२. धाम। घर। २३. मधु। शहद। २४. श्वेतता। सफेदी (को०)।

सुधाई㉤—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूधा (= सीधा)] सीधापन। सिधाई। सरलता। उ०—(क) सूधी सुहाँसी सुधाकर सों मुख शोध लई वसुधा की सुधाई। सूधे स्वभाव बसै सजनी वश कैसे किए अति टेढ़े कन्हाई।—केशव (शब्द०)। (ख) सीख सुधाई तीर तैं तन गति कुटिल कमान। भावे छिल्ला बैठ तूँ भावै बिच मैदान।—रतनहजारा (शब्द०)।

सुधाकंठ—संज्ञा पुं० [सं० सुधाकण्ठ] कोकिल। कोयल।

सुधाकर—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधाकार—संज्ञा पुं० [सं०] १. चूना पोतनेवाला। सफेदी करनेवाला। २. मिस्तरी। राज। मजूर। ३. सुधाकर। चंद्रमा (को०)।

सुधाक्षार—संज्ञा पुं० [सं०] चूने का खार।

सुधाक्षालित—वि० [सं०] सफेदी किया हुआ। जिसपर चूना पुता हुआ हो।

सुधागेह㉤—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + गेह (= घर)] चंद्रमा। उ०—देह सुधागेह ताहि मृगहु मलीन कियो ताहु पर बाहु बिनु राहु गहियतु है।—तुलसी (शब्द०)।

सुधाघट—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + घट] चंद्रमा। उ०—मुकता माल नंदनंदन उर अर्ध सुधाघट कांति। तनु श्रीकंठ मेघ उज्वल अति देखि महाबल भाँति।—सूर (शब्द०)।

सुधाजीवी—संज्ञा पुं० [सं० सुधाजीविन्] वह जो चूना पोतकर जीविका निर्वाह करता हो। सफेदी करनेवाला। मजदूर।

सुधात—वि० [सं०] अत्यंत स्वच्छ (को०)।

सुधाता—वि० [सं० सुधातृ] सजानेवाला। संयोजित और सुव्यवस्थित करनेवाला।

सुधातु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सोना। स्वर्ण।

सुधातु[2]—वि० जिसके पास स्वर्ण हो। धनी।

सुधातुदक्षिण—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो यज्ञादि में सुवर्ण दक्षिणा देता हो। २. वह जिसे यज्ञयागादि में बहुत अधिक दक्षिणा मिली हो।

सुधादीधिति—संज्ञा पुं० [सं०] सुधांशु। चंद्रमा।

सुधाद्रव—संज्ञा पुं० [सं०] १. अमृत तुल्य एक प्रकार का द्रव पदार्थ। २. एक प्रकार की चटनी। ३. सफेदी (को०)।

सुधाधर[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + धर (= धारण करनेवाला)] चंद्रमा। उ०—(क) श्री रघुवीर कह्यो सुन वीर बूझ शशी किधौं राहु डरायो। नाउँ सुधाधर है विष को घर ल्याई विरंचि कलंक लगायो।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। (ख) धार सुधार सुधाधर तें सुमनो बसुधा में सुधा ढरकी परै।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुधाधर[2]—वि० [सं० सुधा + अधर] जिसके अधरों में अमृत हो। उ०—वासो मृग अंक कहै तोसों मृगनैनी सबै वासो सुधाधर तोहूँ सुधाधर मानिए।—केशव (शब्द०)।

सुधाधरण—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + धरण (= धारणकर्ता)] चंद्रमा। (डिं०)।

सुधाधवल—वि० [सं०] १. सुधा या चूने के समान सफेद। २. चूना पुता हुआ। सफेदी किया हुआ।

सुधाधवलित—वि० [सं०] दे० 'सुधाधवल'।

सुधाधाम㉤—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + धाम] चंद्रमा। उ०—धूमपुर के निकेत मानों धूमकेतु की शिखा की धूमयोनि मध्य रेखा सुधाधाम की।—केशव (शब्द०)।

सुधाधामा—संज्ञा पुं० [सं० सुधाधामन्] चंद्रमा। चाँद।

सुधाधार—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. सुधा का आधार। अमृतपात्र।

सुधाधी Ⓤ—वि० [सं० सुधा+धी] सुधा के समान। सुधायुक्त। अमृत के तुल्य। उ०—या कहि कौशिल्यहि वह आधी। देत भए नृप खीर सुधाधी।—पद्माकर (शब्द०)।

सुधाधौत—वि० [सं०] चूना किया हुआ। सफेदी किया हुआ।

सुधानजर—वि० [सं० सुधा या हिं० सूधा (=सीधी)+अ० नज़र] दयावान्। कृपालु। (डिं०)।

सुधाना Ⓤ[१]—क्रि० स० [हिं० सुध(=स्मृति)] सुध कराना। चेत कराना। स्मरण कराना। याद दिलाना।

सुधाना[२]—क्रि० स० १. शोधने का काम दूसरे से कराना। दुरुस्त कराना। ठीक कराना। २. (लग्न या कुंडली आदि) ठीक कराना। उ०—(क) पालनौ आन्यौ बनाइ, अति मन मान्यौ सुहाइ। नीकौ सुभ दिन सुधाइ झूलौ हो झुलैया। सूर०, १०।४१। (ख) लिय तुरंत ज्योतिषी बुलाई। लग्न घरी सब भाँति सुधाई।—रघुराज (शब्द०)।

सुधानिधि—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। उ०—मनहुँ सुधानिधि वर्षत घनपर अमृत धार चहुँ ओर।—सूर (शब्द०)। २. समुद्र। उ०—श्रीरामानुज उदार सुधानिधि अवनि कल्पतरु।—नाभादास (शब्द०)। ३. कपूर (को०)। ४. दंडक वृत्त का एक भेद, जिसमें ३२ वर्ण होते हैं और १६ बार क्रम से गुरु लघु आते हैं।

सुधानिधि रस—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का रस जो पारे, गंधक, सोनामक्खी और लोहे आदि के योग से बनता है। इसका व्यवहार रक्तपित्त में किया जाता है।

सुधापय—संज्ञा पुं० [सं० सुधापयस्] थूहर का दूध। स्नुहीक्षीर।

सुधापाणि—संज्ञा पुं० [सं०] धन्वंतरी। पीयूषपाणि।

विशेष—पुराणों के अनुसार समुद्रमंथन के समय धन्वंतरी जी हाथ में सुधा या अमृत लिए हुए निकले थे; इसी से उनका नाम सुधापाणि या पीयूषपाणि पड़ा।

सुधापाषाण—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद खली। सेतखरी।

सुधापूर—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत का प्रवाह या धारा।

सुधाभवन—संज्ञा पुं० [सं०] अस्तरकारी किया हुआ मकान।

सुधाभित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफेदी की हुई दीवार। २. इष्टकानिर्मित भित्ति। ईंटे की दीवाल (को०)। ३. पाँचवें मुहूर्त की आख्या या नाम (को०)।

सुधाभुज—संज्ञा पुं० [सं० सुधाभुक्] अमृत भोजन करनेवाले, देवता।

सुधाभृति—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर (को०)। ३. यज्ञ।

सुधाभोजी—संज्ञा पुं० [सं० सुधाभोजिन्] अमृत भोजन करनेवाले, देवता।

सुधाम—संज्ञा पुं० [सं० सुधामन्] १. चंद्रमा। २. एक प्राचीन ऋषि का नाम। ३. रैवतक मन्वंतर के देवताओं का एक गण। ४. पुराणानुसार क्रौंच द्वीप के अंतर्गत एक वर्ष के राजा का नाम।

सुधामय[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुधामयी] १. सुधा से भरा हुआ। अमृतस्वरूप। २. चूने का बना हुआ।

सुधामय[२]—संज्ञा पुं० १. राजभवन। राजप्रासाद। २. ईंट या प्रस्तर से बना हुआ मकान (को०)।

सुधामयूख—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधामुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुधामूली—संज्ञा स्त्री० [सं०] सालम मिस्री। सालँब मिस्री।

सुधामोदक—संज्ञा पुं० [सं०] १. यवास शर्करा। शीर खिश्त। २. कपूर। कर्पूर (को०)। ३. बंसलोचन। वंशकर्पूर। विशेष दे० 'बंसलोचन'।

सुधामोदकज—संज्ञा पुं० [सं०] तुरंजविन की खाँड़। तवराज खंड।

सुधाय—संज्ञा पुं० [सं०] सुख शांति। आराम चैन (को०)।

सुधायोनि—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधार[१]—संज्ञा पुं० [हिं० सुधरना] सुधरने की क्रिया या भाव। दोष या त्रुटियों का दूर किया जाना। संशोधन। संस्कार। इसलाह।

क्रि० प्र०—करना। होना।

सुधार[२]—वि० तीक्ष्ण धारवाला जिसकी धार या नोक अत्यंत तीक्ष्ण हो; जैसे, वाण (को०)।

सुधारक—संज्ञा पुं० [हिं० सुधार+क (प्रत्य०)] १. वह जो दोषों या त्रुटियों का संशोधन या सुधार करता हो। संस्कारक। संशोधक। २. वह जो धार्मिक, सामाजिक या राजनीतिक सुधार या उन्नति के लिये प्रयत्न या आंदोलन करता हो।

सुधारना[१]—क्रि० स० [हिं० सुधरना] १. दोष या बुराई दूर करना। बिगड़े हुए को बनाना। दुरुस्त करना। संशोधन करना। २. संस्कार करना। सँवारना। उ०—दुहु कर कमल सुधारत बाना।—मानस, ६।११।

सुधारना[२]—वि० [वि० स्त्री० सुधारनी] सुधारनेवाला। ठीक करनेवाला। (क) उ०—भगति गोपाल को सुधारनो है नर देहँ, जगत अधारनी है जगत उधारनो।—गिरधर (शब्द०)।

सुधारश्मि—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सुधारस—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुधा। अमृत। २. दुग्ध। दूध (को०)।

सुधारा Ⓤ—वि० [हिं० सूधा+आरा (प्रत्य०)] सीधा। सरल। निष्कपट। उ०—आयो घोष बड़ो व्यापारी। लादि पेखि गुणगान योग की ब्रज में आनि उतारी। फाटक दै के हाटक माँगत भोगे निपट सुधारी। इनके कहे कौन डहकावै ऐसो कौन अनारी।—सूर (शब्द०)।

सुधारू†—संज्ञा पुं० [हिं० सुधार+ऊ (प्रत्य०)] सुधारनेवाला। संस्कार करनेवाला। संशोधक।

सुधालता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की गिलोय।

सुधावदात[१]—वि० [सं० सुधा+अवदात] दे० 'सुधाधवल'।

सुधावदात[२]—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम।

सुधावर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत की वर्षा [को०]।

सुधावर्षी[1]—वि० [सं० सुधावर्षिन्] अमृत बरसानेवाला।

सुधावर्षी[2]—संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. कपूर (को०)। ३. चंद्रमा (को०)। ४. एक बुद्ध का नाम।

सुधावास—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कर्पूर। कपूर (को०)। ३. खीरा। त्रपुषी।

सुधावासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] खीरा। त्रपुषी।

सुधावृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अमृत की वर्षा। सुधा की वर्षा। उ०—सुधावृष्टि भै दुहु दल ऊपर।—मानस, ६।११३।

सुधाशर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] खली। खरी। सेतखरी।

सुधाशुभ्र—वि० [सं०] १. सुधा सदृश श्वेत। सुधासित। २. जो सुधा द्वारा शुभ्र हो। सफेदी किया हुआ [को०]।

सुधाश्रवा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + श्रवा (= प्रवाह), स्रव, स्रवण (= गिराना, बहाना)] अमृत बरसानेवाला। उ०—चल्यो तवा सो तप्त दवा दुति भूरिश्रवा भट। सुधाश्रवा सिर छत्र हवा जब सुरथ नवा पट।—गोपालचंद (शब्द०)।

सुधासदन—संज्ञा पुं० [सं० सुधा + सदन] चंद्रमा। उ०—सरद सुधासदन छबिहि निंदै बदन अरुन आयत नव नलिन लोचन चारु।—तुलसी (शब्द०)।

सुधासमुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत का समुद्र।

सुधासागर—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत का समुद्र।

सुधासिंधु—संज्ञा पुं० [सं० सुधासिन्धु] दे० 'सुधासागर' [को०]।

सुधासिक्त—वि० [सं०] अमृत से सिंचित।

सुधासित—वि० [सं०] १. सफेदी किया हुआ। चूना पुता हुआ। २. चूना या अमृत की तरह दीप्त और श्वेत (को०)।

सुधासू—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत उत्पन्न करनेवाला, चंद्रमा।

सुधासूति—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. यज्ञ। ३. कमल।

सुधास्पर्धी—वि० [सं० सुधास्पर्धिन्] अमृत की बराबरी करनेवाला। अमृत के समान मधुर। (भाषण आदि)।

सुधास्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गले के अंदर की घंटी। छोटी जीभ। कौवा। २. रुद्रवंती। रुदंती।

सुधाहर—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।।

सुधाहर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सुधाहर्तृ] गरुड़ का नाम [को०]।

सुधाहृत्—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

सुधाह्रद—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत का सरोवर।

सुधि—संज्ञा स्त्री० [सं० शुद्ध (बुद्धि) या सु + धी (= बुद्धि)] दे० 'सुध'। उ०—(क) वह सुधि आवत तोहिं सुदामा। जब हम तुम बन गए लकरियन पठए गुरु की भामा।—सूर (शब्द०)। (ख) रामचंद्र विख्यात नाम यह मुर मुनि की सुधि लीनी।—सूर (शब्द०)।

सुधित—वि० [सं०] १. सुव्यवस्थित। सुरक्षित। २. अच्छी तरह सिद्ध। जैसे, अन्न आदि (को०)। ३. सुधा या अमृत के समान। ४. सदय। कृपालु। साधु। भद्र (को०)। ५. लक्ष्य पर ठीक ठीक साधा हुआ। जैसे, वाण, कुंत आदि (को०)।

सुधिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुठार। कुल्हाड़ी। परशु। २. वज्र।

सुधी[1]—संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान् व्यक्ति। पंडित। शिक्षक।

सुधी[2]—संज्ञा स्त्री० १. सद्बुद्धि। सुबुद्धि [को०]।

सुधी[3]—वि० १. उत्तम बुद्धिवाला। बुद्धिमान्। चतुर। २ धार्मिक।

सुधीर—वि० [सं०] जिसमें यथेष्ट धैर्य हो। धैर्यवान्।

सुधुम्नानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पुष्कर द्वीप के सात खंडों में से एक। उ०—एक सुधुम्नानी कहै और मनोजल जानु। चित्ररेफ है तीसरो चौथो गणि पवमानु। पंचम जानि पुरोजवहि छठो विमल बहु रूप। विश्वधातु है सात जो यह खंडनि को रूप।—केशव (शब्द०)।

विशेष—यह शब्द संस्कृत के कोशों में नहीं मिलता।

सुधूपक—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीवेष्ट नामक गंधद्रव्य।

सुधूम्य—संज्ञा पुं० [सं०] स्वादु नामक एक गंधद्रव्य।

सुधूम्रवर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम।

सुधृति—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक राजा का नाम जो मिथिला के महावीर का पुत्र था। २. राज्यवर्धन का पुत्र।

सुधोद्भव—संज्ञा पुं० [सं०] धन्वंतरि।

विशेष—समुद्रमथन के समय धन्वंतरि सुधा लिए हुए निकले थे; इसी से इन्हें 'सुधोद्भव' कहते हैं।

सुधोद्भवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरीतकी। हर्रे। हड़।

सुधौत—वि० [सं०] १. अच्छी तरह साफ किया हुआ। धुला हुआ। स्वच्छ [को०]।

सुध्युपास्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. परमेश्वर, जो सुधी जनों के उपास्य हैं। २. एक प्रकार का राजप्रासाद। ३. कृष्ण का एक सखा। ४. बलदेव का मूसल [को०]।

सुध्युपास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. औरत। नारी। स्त्री। २. पार्वती। उमा। ३. पार्वती की एक सखी। ४. एक प्रकार का रंग।

सुनंद[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुनन्द] १. एक देवपुत्र। २. श्रीकृष्ण का एक पार्षद्। ३. बलराम का मूसल। ४. कुंजंभ दैत्य का मूसल जो विश्वकर्मा का बनाया हुआ माना जाता है। ५. बारह प्रकार के राजभवनों में से एक।

विशेष—यह सुनंद नामक राजप्रासाद राजाओं के लिये विशेष शुभकर माना गया है। कहते हैं, इसमें रहनेवाले राजा को कोई परास्त नहीं कर सकता। 'युक्तिकल्पतरु' के अनुसार इस भवन की लंबाई राजा के हाथ के परिमाण से २१ हाथ और चौड़ाई ४० हाथ होनी चाहिए।

६. एक बौद्ध श्रावक।

सुनंद[2]—वि० आनंददायक।

सुनंदक—संज्ञा पुं० [सं० सुनन्दन] शिव का एक गण।

सुनंदन—संज्ञा पुं० [सं० सुनन्दक] १. पुराणानुसार कृष्ण के एक पुत्र का नाम। २. पुरीषभीरु का एक पुत्र। ३. भूनंदन का भाई।

सुनंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुनन्दा] १. उमा। गौरी। २. उमा की एक सखी। ३. कृष्ण की एक पत्नी। ४. बाहु और बालि की माता। ५. चेदि के राजा सुबाहु की बहन। ६. सार्वभौम दिग्गज की पत्नी। ७ दुष्यंत के पुत्र भरत की पत्नी। ८. प्रतीप की पत्नी। ९. एक नदी का नाम। १०. सर्वार्थसिद्धि नंद की बड़ी स्त्री। ११. सफेद गौ। १२. गोरोचना। गोरोचन। १३. अर्कपत्री। इसरौल। १४. एक तिथि। १५. नारी। स्त्री। औरत।

सुनंदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुनन्दिनी] १. आरामशीतला नामक पत्रशाक। २. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में 'स ज स ज ग' रहते हैं। इसे प्रबोधिता और मंजुभाषिणी भी कहते हैं।

सुन†—वि०, संज्ञा पुं० [सं० शून्य] दे० 'सुन्न'।

सुनका†—संज्ञा पुं० [देश०] चौपायों का एक रोग जो उनके कंठ में होता है। गरारा। घुरकवा।

सुनकातर—संज्ञा पुं० [सं० स्वन, हिं० सोन + कातर] १. एक प्रकार का साँप।

सुनकिरवा—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + किरवा (=कीड़ा)] एक प्रकार का कीड़ा जिसके पर पन्ने के रंग के होते हैं। उ०—गोरी गदकारी परे हँसत कपोलनि गाड़। कैसी लसति गँवारि यह सुनकिरवा की आड़।—बिहारी (शब्द०)। २.† एक प्रकार का क्षुप।

सुनक्षत्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम नक्षत्र। २. एक राजा का नाम जो मरुदेव का पुत्र था। ३. निरमित्र का पुत्र।

सुनक्षत्र[2]—उत्तम नक्षत्रवाला।

सुनक्षत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कर्म मास का दूसरा नक्षत्र। २. कार्तिकेय की एक मातृका।

सुनखर्वा†—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो आश्विन के अंत और कार्तिक के प्रारंभ में होता है।

सुनगुन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + अनु + गुन] १. किसी बात का भेद। टोह। सुराग।

क्रि० प्र०—मिलना।—लगना।

२. कानाफूसी। अस्पष्ट चर्चा।

सुनजर—वि० [सं० सु + फ़ा० नज़र] दयावान्। कृपालु। (डिं०)।

सुनत[1]—संज्ञा स्त्री० [अ० सुन्नत] दे० 'सुन्नत'।

सुनत[2]—वि० [सं०] अत्यंत नम्र या झुका हुआ।

सुनति†—संज्ञा स्त्री० [अ० सुन्नत] दे० 'सुन्नत'। उ०—(क) जो तुरुक तुरुकिनी जाया। पेटै काहे न सुनति कराया।—कबीर (शब्द०)। (ख) कासिहु ते कला जाती मथुरा मसीद होती सिवाजी न होते तो सुनति होत सब की।—भूषण (शब्द०)।

सुनना—क्रि० स० [सं० श्रवण तुल० प्रा० सुनोति] १. श्रवणेंद्रिय के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना। कानों के द्वारा उनका विषय ग्रहण करना। श्रवण करना। जैसे,—फिर आवाज दो, उन्होंने सुना नहोगा।

संयो० क्रि०—पड़ना।—रखना।

मुहा०—सुनी अनसुनी कर देना = कोई बात सुनकर भी उसपर ध्यान न देना। किसी बात को टाल जाना। सुनी सुनाई = जिसे केवल सुनकर जाना गया हो, प्रत्यक्ष देखा न गया हो। जैसे, सुनी सुनाई बात।

२. किसी के कथन पर ध्यान देना। किसी की उक्ति पर ध्यानपूर्वक विचार करना। कान देना। जैसे,—कथा सुनना, पाठ सुनना, मुकदमा सुनना। ३. भली बुरी या उलटी सीधी बातें श्रवण करना। जैसे,—(क) मालूम होता है, तुम भी कुछ सुनना चाहते हो। (ख) जो एक कहेगा, वह चार सुनेगा।

सुनफा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष का एक योग।

विशेष—सूर्य के अतिरिक्त जब कोई ग्रह चंद्रमा के बाद द्वितीय स्थिति में आ बैठता है तब 'सुनफा योग' होता है।

सुनबहरा†—वि० [हिं० सुनना + बहरा] पूरी तरह सुनकर या श्रवण करके भी बधिर का सा आचरण करना। सुनकर भी न सुनने का भाव व्यक्त करना।

सुनबहरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुन्न + बहरी ?] १. एक प्रकार का रोग जिसमें पैर फूल जाता है। श्लीपद। फीलपा। २. एक प्रकार का कुष्ठ रोग जिसमें रोग से आक्रांत अंग या शरीर का भाग सुन्न हो जाता है और वहाँ स्पर्श या आघात की अनुभूति नहीं होती।

सुनय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुनीति। उत्तम नीति। २. सदाचार। सद्व्यवहार (को०)। ३. परिप्लव राजा का पुत्र। ४. ऋत का एक पुत्र। ५. खनित्र का पुत्र।

सुनयन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] मृग। हरिन।

सुनयन[2]—वि० [स्त्री० सुनयना] सुंदर आँखोंवाला। सुलोचन।

सुनयना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजा जनक की पत्नी। २. नारी। स्त्री। औरत। ३. सुंदर नेत्रोंवाली स्त्री (को०)।

सुनर—संज्ञा पुं० [सं० सु + नर] १. अर्जुन। (डिं०)। २. सुंदर पुरुष।

सुनरिया‡—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरी, सु + नरी + इया (प्रत्य०)] सुंदर नारी। सुंदर स्त्री। उ०—प्यारे की पियरिया जगत से नियरिया सुनरिया अनूठी तोरी चाल।—बलबीर (शब्द०)।

सुनरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरी] दे० 'सुनरिया'।

सुनर्द—वि० [सं०] गंभीर गर्जन या नाद करनेवाला (को०)।

सुनवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + वाई (प्रत्य०)] १. सुनने की क्रिया या भाव। २. मुकदमे आदि का पेश होकर सुना जाना। ३. किसी शिकायत, फरियाद आदि का सुना जाना। जैसे, तुम लाख चिल्लाया करो; वहाँ कुछ सुनवाई हो नहीं होगी।

सुनवैया㉃—वि० [हिं० सुनना + वैया (प्रत्य०)] १. सुननेवाला। २. सुनानेवाला। उ०—मंगल सदा ही करैं राम ह्वै प्रसन्न, सदा राम रसिकावली सुनैया सुनवैया को।—रघुराज (शब्द०)।

सुनस—वि० [सं०] सुंदर नाकवाला।

सुनसर—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का गहना।

सुनसान[2]—वि० [सं० शून्य + स्थान] १. जहाँ कोई न हो। खाली। निर्जन। जनहीन। उ०—(क) ये तेरे वनपंथ परे सुनसान

उजारू।--श्रीधर पाठक (शब्द०)। (ख) स्वामी हुए बिना सेवक के नगर मनुष्यों बिन सुनसान।--श्रीधर पाठक (शब्द०)। (ग) सुनसान कहुँ गंभीर बन कहुँ सोर वन पशु करत हैं।—उत्तररामचरित (शब्द०)। २. उजाड़। वीरान।

सुनसान[२]—संज्ञा पुं० सन्नाटा। उ०—निशा काल अतिशय अँधियारा छाय रहा सुनसान।—श्रीधर पाठक (शब्द०)।

सुनह—संज्ञा पुं० [सं०] जन्हु का एक पुत्र।

सुनहरा—वि० [हिं० सोना] [वि० स्त्री० सुनहरी] दे० 'सुनहला'।

सुनहला—वि० [हिं० सोना + हला(प्रत्य०)] [स्त्री० सुनहली] सोने के रंग का। सोने का सा। जैसे,—सुनहला काम। सुनहला रंग।

सुनाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + आई (प्रत्य०)] दे० 'सुनवाई'।

सुनाकुत, सुनाकृत—संज्ञा पुं० [सं०] काली हलदी। कचूर। कर्पूरक।

सुनाद[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. शंख। २. सुंदर नाद या ध्वनि।

सुनाद[२]—वि० सुंदर नाद या शब्दवाला।

सुनादक—संज्ञा पुं० वि० [सं०] दे० 'सुनाद'।

सुनाना—क्रि० स० [हिं० सुनना का प्रेर० रूप] १. दूसरे को सुनने में प्रवृत्त करना। कर्णगोचर कराना। श्रवण कराना। २. खरी-खोटी कहना। जैसे,—तुमने भी उसे खूब सुनाया।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।

सुनानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + आनी (प्रत्य०)] दे० 'सुनावनी'।

सुनाभ[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुदर्शन चक्र। २. मैनाक पर्वत। ३. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ४. वरुण का एक मंत्री। ५. गरुड़ का एक पुत्र। ६. पर्वत। महीधर (को०)। ७. एक प्रकार का मंत्र जिसका प्रयोग अस्त्रों पर किया जाता था।

सुनाभ[२]—वि० १. सुंदर नाभि या मध्य भागवाला।

सुनाभक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुनाभ'।

सुनाभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कटभी। करही। हरिमल।

सुनाभि—वि० [सं०] सुंदर नाभिवाला।

सुनाम—संज्ञा पुं० [सं०] यश। कीर्ति। ख्याति।

सुनाम द्वादशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एत व्रत जो वर्ष की बारहों शुक्ला द्वादशियों को किया जाता है।

विशेष—अगहन महीने को शुक्ला द्वादशी को इस व्रत का आरंभ होता है। अग्निपुराण में इसका बड़ा माहात्म्य लिखा है।

सुनामा[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुनामन्] १. कंस के आठ भाइयों में से एक। २. सुकेतु के एक पुत्र का नाम। ३. स्कंद का एक पार्षद। ४. वैनतेय का एक पुत्र।

सुनामा[२]—वि० १. यशस्वी। कीर्तिशाली। २. सुंदर नामवाला (को०)।

सुनामिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] त्रायमाणा लता। त्रायमान।

सुनामी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवक की पुत्री और वसुदेव की पत्नी।

सुनायक—संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम। २. एक दैत्य का नाम। ३. वैनतेय के एक पुत्र का नाम। ४. वह व्यक्ति जो अच्छा या योग्य नायक हो।

सुनार[१]—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णकार] [स्त्री० सुनारिन, सुनारी] सोने, चाँदी के गहने आदि बनानेवाली जाति। स्वर्णकार।

सुनार[२]—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुतिया का दूध। २. साँप का अंडा। ३. चटक पक्षी। गोरा। गौरैया।

सुनारा[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सु + नार (=नारी)] सुंदर स्त्री।

सुनारी[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनार + ई (प्रत्य०)] १. सुनार का काम। २. सुनार की स्त्री। उ०—धाइ जनी नायन नटी प्रकट परोसिन नारि। मालिन बरइन शिल्पिनी चुरहेरनी सुनारि।—केशव (शब्द०)।

सुनारी[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + नारी] सुंदर स्त्री।

सुनाल[१]—संज्ञा पुं० [सं०] रक्त कमल। लाल कमल। लामज्जक।

सुनाल[२]—वि० जिसकी नाल सुंदर हो (को०)।

सुनालक—संज्ञा पुं० [सं०] अगस्त। वकपुष्प का वृक्ष।

सुनावनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना + आवनी (प्रत्य०)] १. कहीं विदेश से किसी संबंधी आदि की मृत्यु का समाचार आना।

क्रि० प्र०—आना।

२. वह स्नान आदि कृत्य जो परदेश से किसी संबंधी की मृत्यु का समाचार आने पर होता है।

क्रि० प्र०—में जाना।

सुनाशीर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुनासीर'।

सुनास[१]—वि० [सं०] वि० 'सुनस'।

सुनासा[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदर एवं सुडौल नासिका। २. कौआ-ठोठी। काकनासा।

सुनासिक—वि० [सं०] जिसकी नाक सुंदर हो। सुंदर नाकवाला। सुनास।

सुनासिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कौआठोठी। काकनासा। २. सुंदर नासिका।

सुनासीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। उ०—सुनासीर सत सरिस सो संतत करै बिलास।—मानस, ६।१०। २. देवता। अमर।

सुनाहक(५)—क्रि० वि० [हिं० सु + फ़ा० ना + अ० हक] दे० 'नाहक'।

सुनिगूढ़—वि० [सं०] जो अत्यंत निगूढ़ हो। सुनिभृत (को०)।

सुनिग्रह—वि० [सं०] जो भली प्रकार नियंत्रित हो। २. जो सरलता से नियंत्रण के योग्य हो। दुर्निग्रह का उलटा।

सुनिद्र—वि० [सं०] जिसे अच्छी नींद आई हो। अच्छी तरह सोया हुआ। सुनिद्रित।

सुनिद्रित—वि० [सं०] दे० 'सुनिद्र'।

सुनिनद, सुनिनाद—वि० [सं०] १. सुंदर नाद या शब्द करनेवाला। २. जिसका स्वर सुंदर हो।

सुनिभृत—वि० [सं०] अत्यंत निभृत या एकांत। अत्यंत गूढ़।

सुनिमय—वि० [सं०] जो सरलता से विनिमय के योग्य हो।

सुनियत—वि० [सं०] १. सुव्यवस्थित। सुनिर्धारित। सुनिश्चित। २. जिसके रखने में सावधानी बरती गई हो।

सुनियम—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी व्यवस्था। उत्तम नियम या मर्यादा।

सुनियाना† क्रि० अ० [हिं० सुन्न + इयाना (प्रत्य०)] (फसल का) रोग से सूख जाना या मारा जाना (रुहेलखंड)।

सुनिरुहन संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का वस्तिकर्म।

सुनिरूढ वि० [सं०] जिसे ओषधि से अच्छी तरह रेचन कराया गया हो [को०]।

सुनिरूहण—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम जुलाब या रेचन। दे० 'सुनिरुहन'।

सुनिर्णिक्त—वि० [सं०] सम्यक् परिष्कार किया हुआ। अच्छी तरह प्रमृष्ट [को०]।

सुनिर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] लिंगिनी नामक वृक्ष।

सुनिर्यासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जिंगिनी वृक्ष। विशेष दे० 'जिगिन' [को०]।

सुनिश्चय संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा निश्चय। २. दृढ़ निश्चय

सुनिश्चल¹—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सुनिश्चल² वि० अचल। अटल [को०]।

सुनिश्चित¹—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम।

सुनिश्चित²—वि० दृढ़ता से निश्चय किया हुआ। भली भाँति निश्चित किया हुआ।

सुनिश्चितपुर—संज्ञा पुं० [सं०] काश्मीर का एक प्राचीन नगर।

सुनिषण्ण—संज्ञा पुं० [सं०] चौपतिया या सुसना नाम का साग। शिग्यारी। उटंगन।

विशेष—कहते हैं, यह साग खाने से अच्छी नींद आती है; इसी से इसका नाम सुनिषण्ण (जिससे अच्छी नींद आवे) पड़ा है।

सुनिषण्णक –संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुनिषण्ण'।

सुनिष्टप्त—वि० [सं०] १. जो खूब निष्टप्त किया गया हो। अच्छी तरह तपाया या गलाया हुआ। २. खूब पकाया हुआ [को०]।

सुनिस्त्रिंस—संज्ञा पुं० [सं०] तेज धारवाली तलवार।

सुनीच –संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार किसी ग्रह का किसी राशि के किसी विशेष अंश में अवस्थान। जैसे,—रवि यदि मेष और तुला राशि में हो तो नीचस्थ कहलाता है; और इसी तुला राशि के किसी विशेष अंश में पहुँच जाने पर 'सुनीच'।

सुनीत¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुद्धिमत्ता। समझदारी। २. नीतिमत्ता। ३. शिष्टता। विनम्रता (को०)। ४. एक राजा का नाम जो सुबल का पुत्र था।

सुनीत²—वि० भद्र। शिष्ट। विनम्र [को०]।

सुनीति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्तम नीति। २. राजा उत्तानपाद की पत्नी और ध्रुव की माता।

विशेष—विष्णुपुराण में लिखा है कि राजा उत्तानपाद की दो पत्नियाँ थीं—सुनीति और सुरुचि। सुरुचि को राजा बहुत चाहता था और सुनीति से बहुत घृणा करता था। सुनीति को 'ध्रुव' नामक एक पुत्र हुआ जिसने तप द्वारा भगवान् को प्रसन्न कर राजसिंहासन प्राप्त किया। विशेष दे० 'ध्रुव'।

सुनीति²—संज्ञा पुं० १. शिव। २. विदूरथ का एक पुत्र।

सुनीति³—वि० अच्छा नीतिज्ञ या नीतियुक्त [को०]।

सुनीथ¹ संज्ञा पुं० [सं०] १. कृष्ण का एक पुत्र। २. सतति का पुत्र। ३. सुषेण का एक पुत्र। ४ सुबल का एक पुत्र। ५. शिशुपाल का एक नाम। ६ एक दानव का नाम। ७. एक प्रकार का वृत्त। ८. ब्राह्मण (को०)।

सुनीथ² वि० न्यायपरायण। नीतिमान्।

सुनीथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु की पुत्री और अंग की पत्नी।

सुनील¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनार का पेड़। दाड़िम वृक्ष। २ लामज्जक। लाल कमल।

सुनील² –वि० अत्यंत नील वर्ण बहुत नील रंग।

सुनीलक—संज्ञा पुं० [सं०] १. नील भृंगराज। काला भँगरा। २ नीलकांत मणि। नीलम। ३ पियासाल का वृक्ष। नीलासन (को०)।

सुनीला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चणिका तृण। चनिका घास। २. नीलापराजिता। नीली अपराजिता। नीली कोयल। ३. अतसी। अलसी। तीसी।

सुनु—संज्ञा पुं० [सं०] जल।

सुनेत्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। २. तेरहवें मनु का एक पुत्र। ३. बौद्धों के अनुसार मार का एक पुत्र। ४. चक्रवाक। चकवा।

सुनेत्र²—वि० [वि० स्त्री० सुनेत्रा] सुंदर नेत्रोंवाला। सुलोचन।

सुनेत्रा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य के अनुसार नौ तुष्टियों में से एक।

सुनेत्रा²—वि० स्त्री० सुंदर नेत्रोंवाली। सुलोचना।

सुनैया⑮—वि० [हिं० सुनना + ऐया (प्रत्य०)] १. सुननेवाला। जो सुने। उ०—द्रौपदी विचारै रघुराज आज जाति लाज सब हैं घरैया पै न टेर को सुनैया है।—रघुराज (शब्द०)। २. सुनानेवाला।

सुनोची—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा। उ०—जरदा औ जाग जिरही से जग जाहर, जवाहर हुकुम सौं जवाहर झलक के। मंगसी मुजंनस सुनोची स्यामकर्न स्याह, सिरगा सजाए जे न मंदिर अलक के।—सूदन (शब्द०)।

सुनौ¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छी नौका या नाव।

सुनौ²—संज्ञा पुं० १. जल। २. वह जिसके पास अच्छी नौका हो [को०]।

सुन्न¹—वि० [सं० शून्य, प्रा० सुन्न] निर्जीव। स्पंदनहीन। निस्तब्ध। जड़वत्। निश्चेष्ट। निश्चल। जैसे,—ठंढ के मारे उसके हाथ पैर सुन्न हो गए। उ०—(क) यह बात सुनकर भाग्यवती सुन्न सी हो गई।—श्रद्धाराम (शब्द०)। (ख) तहाँ लगी विरहागि

नाहिं क्यों चलि कै पेखत। सुकवि सुन्न ह्वै जाय न प्यारी देखत देखत।—अंबिकादत्त (शब्द०)। (ग) निरखि कंस की छाती धड़की। सुन्न समान भई गति धड़की।—गिरधर (शब्द०)।

सुन्न[2]—संज्ञा पुं० शून्य। सिफर। उ०—(क) यथा सुन्न दस गुन्न बिन अंक गने नहिं जात।—श्रद्धाराम (शब्द०)। (ख) अगनित बढ़त उदोत लखउ इक बेंदी दीने। कह्यो सुन्न को ऐसों गुन को गनित नवीने।—अंबिकादत्त (शब्द०)।

सुन्न[3]—वि० दे० 'सुन्नसान', 'सुनसान'।

सुन्नत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुसलमानों की एक रस्म जिसमें लड़के की लिंगेंद्रिय के अगले भाग का बढ़ा हुआ चमड़ा काट दिया जाता है। खतना। मुसलमानी। २ तरीका। पद्धति। कायदा (को०)। ३. प्रकृति। स्वभाव (को०)। ४. मार्ग। राह। सरणि (को०)। ५. वह पद्धति या मार्ग जिसपर मुहम्मद चले (को०)।

सुन्नतिⓅ—संज्ञा स्त्री० [अ० सुन्नत] खतना। मुसलमानी। दे० 'सुन्नत'। उ०—(क) सकति सनेह करि सुन्नति करिए मैं न बढ़ौगा भाई।—कबीर ग्रं०, पृ० ३३१। (ख) सुन्नति किए तुरक जे होइगा औरत का क्या करिए।—कबीर ग्रं०, पृ० ३३१।

सुन्नसान—वि० [सं० शून्य+स्थान] दे० 'सुनसान'।

सुन्ना[1]—क्रि० स० [हिं० सुनना] दे० 'सुनना'।

सुन्ना[2]—संज्ञा पुं० [सं० शून्य] बिंदी। सिफर; जैसे,—(१) पर सुन्ना (०) लगाने से (१०) होता है।

सुन्नी—संज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानों का एक भेद जो चारों खलीफाओं को प्रधान मानता है। चारयारी।

सुपंख—वि० [सं० सुपङ्ख] १. सुंदर तीरों से युक्त। २. सुंदर परों से युक्त।

सुपंथ—संज्ञा पुं० [सं० सुपन्थाः] १. उत्तम मार्ग। सुमार्ग। सत्पथ। सन्मार्ग। २. सीधा रास्ता। सही रास्ता। उ०—सखहि सनेह बिबस मग भूला। कहि सुपंथ सुर बरसहि फूला।—मानस, २।२३७।

सुपकⓅ—वि० [सं० सुपक्व] अच्छी तरह पका हुआ। सुपक्व। उ०—गोपाल राइ दधि माँगत अरु रोटी। माखन सहित देहि मेरि जननी सुपक सुमंगल मोटी।—सूर (शब्द०)।

सुपक्व[1]—वि० [सं०] १. अच्छी तरह पका हुआ (फल आदि)। २. जिसे अच्छी तरह पकाया गया हो। जैसे, अन्न (को०)।

सुपक्व[2]—संज्ञा पुं० [सं०] सुगंधित आम।

सुपक्ष—वि० [सं०] जिसके सुंदर पंख हों। सुंदर पंखोंवाला।

सुपक्ष्मा—वि० [सं० सुपक्ष्मन्] जिसकी पलकें सुंदर हों। सुंदर पलकोंवाला।

सुपचⓅ—संज्ञा पुं० [सं० श्वपच] १. चांडल। डोम। उ०—तुलसी भगत सुपच भलो भजै रइनि दिन राम। ऊँचो कुल केहि काम को जहाँ न हरि को नाम।—तुलसी (शब्द०)। २. भंगी। (डिं०)।

सुपट[1]—वि० [सं०] सुंदर वस्त्रों से युक्त। अच्छे वस्त्रोंवाला।

सुपट[2]—संज्ञा पुं० सुंदर वस्त्र।

सुपठ—वि० [सं०] सुपाठ्य। जो सरलता से पढ़ा जा सके।

सुपड़ा†—संज्ञा पुं० [देश०] लंगर का अँकुड़ा जो जमीन में धँसता जाता है।

सुपतⓅ वि० [सं० सु+हिं० पत (=प्रतिष्ठा)] प्रतिष्ठायुक्त। मानयुक्त उ०—वह जूठो शशि जानि वदन विधु रच्यो विरंचि इहै री। सौंप्यो सुपत विचारि श्याम हित सु तूँ रही लटि लैरी।—सूर (शब्द०)।

सुपतिक—संज्ञा पुं० [देश०] रात को पड़नेवाला डाका (डिं०)।

सुपत्थⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुपन्थ] दे० 'सुपथ'। उ०—इत अवध में श्रीराम लच्छमन वृद्ध पितु दशरत्थ की। सेवा करत नित रहत भे गहि रीति निगम सुपत्थ की।—पद्माकर (शब्द०)।

सुपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह महिला जिसका पति खूबसूरत हो। २. सुंदर पत्नी। सुगृहिणी (को०)।

सुपत्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. तेजपत्र। तेजपत्ता। २. आदित्यपत्र। हुरहुर का एक भेद। ३ पल्लिवाह नाम की घास। ४. इंगुदी। गोंदी। हिंगोट। ५. एक पौराणिक पक्षी।

सुपत्र[2]—वि० १. सुंदर पत्तों से युक्त। २. जिसके पंख या डैने सुंदर हों। सुंदर पंखोंवाला। ३. सुंदर पक्ष या पंख से युक्त। जैसे, वाण (को०)।

सुपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] सहिंजन। शिग्रु।

सुपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रुद्रजटा। २. शतावरी। सतावर। ३. शालपर्णी। सरिवन। ४. शमी। छोंकर। सफेद कीकर। ५. पालक का साग।

सुपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] जतुका। पर्यटी।

सुपत्रित—वि० [सं०] पंखों या तीरों से युक्त। जिसमें पंख या तीर हों।

सुपत्री[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पौधा। गंगापत्री।

सुपत्री[2]—वि० [सं० सुपत्रिन्] पंखों या तीरों से भली भाँति युक्त।

सुपथ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम पथ। अच्छा रास्ता। २. सन्मार्ग। सदाचरण। ३. एक वृत्त का नाम जो एक रगण, एक नगण, एक भगण और दो गुरु का होता है।

सुपथⓅ**[2]**—वि० [सं० सु+पथ] १. समतल। हमवार। (जमीन)। उ०—किधौं हरि मनोरथ रथ की सुपथ भूमि मीनरथ मनहूँ की गति न सकति छ्वै।—केशव (शब्द०)। २. सुंदर पथ या मार्गवाला।

सुपथी[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुपथिन्] अच्छी राह। सन्मार्ग।

सुपथी[2]—वि० सन्मार्गगामी। सुपथयुक्त (को०)।

सुपथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह आहार या भोजन जो रोगी के लिये हितकर हो। अच्छा पथ्य। २. आम। ३. अच्छा पथ या मार्ग।

सुपथ्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सफेद बथुवा। बड़ा बथुवा। श्वेत चिल्ली। २. लाल बथुवा। लघु वास्तूक।

सुपद—वि० [सं०] सुंदर पैरोंवाला।

सुपद— वि० [सं०] १. सुंदर पैरोंवाला । २. तेज चलनेवाला । ३. सुंदर पद, शब्द या वाक्ययुक्त । †४. पद के अनुकूल । वाजिब । उचित ।

सुपद्मा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बच । बचा ।

सुपनंतर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्नान्तर] निद्रा या स्वप्न की अवस्था । उ०—सुपनंतर की प्यास ज्यौं भजै मही किहि भंति । जब दैहौं तब पूजिहै मो मन मझझह खंति ।—पृ० रा०, १७।२७ ।

सुपन†—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न] दे० 'स्वप्न' । उ०—(क) सुपन सुफल दिल्ली कथा कही चंद बरदाय ।- पृ० रा०, ३।५८ । (ख) नित के जागत मिटि गयो वा सँग सुपन मिलाप । चित्र दरशहू कों लग्यों आँखिन आँसू पाप ।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०) । (ग) आज मैं निहारे कारे कान्ह कों सुपन बीच उठि कै सकारे जमुना पै जल कों गई । तबही तें दीनद्याल ह्वै रही मनीखा लटू एरी भटू मेरी भटभेटी मग मैं भई ।—दीनदयाल (शब्द०) ।

सुपनक—वि० [सं० स्वप्न] स्वप्न देखनेवाला । जिसे स्वप्न दिखाई देता हो ।

सुपना—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न] दे० 'स्वप्न' । उ०—तहाँ भूप देख्यो अस सुपना । पकरचौ पैर गादरी अपना ।—निश्चल (शब्द०) ।

सुपनाना(पु)[१]—क्रि० स० [हिं० सुपना या सं० स्वप्नायते] स्वप्न देना । स्वप्न दिखाना । (क्व०) । उ०—बिह्वल तन मन चकित भई सुनि सा प्रतच्छ सुपनाए । गदगद कंठ सूर कोशलपुर सोर सुनत दुख पाए ।—सूर (शब्द०) ।

सुपनाना[२]—क्रि० अ० स्वप्न देखना । सपना देखना ।

सुपरकास†—संज्ञा पुं० [सं० सुप्रकाश] ताप । गरमी । (डिं०) ।

सुपरडंट—संज्ञा पुं० [अं० सुपरिंटेंडेंट] दे० 'सुपरिंटेंडेंट' ।

सुपरण—संज्ञा पुं० [सं० सुपर्ण] दे० 'सुपर्ण' ।

सुपरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुपर्ण, हिं० सुपरण] दे० 'सुपर्ण' ।

सुपरमतुरिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों की एक देवी का नाम ।

सुपररायल—संज्ञा पुं० [अं०] छापेखाने में कागज आदि की एक नाप जो २२ इंच चौड़ी और २९ इंच लंबी होती है ।

सुपरवाइजर—संज्ञा पुं० [अं०] वह जो किसी काम की देखभाल या निगरानी करता हो । निरीक्षण करनेवाला । निगरानी करनेवाला ।

सुपरस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुस्पर्श] दे० 'स्पर्श' । उ०—राम सुपरस मय कौतुक निरखि सखी सुख लूटै ।—सूर (शब्द०) ।

सुपरिंटेंडेंट—संज्ञा पुं० [अं०] निरीक्षण करनेवाला । निगरानी करनेवाला । प्रधान निरीक्षक । जैसे,—पुलिस विभाग का सुपरिंटेंडेंट, तार विभाग का सुपरिंटेंडेंट ।

यौ०—सुपरिंटेंडेंट पुलिस = जिले का प्रधान पुलिस अधिकारी ।

सुपरीक्षित—वि० [सं०] जो अच्छी तरह जाँचा गया हो [को०] ।

सुपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १. गरुड़ । २. मुरगा । ३. पक्षी । चिड़िया । ४. किरण । ५. विष्णु । ६. एक असुर का नाम । ७. देवगंधर्व । ८. एक पर्वत का नाम । ९. घोड़ा । अश्व । १०. सोम । ११. वैदिक मंत्रों की एक शाखा का नाम । १२. अंतरिक्ष का एक पुत्र । १३. सेना की एक प्रकार की व्यूहरचना । १४. नागकेसर । नागपुष्प । १५. अमलतास । स्वर्णपुष्प । १६. ज्ञानस्वरूप (को०) । १७. कोई दिव्य पक्षी (को०) । १८. सुंदर पत्र या पत्ता ।

विशेष—सुंदर किरणों से युक्त होने के कारण इस शब्द का प्रयोग चंद्रमा और सूर्य के लिये भी होता है ।

सुपर्ण[२]—वि० [वि० स्त्री० सुपर्णा, सुपर्णी] १. सुंदर दलों या पत्तोंवाला । २. सुंदर परोंवाला ।

सुपर्णक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. गरुड़ या कोई दिव्य पक्षी । २. अमलतास । स्वर्णपुष्प । आरग्वध । ३. सतवन । सतोना । सप्तपर्ण ।

सुपर्णक[२]—वि० १. सुंदर पत्तोंवाला । २. सुंदर पंखोंवाला ।

सुपर्णकुमार संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के एक देवता ।

सुपर्णकेतु संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु ।

विशेष—विष्णु भगवान् की ध्वजा या केतु में गरुड़ जी विराजते हैं, इसी से विष्णु का नाम सुपर्णकेतु पड़ा ।

२. श्रीकृष्ण ।

सुपर्णधातु – संज्ञा पुं० [सं०] एक दैत्य का नाम ।

सुपर्णराज—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षिराज । गरुड़ ।

सुपर्णसद[१]—वि० [सं०] पक्षी पर चढ़नेवाला ।

सुपर्णसद[२]—संज्ञा पुं० विष्णु ।

सुपर्णांड—संज्ञा पुं० [सं० सुपर्णाण्ड] शूद्रा माता और सूत पिता से उत्पन्न पुत्र ।

सुपर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पद्मिनी । कमलिनी । २. गरुड़ की माता का नाम । ३. एक नदी का नाम ।

सुपर्णाख्य संज्ञा पुं० [सं०] नागकेसर । नागपुष्प ।

सुपर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वर्ण जीवंती । पीली जीवंती । २. रेणुका बीज । ३. पलाशी । ४. शालपर्णी । सरिवन । ५. बकुची । बाकुची ।

सुपर्णी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गरुड़ की माता । सुपर्णा । २. मादा चिड़िया । ३. कमलिनी । पद्मिनी । ४. एक देवी जिसका उल्लेख कद्रु के साथ मिलता है । (इसे कुछ लोग छंदों की माता या वाग्देवी भी मानते हैं) । ५. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक । ६. रात्रि । रात । ७. पलाशी । ८. रेणुका । रेणुक बीज ।

सुपर्णी[२]—संज्ञा पुं० [सं० सुपर्णिन्] गरुड़ ।

सुपर्णीतनय—संज्ञा पुं० [सं०] सुपर्णी के पुत्र, गरुड़ ।

सुपर्णेय—संज्ञा पुं० [सं०] सुपर्णी के पुत्र, गरुड़ ।

सुपर्यवदात—वि० [सं०] अत्यंत स्वच्छ, साफ [को०] ।

सुपर्याप्त—वि० [सं०] १. सम्यक् प्रशस्त । सुविस्तृत । सावकाश । २. अच्छी तरह युक्त । पूर्णतः उपयुक्त या ठीक [को०] ।

सुपर्व[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुपर्व्वन्] १. देवता। २. पर्व। शुभ मुहूर्त। शुभ काल। ३. बाँस। वंश। ४. वाण। तीर। ५. धूम्र। धुआँ। ६. विशेष प्रकार की चांद्र तिथि या दिवस—अमावास्या और पूर्णिमा तथा प्रत्येक पक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी (को०)।

सुपर्व[2]—[सं०] १. सुंदर जोड़ोंवाला। जिसका जोड़ या गाँठें सुंदर हों। २. सुंदर पर्व या अध्यायवाला (ग्रंथ)।

सुपर्वा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत दूर्वा। सफेद दूब।

सुपर्वा[2]—संज्ञा पुं०, वि० [सं० सुपर्वन्] दे० 'सुपर्व'।

सुपलायित—वि० [सं०] १. युक्तिपूर्वक हट जाना या हटा देना। २. जो सर पर पैर रखकर भाग जाय [को०]।

सुपवित्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक वृत्त या छंद।

सुपश्चात्—अव्य० [सं०] बहुत देर के बाद। बहुत रात बीतने पर।

सुपह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सु + प्रभु ?] राजा। (डिं०)।

सुपाकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आम्रहरिद्रा। आँबा हलदी। आमिया हलदी।

सुपावत—संज्ञा पुं० [सं०] विड्लवण। बिरिया या साँचर नोन। कटीला नमक।

सुपाठ्य—वि० [सं०] जो पढ़ने में सुगम हो।

सुपात्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो किसी कार्य के लिये योग्य या उपयुक्त हो। सुयोग्य व्यक्ति। जैसे,—सुपात्र को दान देना। सुपात्र को कन्या देना। २. अच्छा पात्र। अच्छा बर्तन (को०)।

सुपात्र[2]—वि० उपयुक्त। योग्य। अधिकारी [को०]।

सुपाद—वि० सुंदर चरणोंवाला [को०]।

सुपान—वि० [सं०] पीने में सुखद। पीने के योग्य [को०]।

सुपार—वि० [सं०] सहज में पार होने योग्य। जिसे पार करने में कोई कठिनता न हो। २. लक्ष्य या सफलता की ओर अग्रसर करनेवाला (को०)। ३. जल्दी जानेवाला। शीघ्रतापूर्वक गुजर जानेवाला (को०)।

सुपारक्षत्र—संज्ञा पुं० [सं०] अपने क्षत्र या राज्य को शीघ्र पार कर जानेवाला (वरुण) [को०]।

सुपारग[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शाक्य मुनि।

सुपारग[2]—वि० उत्तम रूप से पार करनेवाला। अत्यंत पारग।

सुपारण—वि० [सं०] जो पाठ या पारायण करने में सुगम हो।

सुपारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य के अनुसार नौ तुष्टियों में से एक।

सुपारी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुप्रिय] नारियल की जाति का एक पेड़। कसैली। छालिया। डली। पुंगीफल।

विशेष—यह वृक्ष ४० से १०० फुट तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते नारियल के समान ही झाड़दार और एक से दो फुट तक लंबे होते हैं। सींका ४–६ फुट लंबा होता है। इसमें छोटे छोटे फूल लगते हैं। फल १॥–२ इंच के घेरे में गोलाकार या अंडाकार होते हैं और उनपर नारियल के समान ही छिलके होते हैं। इसके पेड़ बंगाल, आसाम, मैसूर, कनाड़ा, मालाबार तथा दक्षिण भारत के अन्य स्थानों में होते हैं। सुपारी (फल) टुकड़े करके पान के साथ खाई जाती है। यों भी लोग खाते हैं। यह औषध के काम में भी आती है। वैद्यक के अनुसार यह भारी, शीतल, रूखी, कसैली, कफ-पित्त-नाशक, मोहकारक, रुचिकारक दुर्गंध तथा मुँह की निरसता दूर करनेवाली है।

पर्या०—घोंटा। पूग। क्रमुक। गुवाक। खपुर। सुरंजन। पूग वृक्ष। दीर्घपादप। वल्कतरु। दृढ़वल्क। चिक्वण। पूगी। गोपदल। राजताल। छटाफल। क्रमु। कुमुकी। अकोट। तंतुसार।

यौ०—चिकनी सुपारी = एक प्रकार की बनाई हुई सुपारी। विशेष दे० 'चिकनी सुपारी'।

मुहा०—सुपारी लगना = सुपारी का कलेजे में अटकना। सुपारी खाते समय, कभी कभी पेट में उतरते समय अटक जाती है। इसी को सुपारी लगना कहते हैं। उ०—राधिका झाँकि झरोखन ह्वै कवि केशव रीझि गिरे सुबिहारी। सोर भयो सकुचे समुझे हरवाहि कह्यो हरि लागि सुपारी।—केशव (शब्द०)।

२. लिंग का अग्र भाग जो प्रायः सुपारी (फल) के आकार का होता है। (बाजारू)।

सुपारी का फूल—संज्ञा पुं० [हिं० सुपारी + फूल] मोचरस या सेमर का गोंद।

सुपारी पाक—संज्ञा पुं० [हिं० सुपारी + सं० पाक] एक पौष्टिक औषध।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—पहले आठ टके भर चिकनी सुपारी का चूर्ण आठ टके भर गौ के घी में मिलाकर तीन बार गाय के दूध में डालकर धीमी आँच में खोवा बनाते हैं। फिर बंग, नागकेसर नागरमोथा, चंदन, सोंठ, पीपल, काली मिर्च, आँवला, कोयल के बीज, जायफल, धनिया, चिरौंजी, तज, पत्रज, इलायची, सिंघाड़ा, वंशलोचन, दोनों जीरे (प्रत्येक पाँच पाँच टंक) इन सब का महीन कपड़छान चूर्ण उक्त खोवे में मिलाकर ५० टंक भर मिस्री की चाशनी में डालकर एक टके भर की गोलियाँ बना ली जाती हैं। एक गोली सबेरे और एक गोली संध्या को खाई जाती है। इसके सेवन से शुक्रदोष, प्रमेह, प्रदर, जीर्ण ज्वर, अम्लपित्त, मंदाग्नि और अर्श का निवारण होकर शरीर पुष्ट होता है।

सुपार्श्व[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. परास पीपल। गजदंड। गर्दभांड। २. पाकर। प्लक्ष वृक्ष। ३. रुक्मरथ का एक पुत्र। ४. श्रुतायु का पुत्र। ५. दृढ़नेमि का पुत्र। ६. एक पर्वत का नाम। ७. एक राक्षस का नाम। ८. संपाति (गिद्ध) का बेटा। ९. देवी भागवत के अनुसार एक पीठस्थान। यहाँ की देवी का नाम नारायणी है। १४. जैनियों के २४ जिनों या तीर्थंकरों में से सातवें तीर्थंकर। १५. सुंदर पार्श्व (को०)।

सुपार्श्व[2]—वि० सुंदर पार्श्ववाला।

सुपार्श्वक—संज्ञा पुं० [सं०] १. चित्रक के एक पुत्र का नाम। २. भावी उत्सर्पिणी के तीसरे अर्हत् का नाम। ३. श्रुतायु का एक पुत्र। ४. गर्दभांड वृक्ष। परास पीपल [को०]।

सुपालि—वि० [सं०] ज्ञात । प्रतिबोधित [को०] ।

सुपास—संज्ञा पुं० [देश०] सुख । आराम । सुभीता । उ०—(क) चलौ बसी वृंदाबन माहीं । सकल सुपास सहित सो आहीं ।—विश्राम (शब्द०) । (ख) जाया ताकी सवन निहारी । बैठा सिमिटि सुपास बिचारी ।—विश्राम (शब्द०) । (ग) यात्रियों के लिये सब तरह का सुपास और आराम है ।—गदाधर सिंह (शब्द०) ।

सुपासी—वि० [हिं० सुपास + ई (प्रत्य०)] १. सुख देनेवाला । आनंददायक । उ०—(क) बालक सुभग देखि पुरबासी । होत भए सब तासु सुपासी ।—रघुराज (शब्द०) । (ख) षोडश भक्त अनन्य उपासी । पयहारी के शिष्य सुपासी । रघुराज (शब्द०) । २. सुखी । सुपास युक्त । सुखयुक्त । उ०—कहत पुरान रची केशव निज कर करतूति कलासी । तुलसी बसि हरपुरी राम जपु जो भयो चहै सुपासी ।—तुलसी ग्रं०, पृ० ४६५ ।

सुपिंगला—संज्ञा स्त्री० [सं० सुपिङ्गला] १. जीवंती । डोडी शाक । २. ज्योतिष्मती । मालकंगनी ।

सुपीड़न—संज्ञा पुं० [सं० सुपीडन] १. अंगमर्दन । शरीर दबाना । मालिश । चंपी । २. जोर से दबाना (को०) ।

सुपीत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. गाजर । गर्जर । २. पीली कटसरैया । पीत झिंटी । ३. पीतसार या चंदन । ४. ज्योतिष में पाँचवें मुहूर्त्त का नाम ।

सुपीत[2]—वि० १. उत्तम रूप से पीया या पान किया हुआ । २. बिलकुल पीला । गहरा पीला ।

सुपीन—वि० [सं०] बहुत मोटा या बड़ा ।

सुपीवा—वि० [सं० सुपीवन्] अच्छी तरह पीनेवाला [को०] ।

सुपुंख—वि० [सं० सुपुङ्ख] जिसमें भली प्रकार पंख लगे हों [को०] ।

सुपुंसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति सुपुरुष हो ।

सुपुट[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोलकंद । चमार आलू । २. विष्णुकंद ।

सुपुट[2]—वि० सुंदर पुट या नथुनोंवाला [को०] ।

सुपुटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवती । वनमल्लिका ।

सुपुत्र[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुपुत्र] १. जीवक वृक्ष । २. उत्तम पुत्र ।

सुपुत्र[2] वि० जिसका पुत्र सुंदर और उत्तम हो । अच्छे पुत्रवाला ।

सुपुत्रिका[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] जतुका लता । पपड़ी ।

सुपुत्रिका[2]—वि० सुंदर या उत्तम पुत्रवाली ।

सुपुर—संज्ञा पुं० [सं०] सुदृढ़ दुर्ग ।

सुपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंदर पुरुष । २. सत्पुरुष । सज्जन । भलामानस ।

सुपुर्द—संज्ञा पुं० [फ़ा०] दिया हुआ । सौंपा हुआ । हवाले किया हुआ ।

सुपुर्दगी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सुपुर्द करने का भाव । सुपुर्द करना ।

सुपुष्करा†—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्थल कमलिनी । स्थल पद्मिनी ।

सुपुष्प[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. लौंग । लवंग । २. आहुल्य । तरवट । तरवड । ३. प्रपौंडरीक । पुंडेरिया । पुंडेरी । ४. परिषाश्वत्थ । परास पीपल । ५. मुचकुंद वृक्ष । ६. शहतूत । तूत । ७. ब्रह्मदारु । ८. पारिभद्र । फरहद । ६. शिरीष । सिरिस । १०. हरिद्रु । हलदुआ । ११. बड़ी सेवती । राजतरुणी । १२. श्वेतार्क । सफेद आक । १३. देवदारु । देवदार । १४. स्त्री का रज (को०) ।

सुपुष्प[2]—वि० सुंदर पुष्पों या फूलोंवाला । जिसमें सुंदर फूल हों ।

सुपुष्पक—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिरीष वृक्ष । सिरिस । २. मुचकुंद । ३. श्वेतार्क । सफेद आक । ४. हरिद्रु । हलदुआ । ५. गर्दभांड । परास पीपल । ६. राजतरुणी । बड़ी सेवती ।

सुपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोशातकी । तरोई । तुरई । २. द्रोणपुष्पी । गूमा । ३. शतपुष्पा । सौंफ । ३. शतपत्री । सेवती ।

सुपुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का विधारा । जीर्णदारु । २. शतपुष्पी । सौंफ । ३. मिश्रेया । सोआ । ४. पाटला । पाढ़र । ५. माहिषवल्ली । पाताल गारुड़ी । ६. शतपुष्पी । बनसनई ।

सुपुष्पित—वि० [सं०] जो अच्छी तरह पुष्पयुक्त हो । जिसमें खूब फूल खिले हों [को०] ।

सुपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्वेत अपराजिता । सफेद कोयल लता । २. शतपुष्पी । सौंफ । ३. मिश्रेया । सोआ । ४. कदली । केला । ५. द्रोणपुष्पी । गूमा । ६. वृद्धदारु । विधारा ।

सुपूत[1]—वि० [सं०] अत्यंत पूत या पवित्र ।

सुपूत[2]—वि० [सं० सु + पुत्र; प्रा० पुत्त, हिं० पूत] अच्छा पुत्र । सुपुत्र । सपूत ।

सुपूती—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुपूत + ई (प्रत्य०)] १. सुपूत होने का भाव । सपूतपन । उ०—करे सुपूती सोइ सुत ठीको ।—कबीर (शब्द०) । २. अच्छे पुत्रवाली स्त्री ।

सुपूर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] बीजपूर । बिजौरा नीबू ।

सुपूर[2]—वि० सहज में पूर्ण होने या भरा जाने योग्य ।

सुपूरक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अगस्त । बकवृक्ष । २. बिजौरा नीबू ।

सुपेत†—वि० [फ़ा० सुफ़ेद] दे० 'सफेद' ।

सुपेती—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुफ़ेदी] १. दे० 'सफेदी' । २. बिछाने की चादर या तोशक । उ०—सुभग सुरभि पय फेनु समाना । कोमल कलित सुपेती नाना ।—मानस, १।३५६ ।

सुपेद वि [फ़ा० सुफ़ेद] दे० 'सफेद' ।

सुपेदी†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुफ़ेदी] १. सफेदी । उज्वलता । २. ओढ़ने की रजाई । ३. बिछाने की तोशक । ४. बिछौना । बिस्तर ।

सुपेली—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूप + एली (प्रत्य०)] १ छोटा सूप । २. दे० 'सुपलिया' ।

सुपेश—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम बुना हुआ वस्त्र । बारीक बुना हुआ कपड़ा [को०] ।

सुपेशल—वि० [सं०] अत्यंत सलोना या श्लक्ष्ण [को०] ।

सुपेशस्—वि० [सं०] सलोना। अत्यंत सुंदर [को०]।

सुपैदा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुफ़ैदह्] दे० 'सफेदा'।

सुपोष—वि० [सं०] जो सुगमता से पालने पोसने योग्य हो [को०]।

सुप्त¹—वि० [सं०] १. सोया हुआ। निद्रित। शयित। २. सोने के लिये लेटा हुआ। ३. ठिठुरा हुआ। ४. बंद। मुँदा हुआ। मुद्रित। जैसे—फूल। ५. अकर्मण्य। बेकार। ६. सुस्त। ७. सुन्न। संज्ञा रहित (को०)। ८. अविकसित। जिसका विकास न हुआ हो। जैसे, शक्ति (को०)।

सुप्त²—संज्ञा पुं० गहरी नींद। गाढ़ी निद्रा।

सुप्तक—संज्ञा पुं० [सं०] निद्रा। नींद।

सुप्तघातक—वि० [सं०] १. निद्रित अवस्था में हनन या बध करनेवाला। २. हिंस्र। खूँखार।

सुप्तघ्न¹—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस का नाम।

सुप्तघ्न²—वि० दे० 'सुप्तघातक'।

सुप्तच्युत—वि० [सं०] जो नींद के कारण नीचे गिर पड़ा हो [को०]।

सुप्तजन—संज्ञा पुं० [सं०] १. अर्धरात्रि (इस समय प्रायः लोग सोए रहते हैं)। २. सुप्त आदमी। सोया हुआ आदमी (को०)।

सुप्तज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न।

विशेष—निद्रितावस्था में जो स्वप्न दिखाई देता है, वह जाग्रत अवस्था के समान ही जान पड़ता है; इसी से उसे सुप्तज्ञान कहते हैं।

सुप्तता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुप्त होने का भाव। २. निद्रा। नींद।

सुप्तत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुप्तता'।

सुप्तत्वक्—वि० [सं० सुप्तत्वच्] जिसके अंग सुन्न हों। जिसे लकवा मार गया हो [को०]।

सुप्तप्रबुद्ध—वि० [सं०] जो अभी सोकर उठा हो।

सुप्तप्रलपित—संज्ञा पुं० [सं०] निद्रितावस्था में होनेवाला प्रलाप। सोए सोए बकना या बर्राना।

सुप्तमांस—वि० [सं०] संज्ञाशून्य। चेतनाशून्य। सुन्न। निश्चेष्ट।

सुप्तमाली—संज्ञा पुं० [सं० सुप्तमालिन्] पुराणानुसार तेईसवें कल्प का नाम।

सुप्तमीन—वि० [सं०] तालाब जिसमें मछलियाँ सोई हों [को०]।

सुप्तवाक्य—संज्ञा पुं० [सं०] निद्रित अवस्था में कहे हुए शब्द या वाक्य।

सुप्तविग्रह—वि० [सं०] १. निद्रित। सोया हुआ। २. जिसका विग्रह या शरीर निद्रा की तरह हो। कृष्ण के लिये प्रयुक्त विशेषण [को०]।

सुप्तविज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] स्वप्न। सुपना। ख्वाब।

सुप्तविनिद्रक—वि० [सं०] निद्रा त्याग करनेवाला। जाग्रत होनेवाला। जागनेवाला [को०]।

सुप्तस्थ—वि० [सं०] निद्रित। सोया हुआ।

सुप्तस्थित—वि० [सं०] दे० 'सुप्तस्थ'।

सुप्तांग—संज्ञा पुं० [सं० सुप्ताङ्ग] वह अंग जिसमें चेष्टा न हो। निश्चेष्ट अंग।

सुप्तांगता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुप्ताङ्गता] सुप्तांग का भाव। अंगों की निश्चेष्टता।

सुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निद्रा। नींद। २. निदास। उँघाई। ३. अंग की निश्चेष्टता। सुप्तांगता। ४. प्रत्यय। विश्वास। एतबार। ५. सपना। स्वप्न (को०)।

सुप्तोत्थित—वि० [सं०] निद्रा से जागरित। जो अभी अभी सोकर उठा हो।

सुप्रकाश—वि० [सं०] १. अत्यंत प्रकाशित। २. अत्यंत गोचर। प्रत्यक्ष। ३. विख्यात। प्रसिद्ध [को०]।

सुप्रकेत—वि० [सं०] १. ज्ञानवान्। बुद्धिमान। २. जो अत्यंत सावधान हो (को०)।

सुप्रचार—वि० [सं०] १. उचित मार्ग पर चलनेवाला। २. भला दिखाई पड़नेवाला [को०]।

सुप्रचेता—वि० [सं० सुप्रचेतस्] बहुत बुद्धिमान्। बहुत समझदार।

सुप्रज—वि० [सं०] दे० 'सुप्रजा'।

सुप्रजा¹—वि० [सं० सुप्रजस्] उत्तम और बहुत संतान से युक्त। उत्तम और अधिक संतानवाला।

सुप्रजा²—संज्ञा स्त्री० १. उत्तम संतान। अच्छी औलाद। २. उत्तम प्रजा। अच्छी रिआया।

सुप्रजात—वि० [सं०] बहुत सी संतानोंवाला। जिसके बहुत से बालबच्चे हों।

सुप्रज्ञ—वि० [सं०] बहुत बुद्धिमान्।

सुप्रज्ञान—वि० [सं०] जिसका प्रज्ञान या बोध सरलता से हो सके [को०]।

सुप्रतर—वि० [सं०] सहज में पार होने योग्य (नदी आदि)।

सुप्रतर्क—संज्ञा पुं० [सं०] युक्तियुक्त एवं प्रौढ़ विचार [को०]।

सुप्रतर्दन—संज्ञा [सं०] एक राजा।

सुप्रतार—वि० [सं०] दे० 'सुप्रतर'।

सुप्रतिकार—वि० [सं०] जिसका सरलता से प्रतिकार हो सके [को०]।

सुप्रतिज्ञ—वि० [सं०] जो अपनी प्रतिज्ञा से न हटे। दृढ़प्रतिज्ञ।

सुप्रतिपन्न—वि० [सं०] सदाचारी। धार्मिक [को०]।

सुप्रतिभ—वि० [सं०] प्रतिभासंपन्न। प्रखर प्रतिभावाला।

सुप्रतिभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मदिरा। मद्य। शराब। २. अच्छी या सुंदर प्रतिभा (को०)।

सुप्रतिम—संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा का नाम।

सुप्रतिष्ठ¹—वि० [सं०] १. उत्तम प्रतिष्ठावाला। जिसकी लोग खूब प्रतिष्ठा या आदर संमान करते हों। २. बहुत प्रसिद्ध। सुविख्यात। मशहूर। ३. सुंदर टाँगों या पैरोंवाला। ४. दृढ़ता से स्थित रहनेवाला (को०)।

सुप्रतिष्ठ²—संज्ञा पुं० १. सेना की एक प्रकार की व्यूहरचना। २. एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)।

सुप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पाँच वर्ण होते हैं। इनमें से तीसरा और पाँचवाँ गुरु तथा पहला, दूसरा और चौथा वर्ण लघु होता है। २. मंदिर या प्रतिमा आदि की स्थापना। ३. स्कंद की एक मातृका का नाम। ४. अभिषेक। ५. उत्तम स्थिति। ६. सुनाम। प्रसिद्धि। शोहरत। ७. उत्तम प्रतिष्ठा। स्थापना।

सुप्रतिष्ठित[१]—वि० [सं०] १. उत्तम रूप से प्रतिष्ठित। २. दृढ़तापूर्वक स्थित या स्थापित (को०)। सुंदर टाँगोंवाला। ३. अभिषिक्त (को०)। ४. विख्यात। प्रसिद्ध (को०)।

सुप्रतिष्ठित[२]—संज्ञा पुं० १. गूलर। उदुंबर। २. एक प्रकार की समाधि। ३. एक देवपुत्र (को०)।

सुप्रतिष्ठितचरण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि। सुप्रतिष्ठित समाधि।

सुप्रतिष्ठितचरित्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

सुप्रतिष्ठिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुप्रतिष्ठितासन—संज्ञा पुं० [सं०] समाधि का एक भेद।

सुप्रतिष्णात—वि० [सं०] १. किसी विषय का अच्छा जानकार या पंडित। निष्णात। २. जिसकी खूब ऊहापोह की गई हो। आलोचित। सुनिश्चित। ३. सुस्नात। भली प्रकार शुद्ध किया हुआ।

सुप्रतीक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. कामदेव। ३. ईशान कोण का दिग्गज। ४. विश्वसनीय व्यक्ति (को०)। ५. एक यक्ष (को०)।

सुप्रतीक[२]—वि० १. सुरूप। सुंदर। खूबसूरत। २. साधु। सज्जन। ३. सुंदर स्कंधवाला (को०)।

सुप्रतीकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुप्रतीक नामक दिग्गज की स्त्री।

सुप्रदि—वि० [सं०] बहुत उदार। बड़ा दानी। दाता।

सुप्रदर्श—वि० [सं०] जो देखने में सुंदर हो। प्रियदर्शन। खूबसूरत।

सुप्रदोहा—वि० [सं०] सहज में दुही जानेवाली (गाय)। जिस (गाय) को दूहने में कठिनाई न हो।

सुप्रधृष्य—वि० [सं०] जो सहज में अभिभूत या पराजित किया जा सके। आसानी से जीता जानेवाला।

सुप्रबुद्ध[१]—संज्ञा पुं० [सं०] शाक्य बुद्ध।

सुप्रबुद्ध[२]—वि० जिसे यथेष्ट बोध या ज्ञान हो। अत्यंत बोधयुक्त।

सुप्रभ[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक दानव का नाम। २. जैनियों के नौ बलों (जिनों) में से एक। ३. पुराणानुसार शाल्मली द्वीप के अंतर्गत एक वर्ष।

सुप्रभ[२]—वि० १. सुंदर प्रभा या प्रकाशयुक्त। २. सुंदर। सुरूप। खूबसूरत।

सुप्रभदेव—संज्ञा पुं० [सं०] शिशुपालवध महाकाव्य के प्रणेता महाकवि माघ के पितामह का नाम।

सुप्रभा[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बकुची। सोमराजी। २. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। ३. स्कंद की एक मातृका का नाम। ४. सात सरस्वतियों में से एक। ५. सुंदर प्रकाश।

सुप्रभा[२]—संज्ञा पुं० एक वर्ष का नाम जिसके देवता सुप्रभ माने जाते हैं।

सुप्रभात—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंदर प्रभात या प्रातःकाल। २. मंगलसूचक प्रभात। ३. प्रातःकाल पढ़ा जानेवाला स्तोत्र।

सुप्रभाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुराणानुसार एक नदी का नाम। २. वह रात जिसका प्रभात सुंदर हो।

सुप्रभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १. जिसमें सब प्रकार की शक्तियाँ हों। सर्वशक्तिमान्। २. सर्वसामर्थ्य। अनंतशक्तियुक्त होना। सर्वशक्तिता (को०)।

सुप्रमय—वि० [सं०] जो सरलता से मापा जा सके। जो सरलतापूर्वक मापने योग्य हो।

सुप्रमाण—वि० [सं०] बड़े आकार का। विशाल (को०)।

सुप्रयुक्त—वि० [सं०] १. सुपठित। २. सुंदर ढंग से चलाया हुआ। सुचालित। ३. सुविचारित योजनावाला (षड्यंत्र आदि)। ४. जो सुव्यवस्थित हो। ५. भली प्रकार संबद्ध (को०)।

सुप्रयुक्तशर—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बाण चलाने में सिद्धहस्त हो। अच्छा धनुर्धर।

सुप्रयोग[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंदर प्रबंध। उत्तम व्यवस्था। २. उत्तम उपयोग करना। अच्छे ढंग से काम में लाना। ३. निकट संपर्क। ४. दक्षता। निपुणता। पाटव (को०)।

सुप्रयोग[२]—वि० १. जिसका प्रयोग या अभिनय अच्छे ढंग से हो। २. जो ठीक ढंग से प्रयुक्त किया गया हो।

सुप्रयोगविशिख—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुप्रयुक्तशर'।

सुप्रयोगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वायु पुराण के अनुसार दाक्षिणात्य की एक नदी का नाम।

सुप्रलंभ—वि० [सं० सुप्रलम्भ] १. जो अनायास प्राप्त किया जा सके। सहज में मिल सकनेवाला। सुलभ। २. जो सरलता से धोखे में आ जाय। जिसे सरलतापूर्वक वंचित किया जा सके (को०)।

सुप्रलाप—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुवचन। २. वाग्मिता। सुंदर भाषण।

सुप्रवेदित—वि० [सं०] भली भाँति उद्घोषित। पूर्णतः प्रकटित (को०)।

सुप्रशस्त—वि० [सं०] १. खूब प्रशंसित। २. सुप्रसिद्ध (को०)।

सुप्रश्न—संज्ञा पुं० [सं०] कुशलप्रश्न। कुशलक्षेम संबंधी जिज्ञासा (को०)।

सुप्रसन्न[१]—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर का एक नाम।

सुप्रसन्न[२]—वि० १. अत्यंत प्रफुल्ल। २. अत्यंत निर्मल। ३. हर्षित। बहुत प्रसन्न। ४. जो प्रतिकूल न हो। अनुकूल (को०)।

सुप्रसन्नक—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली बर्बरी। वन वर्वरिका। कृष्णार्जक।

सुप्रसरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसारिणी लता। गंधप्रसारिणी। पसरन।

सुप्रसव—संज्ञा पुं० [सं०] सहज प्रसव। वह प्रसव जो बिना कष्ट का हो।

सुप्रसाद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. विष्णु। ३. स्कंद का एक पार्षद। ४. एक असुर का नाम। ५. अत्यंत प्रसन्नता।

सुप्रसाद[2]—वि० १. अत्यंत प्रसन्न या कृपालु। २. सरलता से अनुकूल या प्रसन्न करने योग्य (को०)।

सुप्रसादक—वि० [सं०] दे० 'सुप्रसाद'।

सुप्रसादा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सुप्रसारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुप्रसरा'।

सुप्रसिद्ध—वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध। सुविख्यात। बहुत मशहूर।

सुप्रसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरलता से प्रसव करनेवाली स्त्री [को०]।

सुप्राकृत—वि० [सं०] ग्राम्य। असभ्य। अशिष्ट [को०]।

सुप्राप—वि० [सं०] जो सरलता से प्राप्त हो। सुलभ [को०]।

सुप्रिय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक गंधर्व का नाम।

सुप्रिय[2]—वि० [वि० स्त्री० सुप्रिया] अत्यंत प्रिय। बहुत प्यारा।

सुप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक अप्सरा का नाम। २. सोलह मात्राओं का एक वृत्त जिसमें अंतिम वर्ण के अतिरिक्त शेष सब वर्ण लघु होते हैं। यह एक प्रकार की चौपाई है। यथा—तबहुँ न लखन उतर कछु दयऊ। ३. मनोहारिणी स्त्री। सुंदर स्त्री (को०)। ४. प्रियतमा। प्रेमिका। प्रेयसी (को०)।

सुप्रीम—वि० [अं०] सर्वोच्च। सबसे ऊँचा [को०]।

सुप्रीम कोर्ट—संज्ञा पुं० [अं०] १. प्रधान या उच्च न्यायालय। २. सबसे बड़ी कचहरी। सर्वोच्च न्यायालय।

विशेष—ईस्ट इंडिया कंपनी के राजत्वकाल में कलकत्ते में सुप्रीम कोर्ट था, जिसमें तीन जज बैठते थे। अनंतर महारानी विक्टोरिया के राजत्वकाल में यह सुप्रीम कोर्ट तोड़ दिया गया और इसके स्थान पर हाई कोर्ट की स्थापना की गई। इंगलैंड में प्रिवी कौंसिल था जो सर्वोच्च माना जाता था। भारत के स्वतंत्र होने पर दिल्ली में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना हुई जिसे सुप्रीम कोर्ट भी कहते हैं।

सुप्रौढा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विवाह के योग्य कन्या [को०]।

सुफरा—संज्ञा पुं० [देश०] टेबुल पर बिछाने का कपड़ा।

सुफल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. छोटा अमलतास। कर्णिकार। २. बादाम। ३. अनार। दाड़िम। ४. बैर। बदर। ५. मूँग। मुद्ग। ६. कैथ। कपित्थ। ७. बिजौरा नीबू। मातुलुंग। ८. सुंदर फल। ९. अच्छा परिणाम।

सुफल[2]—वि० १. सुंदर फलवाला (अस्त्र)। २. सुंदर फलों से युक्त। ३. सफल। कृतकार्य। कृतार्थ। कामयाब।

सुफलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक यादव जो अक्रूर का पिता था।

सुफलकसुत—संज्ञा पुं० [सं०] अक्रूर।

सुफला[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्रायण। इंद्रवारुणी। २. पेठा। कुम्हड़ा। कुष्मांड। ३. गंभारी। काश्मरी। ४. केला। कदली। ५. मुनक्का। कपिला द्राक्षा।

सुफला[2]—वि० १. सुंदर या बहुत फल देनेवाली। अधिक फलोंवाली। २. सुंदर फलवाली। जैसे,—तलवार।

सुफुल्ल—वि० [सं०] फूलों से संपन्न। सुंदर फूलों से युक्त।

सुफेद—वि० [अ० सुफ़ेद] दे० 'सफेद'।

सुफेदी—स्त्री० [अ० सुफ़ेदी] दे० 'सफेदी'।

सुफेन—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्रफेन।

सुबंत—वि० [सं० सुबन्त] जिसके अंत में सुप् विभक्ति हो। संस्कृत व्याकरण में विभक्तियुक्त (शब्द, संज्ञा)।

सुबंतपद—संज्ञा पुं० [सं० सुबन्तपद] विभक्तियुक्त संज्ञा या शब्द।

सुबंध[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुबन्ध] तिल।

सुबंध[2]—वि० अच्छी तरह बँधा हुआ।

सुबंधविमोचन—संज्ञा पुं० [सं० सुबन्धविमोचन] शिव का एक नाम [को०]।

सुबंधु[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुबन्धु] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २. अच्छा भाई। उ०—होहि कुठायँ सुबंधु सहाए।—मानस, २।३०५। ३. वाणभट्ट का समकालीन संस्कृत गद्यकाव्य 'वासवदत्ता' का प्रख्यात रचयिता।

सुबंधु[2]—वि० उत्तम बंधुओंवाला। जिसके अच्छे बंधु या मित्र हों।

सुबड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] टलही चाँदी। ताँबा मिली हुई चाँदी।

सुबभ्रु—वि० [सं०] १. धूसर। २. चिकनी भौंहवाला।

सुबर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुवल] वीर। योद्धा। सुभट।

सुबरन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण] १. सोना। २. सुंदर अक्षर। ३. सुंदर रंग। उ०—सुबरन को खोजत फिरैं कबि व्यभिचारी चोर।—

सुबरनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवर्ण ?] छड़ी।

सुबल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शिव जी का एक नाम। २. एक पक्षी (वैनतेय की संतान)। ३. सुमति के एक पुत्र का नाम। ४. गांधार का एक राजा जो शकुनि का पिता और धृतराष्ट्र का ससुर था। ५. पुराणानुसार भौत्य मनु के पुत्र का नाम। ६. श्रीकृष्ण का एक सखा।

सुबल[2]—वि० अत्यंत बलवान। बहुत मजबूत।

सुबलपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] राजा सुबल का पुत्र, शकुनि [को०]।

सुबलपुर—संज्ञा पुं० [सं०] कीकट राज्य का एक प्राचीन नगर।

सुबह—संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रातःकाल। सबेरा।

सुबहान(पु)—संज्ञा पुं० [अ० सुबहान] दे० 'सुभान'। उ०—आब आतश अर्श कुरसी सूरते सुबहान। सिरंः सिफत करदा बूंदं मारफत मुकाम।—दादू (शब्द०)।

सुबहान अल्ला—अव्य० [अ०] अरबी का एक पद जिसका प्रयोग किसी बात पर हर्ष या आश्चर्य प्रकट करते हुए किया जाता है। वाह वाह! क्यों न हो! धन्य है!

सुबांधव—संज्ञा पुं० [सं० सुबान्धव] १. शिव। २. उत्तम मित्र।

सुबाल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक देवता। २. एक उपनिषद् का नाम। ३. उत्तम बालक।

सुबाल[2]—वि० बालक के समान निर्बोध। अज्ञान।

सुबालिश—वि० [सं०] बच्चों जैसा अज्ञ या अबोध।

सुबास¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + वास] अच्छी महक। सुगंध।

सुबास²—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का धान जो अगहन महीने में होता है और जिसका चावल वर्षों तक रहता है। २. सुंदर निवासस्थान।

सुबासना(५)¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + वास] सुगंध। खुशबू। अच्छी महक। उ०—कहि लहि कौन सकै दुरी सोनजुही मैं जाइ। तन की सहज सुबासना देती जो न बहाइ।—बिहारी (शब्द०)।

सुबासना²—क्रि० स० सुवासित करना। सुगंधित करना। महकाना।

सुबासिक—वि० [सं० सु + वास] सुवासित। सुगंधित। खुशबूदार। उ०—रहा जो कनक सुवासिक ठाऊँ। कस न होए हीरा मनि नाऊँ।—जायसी (शब्द०)।

सुबासित(५)—वि० [सं० सुवासित] दे० 'सुवासित'।

सुबाहु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. नागासुर। २. स्कंद का एक पार्षद। ३. एक दानव का नाम। ४. एक राक्षस का नाम। ५. एक यक्ष का नाम। ६. धृतराष्ट्र का पुत्र और चेदि का राजा। ७. पुराणानुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ८. शत्रुघ्न का एक पुत्र। ९. प्रतिबाहु का एक पुत्र। १०. कुवलयाश्व का एक पुत्र। ११. एक बोधिसत्व का नाम। १२. एक वानर का नाम।

सुबाहु²—वि० दृढ़ या सुंदर बाहोंवाला। जिसकी बाहें अच्छी और मजबूत हों।

सुबाहु³—संज्ञा स्त्री० [सं० सुबाहुस्] एक अप्सरा का नाम।

सुबाहु(५)⁴—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + बाहु] सेना। फौज। उ०—रैयत राज समाज कर तन धन धरम सुबाहु। शांत सुसचिवन सौंपि सुख बिलसहि नित नरनाहु।—तुलसी (शब्द०)।

सुबाहुक—संज्ञा पुं० [सं०] एक यक्ष का नाम।

सुबाहुशत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र का एक नाम।

सुबिस्ता†—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सुभीता'।

सुबिहान(५)—संज्ञा पुं० [अ० सुबहान] दे० 'सुभान'।

सुबीज¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. पोस्तदाना। खसखस। ३. उत्तम बीज।

सुबीज²—वि० उत्तम बीजवाला। जिसके बीज उत्तम हों।

सुबीता—संज्ञा पुं० [देश०; तुल० 'सुविधा'] दे० 'सुभीता'।

सुबुक—वि० [फ़ा०] १. हलका। कम बोझ का। भारी का उलटा। २. सुंदर। खूबसूरत। उ०—बसन फटे उपटे सुबुक निबुक ददोरे हाय।—रामसहाय (शब्द०)।

यौ०—सुबुक रंग = सोना रँगने का एक प्रकार।

३. कोमल। नाजुक। मृदु (को०)। ४. तेज। फुर्तीला। चुस्त। जैसे, सुबुक रफ्तार।

सुबुक²—संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

विशेष—इस जाति के घोड़े मेहनती और हिम्मती होते हैं। इनका कद मझोला होता है। दौड़ने में ये बड़े तेज होते हैं। इन्हें दौड़ाक भी कहते हैं

सुबुकदस्त—वि० [फ़ा०] फुर्तीले हाथोंवाला (को०)।

सुबुकदस्ती—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] हाथों का फुर्तीलापन। हस्तलाघव (को०)।

सुबुक रंदा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुबुक + हिं० रंदा] लोहे का एक औजार जो बढ़इयों के पेचकश की तरह का होता है। इसकी धार तेज होती है। इससे बर्तनों की कोर आदि छीलते हैं।

सुबुक रफ्तार—वि० [फ़ा० सुबुक रफ्तार] द्रुतगामी। तेज चालवाला।

सुबुकी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. हलकापन। २. सुंदरता। ३. तेजी। ४. अप्रतिष्ठा।

सुबुद्धि¹—वि० [सं०] उत्तम बुद्धिवाला। बुद्धिमान्।

सुबुद्धि²—संज्ञा स्त्री० उत्तम बुद्धि। अच्छी अक्ल।

सुबुध¹—संज्ञा पुं० [सं० बुद्धि] बुद्धि। अक्ल। (डिं०)।

सुबुध²—वि० [सं०] १. बुद्धिमान्। अक्लमंद। २. सावधान। सतर्क।

सुबू¹—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुबह] दे० 'सुबह'। उ०—जो निसि दिवस न हरि भजि पैए। तदपि न साँझ सुबू बिसरैए।—विश्राम (शब्द०)।

सुबू²—संज्ञा पुं० [फ़ा०] कुंभ। घट। मटका (को०)।

सुबूचा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुबूचह्] ठिलिया। गगरी (को०)।

सुबूत—संज्ञा पुं० [अ०] १. वह जिससे कोई बात साबित हो। प्रमाण। साक्ष्य सबूत। २. तर्क। दलील। ३. उदाहरण। मिसाल (को०)।

सुबोध¹—वि० [सं०] १. अच्छी बुद्धिवाला। २. जो कोई बात सहज में समझ सके। जिसे अनायास समझाया जा सके।

सुबोध²—संज्ञा पुं० अच्छी बुद्धि। अच्छी समझ।

सुब्रह्मण्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. विष्णु। ३. कार्तिकेय। ४. उद्गाता पुरोहित या उसके तीन सहकारियों में से एक। ५. दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रांत।

सुब्रह्मण्य²—वि० ब्रह्मण्ययुक्त। जिसमें ब्रह्मण्य हो।

सुब्रह्मण्य क्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ जो मद्रास प्रदेश के दक्षिण कनारा जिले में है।

सुब्रह्मण्य तीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुब्रह्मण्य क्षेत्र'।

सुब्रह्मवासुदेव—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

सुभंग¹—संज्ञा पुं० [सं० सुभङ्ग] नारियल का पेड़। नारिकेल वृक्ष।

सुभंग²—वि० सरलता से टूट जानेवाला (को०)।

सुभंत(५)—वि० [प्रा० सोभन्त सं० शोभमान] शोभित। जो शोभायुक्त हो।

सुभ(५)¹—वि० [सं० शुभ, प्रा० सुभ] दे० 'शुभ'।

सुभ²—वि० [सं०] शुभ नक्षत्र या ग्रह (को०)।

सुभगंमन्य—वि० [सं० सुभगम्मन्य] दे० 'सुभगमानी' (को०)।

सुभग¹—वि० [सं०] १. सुंदर। मनोहर। मनोरम। २. ऐश्वर्यशाली। ३. भाग्यवान्। खुशकिस्मत। ४. प्रिय। प्रियतम। ५. सुखद। आनंददायक।

सुभग²—संज्ञा पुं० १. शिव। २. सोहागा। टंकरण। ३. चंपा। चंपक। ४. अशोक वृक्ष। ५. पीली कटसरैया। पीतझिंटी। ६. लाल कटसरया। रक्तझिंटी। ७. भूरि छरीला। पत्थर का फूल। शैलेय। शैलाख्य। शिलापुष्प। ८. गंधक। गंधपाषाण। ९. सुबल के एक पुत्र का नाम। १०. जैनों अनुसार वह कर्म जिससे जीव सौभाग्यवान होता है। ११. अच्छा भाग्य। सौभाग्य (को०)।

सुभगता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुभग होने का भाव। २. सुंदरता। सौंदर्य। खूबसूरती। उ०—जागै मनोभव मुएँहु मन बन सुभगता न परै कही।—मानस, १।८६। ३. प्रेम। ४. स्त्री के द्वारा होनेवाला सुख।

सुभगदत्त—संज्ञा पुं० [सं०] भौमासुर का पुत्र।

सुभगमानी—वि० [सं० सुभगमानिन्] अपने को सौभाग्यशाली समझनेवाला [को०]।

सुभगसेन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन राजा जो सिकंदर के आक्रमण के समय पश्चिम भारत के एक प्रांत में शासन करता था।

सुभगा¹—वि० स्त्री० [सं०] १. सुंदरी। खूबसूरत (स्त्री)। २. (स्त्री) जिसका पति जीवित हो। सौभाग्यवती। सुहागिन।

सुभगा²—संज्ञा स्त्री० १. वह स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। प्रियतमा पत्नी। २. स्कंद की एक मातृका का नाम। ३. पाँच वर्ष की कुमारी। ४. एक प्रकार की रागिनी। ५. केवटी मोथा। कैवर्ती मुस्तक। ६. नीली दूब। नील दूर्वा। ७. हलदी। हरिद्रा। ८. तुलसी। सुरसा। ९. दहिंगना। प्रियंगु। बनिता। १०. कस्तूरी। मगनाभि। ११. सोना केला। सुवर्ण कदली। १२. बेला मोतिया। वनमल्लिका। १३. चमेली। जाति पुष्प। १४. आदरणीया माता। संमानित माँ (को०)। १५. सौभाग्यवती नारी। सधवा स्त्री (को०)।

सुभगातनय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुभगासुत'।

सुभगानंदनाथ—संज्ञा पुं० [सं० सुभगानन्दनाथ] तांत्रिकों के अनुसार एक भैरव का नाम। कालीपूजा के समय इनकी भी पूजा का विधान है।

सुभगासुत—संज्ञा पुं० [सं०] प्रियतमा पत्नी से उत्पन्न पुत्र [को०]।

सुभगाह्वया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कैवर्तिका लता। २. हलदी। ३. सरिवन। ४. तुलसी। ५. नीली दूब। ६. सोना केला।

सुभग्ग⑨—वि० [सं० सुभग] दे० 'सुभग'। उ०—मालव भूप उदग्ग चलेउ कर खग्ग जग्ग जित। तन सुभग्ग आभरन मग्ग जगमग्ग नग्ग सित।—गि० दास (शब्द०)।

सुभट—संज्ञा पुं० [सं०] महान् योद्धा। अच्छा सैनिक। उ०—रुक्म और कलिंग को राउ मारचो प्रथम, बहुरि तिनके बहुत सुभट मारे।—सूर (शब्द०)।

सुभटवंत⑨—वि० [सं० सुभट + वत्] अच्छा योद्धा। उ०—लख्यो बलराम यह सुभटवंत है कोऊ हल मुशल शस्त्र अपनो सँभारचो।—सूर (शब्द०)।

सुभट वर्मा—संज्ञा पुं० [सं० सुभटवर्मन्] एक हिंदू राजा जो ईस्वी १२वीं शताब्दी के अंत और १३वीं के प्रारंभ में विद्यमान था।

सुभट्ट¹—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत विद्वान् व्यक्ति। बहुत बड़ा पंडित।

सुभट्ट⑨**²**—संज्ञा पुं० [सं० सुभट] वीर। सुभट।

सुभड़⑨†—संज्ञा पुं० [सं० सुभट] सुभट। शूरवीर (डिं०)।

सुभद्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. सनत्कुमार का नाम। ३. वसुदेव का एक पुत्र जो पौरवी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ४. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ५. इध्मजिह्व के एक पुत्र का नाम। ६. प्लक्ष द्वीप के अंतर्गत एक वर्ष का नाम। ७. सौभाग्य। ८. कल्याण। मंगल। ९. एक पर्वत का नाम (को०)।

सुभद्र²—वि० १. भाग्यवान्। २. भला। सज्जन। ३. अत्यंत शुभ। मांगलिक (को०)।

सुभद्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवरथ। २. बेल। बिल्वक वृक्ष।

सुभद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी जो अभिमन्यु की माता थी।

विशेष—एक बार अर्जुन रैवतक पर्वत पर सुभद्रा को देखकर मोहित हो गया। यह देख श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सुभद्रा का बलपूर्वक हरण कर उससे विवाह करने का आदेश दिया। तदनुसार अर्जुन सुभद्रा को द्वारका से हरण कर ले गया।

२. दुर्गा का एक रूप। ३. पुराणानुसार एक गौ का नाम। ४. संगीत में एक श्रुति का नाम। ५. दुर्गम की पत्नी। ६. अनिरुद्ध की पत्नी। ७. एक चत्वर का नाम। ८. बलि की पुत्री और अवीक्षित की पत्नी। ९. एक नदी। १०. सरिवन। अनंतमूल। श्यामलता। ११. गंभारी। काश्मरी। १२. मकड़ा घास। घृतमंडा।

सुभद्राणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] त्रायंती। त्रायमान। त्रायमाण लता।

सुभद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्रीकृष्ण की छोटी बहन। २. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न न र ल ग (।।।, ।।।, ऽ।ऽ, ।, ऽ) होता है। ३. त्रायंती लता (को०)। ४. वेश्या (को०)।

सुभद्रेश—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन।

सुभर—⑨¹ वि० [हिं० सु + भरा] अच्छी तरह भरा हुआ। सुपुष्ट।

सुभर⑨**²**—वि० [सं० शुभ्र] दे० 'शुभ्र'। उ०—सुभर समुँद अस नयन दुइ, मानिक भरे तरंग। आवहिं तीर फिरावहीं काल भवँर तेहि संग।—जायसी (शब्द०)।

सुभर³—वि० [सं०] १. ठोस। घना। २. अधिक। प्रचुर। ३. सरलतापूर्वक वहन करने या प्रयोग करने योग्य। ४. पूर्णतः मश्क या अभ्यस्त। ५. सुपोष [को०]।

सुभव¹—वि० [सं०] उत्तम रूप से उत्पन्न।

सुभव²—संज्ञा पुं० १. एक इक्ष्वाकुवंशी राजा का नाम। २. साठ संवत्सरों में से अंतिम संवत्सर का नाम।

सुभसत्तरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो पति को अत्यंत प्रिय हो। सुभगा स्त्री।

सुभांजन—संज्ञा पुं० [सं० सुभाञ्जन] शुभांजन वृक्ष। सहिंजन।

सुभा—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभा] १. अमृत। पीयूष। सुधा। २. शोभा। कांति। छवि। ३. परनारी। परस्त्री। ४. हरीतकी। हड़। उ०—सुधा सुभा सोभा सुभा सुभा सिद्ध पर नारि। बहुरी सुभा हरीतकी हरिपद की रजधारि।—अनेकार्थ० (शब्द०)।

सुभाइ[1]—संज्ञा पुं० [सं० स्वभाव] दे० 'स्वभाव'। उ०—कमल नाल सज्जन हियौ दोनौं एक सुभाइ।—रसनिधि (शब्द०)।

सुभाइ[2]—क्रि० वि० सहज भाव से। स्वभावतः। उ०—(क) कंटक सो कंटक कटचो अपने हाथ सुभाइ।—सूर (शब्द०)। (ख) अंग सुभाइ सुवास प्रकाशित लोपिहौ केशव क्यों करिकै।—केशव (शब्द०)।

सुभाउ—संज्ञा पुं० [सं० स्वभाव] दे० 'स्वभाव'। उ०—मुख प्रसन्न शीतल सुभाउ, नित देखत नैन सिराइ।—सूर (शब्द०)।

सुभाग[1]—वि० [सं०] भाग्यवान्। खुशकिस्मत।

सुभाग[2]—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य] दे० 'सौभाग्य'।

सुभागा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रौद्राश्व की एक पुत्री का नाम।

सुभागी—वि० [सं० सुभाग] भाग्यवान्। भाग्यशाली। खुशकिस्मत। उ०—कौन होगा जो न लेगा उस सुधा का स्वाद। छोड़ प्रांतिक गर्व अपना और व्यर्थ विवाद। जो सुभागी चख सकेंगे वह रसाल प्रसाद। वे कदापि नहीं करेंगे नागरी प्रतिवाद।—सरस्वती (शब्द०)।

सुभागीन—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य, हिं० सुभाग+ईन (प्रत्य०)] [स्त्री० सुभागिन] अच्छे भाग्यवाला। भाग्यवान्। सुभग। उ०—कोक कलान कै बेनी प्रवीन वहौ अबलानि मैं एक पढ़ी है। आजु लखै (लखै ?) विपरीत मैं आँगी, सुभागीन यों मुख ऐसी कढ़ी है।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुभाग्य[1]—वि० [सं० सु+भाग्य] अत्यंत भाग्यशाली। बहुत बड़ा भाग्यवान्।

सुभाग्य[2]—संज्ञा पुं० दे० 'सौभाग्य'।

सुभान—अव्य० [अ० सुबहान] धन्य। वाह वाह। जैसे,—सुभान तेरी कुदरत।

यौ०—सुभान अल्ला = ईश्वर धन्य है। (प्रायः इस पद का व्यवहार कोई अद्भुत पदार्थ या अनोखी घटना देखकर किया जाता है।)

सुभाना—क्रि० अ० [हिं० शोभना] शोभित होना। देखने में भला जान पड़ना। (क्व०)। उ०—भो निकुंज सुख पुंज सुभाना। मंडप मंडन मंडित नाना।—गोपाल (शब्द०)।

सुभानु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. चतुर्थ हुतास नामक युग के दूसरे वर्ष का नाम। २. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सुभानु[2]—वि० सुंदर या उत्तम प्रकाश से युक्त। सुप्रकाशमान्।

सुभाय—संज्ञा पुं० [सं० स्वभाव] दे० 'स्वभाव'। उ०—फल आए तरुवर झुके झुकत मेघ जल लाय। विभौ पाय सज्जन झुके यह परकाजि सुभाय।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुभायक—वि० [सं० स्वाभाविक] स्वाभाविक। स्वभावतः। उ०—अभिराम सचिक्कण श्याम सुगंध के धामहु ते जे सुभायक के। प्रतिकूल भए दुख शूल सबै किधौं शाल शृंगार के घाय क के।—केशव (शब्द०)।

सुभाव—संज्ञा पुं० [सं० स्वभाव] दे० 'स्वभाव'। उ०—(क) कहा सुभाव परचो सखि तेरो यह विनवत हौं तोहिं।—सूर (शब्द०)। (ख) और कै हास विलास न भावत साधुन को यह सिद्ध सुभाव।—केशव (शब्द०)।

सुभावित—वि० [सं०] उत्तम रूप से भावना की हुई (औषध)।

सुभाषचंद्र (वसु)—संज्ञा पुं० 'नेता जी' नाम से विख्यात भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अद्वितीय देशभक्त योद्धा।

विशेष—इनका जन्म २३ जनवरी, १८९७ को बंगाल प्रांत में हुआ था। कहते हैं, १९४५ की एक विमान दुर्घटना में इनका निधन हुआ।

सुभाषण—संज्ञा पुं० [सं०] १. युयुधान के एक पुत्र का नाम। २. सुंदर भाषण।

सुभाषित[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक बुद्ध का नाम। २. उचित कथन। उपयुक्त कथन। ३. आनंदप्रदायक कथन या कवित्वमय उक्ति (को०)।

सुभाषित[2]—वि० १. सुंदर रूप से कहा हुआ। अच्छी तरह कहा हुआ। २. वाक्पटु। वाग्मी (को०)।

सुभाषी—वि० [सं० सुभाषिन्] उत्तम रूप से बोलनेवाला। मिष्ठभाषी।

सुभास[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुधन्वा के एक पुत्र का नाम। २. एक दानव (को०)।

सुभास[2]—वि० सुप्रकाशमान्। खूब चमकीला।

सुभास्वर[1]—वि० [सं०] देदीप्यमान्। चमकदार। चमकीला।

सुभास्वर[2]—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों का एक गण।

सुभिक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐसा काल या समय जिसमें भिक्षा या भोजन खूब मिले और अन्न खूब हो। सुकाल। उ०—पुनि पद परत जलद बहु बर्षे। भयो सुभिक्ष प्रजा सब हर्षे।—रघुराज (शब्द०)। २. दुर्भिक्ष की अवस्था न रहना। अन्न आदि की सुलभता (को०)।

सुभिक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धौ के फूल। धातुपुष्पिका।

सुभिषज्—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम चिकित्सक। वह जो अच्छी चिकित्सा करनेवाला हो।

सुभी—वि० स्त्री० [सं० शुभ] शुभकारक। मंगलकारक। उ०—है जलधार हार मुकुता मनों बक पंगति कुमुदमाल सुभी। गिरा गंभीर गरज मनु सुनि सखी खानि के श्रवन देखु भी।—सूर (शब्द०)।

सुभीता—संज्ञा पुं० [देश०] १. सुगमता। आसानी। सहूलियत। २. सुअवसर। सुयोग। ३. आराम। चैन (क्व०)।

सुभीम[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक दैत्य का नाम।

सुभीम[2]—वि० [वि० स्त्री० सुभीमा] अत्यंत भीषण। बहुत भयावना।

सुभीमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

सुभीरक, सुभीरव—संज्ञा पुं० [सं०] ढाक का पेड़। पलाश वृक्ष।

सुभीरुक—संज्ञा पुं० [सं०] चाँदी। रजत।

सुभुज[1]—वि० [सं०] सुंदर भुजाओंवाला। सुबाहु।

सुभुज(पु)[2]—संज्ञा पुं० [सं०] सुबाहु नामक राक्षस। उ०—जो मारीच सुभुज मदमोचन।—मानस, १।२२१।

सुभुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुभूता—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तर दिशा का नाम जिसमें प्राणी भले प्रकार स्थित होते हैं। (छांदोग्य०)।

सुभूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कुशल। क्षेम। मंगल। २. उन्नति। तरक्की। ३. तित्तिर नाम का पक्षी (को०)।

सुभूतिक—संज्ञा पुं० [सं०] बेल का पेड़। बिल्ववृक्ष।

सुभूम—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तवीर्य जो जैनियों के आठवें चक्रवर्ती थे।

सुभूमि[1]—संज्ञा पुं० [सं०] उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

सुभूमि[2]—वि० सुंदर भूमि। अच्छी जगह [को०]।

सुभूमिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम जो महाभारत के अनुसार सरस्वती नदी के किनारे था।

सुभूमिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुभूमिक'।

सुभूमिय—संज्ञा पुं० [सं०] उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

सुभूषण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

सुभूषण[2]—वि० सुंदर भूषणों से अलंकृत। जो अच्छे अलंकार पहने हो।

सुभूषित—वि० [सं०] उत्तम रूप से भूषित। भली भाँति अलंकृत।

सुभृत—वि० [सं०] १. सम्यक्प्रदत्त। भली भाँति प्रदत्त। २. सुरक्षित। रक्षित। ३. अच्छी तरह लदा हुआ। जिसपर खूब बोझ लदा हो [को०]।

सुभृश, सुभृष—वि० [सं०] अत्यंत अधिक। बहुत अधिक।

सुभैक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम भिक्षा। श्रेष्ठ भिक्षा [को०]।

सुभोग्य—वि० [सं०] सुख से भोगने योग्य। अच्छी तरह भोगने के लायक।

सुभोज—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंदर भोजन। इच्छा भर भोजन करना। भोजन से तृप्त होना [को०]।

सुभौटी(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० शोभा+वती या हिं० औटी (प्रत्य०)] शोभा। उ०—मौन ते कौन सुभौटी रहे, बिन बोले खुले घर को न किवारो।—हनुमान (शब्द०)।

सुभौम—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के एक चक्रवर्ती राजा का नाम जो कार्तवीर्य का पुत्र था।

विशेष—जैन हरिवंश में लिखा है कि जब परशुराम ने कार्तवीर्यार्जुन का वध किया, तब कार्तवीर्य की पत्नी अपने बच्चे सुभौम को लेकर कुशिकाश्रम में चली गई और वहीं उसका लालन पालन तथा शिक्षा दीक्षा हुई। बड़े होने पर सुभौम ने अपने पिता के वध का बदला लेने के लिये २० बार पृथ्वी को ब्राह्मणशून्य किया और इस प्रकार क्षत्रियों का प्राधान्य स्थापित किया।

सुभ्र(पु)[1]—वि० [सं० शुभ्र] दे० 'शुभ्र'।

सुभ्र[2]—संज्ञा पुं० [सं० श्वभ्र; डिं०] जमीन में का बिल या गड्ढा।

सुभ्राज—संज्ञा पुं० [सं०] देवभ्राज के एक पुत्र का नाम।

सुभ्रु[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नारी। स्त्री। औरत। २. सुंदर नेत्रोंवाली नारी। ३. स्कंद की एक मातृका का नाम।

सुभ्रु[2]—वि० सुंदर भौहोंवाला। जिसकी भँवें सुंदर हों।

सुभ्रू[1]—वि० [सं०] दे० 'सुभ्रु'[2]।

सुभ्रू[2]—संज्ञा स्त्री० तिरछी भौंहोंवाली सुंदरी। आकर्षक नारी [को०]।

सुमंगल[1]—वि० [सं० सुमङ्गल] १. अत्यंत शुभ। कल्याणकारी। २. सदाचारी। ३. यज्ञों से पूर्ण (को०)।

सुमंगल[2]—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का विष। २. शुभ या मंगलप्रद वस्तु (को०)।

सुमंगला—संज्ञा स्त्री० [सं० सुमङ्गला] १. मकड़ा नामक घास। २. स्कंद की एक मातृका का नाम। ३. एक अप्सरा का नाम। ४. एक नदी जो कालिकापुराण के अनुसार हिमालय से निकलकर मणिकूट (कामाक्षा) प्रदेश में बहती है।

सुमंगली—संज्ञा स्त्री० [सं० सुमङ्गल + ई (प्रत्य०)] विवाह में सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा।

विशेष—सप्तपदी पूजा के बाद कन्या पक्ष का पुरोहित वर के हाथ में सिंदूर देता है और वर उसे वधू के मस्तक में लगा देता है। इसके उपलक्ष में पुरोहित को जो नेग दिया जाता है, उसे सुमंगली कहते हैं।

सुमंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुमङ्गा] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

सुमंत—संज्ञा पुं० [सं० सुमन्त्र] राजा दशरथ का मंत्री और सारथि।

विशेष—जब रामचंद्र वन को जाने लगे थे, तब यही सुमंत (सुमंत्र) उन्हें रथ पर बैठाकर कुछ दूर छोड़ आया था।

सुमंतु[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुमन्तु] १. एक मुनि का नाम जो वेदव्यास के शिष्य, अथर्ववेद के शाखाप्रचारक तथा एक स्मृति या धर्मशास्त्र के प्रणेता थे। २. जह्नु के एक पुत्र का नाम। ३. अच्छा सलाहकार। उत्कृष्ट मंत्री (को०)।

सुमंतु[2]—वि० १. अच्छी मंत्रणा या सलाह देनेवाला। २. जो अत्यंत निंद्य हो। दोषावह। सापराध [को०]।

सुमंत्र—संज्ञा पुं० [सं० सुमन्त्र] १. राजा दशरथ का मंत्री और सारथि। १. अंतरिक्ष के एक पुत्र का नाम। ३. कल्कि का बड़ा भाई। ४. आयव्यय का प्रबंध करनेवाला मंत्री। अर्थसचिव।

विशेष—सुमंत्र का कर्तव्य यह बतलाया गया है कि वह राजा को सूचित करे कि इस वर्ष इतना द्रव्य संचित हुआ है, इतना व्यय हुआ, इतना शेष है, इतनी स्थावर संपत्ति है और इतनी जंगम संपत्ति है।

५. अच्छी सलाह। उत्तम मंत्रणा। अच्छा मंत्र (को०)। ६. बाभ्रव गौतम नाम के एक आचार्य (को०)।

सुमंत्रक—संज्ञा पुं० [सं० सुमन्त्रक] कल्कि का बड़ा भाई।
विशेष—कल्किपुराण में लिखा है कि कल्कि ने अपने तीन बड़े भाइयों (प्राज्ञ, कवि और सुमंत्रक) के सहयोग से अधर्म का नाश और धर्म का स्थापन किया था।

सुमंत्रज्ञ—वि० [सं० सुमन्त्रज्ञ] धर्मशास्त्र का ज्ञाता।

सुमंत्रित[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुमन्त्रित] अच्छी मंत्रणा। उत्कृष्ट सलाह [को०]।

सुमंत्रित[२]—वि० १. जिसकी सलाह या मंत्रणा सुविचारित हो। २. जिसे उत्तम मंत्रणा या सलाह दी गई हो [को०]।

सुमंत्री—वि० [सं० सुमन्त्रिन्] जिसका मंत्री या अमात्य योग्य हो। सुयोग्य मंत्रीवाला।

सुमंथनⓅ संज्ञा पुं० [सं० सु + मन्थ (= पर्वत)] मंदर पर्वत। उ०—श्रुति कदंब पय सागर सुंदर। गिरा सुमंथन शैल धुरंधर। —शं० दि० (शब्द०)।

सुमंद—वि० [सं० सुमन्द] अत्यंत सुस्त। काहिल।

सुमंदबुद्धि—वि० [सं० सुमन्दबुद्धि] मंदबुद्धि। कुंदजेहन। कूढ़मग्ज।

सुमंदभाज्—वि० [सं० सुमन्दभाज्] अत्यंत अभागा। बदकिस्मत [को०]।

सुमदमति—वि० [सं० सुमन्दमति] दे० 'सुमंदबुद्धि'।

सुमंदर—संज्ञा पुं० [सं० सुमन्द्र] दे० 'सुमंद्र'।

सुमंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सं० सुमन्दा] एक प्रकार की शक्ति।

सुमंद्र—संज्ञा पुं० [सं० सुमन्द्र] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १६ + ११ के विराम से २७ मात्राएँ तथा अंत में गुरु लघु होते हैं। यह सरसी नाम से प्रसिद्ध है। (होली में जो 'कबीर' गाए जाते हैं, वे प्रायः इसी छंद में होते हैं।)

सुम[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुष्प। कुसुम। २. चंद्रमा ३. आकाश। व्योम। ४. कर्पूर (को०)।

सुम[२]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] घोड़े या दूसरे चौपायों के खुर। टाप।

सुम[३]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड़ जो आसाम में होता है और जिसपर 'मूँगा' (रेशम) के कीड़े पाले जाते हैं।

सुमख[१]—वि० [सं०] जिसने उत्तम यज्ञ किए हों। उत्तम यज्ञों से संपन्न।

सुमख[२]—संज्ञा पुं० उत्तम यज्ञ। आनंद समारोह।

सुमखारा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुम + खार] वह घोड़ा जिसकी एक (आँख की) पुतली बेकार हो गई हो।

सुमगधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनाथपिंडिका की पुत्री का नाम।

सुमणि—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्कंद के एक पार्षद का नाम। २. श्रेष्ठ रत्न। उत्तम रत्न। ३. वह जो उत्तम रत्नों से भूषित हो (को०)।

सुमत[१]—वि० [सं०] उत्तम ज्ञान से युक्त। ज्ञानवान्। बुद्धिमान्।

सुमतⓅ**[२]**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुमति] दे० 'सुमति'।

सुमतराश—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुम + तराश] घोड़े के नाखून या खुर काटने का औजार।

सुमतिंजय—संज्ञा पुं० [सं० सुमतिञ्जय] विष्णु।

सुमति[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक दैत्य का नाम। २. सावर्ण मन्वंतर के एक ऋषि का नाम। ३. सूत के एक पुत्र या शिष्य का नाम। ४. भरत के एक पुत्र का नाम। ५. सोमदत्त के एक पुत्र का नाम। ६. सुपार्श्व के एक पुत्र का नाम। ७. जनमेजय के एक पुत्र का नाम। ८. दृढ़सेन के एक पुत्र का नाम। ९. विदूरथ का एक पुत्र। १०. वर्तमान अवसर्पिणी के पाँचवें अर्हत् या गत उत्सर्पिणी के तेरहवें अर्हत् का नाम। ११. इक्ष्वाकुवंशी राजा ककुत्थ के पुत्र का नाम। १२. नृग के एक पुत्र का नाम (को०)।

सुमति[२]—संज्ञा स्त्री० १. सगर की पत्नी का नाम। (पुराणों के अनुसार यह ६०,००० पुत्रों की माता थी।) २. क्रतु की पुत्री का नाम। ३. विष्णुयश की पत्नी और कल्कि की माता। ४. सुंदर मति। सुबुद्धि। अच्छी बुद्धि। ५. मेल। ६. भक्ति। प्रार्थना। ७. सारिका पक्षी। मैना। ८. भाग्य की अनुकूलता। देव की कृपा (को०)। ९. शुभकामना। मंगलकामना; दुआ (को०)। १०. आकांक्षा। कामना। इच्छा (को०)।

सुमति[३]—वि० अच्छी बुद्धिवाला। अत्यंत बुद्धिमान्।

सुमति बाई—संज्ञा स्त्री० [सं० सुमति + हिं० बाई] एक भक्तिन का नाम जो ओड़छा के राजा मधुकर शाह की रानी गणेशबाई की सहचरी थी।

सुमतिमेरु—संज्ञा पुं० [सं०] हल का एक भाग।

सुमतिरेणु—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक यक्ष का नाम। २. एक नागासुर का नाम।

सुमद[१]—वि० [सं०] मदोन्मत्त। मतवाला।

सुमद[२]—संज्ञा पुं० एक वानर जो रामचंद्र की सेना का सेनापति था।

सुमदन—संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़। आम्रवृक्ष।

सुमदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] कालिकापुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

सुमदनात्मजा, सुमदात्मजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुमदुम—वि० [अनु० या देश०] मोटा। तोंदल। स्थूल।

सुमधुर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का शाक। जीव शाक। २. मधुर वचन। स्वीकरणीय कथन। मीठी बात (को०)।

सुमधुर[२]—वि० अत्यंत मधुर। बहुत मीठा।

सुमध्यमा—वि० [सं०] सुंदर कमरवाली।

सुमध्या—वि० स्त्री० [सं०] दे० 'सुमध्यमा'।

सुमनःपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुमनःपत्रिका'।

सुमनःपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] जावित्री। जातीपत्री।

सुमनःफल—संज्ञा पुं० [सं०] १. कैथ। कपित्थ। २. जायफल। जातीफल।

सुमन[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुमनस्] १. देवता। पंडित। विद्वान्। ३. पुष्प। फूल। ४. गेहूँ। ५. धतूरा। ६. नीम। ७. घीकरंज। घृतकरंज। ८. एक दानव का नाम। ९. उरु और आग्नेयी के पुत्र का नाम। १०. उल्मुक के एक पुत्र का नाम। ११. हर्यश्व के पुत्र का नाम। १२. प्लक्ष द्वीप के अंतर्गत एक पर्वत का नाम (बौद्ध)। १४. मित्र। (डिं०)।

सुमन²—वि० १. उत्तम मनवाला। सहृदय। दयालु। २. मनोहर। सुंदर।

सुमनचाप—संज्ञा पुं० [सं० सुमन + चाप] कामदेव जिसका धनुष फूलों का माना गया है।

सुमनमाल—संज्ञा पुं० [सं० सुमन + हिं० माल] पुष्प की माला। फूलों का हार। उ०—सुरतरु सुमनमाल बहु बरषहिं। मनहुँ बलाक प्रवलि मनु करषहिं।—मानस, १।३४७।

सुमनराजⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुमन + राज] सुमन अर्थात् देवताओं का राजा देवराज—इंद्र।

सुमनस¹—संज्ञा पुं० [सं० सुमनस्] १. देवता। २. पुष्प। फूल।

सुमनस²—वि० प्रसन्नचित्त। उ०—अंधकार तब मिट्यो निशानन। भए प्रसन्न देव मुनि आनन। बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस। जय जय करहिं भरे आनँद रस।—रघुराज (शब्द०)।

सुमनसध्वज—संज्ञा पुं० [सं० सुमनस् + ध्वज] कामदेव। (डिं०)।

सुमनस्क—वि० [सं०] प्रसन्न। सुखी।

सुमना¹—संज्ञा पुं०, वि० [सं० सुमनस्] दे० 'सुमन'।

सुमना²—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चमेली। जातीपुष्प। २. सेवती। शतपत्री। ३. कबरी गाय। ४. कैकेयी का वास्तविक नाम। ५. दम की पत्नी का नाम। ६. मधु की पत्नी और वीरव्रत की माता का नाम।

सुमनामुख—वि० [सं०] सुंदर मुखवाला।

सुमनायन—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सुमनास्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक यक्ष का नाम।

सुमनित—वि० [सं० सुमणि + त (प्रत्य०)] सुंदर मणि से युक्त। उत्तम मणियों से जड़ा हुआ। उ०—केशव कमल मूल अलि-कुल कुनितकि कैधौं प्रतिधुनित सुमनित निचयके।—केशव (शब्द०)।

सुमनोज्ञघोष—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्धदेव।

सुमनोत्तरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजाओं के अंतःपुर में रहनेवाली स्त्री।

सुमनोदाम—संज्ञा पुं० [सं० सुमनोदामन्] पुष्पहार। पुष्पमाला [को०]।

सुमनोभर—वि० [सं०] फूलों से सजा हुआ।

सुमनोमुख—संज्ञा पुं० [सं०] एक यक्ष का नाम।

सुमनोरज—संज्ञा स्त्री० [सं० सुमनोरजस्] फूल का रज। पराग। पुष्पधूलि। पुष्परेणु [को०]।

सुमनौकस—संज्ञा पुं० [सं०] देवलोक। स्वर्ग।

सुमन्यु¹—संज्ञा पुं० [सं०] एक देवगंधर्व का नाम।

सुमन्यु²—वि० अत्यंत क्रोधी। गुस्सेवर।

सुमफटा†—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुम + हिं० फटना] एक प्रकार का रोग जो घोड़ों के खुर के ऊपरी भाग से तलवे तक होता है। यह अधिकतर अगले पाँवों के अंदर तथा पिछले पाँवों के खुरों में होता है। इससे घोड़ों के लँगड़े हो जाने की संभावना रहती है।

सुमर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। हवा। २. सहज मृत्यु।

सुमरनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्मरण] दे० 'स्मरण'।

सुमरन²—संज्ञा स्त्री० दे० 'सुमरनी'।

सुमरनाⓅ—क्रि० स० [सं० स्मरण] १. स्मरण करना। चिंतन करना। ध्यान करना। २. बारबार नाम लेना। जपना।

सुमरनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुमरना + ई (प्रत्य०)] नाम जपने की छोटी माला जो सत्ताइस दानों की होती है।

सुमरा—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

विशेष—यह मछली भारत की नदियों और विशेषकर गरम झरनों में पाई जाती है। यह पाँच इंच तक लंबी होती है। इसे महुवा भी कहते हैं।

सुमरीचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य के अनुसार पाँच प्रकार की बाह्यतुष्टियों में से एक।

सुमर्मग—वि० [सं०] मर्मस्थल तक बेधनेवाला (बाण)।

सुमल्लिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

सुमसायक—संज्ञा पुं० [सं० सुमन + सायक] कामदेव। (डिं०)।

सुमसुखड़ा¹—वि० [फ़ा० सुम + हिं० सूखना] (घोड़ा) जिसके खुर सूखकर सिकुड़ गए हों।

सुमसुखड़ा²—संज्ञा पुं० एक प्रकार का रोग जिसमें घोड़े के खुर सूखकर सिकुड़ जाते हैं।

सुमह्—संज्ञा पुं० [सं०] जह्नु के एक पुत्र का नाम।

सुमहाकपि—संज्ञा पुं० [सं०] एक दानव का नाम।

सुमहात्यय—वि० [सं०] अत्यधिक विनाश करनेवाला [को०]।

सुमात्रा—संज्ञा पुं० मलय द्वीपपुंज का एक बड़ा द्वीप जो बोनियो के पश्चिम और जावा के उत्तरपश्चिम में है।

सुमाद्रेय—संज्ञा पुं० [सं० माद्रेय] सहदेव (डिं०)।

सुमानस—वि० [सं०] अच्छे मन का। सहृदय।

सुमानिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर होते हैं जिनमें से पहला, तीसरा, पाँचवाँ और सातवाँ अक्षर लघु तथा अन्य अक्षर गुरु होते हैं।

सुमानी—वि० [सं० सुमानिन्] बड़ा अभिमानी। स्वाभिमानी।

सुमाय—वि० [सं०] १. अत्यंत बुद्धिमान्। २. मायायुक्त।

सुमारⓅ—संज्ञा पुं० [फ़ा० शुमार] गिनती। गणना। दे० 'शुमार'।

सुमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम मार्ग। अच्छा रास्ता। सुपथ। सन्मार्ग।

सुमात्स्र्न—वि० [सं०] १. अत्यंत सुंदर। २. बहुत छोटा। सूक्ष्म [को०]।

सुमाल—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

सुमालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छह वर्ण होते हैं। इनमें से दूसरा और पाँचवाँ लघु तथा अन्य वर्ण गुरु होते हैं। २. एक गंधर्वी का नाम।

सुमाली¹—संज्ञा पुं० [सं० सुमालिन्] १. एक वानर का नाम। २. एक राक्षस का नाम जो सुकेश राक्षस का पुत्र था।

विशेष—इसी सुमाली की कन्या कैकसी के गर्भ से विश्रवा से रावण, कुंभकर्ण, शूर्पनखा और विभीषण उत्पन्न हुए थे।

सुमाली²—संज्ञा पुं० [फ़ा० शुमाल] एक अरब जाति ।

विशेष—अफ्रिका के पश्चिमी किनारे पर तथा अदन में इस जाति का निवास है। गुलामों का व्यवसाय करनेवाले अफ्रिका से इन्हें ले आए थे ।

सुमाली लैंड—संज्ञा पुं० [अं०] अफ्रीका के पूर्वी तटवर्ती एक देश ।

सुमाल्य—संज्ञा पुं० [सं०] महापद्म के एक पुत्र का नाम ।

सुमाल्यक—संज्ञा पुं० [सं०] पुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम ।

सुमावलि—संज्ञा [सं०] पुष्पहार ।

सुमित्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २. अभिमन्यु के सारथि का नाम । ३. मगध का एक राजा जो अर्हत् सुव्रत का पिता था। ४. गद के एक पुत्र का नाम। ५. श्याम का एक पुत्र। ६. शमीक का एक पुत्र। ७. वृष्णि का एक पुत्र। ८. इक्ष्वाकु वंश के अंतिम राजा सुरथ के पुत्र का नाम। ९. एक दानव का नाम। १०. सौराष्ट्र के अंतिम राजा का नाम ।

विशेष—कर्नल टाड के अनुसार ये विक्रमादित्य के समसामयिक थे। इन्होंने राजपूताने में जाकर मेवाड़ के राणा वंश की स्थापना की थी। भागवत में इनका उल्लेख है।

११. अच्छा मित्र । सन्मित्र । वफादार दोस्त (को०)।

सुमित्र²—वि० उत्तम मित्रोंवाला ।

सुमित्रभू—संज्ञा पुं० [सं०] १. जैनियों के चक्रवर्ती राजा सगर का नाम । २. वर्तमान अवसर्पिणी के बीसवें अर्हत् का नाम ।

सुमित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दशरथ की एक पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता थीं। २. मार्कंडेय की माता का नाम। ३. एक यक्षिणी का नाम (को०) ।

सुमित्रातनय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुमित्रानंदन'।

सुमित्रानंदन—संज्ञा पुं० [सं० सुमित्रानन्दन] १. लक्ष्मण। २. शत्रुघ्न।

सुमित्राभू—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुमित्रानंदन'।

सुमित्र्य—वि० [सं०] उत्तम मित्रोंवाला । जिसके अच्छे मित्र हों।

सुमिरण(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्मरण] दे० 'स्मरण'।

सुमिरन—संज्ञा पुं० [सं० स्मरण] दे० 'सुमिरण'।

सुमिरना(पु)—क्रि० स० [सं० स्मरण] दे० 'सुमरना'। उ०—जेहि सुमिरत सिधि होइ गणनायक करिवर बदन ।—तुलसी (शब्द०) ।

सुमिरनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुमिरन+ई (प्रत्य०)] दे० 'सुमरनी'। उ०—अथवा सुमिरनी डारि दीन्ह्यो तुरत ही धारा बढ़ी।—रघुराज (शब्द०) ।

सुमिरिनिया(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुमिरनी+इया (प्रत्य०)] दे० 'सुमिरनी'। उ०—पीतय हक सुमिरिनिया मुहि देइ जाहु। —रहीम (शब्द०) ।

सुमुख¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. गणेश। ३. गरुड़ के एक पुत्र का नाम। ४. द्रोण के एक पुत्र का नाम। ५. एक नागासुर। ६. एक असुर। ७. किन्नरों का राजा। ८. एक ऋषि। ९. एक वानर। १०. पंडित। आचार्य। ११. एक प्रकार का जलपक्षी। १२. एक प्रकार का शाक। १३. एक राजा का नाम। १४. राई। राजिका। राजसर्षप। १५. वनबर्बरी। जंगली बर्बरी। १६. श्वेत तुलसी। १७. सुंदर मुख। १८. एक प्रकार का भवन (को०)। १९. नख की खरोंच। नखक्षत (को०)।

सुमुख²—वि० १. सुंदर मुखवाला। २. सुंदर। मनोरम। मनोहर। ३. प्रसन्न। ४. अनुकूल। कपालु। ५. जिसकी नोक अच्छी हो। धारदार। अनीवाला जैसे, वाण (को०)। ६. जिसके दरवाजे सुंदर हों। सुंदर द्वारवाला (को०)।

सुमुखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर मुखवाली स्त्री। सुंदरी स्त्री।

सुमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जिसका मुख सुंदर हो। सुंदर मुखवाली स्त्री। २. दर्पण। आईना। ३. संगीत में एक प्रकार की मूर्छना। ४. एक अप्सरा का नाम। ५. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं। इनमें से पहला, आठवाँ तथा ग्यारहवाँ लघु और अन्य अक्षर गुरु होते हैं। ६. नील अपराजिता। नीली कोयल। ७. शंखपुष्पी। शंखाहुली। कौडियाली।

सुमुष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] बकायन। विषमुष्टि। महानिंब।

सुमूर्ति—संज्ञा पुं० [सं०] शिव के एक गण का नाम।

सुमूल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद सहिजन। श्वेत शिग्रु। २. उत्तम मूल।

सुमूल²—वि० उत्तम मूलवाला। जिसकी जड़ अच्छी हो।

सुमूलक—संज्ञा पुं० [सं०] गाजर।

सुमूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरिवन। शालपर्णी। २. पिठवन। पृश्निपर्णी।

सुमृग—संज्ञा पुं० [सं०] वह भूमि जहाँ बहुत से जंगली जानवर हों। शिकार खेलने के लिये अच्छा मैदान।

सुमृत¹—वि० [सं०] मृत। मरा हुआ (को०)।

सुमृत(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० स्मृति] दे० 'स्मृति'। उ०—श्रुति गुरु साधु सुमृत संमत यह दृश्य सदा दुखकारी।—तुलसी (शब्द०)।

सुमृति(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] दे० 'स्मृति'। उ०—देव कवितान पुण्य कीरति वितान, तेरे सुमृति पुराण गुणवान श्रुति भरिए। —देव (शब्द०)।

सुमेखल¹—संज्ञा पुं० [सं०] मूँज। मुंजतृण।

सुमेखल²—वि० जिसकी मेखला सुंदर हो। सुंदर मेखलावाला।

सुमेध—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण के अनुसार एक पर्वत का नाम।

सुमेड़ी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] खाट बुनने का बाध।

सुमेध—वि० [सं० सुमेधस्] दे० 'सुमेधा'। उ०—ताहि कहत आच्छेय हैं भूषन सुकवि सुमेध।—भूषण (शब्द०)।

सुमेधा¹—वि० [सं० सुमेधस्] उत्तम बुद्धिवाला। सुबुद्धि। बुद्धिमान्।

सुमेधा²—संज्ञा पुं० १. चाक्षुष मन्वंतर के एक ऋषि का नाम। २. वेदमित्र के एक पुत्र का नाम। ३. पाँचवें मन्वंतर के विशिष्ट देवता। ४. पितरों का एक गण या भेद।

सुमेधा³—संज्ञा स्त्री० मालकंगनी। ज्योतिष्मती लता।

सुमेध्य—वि० [सं०] अत्यंत पवित्र। बहुत पवित्र।

सुमेर⑤ —संज्ञा पुं० [सं० सुमेरु] १. सुमेरु पर्वत। उ०—(क) शोभित सुंदर केशव कामिनि। जिमि सुमेर पर घन सहगामिनि।—गिरिधर (शब्द०)। (ख) संपति सुमेर की कुबेर की जु पावै ताहि, तुरत लुटावत विलंब उर धारै ना। पद्माकर (शब्द०)। २. गंगाजल रखने का बड़ा पात्र।

सुमेरु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है।

विशेष—भागवत के अनुसार सुमेरु पर्वतों का राजा है। यह सोने का है। इस भूमंडल के सात द्वीपों में प्रथम द्वीप जंबू द्वीप के—जिसकी लंबाई ४० लाख कोस और चौड़ाई चार लाख कोस है—नौ वर्षों में से इलावृत्त नामक अभ्यंतर वर्ष में यह स्थित है। यह ऊँचाई में उक्त द्वीप के विस्तार के समान है। इस पर्वत का शिरोभाग १२८ हजार कोस, मूल देश ६४ हजार कोस और मध्यभाग चार हजार कोस का है। इसके चारों ओर मंदर, मेरुमंदर, सुपार्श्व और कुमुद नामक चार आश्रित पर्वत हैं। इनमें से प्रत्येक की ऊँचाई और फैलाव ४० हजार कोस है। इन चारों पर्वतों पर आम, जामुन, कदंब और बड़ के पेड़ हैं जिनमें से प्रत्येक की ऊँचाई चार सौ कोस है। इनके पास ही चार ह्रद भी हैं जिनमें पहला दूध का, दूसरा मधु का, तीसरा ऊख के रस का और चौथा शुद्ध जल का है। चार उद्यान भी हैं जिनके नाम नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राजक और सर्वतोभद्र हैं। देवता इन उद्यानों में सुरांगनाओं के साथ विहार करते हैं। मंदार पर्वत के देवच्युत वृक्ष और मेरुपर्वत के जंबू वृक्ष के फूल, बहुत स्थूल और विराट्काय होते हैं। इनसे दो नदियाँ—अरुणोदा और जंबू नदी—बन गई हैं। जंबू नदी के किनारे की जमीन की मिट्टी तो रस से सिक्त होने के कारण सोना ही हो गई है। सुपार्श्व पर्वत के महाकदंब वृक्ष से जो मधुधारा प्रवाहित होती है, उसको पान करनेवाले के मुँह से निकली हुई सुगंध चार सौ कोस तक जाती है। कुमुद पर्वत का वट वृक्ष तो कल्पतरु ही है। यहाँ के लोग आजीवन सुख भोगते हैं। सुमेरु के पूर्व जठर और देवकूट, पश्चिम में पवन और पारियात्र, दक्षिण में कैलास और करवीर गिरि तथा उत्तर में त्रिशृंग और मकर पर्वत स्थित हैं। इन सबकी ऊँचाई कई हजार कोस है। सुमेरु पर्वत के ऊपर मध्यभाग में ब्रह्मा की पुरी है, जिसका विस्तार हजारों कोस है। यह पुरी भी सोने की है। नृसिंहपुराण के अनुसार सुमेरु के तीन प्रधान शृंग हैं, जो स्फटिक, वैदूर्य और रत्नमय हैं। इन शृंगों पर २१ स्वर्ग हैं जिनमें देवता लोग निवास करते हैं।

२. शिव जी का एक नाम। ३. जपमाला के बीच का बड़ा दाना जो और सब दानों के ऊपर होता है। इसी से जप का आरंभ और इसी पर इसकी समाप्ति होती है। ४. उत्तर ध्रुव। विशेष दे० 'ध्रुव'। ५. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १२+५ के विश्राम से १७ मात्राएँ होती हैं, अंत में लघु गुरु नहीं होते, पर यगण अत्यंत श्रुतिमधुर होता है। इसकी १, ८ और १५ वीं मात्राएँ लघु होती हैं। किसी किसी ने इसके एक चरण में १९ और किसी ने २० मात्राएँ मानी हैं। पर यह सर्वसंमत नहीं है। ६. एक विद्याधर (को०)।

सुमेरु[2]—वि० १. बहुत ऊँचा। २. बहुत सुंदर।

सुमेरुजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुमेरु पर्वत से निकली हुई नदी।

सुमेरुवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] वह रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।

सुमेरुसमुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तर महासागर।

सुम्न—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऋचा। मंत्र। २. आनंद। प्रसन्नता। ३. कृपा। अनुग्रह। रक्षण। ४. यज्ञ [को०]।

सुम्नी—वि० [सं० सुम्निन्] १. दयालु। कृपालु। मेहरबान। २. अनुकूल।

सुम्मा—संज्ञा पुं० [देश०] १. बकरा (बाजारू)। २. दे० 'सुंबा'।

सुम्मी—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. सुनारों का एक औजार जिससे वे घुंडी और बरेखी की नोक उभाड़ते हैं। २. दे० 'सुंबी'।

सुम्मीदार सबरा—संज्ञा पुं० [हिं० सुम्मी+फ़ा० दार (प्रत्य०)+सबरा (=औजार)] वह सबरा जिससे कसेरे परात में बुँदकी निकालते हैं।

सुम्ह[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुम्भ] एक जाति का नाम।

सुम्ह[2]—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुम] दे० 'सुम'।

सुम्हार—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो उत्तर प्रदेश में होता है।

सुयं⑤—अव्य० [सं० स्वयम्] दे० 'स्वयम्'।

सुयंत्रित—वि० [सं० सुयन्त्रित] १. भली प्रकार कीलित। आरक्षित। २. भली प्रकार बँधा हुआ। सुबद्ध। ३. संयत। जितेंद्रिय आत्मनिग्रही।

सुयंवर⑤—संज्ञा पुं० [सं० स्वयम्वर] दे० 'स्वयंवर'।

सुयजु—संज्ञा पुं० [सं० सुयजुष्] महाभारत के अनुसार भूमंजु के एक पुत्र का नाम।

सुयज्ञ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. रुचि प्रजापति के एक पुत्र का नाम जो आकूति के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। २. वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम। ३. ध्रुव के एक पुत्र का नाम। ४. उशीनर के एक राजा का नाम। ५. उत्तम यज्ञ।

सुयज्ञ[2]—वि० उत्तमता या सफलता से यज्ञ करनेवाला। जिसने उत्तमता से यज्ञ किया हो।

सुयज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभौम की पत्नी का नाम।

सुयत—वि० [सं०] १. उत्तम रूप से संयत। सुसंयत। २. जितेंद्रिय।

सुयम—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार देवताओं का एक गण जिनका जन्म सुयज्ञ की पत्नी दक्षिणा के गर्भ से हुआ था।

सुयमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रियंगु।

सुयवस—संज्ञा पुं० [सं०] १. उत्तम गोचर भूमि। २. हरी हरी उत्तम घास (को०)।

सुयश[1]—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा यश। अच्छी कीर्ति। सुख्याति। सुकीर्ति। सुनाम। जैसे,—आजकल चारों ओर उनका सुयश फैल रहा है।

सुयश[२]—वि० [सं० सुयशस्] उत्तम यशवाला। यशस्वी। कीर्तिमान्।

सुयश[३] संज्ञा पुं० भागवत के अनुसार अशोकवर्धन के पुत्र का नाम।

सुयशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दिवोदास की पत्नी का नाम। २. एक अर्हत् की माता का नाम। ३. परीक्षित की एक स्त्री का नाम। ४. एक अप्सरा का नाम। ५. अवसर्पिणी।

सुयष्टव्य—संज्ञा पुं० [सं०] रैवत मनु के एक पुत्र का नाम।

सुयाति—संज्ञा पुं० [सं०] हरिवंश के अनुसार नहुष के एक पुत्र का नाम।

सुयाम—संज्ञा पुं० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

सुयामुन—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. राजभवन। राजप्रासाद। ३. एक प्रकार का मेघ। ४. एक पर्वत का नाम। ५. वत्सराज (उदयन) का एक नाम (को०)।

सुयुक्त संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सुयुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अच्छी युक्ति। उत्तम तर्क। २. उत्तम उपाय।

सुयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्मयुद्ध। न्यायसंमत युद्ध। २. अच्छी तरह लड़ना। जमकर लड़ना (को०)।

सुयोग—संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर योग। संयोग। सुअवसर। अच्छा मौका। जैसे,—बड़े भाग्य से यह सुयोग हाथ आया है।

सुयोग्य—वि० [सं०] बहुत योग्य। लायक। काबिल। जैसे,—उनके दोनों पुत्र सुयोग्य हैं।

सुयोधन—संज्ञा पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के बड़े पुत्र दुर्योधन का एक नाम।

सुरंग[१]—वि० [सं० सुरङ्ग] १. जिसका रंग सुंदर हो। सुंदर रंग का। २. सुंदर। सुडौल। उ०—(क) सब पुर देखि धनुषपुर देख्यो देखे महल सुरंग।—सूर (शब्द०)। (ख) अलकावलि मुक्तावलि गूँथी डोर सुरंग बिराजै।—सूर (शब्द०)। (ग) गति हेरि कुरंग कुरंग फिरै चतुरंग तुरंग सुरंग बने।—गि० दास (शब्द०)। ३. रसपूर्ण। उ०—रसनिधि सुंदर मीत के रंग चुचौहैं नैन। मन पट कौं कर देत हैं तुरत सुरंग ये नैन।—रसनिधि (शब्द०)। ४. लाल रंग का। रक्तवर्ण। उ०—पहिरे बसन सुरंग पावकयुत स्वाहा मनो।—केशव (शब्द०)। ५. निर्मल। स्वच्छ। साफ। उ०—अति वदन शोभ सरसी सुरंग। तहँ कमल नयन नासा तरंग।—केशव (शब्द०)।

सुरंग[२]—संज्ञा पुं० १. शिगरफ। हिंगुल। २. पतंग। बक्कम। ३. नारंगी। नागरंग। ४. रंग के अनुसार घोड़ों का एक भेद।

सुरंग[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्ग] १. जमीन या पहाड़ के नीचे खोदकर या बारूद से उड़ाकर बनाया हुआ रास्ता जो लोगों के आने जाने के काम में आता है। जैसे,—इस पहाड़ में रेल कई सुरंगें पार करके जाती हैं। २. किले या दीवार आदि के नीचे जमीन के अंदर खोदकर बनाया हुआ वह तंग रास्ता जिसमें बारूद आदि भरकर उसमें आग लगाकर किला या दीवार उड़ाते हैं। उ०—भरि बारूद सुरंग लगावैं। पुरी सहित जदु भटन उड़ावै।—गोपाल (शब्द०)।

क्रि० प्र०—उड़ाना। लगाना।

३ एक प्रकार का यंत्र जिसमें बारूद से भरा हुआ एक पीपा होता है और जिसके ऊपर एक तार निकला हुआ होता है।

विशेष—यह यंत्र समुद्र में डुबा दिया जाता है और इसका तार ऊपर की ओर उठा रहता है। जब किसी जहाज का पेंदा इस तार से छू जाता है, तो अपनी भीतरी विद्युत् शक्ति की सहायता से बारूद में आग लग जाती है जिसके फूटने से ऊपर का जहाज फटकर डूब जाता है। इसका व्यवहार प्रायः शत्रुओं के जहाजों को नष्ट करने में होता है।

४ वह सूराख जो चोर लोग दीवार में बनाते हैं। सेंध।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—सुरंग मारना = सेंध लगाकर चोरी करना।

सुरंगद—संज्ञा पुं० [सं० सुरङ्गद] पतंग बक्कम। आल।

सुरंगधातु—संज्ञा पुं० [सं० सुरङ्गधातु] गेरू मिट्टी।

सुरंगधूलि—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्गधूलि] नारंगी का पराग [को०]।

सुरंगभुक—संज्ञा पुं० [सं० सुरङ्गभुज्] सेंध लगानेवाला। चोर।

सुरंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्गा] १. कैवर्तिका लता। २. सेंध।

सुरंगिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्गिका] १. मूर्वा। मुर्हरी। चुरनहार। २. उपोदिका। पोई का साग ३. श्वेत काकमाची। सफेद मकोय।

सुरंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरङ्गी] १. काकनासा। कौआठोंठी। २. पुन्नाग। सुलतान चंपा। ३. रक्त शोभांजन। लाल सहिंजन। ४. आल का पेड़ जिससे आल का रंग बनता है।

सुरंजन—संज्ञा पुं० [सं० सुरञ्जन] सुपारी का पेड़।

सुरंधक, सुरंध्र—संज्ञा [सं० सुरन्धक, सुरन्ध्र] १, एक प्राचीन जनपद का नाम। २. उस जनपद का निवासी।

सुर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवता। २. सूर्य। ३. पंडित। विद्वान्। ४. मुनि। ऋषि। ५. पुराणानुसार एक प्राचीन नगर का नाम जो चंद्रप्रभा नदी के तट पर था। ६ अग्नि का एक विशिष्ट रूप। ७. देवविग्रह। देवप्रतिमा (को०)। ८. ३३ की संख्या (को०)।

सुर[२]—संज्ञा पुं० [सं० स्वर] स्वर। ध्वनि। आवाज। विशेष दे० 'स्वर'।

यौ०—सुरतान। सुरदीप।

क्रि० प्र०—छेड़ना।—देना।—भरना।—मिलाना।

मुहा०—सुर में सुर मिलाना = हाँ में हाँ मिलाना। चापलूसी करना। सुर भरना = किसी गाने या बजानेवाले को सहारा देने के लिये उसके साथ कोई एक सुर अलापना या बाजे आदि से निकालना।

सुरकंत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुर + कान्त] इंद्र। उ०—मतिमंत महा छितिकंत मनि चढ़ि द्विदंत सुरकंत सम।—गि० दास (शब्द०)।

सुरक¹--संज्ञा पुं० [सं० सुर] नाक पर का वह तिलक जो भाले की आकृति का होता है। उ०-- खौरि पनिच भृकुटी धनुष बधिकु समरु, तजि कानि। हनतु तरुन मृग तिलकसर सुरक भाल, भरि तानि।--बिहारी (शब्द०)।

सुरक²--संज्ञा स्त्री० [हिं० सुरकना] सुरकने की क्रिया या भाव।

सुरकना--क्रि० [अनु०] १. किसी तरल पदार्थ को धीरे धीरे हवा के साथ खींचते हुए पीना। हवा के साथ ऊपर की ओर धीरे धीरे खींचना।

सुरकरींद्र--संज्ञा पुं० [सं० सुरकरीन्द्र] देवहस्ती। ऐरावत [को०]।

यौ०--सुरकरींद्रदर्पहा = गंगा का एक नाम।

सुरकरी--संज्ञा पुं० [सं० सुरकरिन्] देवताओं का हाथी। सुरराज का हाथी। ऐरावत दिग्गज। उ०--जु तू इच्छा वाके करि विमल पानी पियन की। झुके आधो लंबे तन गगन में ज्यों सुरकरी।--राजा लक्ष्मण सिंह (शब्द०)।

सुरकली--संज्ञा स्त्री० [हिं० सुर + कली] एक रागिनी का नाम।

सुरकाज(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सुरकार्य] देवताओं का काम या हित। वह काम जो देवताओं को इष्ट हो। उ०--(क) सुरकाज धरि कर राज तनु चले दलन खल निसिचर अनी।--मानस, २।१२६। (ख) उठे हरखि सुरकाजु सँवारन।--मानस, ३।२१।

सुरकानन--संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के बिहार करने का वन। नंदन कानन।

सुरकामिनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना। सुरांगना। अप्सरा [को०]।

सुरकारु--संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के शिल्पकार, विश्वकर्मा।

सुरकार्मुक--संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

सुरकार्य--संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं की तुष्टि के लिये किया हुआ कर्म। देवकार्य। जैसे--पूजन हवन आदि।

सुरकाष्ठ--संज्ञा पुं० [सं०] देवदारु। देवकाष्ठ।

सुरकुदाव(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सुर (= स्वर), सं० कु + हिं० दाँव (= धोखा)] स्वर के द्वारा धोखा देना। स्वर बदलकर बोलना, जिससे लोग धोखे में आ जायँ। उ०--चौक चारु करि कूप ढारु घरियार बाँधि घर। मुक्ति मोल करि खड्ग खोलि सिंघिहि निचोल वर। हय कुदाव दे सुरकुदाव गुन गान रंग को। जानु भाव शिवधाम धाव धन ल्याउ लंक को।--केशव (शब्द०)।

सुरकुनठ--संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार ईशानकोण में स्थित एक देश का नाम।

सुरकुल--संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का निवासस्थान।

सुरकृत्¹--संज्ञा पुं० [सं०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

सुरकृत्²--वि० देवताओं द्वारा किया हुआ।

सुरकृता--संज्ञा स्त्री० [सं०] गिलोय। गुडुची।

सुरकेतु--संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं या इंद्र की ध्वजा। २. इंद्र। उ०--द्वारपाल के वचन सुनत नृप उठे समाज समेतू। लेन चले मुनि की अगुवाई जिमि विधि कहँ सुरकेतू।--रघुराज (शब्द०)।

सुरक्त--वि० [सं०] १. सुंदर रँगा हुआ। अच्छी तरह रँगा हुआ। २. गाढ़ रक्त वर्ण का। ३. प्रभावित। वशीभूत। ४. अनुरक्त। ५. मधुर ध्वनियुक्त। ६. अत्यंत सुंदर। बहुत खूबसूरत [को०]।

सुरक्तक--संज्ञा पुं० [सं०] १. कोशम। कोशाम्र। विशेष दे० 'कोशम'। २. एक प्रकार का आम्रफल (को०)। ३. सोन गेरू। स्वर्ण-गैरिक।

सुरक्ष¹--संज्ञा पुं० [सं०] १. एक मुनि का नाम। २. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

सुरक्ष²--वि० उत्तम रूप से रक्षित। जिसकी भली भाँति रक्षा की गई हो।

सुरक्षण--संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम रूप से रक्षा करने की क्रिया। रखवाली। हिफाजत।

सुरक्षा--संज्ञा स्त्री० [सं०] सुरक्षण। सम्यक् रक्षा [को०]।

सुरक्षित--वि० [सं०] जिसकी भली भाँति रक्षा की गई हो। उत्तम रूप से रक्षित। अच्छी तरह रक्षा किया हुआ।

सुरक्षी--संज्ञा पुं० [सं० सुरक्षिन्] उत्तम या विश्वस्त रक्षक। अच्छा अभिभावक या रक्षक।

सुरक्ष्य--वि० [सं०] १. जो सम्यक् रक्षणीय हो। २. सरलतापूर्वक जिसकी रक्षा की जा सके [को०]।

सुरखंडनिका--संज्ञा स्त्री० [सं० सुरखण्डनिका] एक प्रकार की वीणा जो 'सुरमंडलिका' भी कहलाती है।

सुरख(पु)--वि० [फ़ा० सुर्ख] दे० 'सुर्ख'। उ०--हरषि हिये पर तिय धरयो सुरख सीप को हार।--पद्माकर (शब्द०)।

सुरखा¹--वि० [फ़ा० सुर्ख] दे० 'सुर्ख'। उ०--सुरखा अरु संजाब सुरमई अबलख भारी।--सूदन (शब्द०)।

सुरखा²--संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का लंबा पौधा जिसमें पत्ते बहुत कम होते हैं।

सुरखाब¹--संज्ञा पुं० [फ़ा० सुरख़ाब] चकवा।

मुहा०--सुरखाब का पर लगना = विलक्षणता या विशेषता होना। अनोखापन होना। जैसे--तुम में क्या कोई सुरखाब का पर है, जो पहले तुम्हें दें।

सुरखाब²--संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुरख़ाब] एक नदी का नाम जो बलख में बहती है।

सुरखिया--संज्ञा पुं० [फ़ा० सुर्ख + इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का पक्षी।

विशेष--यह सर से गरदन तक लाल होता है। इसकी पीठ भी लाल होती है, पर चोंच पीली और पैर काले होते हैं।

सुरखिया बगला--संज्ञा पुं० [हिं० सुर्ख + बगला] १. एक प्रकार का बगला जिसे गाय बगला भी कहते हैं।

सुरखी--संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुर्ख़] १. ईंटों का बनाया हुआ महीन चूरा जो इमारत बनाने के काम में आता है। २. दे० 'सुर्खी'।

यौ०--सुरखी चूना।

सुरखुरू--वि० [फ़ा० सुर्ख़रू] दे० 'सुर्खरू'। उ०--अलहदाद भल तेहि करगुरू। दीन दुनी रोसन सुरखुरू।--जायसी (शब्द०)।

सुरगंड—संज्ञा पुं० [सं० सुरगण्ड] एक प्रकार का फोड़ा ।

सुरगⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग] दे० 'स्वर्ग' । उ०—जीत्यौ सुरग जीति दिसि चारयौ ।—लाल कवि (शब्द०) ।

सुरगज—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं या इंद्र का हाथी ।

सुरगण—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव । २. देवगण । देवताओं का वर्ग या समूह ।

सुरगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दैवी गति । भावी । २. देवताओं की स्थिति या अवस्था (को०) ।

सुरगनⓅ—संज्ञा [सं० सुरगण] देवताओं का समूह । देवगण । सुरगण । उ०—सुरगन सहित सभय सुरराजू ।—मानस, २।२६४ ।

सुरगबेसाँ—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्गवेश्या] अप्सरा । (डिं०) ।

सुरगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] देवसंतान ।

सुरगाय—संज्ञा स्त्री० [पुं० सुर + गो] कामधेनु ।

सुरगायक—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के गायक । गंधर्व ।

सुरगायन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुरगायक' ।

सुरगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के रहने का पर्वत, सुमेरु ।

सुरगीⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्गीय] देवता । (डिं०) ।

सुरगी नदीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्गीय + नदी] स्वर्नदी । देवनदी । गंगा । (डिं०) ।

सुरगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के गुरु, बृहस्पति । उ०—बचन सुनत सुरगुरु मुसकाने ।—मानस, २।२१७ ।

सुरगुरुदिवस—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पतिवार ।

सुरगृह—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का मंदिर । सुरकुल ।

सुरगैयाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर + हिं० गैया] कामधेनु ।

सुरग्रामणी—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का नेता, इंद्र ।

सुरचाप—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष ।

सुरच्छनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुरक्षण] दे० 'सुरक्षण' । उ०—रन परम विचच्छन गरम तर धरम सुरच्छन करम कर ।—गि० दास (शब्द०) ।

सुरज:फल—संज्ञा पुं० [सं०] कटहल । पनस ।

सुरज[१]—वि० [सं० सुरजस्] (फूल) जिसमें उत्तम या प्रचुर पराग हो ।

सुरजⓅ[२]—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य] दे० 'सूर्य' ।

सुरजन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का वर्ग । देवसमूह ।

सुरजनⓅ[२]—वि० [सं० सज्जन] १. सज्जन । सुजन । २. चतुर । चालाक । उ०—कहो नैक समुझाइ मुहिं सुरजन प्रीतम आप । बस मन मैं मन कौ हरौ क्यों न बिरह संताप ।—रसनिधि (शब्द०) ।

सुरजनपन—संज्ञा पुं० [हिं० सुरजन + पन (प्रत्य०)] १. सज्जनता । भलमनसत । २. चालाकी । होशियारी । चतुराई ।

सुरजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक अप्सरा का नाम । २. पुराणानुसार एक नदी का नाम ।

सुरजेठोⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुरज्येष्ठ] ब्रह्मा । (डिं०) ।

सुरज्येष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं में बड़े, ब्रह्मा ।

सुरझनⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुलझना] दे० 'सुलझन' । उ०—गरजन मैं पुनि आप ही बरसन मैं पुनि आप । सुरझन मैं पुनि आप त्यों उरझन मैं पुनि आप ।—रसनिधि (शब्द०) ।

सुरझना—क्रि० अ० [हिं०] दे० 'सुलझना' । उ०—अरी करेजैं नैन तुव सरसि करेजे वार । अजहूँ सुरझत नाहिं ते सुर हित करत पुकार ।—रसनिधि (शब्द०) ।

सुरझाना—क्रि० स० [हिं० सुलझाना] दे० 'सुलझाना' । उ०—क्यों सुरझाऊँ री नँदलाल सों अरुझि रह्यो मन मेरो ।—सूर (शब्द०) ।

सुरझावनाⓅ—क्रि० स० [हिं० सुलझाना] दे० 'सुलझाना' । उ०—उरझ्यो काहू रूख में कहूँ न वल्कल चीर । सुरझावन के मिस तऊ ठिठकी मोरि शरीर ।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०) ।

सुरटीप—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुर + टीप] स्वर का आलाप । सुर की तान ।

सुरत[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. रतिक्रीड़ा । कामकेलि । संभोग । मैथुन । उ०—सुरत ही सब रैन बीती कोक पूरण रंग । जलद दामिनि संग सोहत भरे आलस संग ।—सूर (शब्द०) ।

यौ०—सुरतकेलि, सुरतक्रीड़ा = रतिक्रीड़ा । सुरतगुप्ता । सुरत-गुरु = पति । शौहर । सुरतगोपना । सुरतग्लानि । सुरत-तांडव = तीव्रतम कामवेग । प्रचंड संभोग । सुरतताली । सुरत-प्रसंग = कामक्रीड़ा में आसक्ति । सुरतभेद = एक प्रकार का रतिबंध । सुरतमृदित = रतिक्रीड़ा में मसल दिया हुआ । सुरतरंगी = संभोग में आसक्त । सुरतवाररात्रि = सुरतक्रीड़ा की रात । सुरतविशेष = एक रतिबंध । सुरतस्थ ।

२. उत्कृष्ट आनंद की अनुभूति (को०) । ३. एक बौद्ध भिक्षु का नाम ।

सुरत[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] ध्यान । याद । सुध । उ०—(क) धीर मढ़त मन छन नहीं कढ़त बदन तें बैन । तुरत सुरत की सुरत कै जुरत मुरत हँसि नैन ।—श्रृंगार सतसई (शब्द०) । (ख) करत महातम विपिन वधि चलो गयो करतार । तहँ अखंड लागी सुरत यथा तैल की धार ।—रघुराज (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—दिलाना ।—होना ।—लगना ।

मुहा०—सुरत बिसारना = भूल जाना । विस्मृत होना । सुरत सँभालना = होश सँभालना ।

सुरतगुप्ता, सुरतगोपना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुरतिगोपा' (को०) ।

सुरतग्लानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] रति या संभोगजनित थकान, ग्लानि या शिथिलता ।

सुरतताली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दूती । २. शिरोमाल्य । सेहरा ।

सुरतबंध—संज्ञा पुं० [सं०] संभोग का एक प्रकार ।

सुरतरंगिणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरतरङ्गिणी] गंगा ।

सुरतरु—संज्ञा पुं० [सं०] देवतरु । कल्पवृक्ष ।

सुरतरुवर—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष ।

सुरतस्थ—वि० [सं०] स्त्रीप्रसंग में रत । संभोगरत [को०] ।

सुरतांत—संज्ञा पुं० [सं० सुरतान्त] रति या संभोग का अंत ।

सुरता[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुर या देवता का भाव या कार्य । २. देवत्व । २. सुरसमूह । देवसमूह । देव जाति । ३. संभोग का आनंद । ४. पत्नी । स्त्री । ५. एक अप्सरा का नाम ।

सुरता[2]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की बाँस की नली जिसमें से दाना छोड़कर बोया जाता है ।

सुरता[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति, हिं० सुरत] १. चिंता । ध्यान । २. चेत । सुध । उ०—छाँड़ि शासना बौध की अरहंत की ना मानि । सुरता छाँड़ि पिशाचता काहे को करि बानि ।—(शब्द०) ।

सुरता(पु)[4]—वि० ध्यान लगानेवाला । ध्यानी ।

सुरता[5]—वि०, संज्ञा पुं० [सं० श्रोता] दे० 'श्रोता' ।

सुरता[6]—वि० [हिं० सुरत] समझदार । होशियार । बुद्धिमान् । सयाना । चालाक ।

सुरतात—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं के पिता, कश्यप । २. देवताओं के अधिपति, इंद्र ।

सुरतान[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं सुर+तान] स्वर का आलाप । सुर टीप ।

सुरतान[2]—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुलतान] दे० 'सुलतान' ।

सुरताल—संज्ञा पुं० [सं० स्वर+ताल] स्वर और ताल (संगीत) ।

सुरति[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+रति] विहार । भोगविलास । कामकेलि । संभोग । उ०—विरची सुरति रघुनाथ कुंजधाम बीच, काम बस नाम करे ऐसे भाव थपनो । जघनि सो मसकै सिकोरै नाक, ससकै मरोरै भौंह हंस कै सरीर डारै कपनो ।—काव्यकलाधर (शब्द०) ।

सुरति[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] स्मरण । सुधि । चेत । उ०—छिनछिन सुरति करत यदुपति की परत न मन समुझायो । गोकुलनाथ हमारे हित लगि लिखिहू क्यों न पठायो ।—सूर (शब्द०) ।
क्रि० प्र०—करना ।—दिलाना ।—लगना । - होना ।

सुरति[3]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सूरत] दे० 'सूरत' । उ०—सोवत जागत सपनबस रस रिस चैन कुचैन । सुरति श्यामघन की सुरति बिसरेहू बिसरै न ।—बिहारी (शब्द०) ।

सुरतिगोपना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो रतिक्रीड़ा करके आई हो और अपने सखियों आदि से यह बात छिपाती हो ।

सुरतिरव—संज्ञा पुं० [सं०] रतिक्रीड़ा के समय होनेवाली भूषणों की ध्वनि ।

सुरतिवंत(पु)—वि० [सं० सुरत+वान्] कामातुर । उ०—हरि हँसि भामिनी उर लाइ । सुरतिवंत गुपाल रीझे जानी अति सुखदाई ।—सूर (शब्द०) ।

सुरतिविचित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्या के चार भेदों में से एक । वह मध्या जिसकी रतिक्रिया विचित्र हो । उ०—मध्या आरूढ़यौवना प्रगलभवचना जान । प्रादुर्भूत मनोभवा सुरतिविचित्रा मान ।—केशव (शब्द०) ।

सुरती—संज्ञा स्त्री० [सूरत (नगर)+ई] खाने के तंबाकू के पत्तों का चूरा जो पान के साथ या यों ही चूना मिलाकर खाया जाता है । खैनी ।
विशेष—अनुमान किया जाता है कि पुर्तगालवालों ने पहले पहल इसका प्रचार सूरत नगर में किया था; इसी से इसका यह नाम पड़ा ।

सुरतुंग—संज्ञा पुं० [सं० सुरतुङ्ग] सुरपुन्नाग नामक वृक्ष ।

सुरतोषक—संज्ञा पुं० [सं०] १. कौस्तुभ मणि । २. वह जो देवताओं को तुष्ट करता है (को०) ।

सुरत्न[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना । स्वर्ण । २. माणिक्य । लाल ।

सुरत्न[2]—वि० १. सर्वश्रेष्ठ । २. उत्तम रत्नों से युक्त ।

सुरत्राण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुरत्राता' । उ०—बाजत घोर निसान सान सरत्रान लजावत ।—गि० दास (शब्द) ।

सुरत्राण(पु)[2]—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुलतान] दे० 'सुलतान' ।

सुरत्राता—संज्ञा पुं० [सं० सुर+त्रातृ] १. विष्णु । श्रीकृष्ण । २. इंद्र ।

सुरथ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक चंद्रवंशी राजा ।
विशेष—पुराणों के अनुसार ये स्वारोचिष मन्वंतर में हुए थे और इन्होंने पहले पहल दुर्गा की आराधना की थी । दुर्गा के वर से ये सावर्णि मनु के नाम से प्रसिद्ध हुए । दुर्गा सप्तशती में इनका विस्तृत वृत्तांत है ।
२. द्रुपद के एक पुत्र का नाम । ३. जयद्रथ के एक पुत्र का नाम । ४. सुदेव के एक पुत्र का नाम । ५. जनमेजय के एक पुत्र का नाम । ६. अधिरथ के एक पुत्र का नाम । ७. कुंडक के एक पुत्र का नाम । ८. रणक के एक पुत्र का नाम । ९. चंपकपुरी के राजा हंसध्वज का पुत्र । १०. सुंदर रथ । अनूप रथ (को०) । ११. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।

सुरथ[2]—सुंदर रथ से युक्त [को०] ।

सुरथ[3]—संज्ञा पुं० [सं० सुरथम्] कुश द्वीप के अंतर्गत एक वर्ष ।

सुरथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक अप्सरा का नाम । २. पुराणानुसार एक नदी का नाम ।

सुरथाकार—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्ष का नाम ।

सुरथान—संज्ञा पुं० [सं० सुर+स्थान] स्वर्ग । (डिं०) ।

सुरदार—वि० [हिं० सुर+फ़ा दार] जिसके गले के स्वर सुंदर हों । सुस्वर । सुरीला ।

सुरदारु—संज्ञा पुं० [सं०] देवदार । देवदारु वृक्ष ।

सुरदीर्घिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशगंगा ।

सुरदुंदुभी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरदुन्दुभि] १. देवताओं का नगाड़ा । २. तुलसी ।

सुरदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] योगमाया जिसने यशोदा के गर्भ में अवतार लिया था और जिसे कंस पटकने चला था ।

सुरदेश—संज्ञा पुं० [सं० सुर+देश] स्वर्ग । देवलोक ।

सुरदोषी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुरद्विष] देवद्रोही, असुर ।

सुरद्रु--संज्ञा पुं० [सं०] १. देवदारु। २. सुरद्रुम।

सुरद्रुम--संज्ञा पुं० [सं०] १. कल्पवृक्ष। २. देवदारु (को०)। ३. देवनल। बड़ा नरकट। बड़ा नरसल।

सुरद्विप--संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं का हाथी। देवहस्ती। २. इंद्र का हाथी। ऐरावत।

सुरद्विष्--संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं का शत्रु। असुर। दानव। राक्षस। २. राहु।

सुरधनु, सुरधनुष--संज्ञा पुं० [सं० सुरधनुस्] १. इंद्रधनुष। २. नखक्षत का चिह्न (को०)।

सुरधाम--संज्ञा पुं० [सं० सुरधामन्] देवलोक। स्वर्ग। उ०--तनु परिहरि रघुबर बिरह राउ गएउ सुरधाम।--मानस, २।१५५।

मुहा०--सुरधाम सिधारना = मर जाना।

सुरधुनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरधूप--संज्ञा पुं० [सं०] धूना। राल। सर्जरस।

सुरधेनु--संज्ञा स्त्री० [सं० सुर+धेनु] देवताओं की गाय, कामधेनु।

सुरध्वज--संज्ञा पुं० [सं०] सुरकेतु। इंद्रध्वज।

सुरनंदा--संज्ञा स्त्री० [सं० सुरनन्दा] एक नदी का नाम।

सुरनगर--संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरनदी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गंगा। २. आकाशगंगा।

सुरनाथ--संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

सुरनायक--संज्ञा पुं० [सं०] सुरपति। इंद्र।

सुरनारी--संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना। देवबाला। देववधू।

सुरनाल--संज्ञा पुं० [सं०] बड़ा नरसल। देवनल।

सुरनाह(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सुरनाथ] देवराज इंद्र। उ०--परिघा कहँ जादव हेरि हयो। सुरनाह तबै गत चेत भयो।--गिरिधर (शब्द०)।

सुरनिम्नगा--संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरनिर्गंध--संज्ञा पुं० [सं० सुरनिर्गन्ध] तेजपत्ता। तेजपत्र। पत्रज।

सुरनिर्झरिणी--संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशगंगा।

सुरनिलय--संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत, जहाँ देवता रहते हैं।

सुरप(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सुरपति] इंद्र। उ०--या कहि सुरप गयहु सुरधाम।--पद्माकर (शब्द०)।

सुरपति--संज्ञा पुं० [सं०] १. देवराज, इंद्र। उ०--सुरपति निज रथु तुरत पठावा।--मानस, २।८८। २. विष्णु का एक नाम। उ०--सुरपति गति मानी, सासन मानी, भृगुपति को सुख भारी।--केशव (शब्द०)।

सुरपतिगुरु--संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

सुरपतिचाप--संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

सुरपतितनय--संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र का पुत्र, जयंत। २. अर्जुन।

सुरपतित्व--संज्ञा पुं० [सं०] सुरपति का भाव या पद।

सुरपतिपुर--संज्ञा पुं० [सं०] देवलोक। स्वर्ग। उ०--भूपति सुरपतिपुर पगु धारेउ।--मानस, २।१६०।

सुरपतिसुत--संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का पुत्र, जयंत। उ०--सुरपतिसुत धरि बाइस बेखा।--मानस, ३।१।

सुरपथ--संज्ञा पुं० [सं०] आकाश।

सुरपन--संज्ञा पुं० [सं० सुरपुन्नाग] पुन्नाग। सुरंगी। सुलताना चंपा।

सुरपर्ण--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सुगंधित शाक।

पर्या०--देवपर्ण। सुगंधिक। मारीपत्र। गंधपत्रक।

विशेष--यह क्षुप जाति की सुगंधित वनस्पति है। वैद्यक के अनुसार यह कटु, उष्ण तथा कृमि, श्वास और कास की नाशक तथा दीपन है।

सुरपर्णिक--संज्ञा पुं० [सं०] पुन्नाग वृक्ष।

सुरपर्णिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] पुन्नाग। सुलताना चंपा।

सुरपर्णी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पलासी। पलाशी। २. पुन्नाग। पुलाक।

सुरपर्वत--संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु।

सुरपांसुला--संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

सुरपादप--संज्ञा पुं० [सं०] देवद्रुम। कल्पतरु।

सुरपाल--संज्ञा पुं० [सं० सुर+पालक] इंद्र। उ०--सुरन सहित तहँ आइ कै वज्र हन्यो सुरपाल।--गिरिधर (शब्द०)।

सुरपालक--संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र। उ०--आनंद के कंद, सुरपालक के बालक ये।--केशव (शब्द०)।

सुरपुन्नाग--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पुन्नाग जिसके गुण पुन्नाग के समान ही होते हैं।

सुरपुर--संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सुरपुरी] १. देवताओं की पुरी, अमरावती। २. देवलोक। स्वर्ग। उ०--नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा।--मानस, २।२४६।

मुहा०--सुरपुर सिधारना = मर जाना, गत हो जाना।

सुरपुरकेतु--संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र। उ०--नृप केतु बल के केतु सुरपुरकेतु छन महँ मोहहीं।--गि० दास (शब्द०)।

सुरपुरी--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुरपुर'।

सुरपुरोधा--संज्ञा पुं० [सं० सुरपुरोधस्] देवताओं के पुरोहित, बृहस्पति।

सुरपुष्प--संज्ञा पुं० [सं०] देवकुसुम। स्वर्गीय पुष्प।

सुरप्रतिष्ठा--संज्ञा स्त्री० [सं०] देवमूर्ति की स्थापना।

सुरप्रवीर--संज्ञा पुं० [सं०] एक अग्नि।

सुरप्रिय[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. बृहस्पति। ३. एक प्रकार का पक्षी। ४. अगस्त्य। अगस्तिया। ५. एक पर्वत का नाम।

सुरप्रिय[2]--वि० जो देवताओं को प्रिय हो।

सुरप्रिया--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक अप्सरा का नाम। २. चमेली। जाती पुष्प। ३. सोना केला। स्वर्णरंभा।

सुरफाँक ताल--संज्ञा पुं० [हिं० सुर+फाँक (=खाली)+ताल] मृदंग का एक ताल। इसमें तीन आघात और एक खाली होता है। जैसे,--धा (+) घेड़े, नागध (०) घेड़े नाग, गद्दी (२), घेड़े नाग धा (+)।

सुरबहार—संज्ञा पुं० [हिं० सुर+फ़ा० बहार] सितार की तरह का एक प्रकार का बाजा।

सुरबाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवता की स्त्री। देवांगना।

सुरबुली—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरवल्ली ?] एक पौधा जिसकी जड़ से लाल रंग निकालते हैं। चिरवल।

विशेष—यह पौधा बंगाल और उड़ीसा से लेकर मद्रास और सिंहल तक होता है। इसकी जड़ की छाल से एक प्रकार का सुंदर लाल रंग निकलता है जिससे मछलीपट्टन्, नेलोर आदि स्थानों में कपड़े रँगे जाते हैं।

सुरबृच्छ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुरवृक्ष] कल्पवृक्ष। दे० 'सुरवृक्ष'। उ०—मुख ससि सरगर अधिक वचन श्री अमृत ऐसी। सुर सुरभी सुरबृच्छ देनि करतल मँह वैसी।—गि० दास (शब्द०)।

सुरबेल—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर+बल्ली] कल्पलता।

सुरभंग—संज्ञा पुं० [सं० स्वरभङ्ग] प्रेम, आनंद, भय आदि में होनेवाला स्वर का विपर्यास जो सात्विक भावों के अंतर्गत है। उ०—(क) स्तंभ स्वर रोमांच सुरभंग कंप वैवर्ण। अश्रु प्रलाप बखानिए आठो नाम सुवर्ण।—केशव (शब्द०)। (ख) निसि जागे पागे अमल हित को दरसन पाइ। बोल पातरो होत जो सो सुरभंग बताइ।—काव्यकलाधर (शब्द०)। (ग) क्रोध हरख मद भीत तें वचन और विधि होय। ताहि कहत सुरभंग हैं कवि कोविद सब कोय।—मतिराम (शब्द०)।

सुरभवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं का निवासस्थान। मंदिर। २. सुरपुरी। अमरावती।

सुरभानु(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुर+भानु] १. इंद्र। उ०—राधे सो रस बरनि न जाइ। जा रस को सुरभानु, शीश दियो, सो तैं पियो अकुलाइ।—सूर (शब्द०)। २. सूर्य। उ०—सुनि सजनी सुरभानु है अति मलान मतिमंद। पूनो रजनी मैं जु गिलि देत उगिलि यह चंद।—शृंगार सतसई (शब्द०)।

सुरभि¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुगंध। २. वसंत काल। चैत्र मास। ३. सोना। स्वर्ण। ४. गंधक। ५. चंपक। चंपा। ६. जायफल। ७. कदंब। ८. बकुल। मौलसिरी। ९. शमी। सफेद कीकर। १०. कणगुग्गुल। ११. गंधतृण। रोहिस घास। १२. राल। धूना। १३. कपित्थ। गंधफल। १४. बर्बर चंदन। १५. वह अग्नि जो यज्ञयूप की स्थापना में प्रज्वलित की जाती है। १६. जातीफल। जायफल (को०)। १७. सुगंधित वस्तु (को०)।

सुरभि²—संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. गौ। ३. गायों की अधिष्ठात्री देवी तथा गो जाति की आदि जननी। ४. कार्तिकेय की एक मातृका का नाम। ५. सुरा। शराब। ६. गंगापत्री। ७. वनमल्लिका। सेवती। ८. तुलसी। ९. शल्लकी। सलई। १०. रुद्रजटा। ११. एलवालुक। एलुवा। १२. सुगंधि। खुशबू। १३. पूर्व दिशा (को०)।

सुरभि³—वि० १. सुगंधित। सुवासित। २. मनोरम। सुंदर। प्रिय। ३ ख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर (को०)। ४. बुद्धिमान। ज्ञानवान्। विद्वान् (को०)। ५. उत्तम। श्रेष्ठ। बढ़िया। ६. सदाचारी। सद्भावयुक्त। गुणवान्।

सुरभिकंदर—संज्ञा पुं० [सं० सुरभिकन्दर] एक पर्वत का नाम।

सुरभिकांता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरभिकान्ता] वासंती पुष्प वृक्ष। नेवारी।

सुरभिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्ण कदली। सोना केला।

सुरभिगंध¹—संज्ञा पुं० [सं० सुरभिगन्ध] तेजपत्ता।

सुरभिगंध²—वि० सुगंधित। सुवासित। खुशबूदार।

सुरभिगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चमेली।

सुरभिगंधि—वि० [सं० सुरभिगन्धि] सुगंधियुक्त [को०]।

सुरभिगंधी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरभिगन्धी] सुगंधित वस्तु।

सुरभिगोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] गाय बैलों का झुंड। पशुसमूह [को०]।

सुरभिघृत—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी तरह तपाया हुआ सुगंधित घी। गोघृत [को०]।

सुरभिचूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] सुवासित बुकनी या चूरा।

सुरभिच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] १. कैथ। कपित्थ। २. सुगंधित जंबूफल।

सुरभित—वि० [सं०] १. सुगंधित। सुवासित। २. विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर [को०]।

सुरभितनय—संज्ञा पुं० [सं०] बैल। साँड़।

सुरभितनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाय।

सुरभिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुरभि का भाव। २. सुगंधि। खुशबू।

सुरभित्रिफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनों का समूह।

सुरभित्वक्—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी इलायची।

सुरभिदारु—संज्ञा पुं० [सं०] धूप सरल।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह सरल, कटु, तिक्त, उष्ण तथा कफ, वात, त्वचा रोग, सूजन और व्रण का नाशक है। यह कोठे को भी साफ करता है।

सुरभिदारुक—संज्ञा पुं० [सं०] सरलवृक्ष। विशेष दे० 'सुरभिदारु'।

सुरभिपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजजंबू वृक्ष। गुलाब जामुन। विशेष दे० 'गुलाब जामुन'।

सुरभिपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. साँड़। २. बैल।

सुरभिबाण—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव [को०]।

सुरभिमंजरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरभिमञ्जरी] श्वेत तुलसी।

सुरभिमान्¹—वि० [सं० सुरभिमत्] सुगंधित। सुवासित।

सुरभिमान्²—संज्ञा पुं० अग्नि।

सुरभिमास—संज्ञा पुं० [सं०] चैत्र मास। चैत का महीना।

सुरभिमुख—संज्ञा पुं० [सं०] वसंत ऋतु का आरंभ।

सुरभिवल्कल—संज्ञा पुं० [सं०] दालचीनी। गुड़त्वक्।

सुरभिवाण—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव का एक नाम।

सुरभिशाक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सुगंधित शाक।

सुरभिषक्—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार।

सुरभिसमय—संज्ञा पुं० [सं०] वसंतकाल।

सुरभिस्रग्धर—वि० [सं०] सुगंधित माला धारण करनेवाला।

सुरभिस्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शल्लकी। सलई।

सुरभी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर + भी (= भय)] देवताओं का डर या भय। आधिदैविक भीति [को०]।

सुरभी[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुगंधि। खुशबू। २. गाय। ३. सलई। शल्लकी। ४. किवाँछ। कौंच। कपिकच्छु। ५. बबई तुलसी। ६. रुद्रजटा। शंकर जटा। ७. एलुवा। एलवालुक। ८. मात्रिका शाक। पोइया। ९. सुगंधित शालिधान्य। १०. मुरामांसी। एकांगी। ११. रासन। रास्ना। १२. चंदन।

सुरभीगंध—संज्ञा पुं० [सं० सुरभीगन्ध] तेजपत्ता [को०]।

सुरभीगोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. बैल। २. साँड़।

सुरभीपट्टन—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नगर।

सुरभीपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजजंबू। दे० 'सुरभिपत्रा' [को०]।

सुरभीपुर—संज्ञा पुं० [सं०] गोलोक। उ०—ब्रज विष्णु अनादि मुकुंद प्रभो। सुरभीपुर नायक विश्व विभो।—गिरिधर (शब्द०)।

सुरभीमूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] गोमूत्र। गोमूत।

सुरभीरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सलई। शल्लकी।

सुरभीरुह—संज्ञा पुं० [सं०] देवदारु का वृक्ष [को०]।

सुरभूप[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. विष्णु। उ०—सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।—तुलसी (शब्द०)।

सुरभूय—संज्ञा पुं० [सं०] किसी देवता के साथ एकाकार होना। देवत्व या देवलीनता की प्राप्ति होना [को०]।

सुरभूरुह—संज्ञा पुं० [सं०] देवतरु। कल्पतरु। २. देवदारु का वृक्ष। देवदार।

सुरभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के पहनने का मोतियों का हार जो चार हाथ लंबा होता है और जिसमें १,००८ दाने होते हैं।

सुरभोग—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत। उ०—सोम सुधा पीयूष मधु अगदकार सुरभोग। अमी अमृत जहँ हरि कथा मते रहत सब लोग।—नंददास (शब्द०)।

सुरभौन㉃—संज्ञा पुं० [सं० सुरभवन] दे० 'सुरभवन'।

सुरमंडल—संज्ञा पुं० [सं० सुरमण्डल] १. देवताओं का मंडल। २. एक प्रकार का बाजा। इसमें एक तख्ते में तार जड़े होते है। इसे जमीन पर रखकर मिजराब से बजाते हैं।

सुरमंडलिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरमण्डलिका] दे० 'सुरखंडनिका'।

सुरमंत्री—संज्ञा पुं० [सं० सुरमन्त्रिन्] देवगुरु बृहस्पति।

सुरमंदिर—संज्ञा पुं० [सं० सुरमन्दिर] देवताओं का स्थान। मंदिर। देवालय।

सुरमई[1]—वि० [फ़ा०] सुरमे के रंग का। हलका नीला। सफेदी लिए नीला या काला।

सुरमई[2]—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का रंग जो सुरमे के रंग से मिलता जुलता या हलका नीला होता है। २. इस रंग में रँगा हुआ एक प्रकार का कपड़ा जो प्रायः अस्तर आदि के काम में आता है। ३. इस रंग का कबूतर।

सुरमई[3]—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया जो बहुत काली होती है तथा जिसकी गरदन हरे रंग की और चमकदार होती है।

सुरमई कलम—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सुरमा लगाने की सलाई। सुरमचू।

सुरमचू—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुरमह् + चू (प्रत्य०)] सुरमा लगाने की सलाई।

सुरमणि—संज्ञा पुं० [सं०] चिंतामणि। उ०—लोयन नील सरोज से भूपर मसि बिंदु विराज। जनु विधु मुखछवि अमिय को रच्छक राख्यो रसराज।—तुलसी (शब्द०)।

सुरमण्य—वि० [सं०] बहुत अधिक रमणीय। बहुत सुंदर।

सुरमनि㉃—संज्ञा पुं० [सं० सुरमणि] चिंतामणि। कौस्तुभमणि। उ०—परिहरि सुरमुनि सुनाम गुंजा लखि लटत।—तुलसी ग्रं०, पृ० १२९।

सुरमा[1]—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुरमह्] एक प्रकार का प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो प्रायः नीले रंग का होता है और जिसका महीन चूर्ण स्त्रियाँ आँखों में लगाती हैं।

विशेष—यह फारस में लहौल, पंजाब में झेलम तथा बरमा में टेनासारिम नामक स्थान पर पाया जाता है। यह बहुत भारी, चमकीला और भुरभुरा होता है। इसका व्यवहार कुछ ओषधों और कुछ धातुओं को दृढ़ करने में होता है। प्रायः छापे के सीसे के अक्षरों में उन्हें मजबूत करने के लिये इसका मेल दिया जाता है। आजकल बाजारों में जो सुरमा मिलता है, वह प्रायः काबुल और बुखारे के गलोना नामक धातु का चूर्ण होता है।

यौ०—सुरमा सुलेमानी = सुलेमान का सुरमा। वह सुरमा जिसे लगाने पर निधियाँ दिखाई पड़ें। सुरमे का डोरा = आँखों में लगी हुई सुरमे की रेखा। सुरमे की कलम = पेंसिल।

२. आँखों में लगाने की सूखी और पीसी हुई दवा। रसाजन (को०)।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

यौ०—सफेद सुरमा = दे० 'सुरमा सफेद'।

सुरमा[2]—वि० अत्यंत बारीक पीसा हुआ।

सुरमा[3]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी। वि० दे० 'सूरमा'।

सुरमा[4]—संज्ञा स्त्री० एक नदी जो आसाम के सिलहट जिले में बहती है।

सुरमाकश—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह जो सुरमा लगाता हो। सुरमा लगानेवाला। २. सुरमा लगाने की सलाई।

सुरमादान—संज्ञा पुं० [फ़ा०] दे० 'सुरमादानी'।

सुरमादानी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुरमई + दान (प्रत्य०)] लकड़ी या धातु का शीशीनुमा पात्र जिसमें सुरमा रखा जाता है।

सुरमानी—वि० [सं० सुरमानिन्] अपने को देवता समझनेवाला।

सुरमा सुफ़ेद—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो 'जिपसम' नाम से प्रसिद्ध है।

विशेष—इसका रंग पीलापन लिए सफेद होता है। इससे 'पेरिस प्लास्टर' बनाया जा सकता है जिससे एलक्ट्रो टाइप और रबड़ की मोहर के साँचे बनाए जाते हैं। यह मुख्यतः शीशे और धातु की चीजें जोड़ने के काम में आता है।

२. एक खनिज पदार्थ जो फिटकरी के समान होता है और काबुल के पहाड़ों पर पाया जाता है। आँखों की जलन, प्रमेह, आदि रोगों में इसका प्रयोग होता है।

सुरमृत्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपीचदन। सौराष्ट्रमृत्तिका।

सुरमेदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] महामेदा।

सुरमैⓅ—वि० [फ़ा० सुरमई] दे० 'सुरमई'।

सुरमौरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुर + हिं० मौर] विष्णु। उ०—जाके बिलोकत लोकप होत बिसोक लहैं सुरलोक सुठौरहि। सो कमला तजि चंचलता अरु कोटि कला रिझवैं सुरमौरहि। —तुलसी (शब्द०)।

सुरम्य—वि० [सं०] अत्यंत मनोरम। अत्यंत रमणीय। बहुत सुंदर।

सुरया—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की दाँती जो झाड़ी काटने के काम में आती है।

सुरयान—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं की सवारी का रथ।

सुरयुवती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरयुवति] अप्सरा।

सुरयोषा, सुरयोषित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा।

सुरराईⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुरराज] १. इंद्र। २. विष्णु। उ०—रानी ते बूझेउ सुरराई। माँगी जो कुछ वाको भाई। रमानाथ नारी ते भाषा। माँगहु वर जो मन अभिलाषा।—विश्राम (शब्द०)।

सुरराज्, सुरराज, सुरराट्—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

यौ०—सुरराज शरासन = इंद्रधनुष।

सुरराजगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

सुरराजता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुरराज होने का भाव या पद। इंद्रत्व। इंद्रपद।

सुरराजमंत्री—संज्ञा पुं० [सं० सुरराजमन्त्रिन्] दे० 'सुरराजगुरु'।

सुरराजवस्ति—संज्ञा पुं० [सं०] पिंडली। इंद्रवस्ति।

सुरराजवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] पारिजात तरु। परजाता।

सुरराजा—संज्ञा पुं० [सं० सुरराजन्] इंद्र।

सुररामⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुरराज, प्रा० सुरराय] दे० 'सुरराज'।

सुररावⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुरराज, प्रा० सुरराय] दे० 'सुरराज'। उ०—नल कृत पुल लखि सिंधु में भए चकित सुरराव।—पद्माकर (शब्द०)।

सुररिपु—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के शत्रु, असुर। राक्षस।

सुररूख, सुररूषⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुर + हिं० रूख (= वृक्ष)] कल्पवृक्ष। उ०—(क) नव पल्लव फल सुमन सुहाए। निज संपति सुररूख लजाए —मानस, १।२२७। (ख) राम नाम सज्जन सुररूषा। राम नाम कलि मृतक पियूषा।—रघुराज (शब्द०)।

सुरर्षभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं में श्रेष्ठ, इंद्र। २. शिव। महादेव।

सुरर्षि—संज्ञा पुं० [सं० सुर + ऋषि] देवऋषि। देवर्षि।

सुरलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी मालकंगनी। महाज्योतिष्मती लता।

सुरललना—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवबाला। देवांगना।

सुरला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गंगा। २. एक नदी का नाम।

सुरलासिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वंशी। २. वंशी की ध्वनि।

सुरली—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० रली] सुंदर क्रीड़ा। उ०—लखि सु उदर रोमावली अली चली यह बात। नाग लली सुरली करैं मनु त्रिवली के पात।—शृंगार सतसई (शब्द०)।

सुरलोक—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग। देवलोक।

यौ०—सुरलोकराज्य = देवलोक का राज्य।

सुरलोक सुंदरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरलोक सुन्दरी] १. अप्सरा। देवांगना। २. दुर्गा का एक नाम [को०]।

सुरवधू—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं की पत्नी। देवांगना।

सुरवर—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं में श्रेष्ठ, इंद्र।

सुरवर्त्म—संज्ञा पुं० [सं० सुरवर्त्मन्] देवताओं का मार्ग। आकाश।

सुरवल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत दूर्वा। सफेद दूब।

सुरवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] तुलसी।

सुरवस—संज्ञा पुं० [देश०] जुलाहों की वह पतली हलकी छड़ी, पतला बाँस या सरकंडा जिसका व्यवहार ताना तैयार करने में होता है।

विशेष—ताना तैयार करने के लिये जो लकड़ियाँ जमीन में गाड़ी जाती हैं, उनमें से दोनों सिरों पर रहनेवाली लकड़ियाँ तो मोटी और मजबूत होती हैं जिन्हें 'पारिया' कहते हैं; और इनके बीच में थोड़ी थोड़ी दूर पर जो चार चार पतली लकड़ियाँ एक साथ गाड़ी जाती हैं, वे 'सुरवस' या 'सुरस' कहलाती हैं।

सुरवा[1]—संज्ञा पुं० [सं० स्रुवस्] छोटी करछी के आकार का लकड़ी का बना हुआ एक प्रकार का पात्र जिससे हवन आदि में घी की आहुति देते हैं। स्रुवा।

सुरवा[2]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शोरबा] दे० 'शोरबा'।

सुरवाड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूअर + वाड़ी (प्रत्य०)] सूअरों के रहने का स्थान। सूअरबाड़ा।

सुरवाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देववाणी। संस्कृत भाषा।

सुरवाल[1]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शलवार] पायजामा। पैजामा।

सुरवाल[2]—संज्ञा पुं० [देश०] सेहरा।

सुरवास—संज्ञा पुं० [सं०] देवस्थान। स्वर्ग।

सुरवाहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरविटप—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

सुरविद्विष्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुरवैरी'।

सुरविलासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा [को०]।

सुरवीथी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नक्षत्रों का मार्ग।

सुरवीर—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र। उ०—गने पदाती वीर सब अरिघाती रनधीर। दोउ आँखैं राती किए लखि मोहे सुरवीर।—गि० दास (शब्द०)।

सुरवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पतरु।

सुरवेला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम।

सुरवेश्म—संज्ञा पुं० [सं० सुरवेश्मन्] स्वर्ग। देवलोक।

सुरवैद्य—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार।

सुरवैरी—संज्ञा पुं० [सं० सुरवैरिन्] देवताओं के शत्रु, असुर।

सुरशत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] असुर।

सुरशत्रुहन्—संज्ञा पुं० [सं०] असुरों का नाश करनेवाले, शिव।

सुरशयनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी। विष्णुशयनी एकादशी।

सुरशाखी—संज्ञा पुं० [सं० सुरशाखिन्] कल्पवृक्ष।

सुरशिल्पी—संज्ञा पुं० [सं० सुरशिल्पिन्] विश्वकर्मा।

सुरश्रेष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो देवताओं में श्रेष्ठ हो। २. विष्णु। ३. शिव। ४. गणेश। ५. धर्म। ६. इंद्र।

सुरश्रेष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्राह्मी।

सुरश्वेता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक जाति की श्वेत छिपकली। बम्हनी।

सुरसंघ—संज्ञा पुं० [सं० सुरसङ्घ] देववर्ग। देवसमूह।

सुरसंत(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती] दे० 'सरस्वती'।

सुरसंभवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हुरहुर। आदित्यभक्ता।

सुरस[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. बोल। हीरा बोल। बर्बर रस। २. दालचीनी। गुड़त्वक्। ३ तेजपत्ता। तेजपत्र। ४. रूसा घास। गंधतृण। ५. तुलसी। ६. सँभालू। सिंधुवार। ७. शालमली वृक्ष का निर्यास। मोचरस। ८. पीतशाल। ९. एक असुर नाग (को०)। १०. धूना। राल (को०)।

सुरस[2]—वि० १. सरस। रसीला। २. स्वादिष्ट। मधुर। ३. सुंदर। उ०—हरि श्याम घन तन परम सुंदर तड़ित वसन बिराजई। अँग अंग भूषण सुरस शशि पूरणकला जनु भ्राजई।—सूर (शब्द०)।

सुरस[3]—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सुरवस'।

सुरसख—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं के सखा इंद्र। २. गंधर्व।

सुरसत(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती] सरस्वती। (डिं०)।

सुरसतजनक—संज्ञा पुं० [सं० सरस्वती + जनक] ब्रह्मा। (डिं०)।

सुरसती(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सरस्वती] १. सरस्वती। उ०—उर उरवी सुरसरि सुरसती जमुना मिलहिं प्रयाग जिमि।—गि० दास (शब्द०)। २. एक प्रकार की नाव।

विशेष—यह नाव तीस हाथ लंबी होती है और इसका आगा तथा पीछा आठ आठ हाथ चौड़ा होता है। इस नाव के पेंदे में एक कुंड बना रहता है जिसमें उतरकर लोग स्नान कर सकते हैं।

सुरसत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं में श्रेष्ठ, विष्णु।

सुरसदन—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के रहने का स्थान, स्वर्ग।

सुरसद्म—संज्ञा पुं० [सं० सुरसद्मन्] स्वर्ग।

सुरसमिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवमंडली। देवसभा [को०]।

सुरसमध—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवदारु।

सुरसर[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुर + सर] मानसरोवर। उ०—सुरसर सुभग बनज बन चारी। डाबर जोग कि हंसकुमारी।—तुलसी (शब्द०)।

सुरसर[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित्] दे० 'सुरसरि'।

सुरसरसुता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरयू नदी। उ०—तुलसी उर सुरसरसुता लसत सुथल अनुमानि।—तुलसी (शब्द०)।

सुरसरि[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित्] १. गंगा। उ०—सुरसरि जब भुव ऊपर आवै। उनको अपनो जल परसावै।—सूर (शब्द०)। २. गोदावरी नदी। उ०—सुरसरि ते आगे चले मिलिहैं कपि सुग्रीव। देहैं सीता की खबरि बाढ़ै सुख अति जीव।—केशव (शब्द०)।

सुरसरि[2]—संज्ञा स्त्री० १. कावेरी नदी। (डिं०)। २. दे० 'सुरसुरी'।

सुरसरित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

यौ०—सुरसरित्सुत = भीष्म।

सुरसरिता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर + सरिता] दे० 'सुरसरित्'। उ०—मानहुँ सुरसरिता विमल, जल उछलत जुग मीन।—बिहारी (शब्द०)।

सुरसरी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित] दे० 'सुरसरि'।

सुरसर्षपक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की सरसों। देवसर्षपक।

सुरसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध नागमाता जो समुद्र में रहती थी और जिसने हनुमान् जी को समुद्र पार करने के समय रोका था।

विशेष—जिस समय हनुमान् जी सीता जी की खोज में लंका जा रहे थे, उस समय देवताओं ने सुरसा से, जो समुद्र में रहती थी, कहा कि तुम विकराल राक्षस का रूप धारण कर उनको रोको। इससे उनकी बुद्धि और बल का पता लग जायगा। तदनुसार सुरसा ने विकराल रूप धारण कर हनुमान् जी को रोककर कहा कि मैं तुम्हें खाऊँगी। यह कहकर उसने मुँह फैलाया। हनुमान् जी ने उससे कहा कि जानकी जी की खबर राम जी को देकर मैं तुम्हारे पास आऊँगा। सुरसा ने कहा ऐसा नहीं हो सकता। पहले तुम्हें मेरे मुँह में प्रवेश करना होगा, क्योंकि मुझे ऐसा वर मिला है कि सबको मेरे मुँह में प्रवेश करना पड़ेगा। यह कह वह मुँह फैलाकर हनुमान् जी के सामने आई। हनुमान् जी ने अपना शरीर उससे भी अधिक बढ़ाया। ज्यों ज्यों

सुरसा अपना मुँह बढ़ाती गई, त्यों त्यों हनुमान् जी भी अपना शरीर बढ़ाते गए। अंत में हनुमान् जी ने बहुत छोटा रूप धारण करके उसके मुँह में प्रवेश किया और बाहर निकल कर कहा देवि, अब तो तुम्हारा वर सफल हो गया। इसपर सुरसा ने हनुमान् जी को आशीर्वाद दिया और उनकी सफलता की कामना की। (रामायण)।

२. एक अप्सरा का नाम। ३. एक राक्षसी का नाम। ४. तुलसी। ५. रासन। रास्ना। ६. सौंफ। मिश्रेया। ७. ब्राह्मी। ८. बड़ी शतावर। सतावर। ९. जूही। श्वेत यूथिका। १०. सफेद निसोथ। श्वेत त्रिवृत्ता। ११. सलई। शल्लकी। १२. नील सिंधुवार। निर्गुंडी। १३. कटाई। बनभंटा। बृहती। वार्ताकी। १४. भटकटैया। कटेरी। कंटकारी। १५. एक प्रकार की रागिनी। १६. दुर्गा का एक नाम। १७. रुद्राश्व की एक पुत्री का नाम। १८. पुराणानुसार एक नदी का नाम। १९. अंकुश के नीचे का नुकीला भाग। २०. बोल नामक एक गंधद्रव्य (को०)। २१. एक वृत्त का नाम।

सुरसाईंⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुर + हिं० साईं (= स्वामी)] १. इंद्र। उ०—आपु लसैं जैसे सुरसाईं। सब नरेश जनु सुर समुदाई। —सबलसिंह (शब्द०)। २. शिव। उ०—सब विद्या के ईश गुसाईं। चरण वंदि बिनवों सुरसाईं।—शंकरदिग्विजय (शब्द०)। ३. विष्णु। उ०—बोले मधुर बचन सुरसाईं। मुनि कहँ चले विकल की नाईं। तुलसी (शब्द०)।

सुरसाग्र—संज्ञा पुं० [सं०] संभालू की मंजरी। सिंधुवार मंजरी।

सुरसाग्रज—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत तुलसी।

सुरसाग्रणी—संज्ञा पुं० दे० 'सुरसाग्रज'।

सुरसाच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] सुरक्य का पत्ता। श्वेत तुलसी का पत्र [को०]।

सुरसादिवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में कुछ विशिष्ट ओषधियों का एक वर्ग।

विशेष—इस वर्ग में तुलसी (सुरसा), श्वेत तुलसी, गंधतृण, गंधेज घास (सुगंधक), काली तुलसी, कसौंधी (कासमर्द), लटजीरा (अपामार्ग), वायबिडंग (बिडंग), कायफल (कटफल), सम्हालू (निर्गुंडी), बम्हनेटी (भारंगी), मकोय (काकमाची), बकायन (विषमुष्टिक), मूसाकानी (मूषाकर्णी), नीला सम्हालू (नील सिंधुवार), भुई कदंब (भूमि कदंब), नाम की ओषधियाँ आती हैं। वैद्यक के अनुसार यह प्रयोग कफ, कृमि, सर्दी, अरुचि, श्वास, खाँसी आदि का नाश करनेवाला और व्रणशोधक है।

इसी नाम से आयुर्वेद में एक दूसरा वर्ग भी है जो इस प्रकार है—सफेद तुलसी, काली तुलसी, छोटे पत्तोंवाली तुलसी, बबई (वर्वरी), मूसाकानी, कायफल, कसौंधी, नकछिकनी (छिक्कनी), सम्हालू, भारंगी, भुईंकदंब, गंधतृण, नीला सम्हालू, मीठी नीम (कैडर्य), और अतिमुक्तलता (मालती लता)।

सुरसारीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित्] दे० 'सुरसरी'।

सुरसाल, सुरसालुⓅ—वि० [सं० सुर + हिं० सालना] देवताओं को सतानेवाला। उ०—राम नाम नर केसरी कनककसिपु कलि कालु। जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसालु। —तुलसी (शब्द०)।

सुरसाष्ट—संज्ञा पुं० [सं० सुरस + अष्ट] सम्हालू, तुलसी, ब्राह्मी, बनभंटा, कंटकारी और पुनर्नवा इन सबका समूह।

सुरसाहिबⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुर + फ़ा० साहब] देवताओं के स्वामी। दे० 'सुरसाईं'। उ०—ब्रह्म जो व्यापक वेद कहै गम नाहीं गिरा गुन ज्ञान गुनी को। जो करता, भरता, हरता सुरसाहिब साहिब दीन दुनी को।—तुलसी (शब्द०)।

सुरसिंधु—संज्ञा पुं० [सं० सुरसिन्धु] गंगा।

सुरसुंदर[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुरसुन्दर] १. सुंदर देवता। २. कामदेव।

सुरसुंदर[२]—वि० देवता के समान सुंदर। अत्यंत सुंदर।

सुरसुंदरी संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसुन्दरी] १. अप्सरा, उ०—सुरसुंदरी करहि कल गाना। सुनत श्रवन छूटहिं मुनि ध्याना। —मानस, १।६१। २. दुर्गा। ३. देवकन्या। ४. एक योगिनी का नाम।

सुरसुंदरी गुटिका संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसुन्दरी गुटिका] वैद्यक के अनुसार वाजीकरण या बलवीर्य बढ़ाने की एक ओषधि।

विशेष—यह ओषधि अभ्रक, स्वर्णमाक्षिक, हीरा, स्वर्ण और पारे को सम भाग में लेकर हिज्जल (समुद्रफल) के रस में घोटकर पुटपाक के द्वारा प्रस्तुत की जाती है।

सुरसुत—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सुरसुता] देवपुत्र।

सुरसुरभी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर + सुरभी] देवताओं की गाय। कामधेनु। उ०—मुख ससि सरगर अधिक वचन श्री अमृत जैसी। सुरसुरभी सुरबृच्छ देनि करतल मँह वैसी।—गि० दास (शब्द०)।

सुरसुराना—क्रि० अ० [अनु०] १. कीड़ों आदि का रेंगना। २. खुजली होना।

सुरसुराहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुरसुराना + आहट (प्रत्य०)] १. सुरसुर होने का भाव। २. खुजलाहट। ३. गुदगुदी।

सुरसुरीⓅ[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित्] गंगा। सुरसरी।

सुरसुरी[२]—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. दे० 'सुरसुराहट'। २. एक प्रकार का कीड़ा जो चावल, गेहूँ आदि में होता है। ३. एक प्रकार की आतिशबाजी जिसे छछूँदर भी कहते हैं। ४. एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर रेंगने से खुजली और जलन पैदा होती है।

सुरसेनप—संज्ञा पुं० [सं० सुर + सेनापति] देवताओं के सेनापति कार्तिकेय। उ०—सुरसेनप उर बहुत उछाहू। बिधि ते डेवढ़ लोचन लाहू।—मानस, १।३१७।

सुरसेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं की सेना।

सुरसैंयाⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुर + हिं० सैयाँ (स्वामी)] इंद्र। दे० 'सुरसाईं'। उ०—तुलसी बाल केलि सुख निरखत बरषत सुमन सहित सुरसैंयाँ।—तुलसी (शब्द०)।

सुरसैनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरशयनी] विष्णुशयनी। दे० 'सुरशयनी'।

सुरस्कंध—संज्ञा पुं० [सं० सुरस्कन्ध] एक असुर का नाम।

सुरस्त्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्सरा। दे० 'सुरसुंदरी'।

सुरस्त्रीश—संज्ञा पुं० [सं०] अप्सराओं के स्वामी इंद्र।

सुरस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के रहने का स्थान। स्वर्ग। सुरलोक।

सुरस्रवंती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरस्रवन्ती] आकाशगंगा।

सुरस्रोतस्विनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरस्वामी—संज्ञा पुं० [सं० सुरस्वामिन्] देवताओं के स्वामी, इंद्र। दे० 'सुरसाईं'।

सुरहनाⓅ—क्रि० अ० [?] घाव का सूखना। जख्म भरना।

सुरहरा—वि० [अनु०] जिसमें सुरसुर शब्द हो। सुरसुर शब्द से युक्त। उ०—फेरि दृग फीके मुख लेति फुरहरी देव साँसै सुरहरी भुज चुरी झहरैबे की।—देव (शब्द०)।

सुरहित[1]—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सुरही'।

सुरहित[2]—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का कल्याण।

सुरही[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह + ई (=सोरही)] १. एक प्रकार की सोलह चित्तीकौड़ियाँ जिनसे जूआ खेलते हैं। २. सोलह चित्ती कौड़ियों से होनेवाला जूआ।

विशेष—इस जूए में कौड़ियाँ मुट्ठी में उठाकर जमीन पर फेंकी जाती हैं और उनकी चित्त पट की गिनती से हार जीत होती है। प्रायः बड़े जुआरी लोग इसी से जुआ खेलते हैं।

सुरही[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरभी] १. चमरी गाय। २. गौ। गाय। एक प्रकार की घास जो पड़ती जमीन में होती है।

सुरहुरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुरसुरी ?] १. श्वासनलिका में अन्न के टुकड़े, जल आदि का चढ़ जाना। २. उससे होनेवाली एक प्रकार की पीड़ा या वेदना।

सुरहोनी—संज्ञा पुं० [कर्णा० सुरुहोनेय] पुन्नाग जाति का एक पेड़ जो पश्चिमी घाट में होता है। यह प्रायः डेढ़ सौ फुट तक ऊँचा होता है।

सुरांगना—संज्ञा स्त्री० [सं० सुराङ्गना] १. देवपत्नी। देवांगना। २. अप्सरा।

सुरांत—संज्ञा पुं० [सं० सुरान्त] एक राक्षस का नाम।

सुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मद्य। मदिरा। वारुणी। शराब। दारू। विशेष दे० 'मदिरा'। २. जल। पानी। ३. पीने का पात्र। ४. सर्प। ५. सोम (को०)।

सुराईⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० शूर + आई (प्रत्य०)] शूरता। वीरता। बहादुरी। उ०—सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।—तुलसी (शब्द०)।

सुराकर—संज्ञा पुं० [सं०] १. भट्ठी जहाँ शराब चुआई जाती है। २. नारियल का पेड़। नारिकेल वृक्ष।

सुराकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सुराकर्मन्] वह यज्ञकर्म या संस्कार जो सुरा द्वारा किया जाता है।

सुराकार—संज्ञा पुं० [सं०] शराब चुआनेवाला। शराब बनानेवाला। शौंडिक। कलवार।

सुराकुंभ—संज्ञा पुं० [सं० सुराकुम्भ] वह पात्र या घड़ा जिसमें मद्य रखा जाता है। शराब रखने का घड़ा।

सुराख[1]—संज्ञा पुं० [फ़ा० सूराख] छेद। छिद्र।

सुराख[2]—संज्ञा पुं० [अ० सुराग़] दे० 'सुराग'।

सुराग[1]—संज्ञा पुं० [सं० सु + राग] १. गाढ़ प्रेम। अत्यंत प्रेम। अत्यंत अनुराग। उ०—मुनि बाजति बीन प्रवीन नवीन सुराग हिये उपजावति सी।—केशव (शब्द०)। २. सुंदर रंग या वर्ण। ३. सुंदर राग। उ०—गाय गोरी मोहनी सुराग बाँसुरी के बीच कानन सुहाय मारयंत्र कों सुनायगो।—दीनदयाल (शब्द०)।

सुराग[2]—संज्ञा पुं० [अ० सुराग़] १. सूत्र। टोह। पता। २. खोज। तलाश (को०)। ३. पाँव का निशान। पदचिह्न (को०)। ४. लकीर। लीक (को०)। ५. वृक्ष। पेड़ (को०)।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लगना।—लगाना।

यौ०—सुरागरसाँ = (१) टोह या पता लेनेवाला। (२) भेदिया। गुप्तचर। सुरागरसी = अन्वेषण। तलाश। खोज। टोह।

सुरागाय—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर + गाय] एक प्रकार की दोनस्ली गाय जिसकी पूँछ गुप्फेदार होती है और जिससे चँवर बनता है। चमरी गाय।

विशेष—यह एक प्रकार के जंगली साँड—जो तिब्बत और हिमालय में होते हैं और जिनके बाल लंबे और मुलायम होते हैं, और भारतीय गाय के संयोग से उत्पन्न है। यह प्रायः पहाड़ों पर ही रहती है। मैदान की जलवायु इसके अनुकूल नहीं होती।

सुरागार—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ मद्य बिकता हो। कलवरिया। शराबखाना। २. देवगृह।

सुरागी—संज्ञा पुं० [अ० सुराग़] १. टोह लेनेवाला। २. मुखबिर। ३. इकबाली गवाह (को०)।

सुरागृह—संज्ञा पुं० [सं०] शराबखाना। सुरागार।

सुराग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] मद्य पीने का एक प्रकार का पात्र।

सुराग्र्य—संज्ञा पुं० [सं०] अमृत।

सुराघट—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुराकुंभ'।

सुराचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के आचार्य बृहस्पति।

सुराजⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुराज्य] १. दे० 'सुराज्य'। २. दे० 'स्वराज्य'।

सुराजक—संज्ञा पुं० [सं०] भृंगराज। भँगरा।

सुराजा[1]Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० सुराजन्] उत्तम राजा। अच्छा राजा।

सुराजा[2]Ⓟ—संज्ञा पुं० दे० 'सुराज्य'।

सुराजिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गृह गोधा। छिपकली।

सुराजी†—संज्ञा पुं० [सं० स्वराज्य, हिं० सुराज + ई] स्वराज्य की कामना करने एवं उसके लिये आंदोलन करनेवाला। भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष में भाग लेनेवाला।

सुराजीव—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

सुराजीवी—संज्ञा पुं० [सं० सुराजीविन्] शराब चुआने या बेचनेवाला। शौंडिक। कलवार।

सुराज्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य जिसमें प्रधानतः शासितों के हित पर दृष्टि रखकर शासन कार्य किया जाता हो। वह राज्य या शासन जिसमें सुख और शांति विराजती हो। अच्छा और उत्तम राज्य।

सुराज्य[2]—संज्ञा पुं० [सं० स्वराज्य] दे० 'स्वराज्य'।

सुराट्ट—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ मद्य बिकता हो। शराबखाना। कलवरिया।

सुराट्टति—संज्ञा स्त्री० [सं०] चमड़े का वह पात्र या कुप्पा जिसमें मदिरा रखी जाती है।

सुराथी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सु + रेतना] लकड़ी का वह डंडा या लबेदा जिससे अनाज के दाने निकालने के लिये बाल आदि पीटते हैं।

सुराद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का पर्वत, सुमेरु।

सुराधम[1]—वि० [सं०] देवताओं में निकृष्ट।

सुराधम[2]—संज्ञा पुं० निकृष्ट देवता।

सुराधर—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस।

सुराधा[1]—वि० [सं० सुराधस्] १. उत्तम दान देनेवाला। बहुत बड़ा दाता। उदार। २. धनी। अमीर।

सुराधा[2]—संज्ञा पुं० एक ऋषि का नाम।

सुराधानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कुंभी या छोटा घड़ा जिसमें मदिरा रखी जाती है। शराब रखने की गगरी।

सुराधिप—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के स्वामी, इंद्र।

सुराधीश—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुराधिप'।

सुराध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. श्रीकृष्ण। ३. शिव।

सुराध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] मद्यपात्र का वह चिह्न जो प्राचीनकाल में मद्यपान करनेवालों के मस्तक पर लोहे से दागकर किया जाता था।

विशेष—मनु ने मद्यपान की गणना चार महापातकों में की है; और कहा है कि राजा को उचित है कि मद्यपान करनेवाले के मस्तक पर मद्यपात्र का चिह्न लोहे से दागकर अंकित करा दे। यही चिह्न सुराध्वज कहलाता था।

सुरानक—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का नगाड़ा।

सुरानीक—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं की सेना।

सुराप—वि० [सं०] १. सुरा या मद्यपान करनेवाला। मद्यप। शराबी। २. बुद्धिमान्। मनीषी। ३. आनंदप्रद। सुखपूर्वक ग्राह्य (को०)।

सुरापगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं की नदी। गंगा।

सुरापाण, सुरापान—संज्ञा पुं० [सं०] १. मद्यपान करने की क्रिया। शराब पीना। २. मद्यपान करने के समय खाए जानेवाले चटपटे पदार्थ। चाट। अवदंश।

सुरापात्र—संज्ञा पुं० [सं०] मदिरा रखने या पीने का पात्र।

सुरापाना—संज्ञा पुं० [सं० सुरापानाः] पूर्व देश के लोग।

विशेष—सुरापान करने के कारण इस देश के लोगों का यह नाम पड़ा है।

सुरापी—वि० [सं०] १. दे० 'सुराप'। २. जिसके यहाँ शराबी लोग रहते हों (को०)।

सुरापीत—वि० [सं०] जिसने मदिरापान किया हो [को०]।

सुरापीथ—संज्ञा पुं० [सं०] सुरापान। मद्यपान। शराब पीना।

सुराप्रिय—वि० [सं०] जिसे मदिरा प्रिय हो [को०]।

सुराबलि—वि० [सं०] जिसे मदिरा अर्पण की जाय [को०]।

सुराबीज—संज्ञा पुं० [सं०] मद्य बनाने में प्रयुक्त एक पदार्थ या तत्व। दे० 'सुरासार' [को०]।

सुराब्धि—संज्ञा पुं० [सं०] सुरा का समुद्र।

विशेष—पुराणों के अनुसार यह सात समुद्रों में से तीसरा है। मार्कंडेयपुराण में लिखा है कि लवणसमुद्र से दूना इक्षुसमुद्र और इक्षुसमुद्र से दूना सुरासमुद्र है।

सुराभांड—संज्ञा पुं० [सं० सुराभाण्ड] दे० 'सुरापात्र' [को०]।

सुराभाग—संज्ञा पुं० [सं०] शराब की माँड़।

सुराभाजन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुरापात्र'।

सुरामंड—संज्ञा पुं० [सं० सुरामण्ड] शराब की माँड़।

सुरामत्त—वि० [सं०] शराब के नशे में चूर। मदोन्मत्त। मतवाला।

सुरामद—संज्ञा पुं० [सं०] शराब का नशा [को०]।

सुरामुख—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके मुँह में शराब हो। २. एक नागासुर का नाम।

सुरामूल्य—संज्ञा पुं० [सं०] मदिरा का मूल्य। शराब का दाम [को०]।

सुरामेह—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार प्रमेह रोग का एक भेद।

विशेष—कहते हैं, इस रोग में रोगी को शराब के रंग का पेशाब होता है। पेशाब शीशी में रखने से नीचे गाढ़ा और ऊपर पतला दिखलाई पड़ता है। पेशाब का रंग मटमैला या लाली लिए होता है।

सुरामेही—वि० [सं० सुरामेहिन्] सुरामेह रोग से पीड़ित। जिसे सुरामेह रोग हुआ हो।

सुरायⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सु + हिं० राय (= राजा)] श्रेष्ठ नृपति। अच्छा राजा। उ०—बहु भाँति पूजि सुराय। कर जोरि कै परिपाय।—केशव (शब्द०)।

सुरायुध—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का अस्त्र।

सुरारणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं की माता, अदिति।

सुरारि—संज्ञा पुं० [सं०] १. असुर। राक्षस। २. एक दैत्य का नाम। ३. झिल्ली की झनकार। टिड्डा या झींगुर का आह्लादक स्वर (को०)।

सुरारिघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] असुरों का नाश करनेवाले, विष्णु।

सुरारिहंता—संज्ञा पुं० [सं० सुरारिहन्तृ] असुरों का नाश करनेवाले, विष्णु।

सुरारिहन्—संज्ञा पुं० [सं०] असुरों का नाश करनेवाले, शिव।

सुरारी—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की बरसाती घास जो राजपूताने और बुंदेलखंड में होती है। यह चारे के लिये बहुत अच्छी समझी जाती है। इसे लव भी कहते हैं।

सुरार्चन—संज्ञा पुं० [सं०] देवार्चन। देवाराधन [को०]।

सुरार्चाविश्म—संज्ञा पुं० [सं० सुरार्चाविश्मन्] वह स्थान या मंदिर जहाँ अनेक देवताओं की प्रतिमा हो। देवकुल [को०]।

सुरार्दन—संज्ञा पुं० [सं०] सुरों या देवताओं को पीड़ा देनेवाले, राक्षस या असुर।

सुरार्ह—संज्ञा पुं० [सं०] १. हरिचंदन। २. स्वर्ण। सोना। ३. कुंकुमागरु चंदन।

सुरार्हक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बर्बरक। बबई। २. वैजयंती। तुलसी।

सुराल¹—संज्ञा पुं० [सं०] धूना। राल।

सुराल²—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की लता जिसकी जड़ बिलाई-कंद कहलाती है। विशेष दे० 'घोड़ा बेल'।

सुरालय—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं के रहने का स्थान। स्वर्ग। २. सुमेरु। ३. देवमंदिर। ४. वह स्थान जहाँ सुरा मिलती हो। शराबखाना। कलवरिया।

सुरालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सातला या सप्तला नाम की बेल जो जंगलों में होती है।

विशेष—इसके पत्ते खैर के पत्तों के समान छोटे छोटे होते हैं। इसका फल पीला होता है और इसमें एक प्रकार की पतली चिपटी फली लगती है। फली में काले बीज होते हैं जिसमें से पीले रंग का दूध निकलता है। वैद्यक के अनुसार यह लघु, तिक्त, कटु तथा कफ, पित्त, विस्फोट, व्रण और शोथ को नाश करनेवाली है।

सुराव—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का घोड़ा। २. उत्तम ध्वनि।

सुरावट—संज्ञा पुं० [सं० स्वरावर्त] १. स्वर का माधुर्य। २. स्वरों का उतार चढ़ाव या आरोह अवरोह।

सुरावती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरावनि] कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता, अदिति। उ०—विनतासुत खगनाथ चंद्र सोमावति केरे। सुरावती के सूर्य रहत जग जासु उजेरे।—विश्राम (शब्द०)।

सुरावनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवताओं की माता, अदिति। २. पृथिवी। भूमि। धरती।

सुरावारि—संज्ञा पुं० [सं०] सुरा का समुद्र। विशेष दे० 'सुराब्धि'।

सुरावास—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु।

सुरावृता—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

सुराश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु।

सुराष्ट्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश का नाम जो भारत के पश्चिम में था। (किसी के मत से यह सूरत और किसी के मत से काठियावाड़ है)। २. राजा दरशरथ के एक मंत्री का नाम।

सुराष्ट्र²—वि० जिसका राज्य अच्छा हो।

सुराष्ट्रज¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. गोपीचंदन। सौराष्ट्रमृत्तिका। २. काली मूँग। कृष्ण मुद्ग। ३. लाल कुलथी। रक्त कुलत्थ। ४. एक प्रकार का विष।

सुराष्ट्रज²—वि० सुराष्ट्र देश में उत्पन्न।

सुराष्ट्रजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपीचंदन।

सुराष्ट्रोद्भव—संज्ञा स्त्री० [सं०] फिटकरी।

सुरासंधान—संज्ञा पुं० [सं० सुरासन्धान] शराब चुआने की क्रिया।

सुरासमुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुराब्धि'।

सुरासव—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का आसव जो तीक्ष्ण, बलकारक, मूत्रवर्धक, कफ और वायुनाशक तथा मुख-प्रिय कहा गया है।

सुरासार—संज्ञा पुं० [सं०] मद्य का सार जो अंगूर या माड़ी के खमीर से बनता है। इसके बिना शराब नहीं बनती। इसी में नशा होता है।

सुरासुर—संज्ञा पुं० [सं०] सुर और असुर। देवता और दानव।

यौ०—सुरासुरगुरु। सुरासुरविमर्द = देवासुर संग्राम।

सुरासुरगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. कश्यप।

सुरास्पद—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का घर। देवगृह। मंदिर।

सुराही—संज्ञा स्त्री० [अ०] जल रखने का एक प्रकार का प्रसिद्ध पात्र जो प्रायः मिट्टी का और कभी कभी पीतल या जस्ते आदि धातुओं का भी बनता है।

विशेष—यह पात्र बिलकुल गोल हंडी के आकार का होता है, पर इसका मुँह ऊपर की ओर कुछ दूर तक निकला हुआ गोल नली के आकार का होता है। प्रायः गरमी के दिनों में पानी ठंढा करने के लिये इसका उपयोग होता है। इसे कहीं कहीं कुज्जा भी कहते हैं।

यौ०—सुराहीदार। सुराहीनुमा = सुराही जैसा। सुराही के समान। कुज्जे के आकार का।

२. बाजू, जोशन या बरेखी के लटकते हुए सूत में घुंडी के ऊपर लगनेवाला सोने या चाँदी का सुराही के आकार का बना हुआ छोटा लंबोतरा टुकड़ा। ३. कपड़े की एक प्रकार की काट जो पान के आकार की होती है। इसमें मछली की दुम की तरह कुछ कपड़ा तिकोना लगा रहता है। (दर्जी)। ४. नैचे में सबसे ऊपर की ओर वह भाग जो सुराही के आकार का होता है और जिसपर चिलम रखी जाती है।

सुराहीदार—वि० [अ० सुराही + फ़ा० दार] सुराही के आकार का। सुराही की तरह का गोल और लंबोतरा। जैसे,—सुराहीदार गरदन। सुराहीदार घूँघरू। सुराहीदार मोती।

सुराह्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवदारु। २. मरुआ। मरुवक। ३. हल-दुआ। हरिद्र।

सुराह्वय—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का पौधा। २. देवदारु।

सुरि—वि० [सं०] बहुत धनी। बड़ा अमीर।

सुरियँ—संज्ञा पुं० [सं० सुर] इंद्र। (डिं०)।

सुरिय़ाखार—संज्ञा पुं० [फ़ा० शोरा + हिं० खार] शोरा।

सुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवपत्नी। देवांगना।

सुरीला—वि० [हिं० सुर + ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सुरीली] मीठे सुरवाला। मधुर स्वरवाला। जिसका सुर मीठा हो। सुस्वर। सुकंठ। जैसे—सुरीला गला, सुरीला बाजा, सुरीला गवैया, सुरीली तान।

सुरुंग—संज्ञा पुं० [सं० सुरुङ्ग] १. सहिंजन। शोभांजन वृक्ष। २. दे० 'सुरंग'।

सुरुंगयुक्—संज्ञा पुं० [सं०, सुरुङ्गयुक्] दे० 'सुरंगयुक्'।

सुरुंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरुङ्गा] दे० 'सुरंग'।

सुरुंगाहि—संज्ञा पुं० [सं० सुरुङ्गाहि] सेंध लगानेवाला चोर। सेंधिया चोर।

सुरुंदला—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरुन्दला] एक प्राचीन नदी का नाम।

सुरुक्म—वि० [सं०] अच्छी तरह प्रकाशित। प्रदीप्त।

सुरुख[1]—वि० [सं० सु + फ़ा० रुख (= प्रवृत्ति)] अनुकूल। सदय। प्रसन्न। उ०—सुरुख जानकी जानि कपि कहे सकल संकेत।—तुलसी (शब्द०)।

सुरुख[2]—वि० [फ़ा० सुर्ख़] दे० 'सुर्ख़'। उ०—रंच न देरि करहु सुरुख अब हरि हेरि परै न। बिनय बचन मो सुनि भए सुरुख तरुनि के नैन।—शृंगार सतसई (शब्द०)।

सुरुखुरू—वि० [फ़ा० सुर्खरू] जिसे किसी काम में यश मिला हो। यशस्वी। उ०—अलहदाद भल तेहिकर गुरू। दीन दुनी रोसन सुरुखुरू।—जायसी (शब्द०)।

सुरुच[1]—संज्ञा पुं० [सं०] उज्वल प्रकाश। अच्छी रोशनी।

सुरुच[2]—वि० सुंदर प्रकाशवाला।

सुरुचि[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजा उत्तानपाद की दो पत्नियों में से एक जो उत्तम की माता थी। ध्रुव की विमाता। २. उत्तम रुचि। ३. सुंदर दीप्ति। ४. अत्यंत प्रसन्नता।

सुरुचि[2]—वि० १. उत्तम रुचिवाला। जिसकी रुचि उत्तम हो। २. स्वाधीन। (डिं०)।

सुरुचि[3]—संज्ञा पुं० १. एक गंधर्व राजा का नाम। २. एक यक्ष का नाम।

सुरुचिर—वि० [सं०] १. सुंदर। दिव्य। मनोहर। २. उज्वल। प्रकाशमान्। दीप्तिशाली।

सुरुज[1]—वि० [सं०] बहुत बीमार। अस्वस्थ। रुग्ण।

सुरुज(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य] दे० 'सूर्य'। उ०—तहँ ही से सब ऊपजे चंद सुरुज आकाश।—दादू (शब्द०)।

सुरुजमुखी(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यमुखी] दे० 'सूर्यमुखी'। उ०—विचरि चहूँ दिसि लखत हैं वर पूजैं वृजराज। चंद्रमुखी को लखि सखी सुरुजमुखी सी आज।—शृंगार सतसई (शब्द०)।

सुरुद्रि—संज्ञा स्त्री० [सं०] शतद्रु या वर्तमान सतलज नदी का एक नाम।

सुरुल—संज्ञा पुं० [देश०] मूँगफली पौधे का एक रोग।

विशेष—मूँगफली के इस रोग में कुछ कीड़ों के खाने के कारण उसके पत्ते और डंठल टेढ़े हो जाते हैं। इस पौधे में यह रोग प्रायः सभी जगहों में होता है और इससे बड़ी हानि होती है।

सुरुवा[1]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शोरबा] दे० 'शोरबा'।

सुरुवा[2]—संज्ञा पुं० [सं० स्रुवा] दे० 'सुरवा'।

सुरूप[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुरूपा] १. सुंदर रूपवाला। रूपवान्। खूबसूरत २. विद्वान्। बुद्धिमान्।

सुरूप[2]—संज्ञा पुं० १. शिव का एक नाम। २. एक असुर का नाम। ३. कपास। तूल। ४. पलास पीपल। परिषाश्वत्थ। ५. कुछ विशिष्ट देवता और व्यक्ति।

विशेष—कामदेव, दोनों अश्विनीकुमार, नकुल, पुरुरवा, नलकूबर और शांब ये सुरूप कहलाते हैं।

सुरूप[3]—संज्ञा पुं० [सं० स्वरूप] दे० 'स्वरूप'[1]। उ०—रूप सवाई दिन दिन चढ़ा। बिधि सुरूप जग ऊपर गढ़ा।—जायसी (शब्द०)।

सुरूपक—वि० [सं०] दे० 'स्वरूप'[2]।

सुरूपता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुरूप होने का भाव। सुंदरता। खूबसूरती।

सुरूपा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरिवन। शालपर्णी। २. बमनेठी। भारंगी। ३. सेवती। वनमल्लिका। ४. बेला। वार्षिकी मल्लिका। ५. पुराणानुसार एक गौ का नाम। ६. एक नागकन्या और एक अप्सरा का नाम (को०)।

सुरूपा[2]—वि० स्त्री० सुंदर रूपवाली। सुंदरी।

सुरूर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] दे० 'सरूर'।

मुहा०—दे० 'सरूर' के मुहा०।

यौ०—सुरूर अंगेज = हलका नशा लानेवाला। मादक।

सुरूहक—संज्ञा पुं० [सं०] खच्चर। गर्दभाश्व।

सुरेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्र] १. सुरराज। इंद्र। २. लोकपाल। राजा। ३. विष्णु। उपेंद्र (को०)।

सुरेंद्रकंद—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रकन्द] दे० 'सुरेंद्रक'।

सुरेंद्रक—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रक] कटु शूरण। काटनेवाला जमींकंद। जंगली ओल।

सुरेंद्रगोप—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रगोप] बीरबहूटी। इंद्रगोप नामक कीड़ा।

सुरेंद्रचाप—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रचाप] इंद्रधनुष।

सुरेंद्रजित्—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रजित्] इंद्र को जीतनेवाला, गरुड।

सुरेंद्रता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रता] सुरेंद्र होने का भाव या धर्म। इंद्रत्व।

सुरेंद्रपूज्य—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रपूज्य] बृहस्पति।

सुरेंद्रमाला—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रमाला] एक किन्नरी का नाम।

सुरेंद्रलुप्त—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रलुप्त] इंद्रलुप्त। बाल झड़ने का रोग। गंजापन (को०)।

सुरेंद्रलोक—संज्ञा पुं० [सं० सुरेन्द्रलोक] इंद्रलोक।

सुरेंद्रवज्रा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रवज्रा] एक वर्णवृत्त का नाम जिसमें दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं। इंद्राणी।

सुरेंद्रवती—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रवती] शची। ईंद्राणी।

सुरेंद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरेन्द्रा] एक किन्नरी का नाम।

सुरेख—वि० [सं०] सुंदर रेखांकन करनेवाला [को०]।

सुरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदर रेखा। २. हाथ पाँव में होनेवाली वे रेखाएँ जिनका रहना शुभ समझा जाता है।

सुरेज्य—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

सुरेज्ययुग—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति का युग जिसमें पाँच वर्ष हैं। इन पाँचों वर्षों के नाम ये हैं—अंगिरा, श्रीमुख, भाव, युवा और धाता।

सुरेज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तुलसी। २. ब्राह्मी।

सुरेणु[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. त्रसरेणु। २. एक प्राचीन राजा का नाम।

सुरेणु[2]—संज्ञा स्त्री० १. त्वाष्ट्री की पुत्री और विवस्वान् की पत्नी। २. एक नदी का नाम जो सप्त सरस्वतियों में समझी जाती है।

सुरेणुपुष्पध्वज—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों अनुसार किन्नरों के एक राजा का नाम।

सुरेतना†—क्रि० स० [देश०] खराब अनाज से अच्छे अनाज को अलग करना।

सुरेतर—संज्ञा पुं० [सं०] असुर।

सुरेता—वि० [सं० सुरेतस्] बहुत वीर्यवान्। अधिक सामर्थ्यवान्।

सुरेतोधा—वि० [सं० सुरेतोधस्] वीर्यवान्। पौरुषसंपन्न।

सुरेथ—संज्ञा पुं० [देश०] सूँस। शिशुमार। उ०—रथ सुरेथ भुज मीन समाना। शिरकच्छप गजग्राह प्रमाना।—विश्राम (शब्द०)।

सुरेनुकाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरेणु] दे० 'सुरेणु'। उ०—सोमनाथ विरंत ह्वं आलनाथ एकंग। हरिक्षेत्र नैमिष सदा अंशतीशु चित्तंग। प्रगट प्रभासु सुरेंनुका हर्म्य जापु उज्जैनि। शंकर पूरनि पुष्करु अरु प्रयाग मृगनैनि।—केशव (शब्द०)।

सुरेभ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुरहस्ती। देवहस्ती। २. दिन (को०)।

सुरेभ[2]—वि० सुस्वर। सुरीला।

सुरेवट—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सुपारी का पेड़। रामपूग।

सुरेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं के स्वामी इंद्र। २. शिव। ३. विष्णु। ४. कृष्ण। ५. लोकपाल। ६. अग्नि का एक नाम (को०)।

सुरेशलोक—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रलोक।

सुरेशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

सुरेश्वर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं के स्वामी, इंद्र। २. ब्रह्मा। ३. शिव। ४. रुद्र। ५. विष्णु (को०)।

सुरेश्वर[2]—वि० देवताओं में श्रेष्ठ।

सुरेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवताओं की स्वामिनी, दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३. राधा। ४. स्वर्गगंगा।

सुरेश्वराचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] मंडन मिश्र का संन्यास आश्रम का नाम।

सुरेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद अगस्त का वृक्ष। २ लाल अगस्त। ३. सुरपुन्नाग। ४. शिवमल्ली। बड़ी मौलसिरी। ५. साल वृक्ष। साखू।

सुरेष्टक—संज्ञा सं० [सं०] शाल। साखू। अश्वकर्ण।

सुरेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्राह्मी।

सुरेसⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुरेश] दे० 'सुरेश'।

सुरैं[1] संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की अनिष्टकारी घास जो गर्मी के मौसम में पैदा होती है।

सुरैं[2] संज्ञा स्त्री० [सं० सुरभी] गाय। (डिं०)।

सुरैं[3]—वि० बहुत धनी। प्रचुर संपत्तियुक्त [को०]।

सुरैत—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरति] वह स्त्री जिससे विवाह संबंध न हुआ हो बल्कि जो यों ही घर में रख ली गई हो। सुरैतिन। उपपत्नी रखनी। रखेली।

सुरैतवाल—संज्ञा पुं० [हिं० सुरैत + वाल] सुरैत का लड़का।

सुरैतवाला—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सुरैतवाल'।

सुरैतिन—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरति] दे० 'सुरैत'।

सुरैया—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तीसरा नक्षत्र। कृत्तिका। २. कान में पहनने का झुमका। ३. रोशनी का झाड़ [को०]।

सुरोचन—संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञबाहु के एक पुत्र का नाम। २. एक वर्ष का नाम।

सुरोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सुरोचि—वि० [सं० सुरुचि] सुंदर। उ०—गिरि जात न जानत पान न खात बिरी कर पंकज के दल की। बिहँसी सब गोपसुता हरि लोचन मूँदि सुरोचि दृगंचल की।—केशव (शब्द०)।

सुरोची—संज्ञा पुं० [सं० सुरोचिस्] वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम।

सुरोत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं में श्रेष्ठ, विष्णु। २. सूर्य। ३. इंद्र (को०)। ४. सुरा का फेन (को०)।

सुरोत्तमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुरोत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] चंदन।

सुरोद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सुरासमुद्र। मदिरा का समुद्र।

सुरोद[2]—संज्ञा पुं० [सं० स्वरोद] दे० 'सरोद'।

सुरोद[3]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] गायन। गाना [को०]।

सुरोदक—संज्ञा पुं० [हिं० सुरोदक] दे० 'सुरोद'।

सुरोदय—संज्ञा पुं० [सं० स्वरोदय] दे० 'स्वरोदय'।

सुरोध—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार तंसु के एक पुत्र का नाम।

सुरोधा—संज्ञा पुं० [सं० सुरोधस्] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सुरोपम—वि० [सं०] सुरतुल्य। देवता के समान।

सुरोपयाम—संज्ञा पुं० [सं०] मदिरापात्र [को०]।

सुरोमा[1]—वि० [सं० सुरोमन्] सुंदर रोमवाला। जिसके रोम सुंदर हों।

सुरोमा[2]—संज्ञा पुं० १. एक यज्ञ का नाम। २. एक असुरनाम (को०)।

सुरोषण—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के एक सेनापति का नाम।

सुरौका—संज्ञा पुं० [सं० सुरौकस्] १. स्वर्ग। २. देवमंदिर।

सुर्ख¹ वि० [फ़ा० सुर्ख] रक्त वर्ण का। लाल।

सुर्ख²—संज्ञा पुं० गहरा लाल रंग।

सुर्ख³—संज्ञा स्त्री० १. घुँघुची। गुंजा। एक रत्ती २. गंजीफा की एक क्रीड़ा [को०]।

यौ०—सुर्खचश्म = जिसकी आँखें लाल हों। सुर्खपोश = रक्तांबर। लाल कपड़े पहननेवाला। सुर्खपोशी = लाल वस्त्र पहनना। सुर्खरंग = लाल रंग का। रक्तवर्णवाला।

सुर्खरू—वि० [फ़ा०] १. जिसके मुख पर तेज हो। तेजस्वी। कांतिमान्। २. प्रतिष्ठित। संमान्य। ३. किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके मुँह की लाली रह गई हो।

सुर्खरूई—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सुर्खरू होने का भाव। २. यश। कीर्ति। ३. मान। प्रतिष्ठा।

सुर्खा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुर्ख] १. एक प्रकार का कबूतर जो लाल रंग का होता है। २. सुर्ख रंग का अश्व। ३. सुर्ख रंग का आम।

सुर्खाब—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुर्खाब] दे० 'सुरखाब'।

सुर्खी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुर्खी] १. लाली। ललाई। अरुणता। २. लेख आदि का शीर्षक, जो प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों में प्रायः लाल स्याही से लिखा जाता था। लेख, समाचार आदि का शीर्षक। ३. रक्त। लहू। खून। ४. दे० 'सुरखी'।

सुर्खीदार सुरमई—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का सुरमई या बैंजनी रंग जो कुछ लाली लिए होता है।

सुर्खी मायल—वि० [फ़ा०] लालिमायुक्त। ललौहाँ। उ०—ओंठ पतले तथा गुलाबी रंग में रँगे मालूम होते थे और गाल भरे तथा सुर्खी मायल थे।—कंठ०, पृ० ५०।

सुर्जना—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सहिजन'।

सुर्ता(पु)—वि० [हि० सुरति (=स्मृति)] समझदार। होशियार। बुद्धिमान्। उ०—हीरा लाल की कोठरी मोतिया भरे भंडार। सुर्ता सुर्ता चुनिया मूरख रहे झख मार।—कबीर (शब्द०)।

सुर्ती—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सुरती'।

सुर्मा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुर्मह्] दे० 'सुरमा'।

सुर्रा¹—संज्ञा पुं० [देश०] १. प्रकार एक की मछली। २. थैली। बटुआ।

सुर्रा²—संज्ञा पुं० [सुर्र से अनु०] तेज हवा।

क्रि० प्र०—चलना।

सुलंक(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सोलंकी] दे० 'सोलंकी'। उ०—तब सुलंक नृप आनँद पायो। द्वै सुत निज तिय महँ जनमायो।—रघुराज (शब्द०)।

सुलंकी—संज्ञा पुं० [हिं० सोलंकी] दे० 'सोलंकी'। उ०—पौरच पुंडीर परिहार औ पँवार बैंस, सेंगर सिसौदिया सुलंकी दितवार हैं।—सूदन (शब्द०)।

सुलंघित—वि० [सं० सुलङ्घित] १. जिसे लंघन या फाका कराया गया हो। जिसे उपवास कराया गया हो। २. जो लाँघा गया हो।

सुलच्छ—वि० [सं० सुलक्षण] दे० 'सुलक्षण'।

सुलक्षण¹—वि० [सं०] १. शुभ लक्षणों से युक्त। अच्छे लक्षणोंवाला। २. भाग्यवान्। किस्मतवर।

सुलक्षण²—संज्ञा पुं० १. शुभ लक्षण। शुभ चिह्न। २. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ होती हैं और सात मात्राओं के बाद एक गुरु, एक लघु और तब विराम होता है।

सुलक्षणत्व संज्ञा पुं० [सं०] सुलक्षण का भाव। सुलक्षणता।

सुलक्षणा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती की एक सखी का नाम। २. श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

सुलक्षणा²—वि० स्त्री० शुभ लक्षणों से युक्त। अच्छे लक्षणोंवाली।

सुलक्षणी—वि० स्त्री० [सं० सुलक्षणा] दे० 'सुलक्षणा'।

सुलक्षित—वि० [सं०] १. जो सम्यक्‌रूपेण निश्चित हो। २. जो अच्छी तरह लक्षित अथवा परीक्षित हो [को०]।

सुलक्ष्य—वि० [सं०] जो ठीक ठीक लक्षित किया जा सके।

सुलग(पु)—अव्य० [हिं० सु + लगना] पास। समीप। निकट। उ०—मुनि वेष धरे धनु सायक सुलग हैं। तुलसी हिये लसत लोने लोने डग हैं।—तुलसी (शब्द०)।

सुलगन¹—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० लगना अथवा देश०] सुलगने की क्रिया या भाव।

सुलगन(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० सुलग्न] दे० 'सुलग्न'।

सुलगना—क्रि० अ० [सं० सु + हिं० लगना] १. (लकड़ी, कोयले आदि का) जलना। प्रज्वलित होना। दहकना। २. बहुत अधिक संताप होना। ३. गाँजा, तंबाकू आदि का पीने लायक होना।

सुलगाना—क्रि० स० [हिं० सुलगना का स० रूप] १. जलाना। दहकाना। प्रज्वलित करना। जैसे—लकड़ी सुलगाना, आग सुलगाना, कोयला सुलगना।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।—रखना।

२. संतप्त करना। दुःखी करना। ३. चिलम पर रखे गाँजे तंबाकू आदि को फूँककर पीने लायक करना।

सुलग्न¹—संज्ञा पुं० [सं०] शुभ मुहूर्त। शुभ लग्न। अच्छी सायत।

सुलग्न²—वि० दृढ़ता से लगा हुआ।

सुलच्छन(पु)—वि० [सं० सुलक्षण] दे० 'सुलक्षण'। उ०—(क) ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग। होइ कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नृप लस्यो ततच्छन भरम हर। परम सुलच्छन वरम धर।—गि० दास (शब्द०)।

सुलच्छनी(पु)—वि० [हिं० सुलच्छन] दे० 'सुलक्षणा'। उ०—जाय सुहागिनि बसति जो अपने पीहर धाम। लोग बुरी शंका करें यदपि सती हू बाम। यातें चाहत बंधुजन रहे सदा पतिगेह। प्रमुदा नारि सुलच्छनी बिनहु पिया के नेह।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुलच्छ(पु)—वि० [सं० सुलक्ष] सुंदर। उ०—सुलच्छ लोचन चारु नासा परम रुचिर बनाइ। युगल खंजन लरत अवनित बीच कियो बनाइ।—सूर (शब्द०)।

सुलझन--संज्ञा स्त्री० [हिं० सुलझना] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझाव।

सुलझना--क्रि० अ० [हिं० उलझना] १. किसी उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना या खुलना। उलझन का खुलना। २. गुत्थी या पेचीदगी का खुलना। जटिलताओं का निवारण होना।

सुलझाना--क्रि० स० [हिं० सुलझना का सक० रूप] १. किसी उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर करना। २. उलझन या गुत्थी खोलना। जटिलताओं को दूर करना।

सुलझाव--संज्ञा पुं० [हिं० सुलझना + आव (प्रत्य०)] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझन।

सुलटा--वि० [हिं० उलटा] [वि० स्त्री० सुलटी] सीधा। उलटा का विपरीत।

सुलतान--संज्ञा पुं० [फ़ा०] बादशाह। सम्राट्।

सुलताना--संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. रानी। मलिका। २. सुलतान की स्त्री। ३. सम्राट् की माता।

सुलताना चंपा--संज्ञा पुं० [फ़ा० सुलतान + हिं० चंपा] एक प्रकार का पेड़। पुन्नाग।

विशेष--यह वृक्ष मद्रास प्रांत में अधिकता से होता है और कहीं कहीं उत्तरप्रदेश और पंजाब में भी पाया जाता है। इसके हीर की लकड़ी लाली लिए भूरे रंग की और बहुत मजबूत होती है। यह इमारत, मस्तूल आदि बनाने के काम में आती है। रेल की लाइन के नीचे पटरी की जगह रखने के भी काम आती है। संस्कृत में इसे पुन्नाग कहते हैं।

सुलतानी[1]--संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुलतान] १. बादशाही। बादशाहत। राज्य। उ०--चढ़ि धौराहर देखहिं रानी। धनि तुइँ अस जाकर सुलतानी।--जायसी (शब्द०)। २. एक प्रकार का बढ़िया महीन रेशमी कपड़ा।

यौ०--सुलतानी बनात = एक प्रकार की लाल रंग की बनात। सुलतानी बुलबुल = बड़ी जाति की बुलबुल।

सुलतानी[2]--वि० १. लाल रंग का। उ०--सोई हुती पलँगा पर बाल खुले अँचरा नहिं जानत कोऊ। ऊँचे उरोजन कंचुकी ऊपर लालन के चरचे दृग दोऊ। सो छबि पीतम देखि छके कवि तोष कहै उपमा यह होऊ। मानो मढ़े सुलतानी बनात में साह मनोज के गुंबज दोऊ।--तोष (शब्द०)। २. शासन। राज्य। बादशाही (को०)।

सुलप[1]--वि० [सं० स्वल्प] १. दे० 'स्वल्प'। उ०--नृत्यति उघटति गति संगीत पद सुनत कोकिला लाजति। सूर श्याम नागर अरु नागरि ललना सुलप मंडली राजति।--सूर (शब्द०)। २. मंद। उ०--चलि सुलप गज हंस मोहित कोक कला प्रवीन।--सूर (शब्द०)।

सुलप[2]--संज्ञा पुं० [सं० सु + आलाप] सुंदर आलाप। (क्व०)।

सुलफ--वि० [सं० सु + हिं० लपना] १. लचीला। लचनेवाला। २. नाजुक। कोमल। मुलायम। उ०--(क) दीरघ उसास लै लै ससिमुखी सिसकति सुलफ सलौनों लंक लहकै लहकि लहकि --देव (शब्द०)। (ख) मोती मियरात हित जानि कै प्रभात ढिग ढीले करि पीतम के गात सुलफनि के।--देव (शब्द०)।

सुल्फा--संज्ञा पुं० [फ़ा० सुल्फ़ह्] १. वह तमाकू जो चिलम में बिना तवा रखे भरकर पिया जाता है। २. सूखा तमाकू जिसे गाँजे की तरह पतली चिलम में भरकर पीते हैं। कंकड़। ३. चरस।

यौ०--सुलफेबाज।

क्रि० प्र०--भरना।--पीना।

सुलफेबाज--वि० [हिं० सुल्फा + फ़ा० बाज़] गाँजा या चरस पीनेवाला। गँजेड़ी या चरसी।

सुलब--संज्ञा पुं० [डिं०] गंधक।

सुलभ[1]--वि० [सं०] १. सुगमता से मिलने योग्य। सहज में मिलनेवाला। जिसके मिलने में कठिनाई न हो। २. सहज। सरल। सुगम। आसान। ३. साधारण। मामूली। ४. उपयोगी। लाभकारी।

यौ०--सुलभकोप = जिसकी नाक पर गुस्सा हो।

सुलभ[2]--संज्ञा पुं० [सं०] अग्निहोत्र की अग्नि।

सुलभता--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुलभ का भाव। सुलभत्व। २. सुगमता। आसानी।

सुलभत्व--संज्ञा पुं० [सं०] १. सुलभ का भाव। सुलभता। २. सुगमता। सरलता। आसानी।

सुलभा--संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वैदिक काल की एक ब्रह्मवादिनी स्त्री का नाम (गृह्यसूत्र)। २. तुलसी। ३. मषवन। जंगली उड़द। मांसपर्णी। ४. तमाकू। धूम्रपत्रा। ५ बेला। वार्षिकी मल्लिका।

सुलभेतर--वि० [सं०] १. जो सहज में प्राप्त न हो सके। दुर्लभ। कठिन। ३. महार्घ। महँगा।

सुलभ्य वि० [सं०] सुगमता से मिलने योग्य। सहज में मिलनेवाला। जिसके मिलने में कठिनाई न हो।

सुललिक--संज्ञा पुं० [सं०] एक मिश्र जाति [को०]।

सुललित--वि० [सं०] १. अति ललित। २. अत्यंत सुंदर। ३. प्रसन्न। हर्षित। ४. क्रीड़ारत। क्रीड़ाशील (को०)।

सुलवण--संज्ञा पुं० [सं०] जिसमें नमक ठीक पड़ा हो [को०]।

सुलस--संज्ञा पुं० [देश०] स्वीडेन देश का एक प्रकार का लोहा।

सुलह(पु)[1]--वि० [सं० सुलभ, प्रा० सुलह] दे० 'सुलभ'।

सुलह[2]--संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ मेल। मिलाप। २. वह मेल जो किसी प्रकार की लड़ाई या झगड़ा समाप्त होने पर हो। ३. दो राजाओं या राज्यों में होनेवाली संधि।

यौ०--सुलहनामा।

सुलहनामा--संज्ञा पुं० [अ० सुलह + फ़ा० नामह्] १. वह कागज जिसपर दो या अधिक परस्पर लड़नेवाले राजाओं या राष्ट्रों की ओर से मेल की शर्तें लिखी रहती है। संधिपत्र। २. वह कागज

जिसपर परस्पर लड़नेवाले दो व्यक्तियों या दलों की ओर से समझौते की शर्तें लिखी रहती हैं; अथवा यह लिखा रहता हैं कि अब हम लोगों में किसी प्रकार का झगड़ा नहीं है।

सुलाक[1]—संज्ञा पुं० [फ़ा० सूराख] सूराख। छेद। (लश०)।

सुलाक[2]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सलाख] दे० 'सलाख'।

सुलाखना‡[1]—क्रि० स० [सं० सु + हिं० लखना (=देखना)] सोने या चाँदी को तपाकर परखना।

सुलाखना‡[2]—क्रि० स० [फ़ा० सूराख] सूराख या छेद करना।

सुलागनाⓅ†—क्रि० अ० [हिं० सुलगना] दे० 'सुलगना'। उ०—अगिनि सुलागत मोस्चो न अँग मन विकट बनावत बेहु। बकती कहा बाँसुरी कहि कहि करि करि तामस तेहु।—सूर (शब्द०)।

सुलाना—क्रि० स० [हिं० सोना का प्रे० रूप] १. सोने में प्रवृत्त करना। शयन कराना। निद्रित कराना। २. लिटाना। डाल देना।

सुलाभ—वि० [सं०] दे० 'सुलभ'।

सुलाभी—संज्ञा पुं० [सं० सुलाभिन्] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सुलाहⓅ—संज्ञा स्त्री० [अ० सुलह] १. मेल। अनुकूलता। २. समझौता।

सुलिखित—वि० [सं०] १. सुंदर एवं सुस्पष्ट लिखा हुआ। २. दर्ज किया हुआ [को०]।

सुलिपⓅ—वि० [सं० स्वल्प, हिं० सुलप] थोड़ा। स्वल्प।

सुलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर एवं सुस्पष्ट लिपि। साफ लिखावट।

सुलुलित—वि० [सं०] १. आनंद से इतस्ततः हिलता हुआ। क्रीड़ापूर्वक इधर उधर घूमता हुआ। २. अत्यंत क्षतिग्रस्त। नष्टभ्रष्ट किया हुआ [को०]।

सुलुस—संज्ञा पुं० [अ०] तीसरा भाग। तृतीयांश [को०]।

सुलू—वि० [सं०] अच्छी तरह छेदने या काटनेवाला [को०]।

सुलूक—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सलूक'।

सुलेक—संज्ञा पुं० [सं०] एक आदित्य का नाम।

सुलेख[1]—वि० [सं०] १. सुंदर लिखनेवाला। सुंदर रेखाएँ बनानेवाला। २. जो शुभ रेखाओं से युक्त हो।

सुलेख[2]—संज्ञा पुं० सुंदर लेख। अच्छी और साफ लिखावट। खुशखती।

सुलेखक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा लेख या निबंध लिखनेवाला। जिसकी रचना उत्तम हो। उत्तम ग्रंथकार या लेखक। २. सुंदर और साफ अक्षर लिखनेवाला। खुशखत।

सुलेमाँ—संज्ञा पुं० [फ़ा०] दे० 'सुलेमान'। उ०—हाथ सुलेमाँ केरि अँगूठी। जग कहँ दान दीन्ह भरि मूठी।—जायसी (शब्द०)।

सुलेमान—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. यहूदियों का एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगंबर माना जाता है।

विशेष—कहते हैं, इसने देवों और परियों को वश में कर लिया था और यह पशुपक्षियों तक से काम लिया करता था। इसका जन्म ई० पू० १०३३ और मृत्यु ई० पू० ९७५ मानी जाती है।

२. एक पहाड़ जो बलोचिस्तान और पंजाब के बीच में है।

सुलेमानी[1]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह घोड़ा जिसकी आँखें सफेद हों। २. एक प्रकार का दोरंगा पत्थर जिसका कुछ अंश काला और कुछ सफेद होता है।

सुलेमानी[2]—वि० सुलेमान का। सुलेमान संबंधी। जैसे,—सुलेमानी नमक।

यौ०—सुलेमानी नमक = एक प्रकार का बनाया हुआ नमक जो अत्यंत पाचक होता है। सुलेमानी सुरमा = दे० 'सुरमा सुलेमानी'।

सुलोक—संज्ञा पुं० [सं० सु + लोक] स्वर्ग।

सुलोचन[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुलोचना] सुंदर आँखोंवाला। जिसके नेत्र सुंदर हो। सुनेत्र। सुनयन।

सुलोचन[2]—संज्ञा पुं० १. हरिन। २. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

विशेष—महाभारत के आदि पर्व के ६७ वें अध्याय में इसका उल्लेख मिलता है अतः किसी किसी के मत से दुर्योधन का ही यह एक नाम था क्योंकि जलस्तंभन (जलसंध) विद्या इसी को आती थी।

३. एक दैत्य का नाम। ४. रुक्मिणी के पिता का नाम। ५. चकोर। ६. एक बुद्ध (को०)।

सुलोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक अप्सरा का नाम। २. राजा माधव की पत्नी का नाम जो आदर्श पत्नी मानी जाती है। ३. वासुकी की पुत्री और मेघनाद की पत्नी का नाम। ४. सुंदर महिला। मोहक नेत्रोंवाली औरत (को०)।

सुलोचनि, सुलोचनीⓅ—वि० स्त्री० [सं० सुलोचना] सुंदर नेत्रोंवाली। जिसके नेत्र सुंदर हों। उ०—सुंदरि सुलोचनि सुवचनि सुदति, तैसे तेरे मुख आखर परुष रुख मानिए।—केशव (शब्द०)।

सुलोम—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुलोमा] सुंदर लोमों या रोमों से युक्त। जिसके रोएँ सुंदर हों।

सुलोमनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जटामांसी। बालछड़।

सुलोमश—वि० [सं०] दे० 'सुलोम'।

सुलोमशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काकजंघा। २. जटामांसी।

सुलोमा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ताम्रवल्ली। २. मांसरोहिणी। मांसच्छदा।

सुलोमा[2]—वि० दे० 'सुलोम'।

सुलोल—वि० [सं०] १. अत्यंत लोल या लालायित। २. अतीव चंचल [को०]।

सुलोह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बढ़िया लोहा।

सुलोहक—संज्ञा पुं० [सं०] पीतल।

सुलोहित[1]—संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर रक्त वर्ण। अच्छा लाल रंग।

सुलोहित[2]—वि० सुंदर रक्त वर्ण से युक्त। सुंदर लाल रंगवाला।

सुलोहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम।

सुलोही—संज्ञा पुं० [सं० सुलोहिन्] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सुल्त—संज्ञा पुं० [अ०] जौ। यव [को०]।

सुल्तान—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सुलतान'।

सुल्तानी—वि०, संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सुलतानी'।

सुल्फ—संज्ञा पुं० [देश०] १. बहुत चढ़ी या तेज लय। २. नाव। किश्ती। (लश०)।

सुल्फा—संज्ञा पुं० [अ० सुल्फ़ह्] नाश्ता। जलपान। उपाहार [को०]।

सुल्स—संज्ञा पुं० [अ०] दे० 'सुलुस' [को०]।

सुवंश—संज्ञा पुं० [सं०] १. भागवत के अनुसार वसुदेव के एक पुत्र का नाम। २. सुंदर वंश। अच्छा कुल या खानदान।

सुवंशघोष—संज्ञा पुं० [सं०] वंशी की तरह मीठे स्वर का वाद्य [को०]।

सुवंशेक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद ईख या ऊख। श्वेतेक्षु।

सुवंस—संज्ञा पुं० [सं० सुवंश] दे० 'सुवंश'। उ०—गिरिधर अनुज सुवंस चल्यो जदुवंस बढ़ावन।—गोपाल (शब्द०)।

सुवⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुत, प्रा० सुअ, अप० सुव] दे० 'सुअन'। उ०—हिंदुवान पुन्य गाहक वनिक तासु निवाहक साहि सुव। बरबाद वान किरवान धरि जस जहाज सिवराज तुव।—भूषण (शब्द०)।

सुवक्ता—वि० [सं० सु + वक्तृ] सुंदर बोलनेवाला। उत्तम व्याख्यान देनेवाला। वाक्पटु। व्याख्यानकुशल। वाग्मी।

सुवक्त्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. स्कंद के एक पारिषद का नाम। ३. दंतवक्त्र के एक पुत्र का नाम। ४. वनतुलसी। वन बर्बरी। ५. सुंदर मुखाकृति (को०)। ६. सुंदर एवं सुस्पष्ट उच्चारण (को०)।

सुवक्त्र[2]—वि० सुंदर मुँहवाला। सुमुख।

सुवक्ष—वि० [सं० सुवक्षस्] सुंदर या विशाल वक्षवाला। जिसकी छाती सुंदर या चौड़ी हो।

सुवक्षा[1]—वि० [सं० सुवक्षस्] दे० 'सुवक्ष'।

सुवक्षा[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] मय दानव की पुत्री और त्रिजटा तथा विभीषण की माता का नाम।

सुवच—वि० [सं०] सहज में कहा जानेवाला। जिसके उच्चारण में कोई कठिनता न हो।

सुवचन[1]—वि० [सं०] १. सुंदर बोलनेवाला। सुवक्ता। वाग्मी। २. मधुरभाषी। मिष्टभाषी।

सुवचन[2]—संज्ञा पुं० सुंदर वचन। शुभ वचन। मीठी एवं प्रिय बात। उ०—सुनि सुवचन भूपति हरखाना।—मानस, १।१६४।

सुवचनिⓅ—वि० [सं० सुवचन] दे० 'सुवचनी'[2]। उ०—सुंदरि सुलोचनि सुवचनि सुदति तैसे तेरे मुख आखर परुष रुख मानिए।—केशव (शब्द०)।

सुवचनी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।

विशेष—बंगाल प्रदेश की स्त्रियों में इस देवी की पूजा का अधिक प्रचार है।

सुवचनी[2]—वि० [सं० सुवचना] सुंदर एवं प्रिय वचन बोलनेवाली। मधुरभाषिणी।

सुवचा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक गंधर्वी का नाम।

सुवचा[2]—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सुवचस्] सुंदर वचन बोलनेवाला। सुवक्ता [को०]।

सुवज्र—संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर वज्रवाला, इंद्र का एक नाम।

सुवटाⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० सुआ + टा (प्रत्य०)] दे० 'सुअटा'। उ०—पिंजर पिंड सरीर का सुवटा सहज समाइ।—दादू (शब्द०)।

सुवत्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जिसके वत्स सुंदर एवं सौम्य हों। २. एक दिक्कुमारी [को०]।

सुवणⓅ—संज्ञा पुं० [सं०] सोना। सुवर्ण। (डिं०)।

सुवदन[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुवदना] सुंदर मुखवाला। जिसका मुख सुंदर हो। सुमुख।

सुवदन[2]—संज्ञा पुं० वनतुलसी। बर्बरक।

सुवदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री।

सुवदना—संज्ञा स्त्री० [सं०] ११ अक्षरों की एक वृत्ति जिसमें क्रमशः न, ज, ज, लघु और गुरु होते है। इसे 'सुमुखी' भी कहते है [को०]।

सुवन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. अग्नि। ३. चंद्रमा।

सुवनⓅ[2]—संज्ञा पुं० [सं० सुत, प्रा० सुअ] १. दे० 'सुअन'। उ०—सुरसरि सुवन रणभूमि आए।—सूर (शब्द०)।

सुवनⓅ[3]—संज्ञा पुं० [सं० सुमन] दे० 'सुमन'। उ०—दामिनि दमक देखि दीप की दिपति देखि देखि शुभ सेज देखि सदन सुवन को।—केशव (शब्द०)।

सुवनाराⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० सुअन + आर (प्रत्य०)] दे० 'सुअन' (पुत्र)। उ०—एक दिना तौ धर्म भुवारा। द्रुपदी हेतु संग सुवनारा।—सबलसिंह (शब्द०)।

सुवपु[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवपुस्] एक अप्सरा का नाम।

सुवपु[2]—वि० सुंदर शरीरवाला। सुदेह।

सुवया—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवयस्] १. प्रौढ़ा स्त्री। मध्यमा स्त्री। २. वह जिसमें स्त्री पुरुष दोनों के चिह्न या लक्षण वर्तमान हों (को०)।

सुवरकोन्ना—संज्ञा पुं० [हिं० सूअर + कोना; अथवा कन्ना (= कान)] वह हवा जिसमें पाल नहीं उड़ता। (मल्लाह)।

सुवरण—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण] दे० 'सुवर्ण'।

सुवर्चक, सुवर्च्चक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सज्जी। स्वर्जिकाक्षार। २. एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सुवर्चना, सुवर्च्चना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवर्च्चला'।

सुवर्चल, सुवर्च्चल—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश का नाम। २. काला नमक। सौवर्चल लवण। ३. शिव (को०)।

सुवर्चला, सुवर्च्चला—संज्ञा [सं०] १. सूर्य की पत्नी का नाम। २. परमेष्ठी की पत्नी और प्रतीह की माता का नाम। ३. ब्राह्मी। ४. तीसी। अतसी। ५. हुरहुर। आदित्यभक्ता। ६. सूर्यमुखी नाम का फूल (को०)।

सुवर्चस, सुवर्च्चस—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव का एक नाम। २. वह जो अत्यंत दीप्तियुक्त हो [कौ०]।

सुवर्चसी, सुवर्च्चसी—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्च्चसिन्] १. शिव का एक नाम। २. स्वर्जिकाक्षार। सज्जी (कौ०)।

सुवर्चस्क सुवर्च्चस्क—वि० [सं०] दीप्तियुक्त। चमकता हुआ। कांतियुक्त [कौ०]।

सुवर्चा, सुवर्च्चा[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्च्चस्] १. गरुड़ के एक पुत्र का नाम। २. स्कंद के एक पारिषद नाम। ३. दसवें मनु के एक पुत्र का नाम। ४. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुवर्चा, सुवर्च्चा[2]—वि० तेजस्वी। शक्तिवान्।

सुर्वाचक, सुर्वाच्चक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुवर्च्चक'।

सुर्वाचका, सुर्वाच्चका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सज्जी। स्वर्जिकाक्षार। २. पहाड़ी लता। जतुका।

सुवर्ची, सुवर्च्ची—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुवर्च्चक'।

सुर्वाजका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पहाड़ी लता। जतुका।

सुवर्ण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। स्वर्ण। २. धन। संपत्ति। दौलत। ३. प्राचीन काल की एक प्रकार की स्वर्णमुद्रा जो दस माशे की होती थी। ४. सोलह माशे का एक मान। ५. स्वर्णगैरिक। ६. हरिचंदन। ७. नागकेशर। ८. हलदी। हरिद्रा। ९. धतूरा। १०. कणगुग्गुल। ११. पीला। धतूरा। १२. पीली सरसों। गौर सर्षप। १३. एक प्रकार का यज्ञ। १४. एक वृत्त का नाम। १५. एक देवगंधर्व का नाम। १६. दशरथ के एक मंत्री का नाम। १७. अंतरीक्ष के एक पुत्र का नाम। १८. एक मुनि का नाम। १९. उत्तम जाति या अच्छा वर्ण (कौ०)। २०. सुवर्णालु कंद (कौ०)। २१. स्वर का शुद्ध उच्चारण (कौ०)। २२. एक तीर्थ (कौ०)। २३. उत्तम वर्ण। अच्छा रंग (कौ०)।

सुवर्ण[2]—वि० १. सुंदर वर्ण या रंग का। उज्वल। चमकीला (कौ०)। २. सोने के रंग का। स्वर्णिम। पीला। ३. उत्तम वंश या अच्छी जाति का (कौ०)। ४. ख्यात। प्रसिद्ध (कौ०)।

सुवर्णक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। २. सोने की एक प्राचीन तौल जो सोलह माशे की होती थी। सुवर्णकर्ष। ३. पीतल जो देखने में सोने के समान होता है। ४. अमलतास। आरग्वध वृक्ष। ५. सुवर्णक्षीरी। ६. सीसा धातु (कौ०)।

सुवर्णक[2] - वि० १. सोने का। २. सुंदर वर्ण या रंग का।

सुवर्णकदली—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंपा केला। चंपक रंभा।

सुवर्णकमल—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल। रक्तकमल।

सुवर्णकरणी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवर्ण + करण] एक प्रकार की जड़ी। इसका गुण यह बताया जाता है कि यह रोगजनित विवर्णता को दूर कर सुवर्ण अर्थात् सुंदर कर देती है।

सुवर्णकरनी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुवर्ण + हिं० करनी] दे० 'सुवर्ण करणी'। उ०—दक्षिण शिखर द्रोणगिरि माहीं। औषधि चारिहु अहैं तहाँ ही। एक विशल्यकरनी सुखदाई। एक सुवर्णकरनी मनभाई। एक संजीवनकरनी जोई। एक संधानकरन मुदमोई।—रघुराज (शब्द०)।

सुवर्णकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णकर्तृ] सोने के गहने बनानेवाला। सुनार। स्वर्णकार।

सुवर्णकर्ष—संज्ञा [सं०] सोने की एक प्राचीन तौल जो सोलह माशे की होती थी।

सुवर्णकार—संज्ञा पुं० [सं०] सोने के गहने बनानेवाला, सुनार।

सुवर्णकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] सुवर्णकार। सुनार [कौ०]।

सुवर्णकेतकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाल केतकी। रक्त केतकी।

सुवर्णकेश—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक नागासुर का नाम।

सुवर्णक्षीरिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कटेरी। सत्यानासी। कटुपर्णी। स्वर्णक्षीरी।

सुवर्णक्षीरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवर्णक्षीरिणी' [कौ०]।

सुवर्णगणित—संज्ञा पुं० [सं०] बीजगणित का वह अंग जिसके अनुसार सोने की तौल आदि मानी जाती है और उसका हिसाब लगाया जाता है।

सुवर्णगर्भ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

सुवर्णगर्भ[2]—वि० जिसमें स्वर्ण भरा हो।

सुवर्णगर्भा—वि० [सं०] जहाँ सोने की खानें हों (भूमि)।

सुवर्णगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजगृह के एक पर्वत का नाम। अशोक की एक राजधानी जो किसी के मत से पश्चिमी घाट में थी।

सुवर्णगैरिक—संज्ञा पुं० [सं०] लाल गेरू।

पर्या०—स्वर्णधातु। सुरक्तक। संधभ्र। बभ्रधातु। शिलाधातु।

सुवर्णगोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक प्राचीन राज्य का नाम।

सुवर्णघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] राँगा। बंग।

सुवर्णचंपक—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णचम्पक] पीत चंपा [कौ०]।

सुवर्णचक्रवर्ती—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णचक्रवर्तिन्] नृपति। राजा।

सुवर्णचूड़—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णचूड] १. गरुड़ के एक पुत्र का नाम। २. एक प्रकार का पक्षी।

सुवर्णचूल—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णचूड] दे० 'सुवर्णचूड़'।

सुवर्णचौरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोना चुराना। सोने की चोरी। स्वर्ण की तस्करता [कौ०]।

सुवर्णजीविक—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति जो सोने का व्यापार करती थी।

सुवर्णज्योति—वि० [सं० सुवर्णज्योतिस्] स्वर्णिम कांतिवाला। सुनहली चमकवाला [कौ०]।

सुवर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुवर्ण का भाव या धर्म। सुवर्णत्व।

सुवर्णतिलका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मालकंगनी। ज्योतिष्मती लता।

सुवर्णत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुवर्णता'।

सुवर्णदुग्धी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कटेरी। भटकटैया। स्वर्णक्षीरिणी।

सुवर्णद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] सुमात्रा टापू का प्राचीन नाम।

सुवर्णधेनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] दान देने के लिये सोने की बनाई हुई गौ।

सुवर्णनकुली--संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ी मालकंगनी। महाज्योतिष्मती लता।

सुवर्णपक्ष¹--संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

सुवर्णपक्ष²--वि० सोने के पंखोंवाला। जिसके पर सोने के हों।

सुवर्णपत्र--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पक्षी।

सुवर्णपद्म--संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल। रक्त कमल।

सुवर्णपद्मा--संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्गगंगा।

सुवर्णपर्ण--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुवर्णपक्ष'

सुवर्णपार्श्व--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

सुवर्णपालिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का सोने का बना हुआ पात्र।

सुवर्णपिंजर--वि० [सं० सुवर्णपिञ्जर] सोने के समान पीला। स्वर्णाभ [को०]।

सुवर्णपुष्प--संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ी सेवती। राजतरुणी। २. अम्लान पुष्प (को०)।

सुवर्णपुष्पित--संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ण से परिपूर्ण। सोने से भरपूर। २. दीप्त। तेजोमय [को०]।

सुवर्णपुष्पी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा [को०]।

सुवर्णपृष्ठ--वि० [सं०] जो सोने के पत्तर से मंडित हो। स्वर्णमंडित। जिसपर सोना चढ़ा हो [को०]।

सुवर्णप्रतिमा--संज्ञा स्त्री० [सं०] सोने की मूर्ति।

सुवर्णप्रभास--संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक यक्ष का नाम।

सुवर्णप्रसर--संज्ञा पुं० [सं०] एलुआ। एलबालुक।

सुवर्णप्रसव--संज्ञा पुं० [सं०] एलुआ। एलबालुक।

सुवर्णफला--संज्ञा स्त्री० [सं०] चंपा केला। सुवर्ण कदली।

सुवर्णबिंदु--संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णबिन्दु] १. विष्णु का नाम। २. शिव का एक नाम (को०)।

सुवर्णभांड, सुवर्णभांडक--संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णभाण्ड, सुवर्णभाण्डक] सोना या रत्न रखने की पेटी।

सुवर्णभू--संज्ञा पुं० [सं०] ईशान कोण में स्थित एक देश का नाम।

विशेष--बृहत्संहिता के अनुसार सुवर्णभू, वसुवन, दिविष्ट, पौरव आदि देश रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्रों में अवस्थित हैं।

सुवर्णभूमि--संज्ञा पुं० [सं०] १. सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) का एक नाम। २. स्वर्ण से भरी भूमि।

सुवर्णमाक्षिक--संज्ञा पुं० [सं०] सोनामक्खी। स्वर्णमाक्षिक।

सुवर्णमाषक--संज्ञा पुं० [सं०] बारह धान का एक मान जिसका व्यवहार प्राचीन में काल में होता था।

सुवर्णमित्र--संज्ञा पुं० [सं०] सुहागा, जिसकी सहायता से सोना जल्दी गल जाता है।

सुवर्णमुखरी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम।

सुवर्णमेखली--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुवर्णमोचा--संज्ञा स्त्री० [सं०] सुवर्ण कदली। चंपा केला [को०]।

सुवर्णयूथिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] सोनजुही। पीली जुही। पीतयूथिका।

सुवर्णयूथी--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवर्णयूथिका' [को०]।

सुवर्णरंभा--संज्ञा स्त्री० [सं० सुवर्णरम्भा] चंपा केला। सुवर्ण कदली।

सुवर्णरूप्यक--संज्ञा पुं० [सं०] सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) का एक प्राचीन नाम। २. वह भूमि या स्थान जहाँ सोने चाँदी की बहुलता हो (को०)।

सुवर्णरेख--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दे० 'स्वर्णरेखा'। २. बिहार प्रदेश की एक नदी का नाम।

विशेष--यह नदी बिहार के राँची जिले से निकलकर मानभूम, सिंहभूम और उड़ीसा होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसकी कई शाखाएँ हैं।

सुवर्णरेतस--संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सुवर्णरेता--संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णरेतस्] शिव का एक नाम।

सुवर्णरोमा¹--संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णरोमन्] १. भेड़। मेष। २. महारोम के एक पुत्र का नाम।

सुवर्णरोमा²--वि० सुनहरे रोएँ या बालोंवाला।

सुवर्णलता--संज्ञा स्त्री० [सं०] मालकंगनी। ज्योतिष्मती लता।

सुवर्णवणिक्--संज्ञा पुं० [सं०] बंगाल की एक वणिक जाति।

विशेष--हिंदू राजत्वकाल में इस जाति के लोग सोने का कारबार करते थे और अब भी बहुतेरे करते हैं। यह जाति निम्न और पतित समझी जाती है। ब्राह्मण और कायस्थ इनके यहाँ का जल नहीं ग्रहण करते। बंगाल में इन्हें 'सोनारवेणे' कहते हैं।

सुवर्णवान्--वि० [सं० सुवर्णवत्] [वि० स्त्री० सुवर्णवती] १. स्वर्णिम। स्वर्णनिर्मित। सोने का। २. सोने की तरह कांतियुक्त। सौंदर्ययुक्त। शोभायुक्त [को०]।

सुवर्णवर्ण¹--संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

सुवर्णवर्ण²--वि० सोने के रंग का। सुनहरा।

सुवर्णवर्णा--संज्ञा स्त्री० [सं०] हलदी। हरिद्रा।

सुवर्णवृषभ--संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्णनिर्मित वृषभ। सोने का बना हुआ बैल [को०]।

सुवर्णशिलेश्वर--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सुवर्णश्री--संज्ञा स्त्री० [सं०] आसाम की एक नदी जो ब्रह्मपुत्र की मुख्य शाखा है।

सुवर्णष्ठीवी--संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णष्ठीविन्] महाभारत के अनुसार संजय के एक पुत्र का नाम।

सुवर्णसंज्ञ--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुवर्णकर्ष'।

सुवर्णसिंदूर--संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णसिन्दूर] दे० 'स्वर्णसिंदूर'।

सुवर्णसिद्ध--संज्ञा पुं० [सं०] वह जो इंद्रजाल या जादू के बल से सोना बना या प्राप्त कर सकता है।

सुवर्णसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का तार। सोने की जंजीर या सिकड़ी [को०]।

सुवर्णस्तेय—संज्ञा पुं० [सं०] सोने की चोरी।

विशेष—मनु के अनुसार सोने की चोरी पाँच महापातकों में से एक है।

सुवर्णलोपी—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्णलोपिन्] सोना चुरानेवाला जो मनु के अनुसार महापातकी होता है।

सुवर्णस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जनपद का नाम। २. सुमात्रा द्वीप का एक प्राचीन नाम।

सुवर्णहलि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वृक्ष।

सुवर्णा[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम। २. इक्ष्वाकु की पुत्री और सुहोत्र की पत्नी का नाम। ३. हलदी। हरिद्रा। ४. काला अगर। कृष्णागुरु। ५. खिरैटी। बरियारा। बला। ६. कटेरी। सत्यानासी। स्वर्णक्षीरी। ७. इंद्रायन। इंद्रवारुणी। ८. कटुतुंबी। तितलौकी (को०)।

सुवर्णा[२]—वि० स्त्री० सुंदर वर्णवाली। दे० 'सुवर्ण'[२]।

सुवर्णाकर—संज्ञा पुं० [सं०] सोने की खान जिससे सोना निकलता है।

सुवर्णाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सुवर्णाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. नागकेसर। २. धतूरा। धुस्तूर। ३. एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सुवर्णाभ[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. शंखपद के एक पुत्र का नाम। २. रेवटी। राजावर्तमणि।

सुवर्णाभ[२]—वि० सुनहला। स्वर्णिम। दीप्त [को०]।

सुवर्णाभिषेक—संज्ञा पुं० [सं०] सोने का टुकड़ा डालकर वरवधू के ऊपर जल छिड़कने की क्रिया [को०]।

सुवर्णार—संज्ञा पुं० [सं०] कचनार। रक्तकांचन वृक्ष।

सुवर्णालु—संज्ञा पुं० [सं०] एक कंद का नाम [को०]।

सुवर्णविभासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक गंधर्वी का नाम।

सुवर्णाह्व—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली जूही। सोनजूही। स्वर्णयूथिका।

सुवर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीली जीवंती। स्वर्णजीवंती।

सुवर्णिम—वि० [सं०] दे० 'स्वर्णिम' [को०]।

सुवर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूसाकानी। आखुपर्णी।

सुवर्तित—वि० [सं०] १. अच्छी तरह गोलाकार घुमाया हुआ। २. जो सुव्यवस्थित हो [को०]।

सुवर्तुल[१]—संज्ञा [सं०] तरबूज।

सुवर्तुल[२]—वि० पूर्णतः गोलाकार [को०]।

सुवर्मा[१]—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्मन्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुवर्मा[२]—वि० उत्तम कवच से युक्त। जिसके पास उत्तम कवच हो।

सुवर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २. एक बौद्ध आचार्य का नाम।

सुवर्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मोतिया। मल्लिका का पुष्प। २. अच्छी बरसात (को०)।

सुवल्लरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुत्रदात्री लता।

सुवल्लि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवल्लिका'।

सुवल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जतुका नाम की लता। २. सोमराजी।

सुवल्लिज—संज्ञा पुं० [सं०] १. मूँगा। प्रवाल। २. जमीकंद (को०)।

सुवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बकुची। सोमराजी। २. कुटकी। कटुकी। ३. पुत्रदात्री लता।

सुवश्य—वि० [सं०] सुगमता से वश में करने योग्य [को०]।

सुवसंत—संज्ञा पुं० [सं० सुवसन्त] १. चैत्र पूर्णिमा। चैत्रावली। २. मदनोत्सव जो चैत्र पूर्णिमा को होता था। ३. सुंदर वसंत-ऋतु (को०)।

सुवसंतक—संज्ञा पुं० [सं० सुवसन्तक] १. मदनोत्सव जो प्राचीन काल में चैत्र पूर्णिमा को होता था। २. वासंती। नेवारी।

सुवसंता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माधवीलता। २. चमेली। जातीपुष्प।

सुवस(पु)—वि० [सं० स्व + वश] जो अपने वश या अधिकार में हो। उ०—वरुण कुबेर अग्नि यम मारुत सुवस कियो क्षण मायँ।—सूर (शब्द०)।

सुवस्त्रा[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक नदी का नाम। २. सुंदर वस्त्रों-वाली महिला।

सुवह[१]—वि० [सं०] १. सहज में वहन करने या उठाने योग्य। जो सहज में उठाया जा सके। २ धैर्यवान्। धीर। ३. अच्छी तरह उठाने या वहन करनेवाला (को०)।

सुवह[२]—संज्ञा पुं० एक प्रकार की वायु।

सुवहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वीणा। बीन। २. शेफालिका। ३. रासन। रास्ना। ४. सँभालू। नील सिंधुवार। ५. रुद्रजटा। ६. हंसपदी। ७. मूसली। तालमूली। ८. सलई। शल्लकी। ९. गंधनाकुली। नकुलकंद। १०. निसोथ। त्रिवृत्ता।

सुवाँग—संज्ञा पुं० [सं० सु + अङ्ग या स्व + अङ्ग] दे० 'स्वाँग'।

सुवाँगी—संज्ञा पुं० [हिं० सुवंग] दे० 'स्वाँगी'।

सुवा(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शुक, प्रा० सुअ] दे० 'सुआ'। उ०—सुवा चलि ता बन को रस पीजै। जा बन राम नाम अमृतरस श्रवणपात्र भरि लीजै।—सूर (शब्द०)।

सुवाक्य[१]—वि० [सं०] सुंदर वचन बोलनेवाला। मिष्ठभाषी। मधुर-भाषी। सुवाग्मी।

सुवाक्य[२]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंदर वचन [को०]।

सुवाग्मी—वि० [सं० सुवाग्मिन्] बहुत सुंदर बोलनेवाला। व्याख्यान-पटु। सुवक्ता।

सुवाच्य—वि० [सं०] सरलता से पढ़ा जाने योग्य।

सुवाजी—वि० [सं० सुवाजिन्] सुंदर पंखों से युक्त (तीर)।

सुवादिक—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम वाद्य। अच्छा बाजा [को०]।

सुवाना(पु)—क्रि० स० [सं० शयन] दे० 'सुलाना'। उ०—पांडव न्योते अंधसुत घर के बीच सुवाय। अर्ध रात्रि चहुँ ओर ते दीनी आग लगाय।—लल्लूलाल (शब्द०)।

सुवामा--संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्तमान रामगंगा नदी का प्राचीन नाम।

सुवार पु¹--संज्ञा पुं० [सं० सूपकार] रसोइया। भोजन बनानेवाला। पाचक। उ०--पुनु नृप नाम जयंत हमारा। राज युधिष्ठिर केर सुवारा।--सबलसिंह (शब्द०)।

सुवार(पु)†²--संज्ञा पुं० [सं० सु+वार] उत्तम वार। अच्छा दिन। उ०--असाढ़ की अँधियारी अष्टमी मंगलवार सुवारी रामा।--हिंदी प्रदीप (शब्द०)।

सुवार्ता--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम। २. सुंदर वार्ता या बातचीत (को०)। ३. शुभ सूचना या समाचार (को०)।

सुवाल(पु)†¹--संज्ञा पुं० [फ़ा० सवाल] दे० 'सवाल'।

सुवाल²--वि० जिसकी पूँछ बाल से युक्त हो। जैसे,--हाथी।

सुवालुका--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लता।

सुवास¹--संज्ञा पुं० [सं०] १. सुगंध। अच्छी महक। खुशबू। २. उत्तम निवास। सुंदर घर। ३. शिव जी का एक नाम। ४. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, ल (।।।, ।ऽ।, ।) होता है।

सुवास²--वि० [सं० सुवासस्] [वि० स्त्री० सुवासा] सुंदर वस्त्रों से युक्त।

सुवास³--संज्ञा पुं० [सं० श्वास] श्वास। साँस। (डिं०)।

सुवासक--संज्ञा पुं० [सं०] तरबूज।

सुवासन--संज्ञा पुं० [सं०] दसवें मनु के एक पुत्र का नाम।

सुवासरा--संज्ञा स्त्री० [सं०] हालों नाम का पौधा। चंसुर। चंद्रशूर।

सुवासिका--वि० स्त्री० [सं० सुवासिक] सुवास करनेवाली। सुगंध करनेवाली। उ०--केशव सुगंध श्वास सिद्धनि के गुहा किधौं परम प्रसिद्ध शुभ शोभत सुवासिका।--केशव (शब्द०)।

सुवासित--वि० [सं०] सुवासयुक्त। सुगंधयुक्त। खुशबूदार।

सुवासिनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. युवावस्था में भी पिता के यहाँ रहनेवाली स्त्री। चिरंटी। २. सधवा स्त्री। ३. सधवा स्त्री के लिये प्रयुक्त आदरार्थक शब्द (को०)।

सुवासी--वि० [सं० सुवासिन्] उत्तम या भव्य भवन में रहनेवाला।

सुवास्तु¹--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम जिसे स्वात कहते हैं और जो प्राचीन भारत के उत्तरपश्चिमी सरहदी प्रदेश में बहती है।

सुवास्तु²--संज्ञा पुं० १. सुवास्तु नदी के निकटवर्ती देश का नाम। २. इस देश के रहनेवाले।

सुवास्तुक--संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम।

सुवाह¹--संज्ञा पुं० [सं०] १. स्कंद के एक पारिषद का नाम। २. अच्छा घोड़ा।

सुवाह²--वि० १. सहज में उठाने योग्य। २. सुंदर घोड़ोंवाला।

सुवाहन--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन मुनि का नाम।

सुविक्रम¹--सं० पुं० [सं०] १. वत्सप्री के एक पुत्र का नाम। २. प्रबल शक्ति अथवा पराक्रम (को०)।

सुविक्रम²--वि० १. अत्यंत साहसी, शक्तिशाली या वीर। २. सुंदर चाल। विशिष्ट गतिवाला (को०)।

सुविक्रांत¹--वि० [सं० सुविक्रान्त] अत्यंत विक्रमशाली। अतिशय पराक्रमी। अत्यंत साहसी या वीर।

सुविक्रांत²--संज्ञा पुं० १. शूर। वीर। बहादुर। २. वीरता। बहादुरी।

सुविक्लव--वि० [सं०] १ अतिशय विह्वल। बहुत बेचैन। २. डरपोक। भीरु। कायर (को०)।

सुविख्यात--वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध। सुप्रसिद्ध। बहुत मशहूर।

सुविगुण--वि० [सं०] १. जिसमें कोई गुण या योग्यता न हो। गुणहीन। योग्यतारहित। २. अत्यंत दुष्ट। नीच। पाजी।

सुविग्रह--वि० [सं०] सुंदर शरीर या रूपवाला। सुदेह। सुरूप।

सुविचक्षण--वि० [सं०] कुशाग्रबुद्धि। अत्यंत विद्वान् (को०)।

सुविचार--संज्ञा पुं० [सं०] १. सूक्ष्म या उत्तम विचार। २. अच्छा फैसला। सुंदर न्याय। ३. रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सुविचारित--वि० [सं०] सूक्ष्म या उत्तम रूप से विचार किया हुआ। अच्छी तरह सोचा हुआ।

सुविचित--वि० [सं०] १. पूर्णतः अन्वेषित। अच्छी तरह खोजा हुआ। २. जिसका अच्छी तरह परीक्षण किया गया हो (को०)।

सुविज्ञ--वि० [सं०] अतिशय विज्ञ या या बुद्धिमान्। बहुत चतुर।

सुविज्ञान--वि० [सं०] १. जो सहज में जाना जा सके। २. विवेकी। विवेकशील (को०)। ३. अतिशय चतुर या बुद्धिमान्।

सुविज्ञापक--वि० [सं०] जो आसानी से समझाया या सिखाया जा सके (को०)।

सुविज्ञेय¹--वि० [सं०] जो सहज में जाना जा सके। सहज में जानने समझने योग्य।

सुविज्ञेय²--संज्ञा पुं० शिव जी का एक नाम।

सुवित¹--वि० [सं०] १. सहज में पहुँचने योग्य। सहज में पाने योग्य। २. उन्नतिशील (को०)।

सुवित²--संज्ञा पुं० १. अच्छा मार्ग। सुमार्ग। सुपथ। २. कल्याण। शुभ। ३. सौभाग्य।

सुवितत--वि० [सं०] अच्छी तरह फैला हुआ। सुविस्तृत।

सुवितल--संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु की एक प्रकार की मूर्ति।

सुवित्त¹--वि० [सं०] बहुत धनी। बड़ा अमीर।

सुवित्त²--संज्ञा पुं० अत्यंत समृद्धि या ऐश्वर्य (को०)।

सुवित्ति--संज्ञा पुं० [सं०] एक देवता का नाम।

सुविद्--संज्ञा पुं० [सं०] पंडित। विद्वान्।

सुविद--संज्ञा पुं० [सं०] १. अंतःपुर या रनिवास का रक्षक। सौविद्। कंचुकी। २. एक राजा का नाम। ३. तिलक। तिलकपुष्प या उसका वृक्ष।

सुविदग्ध--वि० [सं०] [वि० सुविदग्धा] बहुत चतुर। बहुत चालाक।
सुविदत्--संज्ञा पुं० [सं०] राजा।
सुविदत्त--वि० [सं०] १. अतिशय सावधान। २. सहृदय। ३. उदार। दयालु।
सुविदत्र--संज्ञा पुं० १. कृपा। दया। २. धन। संपत्ति। ४. कुटुंब। ४. ज्ञान।
सुविदन्--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुविदत्त'।
सुविदर्भ--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति का नाम।
सुविदला--संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका ब्याह हो गया हो। विवाहिता स्त्री।
सुविदल्ल--संज्ञा पुं० [सं०] १. अंतःपुर। जनानखाना। जनाना महल। २. सौविदल्ल का असाधु प्रयोग। अंतःपुर का रक्षक [को०]।
सुविदल्ला--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुविदला' [को०]।
सुविदा--संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्धिमती स्त्री। गुणवती नारी [को०]।
सुविदित--वि० [सं०] भली भाँति विदित। अच्छी तरह जाना हुआ।
सुविद्य--वि० [सं०] उत्तम विद्वान्। अच्छा पंडित।
सुविद्युत्--संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम।
सुविध--वि० [सं०] १. अच्छे स्वभाव का। सुशील। नेकमिजाज। २. उत्तम प्रकार का। अच्छी किस्म का (को०)।
सुविधा--संज्ञा स्त्री० [हिं० सुभीता] दे० 'सुभीता'।
सुविधान[१]--संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर विधान या उत्तम व्यवस्था। सुप्रबंध [को०]।
सुविधान[२]--वि० जो सुंदर व्यवस्थायुक्त हो।
सुविधि[१]--संज्ञा [सं०] जैनियों के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के नवें अर्हत् का नाम।
सुविधि[२]--संज्ञा स्त्री० सुंदर विधि या विधान। अच्छा नियम [को०]।
सुविनय--वि० [सं०] अनुशासित या सुशिक्षित [को०]।
सुविनीत--वि० [सं०] १. अतिशय नम्र। २. अच्छी तरह सिखाया हुआ। सुशिक्षित (जैसे घोड़ा या और कोई पशु)।
सुविनीता--वि० [सं०] वह गौ जो सहज में दूही जा सके।
सुविनेय--वि० [सं०] सरलतापूर्वक शिक्षित होने योग्य [को०]।
सुविपिन--संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा जंगल। घना जंगल [को०]।
सुविभीषण--वि० [सं०] अत्यंत भयंकर [को०]।
सुविभु--संज्ञा पुं० [सं०] एक राजा का नाम जो विभु का पुत्र था।
सुविरज--वि० [सं०] वासनाओं से सम्यक् मुक्त [को०]।
सुविविक्त--वि० [सं०] १. अकेला। जो बिल्कुल अलग हो। २. अत्यंत निर्जन या एकांत। ३. अलग अलग किया हुआ। निर्णीत [को०]।
सुविशाल--वि० [सं०] बहुत बड़ा [को०]।
सुविशाला--संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
सुविशुद्ध[१]--संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम।
सुविशुद्ध[२]--वि० अत्यंत शुद्ध। पूर्णतः मार्जित या स्वच्छ [को०]।
सुविषाण--वि० [सं०] जिसके विषाण बड़े बड़े हों। बड़े दाँतोंवाला।
सुविष्टंभी[१]--संज्ञा पुं० [सं० सुविष्टम्भिन्] शिव का एक नाम।
सुविष्टंभी[२]--वि० १. सहारा देनेवाला। सम्यक् रूप से पालन या वहन करनेवाला। २. विष्टंभ से युक्त [को०]।
सुविस्तार[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. अत्यधिक विस्तार या फैलाव। २. आधिक्य। प्रचुरता [को०]।
सुविस्तर[२]--वि० १. अत्यंत विस्तृत या विशाल। २. अत्यधिक। प्रचुरतम। ३. अतीव उग्र। तीव्रतम।
सुविस्मय--वि० [सं०] अत्यंत विम्मययुक्त या चकित [को०]।
सुविस्मित--वि० [सं०] १. आश्चर्य पैदा करनेवाला। कौतूहलजनक। २. दे० 'सुविस्मय' [को०]।
सुविहित--वि० [सं०] १. अच्छी तरह रखा हुआ या स्थापित। सम्यक् न्यस्त। २. जिसे अच्छी तरह क्रमयुक्त या व्यवस्थित किया गया हो। ३. अच्छी तरह किया हुआ। सम्यक् कृत या संपन्न। ४. अच्छी तरह तुष्ट या तृप्त किया हुआ। अच्छी तरह तृप्त या संतुष्ट [को०]।
सुवीज--संज्ञा पुं० वि० [सं०] दे० 'सुबीज'।
सुवीथीपथ--संज्ञा पुं० [सं०] प्रासाद में जानेवाली विशिष्ट पद्धति या राह [को०]।
सुवीर[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. स्कंद का एक नाम। २. शिव जी का एक नाम। ३. शिव जी के एक पुत्र का नाम। ४. द्युतिमान् के एक पुत्र का नाग। ५. देवश्रवा के एक पुत्र का नाम। ६. क्षेम्य के एक पुत्र का नाम। ७. एकबीर नामक वृक्ष। १०. बेर का पेड़ (को०)। ११ छाछ की रबड़ी (डिं०)।
सुवीर[२]--वि० १. अतिशय वीर। महान् योद्धा। २. जिसे अनेक पुत्र हों (को०)। ३. अनेक वीरों से युक्त (को०)।
सुवीरक--संज्ञा पुं० [सं०] १. बेर। बदरी। २. एकबीर नामक वृक्ष। २. एक प्रकार का सुरमा। ४. कांजिक। काँजी (को०)।
सुवीरज--संज्ञा पुं० [सं०] सुरमा। सौवीरांजन।
सुवीराम्ल--संज्ञा पुं० [सं०] काँजी। कांजिक।
सुवीर्य[१]--संज्ञा पुं० [सं०] बेर। बदरी फल।
सुवीर्य[२]--वि० महान् शक्तिशाली। बहुत बड़ा बहादुर।
सुवीर्या--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बनकपास। वनकार्पासी। २. बड़ी शतावरी। महाशतावरी। ३. कलपत्ती हींग। डिकामाली। नाड़ी हींग।
सुवृत्त[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. सूरन। जमीकंद। ओल। २. सत् चरित्र। सत् वृत्त या व्यवहार (को०)।
सुवृत्त[२]--वि० १. सच्चरित्र। २. गुणवान्। ३. साधु। ४. सुंदर गोलाकार। वर्तुलाकार (को०)। ५. सुंदर छंदोबद्ध (काव्य०)।
सुवृत्ता--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक अप्सरा का नाम। २. किशमिश। काकोली द्राक्षा। ३. सेवती। शतपत्नी। ४. एक वृत्त का नाम

जिसके प्रत्येक चरण में १९ अक्षर होते हैं, जिनमें १, ७, ८, ९, १०, ११, १४ और १७ वाँ अक्षर गुरु तथा अन्य अक्षर लघु होते हैं।

सुवृत्ति¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्तम वृत्ति। उत्तम जीविका। २. सदाचार। पवित्र जीवन। पवित्रता का जीवन (को०)। ३. ब्रह्मचर्य (को०)। ४. सद् व्यवहार या वृत्ति (को०)।

सुवृत्ति²—वि० १. जिसकी वृत्ति या जीविका उत्तम हो। २. सदाचारी। सच्चरित्र।

सुवृद्ध¹—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम।

सुवृद्ध²—वि० १. बहुत वृद्ध। २. बहुत प्राचीन।

सुवेग—वि० [सं०] अत्यंत वेगवान्। तीव्र गतिवाला।

सुवेगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मालकंगनी। महाज्योतिष्मती लता। २. एक गिद्धनी का नाम।

सुवेणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरिवंश के अनुसार एक नदी का नाम जिसका महाभारत में भी उल्लेख है।

सुवेद वि० [सं०] १. आध्यात्मिक ज्ञान में पारंगत। अध्यात्मशास्त्र का अच्छा ज्ञाता। २ सुखपूर्वक लभ्य। सुलभ (को०)।

सुवेदा–संज्ञा पुं० [सं० सुवेदस्] एक वैदिक ऋषि का नाम।

सुवेल¹—संज्ञा पुं० [सं०] त्रिकूट पर्वत का नाम, जो रामायण के अनुसार समुद्र के किनारे लंका में था और जहाँ रामचंद्र सेना सहित ठहरे थे। उ०—कौतुक ही वारिधि बँधाइ उतरे सुवेल तट जाइ। तुलसीदास गढ़ देखि फिरे कपि प्रभु आगमनु सुनाइ।—तुलसी (शब्द०)।

सुवेल²—वि० १. बहुत झुका हुआ। प्रणत। २. शांत। नम्र।

सुवेश¹—वि० [सं०] १. भली भाँति या अच्छे कपड़े पहने हुए। वस्त्रादि से सुसज्जित। सुंदर वेशयुक्त। २. सुंदर रूपवाला। रूपवान्।

सुवेश²—संज्ञा पुं० १. सफेद ईख। श्वेतेक्षु। २. सुंदर वेश। भव्य वेशभूषा (को०)।

सुवेशता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुवेश का भाव या धर्म।

सुवेशी—वि० [सं० सुवेशिन्] दे० 'सुवेश'।

सुवेष—वि० [सं०] दे० 'सुवेश'।

सुवेषित—वि० [सं० सुवेष+इत] सुंदर वेशयुक्त। दे० 'सुवेश'१। गलीचे पर एक सुवेषित यवन बैठा पान खा रहा है।—गदाधरसिंह (शब्द०)।

सुवेषी—वि० [सं० सुवेषिन्] दे० 'सुवेश'।

सुवेस(पु)—वि० [सं० सुवेश] दे० 'सुवेश'।

सुवेसल—वि० [सं० सुवेश+हिं० ल (प्रत्य०)] सुंदर। मनोहर। उ०—सुभग सुसम बंधुर रुचिर कांत काम कमनीय। रम्य सुवेसल भव्य अरु दर्शनीय रमणीय।—अनेकार्थ०। (शब्द०)।

सुवैण(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सु+वचन, प्रा० वयण, हिं० वैन] मित्रता। दोस्ती। (डिं०)।

सुवैया—वि० [हिं० सोना+ऐया (प्रत्य०)] सोनेवाला। शयन करनेवाला।

सुवो(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शुक, प्रा० सुअ, सुव] शुक पक्षी। सुग्गा। तोता। (डिं०)।

सुव्यक्त—वि० [सं०] १. उत्तम रूप से व्यक्त। बहुत स्पष्ट। २. चमकदार। दीप्तियुक्त। सुप्रकाशित। ३. साफ। स्वच्छ (को०)।

सुव्यवस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम व्यवस्था उत्तम प्रबंध अच्छी योजना।

सुव्यवस्थित—वि० [सं०] उत्तम रूप से व्यवस्थित। जिसकी व्यवस्था भली भाँति की गई हो।

सुव्यस्त—वि० [सं०] छितराया हुआ। इतस्ततः अस्तव्यस्त। छिन्न भिन्न। तितर बितर [को०]।

सुव्याहृत—वि० [सं०] १. अच्छी उक्ति सूक्ति। सुंदर वचन। २. आधारवाक्य। सिद्धांतवाक्य [को०]।

सुव्यूहमुखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सुव्यूहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुव्यूहमुखा'।

सुव्रत¹ संज्ञा पुं० [सं०] १. स्कंद के एक अनुचर का नाम। २. एक प्रजापति का नाम। ३. रौच्य मनु के एक पुत्र का नाम। ४. उशीनर के एक पुत्र का नाम। ५. प्रियव्रत के एक पुत्र का नाम। ३. ब्रह्मचारी। ७ वर्तमान अवसर्पिणी के २०वें अर्हत् का नाम। इन्हें मुनि सुव्रत भी कहते हैं। ८. भावी उत्सर्पिणी के ११वें अर्हत् का नाम।

सुव्रत²—वि० १. दृढ़ता से व्रत का पालन करनेवाला। २. धर्मनिष्ठ। ३. विनीत। नम्र (घोड़ा या गाय आदि पशुओं के लिये प्रयुक्त।)

सुव्रता¹–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गंधपलाशी। कपूरकचरी। २. सहज में दूही जानेवाली गाय। ३. गुणवती और पतिव्रता पत्नी। ४. एक अप्सरा का नाम। ५. दक्ष की पुत्री का नाम। ६. वर्तमान कल्प के १५वें अर्हत् की माता का नाम।

सुव्रता²—वि० सुंदर व्रतवाली। पतिव्रता। साध्वी [को०]।

सुशंस—वि० [सं०] १. प्रसिद्ध। विख्यात। यशस्वी। २. प्रशंसनीय। ३. शुभ शंसा करनेवाला। शुभाकांक्षी [को०]।

सुशंसी-वि० [सं० सुशांसिन्] शुभ शंसा करनेवाला। शुभाकांक्षी। शुभाभिलाषी।

सुशक—वि० [सं०] सहज में होने योग्य। सुकर। आसान।

सुशक्त—वि० [सं०] अच्छी शक्तिवाला। शक्तिशाली। समर्थ। ताकतवर।

सुशक्ति—वि० [सं०] दे० 'सुशक्त'।

सुशब्द–वि० [सं०] अच्छा शब्द या ध्वनि करनेवाला। जिसकी आवाज अच्छी हो।

सुशरण्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

सुशरण्य²—वि० [सं०] शरण देनेवाला [को०]।

सुशरीर– वि० [सं०] जिसका शरीर सुंदर हो। सुडौल। सुदेह।

सुशर्मा[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुशर्मन्] १. एक मनु के एक पुत्र का नाम। २. एक वैशालि का नाम। ३. एक काण्व का नाम। ४. निंदित ब्राह्मण। ५. विषय का इच्छुक व्यक्ति (को०)। ६. एक देव-वर्ग (को०)। ७. एक असुर (को०)।

सुशर्मा[2]—वि० बहुत प्रसन्न। अत्यंत सुखी।

सुशल्य—संज्ञा पुं० [सं०] खैर। खदिर।

सुशवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काला जीरा। कृष्णजीरक। २. करेला। कारवेल्ल। ३. काली जीरी। सूक्ष्म कृष्णजीरक। ४. करंज।

सुशांत—वि० [सं० सुशान्त] १. अत्यंत शांत। स्थिर। उ०—बहुत काल लौं विचरे जल में तब हरि भए सुशांत। बीस प्रलय विविध नानाकर सृष्टि रची बहु भाँति।—सूर (शब्द०)। २. शांत। प्रशमित (को०)।

सुशांता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुशान्ता] राजा शशिध्वज की एक पत्नी का नाम।

सुशांति[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुशान्ति] १. तीसरे मन्वंतर के इंद्र का नाम। २. अजमीढ़ के एक पुत्र का नाम। ३. शांति के एक पुत्र का नाम।

सुशांति[2]—संज्ञा स्त्री० पूर्णत: शांति [को०]।

सुशाक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अदरक। आर्द्रक। २. चौलाई का साग। तंडुलीय शाक। ३. चंचु। चेंच। ४. भिंडी।

सुशाकक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुशाक'।

सुशारद—संज्ञा पुं० [सं०] १. शालंकायन गोत्र के एक वैदिक आचार्य का नाम। २. शिव का एक नाम (को०)।

सुशासन—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम शासन। अच्छी राज्यव्यवस्था।

सुशासित—वि० [सं०] १. जिसका अच्छी तरह शासन किया गया हो। २. अच्छी तरह नियंत्रित।

सुशास्य—वि० [सं०] सहज में शासित या नियंत्रित होने योग्य।

सुशिबिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सुशिम्बिका] एक प्रकार की शिंबी।

सुशिक्षित—वि० [सं०] १. उत्तम रूप से शिक्षित। अच्छी तरह शिक्षा पाया हुआ। जिसने विशेष रूप से शिक्षा पाई हो। २. जो अच्छी तरह से सधाया हुआ हो। प्रशिक्षित। जैसे, घोड़ा आदि।

सुशिख[1]—संज्ञा [सं०] अग्नि का एक नाम।

सुशिख[2]—वि० १. सुंदर शिखावाला। २. जिसकी शिखा या लौ सुंदर हो। जैसे, दीप [को०]।

सुशिखा—संज्ञा [सं०] १. मोर की चोटी। मयूरशिखा। २. मुर्गे की कलँगी। कुक्कटकेश।

सुशिर[1]—वि० [सं० सुशिरस्] सुंदर शिरवाला। जिसका सिर सुंदर हो।

सुशिर[2]—संज्ञा पुं० [सं० सुषिर] वह बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता हो। जैसे,—वंशी आदि। (संगीत)। दे० 'सुषिर'।

सुशिष्ट[1]—वि० [सं०] अच्छी तरह शासित [को०]।

सुशिष्ट[2]—संज्ञा पुं० विश्वसनीय अमात्य। वह मंत्री जिसपर भरोसा किया जाय [को०]।

सुशीत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीला चंदन। हरिचंदन। २. पाकर। ह्रस्व प्लक्षवृक्ष। ३. जलबेंत। जलवेतस। ४. शीतलता। शैत्य (को०)।

सुशीत[2]—वि० अत्यंत शीतल। बहुत ठंढा।

सुशीतल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. गंधतृण। २. सफेद चंदन। ३. नागदमनी। नागदवन। ४. शीतलता (को०)।

सुशीतल[2]—वि० अत्यंत शीतल। बहुत ठंढा।

सुशीतला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खीरा। त्रपुष। २. ककड़ी। कर्कटिका।

सुशीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेवती। शतपत्री। २. स्थलकमल।

सुशीम—संज्ञा पुं०, वि० [सं०] दे० 'सुषीम'।

सुशील[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुशीला] १. उत्तम शीलवाला। २. उत्तम स्वभाववाला। शीलवान्। ३. सच्चरित्र। साधु। ४. विनीत। नम्र। ५. सरल। सीधा।

सुशील[2]—संज्ञा पुं० सुंदर शील। सत्स्वभाव।

सुशीलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुशील का भाव। सुशीलत्व। २. सच्चरित्रता। ३. नम्रता।

सुशीलत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सुशील का भाव। सुशीलता।

सुशीला[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक का नाम। २. राधा की एक अनुचरी का नाम। ३. यम की पत्नी का नाम। ४. सुदामा की पत्नी का नाम।

सुशीला[2]—वि० स्त्री० दे० 'सुशील'।

सुशीली—वि० [सं० सुशीलिन्] दे० 'सुशील'।

सुशीविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गेंठी। वाराहीकंद।

सुशृंग[1]—वि० [सं०] सुंदर श्रृंगयुक्त। सुंदर सींगोंवाला।

सुशृंग[2]—संज्ञा पुं० श्रृंगी ऋषि। उ०—कस्यपसुन सुविभांडक ह्वैहैं सिष्य सुश्रृंग। ब्रह्मचरजरत बनहि मैं बनचारिन के ढंग।—पद्माकर (शब्द०)।

सुश्रृंगार—वि० [सं० सुश्रृङ्गार] अच्छी तरह भूषित या सज्जित।

सुश्रृत—वि० [सं०] अत्यंत तप्त। बहुत गरम।

सुशेव—वि० [सं०] प्रसन्नता से परिपूर्ण।

सुशोण—वि० [सं०] गहरा लाल [को०]।

सुशोभन—वि० [सं०] १. अत्यंत शोभायुक्त। दिव्य। २. जो देखने में बहुत भला मालूम हो। बहुत सुंदर। प्रियदर्शन।

सुशोभित—वि० [सं०] उत्तम रूप से शोभित। अत्यंत शोभायमान।

सुश्रम—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म के एक पुत्र का नाम।

सुश्रवा[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुश्रवस्] १. एक प्रजापति का नाम। २. एक ऋषि का नाम। ३. नागासुर का नाम।

सुश्रवा[2]—वि० १. उत्तम हवि से युक्त। २. प्रसिद्ध। कीर्तिमान। ३. जो हर्षपूर्वक श्रवण करता हो। ४. दयायुक्त (को०)।

सुश्रवा[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वैदर्भी का नाम जो जयत्सेन की पत्नी थी।

सुश्राव्य—वि० [सं०] जो सुनने में अच्छा जान पड़े।

सुश्री—वि० [सं०] १. बहुत सुंदर। शोभायुक्त। स्त्रियों के नाम के पूर्व आदरार्थ प्रयुक्त। सुशोभना स्त्री। (आधु० प्रयोग)। २. बहुत धनी। बड़ा अमीर।

सुश्रीक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] सलई। शल्लकी।

सुश्रीक[२]—वि० दे० 'सुश्री'।

सुश्रीका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शल्लकी वृक्ष [को०]।

सुश्रुत[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. आयुर्वेदीय चिकित्साशास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य।

विशेष—इनका रचा हुआ 'सुश्रुतसंहिता' नामक ग्रंथ बहुत मान्य समझा जाता है। गरुड़ पुराण में लिखा है कि ये विश्वामित्र के पुत्र थे और इन्होंने काशी के राजा दिवोदास से, जो धन्वंतरि के अवतार थे, शिक्षा पाई थी। आयुर्वेद के आचार्यों में इनका और इनके ग्रंथ का भी वही स्थान है, जो चरक और उनके ग्रंथ का।

२. सुश्रुत का रचा हुआ सुश्रुत संहितानामक ग्रंथ। ३. गोष्ठी श्राद्ध के अंत में ब्राह्मण से यह पूछना कि आप तृप्त हो गए न।

सुश्रुत[२]—वि० १. अच्छी तरह सुना हुआ। २. जिसे प्रसन्नतापूर्वक सुना गया हो। ३. प्रसिद्ध। मशहूर। ४. वेद में पारंगत (को०)।

सुश्रुतसंहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] आचार्य सुश्रुत का बनाया हुआ आयुर्वेद का एक प्राचीन, प्रसिद्ध और सर्वमान्य ग्रंथ।

सुश्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार धर्म के एक पुत्र का नाम।

सुश्रूखा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शुश्रूषा] दे० 'शुश्रूषा'।

सुश्रूषा—संज्ञा स्त्री० [सं० सुश्रूषा] दे० 'शुश्रूषा'।

सुश्रोणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरिवंश के अनुसार एक नदी का नाम।

सुश्रोणि[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।

सुश्रोणि[२]—वि० सुंदर नितंबवाली।

सुश्लिष्ट—वि० [सं०] १. अच्छे ढंग से संयोजित। सुस्पष्ट। २. दृढ़ता से संलग्न या जुड़ा हुआ। सटा हुआ।

सुश्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] १. घनिष्ठ या प्रगाढ़ संबंध। २. प्रगाढ़ आलिंगन [को०]।

सुश्लोक—वि० [सं०] १. पुण्यात्मा। पुण्यकीर्ति। २. ख्यात। सुप्रसिद्ध। मशहूर।

सुषंधि—संज्ञा पुं० [सं० सुषन्धि] १. रामायण के अनुसार मांधाता के एक पुत्र का नाम। २. पुराणानुसार प्रसुश्रुत के एक पुत्र का नाम।

सुष(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुख] दे० 'सुख'।

सुषद्मा—संज्ञा पुं० [सं० सुषद्मन्] एक ऋषि का नाम।

सुषम[१]—वि० [सं०] १. बहुत सुंदर। शोभायुक्त। २. सम। समान। ३. समझ में आने योग्य। बोधगम्य (को०)।

सुषम[२]—संज्ञा पुं० शुभ वर्ष [को०]।

सुषमदुःषमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैन मतानुसार कालचक्र के दो आरे।

सुषमन, सुषमना(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुषुम्ना] दे० 'सुषुम्ना'। उ०—(क) इंगला पिंगला सुषमना नारी। शून्य सहज में बसहिं मुरारी।—सूर (शब्द०)। (ख) गंधनाल द्विराह एक सम राखिए। चढ़ो सुषमना यार अभी रस चाखिए।—कबीर (शब्द०)।

सुषमनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुषुम्ना] दे० 'सुषुम्ना'। उ०—इंगला पिंगला सुषमनि नारी बंक नाल कै सुधि पावै।—कबीर (शब्द०)।

सुषमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परम शोभा। अत्यंत सुंदरता। २. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दस अक्षर रहते जिनमें तीसरा, चौथा, आठवाँ और नवाँ गुरु तथा अन्य अक्षर लघु होते हैं। ३. एक प्रकार का पौधा। ४. जैनों के अनुसार काल का एक नाम। ५. एक देवांगना (को०)।

सुषमाशाली—वि० [सं० सुषमाशालिन्] जिसमें बहुत अधिक शोभा या सुंदरता हो।

सुषमित—वि० [सं०] शोभायुक्त। सुषमायुक्त।

सुषवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. करेला। कारवेल्ल। २. क्षुद्रका वेल्ल। करेली। ३. जीरा। जीरक।

सुषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] काला जीरा [को०]।

सुषाढ़—संज्ञा पुं० [सं० सुषाढ] शिव जी का एक नाम।

सुषाना(पु)[१]—क्रि० अ० [हिं० सूखना] दे० 'सुखाना'। उ०—स्यामघन सींचिए तुलसी सालि सफल सुषाति।—तुलसी (शब्द०)।

सुषाना(पु)[२]—क्रि० स० शुष्क करना। सुखाना।

सुषारा(पु)—वि० [हिं० सुख] [वि० स्त्री० सुषारी] दे० 'सुखारा'। उ०—रावन वंश सहित संहारा। सुनत सकल जग भएउ सुषारा।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

सुषि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छिद्र। छेद। सूराख। बिल। २. नलिका। नली (को०)।

सुषिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] शीतलता। ठंढक।

सुषिक[२]—वि० शीतल। ठंढा।

सुषिक्त—वि० [सं०] सुसिक्त।

सुषिमंदि—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णुपुराण के अनुसार एक राजा का नाम।

सुषिम—संज्ञा पुं०, वि० [सं०] दे० 'सुषीम' [को०]।

सुषिर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस। २. बेत। ३. अग्नि। आग। ४. चूहा। ५. संगीत में वह यंत्र जो वायु के जोर से बजता हो। ६. छेद। सूराख। ७. वायुमंडल। ८. लौंग। लवंग। ९. काठ। लकड़ी। १०. वंशी आदि मुँह से फूँककर बजा जानेवाली बाजों में से निकलनेवाली ध्वनि।

सुषिर[२]--वि० १. छिद्रयुक्त। छेदवाला। २. पोला। सावकाश। ३. उच्चारण में मंद या विलंबित (को०)।

सुषिरच्छेद--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की वंशी।

सुषिरविवर--संज्ञा पुं० [सं०] बिल, विशेषकर साँप का बिल।

सुषित--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कलिका। विद्रुम लता। २. नदी।

सुषिलीका--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चिड़िया।

सुषीम[१]--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सर्प। २. चंद्रकांत मणि। ३. शैत्य। शीतलता (को०)।

सुषीम[२]--वि० १. शीतल। ठंढा। २. मनोरम। मनोज्ञ। सुंदर।

सुषुपु--वि० [सं० सुषुपुस्] सोने की इच्छा करनेवाला। निद्रातुर।

सुषुप्त[१]--वि० [सं०] गहरी नींद में सोया हुआ। घोर निद्रित।

सुषुप्त[२]--संज्ञा स्त्री० दे० 'सुषुप्ति'।

सुषुप्ति--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घोर निद्रा। गहरी नींद। २. अज्ञान। (वेदांत)। ३. पातंजलिदर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति।

विशेष--कहते हैं, इस अवस्था में जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है. परंतु उसे इस बात का ज्ञान नहीं होता कि मैंने ब्रह्म की प्राप्ति की है।

सुषुप्स--वि० [सं० सुषुप्सु] सोने की इच्छा करनेवाला। निद्रातुर।

सुषुप्सा--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शयन की अभिलाषा। सोने की इच्छा। २. तंद्रा। ऊँघ (को०)।

सुषुप्सु--वि० [सं०] दे० 'सुषुप्स'।

सुषुम्ण, सुषुम्न--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की सप्तरश्मियों में से एक का नाम।

सुषुम्णा, सुषुम्ना--संज्ञा स्त्री० [सं०] हठयोग और तंत्र के अनुसार शरीर के अंतर्गत तीन प्रधान नाड़ियों में से एक।

विशेष--दस नाड़ियों में इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना ये तीन प्रधान नाड़ियाँ मानी गई हैं। कहते हैं, इड़ा और पिंगला नाड़ियों के मध्य में सुषुम्ना है; अर्थात् नासिका के वाम भाग में इड़ा, दक्षिण भाग में पिंगला और मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में सुषुम्ना नाड़ी स्थित है। सुषुम्ना त्रिगुणमयी और चंद्र, सूर्य तथा अग्निस्वरूपिणी है।

३. वैद्यक के अनुसार चौदह प्रधान नाड़ियों में से एक जो नाभि के मध्य में स्थित है और जिससे अन्य सब नाड़ियाँ लिपटी हुई हैं।

सुषेण--संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु का एक नाम। २. एक गंधर्व का नाम। ३. एक यक्ष का नाम। ४. एक नागासुर का नाम। ५. दूसरे मनु के एक पुत्र का नाम। ६. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ७. शूरसेन के एक राजा का नाम। ८. परीक्षित के एक पुत्र का नाम। ९. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। १०. वसुदेव के एक पुत्र का नाम। ११. विश्वगर्भ के एक पुत्र का नाम। १२. शंबर के एक पुत्र का नाम। १३. एक वानर का नाम।

विशेष--रामायण आदि के अनुसार यह वरुण का पुत्र, बाली का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था। इसने राम रावण के युद्ध में रामचंद्र की विशेष सहायता की थी।

१४. करौंदा। करमर्दक। १५. बेंत। वेतस्।

सुषेणिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] काली निसोथ। कृष्ण त्रिवृता।

सुषेणी--संज्ञा स्त्री० [सं०] निसोथ। त्रिवृता।

सुषोपति(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० सुषुप्ति] दे० 'सुषुप्ति'। उ०--सूत्रातमा प्रकाशित भोपति। तस्य अवस्था आहि सुषोपति।--विश्राम (शब्द०)।

सुषोप्ति(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुषुप्ति'। उ०--जागृत नारी सुषोप्ति तुरिया, भौंर गोपा में घर छावै।--कबीर (शब्द०)।

सुषोमा--संज्ञा स्त्री० [सं०] भागवत के अनुसार एक नदी का नाम।

सुष्कंत--संज्ञा पुं० [सं० सुष्कन्त] पुराणानुसार धर्मनेत्र के एक पुत्र का नाम।

सुष्ट--संज्ञा पुं० [सं० दुष्ट का अनु०; सं० शिष्ट या सुष्ठु का विलोम] अच्छा। भला। दुष्ट का उलटा। जैसे,--बादशाह अपनी सेना लेकर सुष्ट अर्थात् तृणचर पशुओं की रक्षा के निमित्त दुष्ट अर्थात् मांसाहारी जीवों के नाश करने को चढ़ता था।--शिवप्रसाद (शब्द०)।

सुष्ठु[१]--अव्य० [सं०] १. अतिशय। अत्यंत। २. भली भाँति। अच्छी तरह। ३. यथायोग्य। ठीक ठीक।

सुष्ठु[२]--संज्ञा पुं० १. प्रशंसा। तारीफ। २. सत्य।

सुष्ठुता--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मंगल। कल्याण। भलाई। २. सौभाग्य। ३. सुंदरता। उ०--शब्दों की अनोखी सुष्ठुता द्वारा मन को चमत्कृत करने की शक्ति है।--निबंधमालादर्श (शब्द०)।

सुष्मंत--संज्ञा पुं० [सं० सुष्मन्त] दे० 'सुष्कंत'।

सुष्म--संज्ञा पुं० [सं०] रस्सी। रज्जु।

सुष्मना(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं०सुषुम्ना] दे० 'सुषुम्ना'। उ०--चंद सूरहिं चंद कै मग सुष्मनागत दीश। प्राणरोधन को करै जेहि हेत सर्व ऋषीश।--केशव (शब्द०)।

सुसकट[१]--वि० [सं० सुसङ्कट] १. दुर्बोध। जिसकी व्याख्या कठिन हो। २. सुयंत्रित। मजबूती से बंद किया हुआ [को०]।

सुसंकट[२]--संज्ञा पुं० १. दुष्कर कार्य। कठिन काम। २. बाधा। कठिनता।

सुसंकुल--संज्ञा पुं० [सं० सुसङ्कुल] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम।

सुसंक्षेप--संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सुसंग[१]--संज्ञा पुं० [सं० सु+हिं० संग] उत्तम संगति। सत्संग। अच्छी सोहबत।

सुसंग[२]--वि० [सं० सुसङ्ग] जो अत्यंत प्रिय हो। जिसके साथ बराबर संलग्न रहा जाय।

सुसंगत--वि० [सं० सुसङ्गत] उत्तम रूप से संगत। बहुत युक्तियुक्त। बहुत उचित।

सुसंगति—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + हिं० संगत या सं० सुसङ्गति] अच्छी संगत। अच्छी सोहबत सत्संग। साधुसंग।

सुसंगम—संज्ञा पुं० [सं० सुसङ्गम] १. उत्तम संगम या जमाव। २. उत्तम सभास्थल या मंडप [को०]।

सुसंगृहीत—वि० [सं० सुसङ्गृहीत] १. अच्छी तरह शासित या वशीभूत। जैसे, सुसंगृहीत राष्ट्र। २. जिसका सम्यक् रूप ग्रहण किया गया हो। ३. अच्छी तरह न्यस्त या रखा हुआ। ४. जिसका सम्यक् संक्षेप किया हुआ हो [को०]।

सुसंध—वि० [सं० सुसन्ध] अपने वचन का पक्का।

सुसंधि—संज्ञा पुं० [सं० सुसन्धि] दे० 'सुषंधि'।

सुसंगत—वि० [सं० सुसङ्गत] १. उपयुक्त। उचित। बाजिब। २. जिसे अच्छी तरह लक्ष्य पर रखा गया हो।

सुसंपत्, सुसंपद्—संज्ञा स्त्री० [सं० सुसम्पत्, सुसम्पद्] अतिशय संपन्नता। धनाढ्यता [को०]।

सुसंपन्न—वि० [सं० सुसम्पन्न] खूब धनाढ्य। संपत्तिशाली [को०]।

सुसंभाव्य[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुसम्भाव्य] रैवत मनु के एक पुत्र का नाम।

सुसंभाव्य[2]—वि० जो अधिक संभाव्य या होनेवाला हो [को०]।

सुसंस्कृत—वि० [सं०] १. उत्तम संस्कारवाला। सभ्य। शिष्ट। २. घृत आदि के साथ सुपक्व। ३. भली प्रकार शुद्ध किया हुआ [को०]।

सुस(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वसृ] दे० 'सुसा'। उ०—परी कामवश ताकी सुस जाके मुंड दश कीने हाव भाव चित्त चाव एक बंद सों। दीप सुत नैन दै सुनैनन चलाय रही जानकी निहार मन रही न आनंद सों।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सुसकना—क्रि० अ० [हिं० सिसकना] दे० 'सिसकना'। उ०—(क) पालने झूलो मेरे लाल पियारे। सुसकनि की हौं बलिबलि करौ तिल तिल हठ न करहु जे दुलारे।—सूर (शब्द०)। (ख) कपि पति काम सँवार, बाली अध सुसकत परचो। तब ताही की नार रघुपति सों बिनती करे।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। (ग) अति कठोर दोउ काल से भरम्यो अति झझक्यो। जागि परचो तहँ कोउ नहीं जिय ही जिय सुसक्यो। —सूर (शब्द०)। (घ) घूँघट मैं सुसकै भरै साँसै ससै मुख नाह के सौहै न खोलै। —सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुसकल्यो†—संज्ञा पुं० [सं० शश] खरगोश। खरहा। शशा (डिं०)।

सुसका†—संज्ञा पुं० [अनु०] हुक्का। (सुनार)।

सुसज्जित—वि० [सं०] भली भाँति सजा या सजाया हुआ। भली भाँति शृंगार किया हुआ। शोभायमान।

सुसताना—क्रि० अ० [फ़ा० सुस्त + हिं० आना (प्रत्य०)] श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। विश्राम करना। आराम करना। जैसे,—इतनी दूर से आते आते थक गए हैं; जरा सुसता लें, तो आगे चलें।

सुसती—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुस्ती] दे० 'सुस्ती'।

सुसत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] कालिका पुराण के अनुसार राजा जनक की एक पत्नी का नाम।

सुसत्व—वि० [सं० सुसत्त्व] १. दृढ़। मजबूत। २. शूर। वीर। बहादुर [को०]।

सुसन, सुसना—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का साग। विच्छलक [को०]।

सुसनी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सुसना'।

सुसबद(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुशब्द] कीर्ति। यश। (डिं०)।

सुसभेय—वि० [सं०] उत्तम सभासद्। सुसभ्य। सभाचतुर [को०]।

सुसम—वि० [सं०] १. समतल। भली प्रकार चौरस। २. सुचिक्कण। खूब चिकना। ३. आकार प्रकार में शुद्ध। सुडौल [को०]।

सुसमय—संज्ञा पुं० [सं०] वे दिन जिनमें अकाल न हो। अच्छा समय। सुकाल। सुभिक्ष।

सुसमा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० उष्मा] अग्नि। (डिं०)।

सुसमा(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुषमा] दे० 'सुषमा'।

सुसमाहित—वि० [सं०] १. अच्छे ढंग से एकत्र किया हुआ। अच्छी तरह भूषित। २. अत्यंत सुंदर। ३. पूरी तरह भारयुक्त अथवा पूरित। ४. अत्यंत एकनिष्ठ या अवहित [को०]।

सुसर—संज्ञा पुं० [सं० श्वसुर] दे० 'ससुर'। उ०—वधू ने स्वर्गवासी सुसर की दोनों रानियों की समान भक्ति से वंदना की। —लक्ष्मण सिंह (शब्द०)।

सुसरण—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सुसरा संज्ञा पुं० [सं० श्वसुर] दे० 'ससुर'। उ०—कोई कोई दुष्ट राजपूत अपनी लड़कियों को मार डालते हैं कि जिसमें किसी का सुसरा न बनना पड़े।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्रायः गाली में अधिक होता है। जैसे,—(क) सुसरे ने कम तौला है। (ख) सुसरा कहीं का।

सुसरार—संज्ञा स्त्री० [हिं० ससुराल] दे० 'ससुराल'।

सुसरारि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० ससुराल] दे० 'ससुराल'।

ससुराल—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वसुरालय] ससुर का घर। ससुराल।

सुसरित—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + सरित] नदियों में श्रेष्ठ, गंगा। उ०—गे मुनि अवध बिलोकि सुसरित नहाएउ। सतानंद दस कोटि नाम फल पाएउ।—तुलसी (शब्द०)।

सुसरी[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० ससुर] दे० 'ससुरी'।

सुसरी[2]—संज्ञा स्त्री० [अनु०] दे० 'सुरसुराहट', 'सुरसुरी'।

सुसर्तु—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋग्वेद के अनुसार एक नदी का नाम।

सुसर्मा—संज्ञा पुं० [सं० सुशर्मन्] दे० 'सुशर्मा'।

सुसह[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

सुसह[2]—वि० १. सहज में उठाने या सहने योग्य। जो सहज में उठाया या सहन किया जा सके। २. जो सहन कर सके। सहनशील [को०]।

सुसहाय—वि० [सं०] जिसके अच्छे साथी या सहायक हों [को०]।

सुसा⑤¹—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वसृ] बहन। भगिनी। स्वसा। उ०—उ०—पंचवटी सुंदर लखि रामा। मोहत भई सुपनखा वामा। रावन सुसा राम ते भाषा। पुनि सीता भोजन अभिलाषा।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सुसा²—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी। उ०—हनत सुसा वुज्जर उतंग।—सूदन (शब्द०)।

सुसाइटी—संज्ञा स्त्री० [ग्रं० सोसाइटी] दे० 'सोसाइटी'।

सुसाधन—वि० [सं०] जो सरलता से साधा जा सके या प्रमाणित हो सके [को०]।

सुसाधित—वि० [सं०] १. अच्छी तरह साधा हुआ या शिक्षित। २. सम्यक् पाचित। पकाया या सिद्ध किया हुआ।

सुसाध्य—वि० [सं०] [संज्ञा सुसाधन] जिसका सहज में साधन किया जा सके। जो सहज में किया जा सके। सुखसाध्य। सहजसाध्य। २. सरलता से नियंत्रित करने योग्य। ३. सरल। आसान। साधारण।

सुसाना⑤—क्रि० अ० [हिं० साँस] सिसकना। उ०—रामहिं राज्य विदेश बसे सुत सोच कियो यह बात न चंगी। एक उपाय करों सु फिरे मत ह्वै बर बेलेउ माँग सुरंगी। भूषण डारन आँचर लेत है जात सुसात सुपाइन नंगी। दौर चली पिय पै बर माँगत मानहु काल कराल भुजंगी।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सुसामुझि⑤—वि० [सं० सु + हिं० समझ] अच्छी समझवाला। सुबुद्धि। समझदार। उ०—नाम रूप दुइ ईस उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी।—तुलसी (शब्द०)।

सुसायटी—संज्ञा स्त्री० [ग्रं० सोसायटी] दे० 'सोसाइटी'।

सुसार¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. नीलम। इंद्रनील मणि। २. लाल खैर। रक्त खदिर वृक्ष। ३. उत्तम सार या तत्व (को०)। ४. क्षमता। सामर्थ्य (को०)। ५. सारयुक्त वस्तुएँ। पक्वान्न आदि। उ०—पठई जनक अनेक सुसारा।—मानस, १।३३३।

सुसार²—वि० अत्यंत सारयुक्त [को०]।

सुसारना†—क्रि० स० [हिं० सु + सारना] अच्छी तरह समझाना या सारना।

सुसारवत्¹—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्लौर। स्फटिक।

सुसारवत्²—वि० उत्तम सार या तत्व से युक्त [को०]।

सुसिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चीनी। शर्करा। २. कंकड़। कँकरी। बजरी। ३. अच्छी रेत या बालू [को०]।

सुसिक्त—वि० [सं०] अच्छी तरह सींचा हुआ।

सुसिद्ध—वि० [सं०] १. जिसे उत्तम सिद्धि प्राप्त हो। २. भली प्रकार सिद्ध किया हुआ। पका या पकाया हुआ [को०]।

सुसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक प्रकार का अलंकार। जहाँ परिश्रम एक मनुष्य करता है, पर उसका फल दूसरा ही भोगता है, वहाँ यह अलंकार माना जाता है। उ०—साधि साधि औरै मरैं औरैं भोगैं सिद्ध। तासों कहत सुसिद्धि सब जे हैं बुद्धि समृद्ध।—केशव (शब्द०)।

सुसिर—संज्ञा पुं० [सं०] दाँत का एक रोग।

विशेष—वाग्भट के अनुसार यह रोग पित्त और रक्त के कुपित होने से होता है। इसमें दाँतों की जड़ फूल जाती है, उसमें बहुत दर्द होता है, खून निकलता है और मांस कटने या गिरने लगते हैं

सुसीतलताई⑤—संज्ञा स्त्री० [सं० सुशीतलता] दे० 'सुशीतलता'।

सुसीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवती। शतपत्री।

सुसीम¹—वि० [सं० सुसम] शीतल। ठंढा। (डिं०)।

सुसीम²—वि० [सं०] जिसका सीमंत या सीम शोभन हो।

सुसीम³—संज्ञा पुं० विंदुसार का एक पुत्र [को०]।

सुसीमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जैनों के अनुसार छठे अर्हत् की माता का नाम। २. उत्तम सीमा। सुंदर सीमा (को०)।

सुसुकना†—क्रि० अ० [हिं० सिसकना] दे० 'सिसकना'।

सुसुड़ी—संज्ञा स्त्री० [सुर सुर से अनु०] एक प्रकार का कीड़ा जो जौ में लगता है और उसके सार भाग को खा जाता है। सुरसुरी।

सुसुनिया—संज्ञा पुं० [देश०] एक पहाड़ जो बंगाल प्रदेश के बाँकुड़ा जिले में है।

विशेष—यहाँ चौथी शताब्दी का एक शिलालेख है जिससे जाना जाता है कि पुष्कर के राजा चंद्रवर्मा ने इस पहाड़ पर चक्रस्वामी की स्थापना की थी।

सुसुपी⑤—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुषुप्ति] दे० 'सुषुप्ति'। उ०—सुख दुख हैं मन के धरम नहीं आतमा माँहि। ज्यौं सुसुपी मैं द्वंददुख मन बिन भासैं नाहिं।—दीनदयाल (शब्द०)।

सुसुम⑤—वि० [सं० सुषमा] सुंदर। उ०—जहँ पिय सुसुम कुसुम लै सुकर गुही है बेनी।—नंद० ग्रं०, पृ० १६।

सुसुरप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] चमेली। जातीपुष्प।

सुसूक्ष्म¹—संज्ञा पुं० [सं०] परमाणु।

सुसूक्ष्म²—वि० अत्यंत सूक्ष्म। बहुत बारीक या छोटा। २. अत्यंत कोमल। अतीव मृदु (को०)। ३. तेज। तीव्र। तीक्ष्ण। प्रखर। जैसे सूक्ष्म बुद्धि (को०)।

सुसूक्ष्मपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशमांसी। जटामांसी। बालछड़।

सुसूक्ष्मेश—संज्ञा पुं० [सं०] (परमाणुओं के प्रभु या स्वामी) विष्णु का एक नाम।

सुसृत—वि० [सं०] खूब तप्त।

सुसेन—संज्ञा पुं० [सं० सुषेण] दे० 'सुषेन'।

सुसेव्य—वि० [सं०] १. अच्छी तरह सेवा करने योग्य। २. सरलता से गमन करने योग्य। जैसे, पथ, मार्ग [को०]।

सुसैंधवी—संज्ञा स्त्री० [सं० सुसैन्धवी] सिंध देश की अच्छी घोड़ी।

सुसो⑤—संज्ञा पुं० [सं० शश] खरगोश। खरहा। (डिं०)।

सुसौभग—संज्ञा पुं० [सं०] दांपत्य सुख। पति पत्नी संबंधी सुख।

सुस्कंदन—संज्ञा पुं० [सं० सुस्कन्दन] बर्बर वृक्ष।

सुस्कंध—वि० [सं० सुस्कन्ध] सुंदर स्कंध या तनेवाला।

सुस्कंधमार—संज्ञा पुं० [सं० सुस्कन्धमार] बौद्धों के अनुसार एक मार का नाम।

सुस्त—वि० [फ़ा०] १. जिसके शरीर में बल न हो। दुर्बल। कमजोर। २. चिंता या लज्जा आदि के कारण निस्तेज। उदास। हतप्रभ। जैसे,—उस दिन की बात का जिक्र आते ही वह सुस्त हो गया। ३. जिसका वेग, प्रबलता या गति आदि कम हो, अथवा घट गई हो।

क्रि० प्र०—पड़ना।—होना।

४. जिसे कोई काम करने में आवश्यकता से अधिक समय लगता हो। जिसमें तत्परता का अभाव हो। आलसी। जैसे,—तुम्हारा नौकर बहुत सुस्त है। ५. जिसकी गति मंद हो। धीमी चालवाला। जैसे,—(क) छोटी लाइन की गाड़ियाँ बहुत सुस्त होती हैं। (ख) तुम्हारी घड़ी कुछ सुस्त जान पड़ती है। ६. जिसकी बुद्धि तीव्र न हो। जो जल्दी कोई बात न समझता हो। जैसे,—यह लड़का दरजे भर में सबसे ज्यादा सुस्त है। ७. अस्वस्थ। रोगी। बीमार (लश०)।

सुस्तक़दम—वि० [फ़ा० सुस्तक़दम] शनैः शनैः चलनेवाला। मंदगति।

सुस्तदिमाग—वि० [फ़ा० सुस्तदिमाग़] कमअक्ल। नादान।

सुस्तना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदर छातियोंवाली स्त्री। सुंदर स्तनों से युक्त स्त्री। २. वह स्त्री जो पहली बार रजस्वला हुई हो।

सुस्तनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुस्तना'।

सुस्तपाँव—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुस्त + हिं० पाँव] स्लोथ नामक जंतु का एक भेद।

विशेष—इन जंतुओं के कटीले दाँत नहीं होते, पर जो कुचलनेवाले दाँत होते हैं; वे छोटे छोटे और कुंद होते हैं। ऊपर और नीचे के जबड़ों में आठ आठ डाढ़ें होती हैं; पर उनमें ठोस हड्डी और दाँतों की जड़ नहीं होती।

सुस्तराय—वि० [फ़ा०] अपरिपक्व विचारोंवाला। अल्पबुद्धि [को०]।

सुस्तरीछ—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुस्त + हिं० रीछ] एक प्रकार का रीछ जो पहाड़ों पर पाया जाता है।

विशेष—इसका शरीर खुरखुरा और बेडौल होता है। इसके हाथों में बहुत शक्ति होती है जिससे यह अपना आहार इकट्ठा कर सकता है। इसके पंजे लंबे और मजबूत होते हैं, जिससे यह अपने रहने के लिये माँद भी खोद लेता है।

सुस्ताईⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुस्ताना] सुस्ताने की क्रिया या भाव। दे० 'सुस्ती'। उ०—पंथी कहाँ कहाँ सुस्ताई। पंथ चलै तब पंथ सेराई।—जायसी (शब्द०)।

सुस्ताना—क्रि० अ० [फ़ा० सुस्त + आना (प्रत्य०)] दे० 'सुसताना'।

सुस्ती—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुस्त] १. सुस्त होने का भाव। २. आलस्य। काहिली। २. शिथिलता। ढिलाई। ३. कामशक्ति की मंदता (को०)। ४. अस्फूर्ति। स्फूर्ति का अभाव। दीर्घसूत्रता (को०)। ५. बीमारी (लश०)।

सुस्तुत—संज्ञा पुं० [सं०] सुपार्श्व के एक पुत्र का नाम।

सुस्तैनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्वस्त्ययन] दे० 'स्वस्त्ययन'। उ०—पढ़हि विप्र सुस्तैन चैन भरि मंगल साजु सँवारे। कौशल्या कैकेयी सुमित्रा भूपति सँग बैठारे। बैठे भूपति कनकासन पै करन लगे कुल रीती। गौरि गणेश पूजि पृथिवीपति करी श्राद्ध अस नीती।—रघुराज (शब्द०)।

सुस्थ—वि० [सं०] १. भला चंगा। नीरोग। स्वस्थ। तंदुरुस्त। २. सुखी। प्रसन्न। खुश। ३. भली भाँति स्थित। सुस्थित। सुस्थिर। ४. सुंदर।

यौ०—सुस्थकल्प = स्वस्थप्राय। प्रायः स्वस्थ। सुस्थचित्त। सुस्थमानस। सुस्थहृदय।

सुस्थचित्त—वि० [सं०] जिसका चित्त सुखी या प्रसन्न हो।

सुस्थता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुस्थ होने का भाव या धर्म। २. नीरोगता। आरोग्य। स्वास्थ्य। तंदुरुस्ती। ३. कुशलक्षेम। ४. प्रसन्नता। आनंद।

सुस्थत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुस्थता'।

सुस्थमानस—वि० [सं०] दे० 'सुस्थचित्त'।

सुस्थल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

सुस्थावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में एक प्रकार की रागिनी का नाम।

सुस्थित[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह वास्तु या भवन जिसके चारों ओर वीथिका या मार्ग हो। २. घोड़े का एक ग्रह जिससे ग्रस्त होने पर वह बराबर हिनहिनाया और अपने आपको देखा करता है। ३. एक जैनाचार्य का नाम।

सुस्थित[2]—वि० [वि० स्त्री० सुस्थिता] १. उत्तम रूप से स्थित। दृढ़। अविचल। २. स्वस्थ। ३. भाग्यवान्। सुखी। प्रसन्न।

यौ०—सुस्थितमना = सुखी। प्रसन्नहृदय। संतुष्ट।

सुस्थितत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुस्थित होने का भाव। २. सुख। प्रसन्नता। ३. निवृत्ति।

सुस्थितम्मन्य—वि० [सं०] अपने को सुस्थित, स्वस्थ या सुखी अनुभव करनेवाला।

सुस्थिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्तम स्थिति। अच्छी अवस्था। २. मंगल। कुशलक्षेम। ३. स्वस्थता। स्वस्थ होने का भाव (को०)। ४. आनंद। प्रसन्नता।

सुस्थिर—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुस्थिरा] अत्यंत स्थिर या दृढ़। अविचल।

यौ०—सुस्थिरयौवन = जिसका यौवन स्थिर रहे।

सुस्थिरम्मन्य—वि० [सं०] अपने को सुस्थिर या सुदृढ़ समझनेवाला [को०]।

सुस्थिरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रक्तवाहिनी नस। लाल रग।

सुस्नपु—संज्ञा पुं० [सं०] यजमान [को०]।

सुस्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] खेसारी। त्रिपुट।

सुस्नात—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने यज्ञ के उपरांत स्नान किया हो २. वह जिसने भली भाँति स्नान किया हो [को०]।

सुस्निग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता का नाम।

सुस्पर्श—वि० [सं०] १. जिसका स्पर्श सुखद हो। २. नरम। मृदु। कोमल [को०]।

सुस्फीत—वि० [सं०] १. जो सम्यक् रूप से स्फीत हो। २. खूब उन्नति करनेवाला [को०]।

सुस्मित—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्त्री० सुस्मिता] हँसमुख। हँसोड़।

सुस्मिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मधुर हासयुक्त महिला। प्रसन्न वदनवाली स्त्री [को०]।

सुस्रग्धर—वि० [सं०] सुंदर माला धारण करनेवाला [को०]।

सुस्रोता—संज्ञा स्त्री० [सं० सुस्रोतस्] हरिवंश के अनुसार एक नदी का नाम।

सुस्वध—संज्ञा पुं० [सं०] पितरों की एक श्रेणी या वर्ग।

सुस्वधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कल्याण। मंगल। २. सौभाग्य। खुशकिस्मती।

सुस्वन¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. शंख। २. सुंदर ध्वनि।

सुस्वन²—वि० १. उत्तम शब्द या ध्वनि से युक्त। २. बहुत ऊँचा। बुलंद। ३. सुंदर। ४. सुस्वर।

सुस्वप्न—संज्ञा पुं० [सं०] १. शुभ स्वप्न। अच्छा सपना। २. शिव जी का एक नाम।

सुस्वर¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुस्वरा] सुंदर या उत्तम स्वरयुक्त। जिसका सुर या कंठध्वनि मधुर हो। सुकंठ। सुरीला। २. अत्यंत ऊँचा या तीक्ष्ण। बुलंद। घोर (ध्वनि)।

सुस्वर²—संज्ञा पुं० १. सुंदर या उत्तम स्वर। २. गरुड़ के एक पुत्र का नाम। ३. शंख। ४. जैनों के अनुसार वह कर्म जिससे मनुष्य का स्वर मधुर और सुरीला होता है।

सुस्वरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुस्वर का भाव या धर्म। २. वंशी के पाँच गुणों में से एक।

सुस्वरयंत्रक—संज्ञा पुं० [सं० सुस्वरयन्त्रक] एक प्रकार का मधुर स्वरयुक्त तंत्रवाद्य [को०]।

सुस्वांत—वि० [सं० सुस्वान्त] अच्छे अंतःकरणवाला। प्रसन्नचित्त।

सुस्वाद—वि० [सं०] दे० 'सुस्वादु'।

सुस्वादु¹—वि० [सं०] अत्यंत स्वादयुक्त। बहुत स्वादिष्ट। बहुत जायकेदार। खुशजायका।

सुस्वादु²—संज्ञा पुं० अच्छा जायका या स्वाद।

सुस्वाप—संज्ञा पुं० [सं०] गहरी नींद [को०]।

सुस्विन्न—वि० [सं०] १. अच्छी तरह उबाला या पकाया हुआ। २. अच्छी तरह सिक्त या तर [को०]।

सुहंगⓅ—वि० [हिं० महँगा का अनु०] कम मूल्य का। सस्ता। महँगा का उलटा।

सुहंगमⓅ—वि० [सं० सुगम] सहज। आसान।

सुहँगा—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। जो महँगा न हो। उ०—मुलतानी धर मन बसी सुहँगा नइ सेलार। —ढोला०, दू० २२६।

सुहटाⓅ—वि० [हिं० सुहावना; तुल० सुघटित] [वि० स्त्री० सुहटी] सुहावना। सुंदर। उ०—सुनु ए कपटी दशकंध हठी दोउ राम रटी न कछूक घटी। हर धूरजटी कमठी खपटी सम तारे रटी जनवाचकटी। न ठटी रतिनाथ छटी तिनको नित नाचत मुक्त नटी सुहटी।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सुहड़—संज्ञा पुं० [सं० सुभट, प्रा० सुहड] सुभट। योद्धा। शूरवीर। (डिं०)।

सुहनीⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहनी] दे० 'सोहनी'।

सुहनु¹—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

सुहनु²—वि० जिसकी ठुड्डी सुंदर या सुडौल हो [को०]।

सुहबत—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सोहबत'।

सुहबती—वि० [अ० सुहबत] मेलजोल या दोस्ती रखनेवाला। साथ उठने बैठनेवाला।

सुहर—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम।

सुहराना—क्रि० स० [हिं० सहलाना] दे० 'सहलाना'।

सुहराब—संज्ञा पुं० [फ़ा०] ईरान का एक प्रसिद्ध वीर जो अपने पिता रुस्तम के हाथों मारा गया।

सुहलⓅ**¹**—संज्ञा पुं० [अ० सुहैल] एक तारा।

सुहल²—वि० [सं०] अच्छे हलवाला।

सुहव—संज्ञा पुं० [हिं० सूहा] दे० 'सूहा' (राग)। उ०—सारंग गुंड मलार सोरठ सुहव सुघरनि बाजहीं। बहु भाँति तान तरंग सुनि गंधर्व किन्नर लाजहीं।—तुलसी (शब्द०)।

सुहवि¹—संज्ञा पुं० [सं० सुहविस्] १. एक आंगिरस का नाम। २. भुमन्यु के एक पुत्र का नाम।

सुहवि²—वि० सुंदर हवि देनेवाला। धार्मिक [को०]।

सुहवीⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सूहा' (राग)। उ०—राग रागी साँचि मिलाई गावैं सुघर मलार। सुहवी सारंग टोड़ी अरु भैरवी केदार।—सूर (शब्द०)।

सुहसानन—वि० [सं०] हँसमुख। विहसितवदन [को०]।

सुहस्त¹—संज्ञा पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुहस्त²—वि० [वि० स्त्री० सुहस्ता] १. सुंदर हाथोंवाला। २. कार्य में कुशल हाथोंवाला।

सुहस्ती—संज्ञा पुं० [सं० सुहस्तिन्] एक जैन आचार्य का नाम।

सुहस्त्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

सुहस्त्य²—वि० दे० 'सुहस्त²' [को०]।

सुहा—संज्ञा पुं० [हिं० सुआ] [स्त्री० सुही] लाल नामक पक्षी।

सुहाग¹—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य] १. स्त्री की सधवा रहने की अवस्था। अहिवात। सौभाग्य।

मुहा०—सुहाग उजड़ना = पति की मृत्यु होना। बेवा होना। सुहाग उतरना = (१) दे० 'सुहाग उजड़ना'। (२) पति की मृत्यु पर सधवा स्त्री के सौभाग्यचिह्न सिंदूर, आभूषण आदि का उतारा जाना। सुहाग मनाना = अखंड भाग्य की कामना करना। पति-सुख के अखंड रहने के लिये कामना करना। सुहाग भरना = माँग भरना।

२. वह वस्त्र जो वर विवाह के समय पहनता है। जामा। ३. मंगल-गीत जो वरपक्ष की स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं। ४. वे आभूषण, वस्त्र आदि जो सौभाग्यवती स्त्रियाँ पहनती हैं। ५. एक प्रकार का इत्र। ६. प्यार भरी बातें।

यौ०—सुहाग डला = वह डलिया जिसमें विवाह के समय की आवश्यक सामग्री जैसे,—रोली, मेंहदी, नारा आदि रखकर वरपक्ष की ओर से कन्या के घर जाता है। सुहाग घोड़ी = विवाह के समय दूल्हे के घर पर गाए जानेवाले गीत। सुहाग पिटरिया, सुहाग पिटारा, सुहाग पिटारी = वह पेटी जिसमें गहने आदि तथा सोहाग की अन्य सामग्री विवाह के समय कन्या के लिये वरपक्ष से भेजी जाती है। सुहागपुड़ा या पुड़िया = एक प्रकार की कागज की पुड़िया जिसमें मांगलिक वस्तुएँ रखकर वरपक्ष की ओर से दी जाती हैं।

सुहाग[2]—संज्ञा पुं० [हिं० सुहागा] दे० 'सुहागा'।

सुहागन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग] दे० 'सुहागिन'।

सुहागा[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुभग] एक प्रकार का क्षार जो गरम गंधकी स्रोतों से निकलता है। कनकक्षार। टंकण।

विशेष—यह तिब्बत, लद्दाख और कश्मीर में बहुत मिलता है। यह छींट छापने, सोना गलाने तथा ओषधि के काम में आता है। इसे घाव पर छिड़कने से घाव भर जाता है। मीना इसी का किया जाता है और चीनी के बर्तनों पर इसी से चमक दी जाती है। वैद्यक के अनुसार यह कटु, उष्ण तथा कफ, विष, खाँसी और श्वास को हरनेवाला है।

पर्या०—लोहद्रावी। टंकण। सुभग। स्वर्णपाचक। रसशोधन। कनकक्षार आदि।

सुहागा†[2]—संज्ञा पुं० [सं० समभाग] १. हेंगा। २. दे० 'सोहागा'।

सुहागिन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग + इन (प्रत्य०)] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा स्त्री। सौभाग्यवती स्त्री। उ०—(क) मान कियो सपने मैं सुहागिन भौंहैं चढ़ी मतिराम रिसौंहैं।—मतिराम (शब्द०)। (ख) तब मुरली नँदलाल पै भई सुहागिन आइ।—रसनिधि (शब्द०)।

सुहागिनि, सुहागिनी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग + इनी (प्रत्य०)] दे० 'सुहागिन'। उ०—जाय सुहागिनी बसति जो अपने पीहर धाम। लोग बुरी शंका करैं यदपि सती हू बाम।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

सुहागिलⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग + इल (प्रत्य०)] दे० 'सुहागिन'। उ०—तोसों दुरावति हौं न कछू जिहि ते न सुहागिल सौति कहावै।—व्यंगार्थकौमुदी (शब्द०)।

सुहागी—वि० [हिं० सुहाग] सौभाग्यशील। भाग्यशाली।

सुहाता—वि० [हिं० सहना] जो सहा जा सके। सहने योग्य। सह्य। उ०—वही (वायु) मध्याह्नकालीन सूर्य की तीक्ष्ण तपन को सुहाता करती है।—गोल विनोद (शब्द०)। (ख) तेल को तपाकर सुहाता सुहाता कान में डालो।—नूतनामृतसागर (शब्द०)।

सुहान—संज्ञा पुं० [सं० शोभन] १. वैश्यों की एक जाति। २. दे० 'सोहाल'।

सुहाना[1]—क्रि० अ० [सं० शोभन] १. शोभायमान होना। शोभा देना। उ०—(क) शंकर शैल शिलातल मध्य किधौं शुक की अवली फिरि आई। नारद बुद्धि विशारद दीप किधौं तुलसीदल माल सुहाई।—केशव (शब्द०)। (ख) यज्ञ नाम हरि तब चलि आए। कोटि अर्क सम तेज सुहाए।—गि० दास (शब्द०)। (ग) कामदेव कहँ पूजती ऐसी रही सुहाय। नव पल्लव युत पेड़ जनु लता रही लपटाय।—बालमुकुंद गुप्त (शब्द०)। २. अच्छा लगना। भला मालूम होना। उ०—(क) भयो उदास सुहात न कछु ये छन सोवत छन जागे।—सूर (शब्द०)। (ख) फूली लता द्रुम कुंज सुहान लगे।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुहाना[2]—वि० [वि० स्त्री० सुहानी] दे० 'सुहावना'। उ०—(क) सारी पृथ्वी इस वसंत की वायु से कैसी सुहानी हो रही है।—हरिश्चंद्र (शब्द०)। (ख) सौतिन दियो सुहाग ललन हू आजु सयानी। जामिनि कामिनि स्याम काम की समै सुहानी।—व्यास (शब्द०)।

सुहायाⓅ—वि० [हिं० सुहाना] [वि० स्त्री० सुहाई] जो देखने में भला जान पड़ता हो। सुहावना। सुंदर। उ०—(क) सबै सुहाये ही लगैं बसे सुहाये ठाम। गोरे मुँह बैंदी लसे अरुन पीत सित स्याम।—बिहारी (शब्द०)। (ख) यमुना पुलिन मल्लिका मनोहर शरद सुहाई यामिनि। सुंदर शशि गुण रूप राग निधि अंग अंग अभिरामिनि।—सूर (शब्द०)। (ग) भयहु बतावत राह सुहाई। तब तिहि सौं बोले दुहु भाई।—पद्माकर (शब्द०)। (घ) मेरे तो नाहिंने चंचल लोचन नाहिंने केशव बानि सुहाई। जानों न भूषण भेद के भाव न भूलहू नैनंहि भौंह चढ़ाई।—केशव (शब्द०)।

सुहारी—संज्ञा स्त्री० [सं० सु + आहार] सादी पूरी नामक पकवान जिसमें पीठी आदि नहीं भरी रहती।—उ०—(क) कान्ह कुँवर को कनछेदनो है हाथ सुहारी भेली गुर की।—सूर (शब्द०)। (ख) घी न लगे, सुहारी होय। (कहा०)।

सुहाल—संज्ञा पुं० [सं० सु + आहार] एक प्रकार का नमकीन पकवान जो मैदे का बनता है। यह बहुत मोयनदार होता है और इसका आकार प्रायः तिकोना होता है।

सुहाली—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहारी] दे० 'सुहारी'।

सुहावⓅ[1]—वि० [हिं० सुहाना] सुहावना। सुंदर। भला। अच्छा। उ०—(क) सरवर एक अनूप सुहावा। नाना जंतु कमल बहु छावा।—सबल (शब्द०)। (ख) देखि मानसर रूप सुहावा। हिय हुलास पुरइन होइ छावा।—जायसी (शब्द०)।

सुहाव[2]—संज्ञा पुं० [सं० सु + हाव] सुंदर हाव। उ०—किधौं यह केशव श्रृंगार की है सिद्धि किधौं भाग की सहेली कै सुहाग को सुहाव है।—केशव (शब्द०)।

सुहावता—वि० [हिं० सुहाना] [वि० स्त्री० सुहावती] अच्छा लगनेवाला। सुहावना। भला। उ०—इस समय इसके मनभावती सुहावती बात कहूँ।—लल्लू (शब्द०)।

सुहावन(पु)—वि० [हिं० सुहाना] दे० 'सुहावना'। उ०—जगमगात नृप गात वरम वर परम सुहावन।—गिरिधर (शब्द०)।

सुहावना[1]—वि० [हिं० सुहाना] [वि० स्त्री० सुहावनी] जो देखने में भला मालूम हो। सुंदर। प्रियदर्शन। मनोहर। जैसे, सुहावना समय, सुहावना दृश्य, सुहावना रूप।

सुहावना[2]—क्रि० अ० दे० 'सुहाना'। उ०—कछु औरहु बात सुहावत है।—श्रीनिवास (शब्द०)।

सुहावनापन—संज्ञा पुं० [हिं० सुहावना + पन (प्रत्य०)] सुहावना होने का भाव। सुंदरता। मनोहरता।

सुहावला(पु)—वि० [हिं० सुहावना] दे० 'सुहावना'। उ०—पारसी पाँति की पीपर पत्र लिख्यौ किधौं मोहिनी मंत्र सुहावली।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सुहास[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सुहासा] चारु या मधुर हास्ययुक्त। सुंदर या मधुर मुसकानवाला। उ०—उतते नेकु इतै चितै राति बितै तजि कोह। तेरो बदन सुहास से ससि प्रकास सों सोह।—श्रृंगारसतसई (शब्द०)।

सुहास[2]—संज्ञा पुं० सुंदर हास्य। मोहक हँसी।

सुहासिनी[1]—वि० [सं०] सुंदर हँसी हँसनेवाली। मधुर मुसकानवाली।

सुहासिनी[2]—संज्ञा स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री। सधवा स्त्री।

सुहासी—वि० [सं० सुहासिन्] [स्त्री० सुहासिनी] सुंदर हँसनेवाला। मधुर मुसकानवाला। चारुहासी।

सुहित—वि० [सं०] १. बहुत लाभकारी। उपयोगी। २. किया हुआ। संपादित। ३. तृप्त। संतुष्ट। ४. मित्र। स्नेही (को०)। ५. उपयुक्त। ठीक।

सुहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम। २. रुद्रजटा।

सुहिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुआ] दे० 'सुहा'।

सुही—वि० [देश०] लाल। लाल रंगवाला। उ०—इंदीवर दलनि मिलाय सोनजुही गुही, सुही माल हाल रूप, गुन न परै गनै।—घनानंद, पृ० १२३।

सुहू—संज्ञा पुं० [सं०] उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

सुहूँ(पु)—वि० [सं० शुद्ध ?] ठीक। पूरा। उ०—घन आनँद जान सजीवन सों कहिये तौ समै लहिये न सुहूँ।—घनानंद, पृ० ७४।

सुहृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छे हृदयवाला। २. मित्र। सखा। बंधु। दोस्त।

यौ०—सुहृत्याग = सुहृत् का परित्याग। सुहृत्प्राप्ति = मित्र का मिलना। सुहृत्प्रेम = मित्र के प्रति प्रेम।

३. ज्योतिष के अनुसार लग्न से चौथा स्थान जिससे यह जाना जाता है कि मित्र आदि कैसे होंगे।

सुहृत्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुहृत् होने का भाव या धर्म। २. मित्रता। दोस्ती।

सुहृत्त्व—संज्ञा पुं० [सं०] सुहृत्ता। मैत्री।

सुहृद्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुहृत्'।

यौ०—सुहृद्बल = मित्र राष्ट्र की सेना। सुहृद्भेद = (१) मित्र का अलग होना। मैत्री न रहना। (२) हितोपदेश का दूसरा परिच्छेद। सुहृद्वाक्य = मित्र की सलाह। अच्छी सलाह। उत्तम मंत्र।

सुहृद—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव का एक नाम। २. मित्र। सखा। दोस्त।

सुहृदय—वि० [सं०] १. अच्छे हृदयवाला। उन्नतमना। २. सहृदय। स्नेहशील।

सुहेल—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रसिद्ध चमकीला सितारा जो फारसी तथा अरबी के कवियों के अनुसार यमन देश में उगता है। उ०—बिछुरंता जब भेटै सो जानै जेहि नेह। सुक्ख सुहेला उग्गवै दुःख झरे जिमि मेह।—जायसी (शब्द०)।

विशेष—कहते हैं, इसके उदय होने पर सब कीड़े मकोड़े मर जाते हैं और चमड़े में सुगंध उत्पन्न हो जाती है। यह शुभ और सौभाग्य का सूचक माना जाता है।

सुहेलरा(पु)—वि० [हिं० सुहेला + रा (प्रत्य०)] दे० 'सुहेला'। उ०—आज सुहेलरो सोहावन सतगुरू आए मोरे धाम।—कबीर (शब्द०)।

सुहेला[1]—वि० [सं० शुभ या सुखकेलि, प्रा० सुहेल्लि] १. सुहावना। सुंदर। उ०—साँझ समै ललना मिलि आई खरो जहाँ नँदलाल अलबेलो। खेलन को निसि चाँदनी माँह बनै न मतो मतिराम सुहेलो।—मतिराम (शब्द०)। २. सुखदायक। सुखद। उ०—मरना मीत सुहेला। बिछुरन खरा दुहेला।—दादू (शब्द०)।

सुहेला[2]—संज्ञा पुं० १. मंगलगीत। २. स्तुति। स्तव।

सुहेस‡—वि० [सं० शुभ] अच्छा। सुंदर। भला।

सुहैल—संज्ञा पुं० [अ०] एक बहुत ऊँचा तारा जिसका दर्शन शुभ माना जाता है।

सुहोता—संज्ञा पुं० [सं० सुहोतृ] १. वह जो उत्तम रूप से हवन करता हो। अच्छा होता। २. भुमन्यु के एक पुत्र का नाम। ३. वितथ के एक पुत्र का नाम।

सुहोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वैदिक ऋषि का नाम। २. एक बार्हस्पत्य का नाम। ३. एक आत्रेय का नाम। ४. एक कौरव का नाम। ५. सहदेव के एक पुत्र का नाम। ६. भुमन्यु के एक पुत्र का नाम। ७. बृहत्क्षत्र के एक पुत्र का नाम। ८. बृहदिषु के एक पुत्र का नाम। ९. सुधन्वा के एक पुत्र का नाम। १०. एक

दैत्य का नाम। ११. एक वानर का नाम। १२. वितथ के एक पुत्र का नाम। १३. क्षत्रवृद्ध के एक पुत्र का नाम।

सुह्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो गौड़ देश के पश्चिम में था। २. यवनों की एक जाति। ३. सुह्म प्रदेश का निवासी (को०)।

सुह्मक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुह्म'।

सूँⓅ—अव्य० [सं० सह, प्रा० सहुँ, सयँ० सउँ, सउ] करण और अपादान कारक का चिह्न। सों। से। उ०—(क) कह्यो द्विजन सूँ सुनहु पियारे।—रघुराज (शब्द०)। (ख) कहत थकी ये चरन की नई अरुनई वाल। जाके रँग रँगि स्याम सूँ विदित कहावत लाल।—शृंगारसतसई (शब्द०)।

सूँइस—संज्ञा स्त्री० [सं० शिशुमार] दे० 'सूँस'।

सूँघना—क्रि० स [सं० √शिङ्घ (=आघ्राण)=शिङ्घति; प्रा० सिंघ, देशी सुंघ] १. घ्राणेंद्रिय या नाक द्वारा किसी प्रकार की गंध का ग्रहण या अनुभव करना। आघ्राण करना। वास लेना। महक लेना।

मुहा०—सिर सूँघना=बड़ों का मंगलकामना के लिये छोटों का मस्तक सूँघना। बड़ों का गद्गद होकर छोटों का मस्तक सूँघना। जमीन सूँघना=(१) पिनक लेना। ऊँघना। (२) किसी अस्त्र के वार से जमीन पर गिर पड़ना।

२. बहुत अल्प आहार करना। बहुत कम भोजन करना। (व्यंग)। जैसे,—आप तो खाली सूँघकर उठ बैठे। ३. साँप का काटना। जैसे,—बोलता क्यों नहीं? क्या साँप सूँघ गया है?

सूँघा—संज्ञा पुं० [हिं० सूँघना] १. वह जो नाक से केवल सूँघकर यह बतलाता हो कि अमुक स्थान पर जमीन के अंदर पानी या खजाना आदि है। २. सूँघकर शिकार तक पहुँचनेवाला कुत्ता। ३. भेदिया। जासूस। मुखबिर।

सूँठ†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ठि, हिं० सोंठ] दे० 'सोंठ'।

सूँड़—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ड] हाथी की नाक जो बहुत लंबी होती है और नीचे की ओर प्रायः जमीन तक लटकती रहती है। शुंड। शुडादंड।

विशेष—यह लंबाई में प्रायः हाथी की ऊँचाई तक होती है। इसमें दो नथने होते हैं। हाथी इसी से हाथ का भी काम लेता है। यह इतनी मजबूत होती है कि हाथी इससे पेड़ उखाड़ सकता है और भारी से भारी चीज उठाकर फेंक सकता है। इसी से वह खाने की चीजें उठाकर मुँह में रखता है और दमकल की तरह पानी फेंकता और पीता है। इससे वह जमीन पर से सूई तक उठा सकता है।

सूँडडंड†—संज्ञा पुं० [हिं० सूँड+दंड] हाथी। (डिं०)।

सूँडहल†—संज्ञा पुं० [सं० शुण्ड+हल (प्रत्य० ?)] हाथी। (डिं०)।

सूँडा†—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डा] हाथी की सूँड़ या नाक। (डिं०)।

सूँडालⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शुण्डाल] दे० 'शुंडाल'।

सूँड़ि†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ड, प्रा० सुंड] दे० 'सूँड़'।

सूँड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्डी] एक प्रकार का सफेद कीड़ा जो कपास, अनाज, रेंड़ी, ऊख आदि के पौधों को हानि पहुँचाता है।

सूँतना†—क्रि० स० [सं० सहस्त+हिं० ना (प्रत्य०)] सँतना। साफ करना। काछना। उ०—श्रीनाथ जी की गाँइन तरें की वह पटेल कींच सूँतत रहे।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २१४।

सूँधी—संज्ञा स्त्री० [सं० शोधन] सज्जी मिट्टी।

सूँपना†—क्रि० स० [सं० समर्पण; प्रा० समप्पण, हिं० सउँपना, सौंपना] दे० 'सौंपना'। उ०—बनड़ा नूँ सूँपे बनी, हतलेवे मिल हाथ।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ५८।

सूँब—वि० [हिं० सूम] दे० 'सूम'। उ०—सूँब सूँब कहै सरब दिन, जाचक पाड़ै बूँब।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ३५।

सूँस[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिशुमार] एक प्रसिद्ध बड़ा जलजंतु जो लंबाई में ८ से १२ फुट तक होता है और जिसके हर एक जबड़े में तीस दाँत होते हैं। सूँस। सूसमार। उ०—लेन गया वह थाह सूँसि लै गा घिसिआई।—पलटू०, पृ० ८८।

विशेष—यह पानी के बहाव में पाया जाता है और एक जगह नहीं रहता। साँस लेने के लिये यह पानी के ऊपर आता है और पानी की सतह पर थोड़ी देर तक रहता है। शीतकाल में कभी कभी यह जल के बाहर निकल आता है। इसकी आँखें बहुत कमजोर होती हैं और यह मटमैले पानी में नहीं देख सकता। इसका आहार मछलियाँ और झिंगवा है। यह जाल में फँसाकर या बछियों से मार मारकर पकड़ा जाता है, इसका तेल जलाने तथा कई दूसरे कामों में आता है।

सूँस†[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शपथ] सौंह। उ०—सूँस करे कवड़ी सटे, ते गुण घटे तमाम।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ४२।

सूँह[1]—अव्य० [सं० सम्मुख, पु०हिं० सौहैं] संमुख। सामने। उ०—साध सती औ सूरमा, दई न मोड़ै मूँह। ये तीनों भागे बुरे, साहेब जा की सूँह।—कबीर सा० सं०; भा० १, पृ० २४

सू[1]—वि० [सं०] उत्पन्न करने या पैदा करनेवाला। (समासांत में प्रयुक्त)। जैसे, बीरसू।

सू[2]—संज्ञा स्त्री० १. उत्पत्ति। पैदाइश। प्रसव। जन्म। २. माता। जननी [को०]।

सू[3]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] ओर। तरफ। दिशा। उ०—नजर आती हैं हर सू सूरतें ही सूरतें मुझको।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ११६।

सू[4]—संज्ञा स्त्री० [तुर्की] शराब। मद्य। मदिरा [को०]।

सूअर—संज्ञा पुं० [सं० शूकर, सूकर; प्रा० सुअर, सूअर] [स्त्री० सुअरी, सूअरी] १. एक प्रसिद्ध स्तन्यपायी वन्य जंतु। वराह। शूकर।

विशेष—यह मुख्यतः दो प्रकार का होता है। (१) वन्य या जंगली और (२) ग्राम्य या पालतू। ग्राम्य सूअर घास आदि के सिवा विष्ठा भी खाता है, पर जंगली सूअर घास और कंद मूल आदि ही खाता है। यह ग्राम्य शूकर की अपेक्षा बहुत बड़ा और बलवान् होता है। यह प्रायः मनुष्यों पर ही आक्रमण करता है, और उन्हें मार डालता है। इसके कई भेद हैं। इसका लोग शिकार करते हैं और कुछ जातियाँ इसका मांस भी खाती

हैं। राजपूतों में जंगली सूअरों के शिकार की प्रथा बहुत दिनों से प्रचलित है। इसके शिकार में बहुत अधिक वीरता और साहस की आवश्यकता होती है। कहीं कहीं इसकी चरबी में पूरियाँ पकाई जाती हैं; और इसका मांस पकाकर या अचार के रूप में खाया जाता है। वैद्यक के मत से जंगली सूअर मेद, बल और वीर्यवर्धक है।

पर्या०—शूकर। सूकर। दंष्ट्री। भूदार। स्थूलनासिक। दंतायुध। वक्रवस्त्र। दीर्घतर। आखनिक। भूक्षित। स्तब्धरोया। मुखलांगूल आदि।

२. निकृष्टता सूचक एक प्रकार की गाली। जैसे,—सूअर कहीं का।

सूअरबियान†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूअर + बिआना (=जनना)] १. वह स्त्री जो प्रति वर्ष बच्चा जनती हो। बरस बियानी। बरसाइन। २. हर साल अधिक बच्चे जनने की क्रिया।

सूअरमुखी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूअर + मुखी] ज्वार का एक प्रकार। बड़ी जोन्हरी या ज्वार।

सूआ[१]—संज्ञा पुं० [सं० शुक, प्रा० सूअ] सुग्गा। तोता। शुक। कीर। उ०—सूआ सरस मिलत प्रीतम सुख सिंधुवीर रस मान्यो। जानि प्रभात प्रभाती गायो भोर भयो दोउ जान्यो।—सूर (शब्द०)।

सूआ[२]—संज्ञा पुं० [सं० शूक (=नुकीला अग्रभाग)] १. बड़ी सूई। २. सींख। (लश०)।

सूआन—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

विशेष—यह वृक्ष बरमा, चटगाँव और स्याम में होता है इसके पत्ते प्रति वर्ष झड़ जाते हैं। इसकी लकड़ी इमारत और नाव के काम में आती है। इससे एक प्रकार का तेल भी निकलता है।

सूई—संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] १. पक्के लोहे का छोटा पतला तार जिसके एक छोर में बहुत बारीक छेद होता है और दूसरे छोर पर तेज नोक होती है। छेद में तागा पिरोकर इससे कपड़ा सिया जाता है। सूची।

यौ०—सूई तागा। सूई डोरा। सूई का काम = सूई से बनाई हुई कारीगरी जो कपड़ों पर होती है। सूई का नाका = सूई का छेद।

क्रि० प्र० पिरोना।—सीना।

मुहा०—सूई का फावड़ा बनाना = जरा सी बात को बहुत बड़ा बनाना। बात का बतंगड़ करना। सूई का भाला बनाना = दे० 'सूई का फावड़ा बनाना'। उ०—जो लोग प्रिंस हुमायूँ फर के खिलाफ थे उन्होंने सूई का भाला और तिनके का झंडा बनाया।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ३०६।

२. पिन। ३. महीन तार का काँटा। तार या लोहे का काँटा जिससे कोई बात सूचित होती है। जैसे,—घड़ी की सूई, तराजू की सूई। ४. अनाज, कपास आदि का अँखुआ। ५. सूई के आकार का एक पतला तार जिससे गोदना गोदा जाता है। ६. सूई के आकार का एक तार जिससे पगड़ी की चुनन बैठाते हैं।

सूईकार—संज्ञा पुं० [सं० सूचीकार] सूई से सिलाई करनेवाला दर्जी। उ०—जरकसी सूईकार के बहु भाँति तन पै धारहीं।—प्रेमघन०, पृ० ११५।

सूईडोरा—संज्ञा पुं० [हिं० सूई + डोरा] मालखंभ की एक कसरत।

विशेष—पहले सीधी पकड़ के समान मालखंभ के ऊपर चढ़ने के समय एक बगल में से पाँव मालखंभ को लपेटते हुए बाहर निकालना और सिर को उठाना पड़ता है। उस समय हाथ छूटने का बड़ा डर रहता है। इसमें पीठ मालखंभ की तरफ और मुँह लोगों की तरफ होता है। जब पाँव नीचे आ चुकता है; तब ऊपर का उलटा हाथ छोड़कर मालखंभ को छाती से लगाए रहना पड़ता है। यह पकड़ बड़ी ही कठिन है।

सूक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. तीर। बाण। २. वायु। हवा। ३. कमल। ४. ह्रद के एक पुत्र का नाम।

सूक(५)†[२]—संज्ञा [सं० शुक्र] शुक्र नक्षत्र। शुक्र तारा। उ०—(क) जग सूझा एकै नयनाहाँ। उआ सूक जस नखतन्ह माहाँ।—जायसी (शब्द०)। (ख) नासिक देखि लजानेउ सूआ। सूक आइ बेसर होइ ऊआ।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० १८२।

सूकछम†—वि० [सं० सूक्ष्म, पु० हिं० सूक्षम, सूच्छम] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—गुरु जी अो सूकछम का कुछ भेद पाऊँ। तुमारे चरन के तो बलिहार जाऊँ।—दक्खिनी०, पृ० २६०।

सूकना(५)†—क्रि० अ० [सं० शुष्क, प्रा० सुक्क + हिं० ना (प्रत्य०)] दे० 'सूखना'। उ०—(क) माँगौ बर कोटि चोट बदलो न चूकत है, सूकत है मुख सुधि आये वहाँ हाल है।—भक्तमाल (शब्द०)। (ख) जैसे सूकत सलिल के बिकल मीन मति होय।—दीनदयाल (शब्द०)। (ग) सुनि कागर नृपराज प्रभु भौ आनंद सुभाइ। मानौं बल्ली सूकते बीरा रस जल पाइ।—पृ० रा०, १२।६६।

सूकर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूकरी] १. सूअर। शूकर। २. एक प्रकार का हिरन। ३. कुम्हार। कुंभकार। ४. सफेद धान। ५. एक नरक का नाम। ६. एक मछली (को०)।

सूकर[२]—संज्ञा पुं० [सं० सु + कर] सुकर्म करनेवाले। सुकर्मी। उ०—बहु न्हाइ न्हाइ जेहि जल स्नेह। सब जात स्वर्ग सूकर सुदेह।—राम चं०, पृ० ४।

सूकरकंद—संज्ञा पुं० [सं० सूकर + कन्द] वाराहीकंद।

सूकरक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का शालिधान्य।

सूकरक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो मथुरा जिले में है और जो अब 'सोरों' नाम से प्रसिद्ध है।

सूकरखेत—संज्ञा पुं० [सं० सूकरक्षेत्र] दे० सूकरक्षेत्र'। उ०—मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकरखेत। समुझी नहिं तस बालपन तब अति रहेऊँ अचेत।—मानस, १।३०।

सूकरगृह—संज्ञा पुं० [सं०] शूकरों के रहने का स्थान। खोभार।

सूकरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूअर होने का भाव। सूअर की अवस्था। सूअरपन।

सूकरदंष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गुदभ्रंश (काँच निकलने का) रोग जिसमें खुजली और दाद के साथ बहुत दर्द होता है और ज्वर भी हो जाता है।

सूकरदंष्ट्रक—संज्ञा [सं०] दे० 'सूकरदंष्ट्र' (को०)।

सूकरनयन—संज्ञा पुं० [सं०] काठ में किया जानेवाला एक प्रकार का छेद।

सूकरपादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किवाँच। कपिकच्छु। कौंछ। २. सेम। कोलशिंबी।

सूकरप्रिया, सूकरप्रेयसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथिवी का एक नाम।

सूकरमुख—संज्ञा पुं० [सं०] एक नरक का नाम।

सूकराक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं० सूकराक्रान्ता] वराहक्रांता।

सूकराक्षिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का नेत्र रोग।

सूकरास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक बौद्ध देवी का नाम जिसे वाराही भी कहते हैं।

सूकराह्वया—संज्ञा पुं० [सं०] गठिवन। ग्रंथिपर्ण।

सूकरिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पौधा।

सूकरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चिड़िया।

सूकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूअरी। शूकरी। मादा सूअर। २. वराहक्रांता। ३. वाराहीकंद। गेंठी। ४. एक देवी का नाम। वाराही। ५. एक प्रकार की चिड़िया।।

सूकरेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १. कसेरू। २. एक प्रकार का पक्षी।

सूकशम(पु)‡—वि० [सं० सूक्ष्म, पुं०हिं० सूक्षम, सूच्छम] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—ना सूल सूँ ना सूकशम सूँ है काम। है मूल सूँ तुज मेरा सरजाम।—दक्खिनी०, पृ० १७२।

सूका†[१]—संज्ञा पुं० [सं० सपादक (=चतुर्थांश सहित)] [स्त्री० सूकी] १. चार आने के मूल्य का सिक्का। चवन्नी। २. सिक्कों के लिखने में चवन्नी का चिह्न जो एक खड़ी रेखा (।) के रूप में लगाते हैं।

सूका[२]—वि० [सं० शुष्क, पा० सुक्ख, प्रा० सुक्क] सूखा। शुष्क। नीरस। उ०—दादू सूका रूँखड़ा काहे न हरिया होइ। आवै खींचै अमीरस, सुफल फलिया सोइ।—दादू०, पृ० ४६१।

सूका(पु)[३]—संज्ञा पुं० अवर्षण। सूखा। उ०—अति काल सूका पड़ै, तौ निरफल कदे न जाइ।—कबीर ग्रं०, पृ० ५८।

सूकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूका(=चवन्नी ?)] रिश्वत। घूस।

सूकूत—संज्ञा पुं० [अ०] चुप्पी। खामोशी। मौन। उ०—यह आपके बेजार होने का इजहार है और सूकूत के आलम का सुबूत है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २४।

सूकृत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुकृत] पुण्य। पुण्य कार्य। उ०—जगजिवन दास गुरु चरन गहि, सत सूकृत धन धाम।—जग० श०, भा० २, पृ० ६९।

सूक्त[१]—संज्ञा [सं०] १. वेदमंत्रों या ऋचाओं का समूह। वैदिक स्तुति या प्रार्थना। जैसे—देवीसूक्त, अग्निसूक्त, श्रीसूक्त आदि। २. उत्तम कथन। उत्तम भाषण। ३. महद्वाक्य।

सूक्त[२]—वि० उत्तम रूप से कथित। भली भाँति कहा हुआ।

यौ०—सूक्तद्रष्टा = सूक्तदर्शी। सूक्तभाक् = जिसके लिये सूक्त कहे जायँ। सूक्तवाक = (१) मंत्र का पाठ। (२) एक यज्ञ। सूक्तवाक्य = उत्तम वाणी। सूक्ति।

सूक्तचारी—वि० [सं० सूक्तदर्शिन्] उत्तम वाक्य या परामर्श माननेवाला।

सूक्तदर्शी—संज्ञा पुं० [सं० सूक्तदर्शिन्] वह ऋषि जिसने वेदमंत्रों का अर्थ किया हो। मंत्रद्रष्टा।

सूक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मैना। शारिका।

सूक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तम उक्ति या कथन। सुंदर पद या वाक्य आदि। बढ़िया कथन।

सूक्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में प्रयुक्त एक प्रकार का करताल या भाँझ।

सूक्षम(पु)[१]—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—साँचे की सी ढारी अति सूक्षम सुधारि, कढ़ी केशोदास अंग अंग भाइ के उतारी सी।—केशव (शब्द०)।

सूक्षम(पु)[२]—संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार। सूक्ष्म नामक अलंकार। उ०—कौनहु भाव प्रभाव ते जानै जिय की बा । इंगित ते आकार ते कहि सूक्षम अवदात।—केशव (शब्द०)।

सूक्ष्म[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सूक्ष्मा] १. बहुत छोटा। जैसे,—सूक्ष्मजंतु। २. बहुत बारीक या महीन। जैसे,—सूक्ष्म बात। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। कलात्मक। उम्दा (को०)। ४. तेज। चोखा (को०)। ५. ठीक। सही (को०)। ६. कोमल। मृदु (को०)। ७. धूर्त। चालाक।

सूक्ष्म[२]—संज्ञा पुं० १. परमाणु। अणु। २. परब्रह्म। ३. लिंगशरीर। ४. शिव का एक नाम। ५. एक दानव का नाम। ६. एक काव्यालंकार जिसमें चित्तवृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है। दे० 'सूक्ष्म'। ७. निर्मली। ८. जीरा। जीरक। ९. छल। कपट। १०. रीठा। अरिष्टक। ११. सुपारी। पूग। १२. वह ओषधि जो रोमकूप के मार्ग से शरीर में प्रविष्ट करे। जैसे—नीम, शहद, रेंडी का तेल, सेंधा नमक, आदि। १३. बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम। १४. जैनियों के अनुसार एक प्रकार का कर्म जिसके उदय से मनुष्य सूक्ष्म जीवों की योनि में जन्म लेता है। १५. योग की तीन शक्तियों में से एक (को०)। १६. दाँत का खोखला या खोढ़र (को०)। १७. सूक्ष्म होने का भाव। सूक्ष्मता (को०)। १८. बारीक, महीन या उत्तम डोरा (को०)।

सूक्ष्मकृशफला, सूक्ष्मकृष्णफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] कठजामुन। छोटा जामुन। क्षुद्र जंबू।

सूक्ष्मकोण—संज्ञा पुं० [सं०] वह कोण जो समकोण से छोटा हो।

सूक्ष्मघंटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सूक्ष्मघण्टिका] सनई। क्षुद्र शणपुष्पी।

सूक्ष्मचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चक्र।

सूक्ष्मतंडुल—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्मतंडुल] १. पोस्त दाना। खसखस। २. सर्जरस। धूना।

सूक्ष्मतंडुला—संज्ञा स्त्री० [सं० सूक्ष्मतण्डुला] १. पीपल। पिप्पली। २. राल। सर्जरस। ३. एक प्रकार की घास (को०)।

सूक्ष्मता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूक्ष्म होने का भाव। बारीकी। महीनपन। सूक्ष्मत्व।

सूक्ष्मतुंड—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्मतुण्ड] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीड़ा।

सूक्ष्मत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूक्ष्मता'।

सूक्ष्मदर्शक यंत्र—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्मदर्शक + यन्त्र] एक यंत्र जिसके द्वारा देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं। अणुवीक्षण यंत्र। खुर्दबीन।

सूक्ष्मदर्शिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूक्ष्मदर्शी होने का भाव। सूक्ष्म या बारीक बात सोचने समझने का गुण।

सूक्ष्मदर्शी—वि० [सं० सूक्ष्मदर्शिन्] १. सूक्ष्म विषय को समझनेवाला। बारीक बात को सोचने समझनेवाला। कुशाग्रबुद्धि। २. अत्यंत बुद्धिमान्। ३. तीव्र या तीखी दृष्टिवाला (को०)।

सूक्ष्मदल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की सरसों। देवसर्षप।

सूक्ष्मदला—संज्ञा स्त्री० [सं०] धमासा। दुरालभा।

सूक्ष्मदारु—संज्ञा पुं० [सं०] काठ की पतली पटरी या तख्ता।

सूक्ष्मदृष्टि[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी दिखाई दें या समझ में आ जायँ।

सूक्ष्मदृष्टि[२]—संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जो सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें भी देख या समझ लेता है।

सूक्ष्मदेह—संज्ञा स्त्री० [सं०] लिंग शरीर। सूक्ष्म शरीर [को०]।

सूक्ष्मदेही[१]—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्मदेहिन्] परमाणु जो बिना अणुवीक्षण के दिखाई नहीं पड़ता।

सूक्ष्मदेही[२]—वि० सूक्ष्म शरीरवाला। जिसका शरीर बहुत ही सूक्ष्म या छोटा हो।

सूक्ष्मनाभ—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

सूक्ष्मपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. धनिया। धन्याक। २. काली जीरी। वनजीरक। ३. देवसर्षप। ४. छोटा बैर। लघु बदरी। ५. माचीपत्र। सुरपर्ण। ६. जंगली बर्बरी। वन बर्बरी। ७. लाल ऊख। लोहितेक्षु। ८. कुकरौंदा। कुकुंदर। ९. कीकर। बबूल। १०. धमासा। मुरालभा। ११. उड़द। माष। १२. अर्कपत्र।

सूक्ष्मपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १. पित्तपापड़ा। पर्पटक। बनतुलसी। बनबर्बरी।

सूक्ष्मपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बनजामुन। २. शतमूली। ३. बृहती। ४. धमासा। ५. अपराजिता या कोयल नाम की लता। ६. लाल अपराजिता। ७. जीरे का पौधा। ८. बला।

सूक्ष्मपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौंफ। शतपुष्पा। २. सतावर। शतावरी। ३. लघु ब्राह्मी। ४. पोई। क्षुद्रपोदकी। ५. धमासा। मुरालभा (को०)। ६. आकाशमांसी (को०)।

सूक्ष्मपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आकाशमांसी। २. सतावर। शतावरी।

सूक्ष्मपर्णा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विधारा। वृद्धदारु। २. छोटी शण-पुष्पी। छोटी सनई। ३. बनभंटा। बृहती।

सूक्ष्मपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रामतुलसी। रामदूती।

सूक्ष्मपाद—वि० [सं०] छोटे पैरोंवाला। जिसके पैर छोटे हों।

सूक्ष्मपिप्पली—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली पीपल। बनपिप्पली।

सूक्ष्मपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सनई। शणपुष्पी।

सूक्ष्मपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शंखिनी। २. यवतिक्ता नाम की लता।

सूक्ष्मफल—संज्ञा पुं० [सं०] १. लिसोड़ा। २. भूकर्बुदार। सूक्ष्म बदर।

सूक्ष्मफला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भुईं आँवला। भूम्यामलकी। २. तालीसपत्र। ३. मालकंगनी। महाज्योतिष्मती लता।

सूक्ष्मबदर—संज्ञा पुं० [सं०] लघुबदर। झरबेर [को०]।

सूक्ष्मबदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] झरबेर। भूबदरी।

सूक्ष्मबीज—संज्ञा पुं० [सं०] पोस्तदाना। खसखस।

सूक्ष्मबुद्धि[१]—वि० [सं०] सूक्ष्म या तलस्पर्शी बुद्धिवाला [को०]।

सूक्ष्मबुद्धि[२]—संज्ञा स्त्री० दे० 'सूक्ष्ममति' [को०]।

सूक्ष्मभूत—संज्ञा पुं० [सं०] आकाशादि शुद्ध भूत जिनका पंचीकरण न हुआ हो।

विशेष—सांख्य के अनुसार पंचतन्मात्र अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध तन्मात्र; ये अलग अलग सूक्ष्मभूत हैं। इन्हीं पच-तन्मात्र से पंचमहाभूतों की उत्पत्ति हुई है। पंचीकृत होने पर आकाशादि भूत स्थूलभूत कहलाते हैं। विशेष दे० 'तन्मात्र'।

सूक्ष्ममक्षिक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूक्ष्ममक्षिका] मच्छड़। मशक।

सूक्ष्ममति—वि० [सं०] तीक्ष्णबुद्धि। जिसकी बुद्धि तेज हो।

सूक्ष्ममान—संज्ञा पुं० [सं०] १. ठीक ठीक तौल या नाप। स्थूलमान का उलटा। २. वह मान जिससे सूक्ष्म अंतर भी ज्ञात हो सके [को०]।

सूक्ष्ममूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जयंती। जियंती। २. ब्राह्मी।

सूक्ष्मलोभक—संज्ञा पुं० [सं०] जैन मतानुसार मुक्ति की चौदह अव-स्थाओं में से दसवीं अवस्था।

सूक्ष्मवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ताम्रवल्ली। २. जतुका नाम की लता। ३. करेली। लघु कारवेल्ल।

सूक्ष्मशरीर—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच सूक्ष्म-भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्वों का समूह।

विशेष—सांख्य के अनुसार शरीर दो प्रकार का होता है—स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर। हाथ, पैर, मुँह, पेट आदि अंगों से युक्त शरीर स्थूल शरीर कहलाता है। परंतु इस स्थूल शरीर के नष्ट हो जाने पर इसी प्रकार का एक और शरीर बच रहता है। जो उक्त सत्रह अंगों और तत्वों का बना हुआ होता है। इसी को सूक्ष्म शरीर कहते हैं। यह भी माना जाता है कि जब तक मुक्ति नहीं होती, तब तक इस सूक्ष्म शरीर का आवागमन बराबर होता रहता है। स्वर्ग और नरक आदि का भोग भी इसी सूक्ष्म शरीर को करना पड़ता है।

सूक्ष्मशर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बालू। बालुका।

सूक्ष्मशाक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की बबुरी जिसे जलबबुरी भी कहते हैं।

सूक्ष्मशालि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का महीन सुगंधित चावल जिसे सोरों कहते हैं।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह मधुर, लघु तथा पित्त, अर्श और दाहनाशक है।

सूक्ष्मषट्चरण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सूक्ष्म कीड़ा जो पलकों की जड़ में रहता है।

सूक्ष्मस्फोट—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कोढ़। विर्चाचिका रोग।

सूक्ष्मा[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जूही। यूथिका। २. छोटी इलायची। ३. करुणी नाम का पौधा। ४. मूसली। तालमूली। ५. बालू। बालुका। ६. सूक्ष्म जटामांसी। ७. विष्णु की नौ शक्तियों में से एक।

सूक्ष्मा[२]—वि० स्त्री० दे० 'सूक्ष्म[१]'।

सूक्ष्माक्ष—वि० [सं०] सूक्ष्म दृष्टिवाला। तीव्रदृष्टि। तेज नजर का।

सूक्ष्मात्मा—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्मात्मन्] शिव। महादेव।

सूक्ष्माह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] महामेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

सूक्ष्मेक्षिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूक्ष्म दृष्टि। तेज नजर।

सूक्ष्मैला—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी इलायची।

सूख(पु)‡—वि० [सं० शुष्क] दे० 'सूखा'। उ०—(क) कंद मूल फल असन, कबहुँ जल पवनहिं। सूख बेल के पात खात दिन गवनहिं।—तुलसी ग्रं०, पृ० ३२। (ख) धर्मपाश और कालपाश पुनि दुव दारुन दोउ फाँसी। सूख ओद लीजै असनी युग रघुनंदन सुखरासी।—रघुराज (शब्द०)। (ग) सूख सरोवर निकट जिमि सारस बदन मलीन।—शंकरदिग्विजय (शब्द०)।

सूखना—क्रि० अ० [सं० शुष्क, हिं० सूख + ना (प्रत्य०)] १. आर्द्रता या गीलापन न रहना। नमी या तरी का निकल जाना। रसहीन होना। जैसे,—कपड़ा सूखना, पत्ता सूखना, फूल सूखना। उ०—बन में रूख सूख हर हर ते। मनु नृप सूख बरूथ न करते।—गिरिधर (शब्द०)। २. जल का बिलकुल न रहना या बहुत कम हो जाना। जैसे,—तालाब सूखना, नदी सूखना। ३. उदास होना। तेज नष्ट होना। जैसे,—चेहरा सूखना। ४. नष्ट होना। बरबाद होना। जैसे,—फसल सूखना। ५. आर्द्रता न रहने से कड़ा होना। ६. डरना। सन्न होना। जैसे,—जान सूखना। ७. दुबला होना। कृश होना। जैसे,—लड़का सूख गया।

मुहा०—सूखकर काँटा होना = अत्यंत कृश होना। बहुत दुबला-पतला होना। उ०—बदन सूख के दो ही दिन में काँटा हो गया।—फिसाना०, भा० ३, पृ० २३८। सूखे खेत लहलहाना = अच्छे दिन आना। सूखे धानों पानी पड़ना = पूर्णतः निराशा की हालत में अकस्मात् इच्छा पूरी होना। ईप्सित की प्राप्ति होना। उ०—(क) सूखत धानु परा जनु पानी।—मानस, १।२६३। (ख) बेगम समझी थीं कि सूखे धानों पानी पड़ा।—फिसाना०, भा० ३, पृ० २२९।

संयो० क्रि०—जाना।

सूखम(पु)—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—कवन सूखम कवन अस्थूला।—प्राण०, पृ० १।

सूखमना(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुषुम्ना, पु०हिं० सुषमन] दे० 'सुषुम्ना'। उ०—सूखमना सुर की सरिता अघ ओघहि दीन-दयाल हरै।—दीन० ग्रं०, पृ० १७४।

सूखर—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्म (= शिव)] एक शैव संप्रदाय।

सूखा[१]—वि० [सं० शुष्क] [वि० स्त्री० सूखी] १. जिसमें जल न रह गया हो। जिसका पानी निकल, उड़ या जल गया हो। जैसे—सूखा तालाब, सूखी नदी, सूखी धोती। २. जिसका रस या आर्द्रता निकल गई हो। रसहीन। जैसे,—सूखा पत्ता, सूखा फूल। ३. उदास। तेजरहित। जैसे,—सूखा चेहरा। ४. हृदयहीन। कठोर। रूढ़। जैसे,—वह बड़ा सूखा आदमी है। ५. कोरा। जैसे,— सूखा अन्न, सूखी तरकारी। ६. केवल। निरा। खाली। जैसे,—(क) वह सूखा शेखीबाज है। (ख) उसे सूखी तनखाह मिलती है।

मुहा०—सूखा टरकाना या टालना = आकांक्षी या याचक आदि को बिना उसकी कामना पूरी किए लौटाना। सूखा जवाब देना = साफ इनकार करना। उ०—वे भला आप सूख जाते क्या। मुत्र न सूखा जवाब सूखा सुन।—चुभते०, पृ० १३। सूखी नसों में लहू भरना = निराशों में आशा का संचार करना। उ०—हम...सूखी नसों में लहू भरते थे। चुभते० (दो दो०), पृ० २।

सूखा[२]—संज्ञा पुं० १. पानी न बरसना। वृष्टि का अभाव। अवर्षण। अनावृष्टि। उ०—बारह मासउ उपजई तहाँ किया परबेस। दादू सूखा ना पड़इ हम आए उस देस।—दादू (शब्द०)।

क्रि० प्र०—पड़ना।

२. नदी के किनारे की जमीन। नदी का किनारा। जहाँ पानी न हो।

मुहा०—सूखे पर लगना = नाव आदि का किनारे लगना।

३. ऐसे स्थान जहाँ जल न हो। ४. सूखा हुआ तंबाकू का पत्ता जो चूना मिलाकर खाया जाता है। उ०—भंग तमाखू सुलफा गाँजा, सूखा खूब उड़ाया रे।—कबीर० श०, भा० १, पृ० २५। ५. भाँग। विजया। ६. एक प्रकार की खाँसी जो बच्चों को होती है, जिससे वे प्रायः मर जाते हैं। हब्बा डब्बा। ७. खाना अंग न लगने से या रोग आदि के कारण होनेवाला दुबलापन।

मुहा०—सूखा लगना = सुखंडी नामक रोग होना। ऐसा रोग लगना जिससे शरीर बिलकुल सूख जाय।

सूखासण(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सुखासन] दे० 'सुखासन'। उ०—जाइ सूखासण बइठो छइ राय।—वी० रासो, पृ० २७।

सूखिम(पु)—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०—गई द्वारिका सूखिम वेषा।—नंद० ग्रं०, पृ० १२८।

सूगंध(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध] दे० 'सुगंध'। उ०—दरबार भीर बरनी न जाइ, सूगंध बास नासा अघाइ। विगसंत बदन छत्तीस बंस, जदुनाथ जनम जनु जदुन बंस।—पृ० रा०, १।७१५।

सूघर(पु)—वि० [सं० सुघट] दे० 'सुघड़'।

सूच[१]—संज्ञा पुं० [सं०] कुश का अंकुर। दर्भांकुर।

सूच[२]—वि० [सं० शुचि] निर्मल। पवित्र। (डिं०)। उ०—चारि वरण सों हरिजन ऊँचे। भए पवित्तर हरि के सुमिरे। मन के उज्ज्वल मन के सूचे।—शब्दवर्णन, पृ० ३०८।

सूचक¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सूचिका] १. सूचना देनेवाला। बतानेवाला। दिखानेवाला। ज्ञापक। बोधक। २. भेद की खबर देनेवाला।

सूचक²—संज्ञा पुं० १. सूई। सूची। २. सीनेवाला दरजी। ३. नाटककार। सूत्रधार। ४. कथक। ५. बुद्ध। ६. सिद्ध। ७. पिशाच। ८. कुत्ता। ९. बिल्ली। १०. कौआ। ११. सियार। गीदड़। १२. कटहरा। जँगला। १३. बरामदा। छज्जा। १४. ऊँची दीवार। १५. खल। विश्वासघातक। १६. गुप्तचर। भेदिया। १७. आयोगव माता और क्षत्रिय पिता से उत्पन्न पुत्र। १८. एक प्रकार का महीन चावल। सूक्ष्म शालिधान्य। सोरों। १९. चुगलखोर। पिशुन। २०. शिक्षक (को०)।

यौ०—सूचक वाक्य = भेदिए द्वारा बताई गई बात। भेदिए से मिलनेवाली सूचना।

सूचन—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूचनी] १. बताने या जताने की क्रिया। ज्ञापन। २. सुगंधि फैलाने की क्रिया। दे० 'सूचना'।

सूचना¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह बात जो किसी को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय। प्रकट करने या जतलाने के लिये कही हुई बात। विज्ञापन। विज्ञप्ति।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—पाना।—मिलना।

२. वह पत्र आदि जिसपर किसी को बताने या सूचित करने के लिये कोई बात लिखी हो। विज्ञापन। इश्तहार। ३. अभिनय। ४. दृष्टि। ५. बेधना। छेदना। ६. भेद लेना। ७. हिंसा। मारना। ८. गंधयुक्त करना।

सूचनाⓅ²—क्रि० अ० [सं० सूचन] बतलाना। जतलाना। प्रकट करना। उ०—हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा। सूचत किरन मनोहर हासा।—तुलसी (शब्द०)।

यौ०—सूचनापट्ट = वह पट्ट या तख्ती जिसपर आवश्यक निर्देश लगाए जायँ। नोटिस बोर्ड। सूचनापत्र। सूचनामंत्री = सूचना विभाग का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी। सूचना विभाग = आवश्यक जानकारी एकत्र करने और उन्हें संबद्ध जनों को विभिन्न प्रकारों से बतानेवाला विभाग।

सूचनापत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह पत्र या विज्ञप्ति जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बताई जाय। वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की सूचना हो। विज्ञापन। विज्ञप्ति। इश्तहार।

सूचनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी ग्रंथ में क्या वर्णित है इसका सिलसिलेवार विवरण देनेवाली सूची। विषयनिर्देशिका। उ०—या में इतनी कथा बखानौं। ताकी सूचनिका यह जानौ।—ब्रज०, पृ० ३।

सूचनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूचनिका। सूची। विषयसूची।

सूचनीय—वि० [सं०] सूचना करने के योग्य। जताने लायक।

सूचयितव्य—वि० [सं०] दे० 'सूचनीय'।

सूचा¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सूचना'।

सूचा†²—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूचित] जो होश में हो। सावधान। उ०—नागमती कहँ अगम जनावा। गई तपनि बरषा जनु आवा। रही जो मुइ नागिन जस तूचा। जिउ पाएँ तन कै भइ सूचा।—जायसी (शब्द०)।

सूचाⓅ³—वि० [सं० शुद्ध] शुद्ध। साफ। सुच्चा। निखालिस। पवित्र। उ०—यह संसार सकल जग मैला। नाम गहे तेहि सूचा।—कबीर श०, भा०, पृ० ९।

सूचाचारीⓅ—वि० [हिं० सूचा + सं० आचारी] शुद्धता और आचार विचार माननेवाला। शौचाचारी। उ०—पंडित मिसरा सूचाचारी। पाठ पढ़हिं अंतरि अहंकारी।—प्राण०, पृ० १८०।

सूचि¹—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूई। २. एक प्रकार का नृत्य। ३. केवड़ा। केतकी पुष्प। ४. सेना का एक प्रकार का व्यूह जिसमें थोड़े से बहुत तेज और कुशल सैनिक अग्रभाग में रखे जाते हैं और शेष पिछले भाग में होते हैं। ५. कटहरा। जँगला। ६. दरवाजे की सिटकनी। ७. निषाद पिता और वैश्य माता से उत्पन्न पुत्र। ८. एक प्रकार का मैथुन। ९. सूप बनानेवाला। शूर्पकार। १०. करण। ११. कुशा। श्वेतदर्भ। १२. दृष्टि। नजर। १३. कोई भी सूई की तरह नुकीला सिरा। जैसे, कुशसूचि (को०)। १४. दे० 'सूची'। १५. नाटकीय कर्म। नाट्य अभिनय (को०)। १६. स्तूप (को०)। १७. अंगचेष्टा द्वारा संकेत। हावभाव (को०)। १८. वेधन या छेदन क्रिया (को०)।

सूचि²—वि० [सं० शुचि] पवित्र। शुद्ध। (डिं०)।

सूचिक—संज्ञा पुं० [सं०] सिलाई के द्वारा जीविका निर्वाह करनेवाला, दरजी। सौचिक।

सूचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूई। २. हाथी की सूँड़। हस्तिशुंड। ३. एक अप्सरा का नाम। ४. केवड़ा। केतकी।

सूचिकागृह, सूचिकागृहक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूचिगृहक'।

सूचिकाधर—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी। हस्ती।

सूचिकाभरण—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार की ओषधि जो संनिपात, विसूचिका आदि प्राणनाशक रोगों की अंतिम औषध मानी गई है।

विशेष—इस औषध का बिलकुल अंतिम अवस्था में ही प्रयोग किया जाता है। यदि इससे फल न हुआ तो, कहते हैं, फिर रोगी नहीं बच सकता। इसके बनाने की कई विधियाँ हैं। एक विधि यह है कि रस, गंधक, सीसा, काष्ठविष और काले साँप का विष इन सबको खरल कर क्रम से रोहित मछली, भैंस, मोर, बकरे और सूअर के पित्त में भावना देकर सरसों के बराबर गोली बनाई जाती है, जो अदरक के रस के साथ दी जाती है। दूसरी विधि यह है कि काष्ठविष, सर्पविष, दारुमुच प्रत्येक एक एक भाग, हिंगुल तीन भाग, इन सबको रोहित मछली, भैंस, मोर, बकरे और सूअर के पित्त में एक एक दिन भावना देकर सरसों के बराबर गोली बनाते हैं जो नारियल के जल के साथ देते हैं। तीसरी विधि यह है कि विष एक पल और रस चार माशे, इन दोनों को एक साथ शरावपुट में बंद करके सुखाते हैं और बाद दो प्रहर तक बराबर आँच देते हैं। संनिपात के रोगी को—चाहे वह अचेत हो या मृतप्राय—सिर पर उस्तुरे से क्षत कर सूई की नोक से यह रस लेकर उसमें भर

देते हैं। साँप के काटने पर भी इसका प्रयोग किया जाता है। कहते हैं, इन सब प्रयोगों के कारण रोगी के शरीर में बहुत अधिक गरमी आने लगती है; इसीलिये इनके उपरांत अनेक प्रकार के शीतल उपचार किए जाते हैं।

सूचिकामुख—संज्ञा पुं० [सं०] शंख।

सूचिगृहक—संज्ञा पुं० [सं०] सूई रखने का डब्बा या खोली [को०]।

सूचित—वि० [सं०] १. जिसकी सूचना दी गई हो। जताया हुआ। बताया हुआ। कहा हुआ। ज्ञापित। प्रकाशित। २. बहुत उपयुक्त या योग्य। ३. जिसकी हिंसा की गई हो। ४. संकेतित (को०)। ५. वेधन किया हुआ। छिद्रित (को०)।

सूचितव्य—वि० [सं०] सूचना के योग्य। सूच्य [को०]।

सूचिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूई। सूचिका। २. रात्रि। रात [को०]।

सूचिपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का ऊख। २. शिरियारी। चौपतिया। सिनिवार शाक। ३. दे० 'सूचीपत्र'।

सूचिपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूचिपत्र'।

सूचिपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] केवड़ा का फूल या केतकी वृक्ष।

सूचिभिन्न—वि० [सं०] फूलों की कली जो सूई जैसी नुकीली और ऊपर की ओर विभक्त हो [को०]।

सूचिभेद्य—वि० [सं०] १. सूई से भेदने योग्य। २. बहुत घना। जैसे,——सूचिभेद्य अंधकार।

सूचिमल्लिका—संज्ञा [सं०] नेवारी। नवमल्लिका।

सूचिमुख—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूचीमुख' [को०]।

सूचिरदन—संज्ञा पुं० [सं०] नेवला।

सूचिरोमा—संज्ञा पुं० [सं० सूचिरोमन्] सूअर। वराह।

सूचिवत्—संज्ञा पुं० [सं०] १. गरुड़। २. सूई की तरह नोकदार कोई वस्तु। नुकीली चीज (को०)।

सूचिवदन—संज्ञा पुं० [सं०] १. नेवला। नकुल। २. मच्छर। मशक।

सूचिशालि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का महीन चावल। सूक्ष्म शालिधान्य। सोरों।

सूचिशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूई की नोक।

सूचिसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सूई में पिरोने या सीने का धागा।

सूची[1]—संज्ञा पुं० [सं० सूचिन्] १. चर। भेदिया। २. पिशुन। चुगुलखोर। ३. खल। दुष्ट।

सूची[2]—संज्ञा स्त्री० १. कपड़ा सीने की सूई। २. दृष्टि। नजर। ३. केतकी। केवड़ा। ४. सेना का एक प्रकार का व्यूह, जिसमें सैनिक सूई के आकार में रखे जाते हैं। दे० 'सूचि'। ५. सफेद कुश। ६. एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों या उनके अंगों, विषयों आदि की नामावली। तालिका। फेहरिस्त।

यौ०—सूचीपत्र।

७. साक्षी के पाँच भेदों में से एक भेद। वह साक्षी जो बिना बुलाए स्वयं आकर किसी विषय में साक्ष्य दे। स्वयमुक्ति। ८. पिंगल के अनुसार एक रीति जिसके मात्रिक छंदों की संख्या की शुद्धता और उनके भेदों में आदि अंत लघु या आदि अंत गुरु की संख्या जानी जाती है। ९. सुश्रुत के अनुसार सूई के आकार का एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा शरीर के क्षतों में टाँके लगाए जाते थे।

सूची[3]—वि० [सं० सूचिन्] १. रहस्य खोज निकालनेवाला। भेद लेनेवाला। २. गुप्त बात, रहस्य या भेद बतानेवाला। ३. भेदन या छेदन करनेवाला। ४. बतानेवाला। जतानेवाला। व्यक्त या प्रकट करनेवाला। उ०—प्रधान सैनिक के आसन को छीन स्वयं विजय सूची चिह्नों को लगा'''।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २७०।

सूचीक—संज्ञा पुं० [सं०] मच्छर आदि ऐसे जंतु जिनके डंक सूई के समान होते हैं।

सूचीकटाहन्याय—संज्ञा पुं० [सं०] सहज काम पूरा करके कठिन काम करने का दृष्टांत। विशेष दे० 'न्याय' (१०४)।

सूचीकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सूचीकर्मन्] सिलाई या सूई का काम जो ६४ कलाओं में से एक है।

सूचीतुंड—संज्ञा पुं० [सं० सूचीतुण्ड] मशक। मच्छर [को०]।

सूचीदल—संज्ञा पुं० [सं०] सितावर या सुनिषण्णक नामक शाक। शिरियारी।

सूचीपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पत्र या पुस्तिका आदि जिसमें एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों अथवा उनके अंगों की नामावली हो। तालिका। २. व्यवसायियों का वह पत्र या पुस्तक आदि जिसमें उनके यहाँ मिलनेवाली सब चीजों के नाम, दाम और विवरण आदि दिए रहते हैं। तालिका। फेहरिस्त। ३. दे० 'सूचिपत्र'।

सूचीपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूचीपत्र'।

सूचीपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाँडर दूब। गंड दूर्वा।

सूचीपद्म—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का एक प्रकार का व्यूह।

सूचीपाश—संज्ञा पुं० [सं०] सूई का छेद या नाका जिसमें धागा पिरोया जाता है।

सूचीपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूचिपुष्प'।

सूचीभेद्य—वि० [सं०] दे० 'सूचिभेद्य'। उ०—सूचीभेद्य अंधकार में छिपनेवाली रहस्यमयी का—प्रज्वलित कठोर नियति का—नील आवरण उठाकर झाँकनेवाला।—स्कंद०, पृ० २५।

सूचीमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूई का नोक या छेद जिसमें धागा पिरोया जाता है। २. एक नरक का नाम। उ०—सूचीमुख नरकहि कर नाऊँ। ते तहँ जाइ बसावैं गाँऊ।—कबीर सा०, भा० ४, पृ० ४६५। ३. हीरक। हीरा। ४. श्वेत कुश। ५. हाथ की एक मुद्रा (को०)। ६ मशक। मच्छर (को०)। ७. पक्षी। चिड़िया। (को०)।

सूचीरोमा—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूचिरोमा'।

सूचीवक्त्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्कंद के एक अनुचर का नाम। २. एक असुर का नाम।

सूचीवक्त्र[2]—वि० १. सूई की तरह मुखवाला। २. अत्यंत सँकरा [को०]।

सूचीवक्त्रा--संज्ञा स्त्री० [सं०] वह योनि जिसका छेद इतना छोटा हो कि वह पुरुष के संसर्ग के योग्य न हो। वैद्यक के अनुसार यह बीस प्रकार के योनिरोगों में से एक है।

सूचीव्यूह--संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य द्वारा निर्दिष्ट वह व्यूह जिसमें सैनिक एक दूसरे के पीछे खड़े किए गए हों।

सूचीसूत्र--संज्ञा पुं० [सं०] धागा। दे० 'सूचिसूत्र' [को०]।

सूच्छम(५) वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'। उ०--ब्रह्म लौं सूच्छम है कटि राधे कि, देखी न काहू सुनी सुन राखी। सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सूच्य--वि० [सं०] १. सूचना के योग्य। जताने लायक। २. जो व्यंजित हो। व्यंग्य। जैसे, सूच्य अर्थ।

सूच्यग्र--संज्ञा पुं० [सं०] १. सुई का अग्रभाग। सूई की नोक। २. कंटक। काँटा (को०)। ३. सूई की नोक के बराबर कोई भी वस्तु। (लश०)।

सूच्यग्रविद्ध--वि० [सं०] काँटा या सूई की नोक से छेदा हुआ।

सूच्यग्रस्तंभ--संज्ञा पुं० [सं० सूच्यग्रस्तम्भ] मीनार।

सूच्यग्रस्थूलक--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का तृण। जूर्णा। उलूक। उलप।

सूच्याकार--वि० [सं० सूची + आकार] सूई के आकार का। जो लंबा और नुकीला हो।

सूच्यार्थ--संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में किसी पद आदि का वह अर्थ जो शब्दों की व्यंजना शक्ति से जाना जाता है।

सूच्यास्य[१]--संज्ञा पुं० [सं०] चूहा। मूषिक।

सूच्यास्य[२]--वि० [सं०] जिसका मुँह सूई की तरह पतला और नुकीला हो।

सूच्याह्व--संज्ञा पुं० [सं०] शिरियारी। सितिवर। सुनिषण्णक शाक।

सूछम(५)--वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'।

यौ०--सूछमतर।

सूछमतर(५)--वि० [सं० सूक्ष्मतर] अत्यंत सूक्ष्म। उ०--किधौं वासुकी बंधु वासु कीनो रथ ऊपर। आदि शक्ति की शक्ति किधौं सोहति सूछमतर।--गिरिधर (शब्द०)।

सूछिम(५)--वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सक्ष्म'। उ०--जाके जैसी पीर है तैसी करइ पुकार। को सूछिम को सहज में को मिरतक तेहि बार।--दादू (शब्द०)।

सूगंध--संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध] सुगंध। खुशबू। (डिं०)।

सूज(५)[१]--संज्ञा स्त्री० [हिं० सूझ] दे० 'सूझ'। उ०--मन माँही सब सूज ज राखै, बाहरि के बंधन सब नाषै।--रामानंद०, पृ० ५३।

सूज(५)[२]--संज्ञा पुं० [सं० सूच (= दर्भांकुर)] सूजा का लघु रूप। सूई।

सूज[३]--संज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] दे० 'सूजन'।

सूजन--संज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] १. सूजने की क्रिया या भाव। २. सूजने की अवस्था। फुलाव। शोथ।

सूजना[१]--क्रि० अ० [फ़ा० सोजिश, तुल० सं० शोथ] रोग, चोट या वातप्रकोप आदि के कारण शरीर के किसी अंश का फूलना। शोथ होना।

सूजना(५)[२]--क्रि० अ० [हिं० सूझना] सूझना। दिखाई देना। उ०--गुरुदेव बिना नहि मारग सूजय, गुरु बिन भक्ति न जानै।--सुंदर ग्रं०, भा० १ (भू०), पृ० ११७।

सूजनी--संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सुजनी'।

सूजा--संज्ञा पुं० [सं० सूची, हिं० सूई, सूजी] १. बड़ी मोटी सूई। सूआ। उ०--तन कर गुन औ मन कर सूजा सब्द परोहन भारत।--कबीर श०, भा० ३, पृ० १०। २. लोहे का एक औजार जिसका एक सिरा नुकीला और दूसरा चिपटा और छिदा हुआ होता है। इससे कूचबंद लोग कूँचे को छेदकर बाँधते हैं। ३. रेशम फेरनेवालों का सूजे के आकार का लोहे का एक औजार जो 'मझेरू' में लगा रहता है। ४. खूँटा जो छकड़ा गाड़ी के पीछे की ओर उसे टिकाने के लिये लगाया जाता है।

सूजाक--संज्ञा पुं० [फ़ा० सूज़ाक] मूत्रेंद्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग जो दूषित लिंग और योनि के संसर्ग से उत्पन्न होता है। औपसर्गिक प्रमेह।

विशेष--इस रोग में लिंग का मुँह और छिद्र सूज जाता है; ऊपर की खाल सिमट जाती है तथा उसमें खुजली और पीड़ा होती है। मूत्रनाली में बहुत जलन होती है और उसे दबाने से सफेद रंग का गाढ़ा और लसीला मवाद निकलता है। यह पहली अवस्था है। इसके बाद मूत्रनाली में घाव हो जाता है, जिससे मूत्रत्याग करने के समय अत्यंत कष्ट और पीड़ा होती है। इंद्रिय के छेद में से पीब के समान पीला गाढ़ा या कभी कभी पतला स्राव होने लगता है। शरीर के भिन्न भिन्न अंगों में पीड़ा होने लगती है। कभी कभी पेशाब बंद हो जाता है या रक्तस्राव होने लगता है। स्त्रियों को भी इससे बहुत कष्ट होता है, पर उतना नहीं जितना पुरुषों को होता है। इसका प्रभाव गर्भाशय पर भी पड़ता है जिससे स्त्रियाँ बंध्या हो जाती हैं।

सूजी[१]--संज्ञा स्त्री० [सं० शुचि (= शुद्ध) या सं० सूची (= सूई सा महीन)] गेहूँ का दरदरा आटा जो हलुआ, लड्डू तथा दूसरे पकवान बनाने के काम में आता है।

सूजी[२]--संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] १. सूई। उ०--ता दिन सों नेह भरे, नित मेरे गेह आइ गूथन न देत कहै मैं ही देऊँगी बनाय। बरज्यो न मानै केहू मोहि लागै डर यही कमल से कर कहूँ सूजी मति गड़ि जाय।--काव्यकलाप (शब्द०)। २. वह सूआ जिससे गड़ेरिए लोग कंबल की पट्टियाँ सीते हैं।

सूजी[३]--संज्ञा पुं० [सं० सूची] कपड़ा सीनेवाला। दरजी। सूचिक। उ०--एक सूजी ने आप दडंवत कर खड़े होकर जोड़ के कहा, महाराज! ......दया कर कहिए तो बागे पहराऊँ।--लल्लू (शब्द०)।

सूजी[४]--संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का सरेस जो माँड़ और चूने के मेल से बनता है और बाजों के पुर्जे जोड़ने के काम में आता है।

सूझ--संज्ञा स्त्री० [हिं० सूझना] १. सूझने का भाव। २. दृष्टि। नजर।

यौ०--सूझबूझ = समझ। अक्ल।

३. मन में उत्पन्न होनेवाली अनूठी कल्पना। उद्भावना। उपज। जैसे--कवियों की सूझ।

सूझना--क्रि० अ० [सं० संज्ञान] १. दिखाई देना। देख पड़ना। प्रत्यक्ष होना। नजर आना। जैसे,--हमें कुछ नहीं सूझ पड़ता। उ०—आँखि न जो सूझत न कानन तैं सुनियत केसोराइ जैसे तुम लोकन में गाये हो।—केशव (शब्द०)। २. ध्यान में आना। खयाल में आना। जैसे,—(क) इतने में उसे एक ऐसी बात सूझी जो मेरे लिये असंभव थी। (ख) उसे कोई बात ही नहीं सूझती। उ०--असमंजस मन को मिटै सो उपाइ न सूझै।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०--देना।--पड़ना।

३. छुट्टी पाना। मुक्त होना। उ०—राजा लियो चोर सों गोला। गोला देत चोर अस बोला। जो महि जनम कियों मैं चोरी। दहै दहन तौ मोरि गदोरी। अस कहि सो गोला दै सूझ्यौ। साहु सिपाही सों द्रुत बूझ्यौ।--रघुराज (शब्द०)।

सूझबूझ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूझना+बूझना] देखने और समझने की शक्ति। समझ। अक्ल।

सूझा—संज्ञा पुं० [देश०] फारसी संगीत में एक मुकाम (राग) के पुत्र का नाम।

सूट—संज्ञा पुं० [अं०] १. पहनने के सब कपड़े, विशेषतः कोट और पतलून आदि। उ०—तन अँगरेजी सूट, बूट पग, ऐनक नैनन।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० १४।

यौ०—सूटकेस।

२. दावा। नालिश। जैसे,—उसने हाईकोट में तुमपर सूट दायर किया है।

सूटकेस—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का चिपटा बक्स जिसमें पहनने के कपड़े रखे जाते हैं।

सूटना(पु) —क्रि० स० [देश०] चलाना। फेकना। उ०—हथियारन सूटैं नेकु न हूटैं खलदल कूटैं लपटि लरैं।—पद्माकर ग्रं०, पृ० २७।

सूटा—संज्ञा पुं० [अनु०] मुँह से तंबाकू, चरस या गाँजे का धूँआ जोर से खींचना।

क्रि० प्र०--मारना।—लगाना।

सूटन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शुक, प्रा० सुअ+ट (प्रत्य०); राज० सूट, सूड़ा, सूओ, सूअड़ो, सूवटो, सूअटो] सुग्गा। तोता। शुक। उ०—पाँच डार सूटन की आई, उतरे खेत मझारे।--कबीर श०, भा०, पृ० ३५।

सूठरी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] भूसा। सठुरी।

सूड़—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ड] दे० 'सूँड़'।

सूड़ा, सूडो(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शुक] शुक पक्षी। तोता। उ०—(क) सुणि सूड़ा सुंदरि कहय, पंखी पड़गन पालि।—ढोला०, दू० ३९७। उ०—(ख) साल्ह कुँवर सूड़उ कहइ मालवणी मुख जोइ।--ढोला०, दू० ४०२।

सूत[१]—संज्ञा पुं० [सं० सूत्र, प्रा० सुत्त, हिं० सूत] १. रूई, रेशम आदि का महीन तार जिससे कपड़ा बुना जाता है। तंतु। सूत्र।

क्रि० प्र०—कातना।

मुहा०—सूत सूत = जरा जरा। तनिक तनिक। सूत बराबर = बहुत सूक्ष्म। बहुत महीन।

२. रूई का बटा हुआ तार जिससे कपड़ा आदि सीते हैं। तागा। धागा। डोरा। सूत्र। ३. बच्चों के गले में पहनने का गंडा। ४. करधनी। उ०—कुंजगृह मंजु मधु मधुप अमंद राजैं तामैं कालिह स्यामैं विपरीत रति राची री। द्विजदेव कीर कीलकंठ की धुनि जैसी तैसियै अभूत भाई सूत धुनि माची री।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—पहनना।

५. नापने का एक मान। इमारती गज।

विशेष—चार सूत की एक पइन, चार पइन का एक तसू, और चौबीस तसू का एक इमारती गज होता है।

६. पत्थर पर निशान डालने की डोरी।

विशेष--संगतराश लोग इसे कोयला मिले हुए तेल में डुबाकर इससे पत्थर पर निशान कर उसकी सीध में पत्थर काटते हैं।

७. लकड़ी चीरने के लिये उस पर निशान डालने की डोरी।

मुहा०—सूत धरना = निशान करना। रेखा खींचना। बढ़ई लोग जब किसी लकड़ी को चीरने लगते हैं, तब सीधी चिराई के लिये सूत को किसी रंग में डुबाकर उससे उस लकड़ी पर रेखा करते हैं। इसी को सूत धरना कहते हैं। उ०—मनहुँ भानु मंडलहि सवारत, धरयो सूत विधिसुत विचित्र मति।—तुलसी (शब्द०)।

सूत[२]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूती] १. एक वर्णसंकर जाति, मनु के अनुसार जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय के औरस और ब्राह्मणी के गर्भ से है और जिसकी जीविका रथ हाँकना था। २. रथ हाँकनेवाला। सारथि। उ०—कर लगाम लै सूत धूत मजबूत बिराजत। देखि बृहदरथपूत सुरथ सूरज रथ लाजत।—गि० दास (शब्द०)। ३. बंदी जिनका काम प्राचीन काल में राजाओं का यशोगान करना था। भाट। चारण। उ०—(क) मागध सूत और बंदीजन ठौर ठौर यश गायो।—सूर (शब्द०)। (ख) बहु सूत मागध बंदिजन नृप बचन गुनि हरषित चले।—रामाश्वमेध (शब्द०)। ४. पुराणवक्ता। पौराणिक। उ०—बाँचन लागे सूत पुराणा। मागध वंशावली बखाना।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—सबसे अधिक प्रसिद्ध सूत लोमहर्षण हुए हैं, जो वेदव्यास के शिष्य थे और जिन्होंने नैमिषारण्य में ऋषियों को सब पुराण सुनाए थे।

५. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। ६. बढ़ई। सूत्रकार। ७. सूर्य। ८. पारा। पारद। ९. संजय का एक नाम (को०)। १०. क्षत्रिया स्त्री में उत्पन्न वैश्य का पुत्र (को०)।

सूत[३]—वि० १. प्रसूत। उत्पन्न। उ०—राम नहीं, काम के सूत कहलाए।—अपरा, पृ० २०२। २. प्रेरणा किया हुआ। प्रेरित।

सूत⁴—संज्ञा पुं० [सं० सूत्र] थोड़े अक्षरों या शब्दों में ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकाशित करता हो। उ०—केहि विधि करिय प्रबोध सकल दरसन अरुझाने। सूत सूत मँह सहस सूत किय फल न सुझाने।—सुधाकर (शब्द०)।

सूत†⁵—वि० [सं० सूत्र (=सूत)] भला। अच्छा। उ०—करमहीन बाना भगवान। सूत कुसूत लियो पहिचान।—कबीर (शब्द०)।

सूत⑤⁶—संज्ञा पुं० [सं० सुत] दे० 'सुत'। उ०—(क) कभुवक मेरा मित्र है कभुवक मेरा सूत।—सहजो० बानी, पृ० २३। (ख) उठ्यो सोच कै मनहिं मैं लग्यो आइ धौं भूत। यहै बिचारत हूँ तदपि नृप न लहेहु सुख सूत।—पद्माकर (शब्द०)।

सूतक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. जन्म। २. अशौच जो संतान होने पर परिवारवालों को होता है। जननाशौच। ३. मरणाशौच जो परिवार में किसी के मरने पर होता है। ४. सूर्य या चंद्रमा का ग्रहण। उपराग।

क्रि० प्र०—छूटना।—लगना।

सूतक²—संज्ञा पुं० पारा। पारद।

सूतकगेह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकागार'।

सूतकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] रथ हाँकने का काम [को०]।

सूतका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसने अभी हाल में प्रसव किया हो। सद्यःप्रसूता। जच्चा।

सूतकागृह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकागार'।

सूतकादिलेप—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में फिरंग वात पर लगाने का एक लेप।

विशेष—इस लेप में पारा, हिंगुल, हीरा कसीस तथा आँवलासार गंधक पड़ती है। इसके बनाने की विधि यह है कि उक्त चीजें शुद्ध करके खरल की जाती हैं। अनंतर सूखी बुकनी या पानी आदि में भिगोकर फिरंग वात पर लगाई जाती है।

सूतकान्न—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह खाद्य पदार्थ जो संतानजन्म के कारण अशुद्ध हो जाता है। २. सूतकी के घर का भोजन।

सूतकाशौच—संज्ञा पुं० [सं०] वह अशौच जो संतान होने पर होता है। जननाशौच।

सूतकी—वि० [सं० सूतकिन्] १. घर या परिवार में संतानजन्म के कारण जिसे अशौच लगा हो। २. परिवार में किसी की मृत्यु होने के कारण जिसे सूतक लगा हो।

सूतग्रामणी—संज्ञा पुं० [सं०] गाँव का मुखिया।

सूतज—संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्ण। २. संजय (को०)।

सूततनय—संज्ञा पुं० [सं०] १. संजय। २. कर्ण।

विशेष—अधिरथ सारथि ने कर्ण को पाला था; इसीलिये कर्ण सूततनय या सूतपुत्र कहलाते हैं।

सूतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूत का भाव, धर्म या कार्य। २. सारथि का कार्य।

सूतदार पगरना—संज्ञा पुं० [हिं० सूतदार+पगरना] सोने या चाँदी के नक्काशों की एक छनी जो तराशने के काम में आती है।

सूतधार⑤—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रधार, हिं० सुतधार, सूतधार] बढ़ई। उ०—अगर चंदन को पालनो गढ़ई गुर ढार सुढार। लै आयौ गढ़ि ढोलनो विसकर्मा सो सूतधार।—सूर (शब्द०)।

सूतनंदन—संज्ञा पुं० [सं० सूतनन्दन] १. उग्रश्रवा। २. कर्ण। ३. संजय का एक नाम।

सूतना—क्रि० अ० [सं० शयन] दे० 'सोना'। उ०—(क) सूते सपने ही सहै संसृत संताप रे।—तुलसी (शब्द०) (ख) श्री रघुनाथ वशिष्ठ ते कह्यो स्वप्न के माहिं। देखत हौं मैं दशमुखैं भयवश सूतत नाहिं।—विश्राम (शब्द०)। (ग) मोर तोर में सबै बिगूता। जननी उदर गर्भ महँ सूता।—कबीर (शब्द०)।

सूतपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. सारथि का पुत्र। २. सारथि। ३. कर्ण। ४. विराट का साला जिसका वध भीम ने किया था। कीचक। ५. संजय।

सूतपुत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] कर्ण।

सूतफूल—संज्ञा पुं० [हिं० सूत+फूल] महीन आटा। मैदा। (क्व०)।

सूतराज—संज्ञा पुं० [सं०] पारा। पारद।

सूतरी⑤—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूत] दे० 'सुतरी'।

सूतलड़—संज्ञा पुं० [हिं० सूत+लड़] अरहट। रहँट।

सूतवशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गाय जो एक बियान के बाद बच्चा न जने।

सूतसव—संज्ञा पुं० [सं०] एक दिन में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

सूतहार—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रधार] बढ़ई। सूतधार। उ०—विसकर्मा सूतहार रच्यौ काम ह्वै सुनार, मनिगन लागे अपार काज महर छेया।—सूर०, १०।४१।

सूता¹—संज्ञा पुं० [सं० सूत्र] १. कपास, रेशम, आदि का तार जिसमे कपड़ा बुना जाता है। तंतु। सूत। २. एक प्रकार का भूरे रंग का रेशम जो मालदह (बंगाल) से आता है। ३. जूते में वह बारीक चमड़ा जिसमें ढूक का पिछला हिस्सा आकर मिलता है। (चमार)।

सूता²—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसने बच्चा जना हो। प्रसूता।

सूता³—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ति] वह सीपी जिससे डोडे में की अफीम काछते हैं।

सूतार⑤—वि० [सं० सुतार] १. चमकीला। २. सुंदर पुतलियोंवाला। उ०—एक गोरी दूजी साँमली। राई भतीजी नयण सूतार।—वी० रासो, पृ० ८८।

सूति⑤¹—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] याद। सुधि। उ०—पंच संगी पिव पिव करैं छठा जु सुमिरै मंन। आई सूति कबीर की पाया राम रतंन।—कबीर ग्रं०, पृ० ५।

सूति²—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जन्म। २. प्रसव। जनन। ३. उत्पत्ति का स्थान या कारण। उद्गम। ४. फल या फसल की उत्पत्ति। पैदावार। ५. वह स्थान जहाँ सोमरस निकाला जाता था। ६. सोमरस निकालने की क्रिया। ७. सीना। सीवन। (क्व०)।

सूति³—संज्ञा पुं० [सं०] १. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। २. हंस।

सूतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चा जना हो। सद्यःप्रसूता। जच्चा। २. वह गाय जिसने हाल में बछड़ा जना हो। ३. दे० 'सूतिका रोग'।

सूतिका काल—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसव का समय। जननकाल।

सूतिकागार—संज्ञा पुं० [सं०] वह कमरा या कोठरी जिसमें स्त्री बच्चा जने। सौरी। प्रसवगृह। अरिष्ट।

विशेष—वैद्यक के अनुसार सूतिकागार आठ हाथ लंबा और चार हाथ चौड़ा होना चाहिए तथा इसके उत्तर और पूर्व की ओर द्वार होने चाहिए।

सूतिकागृह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकागार'।

सूतिकागेह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकागार'।

सूतिकाभवन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकागार'।

सूतिकामारुत—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसव की पीड़ा [को०]।

सूतिकारोग—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसूता को होनेवाले रोग।

विशेष—वैद्यक के अनुसार सूतिकारोग अनुचित आहार विहार, क्लेश, विषमासन तथा अजीर्णावस्था में भोजन करने से होते हैं। प्रसूता के अंगों का टूटना, अग्निमांद्य, निर्बलता, शरीर का काँपना, सूजन, ग्रहणी, अतिसार, शूल, खाँसी, ज्वर, नाक, मुँह से कफ निकलना आदि सूतिकारोग के लक्षण हैं।

सूतिकाल—संज्ञा पुं० [सं०] प्रसव करने या बच्चा जनने का समय।

सूतिकावल्लभ रस—संज्ञा पुं० [सं०] सूतिकारोग की एक औषध।

विशेष—यह रस पारे, गंधक, सोने, चाँदी, स्वर्णमाक्षिक, कपूर, अभ्रक, हरताल, अफीम, जावित्री और जायफल के संयोग से बनता है। ये सब चीजें बराबर बराबर लेकर इनमें मोथे, खिरैंटी और मोचरस की भावना दी जाती है। अनंतर दो दो रत्ती की गोलियाँ बनाई जाती हैं। वैद्यक के अनुसार इसके सेवन से सूतिकारोग शीघ्र दूर हो जाता है।

सूतिकावास संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकागार'।

सूतिकाषष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] संतान के जन्म से छठे दिन होनेवाली पूजा तथा अन्य कृत्य। छठी।

सूतिकाहर रस—संज्ञा पुं० [सं०] सूतिकारोग का एक औषध।

विशेष—इस रस के निर्माण में हिंगुल, हरताल, शंखभस्म, लौह, खर्पर, धतूरे के बीज, यवक्षार और सुहागे का लावा बराबर बराबर पड़ता है। इन चीजों में बहेड़े के क्वाथ की भावना देकर मटर के बराबर गोली बनाते हैं। कहते हैं, इसके सेवन से सूतिकारोग दूर हो जाता है।

सूतिगा—संज्ञा पुं० [सं० सूतक] दे० 'सूतक'।

सूतिगृह—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकागार'।

सूतिमारुत—संज्ञा पुं० [सं०] बच्चा जनने की समय की पीड़ा। प्रसव-पीड़ा।

सूतिमास—संज्ञा पुं० [सं०] वह मास जिसमें किसी स्त्री को संतान उत्पन्न हो। प्रसवमास। वैजनन।

सूतिरोग—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिकारोग' [को०]।

सूतिवात—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिमारुत'।

सूती¹—वि० [हिं० सूत + ई (प्रत्य०)] सूत का बना हुआ। जैसे—सूती कपड़ा। सूती गलीचा।

सूती²—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति प्रा० सुत्ति] १. सीपी। उ०—सूती में नहिं सिंधु समाई।—विश्राम (शब्द०)। २. वह सीपी जिससे डोडे में की अफीम काछते हैं।

सूती³—संज्ञा स्त्री० [सं० सूत] सूत की पत्नी। भाटिन।

सूतीगृह—संज्ञा पुं० [सं०] बच्चा होने का स्थान। प्रसवगृह। उ०—अखुटत परत, सुविह्वल भयौ। डरत डरत सूतीगृह गयौ।—नंद० ग्रं०, पृ० २३१।

सूतीघर—संज्ञा पुं० [हिं० सूती + घर] दे० 'सूतीगृह'।

सूतीमास—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूतिमास'।

सूत्कार—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सीत्कार'।

सूत्तर—वि० [सं०] १. बहुत श्रेष्ठ। बहुत बढ़कर। २. माकूल या उचित (जवाब)। ३. अत्यंत उत्तर। धुर उत्तर [को०]।

सूत्थान¹—वि० [सं०] चतुर। होशियार।

सूत्थान²—संज्ञा पुं० सम्यक् उत्थान या चेष्टा [को०]।

सूत्पर—संज्ञा पुं० [सं०] शराब चुवाने की क्रिया। सुरासंधान।

सूत्पलावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

सूत्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सुत्य'।

सूत्यशौच—संज्ञा, पुं० [सं०] 'सूतकाशौच' [को०]।

सूत्याशौच—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. यज्ञ के उपरांत होनेवाला स्नान। अवभृत। २. सोमरस निकालने की क्रिया। ३. सोमरस पीने की क्रिया।

सूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूत। तंतु। तार। तागा। डोरा। २. यज्ञसूत्र। यज्ञोपवीत। जनेऊ। ३. प्राचीन काल का एक मान। ४. रेखा। लकीर। ५. करधनी। कटिभूषण। ६. नियम। व्यवस्था। ७. थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करता हो। सारगर्भित संक्षिप्त पद या वचन। जैसे,—ब्रह्मसूत्र, व्याकरणसूत्र।

विशेष—हमारे यहाँ के दर्शन आदि शास्त्र तथा व्याकरण सूत्र रूप में ही ग्रथित हैं। ये सूत्र देखने में तो बहुत छोटे वाक्यों के रूप में होते हैं, पर उनमें बहुत गूढ़ अर्थ गर्भित होते हैं।

८. सूत्र रूप में रचित ग्रंथ। जैसे, अष्टाध्यायी, गृह्यसूत्र आदि (को०)। ९. कारण। निमित्त। मूल। १०. पता। सुराग। संकेत। ११. एक प्रकार का वृक्ष। ११. सूत का ढेर (को०)। १२. योजना। १३. तंतु। रेशा। जैसे, मृणालसूत्र (को०)। १४. कठपुतली में लगी हुई वह डोरी जिसके आधार पर उन्हें नचाते हैं (को०)।

सूत्रकंठ—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकण्ठ] १. ब्राह्मण।

विशेष—सूत्र कंठस्थ रहने के कारण अथवा गले में यज्ञसूत्र पहनने के कारण ब्राह्मण सूत्रकंठ कहलाते हैं।

२. कबूतर। कपोत। ३. खंजन। खंजरीट।

सूत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूत। तंतु। तार। २. हार। ३. आटे या मैदे की बनी हुई सेवईं। ४. कौटिल्य के अनुसार लोहे के तारों का बना हुआ कवच।

सूत्रकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकर्त्तृ] सूत्रग्रंथ का रचयिता। सूत्रों का प्रणेता।

सूत्रकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकर्मन्] १. बढ़ई का काम। २. मेमार या राज का काम।

सूत्रकर्मकृत—संज्ञा पुं० [सं०] १.। २. गृहनिर्माणकारी। वास्तुशिल्पी। मेमार। राज।

सूत्रकार—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसने सूत्रों की रचना की हो। सूत्रों का रचयिता। २. बढ़ई। ३. जुलाहा। तंतुवाय। ४. मकड़ी।

सूत्रकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूत्रों का रचयिता। सूत्रकार। २. बढ़ई। ३. मेमार। राज।

सूत्रकोण—संज्ञा पुं० [सं०] डमरू।

सूत्रकोणक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूत्रकोण'।

सूत्रकोश—संज्ञा पुं० [सं०] सूत की अंटी। पेचक। लच्छा।

सूत्रक्रीडा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का सूत का खेल, जो ६४ कलाओं में से एक है।

सूत्रगंडिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रगण्डिका] एक प्रकार का लकड़ी का औजार जिसका उपयोग प्राचीन काल में तंतुवाय लोग कपड़ा बुनने में करते थे।

सूत्रग्रंथ—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रग्रन्थ] सूत्र रूप में रचित ग्रंथ। वह ग्रंथ जो सूत्रों में हो। जैसे—सांख्यसूत्र।

सूत्रग्रह—वि० [सं०] सूत धारण या ग्रहण करनेवाला।

सूत्रग्राही—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रग्राहिन्] राजगीर। वास्तुशिल्पी [को०]।

सूत्रण—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूत्र बनाने या रचने की क्रिया। २. सूत बटने की क्रिया। सूत्र बटने का काम। ३. क्रमबद्ध या सिलसिले से सजाना (को०)।

सूत्रतंतु—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रतन्तु] १. सूत। तार। २. अध्यवसाय। शक्ति [को०]।

सूत्रतर्कुटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] तकला। टेकुआ।

सूत्रदरिद्र—वि० [सं०] (वस्त्र) जिसमें सूत कम हो। सूत्रहीन। झँझरा। झिल्लड़।

सूत्रधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो सूत्रों का पंडित हो। २. दे० 'सूत्रधार'—१। उ०—विधि हरि वंदित पाय, जग नाटक के सूत्रधर। —शंकर दि० (शब्द०)।

सूत्रधर[२]—वि० सूत्र या सूत धारण करनेवाला।

सूत्रधार—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट, जो भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार, पूर्वरंग अर्थात् नांदीपाठ के उपरांत खेले जानेवाले नाटक की प्रस्तावना करता है। विशेष दे० 'नाटक'। २. बढ़ई। सुतार। काष्ठशिल्पी। ३. इंद्र का एक नाम। ४. पुराणानुसार एक वर्णसंकर जाति जो लकड़ी आदि बनाने और चीरने या गढ़ने का काम करती है।

विशेष—ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार इस जाति की उत्पत्ति शूद्रा माता और विश्वकर्मा पिता से है।

सूत्रधारी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूत्रधार अर्थात् नाट्यशाला के व्यवस्थापक की पत्नी। नटी।

सूत्रधारी[२]—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रधारिन्] सूत्र धारण करनेवाला।

सूत्रधृक्—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० 'सूत्रधार'। २. वास्तुशिल्पी। मेमार। राज।

सूत्रपदी—वि० स्त्री० [सं०] सूत के से अर्थात् पतले पैरोंवाली [को०]।

सूत्रपात—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रारंभ। शुरू। जैसे,—इस काम का सूत्रपात हो गया। २. नापना। मापना (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

सूत्रपिटक—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध सूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह (पाली० सुत्तपिटक)। विशेष दे० 'त्रिपिटक'।

सूत्रपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] कपास का पौधा।

सूत्रप्रोत—वि० [सं०] सूत से ग्रथित या बद्ध [को०]।

सूत्रबद्ध—वि० [सं०] १. दे० 'सूत्रप्रोत'। २. सूत्र के रूप में लिखित वा रचित (को०)।

सूत्रभिद्—संज्ञा पुं० [सं०] कपड़े सीनेवाला। दरजी।

सूत्रभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूत्रधार'।

सूत्रमध्यभू—संज्ञा पुं० [सं०] यक्षधूप। शल्लकी निर्यास। कुंदुरु। धूना।

सूत्रयंत्र—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रयन्त्र] १. करघा। २. ढरकी। भरनी। ३. सूत का बना जाल।

सूत्रयी—वि० [सं० सूत्र] सूत्र जानने या रचनेवाला। उ०—त्रिवेदः त्रिकालः त्रयी वेदकर्त्ता। त्रिश्रोता कृती सूत्रयी लोकभर्ता।—केशव (शब्द०)।

सूत्रला—संज्ञा स्त्री० [सं०] तकला। टेकुवा।

सूत्रवान कर्मांत—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रवान कर्मान्त] कपड़ा बुनने का कारखाना।

विशेष—चंद्रगुप्त के समय में राज्य अपनी ओर से इस ढंग के कारखाने खड़ा करता था और लोगों को मजदूरी देकर उनसे काम लेता था।

सूत्रवाप—संज्ञा पुं० [सं०] सूत बुनने की क्रिया। वपन। बुनाई।

सूत्रविद्—संज्ञा पुं० [सं०] सूत्रों का ज्ञाता या पंडित।

सूत्रवीणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा जिसमें तार की जगह बजाने के लिये सूत्र लगे रहते थे।

सूत्रवेष्टन—संज्ञा पुं० [सं०] १. करघा। ढरकी। २. बुनने की क्रिया। वयन। बुनना। ३. सूत का बंधन।

सूत्रशाख--संज्ञा पुं० [सं०] शरीर।

सूत्रशाला--संज्ञा स्त्री० [सं०] सूत कातने या इकट्ठा करने का कारखाना।

विशेष--चंद्रगुप्त के समय में यह नियम था कि जो स्त्रियाँ बड़े तड़के अपना काता हुआ सूत सूत्रशाला में ले जाती थीं, उनको उसी समय उसका मूल्य मिल जाता था। इस प्रकार स्त्रियों की जीविका का उपयुक्त प्रबंध हो जाता था।

सूत्रसंग्रह-- संज्ञा पुं० [सं० सूत्रसङ्ग्रह] १. वह व्यक्ति जो लगाम पकड़ता है। अश्व के निश्चित स्थान पर रुकने के समय बागडोर को थामनेवाला जिससे सवार नीचे उतर सके। २. सूत्रों का संग्रह (को०)।

सूत्रस्थान--संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत का प्रथम अध्याय जिसमें शरीर और रोगादि का विवरण है [को०]।

सूत्रांग--संज्ञा पुं० [सं० सूत्राङ्ग] उत्तम काँसा।

सूत्रांत--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रान्त] बौद्ध सूत्र।

सूत्रांतक--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रान्तक] बौद्ध सूत्रों का ज्ञाता या पंडित।

सूत्रा--संज्ञा स्त्री० [सं० सूत्रकार] मकड़ी। (अनेकार्थ०)।

सूत्रात्मा--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रात्मन्] १. जीवात्मा। २. एक प्रकार की परम सूक्ष्म वायु जो धनंजय से भी सूक्ष्म कही गई है।

सूत्राध्यक्ष--संज्ञा पुं० [सं०] कपड़ों के व्यापार का अध्यक्ष।

सूत्रामा--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रामन्] इंद्र का एक नाम।

सूत्राली--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माला। हार। २. गले में पहनने की मेखला।

सूत्रिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हार। सूत्रक। २. सेवईं [को०]।

सूत्रित--वि० [सं०] १. सूत्र रूप में कथित या रचित। २. सूत से युक्त। ३. सिलसिलेवार लगाया हुआ [को०]।

सूत्री[१]--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रिन्] [वि० स्त्री० सूत्रिणी] १. कौआ। काक। २. दे० 'सूत्रधार'।

सूत्री[२]--वि० १ सूत्रयुक्त। जिसमें सूत्र हो। २. क्रम से युक्त। नियमयुक्त। सिलसिलेवार (को०)।

सूत्रीय वि० [सं०] सूत्र संबंधी। सूत्र का।

सूथन[१]--संज्ञा स्त्री० [देश०] पायजामा। सुथना। उ०--बेनी सुभग नितंबनि डोलत मंदगामिनी नारी। सूथन जघन बाँधि नाराबँद तिरनी पर छबिभारी।--सूर (शब्द०)।

सूथन[२]--संज्ञा पुं० बरमा, स्याम और मणिपुर के जंगलों में होनेवाला एक प्रकार का पेड़।

विशेष--इसकी लकड़ी बहुत अच्छी होती है और इसका रस बारनिश का काम देता है। इसे 'खेऊ' भी कहते हैं।

सूथनी--संज्ञा स्त्री० [देश०] १. स्त्रियों के पहनने का पायजामा। सुथना। २. एक प्रकार का कंद।

सूथार†--संज्ञा पुं० [सं० सूत्रकार प्रा० सुत्त+आर, पुं०हिं० सुतार] बढ़ई। सुतार। खाती। उ०--जब बोल्यो वीदो सूथारू। है स्वामी की गती अपारू।--राम० धर्म०, पृ० ३६५।

सूद[१]--संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. लाभ। फायदा। २. ब्याज। वृद्धि।

क्रि० प्र०--चढ़ना।--देना।--पाना।--लगना।--लेना।--होना।

मुहा०--सूद दर सूद = ब्याज पर ब्याज। चक्रवृद्धि। सूद पर लगाना = सूद लेकर रुपया उधार देना।

सूद[२]--संज्ञा पुं० [सं०] १ रसोइया। सूपकार। पाचक। २. पकी हुई दाल, रसा, तरकारी, आदि। ३. सारथि का काम। सारथ्य। ४. अपराध। पाप। ५. दोष। ऐब। ६. एक प्राचीन जनपद का नाम। ७. लोध्र। लोध। ८. विध्वंस। विनाश (को०)। ९. कूप। कुआँ (को०)। १०. कीचड़। कर्दम (को०)। ११. व्यंजन। १२. स्रोत। चश्मा। झरना (को०)। १३. गिराना। चुआना। ढालना (को०)।

सूदक--वि० [सं०] विनाश करनेवाला।

सूदकर्म--संज्ञा पुं० [सं० सूदकर्मन्] रसोइए का काम। रंधन। पाकक्रिया। भोजन बनाना।

सूदकशाला--संज्ञा स्त्री० [सं० सूदशाला] रसोईघर। पाकशाला। (डिं०)।

सूदखोर--संज्ञा पुं० [फ़ा० सूदख़ोर] वह जो खूब सूद या ब्याज लेता हो।

सूदखोरी--संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सूदखोरी] सूदखोर का काम। सूद या ब्याज का कारोबार [को०]।

सूदता--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूदत्व'।

सूदत्व--संज्ञा पुं० [सं०] सूद या रसोइए का पद या काम। रसोईदारी।

सूदन[१]--वि० [सं०] [वि० स्त्री० सूदनी] १. विनाश करनेवाला। जैसे--मधुसूदन। रिपुसूदन। उ०--नमो नमस्ते बारंबार। मदन सूदन गोबिंद मुरार।--सूर (शब्द०)। २. प्यारा। प्रिय (को०)।

सूदन[२]--संज्ञा पुं० १. बध या विनाश करने की क्रिया। हनन। २. अंगीकार या स्वीकार करने की क्रिया। अंगीकरण। ३. फेंकने की क्रिया। ४. हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो मथुरा के रहनेवाले थे और जिनका लिखा 'सुजानचरित्र' वीर रस का एक प्रसिद्ध काव्य है।

सूदना(पु)--क्रि० स० [सं० सूदन] नाश करना। उ०--मुदित मन वर बदन सोभा उदित अधिक उछाहु। मनहुँ दूरि कलंक करि ससि समर सूद्यो राहु।--तुलसी (शब्द०)।

सूदर†--संज्ञा पुं० [सं० शूद्र] शूद्र। (डिं०)।

सूदशाला--संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ भोजन बनता हो। रसोईघर। पाकशाला।

सूदशास्त्र--संज्ञा पुं० [सं०] भोजन बनाने की कला। पाकशास्त्र।

सूदा--संज्ञा पुं० [देश०] ठगों के गरोह का वह आदमी जो यात्रियों को फुसलाकार अपने दल में ले आता है। (ठग०)।

सूदाध्यक्ष--संज्ञा पुं० [सं०] रसोइयों का मुखिया या सरदार। पाकशाला का अधिकारी।

सूदि--वि० स्त्री० [सं०] दे० 'सूदी'।

सूदित—वि० [सं०] १. आहत। घायल। जख्मी। २. जो नष्ट हो गया हो। विनष्ट। ३. जो मार डाला गया हो। निहत।

सूदितृ[१]—वि० [सं०] वध या विनाश करनेवाला।

सूदितृ[२]—संज्ञा पुं० रसोइया। पाककर्ता। पाचक।

सूदी—वि० [फ़ा० सूद] १. (पूँजी या रकम) जो सूद या ब्याज पर हो। ब्याजू। २. ब्याज पर लिया हुआ (रुपया)।

सूदी[२]—वि० [सं० सूदिन्] उफनकर या ऊपर से बहनेवाला [को०]।

सूद्र—संज्ञा पुं० [सं० शूद्र] दे० 'शूद्र'।

सूध(पु)[१]—वि० [सं० शुद्ध, प्रा० सुध्ध] दे० 'सूधा'। उ०—(क) नाथ करहु बालक पर छोहू। सूध दूधमुख करिय न कोहू।—तुलसी (शब्द०)। (ख) काहु करउँ सखि सूध सुभाऊ। दाहिन वाम न जानउँ काऊ।—तुलसी (शब्द०)।

सूध[२]—वि० दे० 'शुद्ध'। उ०—माया सों मन बीगड़ा ज्यों काँजी करि दूध। है कोई संसार में मन करि देवइ सूध।—दादू (शब्द०)।

सूध[३]—क्रि० वि० सीधा। उ०—दूसर मारग सुनु मन लाई। देश विदर्भ सूध यह जाई।—सबलसिंह (शब्द०)।

सूधना(पु)—क्रि० अ० [सं० शुद्ध] सिद्ध होना। सत्य होना। ठीक होना। उ०—ऐसे सुतहि पिया जो दूधा गुन हरि तासु मनोरथ सूधा।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सूधरा(पु)—वि० [सं० शुद्धतर] दे० 'सूधा'।

सूधा—वि० [सं० शुद्ध] [वि० स्त्री० सूधी] १. सीधा। सरल। भोला। निष्कपट। उ०—को अस दीन दयाल भयो दशरत्थ के लाल से सूधे सुभायन। दौरे गयंद उबारिबे को प्रभु बाहन छोड़ि उबाहने पायन।—पद्माकर (शब्द०)। २. जो टेढ़ा न हो। सीधा। उ०—इमि कहि सबन सहित तब ऊधो। गए नंद गृह गहि मग सूधो।—गिरिधरदास (शब्द०)। ३. इस प्रकार पड़ा हुआ कि मुँह, पेट आदि शरीर का अगला भाग ऊपर की ओर हो। चित। ४. संमुख का। सामने का। उ०—मुदित मन वर वदन सोभा उदित अधिक उछाह। मनहु दूरि कलंक करि ससि समर सूधो राहु।—तुलसी (शब्द०)। ५. जो उलटा न हो। जो ठीक और साधारण स्थिति में हो। ६. जो सीधी रेखा में चला गया हो। जिसमें वक्रता न हो। उ०—सूधी अँगुरि न निकसै घीऊ।—जायसी (शब्द०)।

मुहा—सूधी सूधी सुनाना = खरी खरी कहना। सूधी सहना = खरी खरी सुनना। उ०—कबहूँ फिर पाँव न दैहौं यहाँ भजि जैहौं तहाँ जहाँ सूधी सहौ।—पद्माकर (शब्द०)।

विशेष—और अधिक अर्थों तथा मुहावरों के लिये दे० 'सीधा'।

सूधि—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सुधि'। उ०—तातें इनकों देखि कै श्रीठाकुर जी को श्रीस्वामिनी जी की सूधि आवति हैं।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १०८।

सूधे—क्रि० वि० [हिं० सूधा] सीधे से। उ०—(क) सूधे दान काहे न लेत।—सूर (शब्द०)। (ख) हौं बड़ हौं बड़ बहुत कहावत सूधे कहत न बात। योग न युक्ति ध्यान नहिं पूजा वृद्ध भए अकुलात।—सूर (शब्द०)। (ग) भावै सोतै करि वाको भामिनी भाग बड़े वश चौकड़ि पायो। कान्ह ज्यों सूधे जू चाहत नाहिनै चाहति है अब पाइ लगायो।—केशव (शब्द)।

मुहा०—सूधे सूध = कोरा। साफ साफ। उ०—सूधै सूध जबाब न दीजै।—विश्राम (शब्द०)।

सून[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसव। जनन। २. कली। कलिका। ३. फूल। पुष्प। प्रसून। उ०—चुनते वे मुनि हेतु सून थे।—साकेत, पृ० ३४४। ४. फल। ५. पुत्र। उ०—(क) नंद सून पद लालन लोभै। रमा रसिकिनी पावति छोभै।—घनानंद, पृ० २६४। (ख) श्री बसुदेव सून है नंद कुमार कहावत।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ६१।

सून[२]—वि० १. खिला हुआ। विकसित (पुष्प)। २. उत्पन्न। जात। ३. रिक्त। खाली। शून या शून्य (को०)।

सून(पु)[३]—संज्ञा पुं० [सं० शून्य, प्रा० सुण्ण (सून)] दे० 'शून्य'। उ०—(क) तुलसी निज मन कामना चहत सून कहँ सेइ। बचन गाय सबके विविध कहहु पयस केहि देइ।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नाम राम को अंक है सब साधन है सून। अंक गए कछु हाथ नहिं अंक रहे दस गून।—तुलसी (शब्द०)।

सून[४]—वि० १. निर्जन। जनशून्य। सूना। सुनसान। खाली। उ०—(क) इहाँ देखि घर सून चोर मूसन मन लायो। हीरा हेरि निकारि भवन बाहर धरि आयो।—विश्राम (शब्द०)। (ख) हनहु सक्र हमको एहि काला। अब मोहि लगत जगत जंजाला। नहिं कल बिना शेषपद देखे। बिन प्रभु जगत सून मम लेखे।—रघुराज (शब्द०)। (ग) मँदिर सून पिउ अनतै बसा। सेज नागिनी फिर फिर डसा।—जायसी (शब्द०)। २. रहित। हीन। उ०—निरखि रावण भयावन अपावन महा जानकी हरण करि चलो शठ जात है। भन्यो अति कोप करि हनन की चोप करि लोप करि धर्म अब क्यों न ठहरात है। जानि थल सून नृप सुत रमणी हरी करी करणी कठिन अब न बचि जात है।—रघुराज (शब्द०)।

सून[५]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार पेड़ जो शिमले के आसपास के पहाड़ों पर बहुत होता है। इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और इमारतों में लगती है। इसे 'चिन' भी कहते हैं।

सूनशर—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

सूनसान—वि० [सं० शून्य स्थान] दे० 'सुनसान'। उ०—पर तनक थिर होकर सुनने से ऐसे सूनसान और सन्नाटे में भी किसी की दुःखभरी रुलाई सुनाई पड़ती है।—ठेठ०, पृ० ३२।

सूना[१]—वि० [सं० शून्य] [वि० स्त्री० सूनी] जिसमें या जिसपर कोई न हो। जनहीन। निर्जन। सुनसान। खाली। जैसे—सूना घर, सूना रास्ता, सूना सिंहासन। उ०—(क) जात हुती निज गोकुल में हरि आवै तहाँ लखिकै मग सूना। तासों कहौं पदमाकर यों अरे साँवरौ बावरे तै हमैं छू ना।—पद्माकर

(शब्द०)। (ख) राम कहाँ गए री माता। सून भवन सिंहासन सूनो नाहीं दशरथ ताता।--सूर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—पड़ना।--करना।—होना।

मुहा०— सूना लगना या सूना सूना लगना = निर्जीव मालूम होना। उदास मालूम होना।

सूना२—संज्ञा पुं० [सं० शून्य] एकांत। निर्जन स्थान।

सूना३—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुत्री। बेटी। २. वह स्थान जहाँ पशु मारे जाते हैं। बूचड़खाना। कसाईखाना। ३. मांस का विक्रय। मांस की बिक्री। ४. गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चूल्हा, चक्की, ओखली, घड़ा, झाड़ू में से कोई चीज जिससे जीवहिंसा की संभावना रहती है। विशेष दे० 'पंचसूना'। ५. गलशुंडी। जीभी। ६. हाथी के अंकुश का दस्ता। ७. हत्या। घात। विध्वंसन। ८. प्रकाश की किरण (को०)। ९. नदी। सरिता (को०)। १०. गले की ग्रंथियों का शोथ (को०)। ११. हाथी की सूंड़ (को०)। १२. मेखला। शृंखला (को०)।

यौ०—सूनाध्यक्ष—बूचड़खाने का निरीक्षक। सूनावत् = बूचड़खाने का मालिक।

सूनादोष—संज्ञा पुं० [सं०] चूल्हा, चक्की, ओखली, मूसल, झाड़ू और पानी के घड़े से होनेवाली जीवहिंसा का दोष या पाप। विशेष दे० 'पंचसूना'।

सूनापन—संज्ञा पुं० [हिं० सूना + पन (प्रत्य०)] १. सूना होने का भाव। २. सन्नाटा। एकांत।

सूनिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. मांस बेचनेवाला। व्याध। २. शिकारी। अहेरी (को०)।

सूनी—संज्ञा पुं० [सं० सूनिन्] १. मांस बेचनेवाला। व्याध। बूचड़। २. शिकारी (को०)।

सूनु—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुत्र। संतान। २. छोटा भाई। अनुज। ३. नाती। दौहित्र। ४. एक वैदिक ऋषि का नाम। ५. सूर्य। ६. आक। अर्क वृक्ष। ७. वह जो सोमरस चुवाता हो।

सूनू—संज्ञा स्त्री० [सं०] कन्या। पुत्री। बेटी। लड़की।

सूनृत१—संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्य और प्रिय भाषण (जो जैन धर्मानुसार सदाचरण के पाँच गुणों में से एक है)। २. आनंद। मंगल। कल्याण।

सूनृत२—वि० १. सत्य और प्रिय। २. अनुकूल। दयालु। ३. प्रिय (को०)। ४. सदाशापूर्ण (को०)।

सूनृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्य और प्रिय भाषण। २. सत्य। ३. धर्म की पत्नी का नाम। ४. उत्तानपाद की पत्नी का नाम। ५. एक अप्सरा का नाम। ६. ऊषा (को०)। ७. खाद्य। आहार (को०)। ८. उत्कृष्ट संगीत।

सून्मद—वि० [सं०] दे० 'सून्माद'।

सून्माद—वि० [सं०] जिसे उन्माद रोग हुआ हो। पागल।

सून्यⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शून्य] दे० 'शून्य'। उ० सून्य में जोति जगमग जगाई।—कबीर श०, भा० ४, पृ १६।

सूप१—संज्ञा पुं० [सं०] १. मूँग, मसूर, अरहर आदि की पकी हुई दाल। २. दाल का जूस। रसा। ३. रसे की तरकारी आदि मसालेदार व्यंजन। ४. बरतन। भांड। भाँड़ा। ५. रसोइया। पाचक। ६. वाण। तीर। ७. मसाला।

सूप२—संज्ञा पुं० [सं० शूर्प] अनाज फटकने का बना हुआ पात्र। सरई या सींक का छाज। उ०—(क) देखो अद्भुत अविगति की गति कैसो रूप धरयो है हो। तीन लोक जाके उदरभवन सो सूप के कोन परयो है हो।—सूर (शब्द०)। (ख) राजन दीन्हे हाथी रानिन्ह हार हो। भरिगे रतन पदारथ सूप हजार हो।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—फटकना।

मुहा०—सूपभर = बहुत सा। बहुत अधिक। सूप क्या कहे छलनी को जिसमें नौ सौ छेद = जिसमें खुद ऐब हो वह दूसरे के ऐब एवं बुराई को दूर भगानेवाले से क्या कह सकता है। उ०—सूप क्या कहे छलनी को जिसमें नौ सौ छेद। तुम और हमको ललकारो।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ४७१।

सूप३—संज्ञा पुं० [देश०] १. कपड़े या सन का झाड़ू जिससे जहाज के डेक आदि साफ किए जाते हैं। (लश०)। २. एक प्रकार का काला कपड़ा।

सूपक—संज्ञा पुं० [सं० सूप] रसोइया। उ०—धीर सूर विद्वान् जौ मिष्ट बनावै अन्न। सूपक कीजै ताहि जो पुत्र पौत्र संपन्न।—सीताराम (शब्द०)।

सूपकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सूपकर्तृ] दे० 'सूपकार'।

सूपकार—संज्ञा पुं० [सं०] भोजन बनानेवाला। रसोइया। पाचक। उ०—तहाँ सूपकारन मुनिराई। मुनिन हेत किय पाक बनाई।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

सूपकारीⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सूपकारिन्] दे० 'सूपकार'। उ०—आसन उचित सबहि नृप दीन्हें। बोलि सूपकारी सब लीन्हें।—तुलसी (शब्द०)।

सूपकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूपकार'।

सूपचⓅ—संज्ञा पुं० [सं० श्वपच] दे० 'श्वपच'। उ०—सूपच रस स्वादै का जानै।—विश्राम (शब्द०)।

सूपगंधि—वि० [सं० सूपगन्धि] जिसमें मसाला न हो। सादा (को०)।

सूपचर—वि० [सं०] १. शीघ्र नीरोग होनेवाला। २. शीघ्र आर्द्रचित्त होनेवाला (को०)।

सूपचार—वि० [सं०] दे० 'सूपचर'।

सूपझरना—संज्ञा पुं० [हिं० सूप + झरना] सूप की तरह का सरई का एक बरतन।

विशेष—सूप से इसमें अंतर इतना ही है कि इसमें हर दो सरइयों के बीच में एक सरई नहीं होती जिसके कारण सूप के बीच में ही झरना सा बन जाता है। इससे बारीक अनाज नीचे गिर जाता है और मोटा ऊपर रह जाता है।

सूपट(५)--संज्ञा पुं० [सं० सम्पुट] दे० 'संपुट'। उ०--प्रेम कँवल जल भीतरै, प्रेम भँवर लै बास। होत प्रात सूपट खुलै, भान तेज परगास।--संत० दरिया, पृ० ४३।

सूपड़ा--संज्ञा पुं० [हिं० सूप + डा (प्रत्य०] सूप। छाज।(डिं०)।

सूपतीर्थ--वि० [सं०] दे० 'सूपतीर्थ्य'।

सूपतीर्थ्य--वि० [सं०] स्नान के लिये अच्छी सीढ़ियों से युक्त [को०]।

सूपधूपक--संज्ञा पुं० [सं०] हींग।

सूपधूपन--संज्ञा पुं० [सं०] हींग।

सूपनखा--संज्ञा स्त्री० [सं० शूर्पणखा] दे० 'शूर्पणखा'। उ०--सूपनखा रावण कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जसि अहिनी।--तुलसी (शब्द०)।

सूपना(५)--संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न, प्रा० सुपण, पु०हिं० सुपन] दे० 'सुपना'।उ०--जागत में एक सूपना मुझको पड़ा है देख।--पलटू० पृ० ७।

सूपपर्णी--संज्ञा स्त्री० [सं०] बनमूँग। मुँगवन। मुद्‍गपर्णी।

सूपरस--संज्ञा पुं० [सं०] सूप का स्वाद। रसे का जायका।

सूपशास्त्र--संज्ञा पुं० [सं०] भोजन बनाने की कला। पाकशास्त्र।

सूपश्रेष्ट--संज्ञा पुं० [सं०] मूँग। मुद्‍ग।

सूपसंसृष्ट--वि० [सं०] मसालेदार। मसाले से युक्त।

सूपसास्त्र(५)--संज्ञा पुं० [सं० सूपशास्त्र] पाकशास्त्र। सूदशास्त्र। उ०--भाँति अनेक भई जेवनारा। सूपसास्त्र जस किछु व्यवहारा।--मानस, १।९९।

सूपस्थान--संज्ञा पुं० [सं०] पाकशाला। रसोईघर।

सूपांग--संज्ञा पुं० [सं० सूपाङ्ग] हींग। हिंगु।

सूपा†--संज्ञा पुं० [हिं० सूप] सूप। छाज। शूर्प।

सूपाय--संज्ञा पुं० [सं०] सुंदर ढंग, तरीका या उपाय [को०]।

सूपिक--संज्ञा पुं० [सं०] १. पकी हुई दाल या रसा आदि। २. सूपकार। रसोइया।

सूपीय--वि० [सं०] दे० 'सूप्य'।

सूपोदन--संज्ञा पुं० [सं० सूप + ओदन] दाल और भात। उ०--सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत। छन महुँ सबके परसि ये चतुर सुआर विनीत।--मानस, १।३२८।

सूप्य[१]--वि० [सं०] १. दाल या रसे के लायक। २. सूप संबंधी।

सूप्य[२]--संज्ञा पुं० रसेदार खाद्य पदार्थ।

सूप्या--संज्ञा स्त्री० [सं०] मसूर या अरहर की दाल [को०]।

सूफ[१]--संज्ञा पुं० [अ० सूफ़] १. पश्म। ऊन। २. वह लत्ता जो देशी काली स्याहीवाली दावात में डाला जाता है। ३ गोटा बुनने के लिये बाना (को०)। ४. घाव के भीतर भरा जानेवाला वस्त्र जिसे बत्ती भी कहते हैं। ५. बकरी या भेड़ के बाल (को०)।

सूफ[२]--संज्ञा पुं० [हिं० सूप] दे० 'सूप'।

सूफार--संज्ञा पुं० [फ़ा० सूफ़ार] बाण का वह हिस्सा जिसे प्रत्यंचा पर रखकर चुटकी से खींचकर चलाते हैं [को०]।

सूफिया--संज्ञा पुं० [अ० सूफ़िया] सूफी का बहुवचन।

सूफियाना--वि० [फ़ा० सूफ़ियानह्] १. सूफी लोगों की तरह। २. अच्छे ढंग या प्रकृति का। ३. हलके रंग का [को०]।

सूफी[१]--संज्ञा पुं० [फ़ा० सूफ़ी] [बहुव० सुफ़िया] १. मुसलमानों का एक धार्मिक संप्रदाय। इस संप्रदाय के लोग एकेश्वरवादी होते हैं और साधारण मुसलमानों की अपेक्षा अधिक उदार विचार के होते हैं। २. इस संप्रदाय को माननेवाला व्यक्ति (को०)।

सूफी[२]--वि० १. ऊनी वस्त्र पहननेवाला। २. साफ। पवित्र। ३. निरपराध। निर्दोष।

सूब--संज्ञा पुं० [देश०] ताँबा। (सुनार)।

सूबड़ा--संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण] वह चाँदी जिसमें ताँबे और जस्ते का मेल हो। (सुनार)।

सूबड़ी--संज्ञा स्त्री० [देश०] पैसे का आठवाँ भाग। दमड़ी। (सुनार)।

सूबस(५)--वि० [सं० स्ववश] अपने वश या अधिकार में। स्वाधीन। उ०--दादू रावत राजा राम का, कदे न बिसारी नाँव। आत्मा राम सँभालिए तौ सूबस काया गाँव।--दादू०,पृ० ३९।

सूबा--संज्ञा पुं० [फ़ा० सूबह्] १. किसी देश का कोई भाग या खंड। प्रांत। प्रदेश।

यौ०--सूबेदार।

२. दे० 'सूबेदार'। उ०--कीन्हों समर बीर परिपाटी। लीन्हों सूबा का सिर काटी।--रघुराज (शब्द०)।

सूबेदार--संज्ञा पुं० [फा० सूबह् + दार (प्रत्य०)] १. किसी सूबे या प्रांत का बड़ा अफसर या शासक। प्रादेशिक शासक। २. एक छोटा फौजी ओहदा।

सूबेदार मेजर--संज्ञा पुं० [फ़ा०] सूबेदार + अं० मेजर] फौज का एक छोटा अफसर।

सूबेदारी--संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सूबेदार का ओहदा या पद। २. सूबेदार का काम। ३. सूबेदार होने की अवस्था।

सूभर(५)--वि० [सं० शुभ्र] १. सुंदर। दिव्य। उ०--दादू सहज सरोवर आत्मा, हंसा करैं कलोल। सुख सागर सूभर भरया, मुक्ताहल मन मोल।--दादू० बानी, पृ० ६५। २. श्वेत। सफेद। उ०--हंस सरोवर तहाँ रमैं सूभर हरि जल नीर। प्रानी आप पखालिए निमल सदा हो सरीर।--दादू (शब्द०)।

सूम[१]--संज्ञा पुं० [सं०] १. दूध। २. जल। ३. आकाश। ४. स्वर्ग।

सूम[२]--संज्ञा पुं० फूल।पुष्प। (डिं०)।

सूम[३]--वि० [अ० शूम (= अशुभ)] कृपण। कंजूस। बखील। उ०--मरै सूम जजमान मरै कटखन्ना टट्टू। मरै कर्कसा नारि मरै की खसम निखट्टू।--गिरिधरदास (शब्द०)।

सूम[४]--संज्ञा पुं० [अ०] लशुन। लहसुन [को०]।

सूमड़ा--वि० [हिं० सूम + ड़ा (प्रत्य०)। दे० 'सूम'। उ०--सूमड़े ताड़ आकाश में जा अपने कलकलाए।--प्रेमघन०, भा० २ पृ० १९।

सूमलू—संज्ञा पुं० [देश०] चित्रा या चीता नामक पौधा।

सूयाँ†—संज्ञा स्त्री० [देश०] टूटी हुई चारपाई की रस्सी।

सूमारग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सुमार्ग] सत्पथ। अच्छा मार्ग। उ०—भक्त काम देखि चलहि सूमारग, भजन नाहिं मन आनी।—जग० श०, भा० २, पृ० ९१।

सूमी—संज्ञा पुं० [देश०] एक बहुत बड़ा पेड़ जो मध्य तथा दक्षिण भारत के जंगलों में होता है।

विशेष—इसकी लकड़ी इमारतों में लगती और मेज, कुर्सी आदि बनाने के काम में आती है। इसे रोहन और सोहन भी कहते हैं।

सूय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोमरस निकालने की क्रिया। २. यज्ञ।

सूरंजान - संज्ञा पुं० [फ़ा० सूरिन्जान] केसर की जाति का एक पौधा जिसका कंद दवा के काम में आता है।

विशेष—यह पश्चिमी हिमालय के समशीतोष्ण प्रदेशों में पहाड़ों की ढाल पर घासों के बीच उगता है और एक बालिश्त ऊँचा होता है। फारस में भी यह बहुत होता है। इसमें बहुत कम पत्ते होते हैं और प्रायः फूलों के साथ निकलते हैं। फूल लंबे होते हैं और सीकों में लगते हैं। इसकी जड़ में लहसुन के समान, पर उससे बड़ा कंद होता है जो कड़वा और मीठा दो प्रकार का होता है। कड़वे को 'सूरंजान तल्ख' और मीठे को 'सूरंजान शीरीं' कहते हैं। मोटा कंद फारस से आता है और खाने की दवा में काम आता है। कड़वा कंद केवल तेल आदि में मिलाकर मालिश के काम आता है। इसके बीज विषैले होते है; इससे बड़ी सावधानी से थोड़ी मात्रा में दिए जाते हैं। यूनानी चिकित्सा के अनुसार सूरंजान रूखा, रुचिकर तथा वात, कफ, पांडुरोग, प्लीहा, संधिवात आदि को दूर करनेवाला माना जाता है।

सूर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूरी] १. सूर्य। उ०—सूर उदय आए रही दृगन साँझ सी फूलि।—बिहारी (शब्द०)। २. अर्कवृक्ष। आक। मदार। ३. पंडित। आचार्य। ४. सोम (को०)। ५. जैन धर्म में वर्तमान अवसर्पिणी के सत्रहवें अर्हत् कुंथु के पिता का नाम। ६. मसूर। ७. राजा। नायक (को०)।

सूर[२]—संज्ञा पुं० [देशज] १. भक्त कवि सूरदास। उ०—कछु संछेप सूर बरनत अब लघु मति दुर्बल बाल।—सूर (शब्द०)। २. नेत्रविहीन व्यक्ति। दृष्टिरहित व्यक्ति। अंधा।

विशेष—सूरदास अंधे थे, इससे 'अंधा' के अर्थ में यह शब्द प्रचलित हो गया है।

३. छप्पय छंद के ७१ भेदों में से ५५वें भेद का नाम जिसमें १६ गुरु, १२० लघु, कुल १३६ वर्ण और १५२ मात्राएँ होती हैं।

सूर(पु)[३]—संज्ञा पुं० [सं० शूर, प्रा० सूर, अथवा सं० सूर (=नायक)] शूरवीर। बहादुर। उ०—सूर समर करनी करहिं कहिं न जनावहिं आप।—तुलसी (शब्द०)।

सूर(पु)[४]—संज्ञा पुं० [सं० शूकर, प्रा० सूअर] १. सूअर। २. भूरे रंग का घोड़ा।

सूर(पु)[५]—संज्ञा पुं० [सं० शूल, प्रा० सूल (=सूर)] दे० 'शूल'। उ०—(क) कर बरछी विष भरी सूरसुत सूर फिरावत।—गोपाल (शब्द०)। (ख) दादू सिख स्रवनन सुना सुमिरत लागा सूर।—दादू० (शब्द०)।

सूर[६]—संज्ञा पुं० [देश०] पठानों की एक जाति। जैसे—शेरशाह सूर। उ०—जाति सूर औ खाँड़े सूरा।—जायसी (शब्द०)।

सूर[७]—संज्ञा पुं० [सं० सूर (= सूर्य)] हठयोग साधना में चंद्रमा में स्रवित होनेवाले अमृत का शोषण करनेवाला द्वादश कलायुक्त सूर्य। पिंगला नाड़ी का दूसरा नाम। उ०—उलटिवा सूर गगन भेदन किया, नवग्रह डंक छेदन किया, पोबिया चंद जहाँ कला सारी।—रामानंद०, पृ० ४।

सूर[८]—संज्ञा पुं० [अ०] नरसिंहा नामक बाजा। उ०—कब्र में सोए हैं महशर का नहीं खटका 'रसा'। चौंकनेवाले हैं कब हम सूर की आवाज से।

विशेष—मुसलमानों के अनुसार हजरत असाफील प्रलय या कयामत के दिन मुरदों को जिलाने के लिये इसे फूँककर बजाते हैं।

सूर[९]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. लाल वर्ण। लाल रंग। २. प्रसन्नता। मोद। हर्ष। ३. अफगानिस्तान का एक नगर और एक जाति [को०]।

सूरकंद—संज्ञा पुं० [सं० सूरकन्द] जमीकंद। सूरन। ओल।

सूरकांत—संज्ञा पुं० [सं० सूरकान्त] दे० 'सूर्यकांत'।

सूरकुमार—संज्ञा पुं० [सं० शूर (=सूरसेन) कुमार (=पुत्र)] वसुदेव। उ०—तेज रूप ये सूरकुमारा। जिमि उदयस्थ सूर उजियारा।—गि० दास (शब्द०)।

सूरकृत—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

सूरचक्षा—वि० [सं० सूरचक्षस्] सूर्य की तरह ज्योतिवाला [को०]।

सूरचक्षुस्—वि० [सं०] दे० 'सूरचक्षा' [को०]।

सूरज[१]—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य] १. सूर्य। विशेष दे० 'सूर्य'। उ०—दरिया सूरज ऊगिया, नैन खुला भरपूर। जिन अंधे देखा नहीं, तिन से साहब दूर।—दरिया० बानी, ३७।

क्रि० प्र०—अस्त होना।—उगना।—उदय होना।—निकलना।—डूबना।—छिपना।

मुहा०—सूरज को चिराग दिखाना = दे० 'सूरज को दीपक दिखाना'। उ०—आगे मेरे फरोग पाना, सूरज को है चिराग दिखाना।—फिसाना, भा० ३, पृ० ६२४। सूरज पर थूकना = किसी निर्दोष या साधु व्यक्ति पर लांछन लगाना जिसके कारण स्वयं लांछित होना पड़े। सूरज को दीपक दिखाना = (१) जो स्वयं अत्यंत गुणवान् हो, उसे कुछ बतलाना। (२) जो स्वयं विख्यात हो उसका परिचय देना। सूरज पर धूल फेंकना = किसी निर्दोष या साधु व्यक्ति पर कलंक लगाना।

२. एक प्रकार का गोदना जो स्त्रियाँ दाहिने हाथ में गुदाती हैं। ३. दे० 'सूरदास'।

सूरज[२]—संज्ञा पुं० [सं० सूर+ज] १. शनि। २. सुग्रीव। उ०—(क) सूरज मुसल नील पट्टिस परिघ नल जामवंत असि हनु तोमर प्रहारे हैं। परसा सुखेन कुंत केशरी गवय सूल विभीषण गदा गज भिंदिपाल तारे हैं।—रामचं०, पृ० १३५। (ख) करि आदित्य अदृष्ट नष्ट यम करौं अष्टवसु। रुद्रनि वोरि समुद्र करौं गंधर्व सर्व पसु। बलित अबेर कुबेर बलिहिं गहि देहुँ इंद्र अब। विद्याधरनि अविद्य करौं बिन सिद्धि सिद्ध सब। लै करौं अदिति की दासि दिति अनिल अनल मिलि जाहि जल। सुनि सूरज सूरज उगत ही करौं असुर संसार सब।—केशव (शब्द०)। ३. कर्ण का एक नाम। ४. यमराज।

सूरज[३]—संज्ञा पुं० [सं० शूर+ज (प्रत्य०)] शूर या वीर का पुत्र। बहादुर का लड़का। उ०—डारि डारि हथ्यार सूरज जीव लै लै भज्जहीं।—केशव (शब्द०)।

सूरजतनी(पु)† - संज्ञा स्त्री० [सं० सूर्यतनया] दे० 'सूर्यतनया'। उ०—सुंदरि कथा कहै है अपनी। हौं कन्या हौं सूरजतनी। कालिंदी है मेरो नाम। पिता दियो जल में विश्राम।—लल्लूलाल (शब्द०)।

सूरजनरायन —संज्ञा पुं० [सं० सूर्यनारायण] हिं० सूरजनरायन, नारायण स्वरूप सूर्य। उ० - और सूर्यनारायण को सूरजनरायन कहने लग पड़े थे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३९२।

सूरजबंसी—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यवंशीय] दे० 'सूर्यवंशी'।

सूरजभगत—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य+भक्त] एक प्रकार की गिलहरी जो लंबाई में १६ इंच होती है और भिन्न भिन्न ऋतुओं के अनुसार रंग बदलती है। यह नेपाल और आसाम में पाई जाती है।

सूरजमुख(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य, पु० हिं० सूरज+सं० मुख] सूर्यकांत नाम का प्रस्तर (स्फटिक)। उ०—सूरजमुख पषान एक होई। रबि सनमुख तेहि पावक जोई।—घट०, पृ० २१७।

सूरजमुखी—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यमुखिन्] १. एक प्रकार का पौधा जिसमें पीले रंग का बहुत बड़ा फूल लगता है।

विशेष—यह ४-५ हाथ ऊँचा होता है। इसके पत्ते डंठल की ओर पतले तथा कुछ खुरदुरे और रोईंदार होते हैं। फूल का मंडल एक बालिश्त के करीब होता है। बीच में एक स्थूल केंद्र होता है जिसके चारों ओर गोलाई में पीले पीले दल निकले होते हैं। सूर्यास्त के लगभग यह फूल नीचे की ओर झुक जाता है और सूर्योदय होने पर फिर ऊपर उठने लगता है। इसमें कुसुम के से बीज पड़ते हैं। बीज हर ऋतु में बोए जा सकते हैं, पर गरमी और जाड़ा इसके लिये अच्छा है। यह पौधा दूषित वायु को शुद्ध करनेवाला माना जाता है। वैद्यक में यह उष्णवीर्य, अग्निदीपक, रसायन, चरपरा, कड़वा, कसैला, रूखा, दस्तावर, स्वर शुद्ध करनेवाला तथा कफ, वात, रक्तविकार, खाँसी, ज्वर, विस्फोटक, कोढ़, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म आदि का नाशक कहा गया है।

पर्या०—आदित्यभक्ता। वरदा। सुवर्चला। सूर्यलता। अर्ककांता। भास्करेष्टा। विक्रांता। सुतेजा। सौरि। अर्कहिता।

२. एक प्रकार की आतिशबाजी। ३. एक प्रकार का छत्र या पंखा। ४. वह हलकी बदली जो संध्या सबेरे सूर्य मंडल के आसपास दिखाई पड़ती है।

सूरजसुत—(पु)संज्ञा पुं० [हिं० सूरज+सं० सुत] सुग्रीव। उ०—अंगद जौ तुम पै बल होतो। तो वह सूरज को सुत को तो।—केशव (शब्द०)।

सूरजसुता(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूरज+सं० सुता] यमुना नदी। दे० 'सूर्यसुता'।

सूरजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पुत्री, यमुना। उ०— जै जै श्री सूरजा कलिंद नंदिनी। गुल्म, लता, तरु, सुवास, कुंद कुसुम मोदमन भ्रमत मधुप, पुलिन सुरभि वायु नंदिनी।—छीत०, पृ० ८०।

सूरण—संज्ञा पुं० [सं०] सूरन। जमींकंद।

सूरत[१]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. रूप। आकृति। शक्ल। उ०—(क) इनकी सूरत तो राजकुमारी की सी है।—बालमुकुंद गुप्त (शब्द०)। (ख) मन धन लै दृग जौहरी, चले जात वह बाट। छवि मुकता मुकते मिलै जिहि सूरत की हाट।—रसनिधि (शब्द०)।

यौ०—सूरत शक्ल = चेहरा मोहरा। आकृति। सूरत सीरत = आकृति या रूप और गुण।

मुहा०—सूरत बिगड़ना = चेहरा बिगड़ना। चेहरे की रंगत फीकी पड़ना। सूरत बिगाड़ना = (१) चेहरा बिगाड़ना। कुरूप करना। बदसूरत बनाना। विद्रूप करना। (२) अपमानित करना। (३) दंड देना। सूरत बनाना = (१) रूप बनाना। (२) भेस बदलना। (३) मुँह बनाना। नाक भौं सिकोड़ना। अरुचि प्रकट करना। (४) चित्र बनाना। सूरत दिखाना = सामने आना।

२. छवि। शोभा। सौंदर्य। उ०—साँवली सूरत तुमारी साँवले। जब हमारी आँख में है घूमती।—चोखे०, पृ० १। ३. उपाय। युक्ति। ढंग। तदबीर। ढब। उ०—(क) कोई उम्मीद बर नहीं आती, कोई सूरत नजर नहीं आती। मौत का एक दिन मुऐयन है, नींद क्यों रात भर नहीं आती।—कविता कौ०, पृ० ४७२। (ख) जाड़े में उनके जीने की कौन सूरत थी।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

क्रि० प्र०—देखना। जैसे,—वह उनसे छुटकारा पाने की कोई सूरत नहीं देखता।—निकालना। जैसे—रुपया पैदा करने की कोई सूरत निकालो।

४. अवस्था। दशा। हालत। जैसे—उस सूरत में तुम क्या करोगे। उ०—आपको खयाल न गुजरे कि हमारी किसी सूरत में तहकीर हुई।— केशवराम (शब्द०)।

सूरत[२]—संज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र] बंबई प्रदेश के अंतर्गत एक नगर।

सूरत[३]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार जहरीला पौधा जो दक्षिण हिमालय, आसाम, बरमा, लंका, पेराक और जावा में होता है। इसे चोरपट्टा भी कहते हैं। विशेष दे० 'चोरपट्ट'।

सूरत[४]—संज्ञा स्त्री० [अ० सूरह्] कुरान का कोई प्रकरण।

सूरत⑤[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] सुध। स्मरण। ध्यान। याद। विशेष दे० 'सुरति'। जैसे,—सब आनंद में ऐसे मग्न थे कि कृष्ण की सूरत किसी को भी न थी।—लल्लू (शब्द०)।

सूरत[६]—वि० [सं०] १. अनुकूल। मेहरबान। कृपालु। २. शांत। सीधा [को०]।

सूरता⑤[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शूरता] दे० 'शूरता'। उ०—विश्वासी के ठगन मैं नहीं निपुनता होय। कहा सूरता तासु हनि रहचो गोद जो सोय।—दीनदयाल (शब्द०)।

सूरता[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीधी गाय।

सूरताई⑤—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूरता + ई (प्रत्य०)] दे० 'शूरता'। उ०—गरजन घोर जोर पवन चलत जैसो अंबर सों सोभित रहत मिलि कै अनेक। पुत्र जे धरत तिन्है तोषत हैं भली भाँति सूर सूरताई लोप करत सहित टेक।—गोपाल (शब्द०)।

सूरति⑤[१]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सूरत] छबि। दे० 'सूरत'। उ०—(क) मूरति की सूरति कही न परै तुलसी पै, जानै सोई जाके उर कसकै करक सी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) चद भलो मुख-चंद सखी लखि सूरति काम की कान्ह की नीकी। कोमल पंकज कै पदपंकज प्राणप्रियारे की मूरति पी की।—केशव (शब्द०)।

सूरति⑤[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] सुध। स्मरण ध्यान। याद। उ०—तुलसिदास रघुवीर की सोभा सुमिरि भई है मगन नहिं तन की सूरति।—तुलसी (शब्द०)।

सूरतीखपरा—संज्ञा पुं० [हिं० सूरती (= सूरत शहर का) + सं० खर्परी] खपरिया।

सूरदास—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तर भारत के प्रसिद्ध कृष्णभक्त महाकवि और महात्मा जो अंधे थे।

विशेष—ये हिंदी भाषा के दो सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। जिस प्रकार रामचरित का गान कर गोस्वामी तुलसीदास जी अमर हुए हैं, उसी प्रकार श्रीकृष्ण की लीला कई सहस्र पदों में गाकर सूरदास जी भी। ये अकबर के काल में वर्त्तमान थे। ऐसा प्रसिद्ध है कि बादशाह अकबर ने इन्हें अपने दरबार में फतहपुर सीकरी में बुलाया, पर ये न आए। इन्होंने यह पद कहा 'मोको कहा सीकरी सों काम'। इसपर तानसेन के साथ अकबर स्वयं इनके दर्शन को मथुरा गया। इनका जन्म संवत् १५४० के लगभग ठहरता है। ये वल्लभाचार्य की शिष्यपरंपरा में थे और उनकी स्तुति इन्होंने कई पदों में की है जैसे,—'भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो। श्रीवल्लभ नखचंद्र छटा बिनु हो हिय माँझ अँधेरो'। इनकी गणना 'अष्टछाप' अर्थात् व्रज के आठ महाकवियों और भक्तों में थी। अष्टछाप में ये कवि गिने गए हैं—कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविंद स्वामी, चतुर्भुजदास, नंददास और सूरदास। इनमें से प्रथम चार कवि तो वल्लभाचार्य जी के शिष्य थे और शेष सूरदास आदि चार कवि उनके पुत्र विट्ठलनाथ जी के। अपने अष्टछाप में होने का उल्लेख सूरदास जी स्वयं करते हैं। यथा—'थापि गोसाईं करी मेरी आठ मध्ये छाप'। विट्ठलनाथ के पुत्र गोकुलनाथ जी ने अपनी 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' में सूरदास जी को सारस्वत ब्राह्मण लिखा है और उनके पिता का नाम 'रामदास' बताया है। सूरसारावली में एक पद में इनके वंश का जो परिचय है, उसके अनुसार ये महाकवि चंद वरदाई के वंशज थे और सात भाई थे। पर उक्त पद के असली होने में कुछ लोग संदेह करते हैं।

इनका जन्मस्थान भी अनिश्चित है। कुछ लोग इनका जन्म दिल्ली के पास 'सीही' गाँव में बतलाते हैं। जनश्रुति इन्हें जन्मांध कहती है, पर ये जन्मांध न थे। ऐसी भी किंवदंती है कि किसी परस्त्री के सौंदर्य पर मोहित हो जाने पर इन्होंने नेत्रों का दोष समझ उन्हें फोड़ डाला था। भक्तमाल में लिखा है कि आठ वर्ष की अवस्था में इनका यज्ञोपवीत हुआ और ये एक बार अपने माता पिता के साथ मथुरा गए। वहाँ से वे घर लौटकर न आए; कहा कि यहीं कृष्ण की शरण में रहूँगा। 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' के अनुसार ये गऊघाट में रहते थे जो आगरा और मथुरा के बीच में है। यहीं पर ये विट्ठलनाथ जी के शिष्य हुए और इन्हीं के साथ गोकुलस्थ श्रीनाथ जी के मंदिर में बहुत काल तक रहे। इसी मंदिर में रहकर ये पद बनाया करते थे। यों तो पद बनाने का इनका नित्य नियम था; पर मंदिर के उत्सवों पर उसी लीला के संबंध में बहुत सा पद बनाकर गाया करते थे। ऐसा प्रसिद्ध है कि ये एक बार कुएँ में गिर पड़े और छह दिन तक उसी में पड़े रहे। सातवें दिन स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने हाथ पकड़कर इन्हें निकाला। निकलने पर इन्होंने यह दोहा पढ़ा—'बाँह छुड़ाए जात हौ निबल जानि कै मोहिं। हिरदै सों जब जायहौ मरद बदौंगो तोहिं।'

इसमें संदेह नहीं कि व्रजभाषा के ये सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, क्योंकि इन्होंने केवल व्रजभाषा में ही कविता की है, अवधी में नहीं। गोस्वामी तुलसीदास जी का दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था और उन्होंने जीवन की नाना परिस्थितियों पर रसपूर्ण कविता की है। सूरदास में केवल शृंगार और वात्सल्य की पराकाष्ठा है। संवत् १६०७ के पूर्व इनका सूरसागर समाप्त हो गया था; क्योंकि उसके पीछे इन्होंने जो 'साहित्य लहरी' लिखी है, उसमें संवत् १६०७ दिया हुआ है।

सूरन—संज्ञा पुं० [सं० सूरण] एक प्रकार का कंद जो सब शाकों में श्रेष्ठ माना गया है। जमींकंद। ओल। शूरण। सूरन।

विशेष—सूरन भारतवर्ष में प्रायः सर्वत्र होता है पर बंगाल में अधिक होता है। इसके पौधे २ से ४ हाथ तक के होते हैं। पत्तों में बहुत से कटाव होते हैं। इसके दो भेद हैं। सूरन जंगली भी होता है जो खाने योग्य नहीं होता और बेतरह कटैला होता है। खेत के सूरन की तरकारी, अचार आदि बनते हैं जिन्हें लोग बड़े चाव से खाते हैं। वैद्यक में यह अग्निदीपक, रूखा, कसैला, खुजली उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, विष्टंभकारक, विशद, रुचिकारक, लघु, प्लीहा तथा गुल्म नाशक और अर्श (बवासीर) रोग के लिये विशेष उपकारी माना गया है। दाद,

खाज, रक्तविकार और कोढ़वालों के लिये इसका खाना निषिद्ध है।

पर्या०—शूरण। सूरकंद। कंदल। अर्शोघ्नि, आदि।

सूरपनखा—संज्ञा स्त्री० [सं० शूर्प (हिं० सूरप)+ सं० नखा] दे० 'शूर्पनखा'। उ०—सूरपनखहु तहँहि चलि आई। काटि श्रवन अरु नाक भगाई।—पद्माकर (शब्द०)।

सूरपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] (सूर्य के पुत्र) सुग्रीव। उ० – सूरपुत्र तब जीवन जान्यो। बालि जोर बहु भाँति बखान्यो।—केशव (शब्द०)। २. शनि (को०)। ३. कर्ण का एक नाम (को०)।

सूरबार—संज्ञा पुं० [देशज] पायजामा। सूथन।

सूरबीरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शूरवीर] दे० 'शूरवीर'।

सूरबीरता—संज्ञा स्त्री० [सं० शूरता + वीरता] दे० 'शूरता'। उ०—तब वा समै सूरबीरता कौ आवेस रहत है।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ९६।

सूरनस—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद और उसके निवासी।

सूरमा—संज्ञा पुं० [सं० शूरमानी] योद्धा। वीर। बहादुर। उ०—और बहुत उमड़े सुभट कहौं कहाँ लगि नाउँ। उतै समद के सूरमा भिरे रोप रन पाउँ।—लालकवि (शब्द०)।

सूरमापन—संज्ञा पुं० [हिं० सूरमा+पन (प्रत्य०)] वीरत्व। शूरता। बहादुरी।

सूरमुखीⓅ—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यमुखी शीशा। उ०—बहु साँग भल्लगन मधि लसत, सूरमुखी रथ छत्रवर। मनु चले जात मुनि दंड चढ़ि उड़गन मैं ससि दिवसकर।—गोपाल (शब्द०)।

सूरमुखीमनिⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यमुखीमणि] सूर्यकांतमणि। उ०—मुरछल चारहु ओर अमल बहु भृत्य फिरावहिं। सूरमुखीमनि जटित अनेकन सोभा पावहिं।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सूरयⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य, प्रा० सूरिअ] दे० 'सूर्य'। उ०—(क) सूरय करि कै देखिए तव आरसी होय। सूरय सूरय सौं हसे सुंदर समझै कोय।—सुंदर० ग्रं०, भा० २, पृ० ८१२। (ख) तीनि लोक मैं भया तमासा सूरय कियो सकल अंधेर। मूरष होई सु अर्थहि पावै सुंदर कहै शब्द मैं फेर।—सुंदर ग्रं०, भा० २, पृ० ५१३।

सूरवाँⓅ, **सूरवा**Ⓟ—संज्ञा पुं० [हिं० सूरमा] दे० 'सूरमा'। उ०—जन हरिया गुरु सूरवा करै शब्द की चोट। सिख सूरा तन जो लहै आनि धरै नहि ओट।—राम० धर्म०, पृ० ५४।

सूरस—संज्ञा पुं० [देश०] परिया की लकड़ी। (जुलाहा)।

सूरसागर—संज्ञा पुं० [हिं० सूर+सागर] हिंदी के महाकवि सूरदासकृत ग्रंथ का नाम जिसमें भागवत के आधार पर श्रीकृष्णलीला अनेक राग रागिनियों में वर्णित है।

सूरसावंत, सूरसाँवतⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शूर+सामन्त] १. युद्धमंत्री। २. नायक। सरदार। उ०—धनुबिजुरी चमकाय बान जल बरषि अमोलो। गरजि जलद सम जलद सूरसावँत यह बोलो।—गिरिधरदास (शब्द०)।

सूरसुत—संज्ञा पुं० [सं०] १. शनिग्रह। २. सुग्रीव।

सूरसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पुत्री यमुना। उ०—ज्योति जगै जमुना सी लगै जग लोचन लालित पाप विपोहै। सूरसुता शुभ संगम तुंग तरंग तरंग तरंग सी सोहै।—केशव (शब्द०)।

सूरसूत—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य के सारथि अरुण।

सूरसेनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शूरसेन] दे० 'शूरसेन'।

सूरसेनपुरⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शूरसेन + पुर] मथुरा। उ०—चित्रसेन नृप चल्यो सेन सह सूरसेन पुर। झपटि चलै जिमि सेन लेन जै देन चेन उर।—गोपाल (शब्द०)।

सूरा[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सुंडी] एक प्रकार का कीड़ा जो अनाज के गोले में पाया जाता है। यह किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाता। अनाज के व्यापारी इसे शुभ समझते हैं।

सूरा[2]—संज्ञा पुं० [अ० सूरह्] कुरान का कोई एक प्रकरण।

सूराख—संज्ञा पुं० [फ़ा० सूराख़] १. छेद। छिद्र। २. शाला। खाना। घर। (लश०)।

सूरातनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शूरत्व, प्रा० सूरत्तण] वीरता। उ०—(क) सुंदर सूरातन बिना बात कहै मुख कोरि। सूरातन जब जाणिए जाइ देत दल मोरि।—सुंदर ग्रं०, भा० २, पृ० ७३९। (ख) सूरातन सूराँ चढ़े, सत सतिया सम दोष।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ३।

सूरिंजान—संज्ञा पुं० [फ़ा० सूरिन्जान] दे० 'सूरंजान'।

सूरि—संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ करानेवाला। ऋत्विज्। २. पंडित। विद्वान्। आचार्य। (विशेषकर जैनाचार्यों के नामों के पीछे यह शब्द उपाधिस्वरूप प्रयुक्त होता है)। ३. बृहस्पति का एक नाम। ४. कृष्ण का नाम। ५. यादव। ६. अर्चना, पूजन करनेवाला व्यक्ति। ७. सूर्य।

सूरिवाँⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० सूरमा] दे० 'सूरमाँ'। उ०—सतगुरु साँचा सूरिवाँ, सबद जु बाह्या एक। लागत ही में मिलि गया, पड़्या कलेजै छेक।—कबीर ग्रं०, पृ० १।

सूरी[1]—संज्ञा पुं० [सं० सूरिन्] [स्त्री० सूरिणी] १. विद्वान्। पंडित्। आचार्य।

सूरी[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विदुषी। पंडिता। २. सूर्य की पत्नी। ३. कुंती। ४. राई। राजसर्षप।

सूरीⓅ[3]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूली] दे० 'सूली'। उ०—नृप कह देहु चोर कहँ सूरी। संतवेष यह चोर कसूरी। तुरत दूत पुर बाहिर लाई। सूरी महँ दिय मुनिहिं चढ़ाई।—रघुराज (शब्द०)।

सूरीⓅ[4]—संज्ञा पुं० [सं० शूल] भाला। उ०—पटक्यो कंस ताहि गति रूरी। धेनुक भिर्‌यौ तबै गहि सूरी।—गोपाल (शब्द०)।

सूरुजⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० सूर्य] दे० 'सूर्य'।

सूरुवाँⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० सूरमा] दे० 'सूरमा'। उ०—जीवहिं का संसा पड़ा को काको तारहिं। दादू सोई सूरुवाँ जो आप उबारहिं।—दादू० (शब्द०)।

सूरैठ--संज्ञा पुं० [देश०] बाँस की हाथ भर की एक लकड़ी जिससे बहेलिए चोंगे में से लासा निकालते हैं।

सूर्क्षण--संज्ञा पुं० [सं०] अनादर।

सूर्क्ष्य--संज्ञा पुं० [सं०] उड़द। माष।

सूर्क्ष्यण--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूर्क्षण' [को०]।

सूर्ज(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सूर्य, प्रा० सूर, सूरिअ, सुज्ज] दे० 'सूर्य'। उ०--चाँद सूर्ज तारागन नाहीं, मच्छ कच्छ औतारा।--कबीर श०, भा०३, पृ० ३।

सूर्प--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शूर्प'। सूप [को०]।

सूर्पनखा--संज्ञा स्त्री० [सं० शूर्पणखा] दे० 'शूर्पणखा'।

सूर्मि, सूर्मी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लोहे की बनी स्त्री की प्रतिमूर्ति।

विशेष--मनु ने लिखा है कि गुरुपत्नी से व्यभिचार करनेवाला अपने पाप को कहकर तपी हुई लोहे की शय्या पर शयन करे अथवा तपी हुई लोहे की स्त्री की प्रतिमूर्ति का आलिंगन करे। इस प्रकार मरने से उसका पाप नष्ट होता है--'सूर्मी ज्वलन्तीं वाश्लिष्येन्मृत्युना स विशुद्धयति'।

२. पानी का नल। ३. गृह का स्तंभ (को०)। ४. कांति। प्रकाश (को०)। ५. ज्वाला (को०)।

सूर्य--संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सूर्या, सूर्याणी] १. अंतरिक्ष में पृथ्वी, मंगल, शनि आदि ग्रहों के बीच सबसे बड़ा ज्वलंत पिंड जिसकी सब ग्रह परिक्रमा करते हैं। वह बड़ा गोला जिससे पृथ्वी आदि ग्रहों को गरमी और रोशनी मिलती है। सूरज। आफताब।

विशेष--सूर्य पृथ्वी से चार करोड़ पैंसठ लाख मील दूर है। उसका व्यास पृथ्वी के व्यास से १०८ गुना अर्थात् ४,३३,००० कोस है। घनफल के हिसाब से देखें तो जितना स्थान सूर्य घेरे हुए है, उतने में पृथ्वी के ऐसे ऐसे १२,५०,००० पिंड आएँगे। सारांश यह कि सूर्य पृथ्वी से बहुत ही बड़ा है। परंतु सूर्य जितना बड़ा है, उसका गुरुत्व उतना नहीं है। उसका सापेक्ष गुरुत्व पृथ्वी का चौथाई है। अर्थात् यदि हम एक टुकड़ा पृथ्वी का और उतना ही बड़ा टुकड़ा सूर्य का लें तो पृथ्वी का टुकड़ा तौल में सूर्य के टुकड़े का चौगुना होगा। कारण यह है कि सूर्य पृथ्वी के समान ठोस नहीं है। वह तरल ज्वलंत द्रव्य के रूप में है। सूर्य के तल पर कितनी गरमी है, इसका जल्दी अनुमान ही नहीं हो सकता। वह २०,००० डिग्री तक अनुमान की गई है। इसी ताप के अनुसार उसके अपरिमित प्रकाश का भी अनुमान करना चाहिए। प्रायः हम लोगों को सूर्य का तल बिलकुल स्वच्छ और निष्कलंक दिखाई पड़ता है, पर उसमें भी बहुत से काले धब्बे हैं। इनमें विचित्रता यह है कि एक निश्चित नियम के अनुसार ये घटते बढ़ते रहते हैं, अर्थात् कभी इनकी संख्या कम हो जाती है, कभी अधिक। जिस वर्ष इनकी संख्या अधिक होती है, उस वर्ष में पृथ्वी पर चुंबक शक्ति का क्षोभ बहुत बढ़ जाता है और विद्युत् की शक्ति के अनेक कांड दिखाई पड़ते हैं। कुछ वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इन लांछनों का वर्षा से भी संबंध है। जिस साल ये अधिक होते हैं, उस साल वर्षा भी अधिक होती है। भारतीय ग्रंथों में सूर्य की गणना नव ग्रहों में है। आधुनिक ज्योतिर्विज्ञान के अनुसार सूर्य ही मुख्य पिंड है जिसके पृथ्वी, शनि, मंगल आदि ग्रह अनुचर हैं और उसकी निरंतर परिक्रमा किया करते हैं। विशेष दे० 'खगोल'।

सूर्य की उपासना प्रायः सब सभ्य प्राचीन जातियों में प्रचलित है। आर्यों के अतिरिक्त असीरिया के असुर भी 'शम्श' (सूर्य) की पूजा करते थे। अमेरिका के मेक्सिको प्रदेश में बसनेवाली प्राचीन सभ्य जनता के भी बहुत से सूर्यमंदिर थे। प्राचीन आर्य जातियों के तो सूर्य प्रधान देवता थे। भारतीय और पारसीक दोनों शाखाओं के आर्यों के बीच सूर्य को मुख्य स्थान प्राप्त था। वेदों में पहले प्रधान देवता सूर्य, अग्नि और इंद्र थे। सूर्य आकाश के देवता थे। इनका रथ सात घोड़ों का कहा गया है। आगे चलकर सूर्य और सविता एक माने गए और सूर्य की गणना द्वादश आदित्यों में हुई। ये आदित्य वर्ष के १२ महीनों के अनुसार सूर्य के ही रूप थे। इसी काल में सूर्य के सारथि अरुण (सूर्योदय की ललाई) कहे गए जो लँगड़े माने गए हैं। सूर्य का ही नाम विवस्वत् या विवस्वान भी था जिनकी कई पत्नियाँ कही गई हैं, जिनमें संज्ञा प्रसिद्ध है।

पर्या०--भास्कर। भानु। प्रभाकर। दिनकर। दिनपति। मार्तंड। रवि। तरणि। सहस्रांशु। तिग्मदीधिति। मरीचिमाली। चंडकर। आदित्य। सविता। सूर। विवस्वान। दिवाकर।

२. बारह की संख्या। ३. अर्क। आक। मंदार। ४. बलि के एक पुत्र का नाम। ५. शिव का एक नाम (को०)।

सूर्यक--वि० [सं०] सूर्य के समान। सूर्य जैसा [को०]।

सूर्यकमल--संज्ञा पुं० [सं०] सूरजमुखी फूल।

सूर्यकर--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की किरण।

सूर्यकरोज्ज्वल--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की किरणों से दीप्त।

सूर्यकांत--संज्ञा पुं० [सं० सूर्यकान्त] १. एक प्रकार का स्फटिक या बिल्लौर, सूर्य के सामने रखने से जिसमें से आँच निकलती है।

पर्या०--सूर्यमणि। तपनमणि। रविकांत। सूर्याश्मा। ज्वलनाश्मा दहनोपम। दीप्तोपल। तापन। अर्कोपल। अग्निगर्भ।

विशेष--वैद्यक के अनुसार यह उष्ण, निर्मल, रसायन, वात और श्लेष्मा को हरनेवाला और बुद्धि बढ़ानेवाला है।

२. सूरजमुखी शीशा। आतशी शीशा।

विशेष--यह विशेष बनावट का मोटे पेटे का गोल शीशा होता है जो सूर्य की किरनों को एक केंद्र पर एकत्र करता है, जिससे ताप उत्पन्न हो जाता है। इसके भीतर से देखने पर वस्तुएँ बड़े आकार की दिखाई पड़ती हैं।

३. एक प्रकार का फूल। आदित्यपर्णी। ४. मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम।

सूर्यकांति¹--संज्ञा स्त्री० [सं० सूर्यकान्ति] १. सूर्य की दीप्ति या प्रकाश। २. एक प्रकार का पुष्प। ३. तिल का फूल।

सूर्यकांति(पु)[२]--संज्ञा स्त्री० [सं० सूर्यकान्ति] सूर्यकांत मणि। विशेष दे० 'सूर्यकांत'। उ०--चंद्रकांति अमृत उपजावै। सूर्यकांति में अग्नि प्रजावै।--रत्नपरीक्षा (शब्द०)।

सूर्यकाल--संज्ञा पुं० [सं०] १. दिन का समय। २. फलित ज्योतिष में शुभाशुभ निर्णय के लिये एक चक्र।

सूर्यकालानलचक्र--संज्ञा पुं० [सं०] एक ज्योतिषचक्र जिससे मनुष्य का शुभाशुभ जाना जाता है।

सूर्यक्रांत--संज्ञा पुं० [सं० सूर्यक्रान्त] १. संगीत में एक प्रकार का ताल। २. एक प्राचीन जनपद।

सूर्यक्षय--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यमंडल।

सूर्यगर्भ--संज्ञा पुं० [सं०] १. एक बोधिसत्व का नाम। २. एक बौद्ध सूत्र का नाम।

सूर्यग्रह--संज्ञा पुं० [सं०] १. नव ग्रहों में से प्रथम ग्रह--सूर्य। २. सूर्यग्रहण। ३. राहु और केतु। ४. जलपात्र या घड़े का पेंदा।

सूर्यग्रहण--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का ग्रहण। विशेष दे० 'ग्रहण'।

सूर्यचक्षु--संज्ञा पुं० [सं० सूर्यचक्षुस्] रामायण के अनुसार एक राक्षस का नाम।

सूर्यज--संज्ञा पुं० [सं०] १. शनि ग्रह। २. यम। ३. सावर्णि मनु। ४. रेवंत। ५. सुग्रीव। ६. कर्ण।

सूर्यजा--संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

सूर्यतनय--संज्ञा पुं० [सं०] १. शनि। २. सावर्णि मनु। ३. रेवंत। ४. सुग्रीव। ५. यम। ६. कर्ण।

सूर्यतनया--संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।

सूर्यतपा--संज्ञा पुं० [सं० सूर्यतपस्] एक मुनि का नाम।

सूर्यतापिनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

सूर्यतीर्थ--संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम। (महाभारत)।

सूर्यतेज--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का प्रकाश। धूप। घाम [को०]।

सूर्यदास--संज्ञा पुं० [सं०] १. संस्कृत के एक प्राचीन कवि का नाम। २. हिंदी के प्रसिद्ध कवि सूरदास।

सूर्यदृक्--वि० [सं० सूर्यदृश्] सूर्य की ओर देखनेवाला।

सूर्यदेव--संज्ञा पुं० [सं०] भगवान् सूर्य।

सूर्यदेवत--वि० [सं०] जिसके उपास्य सूर्य हों। जिसके देवता सूर्य हों [को०]।

सूर्यद्वार--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का मार्ग। उत्तरायण [को०]।

सूर्यध्वज--संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

यौ०--सूर्यध्वजपताकी = शिव।

सूर्यनंदन, सूर्यनक्षत्र--संज्ञा पुं० [सं० सूर्यनन्दन] १. शनि। २. कर्ण। दे० 'सूर्यज'।

सूर्यनगर--संज्ञा पुं० [सं०] काश्मीर के एक प्राचीन नगर का नाम।

सूर्यनाभ--संज्ञा पुं० [सं०] एक दानव का नाम। (हरिवंश)।

सूर्यनारायण--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य देवता।

सूर्यनेत्र--संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

सूर्यपक्व--वि० [सं०] सूर्यातप द्वारा पकाया हुआ [को०]।

सूर्यपति--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य देवता।

सूर्यपत्नी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संज्ञा। २. छाया।

सूर्यपत्र--संज्ञा पुं० [सं०] १. इसरमूल। अर्कपत्री। २. हुरहुर। आदित्यभक्ता। ३. मदार का पौधा।

सूर्यपर्णी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इसरमूल। अर्कपत्री। २. मखवन। बन उड़दी। माषपर्णी।

सूर्यपर्व--संज्ञा पुं० [सं० सूर्यपर्वन्] वह काल जिसमें सूर्य किसी नई राशि में प्रवेश करता है।

सूर्यपाद--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की किरण।

सूर्यपुत्र--संज्ञा पुं० [सं०] १. शनि। २. यम। ३. वरुण। ४. अश्विनीकुमार। ५ सुग्रीव। ६. कर्ण।

सूर्यपुत्री--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. यमुना। २. विद्युत्। ३. बिजली। (क्व०)।

सूर्यपुर--संज्ञा पुं० [सं०] काश्मीर के एक प्राचीन नगर का नाम।

सूर्यपुराण--संज्ञा पुं० [सं०] एक छोटा ग्रंथ जिसमें सूर्यमाहात्म्य वर्णित है।

सूर्यप्रदीप--संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध धर्मानुसार एक प्रकार का ध्यान या समाधि।

सूर्यप्रभ[१]--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य के समान दीप्तिमान्।

सूर्यप्रभ[२]--संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की समाधि। २. श्रीकृष्ण की पत्नी लक्ष्मणा के प्रासाद या भवन का नाम। ३. एक बोधिसत्व का नाम। ४. एक नाग का नाम।

सूर्यप्रभव[१]--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य से उत्पन्न।

सूर्यप्रभव[२]--संज्ञा पुं० १. शनि। २. कर्ण।

सूर्यप्रशिष्य--संज्ञा पुं० [सं०] जनक का एक नाम।

सूर्यफणिचक्र--संज्ञा पुं० [सं०] एक ज्योतिश्चक्र जिससे कोई कार्य आरंभ करते समय उसका शुभाशुभ फल निकालते हैं।

सूर्यबिंब--संज्ञा पुं० [सं० सूर्यबिम्ब] सूर्य का मंडल।

सूर्यभ--वि० [सं०] सूर्य की तरह ज्योतियुक्त [को०]।

सूर्यभक्त--संज्ञा पुं० [सं०] १. दुपहरिया। बंधूक-पुष्प-वृक्ष। २. सूर्य का उपासक व्यक्ति।

सूर्यभक्तक--संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य का उपासना करनेवाला व्यक्ति। २. दुपहरिया। बंधूक।

सूर्यभक्ता--संज्ञा स्त्री० [सं०] हुरहुर। आदित्य भक्ता।

सूर्यभा--वि० [सं०] सूर्य के समान दीप्तिमान्।

सूर्यभागा--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम।

सूर्यभानु--संज्ञा पुं० [सं०] १. रामायण के अनुसार एक यक्ष का नाम। २. एक राजा का नाम।

सूर्यभ्राता--संज्ञा पुं० [सं० सूर्यभ्रातृ] ऐरावत हाथी का नाम।

सूर्यमंडल--संज्ञा पुं० [सं० सूर्यमण्डल] १. सूर्य का घेरा।

पर्या०--परिधि। परिवेश। मंडल। उपसूर्यक।

२. रामायण के अनुसार एक गंधर्व का नाम।

सूर्यमणि—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्यकांत मणि। २. एक प्रकार का पुष्पवृक्ष।

सूर्यमाल—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की माला धारण करनेवाले अर्थात् शिव। महादेव।

सूर्यमास—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौरमास'।

सूर्यमुखी—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यमुखिन्] दे० 'सूरजमुखी'। उ०—वह सूर्यमुखी प्रसन्न थी। —साकेत पृ० ३४८।

सूर्ययंत्र—संज्ञा पुं० [सं० सूर्ययन्त्र] १. सूर्य की उपासना में सूर्यस्थानीय प्रतिमा या चक्र। २. सूर्यवेध की प्रक्रिया में व्यवहृत एक प्रकार का यंत्र (को०)।

सूर्यरश्मि—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की किरन। रविकिरण। २. सविता का एक नाम।

सूर्यरुच—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की प्रभा या दीप्ति [को०]।

सूर्यर्क्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वह नक्षत्र जिसमें सूर्य की स्थिति हो।

सूर्यलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] हुरहुर। हुलहुल। आदित्यभक्ता लता।

सूर्यलोक—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का लोक।

विशेष—कहते हैं, युद्ध में मरनेवाले और काशीखंड के अनुसार सूर्य के भक्त भी इसी लोक को प्राप्त होते हैं।

सूर्यलोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक गंधर्वी का नाम।

सूर्यवंश—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों के दो आदि और प्रधान कुलों में से एक जिसका आरंभ इक्ष्वाकु से माना जाता है।

विशेष—पुराणानुसार परमेश्वर के पुत्र ब्रह्मा, ब्रह्मा के मरीचि, मरीचि के कश्यप, कश्यप के सूर्य, सूर्य के वैवस्वत मनु और वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु थे। इक्ष्वाकु का नाम वैदिक ग्रंथों में भी आया है। ये इक्ष्वाकु त्रेता युग में अयोध्या के राजा थे। त्रेता और द्वापर की संधि में इसी वंश में दशरथ के यहाँ श्रीरामचंद्र जी ने जन्म लिया था। द्वापर के प्रारंभ में श्रीरामचंद्र के पुत्र कुश हुए। कुश के वंश ने सुमित्र तक द्वापर में एक हजार वर्ष राज्य किया। इसके बाद इस वंश की विश्रांति हुई।

सूर्यवंशी—वि० [सं० सूर्यवंशिन्] सूर्यवंश का। जो क्षत्रियों के सूर्यवंश में उत्पन्न हुआ हो।

सूर्यवंश्य—वि० [सं०] सूर्यवंश में उत्पन्न।

सूर्यवक्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की ओषधि।

सूर्यवर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की ओषधि।

सूर्यवर्चस्[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक देवगंधर्व का नाम। २. एक ऋषि का नाम।

सूर्यवर्चस्—वि० सूर्य के समान दीप्तिमान्।

सूर्यवर्मा—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यवर्मन्] महाभारत में वर्णित त्रिगर्त के एक राजा का नाम।

सूर्यवल्लभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हुरहुर। आदित्यभक्ता। २. कमलिनी। पद्मिनी।

सूर्यवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दधियार। अंधाहुली। अर्कपुष्पी। २. क्षीर काकोली।

सूर्यवान—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यवत्] रामायण के अनुसार एक पर्वत का नाम।

सूर्यवार—संज्ञा सं० [सं०] रविवार। आदित्यवार।

सूर्यविकासी—वि० [सं० सूर्यविकासिन्] सूर्योदय होने पर विकसित या प्रसन्न होनेवाला [को०]।

सूर्यविघ्न—संज्ञा पुं० [पुं०] विष्णु।

सूर्यविलोकन—संज्ञा पुं० [सं०] एक मांगलिक कृत्य जिसमें बच्चे को सूर्य का दर्शन कराया जाता है। यह बच्चे के चार महीने के होने पर किया जाता है।

सूर्यवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. आक। मदार। अर्कवृक्ष। २. दधियार। अंधाहुली। अर्कपुष्पी।

सूर्यवेश्म—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यवेश्मन्] सूर्यमंडल।

सूर्यव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक व्रत जो सूर्य भगवान् के प्रीत्यर्थ रविवार को किया जाता है। २. ज्योतिष में एक चक्र।

सूर्यशत्रु—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण में वर्णित एक राक्षस का नाम।

सूर्यशिष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. याज्ञवल्क्य का एक नाम। २. जनक का एक नाम।

सूर्यशिष्यांतेवासी—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यशिष्यान्तेवासिन्] दे० 'सूर्य-प्रशिष्य'।

सूर्यशोभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य का प्रकाश। धूप। २. एक प्रकार का फूल।

सूर्यश्री—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वेदेवा में से एक।

सूर्यसंक्रम—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यसङ्क्रम] दे० 'सूर्यसंक्रमण' [को०]।

सूर्यसंक्रमण—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यसङ्क्रमण] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश। सूर्य की संक्रांति। विशेष दे० 'संक्रांति'।

सूर्यसंक्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं० सूर्यसङ्क्रान्ति] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश। विशेष दे० 'संक्रांति।

सूर्यसंज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. आक। अर्क वृक्ष। ३. केसर। कुंकुम। ४. तांबा। ताम्र। ४. एक प्रकार का मानिक या चुन्नी।

सूर्यसदृश—संज्ञा पुं० [सं०] लीलावज्र का एक नाम। (बौद्ध)।

सूर्यसाम—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यसामन्] एक साम का नाम।

सूर्यसारथि—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का सारथि–अरुण।

सूर्यसावर्णि—संज्ञा पुं० [सं०] मार्कंडेय पुराण के अनुसार आठवें मनु का नाम।

विशेष—ये सूर्य के औरस हैं और सूर्य की पत्नी संज्ञा के गर्भ से उत्पन्न माने जाते हैं।

सूर्यसावित्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ विश्वेदेवा में से एक। २. एक प्रसिद्ध ग्रंथ का नाम।

विशेष—इसके तत्व का उपदेश पहले पहल सूर्य से प्राप्त कहा गया है।

सूर्यसिद्धांत—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यसिद्धान्त] गणित ज्योतिष का भास्कराचार्य द्वारा विरचित एक ग्रंथ [को०]।

सूर्यसुत—संज्ञा पुं० [सं०] १. शनि। २. कर्ण। ३. सुग्रीव। ४. यम।

सूर्यसूक्त—संज्ञा पुं० [सं०] ऋग्वेद के एक सूक्त का नाम जिसमें सूर्य की स्तुति की गई है।

सूर्यसूत—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का सारथि, अरुण।

सूर्यस्तुत—संज्ञा पुं० [सं०] एक दिन में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

सूर्यस्तुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य का स्तवन। सूर्य की प्रार्थना [को०]।

सूर्यस्तोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सूर्यस्तुति'।

सूर्यहृदय—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का एक स्तोत्र [को०]।

सूर्यांशु—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की किरण।

सूर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य की पत्नी संज्ञा।

विशेष—कई मंत्रों में यह सूर्य की कन्या भी कही गई हैं। कहीं ये सविता या प्रजापति की कन्या और अश्विनी की स्त्री कही गई हैं और कहीं सोम की पत्नी। एक मंत्र में इनका नाम ऊर्जानी आया हैं और ये पूषा की भगिनी कही गई हैं। सूर्या सावित्री ऋग्वेद के सूर्यसूक्त की द्रष्टा मानी जाती हैं।

२. नवोढ़ा। नवविवाहिता स्त्री। ३. इंद्रवारुणी। ४. सूर्य के विवाह से संबद्ध सूक्त या ऋचाएँ (को०)।

सूर्याकर—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण में वर्णित एक जनपद का नाम।

सूर्याक्ष[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. महाभारत में एक राजा का नाम। ३. रामायण में वर्णित एक बंदर का नाम।

सूर्याक्ष[२]—वि० १. सूर्य के समान आँखोंवाला। २. जिसकी आँख सूर्य हो (को०)।

सूर्याणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की पत्नी—संज्ञा।

सूर्यातप—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की गरमी। धूप। घाम। उ०—विद्रुम औ, मरकत की छाया, सोने चाँदी का सूर्यातप।—युगांत, पृ० ८६।

सूर्यात्मज—संज्ञा पुं० [सं०] १. शनि। २. कर्ण। ३. सुग्रीव। ४. यम (को०)।

सूर्याद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] मार्कंडेय पुराण में आगत एक पर्वत का नाम।

सूर्यापाय—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यास्त।

सूर्यापीड़—संज्ञा पुं० [सं० सूर्यापीड] परीक्षित के एक पुत्र का नाम।

सूर्यायाम—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यास्त का समय।

सूर्यार्घ्य—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य को दिया जानेवाला अर्घ्य [को०]।

सूर्यालोक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य का प्रकाश। २. गरमी। आतप।

सूर्यावर्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. हुलहुल का पौधा। हुरहुर। आदित्यभक्ता। २. सुवर्चला। ब्रह्मसौवली। ३. गजपिप्पली। गजपीपल। ४. एक प्रकार की शिर की पीड़ा। आधासीसी।

विशेष—यह रोग वातज कहा गया है। इसमें सूर्योदय के साथ ही मस्तक में दोनों भँवों के बीच पीड़ा आरंभ होती है और सूर्य की गरमी बढ़ने के साथ साथ बढ़ती जाती है। सूरज ढलने के साथ ही पीड़ा घटने लगती है और शांत हो जाती है।

५. बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का ध्यान या समाधि। ६. एक प्रकार का जलपात्र।

सूर्यावर्तरस—संज्ञा पुं० [सं०] श्वास रोग की एक रसौषध जो पारे, गंधक और ताँबे के संयोग से बनती है।

सूर्यावर्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सूर्यावर्त' [को०]।

सूर्याश्म—संज्ञा पुं० [सं० सूर्याश्मन्] सूर्यकांत मणि।

सूर्याश्व—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का घोड़ा। वाताट हरित।

सूर्यास्त—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य का डूबना। सूर्य के छिपने का समय। सायंकाल।

क्रि० प्र०—होना।

सूर्याह्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. ताँबा। ताम्र। २. आक। मदार। अर्कवृक्ष। ३. महेंद्रवारुणी। बड़ी इंद्रायन। ४. वह जो सूर्यसंज्ञक हो (को०)।

सूर्येंदुसंगम—संज्ञा [सं० सूर्य + इन्दु + सङ्गम] सूर्य और चंद्रमा का संगम या मिलन, अर्थात् दोनों की एक राशि में स्थिति। अमावस्या।

सूर्योज्ज्वल—वि० [सं०] सूर्य की तरह ज्योतित। उ०—भूत शिखर के चरम चूड़ सा, शत सूर्योज्ज्वल।—युगपथ, पृ० ११८।

सूर्योढ[१]—वि० [सं०] सूर्य द्वारा लाया हुआ। सूर्यास्त के समय आया हुआ।

सूर्योढ[२]—संज्ञा सं० १. सूर्यास्त का समय। २. वह अतिथि जो सूर्यास्त होने पर अर्थात् संध्या समय आता है।

सूर्योत्थान—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्योदय। सूर्य का चढ़ना।

सूर्योदय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य का उदय या निकलना। सूर्य के निकलने का समय। प्रातःकाल।

क्रि० प्र०—होना।

सूर्योदया गिरि—संज्ञा पुं० [सं०] वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे से सूर्य का उदित होना माना जाता है। उदयाचल।

सूर्योद्यान—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यवन नामक तीर्थ।

सूर्योपनिषद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

सूर्योपस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की एक प्रकार की उपासना।

विशेष—प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल को संध्या करते समय सूर्याभिमुख हो एक पैर से खड़े होकर सूर्य की उपासना करने का विधान है।

सूर्योपासक—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की उपासना करनेवाला। सूर्यपूजक। सौर।

सूर्योपासना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य की आराधना या पूजा।

सूल—संज्ञा पुं० [सं० शूल, प्रा० सूल] १. बरछा। भाला। साँग। उ०—(क) वर्म चर्म कर कृपान सूल सैल धनुषबान, धरनि दलनि दानव दल रन करालिका।—तुलसी। ग्रं०, पृ० ४६२। (ख) लिए सूल सेल पास परिघ प्रचंड दंड भाजन सनीर धीर धरे धनुबान हैं।—तुलसी ग्रं०, पृ० १७१। २. कोई चुभनेवाली

नुकीली चीज। काँटा। उ०—(क) सर सों समीर लाग्यो सूल सों सहेली सब विष सों बिनोद लाग्यो बन सों निवास री।—मतिराम (शब्द०)। (ख) ऐती नचाइ कै नाच वा राँड को लाल रिझावन को फल येती। सेती सदा रसखानि लिए कुबरी के करेजनि सूल सी भेती।—रसखान (शब्द०)।

क्रि० प्र०—चुभना।—लगना।

३. भाला चुभने की सी पीड़ा। कसक। उ०—बसिहौं बन लखिहौं मुनिन भखिहौं फल दल मूल। भरत राज करिहैं अवधि मोहि न कछु अब सूल।—पद्माकर (शब्द०)। ४. दर्द। पीड़ा। जैसे—पेट में सूल।

क्रि० प्र०—उठना।—मिटना।

विशेष—इस शब्द का स्त्रीलिंग प्रयोग भी सूर आदि कवियों में मिलता है। जैसे—मेरे मन इतनी सूल रही।—सूर (शब्द०)।

५. माला का ऊपरी भाग। माला के ऊपर का फुलरा। उ०—मनि फूल रचित मखतूल की झूल न जाके तूल कोउ। सजि सोहे उघारि दुकुल वर सूल सबै अरि शूल सोउ।—गोपाल (शब्द०)।

सूलधर—संज्ञा पुं० [सं०शूलधर] दे० 'शूलधर'।

सूलधारी—संज्ञा पुं० [हिं० सूल+सं० धारिन्] दे० 'शूलधर'।

सूलना[1]—क्रि० स० [हिं० सूल+ना(प्रत्य०)]। भाले से छेदना। २. पीड़ित करना।

सूलना[2]—क्रि० अ० भाले से छिदना। चुभना। २. पीड़ित होना। व्यथित होना। दुखना। उ०—फूलि उठ्यो बृंदावन, भूलि उठे खग मृग, सूलि उठ्यो उर, बिरहागि बगराई है।—देव (शब्द०)।

सूलपानिⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शूलपाणि] दे० 'शूलपाणि'।

सूली[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] १. प्राणदंड देने की एक प्राचीन प्रथा जिसमें दंडित मनुष्य एक नुकीले लोहे के डंडे पर बैठा दिया जाता था और उसके ऊपर मुँगरा मारा जाता था। २. फाँसी।

क्रि० प्र०—चढ़ना।—चढ़ाना।—देना।—पाना।—मिलना।

३. एक प्रकार का नरम लोहा जिसकी छड़ें बनती हैं।—(लुहार)।

सूली[2]—संज्ञा पुं० [देश०] दक्षिण दिशा। (लश०)।

सूलीⓅ[3]—संज्ञा पुं० [सं० शूलिन्] महादेव। शिव। उ०—चंदन की वर चौकी पै बैठि जु न्हाई जुन्हाई सी जोति समूली। अंबर के धर अंबर पूजि वरंवर देव दिगंबर सूली।—देव (शब्द०)।

सूवनाⓅ[1]—क्रि० अ० [सं० स्रवण] बहना। प्रवाहित होना। उ०—कहा करौं अति सूवै नयना उमगि चलत पग पानी। सूर सुमेर समाइ कहाँ धौ बुधिवासना पुरानी।—सूर (शब्द०)।

सूवना[2]—संज्ञा पुं० [सं० शुक] दे० सूआ। उ०—सेमर केरा सूवना सिहुले बैठा जाय। चोंच चहोरे सिर धुनै यह वाही को भाव।—कबीर (शब्द०)।

सूवर†—संज्ञा पुं० [सं० शूकर] दे० 'सूअर'।

सूवा[1]—संज्ञा पुं० [१] फारसी संगीत के अनुसार २४ शोभाओं में से एक।

सूवा[2]—संज्ञा पुं० [सं० शुक, प्रा० सुअ, सुव] १. तोता। सुग्गा। सूआ। उ०—(क) सूवा, एक संदेसड़उ, वार सरेसी तुज्झ।—ढोला०, दू० ३६८। (ख) सारो सूवा कोकिल बोलत वचन रसाल। सुंदर सबकौं कान दे बृद्ध तरुन अरु बाल।—सुंदर ग्रं०, भा० २, पृ० ७३६। २. शुक की तरह हरा रंग। (लश०)। उ० सूवा पाग केसरिया जामा जापर गजब किनारी।—नट०, पृ० १२३।

सूलूल—संज्ञा पुं० [अ०] स्तनाग्र। चूचुक। कुचाग्र [को०]।

सूस[1]—संज्ञा पुं० [अ०; मि०सं० शिशुमार] मगर की तरह का एक बड़ा जलजंतु जो गंगा में बहुत होता है। सूईंस। उ०—सिर बिनु कवच सहित उतराहीं। जहँ तहँ सुभट ग्राह जनु जाही। बिनु सिर ते न जात पहिचाने। मनहुँ सूस जल में उतराने।—सबल (शब्द०)।

विशेष—इसका रंग काला होता है और यह प्रायः जल के ऊपर आया करता है, पर किनारे पर नहीं आता। यह घड़ियाल या मगर के समान जल के बाहर के जंतु नहीं पकड़ता।

सूस[2]—संज्ञा पुं० [अ०] १. रेशम के कपड़ों में लगनेवाला कीट। २. मुलेठी का पेड़ [को०]।

सूसतौⓅ—वि० [सं० स्वस्थ, प्रा० सुस्थ] दे० 'स्वस्थ[1]'। उ०—सूसतौ जी में वीरा जोगिया। पदमणि आगलि घालइ छइ वाई।—वी० रासो, पृ० ६३१।

सूसमार—संज्ञा पुं० [सं० शिशुमार] सूस।

सूसला—संज्ञा पुं० [सं० शश] खरगोश।

सूसिⓅ—संज्ञा पुं० [अ० सूस] दे० 'सूस'। उ०—फिरत चक्र आवर्त्त अनेका। उदरहिं शीश सूसि ढिग एका।—रघुनाथदास (शब्द०)। २. जलीय जंतु। मगर। नक्र। उ०—बीच मिला दरियाव अंध को ठाढ़ कराई। लेन गया वह थाह सूसि लैगा घिसियाई।—पलटू० बानी, पृ० ८८।

सूसी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धारीदार या चारखानेदार कपड़ा।

सूहटा‡—संज्ञा पुं० [हिं० सुअटा, सुवटा, सूवटा] उ०—मुक्तिकरी नानक गुरू, रंचक रामानंद। ना पिंजर ना सूहटा, ना बाणी ना बंद।—प्राण०, पृ० १६६।

सूहर†—संज्ञा पुं० [सं० शूकर, प्रा० सूअर(=सूहर)] शूकर। वराह। उ०—यह उल्लेख है कि उन्होंने सूहर, हिरन, बकरे तथा निषिद्ध मोर का मांस खाया था।—प्रा० भा० प०, पृ० १६८।

सूहा[1]—संज्ञा पुं० [हिं० सोहना] १. एक प्रकार का लाल रंग। २. संपूर्ण जाति का एक संकर राग।

(को०) । ८. संतान (को०) । ९. गंभारी का पेड़ । खंभारी । १०. एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम में आती थी ।

सृष्टि[२]—संज्ञा पुं० उग्रसेन के एक पुत्र का नाम ।

सृष्टिकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० सृष्टिकर्त्तृ] १. सृष्टि या संसार की रचना करनेवाला, ब्रह्मा । २. ईश्वर ।

सृष्टिकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० 'सृष्टिकर्ता' । २. पित्तपापड़ा । पर्पटक ।

सृष्टिदा—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऋद्धि नामक एक अष्टवर्गीय ओषधि । २. दे० 'सृष्टिप्रदा' ।

सृष्टिपत्तन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की मंत्रशक्ति ।

सृष्टिप्रदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गर्भदात्री क्षुप । श्वेत कंटकारी । सफेद भटकटैया ।

सृष्टिविज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि पर विचार किया गया हो ।

सृष्टिशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सृष्टिविज्ञान' ।

सृष्टिसृज्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सृष्टिकर्ता' [को०] ।

सृष्टयंतर—संज्ञा पुं० [सं० सृष्टचन्तर] वह संतान जो अन्य जाति के विवाह से हुई हो [को०] ।

सेंजी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जो पंजाब में चौपायों को खिलाई जाती है । यह कपास के साथ बोई जाती है ।

सेंट—संज्ञा पुं० [अं० सेन्ट] १. सुगंधियुक्त द्रव्य । २. महक । गंध । खुशबू । उ०—वेणी सेंट से महकाई सी; जरा रेडियो को ऊँचा कर दीजो, दुलहन ।—बंदनवार, पृ० ४४ । ३. शत । सौ । ४. किसी बड़े सिक्के का सौवाँ भाग ।

सेंटर—संज्ञा पुं० [अं० सेन्टर] १. गोलाई या वृत्त के बीच का बिंदु । केंद्र । मध्यबिंदु । २. प्रधान स्थान । जैसे,—परीक्षा का सेंटर ।

सेंटेंस—संज्ञा पुं० [अं० सेन्टेन्स] वाक्य । उ०—अंग्रेजी का एक सेंटेंस भी ठीक से नहीं बोल सकते ।—संन्यासी, पृ० १७५ ।

सेंट्रल—वि० [अं० सेन्ट्रल] जो केंद्र या मध्य में हो । केंद्रीय । प्रधान । मुख्य । जैसे,—सेंट्रल गवर्नमेंट, सेंट्रल कमेटी, सेंट्रल जेल ।

सेंद्रिय—वि० [सं० सेन्द्रिय] [वि० स्त्री० सेन्द्रिया] १. इंद्रियसंपन्न । जिसमें इंद्रियाँ हों । सजीव । जैसे,—सेंद्रिय द्रव्य । उ०—सेंद्रिया मैं, अगुणता से नित्य उकता ही रही थी; सजन मैं आ ही रही थी ।—क्वासि, पृ० ८५ । २. पुरुषत्वयुक्त । जिसमें मरदानगी हो । पुंसत्वयुक्त ।

सेंद्रियता—संज्ञा स्त्री० [सं० सेन्द्रिय + ता (प्रत्य०)] इंद्रियसंपन्न होने का भाव, स्थिति या क्रिया । सजीवता । साकारता । उ०—नभ विहारिणी, अलख प्राण, निज जन की सुधि करिए । हे अतींद्रिये सेंद्रियता से क्यों इतना डरिए ।—अपलक, पृ० २२ ।

सेंसर—संज्ञा पुं० [अं० सेन्सर] वह सरकारी अफसर जिसे पुस्तक, पुस्तिकाएँ विशेषकर समाचारपत्र छपने या प्रकाशित होने, नाटक खेले जाने, फिल्म दिखाए जाने, या तार कहीं भेजे जाने के पूर्व देखने या जाँचने का अधिकार होता है । यह जाँच इसलिये होती है कि कहीं उनमें कोई आपत्तिजनक या भड़कानेवाली बात तो नहीं है ।

विशेष—बायस्कोप के फिल्मों या नाटकों की जाँच और काट छाँट करने के लिये तो सेंसर बराबर रहता है, पर समाचारपत्रों और तारघरों में उसी समय सेंसर बैठाए जाते हैं जब देश में विद्रोह या किसी प्रकार की उत्तेजना फैली होती है अथवा किसी देश से युद्ध छिड़ा होता है । सेंसर ऐसी बातों को प्रकाशित नहीं होने देता जिनसे देश में और भी उत्तेजना फैल सकती हो अथवा शत्रु या विरोधी को किसी प्रकार का लाभ पहुँचता हो ।

यौ०—सेंसर बोर्ड = सेंसर करनेवाले अनेक अधिकारियों का समूह या समिति ।

सेंसस—संज्ञा पुं० [अं० सेन्सस] दे० 'मर्दुमशुमारी' ।

सेँ(५)—अव्य० [सं० स्वयम्, प्रा० सयं, सइँ = से] स्वयं । खुद । उ०—सेँ बुज्झै सुरतान दूत पच्छिम सुबिहानं ।—पृ०, रा०, १०।८ ।

सेँक[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंकना] १. आँच के पास या दहकते अंगारे पर रखकर भूनने की क्रिया । २. आँच के द्वारा गरमी पहुँचाने की क्रिया । जैसे,—दर्द में सेँक से बहुत लाभ होगा ।

क्रि० प्र०—करना ।—देना ।—होना ।

यौ०—सेँकसाँक ।

सेँक[२]—संज्ञा स्त्री० लोहे की कमाची जिसका व्यवहार छीपी कपड़े छापने में करते हैं ।

सेँकना—क्रि० स० [सं० श्रेषण (= जलाना, तपाना)] १. आँच के पास या आग पर रखकर भूनना । जैसे,—रोटी सेँकना । २. आँच के द्वारा गरमी पहुँचाना । आँच दिखाना । आग के पास ले जाकर गरम करना । जैसे,—हाथ पैर सेँकना ।

संयो० क्रि०—डालना ।—देना ।—लेना ।

मुहा०—आँख सेँकना = सुंदर रूप देखना । नजारा करना । धूप सेँकना = धूप में रहकर शरीर में गरमी पहुँचाना । धूप खाना ।

सेँकी†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सीनी, हिं० सीनिकी, सनहकी] तश्तरी । रकाबी ।

सेँगर[१]—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गार] १. एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है । २. इस पौधे की फली । ३. बबूल की फली या छीमी ।

विशेष—ओषधिकार्य में भी इसका प्रयोग विहित है । अधिकतर यह भैंस, बकरी, ऊँट आदि को खाने को दी जाती है । ४. एक प्रकार का अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनों तक रहता है ।

सेँगर[२]—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गीवर] क्षत्रियों की एक जाति या शाखा । उ०—कूरम, राठौर, गौड़, हाड़ा, चहुवान, मौर, तोमर, चँदेल, जादौ जंग जितवार हैं । पौरच, पुँडीर, परिहार और पँवार बैस, सेँगर, सिसोदिया, सुलंकी दितवार हैं ।—सूदन (शब्द०) । (ख) सेँगर सपूती सों भरे । जे सुद्ध जुद्धन में लरे ।—पद्माकर ग्रं०, पृ० ८ ।

सेँगरा†—संज्ञा पुं० [देश०] पोखते बाँस का वह डंडा जिसमें लटकाकर भारी पत्थर या धरन एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं।

सेँटा†—संज्ञा स्त्री० [सं० स्रोत] धार। स्रोत। उ०—कुछ इधर उधर से अकस्मात्, जल की सेँटों के भी फुहार। हे खनक किए जा कूपखनन तू यहाँ बीच में ही न हार।—दैनिकी, पृ० ३१। २. गाय की छीमी से निकली हुई दूध की धार।

सेँठा[1]—संज्ञा पुं० [देश०] १. मूँज या सरकंडे के सींके का निचला मोटा मजबूत हिस्सा जो मोढ़े आदि बनाने के काम में आता है। कन्ना। २. एक प्रकार की घास जो छप्पर छाने के काम में आती है। ३. जुलाहों की वह पोली लकड़ी जिसमें ऊरी फँसाई जाती है। डोँड़।

सेँठा[2]—वि० [सं० सुष्ठु या स्व+इष्ट] [स्त्री० सेंठी] १. दृढ़तापूर्वक। ठीक। मजबूत। श्रेष्ठ। उ०—सब सुख छाँड़ भज्यो इक साँई राम नाम लिव लागी। सूरवीर सेँठा पग रोप्या जरा मरण भव भागी।—राम० धर्म०, पृ० ४५। (ख) परगह ले बाँधी पगाँ, सेँठी गूधर साथ। हंजारो सारो हुकम, हुओ रँगीली हाथ।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ११। २. इच्छित। इष्ट। अभिलषित। उ०—खोजी खोज पकड़िया सेँठा। सब संता माहीं मिलि बेठा।—राम० धर्म०, पृ० २०८।

सेँड़, सेँढ़—संज्ञा पुं० [सं० सेव्र (=बंधन, निगड) अथवा देश०] एक प्रकार का खनिज पदार्थ जिसका व्यवहार सुनार करते हैं। उ०—राज्य के विभिन्न भागों में कोयला, मैंगनीज, सिलिका, सेँड़ आदि अनेक खनिज पदार्थ विपुल मात्रा में पाए जाते हैं।—शुक्ल अभि० ग्रं०, पृ० १९।

सेँत—संज्ञा स्त्री० [सं० संहति (=किफायत; समूह, राशि) या देश०] १. कुछ व्यय का न होना। पास का कुछ न लगना। कुछ खर्च न होना। २. (पु)†समूह। राशि। ढेर। उ०—अपनो गाँव लेहु नँदरानी। बड़े बाप की बेटी तातें पूतहि भले पढ़ावति बानी।... सुनु मैया याके गुन मोसों, इन मोंहि लियो बुलाई। दधि में परी सेँति की चींटी, मोतैं सबै कढ़ाई।—सूर (शब्द०)।

मुहा०—सेंत का =(१) जिसमें कुछ दाम न लगा हो। जो बिना मूल्य दिए मिले। जिसके मिलने में कुछ खर्च न हो। मुफ्त का। जैसे—(क) सेँत का सौदा नहीं है। (ख) सेँत की चीज की कोई परवाह नहीं करता। २. बहुत सा। ढेर का ढेर। बहुत ज्यादा। उ०—चलहु जु मिलि उनही पै जैए, जिन्ह तुम टोकन पंथ पठाए। सखा संग लीने जु सेँति के फिरत रैनि दिन बन में पाए। नाहिन राज कंस को जान्यौ बाट रोकते फिरत पराये।—सूर (शब्द०)।

विशेष—यह मुहावरा पूरबी अवधी का है और बस्ती, गोंडा, फैजाबाद आदि जिलों में बोला जाता है। सेँत में =(१) बिना कुछ दाम दिए। बिना कुछ खर्च किए। बिना मूल्य के। मुफ्त में। जैसे—यह घड़ी मुझे सेँत में मिल गई। (२) व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल। जैसे—क्यों सेँत में झगड़ा लेते हो।

सेँतना(पु)—क्रि० स० [हिं० सेँतना] दे० 'सँतना'।

सेँतमेँत—क्रि० वि० [हिं० सेंत+मेंत (अनु०)] १. बिना दाम दिए। मुफ्त में। फोकट में। सेंत में। उ०—(क) कलकी और मलीन बहुत मैं सेंतैंमेंत बिकाऊँ।—सूर (शब्द०)। (ख) नाम रतन धन मुज्झ में, खान खुली घट माहिं। सेँतमेँत ही देत हौं, गाहक कोई नाहिं।—संतबानी०, पृ० ५। (ग) सेँतमेँत के यश का भागी प्रिये, तुम्हारा है भर्ता।—साकेत, पृ० ३७६। २ वृथा। फजूल। निष्प्रयोजन। बेमतलब। जैसे—क्यों सेँतमेँत झगड़ा मोल लेते हो ?

सेँति, सेँती[1]—संज्ञा स्त्री०[हिं० सेंत] दे० 'सेंत'। उ० साई सेँति न पाइए, बातन मिलै न कोय। कबीर सौदा नाम का, सिर बिन कबहुँ न होय। (ख) एक तुम्हें प्रभु चाहौं राज। भूपति रंक सेंति नहिं पूँछौ चरन तुम्हार रु वाँरचौ काज।—मलूक०, पृ० ६।

सेँति, सेँती[2]—प्रत्य० [प्रा० सुंतो, पंचमी विभक्ति] पुरानी हिंदी की करण और अपादान की विभक्ति। से। उ०—(क) तोहि पीर जो प्रेम की पाका सेँती खेल।—कबीर (शब्द०)। (ख) हिंदू व्रत एकादसि साधैं दूध सिघाड़ा सेँती। - कबीर (शब्द०)। (ग) राजा सेँति कुँवर सब कहहीं। अस अस मच्छ समुद मँह अहहीं।—जायसी (शब्द०)। (घ) संजीवन तब कचहिं पढ़ाई। ता सेँती यों कह्यो समुझाई।—सूर (शब्द०)।

सेँथा†—संज्ञा पुं० [हिं० सेंठा] दे० 'सेंठा'।

सेँथी†—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] बरछी। भाला। शक्ति शर्वला। उ०—इंद्रजीत लीनी जब सेँथी देवन हहा करयो। छूटी बिज्जु राशि वह मानो भूतल बंधु परयो।—सूर (शब्द०)।

सेँद‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंध] दे० 'सेँध'।

सेँदुर(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० सिंदूर] ईंगुर की बुकनी। सिंदूर। उ०—(क) माँग मैं सेँदुर सोहि रह्यो गिरधारन है उपमा न तिहूँ पुर। मानो मनोज की लागी कृपान, परयो कटि बीच ते राहु बहादुर।—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)। (ख) बिन सेँदुर जानउँ मैं दिआ। उँजियर पंथ रइनि मँह किआ।—जायसी (शब्द०)।

विशेष—सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ इसे माँग में भरती हैं। यह सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। विवाह के समय में वर कन्या की माँग में सिंदूर डालता है और उसी घड़ी से वह उसकी स्त्री हो जाती है।

क्रि० प्र०—पहनना।—देना।—भरना।—लगाना।

मुहा०—सेंदुर चढ़ना=स्त्री का विवाह होना। सेँदुर देना= विवाह के समय पति का पत्नी की माँग भरना। उ०—राम सीय सिर सेँदुर देहीं। सोभा कहि न जाय विधि केहीं।—तुलसी (शब्द०)।

सेँदुरदानी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंदुर+फ़ा० दानी] सिंदूर रखने की डिबिया। सिंदूरा।

सेँदुरबहोरा†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंदुर+बहोरना(=पलटना या ठीक करना)] विवाह के अवसर पर वर द्वारा कन्या के शीश पर सिंदूर दान के बाद कन्या की कोई भी बड़ी बहन या किसी

सौभाग्यवती स्त्री द्वारा सिंदूर को एक ढंग से सज्जित करने की क्रिया।

सेँदुरा१—वि० [हिं० सेंदुर] [वि० स्त्री० सेंदुरी] सिंदूर के रंग का। लाल। जैसे,—सेँदुरी गाय। सेँदुरा ग्राम।

सेँदुरा२—संज्ञा पुं० [हिं० सिंदूर, सिधोरा] सिंदूर रखने का डिब्बा। सिंदूरा।

सेँदुरिया—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूरिका, सिन्दूरी] एक सदाबहार पौधा जिसमें सिंदूर के रंग के लाल फूल लगते हैं।

विशेष—इसके पत्ते ६-७ अंगुल लंबे और ४-५ अंगुल चौड़े, नुकीले और अरवी के पत्ते से मिलते जुलते हैं। फूल दो ढाई अंगुल के घेरे में पाँच दलों के और सिंदूर के रंग के लाल होते हैं। इस पौधे की गुलाबी, बैंगनी और सफेद फूलवाली जातियाँ भी होती हैं। गरमी के दिनों में यह फूलता है और बरसात के अंत में इसमें फल लगने लगते हैं। फल लंबोतरे, गोल, ललाई लिए भूरे तथा कोमल महीन महीन काँटों से युक्त होते हैं। गूदे का रंग लाल होता है। गूदों के भीतर जो बीज होते हैं, उन्हें पानी में डालने से पानी लाल हो जाता है। बहुत स्थानों पर रंग के लिये ही इस पौधे की खेती होती है। शोभा के लिये यह बगीचों में भी लगाया जाता है। आयुर्वेद में यह कड़वा, चरपरा, कसैला, हलका, शीतल तथा विषदोष, वातपित्त, वमन, माथे की पीड़ा, आदि को दूर करनेवाला माना गया है।

पर्या०—सिंदूरपुष्पी। सिंदूर। तृणपुष्पी। रक्तबीजा। रक्तपुष्पी। वीरपुष्पा। करच्छदा। शोणपुष्पी।

सेँदुरिया२—वि० सिंदूर के रंग का। खूब लाल।

यौ०—सेँदुरिया आम = वह आम का फल जिसका छिलका लाल सिंदूर के रंग का हो।

सेँदुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंदुर + ई (प्रत्य०)] सिंदूर के रंग की लाल गाय। उ०—कजरी धुमरी सेँदुरी धौरी मेरी गैया। दुहि ल्याऊँ मैं तुरत ही तू करि दै छैया।—सूर (शब्द०)।

सेँध१—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ बड़ा छेद जिसमें से होकर चोर किसी कमरे या कोठरी में घुसता है। संधि। सुरंग। सेन। नकब।

विशेष—संस्कृत के नाटक 'मृच्छकटिक' में इसके अनेक प्रकार वर्णित हैं।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगना।

सेँध२—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. गोरखककड़ी। फूट। मृगेर्वारु। २. पेंहँटा। कचरी।

सेँधना१—क्रि० स० [हिं० सेंध + ना (प्रत्य०)] सेंध या सुरंग लगाना।

सेँधना२—क्रि० स० [सं० सन्धान] संबंधित करना। स्थापित करना। संधान करना। उ०—पंज सों पंज सनेह मिल कर सेँधिय दारि सुधारि सुधं भिर।—पृ० रा०, १२। ३६६।

सेँधा१—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धव] एक प्रकार का नमक जो खान से निकलता है। सैंधव। लाहौरी नमक।

विशेष—इसकी खानें खेवड़ा, शाहपुर, कालानाग और कोहाट में हैं। यह सब नमकों में श्रेष्ठ है। वैद्यक में यह स्वादु, दीपक, पाचक, हल्का स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्यवर्धक, सूक्ष्म, नेत्रों के लिये हितकारी तथा त्रिदोषनाशक माना गया है। इसे 'लाहौरी नमक' भी कहते हैं।

सेँधा२—वि० [सं० सन्ध] १. संधान या संबंधवाला। जानकार। उ०—(क) दे नँह सेँधा नूँ दगो, ग्रहे कुतो ही ज्ञान।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ६८। २. मुलाकाती। मिलनेवाला। (ख) देवे सेँधा नू दगो साह करे सनमान।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ६८।

सेँधानी—संज्ञा स्त्री० [सं० सज्जन, सज्ञान या सन्धान] दे० 'सहिदानी'। उ०—यह श्रीनाथ जी ने वा पटेल को हार की सेँधानी दीनी।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २२१।

सेँधि(पु)—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सेंध'। उ०—चोर पैठि जस सेँधि सवारी। जुआ पैत जेउँ लाख जुआरी।—जायसी ग्रं० (गुप्ता०), पृ० २६५। २. सेँधा नमक।

सेँधिया—वि० [हिं० सेंध] सेंध लगानेवाला। दीवार में छेद करके चोरी करनेवाला। जैसे—सेँधिया चोर।

सेँधिया२—संज्ञा पुं० [सं० सेटु] १. ककड़ी की जाति की एक बेल जिसमें तीन चार अंगुल के छोटे छोटे फल लगते हैं। कचरी। सेंध। पेहँटा। २. एक प्रकार की ककड़ी। फूट।

विशेष—यह खेतों में प्रायः आपसे आप उपजता है।

३. एक प्रकार का विष।

सेँधिया३—संज्ञा पुं० [मरा० शिंदे] ग्वालियर का प्रसिद्ध मराठा राजवंश जिसके संस्थापक रणजी शिंदे थे।

सेँधी१—संज्ञा स्त्री० [सिंध (देश, जहाँ खजूर बहुत होता है; मरा० शिंदी] १. खजूर। २. खजूर की शराब। मीठी शराब।

सेँधी२—संज्ञा स्त्री० [सं० सेटु] १. खेत की ककड़ी। फूट। २. कचरी। पेहँटा।

सेँधु—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धु] समुद्र। सिंधु। उ०—साधु के महिमा कहि नहि जाई। जैसे सेँधु जल थाह न पाई।—संत० दरिया, पृ० १२।

सेँधुर(पु)**१**—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धु, हिं० सेंधु + र (प्रत्य०)] दे० 'समुद्र'। उ०—एह भव सेँधुर कत सभ खाई। भँवर तरंग धार कठिनाई।—संत० दरिया, पृ० २०।

सेँधुर(पु)**२**—संज्ञा पुं० [सं० सिन्धुर] दे० सिंधुर।

सेँधुर‡३—संज्ञा पुं० [सं० सिन्दूर] दे० 'सेंदुर'।

सेँबल(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मली, हिं० सेँवर] दे० सेमल। उ०—यहु संसार सेँबल कै सुख ज्यूँ तापर तूँ जिनि फूलै।—संतबानी०, भा० २, पृ० ६२।

सेँभा—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों का एक वात रोग।

सेँभु—संज्ञा पुं० [सं० स्वयम्भू] दे० 'स्वयंभू'। उ०—बर सिरदार बिभार सेँभु चहुआन नाह वर।—पृ० रा० २५-३०७।

सेँमरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेँवई] दे० 'सेँवई'। उ०—घर घर ढूढ़ें अम्मा मेरी सेँमरी जी, राजा आयौ तीजँन कौ त्यौहार।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ. ६४४।

सेँमुष—वि० [सं० सम्मुख] अनुकूल। अभिमुख। उपयुक्त। उ०—सेँमुष धनि धनि उच्चरै भल छोरचो चहुग्रान।—पृ० रा०, ६६।४०६।

सेँलोटना—क्रि० अ० [सं० सं० + लुठन] धराशायी होना। ढहना। लोट जाना। उ०—गढन कोट सेँलोट धममि, धम धम्म अरिनि पुर।—पृ० रा०, १।७१६।

सेँवई—संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका] मैदे के सुखाए हुए सूत के लच्छे जो घी में तलकर और दूध में पकाकर खाए जाते हैं।

मुहा०—सेँवई पूरना या बटना = गुँधे हुए मैदे को हथेलियों से से रगड़ रगड़कर सूत के आकार में बढ़ाते जाना।

सेँवरⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० सेंवल] दे० 'सेमल'। उ०—(क) वार बार निशि दिन अति आतुर फिरत दशो दिशि धाए। ज्यों शुक सेँवर फूल बिलोकत जात नहीं बिन खाए।—सूर (शब्द०)। (ख) राजै कहा सत्य कहु सूआ। बिनु सत जस सेँवर कर भूआ।—जायसी (शब्द०)।

सेँह†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंध] दे० 'सेँध'।

सेँहा[१]—संज्ञा पुं० [हिं० सेंध] कूआँ खोदनेवाला। कुइहाँ।

सेँहा[२]—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सेँधि'।

सेँही—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सेँध'।

सेँहुआ—संज्ञा पुं० [हिं० सेहुआँ] दे० 'सेहुआँ'।

सेँहुड़—संज्ञा पुं० [सं० सेहुण्ड] थूहर। वि० दे० 'थूहर'। उ०—छतै नेह कागद हिये भई लखाइ न टाँक। बिरह तचे उघरचो सु अब सेँहुड़ को सो आँक।—बिहारी (शब्द०)।

से[१]—प्रत्य० [प्रा० सुंतो, पु०हिं० सेंति] करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पंचमी की विभक्ति। जैसे—(क) मैंने अपनी आँखों से देखा। (ख) पेड़ से फल गिरा। (ग) वह तुमसे बढ़ जायगा।

से[२]—वि० [हिं० 'सा' का बहुवचन] समान। सदृश। सम। जैसे,—इसमें अनार से फल लगते हैं। उ०—नासिका सरोज गंधवाह से सुगंधवाह, दारचो से दसन, कैसे बीजुरो सो हास है।—केशव (शब्द०)।

सेⓅ[३]—सर्व० [हिं० 'सो' का बहुवचन] वे। उ०—अवलोकिहीं सोच विमोचन को ठगि सी रही, जो न ठगे धिक से।—तुलसी (शब्द०)।

से[४]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेवा। खिदमत। चाकरी। २. कामदेव की पत्नी का नाम।

से‡[५]—वि० [फ़ा० सेह] तीन। उ०—उन्हें से चहार दिन हो जजबे बहोश। आपस के जात कूँ कर कर फरामोश।—दक्खिनी०, पृ० १९६।

सेई‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेर] अनाज नापने का काठ का एक गहरा बरतन।

सेउⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० सेव] दे० 'सेव'। उ०—किसिमिसि सेउ फरे नउ पाता। दारिउँ दाख देखि मन राता।—जायसी (शब्द०)।

सेकंड[१]—संज्ञा पुं० [अं० सेकन्ड] एक मिनट का ६० वाँ भाग।

सेकंड[२]—वि० दूसरा। जैसे,—सेकंड पार्ट। सेकंड हैंड।

सेक—संज्ञा पुं० [सं०] १. जलसिंचन। सिंचाव। २. जलप्रक्षेप। सेचन। छिड़काव। छींटा। मार्जन। तर करना। उ०—और जु अनुसयना कही, तिनके बिमल विवेक। बरनत कवि मतिराम यह रस सिंगार को सेक।—मतिराम ग्रं०, पृ० २८६। ३. अभिषेक। उ०—बोली ना नवेली कछू बोल सतराय वह, मनसिज ओज को सुहानौं कछु सेक है।—मतिराम ग्रं०, पृ० ३३७। ४. तैल सेचन या मर्दन। तेल लगाना या मलना। (वैद्यक)। ५. एक प्राचीन जाति का नाम। ६. (वीर्य का) पतन या स्राव (को०)। ७. स्नान करने का फुहारा (को०)। ८. किसी भी द्रव पदार्थ की बूँद (को०)।

सेकट्टर‡—संज्ञा पुं० [अं० सेक्रेटरी] दे० 'सेक्रटरी'। उ०—सेकट्टर साहब बोलटा है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४५५।

सेकड़ा—संज्ञा पुं० [देश०] वह चाबुक या छड़ी जिससे हलवाहे बल हाँकते हैं। पैना।

सेकतव्यⓅ—वि० [सं० सेक्तव्य] १. सींचने योग्य। २. जिसे सींचना या तर करना हो।

सेकपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] सींचने का बरतन। डोल। डोलची।

सेकभाजन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सेकपात्र'।

सेकमिश्रान्न—संज्ञा पुं० [सं०] वह खाद्य पदार्थ जिसमें दही पड़ा हो।

सेकिम[१]—वि० [सं०] १. सींचा हुआ। तर किया हुआ। २. ढाला हुआ (लोहा)।

सेकिम[२]—संज्ञा पुं० [सं०] मूली। मूलक। गाजर।

सेकुवा—संज्ञा पुं० [देश०] काठ के दस्ते का लंबा करछा या डौवा जिससे हलवाई दूध औटाते हैं।

सेकूरी—संज्ञा स्त्री० [देश०] धान। (सुनार)।

सेक्तव्य—वि० [सं०] १. सींचने योग्य। २. जिसे सींचना या तर करना हो।

सेक्ता[१]—वि० [सं० सेक्तृ] [वि० स्त्री० सेक्त्री] १. सींचनेवाला। २. बरदानेवाला। जो गाय, घोड़ी आदि को बरदाता है। ३. जल लानेवाला (को०)।

सेक्ता[२]—संज्ञा पुं० १. पति। शौहर। २. जलवाहक व्यक्ति (को०)। ३. वह जो सेक करता हो (को०)।

सेक्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] सींचने का बरतन। जल उलीचने का बरतन। डोल। डोलची।

सेक्रेटरी—संज्ञा पुं० [अं०] १. वह उच्च कर्मचारी या अफसर जिसके अधीन सरकार या शासन का कोई विभाग हो। मंत्री।

सचिव। जैसे, —फारेन सेक्रेटरी। स्टेट सेक्रेटरी। २. वह पदाधिकारी जिसपर किसी संस्था के कार्यसंपादन का भार हो। जैसे,—कांग्रेस सेक्रेटरी। ३. वह व्यक्ति जो दूसरे की ओर से उसके आदेशानुसार पत्रव्यवहार आदि करे। मुंशी। जैसे,—महाराज के सेक्रेटरी।

सेक्रेटेरियट—संज्ञा पुं० [अं०] किसी सरकार के सेक्रेटरियों का कार्यालय या दफ्तर। शासक या गवर्नर का दफ्तर। उ०—तरक्की करते करते सेक्रेटेरियट की अँगनई में दाखिल हो बैठे थे।—नई०, पृ० ८।

सेक्शन—संज्ञा पुं० [अं०] विभाग। जैसे,—इस दर्जे में दो सेक्शन हैं।

सेख(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० शेष] १. शेषनाग। विशेष दे० 'शेष'—८। उ०—महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेख।—तुलसी (शब्द०)। २. समाप्ति। अंत। खातमा। उ०—पियत बात तन सेख कियो द्विज रात बिहरि बन। मिटै वासना नाहिं बिना हरिपद रज के तन।—सुधाकर (शब्द०)।

सेख²—संज्ञा पुं० [अं० शैख़] दे० 'शेख'। उ०—इनमें इते बलवान हैं। उत सेख मुगल पठान हैं।—सूदन (शब्द०)।

सेखर(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शेखर] दे० 'शेखर'। उ०—मोर मुकुट की चंद्रिकन यौं राजत नँदनंद। मनु ससिसेखर को अकस किय सेखर सतचंद।—बिहारी (शब्द०)।

सेखवा†—संज्ञा पुं० [अ० शैख, हिं० सेख + वा (प्रत्य०)] दे० 'शेख'। उ०—ना हुवाँ ब्राह्मन सूद्र न सेखवा।—कबीर श०, पृ० ४७।

सेखावत—संज्ञा पुं० [फ़ा० शैख + हिं० सेख + आवत (प्रत्य०); अथवा 'शेखावाटी' नाम का एक स्थान] राजपूतों की एक जाति या शाखा। शेखावत।

विशेष—इनका स्थान राजपूताने का शेखावाटी नाम का कसबा है। राजस्थान में स्थान, जाति, वंश और विशिष्ट व्यक्ति आदि के आगे यह संबंधवाचक प्रत्यय लगाते हैं। जैसे,—ऊदावत, कूपावत आदि।

सेखी‡—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शेख़ी] दे० 'शेखी'।

सेगव—संज्ञा पुं० [सं०] केकड़े का बच्चा।

सेगा—संज्ञा पुं० [अ० सीग़ह्] १. विभाग। महकमा। २. विषय। पढ़ाई या विद्या का कोई क्षेत्र। जैसे,—वह इम्तहान में दो सेगो में फेल हो गया।

सेगुन†—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सागोन'।

सेगोन; सेगौन—संज्ञा पुं० [देश०] मटमैले रंग की लाल मिट्टी जो नालों के पास पाई जाती है।

सेच—संज्ञा पुं० [सं०] सेक। सिंचाई। छिड़काव [को०]।

सेचक¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सेचिका] सींचनेवाला। छिड़कनेवाला। तर करनेवाला।

सेचक²—संज्ञा पुं० मेघ। बादल।

सेचन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेचनीय, सेचित, सेच्य] १. जलसिंचन। सिंचाई। २. मार्जन। छिड़काव। छींटे देना। ३. अभिषेक। ४. ढलाई (धातु की)। ५. (नाव से) जल उलीचने का बरतन। लोहँदी। ६. दे० 'सेक' (को०)।

सेचनक—संज्ञा पुं० [सं०] १. अभिषेक २. स्नान का फुहारा [को०]।

सेचनघट—संज्ञा पुं० [सं०] वह बरतन जिससे जल सींचा जाता है।

सेचनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सींचने की छोटी बालटी [को०]।

सेचनीय—वि० [सं०] सींचने योग्य। छिड़कने योग्य।

सेचिका—वि० स्त्री० [सं०] दे० 'सेचक'।

सेचित—वि० [सं०] १. जो सींचा गया हो। तर किया हुआ। २. जिसपर छींटे दिए गए हों।

सेच्य—वि० [सं०] १. सींचने योग्य। जल छिड़कने योग्य। २. जिसे सींचना हो। जिसे तर करना हो।

सेछागुन—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का पक्षी।

सेज—संज्ञा [सं० शय्या, प्रा० सज्जा, सिज्जा, सेज्ज, सेज्जा] शैया। पलंग और बिछौना। उ०—(क) सेज रुचिर रुचि राम उठाए। प्रेम समेत पलँग पौढ़ाए।—तुलसी (शब्द०)। (ख) चाँदनी महल फैल्यो चाँदनी फरस सेज, चाँदनी बिछाय छबि चाँदनी रितै रही।—प्रतापसाहि (शब्द०)।

सेजदह—वि० [फ़ा० सेज़दह] त्रयोदश। तेरह [को०]।

सेजदहुम—वि० [फ़ा० सेज़दहुम] तेरहवाँ [को०]।

सेजपाल—संज्ञा पुं० [सं० शय्यापाल, हिं० सेज + पाल] राजा की शैया या सेज पर पहरा देनेवाला। शयनगृह पर पहरा देनेवाला। शयनागार का रक्षक। शैयापाल। उ०—राजा उस समय शैया पर पौढ़े थे और सेजपाल लोग अस्त्र बाँधे पहरा दे रहे थे।—गदाधरसिंह (शब्द०)।

सेजबंद(पु)—वि० [हिं० सेज + फ़ा० बंद] दे० 'सेजबंध'। उ०—खासा पलँग सेजबंद तकिया, तोसक फूल बिछाया।—कबीर० श०, भा०, पृ० २३।

सेजबंध(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सेज + बंध] वह रस्सी जिससे बिछौने की चादर को पायों से बाँधते हैं। उ०—सेजबंध बाँधि कै पान को चाभते।—पलटू०, भा० २, पृ० ११।

सेजरिया(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेज] दे० 'सेज'। उ०—रस रँग पगी है देखो लाल की सेजरिया।—कबीर (शब्द०)।

सेजरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेज + री (प्रत्य०)] शय्या। दे० 'सेज'।

सेजवार†—संज्ञा पुं० [सं० शय्यापाल, हिं० सेजपाल] दे० 'सेजपाल'। —वर्ण०, पृ० ६।

सेजा¹—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पेड़ जो आसाम और बंगाल में होता है और जिसपर टसर के कीड़े पाले जाते हैं।

सेजा²—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] दे० 'शय्या'। उ०—कुसुमे रचित सेजा दीप रहल तेजा, परिमल अगर चाँदने।—विद्यापति, पृ० २५२।

सेजा†³—संज्ञा पुं० [सं० सह्य, प्रा० सेज्भ, सेभ (= सह्याद्रि पर्वत)] १. पर्वत। अद्रि। पहाड़। २. सोता। प्रवाह। झरना। उ०—बाँसुरी समान मेरी पाँसुरी हरेक डोलै, उठत असाध पीर मनो

घाव नेजा ज्यों। हाय नटनागर जू ग्राह तौ कढै है नीठि, लोयन बहै हैं दोऊ भरे जल सेजा ज्यों।—नट० वि०, पृ० ७७।

सेजिया‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेज + इया] दे० 'सेज'।

सेज्याⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] दे० 'शय्या'। उ०—सूर श्याम सुख जानि मुदित मन सेज्या पर सँग लै पौढ़ावति। – सूर (शब्द०)।

सेझⓅ‡—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या, हिं० सेज, राज० सेझ] शय्या। सेज। उ०—सुरति शब्द मिल एक एकठा ता बिच रही न काग्। जन हरिया सुन सेझ का सहजाँई सुख माग्।—राम० धर्म०, पृ०, ६३।

सेझड़ी†—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या, प्रा० सेज्ज, राज० सेझ + ड़ी (प्रत्य०)] शय्या। सेजरी। सेज। उ०—मुख नीसाँसाँ मूँकती, नयणे नीर प्रवाह। सूली सिरखी सेझड़ी तो विण जाणो नाह।—ढोला०, दू० १६६।

सेझदादिⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सह्याद्रि] दे० 'सह्याद्रि'। उ०—सेझदादि तैं गिरि बहु रहईं। गंगादिक सरिता बहु बहईं।—रघुनाथदास (शब्द०)।

सेझना—क्रि० अ० [सं० √सिध्, सेधन (= दूर करना, हटाना)] दूर होना। हटना। उ०—सो दारू किस काम की जाने दरद न जाइ। दादू काटइ रोग को सो दारू ले लाइ। अनुभव काटइ रोग को अनहद उपजइ आइ। सेझे काजर निर्मला पीवइ रुचि लव लाइ।—दादू (शब्द०)।

सेझा—संज्ञा पुं० [सं०√सिध्, सेधन, प्रा० सेझण] प्रवाह। झरना। दे० 'सेजा'[२]। उ०—जहँ तन मन का मूल है, उपजै ओंकार। अनहद सेझा सबद का, आतम करै बिचार।—दादू० बानी, पृ० ८९।

सेओंफ†—संज्ञा पुं० [देश० तुल० सं० शतपुष्पी] दे० 'सौंफ'।—वर्ण०, पृ० २।

सेट[१]—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तौल या मान।

सेट[२]—संज्ञा सं० [देश०] काँख, नाक, उपस्थ आदि के बाल या रोएँ।

सेट[३]—संज्ञा पुं० [अं०] एक ही प्रकार मेल की कई चीजों का समूह। जैसे,—किताबों का सेट, खाने के बरतनों का सेट।

सेटनाⓅ—क्रि० अ० [सं० श्रुत (= विश्वास करना)] १. समझना। मानना। उ०—जो कलिकाल भुजँगभय मेटत। शरणागत भवरुज लघु सेटत।—रघुराज (शब्द०) २. कुछ समझना। महत्व स्वीकार करना। जैसे—अपने आगे वह किसी को नहीं सेटता।

सेटिल—वि० [अं० सेटिल्ड] जो निपट गया हो। जो तै हो गया हो। जैसे,—उन दोनों का मामला आपस में सेटिल हो गया।

सेटिलमेंट—संज्ञा पुं० [अं० सेटिलमेन्ट] १. खेती के लिये भूमि को नापकर उसका राजकर निर्धारित करने का काम। जमीन नापकर उसका लगान नियत करने का काम। बंदोबस्त। २. एक देश के लोगों की दूसरे देश में बसी हुई बस्ती। उपनिवेश।

सेटु—संज्ञा पुं० [सं०] १. खेत की ककड़ी। फूट। २. कचरी। पेहँटा।

सेठ—संज्ञा पुं० [सं० श्रेष्ठि, प्रा० सिट्ठि] [सेट्ठि, स्त्री० सेठानी] १. बड़ा साहूकार। महाजन। कोठीवाल। २. बड़ा या थोक व्यापारी। ३. धनी मनुष्य। मालदार आदमी। लखपती। ४. धनी और प्रतिष्ठित वणिकों की उपाधि। ५. खत्रियों की एक जाति। ६. दलाल। (डिं०)। ७. सुनार।

सेठन—संज्ञा पुं० [देश०] झाड़ू। बुहारी।

सेठा—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सेँठा'।

सेठिया—संज्ञा पुं० [सं० श्रेष्ठिक, प्रा० सेट्ठिय, गुज० सेठिया] दे० 'सेठ'।

सेड़ा†—संज्ञा पुं० [देश०] भादों में होनेवाला एक प्रकार का धान।

सेड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं० चेटी, प्रा० चेडि, हिं० चेरी अथवा सं० सखि, प्रा० सहि + हिं० ली (प्रत्य०), हिं० सहेली] सहेली। सखी। (डिं०)।

सेढ़—संज्ञा पुं० [अं० सेल] बादबान। पाल। (लश०)।

मुहा०—सेढ़ करना = पाल उड़ाना। जहाज खोलना। सेढ़ खोलना = पाल उतारना। सेढ़ बजाना = पाल में से हवा निकालना जिसमें वह लपेटा जा सके। सेढ़ सपटाना = रस्से को खींचकर पाल तानना। (लश०)।

सेढ़खाना—संज्ञा पुं० [अं० सेल + फ़ा० ख़ाना] १. जहाज में वह कमरा या कोठरी जिसमें पाल भरे रहते हैं। २. वह कमरा या कोठरी जहाँ पाल काटे और बनाए जाते हैं। (लश०)।

सेढ़मसानीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्ध + श्मशान] श्मशानवासी देवी। काली। उ०—(क) खर का सोर भूँस कूकर की देखादेखी चाली। तैसे कलुआ जाहिर भैंरो सेढ़मसानी काली।—चरण० बानी, पृ० ७२। (ख) सेढ़मसानी के दरबान, नौहबति बाजि रही।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ९२२।

सेढ़ा†[१]—संज्ञा पुं० [हिं० सेड़ा] दे० 'सेड़ा'।

सेढ़ा[२]—संज्ञा पुं० [अं० सेल, हिं० सेढ़] १. दे० 'सेढ़'। उ०—कहीं सुबीते से नाव का सेढ़ा नहीं लगा।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ११८। २. सिरा।

सेढ़ाⓅ[३]—संज्ञा स्त्री० [देश०] नाक का मैल। उ०—थूक रु लार भरयो मुख दीसत आँखि में गीज रु नाक में सेढ़ो।—सुंदर ग्रं०, भा० २, पृ० ४३६।

सेणⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० स्वजन, प्रा० सयण] मित्रमंडली। आत्मीय जन। स्वजन। उ०—ज्याँ री जीभ न ऊपड़ै सेणाँ माँही सेत। वाराँ कर किम ऊपरै खलाँ घिरचा बिच खेत।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० १७।

सेणिⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणि, प्रा० सेणि] श्रेणी। कतार। उ०—कबीर तेज अनंत का मानौं ऊगौं सूरज सेणि। पति सँगि जागी सुंदरी, कौतिग दीठा तेणि।—कबीर ग्रं०, पृ० १२।

सेत†[१]—संज्ञा पुं० [सं० सेतु] दे० 'सेतु'। उ०—(क) सिला तरें जल बीच सेत में कटक उतारी।—पलटू०, पृ० ८। (ख) काज कियो नहिं समै पर पछतानै फिरि काह। सूखी सरिता सेत ज्यौ जोवन बितै बिवाह।—दीनदयाल (शब्द०)।

सेत(पु)²—वि० [सं० श्वेत, प्रा० सेअ; अप० सेत्त] दे० 'श्वेत'। उ०—पैन्ह सेत सारी बैठी फानुस के पास प्यारी, कहत बिहारी प्राणप्यारी धौं कितै गई।—दूलह (शब्द०)।

सेत(पु)³—वि० [सं० श्वेत, प्रा० सेत] १. स्पष्ट। साफ। उ०—ज्याँरी जीभ न ऊपड़े सेणाँ माँही सेत।—बाँकी ग्रं०, भा० २, पृ० १७। २. कीर्ति। यश। मर्यादा। उ०—सबें सेतबंधी रहे सेत मुक्के। गयौ हब्बसी रोम साध्रंम चुक्के।—पृ० रा०, २४। २५७।

यौ०—सेतबंधी = कीर्तिवाले। यशस्वी।

सेत†⁴—संज्ञा पुं० [सं० स्वेद, प्रा० सेअ, सेद] दे० 'स्वेद'।

सेतकुली—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतकुलीय] सर्पों के अष्टकुल में से एक। सफेद जाति के नाग। उ०—मोको तुम अब यज्ञ करावहु तक्षक कुटुँब समेत जरावहु। बिप्रन सेतकुली जब जारी। तब राजा तिनसों उच्चारी।—सूर (शब्द०)।

सेतज(पु)†—वि० [सं० स्वेदज, प्रा० सेदज] दे० 'स्वेदज'। उ०—उन्मुनि ध्यान न सेतज कीने।—प्राण०, पृ० ५८।

सेतदीप(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतदीप] दे० 'श्वेतद्वीप'।

सेतदुति(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतद्युति] चंद्रमा।

सेतना—क्रि० स० [हिं० सैंतना] दे० 'सैंतना'।

सेतबंद(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सेतुबन्ध, प्रा० सेतबंध] उ०—(क) सेतबंद पुन कीन्ह ठिकाना। पुष्कर क्षेत्र आय जम थाना।—कबीर सा०, पृ० ८०४। (ख) सेतबंद पर जाय पूजि रामेस्वर नीकै।—ह० रासो, पृ० १६३।

सेतबंध‡—संज्ञा पुं० [सं० सेतुबन्ध] दे० 'सेतुबंध'।

सेतवा—संज्ञा पुं० [सं० शुक्ति, हिं० सितुही] पतले लोहे की करछी जिससे अफीम काछते हैं।

सेतवारी†—संज्ञा स्त्री० [सं० सिकता (= बालू) + हिं० वारी (प्रत्य०)] हरापन लिए हुए बलुई चिकनी मिट्टी।

सेतवाल—संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

सेतवाह(पु)—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतवाहन] १. अर्जुन। २. चंद्रमा (डिं०)।

सेतव्य—वि० [सं०] साथ रखने योग्य। सह बंधन योग्य [को०]।

सेतिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] साकेत। अयोध्या।

सेती(पु)†—प्रत्य० [हिं०] से। साथ। उ०—(क) नारी सेती नेह लगायौ।—रामानंद०, पृ० ६। (ख) कर सेती माला जपे हिरदै बहै डँडूल। पग तौ पाला मैं गिल्या, भाजण लागी सूल।—कबीर ग्रं०, पृ० ४५। (ग) जैसे भूखे प्रीत अनाजा। तृणवंत जल सेती काजा।—दक्खिनी०, पृ० ४४।

सेतु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। बँधाव। २. मिट्टी का ऊँचा पटाव जो कुछ दूर तक चला गया हो। बाँध। धुस्स। ३. मेंड़। डाँड़। ४. किसी नदी, जलाशय, गड्ढे, खाईं आदि के आर पार जाने का रास्ता जो लकड़ी, बाँस, लोहे आदि बिछाकर या पक्की जोड़ाई करके बना हो। पुल। उ०—आवत जानि भानुकुल केतू। सरितन्ह जनक बँधाए सेतू।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—बनाना।—बाँधना। उ०—सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार।—मानस, ७।६७।

५. सीमा। हदबंदी। ६. मर्यादा। नियम या व्यवस्था। प्रतिबंध। उ०—असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुतिसेतु। जग बिस्तारहिं बिशद जस, रामजनम कर हेतु।—तुलसी (शब्द०)। ७. प्रणव। ओंकार। ८. टीका या व्याख्या। ९. वरुण वृक्ष। बरना। १०. एक प्राचीन स्थान। ११. द्रुह्यु के एक पुत्र और बभ्रु के भाई का नाम। १२. संकीर्ण पर्वतीय मार्ग। सँकरा पहाड़ी रास्ता (को०)। १३. वह मकान जिसमें धरनें छत के साथ लोहे की कीलों से जड़ी हो। १४. दे० 'सेतुबंध'—४।

सेतु(पु)²—वि० [सं० श्वेत, प्रा० सेअ, अप० सेत्त] दे० 'श्वेत'।

सेतुक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुल। २. बाँध। धुस्स। ३. वरुण वृक्ष। बरना। ४. दर्रा। तंग पर्वतपथ (को०)।

सेतुक(पु)²—अव्य० [हिं० सौंतुख] संमुख। सामने।

सेतुकर—संज्ञा पुं० [सं०] सेतुनिर्माता। पुल बनानेवाला।

सेतुकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सेतुकर्मन्] सेतु या पुल बनाने का काम।

सेतुज—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिणापथ के एक स्थान का नाम।

सेतुपति—संज्ञा पुं० [सं०] रामनद के (जो मद्रास प्रदेश के मदुरा जिले के अंतर्गत है) राजाओं की वंशपरंपरागत उपाधि।

सेतुपथ—संज्ञा पुं० [सं०] दुर्गम स्थानों में जानेवाली सड़क। ऊँची नीची पहाड़ी घाटियों में जानेवाली सड़क।

सेतुप्रद—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण का एक नाम।

सेतुबंध—संज्ञा पुं० [सं० सेतुबन्ध] १. पुल की बँधाई। २. वह पुल जो लंका पर चढ़ाई के समय रामचंद्र जी ने समुद्र पर बँधवाया था। उ०—सेतुबंध भइ भीर अति कपि नभ पंथ उड़ाहिं।—मानस, ६।४।

विशेष—नल नील ने बंदरों की सहायता से शिलाएँ पाटकर यह पुल बनाया था। वाल्मीकि ने यहाँ शिव की स्थापना का कोई उल्लेख नहीं किया है। केवल लंका से लौटते समय रामचंद्र ने सीता से कहा है—'यहाँ पर सेतु बाँधने के पहले शिव ने मेरे ऊपर अनुग्रह किया था (युद्धकांड, १२५वाँ अध्याय)। पर अध्यात्म आदि पिछली रामायणों में शिव की स्थापना का वर्णन है। इस स्थान पर रामेश्वर महादेव का दर्शन करने के लिये लाखों यात्री जाया करते हैं। 'सेतुबंध रामेश्वर' हिंदुओं के चार मुख्य धामों में से एक है। आजकल कन्याकुमारी और सिंहल के बीच के छिछले समुद्र में स्थान स्थान पर जो चट्टानें निकली हैं, वे ही उस प्राचीन सेतु के चिह्न बतलाई जाती हैं।

३. बाँध या पुल (को०)। ४. नहर।

विशेष—कौटिल्य में नहरें दो प्रकार की कही हैं—आहार्योदक और सहोदक। आहार्योदक वह है जिसमें पानी नदी, ताल आदि से खींचकर लाया जाता है। सहोदक में झरने से पानी आता रहता है। इनमें से दूसरे प्रकार की नहर अच्छी कही गई है।

सेतुबंधन—संज्ञा पुं० [सं० सेतुबन्धन] १. सेतुनिर्माण। पुल बाँधना। २ पुल। ३. बाँध। सीमा की मेड़।

सेतुबंध रामेस्वर—संज्ञा पुं० [सं० सेतुबन्धरामेश्वर] दे० १. 'सेतुबंध' और २. 'रामेश्वर'।

सेतुभेत्ता—संज्ञा पुं० [सं० सेतुभेत्तृ] वह व्यक्ति जो पुल, बाँध आदि को तोड़ता हो [को०]।

सेतुभेद—संज्ञा पुं० [सं०] सेतु का भंग होना। पुल का टूटना। बाँध का टूटना।

सेतुभेदी[1]—संज्ञा पुं० [सं० सेतुभेदिन्] दंती। उदुंबरपर्णी। सिरीफल।

सेतुभेदी[2]—वि० १. मर्यादा, सीमा आदि का विनाशक। २. निरोधक। बाधक (को०)।

सेतुवा†—संज्ञा पुं० [सं० सक्तु, सक्तुक; हिं० सतुआ]; दे० 'सतुआ' और 'सत्तू'। उ०—सोइ भुजाइ सेतुवा बनवायो। तामें चारिउ भाग लगायो। —रघुनाथदास (शब्द०)।

सेतुवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] वरुण वृक्ष। बरना।

सेतुशैल—संज्ञा पुं० [सं०] वह पहाड़ जो दो देशों के बीच में हो। सरहद का पहाड़।

सेतुषाम—संज्ञा पुं० [सं० सेतुषामन्] एक साम का नाम।

सेत्र—वि० पुं० [सं०] बेड़ी। जंजीर। बंधन। शृंखला।

सेथिया—संज्ञा पुं० [तेलगू चेट्टि, चेट्टिया, हिं० सेठिया] नेत्रों की चिकित्सा करनेवाला। आँखों का इलाज करनेवाला।

सेथी(पु)—अव्य० [सं० सहित] दे० 'सहित'। उ०—काँधा सेथी टूट कर जमी पड़ो वा जीह।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ५५।

सेद(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वेद, प्रा० सेद] दे० 'स्वेद'। उ०—कान मैं कामिनी के यह आनिकै बोल परचो जनु वज्र सो लायो। सूखि गयो अँग, पीरो भयो रँग, सेद कपोलन में सँग धायो।—रघुनाथ बंदीजन (शब्द०)।

सेदज(पु)—वि० [सं० स्वेदज] दे० 'स्वेदज'। उ०—बिन सनेह दुख होय न कैसे। शुक मूषक सुत सेदज जैसे।—रघुनाथदास (शब्द०)।

सेदरा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सेह (=तीन) + दर (=दरवाजा)] वह मकान जो तीन तरफ से खुला हो। तिदरी।

सेदिवस्—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सेदुषी] बैठा हुआ। उपविष्ट [को०]।

सेदुक—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत में वर्णित एक राजा का नाम।

सेद्धव्य—वि० [सं०] १. निवारण योग्य। हटाने या दूर करने योग्य। २. जिसे हटाना या दूर करना हो।

सेध[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. निषेध। निवारण। मनाही। २. जाना। पहुँचना। ३. दुम। पुच्छ। (को०)।

सेध[2]—वि० दूर रखनेवाला। हटानेवाला [को०]।

सेधक—वि० [सं०] प्रतिरोधक। हटाने या रोकनेवाला।

सेधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] साही नाम का जानवर जिसको पीठ पर काँटे होते हैं। खारपुश्त।

सेन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर। तन। देह। २. जीवन। ३. बंगाल की वैद्य जाति की उपाधि।

यौ०—सेनकुल = दे० 'सेनवंश'।

४. एक भक्त नाई।

विशेष—इसकी कथा भक्तमाल में इस प्रकार है। यह रीवाँ के महाराज की सेवा में था और बड़ा भारी भक्त था। एक दिन साधुसेवा में लगे रहने के कारण यह समय पर राजसेवा के लिये न पहुँच सका। उस समय भगवान् ने इसका रूप धरकर राजभवन में जाकर इसका काम किया। यह वृत्तांत ज्ञात होने पर यह विरक्त हो गया और राजा भी परम भक्त हो गए।

५. एक राक्षस का नाम। ६. दिगंबर जैन साधुओं के चार भेदों में से एक।

सेन[2]—वि० [सं०] १. जिसके सिर पर कोई मालिक हो। सनाथ। २. आश्रित। अधीन। ताबे।

सेन(पु)[3]—संज्ञा पुं० [सं० श्येन, प्रा० सेण] बाज पक्षी। उ०—ज्यों गच काँच बिलोकि सेन जड़, छाँह आपने तन की। टूटत अति आतुर अहारबस, छति बिसारि आनन की।—तुलसी (शब्द०)।

सेन(पु)[4]—संज्ञा स्त्री० [सं० सैन्य, प्रा० सेण] दे० 'सेना'। उ०—हय गय सेन चलै जग पूरी।—जायसी (शब्द०)।

सेन†[5]—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] दे० 'सेंध'।

सेन†[6]—संज्ञा पुं० [हिं० सैन] संकेत। इशारा। उ०—(क) तासों वह ने सेन ही मों नाहीं करी।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २६०। (ख) अपने घर इन चारों को सेन दै कै पधराइ लै गई।—दो सौ बावन०, भाग १, पृ० ७२।

सेन†[7]—संज्ञा पुं० [सं० शयन] दे० 'शयन'। उ०—(क) सो श्री गोवर्धननाथ जी को उत्थापन किए। पाछे सेन पर्यंत की सब सेवा।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० २३। (ख) श्री नवनीत प्रिय जी को उत्थापन ते सेन पर्यंत की सेवा तो पहोंचि........ सुबोधिनी को कथा कहे।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ६६।

यौ०—सेन आर्ति = शयनकाल की आरती। उ०—श्री ठाकुर जी की सेन आर्ति करि कै अपने घर तें चलतो।—दो सौ बावन०, भा०, पृ० २६। सेनभोग = शयनकालीन भोग। उ०—पाछें सेन भोग धरि श्री ठाकुर जी को रसोई पोंति, भोग सराइ, आर्ति करि........मुरारीदास सोवते।—दो सौ बावन०, भा०, पृ० १०२।

सेनक—संज्ञा पुं० [सं०] १. हरिवंश वर्णित शंबर के एक पुत्र का नाम। २. एक वैयाकरण का नाम।

सेनजित्[1]—वि० [सं०] सेना को जीतनेवाला।

सेनजित्[2]—संज्ञा पुं० १. एक राजा का नाम। २. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। विश्वजित् के एक पुत्र का नाम। ४. बृहत्कर्मा के एक पुत्र का नाम। ५. कृशाश्व के एक पुत्र का नाम। ६. विशद के एक पुत्र का नाम।

सेनजित्[3]—संज्ञा स्त्री० एक अप्सरा का नाम।

सेनप--संज्ञा पुं० [सं० सेना + प (= पति)] सेनापति। उ०--सूर सचिव सेनप बहुतेरे। नृपगृह सरिस सदन सब केरे।--तुलसी (शब्द०)।

सेनपति(पु)--संज्ञा पुं० [सं० सेनापति] दे० 'सेनापति'। उ०--कपि पुनि उपवन बारिहु तोरी। पंच सेनपति सेन मरोरी।--पद्माकर (शब्द०)।

सेनयार--संज्ञा पुं० [इटा०] [स्त्री० सेनयोरा] इटली में नाम के आगे लगाया जानेवाला आदरसूचक शब्द। अँगरेजी 'सर' या 'मिस्टर' शब्द का समानार्थवाची शब्द। महाशय। महोदय।

सेनवंश--संज्ञा पुं० [सं०] बंगाल का एक हिंदू राजवंश जिसने ११ वीं शताब्दी से १४ वीं शताब्दी तक राज्य किया था। इसे 'सेनकुल' भी कहा जाता है।

सेनस्कंध--वि० पुं० [सं० सेनस्कन्ध] हरिवंश में शंबर का एक नाम।

सेनहा--संज्ञा पुं० [सं० सेनाहन्] शंबर का एक पुत्र [को०]।

सेनांग--संज्ञा पुं० [सं० सेनाङ्ग] १. सेना का कोई एक अंग। जैसे,--पैदल, हाथी, घोड़े, रथ।

२. फौज का हिस्सा। सिपाहियों का दल या टुकड़ी।

यौ०--सेनांगपति = सिपाहियों की टुकड़ी का अधिकारी।

सेना[१]--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. युद्ध की शिक्षा पाए हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे मनुष्यों का बड़ा समूह। सिपाहियों का गरोह। फौज। पलटन।

विशेष--भारतीय युद्धकला में सेना के चार अंग माने जाते थे--पदाति, अश्व, गज और रथ। इन अंगों से पूर्ण समूह सेना कहलाता था। सैनिकों या सिपाहियों को समय पर वेतन देने की व्यवस्था आजकल के समान ही थी। यह वेतन कुछ तो भत्ते या अनाज के रूप में दिया जाता था और कुछ नकद। महाभारत के सभापर्व में नारद ने युधिष्ठिर को उपदेश दिया है कि 'कच्चिद्बलस्य भक्तं च वेतनं च यथोचितम्। सम्प्राप्तकाले दातव्यं ददासि न विकर्षसि'। चतुरंग दल के अतिरिक्त सेना के और चार विभाग होते थे--विष्टि, नौका, चर और देशिक। सब प्रकार के सामान लादने और पहुँचाने का प्रबंध 'विष्टि' कहलाता था। 'नौका' का भी लड़ाई में काम पड़ता था। 'चरों' के द्वारा प्रतिपक्ष के समाचार मिलते थे। 'देशिक' स्थानीय सहायक हुआ करते थे जो अपने स्थान पर पहुँचने पर सहायता पहुँचाया करते थे। सेना के छोटे छोटे दलों को 'गुल्म' कहते थे।

पर्या०--चतुरंग। बल। ध्वजिनी। वाहिनी। पृतना। चमू। अनीकिनी। सैन्य। वरूथिनी। अनीक। चक्र। वाहना। गुल्मिनी। वरचक्षु।

२. भाला। बरछी। शक्ति। साँग। ३. इंद्र का वज्र। ४. इंद्राणी। ५. वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हत् शंभव की माता का नाम (जैन)। ६. एक उपाधि जो पहले अधिकतर वेश्याओं के नामों में लगी रहती थी। जैसे,--वसंतसेना। ७. सेना की छोटी टुकड़ी जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ६ अश्व और १५ पदाति रहते हैं (को०)।

सेना[२]--क्रि० स० [सं० सेवन] १. सेवा करना। खिदमत करना। किसी को आराम देना या उसका काम करना। नौकरी बजाना। टहल करना। उ०--सेइय ऐसे स्वामि को जो राखै निज मान।--कबीर (शब्द०)।

मुहा०--चरण सेना = तुच्छ से तुच्छ चाकरी बजाना।

२. आराधना करना। पूजना। उपासना करना। उ०--(क) तातें सेइय श्री जदुराई। (ख) सेवत सुलभ उदार कल्पतरु पारबतीपति परम सुजान।--तुलसी (शब्द०)। ३. नियमपूर्वक व्यवहार करना। काम में लाना। इस्तेमाल करना। नियम के साथ खाना पीना या लगाना। उ०--(क) आसव सेइ सिखाए सखीन के सुंदरि मंदिर में सुख सोवै।--देव (शब्द०)। (ख) निपट लजीली नवल तिय बहँकि बारुनी सेइ। त्यों त्यों अति मीठी लगै ज्यों ज्यों ढीठो देइ।--बिहारी (शब्द०)। ४. किसी स्थान को लगातार न छोड़ना। पड़ा रहना। निरंतर वास करना। जैसे,--चारपाई सेना, कोठरी सेना, तीर्थ सेना। उ०--(क) सेइय सहित सनेह देह भरि कामधेनु कलि कासी।--तुलसी (शब्द०)। (ख) उत्तम थल सेवैं सुजन, नीच नीच के बंस। सेवत गीध मसान को, मानसरोवर हंस।--दीनदयाल (शब्द०)। ५. लिए बैठे रहना। दूर न करना। जैसे,--फोड़ा सेना। ६. मादा चिड़िया का गरमी पहुँचाने के लिये अपने अंडों पर बैठना।

सेनाकक्ष--संज्ञा पुं० [सं०] सेना का पार्श्व। फौज का बाजू।

सेनाकर्म--संज्ञा पुं० [सं० सेनाकर्मन्] १. सेना का संचालन या व्यवस्था। २. सेना का काम।

सेनाकल्प--संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

सेनागोप--संज्ञा पुं० [सं०] सेना का संरक्षक। सेना का एक विशेष अधिकारी।

सेनाग्र--संज्ञा पुं० [सं०] सेना का अग्रभाग। फौज का अगला हिस्सा।

सेनाग्रग--संज्ञा पुं० सेना का प्रधान। सेनापति।

सेनाचर--संज्ञा पुं० [सं०] सेना के साथ जानेवाला सैनिक। योद्धा। सिपाही।

सेनाजीव--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सेनाजीवी'।

सेनाजीवी--संज्ञा पुं० [सं० सेनाजीविन्] वह जो सेना में रहकर अपनी जीविका चलावे। सैनिक। सिपाही। योद्धा।

सेनादार--संज्ञा पुं० [सं० सेना + फ़ा० दार] सेनानायक। फौजदार। उ०--मल्हारराव हुल्कर भाग्य के बल से पेशवा बहादुर की सेना का सेनादार हो गया।--शिवप्रसाद (शब्द०)।

सेनाधिकारी--संज्ञा पुं० [सं० सेनाधिकारिन्] सेनानायक। फौज का अफसर।

सेनाधिनाथ--संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति। फौज का अफसर। सिपहसालार।

सेनाधिप--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सेनाधिपति'।

सेनाधिपति--संज्ञा पुं० [सं०] फौज का अफसर। सेनापति।

सेनाधीश—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

सेनाध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] फौज का अफसर। सेनापति।

सेनानायक—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का अफसर। फौजदार।

सेनानिवेश—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का पड़ाव। सैन्यशिविर [को०]।

सेनानी—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेनापति। फौज का अफसर। उ०—आँधी में उड़ते पत्तों से, दलित हुए सब सेनानी।—साकेत, पृ० ३९५। २. कार्तिकेय का एक नाम। ३. एक रुद्र का नाम। ४. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ५. शंवर के एक पुत्र का नाम। ६. एक विशेष प्रकार का पासा।

सेनापति—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेना का नायक। फौज का अफसर। २. कार्तिकेय का एक नाम। ३. शिव का नाम। ४. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ५. हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि का नाम।

यौ०—सेनापतिपति = सेनापतियों का प्रधान अधिकारी। प्रधान सेनापति।

सेनापत्य—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति का कार्य या पद। सेनापति का अधिकार।

सेनापरिच्छद्—वि० [सं०] सेनाओं से घिरा हुआ या आवृत [को०]।

सेनापाल—संज्ञा पुं० [सं० सेना + पाल] सेनापति। उ०—हरुये बोल्यो भूप तब सेनापाल बुलाय। धाइ सुशर्मा वीर जे सुरभी लेहु छुड़ाय।—सबलसिंह (शब्द०)।

सेनापृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का पिछला भाग।

सेनाप्रणेता—संज्ञा पुं० [सं० सेनाप्रणेतृ] सेनानायक। सेनापति। फौज का मुखिया।

सेनाबेध†—संज्ञा पुं० [सं० सेना + बेध] सैन्य दल का भेदन करनेवाला। सेना को बेधनेवाला—शूरवीर। (डिं०)।

सेनाभंग—संज्ञा पुं० [सं० सेनाभङ्ग] सेना का अस्तव्यस्त, छिन्न भिन्न या तितर बितर होना [को०]।

सेनाभक्त—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार सेना के लिये रसद और बेगार।

सेनाभिगोप्ता—संज्ञा पुं० [सं० सेनाभिगोप्तृ] सेनारक्षक। सेनापति।

सेनामुख—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेना का अग्रभाग। २. सेना का एक खंड जिसमें ३ या ९ हाथी, ३ या ९ रथ, ९ या २७ घोड़े और १५ या ४५ पैदल होते थे। ३. नगरद्वार के सामने का ढका हुआ या गुप्त रास्ता। ४. नगर द्वार के सामने निर्मित सेतु (को०)।

सेनायोग—संज्ञा पुं० [सं०] सैन्यसज्जा। फौज की तैयारी।

सेनारक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] पहरुआ। संतरी। प्रहरी [को०]।

सेनावास—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ सेना रहती हो। छावनी।

विशेष—बृहत्संहिता के अनुसार जहाँ राख, कोयला, हड्डी, तुष, केश, गड्ढे न हों; जो स्थान ऊसर न हो; जहाँ हिंसक जंतुओं और चूहों के बिल और बल्मीक न हों तथा जिस स्थान की भूमि घनी, चिकनी, सुगंधित, मधुर और समतल हो ऐसे स्थान पर राजा को सेनावास या छावनी बनानी चाहिए।

२. डेरा। खेमा। शिविर। कैंप।

सेनावाह—संज्ञा पुं० [सं०] सेनानायक।

सेनाव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध के समय भिन्न भिन्न स्थानों पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अंगों की स्थापना या नियुक्ति। सैन्यविन्यास। विशेष दे० 'व्यूह'।

सेनासमुदय—संज्ञा पुं० [सं०] संमिलित सेना। एकत्र हुई सेना।

सेनास्थ—संज्ञा पुं० [सं०] सिपाही। फौजी आदमी।

सेनास्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १. छावनी। २. शिविर। खेमा। डेरा।

सेनाहन्—संज्ञा पुं० [सं०] हरिवंश के अनुसार शंवर के एक पुत्र का नाम।

सेनि(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणि, प्रा० सेणि] दे० 'श्रेणी'। उ०—जनु कलिंदनंदिनि मनि नील सिखर पर सिध सति लसति हंस सेनि संकुल अधिकौ हैं।—तुलसी (शब्द०)।

सेनिका—संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनिका] १. बाज पक्षी। उ०—श्यामदेह दुकूल दुति छवि लसत तुलसी माल। तडित घन संयोग मानो सेनिका शुक जाल।—सूर (शब्द०)। २. एक छंद। विशेष दे० 'श्येनिका'। उ०—आठ ओर आठ दीठि दै रह्यो। लोकनाथ आश्चर्य वै रह्यो।—गुमान (शब्द०)।

सेनी[1]—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सीनी] १. तश्तरी। रकाबी। २. नक्काशीदार छोटी छिछली थाली।

सेनी(पु)[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यनी] १. बाज की मादा। मादा बाज पक्षी। २. दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी ताम्रा से उत्पन्न पाँच कन्याओं में से एक।

सेनी(पु)[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] १. पंक्ति। कतार। उ०—जोबन फूल्यो बसंत लसै तेहि अंगलता अलि सेनी।—बेनी (शब्द०)। २. सीढ़ी। जीना।

सेनी(पु)[4]—संज्ञा पुं० विराट के यहाँ अज्ञातवास करते समय का सहदेव का रखा हुआ नाम। उ०—नाम धनंजय को कह्यो वृहन्नड़ा ऋषि व्यास। सेनी सहदेवहि कह्यो सकल गुनन की रास।—सबल (शब्द०)।

सेनीटोरियम—संज्ञा पुं० [अं०] स्वास्थ्यगृह। चिकित्सालय।

सेनुर†, **सेन्हुर**—संज्ञा पुं० [सं०सिन्दूर] दे० 'सिंदूर'।

सेनेट—संज्ञा स्त्री० [अं०] १. प्रधान व्यवस्थापिका सभा या कानून बनानेवाली सभा। २. विश्वविद्यालय की प्रबंधकारिणी सभा। विश्वविद्यालयों में पुराने कोर्ट का नाम। ३. अमेरिका की व्यवस्थापिका सभा का एक भाग। ४. प्राचीन काल में रोमन साम्राज्य की शासक सभा।

सेनेटर—संज्ञा पुं० [अं०] १. सेनेट या देश की प्रधान व्यवस्थापिका का सदस्य। २. जज या मजिस्ट्रेट।

विशेष—अमेरिका, फ्रांस, इटली आदि देशों की बड़ी व्यवस्थापिका सभाएँ 'सेनेट' कहलाती हैं और उनके सदस्य 'सेनेटर' कहलाते हैं।

सेनेट हाउस संज्ञा पुं० [अं०] वह मकान जिसमें सेनेट का अधिवेशन होता है।

सेफ¹—संज्ञा पुं० [सं० शेफ; सेफ, प्रा० सेफ] दे० 'शेफ'।

सेफ²—संज्ञा पुं० [अं०] लोहे का बड़ा मजबूत बक्स जिसमें रोकड़ और बहुमूल्य पदार्थ रखे जाते हैं।

सेफालिकी—संज्ञा स्त्री० [सं० शेफालिका; प्रा० सफालिश्रा, सेहालिया, सेहाली] दे० 'शेफालिका'।

सेब—संज्ञा पुं० [फ़ा०] नाशपाती की जाति का मझोले आकार का एक पेड़ जिसका फल मेवों में गिना जाता है।

विशेष—यह पेड़ पश्चिम का है; पर बहुत दिनों से भारतवर्ष में भी हिमालय प्रदेश (काश्मीर, कुमाऊँ, गढ़वाल, काँगड़ा आदि); पंजाब आदि में लगाया जाता है; और अब सिंध, मध्यभारत और दक्षिण तक फैल गया है। काश्मीर में कहीं कहीं यह जंगली भी देखा जाता है। इसके पत्ते कुछ कुछ गोल और पीछे की ओर कुछ सफेदी लिए और रोईंदार होते हैं। फूल सफेद रंग के होते हैं जिन पर लाल लाल छींटे से होते हैं। फल गोल और पकने पर हलके हरे रंग के होते हैं; पर किसी किसी का कुछ भाग बहुत सुंदर लाल रंग का होता है जिससे देखने में बड़ा सुंदर लगता है। गूदा इसका बहुत मुलायम और मीठा होता है। मध्यम श्रेणी के फलों में कुछ खटास भी होती है। सेब फागुन से वैशाख के अंत तक फूलता है और जेठ से फल लगने लगते हैं। भादों में फल अच्छी तरह पक जाते हैं। ये फल बड़े पाचक माने जाते हैं। भावप्रकाश के अनुसार सेब वात-पित्त-नाशक, पुष्टिकारक, कफकारक, भारी, पाक में मधुर, शीतल तथा शुक्रकारक है। भावप्रकाश के अतिरिक्त किसी प्राचीन ग्रंथ में सेब का उल्लेख नहीं मिलता। भावप्रकाश ने सेब, सिंचितिका फल आदि इसके कुछ नाम दिए हैं।

सेवाटⓅ—वि० [देशी या हिं० सपाट] दे० 'सपाट'। उ०—ऊँचे-ऊँचे परबत विषय के घाट। तिहाँ गोरखनाथ कै लिया सेवाट।—गोरख०, पृ० १३४।

सेभ्य¹—संज्ञा पुं० [सं०] शीतलता। शैत्य। ठंढक।

सेभ्य²—वि० शीतल। ठंढा।

सेभंतिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सेमन्तिका] दे० 'सेमंती'।

सेभंती—संज्ञा स्त्री० [सं० सेमन्ती] सफेद गुलाब का फूल। सेवती।

सेम—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बी] एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।

विशेष—इसकी लता लिपटती हुई बढ़ती है। पत्ते एक एक सींके पर तीन तीन रहते हैं और वे पान के आकार के होते हैं। सेम सफेद, हरी, मजंटा आदि कई रंगों की होती है। फलियाँ लंबी, चिपटी और कुछ टेढ़ी होती हैं। यह हिंदुस्तान में प्रायः सर्वत्र बोई जाती है। वैद्यक में सेम मधुर, शीतल, भारी, कसैली, बलकारी, वातकारक, दाहजनक, दीपन तथा पित्त और कफ का नाश करनेवाली मानी गई है।

यौ०—सेम का गोंद=एक प्रकार के कचनार का गोंद जो देहरादून की ओर से आता है और इंद्रिय जुलाब या रज खोलने के लिये दिया जाता है। विशेष दे० 'कचनार'।

सेमई¹—संज्ञा पुं० [हिं० सेम+ई (प्रत्य०)] हल्का सब्ज रंग।

सेमई²—वि० हलके हरे रंग का।

सेमईⓅ**³**—संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका, हिं० सेंवई] दे० 'सेँवई'। उ०—मोतीचूर मूर के मोदक ओदक की उजियारी जी। सेमई सेव सैंजना सूरन सोवा सरस सोहारी जी।—विश्राम (शब्द०)।

सेमर¹—संज्ञा पुं० [देश०] दलदली जमीन।

सेमर†²—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मली, हिं० सेमल] दे० 'सेमल'।

सेमल—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बल (=शाल्मलि (सायण)] पत्ते झाड़नेवाला एक बहुत बड़ा पेड़ जिसमें बड़े आकार और मोटे दलों के लाल फूल लगते हैं, और जिसके फलों या डोडों में केवल रूई होती है गूदा नहीं होता।

विशेष—इस पेड़ के धड़ और डालों में दूर दूर पर काँटे होते हैं; पत्ते लंबे और नुकीले होते हैं तथा एक एक डाँड़ी में पंजे की तरह पाँच पाँच छह छह लगे होते हैं। फूल मोटे दल के, बड़े बड़े और गहरे लाल रंग के होते हैं। फूलों में पाँच दल होते हैं और उनका घेरा बहुत बड़ा होता है। फागुन में जब इस पेड़ की पत्तियाँ बिल्कुल झड़ जाती हैं और यह ठूँठा हो जाता है तब यह इन्हीं लाल फूलों से गुछा हुआ दिखाई पड़ता है। दलों के झड़ जाने पर डोडा या फल रह जाता है जिसमें बहुत मुलायम और चमकीली रूई या घूए के भीतर बिनौले से बीज बंद रहते हैं। सेमल के डोड या फलों की निस्सारता भारतीय कविपरंपरा में बहुत काल से प्रसिद्ध है और यह अनेक अन्योक्तियों का विषय रहा है। 'सेमर सेइ सुवा पछताने' यह एक कहावत सी हो गई है। सेमल की रूई रेशम सी मुलायम और चमकीली होती है और गद्दों तथा तकियों में भरने के काम में आती है, क्योंकि काती नहीं जा सकती। इसकी लकड़ी पानी में खूब ठहरती है और नाव बनाने के काम में आती है। आयुर्वेद में सेमल बहुत उपकारी ओषधि मानी गई है। यह मधुर, कसैला, शीतल, हलका, स्निग्ध, पिच्छिल तथा शुक्र और कफ को बढ़ानेवाला कहा गया है। सेमल की छाल कसैली और कफनाशक; फूल शीतल, कड़वा, भारी, कसैला, वातकारक, मलरोधक, रूखा तथा कफ, पित्त और रक्तविकार को शांत करनेवाला कहा गया है। फल के गुण फूल ही के समान हैं। सेमल के नए पौधे की जड़ को सेमल का मूसला कहते हैं, जो बहुत पुष्टिकारक, कामोद्दीपक और नपुंसकता को दूर करनेवाला माना जाता है। सेमल का गोंद मोचरस कहलाता है। यह अतिसार को दूर करनेवाला

और बलकारक कहा गया है। इसके बीज स्निग्धताकारक और मदकारी होते हैं; और काँटों में फोड़े, फुंसी, घाव, छीप आदि दूर करने का गुण होता है।

फलों के रंग के भेद से सेमल तीन प्रकार का माना गया है—एक तो साधारण लाल फूलोंवाला, दूसरा सफेद फूलों का और तीसरा पीले फूलों का। इनमें से पीले फूलों का सेमल कहीं देखने में नहीं आता। सेमल भारतवर्ष के गरम जंगलों में तथा बरमा, सिंहल और मलाया में अधिकता से होता है।

पर्या०—शाल्मलि। शाल्मली। पिच्छला। मोचा। स्थिराह। तूलिफला। दुरारोहा। शाल्मलिनी। शाल्मल। अपूरणी। पूरणी। निर्गंधपुष्पी। तुलनी। कुक्कुटी। रक्तपुष्पा। कंटकारी। मोचनी। शीमूल। कदला। चिरजीवी। पिच्छल। रक्तपुष्पक। तूलवृक्ष। मोचाख्य। कंटकद्रुम। कुकुटी। रक्तोत्पल। वन्यपुष्प। बहुवीर्य। यमद्रुम। दीर्घद्रुम। स्थूलफल। दीर्घायु। कंटकाष्ठ। निस्सारा। दीर्घपादपा।

सेमलमूसला—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बलमूल] सेमल की जड़ जो वैद्यक में वीर्यवर्धक, कामोद्दीपक और नपुंसकता नष्ट करनेवाली मानी गई है।

सेमलसफेद—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतशिम्बल] सेमल का एक भेद जिसके फूल सफेद होते हैं।

विशेष—यह सेमल के समान ही विशाल होता है। इसका उत्पत्तिस्थान मलाया है। यह हिंदुस्तान के गरम जंगलों और सिंहल में पाया जाता है। नए वृक्ष की छाल हरे रंग की और पुराने की भूरे रंग की होती है। पत्ते सेमल के समान ही एक साथ पाँच पाँच सात सात रहते हैं। फूल सेमल के फूल से छोटे और मटमैले सफेद रंग के होते हैं। इसके फल कुछ बड़े गोल, धुँधले और पाँच फाँकवाले होते हैं। फलों के अंदर बहुत कोमल रूई होती है और रूई के बीच में चिपटे बीज होते हैं। वैद्यक में सेमल के समान ही इसके भी गुण बताए गए हैं।

सेमा—संज्ञा पुं० [हिं० सेम] बड़ी सेम।

सेमिटिक—संज्ञा पुं० [अं० शाम (=एक देश का नाम तथा इसराईल की संतति में से एक)] १. मनुष्यों के आधुनिक वर्ग विभाग में वह वर्ग जिसके अंतर्गत यहूदी, अरब, सीरियन, मिस्री आदि लाल समुद्र के आस पास बसनेवाली, नई पुरानी जातियाँ हैं।

विशेष—मूसा, ईसा और मुहम्मद इसी वर्ग के थे जिन्होंने पैगंबरी मत चलाए। यह वर्ग आर्य वर्ग से भिन्न है जिसमें हिंदू, पारसी, युरोपियन आदि हैं।

२. उक्त वर्ग के लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषाओं का वर्ग।

विशेष—इस भाषावर्ग के इबरानी और अरबी तथा असीरियन, फिनीशियन आदि प्राचीन भाषाएँ हैं। यह वर्ग आर्यवर्ग से सर्वथा भिन्न है जिसके अंतर्गत संस्कृत, पारसी, लैटिन, ग्रीक आदि प्राचीन भाषाएँ और हिंदी, मराठी, बँगाली, पंजाबी, पश्तो, गुजराती आदि उत्तर भारत की भाषाएँ तथा अँगरेजी, फ्रांसीसी, जर्मन आदि योरप की आधुनिक भाषाएँ हैं।

सेमिनरी—संज्ञा स्त्री० [अं०] शिक्षालय। स्कूल। विद्यालय। मदरसा।

सेमिनार—संज्ञा पुं० [अं०] किसी विषय पर निर्देश ग्रहण करते हुए व्यवस्थित रूप से कालिज या विश्वविद्यालयीय छात्रों का अनुसंधान कार्य। विचारगोष्ठी। शोधगोष्ठी।

सेमीकोलन—संज्ञा पुं० [अं०] एक विराम जिसका चिह्न इस प्रकार है—;।

सेयन—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

सेर¹—संज्ञा पुं० [सं० ('लीलावती' में प्रयुक्त)] १. एक मान या तौल जो सोलह छँटाक या अस्सी तोले की होती है। मन का चालीसवाँ भाग। २. १०६ ढोली पान (तमोली)।

सेर²—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

सेर³—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो अगहन महीने में तैयार हो जाता है और जिसका चावल बहुत दिनों तक रह सकता है।

सेरⓅ**⁴**—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेर] दे० 'शेर'। उ०—(क) गएन राए तौ बधिअ, तौन सेर विहार चायिअ।—कीर्ति०, पृ० ५८। (ख) अरि अजा जूथ पै सेर हौं।—गोपाल (शब्द०)।

यौ०—सेर बच्चा = एक प्रकार की बंदूक। भोंका। उ०—छुटे सेर बच्चे। भजे बीर कच्चे।—हिम्मत०, पृ० १०।

सेरⓅ**⁵**—वि० [फ़ा०] तृप्त। उ०—रे मन साहसी साहस राखु सुसाहस सों सब जेर फिरेंगे। ज्यों पदमाकर या सुख में दुख त्यों दुख में सुख सेर फिरेंगे।—पद्माकर (शब्द०)।

सेरन—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक घास जो राजपूताना, बुंदेलखंड और मध्य भारत के पहाड़ी हिस्सों में होती है।

सेरवा†¹—संज्ञा पुं० [सं० शणपट] वह कपड़ा जिससे हवा करके अन्न बरसाते समय भूसा उड़ाया जाता है। भूली। परती।

सेरवा†²—संज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई की वे पाटियाँ जो सिरहाने की ओर रहती हैं।

सेरवा³—संज्ञा पुं० [हिं० सेराना (=ठंढ़ा करना, शांत करना)] दीवाली के प्रातःकाल 'दरिद्दर' (दरिद्रता) भगाने की रस्म जो सूप बजाकर की जाती है।

सेरवाना†—क्रि० स० [हिं० सेराना] दे० 'सेराना²'। उ०—उसी कजरहिया पोखरे पर जातीं, नहातीं और जयी (जई) सेरवातीं, अर्थात् पानी में छोड़ देती हैं।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३२९।

सेरसाहि—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेरशाह] दिल्ली का बादशाह शेरशाह। उ०—सेरसाहि देहली सुलतानू।—जायसी (शब्द०)।

सेरही—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेर] एक प्रकार का कर या लगान जो किसान को फसल की उपज के अपने हिस्से पर देना पड़ता है।

सेरा¹—संज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई की वे पाटियाँ जो सिरहाने की ओर रहती हैं।

सेरा²—संज्ञा पुं० [फ़ा० सेराब] आबपाशी की हुई जमीन। सींची हुई जमीन।

सेरा†³—संज्ञा पुं० [अ० सल, लश० सेढ़] दे० 'सेढ़'।

सेराना(पु)¹—क्रि० अ० [सं० शीतल, प्रा० सीअड़, हिं० सीयर, सीरा] १. ठंढा होना। शीतल होना। उ०—नैन सेराने, भूखि गइ, देखे दरस तुम्हार।—जायसी (शब्द०)। २. तृप्त होना। तुष्ट होना। ३. जीवित न रहना। जीवन समाप्त होना। ४. समाप्त होना। खतम होना। उ०—उठ्यो अखारा नृत्य सेराना। अपने गृह सुर कियो पयाना।—सबल (शब्द०)। ५. चुकना। तै करना। करने को न रह जाना। उ०—पंथी कहाँ कहाँ सुसताई। पंथ चलै तब पंथ सेराई।—जायसी (शब्द०)।

सेराना²—क्रि० स १. ठंढा करना। शीतल करना। २. मूर्ति, प्रतीक आदि जल में प्रवाहित करना या भूमि में गाड़ना। जैसे,—ताजिया सेराना।

सेराब—वि० [फ़ा०] १. पानी से भरा हुआ। २. सींचा हुआ। तराबोर।

क्रि० प्र०—होना।

यौ०—सेराब हासिल = जरखेज। उपजाऊ। लाभकर।

सेराबी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. भराव। सिंचाई। २. तरी।

सेराल¹—संज्ञा पुं० [सं०] हलका पीलापन।

सेराल²—वि० हलका पीला। पीताभ।

सेराह—संज्ञा पुं० [सं०] दूध के समान सफेद रंग का घोड़ा। दुग्ध वर्ण का अश्व।

सेरी(पु)¹—संज्ञा स्त्री० [देशी] रथ्या। वीथी। तंग गली। उ०—(क) ढोलउ नरवर सेरियाँ धण पूगल गलियाँह।—ढोला०, दू० १८६। (ख) सेरी कबीर साँकड़ी चंचल मनवाँ चोर।—कबीर ग्रं०, पृ० २२७।

सेरी†²—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी, सेणी, सेढि, सेढी, हिं० सीढ़ी] दे० 'सीढ़ी'। उ०—बाह्य लक्ष्य और बहुतेरी। सो जानैं जो पावै सेरी।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० १०५।

सेरी³—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. तृप्ति। संतोष। २. मन भरना। अघाने का भाव। ३. ऊबने की स्थिति या भाव। ऊब।

सेरीना—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेर] अनाज या चारे का वह हिस्सा जो असामी जमींदार को देता है।

सेरु—वि० [सं०] बाँधनेवाला। जकड़नेवाला।

सेरुआ¹—संज्ञा पुं० [सं० सेर (= एक तौल) + हिं० उवा (प्रत्य०)] वैश्य। (सुनार)।

सेरुआ²—संज्ञा पुं० [देशज] दे० 'सेरवा'।

सेरुराह—संज्ञा पुं० [सं०] वह सफेद घोड़ा जिसके माथे पर दाग हो।

सेरुवा—संज्ञा पुं० [सं० स्वैर, प्रा० सेर (= स्वतंत्र)] १. स्वेच्छाचारी। स्वैराचारी। २. मुजरा सुननेवाला या वेश्यागामी। (वेश्या)।

सेरू†—संज्ञा पुं० [सं० शेलु] लिसोड़े का पेड़ा। लमेड़ा।

सेर्ष्य—वि० [सं०] १. ईर्ष्यायुक्त। ईर्ष्यालु। डाह करनेवाला। २. ईर्ष्या-पूर्वक (को०)।

सेल—संज्ञा पुं० [सं० शल्य, प्रा० सेल अथवा देश० सेल्ल] बरछा। भाला। साँग। उ०—(क) बरसहिं बान सेल घनघोरा।—जायसी। (शब्द)। (ख) देखि ज्वालाजाल हाहाकार दसकंध सुनि, कह्यो धरो धरो धाए बीर बलवान हैं। लिए सूल सेल पास परिघ प्रचंड दंड, भाजन सनीर धीर धरे धनुबान हैं।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—यद्यपि यह शब्द कादंबरी में आया है, तथापि प्राकृत ही जान पड़ता है, संस्कृत नहीं।

सेल²—संज्ञा स्त्री० [देशी० सेल्लि (= रज्जु)] बद्धी। माला। उ०—साँपों की सेल पहने मुंडमाल गले में डाले······कहने लगे।—लल्लू (शब्द०)।

सेल†³—संज्ञा पुं० [देश०] नाव से पानी उलीचने का काठ का बरतन।

सेल⁴—संज्ञा पुं० [सं० सिलना (= एक पौधा जिसके रेशों से रस्से बनते थे) अथवा देशी सेल्लि (= रज्जु)] १. एक प्रकार का सन का रस्सा जो पहाड़ों में पुल बनाने के काम में आता है। २. हल में लगी हुई वह नली जिसमें से होकर कूँड़ में का बीज जमीन पर गिरता है।

सेल⁵—संज्ञा पुं० [अं० शेल] तोप का वह गोला जिसमें गोलियाँ आदि भरी रहती हैं। (फौज)।

यौ०—सेल का गोला।

सेलखड़ी—संज्ञा स्त्री० [देश० सेटिका] दे० 'सिलखड़ी', 'खड़िया'। उ०—मूर्ति बनाने के लिये सेलखड़ी लाई जाती थी।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १६।

सेलग—संज्ञा पुं० [सं०] लुटेरा। डाकू।

सेलना†—क्रि० अ० [सं० शेल, सेल (= जाना)] मर जाना। चल बसना। जैसे—वह सेल गया। (बाजारू)।

सेला¹—संज्ञा पुं० [सं० शल्लक, शल्क (= छिलका, मछली का सेहरा)] १. रेशमी चादर या दुपट्टा। २. साफा। रेशमी शिरोबंध। उ०—कोऊ कुंद बेला भूखन नवेला धरै कोऊ पाग सेला कोऊ सजै साज छेला सो।—गोपाल (शब्द०)।

सेला²—संज्ञा पुं० [सं० शालि] वह धान जो भूसी छाँटने के पहले कुछ उबाल लिया गया हो। भुँजिया धान।

सेलान(पु)—वि० [हिं० सैल (= घूमना); अथवा सं० शैल, प्रा० सेल, सेल्ल] १. घुमक्कड़। स्वच्छंदी। मनमौजी। २. ठिकाना। टिकान। उ०—आँखों में दीखै नहीं, शब्द न पावै जान। मन बुध तहाँ पहुँचै नहीं, कौन कहै सेलान।—दरिया० बानी, पृ० २२।

सेलानी(पु)—वि० [हिं० सैलानी] दे० 'सैलानी'। उ०—मन तूँ निपट भयो सेलानी। तैं संत सीख नहिं मानी।—राम० धर्म०, पृ० ४३।

सेलार(पु)¹—संज्ञा पुं० [सं० सेराल (= हलका पीला)] अश्व की एक उत्तम जाति। उ०—मुलताणी धर मन बसी सुहँगा नई सेलार। हिरणाखी हसि नइ कहइ आँणउ हेडि तुखार।—ढोला०, दू० २२६।

सेलार²—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का छंदबंध या गीत।—रघु० रू०, पृ० १३४।

सेलिया[१]—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति । उ०—सिरगा समँदा स्याह सेलिया सूर सुरंगा । मुसकी पँचकल्यान कुमेदा केहरि रँगा ।—सुजान०, पृ० ८ ।

सेलिया[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिल्ली ।

सेलिस—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सफेद हिरन ।

सेलि(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेल] छोटा भाला । दे० 'सेली' । उ०—लहलहे जोबन लुहारिनि लुहारी मैं ही सारसी लहलहाति लोहसार सेलि सी । भृकुटी कमान खरी देव दृगन बान भरी जोवन की सान धरी धार विष मेलि सी ।—देव (शब्द०) ।

सेली[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेल + हिं० ई (प्रत्य०)] छोटा भाला । बरछी । उ०—सेलियाँ बाँकियाँ देख अवधूत की जीवत मरै सोइ ठोड़ पावै ।—राम० धर्म०, पृ० ३८३ ।

सेली[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शूल, हिं० सूली] दे० 'सूली' । उ०—उठे कबीर करम किया, बरसे फूल अकास । गरीबदास सेली चले, चाँवर करे रेदास ।—कबीर ग्रं०, पृ० १२१ ।

सेली[३]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेला] १. छोटा दुपट्टा । उ०—मंगलदास रहे गुरुभाई । टोपी सेली तेहि पहिराई ।—घट०, पृ० १६२ । २. गाँती । ३. सूत, ऊन, रेशम या बालों की बद्धी या माला जिसे योगी यती गले में डालते या सिर में लपेटते हैं । उ०—सीस सेली केस, मुद्रा कनक बीरी वीर । बिरह भस्म चढ़ाइ बैठी, सहज कंथा चीर ।—सूर (शब्द०) । ४. स्त्रियों का एक गहना । उ०—मनि इंद्रनील सु पद्मराग कृत सेली भली ।—रघुराज (शब्द०) ।

सेली[४]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाल्क (=मछली का सेहरा)] एक प्रकार की मछली ।

सेली[५]—संज्ञा स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत का एक छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी कड़ी और मजबूत होती है और खेती के औजार बनाने के काम में आती है ।

सेलु—संज्ञा पुं० [सं०] १. लिसोड़ा । श्लेष्मांतक । लसेड़ा । सेरू । २. एक संख्या (बौद्ध) ।

सेलून—संज्ञा पुं० [अं०] १. जहाज का प्रधान कमरा । २. बढ़िया कमरे के समान सजा हुआ रेल का बड़ा लंबा डब्बा जिसमें अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति और बड़े बड़े अफसर सफर करते हैं । ३. सार्वजनिक आमोद प्रमोद का स्थान । ४. अँगरेजी ढंग के बाल बनानेवाले हज्जामों की दुकान । ५. जलपान का स्थान ६. वह स्थान जहाँ अँगरेजी शराब बिकती है । ७. जगह । (लश०) ।

सेलो†—संज्ञा पुं० [देश०] सायादार जमीन ।

सेल्ल—संज्ञा पुं० [सं० शल्य या शल] दे० 'सेल्ला'; 'सेल्हा' ।—वर्ण०, पृ० ३ ।

सेल्ला—संज्ञा पुं० [सं० शल्य या शल] एक प्रकार का अस्त्र । भाला । सेल ।

सेल्ह—संज्ञा पुं० [सं० शल्य या शल] दे० 'सेल' । उ०—गोलिन तीरन की झर लाई । मचो सेल्ह समसेरन घाई । त्यों लच्छे रावत प्रभु आगै । सेल्हन मार करी रिस पागै ।—लाल कवि (शब्द०) ।

सेल्हना†—क्रि० अ० [हिं० सेलना] मर जाना । जीवित न रहना । (बोल०) ।

सेल्हरा†—संज्ञा पुं० [सं० शल्क, हिं० सरहना, सेहरा] मछलियों के ऊपर की पर्त । सेहरा । चोंई । उ०—सेल्हरों की परों की थीं गड्डियाँ ।—कुकुर०, पृ० १५७ ।

सेल्हा[१]—संज्ञा पुं० [सं० शालि] एक प्रकार का अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनों तक रह सकता है ।

सेल्हा[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सेला] दे० 'सेली' ।

सेल्ही—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेला, सेल्हा] १. छोटा दुपट्टा । २. गाँती । ३. रेशम, सूत बाल आदि की बद्धी या माला । उ०—ओझरी की झोरी काँधे, आँतनि की सेल्ही बाँधे, मूँड़ के कमंडल, खपर किए कोरि कै । जोगिनी झुटुंग झुंड झुंड बनी तापसी सी तीर तीर बैठीं सो समर सरि खोरि कै ।—तुलसी (शब्द०) । दे० 'सेली'[३] ।

सेव—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ी कुछ पीलापन या ललाई लिए सफेद रंग की, नरम, चिकनी, चमकीली और मजबूत होती है । कुमार ।

विशेष—इसकी आलमारी, मेज, कुरसी और आरायशी चीजें बनती हैं । बरमा में इसपर खुदाई का काम अच्छा होता है । इसकी छाल और जड़ औषध के काम आती है और फल खाया जाता है । इसकी कलम लगती है और बीज भी बोया जाता है । यह वृक्ष पहाड़ों पर तीन हजार फुट की ऊँचाई तक मिलता है । यह बरमा, आसाम, अवध, बरार और मध्य प्रांत में बहुत होता है ।

सेवँई[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका] गुँधे हुए मैदे के सूत के लच्छे जो घी में तलकर और दूध में पकाकर खाए जाते हैं ।

सेवँई[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यामक, हिं० सावाँ] एक प्रकार की लंबी घास जिसमें सावें की सी बालें लगती हैं जो चारे के काम में आती हैं ।

सेवँढ़ी†—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का धान जो उत्तर प्रदेश में होता है ।

सेवंत—संज्ञा पुं० [सं० सामन्त] एक राग जो हनुमत के अनुसार मेघ राग का पुत्र है ।

सेवँर(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बल, हिं० सेमल] दे० 'सेमल' । उ०—राजै कहा सत्य कहु सूआ । बिनु सत जस सेंवँर कर भूआ ।—जायसी (शब्द०) ।

सेव[१]—संज्ञा पुं० [सं० सेविका] सूत या डोरी के रूप में बेसन का एक पकवान ।

विशेष—गुँधे हुए बेसन को छेददार चौकी या झरने में दबाते हैं जिससे उसके तार से बनकर खौलते घी या तेल की कड़ाई

में गिरते और पकते जाते हैं। यह अधिकतर नमकीन होता है। पर गुड़ में पागकर मीठे सेव भी बनाते हैं।

सेव(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सेवा] दे० 'सेवा' उ०—करै जो सेव तुम्हारी सो सेइ भो विष्णु, शिव, ब्रह्म मम रूप सारे।—सूर (शब्द०)।

सेव[३]—संज्ञा पुं० [सं० सेव, सेवि, मि० फ़ा० सेब] दे० 'सेब'। उ०—कहुँ दारब दाड़िम सेव कटहल तूत अरु जंभीर हैं।—भूषण ग्रं०, पृ० १५।

सेव[४]—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सेवन' [को०]।

सेवक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सेविका, सेवकनी, सेवकिन, सेवकिनी] १. सेवा करनेवाला। खिदमत करनेवाला। भृत्य। परिचारक। नौकर। चाकर। उ०—(क) मंत्री, भृत्य, सखा मों सेवक याते कहत सुजान।—सूर (शब्द०)। (ख) सिसुपन तें पितु, मातु, बंधु, गुरु, सेवक, सचिव सखाऊ। कहत राम बिधु बदन रिसौहैं सपनेहु लखेउ न काउ।—तुलसी (शब्द०)। (ग) ब्याहि कै आई है जा दिन सों रवि ता दिन सों लखी छाँह न वाकी। हैं गुरु लोग सुखी रघुनाथ, निहालन हैं सेवकनी सुखदा की।—रघुनाथ (शब्द०)। (घ) उन्होंने क्षीरोद नामक एक सेवकिन से कहवा भेजा।—गदाधरसिंह (शब्द०)। (च) अष्टसिद्धि नवनिद्धि देहुँ मथुरा घर घर को। रमा सेवकिनी देहुँ करि कर जोरै दिन जाम।—सूर (शब्द०)। २. भक्त। आराधक। उपासक। पूजा करनेवाला। जैसे,—देवी का सेवक। उ०—मानिए कहै जो वारिधार पर दवारि औ अँगार बरसाइबो बतावै बारि दिन को। मानिए अनेक विपरीत की प्रतीति, पैन भीति आई मानिए भवानी सेवकन को।—चरणचंद्रिका (शब्द०)। ३. व्यवहार करनेवाला। काम में लानेवाला। इस्तेमाल करनेवाला। जैसे,—मद्यसेवक। ४. पड़ा रहनेवाला। छोड़कर कहीं न जानेवाला। वास करनेवाला। जैसे,—तीर्थसेवक। ५. सीनेवाला। दरजी। ६. बोरा।

सेवक[२]—वि० १. सेवा करनेवाला। संमान करनेवाला। २. अभ्यास या अनुगमन करनेवाला। ३. परतंत्र। आश्रित (को०)।

सेवकाई—संज्ञा स्त्री० [सं० सेवक+आई (प्रत्य०)] सेवक का काम। सेवा। टहल। खिदमत। उ०—(क) करि पूजा सब विधि सेवकाई। गयउ राउ गृह बिदा कराई।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नाना भाँति करहु सेवकाई। अस कहि अग्र चले जदुराई।—सबलसिंह (शब्द०)।

सेवकालु—संज्ञा पुं० [सं०] दुग्धपेया नामक पौधा। निशाभंग।

सेवकी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सेवक+ई (प्रत्य०)] १. सेवावृत्ति। सेवकता। सेवक धर्म। उ०—ताके पास तीन तूँबा, काँधे पर तो खासा को, पीछे पीठ पर तो मर्यादी सेवकी को, आगे कटि पर बाहिर को, या भाँति सों रहै आवें।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ४३। २. दासी। सेविका। टहलुई। उ०—(क) दायज बसन मनि धेनु धन हय गय सुसेवक सेवकी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सेवकी सदा की बारबधू दस बीस आई ए हो रघुनाथ छकीं बारुनी अमल सों।—रघुनाथ (शब्द०)।

सेवग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सेवक] दे० 'सेवक'। उ०—यह विचारि सिव कै मंदिर गए और आप एक सेवग कनै राखि सिव को षोड़स प्रकार पूजन करयौ।—ह० रासो०, पृ० १६१।

सेवड़ा[१]—संज्ञा पुं० [सं० श्वेतपट, प्रा० सेअवड़,सेवड़, अथवा सं० श्वेताम्बर प्रा० सेअंबर, सेँबर, सेवरा, सेवड़ा] १. जैन साधुओं का एक भेद। उ०—श्री शंकराचार्य जी ने उस काम कौतुक बाद को इस ढंग से समझ के कुबादी सेवड़ों को बाद में परास्त किया।—भक्तमाल, पृ० ४६७। २. एक ग्राम देवता।

सेवड़ा[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सेव+ड़ा (प्रत्य०)] मैदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान जो खस्ता और मुलायम होता है।

सेवति(पु)‡—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वाति, सेवाति] दे० 'स्वाति' (नक्षत्र)। उ०—शशिहिं चकोर रविहिं अरविंदा। पपिहा कों सेवति कर त्रिंदा।—गोपाल (शब्द०)।

सेवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुलाब का एक भेद जिसके फूल सफेद रंग के होते हैं। सफेद गुलाब। चैती गुलाब।

विशेष—वैद्यक में यह शीतल, तिक्त, कटु लघु, ग्राहक, पाचक, वर्णप्रसाधक, त्रिदोषनाशक तथा वीर्यवर्धक कही गई है।

पर्या०—शतपत्नी। सेमंती। कर्णिका। चारुकेशा। महाकुमारी। गंधाटचा। लक्षपुष्पा। अतिमंजुला।

सेवधि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शेवधि'।

सेवन[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य, सेवितव्य] १. परिचर्या। खिदमत। २. उपासना। आराधना। पूजन। ३. प्रयोग। उपयोग। नियमित व्यवहार। इस्तेमाल। जैसे,—सुरासेवन; औषधसेवन। ४. छोड़कर न जाना। वास करना। लगातार रहना। जैसे,—तीर्थसेवन; गंगा-तट-सेवन। ५. संयोग। उपभोग। जैसे,—स्त्रीसेवन। ६. सीना। गूँथना। ७. बोरा। ८. बाँधने की क्रिया। बाँधना (को०)। ९. दूर दूर पर सीना या टाँके लगाना (को०)।

सेवन†[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सावाँ] सावाँ की तरह की एक घास जो चारे के काम में आती है और जिसके महीन दाने बाजरे में मिलाकर मरुस्थल में खाए भी जाते हैं। सेवँई। सवँई।

सेवना(पु)†[१]—क्रि० स० [सं० सेव+हिं० ना (प्रत्य०)] दे० 'सेना'। उ०—हम सेवत वारी वागसर सरिता वापी कूपतट। खोवत हैं यों ही आपु को भए निपट ही निघरघट।—ब्रज० ग्रं०, पृ० १२५।

सेवना[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सेवन' [को०]।

सेवनी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूई। सूची। सिवनी। २. सीवन। जोड़। टाँका। संधिस्थान। ३. शरीर के वे अंग जहाँ सीवन सी दिखाई देती हो। (ऐसे स्थान सात हैं पाँच मस्तक में), एक जीभ में और लिंग में एक। ४. जुही। जूही।

सेवनी(पु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सेविन्, सेविनी] दासी। उ०—निज सेविनी पहिचानि कै वहई अनुग्रह आनिहै। करिहैं पवित्र चरित्र मेरी जीभ अवगुण बानि है।—गुमान (शब्द०)।

सेवनी³—संज्ञा पुं० [सं० सेवनिन्] खेत जोतनेवाला । हलवाहा [को०] ।

सेवनीय—वि० [सं०] १. सेवा योग्य । २. पूजा के योग्य । ३. व्यवहार करने या रखने योग्य । ४. सीने योग्य ।

सेवर¹—संज्ञा पुं० [सं० शबर] दे० 'शबर' । उ०—हरिजू तिनको दुखित देख । कियो तुरत सेवरि को भेष ।—(शब्द०) ।

सेवर(पु)²—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बल] दे० 'सेमल' ।

सेवर³—वि० [देशी] जो कम पका हुआ हो । जो पूरी तौर से पका हुआ न हो (बोल०) ।

सेवरा(पु)†—संज्ञा पुं० [हिं० सेवड़ा] दे० 'सेवड़ा' । उ०—सेवरा, खेवरा, वानपरस्ती, सिध साधक अवधूत । आसन मारे बैठ सब जारि आतमा भूत ।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० ३० ।

सेवरी(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शवरी] दे० 'शवरी' । उ०—बहुरि कबंधहि निरखि प्रभु गीध कीन्ह उद्धार । सेवरी भवन प्रवेश करि पंपासरहि निहार ।—रामाश्वमेध (शब्द०) ।

सेवल—संज्ञा पुं० [देश०] ब्याह की एक रस्म ।

विशेष—इसमें वर की कोई सधवा आत्मीया वर के हाथ में पीतल की एक थाली देती है जिसपर एक दिया रहता है; अनंतर उसके दुपट्टे के दोनों छोर पकड़कर पहले उस थाली से वर का माथा और फिर अपना माथा छूती है ।

सेवांजलि—संज्ञा स्त्री० [सं० सेवाञ्जलि] १. भक्त या सेवक का दोनों हथेलियों के जुड़े हुए संपुट में स्वामी या उपास्य को कुछ अर्पण । २. सेवाभाव को व्यक्त करने की अंजलि या संपुट ।

सेवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया । खिदमत । टहल । परिचर्या । जैसे—हमारी बीमारी में इसने बड़ी सेवा की ।

यौ०—सेवा शुश्रूषा । सेवा टहल ।

२. दूसरे का काम करना । नौकरी । चाकरी ।

विशेष—राज्य की सेवा के अतिरिक्त और प्रकार की सेवावृत्ति अधम कही गई है ।

३. आराधना । उपासना । पूजा । जैसे,—ठाकुर जी की सेवा ।

मुहा०—सेवा में = पास । समीप । सामने । जैसे—(क) मैं कल आपकी सेवा में उपस्थित हूँगा । (ख) मैंने आपकी सेवा में एक पत्र भेजा था । (आदरार्थ प्रायः बड़ों के लिये) ।

४. आश्रय । शरण । जैसे,—आप मुझे अपनी सेवा में ले लेते तो बहुत अच्छा था । ५. रक्षा । हिफाजत जैसे,—(क) सेवा बिना ये पौधे सूख गए । (ख) वे अपने शरीर की बड़ी सेवा करते हैं । उ०—वे अपने बालों की बड़ी सेवा करती हैं । —महावीर-प्रसाद द्विवेदी (शब्द०) । ६. संप्रयोग । सभोग । मैथुन । जैसे,—स्त्रीसेवा । ७. प्रयोग । व्यवहार (को०) । ८. लगाव । आसक्ति (को०) । ९. चापलूसी । चाटु (को०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

सेवाकाकु—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवाकाल में स्वरपरिवर्तन या आवाज बदलना, (अर्थात् कभी जोर से बोलना, कभी मुलायमियत से, कभी क्रोध से और कभी दुःख भाव से) ।

सेवाजन—संज्ञा पुं० [सं०] नौकर । सेवक । दास ।

सेवाटहल—संज्ञा [सं० सेवा + हिं० टहल] परिचर्या । खिदमत । सेवा-शुश्रूषा । उ०—इस प्रकार पिता का उपदेश सुन, वह बड़-भागिन सप्रेम सेवाटहल दिन रात करने लगी ।—भक्तमाल, पृ० ४७० ।

क्रि प्र०—करना । होना ।

सेवाती—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वाति] दे० 'स्वाति' । उ०—(क) रातुरंग जिमि दीपक बाती । नैन लाउ होइ सीप सेवाती ।—जायसी (शब्द०) । (ख) नयन लागु तेहि मारग पदुमावति जेहि दीप । जइस सेवातिहि सेवई बन चातक जल सीप ।—जायसी (शब्द०) ।

सेवादक्ष—वि० [सं०] जो परिचर्या के काम में कुशल हो [को०] ।

सेवाधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] सेवक का धर्म या कर्तव्य ।

सेवाधारी—संज्ञा पुं० [सं० सेवा + धारिन्] वह जो किसी मंदिर में ठाकुर जी या मूर्ति की पूजा सेवा करता हो । पुजारी । (साधुओं की परि०) ।

सेवापन—संज्ञा पुं० [सं० सेवा + हिं० पन (प्रत्य०)] । दासत्व । सेवावृत्ति । नौकरी । टहल ।

सेवाबंदगी—संज्ञा स्त्री० [सं० सेवा, फ़ा० बंदगी] । आराधना । पूजा । उ०—यह मसीति यह देवहरा सतगुरु दिया दिखाइ । भीतर सेवाबंदगी बाहर काहे जाइ ।—दादू (शब्द०) ।

सेवाभिरत—वि० [सं०] १. सेवाकार्य में रत या लीन । २. सेवा में आनंद प्राप्त करने या माननेवाला [को०] ।

सेवाभृत्—वि० [सं०] सेवा करता हुआ । सेवाकार्य में संलग्न [को०] ।

सेवाय¹—वि० [अ० सिवा] अधिक । ज्यादा ।

सेवाय²—अव्य० दे० 'सिवा'; 'सिवाय' ।

सेवार—संज्ञा स्त्री० [सं० शैवाल] १. बालों के लच्छों की तरह पानी में फैलनेवाली एक घास । उ०—(क) संबुक भेक सेवार समाना । इहाँ न विषय कथा रस नाना ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) राम और जादवन सुभट ताके हते रुधिर की नहर सरिता बहाई । सुभट मनो मकर अरु केस सेवार ज्यों, धनुष त्वच चर्म कूरम बनाई ।—सूर (शब्द०) ।

विशेष—यह अत्यंत निम्न कोटि का उद्‌भिद् है, जिसमें जड़ आदि अलग नहीं होती । यह तृण नदियों और तालों में होता है और चीनी साफ करने तथा औषध के काम में आता है । वैद्यक में सेवार कसैली, कड़वी, मधुर, शीतल, हलकी, स्निग्ध, दस्तावर, नमकीन, घाव भरनेवाली तथा त्रिदोषनाशक बताई गई है ।

२. मिट्टी की तहें जो किसी नदी के आसपास जमी हों ।

सेवार²—संज्ञा पुं० [फ़ा० सेह (= तीन)] पान । (सुनार) ।

सेवारा—संज्ञा पुं० [हिं० सेवरा] दे० 'सेवड़ा¹' ।

सेवाल—संज्ञा स्त्री० [सं० शैवाल] दे० 'सेवार' । उ०—दूब वंश कुव-लय नलिन अनिल व्योम तृणवाल । मरकत मणि हय सूर के नील वर्ण सेवाल ।—केशव (शब्द०) ।

विशेष—ऐसे लोग या तो तीन हजार सवार या सैनिक रख सकते थे या तीन हजार सैनिकों के नायक बनाए जाते थे।

सेहा—संज्ञा पुं० [सं० सन्धि, हिं० सेंध] कूआँ खोदनेवाला।

सेहिथाना†—संज्ञा पुं० [हिं० सेहथना] वह बुहारी या कूचा जिससे खलिहान साफ किया जाता है।

सेही—संज्ञा स्त्री० [सं० सेधा, सेधी, प्रा० सेह] लोमड़ी के आकार का एक जंतु जिसकी पीठ पर कड़े और नुकीले काँटे होते हैं। साही। खारपुश्त। उ०—सेही सियाल लंगूर बहु कुड कदंम भरि तर रहिय। पिष्षे सु जीव कवि चंद नें तुच्छ नाम चौपद कहिय।—पृ० रा०, ६।६४।

विशेष—क्रुद्ध होने पर यह जंतु काँटों को खड़े कर लेता है और इनसे चोट करता है। लंबाई में ये काँटे एक बालिश्त तक होते हैं।

सेहुंड, सेहुंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० सेहुण्ड, सेहुण्डा] थूहर। सेहुंड।

सेहुँड़(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सेहुण्ड] थूहर का पेड़। उ०—छती नेह कागद हिए भई लखाय न टाँक। बिरह तचे उघरयो सु अब सेहुँड़ को सो आँक।—बिहारी (शब्द०)।

सेहुआँ—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का चर्मरोग जिसमें शरीर पर भूरी भूरी महीन चित्तियाँ सी पड़ जाती हैं।

सेहआन—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का करमकल्ला जिसके बीज से तेल निकलता है।

सेह्र—संज्ञा पुं० [अ०] १. इंद्रजाल। कीमियागरी। २. यंत्र मंत्र। जादू टोना।

यौ०—सेह्रबयान = ललित एवं मुग्ध करनेवाली भाषा का व्यवहार करनेवाला। सेह्रसाज = कीमियागर। जादूगर। सेह्रसाज़ी = इंद्रजाज। जादूगरी।

सेंदूर—वि० [सं०] सिंदूर से रँगा हुआ। २. सिंदूर के रंग का। सिंदूरी।

संदेही(पु)—वि० [सं० सह + देहिन्] सदेह। सशरीर। प्रत्यक्ष। उ०—करसी तप्ति मगहर गया कबीर भरोसै राम। सैंदेही साँई मिल्या दादू पूरे काम। - दादू० पृ० ३४६।

सैंध(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० सन्धि] दे० 'संधि'। उ०—ता पच्छै सामंत नाथ मिलि एक सुबत्तिय। भोरा राइ दिसान सैंध सगपन की कथ्थिय।—पृ० रा०, १२। पृ० ४५५।

सैंधव¹—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धव] १. सेंधा नमक। विशेष दे० 'सेंधा'। २. सिंध देश का घोड़ा। सिंधी घोड़ा। ३. सिंध के राजा जयद्रथ का नाम। ४. एक प्रदेश का नाम। सिंधु देश (को०)। ५. प्राकृत भाषा में निबद्ध एक प्रकार की गीत संरचना (को०)। ६. सिंध देश का निवासी।

यौ०—सैंधवखिल्य, सैंधवघन = नमक का डला। सैंधवचूर्ण = नमक का बूरा। सैंधव शिला = एक प्रकार का पत्थर जो मुलायम होता है।

सैंधव²—वि० १. सिंध देश में उत्पन्न। २. सिंध देश का। सिंधुदेशीय। ३. समुद्र संबंधी। समुद्रीय। ४. समुद्र में उत्पन्न।

सैंधवक—वि० [सं० सैन्धवक] [वि० स्त्री० सैंधविकी] सैंधव संबंधी।

सैंधवपति—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धव (= सिंध निवासी) + पति (= राजा)] सिंधवासियों के राजा, जयद्रथ। उ०—सोमदत्त शशिविंदु सुवेशा। सैंधवपति अरु शल्य नरेशा।—सबलसिंह (शब्द०)।

सैंधवादिचूर्ण—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धवादि चूर्ण] एक अग्निदीपक चूर्ण जिसमें सेंधा नमक, हर्रे, पीपल और चीतामूल बराबर पड़ता है।

सैंधवायन—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धवायन] १. एक ऋषि का नाम। २. उनके वंशज।

सैंधवारण्य—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धवारण्य] महाभारत में वर्णित एक वन का नाम।

सैंधवी—संज्ञा स्त्री० [सं० सैन्धवी] संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

विशेष—यह भैरव राग की पुत्रवधू मानी गई है। यह दिन के दूसरे पहर की दूसरी घड़ी में गाई जाती है। इसकी स्वर-लिपि इस प्रकार है—धा सा रे म म प प ध ध। सा नि ध ध प प म ग ग ग ग रे सा। धा सा रे म म ग रे ग रे म प ग रे। नि नि ध म प म ग रे। प प म रे ग ग ग रे सा। किसी किसी के मत से यह षाडव है और इसमें रि वर्जित है।

सैंधी—संज्ञा स्त्री० [सं० सैन्धी] एक प्रकार की मदिरा जो खजूर या ताड़ के रस से बनती है। ताड़ी।

विशेष—वैद्यक में यह शीतल, कषाय, अम्ल, पित्तदाहनाशक तथा वातवर्धक मानी गई है।

सैंधुक्षित—संज्ञा पुं० [सं० सैन्धुक्षित] एक साम भेद का नाम।

सैंधू—संज्ञा स्त्री० [सं० सिन्धू, सैन्धवी] दे० 'सैंधवी'। उ०—करि लावदार दीरघ दवान। गहि सेल साँग हुव सावधान। केतेक धीर संधी कमान। केतेन तेग राखी भुजान। गुन गाइक किय वीरनु वखान। सैंधू सुर पूरिय तिहीं थान।—सूदन (शब्द०)।

सैंपुल—संज्ञा पुं० [अं० सेम्पुल] नमूना। जैसे,—कपड़े का सैंपुल।

सैंह¹—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैंही] १. सिंह संबंधी। सिंह का। २. सिंह के समान।

सैंह(पु)†²—क्रि० वि० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'¹।

सैंहल—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैंहली] १. सिंहल द्वीप संबंधी। सिंहल द्वीप का। २. सिंहली। सिंहल में उत्पन्न।

सैंहलक—संज्ञा पुं० [सं०] पीतल [को०]।

सैंहली—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की पीपल। सिंहली पीपल।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह कटु, उष्ण, दीपन, कोष्ठशोधक, कफ, श्वास और वायुनाशक है।

पर्या०—सर्पदंडा। सर्पाक्षी। उत्कटा। पार्वती। शैलजा। ब्रह्म-भूमिजा। लंबबीजा। ताम्रा। अद्रिजा। सिंहलस्था। जीवला। लंबदंडा। जीवनेत्री। जीवाला। कुरुंबी।

सैंहाद्रिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति का नाम।

सैंहिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] सिंहिका से उत्पन्न, राहु। सिंहिका का पुत्र। सैंहिकेय।

सैंहिक[२]—वि० सिंह के समान। सिंह तुल्य। सिंह जैसा।

सैंहिकेय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंहिका का पुत्र राहु। २. दानवों का एक वर्ग [को०]।

सैंगर—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सेंगर' ३।

सैंजल⑤‡—वि० [सं० सम+जल] जल के समान। जलयुक्त। जल या पानी के साथ। उ०—झिरिमिरि झिरिमिरि बरषिया पाँहण ऊपरि मेह। माँटी गलि सैंजल भई पाहण वोही तेह।—कबीर ग्रं०, पृ० ५५।

सैंणर—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी+नर, हिं० साईंनर; या सं० स्वजन, प्रा० सजण, सयण, पु० हिं० सैंण+अर (प्रत्य०)] पति। खाविंद (डिं०)।

सैंतना—क्रि० स० [सं० सञ्चयन या हिं० सँचय+ना (प्रत्य०)] १. संचित करना। एकत्र करना। बटोरना। इकट्ठा करना। उ०—(क) सोई पुरुष दरब जेइ सैंती। दरबहि तें सुनु बातें एती।—जायसी (शब्द०)। (ख) कहा होत जल महा प्रलय को राख्यो सैंति सैंति है जेह। भुव पर एक बूंद नहिं पहुँची निझरि गए सब मेह।—सूर (शब्द०)। २. हाथों से समेटना। इधर उधर से सरकाकर एक जगह करना। बटोरना। उ०—सखि वचन सुनि कौसिला लखि सुढर पासे ढरनि। लेति भरि भरि अंक, सैंतति पैंत जनु दुहुँ करनि।—तुलसी (शब्द०)। ३. सहेजना। सँभालकर रखना। सावधानी से अपनी रक्षा में करना। सवाचना। जैसे,—जो रुपया मैंने दिया है, उसे सैंतकर रखना। ४. मार डालना। ठिकाने लगाना। (बाजारू)। ५. घन मारना। चोट लगाना।

सैंतालिस—वि०, संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सैंतालीस'।

सैंतालीस[१]—वि० [सं० सप्तचत्वारिंशत्, पा० सत्तचत्तालीसति, प्रा० सत्तालिस] जो गिनती में चालीस से सात अधिक हो। चालिस और सात।

सैंतालीस[२]—संज्ञा पुं० चालिस से सात अधिक की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४७।

सैंतालीसवाँ—वि० [हिं० सैंतालीस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम में छियालिस और वस्तुओं के उपरांत हो। क्रम में जिसका स्थान सैंतालिस पर हो।

सैंतिस—वि० [सं० सप्तत्रिंशत्] दे० 'सैंतीस'।

सैंतीस[१]—वि० [सं० सप्तत्रिंशत्, पा० सप्ततिसति, प्रा० सत्तिसइ] जो गिनती में तीस से सात अधिक हो। तीस और सात।

सैंतीस[२]—संज्ञा पुं० तीस से सात अधिक का अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—३७।

सैंतीसवाँ—वि० [हिं० सैंतीस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम में छत्तीस और वस्तुओं के उपरांत हो। क्रम में जिसका स्थान सैंतीस पर हो।

सैंथी⑤†—संज्ञा पुं० [सं० शक्ति] एक प्रकार का शस्त्र। उ०—इंद्रजीत लीनी जब सैंथी देवन हहा करयौ।—सूर०, ९।१४४।

सैंपना†—क्रि० स० [सं० समर्पण पु० हिं० सउँपना, सौंपना] दे० 'सौंपना'। उ०—भारी कठोर हियो करि के तिय सैंपि बिदा भो बिदेस के ईछे।—पजनेस०, पृ० ३२।

सैंबल⑤†—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बल] दे० 'सेंमर'। उ०—विष ताकों अमृत करि जानै सो सँग आवै साथ। सैंबल के फूलन परि फूल्यौ चूकौ अबकी घात।—दादू०, पृ० ६२६।

सैंयाँ—संज्ञा पुं० [हिं० सैयाँ] दे० 'सैयाँ'।

सैंवर†—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'साँभर'। उ०—सज्जी सौंचर सैंवर सोरा। साँखाहूली सीप सिकोरा।—सूदन (शब्द०)।

सैंवार†—संज्ञा पुं० [सं० शैवाल या पुं० शत+वाद्] १. दे० 'सेवार।' २. शतधा। टुकड़े टुकड़े। उ०—कबीर देवल ढहि पड्या ईंट भई सैंवार।—कबीर ग्रं०, १२, पद्य १८।

सैंहथी—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] दे० 'सैंथी'।

सैंहुड़—संज्ञा पुं० [सं० सेहुण्ड] दे० 'सेंहुँड़'।

सैंहूँ—संज्ञा पुं० [हिं० गेहूँ का अनु०] गेहूँ के वे दाने जो छोटे काले और बेकार होते हैं।

सै†[१]—वि०, संज्ञा पुं० [सं० शत, प्रा० सय, सइ] सौ। उ०—संवत सोरह सै इकतीसा। करउँ कथा हरिपद धरि सीसा।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—इसका प्रयोग अधिकतर किसी संख्या के आगे होता है।

सै[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्व, प्रा० सत्त] १. तत्व। सार। माद्दा। २. वीर्य। शक्ति। ओज। उ०—बिनती सों परसन्न सद ती सों प्रसन्न मन। विनसै देखत सत्रु अहै यह सै जाके तन।—गोपाल (शब्द०)। ३. बढ़ती। बरकत। लाभ।

सै⑤‡[३]—वि० [सं० सदृश, प्रा० सदिस, सइस] समान। तुल्य। उ०—लखण बतीसे मारुवी निधि चंद्रमा निलाट। काया कूँ कूँ जेहवी कटि केहरि सै घाट।—ढोला०, दू० ४६६।

सैकंट—संज्ञा पुं० [सं० शतकण्टक] बबूल की जाति का एक पेड़ जिसकी छाल सफेद होती है। धौला खैर। कुमतिया।

विशेष—यह बंगाल, बिहार, आसाम तथा दक्षिण और मध्यप्रदेश आदि में विंध्य की पहाड़ियों पर होता है।

सैकड़ा—संज्ञा पुं० [सं० शतकाण्ड, प्रा० सयकंड] १. सौ का समूह। शत की समष्टि। जैसे,—२ सैकड़े आम। २.१०६ ढोली पान। (तंबोली)।

सैकड़े—क्रि० वि० [हिं० सैकड़ा] प्रति सौ के हिसाब से। प्रतिशत। फीसदी। जैसे,—५) सैकड़े ब्याज।

सैकड़ों—वि० [हिं० सैकड़ा] १. कई सौ। २. बहुसंख्यक। गिनती में बहुत। जैसे,—सैकड़ों आदमी।

सैकत[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैकती] १. रेतीला। बलुआ। बालुकामय। २. बालू का बना।

सैकत[२]—संज्ञा पुं० १. बलुआ किनारा। रेतीला तट। २. तट। किनारा (को०)। ३. रेतीली मिट्टी। बलुई जमीन। ४. बालू का ढेर।

सिकतापुंज (को०) । ५. एक ऋषिवंश या संप्रदाय जिन्हें वानप्रस्थियों का भेद भी माना गया है ।

सैकतिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. साधु । संन्यासी । क्षपणक । २. वह सूत्र या सूत जो मंगल के लिये कलाई या गले में धारण किया जाता है। मंगलसूत्र । गंडा या रक्षा ।

सैकतिक[2]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैकतिकी] १. सैकत संबंधी । २. भ्रम या संदेह में रहनेवाला । संदेहजीवी । भ्रांतिजीवी ।

सैकतिनी—वि० स्त्री० [सं०] दे० 'सैकती' [को०] ।

सैकती—वि० [सं० सैकतिन्] [वि० स्त्री० सैकतिनी] सिकतायुक्त । रेतीला । बलुआ (तट या किनारा) ।

सैकतेष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] आर्द्रक । अदरक (जो बलुई जमीन में अधिक होता है) ।

सैकयत—संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि के अनुसार एक प्राचीन जनपद या जाति का नाम ।

सैकल—संज्ञा पुं० [अ० सैक़ल] १. हथियारों को साफ करने और उनपर सान चढ़ाने का काम । २. सफाई । स्वच्छता । जिला (को०) ।

सैकलगर—संज्ञा पुं० [अ० सैक़ल + गर] तलवार, छुरी आदि पर बाढ़ रखनेवाला । सान धरनेवाला । चमक देनेवाला । सिकलीगर ।

सैका‡[1]—संज्ञा पुं० [सं० सेक (=पात्र)] १. घड़े की तरह का मिट्टी का एक बरतन जिससे कोल्हू से गन्ने का रस निकालकर कड़ाहे में डाल देते हैं । २. मिट्टी का छोटा बरतन जिससे रेशम रँगने का रंग ढाला जाता है । ३. खेत से कटकर आई हुई रबी की फसल का अटाला । राशि ।

सैका[2]—संज्ञा पुं० [सं० शतक, प्रा० सय, हिं० सै(=सौ)] १. दस ढोंके । २. एक सौ पूले ।

सैकीⓅ‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० सैका] छोटा सैका ।

सैक्य[1]—वि० [सं०] १. एकतायुक्त । २. सिंचाई पर निर्भर । ३. सिंचन संबंधी । सिंचन के लायक ।

सैक्य[2]—संज्ञा पुं० सोनपीतल । शोणपित्तल ।

सैक्षव—वि० [सं०] जिसमें चीनी हो । मीठा ।

सैक्सन—संज्ञा पुं० [अं०] योरप की एक जाति जो पहले जर्मनी के उत्तरी भाग में रहती थी । फिर पाँचवीं और छठी शताब्दी में इसने इंगलैंड पर धावा किया और वहाँ बस गई ।

सैजन—संज्ञा पुं० [हिं० सहिजन] दे० 'सहिजन' ।

सैढ़†—संज्ञा पुं० [देश०] गेहूँ की कटी हुई फसल जो दाँई गई हो, पर ओसाई न गई हो ।

सैण†—संज्ञा पुं० [सं० स्वजन, प्रा० सयण] १. मित्र । साजन । प्रिय । उ०—ढोला खिल्यौरी कहइ, सुणे कुढंगा वैण । म्हारू म्हाँजी गोठणी, सैं मारूदा सैण ।—ढोला०, दू० ४३८ । २. स्वजन । इष्टमित्र । बंधुबांधव । उ०—(क) बाताँ वैर विसावणा, सैणाँ तोड़े नेह ।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ६६ । (ख) ज्यारै थोड़ी सैण जग, वैरी घणा वसंत ।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ६६ ।

सैणाचार†—संज्ञा पुं० [सं० सजन + आचार] मैत्री व्यवहार । स्वजनाचरण । मित्रता । उ०—किण सूँ राखै केहरी, सैणाचार सनेह ।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० २१ ।

सैतव—वि० [सं०] सेतु संबंधी ।

सैतवाहिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाहुदा नदी का नाम ।

सैत्य—संज्ञा पुं० [सं०] धवलिमा । श्वेतता । सुफेदी [को०] ।

सैथी—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति, प्रा० सत्ति अथवा सहस्त, प्रा० सहत्थ, पु० हिं० सैंथी, सैंहथी] बरछी । साँग । छोटा भाला । उ०—पहर रात भर भई लराई । गोलिन सर सैथिन झर लाई । खाइ घाइ सब खान अघानै । लोह मानि तजि कोह परानै ।—लाल कवि (शब्द०) ।

सैदⓅ‡[1]—संज्ञा पुं० [अ० सैयद] दे० 'सैयद' । उ०—सुज्यो बहुरि सुरभी बलवाना । शेख सैद अरु मुगल पठाना ।—रघुराजसिंह (शब्द०) ।

सैद[2]—संज्ञा पुं० [अ०] १. शिकार । आखेट । उ०—जुल्फ के हलके में देखा जब से दाना खाल का । मुर्ग दिल आशिक का तब से सैद है इस जाल का ।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० २३ । २. शिकार का पशु । वह जानवर जिसका शिकार किया जाय (को०) ।

यौ०—सैदगाह = शिकार करने का स्थान । सैदे हरम = जनानखाने का जानवर जिसका शिकार करना वर्जित है ।

सैदपुरी—संज्ञा स्त्री० [सैदपुर स्थान] एक प्रकार की नाव जिसके आगे पीछे दोनों ओर के सिक्के लंबे होते हैं ।

सैदानी—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'सैयदा' ।

सैद्धांतिक[1]—संज्ञा पुं० [सं० सैद्धान्तिक] १. सिद्धांत को जाननेवाला । सिद्धांतज्ञ । विद्वान् । तत्वज्ञ । २. तांत्रिक ।

सैद्धांतिक[2]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैद्धान्तिकी] सिद्धांत संबंधी । तत्व संबंधी ।

सैध्रक—वि० [सं०] सिध्रक वृक्ष की लकड़ी का बना हुआ ।

सैध्रिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का वृक्ष ।

सैन[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० संज्ञपन, प्रा० सण्णावन] १. अपना भाव प्रकट करने के लिये आँख या उँगली आदि से किया हुआ इंगित या इशारा । उ०—(क) जदपि चवायनि चीकनी, चलति चहूँ दिस सैन । तदपि न छाँड़त दुहुनि के हँसी रसीले नैन ।—बिहारी (शब्द०) । (ख) सुनि श्रवण दशबदन दशन अभिमान कर नैन की सैन अंगद बुलायो । देखि लंकेश कपि भेश दर दर हँस्यो सुन्यो भट कटक को पार पायो ।—सूर (शब्द०) । (ग) सीतहि सभय देखि रघुराई । कहा अनुज सन सैन बुझाई ।—तुलसी (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—देना ।—मारना ।

२. चिह्न । निशान । सूचक वस्तु । परिचायक लक्षण । उ०—यह श्रमकन नख खतन की सैन जुदी अँग मैन । नील निचोल चितै भए तरुनि चोल रँग नैन ।—श्रृंगार सतसई (शब्द०) ।

सैनⓅ‡[२]—संज्ञा पुं० [सं० शयन, प्रा० सयण] दे० 'शयन'। उ०—भटन विदा करि रैन मुख जाइ कीन्ह गृह सैन।—गोपाल (शब्द०)। (ख) साजि सैन भूषण बसन सबकी नजर बचाय। रही पौढ़ि मिस नींद के दृग दुवार से लाय।—पद्माकर (शब्द०)। (ग) जानि परैगी जात हो रात कहूँ करि सैन। लाल ललौहें नैन लखि सुनि अनखौहें बैन।—शृंगार सतसई (शब्द०)।

सैनⓅ‡[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० सेना या सैन्य] दे० 'सेना'। उ०—(क) सप्त दीप के कपि दल आए जुरी सैन अति भारी। सीता की सुधि लेन चले कपि ढूँढ़त विपिन मँझारी।—सूर (शब्द०)। (ख) सजी सैन छवि बरनि न जाई। मनु विधि करामाति सब आई।—गोपाल (शब्द०)।

सैनⓅ‡[४]—संज्ञा पुं० [सं० श्येन] दे० 'श्येन'। बाज पक्षी। उ०—चल्यो प्रसैन ससैन सैन जिमि अपर खगन पर।—गोपाल (शब्द०)।

सैन[५]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बगला।

सैनक—संज्ञा पुं० [फ़ा० सनी, सहनक] थाली। रिकाबी। तश्तरी।

सैनपतिⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सेनापति] दे० 'सेनापति'। उ०—चहूँ सैनपतीनु बुलाइ लिए। तिन सौं यह आइसु आपु दिए।—सूदन (शब्द०)।

सैनभोगⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शयन + भोग] शयन के समय का भोग। रात्रि का नैवेद्य जो मंदिरों में चढ़ता है। उ०—भए दिन तीनि ये तौ भूख के अधीन नहिं, रहे हरि लीन प्रभु शोच परे उभारिए। दियो सैनभोग आप लक्ष्मी जू लै पधारी, हाटक की थारी झनझन पाँव धारिए।—भक्तमाल (शब्द०)।

सैनाⓅ‡[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सैन्य] दे० सेना'। उ०—मीत नीत की चाल ये चल जानतहू रैन। छवि सैना सजि धावहीं अबलन पै तुव नैन।—रसनिधि (शब्द०)।

सैनाⓅ[२]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सैन] संकेत। इशारा।

सैना[३]—संज्ञा पुं० [अ०] एक पर्वत जो शाम में है। कहते हैं, इसी पर हजरत मूसा को ईश्वरदर्शन हुआ था [को०]।

सैनानिक—वि० [सं०] सेना के अग्रभाग का।

सैनानीक—वि० [सं०] दे० सैनानिक'।

सैनान्य—संज्ञा पुं० [सं०] सेनानी या सेनापति का कार्य। सैनापत्य। सेनापतित्व।

सैनापतिⓅ‡—संज्ञा पुं० [सं० सैन्यपति] दे० 'सेनापति'।

सैनापत्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति का पद या कार्य। सेनापतित्व।

सैनापत्य[२]—वि० सेनापति संबंधी।

सैनिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेना या फौज का आदमी। सिपाही। लश्करी। तिलंगा। २. सैन्यरक्षक। प्रहरी। संतरी। ३. समवेत सेना का भाग। व्यूहबद्ध दल। ४. वह जो किसी प्राणी का वध करने के लिये नियुक्त किया गया हो। ५. शंबर के एक पुत्र का नाम।

सैनिक[२]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सैनिकी] सेना संबंधी। सेना का।

यौ०—सैनिकवाद। सैनिकवादी। सैनिकीकरण = किसी राष्ट्र की पूरी आबादी को युद्ध करनेवाली सेना के रूप में संयोजित करना या सबल बनाना। समर्थ जनसाधारण को सैनिक प्रशिक्षण देने का कार्य। उ०—मार्च, १९३४ में हिटलर ने सैनिकीकरण का कार्य कर दिया।—आ० अ० रा०, पृ० १९।

सैनिकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेना या सैनिक का कार्य। सैनिकों का जीवन। २. युद्ध। लड़ाई भिड़ाई।

सैनिकवाद—संज्ञा पुं० [सं० सैनिक + वाद] दे० सामरिकवाद'।

सैनिका—संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनिका] एक छंद का नाम। यथा—सो सुजाननंद सोचि वा घरी। आइयौ ब्रजेस पास ता घरी। सीख माँगि श्री ब्रजेस सौं तबै। दै निसान कूँच कै चमू सबै।—सूदन (शब्द)।

सैनिटरी—वि० [अं०] सार्वजनिक स्वास्थ्य, शुद्धता, रक्षा और उन्नति से संबंध रखनेवाला। जैसे—सैनिटरी डिपार्टमेंट, सैनिटरी कमिश्नर।

सैनिटेरियम—संज्ञा पुं० [अं०] दे० 'सैनेटोरियम'।

सैनिटेशन—संज्ञा पुं० [अं०] स्वास्थ्यरक्षा संबंधी विज्ञान [को०]।

सैनीⓅ[१]—संज्ञा पुं० [सं०√ष्णा शौचे ? अथवा हिं० सेना भगत (जो जाति के नाई थे)] नाई। हजाम। उ०—दरशन हूँ नाशे यम सैनिक जिमि नह बालक सैनी। एकै नाम लेत सब भाजे पीर सुभूमि रसैनी।—सूर (शब्द०)।

सैनीⓅ‡[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० सेना] दे० 'सेना'। उ०—जानि कठिन कलिकाल कुटिल नृप संग सजी अघ सैनी। जनु ता लगि तरवार त्रिविक्रम धरि करि कोप उपैनी।—सूर (शब्द)।

सैनीⓅ[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० शयनीया (= शय्या)] शय्या। सेज। उ०—नंददास प्रभु को नेह देखि हाँसी आवै, वे बैठे री रचि रचि सैनी।—नंद० ग्रं०, पृ० ३६८।

सैनीⓅ[४]—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] श्रेणी। पंक्ति। कतार। उ०—आगे चलि पुनि अवलोकी नवपल्लव सैनी। जहँ पिय सुसुम कुसुम लै मुकर गुही है बैनी।—नंद० ग्रं०, पृ० १६।

सैनी†[५]—संज्ञा पुं० [सं० सेना ?] एक सैनिक जाति। एक युद्धक जाति जो अपने को शूरसेन से संबंधित बतलाती है।

सैनू—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा। नैनू।

सैनेटोरियम—संज्ञा पुं० [अं०] वह स्थान जहाँ लोग स्वास्थ्यसुधार के लिये जाकर रहते हैं। स्वास्थ्यनिवास।

सैनेयⓅ—वि० [सं० सेना + इय (प्रत्य०)] सेना के योग्य। लड़ने के योग्य। उ०—कैतवेय नृप चल्यो श्रेय गुनि बल अमेय तन। सँग अजेय सैनेय सैन पर प्रान तेय रन।—गोपाल (शब्द०)।

सैनेश—संज्ञा पुं० [सं० सैन्य + ईश > सैन्येश] सेनापति। उ०—हँसि बोले सैनेशकुमारा। कहिए नाथ सहित बिस्तारा।—सबलसिंह (शब्द०)।

सैनेसⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सैन्येश, प्रा० सैनेस] दे० 'सैनेश'।

सैन्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सैनिक। सिपाही। २. सेना। फौज। ३. सेनादल। पलटन। ४. प्रहरी। संतरी। ५. शिविर। छावनी।

सैन्य[2]—वि० सेना संबंधी । फौज का । फौजी ।

सैन्यकक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का पार्श्व भाग । दे० 'सेनाकक्ष' ।

सैन्यक्षोभ—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का विद्रोह । फौज की बगावत ।

सैन्यघातक—वि० [सं०] सेना का विनाश करनेवाला [को०] ।

सैन्यघातकर—वि० [सं०] दे० 'सैन्यघातक' ।

सैन्यनायक—संज्ञा सं० [सं०] सेना का अध्यक्ष । सेनापति ।

सैन्यनिवेशभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ सेना पड़ाव डाले । शिविर । पड़ाव । छावनी ।

सैन्यपति—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति ।

सैन्यपाल—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति ।

सैन्यपृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] फौज का पिछला हिस्सा । सेना का पश्चात् भाग । प्रतिग्रह । परिग्रह । चंदावल ।

सैन्यमुख—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सेनामुख' ।

सैन्यवास—संज्ञा पुं० [सं०] पड़ाव । छावनी ।

सैन्यशिर—संज्ञा पुं० [सं० सैन्यशिरस्] सेना का अग्रभाग ।

सैन्यसज्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना की तैयारी [को०] ।

सैन्यहंता—संज्ञा पुं० [सं० सैन्यहन्तृ] शंबर के एक पुत्र का नाम [को०] ।

सैन्याधिपति—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति ।

सैन्याध्यक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति ।

सैन्योपवेशन—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का पड़ाव ।

सैफ—संज्ञा स्त्री० [अ० सैफ़] तलवार । उ०—(क) यों छबि पावत हैं लखौ अंजन आँजे नैन । सरस बाढ़ सैफन धरी जनु सिकलीगर मैन ।—रसनिधि (शब्द०) । (ख) कोउ कहीत भामिनि भ्रुकुटि विकट बिलोकि श्रवण समीप लौं । ये साफ सैफ करैं कतल नहिं छमै जानि तिय सजनी पलौ ।—रघुराज (शब्द०) ।

यौ०—सैफ जबान = वह जिसकी जबान सत्य हो । जिसकी वाणी या कथन पुर असर हो । सैफबान = तलवार लटकानेवाला परतला ।

सैफग—संज्ञा पुं० [सं० शतफल ?] लाल देवदार ।

विशेष—इसका सुंदर पेड़ चटगाँव से सिक्किम तक और कोंकण तथा दक्षिण से मैसूर, मालाबार और लंका तक के जंगलों में पाया जाता है । इसकी लकड़ी पीलापन लिए भूरे रंग की होती है और मेज, कुरसी, बाजों के संदूक आदि बनाने के काम आती है ।

सैफा—संज्ञा पुं० [अ० सैफ़ह्] जिल्दसाजों का वह औजार जिससे वे किताबों का हाशिया काटते हैं ।

सैफी[1]—वि० [अ० सैफ़ (=तलवार)] तिरछा । तिर्यक् । उ०—नेहनि उर आवत लखौ जबहीं धीरज सैन । सैफी हेरन मैं पटे कैफी तेरे नैन ।—रसनिधि (शब्द०) ।

सैफी[2]—संज्ञा स्त्री० [अ० सैफ़ी] १. माला । सबीह । २. एक अभिचार । मारण का एक प्रयोग [को०] ।

सैमंतिक—संज्ञा पुं० [सं० सैमन्तिक] सिंदूर । सेंदुर ।

विशेष—सधवा स्त्रियों के सीमंत अर्थात् माँग में लगाने के कारण सिंदूर का यह नाम पड़ा ।

सैम—संज्ञा पुं० [देश०] धीवरों के एक देवता या भूत ।

सैयद—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० सैयदा, सैयदानी, सैदानी] १. मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी । २. मुसलमानों के चार वर्गों या जातियों में दूसरी जाति । उ०—सैयद अशरफ पीर पियारा । जेइ मोहि दीन्ह पंथ उजियारा ।—जायसी (शब्द०) ।

सैयदा, सैयदानी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सैयद वर्ग या जाति की स्त्री । २. सैयद की पत्नी । सैदानी [को०] ।

सैयाँ(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० स्वामी, हिं० साईं, या सं० स्वजन, प्रा० सयण] स्वामी । पति । उ०—(क) सैयाँ भये तिलँगवा बहुअरि चली नहाय ।—गिरिधर (शब्द) । (ख) अपने सैयाँ बाँधी पाट । लै रे बेचौं हाटै हाट ।—कबीर (शब्द०) ।

सैया(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] दे० 'शय्या' । उ०—सैया असन वसन सुख होई । कल्पवृक्ष नामक तरु सोई ।—गोपाल (शब्द०) ।

सैयाद—संज्ञा पुं० [अ०] १. व्याध । बहेलिया । शिकारी । २. मछुआ । मल्लाह । उ०—यक लोक यक वेद दो दरिया के किनारे । सैयाद के काबू में हैं सब जीव बेचारे ।—कबीर मं०, पृ० १५० ।

सैयार[1]—वि० [अ०] घूमनेवाला । भ्रमण करनेवाला [को०] ।

सैयार[2]—संज्ञा पुं० ग्रह । नक्षत्र । तारक [को०] ।

सैयारा—संज्ञा पुं० [अ० सैयारह्] वह ग्रह जो सूर्य की परिक्रमा करे । नक्षत्र । तारक [को०] ।

सैयाल—वि० [अ०] जो ठोस न हो । द्रव । तरल । जैसे—जल, तैल आदि पदार्थ [को०] ।

सैयाह—संज्ञा पुं० [अ०] पर्यटक या घुमंतू व्यक्ति ।

सैयाही—संज्ञा स्त्री० [अ०] घूमना । फिरना । सैरसपाटा करना । पर्यटन [को०] ।

सैरंध्र—संज्ञा पुं० [सं० सैरन्ध्र] [स्त्री० सैरन्ध्री] १. गृहदास । घर का नौकर । २. एक संकर जाति जो स्मृतियों में दस्यु और अयोगवी से उत्पन्न कही गई है ।

सैरंध्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सैरन्ध्रिका] परिचारिका । दासी ।

सैरंध्री—संज्ञा स्त्री० [सं० सैरन्ध्री] १. सैरंध्र नामक संकर जाति की स्त्री । २. अंतःपुर या जनाने में रहनेवाली दासी । अंतःपुर की परिचारिका । महल्लिका । ३. वह कारीगर स्त्री जो दूसरों के घरों में काम करे । स्वतंत्र शिल्पजीवनी । ४. द्रौपदी का एक नाम ।

विशेष—जब पाँचों पांडवों ने छद्मवेश में मत्स्य देश के राजा विराट् के यहाँ सेवावृत्ति स्वीकार कर ली थी, तब द्रौपदी ने भी उनके साथ एक वर्ष तक 'सैरंध्री' का काम किया था । इसी से द्रौपदी का नाम सैरंध्री पड़ा ।

सैर¹—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. मन बहलाव के लिये घूमना फिरना। मनोरंजन या वायुसेवन के लिये भ्रमण। उ०—शहर की सैर करते हुए राजा के महलों के नीचे आए। —लल्लू (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना। होना।

२. बहार। मौज। आनंद। ३. मित्रमंडली का कहीं बगीचे में खानपान और नाचरंग। ४. किसी पुस्तक का मनोरंजन की दृष्टि से अध्ययन वा अवलोकन (लाक्ष०)। ५. घूमना फिरना। पर्यटन। चंक्रमण। भ्रमण (को०)। ६. मनोरंजक दृश्य, कौतुक। तमाशा। उ०—मम बंधु को तैं हने शक्ति, विशेष लेहौं बैर। तव पुत्र, पौत्र सँहारि मैं दिखराय हौं रन सेर। —रघुराज (शब्द०)।

यौ०—सैरसपाटा = मन बहलाव के लिये घूमना, फिरना।

सैर²—वि० [सं०] सीर या हल संबंधी।

सैर³—संज्ञा पुं० कार्तिक का महीना [को०]।

सैरगाह—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सैर करने की जगह या स्थान। २. एक प्रकार का कंदील जिसमें कागजी चित्रों की चलती फिरती छाया दिखाई पड़ती है।

सैरबीन—संज्ञा पुं० [अ० सेर (=तमाशा) + फ़ा० बीन (=जिससे देखने में मदद मिले)] १. देखना भालना। निरीक्षण। २. एक प्रकार का दो तालों से युक्त यंत्र जिसे आँखों से लगाकर चित्र देखे जाते हैं। उ०—जिस तरह आप और अनेक कौतुक देखते हैं, कृपापूर्वक इस प्रजा के चित्तरूपी आतशी शीशे से (क्योंकि वह आपके वियोग और अपनी दुर्दशा से संतप्त हो रहा है), बनी हुई सैरबीन की भी सैर कीजिए।—भारतेंदु ग्रं०, भा० ३, पृ० ७२२।

सैरिंध्र¹—संज्ञा पुं० [सं० सैरिन्ध्र] बृहत्संहिता में वर्णित एक प्राचीन जनपद का नाम।

सैरिंध्र²—संज्ञा पुं० दे० 'सैरंध्र'।

सैरिंध्री—संज्ञा स्त्री० [सं० सैरिन्ध्री] दे० 'सैरन्ध्री'।

सैरि—संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्तिक महीना। २. बृहत्संहिता के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

सैरिक¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. हलवाहा। हलधर। किसान। कृषक। २. हल में जुतनेवाला बैल। ३. आकाश।

सैरिक²—वि० सीर संबंधी। हल संबंधी।

सैरिभ—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सेरिभी] १. भैंसा। महिष। २. स्वर्ग। ३. आकाश। व्योम।

सैरिभी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भैंस। महिषी।

सैरिष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] मार्कंडेय पुराण में वर्णित एक प्राचीन जनपद का नाम।

सैरीय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद कटसरैया। श्वेत झिंटी। २. नीली कटसरैया। नील झिंटी।

सैरीयक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सैरीय'।

सैरेय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद फूलवाली कटसरैया। श्वेत झिंटी। २. दे० 'सैरीय'।

सैरेयक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सैरेय'।

सैर्य—संज्ञा पुं० [सं०] अश्ववाल नामक तृण।

सैल(पु)‡¹—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सैर] दे० 'सैर'। उ०—(क) गोप अथाइन तें उठे गोरज छाई गैल। चलि बलि अलि अभिसार को भली सँझोखी सैल।—बिहारी (शब्द०)। (ख) मोहि मधुर मुसकान सों सबै गाँव के छैल। सकल शैल बनकुंज में तरुनि सुरति की सैल।—मतिराम (शब्द०)।

सैल²—संज्ञा पुं० [सं० शैल, प्रा० सैल] पर्वत। दे० 'शैल'।

सैल³—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्य] दे० 'सेल'।

सैल⁴—संज्ञा स्त्री० [अ० सैल, फ़ा० सैलाब] १. बाढ़। जलप्लावन। २. स्रोत। बहाव।

सैलकुमारी—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलकुमारी] पार्वती। दे० 'शैलकुमारी'।

सैलग—संज्ञा पुं० [सं०] लुटेरा। डाकू।

सैलजा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलजा] दे० 'शैलजा'। उ०—जाइ बियाहहु सैलजहि यहि मोहि मागें देहु।—मानस, १।७६।

सैलतनया(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलतनया] पार्वती। शैलजा।

सैलवेशन आर्मी—संज्ञा स्त्री० [अं०] यूरोपियन समाजसेवकों का एक संघटन जिसका उद्देश्य जनता की धार्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। मुक्ति फौज।

विशेष—इस संघटन के कार्यकर्ता फौज के ढंग पर जेनरल, मेजर, कप्तान आदि कहलाते हैं। ये लोग गेरुआ साफा, गेरुआ धोती और लाल रंग का कोट पहनते हैं। ईसाई होने के कारण ये लोग ईसाई मजहब का ही प्रचार करते हैं। इनका प्रधान कार्यालय इंगलैंड में है और शाखाएँ प्रायः समस्त संसार में फैली हुई हैं।

सैलसुता(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलसुता] दे० 'शैलसुता'।

सैला¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्य] [स्त्री० अल्पा० सैली] १. लकड़ी की गुल्ली या गच्चड़ जो किसी छेद या संधि में ठोंका जाय। किसी छेद में डालने या फँसाने का टुकड़ा। मेख। २. लकड़ी का छोटा डंडा या मेख। ३. लकड़ी का छोटा डंडा या मेख जो हल के जूए के दोनों सिरों के छेदों में इसलिये डालते हैं जिसमें जूआ बैलों के गले में फँसा रहे। ४. नाव की पतवार की मुठिया। ५. वह मुँगरी जिससे कटी हुई फसल के डंठल दाना झाड़ने के लिये पीटते हैं।

सैला²—संज्ञा पुं० [सं० शाकल, प्रा० साअल] [स्त्री० अल्पा० सैली] चीरा हुआ टुकड़ा। चैला। जैसे,—लकड़ी का सैला।

सैलात्मजा(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलात्मजा] पार्वती।

सैलानी—वि० [फ़ा० सैर, हिं० सैल] १. जिसे सैर करने में आनंद आवे। सैर करनेवाला। मनमाना घूमनेवाला। २. आनंदी। मनमौजी।

सैलाब—संज्ञा पुं० [फ़ा०] बाढ़। जलप्लावन।

सैलाबा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सैलाब] वह फसल जो पानी में डूब गई है।

सैलाबी[1]—वि० [फ़ा०] जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो। बाढ़वाला। जैसे,—सैलाबी जमीन।

सैलाबी संज्ञा स्त्री० १. तरी। सील। सीड़। २. बाढ़ के समय डूब जानेवाली भूमि।

सैलि—संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

सैली[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सैला] १. छोटा सैला। २. ढाक की जड़ के रेशों की बनी रस्सी।

सैली[2]—संज्ञा स्त्री० [देश०] वह टोकरी जिसमें किसान तिन्नी का चावल इकट्ठा करते हैं।

सैलीⓅ[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० शैली] परिपाटी। ढंग। चाल। परंपरा। दे० 'शैली'। उ०—यों कवि भूषन भाखत हैं यक तो पहिले कलिकाल की सैली।—भूषण ग्रं०, पृ० ६६।

सैलीⓅ†[4]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सहेली] दे० 'सहेली'। उ०—सैली मेरी गोंद ममोला। दिल मेरा वाँई लिया माँ।—दक्खिनी०, पृ० ३९०।

सैलूखⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शैलूष] १. बेल का वृक्ष। २. बिल्वफल। दे० 'शैलूष'।

सैलूषⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शैलूष] १. नट। अभिनेता। २. धूर्त। ३. बेल का वृक्ष या फल। उ०— नहिं दाडिम सैलूष यह सुक न भूलि भ्रम लागि।—दीन० ग्रं०, पृ० १०२। दे० 'शैलूष'।

सैवⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० शैव] दे० 'शैव'। उ०—माधौदास के माता पिता सैव बहिर्मुख हते।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १९५।

सैवलⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शैवल] दे० 'शैवाल'। उ०—नाभि सरसि त्रिवली निसेनिका रोमराजि सैवल छबि पावति।—तुलसी (शब्द०)।

सैवलिनीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० शैवलिनी] दे० 'शैवलिनी'।

सैवालⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शैवाल] दे० 'शैवाल'। उ०—कहुँ सैवालन मध्य कुमुदिनी लगि रहि पाँतिन।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ४५५।

सैवीⓅ†—वि० [सं० शैविन् > शैवी] शैव मतानुयायी। उ०—घर में मा बाप सैवी हैं।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १९४।

सैवुम—वि० [फ़ा०] तीसरा। तृतीय [को०]।

सैव्यⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शैव्य] दे० 'शैव्य'।

सैसंगीⓅ—वि० [सं० सत्सङ्गिन्] सत्संग करनेवाला। साथी। सतसंगी। उ०—प्रेम के साथ लगै सैसंगी।—इंद्रा०, पृ० १६८।

सैस—वि० [सं०] १. सीसे का बना हुआ। २. सीसा संबंधी।

सैसक—वि० [सं०] [स्त्री० सैसकी] दे० 'सैस'।

सैसवⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शैशव] दे० 'शैशव'। उ०—पत्त पुरातन झरिग पत्त अंकुरिय उट्ठ तुछ। ज्यौ सैसव उत्तरिय चढिय वैसव किसोर कुछ।—पृ० रा०, २५।८६।

सैसवताⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सैसव + ता (प्रत्य०)] दे० 'शैशव'। उ०—सैसवता में हे सखी जोबन कियो प्रवेस। कहौं कहाँ छबि रूप की नखशिख अंग सुदेस।—(शब्द०)।

सैसाजलⓅ‡—संज्ञा पुं० [सं० शेष] लक्ष्मण। उ०—सैसाजल हणमंत जिमि ही सरसाई। वीराँ अवरोधी कीधी बड़ाई।—रघु० रू०, पृ० २४४।

सैसिकत—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत में वर्णित एक प्राचीन जनपद।

सैसिरध्र—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'सैसिकत'।

सैह—वि० [फ़ा०] तीन।

सैहचरीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सहचरी] दे० 'सहचरी'। उ०—कहि उपदेस सैहचरी मोसों, कहाँ जाँउ कहाँ पाऊँ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० २३६।

सैहजⓅ†—वि० [सं० सहज] दे० 'सहज'। उ०—सैहज सिंघासन बैठे स्वामी, आगैं सेव करै गुलामी।—रामानंद०, पृ० ५३।

सैहजानंदⓅ†—संज्ञा पुं० [सं० सहज + आनन्द] दे० 'सहजानंद'। उ०—ब्रह्मानंद ममता टरी सदगुरु सैहजानंद सों।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४२९।

सैहतⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सहित] दे० 'सहित'। उ०—सील भाव छम्या उर धारै। धीरज सैहत दया व्रत पारै।—रामानंद०, पृ० ५३।

सैहथी—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति, प्रा० सत्ति अथवा सं० सहस्र, प्रा० सहत्थ] शक्ति। बरछी। साँग। उ०—(क) ब्रह्ममंत्र पढ़ि सैहथी रावण कर चमकाय। काल जलद में बीजुरी जनु प्रगटी है आय।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। (ख) कह्यो लंकपति मारों तोहीं। दीन्हीं कपट सैहथी मोहीं।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। (ग) आपुस माँझ इसारत कीनी। कर उलछारि सैहथी लीनी।—लाल कवि (शब्द०)।

सैहा†—संज्ञा पुं० [सं० सेक या सेचन (=सिंचाई) + हिं० हा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० सैही] पानी, रस आदि ढालने का मिट्टी का बरतन।

सैही†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सैहा] छोटा सैहा।

सैहैर‡—संज्ञा पुं० [फ़ा० शहर] दे० शहर। उ०—दिसि पस्चम गुज्जर सुधर, सैहैर अहमदाबाद।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ४२१।

सोंⓅ‡[1]—प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] करण और अपादान कारक का चिह्न। द्वारा। उ०—(क) विद्यापति मन उगना सों काज नहिं हितकर मोर त्रिभुवन राज।—विद्यापति, पृ०, ५१४। (ख) बार बार करतल कहँ मलिके। निज कर पीठ रदन सों दलिकै।—गोपाल (शब्द०)। (ग) गिरत सिंदूर मतवारिन की माँगन सों, चहुँ ओर फैलि रही जासु अरुनाई है।—बालमुकुंद गुप्त (शब्द०)।

सोंⓅ‡[2]—वि० [सं० सम] तुल्य। समान। दे० 'सा'। उ०—तीर सों धीर समीर लगे पद्माकर बूझि हू बोलत नाहीं।—पद्माकर (शब्द०)।

सोंⓅ[3]—अव्य० [हिं० सौंह] दे० 'सौं'। उ०—मथुरा मैं भैम बढ़े राम। श्याम बल पाय, मारचो कंस राय करे करम अलीके सों। ता

को बैर लैंहों मारि सत्रुन नसैहौं महि, जामे फरैं पापिन के मुख फेरि फीके सों। धनी धरनी के नीके ग्रापुनी ग्रनी के संग ग्रावें जर जी के मोन जी के गरजी के सों।—गोपाल (शब्द०)।

सौं(पु)[४]—क्रि० वि० [सं० सह] संग। साथ। उ०—मन हरि सों तनु घर हि चलावति। ज्यों गजमत्त जाल ग्रंकुश कर गुरुजन सुधि ग्रावति।—सूर (शब्द०)।

सौं(पु)[५]—सर्व० [सं० सः] दे० 'सो'। उ०—राज समाज खबर सों बरनी। ग्रागे नृपदल सों भरि भरनी।—गोपाल (शब्द०)।

सौं(पु)[६]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'। उ०—बात सुने ते बहुत हँसोगे चरण कमल की सों। मेरी देह छुटत यम पठए जितक दूत घर मों।—सूर (शब्द०)।

सौंइटा‡—संज्ञा पुं० [हिं० सटना ?] चिमटा। दस्तपनाह।

सौंच—संज्ञा पुं० [हिं० सोच] दे० 'सोच'। उ०—...इधर उधर से सोंच साँच कहीं से जवाब के बदले कुछ कह देना।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २४।

सौंचर नमक—संज्ञा पुं० [सं० सौवर्चल + फ़ा० नमक] एक प्रकार का नमक। काला नमक।

विशेष—यह मामूली नमक तथा हड़, बहेड़े ग्रौर सज्जी के संयोग से बनाया जाता है। वैद्यक में यह उष्णवीर्य, कटु, रोचक, भेदक, दीपक, पाचक, स्नेहयुक्त, वातनाशक, ग्रत्यंत पित्तजनक, विशद हलका, डकार को शुद्ध करनेवाला, सूक्ष्म तथा विबंध, ग्रानाह तथा शूल का नाश करनेवाला माना गया है।

पर्या०—ग्रक्ष। सौवर्चल। रुच्य। दुर्गंध। शूलनाशन। रुचक। कृष्णलवण, ग्रादि।

सौंज†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंज] दे० 'सौंज'। उ०—सब सोंज रूपचंद नंदा के ही घर लै ग्राए।—दो सौ बावन०, भा०, पृ० १९३।

सौंझ†—संज्ञा स्त्री० [सं० सार्द्ध] ग्राधा साझा। साझेदारी।

सौंझा†—वि० [सं० शुद्ध, सुज्झ, हिं० सोझ] सीधा।

सौंट†—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सोंटा'।

सौंटा[१]—संज्ञा पुं० [सं० शुण्ड या सुवृत्त>सुवट्ट>सुग्रट; हिं० सटना] मोटी लंबी सीधी लकड़ी या बाँस जिसे हाथ में ले सकें। मोटी छड़ी। डंडा। लाठी। लट्ठ। उ०—मार मार सोंटन प्रान निकासत।—कबीर श०, पृ० १९।

क्रि० प्र०—चलाना।—जमाना।—बाँधना।—मारना। उ०—वहाँ से ग्राज्ञा हुई कि ऐ मूसा तू नदी में सोंटा मार तब मूसा ने सोंटा मारा।—कबीर ग्रं०, पृ० ५४।

मुहा०—सोंटा चलना = सोंटे से मार पीट होना। सोंटा चलाना = सोंटे से प्रहार करना। सोंटा जमाना = दे० 'सोंटा चलाना'।

सौंटा[२]—संज्ञा पुं० १. भंग घोटने का मोटा डंडा। भंगघोटना। उ०—तन कर कूँड़ी मन कर सोंटा प्रेम की भँगिया रगरि पियावै।—कबीर (शब्द०)। २. लोबिया का पौधा। रदास। ३. मस्तूल बनाने लायक लकड़ी।

सौंटाबरदार—संज्ञा पुं० [हिं० सोंटा + फ़ा० बरदार] सोंटा या ग्रासा लेकर किसी राजा या ग्रमीर की सवारी के साथ चलनेवाला। ग्रासाबरदार। बल्लमदार।

सौंटिग्रा(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सोंटा + इया (प्रत्य०)] दे० सोंटिया'। उ०—चहुँदिसि ग्रावि सोंटि ग्रन्हि फेरी। भै कटकाई राजा केरी।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० २०६।

सौंठ—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ठी] १. सुखाया हुग्रा ग्रदरक। शुंठि। शुंठी।

विशेष—वैद्यक के ग्रनुसार सोंठ रुचिकर, पाचक, हलकी, स्निग्ध, उष्णवीर्य, पाक में मधुर, वीर्यवर्धक, सारक, कफ, वात, विबंध, हृद्रोग, श्लीपद, शोक, बवासीर, ग्रफारा, उदर रोग तथा वात रोग का नाशक है।

२. शुष्क। खुक्ख। खोखला। निर्धन या कंजूस। (लाक्ष०)। उ०—जान पड़ता है ससुरालवाले पूरे सोंठ हैं।—शराबी, पृ० १९५।

सौंठमिट्टी—संज्ञा स्त्री० [सोंठ ? + हिं० मिट्टी] एक प्रकार की पीले रंग की मिट्टी जो ताल या धान के खेत में पाई जाती है। यह काबिस बनाने के काम में ग्राती है।

सौंठराय—संज्ञा पुं० [हिं० सोंठ + राय (= राजा)] कंजूसों का सरदार। भारी मक्खीचूस। (व्यंग्य)।

सौंठौरा†—संज्ञा पुं० [हिं० सोंठ + ग्रौरा (प्रत्य०)] शर्करा या गुड़, हरिद्रा ग्रादि से युक्त एक प्रकार का सूजी का लड्डू जिसमें मेवों के सिवा सोंठ भी पड़ती है। यह लड्डू प्रायः प्रसूता स्त्री को खिलाया जाता है।

सौंड़‡—संज्ञा पुं० [सं० शुण्ड, प्रा० सुंड] दे० 'सूंड'। उ०—करे गजेंद्र सोंड की चोट। नामा उभरे हर की ग्रोट।—दक्खिनी०, पृ० २०।

सौंड़कहा—संज्ञा पुं० [देश०] घी। घृत। (सुनार)।

सौंध(पु)—क्रि० वि० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'।

सौंध(पु)[२]—संज्ञा पुं० [डिं० सौध] महल। ग्रटारी। उ०—यह श्यामा है कौन की छविधामा मुसकाय। सोंध यहि कोंध सी चोंध गई चख छाय।—शृंगार सतसई (शब्द०)।

सौंध†[३]—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सुगन्ध, हिं० सौंधा] सुगंधयुक्त। दे० 'सोंधा'।

सौंधा[१]—वि० [सं० सुगन्ध] [वि० स्त्री० सोंधी] १. सुगंधयुक्त। सुगंधित। खुशबूदार। महकनेवाला। उ०—(क) सोंधे समीरन को सरदार मलिंदन को मनसा फलदायक। किंसुक जालन को कलपद्रुम मानिनी बालक हूँ को मनायक।—रस कुसुमाकर (शब्द०)। (ख) सहर सहर सोंधी सीतल समीर डोलै घहर घहर घन घोरि कै घहरिया।—देव (शब्द०)। (ग) सोंधे कैसी सोंधी देह सुधा सो सुधारी, पाउँधारी देवलोक तें कि सिंधु ते उधारी सी।—केशव (शब्द०)। २. मिट्टी के नए बरतन या सूखी जमीन पर पानी पड़ने या चना, बेसन ग्रादि भुनने से निकलनेवाली सुगंध के समान। जैसे,—सोंधी मिट्टी, सोंधा चना।

सौंधा[२]—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सुगंधित मसाला जिससे स्त्रियाँ केश धोती हैं। उ०—(क) आइ हुती अन्हवावन नाइनि सोँधो लिए कर सूधे सुभाइनि। कंचुकि छोरि उतै उपटैबे को ईंगुर से अँग की सुखदाइनि। (ख) सोँधे की सुबास आस पास भरि भवन रह्यो भरत उसास बास बासन बसात है।—देव (शब्द०)। (ग) देखी है गुपाल एक गोपिका मैं देवता सी सोनो सो सरीर सब सोँधे की सी बास है।—केशव (शब्द०)। २. इत्र। फुलेल। अतर। उ०—लेइ के फूल बैठि फुलहारी। पान अपूरब धरे सँवारी। सोँधा सबै बैठले गाँधी। फूल कपूर खिरौरी बाँधी।—जायसी (शब्द०)। ३. एक प्रकार का सुगंधित मसाला जो बंगाल में स्त्रियाँ नारियल के तेल में उसे सुगंधित करने के लिये मिलाती हैं।

सौंधा[३]—संज्ञा पुं० सुगंध। महक। खुशबू। उ०—(क) सूरदास प्रभु की बानक देखे गोपी ग्वाल टारे न टरत निपट आवै सोँधे की लपट।—सूरदास (शब्द०)। (ख) गढ़ी सो सोने सोँधै भरी सो रूपै भाग। सुनत रूखि भइ रानी हिये लोन आस आग।—जायसी (शब्द०)।

सौंधिया—संज्ञा पुं० [हिं० सोँधा (=सुगंध) + इया (प्रत्य०)] सुगंध तृण। रोहिष तृण। गंधेज घास।

सौंधी—संज्ञा पुं० [हिं० सोँधा] एक प्रकार का बढ़िया धान जो दलदली जमीन में होता है।

सौंधुⓤ—वि० [हिं० सोँधा] उ०—सोँधु सुरद्रुम विद्रुम बिंदुलै फलौ दल फूलन दारचो दरे रे।—देव (शब्द०)।

सौंपना—क्रि० स० [हिं० सौँपना] समर्पण करना। सौंपना। उ०—(क) राम को राज्य लक्ष्मी सोँपो।—लक्ष्मण सिंह (शब्द०)। (ख) तुम यह हुंडी चाँपाभाई भंडारी कों सोँपि आओ।—दो सौ बावन०, भा०, पृ० २०२।

सौंवन†—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण] सोना। स्वर्ण। हेम।

सौंवनिया—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण; प्रा० सुवण्ण, सोवण्ण + हिं० इया (प्रत्य०)] एक प्रकार का आभूषण जो नाक में पहना जाता है। उ०—पहुँची करनी पदिक उर हरिनख कँठुला कंठ मंजु गजमनिया। रुचि रुचि शुक द्विज अधर नासिका सुंदर राजत सोँवतिया।—सूर (शब्द०)।

सौंहⓤ†[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौँह] दे० 'सौँह'। उ०—प्यारे को प्यार परोसिनी सो है कह्यो तुम सो तब साचु न लेखौ। मोही को भूठी कहौ भगरौ करि सोँह करौं तब औरऊ तेखौ।—काव्य कलाधर (शब्द०)।

सौंह[२]—अव्य० दे० 'सौँह'। उ०—बाउर अंध प्रेम कर लागू। सोँह धसा कछु सूझ न आगू।—जायसी (शब्द०)।

सौंहट†—वि० [सं० सुघट, प्रा० सुहट ?] सीधा सादा। सरल।

सौंहनाⓤ†—वि० [सं० शोभन, प्रा० सोहण] सुंदर। सुहावना। उ०—सखि सोभित मदन गुपाल कटि बाँधै पट सोँहनौ।—नंद० ग्रं०, पृ० ३८४।

सौंहनीⓤ†—वि० स्त्री० [सं० शोभनीय] शोभनीय। शोभन। उ०—इहि कन्या मैं स्याम कों, माँगौं गोद पसारि, कि जोरी सोँहनी।—नंद० ग्रं०, पृ० १९४।

सौंहीं—अव्य० [हिं०] दे० 'सौँह'। उ०—(क) आज रिसोँहीं न सोँहीं चितौति कितौ न सखी प्रति प्रीति बढ़ावै।—देव (शब्द०)। (ख) इतने में सोँही आ एक बोली ब्रजनारी।—लल्लू (शब्द०)।

सो[१]—सर्व० [सं० सः] वह। उ०—(क) ब्याही सो सुजान शील रूप वसुदेव जू कौं बिदित जहान जाकी अतिहि बड़ाई है।—गोपाल (शब्द०)। (ख) सो मो सन कहि जात न कैसे। साक बनिक मनि गन गुन जैसे।—तुलसी (शब्द०)। (ग) अरे दया मैं जो मजा सो जुलमन मैं नाह।—रसलीन (शब्द०)।

सो[२]—वि० [हिं०] दे० 'सा'। उ०—(क) विधि हरि हर मय वेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नासिका सरोज गंधवाह से सुगंधवाह, दारचों से दशन कैसो बीजुरी सो हास है।—केशव (शब्द०)।

सो[३]—अव्य० अतः। इसलिये। निदान। जैसे,—पराधीनता सब दुःखों का कारण है; सो, भाइयो, इससे मुक्त होने के उद्योग में लगे रहिए। उ०—सो जब हम तुम सों मिले जुद्ध। नव अंग लहहु खै समर सुद्ध।—गोपाल (शब्द०)।

सो[४]—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती का एक नाम।

सोⓤ†[५]—संज्ञा पुं० [सं० शत, प्रा० सय, सउ] दे० 'सौ'। उ०—सो बरस अट्ठ तप राज कीन। आनंद मेव सिर छत्र दीन।—पृ० रा०, १। पृ० १२।

सोऽहम्—पद [सं० सः + अहम्] वही मैं हूँ—अर्थात् मैं ब्रह्म हूँ।

विशेष—वेदांत का सिद्धांत है कि जीव और ब्रह्म एक ही हैं; दोनों में कोई अंतर नहीं है। जीव और कुछ नहीं, ब्रह्म ही है। इसी सिद्धांत का प्रतिपादन करने के लिये वेदांती लोग कहा करते हैं—सोऽहम्; अर्थात् मैं वही ब्रह्म हूँ। उपनिषदों में भी यह बात 'अहं ब्रह्मास्मि' और 'तत्त्वमसि' रूप में कही गई है।

सोऽहमस्मि—पद [सं० सः + अहम् + अस्मि] वही मैं हूँ—अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूँ। विशेष दे० 'सोऽहम्'।

सोअनाⓤ—क्रि० अ० [सं० स्वपन] दे० 'सोना'। उ०—(क) गोरे गात कपोल पर अलक अडोल सोहाय। सोअति है साँपिनि मनो पंकज पात बिछाय।—मुबारक (शब्द०)। (ख) सुक्लजीत जहाँ बसत जे जागत सोअत रामै राम बके।—देवस्वामी (शब्द०)।

सोअर‡—संज्ञा स्त्री० [सं० सूतिगृह] दे० 'सौरी'।

सोआ—संज्ञा पुं० [सं० मिश्रेया] एक प्रकार का साग।

विशेष—इसका क्षुप १ से ३ फुट तक ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ बहुत सूक्ष्म और फूल पीले होते हैं। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कड़वा, हलका, पित्तजनक, अग्निदीपक, गरम, मेधाजनक, वस्तिकर्म में प्रशस्त तथा कफ, वात, ज्वर, शूल, योनिशूल, आध्मान, नेत्ररोग, व्रण और कृमि का नाशक है।

पर्या०—शताह्वा। शतपुष्पा। शताक्षी। शतपुष्पिका। कारवी। तालपर्णी। माधवी। शोफका। मिसी।

सोइⓅ—सर्व० [हिं० सैव] वही । वह ही । उ०—(क) मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोइ । जा तन की झाइँ परे स्याम हरित दुति होइ ।—बिहारी (शब्द०) । (ख) सातों द्वीप कहे शुक मुनि ने सोइ कहत अब सूर ।—सूर (शब्द०) । (ग) सोइ रघुवर सोइ लछिमन सीता । देखि सती अति भई सभीता ।—तुलसी (शब्द०) ।

सोई[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० स्रोत, स्रोतिका, हिं० सोता] वह जमीन या गड्ढा जहाँ बाढ़ या नदी का पानी रुका रह जाता है और जिसमें अगहनी धान की फसल रोपी जाती है । डाबर ।

सोई[2]—सर्व० [सं० सैव] दे० 'वही' । उ०—बहुरि आइ देखा सुत सोई । हृदय कंप मन धीर न होई ।—मानस, १।२०१ ।

सोई[3]—अव्य० [हिं०] दे० 'सो' । उ०—सोई मैं स्वशुरालय जाती थी ।—प्रताप (शब्द०) ।

सोक[1]—संज्ञा पुं० [देश०] चारपाई बुनने के समय बुनावट में का वह छेद जिसमें से रस्सी या निवार निकाल कर कसते हैं ।

सोक[2]—संज्ञा पुं० [सं० शोक, प्रा० सोक] दे० 'शोक' । उ०—समन पाप संताप सोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के ।—तुलसी (शब्द०) ।

सोकड़लीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [देश०] दे० 'सौत' । उ०—सोकड़ल्याँ चख माँहि करै कड़वाइयाँ ।—बाँकी० ग्रं०, भा० ३, पृ० ३१ ।

सोकन—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सोखन' ।

सोकना[1]Ⓟ—क्रि० स० [सं० शोक प्रा० सोक + हिं० ना (प्रत्य०)] शोक करना । दुःख करना । रंज करना । उ०—तुव पन पालि विपिन करि दैहौं । पुनि तुव पद पंकज सिर नैहौं । यों सुनि नृपति मनहिं मन सोक्यौ । पुनि पुनि रामवदन अवलोक्यौ ।—पद्माकर (शब्द०) ।

सोकना[2]—क्रि० स० [सं० शोषण] दे० 'सोखना' । उ०—(क) आठ मास जो सूर्य जल सोकता है, सोई चार महीने बरसता है ।—लल्लू० (शब्द०) । (ख) बुंद सोकिगो कुहा महासमुद्र छीजई ।—केशव (शब्द०) ।

सोकनी†—वि० [हिं० सोकन] कालापन लिए सफेद रंग का (बैल) ।

सोकरहा†—संज्ञा पुं० [हिं० सोकार] वह आदमी जो कूएँ पर खड़ा होकर पानी से भरे हुए चरसे या मोट को नाली में उलटकर खाली करता है । बारा ।

सोकार†—संज्ञा पुं० [हिं० सोकना, सोखना] वह स्थान जहाँ खेत सींचनेवाले कूएँ से मोट निकालकर गिराते हैं । सिंचाई के लिये पानी गिराने की कूएँ पर की नाली । छिउलारा । चौंढ़ा ।

सोकितⓅ—वि० [सं० शोकित] शोकयुक्त । उ०—मूँहि स्वारथ ढीठ बनायो तुमकों जब सोकित देख्यो ।—प्रताप (शब्द०) ।

सोक्कन—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सोखन' ।

सोखⓅ†[1]—वि० [फ़ा० शोख़] दे० 'शोख' ।

सोख[2]—वि० [सं० शुष्क, प्रा० सुक्क] शुष्क करनेवाला या सुखानेवाला । जैसे—स्याही सोख ।

सोखकⓅ—वि० [सं० शोषक] १. शोषण करनेवाला । २. नाश करनेवाला । उ०—चाल चलि चंद्रमुखी साँवरे सखा पै बेगि, सोखक जु केसोदास अरि सुख साज के । चढ़ि चढ़ि पवन तुरंगन गगन घन, चाहत फिरत चंद योधा यमराज के ।—केशव (शब्द०) ।

सोखता—वि० [फ़ा० सोख़्ता] दे० 'सोख्ता' । उ०—मैं सुहृदा तन सोखता विरहा दुख जारै । जिय तरसै दीदार को दादू न बिसारै ।—दादू० बनी, पृ० ५०४ ।

सोखता[2]—संज्ञा पुं० दे० 'सोख्ता' ।

सोखन[1]—संज्ञा पुं० [देश०] १. स्याही लिए सफेद रंग का बैल । २. एक प्रकार का जंगली धान जो नदी की घाटी में बलुई जमीन में बोया जाता है ।

सोखनⓅ[2]—संज्ञा पुं० [सं० शोषण] काम का एक वाण । दे० 'शोषण' । उ०—सोखन दहन उचाटन छोभन । तिन मैं निपट बुरो संमोहन ।—नंद० ग्रं०, पृ० १४० ।

सोखना—क्रि० स० [सं० शोषण] १. शोषण करना । रस खींच लेना । चूस लेना । सुखा डालना । उ०—(क) यह मिट्टी......पानी को खूब सोखती है ।—खेतीविद्या (शब्द०) । (ख) सेर भर चावल सेर ही भर घी सोखता है ।—शिवप्रसाद (शब्द०) । (ग) उदित अगस्त पंथजल सोखा । जिमि लोभहिं सोखइ संतोषा ।—तुलसी (शब्द०) । (घ) उतै रुखाई है घनी थोरो मो पै नेह । जाही अंग लगाइए सोई सोखै लेह ।—रसनिधि (शब्द०) । (ङ) वाही हाथ कुच गहि पूतना के प्राण सोखे पाय ऊँचो पद निज धाम को सिधारी है ।—ब्रजचरित्र०, पृ० १३ । २. पीना । पान करना । (व्यंग्य) ।

संयो० क्रि०—जाना ।—डालना ।—लेना ।

सोखरी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोखना या सुखाना या सं० शुष्कफली] पेड़ का सूखा हुआ महुआ ।

सोखा†—संज्ञा पुं० [सं० सूक्ष्म या चोखा ?] १. चतुर मनुष्य । होशियार आदमी । २. जादूगर । ३. झाड़ फूक, जंतर मंतर करनेवाला व्यक्ति ।

सोखाई[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोखा + ई (प्रत्य०)] जादू । टोना ।

सोखाई[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोखना] १. सोखने की क्रिया या भाव । २. सोखने या सोखाने की मजदूरी ।

सोखाना†—क्रि० स० [हिं० सुखाना] दे० 'सुखाना' ।

सोखावनाⓅ†—क्रि० स० [हिं० सुखाना] दे० 'सुखाना' । उ०—मधवानल वहि अगिन समानी । अगिन अगस्त सोखावत पानी ।—हिंदी प्रेमा०, पृ० २७५ ।

सोखीन†—वि० [अ० शौक़, शौक़ीन] दे० 'शौकीन' । उ०—घर बर अमल सब जने खावे सोखीन माही उतर ज्यावे ।—दक्खिनी०, पृ० १२४ ।

सोख्त—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सोख़्त] जलन । दाह [को०] ।

सोख्तनी—वि० [फ़ा० सोख़्तनी] दाह या जलन योग्य । जलनशील । जलाने लायक [को०] ।

सोख्ता¹—संज्ञा पुं० [फ़ा० सोख्तह्] १. जला हुआ कोयला। २. एक प्रकार का मोटा खुरदुरा कागज जो स्याही सोख लेता है। स्याही सोख। स्याही चट। (अं० ब्लाटिंग पेपर)]। ३. बारूद से संपृक्त या रंजित वस्त्र जो शीघ्र जल उठता है (को०)।

सोख्ता²—वि० १. जला हुआ। २. विषादयुक्त। खिन्नमनस्क [को०]। ३. प्यार करनेवाला। प्रेमी (को०)।

सोगंद—संज्ञा स्त्री० [सं० सौगन्ध, हिं० सौगंद] दे० 'सौगंद'।

सोगⓅ—संज्ञा पुं० [सं० शोक, प्रा० सोक, सोग] शोक। दुःख। रंज। उ०—(क) जाके बल गरजे महि काँपे। रोग सोग जाके सिमाँ न चाँपे — रामानंद०, पृ० ७। (ख) निसि दिन राम राम की भक्ति, भय रुज नहिं दुख सोग।—सूर (शब्द०)। (ग) चित पितु घातक जोग लखि भयौ भएँ सुत सोग। फिर हुलस्यौ जिय जोयसी समुझ्यो जारज जोग।—बिहारी (शब्द०)।

मुहा०—सोग मनाना = किसी प्रिय या संबंधी के मर जाने पर शोकसूचक चिह्न धारण करना और किसी प्रकार के उत्सव या मनोविनोद आदि में संमिलित न होना।

सोगन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौगंद] सौगंद। कसम। (डिं०)। उ०—(क) नयणाँरा सोगन करै, भै मानै सुण भूत। रामत दूलां री रमै रांडूला री पूत।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० १३। (ख) लेखण तोला ताकड़ी, सोगन नै जीकार।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ६६।

सोगिनीⓅ—वि० स्त्री० [हिं० सोग + इनी (प्रत्य०)] शोक करनेवाली। शोकार्ता। शोकाकुला। शोकमग्ना। उ०—मुख कहत आजु बधि धृष्ट अरि तरपहुँ चौंसठ जोगिनी। बिललात फिरैं बन पात प्रति मगध सुंदरी सोगनी।—गोपाल (शब्द०)।

सोगी—वि० [सं० शोकिन्, हिं० सोग] [स्त्री० सोगिनी] १. शोक मनानेवाला। शोकार्त। शोकाकुल। दुःखित। २. सोच विचार करता हुआ। चिंतित। उदास।

सोच¹—संज्ञा पुं० [सं० शोच] १. सोचने की क्रिया या भाव। जैसे,—तुम अच्छी तरह सोच लो कि तुम्हारे इस काम का क्या फल होगा।

यौ०—सोचसमझ। सोचविचार। सोचसाच = दे० 'सोचविचार'। उ०—हमें भी बहुत सोच साच के धन्यवाद देना पड़ा।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २३।

२. चिंता। फिक्र। जैसे,—(क) तुम सोच मत करो, ईश्वर भला करेंगे। (ख) तुम किस सोच में बैठे हो? उ०—(क) चल्यो अनखाइ समझाइ हारे बातनि सों, 'मन! तू समझ, कहा कीजै? सोच भारी है!'—भक्तमाल (प्रिया०), पृ० ५०५। (ख) नारि तजी सुत सोच तज्यो तब।—केशव (शब्द०)। ३. शोक। दुःख। रंज। अफसोस। उ०—(क) तुलसी के दुहूँ हाथ मोदक हैं, ऐसी ठाउँ जाके मुए जिए सोच करिहैं न लरिको।—तुलसी (शब्द०)। (ख) नेह कै मोंहि बुलायो इतै अब बोरंत मेह महीतल को है। आई मझार महावत मै तन मैं श्रम सीकर की झलको है। न मिले अब नौल किसोर पिया हियो बेनी प्रवीन कहै कलको है। सोच नहीं धन पावन को सखि सोच यहै उनके छल को है।—बेनी प्रवीन (शब्द०)। ४. पछतावा। पश्चात्ताप। उ—देखिकै उमा कौं रुद्र लज्जित भए, कह्यो मैं कौन यह काम कीनो। इंद्रिजित हौं कहावत हुतो आपु कौं, समुझि मन माहिं ह्वै रह्यो खीनो। चतुरभुज रूप धरि आइ दरसन दियौ कह्यौ शिव सोच दीजै बिहाई।—सूर०, ७।२०।

सोचकⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सौचिक] दरजी। (डिं०)। उ०—गुरु गीत बाद बाजित्र नृत्य। सोचक सु वाच्य सविचार कृत्य। मनि मंत्र जंत्र बास्तुक विनोद। नैपथ विलास सुनि तत्त मोद।—पृ० रा०, १।७३२।

सोचना—क्रि० अ० [सं० शोचन, शोचना (= दुख, शोक, अनुताप)] १. किसी प्रकार का निर्णय करके परिणाम निकालने या भवितव्य को जानने के लिये बुद्धि का उपयोग करना। मन में किसी बात पर विचार करना। गौर करना। जैसे,—(क) मैं यह सोचता हूँ कि तुम्हारा भविष्य क्या होगा। (ख) कोई बात कहने से पहले सोच लिया करो कि वह कहने लायक है या नहीं। (ग) इस बात का उत्तर मैं सोचकर दूँगा। (घ) तुम तो सोचते सोचते सारा समय बिता दोगे। उ०—सोचत है मन ही मन मैं अब कीजै कहा बतियाँ जगछाई। नीचो भयो ब्रज को सब सीस मलीन भई रसखानि दुहाई।—रसखान (शब्द०)। २. चिंता करना। फिक्र करना। उ०—(क) अब हरि आइहैं जिन सोचै। सुन विधुमुखी बारि नयनन ते अब तू काहे मोचै।—सूर (शब्द०)। (ख) कौनहुँ हेतन आइयो प्रीतम जाके धाम। ताको सोचति सोच हिय केशव उक्ताधाम।—केशव (शब्द०) ३. खेद करना। दुःख करना। उ०—माथे हाथ मूँदि दोउ लोचन। तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन।—तुलसी (शब्द०)।

सोचविचार—संज्ञा पुं० [हिं० सोच + सं० विचार] समझबूझ। गौर। जैसे,—(क) सोचविचार कर काम करो। (ख) अच्छी तरह सोचविचार लो।

सोचाना—क्रि० स० [हिं० सोचना] दे० 'सूचाना'। उ०—सुदिन सुनखत सुधरी सोचाई। बेगि बेदविधि लगन धराई।—तुलसी (शब्द०)।

सोचुⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० सोच] दे० 'सोच'। उ०—सती सभीत महेस पहिं चली हृदय बड़ सोचु।—तुलसी (शब्द०)।

सोच्छ्वास¹—वि० [सं०] १. प्रसन्न। खुश। २. उच्छ्वासयुक्त। जोरों से साँस लेता हुआ। ३. शिथिल। सुस्त। ढीला [को०]।

सोच्छ्वास²—क्रि० वि० आराम। प्रसन्नतापूर्वक [को०]।

सोछⓅ—क्रि० बि० [सं० स्वच्छ प्रा० सुच्छ] साफ साफ। सुस्पष्ट स्वच्छ। उ०—ऐसा इष्ट सँभारिये चरनदास कहि सोछ।—चरण० बानी, पृ० ४६।

सोज¹—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूजना] १. सूजने की क्रिया, भाव या अवस्था। सूजन। शोथ। २. दे० 'सौंज'। उ०—तुलसी

समिध सोज लंक जग्यकुंड लखि जातधान पुंग फल जव तिल धान हैं।—तुलसी (शब्द०)।

सोज²—संज्ञा पुं० [फ़ा० सोज़] १. जलन। ज्वाला। उ०—अगन कूँ दिया सोज सो रोशनी। जमीन कूँ दिया खिलअत गुलशनी।—दक्खिनी, पृ० ११७। २. बेदना। मनस्ताप। पीड़ा [को०]।

सोजन¹—संज्ञा पुं० [फ़ा० सोज़न] १. सूई। उ०—अरे निरदई मालिया कहुँ जताय यह बात। केहि हित सुमनन तोरि तैं छेदत सोजन गात।—रसनिधि (शब्द०)। २. कंटक। काँटा। (लश०)।

सोजन²—संज्ञा पुं० [फ़ा० सोजनी] बिछाने का बिस्तर। उ०—भाई साहेब, अपने तो ऊ पंछी काम का जे भोजन सोजन दूनो दे।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ३२८।

सोजनकारी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सोजनकारी] सूई का काम। सूईकारी। उ०—लहँगे के खूब दाब देकर सिए पल्लों पर फूलों और पक्षियों की सोजनकारी की हुई थी।—जनानी०, पृ० ३।

सोजनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सोज़नी] दे० 'सुजनी'।

सोजाँ—वि० [फ़ा० सोज़ाँ] १. ज्वलनशील। दाहक। २. पीड़ादायक। दुःखद [को०]।

सोजाक—संज्ञा पुं० [फ़ा० सूज़ाक] दे० 'सूजाक'।

सोजिश—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सोजिश] १. सूजन। फुलाव। शोथ। २. दे० 'सोज²'।

सोझⓅ—वि०, क्रि० वि० [हिं० सोझा] १. दे० 'सोझा'। उ०—(क) काहु ओ वहल भार बोझ, काहु वाट कहल सोझ।—कीर्ति०, पृ० २४। (ख) कहै कबीर नर चलै न सोझ। भटकि मुए जस बन के रोझ।—कबीर (शब्द०)। २. ठीक सामने की ओर गया हुआ। सीधा। उ०—सोझ बान अस आवहिं राजा। बासुकि डरै सीस जनु बाजा।—जायसी (शब्द०)।

सोझनाⓅ†—क्रि० स० [सं० शोधन] शोधना। खोजना। उ०—(क) बारइ बहतई आपणइँ। कुँवर परणावौ, सोझउ वींद।—वी० रासो, पृ० ६। (ख) अवधेसरा में सुभट आया सोझवा सीता।—रघु० रू०, पृ० १६१।

सोझा¹—वि० [सं० सम्मुख, म०प्रा० समुज्झ?; अथवा सं० शुद्ध, प्रा० सुद्ध, सुज्झ] [वि० स्त्री० सोझी] १. सीधा। सरल। उ०—(क) दादू सोझा राम रस अम्रित काया कूल।—दादू (शब्द०)। (ख) है वहँ डोर सुरति कर सोझी गुरु के शब्द चढ़ि जइए हो।—धरम० श०, पृ० ११। २. ठीक सामने की ओर गया हुआ। दे० 'सोझ'—२।

सोझा²—संज्ञा स्त्री० [सं० शोध (=अन्वेषण), शुद्ध, प्रा० सुज्झ] सुधि। शोध। स्मृति। स्मरण। याद। उ०—ईत ऊत की सोझो परै। कौन कर्म मेरा करि करि मरै।—कबीर ग्रं०, पृ० ३२७।

सोझोत्र†—संज्ञा पुं० [सं० सोढव्य (=सहनशील)] जवान बछड़ा।

सोटा¹—संज्ञा पुं० [सं० शुण्ड] दे० 'सोँटा'।

सोटा²—संज्ञा पुं० [हिं० सुअटा] दे० 'सुअटा'। उ०—लै सँदेस सोटा गा तहाँ। सूली देहि रतन को जहाँ।—जायसी (शब्द०)।

सोठ—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ठि] दे० 'सोँठ'।

सोठ मिट्टी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोठ+मिट्टी] दे० 'सोँठ मिट्टी'।

सोडा—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का क्षार पदार्थ जो सज्जी को रासायनिक क्रिया से साफ करके बनाया जाता है।

विशेष—इसके कई भेद हैं। जिसे लोग सिर धोने के काम में लाते हैं, उसे अँगरेजी में 'सोडा क्रिस्टल' कहते हैं। यह सज्जी को उबालकर बनाते हैं। ठंढा होने पर साफ सोडा नीचे बैठ जाता है। जो सोडा साबुन, कागज, काँच आदि बनाने के काम में आता है, उसे 'सोडा कास्टिक' कहते हैं। यह चूने और सज्जी के संयोग से बनता है। दोनों को पानी में घोल और उबालकर पानी उड़ा देते हैं। इसी प्रकार 'बाइकारबोनेट आफ सोडियम' भी साबुन, काँच आदि बनाने के काम में आता है। यह नमक को अमोनिया में घोलकर कारबोनिक गैस की भाप का तरारा देने से निकलता है। इसे एकत्र करके तपाने से पानी और कारबोनिक गैस उड़ जाता है। जो सोडा खाने के काम में आता है, उसे 'बाइकारबोनेट आफ सोडा' कहते हैं। यह सोडे पर कारबोनिक गैस का तरारा देने से बनता है।

सोडावाटर—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का पाचक पानी जो प्रायः मामूली पानी में कारबोनिक एसिड का संयोग करके बनाते हैं और बोतल में हवा के जोर से बंद करके रखते हैं। विलायती पानी। खारा पानी।

सोढ—वि० [सं०] १. सहनशील। सहिष्णु। २. जो सहन किया गया हो। ३. Ⓟ समर्थ। शक्तिमान्। उ०—सोढ हुओ तूं भाँण सुत रावाँ सिरहर राव।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ८३।

सोढर—वि० [देश०] भोंदू। बेवकूफ। उ०—(क) गदहों में हम सोढर गदहा हैं।—बालकृष्ण भट्ट (शब्द०)। (ख) भगति सुतिय के हाथ सुमिरिनी सोहत टोडर। सोढर खोडर बूढ़ ऊढ़ द्विज खोँडर ओडर।—सुधाकर (शब्द०)।

सोढवत्—वि० [सं०] जिसने सहन किया हो। सहनेवाला।

सोढव्य—वि० [सं०] सहन करने के योग्य। सह्य।

सोढा—वि० [सं० सोढृ] १. दे० सहनशील। 'सोढ'। २. शक्तियुक्त। ताकतवर [को०]।

सोढी—वि० [सं० सोढिन्] जिसने सहन किया हो। सहनकारी।

सोणक—वि० [सं० शोण] लाल रंग का। रक्त।

सोणत—संज्ञा पुं० [सं० शोणित] खून। लोहू। रक्त। (डिं०)।

सोत—संज्ञा सं० [सं० स्रोत] दे० 'स्रोत' या 'सोता'। उ०—(क) लोल लोचनी कंठ लखि संख समुद के सोत। अरु उड़ि कानन को गए केकी गोल कपोत।—शृंगारसतसई (शब्द०)। (ख) धन कुल की मरजाद कछु प्रेम पंथ नहिं होत। राव रंक सब एक से लगत प्रेम रस सोत।—हरिश्चंद्र (शब्द०)। (ग)

वैरिवधुवरन कलानिधि मलीन भयो सकल सुखानो परपानिप को सोत है।—मतिराम (शब्द०)।

सोता[१]—संज्ञा पुं० [सं० स्रोत] १. जल की बराबर बहनेवाली या निकलनेवाली छोटी धारा। झरना। चश्मा। जैसे—पहाड़ का सोता, कूएँ का सोता। उ०—(क) भूख लगे सोता मिले उथरे अरु बिन मैल। पी तिनको पानी तुरत लीजौ अपनी गैल।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)। (ख) दस दिसा निर्मल मुदित उड़गन भूमिमंडल सुख छयो। सागर सरित सोता सरोवर सबन उज्वल जल भयो।—गिरिधरदास (शब्द०)। २. नदी की शाखा। नहर। उ०—जिसका (जमना की नहर का) एक सोता पश्चिम में हरियाने तक पहुँचकर रेगिस्तान में खप जाता है।—शिवप्रसाद (शब्द०)। ३. मूल। उद्गम। परंपरा।

सोता[२]—वि० [सं० सोतृ] उत्पन्न करनेवाला। संतान उत्पन्न करनेवाला [को०]।

सोतियाⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोता + इया (प्रत्य०)] सोता। उ०—नौ दस नदिया अगम बहे सोतिया, बिचे में पुरइन दहवा लागल रे री।—कबीर (शब्द०)।

सोतिहा†—संज्ञा पुं० [हिं० सोता + इहा (प्रत्य०)] कूआँ जिसमें सोते का पानी आता है।

सोती[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोता] स्रोत। धारा। सोता। उ०—तेहि पर पूरि धरी जो मोती। जवुँना माँझ गाँग कइ सोती।—जायसी (शब्द०)।

सोती[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वाति] दे० 'स्वाती'। उ०—एक वर्ष वरष्यो नहिं सोती। भयो न मानसरोवर मोती।—रघुराजसिंह (शब्द०)।

सोती[३]—संज्ञा पुं० [सं० श्रोत्रिय, प्रा० सोत्तिय] दे० 'श्रोत्रिय'।

सोतु—संज्ञा पुं० [सं०] सोम निकालने की क्रिया।

सोत्कंठ—वि० [सं० सोत्कण्ठ] १. उत्कंठायुक्त। लालसायुक्त। २. शोक या पश्चात्तापयुक्त। उनमना।

सोत्कंप—वि० [सं० सोत्कम्प] काँपता हुआ। हिलता डुलता हुआ। कंपित [को०]।

सोत्क—वि० [सं०] जिसे उत्कंठा हो। उत्कंठापूर्ण। सोत्कंठ।

सोत्कर्ष—वि० [सं०] उत्कर्षयुक्त। उत्तम। दिव्य।

सोत्तारपणव्यवहार—संज्ञा पुं० [सं०] पाराशर स्मृति के अनुसार इस प्रकार की शर्त कि वाद विवाद में जो जीते, वह हारनेवाले से इतना धन ले।

सोत्प्रास[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. चाटु। प्रिय बात। २. व्याजस्तुति। ३. शब्दयुक्त हास्य। सशब्द हास्य। यथा—सोत्प्रास आच्छुरितकमवच्छुरितकं तथा अट्टहासो महाहासो हासः प्रहास इत्यादि।—शब्दरत्नावली (शब्द०)। ४. व्यंग्यवाक्य या कथन (को०)।

सोत्प्रास[२]—वि० १. बढ़ाकर कहा हुआ। अतिरंजित। २. अतीव। अत्यंत। ३. व्यंग्ययुक्त। जिसमें व्यंग्य हो।

सोत्प्रेक्ष—वि० [सं०] १. उपेक्षा के योग्य। २. उदासीनतापूर्वक।

सोत्संग—वि० [सोत्सङ्ग] शोकाकुल। दुःखित।

सोत्सर्ग संसिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मल मूत्र आदि का इस प्रकार यत्नपूर्वक त्याग करना जिसमें किसी व्यक्ति को कष्ट या जीव को आघात न पहुँचे। (जैन)।

सोत्सव—वि० [सं०] १. उत्सवयुक्त। उत्सवसहित। २. प्रफुल्ल। प्रसन्न। खुश। ३. हर्ष या उल्लासयुक्त। उत्साहसहित।

सोत्सुक—वि० [सं०] १. उत्सुकतायुक्त। उत्सुकतासहित। उत्कंठित। २. जिज्ञासायुक्त। जानने की कामना से युक्त। जिज्ञासु (को०)। ३. शोकयुक्त। शोकालु। शोकान्वित (को०)।

सोत्सेक—वि० [सं०] अभिमानी। घमंडी। ऐंठू।

सोत्सेध—वि० [पुं०] ऊँचाईयुक्त। उच्च। ऊँचा।

सोथ—संज्ञा पुं० [सं० शोथ] दे० 'शोथ'।

सोदकुंभ—संज्ञा सं० [सं० सोदकुम्भ] एक प्रकार का कृत्य जो पितरों के उद्देश्य में किया जाता है।

सोदधित्व—वि० [सं०] लघु। अल्प। थोड़ा। कम।

सोदन—संज्ञा पुं० [देश०] कशीदे के काम में कागज का एक टुकड़ा जिसपर सूई से छेदकर बेल बूटे बनाए होते हैं।

विशेष—जिस कपड़े पर बेल बूटा बनाना होता है, उसपर इसे रखकर बारीक राख बिछा देते हैं, जिससे कपड़े पर निशान बन जाता है। जिसके आधार पर बेल बूटे काढ़े जाते हैं।

सोदय[१]—वि० [सं०] १. व्याज या सूद समेत। वृद्धियुक्त। २. आकाशीय ग्रहों के उदय से संबद्ध (को०)। ३. अनवरत उगनेवाला (को०)।

सोदय[२]—संज्ञा सं० ब्याज सहित मूल धन। असल मय सूद।

सोदर[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सोदरा, सोदरी] सहोदर भ्राता। सगा भाई।

सोदर[२]—वि० एक गर्भ से उत्पन्न।

सोदरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहोदरा भगिनी। सगी बहिन।

सोदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सोदरा'। उ०—काम की दुहाई कै सुहाई सखी माधुरी की इंदिरा के मंदिर में झाई उपजति है। सुरनि की सूरी किधौं मोदहू की सोदरी कि चातुरी की माता ऐसी बातनि सिजति है। केशव (शब्द०)।

सोदरीय—वि० [सं०] दे० 'सोदर'।

सोदर्क[१]—वि० [सं०] १. परिणाम से युक्त। फलयुक्त। २. कंगूरे या बुर्जियों से युक्त (को०)।

सोदर्क[२]—संज्ञा पुं० गान का पूरक जो अंतिम हो [को०]।

सोदर्य—वि० संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सहोदर'।

सोदागरⓅ†—संज्ञा पुं० [फ़ा० सौदागर] दे० 'सौदागर'। उ०—ता साथ में सोदागर बोहोत आए।—दो सौ बावन०, पृ० १६८।

सोद्यम—वि० [सं०] १. सचेष्ट। सक्रिय। २. युद्धार्थ कृतनिश्चय [को०]।

सोद्योग—वि० [सं०] १. उद्योगी। कर्मशील। उद्योग में लगा हुआ। २. शक्तिशाली। मजबूत। हिंसक। ३. खतरनाक (को०)।

सोद्वेग[१]—वि० [सं०] १. विचलित । चिंतित । २. उद्विग्न ।

सोद्वेग[२]—अव्य० उद्विग्नतापूर्वक । उद्वेगसहित ।

सोध(पु)†[१]—संज्ञा पुं० [सं० शोध] १. खोज । खबर । पता । टोह । सुधि । उ०—(क) हम सीता कै सोध बिहीना । नहिं जैहहिं जुबराज प्रबीना ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) मोही सों रूठि कै बैठि रहे किधौं कोई कहूँ कछू सोध न पावै ।—देव (शब्द०) । २. संशोधन । सुधार । उ०—खल प्रबोध जग सोध मन को निरोध कुल सोध । करहिं ते फोकट पचि मरहिं सपनेहु सुख न सुबोध ।—तुलसी (शब्द०) । ३. चुकता होना । अदा होना । बेबाक होना । जैसे,—ऋण का सोध होना । ४. अनुसंधान । अनुशीलन । खोज । शोध ।

सोध(पु)[२]—संज्ञा पुं० [सं० शुद्ध (= बुद्धि)] स्मृति । होशहवास । चेत । सुध । उ०—रघुकुल प्रगटे हैं रघुवीर ।......आनंद मगन भए सब डोलत कछू न सोध सरीर ।—सूर०, ६।१८ ।

सोध[३]—संज्ञा पुं० [सं० सौध] १. महल । प्रासाद । (डिं०) । २. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम ।

सोधक—संज्ञा पुं० [सं० शोधक] दे० 'शोधक' ।

सोधणी—संज्ञा स्त्री० [सं० शोधनी] भाड़ू । बुहारी । मार्जनी । (डिं०) ।

सोधन—संज्ञा पुं० [सं० शोधन] १. ढूँढ । खोज । तलाश । उ०—अति क्रोधन रन सोधन सदा अरि बल रोधन पन किए । दुरजोधन प्रपितामह लस्यो सह सत जोधन संग लिए ।—गोपाल (शब्द०) । २. संशोधन । त्रुटिनिवारण । दे० 'शोधन' । ३. कर्जा चुकता करना । ऋणशोधन ।

सोधना(पु)†[१]—क्रि० स० [सं० शोधन] १. शोधन करना । शुद्ध करना । साफ करना । उ०—बसि सकोच दसवदन बस साँच दिखावति बाल । सिय लौं सोधति तिय तनहि लगनि अगनि की ज्वाल ।—बिहारी (शब्द०) । २. गलती या दोष दूर करना । ३. विचार कर देखना । ठीक करना । निश्चित करना । निर्णय करना । उ०—(क) ग्रह तिथि नखत जोगु बर बारू । लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारू ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) समुझि करम गति धीरज कीन्हा । सोधि सुगम मगु तिन्ह करि दीन्हा ।—तुलसी (शब्द०) । ४. खोजना । ढूँढना । तलाश करना । उ०—(क) एहि कुरोग कर औषध नाहीं । सोधेउँ सकल बिस्व मन माहीं ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) प्यासे दुपहर जेठ के थके सबै जल सोधि । मरुधर पाय मतीरहू मारू कहत पयोधि ।—बिहारी (शब्द०) । (ग) मैं तोहि बरजों बार बार । तैं बन सोध्यो डाढ़ डाढ़ । सब फूलन में कियो है भोग । सुख न भयो तन बाढचो रोग ।—कबीर (शब्द०) । ५. धातुओं का औषध रूप में व्यवहार करने के लिये संस्कार । जैसे,—पारा सोधना । ६. ठीक करना । दुरुस्त करना । सुधारना । ७. ऋण चुकाना । अदा करना । ८. प्रसंग करना । संभोग करना । (बाजारू) ।

सोधना(पु)†[२]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोधन (= अन्वेषण)] खोज । तलाश । उ०—पीव गया परदेश सु कतहूँ सोधना । अब हूँ गृह ते निकसि करौंगी सोधना ।—सुंदर ग्रं०, भा० १, पृ० ३४३ ।

सोधवाना†—क्रि० स० [हिं० सोधना का प्रेर० रूप] १. ठीक कराना । दुरुस्त कराना । २. साफ कराना । सफाई कराना । ३. ढुँढ़वाना । तलाश कराना । दे० 'सोधाना' ।

सोधस—संज्ञा पुं० [सं० रोधस् ?] जल का किनारा । (डिं०) ।

सोधा(पु)†—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध] दे० 'सोंधा' । उ०—(क) तापर पहिरि कंचुकी भीनी सोधैं छिरकि वेल सौं भीनी ।—माधवानल०, पृ० १९७ । (ख) सोधें के भोले उस भीतर उठि आते थे ।—नट०, पृ० ११२ ।

सोधाना†—क्रि० स० [हिं० सोधना का प्रेर० रूप] १ सोधने का काम दूसरे से कराना । २. ठीक कराना । दुरुस्त कराना । उ०—(क) बाजत अवध गहागहे आनंद बधाये । नामकरन रघुबरनि के नृप सुदिन सोधाये ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) मुखु पाइ बात चलाइ सुदिनु सोधाइ गिरिहि सिखाइ कै ।—तुलसी (शब्द०) । ३. विचार करवाना । उ०—सत गुरु विप्र बोलाय के लाभ सोधावहीं । सज्जन कुटुम परिवार सुमंगल गावहीं ।—कबीर (शब्द०) ।

सोधु(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सोध] दे० 'सोध' ।

सोन[१]—संज्ञा पुं० [सं० शोण] एक प्रसिद्ध नद का नाम । उ०—सानुज राम समर जस पावन । मिलेउ महानद सोन सुहावन ।—मानस, १।४० ।

विशेष—यह नद मध्यप्रदेश के अमरकंटक की अधित्यका भूमि से, नर्मदा के उद्गम स्थान से दो ढाई मील पूर्व से, निकला है और उत्तर में मध्यप्रदेश तथा बुंदेलखंड होता हुआ पूर्व की ओर प्रवाहित हुआ है तथा बिहार में दानापुर से १० मील उत्तर गंगा में मिला है । बिहार में इस नद का पाट कोई अढ़ाई तीन मील लंबा है । वर्षा ऋतु में यह नद समुद्र सा जान पड़ता है । इसमें कई शाखा नदियाँ मिलती हैं जिनमें कोइल प्रधान है । गरमी में इस नद में पानी बहुत कम हो जाता है । वैद्यक के अनुसार इसका जल रुचिकर, संताप और शोषहर, पथ्य, अग्निवर्धक, बल और क्षीणांग को बढ़ानेवाला माना गया है ।

पर्या०—शोण । शोणभद्र । हिरण्यवाह ।

सोन(पु)[२]—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण, प्रा० सोण्ण, हिं० सोना] दे० 'सोना' । उ०—(क) परी नाथ कोइ छुवै न पारा । मारग मानुष सोन उछारा ।—जायसी (शब्द०) । (ख) दमयंती के बचन न भाए । नल राजा सब द्रव्य गँवाए । सोन रूप जो लाव भुवारा । धरत दाउँ पल मह सब हारा ।—सबलसिंह (शब्द०) ।

यौ०—सोनथार = सोने का थाल । उ०—सोनथार मनि मानिक जरे ।—जायसी ग्रं०, पृ० १२४ । सोनवरन = स्वर्णाभ । सुनहला । उ०—सोनबरन होइ रही सो रेखा ।—जायसी ग्रं०, पृ० १४४ । सोनरास = पका हुआ पीला (पान) । उ०—पेड़ी हुँत सोनरास बखानू ।—जायसी ग्रं०, पृ० १३५ ।

सोन[३]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जलपक्षी । उ०—कुररहि सारस करहि हुलासा । जीवन मरन सो एकहि पासा । बोलहिं सोन ढेक बगलेदी । रही अबोल मीन जल भेदी ।—जायसी ग्रं०, पृ० १३ ।

सोन४—वि० [सं० शोण] लाल। अरुण। रक्त। उ०—सुभग सोन सरसीरुह लोचन। बदन मयंक तापत्रय मोचन।—तुलसी (शब्द०)।

सोन५—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना] एक प्रकार की बेल जो बारहो महीने बराबर हरी रहती है। इसके फूल पीले रंग के होते हैं।

सोन६—संज्ञा पुं० [सं० रसोनक या सोनह] लहसुन। (डिं०)।

सोनकिरवा‡—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + किरवा (=कीड़ा)] १. एक प्रकार का कीड़ा जिसके पर पन्ने के रंग के चमकीले होते हैं। २. खद्योत। जुगनूँ।

सोनकीकर—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + कीकर] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़।

विशेष—यह वृक्ष उत्तर बंगाल, दक्षिण भारत तथा मध्यभारत में बहुत होता है। इसके हीर की लकड़ी मूसली सी, पर बहुत ही कड़ी और मजबूत होती है। यह इमारत और खेती के औजार बनाने के काम में आती है। इसका गोंद कीकर के गोंद के समान ही होता है और प्रायः औषध आदि में काम आता है।

सोनकेला—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + केला] चंपा केला। सुवर्ण कदली। पीला केला।

विशेष—वैद्यक में यह शीतल, मधुर, अग्निदीपक, बलकारक, वीर्यवर्धक, भारी तथा तृषा, दाह, वात, पित्त और कफ का नाशक माना गया है।

सोनगढ़ी†—संज्ञा पुं० [सोनगढ़ (स्थान)] एक प्रकार का गन्ना।

सोनगहरा—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + गहरा] गहरा सुनहरा रंग।

सोनगेरू—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + गेरू] दे० 'सोनागेरू'।

सोनचंपा—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + चंपा] पीला चंपा। सुवर्ण चंपक। स्वर्ण चंपक।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कड़ुवा, कसैला, मधुर, शीतल तथा विष, क्रमि, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात और रक्तपित्त को दूर करनेवाला है।

सोनचिरई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + चिरई] दे० 'सोनचिरी'।

सोनचिरीⓅ—संज्ञा स्त्री० [सोना + चिरी (=चिड़िया)] नटी। उ०—पातरे अंग उड़ै बिनु पाँखरी कोमल भाषनि प्रेम झिरी की। जोबन रूप अनूप निहारि कै लाज मरैं निधिराज सिरी की। कौल से नैन कलानिधि सो मुख को गनै कोटि कला गहिरी की। बाँस कै सीस अकास में नाचत को न छकै छबि सोनचिरी की।—देव (शब्द०)।

सोनजरद—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + फ़ा० जर्द] दे० 'सोनजर्द'। उ०—कोइ गुलाल सुदरसन कूजा। कोइ सोनजरद पाव भल पूजा।—जायसी (शब्द०)।

सोनजर्द—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + फ़ा० ज़र्द] पीली जूही। स्वर्ण-यूथिका।

सोनजुहीⓅ†—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्ण + हिं० जूही] दे० 'सोनजूही'। उ०—(क) देखी सोनजुही फिरति सोनजुही से अंग। दुति लपटनि पट सेत हूँ करति बनौटी रंग।—बिहारी (शब्द०) (ख) हौं रीझी लखि रीझिहौ छबिहि छबीले लाल। सोनजुही सी होति दुति मिलत मालती माल।—बिहारी (शब्द०)।

सोनजूही—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + जूही] एक प्रकार की जूही जिसके फूल पीले रंग के होते हैं पर जिसमें सफेद जूही से सुगंधि अधिक होती है। पीली जूही। स्वर्णयूथिका। उ०—सोनजूही की पँखुरियों से गुँथे ये दो मदन के बान, मेरी गोद में। हो गए बेहोश दो नाजुक, मृदुल तूफान, मेरी गोद में!—ठंडा०, पृ० ११।

सोनपटीलाⓅ—वि० [हिं० सोना + सं० पत्र या पत्रिल] सोने के पत्र (वर्क) के समान चमकनेवाला। उ०—बारह मास दामिनी दमकै। सोनपटीला जुगनू झमकै।—चरण० बानी, पृ० ७९।

सोनपेडुकी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना + पेडुकी] एक प्रकार का पक्षी जो सुनहलापन लिए हरे रंग का होता है। इसकी चोंच सफेद तथा पैर लाल होते हैं।

सोनभद्र—संज्ञा पुं० [सं० शोणभद्र] दे० 'सोन'। उ०—सोनभद्र तट देश नवेला। तहाँ बसैं बहु अबुध बघेला।—रघुराज (शब्द०)।

सोनवाना†—वि० [सं० स्वर्णवर्णक ? अथवा हिं० सोना + वाना (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सोनवानी] सोने का। सुनहला। उ०—राखा आनि पाट सोनवानी। बिरह बियोगिनी बैठी रानी।—जायसी (शब्द०)।

सोनह—संज्ञा पुं० [सं०] लशुन। लहसुन [को०]।

सोनहटाⓅ‡—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण, हिं० सोन + हाट] सोनारों का बाजार। स्वर्ण हाट। सराफा। उ०—प्रचूर पौर जनपद सम्हार सम्हीन, धनहटा, सोनहटा, पनहटा, पक्वानहटा, मछहटा करेओ सुखरव कथा कहंते।—कीर्ति०, पृ० ३०।

सोनहटिया‡—संज्ञा स्त्री० [सं० श्वान या शुन + हाट (=हटिया)] वह बस्ती जहाँ श्वान हों। चर्मकार, मेहतर, डोम आदि का मुहल्ला या निवास। (बोल०)।

सोनहला१—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + हला (प्रत्य०)] भटकटैया का काँटा। (कहार)।

विशेष—पालकी ले जाते समय जब कहीं रास्ते में भटकटैया के काँटे पड़ते हैं, तब उनसे बचने के लिये आगे के कहार 'सोनहुला' या 'सोनहला है' कहकर पीछे के कहारों को सचेत करते हैं। ये काँटे पीले होते हैं।

सोनहला२—वि० [वि० स्त्री० सोनहली] दे० 'सुनहला'। उ०—उसपर वहाँ के राजा के पैर की सोनहली छाप थी।—भारतेंदु ग्रं०, भा० ३, पृ० २८३।

सोनहा—संज्ञा पुं० [सं० शुन (=कुत्ता)] १. कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली जानवर।

विशेष—यह जानवर झुंड में रहता है और बड़ा हिंसक होता है। यह शेर को भी मार डालता है। कहते हैं, जहाँ यह रहता है, वहाँ शेर नहीं रहते। इसे 'कोगी' भी कहते

हैं। उ०—डाइन डारे सोनहा डोरे सिंह रहे वन घेरे। पाँच कुटुंब मिलि जूझन लागे बाजन बाज घनेरे।—कबीर (शब्द०)। २. शिकारी श्वान। कुत्ता। उ०—किए डोर सब सोनहा ताजी। भल भल गुरजी और सिराजी।—चित्रा०, पृ० २३।

सोनहार(पु)—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का समुद्री पक्षी। उ०—और सोनहार सोन कै डाँड़ी। सारदूल रूपे के काँड़ी।—जायसी (शब्द०)।

सोना[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण, स्वर्ण, प्रा० सोण्ण (=सोण)] १. सुंदर उज्वल पीले रंग की एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके सिक्के और गहने आदि बनते हैं।

विशेष—यह खानों में या स्लेट अथवा पहाड़ों की दरारों में पाया जाता है। यह प्रायः कंकड़ के रूप में मिलता है। कंकड़ को चूर कर और पानी का तरारा देकर धूल, मिट्टी आदि बहा दी जाती है और सोना अलग कर लिया जाता है। कभी कभी सोना विशुद्ध अवस्था में भी मिल जाता है। पर प्रायः लोहे, ताँबे तथा अन्य धातुओं में मिली हुई अवस्था में ही पाया जाता है। यह सीसे के समान नरम होता है पर चाँदी, ताँबे आदि के मेल से यह कड़ा हो जाता है। यह बहुत वजनी होता है। भारीपन में प्लैटिनम और इरिडियम धातुओं के बाद इसी का स्थान है। यह पीटकर इतना पतला किया जा सकता है कि पारदर्शक हो जाता है। इस प्रकार का इसका बहुत पतला तार भी बनाया जा सकता है। सोने पर जंग नहीं लगता। इसपर कोई खास तेजाब असर नहीं करता। हाँ, गंधक और शोरे के तेजाब में आँच देने से यह गल जाता है। हिंदुस्तान में प्रायः सभी प्रांतों में सोना पाया जाता है, पर मैसूर और हैदराबाद की खानों में अधिक मिलता है। पिछली शताब्दी में कैलिफोर्निया और आस्ट्रेलिया में भी इसकी बहुत बड़ी खानें मिली हैं।

सोना सब धातुओं में श्रेष्ठ माना गया है। हिंदू इसे बहुत पवित्र और लक्ष्मी का रूप मानते हैं। कमर और पैर में सोना पहनने का निषेध है। सोना कितनी ही रसौषधों में भी पड़ता है। वैद्यक में यह त्रिदोषनाशक तथा बलवीर्य, स्मरण शक्ति और कांतिवर्धक माना गया है।

पर्या०—स्वर्ण। कनक। कांचन। हेम। गांगेय। हिरण्य। तपनीय। चांपेय। शांतकुंभ। हाटक। जातरूप। रुक्म। महारजत। भर्म्म। गैरिक। लोहवर। चामीकर। कार्तस्वर। मनोहर। तेज। दीप्तक। कर्व्वूर। कर्च्चूर। अग्निवीर्य। मुख्यधातु। भद्रधातु। भद्र। उद्धसारुक। शांतकौंभ। भूरि। कल्याण। स्पर्शमणि। प्रभव। अग्नि। अग्निशिख। भास्कर। मांगल्य। आग्नेय। भरु। चंद्र। उज्वल। भृंगार। कलधौत। पिंजान। जाँबव। अग्निबीज। द्रविण। अग्निभ। दीप्त। सौमंजक। जांबुनद। जांबूनद। निष्क। रुग्म। अष्टापद। अपिंजर।

मुहा०—सोना कसना=परखने के लिये कसौटी पर सोने की लकीर खींचना। सोना कसवाना या कसाना=कसौटी पर सोने की जाँच कराना। परखवाना। सोने का कौर खिलाना=अत्यधिक सुखी रखना। उ०—तुम रहते ही हो तो कौन सोने का कौर खिला देते हो।—मान०, भा० ५, पृ० १६७। सोने का घर मिट्टी होना=लाख का खाक होना। सारा वैभव नष्ट होना। सोने का पानी=किसी धातु पर चढ़ाया हुआ सोने का आब। मुलम्मा। सोने का महल उठाना=(१) अत्यंत धनी होना। (२) किसी कार्य में अत्यधिक व्यय करना। सोने का होना=बहुमूल्य होना। गुणी होना। उ०—उनके यहाँ ब्याह करने में ही हमारी पत रहेगी, देवकीनंदन सोने का भी हो तो, हमारे काम का नहीं है।—ठेठ०, पृ० ११। सोने की चिड़िया=वह जिससे सदा लाभ ही लाभ होता रहे। मालदार आदमी। उ०—अम्मा दस दिन में झख मार के आप ही मिलेंगी। सोने की चिडिया को कोई छोड़ता है भला।—सैर०, पृ० २८। सोने की चिड़िया हाथ से उड़ जाना या निकल जाना=किसी मालदार आदमी का चंगुल में न आना। सोने की चिड़िया हाथ आना या लगना=(१) कोई ईप्सित वस्तु अकस्मात् प्राप्त होना। उ०—सुब्हान अल्ला सुब्हान अल्ला! सोने की चिड़िया हाथ आई। कहा, हुजूर खुदा के लिये चिक उठवा दें।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ६८। (२) जिससे अत्यधिक लाभ हो उसका एकाएक मिल जाना। सोने की तौल तौलना=साधारण वस्तु भी सोने की तरह तौलना कि बाल बराबर भी फर्क न रहे। सोने के मोल होना=अत्यधिक मूल्य का होना। बहुमूल्य होना। सोने में घुन लगना=असंभव बात का होना। अनहोनी होना। उ०—काहू चीटी लगे पाँख, काहू यम मारे काख, सुनो है न देख्यो घुन लागो है कनक को।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। सोने में सुगंध=किसी बहुत बढ़िया चीज में और अधिक विशेषता होना। सोने में सुहागा=रंग में निखार आना आना। और भी उत्कृष्ट होना। सोने से लदे रहना=(१) अत्यधिक स्वर्णभूषण पहनना। (२) ऐश्वर्य का उपभोग करना।

क्रि० प्र०—गलना।—गलाना। तपना।—तपाना।

२. अत्यंत बहुमूल्य वस्तु। बहुत महँगी चीज। ३. अत्यंत सुंदर वस्तु। उज्वल या कांतिमान् पदार्थ। जैसे,—शरीर सोना हो जाना। ४. एक प्रकार का हंस। राजहंस।

सोना[2]—संज्ञा पुं० मझोले कद का एक वृक्ष जो बरार और दारजिलिंग की तराइयों में होता है। कोलपार।

विशेष—इस वृक्ष में कलियाँ लगती हैं जिनका मुरब्बा बनता है। इसकी लकड़ी मजबूत होती है और इमारत तथा खेती के औजार बनाने के काम में आती है। चीरने के समय लकड़ी का रंग अंदर से गुलाबी निकलता है, पर हवा लगने से वह काला हो जाता है।

सोना[3]—संज्ञा स्त्री० प्रायः एक हाथ लंबी एक प्रकार की मछली जो भारत और बरमा की नदियों में पाई जाती है।

सोना[4]—क्रि० अ० [सं० शयन] १. उस अवस्था में होना जिसमें चेतन क्रियाएँ रुक जाती हैं और मन तथा मस्तिष्क दोनों विश्राम

करते हैं। नींद लेना। शयन करना। आँख लगना। २. लेटना। आराम करना।

संयो० क्रि०—जाना।

मुहा०—सोते जागते = हर घड़ी। हर समय।

२. शरीर के किसी अंग का सुन्न होना। जैसे,—मेरे पैर सो गए। उ०—आगे किसू के क्या करें दस्ते तमादराज। वह हाथ सो गया है सिर्हाने धरे धरे।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० १६३।

विशेष—यह क्रिया प्रायः एक अंग को एक ही अवस्था में कुछ अधिक समय तक रखने पर हो जाती है।

सोनागेरू—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + गेरू] गेरू का एक भेद जो जो मामूली गेरू से अधिक लाल और मुलायम होता है।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह स्निग्ध, मधुर, कसैला, नैनों को हितकर, शीतल, बलकारक, व्रणशोधक, विशद, कांतिजनक तथा दाह, पित्त, कफ, रक्तविकार ज्वर, विष, विस्फोटक, वमन, अग्निदग्धव्रण, बवासीर और रक्तपित्त को नाश करनेवाला है।

पर्या०—सुवर्णगैरिक। सुरक्त। स्वर्णधातु। शिलाधातु। संध्याभ्र। बभ्रु धातु। सुरक्तक।

सोनाचाँदी—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + चाँदी] धन दौलत। माल संपत्ति।

सोनापाठा—संज्ञा पुं० [सं० शोण + हिं० पाठा] १. एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जिसकी छाल, बीज और फल औषधि के काम आते हैं।

विशेष—यह वृक्ष भारत और लंका में सर्वत्र होता है। इसकी छाल चौथाई इंच तक मोटी, हरापन लिए पीले रंग की, चिकनी, हलकी और मुलायम होती है। काटने से इसमें से हरा रस निकलता है। लकड़ी पीलापन लिए सफेद रंग की हलकी और खोखली होती है तथा जलाने के सिवा और किसी काम में नहीं आती। पेड़ की टहनियों पर तीन से पाँच फुट तक लंबी झुकी हुई सींकें होती हैं जो भीतर से पोली होती हैं। प्रत्येक प्रधान सींक पर पाँच पाँच गाँठें होती हैं और उन गाँठों के दोनों ओर एक एक और सींक होती है। पहली सींक की चार गाँठें सींकों सहित क्रम क्रम से छोटी रहती हैं। इनमें पहली गाँठ पर तीन जोड़े पत्ते, दूसरी और तीसरी गाँठ पर एक एक जोड़ा और चौथी गाँठ पर तीन पत्ते लगे रहते हैं। दूसरी और तीसरी सींकों पर भी इसी क्रम से पत्ते रहते हैं। चौथी गाँठवाली सींक पर पाँच पाँच पत्ते (दो जोड़े और एक छोर पर) होते हैं। पाँचवीं पर तीन पत्ते (एक जोड़ा और एक छोर पर) होते हैं। इसी प्रकार अंत में तीन पत्ते होते हैं। पत्ते करंज के पत्ते के समान २॥ से ४॥ इंच तक चौड़े, लंबोतरे और कुछ नुकीले होते हैं। फूल १–२ फुट लंबी डंडी पर २॥–३ इंच लंबोतरे और सिलसिलेवार आते हैं। फूलों के भीतर का रंग पीलापन लिए लाल और बाहर का रंग नीलापन लिए लाल होता है। फूलों में पाँच पंखड़ियाँ और भीतर पीले रंग के पाँच केसर होते हैं। फूल बहुधा गिर जाया करते हैं, इसलिये जितने फूल आते हैं, उतनी फलियाँ नहीं लगतीं। फलियाँ २–२॥ फुट लंबी और ३–४ इंच चौड़ी, चिपटी तथा तलवार की तरह कुछ मुड़ी हुई टेढ़ी नोकवाली होती हैं। इनके अंदर भोजपत्र के समान तहदार पत्ते सटे रहते हैं और इन पत्तों के बीच में छोटे, गोल और हलके बीज होते हैं। कलियाँ और कोमल फलियाँ प्रायः कच्ची ही गिर जाया करती हैं। कार्तिक और अगहन के आरंभ तक इसके वृक्ष पर फूल फल आते रहते हैं और शीतकाल के अंत और वसंत ऋतु में फलियाँ पककर गिर जाती हैं और बीज हवा में उड़ जाते हैं। इन बीजों के गिरने से वर्षा ऋतु में पौधे उत्पन्न होते हैं। वैद्यक के अनुसार यह कसैला, कड़ुवा, चरपरा, शीतल, रुक्ष, मलरोधक, बलकारी, वीर्यवर्धक, जठराग्नि को दीपन करनेवाला तथा वात, पित्त, कफ, त्रिदोष, ज्वर, संनिपात, अरुचि, आमवात, कृमि रोग, वमन, खाँसी, अतिसार, तृषा, कोढ़, श्वास और वस्ति रोग का नाश करनेवाला है। इसकी छाल, फल और बीज औषध के काम में आते हैं, पर छाल का ही अधिक उपयोग होता है। इसका कच्चा फल कसैला, मधुर, हलका, हृदय और कंठ को हितकारी, रुचिकर, पाचक, अग्निदीपक, गरम, कटु, क्षार तथा वात, गुल्म, कफ और बवासीर तथा कृमिरोग का नाश करनेवाला है।

पर्या०—श्योनाक। शुकनास। कट्वंग। कंटभर। मयूरजंघ। अरलुक। प्रियजीवी। कुटन्नट।

२. इसी वृक्ष का एक और भेद जो संयुक्त प्रदेश (उत्तर प्रदेश), पश्चिमोत्तर प्रदेश, बंबई, कर्नाटक, कारमंडल के किनारे तथा बिहार में अधिकता से होता है और राजपूताने में भी कहीं कहीं पाया जाता है।

विशेष—यह पेड़ ६० से ८० फुट तक ऊँचा होता है और पत्तेवाली सींक प्रायः ८ इंच से १ फुट तक लंबी होती है, और कहीं कहीं सींकों की लंबाई २–३ फुट तक होती है। सींकों पर आठ से चौदह जोड़े समवर्ती पत्ते होते हैं। इसके फूल बड़े और कुछ पीले होते हैं। फलियाँ ताँबे के रंग की, दो इंच लंबी तथा चौथाई इंच चौड़ी, गोल, दोनों ओर नुकीली और जड़ की ओर ऐंठी सी रहती हैं। पेड़ की छाल सफेद रंग की होती है और गुण भी सोनापाठा—'१' के समान ही है।

पर्या०—टुंटुक। दीर्घवृंत। टिंटुक। कीरनाशन। पूतिवृक्ष। पूतिनारा। भूतिपुष्पा। मुनिद्रुम, आदि।

सोनापेट—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + पेट (= गर्भ)] सोने की खान।

सोनाफूल—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + फूल] एक प्रकार की झाड़ी जो आसाम और खासिया पहाड़ियों पर होती है। गुलाबजम।

विशेष—इस झाड़ी की पत्तियों से एक प्रकार का भूरा रंग निकलता है और इसकी छाल के रेशों से रस्सियाँ भी बनती हैं। इसे गुलाबजम भी कहते हैं।

सोनामक्खी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्णमाक्षिक] १. एक खनिज पदार्थ जो भारत में कई स्थानों में पाया जाता है।

विशेष—आयुर्वेद में इसकी गणना उपधातुओं में है। इसमें सोने का कुछ अंश और गुण वर्तमान रहने के कारण इसका नाम

स्वर्णमाक्षिक पड़ा है। सोने के अभाव में औषधियों में इसका उपयोग किया जाता है। सोने के सिवा अन्य धातुओं का संमिश्रण रहने से इसमें और भी गुण आ गए हैं। उपधातु होने के कारण, यथोचित रीति से शोधन कर इसका व्यवहार करना चाहिए, अन्यथा यह मंदाग्नि, बलहानि, विष्टंभिता, नेत्ररोग, कोढ़, गंडमाला, क्षय, आध्मान, कृमि आदि अनेक रोग उत्पन्न करती है। शोधितावस्था में यह वीर्यवर्धक, नेत्रों के लिये हितकर, स्वरशोधक, व्यवायी, कोढ़, सूजन, प्रमेह, बवासीर, वस्ति, पांडुरोग, उदरव्याधि, विषविकार, कंठरोग, खुजली, क्षय, भ्रम, हुल्लास, मूर्छा, खाँसी, श्वास आदि रोगों का नाश करनेवाली मानी गई है।

पर्या०— स्वर्णमाक्षिक। माक्षिक। हेममाक्षिक। धातुमाक्षिक। स्वर्णवर्ण। स्वर्णाह्वय। पीतमाक्षिक। माक्षिकधातु। तापीज। मधुमाक्षिक। तीक्ष्ण। मधुधातु।

२. एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

सोनामाखी—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्णमाक्षिक] दे० 'सोनामक्खी'।

सोनामुखी—[सं० स्वर्णमुखी] दे० 'स्वर्णपत्री'।

सोनार—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णकार, प्रा० सोण्णार, सोणार] [स्त्री० सोनारिन] दे० 'सुनार'। उ०—कहाँ सोनार पास जेहि जाऊँ। देइ सोहाग करै एक ठाऊँ।—जायसी ग्रं० (गुप्त) पृ० ८६।

सोनारी[+]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोनार+ई (प्रत्य०)] सुनार का काम। सोने आदि के गहने बनाने का काम।

सोनिजरद(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना+फ़ा० जर्द] दे० 'सोनजर्द'।

सोनित(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शोणित] दे० 'शोणित' उ०—तव सोनित की प्यास तृषित राम सायक निकर।—मानस, ६।३२।

सोनी(पु)[१]—संज्ञा पुं० [हिं० सोना] सुनार। स्वर्णकार। उ०—(क) देव दिखावति कंचन से तन औरन को मन तावै अगोनी। सुंदरि साँचे में दै भरि काढ़ी सी आपने हाथ गढ़ी विधि सोनी।—देव (शब्द०)। (ख) सुंदर काढ़ै सोधि करि सदगुरु सोनी होइ। शिवसुवर्ण निर्मल करै टाँका रहै न कोइ।—सुंदर० ग्रं०, भा० २, पृ० ६७३।

सोनी[२]—संज्ञा पुं० [देश०] १. एक जातिविशेष का नाम। २. तुन की जाति का एक वृक्ष।

सोनेइया—संज्ञा पुं० [देश०] वैश्यों की एक जाति।

सोनैया—संज्ञा स्त्री० [देश०] देवदाली। घघरबेल। बंदाल। विशेष दे० 'देवदाली'।

सोन्मद, सोन्माद—वि० [सं०] उन्मादयुक्त। पागल। विक्षिप्त [को०]।

सोप[१]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की छपी हुई चादर।

सोप[२]—संज्ञा पुं० [अं०] साबुन।

सोप[३]—संज्ञा पुं० [अं० स्वाब] बुहारी। झाड़ू। (लश०)।

सोपकरण—वि० [सं०] साधन या उपकरण से युक्त [को०]।

सोपाकर—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्याज सहित मूलधन। असल मै सूद। २. उपकृत व्यक्ति (को०)।

सोपकार[१]—वि० १. सहायताप्राप्त। उपकृत। २. लाभकर। लाभ देनेवाला। ३. उपकरण या साधन से युक्त। ४. सूद देनेवाला। जिससे सूद प्राप्त हो। सूद पर लगाया या दिया हुआ [को०]।

सोपकार आधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह धरोहर जो किसी फायदे के काम में (जैसे रुपए का सूद पर दे दिया जाना, आदि) लगा दी गई हो।

सोपचार—वि० [सं०] आदर और संमानपूर्वक व्यवहार करनेवाला [को०]।

सोपत(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सूपपत्ति] सुबीता। सुपास। आराम का प्रबंध। उ०—बन बन बागत बहुत दिनन ते कृश तनु ह्वैहैं प्यारे। करत रह्यो ह्वैहै को सोपत दूध वदन दोउ वारे।—रघुराज (शब्द०)।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।—बैठना।—बैठाना।—लगना। लगाना।

सोपध—वि० [सं०] १. झूठ और कपट से भरा हुआ। २. उपांत्य सहित। अंतिम से पूर्ववाले वर्ण के साथ [को०]।

सोपधान—वि० [सं०] १. गद्दा आदि से युक्त। सज्जित। २. उत्तम कोटि का [को०]।

सोपधि[१]—वि० [सं०] कपटी। झूठा। छली।

सोपधि[२]—क्रि० वि० झूठा मूठा। छलयुक्त या कपटपूर्ण ढंग से [को०]।

सोपधि प्रदान—संज्ञा पुं० [सं०] ऋण लेनेवाले या धरोहर रखनेवाले से किसी बहाने से ऋण की रकम बिना दिए गिरवी की वस्तु वापस ले लेना।

सोपधिशेष—संज्ञा पुं० [सं०] वह व्यक्ति जिसमें छल, कपट शेष हो। वह व्यक्ति जो निश्छल न हो [को०]।

सोपप्लव—वि० [सं०] १. उपप्लव अर्थात् बाढ़, उपद्रव आदि से युक्त। २. ग्रहण से युक्त [को०]।

सोपाक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह व्यक्ति जो चांडाल पुरुष और पुक्कसी के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। चंडाल। श्वपाक। २. काष्ठौषधि बेचनेवाला। वनौषधि बेचनेवाला।

सोपाधि—वि० [सं०] १. परिणाम एवं इयत्ता से युक्त। नाम और गुणयुक्त। सीमित। सगुण। सीमा या गुण विशिष्ट। उ०—व्यवहार पक्ष में शंकराचार्य ने जिस उपासनागम्य ब्रह्म का अवस्थान किया है वह सोपाधि या सगुण ब्रह्म है, अव्यक्त पारमार्थिक सत्ता नहीं।—चिंतामणि भा० २, पृ० ८०। २. कुछ विशिष्टता या खासियत रखनेवाला। ३. विशिष्ट। प्रधान। श्रेष्ठ (को०)।

सोपाधिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सोपाधिकी] दे० 'सोपाधि'। उ०—किंतु यह सब व्यापार सोपाधिक आकार ग्रहण करने पर ही संभव है।—संपूर्णा० अभि० ग्रं०, पृ० ११२।

सोपान—संज्ञा पुं० [सं०] १. सीढ़ी। जीना। २. जैनों के अनुसार मोक्षप्राप्ति का उपाय।

यौ०—सोपानकूप = वह कुआँ जिसमें सीढ़ियाँ बनी हैं। सोपानपथ, सोपानपथ, सोपानपद्धति, सोपानपरंपरा = सीढ़ियों का क्रम या सिलसिला। जीना। सोपानमार्ग = जीना। सोपानमाला = चक्करदार सीढ़ियाँ, जो प्रायः बुर्ज, मीनार आदि में होती हैं।

सोपानक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोने के तार में पिरोई हुई मोतियों की माला। २. दे० 'सोपान'।

यौ०—सोपानक पद्धति = सीढ़ियों का क्रम, सिलसिला।

सोपानिक—वि० [सं०] सोपान से युक्त। सीढ़ियों से युक्त। उ०—सरयू तीर हेम सोपानित सब थल करहिं प्रकासा।—रघुराज (शब्द०)।

सोपारी‡—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुपारी] दे० 'सुपारी'।

सोपाश्रय[1]—वि० [सं०] उपाश्रय या अवलंब से युक्त।

सोपाश्रय[2]—संज्ञा पुं० योग का एक आसन [को०]।

सोपासन—वि० [सं०] १. उपासनायुक्त। २. जो पवित्र अग्नि से युक्त हो। होमाग्नियुत।

सोपि, सोपी—वि० [सं० सः + अपि, सोऽपि] १. वही। उ०—आकर चारि जीव जग अहहीं। कासी मरत परम पद लहहीं। सोपि राम महिमा मुनिराया। सिव उपदेश करत करि दाया।—तुलसी (शब्द०)। २. वह भी। उ०—सब ते परम मनोहर गोपी। नंदनँदन के नेह मेह जिनि लोक लीक लोपी। हरि कुबजा के रंगहि राचे तदपि तजी सोपी। तदपि न तजै भजै निसि बासर नैकहु न कोपी।—सूर (शब्द०)।

सोफ—संज्ञा पुं० [अ० सोफ़] दावात में डालनेवाला कपड़ा। उ०—मन मसिदानी साँच की स्याही, सुरति सोफ भरि डारी।—धरनी० बानी०, पृ० ३।

सोफता—संज्ञा पुं० [सं० सुविधा] १. एकांत स्थान। निराली जगह। उ०—(क) इनका मन किसी और बात में लगा हुआ है, तुम कड़ों की बात फिर कभी सोफते में पूछ लेना।—श्रद्धाराम (शब्द०)। (ख) वह उसे सोफते में ले गया। २. रोग आदि में कुछ कमी होना।

सोफ़ा—संज्ञा पुं० [अं०] लंबी, दो तीन व्यक्तियों के बैठने योग्य, प्रायः गद्दीदार, कुरसी।

सोफियाना—वि० [अ० सूफ़ी + फ़ा० इयाना] (प्रत्य०)] १. सूफियों का। सूफी संबंधी। २. जो देखने में सादा पर बहुत भला लगे। जैसे,—सोफियाना कपड़ा, सोफियाना ढंग।

विशेष—सूफी लोग प्रायः बहुत सादे, पर सुंदर ढंग से रहते थे; इसी से इस शब्द का इस अर्थ में व्यवहार होने लगा।

सोफी—संज्ञा पुं० [फ़ा० सूफ़ी] स्त्री० सोफनि, सोफिन] दे० 'सूफी'। उ०—दादू, सोइ जोगी सोइ जंगमा, सोइ सोफी सोइ सेख। जोगिणि ह्वै जोगी गहे, सोफणि ह्वै करि सेख।—दादू० बानी, पृ० २३१।

सोब—संज्ञा पुं० [देश०] दे० 'सोप'।

सोबरनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण] दे० 'सुवर्ण'। उ०—उदित अँधेरी में आज भृगु हैं, कि जिनमें आभा है सोबरन की।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ८८६।

सोबरि, सोबरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० सूति + गृह] सूतिकागृह। सौरी। उ०—आवौ, आवौ, सासु मेरी आवौ, मेरी सोबरि के बीच चरुआ धरावौ।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ९१३।

सोब्रन†, सोब्रन्नⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण, स्वर्ण] दे० 'सुवर्ण'।

सोभⓅ[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शोभा] उ०—(क) अंग अंग आनँद उमगि उफनत बैनन माझ। सखी सोभ सब बसि भई मनो कि फूली साँझ।—पृ० रा०, १४।५५। उ०—अति सुंदर शीतल सोभ बसै। जहँ रूप अनेकन लोभ लसै।—केशव (शब्द०)।

सोभ[2]—संज्ञा पुं० [सं०] गंधर्वों के नगर का नाम।

सोभन—संज्ञा पुं०, वि० [सं० शोभन] दे० 'शोभन'।

सोभनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० शोभन] सोहना। शोभित होना। उ०—(क) सिंधु में बड़वाग्नि की जनु ज्वाल माल विराजई। पद्मरागनि सों किधौं दिवि धूरि पूरित सोभई।—केशव (शब्द०)। (ख) कुंडल सुंदर सोभिजै स्याम गात छबि दान।—केशव (शब्द०)।

सोभनीक—वि० [सं० शोभन] शोभायुक्त। सुंदर। दे० 'शोभित'। उ०—और काहू रंति कै स्वरूप होइ सोभनीक, ताहू कौं तौ देखि करि निकट बुलाइए।—सुंदर ग्रं०, भा० २, पृ० ४८०।

सोभर—संज्ञा पुं० [सं० सूतिगृह ?] वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्रियाँ प्रसव करती हैं। सौरी। जच्चाखाना। सूतिकागार।

सोभरि—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक ऋषि।

सोभांजन—संज्ञा पुं० [सं० सोभाञ्जन] दे० 'शोभांजन'।

सोभाⓅ—संज्ञा स्त्री० [सं० शोभा, प्रा० सोभा] दे० 'शोभा'। उ०—(क) सब सोभा ससि सानि कै साँची इंछिनि एक।—पृ० रा०, १४।५६। (ख) राधा दामिनि के सँग सोभा सरस्यो करै।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २०१।

सोभाकारी—वि० [सं० शोभाकर] जो देखने में अच्छा हो। सुंदर। बढ़िया। उ०—शीश पर धरे जटा मानौ रूप कियो त्रिपुरारि। तिलक ललित ललाट केसर बिंद सोभाकारि।—सूर (शब्द०)।

सोभायमान—वि० [सं० शोभायमान] दे० 'शोभायमान'।

सोभार—वि० [सं० स (= सह) + हिं० + उभार] उभार के साथ। उभरा हुआ। उ०—मुक्त नभ वेणी में सोभार, सुहाती रक्त पलाश समान।—गुंजन, पृ० ४६।

सोभितⓅ—वि० [सं० शोभित] दे० 'शोभित'।

सोभिलⓅ†—वि० [सं० शोभिल, प्रा० सोहिल्ल] शोभायुक्त। शोभित। उ०—गुंजंत ग्राम सोभिल कुँआरि। तिहि हरत हरनि मनमत्थ रारि।—पृ० रा०, १४।६७।

सोम—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल की एक लता का नाम।

विशेष—इस लता का रस पीले रंग का और मादक होता था और इसे प्राचीन वैदिक ऋषि पान करते थे। इसे पत्थर से कुचल

कर रस निकालते थे और वह रस किसी ऊनी कपड़े में छान लेते थे। यह रस यज्ञ में देवताओं को चढ़ाया जाता था और अग्नि में इसकी आहुति भी दी जाती थी। इसमें दूध या मधु भी मिलाया जाता था। ऋक् संहिता के अनुसार इसका उत्पत्ति स्थान मूंजवान पर्वत है; इसी लिये इसे 'मौजवत्' भी कहते थे। इसी संहिता के एक दूसरे सूक्त में कहा गया है कि श्येन पक्षी ने इसे स्वर्ग से लाकर इंद्र को दिया था। ऋग्वेद में सोम की शक्ति और गुणों की बड़ी स्तुति है। यह यज्ञ की आत्मा और अमृत कहा गया है। देवताओं को यह परम प्रिय था। वेदों में सोम का जो वर्णन आया है, उससे जान पड़ता है कि यह बहुत अधिक बलवर्धक, उत्साहवर्धक, पाचक और अनेक रोगों का नाशक था। वैदिक काल में यह अमृत के समान बहुत ही दिव्य पेय समझा जाता था, और यह माना जाता था कि इसके पान से हृदय से सब प्रकार के पापों का नाश तथा सत्य और धर्मभाव की वृद्धि होती है। यह सब लताओं का पति और राजा कहा गया है। आर्यों की ईरानी शाखा में भी इस लता के रस का बहुत प्रचार था। पर पीछे इस लता के पहचानने-वाले न रह गए। यहाँ तक कि आयुर्वेद के सुश्रुत आदि आचार्यों के समय में भी इसके संबंध में कल्पना ही कल्पना रह गई जो सोम (चंद्रमा) शब्द के आधार पर की गई। पारसी लोग भी आजकल जिस 'होम' का अपने कर्मकांड में व्यवहार करते हैं, वह असली सोम नहीं है। वैद्यक में सोमलता की गणना दिव्यौषधियों में है। यह परम रसायन मानी गई है और लिखा गया है कि इसके पंद्रह पत्ते होते हैं जो शुक्लपक्ष में—प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक—एक एक करके उत्पन्न होते हैं और फिर कृष्ण पक्ष में—प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक—पंद्रह दिनों में एक एक करके वे सब पत्ते गिर जाते हैं। इस प्रकार अमावस्या को यह लता पत्रहीन हो जाती है।

पर्या०—सोमवल्ली। सोमा। क्षीरी। द्विजप्रिया। शणा। यज्ञश्रेष्ठा। धनुलता। सोमाह्वी। गुल्मवल्ली। यज्ञवल्ली। सोमक्षीरा। यज्ञाह्वा।

२. एक प्रकार की लता जो वैदिक काल के सोम से भिन्न है।

विशेष—यह दूसरी सोम लता दक्षिण की सूखी पथरीली जमीन में होती है। इसका क्षुप झाड़दार और गाँठदार तथा पत्रहीन होता है। इसकी शाखा राजहंस के पर के समान मोटी और हरी होती है और दो गाँठों के बीच की शाखा ४ से ६ इंच तक लंबी होती है। इसके फूल ललाई लिए बहुत हलके रंग के होते हैं। फलियाँ ४-५ इंच लंबी और तिहाई इंच गोल होती हैं। बीज चिपटे और $\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{2}$ इंच तक लंबे होते हैं।

३. वैदिक काल के एक प्राचीन देवता जिनकी ऋग्वेद में बहुत स्तुति की गई है। इंद्र और वरुण की भाँति इन्हें मानवी रूप नहीं दिया गया है।

विशेष—ये सूर्य के समान प्रकाशमान, बहुत अधिक वेगवान्, जेता, योद्धा और सबको संपत्ति, अन्न तथा गौ, बैल आदि देनेवाले माने जाते थे। ये इंद्र के साथ उसी के रथ पर बैठकर लड़ाई में जाते थे। कहीं कहीं ये इंद्र के सारथी भी कहे गए हैं। आर्यों की ईरानी शाखा में इनकी पूजा होती थी और आवस्ता में इनका नाम 'हओम' या 'होम' आया है।

४. चंद्रमा। ५. सोमवार। ६. सोमरस निकालने का दिन। ७. कुबेर। ८. यम। ९. वायु। १०. अमृत। ११. जल। १२. सोमयज्ञ। १३. एक बानर का नाम। १४. एक पर्वत का नाम। १५. एक प्रकार की ओषधि। १६. स्वर्ग। आकाश। १७. अष्ट वसुओं में से एक। १८. पितरों का एक वर्ग। १९. माँड़। २०. काँजी। २१. हनुमंत के अनुसार मालकोश राग के एक पुत्र का नाम। (संगीत)। २२. विवाहित पति।—सत्यार्थप्रकाश। २३. एक बहुत बड़ा ऊँचा पेड़।

विशेष—इस पेड़ की लकड़ी अंदर से बहुत मजबूत और चिकनी निकलती है। चीरने के बाद इसका रंग लाल हो जाता है। यह प्रायः इमारत के काम में आती है। आसाम में इसके पत्तों पर मूँगा रेशम के कीड़े पाले जाते हैं।

२४. एक प्रकार का स्त्रीरोग। सोमरोग। २५. यज्ञद्रव्य। यज्ञ की सामग्री। २६. सुग्रीव (को०)। २७. (पदांत में) श्रेष्ठ। उत्कृष्ट। प्रधान। जैसे, नृसोम।

सोम³—संज्ञा पुं० [सं० सोमन्] १. वह जो सोमरस चुआता या बनाता हो। २. सोमयज्ञ करनेवाला। ३. चंद्रमा।

सोमक—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक ऋषि का नाम। २. एक राजा का नाम। ३. भागवत के अनुसार कृष्ण के एक पुत्र का नाम। ४. द्रुपद वंश या इस वंश का कोई राजा। ५. स्त्रियों का सोम नामक रोग। ६. एक देश या जाति। ७. सहदेव के एक पुत्र का नाम।

सोमकन्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्र या सोम की पुत्री [को०]।

सोमकर—संज्ञा पुं० [सं० सोम+कर] चंद्रमा की किरण। उ०—मधुर प्रिया घर सोमकर माखन दाख समान। बालक बातें तोतरी कवि कुल उक्ति प्रमान।—(शब्द०)।

सोमकर्म—संज्ञा पुं० [सं० सोमकर्मन्] सोम प्रस्तुत करने की किया। सोम रस तैयार करना।

सोमकलश—संज्ञा पुं० [सं०] वह कलश जो सोमयुक्त हो। सोम का घड़ा [को०]।

सोमकल्प—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार २१वें कल्प का नाम।

सोमकांत¹—संज्ञा पुं० [सं० सोमकान्त] चंद्रकांत मणि।

सोमकांत²—वि० १. चंद्रमा के समान प्रिय या सुंदर। २. जिसे चंद्रमा प्रिय हो।

सोमकाम¹—वि० [सं०] सोमपान करने का इच्छुक। सोमकामी।

सोमकाम²—संज्ञा पुं० सोमपान करने की इच्छा।

सोमकामी—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सोमकामिन्] दे० 'सोमकाम' [को०]।

सोमकीर्ति—संज्ञा पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सोमकुल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] मार्कंडेय पुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

सोमकेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वामन पुराण के अनुसार एक राजर्षि का नाम जो भरद्वाज के शिष्य थे। २. सोमक जाति या देश का राजा।

सोमक्रतवीय—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

सोमक्रतु—संज्ञा पुं० [सं०] सोमयज्ञ।

सोमक्रयण—संज्ञा पुं० [सं०] सोम के मूल्य पर कार्य करनेवाला [को०]।

सोमक्रयणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोममूल्य के रूप में प्राप्त गो।

सोमक्षय—संज्ञा पुं० [सं०] अमावस्या तिथि, जिसमें चंद्रमा के दर्शन नहीं होते।

सोमक्षीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमवल्ली। सोमराजी। बकुची।

सोमक्षीरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकुची। सोमवल्ली।

सोमखंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० सोमखण्डा] बकुची। सोमवल्ली।

सोमखड्डक—संज्ञा पुं० [सं०] नेपाल के एक प्रकार के शैव साधु।

सोमगंधक—संज्ञा पुं० [सं० सोमगन्धक] रक्त पद्म। लाल कमल।

सोमगतिⓅ†—वि० [अ० शूम, हिं० सूम] सूम का आचरण करनेवाला। कृपण। उ०—अजा कंठ कुच पै नहीं क्या पीवै दुहि ग्वाल। ज्यों रज्जब सिख सोमगति गुरु भेषा बेहाल।—रज्जब० बानी, पृ० १४।

सोमगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

सोमगा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकुची। सोमराजी। सोमवल्ली।

सोमगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] १. महाभारत के अनुसार एक पर्वत का नाम। २. मेरुज्योति। ३. एक आचार्य का नाम।

सोमगृष्टिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पेठा। कुष्मांड लता।

सोमगोपा संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि।

सोमग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा का ग्रहण। २. घोड़ों का एक ग्रह जिससे ग्रस्त होने पर वे काँपा करते हैं। ३. सोमपात्र। सोम रस का पात्र (को०)।

सोमग्रहण—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा का ग्रहण। चंद्रग्रहण। २. वह जो सोमरस को ग्रहण या धारण करे (को०)।

सोमघृत—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रीरोगों की एक औषध।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—सफेद सरसों, बच, ब्राह्मी, शंखाहुली, पुनर्नवा, दूधी (क्षीर काकोली) खिरैंटी, कुटकी, खंभारी के फल (जरिश्क), फालसा, दाख, अनंतमूल, काला अनंतमूल, हलदी, पाठा, देवदारु, दालचीनी, मुलैठी, मजीठ, त्रिफला, फूल प्रियंगु, अडूसे के फूल, हुरहुर, सोंचर नमक और गेरू ये सब मिलाकर एक सेर घृतपाक विधि के अनुसार चार सेर गौ के घी में पाक करना चाहिए। गर्भवती स्त्री को दूसरे महीने से छह महीने तक इसका सेवन कराया जाता है। इससे गर्भ और योनि के समस्त दोषों का निवारण होता है, रजवीर्य शुद्ध होता है और स्त्री बलिष्ठ तथा सुंदर संतान उत्पन्न करती है। पुरुषों को भी दूषित वीर्य की शुद्धि के लिये यह दिया जा सकता है।

सोमचमस—संज्ञा पुं० [सं०] सोम पान करने का पात्र।

सोमज[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोम का पुत्र, बुध ग्रह। २. दूध।

सोमज[२]—वि० चंद्रमा से उत्पन्न।

सोमजाजीⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सोमयाजिन्] दे० 'सोमयाजी'। उ०—ब्याध अपराध की साध राखी कौन? पिंगला कौन मति भक्ति भेई। कौन धौं सोमजाजी अजामिल अधम? कौन गजराज धौं बाजपेई।—तुलसी (शब्द०)।

सोमतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है। इसे प्रभास क्षेत्र भी कहते हैं।

सोमदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] एक यक्ष का नाम। (बौद्ध)।

सोमदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रामायण के अनुसार एक गंधर्वी का नाम। २. गंधपलाशी। कपूरकचरी।

सोमदिन—संज्ञा पुं० [सं० सोम+दिन] सोमवार। चंद्रवार। उ०—रस गोरस खेती सकल विप्र काज सुभ साज। राम अनुग्रह सोम दिन प्रमुदित प्रजा सुराज।—तुलसी (शब्द०)।

सोमदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोम देवता। २. चंद्रमा देवता। ३. कथासरित्सागर के रचयिता का नाम जो काश्मीर में ११वीं शताब्दी में हुए थे।

सोमदेवत—वि० [सं०] जिसके देवता सोम हों।

सोमदेवत्य—वि० [सं०] दे० 'सोमदेवत'।

सोमदैवत—संज्ञा पुं० [सं०] मृगशिरा नक्षत्र।

सौमदैवत्य—वि० [सं०] दे० 'सोमदेवत'।

सोमधान—वि० [सं०] जिसमें सोम हो। सोमयुक्त।

सोमधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आकाश। आसमान। २. स्वर्ग।

सोमधेय—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद और जाति।

सोमनंदी—संज्ञा पुं० [सं० सोमनन्दिन्] १. महादेव के एक अनुचर का नाम। २. एक प्राचीन वैयाकरण का नाम।

सोमनंदीश्वर—संज्ञा पुं० [सं० सोमनन्दीश्वर] शिव जी के एक लिंग का नाम।

सोमनⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सौमन] एक प्रकार का अस्त्र। उ०—तथा पिशाच अस्त्र अरि मोहन लेहु राज दुलहेटे। तामस सोमन लेहु बार बहु शत्रुन को दरभेटे।—रघुराज (शब्द०)।

सोमनसⓅ—संज्ञा पुं० [सं० सौमनस्य] दे० 'सौमनस्य'। उ०—पारिभाद्र सोमनस अरु अविज्ञात सुरवर्ष। रमणक अप्याजन सहित देउ सुरोवन हर्ष।—केशव (शब्द०)।

सोमनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। २. काठियावाड़ के पश्चिम तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग का मंदिर है।

विशेष—इतिहासज्ञों के अनुसार इस मंदिर के विपुल धन, रत्न की प्रसिद्धि सुनकर सन् १०२४ ई० में महमूद गजनवी ने इस-

पर चढ़ाई की और यहाँ से करोड़ों की संपत्ति उसके हाथ लगी। मूर्ति तोड़ने पर उसमें से भी बहुमूल्य हीरे पन्ने आदि रत्न निकले थे। आस पास के लोगों ने महमूद के काम में बाधा दी थी, पर वे सफल नहीं हुए। अनंतर वह देवशर्मा नामक एक ब्राह्मण को वहाँ का शासक नियुक्त कर गजनी लौट गया। चौलुक्यराज दुर्लभराज ने उससे सोमनाथ का उद्धार किया। इसके बाद राठौरों ने उसपर अधिकार जमाया। पर सन् १३०० में यह फिर मुसलमानों के अधिकार में आ गया। सन् १९४८ के पहले तक यह जूनागढ़ के नवाब वंश के शासनाधीन रहा। इसे सोमनाथ पट्टन या सोमनाथ पत्तन भी कहते हैं। सन् १९४८ में देश की स्वतंत्रता घोषित होने पर विभिन्न देशी राज्यों की तरह यह भी भारत संघ में संमिलित कर लिया गया।

सोमनाथरस—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक रसौषध जिसके सेवन से प्रमेह की अनेक प्रकार की व्याधियाँ दूर होती हैं।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—फरहद (पारिभद्र) के रस में शोधा हुआ पारा दो तोले और मूसाकानी के रस में शोधी हुई गंधक दो तोले, दोनों की कज्जली कर उसमें आठ तोले लोहा मिलाकर घीकुआर के रस में घोंटते हैं। फिर अभ्रक, वंग, खपरिया, चाँदी, सोनामक्खी तथा सोना एक एक तोला मिलाकर घीकुआर के रस में भावना देते हैं। इसकी दो दो रत्ती की गोली बनाई जाती है जो शहद के साथ खाई जाती है। इसके सेवन से सब प्रकार के प्रमेह और सोमरोग का निवारण होता है।

सोमनेत्र—वि० [सं०] १. सोम जिसका नेता या रक्षक हो। २. सोम के समान नेत्रोंवाला।

सोमप[1]—वि० [सं०] १. जिसने यज्ञ में सोमरस का पान किया हो। २. सोमरस पीनेवाला। सोमपायी। सोमपा।

सोमप[2]—संज्ञा पुं० १. सोमयज्ञ करनेवाला। २. विश्वेदेवा में से एक का नाम। ३. स्कंद के एक पारिषद का नाम। ४. हरिवंश के अनुसार एक असुर का नाम। ५. एक ऋषिवंश का नाम। ६. पितरों की एक श्रेणी। ७. बृहत्संहिता के अनुसार एक जनपद का नाम।

सोमपति—संज्ञा पुं० [सं०] सोम के स्वामी इंद्र का एक नाम।

सोमपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] कुश जाति की एक घास। डाभ। दर्भ।

सोमपद—संज्ञा पुं० [सं०] १. हरिवंश के अनुसार एक लोक का नाम। २. एक तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

सोमपरिश्रयण—संज्ञा पुं० [सं०] सोम निचोड़ने का कपड़ा। वह वस्त्र जिससे सोम निचोड़ते हैं [को०]।

सोमपर्याणहन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सोमपरिश्रयण'।

सोमपर्व—संज्ञा पुं० [सं० सोमपर्वन्] सोम उत्सव का काल। सोमपान करने का उत्सव या पुण्यकाल।

सोमपा[1]—वि० [सं०] १. जिसने यज्ञ में सोमपान किया हो। २. सोमपान करनेवाला। सोमपायी।

सोमपा[2]—संज्ञा पुं० १. सोमयज्ञ करनेवाला। २. पितरों की, विशेषकर ब्राह्मणों के पितृपुरुषों की एक श्रेणी। ३. ब्राह्मण।

सोमपात्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोम रखने का बरतन। २. सोम पीने का बरतन।

सोमपान—संज्ञा पुं० [सं०] सोम पीने की क्रिया। सोम पीना।

सोमपायी—वि० [सं० सोमपायिन्] [वि० स्त्री० सोमपायिनी] सोम पीनेवाला। सोमपान करनेवाला।

सोमपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोम का रक्षक। २. गंधर्व, जो सोम की रक्षा करनेवाले माने गए हैं।

सोमपावन—वि० [सं०] सोमपान करनेवाला। जो सोमपान करता हो।

सोमपिती—संज्ञा स्त्री० [सं० सोम + पात्री] रगड़ा हुआ चंदन रखने का बरतन।

सोमपीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सोमपान। २. सोमयज्ञ।

सोमपीती—संज्ञा पुं० [सं० सोमपीतिन्] सोमपान करनेवाला। सोम पीनेवाला।

सोमपीथ—संज्ञा पुं० [सं०] सोमपान। सोम पीने की क्रिया।

सोमपीथी—वि० [सं० सोमपीथिन्] सोमपान करनेवाला। सोमपायी।

सोमपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सोम या चंद्रमा के पुत्र। बुध।

सोमपुर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोम का नगर। २. पाटलिपुत्र का एक नाम [को०]।

सोमपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोम का रक्षक। २. सोम का अनुचर या दास।

सोमपृष्ठ—वि० [सं०] (पर्वत) जिस पर सोम हो।

सोमपेय—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक यज्ञ जिसमें सोमपान किया जाता था। २. सोमपान। सोम पीने की क्रिया।

सोमप्रदोष—संज्ञा पुं० [सं०] सोमवार को किया जानेवाला एक व्रत। सोमव्रत।

विशेष—इस व्रत में दिन भर उपवास करके संध्या को शिव जी की पूजा कर भोजन किया जाता है। स्कंदपुराण में लिखा है कि यह व्रत मनस्कामना पूर्ण करनेवाला है। आजकल लोग प्रायः श्रावण के सोमवारों को ही यह व्रत करते हैं।

सोमप्रभ—वि० [सं०] सोम या चंद्रमा के समान प्रभावाला। कांतिवान्।

सोमप्रवाक—संज्ञा पुं० [सं०] सोमयज्ञ में घोषणा करनेवाला।

सोमबंधु—संज्ञा पुं० [सं० सोमबन्धु] १. कुमुद। २. सूर्य। ३. बुध।

सोमबंसी—संज्ञा पुं० [सं० सोमवंशीय] दे० 'सोमवंशीय'। उ०—परी भीर सोमेस सोमबंसी सहाय भय। मार मार उचरंत सेन चतुरंग हयगय।—पृ० रा०, १।६५६।

सोमबेल—संज्ञा स्त्री० [सं० सोम + हिं० बेल] गुलचाँदनी या चाँदनी का पौधा।

सोमभक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सोम का पीना। सोमपान।

सोमभवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नर्मदा नदी का एक नाम।

सोमभू¹--संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा के पुत्र बुध। २. चौथे कृष्ण वासुदेव का नाम। (जैन)।

सोमभू²--वि० १. सोम से उत्पन्न। २. चंद्रवंशीय।

सोमभृत--वि० [सं०] सोम लानेवाला।

सोमभोजन--संज्ञा पुं० [सं०] १. गरुड़ के एक पुत्र का नाम। २. सोमपान।

सोममख--संज्ञा पुं० [सं०] सोमयज्ञ।

सोममद--संज्ञा पुं० [सं०] १. सोम का नशा। २. सोम का रस जिसके पीने से नशा होता है।

सोमयज्ञ--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सोमयाग'।

सोमयाग--संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमरस पान किया जाता था।

सोमयाजी--संज्ञा पुं० [सं० सोमयाजिन्] वह जो सोमयाग करता हो। सोमयाग करनेवाला।

सोमयोगी--वि० [सं० सोमयोगिन्] जिसमें सोम या चंद्र का योग हो। चंद्रमा के योगवाला।

सोमयोनि--संज्ञा पुं० [सं०] १. देवता। २. ब्राह्मण। ३. पीत चंदन। हरिचंदन।

सोमरक्ष--वि० [सं०] सोम का रक्षक।

सोमरक्षी--वि० [सं० सोमरक्षिन्] दे० 'सोमरक्ष'।

सोमरस--संज्ञा पुं० [सं०] सोमलता का रस। विशेष दे० 'सोम'।

यौ०--सोमरसोद्भव = दुग्ध। दूध।

सोमरा†--संज्ञा पुं० [देश०] १. जुते हुए खेत का दुबारा जोता जाना। दो चरस। २. समचतुर्भुज खेत का चौड़ाई में जोता जाना।

सोमराग--संज्ञा पुं० [सं०] संगीत में एक प्रकार का राग।

सोमराज--संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

सोमराजसुत--संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का पुत्र बुध।

सोमराजिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सोमराजी'।

सोमराजी¹--संज्ञा पुं० [सं० सोमराजिन्] बाकुची। बकुची। विशेष दे० 'बकुची'।

सोमराजी²--संज्ञा स्त्री० १. बकुची। २. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में छह वर्ण होते हैं। यह दो यगण का वृत्त है। इसे शंखनारी भी कहते हैं। उ०--चमू बाल देखो सुरंगी सुभेखो। धरे याहि आजी। कहैं सोमराजी।--छंदःप्रभाकर (शब्द०)।

सोमराजी तैल--संज्ञा पुं० [सं०] कुष्ठादि चर्मरोगों की एक तैलौषध।

विशेष--इस औषध के बनाने की विधि इस प्रकार है--बकुची का काढ़ा, हलदी, दारुहलदी, सफेद सरसों, कुट, करंज, पँवार के बीज, अमलतास के पत्ते, ये सब चीजें एक सेर लेकर चार सेर सरसों के तेल और सोलह सेर पानी में पकाते हैं। इस तेल के लगाने से अठारहों प्रकार के कोढ़, नासूर, दुष्ट व्रण, नीलिका व्यंग, फुंसी, गंभीरसंज्ञक वातरक्त, कंडु, कच्छु, दाद और खाज का निवारण होता है। इसका एक और भेद होता है जो महासोमराजी तैल कहलाता है। यह कुष्ठ रोग के लिये परम उपकारी माना गया है। इसके बनाने की विधि इस प्रकार है--चित्रक, कलियारी, सोंठ, कुट, हलदी, करंज, हरताल, मैनसिल, विष्णुक्रांता, आक, कनैर, छतिवन, गाय का गोबर, खैर, नीम के पत्ते, मिर्च, कसौंदी ये सब चीजें दो दो तोले लेकर इनका काढ़ा कर १२॥ सेर बकुची के काढ़े और ६४ सेर पानी और १६ सेर गोमूत्र में पकाते हैं।

सोमराज्य--संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रलोक।

सोमराष्ट्र--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

सोमरोग--संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों का एक रोग।

विशेष--इस रोग में वैद्यक के अनुसार अति मैथुन, शोक, परिश्रम आदि कारणों से शरीरस्थ जलीय धातु क्षुब्ध होकर योनि मार्ग से निकलने लगती है। यह पदार्थ श्वेत वर्ण, स्वच्छ और गंधरहित होता है। इसमें कोई वेदना नहीं होती, पर वेग इतना प्रबल होता है कि सहा नहीं जाता। रोगिणी अत्यंत कृश और दुर्बल हो जाती है। रंग पीला पड़ जाता है। शरीर शिथिल और अकर्मण्य हो जाता है। सिर में दर्द हुआ करता है। गला और तालू सूखा रहता है। प्यास बहुत लगती है। खाना पीना नहीं रुचता और मूर्छा आने लगती है। यह रोग पुरुषों के बहुमूत्र रोग के सदृश होता है।

सोमर्षि--संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सोमल--संज्ञा पुं० [देश०] संखिया का एक भेद जिसे सफेद संबल भी कहते हैं।

सोमलता¹--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गिलोय। गुडूची। २. ब्राह्मी। ३. सोम नाम की वैदिक लता। ४. गोदा या गोदावरी नदी का नाम (को०)।

सोमलतिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गिलोय। गुडूची। गुरुच। २. दे० 'सोम'।

सोमलदेवी--संज्ञा स्त्री० [सं०] राजतरंगिणी के अनुसार एक राजपुत्री का नाम।

सोमलोक--संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का लोक। चंद्रलोक।

सोमवंश--संज्ञा पुं० [सं०] १. युधिष्ठिर का एक नाम। २. चंद्रवंश। उ०--सोमदत्त भरि जोम चलेउ भट सोमवंश वर। पुलकि रोमबल तोम महत मुदरोम रोमधर।--गिरिधर (शब्द०)।

सोमवंशीय--वि० [सं०] १. चंद्रवंश में उत्पन्न। २. चंद्रवंश संबंधी। चंद्रवंश का।

सोमवंश्य--वि० [सं०] दे० 'सोमवंशीय'।

सोमवत्--वि० [सं०] [वि० स्त्री० सोमवती] १. सोमयुक्त। चंद्रयुक्त। २. चंद्रमा के समान।

सोमवती--संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या। सोमवती अमावस्या।

सोमवती अमावस्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या जो पुराणानुसार पुण्यतिथि मानी जाती है। प्रायः लोग इस दिन गंगास्नान और दान पुण्य करते हैं। विशेषतः स्त्रियाँ इस तिथि पर वासुदेव का पूजन और उनकी १०८ परिक्रमा किसी फल, मिष्ठान्न, अन्न आदि से करती हैं।

सोमवती तीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सोमवर्चस्[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. विश्वेदेवाओं में से एक का नाम। २. हरिवंश के अनुसार एक गंधर्व का नाम।

सोमवर्चस्[2]—वि० सोम के समान तेजयुक्त।

सोमवल्क—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद खैर। श्वेत खदिर। २. कायफल। कटफल। ३. करंज। ४. रीठा करंज। गुच्छपुष्पक। ५. बबूर। बर्बूर।

सोमवल्लरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ब्रह्मा। २. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते हैं। इसे 'चामर' और 'तूण' भी कहते हैं। उ०—रोज रोज राधिका सखीन संग आइकै। खेल रास कान्ह संग चित्त हर्ष लाइकै। बाँसुरी समान बोल सप्त ग्वाल गाइकै। कृष्णहीं रिझावहीं सु चामरै डुलाइकै। —छंदःप्रभाकर (शब्द०)। ३. दे० 'सोम'—१।

सोमवल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बकुची। सोमराजी। २. दे० 'सोम'।

सोमवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गिलोय। गुडूची। २. बकुची। सोमराजी। ३. छिरेंटी। पाताल गारुड़ी। ४. ब्राह्मी। ५. सुदर्शन। ६. लताकरंज। कठकरंजा। ७. गजपीपल। गज पिप्पली। ८. बन कपास। वनकार्पास। दे० 'सोम'।

सोमवामी[1]—वि० [सं० सोमवामिन्] सोम वमन करनेवाला।

सोमवामी[2]—संज्ञा पुं० वह ऋत्विज् जो खूब सोमपान करता हो।

सोमवायव्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषिवंश का नाम।

सोमवार—संज्ञा पुं० [सं०] सात वारों में से एक वार जो सोम अर्थात् चंद्रमा का माना जाता है। यह रविवार के बाद और मंगलवार के पहले पड़ता है। चंद्रवार।

सोमवारी[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोमवार + ई (प्रत्य०)] दे० 'सोमवती अमावस्या'।

सोमवारी[2]—वि० सोमवार संबंधी। सोमवार का। जैसे,—सोमवारी बाजार, सोमवारी अमावस्या।

सोमवासर—संज्ञा पुं० [सं०] सोमवार। चंद्रवार।

सोमविक्रयी—संज्ञा पुं० [सं० सोमविक्रयिन्] सोमरस बेचनेवाला।

विशेष—मनु में सोमरस बेचनेवाला दान के अयोग्य कहा गया है। उसे दान देने से दाता दूसरे जन्म में विष्ठा खानेवाली योनि में उत्पन्न होता है।

सोमवीथी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमंडल। चंद्रमा की वीथी।

सोमवीर्य—वि० [सं०] सोम की तरह वीर्य अर्थात् शक्तिवाला [को०]।

सोमवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. कायफल। कटफल। २. सफेद खैर। श्वेत खदिर।

सोमवृद्ध—वि० [सं०] जो खूब सोमपान करता हो। जिसकी उमर सोमपान करने में ही बीती हो।

सोमवेश—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन मुनि का नाम।

सोमव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साम का नाम। २. दे० 'सोमप्रदोष'।

सोमशकला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की ककड़ी।

सोमशुष्म—संज्ञा पुं० [सं०] एक वैदिक ऋषि का नाम।

सोमसंज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर। कर्पूर।

सोमसंभवा—संज्ञा स्त्री० [सं० सोमसम्भवा] १. नर्मदा। सोमोद्भवा। २. गंधपलाशी। कपूरकचरी।

सोमसंस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमयज्ञ का का एक प्रारंभिक कृत्य।

सोमसद—संज्ञा पुं० [सं०] मनु के अनुसार विराट् के पुत्र और साध्यगण के पितर।

सोमसलिल—संज्ञा पुं० [संज्ञा] सोम का जल। सोमरस।

सोमसव—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ में किया जानेवाला एक प्रकार का कृत्य जिसमें सोम का रस निकाला जाता था।

सोमसवन—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिससे सोम का रस तैयार किया जाय। २. दे० 'सोमसव' [को०]।

सोमसाम—संज्ञा पुं० [सं० सोमसामन्] एक साम का नाम।

सोमसार—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद खैर। श्वेत खदिर। २. बबूल। कीकर। बबर।

सोमसिंधु—संज्ञा पुं० [सं० सोमसिन्धु] विष्णु का एक नाम।

सोमसिद्धांत—संज्ञा पुं० [सं० सोमसिद्धान्त] १. एक बुद्ध का नाम। २. वह शास्त्र जिससे भविष्य की बातें जानी जाती हैं। ३. शैव कापालिकों का एक मत या सिद्धांत (को०)।

सोमसुंदर—वि० [सं० सोमसुन्दर] चंद्रमा के समान सुंदर। बहुत सुंदर।

सोमसुत्—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोमरस निकालनेवाला। २. यज्ञ में सोम रस चढ़ानेवाला ऋत्विज्।

सोमसुत—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का पुत्र बुध।

सोमसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमा की पुत्री, नर्मदा नदी।

सोमसुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोम का रस निकालने की क्रिया।

सोमसुत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सोमसुति'।

सोमसुत्वा—संज्ञा पुं० [सं० सोमसुत्वन्] वह जो यज्ञ में सोमरस चढ़ाता हो। सोमरस चढ़ानेवाला।

सोमसूक्त—संज्ञा पुं० [सं०] सोम से संबंधित ऋचाएँ या मंत्र।

सोमसूक्ष्म—संज्ञा पुं० [सं० सोमसूक्ष्मन्] एक प्राचीन वैदिक ऋषि का नाम।

सोमसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] शिवलिंग की जलधरी से जल निकलने का स्थान या नाली।

यौ०—सोमसूत्र प्रदक्षिणा = इस प्रकार परिक्रमा करना जिससे सोमसूत्र का लंघन न हो।

सोमसेन—संज्ञा पुं० [सं०] शंबर के एक पुत्र का नाम।

सोमहार—वि० [सं०] सोमहरण या निष्पीड़न करनेवाला।

सोमहारी—वि० [सं० सोमहारिन्] दे० 'सोमहार'।

सोमहूति—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सोमांग—संज्ञा पुं० [सं० सोमाङ्ग] सोम याग का एक अंग।

सोमांश, सोमांशक—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का अंश।

सोमांशु—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा की किरण। २. सोमलता का अंकुर। ३. सोमयाग का एक अंग।

सोमा[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सोमलता। २. महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम। ३. मारकंडेय पुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

सोमा[२]—संज्ञा पुं० [सं० सोमन्] १. सोम यज्ञ का कर्ता। २. सोम को निचोड़नेवाला व्यक्ति। ३. यज्ञ का उपकरण। ४. चंद्रमा। सोम [को०]।

सोमाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

सोमाद—वि० [सं०] सोम भक्षण करनेवाला।

सोमाधार—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के पितर।

सोमापि—संज्ञा पुं० [सं०] पुराण के अनुसार सहदेव के एक पुत्र का नाम।

सोमापूषण—संज्ञा पुं० [सं०] सोम और पूषण नामक देवता।

सोमापौष्ण—वि० [सं०] सोम और पूषण का। सोम और पूषण संबंधी।

सोमाभ—वि० [सं०] चंद्र की तरह दीप्तिमान् [को०]।

सोमाभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] चद्रावली। चंद्ररश्मि।

सोमाभिषव—संज्ञा पुं० [सं०] सोम के रस को चुआना [को०]।

सोमायन—संज्ञा पुं० [सं०] महीने भर का एक व्रत जिसमें २७ दिन दूध पीकर रहने और ३ दिन तक उपवास करने का विधान है।

विशेष—याज्ञवल्क्य के अनुसार यह व्रत करनेवाला पहले सप्ताह (सात रात) गौ के चार स्तनों का, दूसरे सप्ताह तीन स्तनों का, तीसरे सप्ताह दो स्तनों का और ६ रात एक स्तन का दूध पीए और तीन दिन उपवास करे।

सोमार(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० सोमवार, प्रा० सोम+आर या सोमार] सोमवार का दिन। उ०—सं० १६६२ शाके १४६३ मार्ग वदी ५ सोमार गंगादास सुत महाराजा बीरबल श्री तीर्थराज प्रयाग की यात्रा सुफल लिखितं।—अकबरी०, पृ० ७६।

सोमारुद्र संज्ञा पुं० [सं०] सोम और रुद्र नामक देवता।

सोमारौद्र—वि० [सं०] सोम और रुद्र का। सोम और रुद्र संबंधी।

सोमार्चि, सोमार्ची—संज्ञा पुं० [सं० सोमार्च्चिस्] वाल्मीकि रामायण वर्णित देवताओं के एक प्रासाद का नाम।

सोमार्थी—वि० [सं० सोमार्थिन्] सोम की कामना करनेवाला या इच्छुक [को०]।

सोमार्धधारी—संज्ञा पुं० [सं० सोमार्द्धधारिन्] मस्तक पर अर्ध चंद्र धारण करनेवाले, शिव।

सोमार्धहारी—संज्ञा पुं० [सं० सोमार्द्धहारिन्] शिव [को०]।

सोमार्ह—वि० [सं०] सोम के योग्य। सोमपान का अधिकारी [को०]।

सोमाल—वि० [सं०] कोमल। नरम। मुलायम। स्निग्ध। चिक्कण।

सोमालक—संज्ञा पुं० [सं०] पुखराज। पुष्पराग मणि।

सोमावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमा की माता का नाम। उ०—विनता सुत खगनाथ चंद्र सोमावति केरे। सुरावती के सूर्य रहत जग जासु उजेरे।—विश्राम (शब्द०)।

सोमावर्त—संज्ञा पुं० [सं०] वायुपुराण के अनुसार एक स्थान का नाम।

सोमाश्रम—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

सोमाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। रुद्र।

सोमाश्रयायण—संज्ञा पुं० [सं०] १. महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम। २. शिव जी का स्थान।

सोमाष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमवार को पड़नेवाली अष्टमी तिथि।

सोमाष्टमी व्रत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत जो सोमवार को पड़नेवाली अष्टमी को किया जाता है।

सोमास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र जो चंद्रमा का अस्त्र माना जाता है। उ०—सोमास्त्रहु सौरास्त्र सु निज निज रूपनि धारैं। रामहिं सों कर जोरि सबै बोलै इक बारैं।—पद्माकर (शब्द०)।

सोमाह—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का दिन। सोमवार।

सोमाहुत—वि० [सं०] जिसकी सोमरस द्वारा तृप्ति की गई हो।

सोमाहुति[१]—संज्ञा पुं० [सं०] भार्गव ऋषि का नाम। ये मंत्रद्रष्टा थे।

सोमाहुति[२]—संज्ञा स्त्री० सोम की आहुति।

सोमाह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] महासोमलता।

सोमित्रि—संज्ञा पुं० [सं० सौमित्र] लक्ष्मण।—(डिं०)।

सोमी[१]—वि० [सं० सोमिन्] १. जिसमें सोम हो। सोमयुक्त। २. सोमयज्ञ करनेवाला (को०)।

सोमी[२]—संज्ञा पुं० १. सोम की आहुति देनेवाला। २. सोमयज्ञ करनेवाला। सोमयाजक।

सोमीय वि० [सं०] सोम संबंधी। सोम का।

सोमेंद्र—वि० [सं० सोमेन्द्र] सोम और इंद्र का। सोम और इंद्र संबंधी।

सोमेज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोम यज्ञ।

सोमेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक शिवलिंग जो काशी में स्थापित है। कहते हैं, भगवान् सोम ने यह शिवलिंग प्रतिष्ठित किया था। २. दे० 'सोमनाथ'—१। ३. श्रीकृष्ण का एक नाम। ४. राजतरंगिणी में वर्णित एक देवता का नाम। ५. संगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम। ६. चौहान नरेश पृथ्वीराज के पिता का नाम जो नागौर के नरेश थे।

सोमेश्वररस—संज्ञा पुं० [सं०] एक रसौषधि जो 'भैषज्य रत्नावली' के अनुसार सब प्रकार के प्रमेह, मूत्रघात, संनिपातिक ज्वर, भगंदर, यकृत, प्लीहा, उदररोग तथा सोमरोग का शीघ्र शमन करनेवाली है।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—सेमल की छाल, कोह(अर्जुन) की छाल, लोध, अगर, गनियारी की छाल, रक्त चंदन, हलदी, दारुहलदी, आँवला, अनारदाना, गोखरू के बीज, जामुन की छाल, खस और गुग्गुल प्रत्येक चार चार तोले और पारा, गंधक, लोहा, धनियाँ, मोथा, इलायची, तेजपत्ता, पद्मक (पद्मकाष्ठ), पाढ़ (पाठा), रसौत, वायबिडंग, सुहागा और जीरा आध आध तोला, इन सबका खूब बारीक चूर्ण कर दो दो रत्ती की गोली बनाते हैं। बकरी के दूध या नारियल के जल के साथ इसका सेवन किया जाता है।

सोमोत्पत्ति—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा का जन्म। २. अमावस्या के उपरांत चंद्रमा का फिर से निकलना।

सोमोद्गीत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

सोमोद्भव[१]—संज्ञा पुं० [सं०] (चंद्रमा को उत्पन्न करनेवाले) श्री कृष्ण का एक नाम।

सोमोद्भव[२]—वि० चंद्रमा से उत्पन्न।

सोमोद्भवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नर्मदा नदी का एक नाम।

सोमोती†—संज्ञा स्त्री० [सं० सोमवती] दे० 'सोमवती अमावस्या'।

सोम्य[१]—वि० [सं०] १. सोमयुक्त। २. सोम संबंधी। ३. सोम का। ४. सोमपान के योग्य। ५. सोम की आहुति देनेवाला। ६. मृदु। कोमल। चिक्कण (को०)।

सोम्य(पु)[२]—वि० [सं० सौम्य] दे० 'सौम्य'। उ०—इषु अर्ध अरंगा को प्रसिद्ध। रवि अयन सोम्य जान्यौ प्रसिद्ध।—ह० रासो, पृ० १४।

सोय(पु)[१]—सर्व० [हिं० सो + ही, ई] वही।

सोय[२]—सर्व० दे० 'सो'। उ०—कै लघु कै बड़ मीत भल, सम सनेह दुख सोय। तुलसी ज्यों घृत मधु सरिस, मिले महा विष होय।—तुलसी (शब्द०)।

सोयम—वि० [फ़ा०] तृतीय। तीसरा। उ०—सोयम जब मौत आवेगा उसे पेश, होवे सूरत में ओ तबदील सरकश।—दक्खिनी०, पृ० ११४।

सोया—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सोआ'।

सोरंजान—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सूरन्जान्] दे० 'सूरजान', 'सुरंजान'।

सोरंभ(पु)—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सौरभ या सौरभ्य, प्रा० सौरंभ] दे० 'सौरभ'।

सोरंभना(पु)—क्रि० अ० [सं० सौरभ, प्रा० सौरंभ + हिं० ना(प्रत्य०)] सुरभित या सुगंधियुक्त होना। उ०—ढोलउ मन आणंदियउ, चतुर तणे वचनेह। मारू मुख सोरंभियउ, आवि भमर भण-केह।—ढोला०, दू० ४४०।

सोर(पु)—संज्ञा पुं० [फ़ा० शोर, मिला० सं० स्वर, सोर] १. शोर। हल्ला। कोलाहल। उ०—(क) भएउ कोलाहल अवध अति सुनि नृप राउर सोर।—तुलसी (शब्द०)। (ख) सोर भयो घोर चारो ओर नभ मंडल में आए घन, आए घन आयकै उघरिगे। २ ख्याति। प्रसिद्धि। नाम। उ०—तुम अनियारे दृगन को सुनियत जग में सोर।—रसनिधि (शब्द०)।

सोर†[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० शटा, प्रा० सड़] जड़। मूल।

सोर[३]—संज्ञा पुं० [सं०] वक्र गति। टेढ़ी चाल।

सोर[४]—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सौरी'।

सोर[५]—संज्ञा पुं० [अं० शोर] तट। किनारा।

मुहा०—सोर पड़ना = (जहाज का) किनारे लगना।

सोर(पु)[६]—संज्ञा पुं० [अ० शोरह्] दे० 'शोरा'। उ०—(क) उड़ै सोर प्याले निराले चमंकैं। घटा जोट मैं दामिनी सो दमंकै।—हम्मीर०, पृ० ३२। (ख) उठै सोर झालाँ अनल, आभ धुआँ अँधियार।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ९८।

सोरठ्ठ—संज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र, प्रा० सोरट्ठ] दे० 'सोरठ'।

सोरठ[१]—संज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र, प्रा० सोरट्ठ] १. भारत का एक प्रदेश जो राजस्थान के दक्षिणपश्चिम पड़ता है। गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम। २. सोरठ देश की राजधानी, सूरत। उ०—नृप इक वीरभद्र अस नामा। सोरठ नगर माँहि तेहि धामा।—विश्राम (शब्द०)।

सोरठ[२]—संज्ञा पुं०, स्त्री० [देश०] ओड़व जाति का एक राग जो हिंडोल का पुत्र कहा गया है।

विशेष—इसमें गांधार और धवत स्वर वर्जित हैं। यह पंचम, भैरवी, गुर्जरी, गांधार और कल्याण के संयोग से बना माना जाता है। इसके गाने का समय रात १६ दंड से २० दंड तक है। कोई सोरठ को षाडव जाति की रागिनी मानते हैं।

मुहा०—खुली सोरठ कहना = खुले आम कहना। कहने में संकोच या भय न करना।

सोरठ मल्लार—संज्ञा पुं० [हिं० सोरठ + मल्लार] संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

सोरठा—संज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र, हिं० सोरठ (देश)] अड़तालीस मात्राओं का एक छंद जिसके पहले और तीसरे चरण में ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह तेरह मात्राएँ होती हैं। इसके सम चरणों में जगण का निषेध है। दोहे को उलट देने से सोरठा हो जाता है। जैसे,—जेहि सुमिरत सिधि होइ, गननायक करिवर वदन। करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धिरासि सुभ गुन सदन। उ०—छंद सोरठा सुंदर दोहा। सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा।—मानस, १।३७।

विशेष—जान पड़ता है, इस छंद का प्रचार अपभ्रंश काल में पहले पहल सोरठ या सौराष्ट्र देश में हुआ था, इसी से यह नाम पड़ा।

सोरठी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोरठ (देश)] एक रागिनी जो सिंधूड़ा और बड़हंस के संयोग से बनी है। हनुमत के मत से यह मेघ राग की पत्नी है।

सोरण[१]—वि० [सं०] कुछ कसैला, मीठा, खट्टा और नमकीन। चर-परा। २. शीतल। ठंढा। ३. रक्तस्राव रोधक (को०)।

सोरण[२]—संज्ञा पुं० दे० 'सोल[१]' [को०]।

सोरन†—संज्ञा पुं० [सं० शूरण] जमीकंद। सूरन।

सोरनी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सँवरना + ई (प्रत्य०)] १. झाड़ू। बुहारी। कूँचा। २. मृतक का एक संस्कार जो तीसरे दिन होता है और

जिसमें उसकी चिता की राख बटोरकर नदी या जलाशय में फेंक दी जाती है। विराति।

सोरबा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शोरबा] दे० 'शोरबा'।

सोरभखी†—संज्ञा स्त्री० [सं० शूरभक्षी] तोप या बंदूक। (डिं०)।

सोरसⓤ—वि० [सं० सुरस] रसीला। सुंदर। दे० 'सरस'। उ०—रंग भूमि को 'कोरस' सोरस कत्र बरसावैं।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४६।

सोरसती‡—संज्ञा स्त्री० [सं० सरस्वती] सरस्वती नदी। विशेष दे० 'सरस्वती'। उ०—गंगा जमुना सोरसती जहाँ अमी का बास। —संत० दरिया०, पृ० ३।

सोरहⓤ‡—वि०, संज्ञा पुं० [सं० षोडश, प्रा० सोलस, सोलह] दे० 'सोलह'। उ०—संवत् सोरह सै इकतीसा। करउँ कथा हरिपद धरि सीसा।—तुलसी (शब्द०)।

सोरहिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोरह + इया (प्रत्य०)] १ दे० 'सोरही'। २. भाद्र शुक्ल अष्टमी (राधाष्टमी) से सोलह दिन तक चलनेवाला लक्ष्मीपूजन एवं व्रतविधान जिसकी समाप्ति आश्विन कृष्ण अष्टमी (जीवत्पुत्रिका या जिउतिया व्रत) के दिन होती हैं। इस दिन स्त्रियाँ २४ घंटे का निर्जल उपवास, व्रत एवं लक्ष्मीपूजन करती हैं। इसे १६ दिन तक चलने के कारण सोरहिया भी कहते हैं। यह व्रत वाराणसी में बहुप्रचलित है जहाँ लक्ष्मीकुंड पर विशाल मेला भी लगता है। दे० 'जिउतिया'।

सोरही†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह + ई (प्रत्य०)] १. जूआ खेलने के लिये सोलह चित्ती कौड़ियों का समूह। २. वह जूआ जो सोलह कौड़ियों से खेला जाता है। ३. कटी हुई फसल की सोलह अँटियों या पूलों का बोझ, जिससे खेत की पैदावार का अंदाज लगाते हैं। जैसे,—फी बीघा सौ सोलही। ४. वैश्यों के कुछ वर्गों में मृतक के लिये उसकी मृत्यु के सोलहवें दिन किया जानेवाला ब्राह्मणभोज आदि कर्म।

सोराⓤ‡—संज्ञा पुं० [फ़ा० शोरह्] दे० 'शोरा'। उ०—सीतलतारु सुगंध की घटै न महिमा मूर। पीनसवारे ज्यौं तजै सोरा जानि कपूर।—बिहारी (शब्द०)।

सोराना†—क्रि० अ० [हिं० सोर (=जड़) से नाम०] जड़ पकड़ना। उ०—तब क्या करोगे मधुवन ! अभी एक पानी और चाहिए। तुम्हारा आलू सोरा कर ऐसा ही रह जायगा ? ढाई रुपए के बिना।—तितली, पृ० ३३।

सोरावास—संज्ञा पुं० [सं०] बिना नमक का मांस का रसा। बिना नमक का शोरबा।

सोराष्ट्रिक—संज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्रिक] दे० 'सौराष्ट्रिक'।

सोरी†—संज्ञा स्त्री० [सं० स्रवण (=बहना या चूना)] बरतन में महीन छेद जिसमें से होकर पानी आदि टपककर बह जाता हो।

सोर्णभ्रू—वि० [सं०] जिसकी दोनों भवों के बीच रोएँ की भँवरी सी हो।

सोर्मि, सोर्मिक—वि० [सं०] लहरों से युक्त। तरंगमय [को०]।

सोलंकी—संज्ञा पुं० [देश०] क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश जिसका अधिकार गुजरात पर बहुत दिनों तक था।

विशेष—ऐसा माना जाता है कि सोलंकियों का राज्य पहले अयोध्या में था जहाँ से वे दक्षिण की ओर गए और वहाँ से फिर गुजरात, काठियावाड़, राजपूताने और बघेलखंड में उनके राज्य स्थापित हुए। उत्तरी भारत में जिस समय थानेश्वर और कन्नौज के परम प्रतापी सम्राट् हर्षवर्धन का राज्य था, उस समय दक्षिण में सोलंकी सम्राट् द्वितीय पुलकेशी का राज्य था, जिससे हर्षवर्धन ने हार खाई थी। रीवाँ का बघेलवंश इसी सोलंकी वंश की एक शाखा है। इस समय सोलंकी और बघेल अपने को अग्निवंशी बतलाते हैं और अपने मूल पुरुष चालुक्य को वशिष्ठ ऋषि द्वारा आबू पर के यज्ञकुंड से उत्पन्न कहते हैं। पर यह बात पृथ्वीराज रासो आदि पीछे के ग्रंथों के आधार पर ही कल्पित जान पड़ती है, क्योंकि विक्रम सं० ६३५ से लेकर १६०० तक के अनेक शिलालेखों, दानपत्रों आदि में इनका चंद्रवंशी और पांडवों का वंशधर होना लिखा है। बहुत दिनों तक इनका मुख्य स्थान गुजरात था।

सोल[१]—वि० [सं०] १. शीतल। ठंढा। २. कसैला, खट्टा और तीता। चरपरा।

सोल[२]—संज्ञा पुं० १. शीतलता। ठंढापन। २. कसैलापन, खट्टापन, तीतापन, चरपापन आदि। ३. स्वाद। जायका।

सोलⓤ†[३]—वि० [सं० षोडश] दे० 'सोलह'। उ०—सुंदर सोल सिंगार सजि गई सरोवर पाल। चंद मुलक्यउ, जल हँस्यउ, जलहर कंपी पाल।—ढोला०, दू० ३६४।

सोल[४]—संज्ञा पुं० [अं०] जूते में लगाने का चमड़े का तल्ला।

सोलपंगो†—संज्ञा पुं० [देशी] केकड़ा। (डिं०)।

सोलपोल†—वि० [हिं० पोल + अनु० सोल] बेफायदा। व्यर्थ का। उ०—ता से सोलपोल तुम लाई। पकरै तो कुछु ज्वाब न आई। —घट०, पृ० १६३।

सोलवाँ†—वि० [हिं० सोलह + वाँ (प्रत्य०) दे० 'सोलहवाँ'।

सोलह[१]—वि० [सं० षोडश, प्रा० सोलस, सोलह] जो गिनती में दस से छह अधिक हो। षोडश।

सोलह[२]—संज्ञा पुं० दस और छह की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।

मुहा०—सोलह आने, सोलहो आने = संपूर्ण। पूरा पूरा। जैसे,—तुम्हारी बात सोलहो आने सही है। उ०—अरे न सोलह आने तो पाई ही सही।—प्रेमघन०, पृ० ४५८। सोलह सोलह गंडे सुनाना = खूब गालियाँ देना।

सोलहनहाँ—संज्ञा पुं० [हिं० सोलह + नहँ (=नख)] वह हाथी जिसके सोलह नख या नाखून हों। सोलह नाखूनवाला हाथी जो ऐबी समझा जाता है।

सोलहवाँ—वि० [हिं० सोलह + वाँ (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सोलहवीं] जिसका स्थान पंद्रहवें स्थान के बाद हो। जिसके पहले पंद्रह और हों।

सोलह सिंगार—संज्ञा पुं० [हिं० सोलह + सिंगार] सिंगार की एक विधि जिसमें १६ उपकरण हैं।

विशेष—इसके अंतर्गत अंग में उबटन लगाना, नहाना, स्वच्छ वस्त्र धारण करना, बाल सँवारना, काजल लगाना

सेंदुर से माँग भरना, महावर लगाना, भाल पर तिलक लगाना, चिबुक पर तिल बनाना, मेंहदी लगाना, सुगंध लगाना, आभूषण पहनना, फूलों की माल पहनना, मिस्सी लगाना, पान खाना और होठों को लाल करना ये सोलह बातें हैं। (विशेष विवरण के लिये 'शृंगार' और 'षोडश शृंगार' शब्द भी देखिए)।

सोलही—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोलह + ई (प्रत्य०)] दे० 'सोरही'।

सोला[1]—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का ऊँचा झाड़।

विशेष—यह प्रायः सारे भारत की दलदली भूमि में पाया जाता है। यह वर्षा ऋतु में फूलता है। इसकी डालियाँ बहुत सीधी और मजबूत होती हैं। सोला हैट नाम की अंग्रेजी ढंग की टोपी इन्हीं डालियों के छिलकों से बनती है।

सोला‡[2]—वि० [हिं० सोलह] दे० 'सोलह'। उ०—बारा कला सोखै सोला कला पोषै। चारि कला साधै अनंत कला जीवै।—गोरख०, पृ० ३१।

सोलाना—क्रि० स० [हिं० सुलाना] दे० 'सुलाना'।

सोलाली—संज्ञा स्त्री० [देश०] पृथ्वी। (डिं०)।

सोलिक—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सोल'।

सोल्लास[1]—वि० [सं०] उल्लासयुक्त। प्रसन्न। आनंदित।

सोल्लास[2]—क्रि० वि० उल्लास के साथ। आनंदपूर्वक।

सोल्लुंठ[1]—वि० [सं० सोल्लुण्ठ] परिहासयुक्त। व्यंग्य, हास्य से युक्त। चुटकी के साथ।

यौ०—सोल्लुंठकथन, सोल्लुंठभाषण, सोल्लुंठभाषित, सोल्लुंठवचन = परिहासयुक्त। व्यंग्य, हास्य से युक्त वाक्य।

सोल्लुंठ[2]—संज्ञा पुं० व्यंग्य। परिहास। चुटकी।

सोल्लुठन—वि०, संज्ञा पुं० [सं० सोल्लुण्ठन] दे० 'सोल्लुंठ'।

सोल्लुठोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं० सोल्लुण्ठोक्ति] परहासयुक्त वचन। व्यंग्योक्ति। दिल्लगी। बोली ठोली। ठट्ठा। चुटकी।

सोल्लेख—क्रि० वि० [सं०] अलग अलग उल्लेखपूर्वक। स्पष्टतः [को०]

सोवज—संज्ञा पुं० [हिं० सावज] दे० 'सावज', 'सौजा'। उ०—जब सोवज पिंजर घर पाया बाज रह्या वन माहीं।—दादू (शब्द०)।

सोवड़†—संज्ञा पुं० [सं० सूतका, प्रा० सूड़आ] वह कोठरी जिसमें स्त्रियाँ बच्चा जनती हैं। सूतिकागार। सौरी।

सोवणी—संज्ञा स्त्री० [सं० शोधनी] बुहारी। झाड़ू। (डिं०)।

सोवनⓅ†[1]—संज्ञा पुं० [सं० स्वपन, प्रा० सोवण, हिं० सोवना] सोने की क्रिया या भाव। उ०—सुरापान करि सोवन जानै। कबहुँ न जान्यो गहन कमानै।—रघुराज (शब्द०)।

सोवनⓅ[2]—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण, प्रा० सोवण्ण, अप० सोवंण] स्वर्ण। सोना। उ०—सुंदरि सोवन वर्ण तसु अहर अलत्ता रंगि। केसरि लंकी खीण कटि कोमल नेत्र कुरंगि।—ढोला०, दू० ८७।

यौ०—सोवनवानी = स्वर्णाभ। सोने के वर्णवाला। सुनहरा। उ०—सोवनवानी घूघरा चालण रइ परियाण।—ढोला०, दू० ३४३। सोवनसिंगी = स्वर्णमंडित शृंगवाली। सोने से मढ़ी सींगोंवाली। उ०—सोवनसिंगी कपिला गाई।—वी० रासो, पृ० २५।

सोवनाⓅ†—क्रि० अ० [सं० स्व प्, प्रा० सुव, सोव + हिं० ना (प्रत्य०)] दे० 'सोना'। उ०—(क) क्योंकरि झूठी मानिये सखि सपने की बात। जो हरि हरयो सोवत हियो सो न पाइयत प्रात।—पद्माकर (शब्द०)। (ख) पंथ थकित मद मुकित सुखित सर सिंधुर जोवत। काकोदर कर कोश उदर तर केहरि सोवत।—केशव (शब्द०)।

सोवनारⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्वपनागार] शयनकक्ष। शयनागार। उ०—औ बड़ जूड़ तहाँ सोवनारा।—जायसी ग्रं०, पृ० १४९।

सोवा—संज्ञा पुं० [हिं० सोआ] एक शाक। दे० 'सोआ'। उ०—साग चना सँग सब चौराई। सोवा अरु सरसों सरसाई।—सूर (शब्द०)।

सोवाक—संज्ञा पुं० [सं०] सुहागा।

सोवाना—क्रि० स० [हिं० सोवना का प्रे० रूप] दे० 'सुलाना'। उ०—प्रभुहि सोवाय समाल उतारी। लियो आपने गल महँ धारी।—रघुराज (शब्द०)।

सोवारी[1]—संज्ञा पुं० [?] पंद्रह मात्राओं का एक ताल जिसमें पाँच आघात और तीन खाली होते हैं। इसका बोल यह है,—

\+ ' ०
धिन धा धिन धा कत तागे दिनतो तेटे कता गदिघेन धा।

सोवारीⓅ‡[2]—संज्ञा स्त्री० [देशी] सवारी। उ०—सोवारी रहट घाट कौ सीस प्रकार पुर विन्यास कथा कहुओ का।—कीर्ति०, पृ० २८।

सोवाल[1]—वि० [सं०] काले या धूँए के रंग का। धुँधला। धूमला।

सोवाल[2]—संज्ञा पुं० धूम्र वर्ण। धुँधला रंग। धुएँ का रंग।

सोवियत—संज्ञा पुं० [रू० सोवियत्] १. रूस का आधुनिक शासनतंत्र। २. रूस में किसी भी प्रदेश, गाँव या जिले की वह सभा जो मजदूरों, सिपाहियों, निर्वाचित प्रतिनिधियों से तैयार की गई हो।

सोवैयाⓅ†—संज्ञा पुं० [हिं० सोवना + इया (प्रत्य०)] सोनेवाला। उ०—धमकै कछु यों भ्रम कै उठि आवै छपावति छाह सोवैयन तें।—(शब्द०)।

सोव्रन, सोव्रन्नⓅ—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण] दे० 'सुवर्ण'। सोना। उदा०—दसै रती सोव्रन के खरीचा।—कबीर सा०, पृ० ८८३।

सोशल—वि० [अं०] १. समाज संबंधी। सामाजिक। जैसे,—सोशल कानफरेंस। २ समाज में मिलने जुलनेवाला। मिलनसार।

सोशलिज्म—संज्ञा पुं० [अं०] दे० 'समाजवाद'।

सोशलिस्ट—संज्ञा पुं० [अं०] 'समाजवादी'।

सोष—वि० [सं०] खारी मिट्टी मिला हुआ। क्षार मृत्तिका से मिश्रित।

सोषक—संज्ञा पुं० [सं० शोषक] १. दे० 'शोषक'। उ०—सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद विधि कीन्ह। ससि पोषक सोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह।—मानस, १।७। २. समाज का वह व्यक्ति या वर्ग जो न्यूनतम पारिश्रमिक एवं सुविधा देकर मजदूरों, मेहनत कश वर्ग का शोषण करता है। आधु०)। विशेष दे० 'शोषक'—६।

सोषण, सोषन(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शोषण] दे० 'शोषण'। उ०—मोहन बसीकरन उच्चाटन। सोषन दीपन थंभन घातन।—गोपाल (शब्द०)।

सोषना(पु)—क्रि० अ० [सं० शोषण] दे० 'सोखना'। उ०—पुनि अंतहकोषं निर्मल चोषं नाँहीं धोषं गुन सोषं।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० २४३।

सोषु, सोषु(पु)—वि० [हिं० सोखना] सोखनेवाला। उ०—दंभ हू कलि नाम कुंभज सोच सागर सोषु।—तुलसी (शब्द०)।

सोऽणीष[1]—संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता में उल्लिखित वास्तु विद्या के अनुसार एक प्रकार का भवन जिसके पूर्व भाग में वीथिका हो।

सोऽणीष[2]—वि० उष्णीषयुक्त। पाग धारण करनेवाला [को०]।

सोऽम[1]—वि० [सं० सोष्मन्] १. ऊष्मा से युक्त। ऊष्म (वर्ण अक्षर)। २. ऊष्ण। गरम। तप्त [को०]।

सोऽम[2]—संज्ञा पुं० उष्म वर्ण।

सोष्यंती—संज्ञा स्त्री० [सं० सोष्यन्ती] वह स्त्री जो प्रसव करनेवाली हो। आसन्नप्रसवा।

सोष्यंती कर्म—संज्ञा पुं० [सं० सोष्यन्ती कर्मन्] आसन्नप्रसवा (प्रसूता) स्त्री के संबंध में किया जानेवाला कृत्य या संस्कार।

सोष्यंती सवन—संज्ञा पुं० [सं० सोष्यन्ती सवन] एक प्रकार का संस्कार।

सोष्यंती होम—संज्ञा पुं० [सं० सोष्यन्ती होम] एक प्रकार का होम जो आसन्नप्रसवा स्त्री की ओर से किया जाता है।

सोस(पु)—संज्ञा पुं० [सं० शोच] दे० 'सोच'। उ०—बार बार यातें कहत यह मेरे जिय सोस। क्यों सैहै सुकुमार वह तुमरौ आतप रोस।—स० सप्तक, पृ० ३६७। (ख) जफा इस अँदेशे का ना सोस कर, कहे मन में यूँ आह अफसोस कर।—दक्खिनी०, पृ० १३६।

सोसन—संज्ञा पुं० [फ़ा० सौसन] फारस की ओर का एक प्रसिद्ध फूल का पौधा जो भारतवर्ष में हिमालय के पश्चिमोत्तर भाग अर्थात् काश्मीर आदि प्रदेशों में भी पाया जाता है।

विशेष—इसकी जड़ में से एक साथ ही कई डंठल निकलते हैं। पत्ते कोमल, रेशेदार, हाथ भर के लंबे, आध अंगुल चौड़े और नोकदार होते हैं। फूलों के दल नीलापन लिए लाल, छोर पर नुकीले और आध अंगुल चौड़े होते हैं। बीजकोश ५ या ६ अंगुल लंबे, छहपहले और चोंचदार होते हैं। हकीमी में इसके फूल और पत्ते औषध के काम में आते हैं और गरम, रूखे तथा कफ और वातनाशक माने जाते हैं। इसके पत्तों का रस सिरदर्द और आँख के रोगों में दिया जाता है। इसे शोभा के लिये बगीचे में लगाते हैं। फारसी के शायर जीभ की उपमा इसके दल से दिया करते हैं।

सोसनी—वि० [फ़ा० सौसन] सोसन के फूल के रंग का। लाली लिए नीला। उ०—(क) सोसनी दुकूलनि दुराए रूप रोसनी है, बूटेदार घाँघरी की घूमनि घुमाइकै। कहै पदमाकर त्यों उन्नत उरोजन पै तंग अँगिया है तनी तननि तनाइकै।—पद्माकर ग्रं०, पृ० १२६। (ख) अंग अनंग की रोसनी मैं सुभ सोसनी चीर चुभ्यो चित चाइन। जाति चली बृज ठाकुर मैं ठमका ठमका ठुमकी ठकुराइन।—पदमाकर ग्रं० १३०।

सोसाइटी, सोसायटी—संज्ञा स्त्री० [अं०] १. समाज। गोष्ठी। जैसे—हिंदू सोसायटी। बंगाली सोसाइटी। २. संगत। सोहबत। जैसे—उसकी सोसायटी अच्छी नहीं है।

सोसि(पु)—पद [सं० सः + असि] सो हो। वह हो। उ०—जोसि सोसि तव चरन नमामी।—मानस, ७।१६१।

सोस्मि(पु)—पद [सं० सः + अस्मि] दे० 'सोऽहमस्मि'। उ०—लिंग शरीर नाम तब पावै। जब नर अजपा में मन लावै। अजपा कि जो सोस्मि उसासा। सुमिरै नाम सहित विश्वासा।—विश्राम (शब्द०)।

सोहं—पद [सं० सोऽहम्] दे० 'सोऽहम्'। उ०—मानन लगे ब्रह्म जिय काहीं। सोहं रटन मची चहुँ घाहीं।—रघुराज (शब्द०)।

सोहंग‡—पद [सं० सोऽहम् + हिं० ग (प्रत्य०)] दे० 'सोऽहम्'। उ०—साधु सजे मिलि बैठे आई। बहु बिधि भक्ति करो चित लाई। कहैं कबीर सुनो भइ साधो। वोहंग सोहंग शब्द अराधो।—कबीर (शब्द०)।

सोहंगम—पद [हिं० सोहंग + म] दे० 'सोऽहम्'। उ०—सुरति सोहंगम डेरि है, अग्र सोहंगम नाम। सार शब्द टकसार है, कोइ बिरले पावै नाम।—कबीर (शब्द०)।

सोहंजि—संज्ञा पुं० [सं० सोहञ्जि] भागवत वर्णित कुंतिभोज के एक पुत्र का नाम।

सोहँ(पु)‡—क्रि० वि० [हिं०] दे० 'सौंह'। उ०—सोहँहु भौंहन ऐंठति है कैसो तुम हिरदय। सुकवि लखी नहिं सुनी बात ऐसी कहुँ निरदय।—व्यास (शब्द०)।

सोहँग(पु)‡—पद [हिं० सोहंग] दे० 'सोऽहम्'। उ०—जब नहिं पाँच अमी निर्मिया, नहिं सोहँग विस्तारा।—कबीर मं०, पृ० १६४।

सोहँगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाग] १. तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म जिसमें लड़केवाले के यहाँ से लड़की के लिये कपड़े, गहने, मिठाई, मेवे, फल, खिलौने, आदि सजाकर भेजे जाते हैं। उ०—अति उत्तम बिचारि कै जोरी। भए मुदित संबंधहि जोरी। भेज्यो तिलक दाम भरि बहँगी। तुमहु सुता हित साजहु सोहँगी।—(शब्द०)।

सोहगी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाग] १. दे० 'सोहँगी'। उ०—कदाचित् बारात वा सोहगी निकलने का समय है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ११६। २. सिंदूर, मेंहदी आदि सुहाग की वस्तुएँ।

सोहगैला†—संज्ञा पुं० [हिं० सुहाग या सोहाग + ऐला (प्रत्य०)] [स्त्री० सोहगैली] लकड़ी की कंगूरेदार डिबिया जिसमें विवाह के दिन सिंदूर भरकर देते हैं। सिंदूरा।

सोहड़‡—संज्ञा, पुं० [सं० सुभट; प्रा० सुहड़; राज० सोहड] दे० 'सुभट'। उ०—पिंगल बोलावा दिया, सोहड सो असवार।—ढोला०, दू० ५६७।

सोहरा‌ⓤ‡—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न, प्रा० सोहरा] दे० 'स्वप्न'। उ०—सोहरा याई फर गया मईं सर भरिया रोइ। ग्राव सोहागरा नीदड़ी बलि प्रिय देखूँ सोइ।—ढोला०, दू० ५१०।

सोहरा‡—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न, प्रा० सुहिरा] सपना। स्वप्न। उ०—(क) जउ सोहरो साचेइ होग्रइ सोहरो बड़ी बसत्त। —ढोला०, दू० ५०६।

सोहदा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शुहदह] दे० 'शोहदा'।

सोहन¹—वि० [सं० शोभन, प्रा० सोहरा] [वि० स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला। सुंदर। सुहावना। मनभावना। मनोहर। उ०—(क) तहँ मोहन सोहन राजत हैं। जिमि देखि मनोभव लाजत हैं। (ख) हीर जराऊ मुकुट सीस कंचन को सोहन।—गोपाल (शब्द०)। (ग) चित चोरना बिबि खंभ बातक रतन डाँडी सोहनी।—नंद० ग्रं०, पृ० ३७५।

सोहन²—संज्ञा पुं० सुंदर पुरुष। नायक। उ०—प्यारी की पीक कपोल में पीके बिलोकि सखीन हँसी उमड़ी सी। सोहन सौंह न लोचन होत सुलोचन सुंदरि जाति गड़ी सी।—देव (शब्द०)।

सोहन³—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक बड़ी चिड़िया जिसका शिकार करते हैं।

विशेष—यह बिहार, उड़ीसा, छोटा नागपुर और बंगाल को छोड़ हिंदुस्तान में सर्वत्र पाई जाती है। यह कीड़े, मकोड़े, अनाज, फल, घास के अंकुर आदि सब कुछ खाती है। पूँछ से लेकर चोंच तक इसकी लंबाई डेढ़ हाथ तक होती है और वजन भी बहुत भारी, प्रायः दस सेर तक, होता है। इसका मांस बहुत स्वादिष्ट कहा जाता है।

सोहन⁴—संज्ञा पुं० एक बड़ा पेड़ जो मध्यभारत तथा दक्षिण के जंगलों में बहुत होता है।

विशेष—इसके हीर की लकड़ी बहुत कड़ी, मजबूत, चिकनी, टिकाऊ तथा ललाई लिए काले रंग की होती है। यह मकानों में लगती है तथा मेज, कुरसी आदि सजावट के सामान बनाने के काम में आती है। सोहन शिशिर में झाड़ पत्ते देनेवाला पेड़ है। इसे रोहन और सूमी भी कहते हैं।

सोहन⁵—संज्ञा पुं० [फ़ा० सोहान] एक प्रकार की बढ़इयों की रेती या रंदा।

यौ०—तिकोनिया सोहन = तीन कोने की रेती।

सोहन चिड़िया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहन + चिड़िया] दे० 'सोहन'-३।

सोहन पपड़ी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहन + पपड़ी] एक प्रकार की मिठाई जो जमे हुए कतरों के रूप में होती है।

सोहन हलवा—संज्ञा पुं० [हिं० सोहन + अ० हलवा] एक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई जो जमे हुए कतरों के रूप में और घी से तर होती है।

सोहना¹—क्रि० अ० [सं० शोभन, प्रा० सोहरा] १. शोभित होना। सुंदरता के साथ होना। सजना। उ०—(क) नासिक कीर, कँवल मुख सोहा। पदमिनि रूप देखि जग मोहा।—जायसी (शब्द०)। (ख) काक पच्छ सिर सोहत नीके।—तुलसी (शब्द०)। (ग) रत्न जटित कंकन बाजूबंद नगन मुद्रिका सोहै।—सूर (शब्द०)। (घ) सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलोने गात।—बिहारी (शब्द०)। २. अच्छा लगना। उपयुक्त होना। फबना। जैसे,—(क) यह टोपी तुम्हारे सिर पर नहीं सोहती। (ख) ऐसी बातें तुम्हें नहीं सोहतीं। उ०—(क) यह पाप क्या हम लोगों को सोहता है।—प्रताप (शब्द०)। (ख) ऐसी नीति तुम्हैं नहिं सोहत।—गोपाल (शब्द०)।

सोहना†²—वि० [वि० स्त्री० सोहनी] १. सोहन। सुहावना। शोभायुक्त। उ०—को है सरद ससि मुख रहे लसि चपल नैना सोहना। —नंद० ग्रं०, पृ० ३७५। २. सुंदर। मनोहर। जैसे,—सोहनी लकड़ी, सोहना बगीचा।

सोहना³—क्रि० स० [सं० शोधन, प्रा० सोहरा] खेत में उगी घास निकालकर अलग करना। निराना।

सोहना⁴—संज्ञा पुं० [फ़ा० सोहान] कसेरों का एक नुकीला औजार जिससे वे घरिया या कुठाली में, साँचे में गली धातु गिराने के लिये, छेद करते हैं।

सोहनाइत‡—संज्ञा पुं० [देशी] एक ओहदा या पद। उ०—गोसावित्र माझिहे—रनाहे—मलिकूह सोहनाइत महामालिक वोनओ, अगुञाडी।—वर्ण०, पृ० २।

सोहनी¹—संज्ञा स्त्री० [सं० शोधनी] १. झाड़ू। बुहारी। सरहट। २. खेत में से उगी घास खोदकर निकालने की क्रिया। निराई।

सोहनी²—वि० स्त्री० [हिं० सोहना] सुंदर। सुहावनी। मनभावनी। उ०—साँवरी सी रही सोहनी सूरति हेरत को जुवती नहिं मोहैं?—सुंदरीसर्वस्व (शब्द०)।

सोहनी³—संज्ञा स्त्री० सोहिनी नाम की रागिनी।

सोहबत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संग साथ। संगत। २. संभोग। स्त्रीप्रसंग।

सोहबती—वि० [फ़ा०] संगी। साथी। सोहबतवाला।

सोहमस्मि—पद [सं० सः + अहम् + अस्मि, सोऽहमस्मि] दे० 'सोऽहमस्मि'। उ०—सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा। दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा।—तुलसी (शब्द०)।

सोहर¹—संज्ञा पुं० [सं० सूतिगृह। हिं० सोहना, सोहला] १. एक प्रकार का मंगलगीत जो स्त्रियाँ घर में बच्चा पैदा होने पर गाती हैं। सोहला। उ०—रानि कौसिला ढोटा जायो रघुकुल कुमुद जुन्हैया। सोहर सोर मनोहर नोहर माचि रह्यौ चहुँ घैया।—रघुराज (शब्द०)। २. मांगलिक गीत। उ०—कौसिल्यै सीतैं करि आगे। चलीं अवध मंदिर अनुरागे। सहसन संग सहचरी भावैं। महामनोहर सोहर गावैं।—रघुराज (शब्द०)।

सोहर²—संज्ञा स्त्री० [सं० सूतका; अथवा सं० सूतिगृह, सूतागृह; प्रा० सुइहर, सूआहर] सूतिकागृह। सौंड़। सौरी।

सोहर³—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. नाव के भीतर की पाटन या फर्श। २. नाव का पाल खींचने की रस्सी।

सोहरना†—क्रि० अ० [सं० सु + √स्तृ > स्तर, स्तार] ऊपर से नीचे तक फैलकर लटकना। फैल जाना। फैलना। विस्तृत होना। जैसे,—पहिरे के आँटे न सोहरा जाय (लोकोक्ति)।

सोहराⓤ†¹—वि० [सं० शोभन] शोभायुक्त। उपयुक्त। अच्छा। उ०—लेखा देणाँ सोहरा, जे दिल साँचा होइ। उस चंगे दीवांन मैं पला न पकड़ै कोइ।—कबीर ग्रं०, पृ० ४२।

सोहरा†[2]—वि० [सं० शोभित, प्रा० सोहिर] शोभनेवाला। सुखी। उ०—वे इकोतरासई सबनि कौं ताही तें भये सोहरा। ऊँचौ महल रच्यौ अविनाशी तज्यौ परायौ नोहरा।—सुंदर० ग्रं०, भा० २, पृ० ६१४।

सोहराना[1]—क्रि० स० [हिं० सहलाना] दे० 'सहलाना'। उ०—कुचन्ह लिहे तरवा सोहराई। भा जोगी कोउ संग न लाई।—जायसी (शब्द०)।

सोहराना†[2]—क्रि० स० [हिं० सोहराना] किसी वस्तु को फैलाना या नीचे तक लटकाना।

सोहला—संज्ञा पुं० [हिं० सोहना] १. वह गीत जो घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती हैं। उ०—गौरि गनेस मनाऊँ हो देवी सारद तोहि। गाऊँ हरि जू को सोहलो मन और न आवै मोहि।—सूर (शब्द०)। २. मांगलिक गीत। उ०—डोमनियों के रूप में सारंगियाँ छेड़ छेड़ सोहले गावो।—इंशाअल्ला (शब्द०)। ३. किसी देवी देवता की पूजा में गाने का गीत। जैसे,—माता के सोहले।

सोहलो†—संज्ञा पुं० [अ० सुहैल] तारा की आकृति का ललाट पर पहनने का एक आभूषण। उ०—भुमुहाँ ऊपर सोहलो, परिठिउ जाँण क चंग। ढोला एही मारुवी, नव नेही नव रंग।—ढोला०, दू० ४६५।

सोहाइनⓅ‡—वि० [हिं०] दे० 'सुहावना'। उ०—सँग गाउँ को गोधन ले सिगरो रघुनाथ भरे मन चाइन में। नहिं जानि ये जात रहे कितको बन भीतर कुंज सोहाइन में।—रघुनाथ (शब्द०)।

सोहाईⓅ[1]—वि० स्त्री० [हिं० सोहाना का कृदंत रूप] दे० 'सोहाया'।

सोहाई†[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहना] १. खेत में उगी घास निकालने का काम। निराई। २. इस काम की मजदूरी।

सोहाओन‡—वि० [हिं० सुहावन, सोहावन] [वि० स्त्री० सोहाउनी] दे० 'सुहावन'। उ०—(क) अछल सोहाओन कितए गेल, भूसन कएले दूसन भेल।—विद्यापति, पृ० ३१७। (ख) बिरह सोस भेले भल हो अधर देले रौप सुहाउनि छाया।—विद्यापति, पृ० २२५।

सोहाग†[1]—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य, प्रा० सोहग्ग] १. दे० 'सुहाग'। उ०—(क) धाइ सो पूछति बातैं बिनै की सखीनि सों सीखै सोहाग की रीतहिं।—देव (शब्द०)। (ख) लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग। हृदय असीसहिं प्रेमबस रहिहहु भरो सोहाग।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—देना।—लेना। उ०—तुम तो ऐसा धमकाते हो जैसे हम राजा साहब के हाथों बिक गए हों। रानी रूठेंगी, अपना सोहाग लेंगी। अपनी नौकरी ही न लेंगे, ले जायँ।—काया०, पृ० २२२।

२. एक प्रकार का मांगलिक गीत। उ०—गावत सबै सोहाग छबीली मिलि सब बृज की बाम।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ४४४।

सोहाग[2] संज्ञा पुं० [हिं० सुहागा] दे० 'सुहागा'।

सोहाग[3]—संज्ञा पुं० [देश०, तुल० सं० सौभाग्य] मझोले आकार का एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष।

विशेष—इस वृक्ष के पत्ते बहुत लंबे लंबे होते हैं। यह आसाम, बंगाल, दक्षिणी भारत और लंका में पाया जाता है। इसके बीजों से एक प्रकार का तेल निकलता है जो जलाया और ओषधि के रूप में काम में लाया जाता है। इसे हीरन हर्रा भी कहते हैं।

२. एक प्रकार का नमकीन पक्वान्न। दे० 'सुहाल'।

सोहागा[1]—संज्ञा पुं० [सं० समभाग, प्रा० सवँहाग] जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। मैंड़ा। हेंगा।

सोहागा[2]—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सुहागा'। उ०—कहि सत भाउ भएउ कँठलागू। जनु कंचन मों मिला सोहागू।—जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० ३३४।

सोहागिन†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहागिन] दे० 'सुहागिन'। उ०—अति सप्रेम सिय पायँ परि बहु बिधि देहिं असीस। सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लग महि अहि सीस।—तुलसी (शब्द०)।

सोहागिल—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाग + इल (प्रत्य०)] दे० 'सुहागिन'। उ०—सिय पद सुमिरि सुतीय पहि तस गुन मंगल जानु। स्वामि सोहागिल भागु बड़ पुत्र काजु कल्यानु।—तुलसी (शब्द०)।

सोहाता—वि० [हिं० सोहना] [वि० स्त्री० सोहाती] सुहावना। शोभित। सुंदर। अच्छा। उ०—माधुरी मूरत देखे बिना पद्माकर लागै न भूमि सोहाती।—पद्माकर (शब्द०)।

सोहान—संज्ञा पुं० [फ़ा०] रेतने का औजार। रेती [को०]।

सोहाना[1]—क्रि० अ० [सं० शोभन, प्रा० सोहण] १. शोभित होना। शोभायमान होना। सुंदरता के साथ होना। सजना। उ०—(क) आवहिं झुंड सो पाँतिहि पाँती। गवन सोहाइ सो भाँतिहि भाँती।—जायसी (शब्द०)। (ख) गोरे गात कपोल पर अलक अडोल सोहाय।—मुबारक (शब्द०)। (ग) बन उपबन सर सरित सोहाए।—तुलसी (शब्द०)। २. रुचिकर होना। अच्छा लगना। प्रिय लगना। रुचना। जैसे,—तुम्हारी बातें हमें नहीं सोहातीं। उ०—(क) भएउ हुलास नवल ऋतु माँहाँ। खन न सोहाइ धूप औ छाहाँ।—जायसी (शब्द०)। (ख) पिय बिनु मनहिं अटरिया मोहिं न सोहाइ।—रहीम (शब्द०)। (ग) राम सोहाता तोहि तौ तू सबहिं सोहातो।—तुलसी (शब्द०)।

सोहाना[2]—संज्ञा पुं० वि० सुहावना। सुंदर। मनोहर। उ०—साहि तनै सिव साहि निसा मैं निसाँक लियो गढ़ सिंह सोहानो।—भूषण ग्रं०, पृ० ७२।

सोहाया—वि० [हिं० सोहाना का कृदंत रूप] [वि० स्त्री० सोहाई] शोभित। शोभायमान। सुंदर। उ०—(क) सरद सोहाई आई राति। दस दिसि फूलि रही बनजाति।—सूर (शब्द०)। (ख) एहि प्रकार बल मनहिं देखाई। करिहउँ रघुपति कथा सोहाई।—तुलसी (शब्द०)।

सोहायोⓅ†—वि० [हिं० सोहाया] दे० 'सोहाया'।

सोहारदⓅ‡—संज्ञा पुं० [सं० सौहार्द] दे० 'सौहार्द'।

सोहारी†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाना (= रुचना) अथवा सं० सु + √स्तृ > स्तर, स्तार] पूरी। उ०—(क) मोती चूर मूर के मोदक ओदक की उजियारी जी। समई सेव सैंजना सूरन सोवा सरस सोहारी जी।—विश्राम (शब्द०)। (ख) लुचुई पूरि सोहारी परी। एक ताती औ सुठि कोंवरी। —जायसी ग्रं० (गुप्त), पृ० ३१३।

सोहाल—संज्ञा पुं० [हिं० सुहाल] दे० 'सुहाल'।

सोहाली[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० शोभावलि ?] ऊपर के दाँतों का मसूड़ा। ऊपरी दाँतों के निकलने की जगह।

सोहाली†[2]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहारी] दे० 'सुहारी'।

सोहावन⑤†—वि० [हिं० सुहावना] दे० 'सुहावना'। उ०—(क) दंडक बनु प्रभु कीन्ह सोहावन। जनमन अमिति नाम किय पावन।—तुलसी (शब्द०)। (ख) कुहकहिं मोर सोहावन लागा। होइ कुराहर बोलहिं कागा।—जायसी ग्रं०, पृ० ११।

सोहावना[1]—वि० [हिं० सुहावना] दे० 'सुहावना'।

सोहावना[2]—क्रि० अ० [सं० शोभन] दे० 'सोहाना'। उ०—(क) कज्जल सो रंग मोहैं सज्जल जलद जोहि उज्जल बरन बर रदन सोहावने।—गोपाल (शब्द०)। (ख) वीर लै कमान हाथ मोद सा फिरावते। गावते बजावते सोहावते देखावते। —गोपाल (शब्द०)।

सोहासित⑤—वि० [सं० सुभाषित (= सुंदर वचन); अथवा हिं० सोहाना (= रुचना)] १. प्रिय लगनेवाला। रुचिकर। २. ठकुरसोहाती। उ०—राजसूय ह्वैहै नहिं तेरी। मानहु हंस बात सति मेरी। वैसे कहौ सोहासित भाखैं। पै मन महँ संका हठि राखैं।—रघुराज (शब्द०)।

सोहिं‡—क्रि० वि० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'। उ०—वेदवती दशशीश ते कह्यौ रहै मैं तोहि। तव पुर पैठि विनाशिहैं। हेतु गई तेहि सोहि।—विश्राम (शब्द०)।

सोहिण, सोहीण⑤†—संज्ञा पुं० [सं० स्वप्न, प्रा० सुहिणा, सोहणा] स्वप्न। उ०—जो हूँ सोहणइँ जाणता साँच।—बी० रासा०, पृ० ६५।

सोहिनी[1]—वि० स्त्री० [हिं० सोहना] सुहावनी। शोभायमान सुंदर। उ०—संग लोने बहु अच्छोहिनी। गज रथ तुरगन्ह सोहिनी। गोपाल (शब्द०)।

सोहिनी[2]—संज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी।

विशेष—यह षाड़व जाति की है और इसमें पंचम वर्जित है। कोई इसे भैरो राग की और कोई मेघ राग की पुत्रवधू मानते हैं। हनुमत के अनुसार यह मालकोस राग की पत्नी है। इसके गाने का समय रात्रि २६ दंड से २९ दंड तक है।

सोहिनी[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० शोधनी] झाड़ू। बुहारी।

सोहिल—संज्ञा पुं० [अ० सुहैल] एक तारा जो चंद्रमा के पास दिखाई पड़ता है। अगस्त्य तारा। उ०—(क) हीर फूल पहिरे उजियारा। जनहु सरद ससि सोहिल तारा।—जायसी (शब्द०)। (ख) सोहिल सरिस उवौं रन माहीं। कटक घटा जेहि पाइ उड़ाहीं। —जायसी (शब्द०)।

सोहिला—संज्ञा पुं० [हिं० सोहला] दे० 'सोहला'। उ०—(क) आजु इंद्र अछरी सौं मिला। सब कैलास होहि सोहिला —जायसी (शब्द०)। (ख) सहेली सुनु सोहिलो रे —तुलसी (शब्द०)। (ग) सदन सदन शुभ सोहिलो सुहावनी तें गाइ उठीं भाइ उठीं क्षण क्षिति छै गए। —रघुराज (शब्द०)। (घ) सुख सोहिले मनाऊँ सदा। या ब्रज यह आनंद संपदा। —घनानंद, पृ० ३०३।

सोहीं—क्रि० वि० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह, हिं० सौंह] सामने। आगे। उ०—उग्रसन का स्वरूप बन रानी के सोहीं जा बोला—तू मुझसे मिल। —लल्लू (शब्द०)।

सोहैं⑤†[1]—क्रि० वि० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह', 'सौहैं'।

सोहैं⑤[2]—क्रि० वि० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह, हिं० सौहैं] सामने। आगे। उ०—घूँघट में मुसकै भरै सासैं ससैं मुख नाहके सोहैं न खोलैं।—वेनी (शब्द०)।

सोहौटी—संज्ञा स्त्री० [देश०] ६ या ७ इंच चौड़ी एक लकड़ी जो 'अपती' के सामने 'लेवा' के नीचे नाव की लंबाई में लगाई जाती है। (मल्लाह)।

सौंदर्ज—संज्ञा पुं० [सं० सौन्दर्य] दे० 'सौंदर्य'। उ०—नयन कमल कल कुंडल काना। बदन सकल सौंदर्ज निधाना।—तुलसी (शब्द०)।

सौंदर्य, सौंदर्य्य—संज्ञा पुं० [सं० सौन्दर्य, सौन्दर्य्य] सुंदर होने का भाव या धर्म। सुंदरता। रमणीयता। खूबसूरती। जैसे,—युवती का सौंदर्य, नगर का सौंदर्य। उ०—उज्वल वरदान चेतना का, सौंदर्य जिसे सब कहते हैं।—कामायनी, पृ० १०२।

यौ०—सौंदर्यगर्विता = अपने सौंदर्य के गर्व से भरी हुई। जिसे अपनी सुंदरता का अभिमान हो (स्त्री)। उ०—सौंदर्यगर्विता सरिता के अति विस्तृत वक्षस्थल में।—अपरा, पृ० १४। सौंदर्यप्रिय = जिसे सौंदर्य प्रिय हो। सौंदर्यप्रेम = रमणीयता के प्रति अनुराग।

सौंदर्यता—संज्ञा स्त्री० [सं० सौन्दर्य + ता (प्रत्य०)] सुंदरता। रमणीयता। खूबसूरती। उ०—उस समय की सौंदर्यता का क्या पूछना।—अयोध्यासिंह (शब्द०)।

विशेष—व्याकरण के नियम से 'सौंदर्यता' शब्द अशुद्ध है। शुद्ध रूप सौंदर्य या सुंदरता ही है।

सौंदर्यबोध—संज्ञा पुं० [सं० सौन्दर्यबोध] दे० 'सौंदर्यानुभूति'। उ०—रवींद्र तथा सरोजनी नायडू की कविताओं से उनके भीतर एक नवीन प्रकार के अस्पष्ट सौंदर्यबोध तथा माधुर्य का जन्म हुआ।—युगांत, पृ० (ङ)।

सौंदर्यवाद—संज्ञा पुं० [सं० सौन्दर्य + वाद] वह साहित्यिक विधा जिसमें प्रकृतिसौंदर्य को प्रमुखता दी गई हो। उ०—पंत जी का सौंदर्यवाद ही उनके प्रारंभिक रचनाकाल में उन्हें व्याकरण की कड़ियाँ तोड़ने के लिये बाध्य करता रहा है।—हिं० का० प्र०, पृ० २११।

सौंदर्यशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं० सौन्दर्य + शास्त्र] सौंदर्यसंबंधी शास्त्र। (अं० एइस्थेटिक्स)। उ०—कुछ दिन पहले जब विदेश के सौंदर्यशास्त्र का छायाप्रभाव हिंदी पर पड़ा।—आचार्य०, पृ० १३२।

सौंदर्यानुभूति—संज्ञा स्त्री० [सं० सौन्दर्यानुभूति] प्राकृतिक सुंदरता के अवलोकन एवं विवेचन से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान या अनुभव। उ०—वह अपनी सौंदर्यानुभूति को बरबस कविता का रूप प्रदान कर देता है।—हिं० का० प्र०, पृ० १३५।

सौं(पु)[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंह] दे० 'सौंह'। उ०—(क) सुंदर स्याम हँसत सजनी सों नंद बबा की सौं री।—सूर (शब्द०)। (ख) बाभन की सौं बबा की सौं मोहन मोह गऊ की सौं गोरस की सौं।—देव (शब्द०)। (ग) मारे लात तोरे गात भागे जात हा हा खात कहैं तुलसी सराषि राम की सौं टेरि कै।—तुलसी (शब्द०)।

सौं[2]—अव्य० [हिं०] दे० 'सों' या 'सा'। उ०—याही तें यह आदरें जगत माँहि सब कोइ। बोले जबै बुलाइए अनबोले चुप होइ। हुक्का सौं कहु कौन पै जात निबाहो साथ। जाकी स्वासा रहत है लगी स्वास के साथ।—रसनिधि (शब्द०)।

सौं[3]—प्रत्य० [हिं०] दे० 'सों' या 'सें' उ०—लै बाम बाहुबल ताहि राखत कंठ सौं खसि खसि परै। तिमि धरे दक्षिन बाहु कोहूँ गोद में बिच लै गिरै।—हरिश्चंद्र (शब्द०)।

सौंकारा, सौंकेरा†—संज्ञा पुं० [सं० सकाल] प्रातःकाल। सबेरा। तड़का।

सौंकेरे‡ क्रि० वि० [सं० सकाल या सु + काल, पु० हिं० सकारे] १. तड़के। सबेरे। २. समय से कुछ पहले। जल्दी।

सौंघा[1]—वि० [सं० सु + अर्घ] सस्ता।

सौंघा†[2]—वि० [सं० सुगन्धित] सुगंध युक्त। उ०—केसर सौंधे बसन, सकल उमरावन सज्जे।—ह० रासो, पृ० १२५।

सौंघाई—संज्ञा स्त्री० [सं० समर्घता या हिं० सौंघा ?] अधिकता। बहुतायत। ज्यादती। उ०—काक कंक लेइ भुजा उड़ाहीं। एक ते छीन एक लेइ खाहीं। एकं कहहिं ऐसिउ सौंघाई। सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई।—तुलसी (शब्द०)।

सौंधी—वि० [सं० सुभग] १. अच्छा। उ०—जौ चितवति सौंधी लगै चितइऐ सबेरे। तुलसीदास अपनाइऐ कीजै न ढील अब जीवन नित नेरे।—तुलसी (शब्द०)। २. उचित। ठीक।

सौंचन†—संज्ञा स्त्री० [सं० शौच] मलत्याग। शौच।

सौंचना†—क्रि० सं० [सं० शौच] १. शौच करना। मलत्याग करना। २. मल त्याग के उपरांत हाथ पैर आदि धोना।

सौंचर—संज्ञा पुं० [सं० सौवर्चल] दे० 'सोंचर नमक'। उ०—सज्जी सौंचर सैंवर सोरा। सांखाहूली सीप सकोरा।—सूदन (शब्द०)।

सौंचर नमक—संज्ञा पुं० [हिं० सौंचर + नमक] दे० 'सोंचर नमक'।

सौंचाना—क्रि० सं० [हिं० सौंचना का प्रे० रूप] शौच कराना। मलत्याग कराना। हगाना। उ०—काची रोटी कुच कुची परती माछी बार। फूहर वही सराहिए परसत टपकै लार। परसत टपकै लार झपटि लरिका सौंचावे। चूतर पोछै हाथ दोऊ कर सिर खजुवावै।—गिरिधर (शब्द०)।

सौंज(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौज] दे० 'सौज'। उ०—(क) हरि को दर्शन करि सुख पायो पूजा बहु बिधि कीन्हीं। अति आनद भए तन मन में सौंज बहुत विधि दीन्ही।—सूर (शब्द०)। (ख) आए नाथ द्वारका नीके रच्यो माँडचो छाय। ब्याह केलि विधि रची सकल सुख सौंज गनी नहिं जाय।—सूर (शब्द०)। (ग) बिनती करत गोविंद गोसाईं। दै सब सौंज अनंत लोक पति निपट रंक की नाईं।—सूर (शब्द०)।

सौंजाई(पु)—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंज + आई (प्रत्य०)] सौंज। सामग्री। उ०—स्याम भजन बिनु कौन बड़ाई ? बल, बिद्या, धन, धाम, रूप गुन और सकल मिथ्या सौंजाई।—सूर०, १२४।

सौंड़, सौंड़ा†—संज्ञा पुं० [हिं० सोना + ओढ़ना या सं० शुण्ड (= सूँड़ की तरह लंबा या भारी)] ओढ़ने का भारी कपड़ा। जैसे,—रजाई, लिहाफ आदि।

सौंडी—संज्ञा स्त्री० [सं० सौण्डी] पीपल। पिप्पली। शौंडी।

सौंण†—संज्ञा पुं० [सं० शकुन; प्रा० सउण, हिं० सगुन] शकुन। शुभ।

मु०—सौंण बँदाना = शकुन बंदाना। एक रीति जिसमें सबेरे कोई पक्षी (नीलकंठ आदि) लेकर सामने आते हैं। उ०—एक बासउँ औ (र) बाटइ बसउँ। उठी प्रभातै सौंण बंदाई।—वी० रासो, पृ० १३।

सौंतना(पु)†—क्रि० स० [सं० समावर्तन, प्रा० समावट्टण] १. जमा करना। इकट्ठा या संचित करना। २. तलवार आदि को म्यान से बाहर खींचना। दे० 'सैंतना'।

सौंतुख(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० सम्मुख] प्रत्यक्ष। संमुख। उ०—दृग भौंर से ह्वै कै चकोर भए जेंहि ठौर पै पायो बड़ो सुख है। लहरैं उठै सौरभ की सुखदा मच्यो पून्यो प्रकास चहूँ रुख है। ठगि से रहे सेवक स्याम लखे सपनो है किधौं यह सौंतुख है। बन अंबर में अरबिंद किधौं सुचि इंदु कै राधिका को मुख है।

सौंतुख[2]—क्रि० वि० आँखों के आगे। प्रत्यक्ष। सामने। उ०—तेरी परतीति न परत अब सौंतुख हू छयल छबीले मेरी छुवै जनि छहियाँ। राति सपने मैं जनु बैठि मैं सदन सूने मदन गोपाल, तुम गहि लीन्हीं बहियाँ।—तोष (शब्द०)। (ख) मकु तुव भाग जागि कै जाई। सौंतुख हाथ चढ़ कहुँ आई।—चित्रा०, पृ० ५६।

सौंदन—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंदना] धोबियों का वह कृत्य जिसमें वे कपड़ों को धोने से पहले रेह मिले पानी में भिगोते हैं। उ०—नैहर में दाग लगाय आइ चुनरी।…मन को कूँडी ज्ञान को सौंदन साबुन महँग बिचाय या नगरी।—कबीर० श०, भा० १, पृ० २३।

सौंदना—क्रि० स० [सं० सन्धम् (= मिलना)] आपस में मिलाना। सानना। ओतप्रोत करना। आप्लावित करना। उ०—(क)

ये उस अज्ञता के कीचड़ के बाहर न होंगे, दक्षिणा के लोभ से उसी में सौंदे पड़े रहेंगे।—बालकृष्ण (शब्द०)। (ख) सतसंगत में सौंद ज्ञान साबुन दीजै।—पलटू० बा०, पृ० १३।

सौंध(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० सौध] दे० 'सौध'। उ०—(क) नृप संध्या विधि वंदि राग वारुणी अधर रचि, मंदिर गयो अनंदि खंड सातये सौंध पर।—गुमान (शब्द०)। (ख) एक महातरु हेरि बहेरो। सौंध समीप रहै नल केरो।—गुमान (शब्द०)।

सौंध[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० सुगन्ध] सुगंध। खुशबू। उ०—सौंध सी सनियै लसै बिच बीच मोतिन की कली।—गुमान (शब्द०)।

सौंधना[1]—क्रि० स० [हिं० सौंदना] दे० 'सौंदना'।

सौंधना[2]—क्रि० स० [सं० सुगन्ध, प्रा० सुअंध, पु०हिं० सौंध + हिं० ना (प्रत्य०)] सुगंधित करना। सुवासित करना। बासना।

सौंधा[1]—संज्ञा पुं० [सं० सुगन्ध, प्रा० सुअंध] दे० 'सौंधा'। उ०—(क) सौंधे की सी सौंधी देह सुधा सों सुधारी पाँवधारी देवलोक ते कि सिंध ते उबारी सी।—केशव (शब्द०)। (ख) कंचुकी चोवा के सौंधे सों बोरि कै स्याम सुगंधन देह भरी है। —पद्माकर (शब्द०)। (ग) सौंधे सनी सुथरी बिथुरी अलकै हरि के उर आली।—बेनी (शब्द०)। (घ) गंधी को सौंधो नहीं, जन जन हाथ बिकाय।—नंद० ग्रं०, पृ० १३३। (ङ) तिल तालिब गुल पीर मिलि सुहबति सौंधा होय।—रज्जब०, पृ० ८।

सौंधा[2]—वि० १. दे० 'सोंधा'। उ०—सुठि सौंधे औवर्न, जनक सुख युक्त घरी के। सकल मनोहरता वारे प्यारे सबही के।—श्रीधर (शब्द०)। २. रुचिकर। अच्छा। उ०—जौं चितवन सौंधी लगै चितइए सबेरे।—तुलसी (शब्द०)।

सौंनमक्खि(पु), **सौंनमक्खी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोनामक्खी सं० स्वर्णमक्षिका] दे० 'सोनामक्खी'। उ०—सौंनमक्खि संखिया सुहागा। सूल सम्हालू सबरस सागा।—सूदन (शब्द०)।

सौंनी—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण] स्वर्णकार। सुनार।

सौंपना—क्रि० स० [सं० समर्पण, प्रा० सउप्पण] १. किसी व्यक्ति या वस्तु को दूसरे के अधिकार में करना। सुपुर्द करना। हवाले करना। जिम्मे करना। समर्पण करना। जैसे,—(क) मैं इस लड़के को तुम्हें सौंपता हूँ, इसे तुम अपनी देखभाल में रखना। (ख) सरकार ने उन्हें एक महत्व का काम सौंपा। (ग) जहाँ लड़के ने होश सँभाला, बाप ने उसे अपना घर सौंपा। (घ) लोगों ने उसे पकड़कर पुलिस को सौंप दिया। उ०—(क) चितचोरन कर सौंप चित अब काहे पछताइ।—रसनिधि (शब्द०)। (ख) जब लग सीस न सौंपिए तब लग इस्क न होइ।—दादू (शब्द०)। (ग) सो सौंपि सुत कौं राज नृप तप करन हिमगिरि कौं गए।—पदमाकर (शब्द०)। (घ) उन हरकी हँसि कै उतै इन सौंपी मुसकाय। नैन मिले मन मिलि गयौ दोऊ मिलवत गाय।—बिहारी (शब्द०)। (च) सौंपे भूप रिषिहि सुत बहु बिधि देइ असीस। जननी भवन गए प्रभु, चले नाइ पद सीस।—तुलसी (शब्द०)। (छ) चंचल चरित्र चित चेटिकी चेटका गायो चोरी कै चितन अभिसार सौंपियतु है।—केशव (शब्द०)। (ज) स्याम बिना ये चरित करै को यह कहि क तनु सौंपि दई।—सूर (शब्द०)।

क्रि० प्र० —देना।

२. सहेजना।

सौंफ—संज्ञा स्त्री० [सं० शतपुष्पा] १. औषध और मसाले आदि में प्रयुक्त होनेवाला पाँच छह फुट ऊँचा एक पौधा और उसके फल जिसकी खेती भारत में सर्वत्र होती है।

विशेष—इस पौधे की पत्तियाँ सोए की पत्तियों के समान ही बहुत बारीक और फूल सोए के समान ही कुछ पीले होते हैं। फूल लंबे सींकों में गुच्छों के रूप में लगते हैं। फल जीरे के समान पर कुछ बड़े और पीले रंग के होते हैं। कातिक महीने में इसके बीज बो दिए जाते हैं और पाँच सात दिन में ही अंकुरित हो जाते हैं। माघ में फूल और फागुन में फल लग जाते हैं। फागुन के अंत या चैत के पहले पखवाड़े तक, फलों के पकने पर मंजरी काटकर धूप में सुखा और पीटकर बीज अलग कर लेते हैं। यही बीज सौंफ कहलाते हैं। सौंफ स्वाद में तेजी लिए मीठी होती है। औषध के अतिरिक्त मसाले में भी इसका व्यवहार करते हैं। इसका अर्क और तेल भी निकाला जाता है जो औषध और सुगंधि के काम में आता है। वैद्यक में यह चरपरी, कड़ुवी, मधुर, गर्भदायक, विरेचक, वीर्यजनक, अग्निदीपक, तथा वात, ज्वर, दाह, तृष्णा, व्रण, अतिसार, आम तथा नेत्ररोग को दूर करनेवाली मानी गई है। इसका अर्क शीतल, रुचिकर, चरपरा, अग्निदीपक, पाचक, मधुर तथा तृषा, वमन, पित्त और दाह का शमन करनेवाला कहा गया है।

पर्या०—शतपुष्पा। मधुरिका। माधुरी। सिता। मिश्रेया। मधुरा। सुगंधा। तृषाहरी। शतपत्रिका। वनपुष्पा। माधवी। छत्रा। भूरिपुष्पा। तापसप्रिया। घोषवती। शीतशिवा। तालपर्णी। मंगल्या। संघातपत्रिका। अवाक्पुष्पी।

२. सौंफ की तरह का एक प्रकार का जंगली पौधा जो कश्मीर में अधिकता से पाया जाता है।

विशेष—इस पौधे की पत्तियाँ और फूल सौंफ के समान ही होते हैं। फल झुमकों में चौथाई से तीन चौथाई इंच तक के घेरे में होते हैं। बीज गोल और कुछ चिपटे से होते हैं। हकीम लोग इसका व्यवहार करते हैं। इसे बड़ी सौंफ, मौरी, मेउड़ी या मौड़ी भी कहते हैं।

सौंफिया[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ + इया (प्रत्य०)] सौंफ की बनी हुई शराब। २. एक प्रकार की बीड़ी।

सौंफिया[2]—वि० सौंफ के सुगंध या योग से युक्त।

सौंफी[1]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ] वह शराब जो सौंफ से बनाई जाती है। सौंफिया। २. एक तरह की बीड़ी जिसमें सौंफ सी सुगंध रहती है।

सौंफी[2]—वि० सौंफ के सुगंध या योग से युक्त।

सौंभरि(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० सौभरि] दे० 'सौभरि'। उ०—बृंदाबन महँ मुनि रहे सौंभरि सो जल माँहु। अयुत अब्द अति तप

कियो भख बिहार लखि ताहूँ। करि इच्छा विवाह कहँ कीन्हा। शतमंधात सुता कहँ लीन्ह।—गिरिधर (शब्द०)।

सौँभरि(पु)[२] क्रि० वि० [सं० सम्भृत] (किसी से) भरी हुई। उ०—मन के सकल मनोरथ पूरन, सौँभरि भार नई। सूरदास फल गिरिधर नागर, मिलि रस रीति ठई। सूर०, १०।१७६२।

सौमुँह(पु)† अव्य० [सं० सम्मुख, प्रा० सउमुँह] दे० 'सम्मुख'। उ०—जैसे देखा सपन सब, सौँमुह पाए चीन्ह। कुँअर कहा सब सुबुधि सों, जस कौतुक बिधि कीन्ह।—चित्रा०, पृ० ४०।

सौँर[१]—संज्ञा पुं० [हिं० सौरी] मिट्टी के बरतन, भाँड़े आदि जो संतानोत्पत्ति के दसवें दिन (अर्थात् सूतक हटने पर) तोड़ दिए जाते हैं।

सौँर[२]—संज्ञा स्त्री० दे० 'सौरी'।

सौँरई†—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँवरा] साँवलापन। उ०—पीत पट छाँह प्रकटत मुख माँह सौँरई को भाव भौंहन मोरि झलकाइयतु है।—देव (शब्द०)।

सौँरना(पु)[१]—क्रि० स० [सं० स्मरण, हिं० सुमरना] स्मरण करना। चिंतन करना। ध्यान करना। उ०—(क) सोइ अन्न तोडो भेजि लाखन जेवाँये संत सौँरि भगवंत नहिं अंतता को ह्वै गयो।—रघुराज (शब्द०)। (ख) श्री हरि गुरुपद पंकज सौँरी। सैन्य सहित वृंदावन ओरी।—रघुराज (शब्द०)। २. याद करना। स्मरण करना। उ०—कहा कहौं कछु कही न जाई। हिय सौँरत बुधि जाइ हेरई।—चित्रा०, पृ० ४०।

सौँरना[२]—क्रि० अ० [हिं० सँवरना] दे० 'सँवरना'।

सौँरा(पु)—वि० [सं० श्यामल] साँवला।

सौँसार(पु)‡—संज्ञा पुं० [सं० संसार] दे० 'संसार'। उ०—(क) सौँसार मंडल सारा मार चलाया। गरीब निवाज रघुराज मैं पाया।—दक्खिनी०, पृ० १३५। (ख) हंसा जाय मिले करतारा। बहुरि न आवहि एहि सौँसारा।—संत० दरिया, पृ० ६४।

सौँसे‡—वि० [सं० समस्त] सब। कुल। पूरा। तमाम। (पूर्वी हिं०)।

सौँह(पु)†[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौगंद] सौगंद। शपथ। कसम। किरिया। उ०—(क) जो कहिए घर दूरि तुम्हारे बोलत सुनिए टेर। तुमहिं सौँह वृषभानु बबा की प्रात साँझ एक फेर।—सूर (शब्द०)। (ख) तुलसी न तुम्ह सों राम प्रीतम कहत हौं सौँहें किए। परिनाम मंगल जानि अपने आनिए धीरज हिए।—तुलसी (शब्द०)। (ग) जब जब होत भेंट मेरी भटू तब तब ऐसी सौँहैं दिन उठि खाति न अघाति है।—केशव। (घ) धर्महि की कर सौँह कहौं हौं। तुव सुख चाहि न और चहौं हौं।—पद्माकर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—खाना।—देना।—लेना।

सौँह[२]—संज्ञा पुं० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह] संमुख। सामने। समक्ष। उ०—(क) लरत सौँह जो आय निधनु तेहि करत सघन कर।—गोपाल (शब्द०)। (ख) गहत धनुष अरि बहुत त्रास तें पास रहत नहिं। महत गर्व जो सहत सौँह सर दहत ताहि तहिं।—गोपाल (शब्द०)।

सौँह[३]—क्रि० वि० सामने। संमुख। उ०—(क) कपट सतर भौंहैं करी मुख सतरौंहैं बैन। सहज हँसौंहैं जानि कै सौँहैं करति न नैन।—बिहारी (शब्द०)। (ख) सही रगीलैं रति जगैं जगी पगी सुख चैन। अलसौंहैं सौँहैं किऐं कहैं हँसौंहैं नैन।—बिहारी र०, दो० ५११। (ग) प्रेमक लुबुध पियादे पाऊँ। ताकैं सौँह चलै कर ठाऊँ।—जायसी (शब्द०)।

सौँहन—संज्ञा पुं० [फ़ा० सोहान, हिं० सोहन] दे० 'सोहन'। उ०—कुदरा खुरपा बेल गुल सफा छुरा कतरनी। नहनी सौँहन परी डरी बहु भरना भरनी।—सूदन (शब्द०)।

सौँहीं[१]—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का हथियार। उ०—यह सौँहीं केहिं देशहि केरी। कह नृप अहै फिरंग करेरी। सुनतहुँ नरपति मन मुसक्याई। सौँहीं दै वाणी यह गाई। तुव हथियारहि केवल तरै। सदा रहैं हम बिन अवसरै।—बघेलवंश० (शब्द०)।

सौँहीं[२]—क्रि० वि० दे० 'सौँह'। उ०—आठौ सिद्धि जहाँ कर जोरैं। सौँहीं ताकैं मुख नहिं मोरैं।—चरण० बानी०, पृ० ९२।

सौ[१]—वि० [सं० शत] जो गिनती में पचास का दूना हो। नब्बे और दस। शत। २. †संख्या में अधिक। बहुत।

सौ[२]—संज्ञा पुं० नब्बे और दस की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००।

मुहा०—सौ बात की एक बात = सारांश। तात्पर्य। निष्कर्ष। निचोड़। उ०—(क) सौ बातन की एकै बात। सब तजि भजो जानकीनाथ।—सूर (शब्द०)। (ख) सौ बातन की एकै बात। हरि हरि हरि सुमिरहु दिन राति।—सूर (शब्द०)। सौ की सीधी एक = सारांश। सब का सार। निचोड़। उ०—रोम रोम जीभ पाय कहै तो कह्यो न जाय, जानत ब्रजेश सब मर्दन मयन के। सूधी यह बात जानो गिरधर ते बखानो सौ कि सीधी एक यही दायक चयन के।—गिरधर (शब्द०)। सौ का सवाया = पचीस प्रतिशत मुनाफा। सौ कोस भागना = एक दम दूर रहना। अलग रहना। सौ जान से आशिक, कुर्बान या फिदा होना = अत्यंत प्रेम करना या मुग्ध होना। पूरी तरह मुग्ध होना। उ०—और उसकी चटक मटक पर हमारा हिंदोस्तान सौ जान से कुर्बान है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५९। सौ सौ बार = बहुत बार। अनगिनत मर्तबा। उ०—जो निगुरा सुमिरन करै, दिन मैं सौ सौ बार। नगर नायका सत करै, जरै कौन की लार।—कबीर सा० सं०, भा० १, पृ० १७।

सौ(पु)[३]—वि० [सं० सम (= समान) प्रा० सउँ]. दे० 'सा'। उ०—(क) हे मुँदरी तेरो सुकृत मेरो ही सौ हीन।—लक्ष्मण (शब्द०)। (ख) बर बीरन जुद्ध इतौ सँपज्यौ, तिहि ठौर भयानक सौ उपज्यौ।—पृ० रा०, २४।१६६।

सौक[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका। किसी स्त्री की प्रेमप्रतिद्वंद्विनी। सौत। सपत्नी।

सौक[२]—वि० [हिं० सौ + एक] एक सौ। उ०—नैन लगे तिहि लगनि सौं छूटैं न छूटे प्रान। काम न आवत एकहू तेरे सौक सयान। —बिहारी (शब्द०)।

सौक[३]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शौक] दे० 'शौक'।

सौकन†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौक या सौतन] दे० 'सौत'।

सौकन्य—वि० [सं०] सुकन्या संबंधी। सुकन्या का।

सौकर[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सौकरी] १. सूकर या सूअर का। २. सूकर या सूअर संबंधी। ३. वाराह अवतार संबंधी।

सौकर[२]—संज्ञा पुं० दे० 'सौकर तीर्थ'।

सौकरक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] सौकर तीर्थ।

सौकरक[२]—वि० सूअर संबंधी। सूअर का। दे० 'सौकर'।

सौकर तीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सौकरायण—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिकारी। शिकार करनेवाला। व्याध। अहेरी। २. वैदिक आचार्य का नाम।

सौकरिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूअर का शिकार करनेवाला। २. शिकारी। व्याध। ३. सूअर का व्यापार करनेवाला।

सौकरीय—वि० [सं०] सूअर संबंधी। सूअर का।

सौकर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुकर का भाव। सुकरता। सुसाध्यता। २. सुविधा। सुभीता। ३. सूकर का भाव या धर्म। सूकरता। सुअरपन। ४. निपुणता। कुशलता (को०)। ५. किसी भोज्य पदार्थ या ओषधि की सरल तयारी (को०)।

सौकीन—संज्ञा पुं० [फ़ा० शौक़ीन] दे० 'शौकीन'।

सौकीनी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शौक़ीनी] दे० 'शौकीनी'।

सौकुमारक—संज्ञा पुं० [सं०] सुकुमार का भाव या धर्म। सुकुमारता। सौकुमार्य।

सौकुमार्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुकुमार का भाव। सुकुमारता। कोमलता। नाजुकपन। २. यौवन। जवानी। ३. काव्य का एक गुण जिसके लाने के लिये ग्राम्य और श्रुतिकटु शब्दों का प्रयोग त्याज्य माना गया है।

सौकुमार्य[२]—वि० सुकुमार। कोमल। नाजुक।

सौकृति—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम। २. उक्त ऋषि के गोत्र का नाम।

सौकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. याग, यज्ञादि पुण्यकर्म का सम्यक् अनुष्ठान। २. दे० 'सौकर्म'।

सौकृत्यायन—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुकृत्य के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो।

सौक्ति—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक गोत्र का नाम। २. एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सौक्तिक[१]—वि० [सं०] सूक्त संबंधी। सूक्त का।

सौक्तिक[२]—संज्ञा पुं० वह जो सिरका आदि बनाता हो। शौक्तिक।

सौक्ष्म—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौक्ष्म्य'।

सौक्ष्मक—संज्ञा पुं० [सं०] बारीक कीड़ा। सूक्ष्म कीट।

सौक्ष्म्य—संज्ञा पुं० [सं०] सूक्ष्म का भाव। सूक्ष्मता। बारीकी।

सौख[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुख का भाव या धर्म। सुखता। सुख। आराम। २. सुख का अपत्य।

सौख[२]†[३]—संज्ञा पुं० [फ़ा० शौक] दे० 'शौक'।

सौखरात्रिक—संज्ञा पुं० [सं०] भाट। बंदी। स्तावक।

सौखरात्रिक—संज्ञा पुं० [सं०] बंदी। वैतालिक। स्तुतिपाठक। अर्थिक।

सौखशय्यिक संज्ञा पुं० [सं०] वैतालिक। स्तुतिपाठक। बंदी। अर्थिक।

सौखशायनिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैतालिक। स्तुतिपाठक। अर्थिक। बंदी। २. सुखपूर्वक शयन की वार्ता पूछनेवाला। वह जो किसी से उसके सुखशयन की बात पूछे (को०)।

सौखशायिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैतालिक। स्तुतिपाठक। अर्थिक। बंदी। २. दे० 'सौखशायनिक' (को०)।

सौखसुप्तिक—संज्ञा [सं०] १. वैतालिक। स्तुतिपाठक। बंदी। २. दे० सौखशायनिक' (को०)।

सौखा‡ वि० [हिं० सुख] सहज। सरल।

सौखिक—वि० [सं०] १. सुख चाहनेवाला। सुखार्थी। २. सुख से संबंधित। ३. आनंदप्रद (को०)।

सौखी‡—संज्ञा पुं० [फा० शोख़ या शौक़ीन] गुंडा। बदमाश।

सौखीन‡—संज्ञा पुं० [फ़ा० शौक़ीन] दे० 'शौकीन'।

सौखीय—वि० [सं०] १. दे० 'सौखिक'। २. सुख या आनंद संबंधी। सुखदायक (को०)।

सौख्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुख का भाव। सुखता। सुखत्व। २. सुख। आराम। आनंदमंगल।

सौख्यद—वि० [सं०] सुख देनेवाला। आनंद देनेवाला। सुखद।

सौख्यदायक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] मूंग। मुग्द।

सौख्यदायक[२]—वि० सुख देनेवाला (को०)।

सौख्यदायी—वि० [सं० सौख्यदायिन्] सुख देनेवाला। सुखद।

सौख्यशायनिक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौखशायनिक' (को०)।

सौगंद—संज्ञा स्त्री० [सं० सौगन्ध] शपथ। कसम। सौंह। उ०—(क) नगर नारि को यार भूलि परतीति न कीजै। सौ सौ सौगंद खाय चित्त में एक न दीजै।—गिरिधर (शब्द०)। (ख) वस्ताद की सौगंद मुझे हम तो बाबा हारे। कहत केशव गगन मगन सोइ अल्ला के प्यारे।—दक्खिनी०, पृ० १२३। (ग) प्राणधन ! सच तुमको सौगंद, तुम्हारा यह अभिनव है साज।—झरना, पृ० ४३।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।

सौगंध[१]—संज्ञा पुं० [सं० सौगन्ध] १. सुगंधित तैल, इत्र आदि का

व्यापार करनेवाला। गंधी। २. सुगंध। खुशबू। ३. अगिया घास। भूतृण। कतृण। ४. एक वर्णसंकर जाति जिसका उल्लेख महाभारत में है।

सौगंध[4]—वि० सुगंधयुक्त। सुगंधित। खुशबूदार।

सौगंध[5]—संज्ञा स्त्री० दे० 'सौगंद'।

सौगंधक—संज्ञा पुं० [सं० सौगन्धक] नीला कमल। नील कमल।

सौगंधिक[1]—संज्ञा पुं० [सं० सौगन्धिक] १. नील कमल। नील पद्म। २. लाल कमल। रक्त कमल। ३. सफेद कमल। श्वेत कमल। कह्लार। ४. गंधतृण। भूतृण। रामकपूर। ५. रूसा घास। रोहिष तृण। ६. गंधक। गंधपाषाण। ७. पुखराज। पद्मराग मणि। ८. एक प्रकार का कीड़ा जो श्लेष्मा से उत्पन्न होता है। (चरक)। ९. सुगंधित तेल, इत्र आदि का व्यवसाय करनेवाला। गंधी। उ०—सौगंधिक नव नव सुगंधियाँ प्रभु के लिये निकाल रहे।—साकेत, पृ० ३७४। १०. एक प्रकार का नपुंसक जिसे किसी पुरुष की इंद्रिय अथवा स्त्री की योनि सूँघने से उद्दीपन होता है। नासायोनि। (वैद्यक)। ११. दालचीनी, इलायची और तेजपत्ता इन तीनों का समूह। त्रिसुगंधि। १२. भागवत में वर्णित एक पर्वत का नाम। १३. हीरक। हीरा।—बृहत्संहिता, पृ० ३७७।

सौगंधिक[2]—वि० सुगंधित। सुवासित। खुशबूदार।

सौगंधिक वन—संज्ञा पुं० [सं० सौगन्धिक वन] १. कमल का घना झुंड। कमल का बन या जंगल। २. एक तीर्थ का नाम।—(महाभारत)।

सौगंधिका—संज्ञा स्त्री० [सं० सौगन्धिका] १. एक प्रकार की पद्मिनी। २. वाल्मीकि रामायण में वर्णित कुबेर की नगरी की नदी का नाम।

सौगंधिपत्रक—संज्ञा पुं० [सं० सौगन्धिपत्रक] सफेद बर्बरी। श्वेतार्जका।

सौगंध्य—संज्ञा पुं० [सं० सौगन्ध्य] सुगंधि का भाव या धर्म। सुगंधता। सुगंधत्व।

सौगत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुगत (बुद्ध) का अनुयायी। बौद्ध। २. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सौगत[2]—वि० १. सुगत संबंधी। २. सुगत मत का।

सौगतिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. बौद्ध धर्म का अनुयायी। २. बौद्ध भिक्षु। ३. नास्तिक। शून्यवादी। ४. अनीश्वरवादी।

सौगम्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुगम का भाव। सुगमता। आसानी।

सौगरिया—संज्ञा पुं० [हिं० सौगर+इया (प्रत्य०)] क्षत्रियों की एक जाति या वंश। उ०—गौर सुगोकुल रामसिंह परताप कमठ कुल। रामचंद्र कुल पांडु भेद चहुँवान खग्ग खुल। सूरत राम प्रसिद्ध कुसल तन अरु पाखरिया। पैम सिंह प्रथिसिंह अमरवाला सौगरिया।—सुजान०, पृ० २१।

सौगात—संज्ञा स्त्री० [तु० सौग़ात] वह वस्तु जो परदेश से इष्ट मित्रों को देने के लिये लाई जाय। भेंट। उपहार। नजर। तोहफा। जैसे—हमारे लिये बंबई से क्या सौगात लाए हो?

क्रि० प्र०—देना।—मिलना।—लाना।

सौगाती—वि० [हिं० सौगात+ई (प्रत्य०)] १. सौगात के लायक। उपहार के योग्य। २. उत्तम। बढ़िया। उमदा।

सौघा†—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। अल्प मूल्य का। कम दाम का। महँगा का उलटा। उ०—महँगे मनि कंचन किए सौघो जग जल नाज।—तुलसी ग्रं०, पृ० ९७।

सौच(५)—संज्ञा पुं० [सं० शौच] दे० 'शौच'। उ०—सकल सौच करि जाइ नहाए। नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए।—तुलसी (शब्द०)। (ख) मन उनमेख छुटत नहिं कबहीं सौच तिलक पहिरे गल माला।—भीखा० श०, पृ० ३१।

सौचि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौचिक'।

सौचिक—संज्ञा पुं० [सं०] सूची कर्म या सिलाई द्वारा जीविका निर्वाह करनेवाला। दरजी। सूचिक। सूत्रभित्।

सौचिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] सूचिक का कार्य। दरजी का काम। सीने का काम।

सौचित्ति—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुचित्त का अपत्य हो। सुचित्त का पुत्र।

सौचिक्रि—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ में एक प्रकार की अग्नि।

सौचुक—संज्ञा सं० [सं०] भूतिराज के पिता का नाम।

सौचुक्य—संज्ञा पुं० [सं०] सूचक का भाव या कर्म। सूचकता।

सौज—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या; मि० फ़ा०, साज] उपकरण। सामग्री। साज सामान। उ०—(क) कहाँ लगि समुझाऊँ सूर सुनि जाति मिलन की औधि टरी। लेहु सँभारि देहु पिय अपनी बिन प्रमान सब सौज धरी।—सूर (शब्द०)। (ख) जन पुकारे हरि पै जाइ। जिनकी यह सब सौज राधिका तेरे तनु सब लई छँड़ाइ।—सूर (शब्द०)। (ग) जिन हरि सौज चोरि जग खाई। विगत दसन ते होहि बनाई।—रामाश्वमेध (शब्द०)। (घ) अलि सुगंध बस रहे लुभाई। भोग सौज सब सजी बनाई।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

सौज[2]—वि० [सं० सौजस्] दे० 'सौजा'।

सौज(५)[3]—संज्ञा पुं० [सं० श्वापद, प्रा० सावज्ज, साउज] दे० 'सौजा'।

सौजना(५)†—क्रि० अ० [हिं० सजना] शोभा देना। भला जान पड़ना। उ०—बरुनि बान अस ओपहँ बेधे रन बन ढाँख। सौजहिं तन सब रोवाँ पंखिहि तन सब पाँख।—जायसी (शब्द०)।

सौजन्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुजन का भाव। सुजनता। भलमनसत। उ०—उसके उदार सौजन्य के अभाव में ग्रंथ का भली प्रकार से संपन्न हो सकना कठिन ही था।—अकबरी०, पृ० १०। २. उदारता। औदार्य। ३. कृपा। करुणा। अनुकंपा (को०)। ४. मित्रता। सौहार्द (को०)।

सौजन्यता—संज्ञा स्त्री० [सं० सौजन्य+हिं० ता (प्रत्य०)] दे० 'सौजन्य'। उ०—क्यों महाशय, यही सौजन्यता है।—अयोध्या सिंह (शब्द०)।

विशेष—शुद्ध भाववाचक शब्द 'सौजन्य' ही है। उसमें भी 'ता' प्रत्यय लगाकर जो 'सौजन्यता' रूप बनाया जाता है, वह अशुद्ध है।

सौजस्क—वि० [सं०] दे० 'सौजा'।

सौजा[१]—वि० [सं० सौजस्] ओजयुक्त। ताकतवर। बलवान्। बली। शक्तिशाली [को०]।

सौजा†[२]—संज्ञा पुं० [सं० श्वापद, प्रा० सावज्ज, साउज, हिं० सावज] वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाय। उ०—आपुहि बन और आपु पखेरू। आपुहि सौजा आपु अहेरू।—जायसी (शब्द०)। उ०—(ख) भाँति भाँति के सौजे दौरत रहत जहाँ नित।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४६४।

सौजात—संज्ञा पुं० [सं०] सुजात के वंश में उत्पन्न व्यक्ति।

सौजामि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सौजोरⓅ—वि० [फ़ा० शहज़ोर] दे० 'शहजोर'। उ०—रद छद अधर न कीजिए नागर नंद किसोर। सास ननद सौजोर मुख कहा कहौंगी भोर।—स० सप्तक, पृ० ३७२।

सौड़—संज्ञा पुं० [हिं० सौँड] दे० 'सौँड़'।

सौड़िⓅ, **सौड़ी**Ⓟ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौँड़] १. चादर।

सौड़ीⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं०] रजाई। उ०—(क) ममिता मेरा क्या करै, प्रेम उघाड़ी पौलि। दरसन भया दयाल का, सूल भई सुखसौड़ि।—कबीर ग्रं०, पृ० १६। (ख) गंग जमुन मोरी षाटलड़ी रे, हंसा गवन तुलाई जी। धरणि पाथरणौं नैं आम पछेवड़ौ तौ भी सौड़ी न माई जी।—गोरख०, पृ० ६३। २. शय्या। सेज?

सौडल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन आचार्य का नाम।

सौत[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सपत्नी] किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका। किसी स्त्री की प्रेमप्रतिद्वंद्विनी। सपत्नी। सौक। सवत। उ०—(क) देह दुल्हैया की बढ़ै ज्यों ज्यों जोबन जोति। त्यों त्यों लखि सौतें सबैं बदन मलिन दुति होति।—बिहारी (शब्द०)। (ख) काल ब्याही नई हों तो धाम हू न गई पुनि आजहू ते मेरे सीस सौत को बसाई है।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

मुहा०—सौतिया डाह = (१) दो सौतों में होनेवाली डाह या ईर्ष्या। (२) द्वेष। जलन। सौत ला के बिठाना = पत्नी के होते हुए दूसरी स्त्री को घर बैठाना या घर में डाल लेना। उ०—मतलब यह कि कोई सौत ला के नहीं बिठाएँगे।—सैर०, पृ० २५।

सौत[२]—वि० [सं०] १. सूत से उत्पन्न। २. सूत संबंधी। सूत का।

सौतनⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—कान्ह भए बस बाँसुरी के अब कौन सखी हमको चहिहै। निस द्यौस रहै सँग साथ लगी यह सौतन तापन क्यों सहिहै।—रसखान (शब्द०)।

सौतनिⓅ—संज्ञा [सं० सपत्नी] दे० 'सौत'। उ०—बाढ़त तो उर उरज भर भरि तरुनई विकास। बोझनि सौतनि के हिये आवत रूँधि उसास।—बिहारी (शब्द०)।

सौति[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूत के अपत्य, कर्ण। २. महाभारत के प्रवक्ता एक मुनि।

सौतिⓅ**[२]**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—(क) बिथुरो जावक सौति पग निरखि हँसी गहि गाँस। सलज हँसौहीं लखि लियौ आधी हँसी उसास।—बिहारी (शब्द०)। (ख) गुर लोगनि के पग लागति प्यार सों प्यारी बहू लखि सौति जरी।—देव (शब्द०)।

सौतिनⓅ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत'। उ०—(क) चौंक चौंक चकई सी सौतिन की दूती चली सो तैं भई दीन अरविंद गति मंद ज्यौं।—केशव (शब्द०)। (ख) नायक के नैननि मैं नाइए सुधा सो सब सौतिन के लोचननि लौन सो लगाइए।—मतिराम (शब्द०)। (ग) के मोरा जाएत दुरहुक दूर, सहस सौतिनि बस माधव पुर।—विद्यापति, पद ५७४।

सौतुकⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० सौँतुख] दे० सौँतुख। उ०—(क) देखि चकृत भई सौतुक की सपने।—सूर (शब्द०)। (ख) सौतुक सो सपनो भयो, सपनो सौतुक रूप।—मतिराम, ग्रं० पृ० ३३१।

सौतुखⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० सौँतुख] दे० 'सौँतुख'। उ०—पिय मिलाप को सुख सखी कह्यो न जाय अनूप। सौतुख सो सपनो भयो सपनो सौतुख रूप।—मतिराम (शब्द०)।

सौतुषⓅ—संज्ञा पुं० [हिं० सौँतुख] दे० 'सौँतुख'। उ०—पुनि पुनि करै प्रनामु न आवत कछु कहि। देखौं सपन कि सौतुष ससि-सेषर सहि।—तुलसी (शब्द०)।

सौतेला—वि० [हिं० सौत + एला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० सौतेली] १. सौत से उत्पन्न। सौत का। जैसे,—सौतेला लड़का। २. जिसका संबंध सौत के रिश्ते से हो। जैसे,—सौतेला भाई (अर्थात् माँ की सौत का लड़का)। सौतेली माँ (अर्थात् माँ की सौत)। सौतेले मामा (अर्थात् नानी की सौत का लड़का या सौतेली माँ का भाई)।

सौत्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] सूत या सारथि का काम।

सौत्य[२]—वि० १ सूत या सारथि संबंधी। २. सुत्य संबंधी। सोमाभिषव संबंधी।

सौत्र[१]—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।

सौत्र[२]—वि० १. सूत का। २. सूत्र संबंधी। सूत्र का। ३. सूत्र में उल्लिखित या कथित। श्रौत सूत्रग्रंथों से संबद्ध या उनका अनुसरण करनेवाला।

सौत्रांतिक—संज्ञा पुं० [सं० सौत्रान्तिक] बौद्ध दर्शन की एक शाखा या बौद्धों का एक भेद।

विशेष—इनके मत से अनुमान प्रधान है। इनका कहना है कि बाहर कोई पदार्थ सांगोपांग प्रत्यक्ष नहीं होता; केवल एकदेश के प्रत्यक्ष होने से शेष का ज्ञान अनुमान से होता है। ये कहते हैं कि सब पदार्थ अपने लक्षण से लक्षित होते हैं और लक्षण सदा लक्ष्य में वर्तमान रहता है।

सौत्रामण[१]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० सौत्रामणी] इंद्र संबंधी। इंद्र का।

सौत्रामण[२]—संज्ञा पुं० एक दिन में होनेवाला एक प्रकार का याग। एक एकाह्न यागविशेष।

सौत्रामणधनु—संज्ञा पुं० [सं० सौत्रामणधनुस्] इंद्रधनुष।

सौत्रामणिक—वि० [सं०] सौत्रामणी यज्ञ से संबद्ध या उक्त यज्ञ में उपस्थित [को०]।

सौत्रामणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्र के प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ। २. पूर्व दिशा का एक नाम जिसके स्वामी इंद्र हैं (को०)।

सौत्रि—संज्ञा पुं० [सं०] तंतुवाय। जुलाहा [को०]।

सौत्रिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. जुलाहा। तंतुवाय। २. वह जो बुना जाय। बुनी हुई वस्तु।

सौत्वन—संज्ञा पुं० [सं०] सुत्वन के अपत्य या वंशज।

सौदंति—संज्ञा पुं० [सं० सौदन्ति] सुदंत के अपत्य या वंशज।

सौदंतेय—संज्ञा पुं० [सं० सौदन्तेय] सुदंत के अपत्य।

सौदक्ष—वि० [सं०] १. सुदक्ष संबंधी। सुदक्ष का। २. सुदक्ष से उत्पन्न।

सौदक्षेय—संज्ञा पुं० [सं०] सुदक्ष के अपत्य या वशंज।

सौदत्त—वि० [सं०] १. सुदत्त संबंधी। सुदत्त का। २. सुदत्त से उत्पन्न।

सौदर्य[१]—वि० [सं०] १. सहोदर या सगे भाई संबंधी। २. सोदर या भाई का सा।

सौदर्य[२]—संज्ञा पुं० भ्रातृत्व। भाईपन।

सौदर्शन—संज्ञा पुं० [सं०] वाहीक जाति के एक गाँव का नाम।

सौदा—संज्ञा पुं० [अ०] १. वह चीज जो खरीदी या बेची जाती हो। क्रय विक्रय की वस्तु। चीज। माल। जैसे,—(क) चलो बाजार से कुछ सौदा ले आवें। (ख) तुम्हारा सौदा अच्छा नहीं है। (ग) आप क्या क्या सौदा लीजिएगा ? उ०—(क) ब्योपार तो याँ का बहुत किया, अब वाँ का भी कुछ सौदा लो।—नजीर (शब्द०)। २. लेन देन। व्यवहार। उ०—(क) क्या खूब सौदा नक्द है उस हाथ दे इस हाथ ले।—नजीर (शब्द०)। (ख) दरजी को खुरपी दरकार नहीं, वह गेहूँ लेना चाहता है; अतः उन दोनों का सौदा नहीं हो सकता।—मिश्रबंधु (शब्द०)। (ग) प्रायः सभी बैंकें एक दूसरे से हिसाब रखती हैं। इस प्रकार सौदे का काम कागजी घोड़ों (चेकों) द्वारा चलता है।—मिश्रबंधु (शब्द०)। (घ) जरासुत सो और कोउ नहि मिलै मोहि दलाल। जो करै सौदा समर को सहज इमि या काल।—गोपाल (शब्द०)।

मुहा०—सौदा पटना = क्रयविक्रय की बातचीत ठीक होना। जैसे,—तुमसे सौदा नहीं पटेगा। उ०—आखिर इसी बहाने मिला यार से नजीर। कपड़े बला से फट गए सौदा तो पट गया।—नजीर (शब्द०)।

३. क्रय विक्रय। खरीद फरोख्त। व्यापार। उ०—और बनिज मैं नाहीं लाहा होत मूल में हानि। सूर स्वामि को सौदो साँचो कहो हमारो मानि।—सूर (शब्द०)। ४. खरीदने या बेचने की बातचीत पक्की करना। जैसे,—उन्होंने पचास गाँठ का सौदा किया। उ०—राजा खुद तिजारत करता है, बिना उसकी आज्ञा के राँगा, हाथीदाँत, सीसा इत्यादि का कोई सौदा नहीं कर सकता।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

यौ० — सौदागर = व्यापारी। सौदासुलुफ = खरीदने की चीज। वस्तु। सौदासूत = व्यवहार। उ०—सुहृद समाजु दगाबाजी ही को सौदासूत जब जाको काजु तब मिलैं पायँ परि सो।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—पटना।—लेना। – होना।

सौदा[२]—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पागलपन। बावलापन। दीवानापन। उन्माद। २. उर्दू के एक प्रसिद्ध कवि का नाम। ३. प्रेम। मुहब्बत। इश्क (को०)। ४. यूनानी चिकित्सा शास्त्र में कथित चार दोषों में एक जो स्याह या काला रग का होता है (को०)।

सौदा[३]—संज्ञा पुं० [देश०] वे काट छाँटकर साफ किए हुए पान के पत्ते जो ढोली में सड़ गए हों। (तंबोली)।

सौदाई—संज्ञा पुं० [अ० सौदा + ई (प्रत्य०)]। जिसे सौदा या पागलपन हुआ हो। पागल। बावला। उ०—भाँग पड़ी कूएँ में जिसने पिया बना सौदाई है।—भारतेंदु ग्रं०, भा० २, पृ० ५५१।

मुहा०—किसी का सौदाई होना = किसी पर बहुत अधिक आसक्त होना। सौदाई बनाना = अपने ऊपर किसी को आसक्त करना।

सौदागर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] व्यापारी। व्यवसायी। तिजारत करनेवाला। जैसे,—कपड़ों का सौदागर, घोड़ों का सौदागर।

सौदागर बच्चा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सौदागर + हिं० बच्चा] सौदागर अथवा सौदागर का लड़का।

सौदागरी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सौदागर का काम। व्यापार। व्यवसाय। तिजारत। रोजगार।

सौदामनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बिजली। विद्युत्। २. एक प्रकार की विद्युत् या बिजली। मालाकार विद्युत्। ३. विष्णुपुराण में उल्लिखित कश्यप और विनता की एक पुत्री का नाम। ४. एक अप्सरा का नाम। (बाल रामायण)। ५. एक रागिनी जो मेघ राग की सहचरी मानी जाती है। ६. एक यक्षिणी (को०)। ७. हाहा गंधर्व की एक कन्या का नाम (को०)। ८. ऐरावत हाथी की स्त्री (को०)।

सौदामनीय—वि० [सं०] १. सौदामनी या विद्युत् के समान। सौदामनी या विद्युत् सा। २. सौदामनी या विद्युत् संबंधी।

सौदामिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सौदामनी'। उ०—वर्षा बरनहूँ हंस वक दादुर चातक मोर। केतक कंज कदंब जल सौदामिनि घनघोर।—केशव (शब्द०)।

सौदामिनीय—वि० [सं०] दे० 'सौदामनीय'।

सौदामेय—संज्ञा पुं० [सं०] सुदामा के अपत्य या वंशज।

सौदाम्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सौदामनी'।

सौदायिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] वह धन आदि जो स्त्री को उसके विवाह के अवसर पर उसके पिता माता या पति के यहाँ से मिले।

विशेष—दायभाग के अनुसार इस प्रकार मिला हुआ धन स्त्री का हो जाता है। उसपर उसी का सोलहो आने अधिकार होता है, और किसी का कोई अधिकार नहीं होता।

२. दहेज। दायज। दाइज।

सौदायिक[२]—वि० दाय संबंधी। दाय का।

सौदावी—वि० [अ०] वात के कारण उत्पन्न। वातजन्य। सौदा या उन्मादजन्य [को०]।

सौदास—संज्ञा पुं० [सं०] इक्ष्वाकु वंशी एक राजा का नाम। ये राजा सुदास के पुत्र और ऋतुपर्ण के पौत्र थे। इन्हें मित्रसह और कल्मषपाद भी कहते हैं।

सौदासि—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम। २. इन ऋषि के गोत्र का नाम।

सौदेव—संज्ञा पुं० [सं०] सुदेव के पुत्र, दिवोदास।

सौद्युम्नि—संज्ञा पुं० [सं०] सुद्युम्न के अपत्य या वंशज।

सौध[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. भवन। प्रासाद। अट्टालिका। महल। उ०—जहाँ विमान वनितान के श्रमजल हरत अनूप। सौध पताकनि के बसन होइ बिजन अनुरूप। —मतिराम (शब्द०)। २. चाँदी। रजत। ३. दुधिया पत्थर। दुग्धपाषाण। ४. एक प्रकार का रत्न (को०)। ५. चूना (को०)। ६. चूने से धवलित गृह (को०)।

सौध[२]—वि० १. सफेदी, पलस्तर या अस्तरकारी किया हुआ। २. सुधा से युक्त (को०)। ३. सुधा संबंधी (को०)।

सौधक—संज्ञा पुं० [सं०] परावसु गंधर्व के नौ पुत्रों में से एक। उ०—ब्रह्म कल्प महँ हो गंधर्वा। नाम परावसु तेहि सुत सर्वा। मंदर मंबर मंदी सौधक। सुधन सुदेव महाबलि नामक।—गोपाल (शब्द०)।

सौधकार—संज्ञा पुं० [सं०] सौध बनानेवाला। प्रासाद या भवन बनानेवाला। राज। मेमार।

सौधतल—संज्ञा [सं०] महल या प्रासाद का निचला हिस्सा [को०]।

सौधना(पु)—क्रि० स० [सं० शोधन, हिं० सोधना] दे० 'सोधना'। उ०—तातें लेनौ सौधौ या कौ। तब उपाय करिहौं मैं ताकौं। —सूदन (शब्द०)।

सौधन्य—वि० [सं०] सुधन से उत्पन्न।

सौधन्वन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौधन्वा'।

सौधन्वा—संज्ञा पुं० [सं० सौधन्वन्] १. सुधन्वा के पुत्र, ऋभु। २. एक वर्णसंकर जाति।

सौधमौलि—संज्ञा पुं० [सं०] सौध का सिरा या सबसे ऊँचा भाग [को०]।

सौधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के देवताओं का निवासस्थान। कल्पभवन।

सौधर्मज—संज्ञा पुं० [सं०] सौधर्म अर्थात् कल्पभवन में उत्पन्न एक प्रकार के देवता। —(जैन)।

सौधर्म्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुधर्म का भाव। २. साधुता। भलमनसत।

सौधशिखर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौधमौलि' [को०]।

सौधाकार—वि० [सं०] सुधाकर या चंद्रमा संबंधी। चंद्रमा का।

सौधात—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण और भृज्जकंठी से उत्पन्न संतान।

विशेष—भृज्जकंठ एक वर्णसंकर जाति थी जो व्रात्य ब्राह्मण और ब्राह्मणी से उत्पन्न थी।

सौधातकि—संज्ञा पुं० [सं०] सुधाता के अपत्य।

सौधार—संज्ञा पुं० [सं०] नाट्य शास्त्र के अनुसार नाटक के चौदह भागों में से एक का नाम।

सौधाल—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का मंदिर। शिवालय।

सौधावति—संज्ञा पुं० [सं०] सुधावति के अपत्य।

सौधृतेय—संज्ञा पुं० [सं०] सुधृति के अपत्य या वंशज।

सौध्रोतकि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौधातकि'।

सौनंद—संज्ञा पुं० [सं० सौनन्द] बलराम के मूषल का नाम।

सौनंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० सौनन्दा] मार्कंडेय पुराण के अनुसार वत्सप्री की पत्नी का नाम।

सौनंदी—संज्ञा पुं० [सं० सौनन्दिन्] बलराम का एक नाम जो अपने पास सौनंद नामक मूसल रखते थे।

सौन(पु)[१]—क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने। प्रत्यक्ष। उ०—ब्याह कियो कुल इष्ट वसिष्ट अरिष्ट टरे घर को नृप धाए। लै सुत चार विवाहत ही घरी जानकी तात सबै समुदाए। सौन भए अपसौन सबै पथ काँप उठे जिय में दुख पाए।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

सौन[२]—संज्ञा पुं० [सं०] १. कसाई। बूचड़। २. वह ताजा मांस जो बिक्री के लिये रखा हो।

यौ०—सौनधर्म्य = कसाई और पशु की सी शत्रुता। प्राणघातक दुश्मनी। सौनपालक = वह व्यक्ति जिसके यहाँ रक्षा के काम में कसाई नियुक्त किए गए हों।

सौन[३]—वि० पशुबधशाला या कसाईखाने का। पशुबधशाला संबंधी।

सौन[४]—संज्ञा पुं० [सं० श्रवण] दे० 'स्रोन'। उ०—भर्म भूत सबहीं छुटेरी हेली सौन नछतर नाल।—बरण० बानी०, भा० २, पृ० १४५।

सौनक[१]—संज्ञा पुं० [सं० शौनक] दे० 'शौनक'। उ०—सौनक मुनि आसीन तहँ अति उदार तप रासि। मगन राम सिय ध्यान महँ, वेद रूप आभासि।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

सौनक(पु)[२]—संज्ञा पुं० [सं० सौन या सौनिक] कसाई। वधिक। उ०—जिहि बिस्वास सुसा के तात। सौनक ज्यों मैं कीनी घात। —नंद० ग्रं०, पृ० ३३२।

सौनन†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंदना] कपड़ों को धोने से पहले उनमें रेह आदि लगाना। रेह की नांद में कपड़े भिगोना। सौंदना। (धोबी)। उ०—तन मन लाय के सौनन कीन्हा धोअन जाय साधु की नगरी। कहहिं कबीर सुनो भाइ साधू, बिन सतसंग कबहूँ नहिं सुधरी।—कबीर (शब्द०)।

सौनव्य—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सौनव्यायनी] सुनु के अपत्य।

सौनहोत्र—संज्ञा पुं० [सं० शौनहोत्र] १. वह जो शुनहोत्र के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो। शुनहोत्र का अपत्य। २. गृत्समद ऋषि।

सौना(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण, हिं० सोना] दे० 'सोना'। उ०—धरि सौनै कै पींजरा राखौ अमृत पिवाइ। विष कौ कीरा रहत है विष ही मैं सुख पाइ।—रसनिधि (शब्द०)।

सौना†[२]—संज्ञा पुं० [हिं० सौंदन, सौनन] दे० 'सौंदन'।

सौनाग—संज्ञा पुं० [सं०] वैयाकरणों की एक शाखा का नाम, जिसका उल्लेख पतंजलि के महाभाष्य में है।

सौनामि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुनाम के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो।

सौनि(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण, हिं० सोना] सोने (कुंदन) का लाल वर्ण। उ०—केलि की कलानिधान सुंदरि महा सुजान आन न समान छबि छाँह पै छिपैए सौनि।—घनानंद, पृ० १२।

सौनिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. मांस बेचनेवाला। कसाई। वैतंसिक। मांसिक। २. कौटिक। बहेलिया। व्याध। शिकारी।

सौनीतेय—संज्ञा पुं० [सं०] सुनीति के पुत्र, ध्रुव।

सौपथि—संज्ञा पुं० [सं०] सुपथ के अपत्य।

सौपना(पु)—क्रि० स० [हिं० सौंपना] दे० 'सौंपना'।

सौपर्ण[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. पन्ना। मरकत। २. सोंठ। शुंठी। ३. गरुड़ जी के अस्त्र का नाम। गरुत्म अस्त्र। ४. ऋग्वेद का एक सूक्त। ५. गरुड़ पुराण।

सौपर्ण[२]—वि० सुपर्ण अथवा गरुड़ संबंधी। गरुड़ का।

सौपर्णकेतव—वि० [सं०] विष्णु संबंधी। विष्णु का।

सौपर्णव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत। गरुड़व्रत।

सौपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पातालगारुड़ी लता। जलजमनी।

सौपर्णेय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुपर्णी के पुत्र, गरुड़। २. गायत्री आदि छंद (को०)।

सौपर्ण्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] सुपर्ण (बाज या चील) पक्षी का स्वभाव या धर्म।

सौपर्ण्य[२]—वि० दे० 'सौपर्ण'।

सौपर्व—वि० [सं०] सुपर्व संबंधी। सुपर्व का।

सौपस्तंबि—संज्ञा पुं० [सं० सौपस्तम्बि] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

सौपाक—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णसंकर जाति जिसका उल्लेख महाभारत में है।

सौपातव—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

सौपमायवि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुपामा के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो। सुपामा का गोत्रज।

सौपिक—वि० [सं०] १. सूप या व्यंजन डाला हुआ। २. सूप या व्यंजन संबंधी।

सौपिष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुपिष्ट के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो। सुपिष्ट का गोत्रज।

सौपिष्टी—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौपिष्ट'।

सौपुष्पि—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुपुष्प के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो। सुपुष्प का गोत्रज।

सौप्तिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. रात को सोते हुए मनुष्यों पर आक्रमण। रात्रियुद्ध। निशारण। रात्रिमारण। २. महाभारत के दसवें पर्व का नाम। सौप्तिक पर्व।

विशेष—इस पर्व में पांडवों की अनुपस्थिति में उनके सोते हुए विजयी दल पर अश्वत्थामा की प्रधानता में कृतवर्मा, कृपाचार्य आदि द्वारा आक्रमण करने का वर्णन है। द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न पांडवों के पाँचों पुत्र, धृष्टद्युम्न आदि और महाभारत से बचे अनेक वीर इसी युद्ध में मार डाले गए थे।

सौप्तिक[२]—वि० सुप्त संबंधी।

सौप्रजास्त्व—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छी संतानों का होना। अच्छी औलाद होना।

सौप्रतीक—वि० [सं०] १. सुप्रतीक दिग्गज संबंधी। २. हाथी का। हाथी संबंधी।

सौफ—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ] दे० 'सौंफ'।

सौफिया—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौंफ] रूसा नाम की घास जब कि वह पुरानी और लाल हो जाती है।

सौफियाना—वि० [हिं० सोफियाना] दे० 'सोफियाना'।

सौफी(पु)—संज्ञा पुं० [हिं० सूफी, सोफी] दे० 'सूफी'। उ०—षवरि सबै लीनी नृपति, चलिय दूत निज मग्ग। आतुर पति गज्जन नमिय, सौफी बेसह जग्ग।—पृ० रा०, १९।९७।

सौबल—संज्ञा पुं० [सं०] गांधार देश के राजा सुबल का पुत्र, शकुनि। उ०—(क) जात भयो ताही समय सभा भवन कुरुनाथ। विकरण, दुश्शासन, करण, सौबल शकुनी साथ। (ख) गंधार धरापति सुत सुभग मगधराज हित रस रसो। भट सौबल सौबल संग लै जंग रंग करिबै लसो।—गोपाल (शब्द०)।

सौबलक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] सुबल का पुत्र, शकुनि।

सौबलक[२]—वि० सौबल (शकुनि) संबंधी। सौबल (शकुनि) का।

सौबली[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुबल की पुत्री, गांधारी। धृतराष्ट्र की पत्नी।

सौबली[२]—वि० सौबल (शकुनी) संबंधी। सौबल।

सौबलेय—संज्ञा पुं० [सं०] सुबल के पुत्र शकुनि का एक नाम।

सौबलेयी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुबल की पुत्री और धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी का एक नाम।

सौबल्य—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत में वर्णित एक प्राचीन जनपद का नाम।

सौबिगा—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बुलबुल।

विशेष—यह बुलबुल पश्चिमी भारत को छोड़कर प्रायः शेष समस्त भारत में पाई जाती और ऋतु के अनुसार रंग बदलती है। यह लंबाई में प्रायः एक बालिश्त से कुछ कम होती है। इसके ऊपर के पर सदा हरे रहते हैं। यह कीड़े मकोड़े खाती और एक बार में तीन अंडे देती है।

सौबीर—संज्ञा पुं० [सं० सौवीर] दे० 'सौवीर'।

सौअन्न(५)—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण, प्रा० सोवण्ण] सोना। स्वर्ण। उ०—आना नरिंद अजमेर वास। संभरिय कीन सौअन्न रास।—पृ० रा०, १।६०५।

सौभ—संज्ञा पुं० [सं०] १. महाभारत में वर्णित राजा हरिश्चंद्र की उस कल्पित नगरी का नाम जो आकाश में मानी गई है। कामचारिपुर। २. महाभारत में वर्णित शाल्वों के एक नगर का नाम। ३. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम। ४. उक्त जनपद के राजा। उ०—अभिमान सहित रिपु प्रानहर वर कृपान चमकावतो। नृप सौभ लस्यो मगधेस हित सिंह समान हिंसावतो।—गोपाल (शब्द०)।

यौ०—सौभपति, सौभराज = शाल्वनरेश।

सौभकि—संज्ञा पुं० [सं०] द्रुपद का एक नाम।

सौभग¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुभग होने का भाव। सौभाग्य। खुशकिस्मती। खुशनसीबी। २. सुख। आनंद। मंगल। ३. ऐश्वर्य। संपदा। धन दौलत। ४. सुंदरता। सौंदर्य। खूबसूरती। ५. भागवत में वर्णित बृहच्छ्लोक के एक पुत्र का नाम।

यौ०—सौभगमद = सौभाग्यगर्व। सौभाग्य का अहंकार। उ०—अवधि भूत नागर नगधर कर पारस पायो। अधिक अपनपौ जानि तनक सौभगमद छायो।—नंद० ग्रं०, पृ० ४३।

सौभग²—वि० सुभग वृक्ष से उत्पन्न या बना हुआ। (चरक)।

सौभगत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सुख। आनंद। मंगल।

सौभद्र¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु। २. एक तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है। ३. वह युद्ध जो सुभद्राहरण के कारण हुआ था।

सौभद्र²—वि० सुभद्रा संबंधी।

सौभद्रेय—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु। २. बहेड़ा। विभीतक वृक्ष। ३. एक तीर्थ।

सौभर¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वैदिक ऋषि का नाम। २. एक साम का नाम।

सौभर²—वि० सोभरि संबंधी। सोभरि का।

सौभरायण—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सौभर के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो। सौभर का गोत्रज।

सौभरि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम, जो बड़े तपस्वी थे।

विशेष—भागवत में इनका वृत्त वर्णित है। कहते हैं, एक दिन यमुना में एक मत्स्य को मछलियों से भोग करते देखकर इनमें भी भोगलालसा उत्पन्न हुई। ये सम्राट मांधाता के पास पहुँचे, जिनके पचास कन्याएँ थीं। ऋषि ने उनसे अपने लिये एक कन्या माँगी। मांधाता ने उत्तर दिया कि यदि मेरी कन्याएँ स्वयंवर में आपको वरमाल्य पहना दें, तो आप उन्हें ग्रहण कर सकते हैं। सौभरि ने समझा कि मेरी बुढ़ौती देखकर सम्राट् ने टालमटोल की है। पर मैं अपने आपको ऐसा बनाऊंगा कि राजकन्याओं की तो बात ही क्या, देवांगनाएँ भी मुझे वरण करने को उत्सुक होंगी। तपोबल से ऋषि का वैसा ही रूप हो गया। जब वे सम्राट् मांधाता के अंतःपुर में पहुँचे, तब राजकन्याएँ उनका दिव्य रूप देख मोहित हो गईं और सब ने उनके गले में वरमाल्य डाल दिया। ऋषि ने अपनी मंत्रशक्ति से उनके लिये अलग अलग पचास भवन बनवाए और उनमें बाग लगवाए। इस प्रकार ऋषि जी भोगविलास में रत हो गए और पचास पत्नियों से उन्होंने पाँच हजार पुत्र उत्पन्न किए। बह्वृचाचार्य नामक एक ऋषि ने उन्हें इस प्रकार भोगरत देख एक दिन एकांत में बैठकर समझाया कि यह आप क्या कर रहे हैं। इससे तो आपका तपोतेज नष्ट हो रहा है। ऋषि को आत्मग्लानि हुई। वे संसार त्याग भगवच्चिंतन के लिये वन में चले गए। उनकी पत्नियाँ उनके साथ ही गईं। कठोर तपस्या करने के उपरांत उन्होंने शरीर त्याग दिया और परब्रह्म में लीन हो गए। उनकी पत्नियों ने भी उनका सहगमन किया।

सौभव—संज्ञा पुं० [सं०] संस्कृत के एक वैयाकरण का नाम।

सौभांजन—संज्ञा [सं० सौभाञ्जन] दे० 'शोभांजन'।

सौभागिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० सौभाग्य] सधवा स्त्री। सोहागिन। उ०—सौभागिनी करे क्रम खोय। तऊ ताहि बड़ि पति की ओय।—विश्राम (शब्द०)।

सौभागिनेय—संज्ञा पुं० [सं०] उस स्त्री का पुत्र जो अपने पति को प्रिय हो। सबसे प्रिय परिणीता का पुत्र। सुभगा या सुहागिन का पुत्र।

सौभाग्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा भाग्य। अच्छा प्रारब्ध। अच्छी किस्मत। खुशकिस्मती। खुशनसीबी। २. सुख। आनंद। ३. कल्याण। कुशलक्षेम। ४. स्त्री के सधवा रहने की अवस्था। पति के जीवित रहने की अवस्था। सुहाग। अहिवात। ५. अनुराग। ६ ऐश्वर्य। वैभव। ७. सुंदरता। सौंदर्य। खूबसूरती। ८ मनोहरता। ९. शुभकामना। मंगलकामना। १०. सफलता साफल्य। कामयाबी। ११. ज्योतिष में विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से चौथा योग जो बहुत शुभ माना जाता है। १२. सिंदूर। १३. सुहागा। टंकण। १४. एक प्रकार का पौधा। १५. एक प्रकार का व्रत।

यौ०—सौभाग्यचिह्न = (१) सधवा होने का चिह्न। सुहाग का बोध करानेवाली वस्तुएँ। (२) भाग्यवान होने का प्रतीक। सौभाग्यतंतु = विवाह के समय वर द्वारा कन्या के गले में पहनाई जानेवाली सिकड़ी या डोरा। मंगलसूत्र। सौभाग्यफल = आनंदप्रदायक फल या परिणामों से युक्त। सौभाग्यमंजरी = एक देवांगना। सौभाग्यशयन व्रत = एक व्रत जो फाल्गुन शुक्ल पक्ष की तृतीया को होता है। विशेष दे० 'सौभाग्य व्रत'।

सौभाग्य चिंतामणि—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्यचिन्तामणि] संनिपात ज्वर की एक औषध।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है। सुहागे का लावा, विष, जीर, मिर्च, हड़, बहेड़ा, आँवला, सेंधा, कर्कच, विट,

सोँचर और साँभर नमक, अभ्रक और गंधक ये सब चीजें बराबर लेकर खरल करते हैं फिर सँभालू (निर्गुंडी), शेफालिका, भँगरा (भृंगराज), अडूसा (वासक) और लटजीरा (अपामार्ग) के पत्तों के रस में अच्छी तरह भावना देने के उपरांत एक एक रत्ती की गोली बनाते हैं। सनिपातिक ज्वर की यह उत्तम औषध मानी गई है।

सौभाग्य तृतीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] भाद्र शुक्ल पक्ष की तृतीया जो बहुत पवित्र मानी गई है। हरितालिका। तीज।

सौभाग्यफल—वि० [सं०] जिसका फल सौभाग्य हो।

यौ०—सौभाग्यफलदायक = सौभाग्य, कल्याणरूपी फल देनेवाला।

सौभाग्य व्रत—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्यव्रत] एक व्रत जिसके फागुन शुक्ल तृतीया को करने का विधान है।

विशेष—वाराह पुराण में इसका बड़ा माहात्म्य वर्णित है। यह व्रत स्त्री पुरुष दोनों के लिये सौभाग्यदायक बताया गया है।

सौभाग्य मंडन—संज्ञा पुं० [सौभाग्यमण्डन] हरताल।

सौभाग्य मद संज्ञा पुं० [सं०] सौभाग्य, समृद्धि, कल्याण आदि के कारण उत्पन्न उल्लास या गौरव।

सौभाग्यवती—वि० स्त्री० [सं०] १. (स्त्री) जिसका सौभाग्य या सुहाग बना हो। जिसका पति जीवित हो। सधवा। सुहागिन। २. अच्छे भाग्यवाली।

सौभाग्यवान्—वि० [सं० सौभाग्यवत्] [वि० स्त्री० सौभाग्यवती] १. जिसका भाग्य अच्छा हो। अच्छे भाग्यवाला। खुशकिस्मत। खुशनसीब। २. सुखी और संपन्न। खुशहाल।

सौभाग्यविलोपी—वि० [सं० सौभाग्यविलोपिन्] सौंदर्य नष्ट करनेवाला। अच्छे भाग्य या सौभाग्य को नष्ट करनेवाला [को०]।

सौभाग्यशयन व्रत—संज्ञा पुं० [सं०] सौभाग्यदायक एक व्रतविशेष। दे० 'सौभाग्य व्रत'।

सौभाग्य शुंठी—संज्ञा स्त्री० [सं० सौभाग्यशुण्ठी] आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध पाक जो सूतिका रोग के लिये बहुत उपकारी माना गया है।

विशेष—इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—घी ८ तोले, दूध १२८ तोले, चीनी २०० तोले, इनको एक में मिला ३२ तोले सोंठ का चूर्ण डाल गुड़पाक की विधि से पाक करते हैं। फिर इसमें धनिया १२ तोले, सौंफ २० तोले, तेजपत्ता, वायबिडंग, सफेद जीरा, काला जीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल, नागरमोथा, नागकेसर, दालचीनी और छोटी इलायची ४–४ तोले डालकर पाक करते हैं। 'भावप्रकाश' के अनुसार इसका सेवन करने से सूतिका रोग, तृषा, वमन, ज्वर, दाह, शोष, श्वास, खाँसी, प्लीहा आदि का नाश होता है और अग्नि प्रदीप्त होती है।

इसके निर्माण की दूसरी विधि यह है - कसेरू, सिंघाड़ा, कमलगट्टा, नागरमोथा, नागकेसर, सफेद जीरा, कालाजीरा, जायफल, जावित्री, लौंग, भूरि छरीला (शैलज), तेजपत्ता, दालचीनी, धौ के फूल, इलायची, सोया, धनियाँ, सतावर, अभ्रक और लोहा आठ आठ तोले, सोंठ का चूर्ण एक सेर, मिश्री तीस पल, घी एक सेर और गाय का दूध आठ सेर इन सबको मिलाकर पाक विधि के अनुसार पाक करते हैं। मात्रा एक तोला है।

सौभासिक—वि० [सं०] चमकीला। प्रकाशवान्। समुज्वल।

सौभासिनक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का समुज्वल रत्न [को०]।

सौभिक—संज्ञा पुं० [सं०] जादूगर। इंद्रजालिक।

सौभिक्ष[1]—वि० [सं०] सुभिक्ष या सुसमय लानेवाला।

सौभिक्ष[2]—संज्ञा पुं० घोड़ों को होनेवाला एक प्रकार का शूल रोग जो भारी और चिकने पदार्थ खाने से होता है।

सौभिक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] खाद्य पदार्थ की प्रचुरता। अन्न की अधिकता आदि के विचार से अच्छा समय। सुकाल।

सौभेय—संज्ञा पुं० [सं०] सौभ जनपद के निवासी जन।

सौभेषज—वि० [सं०] जिसमें सुभेषज या उत्तम ओषधियाँ हों। उत्तम ओषधियों से युक्त।

सौभ्रात्र—संज्ञा पुं० [सं०] सुभ्राता का भाव या धर्म। सुभ्रातृत्व। अच्छा भाईचारा।

सौमंगल्य—संज्ञा पुं० [सं० सौमङ्गल्य] १. सुमंगल। कल्याण। २. मंगल सामग्री।

सौमंत्रिण—संज्ञा पुं० [सं० सौमन्त्रिण] अच्छे मंत्रियों से युक्त। अच्छे सलाहकारों से युक्त। वह जिसके अच्छा मंत्री हो।

सौम[1]—वि० [सं०] १. सोमलता संबंधी। २. चंद्र संबंधी।

सौम[2](पु)—वि० [सं० सौम्य] दे० 'सौम्य'।

सौम[3]—संज्ञा पुं० [अ०] अरबी रमजान मास का व्रत। रोजा [को०]।

सौमक्रतव—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

सौमदत्ति—संज्ञा पुं० [सं०] सोमदत्त के पुत्र, जयद्रथ।

विशेष—यह दुर्योधन का बहनोई था और अभिमन्यु को मारने में प्रमुख था। महाभारत युद्ध में अभिमन्यु के निधन के दूसरे दिन के घमासान युद्ध में यह अर्जुन के हाथों मारा गया।

सौमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ रामायण में वर्णित एक प्रकार का अस्त्र। उ०—ता सम संबर्तास्त्र बहुरि मौसल सौमन हूँ। सत्यास्त्रहु, मायास्त्र, त्वाष्ट्र अस्त्रहु पुनि गनहू।—रघुराज (शब्द०)। २. फूल। पुष्प।

सौमनस[1]—वि० [सं०] १. फूलों का। प्रसून या पुष्प संबंधी। २. मनोहर। रुचिकर। अनुकूल अच्छा लगनेवाला। प्रिय।

सौमनस[2]—संज्ञा पुं० १. प्रफुल्लता। आह्लाद। आनंद। खुशदिली। २. पश्चिम दिशा का हाथी। (पुराण) ३. कर्म मास या सावन की आठवीं तिथि। ४. एक पर्वत का नाम। ५. अनुग्रह। कृपा। प्रसन्नता। इनायत। ६. जातीफल। जायफल। ७. संतुष्टि। संतोष (को०)। ८. अस्त्रों का एक संहार। अस्त्र निष्फल करने का एक अस्त्र। उ०—अरु विनीद्र तिमि मत्तहि प्रसमन तैसहि सारचित्राली। रुचिर वृत्ति मत पितृ सौमनस धन धानहु धृति माली। अस्त्रन को संहार सफल ये लीजै राजकुमार।—रघुराज (शब्द०)।

सौमनसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जावित्री। जातीपत्री। २. रामायण में वर्णित एक नदी का नाम।

सौमनसायनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] जावित्री। जातीपत्री।

सौमनसी--संज्ञा स्त्री० [सं०] कर्म मास अर्थात् सावन मास की पाँचवीं रात।

सौमनस्य[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसन्नचित्तता। प्रसन्नता। आनंद। २. श्राद्ध में पुरोहित या ब्राह्मण के हाथ में फूल देना। (भागवत)। ३. भागवतोक्त प्लक्ष द्वीप के अंतर्गत एक वर्ष का नाम जहाँ के देवता सौमनस्य माने जाते हैं। ५. विवेकशीलता। सुबोधता।

सौमनस्य[2]--वि० आनंद देनेवाला। प्रसन्नता देनेवाला।

सौमनस्यायनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] मालती का फूल।

सौमना--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. फूल। पुष्प। २. कली। कलिका। ३. एक दिव्यास्त्र का नाम।

सौमपौष--संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम जिसमें सोम और पूषा की स्तुति है।

सौमापौष्ण[1]--संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

सौमापौष्ण[2]--वि० सोम और पूषण का।

सौमायन--संज्ञा पुं० [सं०] सोम अर्थात् चंद्रमा के पुत्र बुध।

सौमारौद्र--वि० [सं०] सोम और रुद्र संबंधी। सोम और रुद्र का।

सौमिक[1]--वि० [सं०] १. सोम रस से किया जानेवाला (यज्ञ)। २. सोमयज्ञ संबंधी। ३. सोम अर्थात् चंद्रमा संबंधी। ४. सोमायण या चांद्रायण व्रत करनेवाला। ५. सोम रस संबंधी (कौ०)।

सौमिक[2]--संज्ञा पुं० [सं० सौमिकम्] १. सोम रस रखने का पात्र। २. मदारी।--प्रा० भा०, पृ० २६६।

सौमिकी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का यज्ञ। दीक्षणीयेष्टि। २. सोम लता का रस निचोड़ने की क्रिया।

सौमितिक--संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य द्वारा उल्लिखित एक प्रकार का ऊनी कपड़ा [कौ०]।

सौमित्र--संज्ञा पुं० [सं०] १. सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। उ०--सिय दिशि मुनि कहँ जात, लखि सौमित्र उदार मति। कछुक स्वस्ति अवदात निज चित मैं आनत भए।--मिश्रबंधु (शब्द०)। २. लक्ष्मण के छोटे भाई शत्रुघ्न। ३. कई सामों के नाम। ४. मित्रता। मैत्री। दोस्ती।

सौमित्रा(पु)--संज्ञा स्त्री० [सं० सुमित्रा] दे० 'सुमित्रा'। उ०--अति फूले दशरथ मनहीं मन कौशल्या सुख पायो। सौमित्रा कैकेयी मन आनँद यह सबहिन सुत जायो।--सूर (शब्द०)।

सौमित्रि--संज्ञा पुं० [सं०] १. सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। उ०--एहि विधि रघुकुल कमल रवि मग लोगन्ह सुख देत। जाहिं चले देखत विपिन सिय सौमित्रि समेत।--तुलसी (शब्द०)। २. लक्ष्मण के भाई शत्रुघ्न। ३. एक आचार्य का नाम।

सौमित्रीय--वि० [सं०] सौमित्रि संबंधी।

सौमिलिक--संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध भिक्षुकों का एक प्रकार का दंड जिसमें रेशम का गुच्छा लगा रहता है।

सौमिल्ल--संज्ञा पुं० [सं०] कालिदास द्वारा उल्लिखित एक प्रसिद्ध नाटककार।

सौमी--संज्ञा स्त्री० [सं० सौम्यी] दे० 'सौम्यी'।

सौमुख्य--संज्ञा पुं० [सं०] १. सुमुखता। २. प्रसन्नता। खुशी।

सौमेंद्र--वि० [सं० सौमेन्द्र] सोम और इंद का। सोम और इंद्र संबंधी।

सौमेचक--संज्ञा पुं० [सं०] सोना। सुवर्ण।

सौमेध--संज्ञा पुं० [सं०] कई सामों के नाम।

सौमेधिक[1]--वि० [सं०] १. दिव्य ज्ञान से संपन्न। जिसे दिव्य ज्ञान हो। जिसकी धारणावती बुद्धि शोभन हो। उत्कृष्ट एवं शोभन मेधायुक्त या तत्संबंधी।

सौमेधिक[2]--संज्ञा पुं० दिव्य ज्ञानयुक्त सिद्ध। मुनि।

सौमेरव[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १. सुवर्ण। २. इलावृत्त खंड का एक नाम।

सौमेरव[2]--वि० [वि० स्त्री० सौमेरवी] सुमेरु संबंधी। सुमेरु का।

सौमेरुक[1]--संज्ञा पुं० [सं०] सोना। सुवर्ण।

सौमेरुक[2]--वि० [वि० स्त्री० सौमेरुकी] सुमेरु संबंधी। सुमेरु का।

सौमोंती[1]--संज्ञा स्त्री० [सं० सोमवती] सोमवती अमावस्या। उ०--सौमोंती को न्हाँनु परयो ऐ, परमी न्हाइबे जाऊँ मेरी बीर।--पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ९६६।

सौम्य[1]--वि० [सं०] [वि० स्त्री० सौम्या, सौम्यी] १. सोम लता संबंधी। २. सोमदेवता संबंधी। ३. चंद्रमा संबंधी। ४. शीतल और स्निग्ध। ठंढा और रसीला। ५. गंभीर और कोमल स्वभाव का। सुशील। शांत। नम्र। ६. उत्तर की ओर का। ७. मांगलिक। शुभ। ८. प्रफुल्ल। प्रसन्न। ९. मनोहर। प्रियदर्शन। सुंदर। १०. उज्वल। चमकीला।

सौम्य[2]--संज्ञा पुं० १. सोम यज्ञ। २. चंद्रमा के पुत्र, बुध। ३. ब्राह्मण। ४. भक्त। उपासक। ५. बायाँ हाथ। ६. गूलर। उदुंबर। ७. यज्ञ के यूप का नीचे से पंद्रह अरत्नि का स्थान। ८. लाल होने के पूर्व की रक्त की अवस्था। (आयुर्वेद)। ९. पित्त। १०. मार्गशीर्ष मास। अगहन। ११. साठ संवत्सरों में से एक।
विशेष--इस संवत्सर में अनावृष्टि, चूहे, टिड्डी आदि से फसल को हानि पहुँचती, रोग फैलता और राजाओं में शत्रुता होती है।
१२. ज्योतिष में सातवें युग का नाम। १३. ब्राह्मणों के पितरों का एक वर्ग। १४. एक कृच्छ्र या कठिन व्रत। १५ वृष, कर्कट, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशि। १६. एक द्वीप का नाम। (पुराण)। १७ सुशीलता। सज्जनता। भलमनसाहत। १८. मृगशिरा नक्षत्र। १९. बाईं आँख। वाम नेत्र। २०. हथेली का मध्य भाग। २१. दिव्यास्त्र। उ०--सत्य अस्त्र मायास्त्र महाबल घोर तेज तनुकारी। पुनि पर तेज विकर्षण लीजैं सौम्य अस्त्र भयहारी।--रघुराज (शब्द०)।

सौम्यकृच्छ्र--संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का व्रत जिसमें पाँच दिन क्रम से खली (पिण्याक), भात, मट्ठे, जल और सत्तू पर रहकर छठे दिन उपवास करना पड़ता है। २. एक व्रत जिसमें एक रात दिन खली, मट्ठा, पानी और सत्तू खाकर रहते हैं।

सौम्यगंधा--संज्ञा स्त्री० [सं० सौम्यगन्धा] सेवती। शतपत्री।

सौम्यगंधी--संज्ञा स्त्री० [सं० सौम्यगन्धी] सेवती। शतपत्री।

सौम्यगिरि संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम। (हरिवंश)।

सौम्यगोल—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तरी गोलार्ध।

सौम्यग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] शुभ ग्रह। जैसे,—चंद्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र। फलित ज्योतिष में ये चारों शुभ माने गए हैं।

सौम्यज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ज्वर जिसमें कभी शरीर गरम हो जाता है और कभी ठंढा।

विशेष—चरक द्वारा यह वात और पित्त अथवा वात और कफ के प्रकोप से उत्पन्न कहा गया है।

सौम्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौम्य होने का भाव या धर्म। २. शीतलता। ठंढक। ३. सुशीलता। शांतता। साधुता। ४. सुंदरता। सौंदर्य। ५. परोपकारिता। उदारता। दयालुता।

सौम्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौम्यता'।

सौम्यदर्शन—वि० [सं०] जो देखने में सुंदर हो। प्रियदर्शन।

सौम्यधातु—संज्ञा पुं० [सं०] बलगम। कफ। श्लेष्मा।

सौम्यनाम, सौम्यनामा—वि० [सं० सौम्यनामन्] जिसका नाम प्रिय हो। जिसका नाम सुनने में भला लगे [को०]।

सौम्यप्रभाव—वि० [सं०] जिसका प्रभाव सौम्य हो। कोमल स्वभाववाला [को०]।

सौम्यमुख—वि० [सं०] जिसकी मुखाकृति सुंदर या प्रियदर्शन हो।

सौम्यरूप—वि० [सं०] १. सुंदर रूप एवं आकृतियुक्त। २. जिसका व्यवहार सौम्य हो।

सौम्यवपु—वि० [सं० सौम्यवपुस्] जिसके शरीर की गठन या स्वरूप सुंदर एवं आह्लादक हो।

सौम्यवार—संज्ञा पुं० [सं०] बुधवार।

सौम्यवासर—संज्ञा पुं० [सं०] बुधवार।

सौम्यशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] छंदःशास्त्र में मुक्तक विषम वृत्त के दो भेदों में से एक जिसके पूर्व दल में १६ गुरु वर्ण और उत्तर दल में ३२ लघु वर्ण होते हैं। उ०—आठौ यामा शंभू गावो। भव फंदा तें मुक्ती पावो। सिख मम धरि हिय भ्रम सब तजिकर भज नर हर हर हर हर हर हर। इसका दूसरा नाम अनंगक्रीड़ा भी है।

सौम्यश्री—वि० [सं०] श्रीसंपन्न। सौंदर्यशाली।

सौम्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा का एक नाम। २. बड़ी इंद्रायन। महेंद्रवारुणी लता। ३. रुद्रजटा। शंकरजटा। ४. बड़ी मालकंगनी। महाज्योतिष्मती लता। ५. पातालगारुड़ी। महिषवल्ली। ६. घुँघुची। गुंजा। चिरमटी। ७. सरिवन। शालपर्णी। ८. ब्राह्मी। ९. कचूर। शटी। १०. मल्लिका। मोतिया। ११. मोती। मुक्ता। १२. मृगशिरा नक्षत्र। १३. मृगशिरा नक्षत्र पर रहनेवाले पाँच तारों का नाम। १४. आर्या छंद का एक भेद।

सौम्याकृति—वि० [सं०] सुंदर आकृति या आकार प्रकारवाला [को०]।

सौम्यों—संज्ञा स्त्री० [सं०] चाँदनी। चंद्रिका।

सौयवस—संज्ञा पुं० [सं०] १. कई सामों के नाम। २. तृण या घास की प्रचुरता।

सौरंभ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० सौरभ] दे० 'सौरभ'। उ०—मनो कमल सौरंभ काज, प्रति प्रीति भ्रमर विराज।—पृ० रा०, १४।१५७।

सौर[१]—वि० [सं०] १. सूर्य संबंधी। सूर्य का। २. सूर्य से उत्पन्न। ३. सूर्य के निमित्त अर्पित (को०)। ४. सूर्य की भक्ति या उपासना करनेवाला। सूर्योपासक (को०)। ५. मदिरा या सुरा संबंधी (को०)। ६. सूर्य का अनुसारी। जैसे,—सौर मास। ७. दिव्य सुर या देवता संबंधी।

सौर[२]—संज्ञा पुं० १. सूर्य के पुत्र, शनि। २. वह जो सूर्य का पूजक या उपासक हो। सूर्य का भक्त। ३. बीसवें कल्प का नाम। ४. तुंबुरु नामक पौधा। ५. धनिया। ६. एक साम का नाम। ७. सौर दिवस (को०)। ८. सौर मास (को०)। ९. सूर्य के पुत्र, यम (को०)। १०. सूर्य संबंधी ऋग्वेद के मंत्रों का संग्रह। सूर्य संबंधी सूक्त (को०)। ११. दाहिनी आँख।

सौर(पु)[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाट, हिं० सौंड़] चादर। ओढ़ना। उ०—अपनी पहुँच विचारि कै करतब करिए दौर। तेतो पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर।—रहीम (शब्द०)।

सौर[४]—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] सौरी मछली।

विशेष—यह मझोले आकार की होती है और इसके शरीर में एक ही काँटा होता है। दे० 'सौरी[३]' का विशेष।

सौर[५]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौरी] सूतिकागृह। सौरी। उ०—सौर से एक तीखी चीख सुनकर एक चेतना लौट आई।—वो दुनियाँ, पृ० २१।

सौरऋण—संज्ञा पुं० [सं०] वह ऋण जो मद्य पीने के लिये लिया जाय।

सौरग्रीव—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन देश का नाम। (बृहत्संहिता)।

सौरज[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. तुंबुरु। तुंबरू। २. धनिया। धान्यक।

सौरज(पु)†[२]—संज्ञा पुं० [सं० शौर्य] दे० 'शौर्य'। उ०—सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।—मानस, ६।७९।

सौरठवाल—संज्ञा पुं० [सं० सौराष्ट्र, हिं० सोरठ+वाला] वैश्यों की एक जाति।

सौरण—वि० [सं०] सूरन संबंधी।

सौरत[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. रतिक्रीड़ा। केलि। संभोग। २. वीर्य। रेतस् (को०)। ३. धीमी हवा। मंद वायु। मंद समीरण (को०)।

सौरत[२]—वि० सुरत संबंधी। रतिक्रीड़ा संबंधी।

सौरतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ [को०]।

सौरत्य—संज्ञा पुं० [सं०] रतिसुख। संभोग।

सौरथ—संज्ञा पुं० [सं०] वीर। योद्धा [को०]।

सौर दिन, सौर दिवस—संज्ञा पुं० [सं०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दंड का समय।

सौर द्रोणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी तलैया।

सौरध्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का तंबूरा या सितार।

सौरनक्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक व्रत जो रविवार को हस्त नक्षत्र होने पर सूर्य के प्रीत्यर्थ किया जाता है। (नरसिंह पुराण)।

सौरपत--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्योपासक । सूर्यपूजक ।

सौरपरिकर--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य के चारों ओर भ्रमण करनेवाले ग्रहों का मंडल । सौर जगत् ।

सौरपि--संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि ।

सौरभ[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १. सुरभि का भाव या धर्म । सुगंध । खुशबू । महक । उ०--त्रिविध समीर सुगन सौरभ मिलि मत्त मधुप गुंजार ।--सूर (शब्द०) ।
यौ०--सौरभवाह = पवन । उ०--नहीं चल सकते गिरिवर राह । न रुक सकता है सौरभवाह ।--पल्लव० पृ० १२ । सौरभश्लथ = सुगंध की अधिकता से थकित । उ०--सौरभश्लथ हो जाते तन मन, बिछते झर झर मृदु सुमन शयन ।--युगांत, पृ० ३५ ।
२. केसर । कुंकुम । जाफरान । ३. तुंबुरु नामक गंधद्रव्य । तुंबरु । ४. धनिया । धान्यक । ५. बोल । हीराबोल । बीजाबोल । ६. एक प्रकार का मसाला । ७. आम । आम्र । उ०--सौरभ पल्लव मदन बिलोका । भयउ कोप कंपेउ त्रयलोका ।--तुलसी (शब्द०) । ८. एक साम का नाम । ९. मदगंध (को०) ।

सौरभ[2]-- वि० १. सुगंधित । सुगंधयुक्त । खुशबूदार । २. सुरभि (गाय) से उत्पन्न ।

सौरभक--संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त का नाम जिसके पहले चरण में सगण, जगण, सगण और लघु, दूसरे में नगण, सगण, जगण और गुरु, तीसरे में रगण, नगण, भगण और गुरु तथा चौथे में सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु होता है। उ०--सब त्यागिये असत काम । शरण गहिए सदा हरी । दुःख भौ जनित जायँ टरी । भजिए अहो निशि हरी हरी हरी ।

सौरभमय--वि० [सं०] सौरभयुक्त । सुगंधयुक्त । सुगंधित ।

सौरभित--वि० [सं० सौरभ + इत] सौरभयुक्त । महकनेवाला । सुगंधित । खुशबूदार ।

सौरभी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धेनु । गाय । २. सुरभि गाय की पुत्री [को०]।

सौरभुवन--संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यलोक ।

सौरभेय[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १. सुरभि का पुत्र, साँड़ । वृषभ । २. पशुओं का झुंड (को०) ।

सौरभेय[2]--वि० १ सुरभि संबंधी । सुरभि का । २. महक । सुगंध । खुशबू (को०) ।

सौरभेयक--संज्ञा पुं० [सं०] साँड़ । वृष ।

सौरभेयी--संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गाय । गो । २. महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम । ३. सुरभि गाय की पुत्री (को०) ।

सौरभ्य--संज्ञा पुं० [सं०] १. सुगंध । खुशबू । २. मनोज्ञता । सुंदरता । खूबसूरती । ३. गुण गौरव । कीर्ति । प्रसिद्धि । नेकनामी । ४. सदाचरण । सद्व्यवहार । ५. कुबेर का एक नाम ।

सौरभ्यद--संज्ञा पुं० [सं०] सुगंधित द्रव्य । एक गंधद्रव्य [को०] ।

सौरमास--संज्ञा पुं० [सं०] वह महीना जो सूर्य के किसी एक राशि में रहने तक माना जाता है । उतना काल जितने तक सूर्य किसी राशि में रहे । एक संक्रांति से दूसरी सक्रांति तक का समय ।
विशेष--सूर्य एक वर्ष में क्रम से मेष, वृष आदि बारह राशियों का भोग करता है । एक राशि में वह प्रायः ३० दिन तक रहता है । प्रायः इतने दिन का ही एक सौरमास होता है । दे० 'दिन' शब्द का विशेष ।

सौरवर्ष--संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौर संवत्सर' ।

सौरसंवत्सर--संज्ञा पुं० [सं०] उतना काल जितना सूर्य को मेष, वृष आदि बारह राशियों पर घूम आने में लगता है । एक मेष संक्रांति से दूसरी मेष संक्रांति तक का समय ।

सौर संहिता--संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष विद्या का सिद्धांतग्रंथ [को०] ।

सौरस[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्तु, पदार्थ आदि जो सुरसा नामक पौधे से निकला या बना हुआ हो । २. सुरसा का अपत्य या पुत्र । ३. जूँ । ४. नमकीन रसा या शोरबा ।

सौरस[2]--वि० सुरसा संबंधी । सुरसा नामक पौधे का [को०] ।

सौरसा--संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली बेर । पहाड़ी बेर [को०] ।

सौर सिद्धांत--संज्ञा पुं० [सं० सौर सिद्धान्त] ज्योतिष विद्या का एक सिद्धांतग्रंथ ।

सौरसूक्त--संज्ञा पुं० [सं०] ऋग्वेद के एक सूक्त का नाम जिसमें सूर्य की स्तुति है । सूर्यसूक्त ।

सौरसेन--संज्ञा पुं० [सं० शूरसेन] दे० 'शूरसेन' और 'शौरसेन' ।

सौरसेनी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक भाषा । विशेष दे० 'शौरसेनी' ।

सौरसेय--संज्ञा पुं० [सं०] स्कंद का एक नाम । कार्तिकेय ।

सौरसैंधव[1]--वि० [सं० सौरसैन्धव] १. गंगा का । गंगा संबंधी । २. गंगा से उत्पन्न । (जैसे, भीष्म) ।

सौरसैंधव[2]--संज्ञा पुं० सूर्य का घोड़ा ।

सौरस्य--संज्ञा पुं० [सं०] सुरसता । रसीला होने का भाव ।

सौराज्य--संज्ञा पुं० [सं०] अच्छा राज्य । सुराज्य । सुशासन ।

सौराटी--संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी । (संगीत) ।

सौराव--संज्ञा पुं० [सं०] नमकीन रसा या शोरबा ।

सौराष्ट्र[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १. गुजरात काठियावाड़ का प्राचीन नाम । सूरत (सुराष्ट्र) के आसपास का प्रदेश । सोरठ देश । २. उक्त प्रदेश का निवासी । ३. कुंदुरु नामक गंधद्रव्य । शल्लकी निर्यास । ४. काँसा । कांस्य । ५. एक वर्णवृत्त का नाम ।

सौराष्ट्र[2]--वि० सोरठ प्रदेश का ।

सौराष्ट्रक[1]--संज्ञा पुं० [सं०] १. सौराष्ट्र या सोरठ प्रदेश का रहनेवाला । २. पंचलौह । ३. एक प्रकार का विष ।

सौराष्ट्रक[2]--वि० १. सौराष्ट्र या सोरठ प्रदेश संबंधी । २. सोरठ देश में उत्पन्न ।

सौराष्ट्र मृत्तिका--संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपीचंदन ।

सौराष्ट्रा--संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपीचंदन ।

सौराष्ट्रिक[1]--वि० [सं०] सौराष्ट्र या सोरठ देश संबंधी । गुजरात काठियावाड़ संबंधी ।

सौराष्ट्रिक[2]--संज्ञा पुं० १. सोरठ देश का निवासी । २. काँसा नाम की धातु । ३. एक प्रकार का विषैला कंद ।

विशेष—इसके पत्ते पलाश के पत्तों से मिलते जुलते होते हैं। यह कंद काले अगर के समान काला और कछुए की तरह चिपटा और फैला हुआ होता है।

सौराष्ट्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपी चंदन।

सौराष्ट्रय—वि० [सं०] सोरठ प्रदेश का। गुजरात काठियावाड़ का।

सौरास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का दिव्यास्त्र। उ०—सोमास्त्रहु सौरास्त्र सु निज निज रूपनि धारैं। रामहिं सौं कर जोरि सबै बोले इक बारैं।—पद्माकर (शब्द०)।

सौरिंध्र—संज्ञा पुं० [सं० सौरिन्ध्र] [स्त्री० सौरिंध्री] १. बृहत्संहिता के अनुसार ईशान कोण में स्थित एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जनपद का निवासी।

सौरि[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. (सूर्य के पुत्र) शनि। २. विजैसार। असन वृक्ष। ३. हुलहुल का पौधा। आदित्यभक्ता। ४. एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि। ५. बृहत्संहिता के अनुसार दक्षिण का एक प्राचीन जनपद। ६. यम का नाम (को०)। ७. कर्ण का एक नाम (को०)। ८. सुग्रीव का एक नाम (को०)।

सौरि[२]—संज्ञा पुं० [सं० शौरि] कृष्ण। दे० 'शौरि'। उ०—अंत: पुर में तुरत ही भयो सोर चहुँ ओर। बैठायो पर्यंक में रंकहि सौरि किशोर।—रघुराज (शब्द०)।

सौरि[३]—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँवरि] श्यामा। रात्रि। रात। (लाक्ष०)। उ०—भूख न मानै लावन सेती। नींद न मानै सौरि सपेती।—चित्रा०, पृ० २७।

सौरि(पु)‡[४]—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौर] लिहाफ। रजाई। दे० 'सौर[३]'। उ०—भैंना कूँ सौरि भरावैगौ, लाला कूँ टोपा भरावैगो।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० ९२५।

सौरिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. शनैश्चर ग्रह। २. स्वर्ग। ३. शराब बेचनेवाला। कलाल (को०)।

सौरिक[२]—वि० १. स्वर्गीय। २. सुरा या मद्य संबंधी (ऋण)। शराब के कारण होनेवाला (कर्ज)। ३. सुरा या मदिरा पर लगनेवाला कर (को०)।

सौरिकीर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] बृहत्संहिता के अनुसार दक्षिण का एक प्राचीन जनपद।

सौरिरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] नीलम नामक मणि।

सौरी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० सूतिका] वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जने। सूतिकागार। जापा। जच्चाखाना।

सौरी[२]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य की पत्नी। २. सूर्य की पुत्री और कुरु की माता तपती। तापती। वैवस्वती। ३. गाय। गौ। ४. हुलहुल पौधा। आदित्यभक्ता।

सौरी[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] एक प्रकार की मछली। शष्कुली मत्स्य। उ०—भारत मछरी सहरी अरु सौरी गगरिन भरि।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४८।

विशेष—भावप्रकाश के अनुसार इसका मांस मधुर, कसैला और हृद्य है।

सौरीय[१]—वि० [सं०] सूर्य संबंधी। सूर्य का।

सौरीय[२]—संज्ञा पुं० १. एक वृक्ष जिसमें से विषैला गोंद निकलता है। २. इस वृक्ष से निकला हुआ विष।

सौरेय, सौरेयक—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद कटसरैया। श्वेत झिंटी।

सौर्य[१]—वि० [सं०] सूर्य संबंधी। सूर्य का।

सौर्य[२]—संज्ञा पुं० १. सूर्य का पुत्र, शनि। २. एक नगर का नाम। ३. एक संवत्सर का नाम। ४. हिमालय के दो शृंगों का नाम।

सौर्यपृष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

सौर्यप्रभ—वि० [सं०] सूर्य की प्रभा या दीप्ति संबंधी [को०]।

सौर्यभगवत्—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन वैयाकरण का नाम जिनका उल्लेख पतंजलि के महाभाष्य में है।

सौर्ययाम—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य और यम संबंधी। सूर्य और यम का।

सौर्यी—संज्ञा पुं० [सं० सौर्यिन्] हिमालय का एक नाम।

सौर्योदयिक—वि० [सं०] सूर्योदय संबंधी।

सौर्वल—संज्ञा पुं०, वि० [सं०] दे० 'सौवर्चल'।

सौलंकी—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सोलंकी'।

सौल, सौला—संज्ञा पुं० [हिं० साहुल] १. राजगीरों का शाकुल। साहुल। २. हल के जूए के ऊपर की गाँठ।

सौलक्षण्य—संज्ञा पुं० [सं०] शुभ या अच्छे लक्षणों का होना। सुलक्षणता।

सौलभ्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुलभता। प्राप्ति की सुविधा।

सौल्विक—संज्ञा पुं० [सं०] ठठेरा। ताम्रकुट्टक।

सौव[१]—संज्ञा पुं० [सं०] अनुशासन। आदेश।

सौव[२]—वि० १. अपने संबंध का। अपना। निज का। २. स्वर्गीय।

सौवग्रामिक—वि० [सं०] [स्त्री० सौवग्रामिकी] अपने निजी गाँव से संबंध रखनेवाला [को०]।

सौवर—वि० [सं०] स्वर संबंधी। किसी ध्वनि या संगीत के स्वर से संबंध रखनेवाला (को०)।

सौवर्चल[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोंचर नमक। २. सज्जी मिट्टी। सर्जिका क्षार।

सौवर्चल[२]—वि० सुवर्चल नामक देश संबंधी।

सौवर्चला—संज्ञा स्त्री० [सं०] रुद्र की पत्नी का नाम।

सौवर्ण[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक कर्ष भर सोना। २. सोने की बाली। ३. सोना। सुवर्ण।

सौवर्ण[२]—वि० [वि० स्त्री० सौवर्णा, सौवर्णी] १. सोने का। सोने का बना। २. तौल में कर्ष भर। १६ माशे भर।

सौवर्णकुड्यका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार के सिल्क का परिधान।

सौवर्णपर्ण—वि० [सं०] जिसके पंख स्वर्णाभ हों [को०]।

सौवर्णभेदिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] फूलफेन। फूलप्रियंगु। प्रियंगु।

सौवर्णहर्म्य—संज्ञा पुं० [सं०] रजत का हर्म्य या सभामंडप [को०]।

सौवर्णिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] सुनार। स्वर्णकार।

सौवर्णिक[2]—वि० एक सुवर्ण भर। १. एक कर्ष या १६ माशे भर। २. सोने का बना हुआ। स्वर्णनिर्मित।

सौवर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का विषैला कीड़ा। (सुश्रुत)।

सौवर्ण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना होने का भाव। २. वर्णों या अक्षरों का शुद्ध शुद्ध उच्चारण। ३. वह सुंदर रंग जिसमें ताजापन हो [को०]।

सौवश्व्य—संज्ञा पुं० [सं०] घुड़दौड़।

सौवस्तिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुरोहित। कुलपुरोहित। २. दे० 'स्वस्त्ययन'।

सौवस्तिक[2]—वि० स्वस्ति कहनेवाला। मंगल चाहनेवाला। मंगलाकांक्षी।

सौवाध्यायिक—वि० [सं०] जो स्वाध्याय करता हो। वेदपाठ करनेवाला। स्वाध्यायी।

सौवास—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की सुगंधित तुलसी।

सौवासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सुवासिनी'।

सौवास्तव—वि० [सं०] १. सुवास्तुयुक्त। भवननिर्माण की कुशलता से युक्त। अच्छी कारीगरी का (मकान)। २. अच्छे स्थान पर बना हुआ (मकान)।

सौविद—संज्ञा पुं० [सं०] अंतःपुर या रनिवास का रक्षक। कंचुकी। सुविद।

सौविदल्ल—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा का वह प्रधान कर्मचारी जिसके पास राजा की मुद्रा आदि रहती हो। २. कंचुकी। अंतःपुर का रक्षक (को०)।

सौविदल्लक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सौविदल्ल'।

सौविष्टकृत्—वि० [सं०] स्विष्टकृत् नामक अग्नि संबंधी। (गृह्यसूत्र)।

सौवीर—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंधु नद के आस पास के एक प्राचीन प्रदेश का नाम। उ०—सिंधु और सौवीरहु सोरठ जे भूपत रनधीरा। न्योति पठावहु सकल महीपन, बाकी रहैं न बीरा।—रघुराज (शब्द०)। २. उक्त प्रदेश का निवासी या राजा। ३. बेर का पेड़ या फल। बदर। ४. जौ को सड़ाकर बनाई हुई एक प्रकार की काँजी।

विशेष—वैद्यक में यह अग्निदीपक, विरेचक तथा कफ, ग्रहणी, अर्श, उदावर्त, अस्थिर शूल आदि दोषों में उपकारी माना जाता है।

५. अंजन। सुरमा (को०)।

सौवीरक—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० 'सौवीर'। २. जयद्रथ का एक नाम।

सौवीरपाण—संज्ञा पुं० [सं०] बाह्लीक देशवासी। बाह्लीक।

विशेष—उक्त देशवासी जौ या गेहूँ की काँजी बहुत पिया करते थे, इसी से उनका यह नाम पड़ा है।

सौवीरभक्त—वि० [सं०] सौवीरों द्वारा बसा हुआ। जहाँ सौवीर लोग रहते हों।

सौवीरसार—संज्ञा पुं० [सं०] सुरमा। स्रोतोंजन।

सौवीरांजन—संज्ञा पुं० [सं० सौवीराञ्जन] सुरमा।

सौवीरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'सौवीरी'।

सौवीराम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] जौ या गेहूँ की काँजी।

सौवीरिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बेर का पेड़ या फल।

सौवीरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संगीत में एक प्रकार की मूर्छना जिसका स्वरग्राम इस प्रकार है—म, प, ध, नि, स, रे, ग, नि, स, रे, ग, म, प, ध, नि, स, रे, ग, म। २. सौवीर की राजकुमारी।

सौवीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सौवीर का राजा। २. महान् वीरता। बहुत अधिक पराक्रम।

सौवीर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] सौवीर की राजपुत्री।

सौव्रत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुव्रत का भाव। एकनिष्ठा। भक्ति। २. आज्ञापालन।

सौशब्द, सौशब्द्य—संज्ञा पुं० [सं०] संज्ञा और क्रिया के रूपों की व्याकरणसमत रचना [को०]।

सौशल्य—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारतवर्णित एक प्राचीन जनपद का नाम। २. उक्त जनपद का निवासी।

सौशाम्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुशमता। सुशांति।

सौशील्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुशीलता। सच्चरित्रता। साधुता।

सौश्रवस[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुश्रवा के अपत्य, उपगु। २. सुयश। सुकीर्ति। ३. दौड़ने की प्रतिस्पर्धा (को०)। ४. दो सामों के नाम।

सौश्रवस[2]—वि० जिसका अच्छा नाम या यश हो। कीर्तिमान्। यशस्वी।

सौश्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] ऐश्वर्य। वैभव।

सौश्रुत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सुश्रुत के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो। सुश्रुत का गोत्रज।

सौश्रुत[2]—वि० १. सुश्रुत का रचा हुआ। २. सुश्रुत संबंधी।

सौषाम—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम का नाम।

सौषिर—संज्ञा पुं० [सं०] १. मसूड़ों का एक रोग।

विशेष—इसमें कफ और पित्त के विकार से मसूड़े सूज जाते हैं; उनमें दर्द होता है और लार गिरती है।

२. वह यंत्र जो वायु के जोर से बजता हो। फूँककर या हवा भरकर बजाया जानेवाला बाजा। जैसे,—वंसी, तुरही, शहनाई आदि।

सौषिर्य—संज्ञा पुं० [सं०] पोलापन।

सौषुम्ण—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य की किरणों में से एक।

सौष्ठव—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुडौलपन। उपयुक्तता। २. सुंदरता। सौंदर्य। ३. तेजी। फुरती। क्षिप्रता। लाघव। ४. नृत्य में शरीर की एक मुद्रा। ५. नाटक का एक अंग। ६. चातुर्य। परम कौशल (को०)। ७. बाहुल्य। अधिकता (को०)। ८. लचक। हल्कापन (को०)।

सौसन—संज्ञा पुं० [फ़ा०] दे० 'सोसन'।

सौसनी—संज्ञा पुं० [फ़ा०] दे० 'सोसनी' उ०—पहिरौ री बेहूनरी सुरँग चूनरी ल्याय। पहिरे सारी सौसनी कारी देहु दिखाय।—शृंगारसतसई (शब्द०)।

सौसुक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन स्थान का नाम जिसका उल्लेख महाभाष्य में है।

सौसुराद—संज्ञा पुं० [सं०] विष्ठा में होनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

सौस्थित्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छी स्थिति। २. ग्रहों का शुभ स्थान में होना।

विशेष—बृहत्संहिता में लिखा है कि ग्रहों का सौस्थित्य, अर्थात् शुभ स्थान में स्थिति, देखकर राजा यदि आक्रमण करे तो वह अल्प पौरुषवाला होने पर भी पराया धन पाता है।

सौरथ्य—संज्ञा पुं० [सं०] कुशल। क्षेम। कल्याण।

सौस्नातिक—वि० [सं०] यह प्रश्न कि यज्ञ के उपरांत स्नान सफल हुआ या नहीं।

सौस्वर्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुस्वर या उत्तम स्वर होने का भाव। सुस्वरता। सुरीलापन।

सौहँ[१]—संज्ञा स्त्री० [सं० शपथ, प्रा० सवह या सं० सौगन्ध] शपथ। कसम। उ०—हम रीझे मनभावते लखि तब सुंदर गात। दीठ रूप धर लाल सिर नैना सौहैं खात।—रसनिधि (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—खाना।

सौहँ[२]—क्रि० वि० [सं० सम्मुख, प्रा० सम्मुह] सामने। आगे। उ०—रंग भरे अंग अरसौहैं सरसौहैं सोहैं सौहैं करि भौहैं रस भावनि भरत है।—देव (शब्द०)

सौहन—संज्ञा पुं० [देश०] पैसे का चौथाई भाग। छदाम। दुकड़ा। (सुनार)।

सौहनी(पु)—वि० [हिं० सुहावनी] सोहनी। शोभन। अच्छी। सुंदर। उ०—अति आछी तनक कनक की दौहनी सौहनी गढ़ाइ दै री मैया।—नंद ग्रं०, पृ० ३४०।

सौहर—संज्ञा पुं० [अ० शौहर] दे० 'शौहर'।

सौहरा†—संज्ञा पुं० [हिं ससुर] ससुर। (पश्चिम)।

सौहविष—संज्ञा पुं० [सं०] कई सामों के नाम।

सौहाँग—संज्ञा पुं० [देश०] दो भर का बाट या बटखरा। (सुनार)।

सौहार्द—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुहृद का भाव। मित्रता। मैत्री। सख्य। दोस्ती। २. सुहृद या मित्र का पुत्र। ३. मन की ऋजुता। हृदय की सरलता (को०)। ४. सद्भाव (को०)।

सौहार्दनिधि—संज्ञा पुं० [सं०] राम का एक नाम।

सौहार्दव्यंजक—वि० [सं० सौहार्दव्यञ्जक] सौहार्द को व्यक्त करनेवाला। मैत्री प्रकट करनेवाला [को०]।

सौहार्द्य—संज्ञा पुं० [सं०] सौहार्द। मित्रता। बंधुत्व। दोस्ती।

सौहित्य—संज्ञा पुं० [सं०] तृप्ति। संतोष। २. मनोरमता। मनोज्ञता। सुंदरता। ३. पूर्णता। ४. कृपालुता। सद्भावना (को०)।

सौहीं—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सोहन] १. एक प्रकार की रेती। २. एक प्रकार का हथियार।

सौहीं—क्रि० वि० [हिं० सौहँ] सामने। आगे। उ०—कहि आवति है जु कहावत हौ तुम वाहीं तौ ताकि सके हम सौहीं। तेहि पैंड़े कहा चलिये कबहूँ जिहि काटो लगै पग पीर दुखौहीं।—केशव (शब्द०)।

सौहृद[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. मित्रता। स्नेहसंबंध। सख्य। दोस्ती। २. सुहृद्। मित्र। दोस्त। ३. एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)। ४. रुचि।

सौहृद[२]—वि० सुहृद या मित्र संबंधी।

सौहृदय, सौहृदय्य—संज्ञा पुं० [सं०] सौहार्द। मित्रता। दोस्ती।

सौहृद्य—संज्ञा पुं० [सं०] सौहार्द। मित्रता। बंधुता। दोस्ती।

सौहोत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सुहोत्र के अपत्य अजमीड और पुरुमीड नामक वैदिक ऋषि।

सौह्म—संज्ञा पुं० [सं०] सुह्म देश का राजा।

—०—